

प्रकाशक

श्रीमन्त सेठ धिवाबराय लक्ष्मीचन्द्र,
 जैन-साहित्योद्धारक-मठ-कार्यालय,
 अमरावती [कर्ना]



मुद्रक-

टी एम् पाटील,
 मनेजर

सत्यवती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती [कर्ना]

THE ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALA OF VĪRASENA

VOL. III

DRAVYA-PRAMĀNĀNUGAMA

Edited

with introduction translation notes and indexes

BY

HIRALAL JAIN M.A., LL. B.

O. P. Educational Service King Edward College Amraoti.

ASSISTED BY

Pandit Phoolchandra
Siddhanta Shāstri



Pandit Hiralal Siddhanta Shāstri,
Nyāyatīrtha.

Pandit Devakinandana
Siddhanta Shāstri

With the co-operation of



Dr. A. N. Upadhye
M. A., D. Litt.

Published by

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jana Sahitya Uddhāraka Fund Karyālaya,

AMRAOTI (Berar).

1941

Price rupees ten only

Published by—

Shrimant Seth Shitabral Laxmichandra,

J. M. Saketya, Udaipur, Food Karyakaya,

“ AHRAOTI (Berar). ”

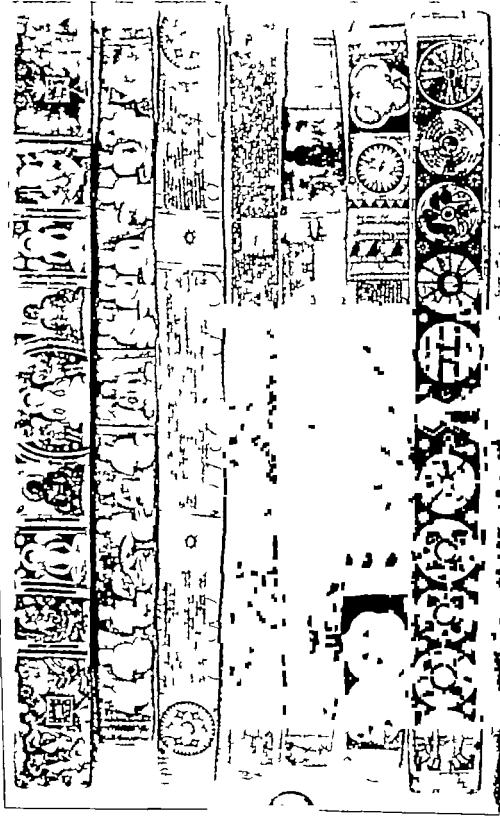


Printed by—

T. M. Patil Manager

Saraswati Printing Press,

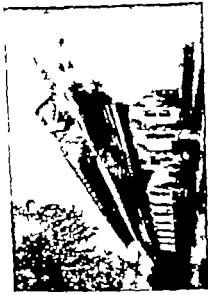
AHRAOTI (Berar).



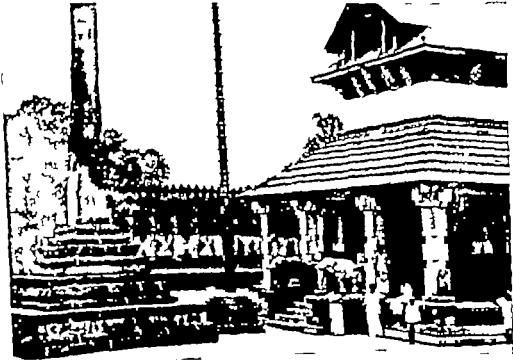
८. मृदुशिखीमें विद्यालयात्त मणोंके कुछ खुले हुए सखिक प विखिल ठाकुरन



२. मुरबिंद्रीमें सिंहासक प्रयोग की प्रतियाँ बची हुई



३. मुरबिंद्रीका सिंहासक मंदिर (गुरुबछावि)



श्री

अतिशय क्षेत्र मूढविद्वितीकी त्रिस सम्मान्य
महारक-परम्पराने इन अनुपम सिद्धान्त ग्रंथोंकी
चिरकालसे बड़ी सावधानी और सतर्कतापूर्वक
रखा की, तथा अब सुअवसर प्राप्त होने पर
विद्वत्ससारका उनका लाभ दिया, उसीके भूतपूर्व
और वर्तमान गुरुओंके सत्प्रयत्नोंकी स्मृतिमें यह
ग्रंथ विद्वत् रूपसे समर्पित है ।

त्वदीय वस्तु, भो स्वामिन्,
तुभ्यमेव समर्प्यते ।





सिद्धान्त प्रयोग। प्रतिनिधि व सिद्धान्त प्रयोग
परस्पर। मूलन व. बापनायकी शास्त्री



८. मूहवित्रीय
श्रीयुक्त

विषय सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्राक् कथन	१-३	५ मतान्तर और उनका खंडन	४४
१		६ गणितकी विशेषता	४७
प्रस्तावना	१-६७	८ मूडबिंदीकी तात्पर्यात्म्य प्रतियोगिता	
प्रपक्षी प्रस्तावना (अमेनीमें)	1-17	मिथ्यात्वका निरूपण	४९
१ चित्र और चित्र-परिचय	१	९ द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची	५२
२ मूडबिंदीका इतिहास	४	१० अर्थसंबंधी विशेष-सूचना	६६
३ महात्म्यकी खोज	६-१४	११ पाठ्यसूची विशेष-सूचना	६७
१ खोजका इतिहास	६	छुट्टि पत्र	६८
२ स्वर्णमयिनी परीक्षण	७	माछाकरण	७२
३ महात्म्य परीक्षण	१२	२	
४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रति- पत्तिपर कुछ और प्रकाश	१५	द्रव्यप्रमाणानुगम	१-४८७
५ ज्योतिष मंत्रक सादित्व अनादित्व- का निर्णय	१६	(मूड, अनुवाद और टिप्पण)	
६ शास्त्र-समाधान	१८	३	
७ द्रव्यप्रमाणानुगम	२१-५१	परिशिष्ट	१-४२
१ उत्पत्ति	२१	१ द्रव्यप्रमाणानुगम	१
२ प्रमाणका स्वरूप	२२	२ अक्षरप्रमाणानुगम	१०
३ जीवशास्त्र गुणस्वानुवर्त		३ व्यापारिक	११
अपेक्षा प्रमाण-प्रत्यक्ष	२७	४ मंत्रोद्देश	१२
४ जीवशास्त्र मार्गानुवर्त		५ पारिभाषिक शब्दसूची	१६
अपेक्षा प्रमाण-प्रत्यक्ष	२८	६ मूडबिंदीकी तात्पर्यात्म्य प्रतियोगिता	
		मिथ्यात्व	२०

प्राक् कथन

हमें यह प्रश्न पड़ते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि गण प्रतीय मासक प्राक् कालमें हमने मूशिकी सिद्धान्तमन्त्रक अपिस्तरियोंके सङ्ग्रहोपसृचकी जो सूचना प्रकट की थी, वह क्रियामक रूपमें परिणत हुई। इसने प्रमाण पाठक इसी मासके साथ प्रकाशित साहित्यसामग्रिमें देखेंगे। हममें म्हायज्जने अत्यन्त प्रशंसनाके संग्रहमें एक खतर केन्द्रेका जो किन्तु और सिद्धांता प्रकट की थी उसने ठीक सिद्धान्त मन्त्रकी क्रियात्मक दृष्टिको ज्ञात कर लिया। शीघ्र ही हमें एवं मङ्गलक स्वामी चारुकीर्तिजी द्वारा म्हायज्जने सर्वश्रेष्ठ अनेक सूचनाएँ और उत्कृष्ट परिचय भी प्राप्त हुआ और उसी सिद्धांतमें सिद्धांतप्रबोध तादृशों मंदिरों व अपिस्तरियों व कर्पयन्त्रादीके चित्र भी उन्होंने मिश्रणकी कृपा की, व तादृशीय प्रतिधौसे पाठ-मिथानकी सुविधा भी बना दी। इस पुण्य कर्ममें हमारे सदा सहायक पं. स्नेहनाथजी झाड़ी ने ठीक मङ्गलक-परिचय और व-विशेष कुछ इतिहास भी प्रिय भेजनेकी कृपा की तथा व अपने दो सङ्गोमी पं. नागराजजी झाड़ी और पं. देवदुर्गाजी झाड़ी के साथ मिथान कर्ममें दक्षिण भी हो गये। इस समस्त सहायाने पठकके इस मासके साथ हम मूशिकी, चार्की सिद्धान्तप्रतिष्ठा, मंदिरों और अपिस्तरियोंके चित्र व परिचय और इतिहास पाठके सन्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। यही नहीं, बल्कि एक प्रकाशित तीनों मासोंके पाठक तादृशीय प्रतिधौसे मिथान व तत्संबंधी निष्कर्ष अत्यन्त परिष्कारपूर्ण सुस्पष्टीकृत कर्ते पाठकोंके निश्चयार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। एक प्थान देने योग्य हर्षकी बात यह है कि मूशिकीमें अत्यन्तसिद्धान्तकी एक सङ्गी तादृशीय प्रतिधौ अतिरिक्त दो और तादृशीय प्रतिधौ हैं। यद्यपि व बहुत अधिक कुटिल हैं— इनके बीचके सैकड़ों पत्र व्याप्य हो गये हैं— तथापि किन्तु हैं उनके पाठसहायकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि, हममें परस्पर पाठभेद भी पाये जाते हैं जहाँसे हममें मिथानमें दिखे हुए 'ब' शब्दके पाठमेंकी उत्पत्ति समान है। किन्तु मिथानके 'ब' शब्दमें दिखे हुए मात्र एकसे पृष्ठ २२८ से अत्यन्तके पाठमें तो यही से उत्पन्न हुए निहित होते हैं। यद्यपि इन कुटिल प्रतिधौके मिथान केन्द्र भी हमने प्रयत्न किया है, किन्तु कर्मका परिचयविषये इनका उत्तर और असुप्रकार उपयोग नहीं हो पाया किन्तु सूत्रमन्त्रकी दृष्टिसे अयोग्य है। यद्यपि इन प्रतिधौका विशेष परिचय देने और उपयोग केन्द्र भी प्रयत्न किया जायगा। इस पत्र साहित्यिक निबन्धों सर्वोपयोग्य बननेमें सहायकाके श्रेष्ठ मूशिकीके ठीक मङ्गल-मासोंका हम मिथान उपकार मने, बोधा है।

[illegible]

प्रस्तुत भागके पाठ-संशोधन व अनुवादमें सहायकोंको विशेष कठिनाईका सामना करना पड़ा है। एक तो पद्यांश विषय ही बड़ा सूक्ष्म है, और दूसरे उसपर भ्रष्टाचारने अपने समयके गणित शास्त्रकी गहरी पुट जमाई है। इसने हमें बड़ा हैरत किया, तथापि निस्ती अज्ञात शक्तिकी प्रेरणा, जनताकी सज्जाना और विद्वानोंके सहयोगसे यह कठिनाई भी अन्ततः हल हो ही गई, और अब हम यह भाग भी पूर्व भागोंके समान कुछ आत्मनिश्चासरे साथ पाठकोंके हाथमें सौंपते हैं।

मूल भागमें सामान्य नियम-प्रकरणके अनतिरिक्त कोई २८० शीर्षक उद्यमर उनका समाधान किया गया है। इसके गहन, अपरिचित और दुर्लभ भागको अनुवादमें धीमगणित और अज्ञातके कोई २८० उदाहरणों तथा ५० विशेषार्थी व ३३३ पादप्रियणाश्रय सुगम आर सुबोध बनानेका प्रयत्न किया गया है। इसका गणित चैत्रनेमें हमें हमारे फाँड़नेसे सहयोगी, गणितने अप्यापन प्राफेसर फ्रांसीसी पठि, एम. ए., से विशेष सहायता मिली है। उन्होंने कई दिनोंतक लगातार घंटों हमारे साथ बैठ बैठकर कथन-भाषाओंका समझने समझाने व अन्य गणित व्यवस्थित करनेमें बड़ी रुचि और स्थानसे क्षुब्ध परिधम किया है। भाषा न २८ (पृ ४७) का गणित माधुर्य के. वृद्ध गणिताचार्य, द्वितीय फाँड़ने मूल्य गणिताप्यापक प्रोफेसर जी के. गुरुंभ बैद्य देने की गया की है, तथा उसीका दूसरा प्रकाश, एम. पृ ५०-५१ पर दिये हुए पश्चिम-विश्वका जो गणित सन्धी सामान्य प्रलाभनाक पृ ६६ पर 'अर्धसकषी विशेष सूचना' शीर्षकसे लिया गया है यह सम्पन्न विधिविषयके गणिताचार्य व 'द्विन्दु गणितशास्त्रका इतिहास' के छेवर डाक्टर अबधेश नारायणसिंहजीने लगातार मेहनत की गया की है। इस अन्त परिधम पूर्व में लिये हुए सहयोगके लिये उपयुक्त सभी सम्बन्धोंका हम बहुत ही कृतज्ञ हैं। इस भागमें यदि कुछ सुन्दर और महत्त्वपूर्ण सन्धान काय हुआ है तो यह इसी सहयोगका परिणाम है। हाँ, जो कुछ प्रुतियाँ और सन्दर्भ छे हों उनका उल्लेखविषय हमारा ही ऊपर है, क्योंकि, अन्ततः समस्त सामग्रीका बनमान रूप देनेका जिम्माभी हमारा ही रही है।

इन सिद्धान्त प्रयोगों और विद्वान् पाठ्य विद्वान् आदर्शित हुए हैं, यह उन अभिप्रायोंसे स्पष्ट हो जा या तो समागमनाधिके रूपमें विविध पत्रोंमें प्रकाशित हो चुका है, या जो विशेष पत्रों द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। उन सभी सन्धियोंके लिये हम स्फुटसे विचार आमर्श हैं। इन अभिप्रायोंमें एसी बनन सहायित व अन्य शीर्षक भी उद्यम गइ हैं जो प्रकर मूल अप्यमस पाठकोंके हाथमें लगन हुई। कितने ही अर्थों उन पाठकोंके उत्तर भी हम यथाशक्ति उन उन पाठकोंके व्यक्तिगत रूपमें मन्त्रने गय हैं। अब हम उनमें कुछ स्पष्टतम शीर्षक और उनका समाधान, हम मागरी भूमिगतमें पृष्ठमस व्यवस्थित करने प्रयत्नित कर रहे हैं, जिसका प्रकाश सभी पाठकोंके हाथ हो और हम विद्वान्के समझन समझने में सहायता पहुँच। गहन विद्वान्के अन्तः प्रकाश शक्तिसे अभिमतों का हम स्वीकार करेंगे।

सम्पन्न-संबंधी हमारी शेष साधन-सामग्री और सहयोगप्रणाली पूर्ववत् ही इस भागके लिए भी उपलब्ध रही। हमें अमरावती जैन मन्दिरकी इस्तिस्तिन प्रभिके अतिरिक्त आसराके सिद्धान्तमबन और करंदाके महावीर प्रकाशपर्याममकी प्रतियोग मिशनक स्थिते काम निरता रहा, तथा सद्धारनपुरकी प्रतिके नोट मिले हुए पाठभेद भी समुपलब्ध रहे। अतएव हम उनके अधिग्रहणियोंके बहुत आभारी हैं। मूद्रिणीय प्रतियोंके मिशन प्राप्त हो जानेसे हमने इन प्रतियों परस्पर पाठभेद व छूटे हुए पाठ आदि देगा आश्रयक नहीं समझा।

हमारे सम्पादनकार्यमें विशेषरूपसे सहायक पं. देवकीनन्दनजी सिद्धान्तशास्त्री गत तीन बार मास बहुत ही व्याधिरहित रहे, जिससे हमें अत्यन्त चिन्ता और आनुरता रही। यद्यपि अभी भी वे बहुतही दुर्बल हैं, तथापि व्याधि दूर हो गई है और वे ठण्डेठण्डे स्वरूप काम कर रहे हैं निश्चय हमें परम हर्ष है। हमें आशा और विश्वास है कि वे शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य काम करने वाली स्थितिमें आगम हमें देते रहनेमें समर्थ होंगे।

हमारे सहयोगी पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीका नरबल पुन गत फरवरी मासमें अत्यन्त कम हो गया, जिससे फरवरीके अन्तमें पण्डितजीके अस्वस्थता देखा जाना पड़ा। यद्यपि कुछ उपचार करने पर भी हृदयके पण्डितजीके पुनःस्वस्थता अपार दुःख सहन करता पड़ा, जिससे हमें भी अत्यन्त शोक है, और शेष कुटुम्बकी सहायतासे अन्य प्रभिके होता है। तबसे फिर पण्डितजी अस्थिर नहीं आ सके। श्रुति इस समय पण्डित फूलचन्द्रजी हमारे समुपलब्ध नहीं हैं, इससे हमें यह निस्संकोच प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि प्रस्तुत कठिन प्रश्नको कर्मान स्वरूप देनेमें पण्डितजीका मारी प्रयास रहा है, जिसके स्थिते शेष सम्पादनकार्य अनन्तर बहुत आभारी है।

प्रथम भागके प्रकाशित होनेसे ठीक आठ माह पश्चात् ही दूसरा भाग जुलाई १९४१ में प्रकाशित हुआ था। मार्च १९४१ में आठ माहके पश्चात् ही यह तीसरा भाग प्रकाशमें आ रहा है। जो कुछ सहयोग और सहायता इस महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रकाशनमें मिल रही है उससे आशा और विश्वास होता है कि यह पुण्य कार्य सुचारु रूपसे प्रगतिशील होता जायगा।

मिर्जा एन्डर्स कॉलेज,

अमरावती

१-४-४१

}

हीराबाल जैन

प्रस्तावना

INTRODUCTION

I Cooperation of the Moodbidri Authorities and Collation of the Palmleaf Manuscripts

It will be noticed with the greatest pleasure by every one interested in the publication of this series that the present Volume is appearing with the full cooperation of the authorities at the pontifical seat at Moodbidri where the old palmleaf MSS of this unique work are deposited and worshipped. The publication of the first two volumes and our ceaseless efforts as well as of those who realised the value and importance of this venture brought about this miraculous and most welcome change in the outlook of those who had so far stood apart and looked upon the undertaking with doubts and misgivings. The immediate occasion for the change was provided by the publication of my article in which anxiety was expressed concerning the real contents of the palmleaf MSS which goes by the name of Mahābhāṣya. It aroused a sensation amongst those who had any idea of the possible contents of those MSS and stirred the hearts of all concerned. An examination of the palmleaf MSS was, therefore, immediately arranged and I was soon informed by telegrams and letters about the result of that examination. The contact thus established proved lasting and the collation of the Dhāṣya MSS with the published part of the work was carried out. The collation of the rest of the work is also proceeding, thanks to the sympathetic attitude of the authorities and the cooperation of a band of learned people there.

As a result of the search two more old but incomplete palmleaf MSS of Dhāṣya have been discovered. These would prove of immense value in settling the text more accurately. At present the collation of all these palmleaf MSS in thorough and accurate manner was not possible but it might be hoped that this will also be accomplished in the near future. The result of the Moodbidri collation, so far as has been that of the 433 variants noticed in the text of the three volumes yet published, including the present volume 140 contribute towards the improvement of the text in the matter of accents or preposition or both 62 appear to be optionally acceptable, 157 are phonetic options of the Prakrit language while 120 are unacceptable, being scribal or other errors. These have been properly classified by us in an appendix and the general results re-embodyed in the Hindī Introduction (page 49). It was necessary to amend the translation very slightly only at 78 places in all. Our principles of text constitution and translation, as laid down by us in the Introduction to Volume I are thus mostly borne out by this collation. The position of the upodhātya may have to be reconsidered but we must wait for more material. Of the 10 expressions which were not found in the available MSS but were thought to be necessary by us and were, therefore, added and placed within brackets in the

present Volume 13 has been found almost verbatim in the palm-leaf Ms. We re-examined the remaining 6 additions and found that even if we omit them from their allotted positions we have to infer the sense from the context.

2. Contents of the Mahābhāva manuscript.

The examination of the Mahābhāva palm-leaves corroborated our doubts as well as fulfilled our hopes. The Ms has been found to contain on the first twenty-seven leaves, a work which has been cited Sattakamma Pañchika. A careful examination of the tracts received by us from that work, reveals the fact that it is a gloss on the first four out of the eighteen Adhikāras or chapters contained in the supplementary part of Dharmasāstra which is entirely the composition of Virasena without any strait of old Sūtras. The author and the date of this gloss remain yet obscure.

The rest of the Mahābhāva Ms. contains the Mahābandha, presumably the composition of Āchārya Bhātibhāṣa. This is indicated by the nature of the contents examined in the light of what has been said about the Mahābandha of Bhūtatāla in the Dharmasāstra and Jayadīpa.

3 Subject matter of this volume

The subject matter of this volume is the enumeration of souls in each of the fourteen stages of spiritual advancement (Ganadhikāra), and the different varieties of life and existence called the soul-quests (Mārgādhikāra). There have been calculated in terms of infinite (Ananta), innumerable (Aśamkhyā) and numberable (Samkhyā), and the six kinds have been first explained and defined. Living beings are infinite in number. Of these, the major bulk, which also is infinite in number consists of beings that are on the lowest rung of the spiritual ladder the first stage of mental evolution (Mithyādvaita). Of the rest, again, the major part are the absolved beings (Mukta or Siddha) who are also infinite. The beings in the stages from the 2nd to the 5th are innumerable, while those in the last nine stages (6th to 14th) are in all just three less than nine crores. The author of Dharmasāstra has illustrated these quantities arithmetically by taking the entire living creation to be 16 out of which 13 would fall under the first category while the remaining 3 would include the Siddhas and all the souls of the other thirteen stages. We have tried to carry this illustration further by splitting up the 3 as well so as to allot 2 to the Siddhas and distribute the remaining 1 among the thirteen stages according to their quantitative order. (See Intro. page 37).

The soul quantities, according to the subdivisions falling under the Mārgādhikāra, have been defined and illustrated in his own way by the author. But we have tried to work this same out in figures that are consistent with the Ganadhikāra distribution, keeping the entire Jīvarāhi as 16, the Mithyādvaitas as 13 the Siddhas 2, and the rest comprised within 1. The categories falling under the fourteen Mārgādhikāras are 63, of which 23 are infinite, 32 innumerable and 8 numberable. It would be interesting to note that the entire human race is said to be innumerable but those that are found in the stages from the 2nd to the 14th are just three less than eight hundred and seventy-eight crores. These are spread over all

the two and half Dvīpas or mainlands over which the human population is spread.
(Page 38-43)

4 Scientific Importance of the Work.

The distribution of souls in the various stages of spiritual advancement and the varieties of life and existence is based upon certain Jaina dogmas which are in their nature inscrutable. An attempt has been made by the authors of the Sūtras and the Commentary to put the distribution in a precise mathematical form. The authors have made full use of the mathematical knowledge of their times, which reveals a considerably high state of development during the earliest centuries of the Christian era when the Sūtras were composed as well as during the latter part of the 8th and the earlier part of the 9th century when the commentary was written. The author of the Sūtras shows a clear conception of infinity and orders of infinity within infinity in their application to matter, time and space. Within the sphere of finite numbers he mentions figures from one to hundred thousand, tens and hundreds of thousands and crores, also their multiples, squares and square roots, as well as the fundamental operations of arithmetic, namely addition, subtraction, multiplication and division. The commentator has amplified this knowledge considerably in the light of what was known at his time. Several practical methods of division have been explained. There is a free use of the place value notation. The use of fraction has been frequently made in order to arrive at quotients with particular divisors, or to determine divisors when particular quotient is given. This indicates the knowledge of fractions at that stage. The processes of evolution and involution are identical with those current in modern mathematics. Thus, we notice the use of powers (Vargita-samvargita) and roots (Varga-mūl). This indicates that the author of Dhavalā had a clear knowledge of the law of indices and possibly of the theory of logarithms, as may be inferred from the relations shown between the Varga-shūlakṣa and Ardhaśchedas †. The rule of three was an operation well known to the author for the purposes of showing variations. We also find the use of the summation of an arithmetic series. The author is also found to have employed the mensuration formula for a circle. The ratio of the circumference to the diameter is taken as a little less than $\sqrt{10}$, and it is just possible that approximations to this value in fractional form to fair degree of accuracy were known to the author.

It may be hoped that the work will considerably widen our knowledge about the state of mathematics and its application to the problems of life in ancient India. As I have already acknowledged in my foreword, my colleague Professor K. D. Pandey M. A. has interpreted for me many of the author's formulas and has also assisted in framing the illustrations, while Dr. Avadhesh Narain Singh, B. Sc., Professor

† The number of times that particular figure is multiplied by itself is its Varga-shūlakṣa while the number of times that particular figure is successively halved is its ardhaśchedas.

of Mathematics in the Lucknow University and the author of the History of Hindu Mathematics has contributed the interpretations of formulas which are set forth by us on page 66 of the Hindi Introduction. Both these scholars are at present studying the work from the point of view of its mathematical importance, and some of my remarks above are based on information already supplied by them. The emendation of the text of the *śrao* 25 as well as its explanation and illustration as given in our translation are the contributions of Professor G. B. Garde M. A. the well known Sanskritist and Mathematician of Nagpur.

5 Other Topics.

Other topics discussed in the Hindi Introduction are as follows —

1. An account of the palm-leaf manuscripts as well as of the institutions and personalities of Moodbidri, together with a short history of the place, has been given with illustrations. It appears that the Jain institutions of Moodbidri date from about the 11th century with background that may be about four centuries older. The foundation of the pontifical seat was laid during the 12th century and the zenith of prosperity was reached during the following two or three centuries. (Page 16)

2. A little more light is shed on what have been called by the author of *Dharmasāstra* the Northern and Southern Schools of thought (*Uttara Pratyakṣa* and *Dakṣiṇa pratyakṣa*) to which we had drawn attention in the Introduction to Vol. I, page iii & 37 and which are cited more than once in the text now presented (page 92, 94, 96 of the text). One mention of these Schools noticed by us in the *Jyotiṣa* all associates one school with Āry Maṅkha and the other with Nigahasti. An attempt is being made by us to get more light on this important subject (page 18).

3. Our conclusions about the authorship of Namokara Mantra expressed in the Introduction to Vol. II created a considerable stir amongst people who have come to regard the sacred formula as eternal. A reconsideration of the pertinent text in the light of the readings obtained from the palm-leaf MSS of Moodbidri corroborates our previous conclusions so far as the linguistic expression of the sacred formula in present form is concerned. But there is no contradiction in regarding the sense of the formula as an older than Poshpadanta. (Page 16)

4. After the publication of the first Vol. great interest in the subject matter of the work was aroused and a number of questions were received by us from time to time for more light about the text and its interpretation. We tried to satisfy the curiosity of our inquirers then and there, and now we reproduce here in properly arranged form a set of thirty-two questions with answers, because we considered them important from one point of view or another. It will be seen from these that our principles of text constitution and interpretation are fully justified (Page 18-31)

१ चित्र परिचय

१

ऊपरसे नीचेकी ओर प्रथम सचित्र ताड़पत्र श्रीसूक्त प्रपञ्च है। इसके मध्यमें एक तीर्णकरक चित्र है, जिसके दोनों ओर अनुमानतः पञ्च-पश्चिमी छोटे किये गये हैं। इसके दोनों ओर दो दो तीर्णकरोंके और चित्र हैं, तथा उनके एक ओर पञ्च और दूसरी ओर पश्चिमी चित्रित हैं। फिर दोनों छोरोंपर प्रपञ्चन करते हुए आचार्य व श्रेया आचर्योके चित्र हैं।

दूसरा सचित्र ताड़पत्र भी श्रीसूक्त प्रपञ्च है। बीचमें तीर्णकर नियोजन है, और आन्-आन् सप्त सप्त मध्य कन्दमा करते हुए दिखाये गये हैं।

तीसरा ताड़पत्र श्रीसूक्त प्रपञ्च कलावी छिपिमें हस्त-लिखित है।

चौथा ताड़पत्र कलावी छिपिमें हस्त लिखित श्रीमहाप्रपञ्च प्रपञ्च है।

पाँचवां ताड़पत्र श्रीसूक्त प्रपञ्च है। बीचमें कलावीका हस्तलेख तथा आन्-आन् चित्र हैं।

छठवां ताड़पत्र श्रीमहाप्रपञ्च २७ वां पत्र है, जहाँ 'सप्तकम्मपञ्चिका' की हुई कड़ी जाती है। इसके भी बीचमें हस्तलेख और आन्-आन् चित्रक चित्र हैं।

सातवां ताड़पत्र त्रिंशोक्तसार प्रपञ्च की ओर है।

२

नीचेसे ऊपरकी ओर प्रथम प्रपञ्च श्रीसूक्त सिद्धान्त (पट्टाङ्गम) है। इसके ताड़पत्रोंकी ऊम्माई १ पुट, चौड़ाई २॥ इंच, तथा पत्र सख्या ५९२ है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १२ पक्षिय हैं, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १२८ अक्षर हैं। इसप्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२०॥ जाती है, जिससे कुछ प्रपञ्च प्रमाण ७१२८४ श्लोकोंके लगभग जाता है।

अपीतक यही समझा जाता था कि यद्यपि प्राचीन ताड़पत्रों पर प्रति एकमात्र यही है। किन्तु अब खोजसे ज्ञात हुआ है कि वहाँ यद्यपि दो ओर भी ताड़पत्रों पर प्राचीन प्रतिपाद हैं, जिसकी ताड़पत्रोंकी सख्या क्रमशः ८०० और ९०५ है। इनमें पाठभेदभी कहीं कहीं बहुत कुछ पाया जाता है। किन्तु इन दोनों प्रतिपोंके बीचबीच के अनेक ताड़पत्र अज्ञात हैं, और इस प्रकार वे दोनोंही प्रतिपाद बहुत कुछ भ्रष्ट हैं। इनका प्रसंगिक आदि संहिता विशेष परिचय आनेके मध्यमें देवेका प्रयत्न किया जायगा।

दूसरा प्रपञ्च श्रीमहाप्रपञ्च कहलाता है। इसके ताड़पत्रोंकी ऊम्माई २ पुट ४ इंच, चौड़ाई २॥ इंच तथा पत्रसंख्या ९०० है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १२ पक्षिया, और प्रत्येक पंक्तिमें

लगभग १७० अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-संख्या ११८ आती है, जिससे कुलप्रमाण २७१०० श्लोकोंके लगभग आता है। किन्तु बड़े बड़े पारिभाषिक शब्दोंके सूत्ररूप बनाकर लिखे गये हैं इससे श्लोक प्रमाण अधिक भी हो सकता है।

तीसरा ग्रंथ श्रीशयनचक्र सिद्धान्त है। इसके ताडपत्रोंकी संख्या २। पुत्र, वीर्य, धर्म, इत्यादि पत्रसंख्या ५१८ है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः ११ पंक्तियाँ, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग ११८ अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२० आती है जिससे कुल प्रमाण २११२४ श्लोकोंके लगभग आता है।

३

यह मूढविद्याका बही सुप्रसिद्ध मन्दिर है, जहाँ सिद्धान्त ग्रंथोंकी ताडपत्रीय प्रतियाँ दृष्टान्तिपूर्वसे विद्यमान हैं। इनकी कारण यह मन्दिर 'सिद्धान्त मन्दिर' या 'सिद्धान्त बसन्दि' कहलाता है। अनेक समयोंके प्रतिमात्रों में यहाँ विद्यमान हैं जिनके दर्शकोंके लिये प्रतिवर्ष दूर दूरेसे पात्री आते हैं। यहाँके मूढनायक श्रीगणेशनाथ तीर्थकार हैं। यही महारक्ष गरी है, जिससे इसे 'गुरु बसन्दि' भी कहते हैं। इसका सब कर्मकार एक पञ्चायतके आधीन है, जिससे यह 'पञ्चायती मन्दिर' भी कहलाता है।

४

यह मूढविद्याका 'ब्रह्मा मन्दिर' है। यहाँ के मूढनायक श्री चन्द्रप्रभ तीर्थकार हैं, जिनकी मूर्ति सुप्रसिद्ध आदि पंच ब्रह्मोंकी बनी गयी जाती है। इसकी सम्पदा तीन मंजिरोंकी है। दूरेसे मंजिर 'सहस्रकूट चत्वारस्र' बहुत ही मनोह्र है। तीसरे मंजिरमें छोटी बही ४० प्रतिमात्रों विद्यमान हैं जो एस्तिकमयी हैं। इसीलिये इस मंजिरको 'सिद्धकूट' भी कहते हैं। मन्दिरके समुच्च एक 'मन्त्रालय' और एक 'अभ्युक्त' बना है। तीनों मंजिरोंमें लक्षोंकी संख्या कीर्तन एक हजार है, जिससे इस मन्दिरका नाम 'सहस्रस्तम्भ' या हजार स्तम्भाका मन्दिर प्रसिद्ध हुआ है। जन्मी अनुग्रह दुर्गादेवके कारण यह मन्दिर 'त्रिदुर्गा विष्णु-ब्रह्मादि' भी कहलाता है।

५

ये मूढविद्याके स्वर्गाय महारक्ष श्रीबाठकीर्ति स्वामी हैं। आप ईश्वरके अपने सिद्धान्तों में, तथा अन्य अनेक माताओंकी भी आज्ञाकार थे। आपकी समयमें मूढविद्या में अच्छी कर्मप्रदानना हुई। आपने कई व्यास शिष्यो की वेदमन्त्रिकों कीर्तनका तथा वे पञ्चरत्नप्रणालि करने। आपनेकी सुसमय में श्रीचक्र और श्रीचक्रवर्ण, इन दोनों सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतिलिपियाँ दूर भी, और तीसरे सिद्धान्त ग्रंथ मूढनायककी प्रतिलिपिकर कार्य भी प्रारम्भ हो गया था। अनेक जनतायें भी आपका अच्छा गौरव और सम्मान था।

६

ये मूडबिंदीके वर्तमान महारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं, जो सिद्धान्त बसदिके मुख्य अधिकारी हैं। आप अपनी मातृभाषा कन्नड़ी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि अनेक भाषाओंके ज्ञाता हैं। उत्तर भारतमें भी आप दीर्घकाल तक रह चुके हैं। आपके ही समर्थमें श्रीमहाप्रबन्धकी प्रतिष्ठिपि पूर्ण हुई। आपके ही सरल स्वभाव और उदार विचारोंका यह सुन्दर है कि वहाँकी पचापतद्वारा श्रीमहाप्रबन्धकी प्रतिष्ठिपि निःशङ्क समाज को प्राप्य बनानेका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। आप श्रीगोस्वामिदि धार्मिक कर्मोंमें सदा दक्षिण रहते हैं। प्रयोग श्रीगोस्वामि कर्म भी आपकी दृष्टिसे ओष्ठ नहीं रह सका। हमारे सिद्धान्त-प्रयोगे सद्योपन व प्रस्त-रान कर्ममें अब हमें आपकी प्रय सहायभूति और सहायता मित्र रही है, जिसके सुन्दर पाठक इस प्रथमागमें तथा आगे भी देखेंगे।

७

आप मूडबिंदीके नगरसेठ श्रीदेवराजजी सेठी हैं। सिद्धान्तमन्दिरके आप पंच हैं, और महारकजीके सङ्ग्रहमें आपकी सम्मति और सहयोग रहता है। आप भी सिद्धान्तप्रयोगे सुप्रचार के पक्षपाती हैं।

८

आप मूडबिंदी सिद्धान्तमन्दिरके पंच श्रीपुष्प धर्मपालजी हैं। आप एक बड़े ठरसाही युक्त हैं, और सिद्धान्तप्रयोगे सुप्रचार करनेमें आपकी विशेष रुचि है।

९

सरस्वती भूषण व लोचननाथजी द्वालीका पैतृक निवासस्थान मूडबिंदी ही है। आपका विद्याभ्यास स्वनामधेय स्वर्गीय व गोपाळदासजी श्रीपात्री अभ्युत्थतामें मोरेना विद्यालयमें हुआ था। तत्पश्चात् आपने मूडबिंदीकी जैन संस्कृत पाठशालामें बीस वर्ष तक अध्यापन कार्य किया, और अनेक ऐसे योग्य विद्वान् उत्पन्न किये जो अब उस प्रान्तमें धर्म और समाजकी भावी सेवा कर रहे हैं। आपने अपन निरंतर कठिन परिश्रमसे श्रीवाणीविद्यालय सिद्धान्तमन्दिरकी स्थापना की है जिसमें सुवित व हस्तलिखित ताडपत्रादि चार हजार प्रयोगे ऊपरका समग्र है। यहसि आप एक श्रीवाणी प्रमाणाका भी संपादन करते हैं जिसमें सोलह भंड प्रचलित हो चुके हैं। आप मूडबिंदीके महारके अङ्गभ्य प्रयोगे प्रतिष्ठिपि कराकर मुर्दा, भाप, हदीर, सहायपुर, कलकत्ता आदि स्थानोंको भेज चुके हैं, जिसकी श्रेष्ठ स. ८५००० से भी ऊपर हो गई है। आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्धान्तप्रयोगे प्रतिष्ठिपियोंसे सङ्ग्रह रहता है। विसय हम प्रथम भागकी भूमिकमें कह आये हैं, महाप्रबन्धकी नागरी प्रतिष्ठिपि पहले पहल आपके द्वारा ही सन् १९१८ से १९२२ तक की गई थी। सन् १९२७ में आपने सहायपुर पञ्चनर वहाँकी प्रबन्ध और अध्यापककी कनाड़ी और नागरी प्रतियोंका मिश्रण करवाया था। वर्तमानमें हमारी

महापञ्चमी प्रतिष्ठेयवी शक्यजोष आने ही अपने दो तीन सहयोगी मित्रनोंसहित उक्त प्रतिष्ठी
वांच पढताऊ की, और बहुमुख परिषय मेजनेकी कृपा की। हमारे प्रकाशित व प्रकाशनीय प्रकाशकों
तात्कालीन प्रतिष्ठेसे मित्रान भी आपने ही इत्ता किया जा रहा है। आपकी आपु इस समय पचास
वर्षकी है। लगभग दस बयस आसकी व्यापिते पीठित होते हुए भी आप साहित्यसेवाके कर्पसे
विभ्रान्ति मही केते, और प्रस्तुत सिद्धान्तप्रकाशन कर्पसे तो आप अस्तुत तमपताने सान भी
स्येवकर सहयोग दे रहे हैं, अितके छुत्त पाठक इस मागमे तथा आगे प्रकाशनीय मागमे देखेंगे।

२ मूढविद्रीका इतिहास

दक्षिण भारतका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रखता है।
रिंग्मर जैन सम्प्रदायके अधिपति सुविस्मृत और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और मंत्रकार इसी
प्रान्तमें हुए हैं। आचार्य पुण्ड्रित समन्तमद्र, पूषपाद, भीरसुन, जिनसेन गुणमद्र, मेमिचन्द्र,
बामुन्नाय आदि महान् मंत्रकारोंने इसी भूमिकाके अर्कित किया था।

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रान्तमें ही मूढविद्री नामका एक छोटासा नगर है जो कलाद्रिपोंसे
जैनियोंका तीर्थक्षेत्र बना हुआ है। कहा जाता है कि यहां जैनधर्मका विशेष प्रमाण सन्
११०० ईस्वीके लगभग होम्बक-नरेण ब्रह्मक्षेत्र प्रपमके समयसे था। तेरहवीं शताब्दिमें
प्राचीन पारंगतय बसदिको गुजबके बालूप नरेशोंसे राज्यसम्मान मिला। पन्द्रहवीं शताब्दिमें विजय-
नगरके सिंघू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष की। सन् १३५१ (सन् १५२९)
के देवराय त्रितीयके एक शिखरकेसमें ठकेह है कि केल्पुर (मूढविद्री) उसके मध्यमनोंके जिये
छप्रसिद्ध है। वे छत्र चरित्र पाठ्ये हैं, छुम कर्प करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका अरण
करते हैं। यहांके स्थानीय राजा भैरसने अपने गुरु भीरसेन सुविद्री प्रेरणासे यहांके
कामनाय मन्दिर को बन दिया था। सन् १४५१-५२ में यहांकी होत बसदि (त्रिभुवन
सिख-ब्रह्मक्षेत्र व बड़ा मन्दिर) का भैरसेनी मन्दप ' नामसे प्रसिद्ध मुचमण्डप
विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्पदिवेरायके राज्यमें बनया गया था। विष्णुनाथ नरेश के राज्यमें
उनके सामन्त निहरस जोडेयरने सन् १४७९-७९ में इसी बसदिके नूनिदान दिया था। यहां
सब सिखकर अजरह बसदि (जिममन्दिर) है, जिनमें सबसे प्रसिद्ध 'गुरु बसदि' है जहां
सिद्धान्त मंत्रोंकी प्रतिष्ठा सुरक्षित है और जिनके कारण यह 'सिद्धान्त बसदि' भी कहाजती है।
यह नगर 'जैन काशी' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहां अब जैनियोंकी जनसंख्या बहुत कम रहगई
है, किन्तु जैन सत्तामें इसका पवित्र्य कम नहीं हुआ। यहांके गुरुपरंपरा और सिद्धान्त-रक्षाके
जिये यह स्थान जैन वार्षिक इतिहासमें सर्वत्र अमर रहेगा।

मूढविद्वीके पंडित छोकनाथजी शास्त्रीने मूढविद्वीक निम्न इतिहास लिखकर मेरठनेकी रूपा यी है। कलाही भाषामें बांसको 'विद्वि' कहत है। बांसोंके समूह को छंदकर यहकि सिखात मंदिरका पता लगाया गया था, जिससे इस ग्रामका 'मिद्वि' नाम प्रसिद्ध हुआ। फलानामें 'मूढ' का अर्थ पूरा दिशा होना है, और पश्चिम दिशाका बाणक शब्द 'पडु' है। यहाँ मूढका नामक प्राचीन ग्राम पडुविद्वि कहलाता है, और उससे पूर्वमें होनेका कारण यह ग्राम मूढविद्वि या मूढविद्वि कहलाया। बंग और बेणु शब्द बांस के पयापकाबी छानेसे इसका बेणुपुर अथवा बधपुर नामसे भी उल्लुभ किया गया है। अनेक नगी साधुओंका निवासस्थान होनेसे इसका नाम मठपुर या मठपुर भी पाया जाता है।

यहाँ की गुरुबसदि अग्रनाम सिखान्न बसदिके सम्बन्धमें यह दत्तकथा प्रकाशित है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यहाँपर बांसोंका सघन वन था। उस समय अरगबेखगुज (बैनविही) से एक निम्न मुनि यहाँ आकर पडुवस्ती नामक मंदिरमें रह्य। पडुवस्ती नामक प्राचीन बिनमंदिर अब भी वहाँ विद्यमान है, और उस मंदिरसे सेरुने प्राचीन ग्राम स्वर्गीय महत्कजीने मठमें विराजमान किये हैं। एक दिन उक्त निम्न मुनि जब बाहर शौचको गये थे तब उन्होंने एक स्थानपर एक गाय और व्याघ्रको परस्पर श्रद्धा करते देखा, जिससे वे अत्यन्त विस्मित होकर उस स्थानकी विशेष जांच पताछ करने लगे। उसी लोकाधीनके पक्षस्वरूप उन्हें एक बांसके भिरमें छुटी हुई व पथरों आदिसे घिरी हुई पाषाणय स्तूपीकी कुछ पाषाणय भी हाथ प्रमाण लङ्गासन मूर्तिके दर्शन हुए। तत्पश्चात् बैनियों केद्वारा उसका जीर्णोद्धार कराया गया, और उसी स्थानपर 'गुरुबसदि' का निर्माण हुआ। उक्त मूर्तिके पाषाणय उसको शक ६३६ (सन् ७१४) में प्रतिष्ठा किये जानेका उल्लेख पाया जाता है। उसके लगभग शरीरक (छक्का मंडप) सन् १५३५ में जोखेरीद्वारा निर्मापित किया गया था। इस बसदिके निर्माण का व्यय छह करोड़ रुपया कहा जाता है जिसमें संभवतः वहाँ की रणमयी प्रतिमाओंका मूल्य भी सम्मिलित होगा। इस मंदिरके गुप्तकालमें सुबगकउद्योगमें 'सिद्ध रस' स्थापित है, ऐसा भी कहने हैं।

एक विद्वान्ता है कि होशङ्कनेसे विष्णुवन्दने सन् १११७ में बैनज धर्म स्वीकार करके इसकी अथाह दोरसमुद्रमें अनेक दिन मन्त्रिरोध प्राप्त कर बाबा व बैनधर्मर जनक अथ अलाचार किये। उसी समय एक मयंकर मूषक हुआ और भूमि फटकर एक विशाल गड्ढा उत्पन्न होया, जिसका सब मरेका उक्त अलाचारोंसे बनलाया गया है। उनका उत्तराधिकारी गायुध और उनके पश्चात् वीर बडाउद्वन बैनियोंका शोमकी शान्त मरनर किये जब मन्दिरोध निर्माण, जमोदार, भूमिगत आदि अनेक उपय किये। वीर बडाउद्वन का अन्त राज्यमें शक्ति-स्थानाके किये अरगबेखगुसे मदारक बाइबुर्दिनी पहिनायापक अर्पित किया। वे दोरसमुद्र

महाबळकी प्रतिस्पर्धी शक्तिबोधर आपने ही अपने दो तीन सहयोगी विद्वानोंसहित उक्त प्रतिस्पर्धी पत्र पत्राचार की, और बहुमुख परिचय देनेकी कृपा की। हमारे प्रकाशित व प्रकाशनीय प्रकाशकोंका व्यापक प्रतिष्ठेसे मिशन भी आपके ही हाथ किया जा रहा है। आपको आपु इस समय पचास वर्षकी है। जगमग दस वर्षस यासकी व्यापिसे पीणित होते हुए भी आप साहित्यसेवाके कार्यसे विमोहित नही होते और प्रस्तुत सिद्धांतप्रकाशन कार्यमें वो आप अत्यंत तन्मयताके साथ जी छोड़कर सहयोग दे रहे हैं, जिसके मुक्त पाठक इस भागमें तथा आगे प्रकाशनीय भागमें देखेंगे।

२ मूढविद्वीका इतिहास

दक्षिण भारतका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रक्ता है। विष्णुवर जैन सम्प्रदायके अभिरुद्रा सुविस्मृत और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और प्रपञ्चर इसी प्रान्तमें हुए हैं। आचार्य पुण्यदत्त समन्तमद्र, पूनपाद, वीरसन विमसेम, गुणमद्र, मेमिचन्द्र, जामुण्डराय आदि महान् प्रपञ्चरोंने इसी भूमिकाके अर्कहत किया था।

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रान्तमें ही मूढविद्वी नामका एक छोटासा नगर है जो सत्प्रतिष्ठेसे जैनियोंका तीर्थस्थल बना हुआ है। कहा जाता है कि यहां जैनधर्मका विशेष प्रभाव सन् ११०० ईस्वीके जगन्ना होम्सुड-नरेश बल्लुवनेय प्रथमके समयसे बना। तेरहवीं शताब्दिमें यहांकी पार्श्वनाथ बसुदिके तुलुवके आधुन नरेशोंसे राज्यसन्मान मिला। पन्द्रहवीं शताब्दिमें विजयनगरके हिन्दू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष बढ़ी। शक १३५१ (सन् १५२९) के देवराय द्वितीयके एक सिक्केकेअंशसे पता चलता है कि बेलुपुर (मूढविद्वी) उसके मन्त्रालयके अधिपति है। वे छत्र चारित्र पाण्डे हैं, छत्र कार्य करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका भजन करते हैं। यहांके स्थानीय राजा भैरवसे अपने गुरु वीरसेन मुनिके प्रेरणासे यहांके बालनाथ मन्दिर को दान दिया था। सन् १४५१-५२ में यहांकी होस बसुदि (त्रिमुक्त सिक्क-मूढाधिप व बड़ा मन्दिर) का ' भैरवजी मन्दप ' नामसे प्रसिद्ध मुञ्जमण्डप विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्पेदेवरायके राज्यमें बनाया गया था। विष्णुवरा नरेश के राज्यमें उनके सामन्त विरारु वीरवर्मासे सन् १४७२-७३ में इसी बसुदिके मन्दिरदान दिया था। यहां सब सिक्काल व वररु बसुदि (विनमन्दिर) हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध ' गुरु बसुदि ' है जहां सिद्धान्त प्रपञ्चकी प्रतिष्ठा सुरक्षित है और जिनके कारण वह ' सिद्धान्त बसुदि ' भी कहलाती है। यह नगर ' जैन क्रांती ' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहां अब जीनियोंकी जनसङ्ख्या बहुत कम रह गई है, किन्तु जैन संस्कारोंमें इसका पवित्र्य कम नहीं हुआ। यहांकी गुरुपरम्परा और सिद्धान्त-रक्षाके लिये यह स्थान जैन चार्मिक इतिहासमें सदैव अमर रहेगा।

इस महापत्रक पर अमरीकन कोर्से प्रति प्रकाशने नहीं आए। किंतु हम सब यह आशा करते रहे हैं कि मूडबिंदीके सिद्धान्तमननमें जो महापत्रक नामकी कलाही प्रति ताइपस्त्रीपर तृतीय सिद्धान्तप्रम रूपसे सुस्थित है, वही भूतबसिकृत महापत्रक प्रम है। इस आशाका आधार अमरीकन केवल हमारा अनुमान ही था, क्योंकि मैं तो कोर्से परीक्षक विद्वान् उस प्रतिक अष्टीतल्ल खखोहन कर पाया था और मैं किसीने उसने कोर्से विलगत खखण्य आदि देकर उसका सुपरिचय ही करवाया था। उस प्रतिक जो कुछ बोझावा परिचय उपलब्ध हुआ था, वह मूड बिंदी प ओवलापत्री शास्त्रीकी कृपासे उनके बरिवाणीबिद्यास जैन सिद्धान्त मननकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९१५) के भीतर पाया जाता था। उस परिचयमें दिये गये महापत्रक प्रतिके प्रारम्भिक भागके सूक्ष्म खखोहनसे मुझे ज्ञात हुआ कि वह प्रत्यक्षना महापत्रक खखनी नहीं है, किंतु सतकम्मेके अन्तर्गत शेष अत्यन्त अनुपयोगशायकी एक 'पत्रिका' है, जिसे उसने कर्ताने 'पत्रिकाके विवरण सुमहत्त्व' कहा है। उन अवतरणोंसे महापत्रक कहा कोर्से पता नहीं चला। मैंने अपनी इस आशङ्कके एक छेकके द्वारा प्रकट किया और इस बातकी प्रत्या की कि महापत्रककी प्रतिक हीप्रही परपत्रोचन किया जाता चाहिए और महापत्रक पता ठगानेका प्रयत्न करना चाहिये। इस छेकके फलस्वरूप मूडबिंदीमटके महारकस्वामी व पत्रोंने उस प्रतिकी वाचकी स्पष्टता की, और शीघ्र ही मुझे वाराहवा सुचित किया कि महापत्रक प्रतिक मौल्य सम्पन्न-पत्रिका भी है, और महापत्र भी है। तत्पश्चात् कहासे प ओवलापत्री शास्त्रीका सप्रद किये हुए उस प्रतिमेंके अनेक अवतरण भी मुझे प्राप्त हुए, जिनपरसे महापत्रक प्रतिके अन्तर्गत प्रत्यक्षनाका यह कुछ परिचय करवाया जाता है।

२ संस्कारपरिचय परिचय

महापत्रक प्रतिके अन्तर्गत प्रत्यक्षनाके आदिमें 'सतकम्पत्रिका' है, जिसकी उपानिचय का अवतरण अनेक छदियोंसे महत्पूर्ण है। यद्यपि यह अवतरण पूर्व प्रकाशित धवकाके दोनों भागोंकी भूमिकाओंमें प्रकाशान् उद्भूत किया जा चुका है, तथापि वह उस रिपोर्टपरसे किया गया था, और कुछ प्रुष्टित था। अब यह अवतरण हमें इस प्रकार प्राप्त हुआ है।

बोध्यमि सतकम्पे पत्रिकाके विवरण सुमहत्त्व।

" महाकम्पत्रिकादिद्वयम् यदिवेदनागो (वि-) चरणीसमन्वितागारांमु तत्र करिवेदना वि जानि अविर्भावरागि वेदनापदविद्वि दुगी पात्रकम्पत्रिकादि-वचन चकारि अविचोरागोमु तत्र वच-वच, मित्रागामिनिर् मेहि सह वगाग्यवैदवि दुषो वचविचानावविचोरागो महापत्रकम्पि दुषो वचपाविचोरागो मुस वचविद्वि अत्रवेदने वचविद्वि। दुषो वेदनी सतकम्पत्रिकादिगारागि सतकम्पे मचपमि वचविद्वि। की वि वराहवापत्रीकादि अचरिचमवराहवापत्री वचविद्वि वचविचानाव विचिवागो। "

इस उपानिचयसे सिद्धान्तप्रचारे सम्बन्धमें हमें निम्न विविध अत्यन्त उपयोगी और महत्पूर्ण सूचनाएं बहुत स्पष्टतासे मिल जाती हैं—

पाहुने और उन्होंने अपनी विद्या व सुविधिके प्रभावसे वहाँका सब उपद्रव दूरित किया, जिससे जैन-धर्मकी जगदी प्रभावना हुई। इसका कुछ ठोके बिल्लोकी शासन केबने भी पापा जाता है, जो इस प्रकार है—

कर्मादक सिद्धिद्वयवाचीवर वसुधायने प्रविष्टि की यावदीर्घिर्दिवाच्यर्षि रंत कीर्तिव वदेवर,

तिवें रावचरेंतु है—

कचरिदरि उच्च संवत्तपतिविधिपरं ॥

तुंयकचरि सुखु व—

व वदेरेकचने रंदिवाचने भों ॥

योरसमुद्रसे चाइकीर्तिजी म्हापराज अपने शिष्योसहित मूडिजी जाये और उन्होंने वहाँ गुहरीठ (महारक गरी) स्थापित की, वहाँ जाते समय उन्होंने पासही गरुडर प्राप्ति भी म्हापराज गरी स्थापित की थी, किन्तु वर्तमानमें वहाँ कोई जगम म्हापराज नहीं है, वहाँके मठका सब प्रभाव मूडिजी मठसे ही होता है। यह मूडिजीमें म्हापराज गरी स्थापित होनेका इतिहास है, जिसका समय सन् ११७९ ईस्वी कथनाया जाता है। तबसे म्हापराजका नाम चाइकीर्ति ही रखा जाता है, यद्यपि उसके साथ साथ कुछ लघु नामों, जैसे वर्तमानसागर, जन्मलसागर, मेमि-सागर आदिका भी ठोके पाया जाता है। वक्कणि सिद्धांत प्रयोगकी प्रविष्टि वहाँ भारवाड म्हापराज वक्कणपुरसे कार्य गई ऐसी भी एक जनश्रुति है। इस मठसे दक्षिण कर्नाटकमें जैनधर्मका ध्रुव प्रचार व उपरि हुई। वर्तमानमें मठकी सुप्रसिद्धि वार्षिक आप जगमगा दस हजारकी है।

३ महापराजकी खोज

१ खोजका इतिहास

पदच्छायापत्र सामान्य परिचय उसके प्रथम दो भागोंमें प्रस्तुतित भूमिकाओंमें, दिया जा चुका है। वहाँ, इस कथना जाये है कि बरसेनाचार्यसे जागमूखा उपदेश पत्रक मुद्रादन्त और मूलकति आचार्योंने उसकी छह कठोंमें प्रचारवना की, जिसमेंसे प्रथम पाँच खंड उपकम्प्य कीवचरके प्रतियोंके अन्तर्गत पाये जाते हैं और छठे खंड म्हापराजके सम्बन्धमें अवका तथा अप-वचकमें यह सूचना पाई जाती है कि महापराज स्वयं मूलकति आचार्यका रखा हुआ मन्त्र है, उसमें वचविचलके चार प्रकरणों प्रकृति, स्थिति, अनुमाग और प्रवेश का सूत्र विस्तारसे वर्णन किया गया है, तथा यह वर्णन इतना विस्तार और सर्वगम्य हुआ कि स्तिष्टुपम और वीरसेन जैसे आचार्योंने अपनी अपनी प्रचारवनामें उसकी सूचनालाभ दे देना पर्याप्त समझा उस विचपर और कुछ विशेष कथनेकी उन्हें गुह्यपरा नहीं लीकी।

१ देखो कोपलाभावालीकृत सूत्रविशेष चरित (कम्पनी)।

२ देखो प्रथम अध्याय भूमिका पृ. ११ पंक्ति. व. ३. तथा भूमिका पृ. १५ पंक्ति.

इस प्रकरणके मिथानके छिपे हमने बीरसेन स्वामीके बचसान्तर्गत निम्नधन अधिकारको निकटा । वहाँ आदिमें ही निबधनके छह निधेपोंका कथन विद्यमान है और उनमें तृतीय दम्प-निधेपका कथन शम्भुदाः ठीक बही है जो पत्रिकाकारने अपने वर्ष देनेसे ऊपरकी पंक्तिमें उद्धृत किया है और उसीका उन्होंने वर्ष कहा है । यथा—

निर्वचयेति जन्मिषोराहुरे निर्वचनं ताव अपचरानिबन्धनिराकरन्तुं निरिच्छविचनं । तं ब्रह्म-
न्यननिर्वचनं, उचननिर्वचनं, दृषननिर्वचनं, शैलनिर्वचनं, कालनिर्वचनं भावनिर्वचनं चेदि कश्चिद् निर्वचनं
हेति ।

इसके पश्चात् नाम और स्थापना निर्वचनका स्वरूप कथनया गया है और उसके पश्चात् दम्पनिर्वचनका कर्णन इस प्रकार है—

तं दम्पं नापि दृषानपि अस्मिन्नुप परिचयमपि, अस्त वा स्रष्टस्स (दम्पस्स) सहायो
दम्पतरपडिबन्धो तं दम्पनिर्वचनं । (बचका क प्रति वन १२६)

प्रतिमें 'स्रष्टस्' पद अशुद्ध है, वहाँ 'दम्पस्स' पाठ ही होगा चाहिए । वहाँ वाक्यके ये शब्द 'अस्त वा दम्पस्स सहायो दम्पतरपडिबन्धो' ठीक वे ही हैं, जो पत्रिकामें भी पाये जाते हैं, और वहाँ शब्दोंका पत्रिकाकारने 'एष बीजदम्पस्स सहायो गणार्दसणामि' आदि वाक्योंमें वर्ष किया है । यथार्थतः कितना वाक्यांश पत्रिकामें उद्धृत है, उसने परसे उसका वर्ष व्यवस्थित करना कठिन है । किन्तु बचकाके उक्त पूरे वाक्यको देखनेमात्रसे उसका रहस्य एकदम लुप्त जाता है । इसपरसे पत्रिकाकारकी हैमी यह जान पड़ती है कि आधारग्रन्थके शुभम प्रकरणको तो उसके अन्तिमकी सूचनामात्र देकर छोड़ देना, और केवल कठिन स्वर्णोंका अभिप्राय अपने शब्दोंमें समझाकर और उसी सिक्किमें मूकके विच्छिन्नपदोंको लेकर उनका वर्ष कर देना । इस परसे पत्रिकाकारकी उस प्रतिज्ञाका भी स्पष्टीकरण हो जाता है, वहाँ उन्होंने कहा है कि पश्चात्तर्गाभीरत्तरो जन्मविषयपदान्मन्ये धोरुद्वयेन पंचिषसक्तेन मयिस्सामो अपात्तुं उन अत्यन्त अनुयोगशायीका विषय बहुत गहन होनेसे हम उनके वर्षकी दृष्टिसे विषयपदोंका ध्यात्म्यान् करते हैं, और ऐसा करनेमें मूकक केवल पोडिसे उद्धरण छेगे । यही पत्रिकाका स्वरूप है । मूकग्रन्थके वाक्योंको अपनी वाक्यपरचनानों लेकर वर्ष करते जाना अन्य टीकाग्रन्थोंमें भी पाया जाता है । उदाहरणार्थ, विद्यानन्दिकृत आद्यसहस्रीमें एकत्रकदेवकृत लक्ष्मणी इसीप्रकार गुपी हुई है । पत्रिकाकी यह विशेषता है कि उसमें पूरे ग्रन्थका समावेश नहीं किया जाता, केवल विषयपदोंको ग्रहण कर समझाया जाता है ।

सत्कर्मपथिकाके उक्त अक्षरणके पश्चात् शास्त्रीजीने लिखा है—

“इस प्रकार छह दम्प्योंके पर्यायान्तरका परिजमन विद्यान विचार होनेके बाद निम्न प्रकार प्रतिज्ञा वाक्य है—

अथदि पञ्चमादिवास्तव उचस्तपञ्चमदम्पस्स उचन्वावहुगविचरनं कस्तामो । तं ब्रह्म-न्यनचरका-
न्यनस्स उचस्तपञ्चमदम्पं नीरं । कुरो ? इत्यादि ।

१ महान्तर्मप्रवृत्तिपञ्चकके चौबीस अनुयोगश्रौतोंसे प्रथम हो अर्थात् इति और वेदना, वेदनाखण्डके अन्तर्गत रहे गये हैं। फिर अगले स्पर्श, कर्म, प्रवृत्ति और बंधनके चार भेदोंमेंसे बंध और बंधनीय वर्गणाखण्डके अन्तर्गत है। बन्धविधायन महावचनका विषय है, तथा बंधक सुरुत्तम खंडमें सन्निहित है। इस स्पष्ट उल्लेखसे हमारी पूर्ण वतर्कार्थ हुई। सब ध्येयस्वाकी पूर्वतः पुष्टि हो जाती है, और वेदनाखण्डके भीतर चौबीसों अनुयोगश्रौतोंसे मानने तथा वर्गणाखण्डके उपखण्ड भ्रमणाक्षी प्रतियोगके भीतर नहीं माननेवाले मतका अग्रणी तरह निरस्त हो जाता है।

२ उक्त छह अनुयोगश्रौतोंसे शेष अठारह अनुयोगश्रौतोंकी प्रम्पराचनाका नाम सत्कर्म (सत्कर्म) है और इसी सत्कर्मके गम्भीर विषयसे स्पष्ट करनेके लिए उसके बोधे बोधे अबतारा केकर उनके विषयपदोंका अर्थ प्रस्तुत प्रथम पञ्चिकारूपसे समझाया गया है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शेष अठारह अनुयोगश्रौतोंसे वर्णन करनेवाला यह सत्कर्म प्रथम कैसा है? इसके लिए सत्कर्मपञ्चिकारूप आगेका अबतारा देखिए, जो इस प्रकार है

से कहा। उक्त वाच जीवद्वयस्य योग्यकवचमवच्छेदित पञ्चाक्षेण परिकल्पयित्वा उच्यते—जीवद्वयं पुष्टिं संघट्टीतीती मुनकवीती चेति। अत्र सिध्यतासंभमकसाचबोधि परिमृष्टसंघट्टीतीती जीव-मय विद्य-योग्यक विद्यावृत्तकमवच्छेदोपपत्ति संनिष्ठं चत्वा वैदितो ह्युत्पन्न-कविहृदकमवच्छेदपञ्चाक्षमवच्छेदविधौ संघट्टीतीतीती परिकल्पिते। अत्रैतं पञ्चाक्षं परिकल्प्य योग्यकविचयं होति। इतो मुनकवीदस्य एवं विच-निवचनं कवि विनु कल्पयित्वा पञ्चाक्षं गच्छति। पुन्ये—

अस्तु वा दृष्टव्यं सहायो ब्रह्मवैतपरिचयो इति।

दृष्टव्य-जीव-एव जीवद्वयस्य प्रवृत्ति आत्मवैतपरिचय। पुन्ये पुष्टिद्वयोपानं आत्मवैतपरिचयविचयं वैदितो परिचित-जीवयोग्यवि-व्यवस्थानं परिचयैवकसाचबोधि पञ्चाक्षवैतपरिचयविचयं होति। एवं ईदं वि चत्वर्य।

यहां पञ्चिकारूप कहते हैं कि यहाँपर अर्थात् इनके आधारभूत प्रत्येक अठारह पञ्चिकारूपोंमें प्रथम अनुयोगाद निबन्धनकी प्रकल्पना सुगम है। विशेष केवल इतना है कि उस निबन्धनका विशेष छह प्रकारसे कल्पना गया है। उनमें तृतीय अर्थात् दम्पनिष्ठपके स्वकर्मप्रकार पनामें आचार्य इस प्रकार कहते हैं। जिसका सुखसा यह है कि यहाँ पर पुनरुद्भवके अवक-वनसे जीवद्वयके पर्यायोंमें-परिणमन निबन्धन कल्पन किया जाता है। जीवद्वय दो प्रकारका है, संघटी व मुक्त। हमें सिध्दात्त, असयम, कचाप और योगसे परिणत जीव संघटी है। वह जीवविशुद्धी, मधुरियाक्षी क्षेत्रियाक्षी और पुनरुद्भवक्षी कर्मसुखबोधके बांधकर अन्तर इनके निमित्तसे पूर्णतः छह प्रकारके फलरूप अनेक प्रकारकी पर्यायोंमें संसरण करता है, अर्थात् निरत है। इन पर्यायोंका परिणमन पुनरुद्भवके निमित्तसे होता है। पुनः मुक्तजीवके इस प्रकारका परिणमन नहीं पपा जाता है। किन्तु वह अपने स्वभावसे ही पर्यायांतरको प्राप्त होता है। ऐसी स्थितिमें 'वस्तु वा दृष्टव्यं सहायो दम्पनिष्ठपक्षो इति' अर्थात् 'वस्तु दम्पकत्वं स्वभाव दम्पनिष्ठपक्षे प्रतिबद्ध है' इति।

ओ सो कम्मोववकमो सो चउत्तिवहो बंभवउववकमो उदीरणउववकमो उवसामणउववकमो विप
 रिणमउववकमो भेदि । ओ सो बंभवउववकमो सो चउत्तिवहो पवडिववउववकमो सिदिबंभवउववकमो
 जजुमापवववउववकमो पवसवववउववकमो भेदि । -- एव पुरोहिं चउत्तिवहवववमं अहा संतकम्मपपडि
 पाहुं पकविं तथा पकयेवव । अहा महावे पकविं तथा पकववा एव किंन कीरे ? अ, एव
 पवसवववववमि वैव वावाराहो । अ च एवैव ओत्तुं सुत्तं पुणववववववववववव । (अवका क. पत्र १२१०)

यहाँ जो बचनके चारों उपक्रमोंका प्ररूपण महाबचके अनुसार न करके सतकम्प-पाइडके अनुसार करमेका निर्देश किया गया है, उसीका पचिकरकारने स्पष्टीकरण किया है कि महाकम्पपयडिपाइडके किल किन विशेष अधिकारोंसे यहाँ सतकम्पपाइड पदशरा अभिप्राय है ।

पबिकामें उपक्रम अधिकारके पश्चात् उदयअनुयोगद्वाराका रूपमें है जैसा उसके व्यक्तिम
भागके अवतरणसे सूचित होता है । पया—

उद्भवविशेषात्तं यत् ।

यह कि कोई विशेष अवतरण हमें उपलब्ध नहीं हुए । अतः प्रकाशसे मिलान नहीं किया जा सका । तथापि उपक्रमके पश्चात् उदय अनुयोगशालका प्ररूपण तो है ही । उक्त पंथिका यही सम्पन्न हो जाती है । इससे ज्ञान पड़ता है कि इस पंथिकामें केवल निबन्धन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय, इन्हीं चार अवधारणोंका विवरण है । शेष मोक्ष आदि बौद्ध अनुयोगोंका उसमें कोई विवरण नहीं है । इससे ज्ञान पड़ता है कि यह पंथिका भी अपूर्ण ही है, क्योंकि पंथिकामें उत्पानिकामें दी गई सूचनसे ज्ञात होता है कि पंथिकाकार शेष अवधारणों अवधारणोंका पंथिका करनेवाले थे । शेष सम्प्रमाण उक्त प्रतिमें दृष्टा हुआ है, या पंथिकाकारशाल ही किसी कारणसे रचा नहीं गया, इसका निर्णय वर्तमानमें उपलब्ध सामग्री परसे नहीं हो सकता ।

यह पश्चिम किसकी रानी हुई है, कब रानी गई, इत्यादि खोजपात्र सामग्रीय भी अभी अभाव है। पश्चिम प्रतिकी जन्तिम प्रणति निम्न प्रकार है—

श्री विष्णुसहस्रनामस्तु वरु-

ननुदयम् सन्धात्रदाननिरुतं सम्भ-

कनकनिधायं क्रिपे बभूव-

ममसिद्धमेव द्वाविंशत्यनेनैव धीरवीजम् ।

... .. मन्त्रलिखितेति सम्प्रदायं वचिषं विल्लरति ध्यामावर्ण/रुद्रजिमे वरेनिर्दि राग्यदि सातिनाथं ॥

बहुरिपुमुददि सान्ध-

मैत्र ईशियवपुत्रमात्मीयिराजमुखा-

ब्रह्मे बरेबिमि ध्याण्णं

मद्रसहितं शास्त्रमिदमनिरतिपिपितं ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री शिवाय नमः ॥

पं. लोकनाथजी साहनीजी सूचनानुसार इस "अन्तिम प्रशस्तिमे दो तीन बगनईसों

जो सो कमोदकको सो चरित्रही, बंधनबन्धको इतिवन्धको उदयसमयवन्धको विप
रित्यमवन्धको चेदि । जो सो बन्धनवन्धको सो चरित्रही पथिकबन्धनवन्धको विविबंधनवन्धको
बन्धनबन्धनवन्धको पदसंबन्धनवन्धको चेदि । ... एष पुरेति चरित्रवन्धनवन्धन जहा संतकम्पपयहि
पाहुने पदधिई तहा पदुबेपथ्य । जहा महाबन्धे पदुबिई, तहा पदुबन्ध एष किन्तु कीरे । ए, तस
वन्धनसमबन्धनमि केव बाबागरी । नच तमेच बोहुं छुं पुनरुपलक्षणेसंगमागे । (बन्धन क. पत्र १२१७)

यहां जो बन्धनके चारों उपक्रमोंका प्ररूपण महाबन्धके अनुसार न करके सतकम्प-
पाहुनके अनुसार करकेका निर्देश किया गया है, उसीका पथिककारने स्पष्टीकरण किया है कि
महाकम्पपयहिपाहुनके किन् किन् विशेष अधिकारोंसे यहां सतकम्पपाहुन पद्धति अमिप्राय है ।

पथिकामें उपक्रम अधिकारके पश्चात् उदयअनुयोगद्वारा कथन है जैसा उसके अन्तिम
भागके अवतरणसे सूचित होता है । यथा—

बन्धनविरोधहारं यत् ।

यहांके कोई विशेष अवतरण हमें उपलब्ध नहीं हुए । अतः बन्धनसे मिथान नहीं किया
जा सका । तथापि उपक्रमके पश्चात् उदय अनुयोगद्वाराका प्ररूपण तो है ही । उक्त पथिकय यही
सम्पन्न हो जाती है । इससे ज्ञान पड़ता है कि इस पथिकमें केवल निबंधन, प्रक्रम, उपक्रम
और उदय, इन्हीं चार अधिकारोंका विवरण है । शेष मोक्ष आदि चौन्हा अनुयोगोंका उसमें कोई
विवरण यहां नहीं है । इससे ज्ञान पड़ता है कि यह पथिक भी अपूर्ण ही है, क्योंकि पथि-
काकी उत्पत्तिकामें ही गई सूचनासे ज्ञात होता है कि पथिककार शेष अवतरणों अधिकारोंकी
पथिका करनेवाचे थे । शेष ग्रन्थमाग उक्त प्रतिमें छूटा हुआ है, या पथिककारद्वारा ही किसी
कारणसे रचा नहीं गया, इसका निर्णय वर्तमानमें उपलब्ध सामग्री परसे नहीं हो सकता ।

यह पथिक किसकी रची हुई है, कब रची गई, इत्यादि खोजने सामग्रीका भी अभी
अभाव है । पथिक प्रतिकी अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री विमलवन्दनकमपुत्र-
वन्दनम संपादकद्वाराकृतं सम्म-

कवचिद्वन्दनं विदे वन्द-

मन्त्रिजनेनै वातिमान मेसेई चरित्रम् ॥

चरित्रम् पुरात्रिपुरारं चरित्रमिन्द्रावन्धनं सारिपथ्यं तद्विच मेनिमि चरित्रमिन्द्रावन्धनं

... मन्त्रिजनेनै वातिमान मेसेई चरित्रम् ॥

बन्धनविरोधहारं यत् ।

मन्त्रिजनेनै वातिमान मेसेई चरित्रम् ॥

मन्त्रिजनेनै वातिमान मेसेई चरित्रम् ॥

मन्त्रिजनेनै वातिमान मेसेई चरित्रम् ॥

मन्त्रिजनेनै वातिमान मेसेई चरित्रम् ॥

श्री माधवदेविकावन्धनं सन्धनं चरित्रं मन्त्रिजनेनै वातिमान मेसेई ॥ मन्त्रिजनेनै ॥

१. लोबनापनी शास्त्रीकी सूचनामुसार इस “ अन्तिम प्रशस्तिमें दो तीस बरनईमें

‘यमो अरहंताय’ इत्यादि

एकी द्विर्विचो वृषिचो मूकपगविद्विर्विचो चैव उत्तरपगविद्विर्विचो चैव । एतौ मूकपगविद्विर्विचो वृषवदमजिचो । तस्य इमामि अचारि अन्विचोयाराणि आरुचानि मर्चति । तं अहा—द्विर्विचमन्वयवचना निवेद्यपकवया अज्ञाकवचपकवया अस्यावदुतेति । एवं अचो द्विर्विचप्यवदुर्गं समर्थं । एवं मूकपगविद्विर्विचो (वे) अरहंतायमजिचोयारां समर्थं ।

मुद्रपारमं चैति । ..

‘इसप्रकार मुद्रपारमं प्रारम होकर काछ, अन्तर इत्यादि अस्पष्टद्वय तक जाता गया है ।’

एवं जीवसमुद्राहरेति समस्तमजिचोयाराणि । एवं द्विर्विचं समर्थं ।

वचविधानके इस स्थितिवचनात्मक द्वितीय प्रकारका भी कुछ परिचय अवका प्रथम भागसे मिलता है । पृ १३० पर कहा गया है—

द्विर्विचो वृषिचो, मूकपगविद्विर्विचो उत्तरपगविद्विर्विचो चैति । तस्य ओ सो मूकपगविद्विर्विचो सो ज्यो । ओ सो उत्तरपगविद्विर्विचो तस्त अरहंताय अन्विचोयाराणि । तं अहा—अज्ञाकचो सचमर्थो इत्यादि ।

यहां स्थितिवचके मूद्रप्रवृत्ति और उत्तरप्रवृत्ति, इसप्रकार दो भेद करके उनमेंसे प्रथमको अवग्रह होनेके कारण छोड़कर प्रस्तुत्योग्यो द्वितीय भेदके चौबीस अनुयोगद्वारा बतकाये गये हैं । इनसे पूर्वोक्त महाभयचक्रकी रचनाके महाभयसे संबंधकी सूचना मिलती है ।

यह स्थितिवच ताडपत्र ५१ से ११३ अर्थात् ६३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

इनसे आगे महाभयचक्रमें क्रमस्त अनुभागबंध और फिर प्रदेशबंधका विवरण पाया जाता है । यथा—

एवं जीवसमुद्राहरेति समस्तमजिचोयाराणि । एवं उत्तरपगविजमुद्राभाचो समर्थो । एवं अनुभाचमर्थो समर्थो । × × × ×

ओ सो पदेसबंधो सो वृषिचो मूकपगविपदेसचो चैव उत्तरपगविपदेसचो चैव । एतौ मूकपगविपदेसबंधो वृषं यमजीचो मातामागसमुद्राहरो अद्रुविचमन्वयस्त आरुचामाचो × × × × एवं अस्यावदुर्गं समर्थं । एवं जीवसमुद्राहरेति समस्तमजिचोयारां । एवं पदेसबंधं समर्थं ।

एवं बंधविचमर्थेति समस्तमजिचोयारां । एवं अद्रुचो समर्थो मर्चति ।

अनुमगमबंध ताडपत्र ११४ से १६९ अर्थात् ५६ पत्रोंमें, व प्रदेशबंध १७० से २१९ अर्थात् ५० पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

यही महाभयचक्र प्रतिकी प्रपरचना समाप्त होती है । इस संक्षिप्त परिचयसे स्पष्ट है कि महाभयचक्र प्रतिके उत्तर भागमें बंधविधानके चारों प्रकारों—प्रवृत्ति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशचक्र विस्तारसे वर्णन है, तथा उनके भेद-प्रभेदों व अनुयोगधारोंका विवरण बंधादि प्रभेदों से संश्लेषित नियम-विधानके अनुसार ही पाया जाता है । अतएव यही मूलबन्धि आचार्यमहत् महाबंध हो सकता है । इमाम्पठः इसके प्रारम्भका ताडपत्र व्यग्रप्य होनेसे तथा पर्येय अक्षरका न मिलनेसे कितनी बेसी आश्चर्य उत्पन्न होगी मंत्रकी फिर भी नहीं हो सकती । तथापि अनुमगमबंध-विधानकी सम्पत्तिके

पश्चात् प्रतिमें जो पांच छद्म कलाओंके कर्तृ-पत्र पत्र पाये जाते हैं, उनमेंसे एक शास्त्रीजीने पूरा उद्धृत करके भेजनेकी कृपा की है, जो इस प्रकार है—

सर्वकर्मसिद्धिमुत्तम—

प्रकटितवर्तमाने मल्लिकार्जुने बोधि प्रभु—

स्वात्म-महाबोधक पु—

सर्वं श्रीमाधवभक्तिसुमिषिणि गिरिज

इस पद्यमें कहा गया है कि श्रीमती मल्लिकार्जुना देवीने इस संपुण्याकर महाबोधकी पुरतक-को लिखाकर श्रीमाधवभक्त मुनिको दान की। यहाँ हमें इस पद्यके महाबोध होनेका एक महत्वपूर्ण प्राचीन उल्लेख मिल गया। शास्त्रीजीने सूचनानुसार केवल कलाही पद्योंमेंसे दो तीनोंमें माधवभक्तार्थके गुणोंकी प्रशंसा की गई है, तथा दो पद्योंमें शान्तिसेन राजा व उनका पत्नी मल्लिकार्जुना देवीका गुणगाण है, जिससे महाबोध प्रतिज्ञा दान करनेवाली मल्लिकार्जुना देवी किसी शान्तिसेन नामक राजाकी पत्नी सिद्ध होती हैं। ये शान्तिसेन व माधवभक्त निःसंदेह वे ही हैं जिनका सम्बन्धमल्लिकार्जुना प्रकटितमें भी उल्लेख आया है। प्रतिके अन्तमें पुन ५ कलाओंके पत्र हैं जिनमेंसे प्रथम चारों माधवभक्त मुनीन्द्रकी प्रशंसा की गई है व उन्हें 'वृत्तिपति' 'कृतनाथ' व 'वृत्तिपति' तथा 'सैशान्तिकप्रसेसर' जैसे विशेषण लगाये गये हैं। पाँचवें पद्यमें कहा गया है कि रूपवती सेनबहूने श्रीपद्मभक्तके उवाचनके समय (यह शब्द) श्रीमाधवभक्त वृत्तिपतिको प्रदत्त किया। पद्य—

जीवन्मृतं श्रीपद्मभक्तके भक्ति बोधि राजावतना।

रूपवती सेनबहू शान्तिसेन श्रीमाधवभक्त वृत्तिपति विभक्त ॥

यहाँ सेनबहूसे शान्तिसेन राजाकी पत्नीका ही अभिप्राय है। नामके एक भागसे पूर्व-भागसे सूचित करना सुप्रसङ्गित है।

यह अन्तकी प्रकटित बीरबलीविद्यास वैदिसिद्धान्त मन्त्रकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९१५) में पूर्ण प्रकाशित है।

उक्त परिचयमें प्रतिके लिखने व हस्त लिखे जानेका कोई समय नहीं पाया जाता। शान्तिसेन राजाका भी इतिहासमें जल्दी पता नहीं लगता। माधवभक्त नामके मुनि अनेक हुए हैं जिनका उल्लेख भगवद्भक्तिका आदिके लिखनेवालोंमें पाया जाता है। जब शान्तिसेन राजाके उल्लेखदि सन्तकी पूर्ण पत्र प्राप्त होगे, तब और और उनके सम्बन्धिके निर्णयका प्रयत्न किया जा सकेगा।

हम ऊपर कहा करते हैं कि इस प्रतिमें महाबोध एवमन्त्रके प्रारम्भका पत्र २८ का नहीं है। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार प्रतिमें पत्र नं० १०९, ११४, १३९, १४४, १४६, १४७, १८९, १८४, १८९, १८८, १९७, २०८, २ १ और २१२ भी नहीं हैं। इसका कारण कुछ १६ पत्र नहीं मिल रहे हैं। किन्तु शास्त्रीजीकी सूचना है कि कुछ लिखित वाक्य पत्र बिना पत्र-संख्याके भी प्राप्त हैं। संभव है यदि प्रयत्न किया जाय तो इनमेंसे उक्त छुटिकी कुछ पूर्ति हो सके।

४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति पर कुछ और प्रकाश

प्रथम भागकी प्रस्तावनामें^१ हम वर्तमान प्रथम भाग अर्थात् द्रम्यप्रमाणप्रमाणोंमें के तथा अन्यत्रसे तीन चार ऐसे अवतरणोंका परिचय करा चुके हैं जिनमें 'उत्तरप्रतिपत्ति' और 'दक्षिण-प्रतिपत्ति' इसप्रकारकी दो भिन्न भिन्न मान्यताओंका उल्लेख पाया जाता है। वहाँ हम कह जाये हैं कि 'हमने इन उल्लेखोंका दूसरे उल्लेखोंकी अपेक्षा कुछ विस्तारसे परिचय इस कारणसे दिया है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तिकी मतभेद अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है। समझ ले हमसे कदाकारका तात्पर्य जैनसम्प्रदायके भीतरकी किन्हीं विशेष सांप्रदायिक मान्यताओंसे ही हो' यहाँ हमारा संकेत यह था कि संभवतः यह श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यता भेद हो और यह बात उक्त प्रस्तावनाके अन्तर्गत अग्रेसरी दृष्टिकोणमें मैंने व्यक्त भी कर दी थी कि—

At present I am examining these views a bit more closely. They may ultimately turn out to be the Svetambara and Digambara Schools."

उक्त अवतरणोंमें दक्षिणप्रतिपत्तिकी 'पवाइज्जमाण' और 'आपरियपरपरागम्य' भी कहा है। अब भी नयनबलमें एक उल्लेख हमें ऐसा भी दृष्टिगोचर हुआ है जहाँ 'पवाइज्ज' तथा 'आपरियपरपरागम्य' का स्पष्टार्थ खोजकर समझाया गया है और अजमईसुके उपदेशको वहाँ 'अपवाइज्जमाण' तथा नागहस्ति क्षमाभरणके उपदेशको 'पवाइज्ज' बतलाया है। यथा—

जो कुछ पवाइज्जंतीवपत्ती नाम कुछमेरे? सत्त्वाहरिबसम्भको चिरकममवरोपिज्जमसंभवत्तकमेवा-
नपञ्चमाओ ओ सिस्सपरिगार पवाइज्जदे पण्यविगदे सो पवाइज्जंतीवपत्ती ति भणन्दे। अवका अजमईसु-
मपर्वताम्मुबपत्ती पत्तापवाइज्जमाओ नाम। जयहस्तिज्जवज्जम्मुबपत्ती पवाइज्जंती ति वैचम्भो।

(अपवका अ. पत्र ९, ८)

अर्थात् वहाँ जो 'पवाइज्ज' उपदेश कहा गया है उसका अर्थ क्या है? जो सर्व आचार्योंको सम्मत हो, भिरकज्जसे अम्पुविज्जसप्रदाय-कमसे आया हो और शिष्यपरंपरासे प्रचलित और प्रस्थापित किया जा रहा हो वह 'पवाइज्ज' उपदेश कहा जाता है। अवका, मगवान् अजमईसुके उपदेश वहाँ (प्रकृत विषयपर) 'अपवाइज्जमाण' है, तथा नागहस्ति क्षमक उपदेश 'पवाइज्ज' है, ऐसा प्रमाण करना चाहिये।

अजमईसु और नागहस्तिके भिन्न मतोपदेशोंके अनेक उल्लेख इन सिद्धान्त प्रश्नोंमें पाये जाते हैं, जिनकी कुछ सूचना हम उक्त प्रस्तावनामें दे चुके हैं। ज्ञान पड़ता है कि इन दोनों आचार्योंका जैनसिद्धान्तकी अनेक सूत्रों पर मतभेद था। जहाँ श्वेताम्बरस्वामीके समुक्त ऐसे मतभेद उपस्थित हुए, वहाँ जो मत उन्हें प्राचीन परंपरागत प्राप्त हुआ, उसे 'पवाइज्जमय' कहा।

पश्चात् प्रतिमें जो पत्र छह कनाबीके कंद—बूट पत्र पाने जाते हैं, उनमेंसे एक शास्त्रीजीने पूरा उद्घृत करके भेजनेकी हुंमा की है, जो इस प्रकार है—

सप्तमभिरित्रीविभुत—

मधुरितपत्रीमो मरिक्कम्ब बोरि छन्द—

प्राकर—महाबंघव पु—

सकं श्रीमाधनदिसुविपति रिपव

इस पद्यमें कहा गया है कि श्रीमती मरिक्कम्बा देवीने इस सत्पुण्याकर महाबंघकी पुस्तक-को भिक्षाकर श्रीमाधनदि मुनिसे दान की। यहां हमें इस ग्रन्थके महाबंघ होनेका एक महत्त्वपूर्ण प्राचीन उल्लेख मिल गया। शास्त्रीजीने सूचनानुसार सेव कनाबी पत्रोंमेंसे दो तीनोंमें माधनप्याचार्यके गुणोंकी प्रशंसा की गई है, तथा दो पत्रोंमें शास्त्रिसेन राजा व उनकी पत्नी मरिक्कम्बा देवीका गुणगान है जिससे महाबंघ प्रतिक्रिया दान करनेवाली मरिक्कम्बा देवी किसी शास्त्रिसेन नामक राजाकी पत्नी सिद्ध होती है। ये शास्त्रिसेन व माधनदि मिःसनेह ने ही हैं जिनका सचर्मपरिकरानी प्रशस्तिमें भी उल्लेख जाया है। प्रतिके अन्तमें पत्र ५ कनाबीकी पत्र है जिसमेंसे प्रथम चारमें माधनदि मुनीश्वकी प्रशंसा की गई है व उन्हें 'यतिपति' 'वतनाथ' व 'वतिपति' तथा 'सैशान्तिकप्रसेसर जैसे विरोधण करण्ये गये हैं। पाँचवें पत्रमें कहा गया है कि रूपकरी सेनकपूने श्रीपञ्चमीश्वके उद्यापनके समय (पह शास्त्र) श्रीमाधनदि वतिपतिके प्रदान किया। यथा—

श्रीलक्ष्मिर्षं श्रेष्ठप्राप्यैवं मरिक्क बोरि रत्नबोधमना।

कनकरी सेनकपू विरचयेत् श्रीमाधनदि वतिपति विष्णु ॥

यहां सेनकपूसे शास्त्रिसेन राजाकी पत्नीका ही अभिप्राय है। नामके एक भागस पूर्ण नामको सूचित करना सुमंचित है।

यह अन्तरी प्रशस्ति श्रीराजीविकास जैनसिद्धांत मदनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९१५) में पूर्ण प्रकाशित है।

उक्त परिचयमें प्रतिने भिक्षुने व दान जिसे ज्योकर कोई समय नहीं पाया जाता। शास्त्रिसेन राजाका भी इतिहासमें जल्दी पता नहीं लगता। माधनदि नामके मुनि अनेक हुए हैं जिनका उल्लेख मगनवन्गोका आदिके शिखरकेबोमें पाया जाता है। जब शास्त्रिसेन राजाके उल्लेखवि संबंधी पूर्ण पत्र प्राप्त होंगे, तब धीरे धीरे उनके सम्प्रदायिके निर्णयका प्रकल्प किया जा सकेगा।

हम ऊपर कह आये हैं कि इस प्रतिमें महाबंघ रचनाके प्रारंभका पत्र २८ का नहीं है। शास्त्रीजीने सूचनानुसार प्रतिमें पत्र नं० १०९, ११४, १०३, १०४, १०६, १०७, १८३, १८४, १८५, १८६, १८८ १९७, २०८, २०९ और २१२ भी नहीं हैं। इसप्रकार कुल १६ पत्र नहीं मिले जे हैं। किंतु शास्त्रीजीने सूचना है कि कुछ किञ्चित् तादपर बिना पत्र संख्याके भी प्राप्त हैं। संभव है यदि प्रदान किया जाय तो इनमेंसे उक्त श्रुतिकी कुछ पूर्ति हो सके।

इसप्रकार मूढविद्वादी प्रति व प्रचलित प्रतियोगोंके पाठकी पूर्णतया रक्षा हो जाती है, उसका वेदमासिकके आदिमें किये गये विवेचनसे ठीक सामंजस्य बैठ जाता है, तथा उससे पञ्चमकारके जमोकारमंत्रके कर्तृत्वसम्बन्धी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागकी प्रस्तावनामें करा जाये है। जमोकारमंत्रके कर्तृत्वसम्बन्धी इस निष्कर्ष द्वारा कुछ लोगोंके मतसे प्रचलित एक मान्यताको बड़ी भारी ठेस लगती है। वह मान्यता यह है कि जमोकारमन्त्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मन्त्रके आदिकर्ता पुण्यदन्ताचार्य हैं। तथापि पञ्चमकारके पूर्वोक्त मतके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अबतक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। गंभीर विचार करनेसे ज्ञात होता है कि जमोकारमन्त्र-सम्बन्धी उक्त अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुण्यदन्ताचार्यद्वारा कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जबसे अहिंसादि पञ्च परमेश्वरी मान्यता है तभीसे उनके नमस्कार करनेकी भावना भी मानी जा सकती है। किन्तु 'जमो अहिंसा' आदि शब्द रचनाके कर्ता पुण्यदन्ताचार्य माने जा सकते हैं। इस बातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकोका ध्यान सुठावतारसम्बन्धी कथानककी ओर आकर्षित करता हूँ। पञ्चता, प्रथम भाग, पृ ५५ पर कहा गया है कि—

सुप्तमोहम् अन्वरो वित्तवराहो गंधरो गणधरदेवरो पि

अर्थात् सूत्र अर्पणरूपगाकी अपेक्षा तीर्थंकरसे, और प्रपरचनाकी अपेक्षा गणधरदेवसे अवतीर्ण हुआ है।

यहां फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

ब्रह्मभावाद्यामङ्गलिमन्त्राः सदा विवर्तन्व भुक्तन्व कथमवतार इति ?

अर्थात् ब्रह्म-भावसे अकृत्रिम होनेके कारण सर्वथा अवशिष्ट भुक्तका अवतार कैसे हो सकता है ?

इसका समाधान किया जाता है—

पुण्यपूर्वमतिविषयदि ब्रह्मार्पितव्यो ऽ विवर्तितवत् । पञ्चार्चार्थिकमन्त्रोपासनामवतारस्तु पुनर्बद्धम् ।

अर्थात् यह शंका तो तब बनती जब यहां ब्रह्मार्पित मन्त्रकी विवक्षा होती। परंतु यहां पर पर्यायार्थिक मन्त्रकी अपेक्षा होनेसे भुक्तका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चरकर पृष्ठ ६० पर कर्ता दो प्रकारका बनकाया गया है, एक अर्पकर्ता व दूसरा प्रपकर्ता। और फिर विस्तारके साथ तीर्थंकर भगवान् महावीरकी भुक्तका अर्पकर्ता, गौतम गणधरकी भुक्तका प्रपकर्ता तथा भूतबलि-पुण्यदन्तकी भी अहिंसिताकी अपेक्षा करता या उपरंतकर्ता कहा है। यथा—

तस्य कदा भुक्तिरौ अन्वयका संभवता चेति । महावीरोऽर्पकर्ता । .. पूर्विकी महावीरोऽर्पकर्ता ।

.. यही भावबुद्धिसे अन्वयार्थ व विवक्षित कथा। विवक्षितो सुप्तमाद्यन् गौरवो परिकरो पि ब्रह्म

इसप्रकार मूढबिद्वादी प्रति व प्रचलित प्रतियोगे पाठकी पूर्णतया रखा हो जाती है, उसका बदलावके आदिमें किये गये विवेचनसे ठीक सामन्स बैठ जाता है, तथा उससे धनका-कारके गमोक्तमंत्रके कर्तृत्वसम्बन्धी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागकी प्रस्तावनामें करा आये हैं। गमोक्तमंत्रके कर्तृत्वसम्बन्धी इस निष्कर्ष-रूप कुछ लोगोंके मतसे प्रचलित एक सम्प्रदायकी बड़ी भारी ठेस लगती है। वह मान्यता यह है कि गमोक्तमन्त्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मंत्रके आदिकर्ता पुण्यदन्ताचार्य हैं। तथापि धनकाकारके पूर्वोक्त मतके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अबतक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। गमोक्त विचार करनेसे ज्ञात होता है कि गमोक्तमन्त्र-सम्बन्धी ठाढ़ अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुण्यदन्ताचार्यश्रुत कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जबसे अहिंसादि पञ्च परमेष्ठीकी मान्यता है तभीसे उनको नमस्कार करनेकी मान्यता भी मानी जा सकती है। किन्तु 'गमो अहिंसाण' आदि शब्द रचनाके कर्ता पुण्यदन्ताचार्य माने जा सकते हैं। इस बातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकीका ध्यान मुठावत्प्रासम्बन्धी कथानककी ओर आकर्षित करता हू। धनका, प्रथम भाग, पृ ५५ पर कहा गया है कि—

सुतमोह्यन्तं अथवा विन्धवरादो गंधदो गन्धरदेवदो वि

अर्थात् सूत्र अर्थप्रकृपनाकी अपेक्षा तीर्थकरसे, और प्रवरचनाकी अपेक्षा गणधरदेवसे अवतीर्ण हुआ है।

यहां फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

इन्द्रभाषाश्रमभूषिमन्त्राः कदा विचरन्त्य भुवस्तत्र कथमवतार इति ?

अर्थात् इन्द्र-ग्रन्थसे अकस्मिन् होनेके कारण सर्वथा अवस्थित भुवका अवतार कैसे हो सकता है ?

इसका समाधान किया जाता है—

पुण्यदन्तमन्त्रिणपदि इन्द्रार्पिकत्वो ऽ विचक्षिणत् । पर्वापर्यवस्रज्जवापेक्षाधामवतारस्तु पुनर्वरत पुनः ।

अर्थात् यह शंका तो तब बसती जब यहां इन्द्रार्पिक मयकी विवक्षा होती। परन्तु यहां पर पर्यायार्पिक मयकी अपेक्षा होनेसे भुवका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चलकर पृष्ठ ६० पर कर्ता दो प्रकारका बतलाया गया है, एक अर्थकर्ता व दूसरा प्रपञ्चकर्ता। और फिर विस्तारके साथ तीर्थकर मगवान् महावीरको भुवका अर्थकर्ता, गीतम गणधरको इन्द्रभुवका प्रपञ्चकर्ता तथा भूतबलि-पुण्यदन्तकी भी अहिंसित्वात्मकी अपेक्षा कता या उपनिषत्कर्ता कहा है। यथा—

उप्य कदा बुधियो जन्मकदा गन्धकदा वैदि । महावीरोऽर्थकर्ता । .. अर्थविदो महावीरोऽर्थकर्ता ।

.. यदो जायन्तुस्तत्र जन्मवर्णनं च विन्धवरी कदा । विन्धवरादो भुवन्मन्त्राण गोपनी परिकरो वि इन्द्र

सुखस्त मोक्षो नृप । ततो गन्धर्वस्य ज्ञतेऽपि । ततो एवं चैवस्मिन्नेतं बहुत्र दूरवर्ति-पुष्पवन्ताद्विवा वि
नृपातो वर्धते । ततो दूरवन्तवत् बहुमात्रमवस्यो जलुपतकवा मोक्षमसामी कर्तव्यकृता दूरवर्ति-पुष्प-
वन्ताद्वो बौधायनोस्योवा मुनिवरा । किमर्थं ततो ब्रह्मते ? आचार्य प्रामाण्यप्रदर्शनार्थम्, यत्
प्रामाण्यम् यत्प्रामाण्यम् इति न्यायम् । (बद्धबागमय मात्र १ पृष्ठ १-४२)

उसी प्रकार, स्वयं प्रथम ग्रंथ आगम है, तथापि अनेकों दृष्टिसे व्यत्यस्त प्राचीन होमेपर
भी उपक्रम्य शम्भरचनाको दृष्टिसे उसके कर्ता औरसेनाचार्य ही माने जाते हैं ।
इससे स्पष्ट है कि जमोकरमन्त्रको श्रम्यार्थिक मयसे पुष्पदन्ताचार्यसे भी प्राचीन मानने
व पर्यायार्थिक मयसे उपक्रम्य मात्रा व शम्भरचनाके रूपमें पुष्पदन्ताचार्यकृत माननेमें कोई विशेष
उत्पन्न नहीं होता । वतमान प्राकृत यात्रात्मक रूपमें तो उसे सद्यः ही मानना पड़ेगा । आज हम
हिन्दी भाषामें उसी मंत्रको ' अग्निहोत्रो मयस्कार ' या अग्नेजीमें Bow to the Worshipful
आदि रूपमें भी उच्चारण करते हैं, किन्तु मंत्रका यह रूप जनार्दि क्या, बहुत पुण्या भी नहीं कहा
जा सकता है, क्योंकि, हम जानते हैं कि स्वयं प्रचलित हिन्दी या अंग्रेजी भाषा ही कोई हजार
वर्षसे पुष्पी नहीं है । हाँ इस बातका ध्यान अवश्य करना चाहिये कि क्या यह मन्त्र उक्त
रूपमें ही पुष्पदन्ताचार्यके समयसे पूर्वकी किसी रचनामें पाया जाता है ? यदि हाँ, तो फिर
विचारणीय यह होगा कि यवकाकरके तात्पर्यभी कल्पनोक्त क्या अभिप्राय है । किन्तु यवतक
ऐसे कोई प्रमाण उपक्रम्य न हों तबतक जब हमें इस परम पावन मन्त्रके रक्षिता पुष्पदन्ता-
चार्यको ही मानना चाहिये ।

६ शंका-समाधान

बद्धबागमय प्रथम मात्राके प्रकाशित होमेपर अनेक विद्वानोंमें अपने विशेष पत्रद्वारा
अपना पक्षमें प्रकाशित सम्मेलनप्रश्नोंद्वारा कुछ पाठसम्बंधी व सैद्धान्तिक शंकाएं उपस्थित की हैं ।
यहां उन्हीं शंकाओंका संक्षेपमें समाधान करनेका प्रयत्न किया जाता है । ये शंका-समाधान यहां
प्रथम भागके पृष्ठक्रम से व्यवस्थित किये जाते हैं ।

पृष्ठ ६

१ शंका— विचक्षितमन्त्रद्वाराकृतिकता में मन्त्रक की धरा मन्त्रक पाठ
अधिक दीक प्रतीय होता है, क्योंकि सम्मेलनप्रश्नके पक्षीय मन्त्र होनेमें तीन मूर्त्तियां दोन भी
संमिश्रित हैं ।

(विवेकानुसंध ता १-१-४)

समाधान— मन्त्रक पाठ सहायमपुरकी प्रतिके अनुसार रखा गया है और मूर्त्तिप्रतीति
को प्रतिमिक्षण होकर सशोचन-पाठ आया है, उसमें भी मन्त्रक के स्थावर कोई पाठ-प्रतिरूपन
नहीं प्राप्त हुआ । तथा उक्तका वर्ष सर्वप्रकारके मन्त्र और तीन मूर्त्तियां करना अक्षेप्त भी नहीं है ।

२ श्रुंका—गाथा ४ में 'महु' पाठ है, जिसका अनुवाद 'मुसपर' किया गया है। सम्भवे नहीं आता कि यह अनुवाद कैसे ठीक हो सकता है, जब कि 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'महु' होता है। (निरुक्तमुद्रण ता १०-१-४)

समाधान—प्राहतमें 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'महम्' करना चाहिए। देखो हैम व्याकरण महु महु इति ऋत्वात् ८, ४, ३७९। इसीके अनुसार 'मुसपर' ऐसा अर्थ किया गया है।

३ श्रुंका—गाथा ४ में शानवरसीरो पाठ है। पर उसमें नाश करनेका सूचक हर शब्द नहीं है। 'हर' की जगह 'हर' रखना चाहिए था। (निरुक्तमुद्रण ता १ १०-४०)

समाधान—हमारे समुक्त उपस्थित समस्त प्रतियोंमें शानवरसीरी ही पाठ था और मूकबिंदीसे उसमें कोई पाठ-परिवर्तन नहीं मिला। तब उसमें 'हर' के स्थानपर अक्षरदस्ती 'हर' क्यों कर दिया जाय, जब कि उसका अर्थ 'हर' के बिना भी सुगम है। 'बादीमसिंह' आदि नामोंमें बिनाशशेषक कोई शब्द न होते हुए भी अर्थमें कोई कठिनाई नहीं आती।

श्रु ७

४ श्रुंका—गाथा ५ में दुष्कर्त पाठ है जिसका अर्थ किया गया है 'दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले' यह अब किसप्रकार निकाला गया, उक्त शब्दका संस्कृत रूपान्तर क्या है, यह स्पष्ट करना चाहिए। (निरुक्तमुद्रण १ १ ४)

समाधान—दुष्कर्त का संस्कृत रूपान्तर है 'दुष्कृत' जिसका अर्थ दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले सुस्पष्ट है।

५ श्रुंका—गाथा ५ में —वाई सबा रंतं पाठ है, जिसका रूपान्तर होगा —वति सबा रन्तं। इसमें हमें समझ नहीं पड़ता कि 'दन्त' शब्दसे इंदियदमनका अर्थ किसप्रकार छाया जा सकता है। (निरुक्तमुद्रण १ १ ४)

समाधान—प्राहतमें 'रंतं' शब्द 'दन्त' के छिये भी आता है। यथा, इति चिपेन वरंति वीर (प्राहतसूक्तमहाभाष्य) पाइअसमहण्णो कोरमे 'दन्त' का अर्थ 'जिने त्रिप' दिया गया है। इसीके अनुसार 'निरन्तर पंचेन्द्रियोंका दमन करनेवाले' ऐसा अनुवाद किया गया है।

६ श्रुंका—गाथा ६ में निरिहवममहपरं का अर्थ होना चाहिए 'अग्निहोत्रे ब्रह्मा-होतृस्य व्यापकतासे मद्य कर दिया है और निमज्जानके रूपमें ब्रह्मस्य व्यापकताका बहुधा है'। (निरुक्तमुद्रण १०-१ ४)

समाधान—जब कम्पमें एकही शब्द दो बार प्रयुक्त किया जाता है तब प्रायः दोनों जगह उसका अब भिन्नभिन्न होता है। किन्तु उक्त अर्थमें 'बम्मह' का अर्थ दोनों जगह 'ब्रह्म' के लिया गया है, और उनमें भेद करनेके लिए एकमें 'अहं' शब्द अपनी ओरसे डाला गया

पृष्ठ २९

९ श्रृंका—पृ० २९ पर क्षेत्रमण्डके कपनमें लिखा है अर्वाद्यारम्भादि पंचविंशत्युपर
 पंचचतुःशतसमाख्यायोर विमुक्ता अर्थ आपने 'साते तीन हापसे लेकर ५२५ बहुप लक्षके शरीर'
 किया है, और नीचे फुनोटमें अर्वाह इत्यत्र अर्वाचतुर्न इति पाठेन भाष्यम् ऐसा लिखा है। तो आपने
 यह कहासे लिखा है और क्यों लिखा है ? (वाचस्पत्यौ पृ १-४-४)

समाधान—केवलज्ञानको उत्पन्न करनेवाले जीवोंकी सबसे अव्यय अवगाहना साठे तीन रूप (अरुणि) और उक्त अवगाहना पाँचवीं पचीस अनुप्रमाण होती है। सिद्धजीवोंकी अव्यय और ठगुष्ट अवगाहना इसीलिए पूर्वोक्त बातसही है। इसके लिए त्रिकोकसारकी गणना १४१-१४२ देखिये। सरलतममें साठे तीनको 'अर्धचतुर्थ' कहते हैं। इसी बातको भ्यानेमें रख कर 'अर्वाष्ट' के त्यागमें 'अर्धचतुर्थ' का सद्योन्नत सुझाया गया है, वह आगमानुक्त भी है। 'अर्वाष्ट' का अर्थ 'साठे साठ' होना है जो प्रचलित मान्यताके अनुक्त नहीं है। इसी मागके पृष्ठ २८ की टिप्पणीकी इसी पक्षमें त्रिकोकप्रवृत्ति का उद्धरण (आहुतव्यपहृष्टी) दिया है उससे भी सुझाए गये पाठकी पुष्टि होती है।

पृष्ठ ३९

१० श्रुति—ब्रह्मरात्रिमें क्षयोपसमसम्यक्त्वकी स्थिति ६६ सागरसे म्यून मतछाई है, जब कि सर्वार्थसिद्धिमें पूरे ६६ सागर और राजवार्तिकमें ६६ सागरसे अधिक मतछाई है। इसका क्या कारण है ? (ब्रह्मसंहिता पृष्ठ १४४)

समाधान—सर्वोपसिद्धिमें कायोपशमिकसम्पत्तिका उत्कृष्ट स्थिति पूरे ६६ सागर का राजातिर्कमे सम्पद्दर्शनसाम्पत्तिका उत्कृष्ट स्थिति साविक ६६ सागर और बबल टीका पृ ३० पर सम्पद्दर्शनकी अपेक्षा मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति देशोप छायासठ सागर करी है। इस मतमेदका कारण माननेके पूर्व ६६ सागर किस प्रकार पूरे होते हैं, यह जान लेना आवश्यक है।

यवराकारं जीवद्वाणं कंडकी अमृतप्रकृष्टाणे ३६ सागरको स्थितिके पृथ करणे का
मस इत्यमकर दिया है —

पुत्री विविधो मनुष्यो वा कंचन-अविदुषामिवैवैषु चोदत्तापरीक्षमाद्विदिषु इत्यर्थः । न च आपरीक्षन् पतिव विविधसंगोचमप्रतिष्ठाप्य धर्म्मार्थं पवित्रयौ । तैस्त सागरीयमात्रं न च अत्रिच सन्मतेन च पुत्री मनुष्यो जाते । एवं कंचनं सौमनासम् वा अशुभास्त्रि मनुष्यादप्युच-वाचीयमागोचममाद्विदिषु अप्यप्युदरेषु उच्यन्थी । तयोपुत्री मनुष्यो जाते । एवं कंचनमनुसारिच इतिमोचनं वैवैषु मनुष्या-दोप्युच्यन्मनासगोचमाद्विदिषुच इत्यर्थः । अतोऽप्युच्यन्मनासगोचमप्रीत्यसमप्य परिष्ठाप्यप्युच्य धर्म्मामिच्छतं सती । × × × इत्यु उच्यन्तिमो अत्राप्यप्युच्यन्तं इत्ये । वरसाचरो पुन केन केन वि वचोच्य वाचो दीव्यता ।

अर्थात्—कोई एक विषय अवश्य मनुष्य की ओर आकर्षणकारी आशुस्तिविधाओं द्वारा

है, जिसके लिए मूकमें सर्वथा कोई आधार नहीं है। प्रामाण्यमें 'बन्धन' शब्द 'सम्बन्ध' के लिए आया है। हैम प्राज्ञात्म्याकारणमें इसके लिए एक स्वतन्त्र सूत्र भी है— सम्बन्धे वा ८, १, २७१ इसकी वृत्ति है सम्बन्धे मत्तु भी मत्तुि बन्धनो । इसीके अनुसार हमने अनुवाद किया है, जिसमें कोई दोष नहीं।

पृष्ठ १५

७ सूत्र—अप्ये मूके सम्महसुते इति किञ्चित्प्रत्यय मत्तुिरर्धं कृतः। सम्महसुते । सम्महसुतेर्ध्वं श्वेतस्यभीषणप्रत्ययमस्ति तत्तु निर्वृत्त आचार्यैः कृतः वा सम्महसुते नाम किमिति विप्रश्नार्थं प्रत्ये वर्तते ? (५ सम्महसुते जी तर्कटीका पृष्ठ ४१४१)

अर्थात् मूकके 'सम्महसुते' से सम्महसुतकृत्य लब्ध किया है जो श्वेतात्मकीय प्रत्ये है। आचार्योंने उसीका उल्लेख किया है या इस नामका कोई दिगम्बरीय प्रत्ये भी है।

समाधान—अप्ये शब्दका इतिवत् इत्यादि गाथा उद्धृत करके जो सम्महसुतकृत्य उल्लेख किया है वह सम्महसुतक नामका प्राप्त प्रत्ये ही प्रतीय होता है क्योंकि यह गाथा तथा उससे पूर्व उद्धृत चार गाथाएं वही पाई जाती हैं। सम्महसुतकके कतौ सिद्धांतका स्मरण महापुरुष अर्द्धि अनेक 'दिगम्बर प्रत्ये'में भी पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि ये आचार्योंने सभी सम्प्रदायोंमें मान्य रहे हैं। इससे अन्य कोई प्रत्ये इस नामका जैन साहित्यमें उपलब्ध भी नहीं है।

पृष्ठ १९

८ सूत्र—अथान्तरिको मंगलमयी नाममंगलं इत्यत्र अथ मंगलत्वाच्चातिशयोक्त्य-
नित्यमयीवाच्यकर्मणि आचार्या विप्रप्रतिपत्त्या उदाहरणं प्रदत्तं तत्कर्म संयच्छते ? -- अन्तरिकोदाहरणे
विप्रमन्त्रसुशान्तिव्यतिथिः । (५ सम्महसुते जी तर्कटीका पृष्ठ ४१४१)

अर्थात् नाममंगलके आठ प्रकारके आधार—कर्मणमें मायासुन्दरमें अर्थात् आधारका उदाहरण विप्रप्रतिपत्त्या दिया गया है, सो कैसे संगत है? विप्रमन्त्रका उदाहरण अथिक्त दीक्षा वा।

समाधान—अथवाच्यने नाममंगलका जो उद्धरण दिया है और उसके जो आधार उद्धृत हैं, उनसे तो यही बात होता है कि एक या अनेक केतन या अनेकतम मंगल इत्ये नाममंगलके आधार होते हैं। उदाहरणार्थ, यदि हम पार्वताय तीर्थंकरका नामोच्चारण करें तो यह एक जीवाश्रित नाममंगल होगा। यदि हम श्रीश्रीश्री लोकेश्वरका नामोच्चारण करें तो यह अनेक जीवाश्रित नाममंगल होगा। यदि हम अन्तरिक्ष पार्वताय या केदारिणीयाय आदि प्रतिमा-
ओंका नामोच्चारण करें तो यह अजीवाश्रित नाममंगल होगा, इत्यादि। इस प्रकार विप्रप्रतिपत्त्या नाममंगलका आधार बत जाती है जिसका कि उही पृष्ठपर ही हुई निष्पत्तिसे पक्षोचित समर्थन हो जाता है। इसी प्रकार पश्चिमी द्वारा सुझाया गया विप्रमन्त्र भी अजीव नाममंगलका आधार माना जा सकता है।

‘वहस्तेष्व जायन्ति सागरोपमामि साधिरैषामि ॥’ तं वदन्—एवो अद्भुतसंघर्षमिमांशौ पुण्यको-
वाङ्मनसुतेषु उच्यन्ते अद्भुतस्मिन्ने वेदसम्पत्तमप्यमत्तुर्न च दुर्गर्गं पवित्रयोः । एतौ पमत्तपमत्तरा-
वत्तसहस्रं कपून् २ उच्यन्ते सेवीषाणीगविसीहीप विमुहो ३ अजुषो ४ अविषही ५ सुहो ६ वसंतो
७ पुनो वि सुहो ८ अविषही ९ अजुषो १ इत्येव वदन् पवित्र अंतरीक्षे ईश्वरपुण्यकोटि संज्ञमममुपलै-
ह्य मरी तेष्टीससागरोपमाठडिरीपसु ईश्वर उच्यन्ते । एतौ त्रयो पुण्यकोटावपसु मनुष्येसु उच्यन्ते ।
अहं पि दुषि संज्ञं कपून् कपून् गरी । तेष्टीससागरोपमाठडिरीपसु ईश्वर उच्यन्ते । एतौ त्रयो पुण्य
कोटावपसु मनुष्येसु उच्यन्ते × लक्षं पवित्रयोः । अंतोमुह्यपसे संज्ञरे अजुषो वारी अहंमरं ११
अविषही १२ सुहो १३ वसंतो १४ अहो सुहो १५ अविषही १६ अजुषो १७ अज्यमरी १८ पमत्तो
वारी १९ अज्यमरी २ इति च अंतोमुह्यपसु अहं वस्तेहि अन्तरीक्षेसुमुह्येहि च अज्य पुण्यकोटीहि
साधिरैषामि जायन्ति सागरोपमामि उच्यन्ते इति

यह विवरण उपशमक जीवोक्त एक जीवकी कोखा तकृष्ट अन्तरकाष्ठ बताते
हुए अन्तरप्रकृपणामें आया है । अर्थात् कोई एक जीव उपशमभेणीसे उतरकर साभिक छायासठ
सागरको बाद भी पुन उपशमभेणीपर चढ़ सकता है । उक्त गवक्य मात्र यह है —

‘मोहकर्मको जड्हाईस प्रकृष्टियोंकी सत्ता रहनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आसु-
वाछे मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और वाठ कर्कश होकर वेदकसम्पत्तक और अपमत्त गुणस्थानको
युगपत् प्राप्त हुआ । पश्चात् प्रमत्त अपमत्त गुणस्थानोंमें कईबार वा जा कर उपशमभेणीपर चढ़ा
और उतरकर वाठ कर्ष और दहा अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी कर्कशक समयको पाकके मरणकर तेतीस
सागरकी आसुवाछा देव हुआ । बहसि अ्युत होकर पूर्वकोटीकी आसुवाछे मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । पश्चात्
आधिकसम्पत्तको भी चारण कर तथा संयमी होकर मर और पुन तेतीस सागरोपम की स्थिति वाछे
देवोंमें उत्पन्न हुआ । बहसि अ्युत हो पुन पूर्वकोटीकी आसुवाछे मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यय-
सम्प संयमका धरण किया । अब उसको ससारमें रहनेका काष्ठ अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रह गया, तब
पहले उपशमभेणीपर चढ़ा पीछे उपकभेणीपर चक्कर निर्धनको प्राप्त हुआ । इसमकारसे
उपशमभेणीवाछे क्षीयक तकृष्ट अन्तर वाठ कर्ष और अज्योस अन्तर्मुहूर्तोंस कम तीन पूर्वकोटियोंसे
अधिक छायासठ सागरोपमकाष्ठ प्रमाण होता है ।

इस अन्तरकाष्ठ में रहते हुए भी वह अरुक्क सम्पद्दर्शनसे मुक्त बना हुआ है, मले ही
प्रारम्भमें ३३ सागर तक आत्योपमिकसम्पत्तकी और बाद में आधिकसम्पत्तकी रहा हो । इस
प्रकार सम्पद्दर्शनसामान्यकी दृष्टिसे साभिक छायासठ सागरकी स्थितिका कथन युक्तिसंगत ही
है और उसमें उक्त दोनों मणोंसे कई विरोध भी नहीं जाता है ।

सुरासंधके कज्जानुयोगशरमें भी सम्पत्तमार्गाकाके अन्तर्गति सम्पत्तसामान्यकी तकृष्ट
स्थिति ३३ सागरसे कुछ अधिक ही है । यथा—

अमत्तमुह्यपसे सम्पादित्ति केचिरे वकारी होदि । बहन्नेच अंतोमुह्यपे । वहस्तेष्व जायन्ति सा-
गरोपमामि साधिरैषामि । (पत्रका अ व ५ ७)

कापिठ कश्यपादी देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँपर एक सागरोपम कच्छ विताकर दूसरे सागरोपमके आदि समयमें सम्पत्तयज्ञे प्राप्त हुआ और तेरह सागरोपम तक वहाँ रहकर सम्पत्तयज्ञे साध ही श्रुत होकर मनुष्य हो गया। उस मनुष्यमयमें समयको अपना संयमासम्पत्तयज्ञे परिपाकनकर इस मनुष्यमयसम्पत्तयज्ञे वायुसे कम बार्हत्त सागरोपम वायुको स्थितिस्थले आरण्य-अश्रुत कश्यपके देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँसे श्रुत होकर पुन मनुष्य हुआ। इस मनुष्यमयमें समयको बरगकर उपरिम भैषज्यमें मनुष्य आसुसे कम इक्ष्वांस सागरोपम आयुको स्थितिस्थले ब्रह्मन्त्र देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ पर अन्तर्मुहूर्त कम छयासठ सागरोपमके अन्तिम समयमें परिधामोंके निमित्तसे सम्पत्तयज्ञे प्राप्त हुआ। × × × यह उत्पत्तिक्रम सम्पत्तयज्ञेके श्रुत्यादनाई कहा है। पर मार्गसे जो जिस निरुद्ध भी प्रकरसे छयासठ सागरोपमकच्छको पूरा करना चाहिए।

सर्वाधिकारिकार जो ब्रह्मोपशान्तिसम्पत्तयज्ञे स्थिति पूरे ६६ सागर बता रहे हैं, वह पटुबंधागम के दूसरे खंड छुदन्तयज्ञे अनेक बताये बनेवाले सूत्रोंके अनुसार ही है उसमें बचना से कोई मतभेद नहीं है। भेद केवल मरणाके प्रथम मास पृ ६९ पर बताई गई देशोल ६६ सागरकी स्थितिसे है। जो पहापर भ्रान्त देनेकी बात यह है कि बरकाकार केदकसम्पत्तयज्ञे या सम्पत्तयज्ञेस्थिति स्थिति नहीं बता रहे हैं, किन्तु मरणाके उत्कृष्ट स्थिति बता रहे हैं, और वह भी सम्पत्तयज्ञेके अनेकांश, जिसका अभिप्राय यह सम्पत्तयज्ञे जाता है कि सम्पत्तयज्ञे होने पर जो असम्पत्तयज्ञेगुणवैधी कर्म-निर्भर सम्पत्तयज्ञे जीवके हुआ करता है, उसीकी अपेक्षा मंगलक अर्थात् पापजने गजनेवाला होनेसे वह सम्पत्तयज्ञे मंगलक है, ऐसा कहा गया है। किन्तु जो जीव ६६ सागर पूर्ण होनेके अन्तिम सुहृदमें सम्पत्तयज्ञे छोड़कर मोक्षके गुणत्वानोंमें जा रहा है उसके सम्पत्तयज्ञेमें होनेवाली निर्भर कंद हो जाती है, क्योंकि परिणामोंमें सबेराकी बुद्धि होनेसे वह सम्पत्तयज्ञे फलान्मुख हो रहा है। अतएव इस अन्तिम अन्तर्मुहूर्तसे कम ६६ सागर मरणाके उत्कृष्ट स्थिति बताई गई प्रतीत होती है।

अब रही राजार्थिकमें बताये गये साधिक ६६ सागरोपमकच्छकी बात तो उस नियममें एक बात ब्रह्म भ्रान्त देनेकी है कि राजार्थिककार जो साधिक छयासठ सागरकी स्थिति बता रहे हैं वह ब्रह्मोपशान्तिसम्पत्तयज्ञे नहीं बता रहे हैं किन्तु सम्पत्तयज्ञेसामान्यकी ही बता रहे हैं और सम्पत्तयज्ञेसामान्यकी अपेक्षा वह अधिकतर कम भी जाती है। इसका कारण यह है कि एकबार अनुपपत्तिकमें ब्रह्म आये हुए जीवके मनुष्यमयमें ब्रह्मिकसम्पत्तयज्ञे उत्पत्तिकी भी सम्पत्तयज्ञे है। पुनः ब्रह्मिकसम्पत्तयज्ञे प्राप्तकर समय ही अनुपपत्तिकमें उत्पन्न स्थितिको प्राप्त हुआ। ऐसे जीवके साधिक छयासठ सागर कच्छ बन जाता है, और ब्रह्मोपशान्तिके ब्रह्मिक सम्पत्तयज्ञे उत्पन्न कर केवल ही सम्पत्तयज्ञेसामान्य बरकर बना ही रहता है। इसकी पुष्टि जीवरूपन खंडकी अन्तर प्रकरणके निम्न अन्तरणसे भी होती है—

उच्चस्तेन जायते साम्यरोचमाणि साधितेनाणि ॥ तं ब्रह्म—एवौ अङ्गुलीसर्पसंक्रमितो पुण्यको-
राजमनुजेषु उच्चगणो जडवर्तिसो वैदगम्यमत्तमत्तगुणं च ह्युपर्य पविष्यतो १ ततो पञ्चाशत्तत्परा-
वत्सहस्रं कल्प २ उच्चमसेहीवाभोगविशोहीप् विमुक्तो ३ अणुगो ४ अमिषही ५ सुहृदो ६ उच्चसंतो
७ पुण्ये वि सुहृदो ८ अमिषही ९ अणुगो १ होव्य देहा पविष्य अंतरिहो देव्यपुण्यकोटिं सचममनुगाह-
क मरो तेपीससागरीचमाडद्विहीपसु देवेषु उच्चगणो । ततो तुरो पुण्यकोरापसु मनुजेषु उच्चगणो ।
अहर्ष वि द्विषि संजम कल्प कार्य गदो । तृतीयसागरीचमाडद्विहीपसु देवेषु उच्चगणो । ततो तुरो पुण्य
कोरापसु मनुजेषु उच्चगणो X सचमं पविष्यतो । अंतोसुहृदावसेमे संसार अणुगो भारो कश्चमं ११
अमिषही १२ सुहृदो १३ उच्चसंतो १४ अणुगो सुहृदो १५ अमिषही १६ अणुगो १७ अण्यमो १८ पमयो
भारो १९ अण्यमो २ उच्चरि उ अंतोसुहृदा अहर्षि वस्तेहि कश्चोसंतोसुहृदेहि व अणा पुण्यकोटीहि
पाधितेनाणि जायते साम्यरोचमाणि उच्चसंसारं होदि

यह विवरण उपसामक जीर्णोका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तरकण्य कर्ता
हुए अन्तरप्रकल्पने जाया है । अर्थात् कोई एक जीव उपशमभेणीसे उतरकर साधिक छ्वासठ
सागरको बाद भी पुन उपशमभेणीपर चढ़ सकता है । उक्त गपक्य भाष यह है —

‘ मोहकर्मकी जडार्थ प्रवृत्तियोंकी सत्ता रहनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आसु
बाहे मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और आठ वर्षका होकर वेदकसम्पत्त और अप्रमत्त गुणस्थानको
गुणपत् प्राप्त हुआ । पश्चात् प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानोंमें वर्षवार आ आ कर उपशमभेणीपर चढ़ा
और उतरकर आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी जपक संप्रमत्ते पात्रके मरणकर तृतीय
सागरकी आसुबाहा देव हुआ । वहासे श्रुत होकर पूर्वकोटीकी आसुबाहे मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । यहांपर
ध्यायिकसम्पत्तको भी चारण कर तथा संपत्ती होकर मर और पुन तृतीय सागरोपम की स्थिति बाहे
देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहासे श्रुत हो पुन पूर्वकोटीकी आसुबाहे मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यथा-
समय संप्रमत्ते चारण किया । जब उसके संसारमें रहनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रह गया, तब
पहले उपशमभेणीपर चढ़ा पीछे अपकभेणीपर चक्कर निर्वाणको प्राप्त हुआ । इसप्रकारसे
उपशमभेणीबाहे जीवका उत्कृष्ट अन्तर आठ वर्ष और छम्बीस अन्तर्मुहूर्तोंस कम तीन पूर्वकोटियोंसे
अधिक छ्वासठ सागरोपमकाल प्रमाण होता है ।

इस अन्तरकण्य में रहते हुए भी वह बराबर सम्पदर्शनसे युक्त बना हुआ है, मसे ही
प्रारंभमें ३३ सागर तक ध्यायप्रशमिकसम्पत्त और बाद में ध्यायिकसम्पत्त रहा हो । इस
प्रकार सम्पदर्शनसामान्यकी दृष्टिसे साधिक छ्वासठ सागरकी स्थितिक कल्प युक्तिसंगत ही
है और उसमें उक्त दोनों म्योसे कोई विरोध भी नहीं जाता है ।

सुशार्बके कालानुयोगशरमें भी सम्पत्तमार्गप्रके अन्तर्गत सम्पत्तसामान्यकी उक्त
स्थिति ३३ सागरसे कुछ अधिक दी है । यथा—

सम्पत्तगुणादेव सम्पादितो केचिर् अकमरो होदि । अहमेव अंतोसुहृदं । उच्चस्तेन जायते साम-
रोचमाणि साधितेनाणि ।

इस सूत्रके व्याख्याने कहा गया है कि कोई निष्पाद्यि बीच तीनों करणोंको करके प्रत्यक्षप्रत्यक्षसम्बन्धको ग्रहण कर अन्तर्मुखकण्ठके बद्धबेदकसम्बन्धको प्राप्त होकर उसमें तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक व्यापारिता समारोपन विताकर बादमें क्षयितसम्बन्धको धारणकर और चौबीस सागरोपपत्तके रेखोंमें उलग्ग होकर पुनः पूर्वकोटीकी आसुषके मनुष्योंमें उलग्ग होनेवासे बीचके साविक ६६ सागरकण्ठ सिद्ध हो जाता है ।

किन्तु बेदकसम्बन्धकी उल्लेख स्थिति बनगोटे हुए पूरे ६६ सागर ही दिये हैं, यद्य-—

वेदासम्बन्धकी केवधिं कम्पनी हीति ? बह्मनेव अतोप्युत्तरं । बह्मस्यैव उपाधिकातोपमस्य ।

(ब्रह्म. सू. प. १. ७)

इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए कहा गया है कि मनुष्यमण्डली आसुसे बद्ध देवसुषके बीचोंमें उलग्ग करणा चाहिए और इसी प्रकारसे पूरे ६६ सागर कण्ठ बेदकसम्बन्धकी स्थिति पूरी करना चाहिए ।

तब सारे कथनका भाव यह हुआ कि सम्बन्धार्जुनसाम्बन्धकी अपेक्षा साविक ६६ सागर, बेदकसम्बन्धकी अपेक्षा पूरे ६६ सागर, और मन्त्रपर्यायकी अपेक्षा देशोंमें ६६ सागरकी स्थिति कही है इसलिए ठगमें परस्पर कोई मत-भेद नहीं है ।

पृष्ठ ४२

११ श्लोक—अतो अरिहन्तमिहान्न अरिमोहस्तस्य इत्यन्तं अरिहन्ता दीपवतिवामनिधामयि तस्य अरिहन्ता इति प्रतिपादितम् । तद्विहीनमात्मनः । पुनः अन्तरास्य वक्ष्यते वा । एवो ज्ञानरूपमव्याप्य मोहोऽपि त्वं केचिद्व्यवहारं अरिहन्ता इति किञ्चिद्व्यवहारं कर्तव्यं इति च प्रतीयते । ननुमिरिति किञ्च व्यापारिप्रत्ययानां व्यापारित्वम् । किञ्च किञ्चिद्व्यवहारं व्यापारित्वमिति कर्तव्यं । व्यापारोऽप्यनुकम्पनीयं प्रतीयते अतो अरिहन्तत्वं अतो अरिहन्तत्वं परन्तु व्यवहारं कथमेव अतो अरिहन्तत्वं किञ्चिद्व्यवहारं केचिद्व्यवहारमिति वाच्यं व्यापारं प्रतीयते ?

(प. ब्रह्मसूत्रम्, पृ. ४१. ४१)

अर्थात् व्यवहारक्रमे नमोऽन्तरास्यके प्रथम चरणके जो विविध कार्य किये हैं उससे अनुमान होता है कि व्यापारिकों अरिहन्त और अरिहन्त दोनों पाठ समीप हैं । किन्तु आपने केवल ' अरिहन्ता ' पाठ ही क्यों किया ?

समाधान—अन्तर्गतमन्त्रके पाठमें दो एकही प्रकरण पाठ रखा या सकता है । तो भी ' नमो अरिहन्तं पाठ करनेमें यह विशेषता है कि उससे अरिहन्ता और अरिहन्त दोनों प्रकरणोंके कार्य किये जा सकते हैं । प्रकृत मन्त्रप्रमाणसे अरिहन्त शब्दके अरिहन्त, अरिहन्त व अरिहन्त तीनों प्रकरणोंके पाठ हो सकते हैं । अतएव अरिहन्त पाठ करनेसे सब दोनों प्रकरणोंके कार्य भी सुगम हो जाते हैं । यह बात अरिहन्त पाठ करनेसे नहीं जाती (देखो परिशिष्ट डू. १८)

१२ श्लोक—' अरिहन्तादीन् पुनः कथं वक्ष्यते तस्मिन्वक्ष्यते ' । और यदि परिपाटी मन्त्रकी अपेक्षा न की जाय तो उस समय संकलित हुआ सकल मुक्तके पाठो हुए । मन्त्रान् व्यापारिकों

समयमें तो गिने जुने ही भुगकेवली हुए हैं। सख्यात हनार सकल भुतके भारियोंका पता तो शास्त्रोंसे नहीं लगता। अतः यह अष्ट विचारणीय प्रतीत होता है। (पृष्ठ ६५)

(बैतर्किक १५ अक्षरी ११४)

समाधान—त्रिलोकप्रसिद्धि, हरिवंशपुराण आदिमें भगवान् महावीरके तीर्थकाष्ठमें पूर्व चारी ३००, केवलज्ञानी ७००, विपुलमूर्ती मनःपर्ययज्ञानी ५००, शिक्षक ९९००, अक्षयिज्ञानी १३०० वैश्वियिकश्रद्धिचारी ९०० और बादी ४०० बतलाये हैं। इनमें पक्षि पूर्वचारी केवल तीनसौ ही बतलाये हैं, पर केवलज्ञानी केवलज्ञानोपपत्तिके पूर्व श्रेणी-आरोहणकाष्ठमें पूर्वविद् हो चुके हैं और विपुलमूर्ती मनःपर्ययज्ञानी और तदनुबन्ध-मोक्षगामी होनेके कारण पूर्वविद् होंगे। अक्षयिज्ञानी आदि साधुओंमें भी कुछ पूर्वविद् हो तो आश्चर्य नहीं। पर अक्षयिज्ञान आदिकी विशेषताके कारण उनकी गणना पूर्वविदोंमें न करके अक्षयिज्ञानी आदिमें की गई हो। इस प्रकार परिपाटी क्रमके बिना भगवान् महावीरके तीर्थकाष्ठमें हजारों श्राद्धसागधारी माननेमें कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

पृष्ठ ६८

१३ श्रुत्य—चरगारवपक्षिकों का अर्थ 'रसगारवके आधीन होकर' उचित नहीं लगता। गारव (गारवः) दोषका अर्थ मैंने किसी स्थानपर देखा है, किन्तु स्मरण नहीं आता। 'वद' का अर्थ रस भी समझमें नहीं आता। स्पष्ट करनेकी आवश्यकता है।

(बैतर्किक १५ अक्षरी ११४)

समाधान—'गारव' पदका अर्थ गौरव या अभिमान होता है, जो तीन प्रकारका है—
श्रद्धिगारव, रसगारव और सातगारव। यथा—

तत्रो गारवा पञ्चस्य। त अहं—श्रद्धिगारव रसगारव सातगारव। स्या ३ ४

श्रद्धियोंने अभिमानको श्रद्धिगारव, दधि दुग्ध आदि रसोंकी प्राप्तिसे जो अभिमान हो उसे रसगारव, तथा शिष्यों व मर्कों आदि द्वारा प्राप्त परिचयके सुखको सातगारव या सुखग्रन्थ कहते हैं।

उक्त वाक्यसे हमारा अभिप्राय 'रसादि गारवके आधीन होकर' से है। मूकपाठका संस्कृत रूपान्तर हमारी दृष्टिमें 'वृत्तगारवप्रतिबद्ध' रहा है। प्रतिषेधों में 'वद' के स्थानपर 'वद' पाठ भी पाया जाता है जिससे यदि दक्षिण अभिप्राय छिया जाय तो उपर्युक्तसे रसगारवका अर्थ आ जाता है।

पृष्ठ १४८

श्रुत्य १४ —प्रतिभाषा प्रमाणप्रमाण इत्यादि वाक्यमें प्रतिमासका अनप्यवस्यरूप अर्थ ठीक प्रतीत नहीं होता। मेरी समझमें उसका अर्थ वहाँ ज्ञान-सामान्य ही होना चाहिए, क्योंकि ज्ञानका प्रामाण्य और अप्रामाण्य आचार्य पर अवलम्बित है, अतः वह विसंवादी भी हो



सकता है और बसिसगादी भी । जनपथबसस निरगादी अलक मरु है । उससे त्रिस ठरसे निरगातिल अर बसिसगातिलसी पचा दी गर है गर स्यादादसी ठरिसे वरुदुष होने इर भी निरगा मदी कगासी ।
(जनरीर १५ गरती १९४)

समाधान—यद्यपि प्रतिमासका जो वर्ष किया गया है, वह स्वयं राज्यसत्ताके मन्त्रों भी स्वीकृत नहीं है तथापि यदि प्रतिमासका वर्ष ज्ञानसामान्य भी छे छिया जाय, ता भी कोई आपत्ति नहीं आती है। ऐसी अवधारणमें अनुमान पक्ष १२ में 'और अनध्यवसायिक जो प्रतिमास है' के स्थानमें 'और जो ज्ञान सामान्य है' वर्ष करना चाहिए।

पृष्ठ १९६

१५. प्रश्न— असर्जिता स्वतन्त्रता प्राप्त करके विदेशी शासन का बन्धन खत्म कर
 लेना चाहते हैं। यह विदेश के हानि में विदेशी जाति का बन्धन है। उसे वास्तविकता
 में ही ही हो जाना है। (विषय १५ प्रश्न १९४)

समाधान--प्राप्त प्रतियोत्ते जो पाठ समुपलब्ध हुआ उसकी यथाशक्ति संगति अनु-
बान्धने चैत्य की गर्भ है। मूढबिहीनसे भी उस पाठके स्थानपर हमें स्पष्ट पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ।
तथापि 'विच्छेदस्थ' के स्थानपर 'विच्छेदः स्यात्' पाठ स्वीकार कर देनेसे कर्ष और अपरिक्त
सीमा और सुगम हो जाता है। तदनुसार उक्त सूक्तका अनुवाद इस प्रकार होगा—

शुद्धा—असमझने व्याख्याता नहीं मानने पर कार्य-परम्पराका विच्छेद हो जायगा। क्योंकि, अर्थस्थ बचन-एकनामो कार्यपना प्राप्त नहीं हो सकना है।

पृष्ठ २२३

१६ ईश्वर—संस्कृत (मूल) में जो शब्द दत्त जाया है उसमें अर्थ आपने कुछ न करने शब्द ही लिखा है। सो इसमें क्या शक है ? (मातृकापर्व पृष्ठ १४४)

समाधान— मन्त्र ' का अर्थ मन्त्र है, इतिष्ठि सर्वज्ञ मन्त्र बन्नेवाले समयप्रबन्ध को मन्त्र समयप्रबन्ध कहा सकते हैं । पर प्रवृत्ति विवक्षित प्रवृत्ति उपशमन और क्षयन के विचारात्मकी और चारात्मकी अर्थात् अन्तर्की दो व्याखियोंके अन्तर्में बन्नेवाले समयप्रबन्धको ही मन्त्रसमयप्रबन्ध कहा है । इस मन्त्रसमयप्रबन्धका उक्त विवक्षित प्रवृत्ति उपशमन या क्षयन कहनेके भीतर उपशमन या क्षय न होकर उपशमन या क्षयनकाटके अन्तर्गत एक समय कम दो व्याखीकाश्रयमें उपशमन या क्षय होता है । एक समय कम दो व्याखीकाश्रयमें उपशमन या क्षय कैसे होता है, इष्टके त्रिप प्रथममाग पृष्ठ २१७ का विशेषार्थ देखिये । विशेषके त्रिप देखिये अम्बिष्ठ, आप्ताध्याय ।

पृष्ठ २५

१७ सवाल—एकदम प्रारंभ प्रथम पक्षों के होते हुए एकदम राज्यसे ज्ञान पड़ता है, न

कि उससे पूर्वके शरीरस्व स्वैक्यनिर्बलक इत्यादिसे, क्योंकि उसी शारीरिक परिभाषाके करनेपर, जो उससे पहले नहीं की गई है, शक्राकारने तथापि से शरीरस्व उद्धान किया है।

(जैनसूत्र १५ कारणी १९४)

समाधान—यहाँपर तथापि से शक्रा मान देनेपर शरीरस्व स्वैक्यनिर्बलक कर्म बाहर मुख्य है। इसे आगमिक परिभाषा मानना पड़ेगी। परन्तु यह आगमिक परिभाषा नहीं है। धक्काकारने स्वयं इसके पहले न बाहरका शरीर स्वैक्यनिर्बलक इत्यादि रूपसे इसका निवेदन कर दिया है। अतः शक्राकारके मुझसे ही स्थूल और सूक्ष्मका परिभाषाओंका कहना टोक है, ऐसा समझकर ही उन्हें शक्राके साथ जोड़ा गया है।

पृष्ठ २९७

१८ श्रुति—जदेरपरमात्मा पाठ अद्भुत प्रतीत होता है, उसके स्थानमें जदेरपरमात्मा पाठ ठीक प्रतीत होता है।

(जैनसूत्र १५ कारणी १९४)

समाधान—उक्त पाठके ग्रहण करनेपर भी जदेरपरमात्मा इतने पदका अर्थ ऊपरसे ही जोड़ना पड़ता है, और उस पाठके लिए प्रतियोगी आचार भी नहीं है। इसलिए हमने उपलब्ध पाठको ओका ओ रखा गया। हालाँहीमें प्रथम अ पत्र २८५ पर एक अन्य प्रकरण सम्बन्धी एक वाक्य मिला है, जो उक्त पाठके सद्योचनमें अधिक सहायक है। वह इस प्रकार है— पमसेवेणार जरेण छडीए वधरि कडीन्ममाभा। इसके अनुसार उक्त पाठको इस प्रकार सुधारना चाहिए जदेरपरमात्मा जदेरपरमात्मा अथवा जदे जदेरपरमात्मा तदनुसार अर्थ भी इस प्रकार होगा— 'क्योंकि, एक श्रुतिके ऊपर दूसरी श्रुति का अभाव है'।

पृष्ठ ३००

१९ श्रुति—१० नी गाथा (सूत्र) का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'तत्र कर्मजन्मक योगा स्थापिति। तिस्रका अथ आपने 'इपुगति'को छोड़कर दोष तीनों विप्रवृत्तियोंमें कर्मजन्मक योग होता है, ऐसा किया है। सो यहाँ प्रश्न होता है कि इपुगतिमें कौनसा कर्मयोग होता है।

(जैनसूत्र १५ कारणी १९४)

समाधान—इपुगतिमें औत्तरिकविमिश्रण और भेदविक्रमविमिश्रण, ये दो योग होते हैं, क्योंकि उपपत्तिश्रेष्ठ प्रति होनेवाली श्रुतिगतिमें जीव आहारक ही होता है। अनाहारक केवल विप्रवृत्तियोंमें ही रहता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पाणिमुखा अंगुलिक और गोमूत्रिका, इन तीनों गतियोंके अन्तिम समयमें भी जीव आहारक ही जाता है क्योंकि, अन्तिम समयमें उपपत्तिश्रेष्ठ प्रति होनेवाली गति श्रुति ही रहती है। इस व्यवस्थाको ध्याने रखकर ही सहायसिद्धिमें 'पक्ष हा भीष्माचारक'। इस सूत्रको स्पष्ट करने पर यह कहा है कि उपपत्तिश्रेष्ठ प्रति आहारक ही आहारक। इसीसे त्रिपु लमकेतु आहारक।

श्रियोमें सम्पद्यति जीव क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ? उसका समाधान करते हुए शिखा है कि 'नहीं; क्योंकि, उनमें सम्पद्यति जीव उत्पन्न होते हैं' । सो इसका सुझावा दिया है ? क्या सम्पद्यति जीव श्रियोमें उत्पन्न हो सकता है ? (वाक्यचर्या १४४)

श्रियोको अपर्याप्तदशमें सम्पत्त्व नहीं होता है, ऐसा गोमटसार आदि प्रयोग कथन है । तदनुसार प्रवृत्तियों के द्वितीय खंडमें पृ ४१० पर भी शिखा है ' इत्येवेष्टेण विना ' अपर्याप्त दशमें श्रियोको सम्पत्त्व नहीं । किन्तु प्रवृत्तियों के प्रथम खंडमें पृ ३३२ पर इसके विरुद्ध शिखा है— हुंदावसर्पिणीं जीवु सम्पद्यन्ते विनाशयन्ते इति चेन्न उत्पद्यन्ते । तदुक्तोऽवसीयते । अस्मा विचार्यते । ऐसा विरोधी कथन क्यों है ? (५ अमित्रकृष्णारजी पृ १२१-४)

समाधान—अस्य गतिसे आकर सम्पद्यति जीव श्रियोमें उत्पन्न नहीं होता है, यह तो सुनिश्चित है । इसीसे उक्त शका-समाधानका अर्थ इस प्रकार ठेका चाहिए—

शका—हुंदावसर्पिणीकाश्रमे श्रियोमें सम्पद्यति क्यों नहीं होते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उनमें सम्पद्यति जीव होते हैं ।

यहां ' उत्पद्यन्ते ' शिवाका अर्थ ' होना ' ठेका चाहिए । इससे स्पष्ट हो जाता है कि हुंदावसर्पिणीकाश्रमे दोषसे श्रिया सम्पद्यति न होने, ऐसा शकाकारके धृष्टिके अग्रिम है ।

अथवा, इस शका-समाधानका निम्न प्रकारसे दूसरा भी अग्रिमार्थ कदाचित् संभव हो सकता है—

शका—हुंदावसर्पिणीकाश्रमे जैसे अन्य अनेकों असम्भव बातें संभव हो जाती हैं, उसी प्रकारसे अन्य गतिसे आकर सम्पद्यति जीव श्रियोमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ?

समाधान—सूत्र न २१ में कहा है कि ' असक्तसम्पद्यति गुणरत्नानां श्रिया नियमसे पर्याप्त होती है ' इससे जाना जाता है कि किसी भी काश्रमे सम्पद्यति जीव श्रियोमें उत्पन्न नहीं होते हैं ।

इस अग्रिमार्थके श्रिये मूलपाठमें ' चेन्न ' के पश्चात्तत्त्व नियम हटा देना चाहिए । तथापि जागेने संदर्भसे इस अग्रिमार्थका सामान्य प्रमाणित नहीं बैठता ।

पृष्ठ ३४२

२९ श्रुति—प्रवृत्तिसिद्धान्तानुसार जो द्रव्यसे पुरय होवे और मत्तोंमें शीघ्र हो उसे योनिमती कहते हैं । किन्तु गोमटसार जीवकांड गाथा १५०, १५६, १८० से ज्ञात होता है कि द्रव्यमें जी हो, और परिणामोंमें जीमान् हा उत्पन्न योनिमती कहते हैं । इस प्रकारकी योनिमतीके १४ गुणस्वात मान हैं । इसका समाधान चाहिए । (५ अमित्रकृष्णारजी)

समाधान—योनिमती त्रिविध श्रियोके उत्पन्न प्रवृत्तियों वतकते हुए कर्मकांड गाथा न

२९६ में कहा है—पुनर्इन्द्रियवत्तु रा योनिमयी अर्थात् योनिमयी के पूर्वोक्त १७ प्रकृतियोंमेंसे पुरुषबेर और नपुंसक बेरको प्रत्यक्ष भी वेर के सिद्धा देनेपर ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। मनुष्यनिर्मोके विषयमें कहा है—अथ सत्त्वित्वाद्यदि ॥२०१॥ अर्थात् पूर्वोक्त १०० प्रकृतियोंमें जीवेदके सिद्धा देनेपर और तीर्थंकर आदि ५ प्रकृतिना निकाश देनेपर मनुष्यनिर्मोके ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ योनिमयी उसे कहा है जिसके जीवेदका उदय हो। ऐसे जीवके दम्प बेर को ही मी खेगा वो मी वह योनिमयी कहा जायगा। जब रही योनिमयीके १४ गुणस्वान की बात सो कर्ममूमिब सियोंके धरुके तीन संज्ञानोंका ही उदय होता है, ऐसा गो कर्मकांड की गाथा २२ से प्रगट है। परन्तु इन्द्रध्यान, क्षपकश्रेयारोहणादि कार्य प्रथम स्वस्वममकाके ही होने हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि दम्पसियोंके १४ गुणस्वान नहीं होते हैं। पर गोमटसारमें जीवेदके १४ गुणस्वान कठकसे कथ्य हैं इसलिये वहाँ दम्पसे पुरुष और मावसे जीवेदका ही योनिमयी पदसे प्रज्ञ करणा चाहिए। इस विषयमें गोमटसार और ब्रह्मसिद्धान्तमें कार्य मवमेक नहीं है। दम्पकोके आदिके पाच गुणस्वान ही होते हैं। गोमटसारकी गाथा न १५ में माव-बेदकी मुख्यतसे ही योनिमयीका प्रज्ञ-वे। गाथा न १५६ और १५९ न टीकाकारने योनि मयीसे दम्पकीका प्रज्ञ किया है, किन्तु वहाँ मी परिजतिमें जीमाव हो, ऐसा नहीं कहा गया है।

टिप्पणियोंके विषयमें

२३ सूत्र—कथल्ले पुनरोत्तमे निये गये मगन्नी क्षराक्षराकी गाथाओंको मुखराक्षराके नामसे उल्लेखित किया गया है, यह ठीक नहीं। कबनि प्रत्यक्ष शिवार्थ स्वयं उस मगन्नी क्षराक्षरा लिखने हैं तब मुखराक्षरा नाम उचित प्रतीत नहीं होता। मुखराक्षरापूर्ण तो ५ आक्षराक्षनीकी टीका का नाम है जिसे उन्होंने अन्य टीकाओंसे प्थाति करनेके लिए दिया था। यदि आपने किसी प्राचीन ग्रन्थमें प्रत्यक्ष नाम मुखराक्षरा देखा हा तो कृपया लिखनेका अनुग्रह करें।

(५ पाठान-बरी बाबी पृ २९१ १५)

समाधान—टिप्पणियोंके साथ जो प्रप-नाम निये गये हैं वे उन टिप्पणियोंके आधारभूत प्रकरित प्रबोक्त नाम हैं। शोकापुरसे जो प्रप करा है उसपर प्रत्यक्ष नाम मुखराक्षरा दिया गया है। श्री मनि हमरी टिप्पणियोंका आगत रही है। कल्प्य उसीका नामोच्छ्रय कर दिया गया है। प्रपने नामादि सम्पन्नी इन्द्रियसे ज्ञानेय विषय का उपपुष्ट स्वयं नहीं पा।

२४ सूत्र—टिप्पणियोंमें अधिकतर तुच्छना पदेनाय प्रत्यापसे की गई है। कथना होता यदि इस कार्यमें दिगम्बर प्रयोग और भी अधिकता के साथ उपयोग किया जाय। इससे तुच्छना-कार्य और मी अधिक प्रयत्नरूपसे सम्पन्न होता।

(अनेकात् १ १ ५ २ १)

(अवधेय १५ काशी १५४)

(वैभवकर, १ उवाच १५४)

समाधान—प्रथम भागमें कुछ टिप्पणियोंकी सूच्या ८५५ है। उनमेंसे त्रिगम्बर प्रयोगोंसे ६२२ और येनाम्बर प्रयोगोंमें २०८ तथा अन्य प्रयोगोंमें ५ टिप्पणियाँ छी गई हैं। यदि प्रत्येक सूच्याकी इष्टिसे भी देखा जाय तो टिप्पणियोंमें उपर्याग किये गये प्रयोगोंकी सूच्या ७७ है, त्रिगम्बर प्रयोग ४०, येनाम्बर प्रयोग ३०, अनेक प्रयोग १, व योग, व्याकरण, अक्षरशास्त्रादि विषयोंमें प्रयोगोंकी सूच्या ६ है। इससे स्पष्ट है कि अवशिष्ट छूटना किन्तु प्रयोगोंपरस करी गई है। जहाँ त्रिगम्बर प्रयोगोंको जो टिप्पणी उपयुक्त प्रतीत हुई वह छी गई है। हममें जेय यही रखा गया है कि इस सिद्धान्त विषयमें सम्बन्ध ग्येनेवाले सभी साहित्यकी ओर पाठकोंकी इष्टि जा सके।

७ द्रव्यप्रमाणानुगम

१ द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति

पदसङ्गममें प्रस्तुत भागमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान कृतया गया है, अर्थात् यहाँ यह बतखाया गया है कि समस्त जीवशास्त्र सिद्धान्तों है, तथा उसमें निम्न निम्न गुणस्थानों व मार्गस्थानोंमें जीवोंका प्रमाण क्या है। स्वभावतः प्रत्येक उत्पत्ति होता है कि इस अत्यन्त अगाध विषय का वर्णन आचार्योंन किन्तु आचार्यपर किया है। यह तो पूर्वभागोंमें बता ही आये हैं कि पदसङ्गमका बहुभाग विषय-ज्ञान महावीर योगबन्धकी ज्ञानद्वारागर्भाके अगम्यता चोह पूर्वोंमेंसे द्वितीय आप्रयोगीय पूर्वके कर्मप्रवृत्ति नामक एक अधिका-विशेषमेंसे लिया गया है। उसमेंमें भी द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है—

कर्मप्रवृत्तिपाहुड अपरनाम वेदनाह-रूपपाहुड (वेदनाकसिणपाहुड) के इति वेदना आदि जीवोंस अधिकारोंमें छटकी अधिकार 'बंधन' है, जिसमें बंधका वर्णन किया गया है। इस बंधन के चार अधिकाधिकार हैं बंध, बंधक, बंधनीय और बंधविधान। इनमेंसे बंधक नामक द्वितीय अधिकारके एकजीवकी अपक्षा रक्षामित्त, पक्षजीवकी अपक्षा काष्ठ, आदि स्याद अनुयोगद्वारा है। इन स्याद अनुयोगद्वारासे से पाँचवा अनुयोगद्वारा द्रव्यप्रमाण नामका है और बहासे प्रकृत द्रव्यप्रमाणानुगम लिया गया है। (देखा पदसङ्गम प्रथम भाग, पृ ११५-१२६)

यहाँ प्रथम यह उत्पत्ति होता है कि जब जीवशास्त्रों सत, क्षय, स्पर्शन काष्ठ, अन्तर और अन्तराहृतन ये छह द्रव्यप्रमाणों बंधविधानके प्रवृत्तिप्रमाणबंधनामक अत्यन्त अधिकारके आठ अनुयोगद्वारासे छी गई हैं। तब यह द्रव्यप्रमाणानुगम भी बहीस क्यों नहीं लिया, क्योंकि, यहाँ भी तो यह अनुयोगद्वारा ब्याख्यान गया जाता था। इसका उत्तर यह लिया गया है कि प्रवृत्तिप्रमाणबंधक द्रव्यानुयोगद्वारासे 'इस बंधप्रमाणक बंधक जीव इतन है' एवा कष्ट सामान्य रूपमें बंधन किया गया है, किन्तु निष्पाद्यि आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा बंधन नहीं किया गया। बंधक अधिकारमें

गुणस्वान्तोंकी अपेक्षा कचन किया गया है, वहां बतलाया गया है कि मिथ्याग्रही जीव इतने होते हैं, साक्षाद्वसम्पादधि जीव इतने हैं; इत्यादि। अतएव जीवद्वष्टानमें द्रव्यप्रमाणानुगमके स्थिते बंधक अधिकारका यही द्रव्यप्रमाणानुगम उपयोगी सिद्ध हुआ। (देखो पट्. प्रथम भाग, पृ १२९)

२ प्रमाणका स्वरूप

द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति बतकानमें जो कुछ कहा गया है उसीसे स्पष्ट है कि यह सिद्ध सिद्ध गुणस्वान्तों और मार्गणास्वान्तोंमें बीजोंका प्रमाण बतलाया गया है। यह प्रमाण चार अपेक्षाओंसे बतलाया गया है द्रव्य, काल, क्षेत्र और मात्र।

१ द्रव्यप्रमाण—द्रव्यप्रमाणके तीन भेद हैं, संख्यात, असंख्यात और अनन्त। जो संख्यात पनेन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात है। उससे ऊपर जो अवविज्ञानका विषय है वह असंख्यात है और उससे ऊपर जो केवलज्ञानका विषय है वह अनन्त है।

संख्यातके तीन भेद हैं, जल्प्य, मध्यम और उत्कृष्ट। गणनाका आदि एकसे माना जाता है। किन्तु एक केवल वस्तुका संचाको स्थापित करता है, भेदके सूचित नहीं करता। भेदकी सूचना दोसे प्रारंभ होती है, और इसीस्थिते दाको संख्यातका आदि माना है। इसप्रकार अथन्य संख्यात दो है। उत्कृष्ट संख्यात आगे बतलाने बतलानेके जल्प्य परीतासंख्यातसे एक कम होता है। तथा इन दोनों केमौके बीच कितनी भी संख्याये पाई जाती हैं वे सब मध्यम संख्यातके भेद हैं।

असंख्यातके तीन भेद हैं, परीत, पुच्छ और असंख्यात और इन तीनोंसे प्रत्येक पुन जल्प्य मध्यम और उत्कृष्टके फरसे तीन प्रकारका होता है। अथन्य परीतासंख्यातका प्रमाण जलवस्था शब्दाका प्रतिशब्दाका और महाशब्दाका ऐसे चार बुद्धोंकी द्वीपसमूहोंकी गणना-सुमार समसोम म भगवत् निरुत्पन्नेन प्रकार कलकता गया है जिसके स्थिते त्रिकोनस्तर गाथा १८-२५ देखिये। आगे कलकते जलिकाके अथन्य पुच्छासंख्यातसे एक कम करने पर उत्कृष्ट परीतासंख्यातका प्रमाण निकला है, तथा जल्प्य और उत्कृष्ट परीतन बीजकी सब गणना मध्यम परीतासंख्यातके भेद रूप है।

अथन्य परीतासंख्यातके वर्तित-सर्गित करनेसे अर्थात् उस राक्षिने उन्ने ही बत गुणित प्रगुणित करनेसे अथन्य पुच्छासंख्यातका प्रमाण प्राप्त होता है। आगे कलकते जलिकाके अथन्य अजगतासंख्यातसे एक कम उत्कृष्ट पुच्छासंख्यातका प्रमाण है और इन दोनों के बीचकी सब गणना मध्यम पुच्छासंख्यातके भेद है।

१ ज बीजका परिदिविदिवी व तक्षेन नाह। तयो वरि ज बीजिपानिदिवी तयक्षेन नाह। तयो वरि ज बीजवपानसैव विदिवी तयक्षेन नाह। (पृ २९७-२९८)

२ इपातीना कलक, बीजपातीना इत्यत्र तक्षेनका। (पि ७१ १९) अथ-वपानसैव विदिवी इत्यत्र इत्यत्र इत्यत्र इत्यत्र इत्यत्र। (बी. बी. बी. व. टीका ११८ वा)

जबन्य युक्तास्त्यन्तरा कर्मा (य × य) जबन्य असंख्यातासंख्यात कहलाना है, तथा ओगे कलत्रमे जलेबाले जबन्य परीतानन्तसे एक कम उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात होला है, और इन दोनोंक बीचकी सब गणना मध्यम असंख्यातासंख्यातके मेदरूप है ।

जबन्य अर्धसंख्यातासंख्यातका तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होती है उसमें अर्धसंख्या, अर्धसंख्या, एक जीव और छात्राकरा, इनके प्रदेश तथा अप्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित कल्पनिक प्रमाणको मिला कर उत्पन्न हुई राशिको पुन तीन बार वर्गित संवर्गित करना चाहिये । इसप्रकार प्राप्त हुई राशिमें कल्पकखंड सम्म्य, स्थिति और अनुमात्राभाष्यकसायस्यानोकर प्रमाण तथा योगक उत्कृष्ट अविमात्रप्रतिष्ठद मिलाकर उसे पुन तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी वह जबन्य परीतानन्त कहली जाली है । ओगे कलत्रमे जलेबाले जबन्ययुक्तानन्तसे एक कम उत्कृष्ट परीतानन्त का प्रमाण है, तथा बीचके सब मेद मध्यम परीतानन्त हैं ।

जबन्य परीतानन्तका वर्गित संवर्गित करनेसे जबन्य युक्तानन्त होता है । ओगे कलाये जलेबाले जबन्य अनन्तानन्तसे एक कम उत्कृष्ट युक्तानन्तका प्रमाण है, तथा बीचके सब मेद मध्यम युक्तानन्त हल हैं ।

जबन्य युक्तानन्तका का जबन्य अनन्तानन्त होला है । इस जबन्य अनन्तानन्तको तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें सिद्ध जीव, निगात्राशि, प्रत्येककल्पति, पुद्गलराशि, कल्पके समय और अलंकाराकरा, ये छह राशियां मिलाकर उत्पन्न हुई राशिको पुन तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें धर्मत्रय और अर्धसंख्या सबकी अनुसन्धुगुणक अविमात्रप्रतिष्ठद मिला देना चाहिये । इस प्रकार उत्पन्न हुई राशिको पुन तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसे कल्पखंडान्तेसे घटाने और फिर ओग बेल्खंडान्तेमें उसे मिला देवे । इस प्रकार प्राप्त हुई राशि अपार कल्पखंडप्रमाण उत्कृष्ट अनन्तानन्त होला है । जबन्य और उत्कृष्ट अनन्तानन्तकी मध्यकी सब गणना मध्यम अनन्तानन्त कहलानी है ।

(देखो पृ १९-२१ तथा चित्राकार काया १८-५१)

२ फासप्रमाण—जीवोंका परिमाण जाननेके लिये दूसरा माप कलत्रका लगाया गया है, जिसका मेद प्रमेय इसप्रकार है— एक परमाशुका मन्गलिम एक आनंदाप्रदेशमें दूसरे आनंदाप्रदेशमें जानके लिये जा कलत्र लगाया है वह समय कहलाना है । यह कलत्रका समस्त छोटा, अविमाणी परिमाण है । अक्षय्याल (अर्थात् जबन्य युक्तास्त्यन्त प्रमाण) सम्पत्तियोंका एक आवृत्ति होला है । सन्त्याल जातवियोंका एक उत्पन्नास या प्राण होला है । सात उत्पन्नासोंका एक स्तोत्र, सात स्तोत्रोंका एक सत्र, और सात सत्रोंका सत्रोंका एक नाली होला है । दो नालीका सुहृत् और तीस सुहृत्का एक अहोरात्र या दिवस होला है । कल्पत कलत्रागलमें अहोरात्र जीवोंम घंटोंका मन्ता जात्रा है । इसके अनुसार एक मुहूर्त अहोरात्रम मिलितका एक नाली जीवोंम मिलितकी, एक लग ३७११ सत्रोंका, एक स्तोत्र ५३३३ सत्रोंका तथा एक उत्पन्नास १६६६ सत्रोंका पड़ता है । जातवि और समय एक मेंसेमे बहुत सूक्ष्म कलत्र प्रमाण होला है ।

(देखो पृ २५ तथा चित्र ४ ४ २८४-२८८)

यह कछुआमाण तालिकाक्रममें इस प्रकार रखा जा सकता है—

अङ्गुल या निक्ष	= १	मुहूर्त	= २४	घंटे
मुहूर्त	= २	नाडी	= ४८	मिनिट
नाडी	= १८॥ छव	= २४	मिनिट	
छव	= ७	लाक	= १७॥	सेकंड
स्तोन	= ७	उष्णमास	= ५॥११	सेकंड
उष्णमास या प्राण	=	सम्पल वातडी	= १६॥११	सेकंड
वातडी	=	अस्मयल (च यु. वस.) सम्प		
सम्प	=	एक फमाणुने एक आनशमने दोसे दूते आनशमने		
		मन्दगतिमे जलेन कछ		

एक सामान्य स्वस्थ प्राणी (मनुष्य) एक बार खास छे और निरुत्थनमें श्रितना सम्प
 खाता है उम उष्णमास कछ है। एक मुहूर्तमें इन उष्णमासोंकी संख्या २७७१ कही गई है, जो
 उष्णमास प्रमाणानुसार इस प्रकार बताई है— $2 \times 24 \times 7 \times 7 = 2772$ । एक अक्षर (२४
 घंटे) में $2772 \times 20 = 55440$ उष्णमास होते हैं। इसका प्रमाण एक मिनिटमें $2772 =$
 365 बता है जो वास्तविक मध्यमांक अनुसार ही है।

एक मुहूर्तमें एक सम्प कम करने पर मिश्रमुहूर्त होता है तथा मिश्रमुहूर्तमें एक सम्प
 कम करनेसे अनासर एक वातडी व आनशमें कम करनेसे भी अन्तर्मुहूर्त कहा है। (पृ. ६७)
 इस प्रकार एक अन्तर्मुहूर्त सामान्यतः सम्पल वातडी प्रमाण ही होता है किन्तु कहीं कहीं
 अन्तर्मुहूर्त सादीपार्य गानकर अस्मयल वातडी प्रमाण भी मान लिया गया है। (पृ. ६९)

पंद्रह दिनका एक पक्ष या पक्षका मास दो मसखी प्रसुत, तीन अष्टौमिक अयन, दो
 अमल वर्ष पाच वयस युग, चौरासी लाल वयस पूर्वांग, चौरासी लाल पूर्वांग का पूर्व, चौरासी
 पूर्वांग मयुतांग, चौरासी लाल मयुतांग का मयुत, तथा इसीप्रकार चौरासी और चौरासी लाल
 गुणित क्रमसे हस्तदांग और हस्त, पक्षांग और पक्ष नलिनांग और नखिन, कमलांग और
 कमल, बुट्टांग और बुट्ट, अट्टांग और अट्ट, अममांग और अमम हाहांग और
 हाहा, हहांग और हह सदांग और सदा, तथा महासदांग और महासदा क्रमसे होते हैं।
 फिर चौरासी अमम गुणित क्रमसे श्रीकल्प (या विम का), हस्तप्रवेसित (हस्तप्रवेसित) और
 अक्षरप्र (अक्षर) होते हैं। चौरासीका इकतीस कर परस्पर गुणा करनेसे अक्षरप्रकी बरौन
 प्रमाण जाता है जो नव्य शृण्वकाक इन्द्र है। यद्यपि इन मयुतांगानि क्रम-गणनाओंका ठोस
 प्रमाण प्रथमप्रमाणे नहीं आया तथापि सामान्य गणनाकी मध्यमांतर कुछ बोध करनेके लिये यह

१ हादीन और हाहा मास ईश्वरार्थे वायु रात्रिपार्थिक व इतिवृत्तके क्रमविराचने की पाले गते।

२ यह विचारवर्णनिक अनुसार है। किन्तु चौरासी की इकतीस कर वातडी अक्षर अक्षर (२४) का
 Logarithm के अनुसार केवल छह (६) अक्षरवाक ही बता जाती है।

सब यहाँ दी गई है। यह सब सस्यान (मन्थन) का ही प्रमाण है। इसमें कठ गुण ऊपर जाकर उच्च सस्यानका प्रमाण होता है जो ऊपर गणना-मापमें बता ही आया है।

आगे क्षेत्रप्रमाणमें बतलाया जानवाले एक प्रमाण याजन (जपात् दो हजार करोड़) छम्मा चौड़ा और गहरा कुछ बताकर उस उत्तम मागभूमिक सात तिनके भीतर उत्पन्न हुए मेदके रोमाग्रो (जिनके और सब वैधोंसे न हो सकें) से भर गे और उनमेंसे एक एक रोमखंडको ही ही बर्षमें निकाल। इसप्रकार उन समस्त रोमोंको निकालनेमें जितना बड़ा व्यतीत होगा, उसे व्यवहारपत्त्य कहते हैं। उक्त रोमोंकी कुछ सस्या गणितसे ४५ एक प्रमाण जाती है, और तदनुसार व्यवहारपत्त्यका प्रमाण ४५ एक प्रमाण इत्यादिमा अपका ४७ एक प्रमाण बर्ष हुआ।

इस व्यवहारपत्त्यको लक्ष्म्यात कति वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर उद्धारपत्त्यका प्रमाण आता है, जिससे द्वीप-समुद्रोन्नी गणना की जाती है। इस उद्धारपत्त्यको असंख्यत कोटि वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर अद्वापत्त्यका प्रमाण आता है। कर्म, मन, वासु और क्षय, इनकी स्थितिके प्रमाणमें इसी अद्वापत्त्यका उपयोग होता है। बीधरम्पकी प्रमाण-प्रस्तुतणमें भी यथावश्यक इसी पत्त्यापत्त्यका उपयोग किया गया है। एक करोड़को एक करोड़से गुणा करने पर जो छम्मा आता है उसे काड़ाकोड़ी कहते हैं। दस कोड़ाकोणी अद्वापत्त्योपयोगका एक अद्वा-सागरापत्त्य और दस कोड़ाकोड़ी अद्वासागरोपयोगी एक उत्सर्पिणी और इतने ही कचकी एक अवसर्पिणी होती है। इन दोनोंको मिठाकर एक कल्पकाल होता है।

३ धृष्टप्रमाण—पुत्रल द्रव्यक उस मूकानिमूक मगको परमाणु कहते हैं जिसका पुन विभाग न हो सक, या निश्रयो इत्यादि प्राप्ति नहीं आता जो अप्रदेशी तथा अन, अति व मध्य स्थित है। पर अविभागी परमाणु जितने आकाशका गतता है तबत आकाशका एक क्षेत्रप्रदेश कहते हैं। अनन्तानन्त परमाणुओंका एक अवसमासक स्वरूप, आर अममसासक स्वरूप एक सभासक स्वरूप, आर ममासक स्वरूप एक गुणेषु (शुक्तिषु तृणेषु), आर गुणेषुओंका एक प्रसरेण, आर प्रसृणुओंका एक रघरेण, आर रघुणुओंका उत्तम मागभूमिसंघर्षी घाताग्र, आर उत्तम मागभूमिसंघर्षी बाजाभोरा एक मध्यम मागभूमिसंघर्षी घाताग्र, आर मध्यम मागभूमिसंघर्षी बाजाभोरा एक सघन्य मागभूमिसंघर्षी घाताग्र, आर सघन्य मागभूमिसंघर्षी बाजाभोरा एक कर्मभूमिसंघर्षी घाताग्र, आर कर्मभूमिसंघर्षी बाजाभोरा एक सिधा (छत्त), आर सिधाओंका एक जू आर जूओंका एक यव (यन्मन्थ), आर आर यवोंका एक अंगुल होता है। अंगुल तीन प्रसृतका है तमचगुल प्रमाणगुल आर आरगुल। उपर जिस अंगुलका प्रमाण बतलाया है वह उत्सर्पांगुल (मूत्रि) है। पाचमा तमचगुलेंका एक प्रमाणांगुल होता है, या अरमर्षिणीकाउक प्रथम चरुनीव पाया जाता है। भग आर पणन क्षममें जिस क्षममें सामान्य मनुष्यका जो अंगुल प्रमाण होता है वह तम तम कण्डमें तम तस क्षेत्रका आरमर्गुल कहलाता है। मनुष्य स्थिर, दन आर नागरिओंका दार्शनिक असाधना तथा चतुर्भुज देवोंके निवास आर नागक प्रमाणन स्थि तमचगुल ही प्रमाण दिया जाता है। ईरा, समुद्र,

४ भावप्रमाण—पूर्वोक्त तीनों प्रकरणोंके प्रमाणोंके ज्ञानको ही भावप्रमाण कहा है। (देखो सूत्र ५)। इसका अभिप्राय यह है कि जहाँ जिस गुणस्थान व मार्गास्थानका द्रव्य, वस्तु व क्षेत्रकी अपेक्षासे प्रमाण कल्पितया गया है वहाँ उस प्रमाणके ज्ञानको ही भावप्रमाण समझ लेना चाहिये।

३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण प्ररूपण

सर्व जीवराशि अनन्तान्त है। उसका बहुमाग मिथ्याद्यिगुणस्थानकर्त्ता है तथा शेष एक माग अन्य तरह गुणस्थानों और सिद्धोंमें विभाजित है। इनमें भी मिथ्याद्यि और सिद्ध क्रम-हानिरूपसे अनन्तान्त हैं। सासादनादि चार गुणस्थानोंके जीव प्रत्येक राशिके असंख्यात है, तथा शेष प्रमत्तादि नौ गुणस्थानोंके जीव संख्यात हैं जिनकी कुछ संख्या तीन वम नौ करोड़ निश्चित है। यद्यपि अनन्तरे संख्यामें उतारना आसक हो सकता है, तथापि ध्वजकारने सक्त राशियोंके ध्रुविक प्रमाणका बोध करानेके लिये सर्व जीवराशिका १६ और इनमेंसे मिथ्याद्यिराशिको १३, तथा सासादनादि शेष गुणस्थानोंके जीवों और सिद्धोंका संयुक्त प्रमाण ३ अंकोंके द्वारा सूचित किया है। जब हम यदि इसी अक्षरस्थिके आधारसे सभी गुणस्थानों व सिद्धोंका अलग अलग प्रमाण कल्पित करना चाहें, तो स्पष्टत इत्यप्रकार किया जा सकता है—

शेष गुणस्थानमें जीवराशियोंके प्रमाणकी सद्यष्टि

गुणस्थान	प्रमाण	अक्षरसद्यष्टि
१ मिथ्याद्यि	अनन्त	१३
२ सासादन	असंख्य	२४
३ मिश्र	"	३३
४ अक्षितसम्पद्यि	"	४३
५ सप्तासपत	"	५३
६ प्रमत्तचित	५०१९८२०६	} ११
७ अप्रमत्तचित	२०६९०१०१	
८ अक्षरण	८९७	
९ अनिष्टाक्षरण	८९७	
१० सूक्ष्माक्षरण	८९७	
११ उपदान्तमोह	२९९	} ११
१२ क्षीणमोह	५०८	
१३ सयोगिन्त्रकी	८०८५०२	
१४ अपयोगिन्त्रकी	५९८	
सिद्ध	अनन्त	२
सर्वजीवराशि	अनन्त	१६

१ अक्षरस्थिके अक्षरस्थिके सक्त राशिके अक्षरस्थिके जीव अक्षरस्थिके व अक्षरस्थिके अक्षरस्थिके जीव अक्षरस्थिके

चौदहों गुणस्वान्तोंकी जीराशियोंके प्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् उनका भागामाग और फिर उनका अल्पबहुत्व कसताया गया है। भागामागमें सामान्य राशिको कस कर विभाग करते हुए सबसे अल्प राशि तक आये हैं। अल्पबहुत्वमें सबसे छोटी राशिसे प्रारम्भ करके गुणा और योग (संश्लेषिक) करते हुए सबसे बड़ी राशि तक पहुँचे हैं। इस अल्पबहुत्वका तीन प्रकारसे प्ररूपण किया गया है, स्वस्थान, परस्थान और सप्तस्वस्थान। स्वस्थानमें केवल अष्टाष्टकाएँ और विशिष्ट राशियाँ अल्प-बहुत्व कसताया गया है। परस्थानमें अष्टाष्टकाएँ, माय तथा अन्य ओ राशियाँ उनके प्रमाणके बीचमें आ पड़ती हैं। उनका अन्त विशिष्ट राशिको अल्पबहुत्व दिखाया गया है। तथा सप्तस्वस्थानमें उक्त राशियोंके अनिष्टिक अन्य राशियोंमें भी अल्पबहुत्व दिखाया गया है। (पृ. १-१२१)

४ जीराशिका मार्गजास्वान्तोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

गुणस्वान्तमें जीराप्रमाण-प्ररूपणक पश्चात् गणि अदि चौदह मगानाओं व उनके भद्र-प्रमे-दोंमें जीराशिक प्रमाण लिखलया गया है और यहाँ प्रत्येक राशिको प्रमाण मगामाग और अल्प-बहुत्व मर्यादामें सप्तकताया गया है। किन्तुकर गुणस्वान्तमें प्रथम सिध्दादिक प्रमाण समझानेमें आचार्यने गणितकी अनेक प्रक्रियाओंका उपयोग करके लिखा है, उसी प्रकार मार्गजास्वान्तमें प्रथम नक्षत्रात्मिक प्रमाणप्ररूपणम भी गणितमिलकर पता जाता है। (देखो पृ. १२१-१२५)

उक्त प्रमाण-विचित्र बड़ी सूक्ष्म और गहराईक साथ किया गया है, किन्तु आचार्यने अंग-संश्लेषिक बन्धन नहीं रखा, किन्तु सामान्य पाठकोंके विषयका बोध होना सुगम नहीं है। अतएव हम यहाँपर उन सब मार्गजाओंकी पूरक पूरक प्रमाण-प्ररूपणक अन्तमदृष्टि आचार्यद्वारा कल्पित अंगोंके आधारम कनेशन प्रयत्न करते हैं, किन्तु मुख्य उद्देश्य अनन्त, असंख्यता व संख्यात्मक गीतर राशियोंके अल्पबहुत्वका कुछ स्पष्ट बोध करना मात्र है। प्रत्येक मार्गजाक भीतर सूर्य जीराशिक संयुक्त प्रमाण १६ ही रखा गया है। किन्तु सूत्र दृष्टिमें पठित करनेपर एक दूसरी मार्गजाओंकी अन्तमदृष्टिमें फलर बैरम दृष्टिआकर हो करता है। यह सर्वजीराशिक विषय केवल १६ जैसी असं संख्या केवल समस्त मार्गजाओंके प्रमेदोंका उद्देश्य करनेमें प्रायः अनिवार्य ही है। एक राशि दूसरी राशिसे जितनी दूरी व जितनी गुणित अन्तर है उसका अनुपात इन अंगोंमें कदापि नहीं करना चाहिये। यहाँ तो सिर्फ एक मार्गजाके भीतर राशियोंका फलर अभिज्ञता या अल्पप्रकार ही कम आता या करता है। परन्तु गणितके सूत्र विचारसे यह बैरम भी समझ दूर किया जा सकता है, किन्तु उससे फिर संश्लेषिक सुगम होने की अपेक्षा दुर्गम सी हो जाती, किन्तु हमारा अग्रिमार्थ पूर्ण नहीं होता। चूंकि यहाँ प्रत्येक मार्गजाक भीतर जीराशियोंका प्रमाणक्रम निर्दिष्ट करना अभीष्ट है, अतएव राशियों बहुत्वसे अल्पत्वकी आ क्रमसे एवं गये हैं, उनमें एकक्रम नहीं। हा, सिद्ध सर्वत्र अन्त-

अन्तमदृष्टि बात है। हमने भी अन्तमदृष्टि हमने अन्तमदृष्टि, इसके अन्तमदृष्टि मात्र विद्युत्प्रवाहम इसके अन्तमदृष्टि मात्र अन्तमदृष्टिमदृष्टिमदृष्टि इसके अन्तमदृष्टि मात्र अन्तमदृष्टिमदृष्टिमदृष्टि और है।

१० लेप्या मार्गणा (पृ ४९९)

कृष्ण अवन्त	नीळ अवन्त	कापोत अवन्त	पीत अवन्त	पद्म अवन्त	शुद्ध अवन्त	अलेख्य अवन्त	सर्व जीव अवन्त
७१ ११	१० ११	१५ ११	८ ११	१ ११	१ ११	११ + ११	११

११ मध्य मार्गणा (पृ ४७१)

मध्य अवन्त	मामध्य अवन्त	सिद्ध अवन्त	सर्व जीव अवन्त
१११ ११	१८ ११	१२ ११	११

१२ सम्पत्त्व मार्गणा (पृ ४७८)

मिथ्याह अवन्त	सापोप अवन्त	सायिक अवन्त	धीपश अवन्त	मिथ अवन्त	सासा अवन्त	सिद्ध अवन्त	सर्व जीव अवन्त
१८ ११	१ ११	४ ११	१ ११	१ ११	१ ११	१२ ११	११

१३ सखा मार्गणा (पृ ४८१)

असखी अवन्त	संखी अवन्त	अनुमय अवन्त	सर्व जीव अवन्त
१११ ११	११ ११	१२ + ११	११

१४ आहार मार्गणा (पृ ४८५)

आहारक अवन्त	अनाहारक अवन्त	अवयवक अवन्त	सर्व जीव अवन्त
११	१	१	११

७ यहाँ लिखा है प्रमाण १४ में इसका एक पत्र लिखित है।

८ यहाँ लिखा है प्रमाण ११ में जी. १४ व इसका एक पत्र लिखित है इसका पत्र लिखित है।

इन प्रमाण-प्रकरणोंमें स्वभावन पाठकोक्त मनुष्योंके प्रमाणके सम्बन्धमें विशेष बर्तित हो सक्ता है। इस आगमानुसार सर्व मनुष्योंके सम्पत्ति अस्मत्प्रमाण है। उनमें गुणस्थानोक्तो अपेक्षा निम्नोक्त द्रव्यप्रमाणसे अस्मत्प्रमाण, कण्डप्रमाणसे अस्मत्प्रमाणसे अस्मत्प्रमाण (अस्मत्पिण्डियों-उत्सर्पिणियों) के सम्पत्ति प्रमाण, तथा क्षेत्रप्रमाणसे अगधर्मी अस्मत्प्रमाण माग अवाप्त अस्मत्प्रमाण करोड योजन क्षेत्रप्रमाण प्रमाण है। द्वितीयादि गुणस्थानकी जित सख्यात है, जा इस प्रकार है—

१ साक्षात् गुणस्थानकी मनुष्य ५२ करोड (५ मीलरूपमें ५० करोड)

२ मिथ " " १०४ करोड (१०४ करोड इगुने)

३ अस्मत्प्रमाणसे " " ७०० करोड

४ सप्तमसप्त " " १२ करोड

छत्रसे चौहत्ते गुणस्थानकी मनुष्योंकी सख्या कही है जा उपर गुणस्थान प्रमाण-प्रकरणमें दिखा आया है, क्योंकि, य गुणस्थान कतक मनुष्योंकी ही हान है, दक्षिणोक्ते नहीं। अतः जिनका प्रमाण सख्यात है, उसे द्वितीय गुणस्थानसे चौहत्ते गुणस्थान तकके कुछ मनुष्योंका प्रमाण ५२+१०४+७००+१२=८१८ मील यम ९ करोड, अवाप्त कुछ तैल यम आठवीं अष्टक करोड हाना है। आत्रकी समारम्भकी मनुष्यगणनासे यही प्रमाण चौगुनसे भी अधिक हो जाता है। निम्नोक्तियोंके मिश्रण से उसकी अधिकता बहुत हो कर जाती है। जैन सिद्धान्तानुसार यह गणना क्विं द्वितीयकी विष्टेह अति समस्त क्षेत्रोक्त है जिसमें पञ्चाशत् अतिरिक्त निरूप्यप्राप्तक और सम्पत्तिप्राप्तक मनुष्य भी सम्मिलित है।

नाता क्षेत्रमें मनुष्य गणनाके अन्त्यबहुत इस प्रकार बतलाया गया है—अन्तर्हीपाक मनुष्य सप्त करोड है। उनसे सप्तपञ्चगुण उत्कुरु और त्वकुरु मनुष्य है। इसीप्रकार द्वि और त्रिपुरु, हेमक और हेमक, भग और पराक, तथा सिंह इन क्षेत्रोंका मनुष्यप्रमाण पुन पुनसे सप्तगुण सप्तपञ्चगुण है। (रत्नो १ ११)

एक बात और उल्लेखनीय है कि कस्मान् द्विउत्सर्पिणीय पञ्चमम सर्वप्रकाश ही शिष्य-परिवार सप्त अधिक हुआ है, जिसकी सख्या तीन मील तीस हजार ३६०,००० थी।

उपर्युक्त चौहत्ते गुणस्थानों और मागणा-स्थानोंमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान मगवान् भूतवर्षि आचार्यने १९२ मूर्तोंमें बताया है, जिनका विषयक्रम इस प्रकार है—

प्रथम सूत्रमें द्रव्यप्रमाणानुगमके औष और अपेक्षा द्वारा निर्देश करनेकी सूचना देकर दूसरे, तीसरे, चौथे और पाँचवें सूत्रोंमें निम्नोक्त गुणस्थानकी जीवोक्त प्रमाण क्रमशः द्रव्य, कण्ड, क्षेत्र और मावकी अपेक्षा बतलाया है। छठवें सूत्रमें द्वितीयसे पाँचवें गुणस्थान तकके जीवोक्त तथा आगके सागने और आठवें सूत्रमें क्रमशः छठे और सातवें गुणस्थानोंका द्रव्य-प्रमाण बतलाया है। उसी प्रकार ९ वें और १० वें सूत्रमें उपशमक तथा ११ वें व १२ वें में शपको और अषाग कषकी जीवोक्त तथा १३ वें व १४ वें सूत्रमें सद्योगिनेत्रियोंका प्रवेश और संक्षेप रजककी

मार्गभ्रष्टानोंके भीतर बलशुद्ध गई राशियोंसे बहुतसे अत्यन्तकी और कम अत्यन्त हमारे विचारमें आया है, निम्न प्रकार है—

अनन्त	असंख्यात	संख्यात
१ अक्षयमी	२४ वायुव्यधिक	५३ सामाधिकसंयत }
२ अक्षयवर्षाणी	२५ अक्ष	५७ अक्षोपस्थापना }
३ कुम्भति {	२६ पृथिवी	५८ यथावपात
४ कुम्भत {	२७ ऐश	५९ केवलवर्षाणी }
५ मिथ्यावृष्टि	२८ अक्ष	६० केवलवर्षाणी }
६ अक्षयकक्षेत्री	२९ अक्षययोगी	६१ पृथिवीसंयत
७ त्रिपथ	३० अक्षिग्रय	६२ अक्षःपथवर्षाणी
८ अक्षणी	३१ अक्षिग्रय	६३ अक्षःपथवर्षाणी
९ अक्षययोगी	३२ अक्षिग्रय	
१० अक्षिग्रय	३३ अक्षयवर्षाणी	
११ अक्षयवर्षाणी	३४ अक्षिग्रय	
१२ अक्ष	३५ अक्षणी	
१३ अक्षवर्षाणी	३६ अक्षयोगी	
१४ अक्षवर्षाणी	३७ अक्षवर्षाणी	
१५ अक्ष अक्षणी	३८ अक्षवर्षाणी	
१६ अक्ष	३९ अक्षिणी	
१७ अक्षणी	४० अक्ष	
१८ अक्ष अक्षणी	४१ अक्षवर्षाणी	
१९ अक्ष	४२ अक्ष	
२० अक्ष	४३ अक्षवर्षाणी	
२१ अक्ष	४४ अक्ष	
२२ अक्ष	४५ अक्षवर्षाणी }	
२३ अक्ष	४६ अक्ष	
	४७ अक्ष	
	४८ अक्षवर्षाणी }	
	४९ अक्षवर्षाणी	
	५० अक्षवर्षाणी	
	५१ अक्ष	
	५२ अक्षवर्षाणी	
	५३ अक्ष	
	५४ अक्षवर्षाणी	
	५५ अक्षवर्षाणी	

इस प्रमाण-प्रकरणमें स्वमात्रा पाठकोंको मनुष्योंके प्रमाणके सम्बन्धमें विशेष कौतुक हो सकता है। इस आगमानुसार सर्व मनुष्याकी संख्या असंख्यत है। उनमें गुणस्थानोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे असंख्यत, कारणप्रमाणसे असंख्यातासेख्यात कल्पकाल (अन्तर्पिणियों-उत्पत्तिगियों) व समय प्रमाण तथा क्षेत्रप्रमाणसे जगत्प्रैमिकी असंख्यतने माग अर्थात् असंख्यत करोड़ योजन क्षेत्रप्रैम प्रमाण हैं। द्वितीयादि गुणस्थानधर्मी जीव संख्यत हैं, जो इस प्रकार हैं—

२ साप्तादन गुणस्थानधर्मी मनुष्य ५२ करोड़ (४ मन्तरसे ५० करोड़)

१ मिश्र " " १०४ करोड़ (पूर्वोक्तसे दुगुने)

४ अक्षयनसम्पदृष्टि " " ७०० करोड़

५ संप्रसाप्त " " १२ करोड़

छठसे चौदहवें गुणस्थानतकके मनुष्योंकी संख्या यही है जो ऊपर गुणस्थान प्रमाण-प्रकरणमें दिखा आये हैं, क्योंकि, ये गुणस्थान केवल मनुष्योंके ही हान हैं, दबादिकोंके नहीं। अतः जिनका प्रमाण संख्यात है, ऐसे द्वितीय गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थान तकके कुछ मनुष्याका प्रमाण ५२+१०४+७००+१२+तीन कम ९ करोड़, अर्थात् कुछ तीन कम आठवीं अठहत्तर करोड़ होता है। आबकी सत्तारमकी मनुष्यागमनासे यही प्रमाण चौगुनेस भी अधिक हो जाता है। मिथ्यादृष्टियोंके मिश्रकर तो उसकी अनिश्चिता बहुत हो जाती है। जैन सिद्धान्तानुसार यह गणना बड़ा हीपकी भिन्न है। अति समस्त क्षैत्रोंकी है जिसमें पर्याप्तकरोड़ अनिश्चित निरूप्ययाप्तक और व्यर्थपयाप्तक मनुष्य भी सम्मिलित हैं।

नाला क्षैत्रोप मनुष्य गणनाका अत्यन्तवृत्त्य इस प्रकार बतलाया गया है—अन्तर्जातेके मनुष्य स्वस बाडे हैं। उनसे सख्यातगुणे उत्पन्नकृत और प्रचलने मनुष्य हैं। इसीप्रकार हरि और रम्यक, हेमक और हेमरक, मल और पालक, तथा बिह इन क्षेत्राका मनुष्यप्रमाण पूर्व पूर्वसे कमता संख्यातगुणा है। (इति ११)

एक बात और उल्लेखनीय है कि कर्ममान बुद्धतर्पिणीम पद्मप्रम तीर्थंकरका ही शिष्य-परिवार सन्ने अधिक हुआ है, जिसकी सख्या तीन खल तीस हजार २,२०,००० थी।

उपर्युक्त चौदह गुणस्थानों और मार्गणा-स्थानोंमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान मगवान् मृतबलि आचार्यने १९२ सूत्रोंमें बताया है, जिनका निपयक्रम इस प्रकार है—

प्रथम सूत्रमें द्रव्यप्रमाणानुगमके ओष और ओषेष्ट द्वारा निर्देश करनेकी सूचना देकर सूत्रे, वीसरे, चौथे और पाँचवें सूत्रोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानक जीवोंका प्रमाण क्रमशः द्रव्य, काल, क्षेत्र और मात्राकी अपेक्षा बतलाया है। छठवें सूत्रमें द्वितीयसे पाँचवें गुणस्थान तकके जीवोंका तथा आगेके सातवें और आठवें सूत्रमें क्रमशः छठे और सातवें गुणस्थानोंका द्रव्य-प्रमाण बतलाया है। उसी प्रकार ९ वें और १० वें सूत्रमें उपशामक तथा ११ वें व १२ वें में क्षयकों और अवोग केतकी जीवोंका तथा १३ वें व १४ वें सूत्रमें समोपिनेकधियोंका प्रवेश और संक्षय-प्रवृत्तकी

अपेक्षासे प्रमाण कहा गया है। सूत्र न १५ से मार्गात्स्वान्तोमे प्रमाणक निर्देश प्राप्त होता है, जिसके प्ररूपणकी सूत्र-सङ्ख्या निम्न प्रकार है—

सूत्रसे	सूत्रक कुल सूत्र	सूत्रसे	सूत्रक कुल सूत्र
नरकगति १५	- ११ = ९	ज्ञान मार्गाणा १४१	- १४७ = ७
तिर्यकगति २४	- १९ = १५	संप्रम " १४८	- १५४ = ७
मनुष्यगति ४०	- ५७ = १३	दक्षम " १५५	- १६१ = ७
देवगति ५३	- ७१ = २१	कन्या " १६२	- १७१ = १
इन्द्रिय मार्गाणा ७४	- ८६ = १३	मम्य " १७२	- १७१ = २
कन्य " ८७	- १२ = १५	सम्यक्त्व " १७४	- १८४ = ११
योग " १३	- १२३ = २१	संज्ञी " १८५	- १८० = ५
वेद " १२४	- १२४ = ११	आहार " १९	- १९२ = ३
कपाय " १३५	- १४० = ५		

५ मतान्तर और उनका खंडन

ब्रह्मास्त्रने अपने समापकी उपपक्ष्य सैद्धांतिक सम्पत्तिका जितना मरपुर उपयोग किया है वह प्रपके ब्रह्मोक्तसे ही पूर्णतः प्राप्त हो सकता है। सूत्रों, व्याख्यानों और उपदेशोंका जो साहित्य उनके समुच्चय उपस्थित था, उसका सिद्धान्तोक्त प्रथम भागकी सूचिकासे कटाया जा चुका है। प्रस्तुत प्रपभागमें भी जहाँ प्रकृत विषयके विशेष प्रतिपादनके क्रिये प्रवक्तृकायको सूत्र, सूत्रसूक्ति व व्याख्यानका आश्रय नहीं मिला, वहाँ उन्होंने आचार्य परंपरागत निम्नोपदेश ' परम गुरुपदेष्ट, ' गुरुपदेष्ट, ' व ' आचार्य-ब्रह्म ' के आश्रयसे प्रमाणप्ररूपण किया है^१। किन्तु विशेष ध्यान देने योग्य कुछ ऐसे स्थल हैं, जहाँ आचार्यने विषय विषय मत्तोका स्पष्ट उल्लेख करके एकका खंडन और दूसरेका संबन्ध किया है। यहाँ हम इसीप्रकारके मत-मतान्तरोंका कुछ परिचय कराते हैं—

(१) सूत्रकारने प्रमाणप्ररूपणमें प्रथम ब्रह्मप्रमाण, फिर कश्चप्रमाण, और तत्पश्चात् क्षेत्र-प्रमाणका निर्देश किया है। सामान्य कमानुसार धर्म पहले और कश्च पश्चात् उल्लिखित किया जाता है, फिर यहाँ कश्चका धर्मसे पूर्व निर्देश क्यों किया गया। इसका समाधान ब्रह्मास्त्र करते हैं कि कश्चकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण सूक्ष्म होता है अतएव 'आ स्पृक्ष और अत्य बर्णनीय हो उसका पहले व्याख्यान करना चाहिये।' इस नियमके अनुसार कश्चप्रमाण पूर्व और क्षेत्रप्रमाण उसके अनन्तर कहा गया है। इस प्रकार उन्होंने सूत्रमालके संक्षेपमें कुछ आचार्योंकी एक विध मान्यताका उल्लेख किया

१ परमगुरुपदेष्टोर्वा अपिच्यते। इदमेतिव होति वि ब्रह्म ब्रह्म^१ आचार्यपरंपरापरमविचोत्तरमन्त्रो।
अन्यदर्थवर्णनीयं यत्तत्तु इदमेतिवोक्तं दुष्टम्। (५ ५९) और भी देखिये ५ १११ १५५ ४ १ ४७३

(७) साधारनसम्पत्तियौक्त प्रमाण एक प्राचीन गाथामें ५२ करोड़ और दूसरी गाथामें ५० करोड़ पाया जाता है । भवछाकारन प्रथम मत ही ग्रहण करनेका आदेश किया है, क्योंकि, यह प्रमाण आचार्य-परंपरागत है । (पृ २५१)

(८) सूत्र ४५ में मनुष्य पर्याप्त निष्पाद्यशिक्षा प्रमाण बतलाया है 'कोटाका'कोटीसे ऊपर और कोटानुताकोटोकोटीसे नीचे' अर्थात् छठवें बर्गके ऊपर और सातवें बर्गके नीचे । किन्तु एक दूसरा मत है कि मनुष्य-पर्याप्तशिक्षा बागल बर्गके (४२९४९१७२०६) अर्थात् द्विगुण बर्गघातके पाँचवें बर्गस्थानके मनप्रमाण है । भवछाकारने इस दूसरे मतका परिहार किया है और उसके दो कारण दिये हैं । एक तो बागलका घन २० अरु प्रमाण होकर भी कोटाकोटा कोटोकोटीके ऊपर निकल जाना है, जिससे सूत्रके अन्त-सीमायौक्त सर्वथा उल्लंघन हो जाता है । दूसरे यदि दारि द्वापरे उस मागका क्षलपक्ष निरुद्धा जाय जहाँ मनुष्य विशेषतासे पाये जाते हैं, तो उसका क्षेत्रफल केवल २५ अरु प्रमाण प्रतर्पणुओंमें जाता है जिससे उस २९ अरु प्रमाण मनुष्यशिक्षा वहाँ निवास असम्भव सिद्ध होता है । यश नहीं, सर्वभूमिद्विके देवोंका प्रमाण मनुष्य पर्याप्तशिक्षासे सम्पातगुणा कहा गया है जबकि सर्वभूमिद्वि विमानका प्रमाण केवल जम्बूद्वीपके बराबर है । अतएव उक्त प्रमाणमें इन देवोंकी अवागहना भी उनकी निश्चित निवास-भूमिमें असम्भव हो जायगी । अत उक्त शिक्षा प्रमाण सूत्रक अर्थात् वेदकाकोटोकोटीसे नीचे ही मानना उचित है । (पृ २५१ २५८)

(९) आहारमिधनपयोगियौक्त प्रमाण आचार्य-परंपरागत उपदेशसे २७ माना गया है, किन्तु सूत्र न १२० में उक्त प्रमाण 'सम्पात' शब्दक द्वारा सूचित किया गया है । इसपरसे भवछाकारका मत है कि उक्त शिक्षा प्रमाण निश्चित २७ नहीं मानना चाहिये किन्तु मध्यम सरपातकी लम्ब करी सम्पात माना चाहिये जिसे जितने मनुष्य ही जानते हैं । यद्यपि २७ भी मध्यम सम्पातका ही एक भेद है और इसलिये उमके भी उक्त प्रमाणप्रकरणमें ग्रहण करनेकी समावना हो सकती है किन्तु इसके विरुद्ध भवछाकारने ७ हेतु दिये हैं । एक तो सूत्र में केवल सरपात शब्द द्वारा ही यह प्रमाण प्रकट किया गया है, किसी निश्चित सम्पात द्वारा नहीं । दूसरे विप्रश्रमयोगियोंमें आहारप्रयोगी सम्पातगुणे बह गये हैं । दोनों विरुद्धोंमें यहाँ सामन्त्य बन नहीं सकता क्योंकि, सर्व अवपातगण्यसे ज्ञाप्य परातगण्य भी संवत्सरा गुणा माना गया है । (पृ ४००)

६ गणितकी विद्यपथा

धर्मराजने अनेक इस ग्रंथभागाद आदिमें ही संग्रहालय गाथामें कहा है कि—आदिग्रन्थ जिने अनेको दृष्टिधीन गणितकारों अर्थात् त्रिगुण-द्वारा मन्वन्त परात मन्वन्त-गानुविशारा बचन करने हैं, त्रिमरा सर भाग गणितशास्त्रम सम्भव गणा है, या आ गणित शास्त्र-ग्रन्थ है । यह प्रतिज्ञा इस प्रथम पूर्णग्रन्थ निराली गई है । धर्मराजने इस ग्रंथभागे गणितशास्त्रा गुरु उप

और न केवली इय मावित प्रमाणमूल अन्य सूत्रों से इसका साधनत्व बैठता है। उन्होंने एक प्राचीन गाथा उद्धृत करके बतलाया है कि एक मूर्तक उद्धवासोंका ठीक प्रमाण १००१ है, और इसी प्रमाण द्वारा सूत्रोंक एक दिवसमें १,११ १९० प्राणोंका प्रमाण सिद्ध होता है। सूत्रोंक मतसे तो एक दिनमें केवल २१,६० प्राण होंगे जो किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं। (५ १११)

(४) उपशामक जीवोंकी संख्याके नियममें उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति, ऐसी दो मिस मान्यताएं दी हैं। प्रथम मतानुसार उक्त जीवोंकी संख्या १, ४, तथा द्वितीय मतानुसार उनसे ५ कम अर्थात् १९९ है। इस मतमेंदोनों प्रकारक दो गाथाएं भी उद्धृत की गई हैं। उनमेंसे एकमें एक तीसरा मत और उल्लिखित होता है जिसके अनुसार उपशामकजीवोंकी संख्या दो ३०० है। इन मत-मणोंपर ब्रह्मास्मृतन को उदाहरोह नहीं किया, उन्होंने केवलमूल उनका उल्लेख ही किया है।

(५) इसी उक्त और दक्षिण प्रतिपत्तियोंका मतभेद प्रमत्तसम्पत् राशिके प्रमाण-मन्त्रपणमें भी पाया जाता है। उत्तरप्रतिपत्तिरे अनुसार प्रमत्तोंका प्रमाण ४,६६ ६६,६६४ है, किन्तु दक्षिणप्रतिपत्तानुसार यह प्रमाण ५,९६ ९८२ ६ आता है। इन मतभेदोंके बीच गिनत करनेका भी धमकाइयाने कहा कोई प्रयत्न नहीं किया। किन्तु दक्षिणप्रतिपत्तिरे प्रमाणमें आठ आवायोंमें यह धारा उद्धृत है कि सत्र तीर्थस्त्रोमें सत्रसे बरा शिष्यपत्तिर पञ्चमस्त्रासीका ही बा, किन्तु यह परिचय भी मात्र ३३ ० हो बा। तब फिर आ सत्र सम्पत्तोंकी ही संख्या ८९०९९९७ एव प्रार्थन गाथाका ब्रह्मा है यह केवल सिद्ध हो सकती है। इसका परिहार ब्रह्मास्मृतने यह किया है कि इस ब्रह्मास्त्रिणी ब्रह्मकी तीर्थस्त्रोके साथ भेजे ही सम्पत्तोंका उक्त प्रमाण पूर्ण न होता है। किन्तु अन्य उत्तरिणी-ब्रह्मस्त्रिणियोंमें तो तीर्थस्त्रोंका शिष्य-पत्तिर बरा पाया जाता है। दूसरे, मत और पञ्चम स्त्रासी अनेका मतुष्योंका प्रमाण सिद्ध करने सम्पादनगुणा पाया जाता है, अथवा उक्त प्रमाण पूर्ण हो सकता है। इसलिये उक्त प्रमाणमें कोई रूपण नहीं है। (५ १ १)

(६) पञ्चत्रय नियम मानिकी सिप्पाद्विषयोंका अज्ञानकाय दोषोंक अज्ञानकायके आश्रयसे ब्रह्मका गया है। किन्तु धनकायका मत है कि जितने ही आवायोंका उक्त ब्रह्मरूपाल प्रतिष्ठ नहीं होता है क्योंकि, ब्रह्मकाय दोषोंका अज्ञानकाय तीनती पोबनोंके अगुमोंका ब्रह्मकाय ब्रह्मका गया है। यहां गई यह धारा पर सूचना है कि पञ्चत्रय नियम मानिकी सिप्पाद्वि सत्रोंकी अज्ञानकाय ही गत है और ब्रह्मकाय देवकाय अज्ञानकाय ही है, यह कैसे जाना जाता है। यदि धनकाय पश्य है। तब हमारा काय पश्यत आसक्त नहीं है, किन्तु जब तो ब्रह्ममें निरोध है तो उनमेंसे बड़ा एक तो ब्रह्मका होता ही पाटिय। किन्तु इतना समाधानपूर्वक यह सुनने पर धनकायका अपनी निगावर पुष्टिरी प्रणाली हुई और यह बड़ा उठे—बड़ा होकर कि ब्रह्मकाय ब्रह्मकाय ब्रह्मकाय ब्रह्मकाय। अर्थात् उक्त दोषों का व्यापकाल अर्थात् ८, यह हम प्रतिपादक बतलाता है। अगर आम धनकायका सुगंध मृदुर आवासे उक्त दोषों अज्ञानकायोंका अस्तित्व बड़े उनमें वपयित प्रमाण-मंत्र ब्रह्मकाय उदाहरण दिया है। (५ ११-१११)

छप्पक उसी मात्रकमें माग देनेसे निश्चित मञ्जमफळ प्राप्त होता है। गृहीतगुणकसमें निश्चित मञ्जमफळका निश्चित राशिमें माग देनेसे जो छप्प थापा उसका उसी मात्रक राशिसे गुणा करके उत्पन्न हुए मञ्जमफळका निश्चित राशिके बर्गमें माग देकर निश्चित मञ्जमफळ प्राप्त किया गया है। ये सब विस्तृत बर्गक्रमक राशियोंमें ही प्रतिष्ठित होते हैं। इनका पूर्ण स्वरूप पृष्ठ ५२ से ८७ तक देखिये। प्रमाणराशि, फळराशि और इच्छाराशि, इनकी त्रैशुधिक क्रियाका उपयोग जगह जगह दृष्टिगोचर होता है। (पृ १५१)

मनुष्यगति-प्रमाणके प्रकृपणमें राशि दो प्रकारकी बतलाई है ओझ और युग्म। इनमेंसे प्रत्येकके पुन दो विभाग किये गये हैं। किसी राशिमें चारका माग देनेसे यदि तीन शेष रहें तो वह त्रयोन्म राशि, यदि एक शेष रहे तो कृत्तिओन्म राशि, यदि चार शेष रहें (अर्थात् कुछ शेष न रहे) तो कुतयुग्म राशि तथा यदि दो शेष रहें तो बादरयुग्म राशि कहलाती है। इनमेंसे मनुष्यराशि तबोस कही गई है। (पृ १४९)

८ मूढविद्वित्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठकोत्रक विदित ही है कि इन सिद्धान्तप्रयोगी प्राचीन प्रतियाँ केवल एकमात्र मूढ विद्वित्रीके सिद्धान्तमन्दिरमें प्रतिष्ठित हैं। पूर्ण प्रकाशित दो भागोंके स्थिे हमें इन प्राचीन प्रतियोंके पाठ-मिलानका सुखसर प्राप्त नहीं हो सका था। किन्तु हर्षकी बात है कि अब हमें वहाँ के महारक्ष-स्वामी और पणोंका सहयोग प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरूप ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानकी व्यवस्था हो गई है। पूर्ण प्रकाशित दोनों भागों के अन्तर्गत इस द्वितीय भागका मूळ पाठ वहाँकी ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलाना जा चुका है और उससे जो पाठभेद हमें प्राप्त हुए हैं उनपर तब विचार कर हमने उन्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया है—

(अ) वे पाठभेद जो अर्ध व पाठकी दृष्टिसे अप्रिय सुख प्रणीत हुए। (देखो परिशिष्ट पृ १ बारि)

(ब) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोला ही सुख हैं, अतएव जो सम्भव प्राचीन प्रतियोंके पाठभेदोंसे ही आये हैं। (देखो परिशिष्ट पृ १९ बारि)

(स) वे पाठभेद जो प्राकृतमें उच्चारणभेदोंसे उत्पन्न होते हैं और विस्तृतकासे पाये जाते हैं। (देखो परिशिष्ट पृ १९ बारि)

(द) वे पाठभेद जो अर्थ या शब्दकी दृष्टिसे असुख हैं और इस कारण ग्रहण नहीं किये जा सकते। (देखो परिशिष्ट पृ १८ बारि)

इस श्रेणी-विभाजने अनुसार मूढविद्वित्रीकी प्रतियोंका पाठ-मिलान इस भागके साथ प्रकाशित हो रहा है। संक्षेपमें यह पाठभेद-परिचयि इस प्रकार आती है—

योग किया है, जिससे तत्कालीन गणितशास्त्रकी अवस्थापर हमें बहुत अच्छा परिचय मिल जाता है। भस्माक्षरसे घृताभियोँ पूर्ण रचे गये मूलबन्धि आत्माधने सूत्रोंमें जो गणितशास्त्रसम्बन्धी उल्लेख हैं, वे भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनमें एकल स्यात्, द्वय, त्रय, शतशत (सहस्र), कोटि, कोटाकोटाकोटी व कोटाकोटाकोटाकोटी तक की गणना, व उससे भी ऊपर संख्यायुक्त, अस्वरूपात्, अनन्त और अनन्ततन्तुत्तय कवन, गमितकी मूल प्रतियोगी जैसे सात्त्विक, हीन गुण और बाह्य या प्रतिमाग अर्थात् बौद्ध, ब्राह्म, गुणा, भाग, कर्मा और कर्ममूल, तथा प्रथम, द्वितीय आदि सात्त्विक तक कर्मा व कर्ममूल, धन, कन्याध्याम्यात् आदिकय रूप उपयोग किया गया है। क्षेत्र और कर्तुसंबन्धी विशेष गणना—मानों जैसे अंगुल, योजन, श्रृंगी, अणुपर व झोक तथा वाक्की, अस्तर्हीर्ह, अस्तर्हिणी—उत्सर्हिणी, पत्योपम, तथा विष्कम्भ किम्बन्धुषी (पक्षिरूप क्षेत्रत्रायाम्), इन सबका भी सूत्रोंमें रूप उपयोग पाया जाता है, जिनके स्वरूपपर आल दनेसे आकरसे अगमग दो हजार कर्मपूर्वके एतरेहीय गणितज्ञानका अच्छा दिग्दर्शन मिल जाता है।

धस्माक्षरकी रचनामें अस्वरूपात्, अस्वरूपात्सख्यायुक्त तथा अनन्त और अनन्ततन्तुत्तये वास्तविक प्रमेदों और तात्पर्योक्त और भी सूत्रम निर्दोश किया गया है, जिसका स्वरूप हम ऊपर दिखा चुके हैं। इस नियमे धस्माक्षरद्वारा कर्मक्षेत्र और कर्मशतकक्षेत्रोंके परस्पर सम्बन्ध तथा कर्मित-सर्मित गणिका जो परिचय दिया गया है वह गणितकी विशेष उपयोगी वस्तु है। (देखो पृ १८-२६)। सर्व जीवगणिका उसके अन्तर्गत राशिधर्मे माग-प्रतिमाग निखानेके लिये धस्माक्षर में ध्रुवादि (मगद्वार विष्टाव) स्थापित करनेकी क्रिया और उससे भाग देनेकी प्रक्रियाएँ जैसे खंडित, माक्षित, त्रिखित और अक्षत विस्तारसे दी हैं, जो गणितज्ञोंको स्विकृत सिद्ध होंगी। (देखो पृ ४१)। ध्रुवादिसे माग देनेपर विरक्षित मिष्यादिगणिका कर्मा अती है, इसका कारण समस्तधर्मे माग्य और माग्यके हानि-वृद्धिकक्षेत्र जो तात्पर्य और संबंध कलत्राया गया है और क्षेत्र-गणितसे सम्बन्धित गया है, वह गणितशास्त्रका एक बहुमूल्य भाग है। (देखो पृ ४२ आदि)। अक्षरग गाथा २४ से २२ तककी नौ गाथाओंमें इसी संबंधके बड़े सुंदर नियम गुणरूपमें उद्घृत किये गये हैं और उनका उपयोग निश्चित राशिधर्माँ कालेन लिये पथासमय और पथासमय भागक कालक विचित्रधर्मे कलके कलत्राया गया है। अक्षरग निरूपणमें निश्चित माग्य और माग्यके नौधर्मी सख्या केकर कही मजनफळ उत्पन्न करके कलत्राया गया है, और वह भी विक्षय अर्थात् कर्मधर्मे, कलत्रक अर्थात् धनधर्मे और धनाधनधर्मे। अर्थात् निश्चित सख्यायुक्त प्रथम द्वितीय व तृतीय कर्ममूल केकर माग्यकले कल कर कही मजन फळ उत्पन्न कर दिखाया है। उपरिम विरूपणमें निश्चित माग्य व माग्यके ऊपरकी अर्थात् कर्मा, धन व धनाधनरूप राशिधर्माँ प्रत्यक्ष करके कही मजनफळ उत्पन्न किया गया है। इस प्रक्रियामें धनधन-कलने तीन और विरूपण कर दिखाये हैं, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुजन्त। गृहीत तो सीधा है, अर्थात् उसमें ऊपरके माग्य और माग्यकले द्वारा निश्चित मजनफळ उत्पन्न किया गया है। किन्तु गृहीतगृहीत में निश्चित मजनफळ भी एक कही पाठान्तर माग्यकलन जाता है और उसके

छम्बका उसी मात्राके भाग देनेसे निश्चित मञ्जनफल प्राप्त होता है। गृहीतगुणरूपमें निश्चित मञ्जनफलका विवक्षित राशिमें भाग देनेसे जो छम्ब आया उसका उसी मात्राका राशिसे गुणा करके उत्पन्न हुए मञ्जनफलका विवक्षित राशिके बर्गमें भाग देकर निश्चित मञ्जनफल प्राप्त किया गया है। ये सब विवक्ष्य बर्गमूलक राशियोंमें ही घटित होते हैं। इनका पूर्ण स्वरूप पृष्ठ ५२ से ८७ तक देखिये। प्रमाणराशि, फलराशि और इच्छाराशि, इनकी श्रैयशिक क्रियाका उपयोग जगह जगह दृष्टिगोचर होता है। (पृ १५ १)

मनुष्मपति-प्रमाणके प्ररूपणमें राशि दो प्रकारकी बतलाई है ओज और युग्म। इनमेंसे प्रत्येकके पुन दो विभाग किये गये हैं। किसी राशिमें चारका भाग देनेसे यदि तीन शेष रहें तो वह तेजोओज राशि, यदि एक शेष रहे तो कलिओज राशि, यदि चार शेष रहें (अर्थात् कुछ शेष न रहे) तो कृतयुग्म राशि तथा यदि दो शेष रहें तो बादरयुग्म राशि कहा जाती है। इनमेंसे मनुष्मपति तेजोब कही गई है। (पृ १४९)

८ मूढविद्भीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठकोट्टे विदित ही है कि इन सिद्धान्तप्रबोधि प्राचीन प्रतियां केवल एकमात्र मूढ-विद्भीक्षेत्रके सिद्धान्तमन्दिरमें प्रसिद्धि हैं। पूरे प्रकाशित दो मार्गोंने हमें इन प्राचीन प्रतियोंके पाठ-मिलानका सुव्यक्त प्राप्त नहीं हो सका था। किन्तु हर्षकी वक्त है कि अब हमें यहां के मंडारक-स्थानी और पञ्चोक्त सङ्ग्रह प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरूप ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानकी व्यवस्था हो गई है। पूर्व प्रकाशित दोनों मार्गों और इस तृतीय मार्गका मूल पाठ यहां की ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलाना जा चुका है और उससे जो पाठमें हमें प्राप्त हुए हैं उनपर स्पष्ट विचार कर हमने उन्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया है—

(क) वे पाठभेद जो अर्ध या पाठ्य दृष्टिसे अधिक सुदृढ प्रतीत हुए। (देखा परिशिष्ट पृ १ बादि)

(ख) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोनों ही सुदृढ हैं, अतएव जो समस्त प्राचीन प्रतियोंमें पाठभेदोंसे ही आये हैं। (देखा परिशिष्ट पृ १९ बादि)

(स) वे पाठभेद जो प्राच्यमें उच्चारणभेदसे उत्पन्न हुए हैं और विवक्ष्यरूपसे पाये जाते हैं। (देखा परिशिष्ट पृ ३९ बादि)

(द) वे पाठभेद जो अर्ध या शब्दकी दृष्टिसे असुदृढ हैं और इस कारण मूल्य नहीं मिले जा सकते। (देखा परिशिष्ट पृ १ बादि)

इस श्रेणी-विभाजने अनुसार मूढविद्भीकी प्रतियोंका पाठ-मिलान इस भागमें साप प्रकाशित हो रहा है। संक्षेपमें यह पाठभेद-परिचयि इस प्रकार जाती है—

(ब) श्रेणीक पाठ्येद भाग १ में ६२, भाग २ में २५ और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल १४९ पाये गये हैं। मेद प्राप्त बहुत थोड़ा है, और जबकी दृष्टिसे तो अत्यन्त कम। यह इस बातसे और भी स्पष्ट हो जाता है कि इन पाठ्येदोंके कारण अनुशास्त्रमें विविध भी परिष्कृत करनेकी आवश्यकता कुछ भाग १ में १९, भाग २ में १० और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल ९१ स्पष्टापर पड़ी है। इन ८८ स्वर्णोक्त पाठपरिष्कृत बांटीय होनेसे भी उससे हमारे विषये हुए भाषानुसारमें कोई परिष्कृत आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।

(घ) अण्वाक पाठ्येद भाग १ में ६० भाग २ में कोई नहीं, और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल ६२ पाये गये और इसमें भी विविध अनुवाद-परिष्कृत केवल प्रथम भागमें १७ स्पष्टापर आश्रय समझा गया है।

(स) श्रेणीक पाठ्येद भाग १ में ६ भाग २ में ३ और भाग ३ में ६७ इस प्रकार कुल ७६ पाये गये हैं। उनसे वहीमे कोई मेदकी तो समझा ही नहीं है। इनमेंके अधिकतर पाठ तो ऐसे हैं जो उपलब्ध प्रतियोंमें भी पाये जाने थे किन्तु हमने प्राकृत व्याकरणके नियमोंके ध्यानमें रखकर परिष्कृत किये हैं। (चर्चने बाद बांटीयके विषय पर हमारा प्रस्तावना १ (११))

(ड) अण्वाके पाठ्येद भाग १ में ३८ भाग २ में १५, भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १२० पाये गये। इनमेंके अधिकतर तो स्पष्टापर अशुद्ध हैं, और जहाँ उनके कुछ होनेकी समझा हो सकती है, वहाँ शिष्याजी नेकर स्पष्ट कर दिया गया है कि वे पाठ प्रकृतमें क्यों नहीं पाये हो सकते।

इस प्रकार कुल पाठ्येद $१४९ + ६२ + १५७ + १२ = ४८८$ पाये हैं। सद्योपमे यह परिस्थिति इस प्रकार है—

भाग	मूल पाठमें मेद					अनुवाद परिष्कृत		
	अ	ब	स	ड	कुल	अ	ब	कुल
१	६२	३	३	३८	१०६	१९	१७	३६
२	२५	×	३	१५	४३	१	×	१
३	६२	६२	६७	६७	२५८	६२	×	६२
कुल	१४९	६९	१५७	१२	४८८	८२	१७	९९

मूलाट्ये सद्योपमे अर्ध और शिष्याजी दृष्टिसे कुछ स्वर्णोक्त हैं पाठ स्थिति प्रतीत हुए थे। प्रतियोंका आश्रय न होनेसे हमने वे पाठ कोष्ठोंके नीचे रखे हैं जिससे पाठन सुकम्पत्तसे हमारे जाड़े हुए पाठको अलग पहिचान सके। गल विधीय भागमें भी इसीप्रकार पाठ कहीं कहीं जोड़िये पड़े थे। किन्तु यह आशय प्रकट होनेसे स्पष्ट होना चाहिये कि यह नहीं है। पर इस

माताका नियम बहुत कुछ सूक्ष्म है, अतएव यहाँक स्वरूपन बड़े ही गभीर विचारके पश्चात् ध्यानमें आसके और उनका पाठ बख्खाकरकी शैलीमें ही बड़े विचारके साथ रखना पटा। ऐसे पाठ प्रस्तुत भाग में १९ हैं। हम यह प्रकट करते हुए हय होता है कि मूढविद्वीकरी मिथानसे इन पाठोंमें के १२ पाठ जैसे हमने रखे हैं वैसे ही शब्दशः ताडपत्रीय प्रतिपोंमें पाये गये। एक पाठमें हमारे रखे हुए 'खम्मा' के स्थानपर 'बम्मा' पाठ आया है, किन्तु विचार करनेपर यह अशुद्ध प्रतीत होता है, यहाँ 'खम्मा' ही चाहिये। शेष ६ पाठ मूढविद्वीकरी प्रतिपोंमें नहीं पाये गये। किन्तु वे पाठ अशुद्ध फिर भी नहीं हैं। यथार्थन यहाँ अर्धवृत्ति दृष्टिसे कहीं अभिप्राय पूरापर प्रसंगसे देना पड़ता है। बख्खाकरकी अचर शैलीपरसे ही वे पाठ निश्चित किये गये हैं।

१ देखो पृष्ठ ११४ १५४ १८३ १८४, १९९ ४१३ ४२४ ४३५, ४४४ ४५१

२ देखो पृष्ठ ४८१

३ देखो पृष्ठ ११ १४८ १४८ १५३ ४४

द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.	क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	१				
	विषयकी उत्पत्तिक	११०		कान्त एकान्त समान्त	
१	द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश			विस्तारान्त, सर्वात्म और माया-	
	मेव-कथन	१		नन्तके मेव और स्वरूप	१५-१६
२	द्रव्यशब्दकी निवृत्ति और मेव	२	१९	प्रकृतमें गणनान्तसे प्रयोजनकी	
३	जीवद्रव्यका साधारण और असा-	२		सिद्धि और शेष इस अनन्तोंके	
	धारण सस्य			कथन करनेका हेतु	१६-१७
४	अजीवद्रव्यके रूपी और अरूपी		२	गणनान्तके तीन मेव-परीत, युक्त	
	मेव वा इनके सस्य	२३		और अनन्तान्त	१८
५	द्रव्यप्रमाणानुगममें प्रकृत द्रव्यका		२१	मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें विवक्षित	
	निर्देश	४		अनन्तान्तका प्रतिपादन	१८
६	प्रमाण शब्दकी निवृत्ति तथा द्रव्य		२२	अनन्तान्तके अप्रत्यादि तीन मेव	
	प्रमाण शब्दका समाप्त-विच्छेद	४-५		तथा मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें	
७	द्रव्यका सस्य	५-६		प्रथम अनन्ताबन्तके प्रह्वका	
८	छद्मों समाप्तोंके सस्य व लघुद्वार	६-७		परिकर्मेके प्रमाणपूर्वक प्रतिपादन	१९
९	संख्याकी सर्वथा एककपताका		२३	अथवा मिथ्यादृष्टिपक्ष तीन बार	
	परिहार	७		वर्गित-सर्गितराशिसे अनन्तगुणी	
१०	द्रव्यप्रमाणानुगमका अर्थ	८		तथा छद्म द्रव्यमक्षितराशिसे अन्-	
११	निर्देशका स्वरूप और उसके भेदों-	८१		न्तगुणी हीन है इसका सोप	
	का स्वधीकरण			पक्षिक प्रतिपादन और इन राशि-	१९-२१
	२			योंके दृष्टिक्रमका प्ररूपण	
	मोक्षसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश १०-१०१		२४	कादकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव	
१२	मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण			राशिका निकषण तथा क्षेत्र-	
	प्ररूपण	१०		प्रमाणके पूर कक्षप्रमाणके प्रति-	
१३	अनन्तके ११ मेव सामान्त और		२५	कादकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव	
	स्वापमान्तका स्वरूप	११		राशिकी गणना करनेका प्रकर	
१४	द्रव्यान्तके मेव	१२		तथा इस गणनामें केवल अतीत	
१५	अवयव और अन्तका सस्य	१२	२६	कादके प्रह्वका प्रतिपादन	२८-२९
१६	आगम द्रव्यान्तका स्वरूप	१३		अतीतकालसे मिथ्यादृष्टिराशि बढ़ी	
१७	नामान्त द्रव्यान्तके मेव, अन्त			है इसका सोसह-मतिक अन्त	
	स्वरूप और तद्विषयक शंका	१३ १५		बहुत्वमे समर्थन	३-३१
१८	धारवान्त, गणनान्त अपेक्षी		२७	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिका	
				प्रमाण-प्ररूपण तथा क्षेत्रप्रमाणके	
				पूर्व भाषप्रमाणके प्रतिपादन न कर	
				नका कारण	३२

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
२८	क्षेत्रक्षी अवेष्टा मिथ्यादृष्टिराशिके मापनेका प्रकार	३२	४४	गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार	५४
२९	छोक जगच्छेती और राशुका स्वरूप	३३	४५	विकल्पधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५४
३०	मध्यछोक-विस्तारके सवधमें मत भेद तथा प्रवृत्ताकारका तत्संबंधी सयुक्तिक निर्णय	३४-३८	४६	प्रमाणधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५७
३१	क्षेत्रप्रमाणके प्रकरणकी सार्थकता	३८	४७	गृहीतगृहीत-उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टि राशिकी उत्पत्ति	५८
३२	मात्रप्रमाणका स्वरूप व उसके भेद	३८-३९	४८	गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टि राशिकी उत्पत्ति	५९
३३	सूत्रमें मात्रप्रमाणके नहीं कहनेमें हेतु	३९	४९	सासादनसम्बन्धदृष्टिसे लेकर संप्रदायगत गुणस्थानवत् प्रत्येक गुण प्रधानवर्ती तीनोंका प्रमाण	६३
३४	मात्रप्रमाणकी अवेष्टा कथित माहित विरहित और अपरिहृत गणितकी प्रक्रियाओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके ज्ञानेकी विधि	३९	५०	सासादनसम्बन्धदृष्टियोंका प्रमाण	६३
३५	पर्यस्यानमें कथित भाविके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके प्रमाण-निरूपण की प्रतिष्ठा	४०	५१	क्षेत्र और काष्ठकी अवेष्टा सासादनसम्बन्धदृष्टियोंके प्रमाणकी प्रकरण	६३
३६	मिथ्यादृष्टिराशि ज्ञानेके लिए मृत् राशिकी स्थापना व उसके द्वारा कथित माहित, विरहित और अपरिहृत विधिओंसे मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण प्रकरण	४१	५२	काष्ठप्रमाणसंबंधी भावकी, उष्णता, स्तोक छय माली, मुहूर्त, मिश्र मुहूर्त और अन्तर्मुहूर्तका स्वरूप	६५
३७	मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण तथा तत्संबंधी गणितका शास्त्रीय कारण	४२-४३	५३	एक मुहूर्तमें प्राणोंकी संप्रदायसिद्धि और मत्तान्तरका बंधन	६६
३८	गणितसंबंधी नौ कारण-माधाय	४३-४९	५४	संज्ञागतसम्बन्धदृष्टि, सम्बन्धिमिथ्यादृष्टि सासादनसम्बन्धदृष्टि और संप्रदायगत अन्तर्काओंका कथन	६५
३९	सर्वज्ञीयराशिकेसे मिथ्यादृष्टि और सिद्ध-तेरस गुणस्थानोंके प्रमाण प्रयुक्त करनेकी निश्चिति	५१	५५	सोपानसम्बन्धिमिथ्यादृष्टि, सासादन सम्बन्धदृष्टि और संप्रदायगत अन्तर्काओंका भावकीके संज्ञागत तबे माय न होकर असंख्यात भावकी प्रमाण है इस बातका समर्थन व विरोध-प्रतिहार	६८
४०	विकल्पके अग्रस्तन और उपरिम भेद तथा पर्यधारामें मिथ्यादृष्टि राशिके ज्ञानेके लिए अग्रस्तन विकल्पकी अंतर्भावता	५२	५६	सासादनसम्बन्धदृष्टि काहि राशि योंके अन्तर्भावित रहने पर भी उनके निश्चित प्रमाण ज्ञानेके लिए निश्चित भागधारका समर्थन	७०
४१	धनधारामें अग्रस्तन विकल्प	५२			
४२	धनधारामें अग्रस्तन विकल्प	५३			
४३	उपरिम विकल्पके तीन भेद-गृहीत				

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
५७	कण्ठित माण्डित विरहित अपहृत, प्रमाण कारण और निरुद्धिके द्वारा वर्गधारण सासाधनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण			पाठिके अनुसार उपशामकों और क्षयकोंकी संख्याका मतमेव	९४
५८	अवस्तनविकल्पमें द्विरूपवर्गधारा आदि का भाग्य लेकर सासाधन सम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण	७१	७१	एक एक शुद्धस्थानमें उपशामक और क्षयकोंका संयुक्त प्रमाण	९५
५९	उपरिमविकल्पके तीनों मेंमें द्विरूपवर्गधारा आदि का भाग्य लेकर सासाधनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण	७४	७२	सयोगिकवस्तुओंका प्रवेश व काखकी अवस्था प्रमाण	९५
६०	सम्यगिन्द्रियाद्यदि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत की प्ररूपणा लक्षित आदि विधिले सासाधनसम्यग्दृष्टि प्ररूपणाके समान बनके रूपक रूपक अवधारकाके द्वारा करनका निर्देश	७७	७३	सयोगिकेवकी शिनोंकी सप्तपृथक् करन संख्याके निरूपणके विधायक	९५
६१	सासाधनसम्यग्दृष्टि आदि के अवधारका प्रमाण और पर्योपमकी संकलितदृष्टि	७७	७४	यथाक्यातसंयतोंका सर्वसंयत राशिक्रम तथा उपशामक और क्षयकोंका प्रमाण	९७
६२	प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	८७	७५	प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंकी राशिके निरूपणके एक नवा प्रकार	९७
६३	अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	८७	७६	वस्तुप्रतिपत्तिबाधकी सर्व संयतोंकी संख्यापर व्यंशेप और समाधान	९८
६४	अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे प्रमत्तसंयतोंके होने प्रमाणका कारण	८८	७७	वस्तुप्रतिपत्तिबाधकी अवस्था प्रमत्त संयत आदिक प्रमाण	९९
६५	चारों उपशामकोंका प्रवेशकी अवस्था प्रमाण	८९	७८	शेष मागाभागा प्ररूपण	१०१
६६	चारों उपशामकोंका काखकी अवस्था प्रमाण व इनकी संख्याके जोड़नेका प्रकार	९०	७९	अव्यवहृत्यके कथनकी प्रतिष्ठा और कथन अव्यवहृत्य अनुयोग द्वाराके होते हुए भी यहां उसके करनेका कारण	११४
६७	चारों क्षयक और अयोगिकेवकी सप्त प्रवेशकी अवस्था प्रमाण	९१	८०	अव्यवहृत्यके दो भेद-स्वरूपान और सर्वपरस्थाव	११४
६८	चारों क्षयक और अयोगिकेवकी काखकी अवस्था प्रमाण व इनकी संख्याके जोड़नेका प्रकार	९२	८१	मिथ्यादृष्टिधर्मोंके स्वरूपान अव्यवहृत्यका प्रमाण	११४
६९	उपशामक और क्षयकोंकी संख्याके मानेका करममूल	९३	८२	सासाधनादि राशियोंमें स्वरूपान अव्यवहृत्य	११४
७०	उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिण प्रति	९४	८३	शेष सर्वपरस्थाव अव्यवहृत्य	११५
				३	
				आदेशसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश	१२१ ४८७
				१ गतिमार्गना	१२१ ३०५
				(नरकगति)	
				४४ सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि योंका प्रमाण	१२१

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
८५	असत्त्वातके नामादि व्याख्या मेव और इनका स्वरूप	१२३ १२५		विरूपके द्वारा उक्त राशिची प्रकृषणा	१५०
८६	प्रकृतमें गणनासत्त्वातसे प्रयोजन तथा शेष असत्त्वातोंके वर्णनकी सार्थकता	१२५	९९	साक्षात्तसे छेकर असंयतसम्ब न्धारे गुणस्थान तक प्रत्यक्ष गुण स्थानमें सामान्य नारकियोंका प्रमाण	१५३
८७	गणनासत्त्वातके अव्ययपरीता- सत्त्वात आदि भी मेव, तथा प्रकृतमें मध्यम असत्त्वातास त्वातका ग्रहण	१२६	१००	गुणस्थान-प्रतिपक्ष सामान्य नारकियोंको गुणस्थान-प्रतिपक्ष मोक्षप्रमाणके समान मान देने पर होनेवाले दोषका परिहार	१५६
८८	तीन बार वर्णित सर्वांतराशिले असत्त्वातगुणी तथा छह द्रव्य प्रक्षिप्तपक्षिले असत्त्वातगुणी हीन पक्षिले प्रयोजन और उक्त राशि योग्य स्वरूप-निर्द्धारण	१२८	१०१	मात्र असंयतसम्बन्धारे अवहार काकके माध्यसे गुणस्थान प्रतिपक्ष द्वेष तिर्यक्ष और नार कियोंके प्रमाण छानेके छिपे अव हारका उदय करनेकी विधि और इनका प्रमाण	१५७
८९	सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका काष्ठकी अपेक्षा प्रमाण ब होतु	१२९	१०२	प्रथम पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण	१६१
९०	क्षेत्रप्रमाणसे पहले काष्ठ प्रमा णके वर्णनकी सार्थकता	१३०	१०३	सामान्य नारकोंके प्रमाण समान प्रथम पृथिवीके नारकोंका प्रमाण माननेपर उदय होनेवालों आपत्तिपर परिहार और विशेष वताका प्रतिपादन	१६१
९१	नारक मिथ्यादृष्टियोंकी काष्ठकी अपेक्षा गणना करनेका प्रकार	१३१	१०४	प्रथम नारकोंके मिथ्यादृष्टि नार कोंकी विरक्तमसूची और अवहार काष्ठ	१६२
९२	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१३१	१०५	उक्त नारकोंका प्रकारान्तरसे अवहारकाष्ठ	१६४
९३	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूचीका प्रमाण	१३३	१०६	प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहार काष्ठ प्रसेप हास्यकारे और विरक्तमसूचीमें अपनयनरूप उक्तके प्रमाणका प्रतिपादन	१६६
९४	सुत्रपठित अंगुष्ठ शास्त्रसे सुख्यंगुलके ग्रहणका उपमा समर्पण	१३४	१०७	सामान्य अवहारकाष्ठमान छह पृथिवियोंके द्रव्यका माध्य सेकर प्रत्येक पृथिवीमें अवहारकाष्ठ प्रसेप हास्यकारे विकाशनका विधान	१७१
९५	वर्गस्थानमें बंदिष्ठ आदिके द्वारा विरक्तमसूचीका प्रकरण	१३५	१०८	उक्त बातों अवहारकाष्ठोंके मित्रा नकी विधि और उनसे प्रथम	
९६	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण छानेके छिपे विरक्तमसूचीके बलसे भागहारकी उत्पत्ति	१४१			
९७	वर्गस्थानमें प्रमाण आदिके द्वारा अवहारकाष्ठका निरूपण	१४२			
९८	नारक सामान्य मिथ्यादृष्टि- पक्षिले प्रमाण अवहारकाष्ठसे किस प्रकार व्याता है यह बता- कर प्रमाण कारण निरुक्ति और				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	पृथिवीके अवधारकाङ्कके उत्पन्न करनेका क्रम	१७१	१२१	वस्तुमानेवाली भूकम्पवृद्धि दूसरीसे सातवीं पृथिवी तकके मिथ्यावृद्धि नार्थक्योक्त प्रपञ्च काङ्क और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१९७
१०९	प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके अवधारकाङ्क जानेकी विधियाँ	१७७	१२२	अगच्छेयोंके कितने कितने वर्ग-युद्धोंके परस्पर गुणा करनेसे किस किस पृथिवीके भारक मिथ्यावृद्धियोंका प्रमाण माता है इसका स्पष्टीकरण और इसमें प्रमाण	१९८
११०	छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवधारकाङ्क	१७९			
१११	पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवधारकाङ्क	१८०			
११२	बीसवीं पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवधारकाङ्क	१८२	१२३	एतावन्ति पृथिवियोंके प्रपञ्चके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके प्रपञ्च उत्पन्न करनेकी विधि	२०१
११३	तीसरीसे सातवीं तक पाँच पृथिवियोंका संयुक्त अवधारकाङ्क	१८३			
११४	दूसरीसे सातवीं तक छह पृथिवियोंका संयुक्त अवधारकाङ्क	१८४	१२४	प्रथम पृथिवीके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके प्रपञ्च उत्पन्न करनेकी विधि और इसी प्रकार छह पृथिवियोंके प्रपञ्च उत्पन्न करनेकी सूचना	२०३
११५	दूसरी भाँति छह पृथिवियोंके संयुक्त अवधारकाङ्कसे प्रथम पृथिवीके अवधारकाङ्कके जानेकी विधि	१८५			
११६	हानिरूप और प्रक्षेपरूप अर्थोंका ज्ञान करानेके लिये अक्षसंघट्टि, तथा प्रक्षेपरूप पश्चिमी विधि	१८६	१२५	दूसरीसे सातवीं पृथिवीतक गुण स्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण	२०६
११७	राशिसे हानिरूप विधानका अक्ष संघट्टि द्वारा स्पष्टीकरण	१८७			
११८	सामान्य अवधारकाङ्कके एक विरुद्धनके प्रति प्राप्त सामान्य प्रपञ्चके सातवीं पृथिवीके मिथ्यावृद्धि प्रपञ्चप्रमाण काट करके वनका काटों पृथिवियोंमें विभाजन और इनपरसे प्रथम पृथिवीके अवधारकाङ्ककी उत्पत्ति	१८९	१२६	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तक गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण बोधव्यवस्थाके समान करनेसे उत्पन्न होनेवाले दोषका परिहार और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके अवधारकाङ्कोंका प्रतिपादन	२०९
११९	बड़े हाथकायोंका आश्रय करके प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके मिथ्यावृद्धि अवधारकाङ्ककी उत्पत्ति	१९१	१२७	वस्तुमानि सन्नद्धी भागामाय	२१७
१२०	वस्तुमानि सन्नद्धी भागामाय	१९२	१२८	वस्तुमानि-सन्नद्धी व्यस्यवृत्त्य (तिर्य्यकगति)	२१८
			१२९	मिथ्यावृद्धिसे छेकर संयतासमत गुणस्थानतक सामान्य तिर्य्यकोंका प्रमाण तथा सामान्य तिर्य्यकोंका प्रमाण औषधप्रमाणके समान माननेपर जानेवाले दोषका परिहार	२१५
			१३०	सामान्य तिर्य्यक मिथ्यावृद्धियोंकी सुव्यवधि और गुणस्थान प्रतिपन्न	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	—पृष्ठ नं
	सामान्य तिर्यक्तोका भवहारकत्व	२१९		पर्याप्तोका प्रमाण	२२९
१२१	यहां वाधिका अनन्तरूप प्रमाण बताया है यहाँ मी कसप्रकारपासे द्रव्यप्रकारपाकी सुखमता सिद्ध होती है इसका स्पष्टीकरण	२१७	१४२	पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्विधियोनिमतियोंका द्रव्य काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२२९
१२२	पंचेन्द्रियतिर्यक् मिथ्याद्विधियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण	२१७	१४३	पंचेन्द्रियतिर्यक् मिथ्याद्विधियोनिमतियोंका भवहारकत्व और उसके विषयमें मतभेद	२३०
१२३	असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणी इरसर्पिणीकाखेले बतिते पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्विधियोंके बिच्छेद होनेकी शंकाका समाधान	२१८	१४४	पंचेन्द्रियतिर्यक् मिथ्याद्विधियोनिमतियोंके भवहारकत्वका बंशित भादिके द्वारा कथन	२३३
१२४	पंचेन्द्रियतिर्यक् मिथ्याद्विधियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व उनके भवहारकत्वकी सिद्धि	२१९	१४५	पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्विधियोनिमतियोंकी विच्छिन्न सूची और द्रव्यका बंधन	२३७
१२५	पंचेन्द्रियतिर्यक् मिथ्याद्विधियोंके भवहारकत्वका बंशित भादिके द्वारा प्रकथन	२२०	१४६	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतियोंका प्रमाण तथा इसे बोधवत् करनेसे उत्पन्न हुई आपत्तिका परिहार	२३७
१२६	पंचेन्द्रियतिर्यक् मिथ्याद्विधियोंकी विच्छिन्नसूची और द्रव्यका समर्थन	२२५	१४७	पंचेन्द्रियतिर्यक् योनिमती असंयतसंयतद्विधि सम्बन्धिमिथ्याद्विधि, साक्षात्त और संयतासंयतका भवहारकत्व	२३८
१२७	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यक्तोका प्रमाण	२२६	१४८	पंचेन्द्रियतिर्यक् पर्याप्तमें असंयतसंयतद्विधि पुरुषवेदियोंसे असंयतसंयतद्विधि स्त्रीवेदियोंके, और स्त्रीवेदियोंसे, नपुंसकवेदियोंके उत्पत्तिपर कम होनेका कारण	२३८
१२८	द्रव्यप्रमाणके भादिके कथन करनेका प्रयोजन व द्रव्य प्रमाण अन्य प्रमाणोंसे स्वीकृत है इसमें हेतु	२२७	१४९	पंचेन्द्रियतिर्यक् तीव्रबलवाले सम्बन्धिमिथ्याद्विधियोंसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती असंयतसंयतद्विधि जीव कम है या अधिक है, इस विषयमें उपदेशका प्रमाण	२३८
१२९	द्रव्यप्रमाणसे कालप्रमाणकी सिद्धि	२२८	१५०	पंचेन्द्रियतिर्यक् अपर्याप्तोका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व भवहारकत्वका निरूपण	२३९
१३०	पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्याद्विधियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण तथा उनके भवहारकत्वका स्पष्टीकरण	२२८	१५१	तिर्यक्मति सम्बन्धी आगाधान और व्यपबद्धत्व	२४०

क्रम नं	विषय (मनुष्यगति)	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
१५२	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य काष्ठ और सेबकी अपेक्षा प्रमाण	२४४	१५४	मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण हाथा है इसका समर्थन	२५४
१५३	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवधारकाष्ट व अहित व्यक्ति द्वारा इसका कथन	२४५	१५५	बो बेबाछे मनुष्य पर्याप्तका अवधारकाष्ट और इनका प्रमाण	२५४
१५४	मध्यम विक्षेप और तपस्वि विक्षेपमें भेद	२४६	१५६	बाबाछे बतप्रमाण मनुष्य पर्याप्तगति है इस मतका अर्थ और अनुमतिपादित मतका समर्थन	२५५
१५५	मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवधार काष्टका अग्रेजीमें माग देने पर रूप व्यक्ति मिथ्यादृष्टिगति जाती है इसमें प्रमाण	२४८	१५७	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर अत्यंतसंपतक प्रत्येक गुणस्थान में पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२५६
१५६	बोब और मुख्य परिशिष्टों में प्रमेय और उनके अन्तर्गत	२४९	१५८	अत्यंतसंपत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेबड़ी गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनु ष्योंका प्रमाण	२५७
१५७	यहां अतिस्थानमें मनुष्य मिथ्या दृष्टि अवधारकाष्टका अग्रेजीमें माग देनेपर रूप व्यक्ति साक्षात् गति देरह गुणस्थानकर्ता अथवा अन्यगति जाती है इसका सम र्थन	२४९	१५८	मनुष्यनिर्णयों मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवधारकाष्ट विरूपण	२५८
१५८	मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अवधार काष्टका कथन	२५०	१५९	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेबड़ी तक प्रत्येक गुण- स्थानमें मनुष्यनिर्णयोंका प्रमाण तथा गुणस्थान-मतिपक्ष मनुष्यनी गुणस्थान-प्रतिपक्ष सामान्य मनुष्योंके सख्यातमें माग होती है इसमें हेतु	२५९
१५९	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर संपतसंपत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य मनुष्योंका प्रमाण	२५१	१६०	अत्यंतपर्याप्त मनुष्योंका द्रव्य कथन और सेबकी अपेक्षा प्रमाण	२६०
१६०	साक्षात्तसम्पत्ति और सम्प तिमिथ्यादृष्टि मनुष्योंके प्रमाणमें मत्तभेद	२५१	१६१	मनुष्यगतिस्मरणीय मागमाग और अत्यंतसम्पत्ति	२६१
१६१	अत्यंतसंपत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेबड़ी गुणस्थानतक मनु ष्योंका प्रमाण	२५२	१६२	(वैषम्यगति)	
१६२	पर्याप्त मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण और अहित जादिके द्वारा इसका कथन	२५३	१६३	सामान्यदेवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६२
१६३	पर्याप्त मनुष्यपर्याप्तमें गुणस्थान प्रतिपक्षगतिसे धरा देनेपर	२५३	१६४	संख्यात अंतर्ख्यात और अत न्तक अन्तर्गत व परस्पर भेद	२६३
			१६५	काष्ठ और सेबकी अपेक्षा सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६४
			१६६	साक्षात्त गुणस्थानसे लेकर अत्यंतसम्पत्ति गुणस्थान तक	२६५

क्रम नं	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य देवोंका प्रमाण	२६९		साक्षात् सत्यमिच्छादि भीर असंयतसम्पत्ति देवोंका प्रमाण	
१७३	असंयतसम्पत्ति, सम्पत्तिमिच्छा दि भीर साक्षात्सम्पत्ति देवोंका व्यवहारकाष्ठ	२६९		तथा सत्कृमारमें लेकर छतार सहकार कस्यतक मिच्छादि देवोंका प्रमाण भीर मागहार	२८०
१७७	मयनबासी मिच्छादियोंका द्रव्य काष्ठ भीर क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७०	१८८	आनन्द प्राप्त करके लेकर नव मिष्यक तक मिच्छादिपादि चारों गुणस्थानपरी देवोंका प्रमाण	२८१
१७८	साक्षात् सत्यमिच्छादि भीर असंयतसम्पत्ति मयनबामियों का प्रमाण	२७१	१८९	अनुविशोंसे लेकर अपराधित अनुत्तरयिमानतक असंयतसम्प त्ति देवोंका प्रमाण	२८१
१७९	मानव्यन्तर मिच्छादि देवोंका द्रव्य काष्ठ भीर क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७२	१९०	गुणस्थान-प्रतिपक्ष सर्व देवोंके व्यवहारकाष्ठ	२८२
१८०	मानव्यन्तर भीर योगिमितियोंके अवधारकात्ममें मतमद् भीर इसका निष्पन्न	२७३	१९१	मानव्यन्तर उपरिम गुणस्थान प्रतिपक्ष देवोंका प्रमाण पक्षों पक्षके असंयततयें भाग है यह बचन इसके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पक्षोपम भयान्त होता है ऐसा विशेषित करके क्यों कहा? इसकी संगतता	२८५
१८१	साक्षात् सत्यमिच्छादि भीर असंयतसम्पत्ति मानव्यन्तरीका प्रमाण	२७४	१९२	सर्वार्थसिद्धि विमानपासी देवोंका प्रमाण	२८६
१८२	न्योतिरी देवोंका प्रमाण य इस प्रमाणके सामान्य देवतादिके समान कहनेसे मानेपाछे दीपका परिहार	२७५	१९३	देवगतिस्वर्गी मागामाग	२८६
१८३	न्योतिरी देवोंका व्यवहारकाष्ठ	२७६	१९४	देवगतिस्वर्गी मन्त्रबहुष्य	२८८
१८४	सौधर्म भीर देशान्तर करवासी मिच्छादि देवोंका द्रव्य काष्ठ भीर क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७६	१९५	अतुर्गतिस्वर्गी मागामाग	२९५
१८५	सौधर्म भीर देशान्तर मिच्छादि देवोंकी दिक्कमसूची	२७७	१९६	अतुर्गतिस्वर्गी मन्त्रबहुष्य	२९७
१८६	गुहावधमें सामान्यसे जीवोंका प्रमाण कहते समय या दिक्कम मुखियां पतमाई हैं वे ही यहां विशेषरूपसे जीवोंका प्रमाण पताने समय कहा गई है अतः यह कथन परस्पर विरोध है इस प्रकार उभय दूर शक्यता समाधान	२७८	२	इन्द्रियमार्गजा	३०५-३२९
१८७	सौधर्म भीर देशान्तर करवासी		१९७	सामान्य एकद्वय पादर एके द्वय मूलम एकेद्वय भीर इन तानोंके पक्ष तथा अपक्षोंका द्रव्य काष्ठ भीर क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३०५
			१९८	अतः भी राशियोंकी छुपराशियां	३०७
			१९९	राशियां आदि के द्वारा अतः भी राशियोंका बचन	३०८
			२००	पक्षोंका भीर अतः पक्ष दिक्कमय जीवोंका द्रव्यकी अपेक्षा प्रमाण	३१०
			२०१	महत्तम पक्षोंका भीर अतः पक्ष	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	तथा द्विस्त्रिप बीस्त्रिप धीर चतु रिस्त्रिप पक्षे किन्ना प्रहण किया गया है इसका स्वीकरण		२१३	अपर्याप्तकालमें शुद्धस्थाव-मति पक्ष बीज छम्पपर्याप्तक नहीं होते इसका समर्थन	३१८
२९	सयोजिकेबन्धीके पंचेन्द्रियत्वका समर्थन	३११	२१४	इन्द्रियमार्गजाक्षी अपेक्षा भागा भाग	३१८
२३	बिच्छन्नतय बीजोंका कालक्षी अपेक्षा प्रमाण	३१२	२१५	इन्द्रियमार्गजाक्षी अपेक्षा भ्रम बहुत्व	३२२
२४	द्विस्त्रिपदि राशिप्रां सर्वथा अपसहित होनेसे बिच्छिन्न नहीं होती है फिरभी ये असम्भवाता- संख्यात अपसर्पित्वियों और उत्सर्पित्वियोंके द्वारा बिच्छिन्न होती है ऐसे विरोधका परिहार		३ कल्पमार्गजा ३१९-३८६		
२१	विकल्पव्यवर्धियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१२	२१६	पृथिवीकायिक मन्त्रायिक तैज स्कायिक वायुकायिक तथा वातरपृथिवीकायिक, वातरमन्त्रा यिक वातरतैजस्कायिक वातर वायुकायिक वातरवमस्थितिकायिक प्रत्येकछापीर तथा इन पाँच वात तोंके अपर्णात्ता, सूक्ष्मपृथिवीका यिक सूक्ष्ममन्त्रायिक सूक्ष्म तैजस्कायिक, सूक्ष्मवायुकायिक तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्वणात् और अपर्णात्ताका प्रमाण	३२९
२३	पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय परात्ताका द्वय काष्ठ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१४	२१७	पृथिवीकायिकका जय प्रसङ्गसे कर्मके क्षेत्रका बहुत्व तथा वातर का स्वरूप	३३
२०७	बिच्छन्नबन्धोंके प्रमाण-प्रतिपक्ष एक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाण का प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं बहाने इसका स्वीकरण	३१५	२१८	पृथिवीकायिक भद्रिके प्रत्येक होते हुए बन्धों प्रत्येकछापीर यह विशासन क्यों नहीं छागत्या जाता है इसका स्वीकरण	३३१
२०८	बिच्छेन्द्रिय और सच्छेन्द्रियोंका अवधारकाष्ठ तथा प्रत्यप्रमाण	३१५	२१९	सूक्ष्म पर्वणात् और अपर्णात्ता इनके स्वरूपोंका स्वीकरण	३३१
२०९	सामान्यगुणस्यावसे छेकर अपेक्षिकबन्धी शुद्धस्थान तक पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय- पर्वणात्ताका प्रमाण	३१७	२२०	विमहगतिम विद्यमान वनस्थति कायिक बीज प्रत्येक है या साधारण इस शङ्काका समा धान	३३२
२१	जिनकी इन्द्रियां नष्ट होगई हैं ऐसे सयोगी अपोमी जिनको पंचेन्द्रिय कैसे कहा जा सकता है इस शङ्काका समाधान	३१७	२२१	तैजस्कायिकराशिसे उत्पन्न कर लेखी विधि	३३४
२११	छम्पपर्वणात् पंचेन्द्रियोंका प्रथम काष्ठ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१७	२२२	बीजोंवाट किन्ती गुणकारशाखा- काधीके जानेपर तैजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है इससे	
२१३	सम्पपर्वणात् पंचेन्द्रियोंके प्रमाण- का प्रतिपादक सूत्र पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण प्रतिपक्ष एक सूत्रके साथ नहीं करनेका कारण	३१८			

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	छेकर इस विषयमें अनेक मत- मतोंका सम्मेलन और कीन मत पूर्व परंपरागत है इसका समर्थन			कठित आदिसे राशिका कथन	१५१
२२३	प्रकारानुसारसे तीक्ष्णस्वाधिक- राशिके उत्पन्न करनेका विधान	१३७	२३५	बाह्यतीक्ष्णस्वाधिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	१५५
२२४	कठित आदिके द्वारा तीक्ष्ण- विकराशिका वर्णन	१३९	२३६	बाह्यमायुक्त्याधिक पर्याप्तराशिका द्रव्य काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१५५
२२५	तीक्ष्णस्वाधिकराशिसे पृथिवी, जल और वायुकाधिकराशिके उत्पन्न करनेकी प्रक्रिया तथा इन्हीं तीनों राशियोंके अन्वहारकाळ	१४०	२३७	बाह्यमायुक्त्याधिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	१५६
२२६	प्रत्यक्षयोगी करणसूत्र तथा उक्त चारों राशियोंके सूक्ष्म सूक्ष्मपर्याप्त सूक्ष्मपर्याप्त और बाह्यराशिसम्बन्धी अन्वहार काळ	१४१	२३८	मेघ-प्रमेदयुक्त वनस्पतिस्वाधिक जीवोंका द्रव्य प्रमाण	१५६
२२७	बाह्यतीक्ष्णस्वाधिक आदि राशि- योंके अर्थवच्छेद	१४२	२३९	जिनका शरीर वनस्पतिकरूप होता है उन्हें वनस्पतिस्वाधिक कहते हैं वनस्पतिस्वाधिकका वेसा अर्थ करनेपर विग्रहणतिमें स्थित जीवोंको वनस्पतिस्वाधिकत्व कैसे प्राप्त होता है इस शंकाका समाधान	१५७
२२८	बाह्यतीक्ष्णस्वाधिकराशिकी सत्त- रह प्रकारकी प्रकृष्टता	१४४	२४०	मेघ-प्रमेदयुक्त वनस्पतिस्वाधिक जीवोंका काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१५८
२२९	बाह्यवनस्पति प्रत्येक शरीर राशिकी सत्तरह प्रकारकी प्रक- ृष्टता तथा दूसरी बाह्यराशि- योंकी पूर्वोक्त राशियोंके समान प्रकृष्टता करनेकी सूचना	१४४	२४१	पूर्वोक्त जीवराशियोंकी सूक्ष्म- राशियाँ	१५९
२३	समतिष्ठित और असमतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिमें मेघ	१४५	२४२	वसुधाधिकसामान्य और वस- ुधाधिकपर्याप्त मिथ्याद्वि जीवोंका द्रव्य काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१६०
२३१	सूक्ष्ममें बाह्यवनस्पतिप्रत्येकशरीर का ही प्रमाण कहा इनके मेघोंका नहीं इसका कारण	१४७	२४३	साक्षात्वनसम्यग्द्वि गुणस्थानसे छेकर अयोगिकेबन्धी गुणस्थानतक वसुधाधिक सामान्य और वस- ुधाधिकपर्याप्तोंका प्रमाण	१६२
२३२	बाह्यपृथिवीकाधिक पर्याप्त बाह्य स्वाधिकपर्याप्त और बाह्यवस- ुधाधिकप्रत्येक शरीर पर्याप्त राशियोंका द्रव्य काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१४८	२४४	छान्दस्यपर्याप्त वसुधाधिकोंका प्रमाण	१६२
२३३	उक्त तीनों राशियोंके मापहार	१५०	२४५	छान्दस्यपर्याप्त वसुधाधिकोंका प्रमाण छान्दस्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके समान कहनेसे उत्पन्न हूर्ध्व आपत्तिका परिहार	१६३
२३४	बाह्यतीक्ष्णस्वाधिक पर्याप्त- राशिका प्रमाण अन्वहारकाळ व		२४६	कायमार्गात्मसम्बन्धी मापमाप	१६३
			२४७	कायमार्गात्मसम्बन्धी अन्वहारकाळ	१६५

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	तथा इन्द्रिय नीन्द्रिय और बहुत चिन्द्रिय पहले किन्तु प्रत्यक्ष किया गया है इसका स्वीकरण	१११	२१३	अपर्याप्तकालमें गुणस्थान-मति पक्ष जीव लक्षणपर्याप्तक नहीं होते इसका समर्थन	११८
१२	संयोगिकेवर्द्धीके पर्यन्तित्वका समर्थन	११२	२१४	इन्द्रियमार्गणाधी अपेक्षा माणा मात्रा	११८
२३	विकल्पकय जीवोंका बाह्यकी अपेक्षा प्रमाण	११२	२१५	इन्द्रियमार्गणाधी अपेक्षा अपर बहुत्व	१२२
२४	इन्द्रियमति पक्षिका सवया मापसहित होतेसे विकल्पक नहीं होती है फिरभी ये असंख्याता संख्यात अपर्याप्तियों और अपर्याप्तियोंके द्वारा विकल्पक होती है ऐसा विचारका परिहार	११२	३ कल्पमाणा ३२९-३८६		
२५	विकल्पकय जीवोंका संवर्द्धी अपेक्षा प्रमाण	११३	२१६	पृथिवीकायिक लक्ष्यविक तीव्र स्वायिक, वायुकायिक तथा वातरपृथिवीकायिक, वातरमध्य यिक वातरतीव्रस्वायिक, वातर वायुकायिक वातरपनस्पतिकायिक प्रत्यक्षकारी तथा इन पांच वात र्योंके अपर्याप्त। सूक्ष्मपृथिवीका- यिक सूक्ष्ममध्यकायिक सूक्ष्म तीव्रस्वायिक, सूक्ष्मवायुकायिक तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्याप्त भीतर अपर्याप्तोंका प्रमाण	१२२
२६	पर्यन्तित्वसामान्य और पर्यन्तित्व पर्याप्तका उभय काल बार संबंधी अपेक्षा प्रमाण	११४	२१७	पृथिवीकायिकका भय प्रसंगसे कर्मके प्रेक्षकोंका बहुत तथा वातर का स्वरूप	१३
२७	विकल्पकयोंके प्रमाण-मतिपक्ष एक सूत्रके साथ पर्यन्तित्वोंके प्रमाण का प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं बढ़ा, इसका स्वीकरण	११५	२१८	पृथिवीकायिक भविके प्रत्येक होते हुए उन्हें प्रत्येककारी पक्ष विशेषण क्यों नहीं कहाया जाता है इसका स्वीकरण	१३१
२८	विकल्पेन्द्रिय और संवर्द्धेन्द्रियोंका अवधारकात्वं तथा दृश्यप्रमाण	११५	२१९	सूक्ष्म पर्याप्त और अपर्याप्त इनके स्वरूपोंका स्वीकरण	१३१
२९	साक्षात्प्रमाणगुणस्थानसे कंठर अयोगिकेवर्द्धी गुणस्थान तक पर्यन्तिसामान्य और पर्यन्तित्व- पर्याप्तोंका प्रमाण	११७	२२०	विमलपतिमें विद्यमान कमस्वति- कायिक जीव प्रत्येक है, या साधारण इस शब्दका समा- धान	१३२
३०	किन्तु इन्द्रियां नष्ट होगई हैं वेसे संयोगी अयोगी किन्तु पर्यन्तित्व कैसे कहा जा सकता है इस शङ्काका समाधान	११७	२२१	तीव्रस्वायिकपक्षिके कल्पक कर नेकी विधि	१३४
३१	लक्षणपर्याप्त पर्यन्तित्वोंका दृश्य काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	११७	२२२	बीजोद्धार किन्तु गुणधारका- काओंके आनेपर तीव्रस्वायिक पक्ष कल्पक होती है इससे	
३२	लक्षणपरात् पर्यन्तित्वोंके प्रमाण- का प्रतिपादक सूत्र पर्यन्तित्व मिथ्यापक्षिकोंके प्रमाण प्रतिपादक सूत्रके साथ नहीं कहावेक कारण	११८			

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	प्रमाण	४१४	६	कपायमार्गणा	४१४ ४३६
७९	स्त्रीवैरी असत्यसम्पन्नद्विषोंके	४१४	२८८	श्लेष, मान माया और छोम	
	कम होनेका कारण	४१५		कपायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुण	
७६	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर			स्थानसे छेकर सत्यतासंयत गुण	
	अनिवृत्तिकरण उपशमक व			स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें	
	क्षपकके सवेदभाग तक स्त्री-			जीवोंका प्रमाण व व्यवहारका	४२४
	वैदियोंका प्रमाण	४१५	२८९	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर	
७७	पुरुषवैरी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण			अनिवृत्ति गुणस्थानतक चारों	
	व व्यवहारका	४१६		कपायपासे जीवोंका प्रमाण	४२८
७८	सासादनसम्पन्नदृष्टिसे छेकर अति		२९०	छोमकपायी उपशमक, व क्षपक	
	वृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके			सूक्ष्मसाम्प्रापिकसंयतोंका प्रमाण	४२९
	सवेद भाग तक पुरुष वैदियोंका		२९१	अकपायी जीवोंमें उपशमकपाय	
	प्रमाण व व्यवहारका	४१६		पीतरागछप्रस्थोंका प्रमाण और	
७९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे छेकर			प्रथमकर्म चार प्रकारका होनेसे	
	संयतासंयत तकके नपुंसक वैदि-			चार भेदोंमें विभक्त मूल उप	
	योंका प्रमाण व व्यवहारका	४१७		शास्त्रकपायका प्रत्येक भूभोग	
८०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर			प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है,	
	अनिवृत्तिकरण उपशमक क्षपकके		२९२	इस शंकाका समाधान	४३०
	सवेद भाग तक नपुंसकवैदियोंका			अकपायी क्षमिकपायपीतराग	
	प्रमाण	४१८		छप्रस्थ और अयोगिद्वेषकी	
८१	स्त्रीवैरी प्रमत्तादिराशिसे भी		२९३	जिनोंका प्रमाण	४३०
	नपुंसकवैरी प्रमत्तादिराशिसे			अकपायी सयोगिद्वेषकी जिनोंका	
	संयतासंयत भाग होनेका कारण	४१९		प्रमाण	४३१
८२	अपगतवैरी उपशमकोंका प्रवे-		२९४	कपायमार्गजासम्बन्धी मागामाग	४३१
	शी अपेक्षा प्रमाण	४१९	२९५	कपायमार्गजासम्बन्धी अपर	
८३	उपशमकपायजीवके उपशमक			बहुमय	४३३
	सत्ता कैसे है इस शंकाका			७ ज्ञानमार्गणा	४३६-४४६
	समाधान	४१९	२९६	मत्स्यजानी और भुताजानी मिथ्या	
८४	अपगतवैरी उपशमकोंका संयत			दृष्टि व सासादनसम्पन्नदृष्टि	
	कासकी अपेक्षा प्रमाण	४२०		जीवोंका प्रमाण भुवरानि और	
८५	अपगतवैरी तीनों स्वयं और		२९७	विमयजानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका	
	अयोगिद्वेषियोंका प्रमाण	४२०		प्रमाण व व्यवहारका	४३७
८६	अपगतवैरी स्यामिकद्वेषियोंका		२९८	निर्मगजानी सासादनसम्पन्नदृष्टि	
	प्रमाण	४२१		जीवोंका प्रमाण	४३८
८७	वेदमार्गजासम्बन्धी मागामाग व		२९९	अति भुत और अपविजानी	
	अपगतवैरी	४२१		जीवोंमें असत्यसम्पन्नदृष्टि गुण	

क्रम सं	विषय	पृष्ठ न	क्रम सं	विषय	पृष्ठ न
	४ योगमार्गिका	३८६ ४१३		वनसम्यग्प्रतिष्ठोक्त प्रमाण और मन्वहारकाळ	३९७
२४८	पाँचों मनोयोगी तथा सत्त्व रमय और असत्त्व सब तीन वचनयोगी जीवोंका प्रमाण	३८९	२४१	भौतिकमिश्रकाययोगी असंबत- सम्यग्प्रतिष्ठ और सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	३९७
२४९	उक्त आठ राशियाँ दोहोंके संख्यातबे माग क्यों हैं? इसका समर्थन	३८९	२४२	वैदिकिकाययोगी मिथ्याप्रति- ष्ठोक्त प्रमाण व मन्वहारकाळ	३९८
२५०	साक्षात्तसम्यग्प्रतिष्ठ गुणस्थानसे छेकर संघटासंघटतक उक्त आठों राशिओंका प्रमाण तथा उसका बोधप्रकरणके समान कथन करनेमें हेतु	३८७	२४३	वैदिकिकाययोगी साक्षात्त सम्यग्प्रतिष्ठ और असंघटसम्यग्प्रति- ष्ठिबराशिका प्रमाण व मन्वहार काळ	३९९
२५१	प्रमत्तसंघटसे छेकर सयोगिकेवली तक उक्त आठों राशिओंका प्रमाण	३८७	२४४	वैदिकिकमिश्रकाययोगी मिथ्या- प्रतिष्ठोक्त प्रमाण	४००
२५२	प्रमत्तसंघटप्रतिष्ठ गुणस्थानमें आठ राशिओंका प्रमाण बोधसमान व कहनेका कारण	३८८	२४५	वैदिकिकमिश्रकाययोगी साक्षात्त सम्यग्प्रतिष्ठ और असंघटसम्यग्प्रति- ष्ठिजीवोंका प्रमाण व मन्वहारकाळ	४०१
२५३	वचनयोगी और अनुमपवचन योगी मिथ्याप्रतिष्ठिजीवोंका प्रमाण काळ और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३८८	२४६	माहारकाययोगी प्रमत्तसंघटों का प्रमाण	४०१
२५४	साक्षात्तान्ति गुणस्थानवर्ती उक्त राशिओंका प्रमाण	३९०	२४७	माहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्त संघटोंका प्रमाण व अतन्तर परिहार	४०२
२५५	स्वमेद-युक्त मनोयोगी वचन योगी और वचनयोगी जीवोंके मन्वहारकाळ और जीवराशियाँ	३९१	२४८	कर्मजकाययोगी मिथ्याप्रतिष्ठिजीवों का प्रमाण व भुवराशि	४०२
२५६	काययोगी और भौतिकिकाय योगी मिथ्याप्रतिष्ठोक्त प्रमाण	३९५	२४९	कर्मजकाययोगी साक्षात्तसम्य- ग्प्रतिष्ठ और असंघटसम्यग्प्रति- ष्ठिजीवोंका प्रमाण व मन्वहारकाळ	४०३
२५७	साक्षात्तगुणस्थानसे छेकर सयोगिकेवली तक काययोगी और भौतिकिकाययोगीयोगोंका प्रमाण भुवराशि तथा मन्वहार काळ	३९५	२५०	कर्मजकाययोगी सयोगीजीवोंका प्रमाण	४०४
२५८	भौतिकमिश्रकाययोगी मिथ्या प्रतिष्ठोक्त प्रमाण और भुवराशि	३९९	२५१	योगमार्गिका सम्बन्धी मागप्रमाण	४०४
२५९	भौतिकिकाययोगमराशिके संख्या तबे माग भौतिकमिश्रकाय योगमराशिके होनेमें हेतु	३९९	२५२	योगमार्गिका सम्बन्धी मन्वहारकाळ	४०८
२६०	भौतिकमिश्रकाययोगी साक्षात्त		५ वेदमार्गिका ४१३-४२४		
			२७३	स्त्रीवैद्य मिथ्याप्रतिष्ठोक्त प्रमाण विविधोंके प्रमाणकी तुलनासे सिद्धि और स्त्रीवैद्योंका मन्व- हारकाळ	४१३
			२७४	साक्षात्त सम्यग्प्रतिष्ठे छेकर संघटासंघट गुणस्थान तक अपेक्ष गुणस्थानमें स्त्रीवैद्योंका	

क्रम नं-	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	प्रमाण	४१४	६	कपायमार्गणा	४१४ ४३६
२७५	रुचिवेदी असयतसम्यग्दृष्टिओंके	४१४	२८८	श्लेष मान माया और छोम	
	कम होनेका कारण	४१५		कपायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुण	
२७६	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर			स्थानसे छेकर सयतासंयत गुण	
	अनिवृत्तिकरण उपशमक व			स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें	
	क्षपकके सवेदभाग तक ऊर्ध्व	४१५	२८९	जीवोंका प्रमाण व अवधारकाज	४२४
	वेदियोंका प्रमाण			प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर	
२७७	पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टिओंका प्रमाण	४१५		अनिवृत्ति गुणस्थानतक चारों	
	व अवधारकाज	४१६		कपायथाके जीवोंका प्रमाण	४२८
२७८	सासाइनसम्यग्दृष्टिसे छेकर अति		२९०	छोमकपायी उपशमक, व क्षपक	
	वृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके			सूक्ष्मसाम्प्रायिकसंयतोंका प्रमाण	४२९
	सवेद भाग तक पुरुष वेदियोंका	४१६	२९१	अकपायी जीवोंमें उपशान्तकपाय	
	प्रमाण व अवधारकाज			बीतरागछद्मस्थोंका प्रमाण और	
२७९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे छेकर	४१७		द्वयकर्म चार प्रकारका होनेसे	
	संयतासंयत तकके नपुंसक वेदि			चार भेदोंमें विभक्त मूल उप	
	योंका प्रमाण व अवधारकाज			शान्तकपायवाशि प्रत्येक मूलोप	
२८०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे छेकर			प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है	४३०
	अनिवृत्तिकरण उपशमक क्षपकके		२९२	अकपायी शीजकपायबीतराग	
	सवेद भाग तक नपुंसकवेदियोंका	४१८		छद्मस्थ और अयोगिकेपक्षी	
	प्रमाण			जिनोंका प्रमाण	४३०
२८१	रुचिवेदी प्रमत्तादिराशिसे भी		२९३	अकपायी सवे निकेयक्षी जिनोंका	
	नपुंसकवेदी प्रमत्तादिराशिसे	४१९		प्रमाण	४३१
	संख्यातवर्ग भाग होनेका कारण		२९४	कपायमार्गणासम्बन्धी भागाभाज	४३१
२८२	अपगतवेदी उपशमकोंका प्रवेश	४१९	२९५	कपायमार्गणासम्बन्धी अस्प-	
	की अपेक्षा प्रमाण			बहुत्व	४३३
२८३	उपशान्तकपायजीवके उपशमक			७ ज्ञानमार्गणा	४३६-४४६
	सखा कैसे है इस शीजका	४१९	२९६	मत्तज्ञानी और धृताज्ञानी मिथ्या	
	समाधान			दृष्टि व सासाइनसम्यग्दृष्टि	
२८४	अपगतवेदी उपशमकोंका सख्य	४२०		जीवोंका प्रमाण ध्रुवगुणी और	
	कासकी अपेक्षा प्रमाण			अवधारकाज	४३९
२८५	अपगतवेदी तीनों स्वयं और	४२०	२९७	विमगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका	
	अयोगिकवेदियोंका प्रमाण			प्रमाण व अवधारकाज	४३७
२८६	अपगतवेदी सयतासंयतवेदियोंका	४२१	२९८	विमगज्ञानी सासाइनसम्यग्दृष्टि	
	प्रमाण			जीवोंका प्रमाण	४३८
२८७	वेदभागवासम्बन्धी भागाभाज व	४२१	२९९	अति धृत और अविज्ञानी	
	अपगतवेदी			जीवोंमें असयतसम्यग्दृष्टि गुण	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं.
	स्यावसे डेकर हीनकपाय गुण			इस विषयका आध्यात्मिक	
	स्यावतक प्रत्येक गुणस्यानमे			शोक-समाधान	४५३
३००	अध्यात्मिक प्रमाण व व्यवहारकाय	४३५	३१४	अध्यात्मिक जीवोंमें साक्षात्कृत- सम्पत्ति गुणस्यावसे डेकर	
	गुणस्यानसे डेकर हीनकपाय			हीनकपाय गुणस्यावतक के	
	गुणस्यावतक प्रत्येक गुणस्यानमे			जीवोंका प्रमाण	४५४
	जीवोंका प्रमाण	४४१	३१५	अध्यात्मिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि	
३१	मनःपर्यवृत्तियामे प्रमत्तसंयत			गुणस्यानसे डेकर हीनकपाय	
	गुणस्यानसे डेकर हीनकपाय			गुणस्यावतकके जीवोंका प्रमाण	
	गुणस्यावतक जीवोंका प्रमाण	४४१		व व्यवहार	४५५
३०२	केवलज्ञानियोंमें सद्योमिच्छाकी		३१६	अध्यात्मिक जीवोंका प्रमाण व	
	धीर-अधोमिच्छाकी जीवोंका प्रमाण	४४२		व्यवहारकाय	४५५
३१	ज्ञानमार्गजा सम्प्रदायी मायामाग	४४२	३१७	केवलज्ञानियों जीवोंका प्रमाण	४५६
३४	ज्ञानमार्गजासम्प्रदायी अत्यन्तदुःख	४४४	३१८	सुखदर्शन और मन पर्यवृत्तियामे	
	८ सममार्गजा ४४७-४५२			क्यों नहीं होता है, इस शोक	
३०५	संपत्ति जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुण			का समाधान	४५६
	स्यावसे डेकर अधोमिच्छाकी		३१९	ज्ञानमार्गजासम्प्रदायी मायामाग	४५७
	गुणस्यावतकका प्रमाण	४४७	३२	ज्ञानमार्गजासम्प्रदायी अत्यन्तदुःख	४५८
३०६	साधारण और उद्योगस्यावतक- संपत्तिमें प्रमत्तसंयत गुणस्यावसे			१ लेखमार्गजा ४५९-४७१	
	डेकर अविच्छिन्निकरण गुणस्यान		३२१	कृष्ण, शक्ति और कायेत डेकरा	
	तक प्रत्येक गुणस्यानका प्रमाण			बाह्योंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्यावसे	
	व बाह्य संयतोंके सेवामें विष-			डेकर अत्यन्तसम्पत्ति गुण	
	यक शोकका समाधान	४४७		स्यावतक प्रत्येक गुणस्यानकी	
३०७	परिहारविमुक्तिसंयतकाय प्रमत्त			जीवोंका प्रमाण व व्यवहार	४५९
	और अत्यन्तसंयतकाय प्रमाण	४४९	३२२	लेखोदेखावसे जीवोंमें मिथ्या-	
३०८	सुखसाधनसंयतसंयतकाय उप-			दृष्टि जीवोंका प्रमाण व व्यवहार	४६१
	सामक व शरीरोंका प्रमाण	४४९	३२३	लेखोदेखावसे जीवोंमें साक्षात्कृत	
३१	व्याख्यातसंयत संयतसंयत			एक सम्पत्ति गुणस्यावसे	
	और अत्यन्त जीवोंका पुण्य			डेकर अत्यन्तसंयत गुणस्यान	
	पुण्य प्रमाण	४५०		तकके जीवोंका प्रमाण	४६१
३१०	संयतमार्गजासम्प्रदायी मायामाग	४५१	३२४	पञ्चदेखावसे जीवोंमें मिथ्या	
३११	संयतमार्गजासम्प्रदायी अत्यन्तदुःख	४५१		दृष्टि जीवोंका प्रमाण व व्यवहार	४६३
	९ द्युतमार्गजा ४५३-४५९		३२५	पञ्चदेखावसे जीवोंमें साक्षात्कृत	
३१३	अध्यात्मिक जीवोंमें साक्षात्कृत			गुणस्यानसे डेकर अत्यन्तसंयत	
	दुःख काय और शरीर अवेक्षा	४५३		गुणस्यानतकके जीवोंका प्रमाण	४६३
३१३	अध्यात्मिक जीवोंमें साक्षात्कृत		३२६	गुणस्यावसे जीवोंमें मिथ्या	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	इष्टि गुणस्थानसे छेकर सयता सयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण स्थानमें जीबोंका प्रमाण व अन्नहारकाळ	४३३	३३९	उपशमसम्पन्नइष्टियोंमें असंयत सम्पन्नइष्टि गुणस्थानसे छेकर उपशमसंयतकपाय गुणस्थानतकके जीबोंका प्रमाण	४३३
३३७	दुष्कस्योदयाकाळे जीबोंमें प्रसक्तसंयत गुणस्थानसे छेकर सयोगिकेबड़ी गुणस्थानतक प्रत्येक गुण स्थानवर्ती जीबोंका प्रमाण	४३५	३४०	सासादनसम्पन्नइष्टि सम्पन्निध्या-इष्टि भीर मिथ्याइष्टि जीबोंका प्रमाण व अन्नहारकाळ	४३७
३३८	छेद्यामार्गासंबंधी भागामाग	४३६	३४१	सम्पत्त्वमार्गासंबंधी भागामाग	४३९
३३९	छेद्यामार्गासंबंधी अल्पबहुत्व	४३७	३४२	सम्पत्त्वमार्गासंबंधी अल्प बहुत्व	४३९
	११ मध्यमार्गाणा ४३९-४७३		३४३	प्रसक्तसंयत वेदकसम्पन्नइष्टियोंसे सयिकसम्पन्नइष्टि संयतासंयत जीब संख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं, इस संकाय समाधान	४८०
३३०	मध्यसिद्धिक जीबोंमें मिथ्याइष्टि गुणस्थानसे छेकर अयोगिकेबड़ी गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीबोंका प्रमाण	४३९		१३ संक्षीमार्गाणा ४८२-४८३	४८३
३३१	अमध्यसिद्धिक जीबोंका प्रमाण	४३९	३४४	संक्षी मिथ्याइष्टि जीबोंका प्रमाण व अन्नहारकाळ	४८२
३३२	मध्यमार्गासंबंधी भागामाग और अल्पबहुत्व	४३३	३४५	संक्षी जीबोंमें सासादन गुणस्थानसे छेकर क्षीयकपायगुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीबोंका प्रमाण	४८२
	१२ सम्पत्त्वमार्गाणा ४७४-४८१		३४६	असंक्षी जीबोंका द्रव्य काष्ठ और शेषकी अपेक्षा प्रमाण	४८३
३३३	सम्पन्नइष्टि जीबोंमें असंयत सम्पन्नइष्टि गुणस्थानसे छेकर अयोगिकेबड़ी गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीबोंका प्रमाण	४३४	३४७	संक्षीमार्गासंबंधी भागामाग व अल्पबहुत्व	४८३
३३४	सायिकसम्पन्नइष्टियोंमें असंयत सम्पन्नइष्टि गुणस्थानसे छेकर उपशमसंयतकपाय गुणस्थानतक के जीबोंका प्रमाण	४३४		१४ आहारमार्गाणा ४८३-४८७	
३३५	सायिकसम्पन्नइष्टि संयतासंयत संख्यात ही क्यों होते हैं इस संकाय समाधान	४३५	३४८	आहारक जीबोंमें मिथ्याइष्टि गुणस्थानसे छेकर सयोगिकेबड़ी गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें आहारक जीबोंका प्रमाण व अन्नहारकाळ	४८३
३३६	सायिकसम्पन्नइष्टि खाती संपक व अयोगिकेबड़ी जीबोंका प्रमाण	४३५	३४९	अनाहारक जीबोंका प्रमाण अन्नहारक व अन्नहारक	४८४
३३७	सायिकसम्पन्नइष्टि सयोगिकेबड़ी जीबोंका प्रमाण	४३६	३५०	अनाहारक अयोगिकेबड़ी जीबों का प्रमाण	४८५
३३८	वेदकसम्पन्नइष्टियोंमें असंयत सम्पन्नइष्टि गुणस्थानसे छेकर अमप्रसक्तसंयत गुणस्थानतकके जीबोंका प्रमाण	४३६	३५१	आहारमार्गासंबंधी भागामाग	४८५
			३५२	आहारमार्गासंबंधी अल्प बहुत्व	४८५

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं.
	स्थापने केकर स्वीकृताय शुच			इस विषयका अज्ञापोद्घातक	
	स्थापनक प्रत्येक शुचस्थापने			शोक-समाधान	४५३
३०	अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत	४३२	३१४	अधुवर्षीजी जीबोंमें सासाजन-	
	शुचस्थापने केकर स्वीकृताय			सम्प्राप्ति शुचस्थापने केकर	
	शुचस्थापनक प्रत्येक शुचस्थापने			स्वीकृताय शुचस्थापनक के	४५४
	जीबोंका प्रमाण	४४१	३१५	अधुवर्षीजीमें मिथ्यादृष्टि	
३१	मन्मथसंयतियोंमें प्रमत्तसंयत			शुचस्थापने केकर स्वीकृताय	
	शुचस्थापने केकर स्वीकृताय			शुचस्थापनकके जीबोंका प्रमाण	
	शुचस्थापनक जीबोंका प्रमाण	४४१		व सुपराधि	४५५
३२	केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवही		३१६	अधुवर्षीजी जीबोंका प्रमाण व	
	जीबोंकेवही जीबोंका प्रमाण	४४२		अवधारका	४५५
३३	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी मागामाग	४४२	३१७	केवलज्ञानी जीबोंका प्रमाण	४५६
३४	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी अवस्थादुख	४४४	३१८	सुतराज और मन्मथसंयत	
	८ उपममायका ४४७-४५२			नवी नहीं होता है इस शोक	
३५	संयमी जीबोंमें प्रमत्तसंयत शुच-			का समाधान	४५६
	स्थानसे केकर अयोगिकेवही		३१९	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी मागामाग	४५७
	शुचस्थापनकका प्रमाण	४४७	३२०	ज्ञानमार्गका सम्बन्धी अवस्थादुख	४५८
३०६	सामाधिक और अज्ञेयस्थापन-			१० सेइयामार्गका ४५९-४७१	
	संयतोंमें प्रमत्तसंयत शुचस्थापने		३२१	कृष्ण, नील और कापेत केइया	
	केकर अनिष्टितिकरण शुचस्थाप-			नक्षत्रोंमें मिथ्यादृष्टि शुचस्थापने	
	नक प्रत्येक शुचस्थापनका प्रमाण			केकर असंयतसम्प्राप्ति शुच-	
	व दोनों संयतोंके प्रमाणेद विष-			स्थापनक प्रत्येक शुचस्थापनकी	
	यक शक्यता समाधान	४४७		जीबोंका प्रमाण व अज्ञेय	४५९
३०७	परिहार किन्तु संयमवासे प्रमत्त		३२२	सेवेवेइयावासे जीबोंमें मिथ्या-	
	और अममत्तसंयतोंका प्रमाण	४४९		दृष्टि जीबोंका प्रमाण व अवधार	
३०८	सुखसम्प्राप्ति संयमवासे अ-			का	४६१
	द्यमक व अज्ञेयका प्रमाण	४४९	३२३	सेवेवेइयावासे जीबोंमें अज्ञा-	
३०९	यथाप्यातसंयमी, संयमासयमी			द्वय सम्प्राप्ति शुचस्थापने	
	और अज्ञेयमी जीबोंका पुण्य			केकर अममत्तसंयत शुचस्थाप-	
	पुण्य प्रमाण	४५१		नकके जीबोंका प्रमाण	४६२
३१	संयममार्गका सम्बन्धी मागामाग	४५१	३२४	एकसेइयावासे जीबोंमें मिथ्या-	
३११	संयममार्गका सम्बन्धी अवस्थादुख	४५१		दृष्टि जीबोंका प्रमाण व अवधार	
	९ दर्शनमार्गका ४५३-४५९			का	४६३
३१२	अधुवर्षीजी मिथ्यादृष्टि जीबोंका		३२५	यथावेइयावासे जीबोंमें सासाजन	
	दृष्ट्य का और क्षेत्रकी ज्येष्ठ			शुचस्थापने केकर अममत्तसंयत	
	प्रमाण	४५३		शुचस्थापनकके जीबोंका प्रमाण	४६३
३१३	अधुवर्षीजी जीबोंके करते हैं,		३२६	शुद्धसेइयावासे जीबोंमें मिथ्या	

अब मूळ पाठानुसार—

$$\frac{k'}{k + \frac{b}{a}} = \frac{k}{k + \frac{b-a}{a}} = \frac{k'}{(k-1) + \frac{k}{a}} = \frac{k'}{k + \frac{b}{a}}$$

$$= k - \frac{k}{a+1} = k - \frac{k}{a}$$

किन्तु यह उदाहरण बनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक घटने व एक बढ़नेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण अरुसद्यस्थि नही बतलाया जा सकता।

११ पाठसवधी विशेष सूचना

पृ २८८ की पंक्ति ९ में 'एवं बोद्धव्यम्...

' आदिसे लगाकर पृ २९०

पंक्ति २ के 'एवमवस्था' तकका पाठ प्रतियोगमें व मूळवित्रीकी प्रतिमें निम्न प्रकार है, जो घबछा-कसकी अन्यत्र पाठ-व्यवस्थासे कुछ निम्न है। हमने उसे मुद्रणमें अन्यत्रसे व्यवस्थानुसार कुछ हेरफेरसे रस दिया है और उसका कारण भी वही दे दिया है। किन्तु पाठकोंकी सूचनाके लिये वह रूप पाठ प्रतियोगे अनुसार यहाँ दिया जाता है—

परत्वाये पपह । सयवधीयो अयंअवसम्महाद्विअवहारकाको । एवं वेवार्थं जाय वकिहोवमो पि ।
 उहो ववरि सिग्गाह्विअवहारकाको असेवेवगुणो । को गुणगारो ? सयवधारकाकस्स असवेवविमगो । को
 पडिमागो ? पकिहोवमो । अहवा पट्टगुहस असेवेवविमगो असवेवगामि सुविअगुहमि । केचिअमेचापि ।
 सुविअगुहस्स असवेवविमगमेचापि । को पडिमागो ? पकिहोवमस्य संवेवविमगो । उवरि सन्नाम-
 भयो । एवं बोद्धविसवत्तवत्ताये पि वेवार्थं । अयववासिपाय सत्ताये सयवत्तोभा सिग्गाह्विविअवमसुह ।
 अवहारकाको अयंवेवगुणो । को गुणगारो ? सयवधारकाकस्स असेवेवविमगो । को पडिमागो ? विअवंम
 सुह । अहवा सेवीए अयंवेवविमगो असेवेवगामि सेविअवमवगामसुह । को पडिमागो ? विअवंमसुवि-
 वयो । अहवा अयंगुहं । सेवी अयवेवगुणो । को गुणगारो ? अयविअवंमसुह । इयमसवेवगुणो । को इय-
 गयो ? विअवंमसुह । पवरमसेवेवगुणं । को गुणगारो ? अयवहारकाको । कोणो असेवेवगुणो । को गुणगारो ?
 सेवी । सासजाहीनं मूळोवमयो । अयववासिपाये सयवधेयो अयंअवसम्महाद्विअवहारकाको । एवं वेवार्थं
 जाय वकिहोवमो पि । उहो ववरि अयववासिपायसिग्गाह्विविअवंमसुह असेवेवगुणो । को गुणगारो ? सय-
 विअवंमसुहए असेवेवविमगो । को पडिमागो ? पकिहोवमो । अहवा पट्टगुहस असेवेवविमगो अयं
 वेवगामि सुविअगुहमि । केचिअमेचापि । सुविअगुहसअवगामसुहस्स असेवेवविमगमेचापि । को पडि-
 मागो ? पकिहोवमो । उवरि सयवत्तायमयो । साह्वमादि जाय उवरिमउवरिमगेवगो पि सन्नाम-
 गामि वेवार्थं । उवरि परत्वायं जपि एव सयगुहवत्तायमवमपावो । अयवे सत्ताये पि अयि एवमव-
 पाये ।

१० अर्थसंबंधी विशेष सूचना

१ श्रुत ४७ की भाषा न २८ का प्रनियामें उपलब्ध
पाठको रमते हुए अर्थ

दो हाथोंके अन्तरसे एक हाथमें माग देने पर जो छाप लागे है उससे मात्रित पूर्व सम्पन्न,
तथा दोनों हाथोंसे अलग अलग मात्रित भाग्यक भजनप्रयोग अन्तर हाथविकल्प होता है।
(अर्थात् उपर्युक्त दोनों प्रक्रियाओंका फल मात्र ही होता है और समानरूपसे घटता बढ़ता है।)

उदाहरण (बीजगणितसे) —

$$\text{माग} = ७, \text{हार (मात्रक)} = ४ \text{ और } \text{पूर्वउत्प} = \frac{७}{४} = १$$

$$(१) \text{ यदि स से ४ छोटा है तो — } \frac{७}{४} - \frac{७}{४} = ० + \frac{४}{४ - ४}$$

$$(२) \text{ यदि स से ४ बड़ा है तो — } \frac{७}{४} - \frac{७}{४} = ० + \frac{४}{४ - ४}$$

(बीजगणितसे) —

$$\text{माग} = १६, \text{हार (मात्रक)} = ६ \text{ और } ९$$

$$\text{पूर्वउत्प} = \frac{१६}{६} = २, \text{ दूसरा उत्प} = \frac{१६}{९} = ४; \text{ अतएव } ९ - ६ = ३$$

$$\frac{९}{३} = ३, \frac{६}{३} = २, ३ - २ = १$$

२ श्रुत ५ - ५१ परके पश्चिम विकल्पाका स्पष्टीकरण

श्रु ५ - ५१ पर सूत्रमें जो पश्चिमविरक्त्य कतवाया गया है उसके सम्बन्धमें हमारे
सम्मुख जो आपत्ति उत्पन्न हुई कि एक तो यह परमांतर द्वारा स्वीकृत अकस्यचित्ते बटित
नहीं होता और दूसरे प्रकृतमें उत्पन्न कोई फल नहीं दिखाई देता। इन्हीं आपत्तियोंके दूर करनेके
लिये सूत्रमें प्राप्त पाठ रखकर भी आनुवादमें हमने उस पाठका संशोधन सुझाया है। तथापि एक
तथ्यसे बीजगणित द्वारा सूत्रमें दिया हुआ गणित सिद्ध भी हो सकता है। जैसे —

$$\text{मागको, बीजगणित} = ५ \text{ मिथ्याप्रतिपादि} = ७, \text{ सिद्धदेवसपादि} = ४; ५ = ५ - ४$$

$$\text{अब यदि क जगत्तथादि है, अतएव — } ५ + १ = ६; ५ - १ = ४$$

अब मूख पाठानुसार—

$$\frac{k'}{k + \frac{v}{v}} = \frac{k'}{k + \frac{v - v}{v}} = \frac{k'}{(k - 1) + \frac{k}{v}} = \frac{k'}{k + \frac{k}{v}}$$

$$= k - \frac{k}{v + 1} = k - \frac{k}{v}$$

किन्तु यह उदाहरण सनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक घटने व एक बढ़नेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण अरुसङ्गठित नही बतलाया जा सकता।

११ पाठसम्बन्धी विशेष सूचना

पृ २८८ की पंक्ति ९ में 'वर्ष ओहसि' 'आदिसे छगानर पृ २९० पंक्ति ९ के 'एगवण्णः' तरुका पाठ प्रतियोगों व मूखिणीकी प्रतियोगों निम्न प्रकार है, जो ध्वजा-कर्मकी अन्यत्र पाठ-सम्बन्धितासे कुछ निम्न है। हमने उसे मुद्रणमें अन्यत्रकी सम्बन्धानुसार कुछ हेरफेरसे रख दिया है और उसका कारण भी बही दे दिया है। किन्तु पाठकी सूचनाके लिये यह पूरा पाठ प्रतियोगोंके अनुसार यहाँ दिया जाता है—

परत्वाजे पवर्षः। सवर्षयोर्वी अर्धवर्षसम्माहृतिमवधारकाः। पूर्वं केवर्षं आष पक्षिहीयमां पि। तद्दी उचरि सिप्यहृतिमवधारकाः अर्धवर्षगुणो। की गुणगारो? सगवर्षहारकस्तस अर्धवर्षदिमागो। को पक्षिमागो? पक्षिहीयमां। अहवा पदगुणस्तस अर्धवर्षदिमागो अर्धवर्षगुणसि धुविर्धगुणसि। केतिवमेति। धुविर्धगुणस्तस अर्धवर्षदिमागमेति। की पक्षिमागो? पक्षिहीयस्तस अर्धवर्षदिमागो। उचरि सत्वाय-धयो। पूर्वं ओहसिपवर्षमेति। केवर्षं। अर्धवर्षासिपवर्ष सत्वाये सम्बन्धीया सिप्यहृतिविषयमस्य। अर्धवर्षको अर्धवर्षगुणो। को गुणगारो? सगवर्षहारकस्तस अर्धवर्षदिमागो। को पक्षिमागो? विषयमस्य। अहवा सेवीए अर्धवर्षदिमागो अर्धवर्षगुणसि केतिवमेति। को पक्षिमागो? विषयमस्य विषयो। अहवा वर्णगुणः। सेवी अर्धवर्षगुणो। को गुणगारो? सगवर्षदिमागो। केवर्षमस्यगुणं। को गुण-गारो? विषयमस्य। पक्षमस्यगुणं। को गुणगारो? अर्धवर्षको। कीयो अर्धवर्षगुणो। को गुणगारो? सेवी। सासम्पार्थी मूखीधयो। मवर्षासिपवर्ष सवर्ष योर्वी अर्धवर्षसम्माहृतिमवधारकाः। पूर्वं केवर्षं आष पक्षिहीयमां पि। तद्दी उचरि अर्धवर्षदिमागो सिप्यहृतिविषयमस्य अर्धवर्षगुणः। को गुणगारो? सग-विषयमस्य अर्धवर्षदिमागो। को पक्षिमागो? पक्षिहीयमां। अहवा पदगुणस्तस अर्धवर्षदिमागो अर्ध-वर्षगुणसि धुविर्धगुणसि। केतिवमेति। धुविर्धगुणस्तस अर्धवर्षदिमागमेति। को पक्षि-मागो? पक्षिहीयमां। उचरि सगवर्षासिपवर्षो। सौहृत्मादि आष उचरिमवर्षदिमागो पि सत्वायप्राचक्षुर्ध-वापिष केवर्षं। उचरि परत्वाजं अन्वि तव सत्तगुणद्वयमवधारो। सवर्षे सवर्षं पि अन्वि एवप-द्यो।

शुद्धिपत्र



(पुस्तक १)

१४ पंक्ति अक्षर

১২৬

६७ १६ गलाघनगरकी टांगल और निर्मल घनछ, निमल और नानाप्रकरकी विनयसे
विनयसे

१८८ ४ उपदेशारम्भम् उपदेशारम्भम्

२०५ २५ प्रका— X

२९ इसलिये शब्द— तो फिर

५५१ १ वदप्रतिपातः वदप्रतिपातः

३४५ < -संस्थापाम्यूनवया -संस्थापाम्यूनवया

२१ संज्ञापदे व्युत्पन्न नहीं है, संज्ञावरूप है,

(पुस्तक २)

४३३ २८ आहार, मय और मैथुन मय, मैथुन और परिम्य

५१७ ४ एष्येव छतेस्ता, मायेव तेऽ एष्य-मायेहिं छतेस्तामो,
पम्म-सुअयेस्तामो

१५ द्रव्यसे छहों केस्यारं, माक्से ठेज, द्रव्य बीर माक्से छहों केस्यारं,
पप बीर द्रव्यकेस्यारं,

(पृष्ठ ३)

९ १ कवयोपः प्यविशोपः

१२ नवशेष नविशेष

१५ २ कटप-वज्रपरीच कटप-वज्रपरीच

१४ कटक, कच्छकसादीप कटक (कटक) कच्छक (सादीप) व दीप

१५ ३-४ वेचद्वयव्यतिरिक्त

१३ मोक्षसामग्र्यवन्त मोक्षसामग्र्यवान्त

१५ १४ अग्नेदद्यात्ततः अग्नेदद्यात्ततः

१८ १ तस्मिन् तस्य तस्मिन्

२३ २८ पुनःप्रेषण पत्रप्रेषण

१७	१	जसोबेया	जसोबेया

२८ ● पश्चिमि पश्चिमि

॥ ८ अथवा ८ अथवा ८

पृष्ठ पंक्ति अष्टादश

- ॥ १३ व्याख्यान
३० २३ दत्तप्रवक्तृ
३२ १० कोटबेण
॥ ३० कोटयोके समान
३३ २९ धनपमाप्नो
३४ ३ छिन्नावसिद्धं
३५ ३० बेसद्
३८ २ मेहासमाहो
॥ १३ मी हो.. ... चाहिये,
३९ ५ सहिय
४१ ५ असंखेख
५१ १४ क-ख (मिप्याहृदि)
८८ ३ विरहाय पु कमेज
८९ ३ पमससंज्ञा यं
११२ ३ वसगुणमुपसिधा
१२३ ३ अ
१३५ ७ असंखेखदि
१५७ २७ जिनविम्व
१७६ १३ जगभ्रेणी
१७६ २२ $\frac{१०४८५७३}{१२३}$
१९० सम्बन्धीकरवापि
२०७ ३ सिमन्तहारकाका
२१७ ३ पवित्रिय
१७१ १ ताप
२५१ ११ गुणिय
२५७ २२ २४ पहां बबकको .. स्पष्ट है
२६० १० मनुसर्वायं
२६२ ४ असंखेखस
२६३ ८ पवित्रियदि
॥ पाठेसु
२६४ ९ के
२८१ १ सासवादीयं
३८७ ५ असंखसम्माहृदियो

शुद्ध

- व्याख्यान
दत्तप्रवक्तृ
कोटबेण
य कुटव (कुटे) से
धनपमाप्नो
छिन्नावसिद्धं
बेसद्
मेहासमाहो
ही है, ऐसा बसद् अप्रव नहीं करना चाहिये,
सुहिय
असंखेख
क-ख (मिप्याहृदि)
विरहायपुक्रमेज
पमससंज्ञायं
वसगुणमुपसिधा
अ
असंखेखदि
जिन और जिनविम्व
जगभ्रेणी
 $\frac{१०४८५७३}{१२३}$
सम्बन्धीकरवापि
सि मन्तहारकाका
पवित्रिय
ताप
गुणिय
x
मनुसर्वायं
असंखेखस
पवित्रियदि
पाठेसु
के
सासवादीयं
असंखसम्माहृदियो

शुद्धिपत्र

(पुस्तक १)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१६	नानाप्रकारकी ठग्यज और निर्मळ बबज, निर्मळ और नानाप्रकारकी निनयसे	निनयसे
१८८	४	अपदेष्टव्यम्	अपदेष्टव्यम्
२०५	२५	शुद्ध —	X
"	२९	इसलिये	शुद्धा — तो फिर
२५१	१	तत्प्रतिष्ठाता	तत्प्रतिष्ठाता
३४५	८	-सम्तापान्मपूनतया	-सम्तापान्मपूनतया
"	२६	संतापसे म्पून नहीं है,	सम्तापरूप है,

(पुस्तक २)

४३३	२८	बाह्य, मय और मैथुन	मय, मैथुन और परिग्रह
५१७	४	इत्येव छठेस्ता, मायेव तेज पम्प-सुखयेस्तामो	इत्य-मायेहि छठेस्तामो
"	१५	इत्येते छहों केस्पार्, मायेते तेज, पय और छहकेस्पार्,	इत्य और मायेते छहों केस्पार्,

(पुस्तक ३)

९	२	अविरोपः	अविरोपः
"	११	अविरोप	अविरोप
१५	२	कटक-कटक-दीप	कटक-कटक-दीप
"	१४	कटक, कटक-दीप	कटक (कटक) कटक (तापीय) व दीप
१५	३४	केचक्षतिरिक्त	केचक्षतिरिक्त
"	१३	गोभागमद्रम्यन्त	गोभागमद्रम्यन्त
१६	१४	अप्रदेशान्त	अप्रदेशान्त
१८	३	तत्स	तत्स तत्स
२३	२८	पुन्येवा	पुन्येवा
२७	३	असंख्येवा	असंख्येवा
२८	७	पासिदि	पासिदि
"	८	अचदिरिज्जदि	अचदिरिज्जदि

द्वपमाणाणुगमो

पृष्ठ	पंक्ति	अनुसू	शुद्ध
२९०	२	पदपादो	पदपादो
"	१०	पदार्थ	पदार्थ
"	२४	सर्वादिभि	सर्वादिभि
२९१	१४	सम्पद्विभोक्त	सम्पद्विभोक्त
२९२	५	असंख्येयविमात्र	असंख्येयविमात्र
२९६	२६	आर	आर
३२	१	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर
३३	१	आहवेद्विभक्ति	आहवेद्विभक्ति
	११	आहवेद्विभक्ति	आहवेद्विभक्ति
"	२६	प्रमाण	प्रमाण
"	२८	,	"
३७	४	सप्तप-	सप्तप-
"	१	अंतेय	अंतेय
"	११	सप्तपद्विभक्ति	सप्तपद्विभक्ति
"	१९	उस अतीत	आत इए
३११	८	-वर्तमान	-वर्तमान
३१८	९	संख्येय	संख्येय
३३	४	-अस्मत्	-अस्मत्
३५९	११	पुष्प	पुष्प
३६३	५	आहवेद्विभक्ति	आहवेद्विभक्ति
३६७	१	तेहिमपञ्चता ।	तेहिमपञ्चता
३६९	१	आहवेद्विभक्ति	आहवेद्विभक्ति
३८१	२	पञ्चता	पञ्चता
४४०	१	आहवेद्विभक्ति	आहवेद्विभक्ति
४४७	९	पुष्प	पुष्प
४८०	१	सप्तपद्विभक्ति	सप्तपद्विभक्ति



सिरि भगवत पुण्डरीक भूषणसि पर्णीदे

छक्खंडागमे

जीवट्टाण

तस्स

सिरि धीरमेणाहरिय विरइया टीका

धवल

केवलणाशुलोइयछदम्भमणिअिय पवईहि ।

पमिऊण अिय मणिमो दम्भमिओग गणियसार ॥१॥

सपहि चोइसब्द जीवसमासागमरिभत्तमवगदानं सिस्साण वेसिं चेव परिमाण
पडिपोइलहुं भूदबलियाहरियो सुत्तमाह—

दव्वपमाणाणुगमेण धुविहो णिहेसो ओधेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकटित किया है और जो प्रवाहियोंके
द्वारा नहीं जीते जा सके ऐसे त्रिमेन्द्रदेवको मैं (धीरसेन आचार्य) नमस्कार करके गणितकी
जिसमें सुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूँ ॥ १ ॥

विशेषार्थ —द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्रव्यप्रमाणानुगम या संख्याप्रकरण है। यद्यपि
द्रव्य छह हैं फिर भी इस अविच्छरमें गुणस्थानों और मार्गजास्त्रानोंका आश्रय लेकर केवल
जीवद्रव्यकी संख्याका ही प्रकरण किया गया है।

जिन्होंने चौदहों गुणस्थानोंके अस्तित्वको जान लिया है ऐसे शिष्योंको अब इन्होंने
चौदहों गुणस्थानोंके वर्णान् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके परिमाण (संख्या) के ज्ञान करानेके
छिये मुख्यतः आचार्य मार्गका सूत्र कहते हैं—

द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेश
निर्देश ॥ १ ॥

मंगलाचरणम्

पंच परमेष्ठि-भयण

(परम्परगतम्)

सिद्धा बह्वृमला निमुह-पुदी य छह-सम्भत्ता ।

तिहुवण-सिर-सेहरया पसियंतु मबारया सभ्ने ॥ १ ॥

तिहुवण-मवणप्पसरिय-पण्णक्खववोह-फिरण-परिवेढो ।

उरुओ वि अणारवणो अरहत्त-दिवायरो वपत्त ॥ २ ॥

वि-रयण-खम्भ-विष्ठाण्णचारिय-मोह-सेण्ण-सिर-विबहो ।

आहरिय-रत्त पसियठ परिवात्तिय-मविय-खिय-ओओ ॥ ३ ॥

अण्णाययधयारे अणेतपारे मयत-मवियत्ता ।

उरुओओ जेहि कओ पसियतु सया उववत्ताया ॥ ४ ॥

संचारिय-सीलहरा उचारिय-विरयमाद-इस्सीलमरा ।

साह् अयंतु सभ्ने सिव-सुह-वह-संठिया हु विग्गळिय-मया ॥ ५ ॥

अयठ धरसेण-बाहो जेण महाक्कम्म-पयवि-पाहुह-सेओ ।

पुदिसिरेपुदरिओ समप्पिओ पुप्फयंतत्त ॥ ६ ॥



सिरि भगवत पुष्पवत मूदपलि पणीवे

छक्खडागमे

जीवट्ठाण

तस्स

सिरि बीरमेणाइरिय बिरइया टीका

धवला

केवलमाणुजोइयछइम्भमणिजियं पवाईहि ।

गमिरुण विणं मणिमो दम्भणिमोग गणियसार ॥१॥

मपहि बोइसन्ह बीइसमासाप्पमत्तिचमवगदार्ण सिम्भाप तेमिं चेन परिमाण
पडिपोइणहुं मूदपलियाइरियो सुत्तमाइ—

दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिइसो ओघेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकाशित किया है और जो प्रवादियोंके
घात नहीं कीते आ सके ऐसे जिनेन्द्रदेवको मैं (बीरसेन बाबाय) नमस्कार करके गणितकी
विस्मये मुकपता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूँ ॥ १ ॥

विशेषार्थ—द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्रव्यप्रमाणानुगम या संप्रत्ययरूपता है। यद्यपि
द्रव्य छह हैं फिर भी इन व्यक्तिकारमें गुणस्वान्तों और मारीजस्वान्तोंका आश्रय लेकर केवल
बीजद्रव्यकी सत्त्वाका ही प्रकल्प किया गया है।

जिन्होंने बीजहों गुणस्वान्तोंके व्यक्तित्वको ज्ञान किया है ऐसे शिष्योंको अब उन्हीं
बीजहों गुणस्वान्तोंके अर्थात् बीजहों गुणस्वान्तवर्ती जीवोंके परिमाण (सत्त्वा) के ज्ञान करानेके
लिये मूदपलि व्याख्यान भागोका सूत्र कहते हैं—

द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देष्ट दो प्रकारका है, आधनिर्देष्ट और आदेष्ट
निर्देष्ट ॥ १ ॥

द्रवति श्रोत्र्यति अद्रुद्रवत्पर्यायानिति द्रव्यम् । अथवा द्रव्यत श्रोत्र्यते अत्रावि पर्याय इति द्रव्यम् । तं च द्रव्यं दुरिह, जीवद्रव्यं अजीवद्रव्यं चेदि । तस्य जीवद्रव्यस्य लक्षणं पुनर्दे । तं जहा, परगदपंचरगो परगदपचरसा परगददुगघो वरगदप्रदुफासो सुद्रुमो जमुत्ती अगुरुलद्रुमो अर्मोउजपदेमिश्रो अपिदिद्रुसंठाणा चि एव जीवस्य साधारणलक्षणम् । द्रुगर्ग मोत्ता सपरपगाप्रो चि जीवद्रव्यस्य असाधारणलक्षणम् । तत्तं च—

जरसमरूपमग्न जम्बत्तं चेत्यागुगमस्तम् ।

आग्न जग्निमद्रुणं जीवमणिदिष्टाणे ॥ १ ॥

अ त अजीवद्रव्यं तं दुरिह, रूपि अजीवद्रव्यं अरूपि अजीवद्रव्यं चेदि । तस्य अ तं रूपि-अजीवद्रव्यं तस्य लक्षणं पुनर्दे— रूपरसगन्धस्पर्शवन्तः पुनःसाः रूपि अजीवद्रव्यं

जो पर्यायोंका प्राप्त होता है प्राप्त होगा और प्राप्त हुआ है उसे द्रव्य कहते हैं । अथवा जिसके द्वारा पर्याय प्राप्त की जाती है प्राप्त की जायगी और प्राप्त की गई थी उसे द्रव्य कहते हैं । यह द्रव्य दो प्रकारका है जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य । उनमेंसे जीवद्रव्यका लक्षण कहते हैं । यह इसप्रकार है जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है पांच प्रकारके रससे रहित है दो प्रकारके घन्धसे रहित है आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है धूम है अमूर्ति है, अगुरुद्रुम है असेक्यातमेवही है और जिसका कोई संस्कार भर्मात् व्यापार निर्दिष्ट नहीं है वह जीव है । यह जीवका साधारण लक्षण है । भर्मात् यह लक्षण जीवको छोड़कर दूसरे धर्मोंसे अमूर्त द्रव्योंमें भी पाया जाता है इसलिये इसे जीवका साधारण लक्षण कहा है । परंतु ऊर्ध्वगतिस्वभावत्व मोन्मत्त्व और स्वपरप्रकाशकत्व यह जीवका असाधारण लक्षण है । भर्मात् यह लक्षण जीवद्रव्यको छोड़कर दूसरे किसी भी द्रव्यमें नहीं पाया जाता है इसलिये इसे जीवद्रव्यका असाधारण लक्षण कहा है । कहा भी है—

जो रसरहित है रूपरहित है गन्धरहित है अन्यक्त भर्मात् स्पर्शगुणकी व्यक्तिसे रहित है चेत्यागुगयुक्त है शब्दपर्यायसे रहित है जिसका किंगके द्वारा ग्रहण नहीं होता है और जिसका संस्थान जग्निर्दिष्ट है अथात् सब संस्थाओंसे रहित जिसका स्वभाव है उसे जीवद्रव्य जानो ॥ १ ॥

अजीवद्रव्य दो प्रकारका है रूपी अजीवद्रव्य और अरूपी अजीवद्रव्य । उनमें जो रूपी अजीवद्रव्य है उसका लक्षण कहते हैं । रूप रस, गन्ध और स्पर्शसे युक्त पुनःक रूपी

प्रभृदादि । त च रूवि मञ्जीवद्वय छत्रिहं, पुटनि जल छाया चउरिदियविसय-कम्म
कत्तघ-परमाणू चेदि । पुषं च—

पुण्दी मल च छाया चउरिदियविसय-कम्म-परमाणू ।

छत्रिहमेय माणिय पांगउद्वय त्रिणरेहिं ॥ २ ॥

ज तं अरूवि अञ्जीवद्वय त चउठिह, घम्मद्वय अधम्मद्वय आगासद्वय फाल
द्वय चेदि । तस्य घम्मद्वयस्य लक्ष्मण पुषद-ववगदपंचवण्य ववगदपचरस ववगद
दुगध ववगदअट्ठपास जीव-पोगलाण गमगागमगकारण अंसुखेअपदेमिय लोगपमाण
घम्मद्वयं । एव चेव अधम्मद्वय पि, णवरि जीव-पोगलाण एद छिदिदेदु । एव
मागासद्वयं पि, णवरि आगामद्वयमणवपदेसिय सन्नगय ओगाइणलक्ष्मण । एव चेव
फालद्वयं पि, णवरि म परपरिणामहेउ अपदेमिय लोगपदेमपरिमाणं । एदाणि छ

मञ्जीवद्वय हे खेसे शाशवि । यह कपी मञ्जीवद्वय छह प्रकारका है, गृध्रिपी, जल, छाया,
नेत्रके छेककर शेष चार इन्द्रियोंके विषय कमस्कन्ध और परमाणु । कहा भी है—

त्रिनेत्रवेपने पृथिवीं जल छाया नेत्र इन्द्रियके अनिरिक्त शेष चार इन्द्रियोंके
विषय कर्म और परमाणु, इसप्रकार पुत्रलक्ष्य छह प्रकारका कहा है ॥ २ ॥

विशेषार्थ—ऊपर आ पुत्रलक्ष्य छह भेद बतलाये हैं ये उपलक्षणमात्र हैं इसलिये
उपलक्षणसे उस उस जातिके पुत्रयोंस्य उस उस भेदमें ग्रहण हो जाता है । ग्रन्थान्तर्गते जो
पुत्रलक्ष्य स्पष्ट स्पष्ट स्वप्न, स्वप्न-सूक्ष्म सूक्ष्म-सूक्ष्म सूक्ष्म और सूक्ष्म-सूक्ष्म ये छह भेद
गिमाये हैं और उनका व्याख्याता स्पष्टीकरण करनेके लिये उपयुक्त गृध्रिपी आदि छह प्रकार
बतलाये हैं इससे भी यह सिद्ध होता है कि ये गृध्रिपी आदि मात्र उपलक्षणरूपसे लिये
गये हैं ।

अरूपी मञ्जीवद्वय चार प्रकारका है धर्मद्वय अवयवद्वय आकाशद्वय और काल
द्वय । उनमेंसे धर्मद्वयका उल्लेख कहते हैं । जो पांच प्रकारके पणसे रहित है पांच प्रकारके
रससे रहित है दो प्रकारके गन्धसे रहित है पाठ प्रकारके रससे रहित है जीव और
पुत्रलक्ष्ये गमन और आगमनमें साधारण कारण है अलंबयानपदेही है और अलंबयानशके
बराबर है यह धर्मद्वय है । इसीप्रकार अवयवद्वय भी है परन्तु इसकी विशेषता है कि यह
जीव और पुत्रलक्ष्यी स्थितिमें साधारण कारण है । इसीप्रकार आकाशद्वय भी है पर इसकी
विशेषता है कि आकाशद्वय अलंबयानपदेही सपणन और अपणानलक्षणमयाका है । इसीप्रकार

१ वा जी १ १ पुण्दी जल च छाया चउरिदियविसयकम्मपाणा । कम्मपाणा एव कम्मेश
पोमया होति ॥ ववा १

२ आलम्बयानपदेहे एवेद मे दिवा ह देवा । एपाणं एवी एव वे काण्डू अलंबयानानि ॥ ववा तं
२२। गो. जी ५८९

द्व्याणि । एतेषु छसु द्रव्येषु केन द्रव्येण पगद ? अस्त सताभिप्रायद्वारे चोदसमगस-
हावेहि चोदसजीवनमासागमतिच पर्युर्दि जीवद्रव्यस्त तेष पगद । उ कर्षं यद्वदि
चि मणिदे ' मिच्छादिद्वी केवद्विया ' इदि सेसद्व्याणं परिमाणमुज्जिद्वं जीवद्रव्य
परिमाणपरूपयमुचादो जाणिज्जदि जीवद्रव्येणेणेण चेव पगद, न अप्पाद्व्यहि ति ।
प्रमीयन्ते अनेन अर्था इति प्रमाणम् । द्रव्यस्म पमाण द्रव्यपमाणं । एवं तत्पुनरिदसमासे
कीरमाणे द्रव्यादा पमाणस्त भदो दुच्चदि, सहा देवदत्तस्त कपलो चि । एत्थ इयदत्ता
कपलस्मच भदो न, अमेदे चि उप्पत्तगभा इयवमादिसु तत्पुनरिदसमासर्दसनादो । अप्पा
द्व्यादो पमाण केन चि मन्वेण मिध्यं चेव, अप्पाहा विसेसिय विसेसणमाणापुव

आद्यद्रव्य मी हि पर इतनी विशयता है कि आद्यद्रव्य अपने भीर वृत्तरे द्रव्योंके परिणमबमें
साधारण कारण है अर्थात् अर्थात् एकमेवही है अर्थात् आद्यद्रव्यके मितने प्रवृत्त हैं उतने ही
बाह्यणु हैं । इसप्रकार ये छद्म द्रव्य हैं ।

प्रश्न—इन छद्म द्रव्योंमेंसे यहाँ प्रकृतमें किस द्रव्यसे प्रयोजन है अर्थात् किस
द्रव्यके द्वारा प्रकृत नियम कहा जायगा ?

समाधान— सत्यरूपणानुयोगद्वारमें श्रीरहो मागणास्थानोंके द्वारा जिस जीवद्रव्यके
बाह्यो जीवसमासोंके अस्तित्वका निरूपण कर भाये हैं प्रकृतमें उनी जीवद्रव्यसे
प्रयोजन है ।

गदा—यह कैसे जाता ?

समाधान— मिथ्यादि जीव किन्तु हैं इसप्रकार दोष पांच द्रव्योंके परिमाणकी
छाड़कर एक जीवद्रव्यके परिमाणके निरूपण करनेपास खुदस यह जाता जाता है कि प्रकृतमें
एक जीवद्रव्यसे ही प्रयोजन है अन्य द्रव्योंसे नहीं ।

जिसका द्वारा पक्षाय भाये जाने है या जाने जात हैं उसे प्रमाण कहते हैं और द्रव्यके
प्रमाणकी द्रव्यप्रमाण कहते हैं ।

शुद्ध—इसप्रकार द्रव्य प्रमाण इन दोनों पक्षोंम तत्पुनर्य समास करने पर द्रव्यसे
प्रमाणका भेद प्राप्त होता है अर्थात् देवदत्तका कर्मस ।

समाधान— द्रव्यजने कर्मसका जिसप्रकार भेद है प्रकृतमें उसप्रकारका भेद नहीं है
क्योंकि अमेवके रहने पर मी उत्पन्नगन्ध इत्यादि पक्षोंमें तत्पुनर्य समास होता जाता है ।
इसका यह तात्पर्य है कि उत्पन्नगन्ध इत्यादि पक्षोंमें उत्पन्नगन्धः उत्पन्नगन्धः इत्यादि
रूपमें तत्पुनर्य समासके रहने पर मी जिसप्रकार उत्पन्नने गन्धका भेद नहीं होता है उसी
प्रकार यहाँ पर मी द्रव्यम प्रमाणका तत्पुनर्य भेद नहीं समझना चाहिये ।

अथवा द्रव्यम प्रमाण किम् अर्थेभागे भिन्न ही है । यदि द्रव्यसे प्रमाणका कर्षेबिन्
भेद न माना जाय ता द्रव्य और प्रमाणमें विशेष्य-विशेषणभाव नहीं बन सकता है । अथवा

चीदो । अथवा कम्मधारयममासो कादम्बो दम्बमेव पमाण दम्बपमाणमिदि । एत्थ वि
ण दम्बपमाणानमयतण एगच्चं, एत्थ समामावादो । अथवा दुदसमासो कादम्बो ।
त ज्ञा, दम्ब च पमाण च दम्बपमाणमिदि । दुदसमासा अवयवपहाणो वि दम्ब
पमाणान पुच पुच परूवण पावदि । य च सुत्ते पुच पुच दम्ब-पमाणान परूवणा कदा ।
अदि वि समुदयपहाणो दुदसमासो आसइज्जदि तो वि अवयववदिरित्तसमुदायामावादो
अवयवाण चैय परूवणा पावदि । य च सुत्ते अवयवाण समूहस्स वा परूवणा कदा ।
तदो ण दुदसमामो कीरदि । ति ? ण एस दोसा, दम्बम्भ पमाणे परूविद दम्ब पि
परूविदमेव । कुदो ? दम्बवदिरित्तपमाणामावादा । तिराल्लगोयरागतयज्जपामपणाणा
जहवुत्ती दन्वं । पुच च—

नयोपनयैकान्तानां त्रिकान्तां समुच्चय ।

अविभ्रात्मारसम्प्रत्यो दम्बमेवमेवञ्चा ॥ ३ ॥

मरुताण दम्बस्फेको पञ्चामो, तदो ण टोण्डमगतमिदि । पुच च—

द्रव्य भीर प्रमाण इन दोनों पक्षोंमें द्रव्यमेव प्रमाण दम्बपमाण अथान् द्रव्य ही प्रमाण
द्रव्यप्रमाण है इसप्रकार कम्मधारय समास करना चाहिये । वहाँ पर भी द्रव्य भीर
प्रमाण इन दोनोंमें एकान्तमे एकत्थ अथान् अमेव नहीं है क्योंकि सर्वथा एकत्वमें अथान्
अमेवमें सामान ही नहीं हो सकता है । अथवा द्रव्य भीर प्रमाण इन दोनों पक्षोंमें द्रव्यसमाम
करना चाहिये । यह हमप्रकार है द्रव्य भीर प्रमाण द्रव्यप्रमाण ।

प्रका—द्रव्यसमाम अवयवप्रमाण होता है इसलिये द्रव्य भीर प्रमाणका पृथक् पृथक्
प्रकरण प्राप्त हो जाता है । परंतु सूत्रमें द्रव्य भीर प्रमाणका पृथक् पृथक् कथन नहीं किया
है । यद्यपि समुदायप्रमाण भी द्रव्यसमाम हो सकता है तो भी अवयवोंको छोड़कर समुदाय
पाया नहीं जाता है इसलिये समुदायप्रमाण द्रव्यसमासके करन पर भी अवयवोंकी ही प्रक
पणा प्राप्त होती है । परंतु सूत्रमें अवयवोंकी अथवा समूहकी प्रकपणा नहीं की गई है । इस
लिये द्रव्य भीर प्रमाण इन दोनों पक्षोंमें द्रव्यसमास नहीं किया जा सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, द्रव्यके प्रमाणके प्रकरण कर देने पर
द्रव्यका भी प्रकरण हो ही जाता है, क्योंकि द्रव्यको छोड़कर उसका प्रमाण नहीं पाया जाता है ।

त्रिकालगोचर अमन्त पयायोंकी परस्पर अदृशगुप्ति द्रव्य है । कहा भी है—

ओ नैगमादि नय भार उनही शाखा उपशाखारूप उपनयोंके विषयभूत त्रिकालमयी
पयायोंका अमिष संक्षेपरूप समुदाय है उसे द्रव्य कहते हैं । यह द्रव्य कर्षबिन् एकत्र
भीर कथबिन् अनेकरूप है ॥ ३ ॥

द्रव्यकी एक पयाय सन्धान है इसलिये द्रव्य भीर प्रमाणमें एकत्थ अथान् सर्वथा
अमेव नहीं है । कहा भी है—

पदादीपिगे अन्त्यपञ्चमा वयजपञ्चमा चानि ।

तीर्थागदधूदा तावन्मि सं इति दम्भं ॥ ४ ॥

एव तार्थ भेदो मगदु पाम, किंतु दम्भगुणपरुषतादौरेषेव दम्भस्त परुषणा भवति, अन्वया दम्भपरुषणोचामामापादो । उचं च—

नातामनामप्रमदत्तमेकामतामप्रमदत्तं नाना ।

अनादिमावाचन वस्तु पदत्तं कस्मैश्च वाग्याप्यमनन्तरूपम् ॥ ५ ॥

एव दम्भगुणे पमाणे परुषिदे दम्भ परुषिदे च । एव सुचं दम्भपमाणाव परुषणा प्रतिषेति नृदगमामो मि न विरुज्जदे । सेससमासाणमेतच्च समसो नृत्ति । त सम्ये ि गमाणा फीपया ? छप्पेव भवति । उचं च—

वन्नीदम्भपीमागो दम्भस्तत्पुणो विगुः ।

वर्त्मवारय इमेते समासाः पद प्रकीर्तिता ॥ ६ ॥

किमिदि इरेसे संमसो नृत्ति ? एतच्च उदरमामापादो । को तेसिमत्तो ?

एक दम्भमें अवति, समागत और यदि दम्भमें वर्तमान पर्यायरूप जितने वर्तमान और व्यञ्जनपथाय ई तत्तमाव नह दम्भ होता है ॥ ४ ॥

वचि इतमकार दम्भ और पमाणमें मेह एका भावे, फिर भी दम्भके गुणोंकी प्रकृषणाके द्वारा ही दम्भकी प्रकृषणा हो सकती है, क्योंकि दम्भके गुणोंकी प्रकृषणाके बिना दम्भप्रकृषणाका और उपाय नहीं है । क्या भी है—

अने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा वाग्यावरणताको न छोड़ता हुआ वह दम्भ एक ई और अन्त्यपरुषमे परुषमेको नहीं छोड़ता हुआ वह अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा वाग्यावरणताका नहीं जाती है ॥ ५ ॥

अन्य दम्भके गुणरूप प्रमाणके प्रकृषण कर देने पर दम्भका कथन हो ही जाता है । इतमकार गुणमें दम्भ और पमाणकी प्रकृषणा ही ही अवयव दम्भसमास की विशेषज्ञे प्रमाण समाप्ता नहीं है । इतमकार तत्पुण्य कर्मधारय और दम्भ समासको छोड़कर दोन समासोंकी पदा समाप्ता नहीं है ।

प्रत्यय—ये सपूर्व समास कितने हैं ?

समाधान—ये समास छह ही हैं । क्या भी है—

नृत्तिदि अन्त्यपीमाव, दम्भ तत्पुण्य विगु और कर्मधारय इतमकार के छह समास कहे गये हैं ॥ ६ ॥

प्रत्यय—यहां दम्भप्रमाण इस पदमें वपर्युक्त तीन समासोंको छोड़कर दूसरे समासोंकी समाप्ता नहीं है ?

१ दो भी ५ २ द. द. १ ३ ३.

बहिर्यो बहुभूति पर तत्पुरुषस्य च ।

पूर्वमप्ययीमावस्य शब्दस्य तु पदे पदे ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वकस्तत्पुरुषो द्विगुः समासः, यथा पञ्चनदमित्यादि । एकाधिकरण तत्पुरुष कर्मधारय इति । एतच्च चोदगो मन्त्रदि—सखा एका चेन्न, एगवदिरिचदुनादीनां ममावाधो । सा च एकसखा सञ्चपदस्याप्यमत्ति चि आणिकदि, अण्णहा तेसिमत्ति चाणुववचीहो । तदो किं चीए संखापरूत्रणाए इदि । एतच्च परिहारो घुञ्चदे—सयल पयत्पाण जदि एका चेन्न सखा भियमेण मन्त्रदि तो सञ्चपदस्याण एकादो अन्त्रदि रिचाप एगच्च पसज्जेज्ज । तथा च एगद्वदसमे सयलद्वदसण, एगद्वदिभासे सयलद्वदिभासो, एगद्वद्वचपी सयलद्वद्वचपी जाएज्ज । ण च एवं, तथा अदसणादो । तम्हा पदसमेदो इतिष्ठदन्वो । सते तन्मेदे एतच्च द्विपसम्हाए मेदो मन्त्रदि चेन्न, भिण्णद्वद्विप संखाणामंगचविरोधादो । होदु एकसखा चेन्न बहुवा, न तदो अण्मा सखा चे ण,

समाधान—क्योंकि यहां पर उक्त अर्थ घटित नहीं होता है इसलिये अन्य समासोंका प्रहण नहीं किया ।

शुक्रा—इन छहों समासोंका क्या अर्थ है ?

समाधान—अन्य अर्थप्रधान बहुभूति समास है । उक्त पदार्थप्रधान तत्पुरुष समास है । अन्ययीमाव समासमें पूर्व पदार्थप्रधान है । द्रष्टु समासकी प्रत्येक पदमें प्रधानता रहती है ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वक तत्पुरुषको द्विगु समास कहते हैं जैसे पञ्चनद इत्यादि । अहा पर वा पदार्थोंका एक आधार दिखाया जाता है वेसे तत्पुरुषको कर्मधारय समास कहते हैं ।

शुक्रा—यहां पर शङ्काकर कहता है कि संख्या एकरूप ही है, क्योंकि एकको छत्रककर से आदिक सख्याए नहीं पार जाती हैं । और यह एकरूप संख्या संपूर्ण पदार्थोंमें रहती है वेसा माना जाता है । यदि वेसा न माना जाय तो इन संपूर्ण पदार्थोंका अस्तित्व ही नहीं बन सकता है इसलिये यहां पर इस संख्याकी प्ररूपणासे क्या प्रयोजन है ?

समाधान—अग्रे उपयुक्त शङ्काका परिहार करते हैं । संपूर्ण पदार्थोंके नियमसे एक ही संख्या होती है यदि वेसा मान लिया जाय तो व संपूर्ण पदार्थ एकरूप संख्यासे अभिन्न हो जात हैं इसलिये उन सबको एकरूपका प्रमाण न्य जाता है । भार वेसा मान लेने पर एक पदार्थका ध्यान होने पर संपूर्ण पदार्थोंका ध्यान एक पदार्थके विनाश होने पर संपूर्ण पदार्थोंका विनाश और एक पदार्थकी उत्पत्ति होने पर संपूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होने लगोगी । परन्तु वेसा है नहीं क्योंकि वेसा बेम्भा नहीं जाता है इसलिये पदार्थोंमें भेद मान लेना चाहिये । इसप्रकार पदार्थोंमें भेदके सिद्ध हो जाने पर उनमें रहनेवाली समतामें भेद सिद्ध हो ही जाता है क्योंकि, अनेक पदार्थोंमें रहनेवाली संख्याओंमें एकरूप अथवा भेद माननेमें विरोध जाता है ।

शुक्रा—एक यह संख्या ही अनेक रूप हो जाओ परन्तु इससे विप्र संख्या नहीं

एकिस्ते बहुच-विरोधादौ । एवञ्च पट्टि समाश्रयणेन एवञ्चमात्राणां दृष्ट-उत्त-काल
 भावमेवेन आश्रयसुबगदाए एकसखाए ण बहुचं विरुद्धदे वेज्जदि एवं तो एवसंखादा
 कर्त्तव्ये मेदा दुवाविस्साए मेदो किमिदि ण इच्छिस्सदे । कईं मेदो च, दृष्टादिमेद
 पञ्चस; तदो चेव दुग्गावो समाश्रयसंखादो । दोग्गमेवञ्च दृष्टादिमणपविक्खादो ।
 पञ्चसद्विपचयं विवक्षित्ते एवसंखादां सेसेकसखा वदित्तिपि आणस । वेगमणए विव
 क्षित्ते दुवादिमावा । एत्थ पुञ्च वेगमणपविक्खादो संखामेदो गहेद्वो । ययावत्सुव
 बोधः अनुगम, केवळि भुतकेवळिमिरनुगतानुरूपेणावगमो वा । द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्य
 प्रमाणावगमो अनुगमः द्रव्यप्रमाणानुगम, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया ।
 दुविहो भिद्दा, सोदाराण अहा भिच्छया होदि तहा देसो भिद्देसो । दुतीरिपासुप्पिना
 पारि जाता है ।

समाधान—देखा नहीं है क्योंकि एक संख्या बहुतकर माननेमें विरोध
 भ्रता है ।

प्रश्ना—एक यह संख्या एकत्रके प्रति समान होनेका एकक है, और द्रव्य क्षेत्र
 काल तथा भावके मेदसे नात्कार्य है, इसलिये एक संख्यामें बहुत विरोधको प्राप्त नहीं
 होता है ।

प्रतिपक्ष—यदि देखा है तो एक संख्यासे कर्त्तव्य मित्र होनेके कारण दो भावि
 संख्याओंका वससे मेद क्यों नहीं मान लेते हो ?

प्रश्ना—एक संख्यासे दो भावि संख्याओंका मेद कैसे है ?

समाधान—द्रव्य क्षेत्र यदि मेदोंकी अपेक्षासे दो भावि संख्याओंका मेद है और
 इसलिये संख्याओंमें दो भावि रूपता बन जाती है, क्योंकि द्रव्य भावि मेदोंके साथ दो भावि
 संख्याएँ मेदोंकी समानता देखी जाती है ।

प्रत्यार्थिकमणकी विवक्षासे एक और भावा इव दोनोंमें एकत्र है । पर्याप्तार्थिक
 मणकी विवक्षा होने पर विवक्षित एक संख्यासे दोएक संख्याएँ भिन्न हैं । इसलिये वसमें
 नागत्व है । तथा नैगमनयकी विवक्षा होने पर द्वित्व भावि भाव बन जाता है । इसप्रकार
 (संख्याके कर्त्तव्य एकक और कर्त्तव्य नागत्व सिद्ध हो जाने पर उनमेंसे) यहाँ प्रकृतमें
 तो नैगमनयकी विवक्षासे संख्यामेद ही ग्रहण करना चाहिये ।

बहुतेक अनुकय भावको अनुगम कहते हैं । मयवा केवळी और भुतकेवळीकोके द्वारा
 परंपरासे जाये हुए अनुकय भावको अनुगम कहते हैं । द्रव्यगत प्रमाणके मयवा द्रव्य और
 प्रमाणक अनुगमको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं । वससे मयवा द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा
 इसप्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम परके साथ सूत्रमें जो तृतीया विमर्श जोड़ी है वह निमित्तकय
 कर्मि जानना चाहिये ।

निर्दिष्ट दो प्रकारका है । जिस प्रकारके कथन करनेसे धोताओंको पर्याप्तके विषयमें

अतिशय कथन वा निर्देशः । म द्विविधः द्विप्रकार गरीम्भमायम्प्रकृतिशीलधर्माणां निर्देश इव । ओषेण, ओष इ-इ समूहः सपातः समुद्रः, पिण्ड अवत्रप अमिन्न सामान्यमिति पर्यायश्रुत्या । गत्यादिमार्गेणस्मानरविशपितानां चतुर्दशगुणम्यानानां प्रमाणप्रवणमोक्षनिर्देशः । चतुर्दशगुणस्मानविशिष्टसकलजीवराशिरूपणादादेशः किम् स्यादिति चेन्न, सर्वजीवरागिनिरूपण प्रति प्रतिज्ञामावात् । क प्रतिज्ञाम्याधार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा । सा कुतोऽनसीयत इति चेत्, 'एतो इमेति ओइमण् जीवसमासाण' इत्यादिशब्दादवसीयत । सर्वजीवराशिरूपतिरिक्तचतुर्दशगुण स्थानानाममात्राचयापि सर्वजीवराशिरेव निरूपितस्स्यादिति चेन्न, जीवसमुदायस्या

निश्चय होता है उस प्रकारके कथन करनेको निर्देश कहते हैं । मथवा कुनीच मथान् सबधा पक्खन्तवाक्के प्रस्थापक यान्णिइयोको उल्लेखन करके अतिशयरूप कथन करनेको निर्देश कहते हैं । वह निर्देश शरीरके स्वभाव रूप प्रकृति शील मार धर्मक निर्देशके समान हो प्रकारका है । उनमेंसे एक ओषनिर्देश है । ओष इ-इ समूह संपात समुद्र, पिण्ड अमिन्न, अमिन्न और सामान्य ये सब पयायपाणी शब्द हैं । इस आधारनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार हुआ कि गत्यादि मार्गणाभ्यानोंमें विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुण स्थानोंके मथान् चौदहों गुणम्यानयतीं जीवोंके प्रमाणका प्रवण करना ओषनिर्देश है ।

प्रश्ना — यह ओषनिर्देश आद्यों गुणस्थानादिनिष्ठ संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणका प्रवण करनेवाला होनेसे आवेशनिर्देश क्यों नहीं कहलाता है ?

समाधान — नहीं क्योंकि, ओषनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके निरूपणकी प्रतिज्ञा नहीं की गई है ।

प्रश्ना — तो फिर आधारित ओषनिर्देशकी किस श्रवणमें प्रतिज्ञा की है ?

समाधान — आधारित ओषनिर्देशस जीवसमासोंके (गुणस्थानोंके) प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है ।

प्रश्ना — आधारित ओषनिर्देशस जीवसमासोंके प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — एतो इमेति ओइमण् जीवसमासाण इत्यादि सूत्रन जाना जाता है कि ओषनिर्देशमें जीवसमासोंके श्रवणमें आधारित प्रतिज्ञा है ।

प्रश्ना — संपूर्ण जीवराशिके छोड़कर चौदह गुणस्थान पाये नहीं जाते हैं इसलिये चौदह गुणस्थानोंके निरूपण करने पर भी तो संपूर्ण जीवराशिका ही निरूपण हो जाता है ?

समाधान — नहीं क्योंकि ओषनिर्देशके निरूपणमें समस्त जीवसमुदाय अधिष रित है ।

विशेषाध — यद्यपि गुणस्थानोंमें संपूर्ण जीवराशिका अन्तभाव हो जाता है फिर भी एक जीवके भी एक पयायमें संपूर्ण गुणस्थान समस्त हैं इसलिये यह कहा गया है कि ओषनिर्देशमें

एकित्से बहुच-विराभादौ । एगच पडि समाजचणेण एगचमावज्जाए दब्ब-सेच-कल
 मानमेदेण बाणचसुबगदाए एकसंखाए ण बहुच विरुज्जमे चेन्नदि एवं तो एगसंखादो
 कबधि मेदा दुवादिसंखाए भेदो किमिदि ण इच्छिअदे । कइं भेदो वे, दब्बादिभंदं
 पडुअ; तदो वेव दुग्गावो समाजचंदसभादो । दोहमेगच दब्बद्वियणपविक्खादा ।
 पन्नाद्वियणपवे विक्खित्तेदे एकसंखादो सेकेकसंखा यदिरित्तेचि बाणच । नेगमणए विक्
 कित्तेदे दुवादिसंखा । एत्थ पुण नेगमणपविक्खादो संखाभदो गहदब्बो । यथानस्सव
 बाधः अनुगमः, कसिं भुतकसिंमिरनुगतानुरूपेणावगमो वा । द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्य
 प्रमाणयोर्वा अनुगमः द्रव्यप्रमाणानुगमः, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया ।
 इतिहो गिरेसो, सोदायण अहा मिच्छयो होदि तहा देसो गिरेसो । ह्यवीर्यपासपिबनः
 पारं जाती है ?

समाधान—येसा नहीं है क्योंकि, एक संख्याको बहुतकर माननेमें विरोध
 प्यता है ।

संज्ञा—एक यह संज्ञा एकत्वके प्रति समान होनेसे एकरूप है और द्रव्य सेव
 कल तथा मात्रके भेदसे नामाकर है, इसलिये एक संख्यामें बहुत विरोधको प्राप्त नहीं
 होता है ?

प्रतिश्रुत्य—यदि ऐसा है तो एक संख्यासे कथंचित् मिथ होनेसे कारण हो नाहि
 संख्याभेदा उससे भेद क्यों नहीं मान लेते हो ?

संज्ञा—एक संख्यासे दो नाहि संख्याभेदा भेद कैसे है ?

समाधान—द्रव्य सेव यदि भेदोंकी अपेक्षासे दो नाहि संख्याभेदा भेद है और
 इसीलिये संख्याभेदोंमें दो नाहि रूपना बन जाती है, क्योंकि द्रव्य यदि भेदोंके साथ दो नाहि
 संख्याकर भेदोंकी समानता देखी जाती है ।

द्रव्यापिच्छनचक्षु विवक्षासे एक और नामा इन दोनोंमें एकत्व है । पर्यापार्यिक
 गच्छी विवक्षा होने पर विवक्षित एक संख्यासे दो एक संख्याय विवक्षित हैं इसलिये उनमें
 नामात्व है । तथा नेगमणपक्षी विवक्षा होने पर द्वित्व यदि मान बन जाता है । इसप्रकार
 (संख्याके कथंचित् एकरूप और कथंचित् नामाकर सिद्ध हो जाने पर उनमेंसे) यहाँ प्रकृतमें
 तो नेगमणपक्षी विवक्षासे संख्याभेद ही प्रकृत करना चाहिये ।

अनुके अनुकर आनको अनुगम कहते हैं । मयरा केपछी और भुतकेकसिंयोंके द्वारा
 परंपरासे आये हुए अनुकर आनको अनुगम कहते हैं । द्रव्यगत प्रमाणके अथवा द्रव्य और
 प्रमाणके अनुगमको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं । उससे अर्थात् द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा
 इसप्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम पक्षके साथ दूसरे जो तृतीया निमित्त जोड़ी है यह निमित्तरूप
 अर्थमें जानना चाहिये ।

निर्दिष्ट दो प्रकारका है । जिस प्रकारके कथन करनेसे भोताभोको परार्थके विषयमें

पुञ्जामतरेण 'ओमेण मिच्छाद्विपमाणपरायणता' इति किञ्च युषदे ? न, अस्य स्वकर्तृत्वानिराकरणद्वारेणाप्तकर्तृत्वप्रतिपादनफलत्वात् । तदपि किं फलमिति चेन्न, 'वक्तृप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात् वचनस्यास्य प्रामाण्यप्रदर्शनफलम् । भूतवत्यादीनामाचार्याणां क्व व्यापार इति चेन्न, तेषां व्याप्यतात्त्वाम्युपगमात् । अणता इति पमाण युच, एव युचे संखेज्जासखेज्जाण पठिणियत्ती । तं च अथतमनेयविधि । तं ब्रह्म—

णाम दृष्टणा दधि ससद गणणापदधियमणन ।

एगो उमपादेसो नित्यागे सध मावो य ॥ ८ ॥

तस्य णामाणंत ब्रिवाजीवमिस्तद्वरस्त कारमणिरवन्मा सण्णा अणता इति । अ तं दृष्टणाणंत णाम त कट्टकम्मसु वा चित्तकम्मसु वा पोत्तकम्मसु वा लेप्पकम्मसु वा लेण

श्रुका— कितने हैं इसप्रकारके प्रश्नके बिना ही ओषनिर्देशसे मिथ्याएदि जीय द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त हैं इसप्रकारका सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं क्योंकि अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तके कर्तृत्वका प्रतिपादन करना कितने हैं इस पदके सूत्रमें देनेका फल है ।

श्रुका—अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तकर्तृत्वके प्रतिपादन करनेका भी क्या फल है ?

समाधान—नहीं क्योंकि यथाकी प्रमाणतासे यक्षनोंमें प्रमाणता आती है इस व्यापके अनुसार अनन्त हैं इस यक्षनकी प्रमाणता विधाना इसका फल है ।

श्रुका—अब कि ओमेण मिच्छाद्विपमाण इत्यादि यक्षनके कर्ता आप्त मिश्र हो जाते हैं तो फिर मूलबुद्धि याकि व्याप्योक्त व्यापार कहाँ पर होता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि उनको आप्तके यक्षनोंका व्याप्यता स्वीकार किया है इसलिये आप्तक यक्षनोंके व्याप्यता करनेमें उनका व्यापार होता है ।

सूत्रमें दिये गये अर्थात् इस पदके छार मिथ्याएदि जीवोंका प्रमाण कहा गया है, मिथ्याएदि जीय अनन्त हैं इसप्रकार कथन करने पर संन्यात और असंन्यातकी निवृत्ति हो जाती है । वह अनन्त अनेक प्रकारका है जो इसप्रकार है—

नामानन्त स्थापनानन्त द्रव्यानन्त शादपतानन्त गद्यनानन्त अपरोक्षिज्ञानन्त पक्षानन्त उमयानन्त विस्तारानन्त सर्वाणन्त भीर भावानन्त इसप्रकार अनन्तके व्याप्य मेरु हैं ॥ ८ ॥

उनमेंसे कारणके बिना ही जीव अजीव आर मिश्र द्रव्यकी अनन्त ऐसी संज्ञा करना नाम अनन्त है ।

काष्ठकम विवकम पुस्तकम लेप्यकम, छेनकम दौलकम भित्तिकम गृहकम

१ तीनविधसंज्ञेनद्रादितः०० अक्षरकमेव वसिष्ठवचना०० विद्यादितो वचनितेनेदि निद्रव्यादि

विवक्षितत्वात् । आदेशेण, आदेशः । पृथग्भावाः पृथक्करण विमञ्जन विमञ्जीकरणमित्यादयः
पर्यायशब्दाः । यत्पादिबिभिक्षधतुर्दशधीवसमासप्ररूपमादेशः । 'ब्रह्म उरेशो तदा
धिरसो' इति कद् आदस यर्ष कादून ओषपरूपणह्रस्वचरसुच मणदि—

ओषण मिच्छादृष्टी दव्यपमाणेण केवढिया, अणता' ॥ २ ॥

ओषमह्वारणामावे ओषादेसपरूपासु कद्मेसा परूपासि सोदारस्त धिर्ष मा
पुलिस्सदि पि तथिधस्स धिरसुप्पायणहु ओषेणेति मभिर्द । मिच्छादिद्विगहणामावे
कद्मस्म जीवसमासस्स इमा परूपा इति सोदारस्त संदेहो हाज्ज, तस्स संदेहुप्पासि-
धिनारणहु मिच्छादिद्विगहण कद् । दव्यपमाणेअपि अमभिय केवढिया इति सामण्येण
पुच्छिदे इमा पुच्छा कि दव्यविसया, किं खेधविसया, किं कालविसया, किं वा माव
विसया, इति संदेहा होअ; तथिनारणहु दव्यपमाणगहण कद् । केवढिया इति पुच्छा ।

संपूर्ण जीवपादिके कथन करनेकी विवक्षा नहीं की गई है ।

आदेशसे कथन करनेको आदेशनिर्देश कहते हैं । आदेश पृथग्भावा पृथक्करण
विमञ्जन विमञ्जीकरण इत्यादिक पर्यायवाची शब्द हैं । आदेशनिर्देशका प्रथममें स्पष्टीकरण
इसप्रकार है कि गति अथि मागणाय्मेके भेदसे भेदको प्राप्त हुए खीह गुणस्थावाका
प्ररूपण करना आदेशनिर्देश है ।

उद्देशसे अनुसार निर्देश करना चाहिये ऐसा समझकर आदेशको स्थापित करके
पहले ओषनिर्देशका प्ररूपण करनेके लिये आयेका सूत्र कहते हैं—

ओषमे मिष्पादृष्टि जीन द्रव्यप्रमाणनी अपेसा कित्ते ह, अनन्त हैं ॥ २ ॥

ओष शब्दके उच्चारण नहीं करने पर ओष और आदेश प्ररूपणार्थोंमेंसे यह कौनसी
प्ररूपणा है इसप्रकार ओताकर चित्त मत पुछे, इसलिये उसके चित्तकी स्थिरता उत्पन्न
करनेके लिये सूत्रमें ओषसे यह पद कहा है । सूत्रमें मिष्पादृष्टि पदके ग्रहण नहीं करने पर
कौनसे जीवसमासकी यह प्ररूपणा है इसप्रकार ओताकर संदेह हो सकता है इसलिये
उसकी सम्यक्त्वोत्पत्तिके निवारण करनेके लिये सूत्रमें मिष्पादृष्टि पदका ग्रहण किया है । सूत्रमें
द्रव्यप्रमाणसे इस पदको न कहकर कित्ते हैं इसप्रकार सामान्यसे पूछने पर यह पृच्छा
क्या द्रव्यवियवक है, क्या क्षेत्रवियवक है क्या कालवियवक है अथवा क्या मासवियवक है
इसप्रकारका सम्यक् हो सकता है अतः उस सम्यक्के निवारणाय सूत्रमें द्रव्यप्रमाण पदको
ग्रहण किया है । कित्ते हैं यह पद प्ररूपण है ।

पगमानां अवगमिष्यता वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेन्न, शक्तिरूपो पयोगस्य भुतावरणक्षमापक्षमलक्षणस्य साम्प्रत सत्रासत्वात् । आगमादणो णोआगमो । अत एव आगमदः द्रव्यावर्तं त विविह, साधुगसरीरद्रव्याणव मवि यद्रव्याणव तद्रविरिच द्रव्याणव वेदि । तस्य साधुगसरीरद्रव्याणव अणवपादुद्रव्याणवसरारं विहालत्राद । कथ अणवपादुद्रादो आधारधमेण वदिरिचस्स सरीरस्स अर्णतववएस । ? ण, असितद धावदि परसुमद धावदि इत्येवमादिभु तद्रो वदिरिचस्स वि आधारपुरुषस्स आधेयवदेसदम णादो । मप्रतु वदमणमिह आधारस्स आधारयोवयो णादीदणामदकालेसु चि ? ण णस दोतो, णह मविस्तरज्जमिह वि पुरिसे राया आग-उदि चि ववहारदमणादो । पज्जयपज्जइणो

आगमद्रव्याणव कहते हैं ।

प्रेक्षा—जिनको पहले पान था किंतु पक्षवत् विस्मृत हो गया है, अथवा भूट गया है अथवा ओ माध्यमकासमें जानेगे उन्हें भी द्रव्यागम यह संज्ञा क्यों न ली जाय ?

समाधान—नहीं क्योंकि, अतन्नायत्य कर्मका सयोपशम है समग्र जिसका ऐसा शक्तिरूप उपयोग वर्तमानमें इन जीवोंके नहीं पाया जाता है, इसलिये उन्हें द्रव्यागम यह संज्ञा नहीं प्राप्त हो सकती है ।

आगमसे अणवो नोभागम कहते हैं । यह नोभागम द्रव्यामन्त तीन प्रकारका है बापनशरीर नोभागमद्रव्याणव मय नोभागमद्रव्यामन्त और तद्रवतिरिच नोभागमद्रव्याणव । उनमेंसे अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले के हीनो काजोंमें होनेवाले शरीरको बापनशरीर नोभागमद्रव्याणव कहते हैं ।

प्रेक्षा—अतन्तविषयक शास्त्र अर्थात् अनन्तविषयक शास्त्रका ज्ञाता आधेय है और उसका शरीर आधार है अतएव अनन्तविषयक शास्त्रके ज्ञातासे आधारतया शरीर भिन्न है इसलिये उस शास्त्रको अनन्त यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि सा तरवारं (सी तरवारवाले) दाइती है सी फरसा (सी फरसावाले) दाइते हैं इत्यादि प्रयोगोंमें तरवार और फरसासे भिन्न परंतु उनके व्यापारमूल पुरुषोंमें भी जिसप्रकार आधेयत्त्व तरवार और फरसा यह संज्ञा देती जाती है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी व्यापारमूल शरीरमें आधेयत्त्व व्यवहार जान लेना चाहिये ।

प्रेक्षा—वर्तमान काजमें व्यापारमूल शरीरमें आधेयका उपचार मछे ही हो जाओ परंतु अतीत और भगवत्कालीन शरीरोंमें यह व्यवहार नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि, जिसकी राजा रूप पयाप नष्ट हो गई है अथवा जिसे मरिच्यमें राजा रूप पर्याप्त प्राप्त होगी ऐसे पुरुषमें भी जिसप्रकार राजा माना है यह व्यवहार देया जाता है उसीप्रकार प्रकृतमें भी समग्र लेना चाहिये ।

शुक्रम—पर्याप्त और पयापीमें मेह न होनेके कारण वहाँ पर आधार आधेयमाप नहीं

कर्मसु वा सप्तकर्मसु वा मिथिकर्मसु वा गिहकर्मसु वा शैवकर्मसु वा दंतकर्मसु
वा अक्षसो वा बराहयो वा जे प अम्भे कृत्वाण कृत्वा अणतमिदि त सञ्च कृत्वाणत्वं
नाम । अ सं दग्गाशर्त स कृत्वा आगमदो जोभागमदो य । आगमा गयो सुदधानं
सिद्धं तो पश्यमिदि पगदो । अत्रोपयोगिनः श्लोकाः—

पूर्वापरविकल्पाभ्युपगमा दोषसङ्गते ।

श्रीमन् सप्तमालामाध्यात्म्यसिद्धिगम ॥ ९ ॥

आगमो ध्यातव्यजनमाप्तं लेपक्षयं निद्रु ।

अन्तर्दोषोऽनुत वाक्य न भूयादेवसमवात् ॥ १ ॥

रागाद्वैरागा मोहाद्वैराग्यमभ्युपगते दानुतम् ।

पश्य तु मैते दोषास्तस्यानुतकरण नास्ति ॥ ११ ॥

तस्य आगमदो दग्गाशर्त अणतपाहुदवापमो अनुवञ्चयो । अवगम्य विस्मृता

शैवकर्म अथवा दन्तकर्ममें अथवा अक्ष (पासा) हो या कहीं हो अथवा कृत्वा कर्तृ वस्तु हो
उसमें यह अन्तर्दोष है इसप्रकारकी व्यापना करना यह सब स्थापनामूलक है ।

प्रस्थापन आगम और नोभागमके मेरसे दो प्रकारका है । आगम धर्म्य भुतवान्
सिद्धान्त और प्रवचन से पक्षधरवाची शब्द है । इस विषयमें उपयोगी श्लोक है—

पूर्वापरविकल्पादि बोधोके समुद्रसे रहित और संपूर्ण पक्षधरोंके चोतक आन्तवचनको
धाम्य कहते हैं ॥ ९ ॥

आप्तके वचनका अगम जानना चाहिये और जिससे अगम अथवा अगम अगम
शब्दोंका नाश कर दिया है उसे आप्त जानना चाहिये । इसप्रकार जो स्वच्छशेष होता है वह
अवगम्यवचन नहीं बोलता है क्योंकि उसके अन्तर्दोषवचन बोलनेका कोई कारण ही संभव
नहीं है ॥ १ ॥

पश्यते अथवा अथवा मोहसे अन्तर्दोषवचन बोध्य जाता है परंतु जिसके ये रागादि
बोध नहीं रहते हैं उसके अन्तर्दोषवचन बोलनेका कोई कारण भी नहीं पाया जाता है ॥ ११ ॥

अन्तर्दोषवचन शब्दको जाननेवाले परंतु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीवको

विचारगम्य नाम । वनेषु पक्षधरवचनसिद्धिं ज्ञानिषु निरीक्षण विचारणादि क्वापि क्रियादि वा वचनि
चोदक्यानि नाम । केष्वनैदि इतिच ज्ञानि विचारणादि क्वापि क्वापि क्वापि क्वापि नाम । वचनसिद्धि
जानि पश्यते वचनि क्वापि क्वापि क्वापि क्वापि नाम । वचनसिद्धि वचनेषु वचिद्वयानि सिद्ध्यानि नाम ।
वेन वेन इति वचिद्वयानि सिद्ध्यानि नाम । वचिद्वयानि वचिद्वयानि वचिद्वयानि नाम । वचि
वचिद्वयानि वचिद्वयानि नाम । वचन १२ ९

१ अ. ११ ११४ शीता

प्याहुः समाश्रममायी जीवो । जं तं तन्वदिरिच्छदन्नाणत त बुविह, कम्माणत णोकम्मा
 भवमिदि । ज त कम्माणत त कम्मस्स पदेसा । ज त णोकम्माणत तं कट्ठय-रुग्गदीय
 समुदादि एयपदेसादि पोग्गलदन्व वा । आगममधिगम्य विस्मृतः कान्तर्भवतीति चेत्
 इतिरिक्तद्रव्यानन्ते । ज त सस्सदाणत तं घम्मादिदम्भगयं । कुदो ? सासयणेण
 दम्भायं विणासामावादो । ज त गणमाणत त पणुवण्णीय सुगम च । ज त अपदेसिपाणत
 तं परमाणु । नोक्कर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यत्व प्रत्यविधिदयोः प्राञ्जताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भावः
 किमिति न स्यादिति चेत् ? उच्यते— न तावच्छाश्वतानन्त नोक्कर्मद्रव्यानन्तेऽन्तर्भवति,
 तयोमदान् । अन्तो विनाश, न विद्यत अन्तो विनाशा यस्य तदनन्तम् । द्रव्य शाश्वतम
 नन्त आश्वतानन्तम् । नोक्कर्म च द्रव्यगतानन्त्यापेक्षया कट्ठादीनां बान्तवान्तामाशपेक्षया
 च अनन्तम्, ततो नानयारिक्तत्वमिति । एकप्रदेशे परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरा द्वितीयः

ओ जीय भविष्यकाष्ठमें अन्तर्विषयक शास्त्रको जानेगा उसे भाषी-नोभागमद्रव्यानन्त
 कहते हैं । तद्व्यतिरिक्त नोभागमद्रव्यानन्त दो प्रकारका है कर्मतद्व्यतिरिक्त नोभागमद्रव्यानन्त
 और नोक्कर्मतद्व्यतिरिक्त नोभागमद्रव्यानन्त । ज्ञानायत्तादि आठ कर्मोंके प्रदेशोंको कर्मतद्व्य
 तिरिक्त नोभागमद्रव्यानन्त कहते हैं । कट्ठ दन्तकपट्टीय और समुद्रादि अथवा एक प्रदेशादि
 पुनस्तद्रव्य ये सब नोक्कर्मतद्व्यतिरिक्त-नोभागमद्रव्यानन्त हैं ।

प्रश्न—ओ भागमका अर्थयत्न करके भूख गया है उसका द्रव्यनिक्षेपके किस भेदमें
 अन्तर्भाव होता है ?

समाधान—येसे जीवका तद्व्यतिरिक्त नोक्कर्मद्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव होता है ।

शाश्वतानन्त धर्मादि द्रव्योंमें रहता है क्योंकि, धर्मादि द्रव्य शाश्वतिक होनेसे
 उनका कभी भी विनाश नहीं होता है ।

ओ गणनानन्त है वह बहुवर्णनीय और सुगम है । एक परमाणुको अप्रदेशिकानन्त
 कहते हैं ।

प्रश्न—द्रव्यत्वके प्रति अधिष्टात येसे शाश्वतानन्त और अप्रदेशानन्तका नोक्कर्म
 द्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव क्यों नहीं हो जाता है ?

समाधान—शाश्वतानन्तका नोक्कर्मद्रव्यानन्तमें तो अन्तर्भाव होता नहीं है क्योंकि
 इन दोनोंमें परस्पर भेद है । भाये उसका स्पर्शकरण करने हैं । अन्त विनाशको कहते हैं
 जिसका अन्त अथात् विनाश नहीं होता है उसे अन्त कहते हैं । ओ धर्मादिक द्रव्य
 शाश्वत अन्त है उस शाश्वतानन्त कहते हैं । और नोक्कर्म द्रव्यगत अन्तताकी अपेक्षा और
 कट्ठादिके वस्तुतः अन्तके अभावकी अपेक्षा अन्त है इसलिये इन दोनोंमें एकत्व नहीं
 हो सकता है । एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोड़कर अन्त इस संज्ञाको प्राप्त होने
 पाठा दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है इसलिये परमाणु अप्रदेशानन्त है । ऐसी स्थितिमें

मेवाभारतो न तस्य आभाराभेयभावो । यह चह एतत् कि आभाराभेयभावो होत्र, आशुगसरीरमभियाण पुनरुत्तदा दृष्टेज्जेति । यदि एवं, तो एद परिहरिय धनुसद मुञ्जदीदि एद गहेयम् । न धनुर्धृतायामेवाप व्यपहारः, धनूप्यपसार्य सुवानेप्पपि धनुःधर्तं मुञ्ज इति व्यपहारदर्शनात् । न धृतकुम्भदद्यान्तो घटते, घटस्य घृतम्भप देशानुपसम्मतता दद्यान्तदार्थान्तिकयो साधर्म्याभावात् । अतः सवियाणर्तं त अन्व

पाया जाता है । फिर मी यदि यहाँ मी आभार-आभेयभाव माना जाये, तो हायकशरीर और मायी इस दोनोंके कथनमें पुनरुत्तदा प्राप्त हो जायगी ।

समाधान—यदि ऐसा है तो इस दद्यान्तको छोड़कर सौ धनुष (सौ धनुषपासे) मोहन करते हैं प्रकृतमें इस दद्यान्तको छोना चाहिये । धनुषोंके धारण करनेका व्यवस्थामें ही सौ धनुष मोहन करते हैं यह व्यवहार नहीं होता है किन्तु धनुषोंको बुर करके मोहन करनेवालोंमें मी सौ धनुष मोहन करते हैं इसप्रकार व्यवहार देखा जाता है । किन्तु यहाँ पर धृतकुम्भका दद्यान्त सम्य नहीं होता है क्योंकि घटके घृत इसप्रकारका व्यवहार नहीं पाया जानेके कारण दद्यान्त और दद्यान्तमें साधर्म्य नहीं है ।

निष्पाद्य—नोमागमद्रव्यनित्येके तीन मेह किये हैं हायकशरीर मायी और नष्टपरिरिक्त । इनमेंसे हायकशरीरमें आताका बिकारमायी शरीर किया जाता है और मायीमें जो घतभावमें जाता नहीं है किन्तु अपने होगा उसका ग्रहण किया जाता है । अब यदि जो पयाय पदार्थ हो चुकी है या भागे होगी उसे ही हायकशरीरका अतीत और मायी मान में तो हायकशरीरमायी नोमागमद्रव्यमें और मायी नोमागमद्रव्यमें कोई अन्तर नहीं रह जायगा । इसलिये हायकशरीरमें संरग्यप्राप्त मिश्र आभारमें आभेयका उपचार किया जाता है और मायीमें बड़ी वस्तु भागे होनेवाली पर्यायरूपसे कही जाती है ऐसा समझना चाहिये । यद्यपि ऊपर आभारमें आभेयका उपचार दिखानेके लिये अक्षिचर्च पायि दद्यान्ति दद्यान्त दे माने हैं जिससे यह समझमें आ जाता है कि जिसप्रकार उपचारपायी सौ धनुषोंके बीजनेपर सौ तरपाएँ बीजती हैं दद्यान्ति रूपसे व्यवहार होता है उसीप्रकार समस्त आदि विषयक शास्त्रके आताके शरीरको भी नोमागमद्रव्यान्त अक्षि कह सकते हैं । परंतु जो शरीर मी प्राप्त नहीं हुआ है या प्राप्त होगा उसे कैसे नोमागमद्रव्यान्त अक्षि कह सकते हैं क्योंकि उपचार संबन्ध पदार्थमें होगा है । इसका समाधान यह है कि जिसप्रकार धनुषोंको बुर एवंकर मोहन करने पर मी धनुसर्च मुञ्जदि यह व्यवहार बन जाता है उसीप्रकार अतीत और अनागत शरीरकी अपेक्षा मी उपचारसे आभार-आभेयभाव मान कर नोमागमद्रव्यान्त अक्षि संबन्ध बन जाती है । प्रकृतमें धृतकुम्भका दद्यान्त इसलिये सम्य नहीं आता है कि घटमें भी इसप्रकारका व्यवहार नहीं होनेसे बड़ा आभार-आभेयभावकी समापना ही नहीं है ।

‘मिच्छादिद्वी फलविद्या’ इति सिस्सेण पुच्छिष्ठ ‘अणता’ इति पमाणपरुषणानि आनि अदि। ण च सेम अणताणि पमाणपरुषणाणि तत्तय वधात्मणादो । अदि गणणान्तेण पगाद सेस-दसविध अणतपरुषण किमहु कीरते ? पुच्छ—

अवगमयणिवत्तण्ट पपदस्स परुषणानिमित्त च ।

ससयणिणासगट्ठ तच्चयवधारण्ड च ॥ १२ ॥

उत्त च पुज्जादरिण्हि—

जय वहु जायग्गो अपरिमिद तत्त निक्खिन्न मूढी ।

जय वहु अ ण जाणह चउत्तरो तय निक्खेत्ता ॥ १३ ॥

अथवा निक्खुवविस्सिट्ठमेद वण्णिज्जमार्य वत्तारस्सुप्पधात्थान इन्ना इदि निक्खुवो कीरदे । तथा चोक्तम्—

प्रमाण-नपनिर्धर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते ।

युक्त आशुक्तवद् भाति तस्यायुक्त च युक्तवत् ॥ १४ ॥

प्रश्ना— यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनामन्तसे प्रयोजन है ?

समाधान— मिच्छाद्वि जीव कितने हैं इसप्रकार शिष्यके द्वारा पूछन पर भनम्त है इत्यादि रूपसे प्रमाणका प्ररूपण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनामन्तसे प्रयोजन है । इस गणनामन्तको छोड़कर शेष भनम्त प्रमाणके प्ररूपण करनेवाला नहीं है क्योंकि शेष भनम्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं देखा जाता है ।

प्रश्ना— यदि प्रकृतमें गणनामन्तस प्रयोजन है तो गणनामन्तको छोड़कर शेष वृत्त प्रकारक भनम्तोंका प्ररूपण यहाँ पर किसलिये किया है ?

समाधान— भगवत् विषयके निषारण करनके लिये प्रकृत विषयके प्ररूपण करनेके लिय संनयका विनाग करनके लिये और तत्तथापन्न निदधय करनेक लिये यहाँ पर समी भनम्तोंका कथन किया है ॥ १२ ॥

पूपाद्यापाने मी कदा ह—

जहाँ जीपादि पशुओंके विषयमें बहुत जानना चाहे यहाँ पर आभाय समीका निक्षेप करे । तथा जहाँ पर बहुत न जाने तो यहाँ पर बाग निक्षेप अवश्य करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथवा निक्षेपके विना पचन किया गया यह विषय कदाचित् पक्षाको उन्मार्गमें ल जाये इसलिये यहाँ पर समी भनम्तोंका निक्षेप किया है । कदा मी ह—

प्रमाण नय और निक्षेपोंके द्वारा जिस पशुधर्मी समीक्षा नहीं की जाती है उसका अथ युक्त होते हुए भी अयुक्तता प्रतीत होता है भाग कमी अयुक्त होते हुए भी युक्तता

प्रदेशोऽन्तर्गम्यपदं न माह नास्तीति परमाणुरप्रदक्षानन्तः। तथा च कथमय नोक्तमत्र व्यानन्त
द्रव्यगतानन्तमन्यापेक्षया अनन्तव्यपदेशमाव्यन्तर्भवन्। द्रव्य प्रत्यक्षत्वं तत्रास्ति इति
चेत्? अस्तु तथैकस्य न पुनरप्येनान्येन प्रकारेणायातानन्त्य प्रति। अ त एवाप्यंतं तं
लोगमन्वाद्यो एगसद्धिं पेक्षुमाणे अतामावाद्यो एयापत्। ण दक्षार्थते दक्षमेदमस्ति
स्मृतिद्विद एदमर्थं पद्वि, एगदक्षस्तागासस्त पञ्चससागदसपामावमास्तिदृष्ट द्विचाद्यो।
अहा अपारो सागरो, अवाह बलमिदि। अ तं उमयापत् त तथा चेत् उमपदिसाए
पेक्षुमाणे अतामावाद्यो उमयादमापत्। अ तं वित्पाराणं त पदरागारेण आगाम
पेक्षुमाणे अतामावाद्यो मवदि। अ त मव्यापत् त पञ्चागारेण आगासं पेक्षुमाणे अता
मानाद्यो सव्यापत् मवदि। अ त मानागतं तं द्विविह आगमदो षोऽगमदो च। आगमदा
मावागत अणसपाहुदवाणगो उवञ्चुचो। अ त षोऽगमदो मावापत् तं तिकालाद्वा
अन्यपञ्चपरिणद्वीनादिदृष्ट।

एदसु अर्गंतसु कण अततण पयद? गणणापत्तण पपद। त कथ ज्ञापिकादि?

प्रयोगत अतस्त संज्ञाकी अपेक्षा अतस्त संज्ञाको प्राप्त होनेवाले नोक्तमत्र व्यानन्तमें यह
अपेक्षानन्त कस अन्तर्भूत हो सकता है अर्थात् नहीं हो सकता है इसलिये अपेक्षानन्त
भी स्पष्ट है।

प्रश्न—द्रव्यके प्रति एकत्र तो इनमें पाया ही जाता है?

समाधान—इस अन्तर्भूतमें यदि द्रव्यके प्रति एकत्र पाया जाता है तो रहा भावे
परंतु इतने मात्रसे इस अन्तर्भूतमें अन्य अन्य प्रकारसे भावे हुए व्यानन्तके प्रति एकत्र नहीं
हो सकता है।

लोकके मध्यसे आकाश-प्रदेशोंकी एक क्षेत्रीको देखने पर उसका अन्त नहीं पाया
जाता है इसलिये उसे परानन्त कहते हैं। द्रव्यमेवका भावय लेकर स्थित द्रव्यानन्तमें यह
पक्षानन्त अंतर्भूत नहीं होता है क्योंकि यह एकानन्त एक आकाशाद्रव्यका अन्त नहीं
विचार्य इनका कारण उसका भावय लेकर स्थित है जैसे मयार समुद्र अथाह अन्त इत्यादि।
लोकके मध्यसे आकाश प्रदेशोंकीकिसी दो विज्ञानोंमें देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है
इसलिये उसे उभयापत्त कहते हैं। आकाशको प्रत्यक्षसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया
जाता है इसलिये उसे विस्तारानन्त कहते हैं। आकाशको प्रत्यक्षसे देखने पर उसका अन्त
नहीं पाया जाता है इसलिये उसे सर्जनन्त कहते हैं। आगम और नोऽगमकी अपेक्षा
भावापत्त हो प्रकारका है। अन्तर्भूतपक्ष द्वायको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके
उपयोगम उपयुक्त जीवको आगममागमन्त कहते हैं। तिकालज्ञान अन्तर्भूत पदार्थोंसे परिचित
जीवदि द्रव्य नोऽगममागमन्त है।

प्रश्न—इस प्रकार प्रकारके अन्तर्भूतमें प्रत्यक्ष कितने अन्तर्भूतसे प्रयोजन है?

समाधान—प्रत्यक्षमें गणनानन्तसे प्रयोजन है।

ज्ञान प्रमाणमिच्छादुरपाये न्यास उपपत्ते ।

नयो ज्ञातृभिन्नायो युक्तितोऽपपरिमह ॥ १५ ॥

अतः गणनार्थं तत्पि तिविहं, परिचायतं शुचागतं अणतायतमिदि । अयेता इदि सामण्णेण युत्ते एदमिह न्यागतं मिच्छादुहि श्रीवा ह्येति इदरेसु अणतसु न ह्येति पि न चापि न्नेदे, अणता इदि बहुनयवागिदेमादा । अतः तिविहं वि अणताणि अस्मि तस्स भेव अणतार्णवम् गहणं हेदि इदि न न, मिच्छादुहिणीं बहुचमवेम्पिय बहु मयलुण्णीदी । अहवा तिविहं वि अणताणि समेदे अस्मिस्स अणतवियप्पानि । तस्स एदस्स बहुचविमक्खाए बहुचयणं अणमदस्स वेदि न चाणिन्नेदे ? एतः परिहातो युत्तवेदे— 'अणताणवाहि मोसप्पिणि-उत्तप्पिणीहि न अनदिहंति कालेण' चि ज्ञापकाद वसीयते यथा अनन्तानन्ता मिथ्यादृष्टय इति, म्याम्यानतो विदेवप्रतिपत्तिरिति

प्रतीत होता है ॥ १४ ॥

विज्ञान-पुरुष सम्प्रज्ञानको प्रमाण कहते हैं। सामादिकके द्वारा वस्तुमें भेद करनेके उपायको न्यास या निक्षेप कहते हैं और ज्ञातको नमिन्मयको नय कहते हैं । इसप्रकार युक्तितो अर्थात् प्रमाण नय और निक्षेपके द्वारा पदार्थका प्रज्ञान भवना निर्णय करना चाहिये ॥ १५ ॥

गणनान्त तीन प्रकारका है परीतान्त सुखान्त और भवन्तान्त ।

शुद्धा—सुखमें व्यक्ता इसप्रकार मिथ्यादृष्टियोंका परिमाण सामान्यरूपसे कहा गया है, पर इतने कथन करनेवालेसे भगन्तके तीन मेहोंमेंसे इसी भगन्तमें मिथ्यादृष्टि जीव अथाप मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण पाया जाता है दूसर भगन्तोंमें नहीं यह बात नहीं जानी जाती है, क्योंकि, सुखमें भगन्तके किसी भी मेहका उल्लेख न करके केवल उसका बहुवचनरूपसे निर्दिष्ट किया है । अर्थात् पर तीनों भगन्त पाये जाते हैं वहाँ उसी भगन्तान्तका प्रमाण होता है सो भी नहीं है क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवोंका बहुवचन अयेसा करके भगन्त शब्दका बहुवचन प्रयोग बन सकता है । अथवा तीनों भगन्त अपने अपने संश्लेष व्याप्य करके भगन्त विकल्परूप हैं । इनके इसी मेहकी विवक्षासे बहुवचन दिया है अन्य मेहकी अयेसासे नहीं यह भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान—जागे पूर्वोक्त शब्दका परिहार करते हैं— मिथ्यादृष्टि जीव काकही अयेसा भगन्तान्त अवसर्पिणियों और अवसर्पिणियोंके द्वारा भगन्त नहीं होते हैं इस ज्ञापक सुत्रसे जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव भगन्तान्त होते हैं । अथवा व्याख्यासे

(१) भिन्ना प्रमाण नय उपपत्ति । ज्ञान प्रमाण परिमह । इति एतेन पालनोपपत्तिरित्यत्र सुत्रा ज्ञायते । १८ (८. १. १८. १-११)

२ भिन्ना उपपत्तिरिति वात ।

एसो सन्त्रजीवरासीदो किंचूभमिच्छादिद्विरासीदो य अणतगुणहीनो चि कर्ष आभिञ्जदि ?
 पुषदे- जहण्यपरिचार्णतस्स अद्वन्द्वेदणाणमुवरि तस्सेव वग्गसलागाओ रुवाहियाओ
 पक्खिचे जहण्य अणतार्णतस्स वग्गसलागा भवति । जहण्यपरिचार्णतस्स अद्वन्द्वेदणादि
 दुगुणिदाहि जहण्यपरिचार्णते गुणिदे जहण्यमणताणतस्स अद्वन्द्वेदणयसलागा इवति ।
 एदाओ च जहण्यपरिचार्णतादो असखेज्जगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो असखेज्ज
 गुणहीणाओ । एदाणमुवरि जहण्य अणताणतस्स वग्गसलागाओ जहण्यपरिचार्णतस्स
 अद्वन्द्वेदणाहितो विससाहियाओ पक्खिच पढमबारवग्गिदसवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा
 भवति । जहण्य अणताणतस्स अद्वन्द्वेदणाओ जहण्य-अणताणतेण गुणिदे पढमबार
 वग्गिदसवग्गिदरासिस्स अद्वन्द्वेदणयसलागा भवति । एदाओ जहण्य अणतार्णतादो

(याहि ह्रम २५६ को २५६ से इतने ही बार गुणा करें तो जो संख्या उत्पन्न होगी वह
 ६१७ संख्याही होगी । इसप्रकार इकारिय छोटासी २ संख्याको तीनबार वर्गितसंवर्गित करने
 पर ६१७ संख्याही महासंख्या उत्पन्न होती है । इस परसे किसी भी भूमराशिसे उत्पन्न हुई
 विचार वर्गितसंवर्गित राशिसे विस्तारना अनुमान लगाया जा सकता है ।)

ईर्ष्या — तीनवार वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुए यह महाराशि संपूर्ण जीवराशिसे
 और संपूर्णजीवराशिसे कुछ कम (द्वितीयादि शेष तेरह गुणस्थानसंख्या राशि और सिद्ध
 राशि प्रमाण कम) मिष्टाहृदि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — अथन्य परीतान्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी अथान् अथन्य परीतान्तकी
 एक अधिक वगशसाक्षार्प मिखा देने पर अथन्य अनन्तान्तकी वर्गशसाक्षार्प उत्पन्न होती
 है । तथा अथन्य परीतान्तके द्विगुणित अर्धच्छेदोंसे अथन्य परीतान्तके गुणित करने पर
 अथन्य अनन्तान्तकी अर्धच्छेदशसाक्षार्प होती है । ये अथन्य अनन्तान्तकी अर्धच्छेदशसाक्षार्प
 अथन्य परीतान्तसे असंख्यातगुणी है और उसीके अर्थात् अथन्य परीतान्तके उपरिम
 वगसे असंख्यातगुणी हीन है । इन अथन्य अनन्तान्तकी अर्धच्छेद शसाक्षार्पोंमें जो अथन्य
 परीतान्तकी अर्धच्छेदशसाक्षार्पोंसे अधिक है ऐसी अथन्य अनन्तान्तकी वर्गशसाक्षार्प मिखा
 बन पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशसाक्षार्प होती है । अथन्य अनन्तान्तके अर्धच्छेदोंको
 अथन्य अनन्तान्तसे गुणित करने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशसाक्षार्प

तममे पुन जातं पठानं बहु त न सिन्धुपि । नमस्तु तह न त होय नउमेवे विवणु ॥ इमे ॥ ४
 म ५ ८४

१ नमिस्वता नमसलागा तमिल अद्वन्द्वस्त । अद्विदवाप वा अउ दवता होति अद्विदी ॥
 वि वा ७१

२ तिमिस्वतामपति विमस्वतामपति उद्विदे । अद्विदवाप होति ॥ तमपुपुपुपुपुपुपुपु ॥
 वि वा १०

अहण्णमणंताणंत दाळ्ळ्य भगिदसभगिद कळळुण्ण्यमहारासिं दुण्णडिरासिं कळळ्य
तत्वेळ्ळारामिं बिरलेळ्ळ्य अबर महारामिपमाण रूच पडि दाळ्ळ्य भगिदसभगिदं पाळ्ळ्य
पुनो उडिदमहारासिं दुण्णडिरासिं कळळ्य तत्वेळ्ळारामिपमाण बिरलेळ्ळ्य अबरमहारासिं
बिरलेळ्ळारामिरूच पडि दाळ्ळ्य अण्णाय्णम्हामे कडे तिण्णिवारवगिदसभगिदेरासीं याम् ।

समाधान—अथर्व्य भग्नान्तामन्त्रों के दोषरूपसे लेकर उनके परस्पर वर्णितसंबर्णित करने पर ओ महाप्राप्ति उत्पन्न हो उसकी दो पंक्ति करनी चाहिये क्योंकि तत्प्रमाण राशिको दो स्थापना पर स्थापित करना चाहिये । उनमेंसे एक राशिका विरह्य करके और उस विरह्य राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाप्राप्तिको दोषरूपसे लेकर और उनके परस्पर वर्णितसंबर्णित करने पर ओ महाप्राप्ति उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्ति करनी चाहिये । उनमेंसे एक राशिका विरह्य करके और विरह्य राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाप्राप्तिको दोषरूपसे लेकर उनके परस्पर गुणा करने पर ओ महाप्राप्ति उत्पन्न होती है उसे तीनवार वर्णितसंबर्णित राशि कहते हैं ।

सदाशरण (बी.ग.गितसे) - अत्रत्य जनस्थान तः

एकवार वर्धितसंवर्धित राशि = k

दोवार $u = \left(\frac{k}{k} \right) = k \times k = k^{k+1}$

$$= \binom{k+1}{k} \left(\binom{k+1}{k} \times k \right)$$

$$\begin{array}{r} 1 \\ 1+1 \\ 1+1+1 \\ \vdots \\ 1+1+\cdots+1 \end{array}$$

(अप्रामाणित्व) — अयमप्यप्रामाण्यान्वितः = २

एकपाद २ = ४। दोपाद ४ = ८। तीनपाद २ = ६।

होती। इस संपूर्ण व्यपस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि अथर्व्य परीतामन्तकी अधच्छेदोंमें उसीकी एक अधिक घगगनाकाएँ मिला देने पर अथर्व्य अतन्तामन्तकी घगगनाकाएँ और अथर्व्य परीतामन्तकी द्विगुणित अधच्छेदनाकाओंमें अथर्व्य परीतामन्तकी गुणित कर देने पर अथर्व्य अतन्तामन्तकी अधच्छेदनाकाएँ होती हैं। इसीप्रकार घगगनसर्गित राशिकी घगगनाकाएँ और अधच्छेद मानेकी पद्धतिसे अनुसार प्रथम द्वितीय और तृतीय पार सर्गितसर्गित राशिसे अधच्छेद और घगगनाकाओंके संबंधमें भी समझ लेना चाहिये।

उदाहरण (बीजगणितसे)—

अथर्व्य परीतामन्तकी सर्गितसर्गित करनेसे अथर्व्य गुण्यमन्त उत्पन्न होता है। तथा अथर्व्य धुमानन्तके घगगमान अथर्व्य अतन्तामन्त है।

$$\begin{array}{rcl}
 & \text{अ} & \\
 & २ & \\
 \text{मान लो अथर्व्य परीतामन्तका मान } & २ & \\
 & \text{अ} & \\
 & २ + ४ + १ & \text{ब} \\
 \text{परीतामन्तकी सर्गितसर्गित राशि} & २ & २ \\
 \text{उपरिसे घग प्रमाण अथर्व्य अतन्तामन्त} & = २ & = २ \text{ (मान लो)} \\
 & \text{ब} & \\
 & २ + ४ & ४ \\
 \text{अतन्तामन्त प्रथमपार घगगनसर्गित} & = २ & = २ \text{ (मान लो)} \\
 & ४ & \\
 & २ + ४ & ४ \\
 \text{द्वितीयपार सर्गितसर्गित} & = २ & = २ \text{ (मान लो)} \\
 & ४ & \\
 & २ + ४ & ४ \\
 \text{तृतीयपार घगगनसर्गित} & = २ &
 \end{array}$$

२. लक्ष्यसे लकर द्वितीयपार घग करनेसे विपरित राशि उत्पन्न होती है। इसकी उग घगगनाकाएँ घगगनाकाएँ होती हैं। अतः ४ का घगगनाका १ और १९ की २ होती है। १९ का २ का घगगन घग करनेसे ४ और ३ पार घग करने से १९ उत्पन्न होता है। तथा विपरित राशिकी द्वितीयपार भाषा भाषा करने हुए एक साथ यह उत्पन्न उग राशि

अधच्छेद होता है अतः १९ का अधच्छेद ४ होता है। वास्तवमें १९ राशि अधच्छेद २ होकर और अतन्तामन्त ४ होती है।

अर्धतगुणाग्रो तस्मैव उवरिमवगमादो अणतगुणहीणाग्रो । एदाणमुपरि पढमवारवग्निदस-
वग्निदरासिस्स वग्गसल्लागाआ पक्खिउत्ते विदियवारवग्निदसवग्निदरासिस्स वग्गसल्लागा
ह्वेति' । पढमवारवग्निदसवग्निदरासिस्स अद्दुल्लेदपाहि पढमवारवग्निदसवग्निदरासि
गुणिदे विदियवारवग्निदसवग्निदरासिस्स अद्दुल्लेदणपसल्लागाओ भवति । एदाआ पढम
वारवग्निदसवग्निदरासीहो अणतगुणाग्रो तस्मैव उवरिमवगमादो अणतगुणहीणाग्रो ।
एदाणमुपरि विदियवारवग्निदसवग्निदरासिस्स वग्गसल्लागाओ पक्खिउत्ते उदियवारवग्नि-

होती है । ये प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशक्याकारं ज्ञाप्य भग्नतामस्तसे
भग्नतगुणी ई और उसीके अर्थात् ज्ञाप्य भग्नतामस्तकं उपरिम वर्गिते भग्नतगुणी हीन है ।
इस प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशक्याकार्योमें प्रथमवार वर्गितसंवर्गित
राशिची वर्गशक्याकारं मिखा देने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची वर्गशक्याकारं होती
है । तथा प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशक्याकार्योके द्वारा प्रथमवार वर्गितस-
वर्गित राशिची गुणित करने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशक्याकारं होती
है । ये दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशक्याकारं प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिसे
भग्नतगुणी है और उसीके अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिसे उपरिम वर्गिते भग्नत
गुणी हीन है । इस दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची अर्धच्छेदशक्याकार्योमें दूसरीवार वर्गित
संवर्गित राशिची वर्गशक्याकारं मिखा देने पर तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिची वर्गशक्य
कारं होती है ।

विशेषार्थ—जो राशि विरहित वेबजमसे उत्पन्न होती है उसके अर्धच्छेद विरहित
राशिची वेपराशिसे अर्धच्छेदोंसे गुणा करने पर भाते हैं । तथा उसकी वर्गशक्याकारं विरहित
राशिसे अर्धच्छेदोंमें वेपराशिसे अर्धच्छेदोंके अर्धच्छेद या वर्गशक्याकारं मिखा देने पर होती
है । गणितक इस नियमके अनुसार ज्ञाप्य परीतान्तके अर्धच्छेदोंसे ज्ञाप्य परीतान्तको गुणा
कर देने पर ज्ञाप्य पुच्छान्तके अर्धच्छेद और ज्ञाप्य परीतान्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी वर्ग-
शक्याकारं मिखा देने पर ज्ञाप्य पुच्छान्तकी वर्गशक्याकारं उत्पन्न होती । फिर भी प्रकृतमें ज्ञाप्य
भग्नतामस्तकी वर्गशक्याकारं और अर्धच्छेद छाता है । परंतु ज्ञाप्य भग्नतामस्त ज्ञाप्य पुच्छ
वर्तके उपरिम वर्गरूप है और वर्गिते उपरिम वर्गकी वर्गशक्याकार्यो और अर्धच्छेदोंको
छावेके किये यह नियम है कि विरहित वर्गके अर्धच्छेदोंसे उपरिम वर्गके अर्धच्छेद होने और
विरहित वर्गकी वर्गशक्याकार्योसे उपरिम वर्गकी वर्गशक्याकारं एक अधिक होती है । इसलिये
ज्ञाप्य पुच्छान्तके अर्धच्छेदोंको कृता कर देने पर ज्ञाप्य भग्नतामस्तके अर्धच्छेद और ज्ञाप्य
पुच्छान्तकी वर्गशक्याकार्योमें एक और मिखा देने पर ज्ञाप्य भग्नतामस्तकी वर्गशक्याकारं

होगा। इस समूह व्ययकाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि अपन्य परितानन्तक
अधच्छेदोंमें उर्माका एक अधिक घणनाकार्य मिला देने पर अपन्य अनन्तान्तकी घणना
काय भार अपन्य परितानन्तकी द्विगुणित अधच्छेदशालाकाभीम अपन्य परितानन्तकी गुणित
कर देने पर अपन्य अनन्तान्तकी अधच्छेदशालाकार्य होती है। इसप्रकार वर्गितमपगित
शक्तिकी घणनाकाय भार अधच्छेद लमेकी पञ्चमके अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय
पर वर्गितमपगित शक्तिके अधच्छेद और घणनाकाभीमके संबंधमें भी समझ लया चाहिये।

उदाहरण (बीजगणित)—

अपन्य परितानन्तका वर्गितमपगित करनेमें अपन्य गुणात्मक उत्पन्न होता है। तथा
अपन्य गुणात्मकके घणनाकाय अपन्य अनन्तान्त है।

अ

२

मान लो अपन्य परितानन्तका मान २

$$\begin{array}{rcl}
 \text{परितानन्तकी वर्गितमपगित शक्ति} & \begin{array}{c} \text{अ} \\ २ \end{array} & + \text{अ} + १ \quad \text{ब} \\
 \text{उपरिष्ठ घण प्रमाण अपन्य अनन्तान्त} & = २ & = २ \quad (\text{मान लो})
 \end{array}$$

क

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

५०

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

६१

६२

६३

६४

६५

६६

६७

६८

६९

७०

७१

७२

७३

७४

७५

७६

७७

७८

७९

८०

८१

८२

८३

८४

८५

८६

८७

८८

८९

९०

९१

९२

९३

९४

९५

९६

९७

९८

९९

१००

१०१

१०२

१०३

१०४

१०५

१०६

१०७

१०८

१०९

११०

१११

११२

११३

११४

११५

११६

११७

११८

११९

१२०

१२१

१२२

१२३

१२४

१२५

१२६

१२७

१२८

१२९

१३०

१३१

१३२

१३३

१३४

१३५

१३६

१३७

१३८

१३९

१४०

१४१

१४२

१४३

१४४

१४५

१४६

१४७

१४८

१४९

१५०

१५१

१५२

१५३

१५४

१५५

१५६

१५७

१५८

१५९

१६०

१६१

१६२

१६३

१६४

१६५

१६६

१६७

१६८

१६९

१७०

१७१

१७२

१७३

१७४

१७५

१७६

१७७

१७८

१७९

१८०

१८१

१८२

१८३

१८४

१८५

१८६

१८७

१८८

१८९

१९०

१९१

१९२

१९३

१९४

१९५

१९६

१९७

१९८

१९९

२००

२०१

२०२

२०३

२०४

२०५

२०६

२०७

२०८

२०९

२१०

२११

२१२

२१३

२१४

२१५

२१६

२१७

२१८

२१९

२२०

२२१

२२२

२२३

२२४

२२५

२२६

२२७

२२८

२२९

२३०

२३१

२३२

२३३

२३४

२३५

२३६

२३७

२३८

२३९

२४०

२४१

२४२

२४३

२४४

२४५

२४६

२४७

२४८

२४९

२५०

२५१

२५२

२५३

२५४

२५५

२५६

२५७

२५८

२५९

२६०

२६१

२६२

२६३

</

दक्षबगिदगसिस्त बगसलागा मवति । एमा बगसलागरासी पदमवारवगिदसंबग्मिद
 रासीश उवरि एगमभि बगसलाग न च वडिदो, तण्देमि दान्हं रासीणं बगसलागाभो
 सरिसाभा । एदाज च बगसलागाभो बहण्णपरिचार्णताश असंवेत्तगुण्णाभा । अदि
 एमो रासी सम्बजीबगसलागरासिभा सरिसो इवदि तो तिप्पिचारवगिदसबगिदरासिभा
 सम्बजीबरासी वि सरिसो होत्त; न च एव । ते कथ ? ' बहण्ण अणताणत्तं बगिज्जमाणे
 बहण्ण अणताणत्तस्म हेत्तिमवगणह्वाणेहिंतो उवरि अणत्तगुणवगसलागाणि गंतुं च सम्ब
 जीबरासिबगसलागा उपपत्तिदि ' चि परियम्मे वुच । गुणगारां पि अहिं महिं अणत्तप
 मगिज्जदि तमिं तमिं मसहण्ण-अणुक्कस्मात्तणत्तं पत्तय । न च तदियवारवगिद

अथ भागे इन सब राशियोंकी बर्गशलाकापर्य और अर्धचन्द्र द्विते जाते हैं—

	अ	प	म	अ.	म.	म	म.	व	सं	द्वि	य	स.	मृ	व	स
						अ			क		ख		ग		
			अ			२ + अ + १			२ + क		२ + ख		२ + ग		
		२			२			२		२		२		२	
प्रमाण	२		२		२			२		२		२		२	
						अ			क		ख		ग		
बर्ग श.	अ					२ + अ + १			२ + क		२ + ख		२ + ग		
						अ			क		ख		ग		
	अ					२ + अ + १			२ + क		२ + ख		२ + ग		
अर्धचन्द्र	२		२		२			२		२		२		२	

यह तीसरीवार वर्गितसंबर्गित राशिकी वर्गशलाकापरिचार्ण प्रथमवार वर्गितसंबर्गित
 राशिसे ऊपर एक मी वर्गस्थानसे बुद्धिसे प्रयत्न नहीं हुई है अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंबर्गित
 राशिसे उपरिम वर्गके भीतर ही तीसरीवार वर्गितसंबर्गित राशिकी वर्गशलाकापरिचार्ण जाती
 है इसलिये इन दोनों राशियोंकी अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंबर्गित राशिकी वर्गशलाकापर्य और
 मृत्तयवार वर्गितसंबर्गित राशिकी वर्गशलाकापर्यकी बराबरी समान है जो वर्गशलाकापर्य
 अथवा परीतावन्तसे अवस्थागतगुणी है। यदि यह मृत्तयवार वर्गितसंबर्गित राशिकी वर्गशलाकापर्य-
 राशि संपूर्ण जीवोकी वर्गशलाकापरिशिके समान होती है ऐसा मान लिया जाये तो
 तीसवार वर्गितसंबर्गितराशिसे समान संपूर्ण जीवराशि भी हो जाये। परन्तु ऐसा है नहीं।

श्रुति—यह कैसे ?

समाधान — अथवा अवस्थान्तके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर अथवा अवस्थान्तके
 अवस्थान्त बराबरीके ऊपर अवस्थान्तके वर्गस्थान आकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकापर्य
 उत्पन्न होती है इसपर्यन्त परिकर्ममें कहा है। गुणकार मी कहा कहा अवस्थान्तके
 जाता है कहा कहा अवस्थान्तके अर्थात् प्रथम अवस्थान्तके गुणकारका ग्रहण करना

सप्तगिदरासिबग्गसलागाओ हेट्ठिमवग्गणव्वापेहिंतो उवरि परियम्म-उत्त अणतगुणवग्गण
 ङ्गाणाणि गत्तुप्पण्णाओ, किंतु हेट्ठिमवग्गङ्गाणाओ उवरि सादरेयज्जहण्ण-परिचाणंत
 गुणमद्दाण गत्तुप्पण्णाओ । केण कारणेण ? ज्जहण्णपरिचाणतस्स अद्दच्छेद्दणांहीतो
 विसेसाहियाहि ज्जहण्ण अणताणतस्स वग्गसलागाहि तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिबग्ग
 सलागाण वग्गसलागाओ हेट्ठिमअद्दाणेणूणाओ अब्बिहिरिअमाणे सादरेयज्जहण्णपरिचाणत
 मागच्छदि चि । ण च ज्जहण्ण-अणताणताओ हेट्ठिम अद्दाण पडुब्ब सादरेयज्जहण्णपरि
 चाणतगुण गंतुण सम्बन्धीवरासिबग्गसलागाओ उप्पण्णाओ, किंतु अणताणतगुण गंतुण
 सम्बन्धीवरासिबग्गसलागाओ । कुडो ? 'अणताणतविसए अज्जहण्णमणुक्कस्स अणताणतेणेव
 गुणगारेण भागहारेण वि होद्व्व' इदि परियम्मवयणाओ । ण च एदस्स ज्जहण्णपरि
 चाणताओ विसेसाहियस्म असखेज्जचमसिद्ध, सवे वए गहुंतस्स अणतचविरोहाओ । ण

आहिये । परंतु गृहीतवार वर्गितसवर्गित राक्षिणी वर्गशाखाकार्यं जघम्य अनन्तानन्तकं भयस्तन
 वगस्यानसे ऊपर परिक्रमसूत्रमें कहे गये अनन्तगुणे वगस्यान आकर नहीं उत्पन्न होती हैं,
 किंतु जघम्य अनन्तानन्तके भयस्तन वगस्यानसे ऊपर कुछ अधिक जघम्यपरीतानन्तगुणे
 वगस्यान आकर उत्पन्न होती हैं । इससे मनीत होता है कि संपूर्ण जीवराक्षिणी वर्गशाखाका-
 र्योस तीनवार वर्गितसंवर्गित राक्षिणी वगदशाकार्यं अनन्तगुणी भूत हैं ।

शुद्धा — येना किस कारणसे हैं ?

समाधान—जो कि जघम्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे अधिक हैं वेही जघम्य अनन्ता
 नन्तकी वर्गशाखाकार्योके द्वारा जघम्य अनन्तानन्तके भयस्तन वगस्यानसे भूत तीसरीवार
 वर्गितसवर्गित राक्षिणी वर्गशाखाकार्योकी वर्गशाखाकार्यं अपहृत करने पर कुछ अधिक जघम्य
 परीतानन्त आता है । परंतु जघम्य अनन्तानन्तके भयस्तन वगस्यानोकी अपेक्षा जघम्य
 अनन्तानन्तस कुछ अधिक जघम्य परीतानन्तगुणे वर्गस्यान आकर संपूर्ण जीवराक्षिणी
 वर्गशाखाकार्यं नहीं उत्पन्न होती हैं किंतु जघम्य अनन्तानन्तसे अनन्तानन्तगुणे वगस्यान आकर
 संपूर्ण जीवराक्षिणी वर्गशाखाकार्य उत्पन्न होती हैं । क्योंकि अनन्तानन्तके विषयमें गुणकार
 और माग्यार अजघम्यानुत्पन्न अर्थात् माग्यम अनन्तानन्तरूप ही होना चाहिये इसकारण
 परिक्रमसूत्रक्य वक्त है । ऊपर जो जघम्य परीतानन्तसे विरोधाधिक कहा आये हैं वह
 विरोधाधिक असंख्यानरूप हैं यह बात असिद्ध नहीं है क्योंकि व्यय होने पर समाप्त
 होनेवाली राक्षिणी अनन्तरूप माननेमें विरोध आता है । इसकारण कथन करनेसे अथगुरुक

१ त्वेतेषां बर्हि द्विषतानन्तस्य अर्धमुत्पत्ते । तन्तानन्तस्यापि दशा वपुःकला । वि आ
 वा १९ टीका । त्वेतेषां बर्हि जघम्यद्विषतानन्तमुत्पत्ते । तन् अर्धतानन्तपरिचयताव दशा जीवगर्भसंज्ञका-
 यवि । नो जी जी न टी. (पर्यातिव्यपना) ।

२ अत्रिनु निर्दिष्टस इति वाक्य ।

संबन्धिगदरासिवग्गसलागाओ हेत्थिमवग्गमङ्गणेहिंत्तो ठवरि परिपम्म-उत्त भणत्तगुणवग्गण
 द्वाप्पाणि गंतुप्पप्पणाओ, किंतु हेत्थिमवग्गमङ्गणादो ठवरि सादिरेयमहण्ण-परिचाणत्त
 गुणमद्वाप्प गंतुप्पप्पणाओ । केण कारणेण ? अहण्णपरिचाणत्तस्स अद्दच्छेदणाहिंत्तो
 बिसेसाहिंत्ताहि अहण्ण भणत्ताणत्तस्स वग्गसलागाहि तदियधारवग्गिहसंबन्धिगदरासिवग्ग
 सलागाण वग्गसलागाओ हेत्थिमअद्वाणेषूणाओ अब्बिहिरेज्जमाणे सादिरेयमहण्णपरिचाणत्त
 मागच्छदि पि । ण च ब्रह्मण्ण भणत्ताणत्तादो हेत्थिम अद्वाण पद्दच्च सादिरेयमहण्णपरि
 चाणत्तगुण गत्तुव सच्चञ्जीवरासिवग्गसलागाओ उप्पप्पणाओ, किंतु अणत्ताणत्तगुण गंतुव
 सच्चञ्जीवरासिवग्गसलागाओ । कुदो ? ' भणत्ताणत्तविसए अज्जहण्णमणुक्कस्स भणत्ताणत्तेमेव
 गुणगारेण भागहारेण बि होदम्म ' इदि परिपम्मवयणादो । ण च एदस्स अहण्णपरि
 चाणत्तादो बिसेसाहिंत्तस्म असस्सेज्जचमसिद्ध, सत्त वए णहुंत्तस्स अणत्तचविरोदादो । ण

चाहिये । परंतु नृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशाखाकार्य अथम्य भनन्तान्तके भयस्तन
 वगस्थानसे ऊपर परिचमसूत्रमें कहे गये भनन्तगुणे वर्गस्थान आकर नहीं उत्पन्न होती हैं
 किंतु अथम्य भनन्तान्तके भयस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर कुछ अधिक अथम्यपरीतान्तगुणे
 वर्गस्थान आकर उत्पन्न होती हैं । इससे प्रतीत होता है कि संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशाखा-
 कायें तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशाखाकार्य भनन्तगुणी भूत हैं ।

प्रश्न — ऐसा किस कारणसे है ?

समाधान — जो कि अथम्य परीतान्तके वर्गच्छेदोंसे अधिक हैं ऐसी अथम्य भनन्ता
 न्तकी वर्गशाखाकायोंके द्वारा अथम्य भनन्तान्तके भयस्तन वर्गस्थानसे भूत तीसरीवार
 वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशाखाकार्योंकी वर्गशाखाकार्य अथम्य करने पर कुछ अधिक अथम्य
 परीतान्त आता है । परंतु अथम्य भनन्तान्तके भयस्तन वर्गस्थानोंकी अपेक्षा अथम्य
 भनन्तान्तस कुछ अधिक अथम्य परीतान्तगुणे वर्गस्थान आकर संपूर्ण जीवराशिकी
 वर्गशाखाकार्य नहीं उत्पन्न होती हैं किंतु अथम्य भनन्तान्तस भनन्तान्तगुणे वर्गस्थान आकर
 संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशाखाकार्य उत्पन्न होती हैं । क्योंकि भनन्तान्तके विद्यमान गुणकार
 और मागहार अथम्यमानुरूप अर्थात् मध्यम भनन्तान्तरूप ही होना चाहिये इसकारण
 परिक्रमसूत्रका वजन है । ऊपर जो अथम्य परीतान्तमे विरोधाधिक कह गये हैं वह
 विरोधाधिक असंयोज्यरूप हैं वह बात असिद्ध नहीं है क्योंकि व्यय होने पर समाप्त
 होनेवाली राशिकी भनन्तरूप माननेमें विरोध आता है । इसकारण कथन करनेसे अर्थसुद्ध

१ ठरेववक्कवां वरुणे विवशाज्जन्तस्स अचचपुत्तपत्त । वज्जन्तस्सवत्ताणि तथा वर्गच्छेदका । पि ता
 गा १९ टीका । ठारिववेवक्क वरुणे अचचविक्कवत्तपुत्तपत्ते । एव वरुणमेव वज्जन्तान तथा जीवराशिवर्गच्छेदका
 एव । ना. जी जी व टी (पर्वतिवत्तपत्ता) ।

२ प्रतिगु विहृत्तस्स इति पाठ ।

य अद्भ्योऽगस्त्यपरियङ्गुण विग्रहिषारो, उवयारण्य तस्स आणवियादा । को वा उद्भ्य
पक्खित्तरासी ? युच्येदे- विष्णिवाग्गिदसुवग्गिदरासिम्हि—

सिद्धा पिणोद्गीवा वणप्पदी कालो य दोग्गला नेय ।

सम्भमजोगासास छप्पेदे णत्तपस्सेवा ॥ १९ ॥

एदे छप्पकस्सेवपक्खित्ते उद्भ्यपक्खित्तरासी होदि । एदस्स अज्जहण्णमणुक्कम्भ
अण्वाणत्तपस्स अचियाणि रुवाणि तत्तियमेत्तो मिच्छावृद्धिरासी । एद कथं वच्चादि चि
मन्निदे जगता इदि वयणादा । एद वयणमसम्भमजोगासा किं य अस्सिलपदि चि मन्निदे
असम्भकारणुम्भकजिणवयणकमलविनिग्गमयत्तादो । य च पमाणपङ्क्तिग्गहिमो पयत्ता
पमाणत्तरेण परिक्खित्तादि, अबद्धाणादो ।

परिवर्तनके साय व्यभिचार हो जायगा सो भी बात नहीं है क्योंकि अर्धपुद्गलपरिवर्तन
कायके उपचारसे अनन्तरूप माना है ।

श्रुत्य—त्रिसमें छह द्रव्य प्रक्षिप्त किय गये हैं वह राशि कौनसी है ?

समाधान—तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिमैं- सिद्ध, निपोद्गीव पणस्पतिआधिक
पुद्गल कस्सके समय और अम्भोक्ककथा ये छहों अनन्त राशियाँ मिखा वेना चाहिये ॥ १९ ॥

प्रक्षिप्त करने योग्य इन छह राशियोंके मिखा वेने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि
होती है । इसप्रकार तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे अनन्तगुणे और छह द्रव्य प्रक्षिप्त
राशिसे अनन्तगुणे हीन इस मध्यम अनन्तानन्तही जितनी संख्या होती है तन्मात्र मिच्छावृद्धि-
जीवराशि है ।

श्रुत्य—मिच्छावृद्धिराशि इतनी है यह कैसे जना जाता है ?

समाधान—सूत्रमें अर्थात् ऐसा बहुवचनान्त पद दिया है जिससे जाना जाता
है कि मिच्छावृद्धिराशि मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण होती है ।

श्रुत्य—यह वचन असत्यफलको क्यों नहीं प्राप्त हो जाता है ?

समाधान—असत्य बोझनेके कारणोंसे रहित त्रिनेत्रदेवके शुलकमखसे निकसे हुए
ये वचन है इसलिये उन्हें अप्रमाण नहीं माना जा सकता । जो पक्षार्थ प्रमाणसिद्ध है उसको
दूसरे प्रमाणोंके द्वारा परीक्षा नहीं की जाती है क्योंकि वह पक्षार्थ प्रमाणसे
अपरिचय है ।

१ ति व प ५३ मिखा विधरवग्गिदसुवग्गिदोत्तकथा वचनइवा । काळ कळोवणात्त कण्ठेदवत्त-
पुग्गेषा ॥ ति का ५९ मिखा निपोद्गीवा वणत्तं काळ पुग्गला नेय । सम्भमजोगासा पुण टिवादि कवळ-
वपि ॥ क व ४ ४५ २ त्तिगु त्तिवग्गिनेत्तो इति वाक्य ।

एद वक्तारणं म घट्टे । कुदा ? खुचादो दग्गस्स पक्खणपसगादो । स कच ?
एकमिह दग्गगुत्त अणतपरमाणुपदमहि पिप्फण्णे ण्णं खेत्तगुत्तमागाहे, गणन पइव
अणताणि खेत्तगुत्ताणि होति पि ।

सुद्धम तु दग्गणि खेत्त तत्थे य सुद्धमन्तर दग्गणि दग्ग ।

उत्तगुत्ता अणता एगे दग्गगुत्ते होति ॥ १८ ॥ इति ॥

कच कालण मिणिसंत मिच्छाद्विहारी जीवा ? अणताणताण औत्तापिणि-उत्सपि
पीर्यं समण ठवेदुण मिच्छाद्विहारी च ठवेदुण कालमिह एगो समयो मिच्छाद्विहारासमिह
णगा जीवा अवहिरिज्जदि । एवमवहिरिज्जमाणे अवहिरिज्जमाण सन्धे समया अवहिरिज्जंति,
मिच्छाद्विहारासी म अवहिरिज्जदि । एवमवहिरिज्जमाणे मिच्छाद्विहारासी अवहिरिज्जदु,
सन्धे समया म अवहिरिज्जंति पि । केण कारणेण ? कालमाहणपणवयसुत्तदसणादो ।
किं सं सुत्तं ? उच्यते—

तथे मागमे असंख्यात वज्ज होने ॥ १७ ॥

परंतु उनका इसप्रकारका व्यवधान करना पड़ित नहीं होता है क्योंकि ऐसा मान लेने
पर क्षेत्रप्रकरणके अन्तर्गत द्रव्यप्रकरणका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

प्रश्न—यह कैसे ?

समाधान—क्योंकि, अत्यन्त परमाणुरूप प्रदेशोंमें मिथ्या एक द्रव्यांगुलमें अदगाहनाही
अवेधा एक क्षेत्रांगुल ही है किन्तु गणनाही अवेधा अत्यन्त क्षेत्रांगुल होते हैं इसलिये
जो बहुत प्रदेशोंमें उपस्थित होता है वह सूक्ष्म होता है वह कट्टना ही नहीं है ।

क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्मतर द्रव्य होता है क्योंकि एक द्रव्यांगुलमें
अत्यन्त क्षेत्रांगुल होत है ॥ १८ ॥

प्रश्न—वास्तवमात्रकी अवेधा मिथ्यादृष्टि औचित्य प्रमाण कैसे निश्चय्य जाता है ?

समाधान—एक ओर भवत्मात्मन्य अपमर्षिणियों और उत्सर्पिणियोंके समवाये
स्वापिण वक्त और दूसरी ओर मिथ्यादृष्टि औचित्य दृष्टिको स्वापिण करके वाक्यके समर्थोंमेंसे
एक एक समय और उर्ताके साथ मिथ्यादृष्टि औचित्यदृष्टि प्रमाणमेंसे एक एक साथ कम करते
जाता वाद्विप । इसप्रकार उत्तरोत्तर वास्तव समय और औचित्यदृष्टि प्रमाणका कम करते हुए
कते जान पर अत्यन्तमन्य अपमर्षिणियों और उत्सर्पिणियोंके वक्त समय प्रमाण हो जान है
परंतु मिथ्यादृष्टि औचित्यदृष्टि प्रमाण प्रमाण नहीं होता है ।

प्रश्न—यहां पर संस्कारका कहना है कि मिथ्यादृष्टि औचित्यदृष्टि प्रमाण मत ही
प्रमाण हो जानो परंतु वास्तव सूक्ष्म समय प्रमाण नहीं हो सकते हैं क्योंकि मिथ्यादृष्टि
औचित्यदृष्टि प्रमाणकी अवेधा वास्तव प्रमाणोंका प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारों प्रकरण
वस्तुवाक्य सूक्ष्म ही वस्तुमें आता है । वह सूक्ष्म वास्तव है इसप्रकार सूक्ष्म वस्तुवाक्य कहना है—

धम्माधम्माणासा विणि वि सुत्ताणि होति पापाणि ।

अथीदु जीवपेत्तागच्छन्नागासा अणत्तगुणा ॥ १९ ॥

न पस दोषो, अदीदकालगहणादो । अहा सधे लाण^१ पायो तिहा बिहत्तो,
अणागदो बह्माणो अदीदो चेदि । तस्य अणिप्फण्णो अणागदो नाम । धदिज्जमाणो
बह्माणो । निप्फण्णो बभहारजोगो अदीदो नाम । तस्य अदीदेण पत्थेण मिषिज्जते
सत्त्वबीजाणि । एत्थुवसंहारगाहा—

पायो तिहा बिहत्तो अणागदो बह्माणनीदो य ।

एत्थु अदीदेण दू मिणिज्जते सत्त्वबीजं तु ॥ २० ॥

तथा कालो वि विविहा, अणागदो बह्माणो अदीदो चेदि । तस्य अदीदेण मिषि
ज्जतं मत्त जीवा । एत्थुवसंहारगाहा—

कालो तिहा बिहत्तो अणागदो बह्माणनीदो य ।

एत्थु अदीदेण दू मिणिज्जते जीवत्तसी दु ॥ २१ ॥

धर्मद्रव्य अपरमद्रव्य और स्तोकाक्षर ये तीनों ही समान होत हुए स्तोक हैं । तथा
जीवद्रव्य पुत्रसद्रव्य काळके समय और आकाशके प्रवेश ये उत्तरोत्तर बुद्धिही अपेक्षा
अनन्तगुणे हैं ॥ १९ ॥

समाधान—यह कोरे कोय नहीं है क्योंकि मिथ्यावादि जीवराशिवा प्रमाण
निकाशनेमें अतत्ता काळका ही ग्रहण किया है ।

त्रिसप्रकार सब स्तोकेमें प्रत्य तीन प्रकारसे विभक्त है अनागत वर्तमान और अतीत ।
उनमेंसे जो निष्पन्न नहीं हुआ है वह अनागत प्रत्य है, जो बनाया आ रहा है वह वर्तमान
प्रत्य है और जो निष्पन्न हो चुका है तथा व्यवहारके योग्य है वह अतीत प्रत्य है । उनमेंसे
अतीत प्रत्यके द्वारा संतृप्त बीज माये आते हैं । यहाँ पर इन विषयकी उपसंहाररूप गाथा
बढ़ते हैं—

प्रत्य तीन प्रकारका है अनागत वर्तमान और अतीत । इनमेंसे अतीत प्रत्यके द्वारा
संतृप्त बीज माये आते हैं ॥ २० ॥

उसीप्रकार, काळ भी तीन प्रकारका है अनागत वर्तमान और अतीत । उनमेंसे
अतीत काळके द्वारा संतृप्त जीवराशिवा प्रमाण जाता जाता है । यहाँ पर उपसंहाररूप
गाथा बढ़ते हैं—

काळ तीन प्रकारका है अनागतकाळ वर्तमानकाळ और अतीतकाळ । इनमेंसे अतीत
काळके द्वारा संतृप्त जीवराशिवा प्रमाण जाता जाता है ॥ २१ ॥

पदे धन्वराण ण घटद । कुदा ? गच्छादो दम्बस्स परुवणपसगादो । तं कर्षं ? एकमिह दम्बमुत्त अणतपरमाणुपरिदं हि मिष्कण्ण एमं खेत्तगुलमोगाहे, गणप पइव अण्णताणि खेत्तगुलाणि होति वि ।

सुइम तु इदं स्तु ततो य सुइमन्तर इवदि न्म ।

उत्तगुत्ता भगता एगे न्मग्गुत्ते होति ॥ १८ ॥ इति ॥

रूप फालन मिमिक्षत मि-ठाइही जीवा ? अण्णताणताण आसपिणि-उत्तपिणीण समण ठवइव मिष्ठाइहिराभिं च ठवेउण फालमिह एगा समयो मिष्ठाइहिराभमिह एगा जीवो अरहिरिज्जदि । एवमरहिरिज्जमाण अरहिरिज्जमाणे सण्णे समयो अरहिरिज्जदि, मिष्ठाइहिरासी ण अरहिरिज्जदि । एव च आदगा भगदि- मिष्ठाइहिरामी अरहिरिज्ज, सण्ण समयो ण अरहिरिज्जंति वि । कण कारणेण ? फालमाइणपरुवणपसुत्तइमजादो । किं च सुच ? उभये-

तथे मागमे वसययान वर्य होत है ॥ १७ ॥

परंतु इनका इत्यन्तरका व्यवधान करना पड़ित नहीं होता है क्योंकि, ऐसा मात्र सेवे पर शेषव्यवधानसे अनन्तर द्रव्यव्यवधानका प्रयोग प्राप्त हो जायगा ।

प्रश्न—यह कैसे ?

समाधान—क्योंकि, समस्त परमाणुरूप प्रदेशोंमें मिष्यए एक द्रव्यांगुलमें व्यवधानाधी भवेत्ता एक शेषांगुल ही है किन्तु गणनाही अपेक्षा अनन्त शेषांगुल होते हैं इसलिये जो बहुत प्रदेशों उपविन होता है यह शून्य होता है यह कहना ठीक नहीं है ।

शेष शून्य होता है और उसमें ही अनन्तर द्रव्य होता है क्योंकि एक द्रव्यांगुलमें समस्त शेषांगुल हात हैं ॥ १८ ॥

प्रश्न—आत्मप्रमाणकी भवेत्ता मिष्याएहि जीवोंका प्रमाण कैसे निश्चय्य जाता है ?

समाधान—एक और अनन्तानन्त अवस्थापिणों और उत्तपिणियोंके समर्थोंकी स्थापन करके और दूसरी ओर मिष्याएहि जीवोंकी शक्तिही स्थापित करके वास्तविक समर्थोंमें एक एक समय और उर्गीक साथ मिष्याएहि जीवराशिसे प्रमाणमेंसे एक एक जीव कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार उत्तरोत्तर बाधक समय और जीवराशिसे प्रमाणका कम करते हुए कबे जान पर अनन्तानन्त अवस्थापिणों और उत्तपिणियोंके सब समय समाप्त हो जान हैं परंतु मिष्याएहि जीवराशिवा प्रमाण प्रमाण नहीं होता है ।

प्रश्न—यहां पर शङ्काकारका कहना है कि मिष्याएहि जीवराशिवा प्रमाण मने ही गमन हो जाना परंतु बाधक शून्य समय समाप्त नहीं हो सकने है क्योंकि मिष्याएहि जीवराशिसे प्रमाणकी अपेक्षा बाधके समयोंका प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारसे प्रत्यक्ष बरनवाजा शून्य ही शून्यमें माना है । यह शून्य शीघ्रता है इसप्रकार शून्य पर शङ्काकार कहना है-

धम्माग्मागासा तिण्णि वि तुत्ताणि होनि पाभाणि ।

अग्नीदु जीवपोग्गकालागासा अणतगुणा ॥ १९ ॥

य एस दोसो, अदीदकालगहणादो । जहा सग्गे लाए पयो तिहा विहसो, अणागदो बहमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिप्फण्णो अणागदो णाम । पठिज्जमाणो वहुमाणा । मिप्फण्णो बज्जहारजोगो अदीदो णाम । तत्थ अदीदण पत्थण मिणिग्गंते सग्गबीजाणि । एत्थुवसहारगाहा—

पयो तिहा विहसो अणागदो बहमाणतीदो य ।

एत्थु अग्नेण दु मिणिग्गंते सग्गबीजं तु ॥ २० ॥

तथा कालो वि ति विहा, अणागदो वहुमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेण मिणि ज्जत मग्ग जीवा । एत्थुवसहारगाहा—

कालो तिहा विहसो अणागदो बहमाणतीदो य ।

एत्थु अग्नेण दु मिणिग्गंते जीवरासी दु ॥ २१ ॥

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और श्लोकाश्रय ये तीनों ही समान होते हुए लोक हैं । तथा जीवद्रव्य पुण्ड्रद्रव्य काश्रके समय और आकाशके प्रवेश, ये उत्तरोत्तर कृत्रिमी अपेक्षा समस्तगुणे हैं ॥ १९ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि मिष्टादि जीवराशिश्च प्रमाण निश्चयमेव अतः कालश्च ही ग्रहण किया है ।

त्रिसप्तप्रकार, सब श्लोकमें प्रत्य तीन प्रकारसे विभक्त हैं अनागत पतमान और वर्तित । उनमेंसे जो निष्पन्न नहीं हुआ है वह अनागत प्रत्य है, जो बनाया जा रहा है वह वर्तमान प्रत्य है, और जो निष्पन्न हो चुका है तथा उपसंहारके योग्य है वह वर्तित प्रत्य है । उनमेंसे वर्तित प्रत्यके द्वारा संपूर्ण बीज माये जात हैं । यहाँ पर हम विषयकी उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

प्रत्य तीन प्रकारका है अनागत वर्तमान और वर्तित । इनमेंसे वर्तित प्रत्यके द्वारा संपूर्ण बीज माये जाते हैं ॥ २० ॥

पक्षीप्रकार काळ भी तीन प्रकारका है अनागत वर्तमान और वर्तित । इनमेंसे वर्तित काळके द्वारा संपूर्ण जीवराशिश्च प्रमाण जाना जाता है । यहाँ पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

काळ तीन प्रकारका है अनागतकाळ वर्तमानकाळ और वर्तितकाळ । इनमेंसे वर्तित काळके द्वारा संपूर्ण जीवराशिश्च प्रमाण जाना जाता है ॥ २१ ॥

तेषु कारणेण मिच्छाहाङ्गिरासी ण अवहिरिज्जदि, सम्भ समया यवहिरिज्जति । अदीदकासो बोवो मिच्छाहाङ्गिरासी पङ्गुगो चि कथ यच्चदे ? सोलस गदिय अप्पावडु माहो । कथं सालसपडिय अप्पावडुगं ? सम्भत्यावा वडुमापडा, भ्रमवमिदिया अपत गुणा । को गुणमारो ? बहण्णत्तुपाणत्तं । मिदकासो अणत्तगुणा । को गुणमारो ? उम्मासङ्गममाणेण रुराहिएण छिप्प मदीदकासस्स अपत्तिममाणो । अणास्स अदीद कासस्स कथं पमाण ठविज्जदि ? न, अप्पाहा सस्सामापसगादो । य य अणादि चि आभिदे सादिच पावेदि, विरोहा । सिद्धा संसेज्जगुणा । को गुणमारो ? म्भसदेपुवर्च । असिद्धकासो असंसेज्जगुणो । को गुणमारो ? संसेज्जावलिपाआ । अदीदकासो विसे साहिआ । केचियमेचेण ? सिद्धकालमेचेण । भवसिद्धिया मिच्छाहाङ्गी अपत्तगुणा । को

इसलिये मिष्पाद्यदि जीवरशिक्का प्रमाण समान नहीं होता है परंतु अतीतकाखे संपूर्ण समय समान हो जाते हैं ।

शुद्धा—मूर्तिकाख स्तोक है और मिष्पाद्यदि जीवरशिक्का प्रमाण उससे अधिक है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सोछह राशिपत्त अणवडुत्पत्ते यह जाना जाता है कि अतीतराखे मिष्पाद्यदि जीवरशिक्का प्रमाण अधिक है ।

शुद्धा—सोछह राशिपत्त अणवडुत्पत्त किसप्रकार है ?

समाधान—वर्तमानकाख सरसे स्तोक है । अमन्य जीवोंका प्रमाण उससे अमन्तगुणा है । वहां पर गुणकार क्या है ? अमन्य पुत्तमन्त यहां पर गुणकाररूपसे अमीद है । अमन्यराशिसे सिद्धकाख अमन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? छह महीनोंके अष्टम भागमें एक मिद्धा देने पर जो समयसंख्या आवे उससे मन्त अतीतकाखका अमन्तका माग गुणकार है ।

शुद्धा—मूर्तिकाख भलापि है, इसलिये इसका प्रमाण कैसे स्थापित किया जा सकता है ?

समाधान—वहीं क्योंकि यदि वस्तुका प्रमाण नहीं माना जाय तो उसके नमावका प्रसंग न्य जायगा । परंतु उसके भलावित्त्वका बान हो जाता है इसलिये इसे साहित्यकी प्राप्ति हो जायगी, सो बात ही नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध जाता है ।

सिद्धकाखसे सिद्ध संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? यहां पर शतप्रघसन्नकय गुणकार देना चाहिये । सिद्ध जीवोंसे असिद्धकाख अतीतकाखगुणा है । गुणकार क्या है ? यहां पर संख्यात व्यक्तीकार्य गुणकार है । असिद्धकाखसे अतीतकाख विरोध अधिक है । कितना विरोध अधिक है ? सिद्धकाखका कितना प्रमाण है उतने विरोधसे अधिक है । अर्थात्

गुणगारा ? भवसिद्धियमिच्छाद्विपमणंतिममाणो । भवसिद्धिया विसंसाहिया । केचित्प
मचेण ? तेरसगुणद्वानमेचेण । मिच्छाद्विप विसंसाहिया । केचित्पमचेण ? तेरसगुणद्वान
मेचेण पमाणेणूण-अभवसिद्धियमेचेण । ससारत्था विसंसाहिया । केचित्पमचेण ? तेरस
गुणद्वानमेचेण । सव्वे जीवा विसंसाहिया । केचित्पमचेण ? सिद्धजीवमेचेण । पोग्गल
दम्बमणंतगुण । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणतगुणो । एसद्दा अणतगुणा । को गुण
गारो ? सव्वपोग्गलदब्बादो अणंतगुणो । सव्वद्दा विसंसाहिया । केचित्पमचेण ? बह
माणातीदक्कलमेचेण । अलोगागासमभतगुण । को गुणगारो ? सव्वकालादो अणंतगुणो ।
सव्वागामं विसंसाहिय । केचित्पमचेण ? लोगागासपदेसमेचेण । अण अदीदकालादो
मिच्छाद्विप अणतगुणा तेण सव्व समया अवहिरिन्जति मिच्छाद्विरासी ण अवहिरिन्जति

असिद्धकालसे सिद्धकालक प्रमाण मिच्छा देने पर अतीतकालक प्रमाण हो जाता है । अतीत
कालसे मध्य मिध्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मध्य मिध्यादृष्टियोंक
अनन्तता माग गुणकार है । मध्य मिध्यादृष्टियोंसे मध्य जीव विशेष अधिक हैं । कितने
अधिक हैं ? साक्षात् गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवर्गी गुणस्थानतक जीवोंक जितना प्रमाण
है उतने विशेषरूप अधिक हैं । अर्थात् मध्य मिध्यादृष्टियोंक प्रमाणमें साक्षात् आदि तेरह
गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके मिच्छा देने पर समस्त मध्य जीवोंक प्रमाण होता है । मध्य
जीवोंसे सामान्य मिध्यादृष्टि जीव विशेष अधिक हैं । कितने विशेषरूप अधिक हैं ? अमध्य
पश्चिमसे साक्षात् आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके कम कर देने पर जो राशि
अपशिष्ट रहे उतने विशेषसे अधिक हैं । अर्थात् मध्यराशिमेंसे साक्षात् आदि तेरह गुण
स्थानवालोंका प्रमाण कम करके अमध्यराशिमेंसे मिच्छा देने पर सामान्य मिध्यादृष्टि जीवोंका
प्रमाण होता है । सामान्य मिध्यादृष्टियोंसे साक्षात् जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ?
साक्षात् आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंक जितना प्रमाण है उतने विशेषसे अधिक
हैं । संसारी जीवोंसे संपूर्ण जीव विशेष अधिक हैं ? कितन अधिक हैं ? सिद्ध जीवोंक जितना
प्रमाण है उतने अधिक हैं । संपूर्ण जीवराशिसे पुद्गलद्रूप अनन्तगुणा है । यहाँ पर गुणकार
क्या है ? यहाँ पर संपूर्ण जीवराशिसे अनन्तगुणा गुणकार है । पुद्गलद्रूपसे अनागतकाल
अनन्तगुणा है । यहाँ पर गुणकार क्या है ? यहाँ पर संपूर्ण पुद्गलद्रूपसे अनन्तगुणा गुणकार
है । अनागतकालसे संपूर्ण काल विशेष अधिक हैं । कितना अधिक हैं ? वर्तमान भीर अतीत
कालमात्र विशेषसे अधिक है । संपूर्ण कालसे ऋद्धिवाश अनन्तगुणा है । यहाँ पर गुणकार
क्या है ? संपूर्ण कालसे अनन्तगुणा यहाँ पर गुणकार है । अस्तोद्यकालसे संपूर्ण आकाश
विशेष अधिक हैं । कितना अधिक हैं ? मोक्षवाशके जितने प्रवेश हैं उतना विशेषरूप
अधिक हैं । इसप्रकार इस अम्यदुस्त्वसे यह प्रतीत हो जाता है कि अतीतकालसे मिध्यादृष्टि जीव
अनन्तगुणे हैं अतः अतीतकालसे संपूर्ण समय अपहत हो जाते हैं परन्तु मिध्यादृष्टि अपराधि
अपहत नहीं होती है यह बात सिद्ध हो जाती है ।

तस्य कारणेन मिच्छाद्वादितासी न अवहितिन्द्रिय, सम्ब समया अवहितिन्द्रियति ।
अदीदकाला बोधो मिच्छाद्वादितासी यदुगो सि कष बन्धे ! सातसन्धिय अप्यावदु
गादो । कषं सोससपडिय अप्यावदुगं ! सम्बत्योवा बहुमानदा, भमममिदिया अर्णत
गुणा । को गुणगारा ! बद्धपुत्रापर्य । मिदकालो अर्णतगुणा । को गुणगारो ?
सम्मासङ्गममाणेण रूराहिएण छिप्प अदीदकालस्त अप्पतिममाणा । अणास्स अदीद
कालस्त कषं पमाण गविन्द्रिय ? न, अप्पाहा तस्सामावपसगादो । य च अणादि सि
आणिदे सादिष पावेदि, विरोहा । सिद्धा संयन्त्रगुणा । को गुणगारो ? रूपसद्वेषुष ।
असिद्धकालो संयन्त्रगुणो । का गुणगारो ? संयन्त्रावलिप्याजा । अदीदकाला विसे
सादिजा । केचित्तमेत्तेण ! सिद्धकालमेत्तेण । मवसिदिया मिच्छाद्वादि अणतगुणा । को

इसलिये मिष्साददि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है परंतु अतीतकालके
संपूर्ण समय समाप्त हो जाते हैं ।

प्रश्न—अतीतकाल स्तोक है और मिष्साददि जीवराशिका प्रमाण उससे अधिक है
यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सोसह राशिगत अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है कि अतीतकालसे
मिष्साददि जीवराशिका प्रमाण अधिक है ।

प्रश्न—सोसह राशिगत अल्पबहुत्व किस प्रकार है ?

समाधान—वतमानकाल सत्रसे स्तोक है । समन्य जीवोंका प्रमाण इससे अल्पगुणा
है । यहाँ पर गुणकार क्या है ? अल्प गुणान्त यहाँ पर गुणकाररूपसे अमीय है ।
समन्यराशिसे सिद्धकाल अल्पगुणा है । गुणकार क्या है ? छह महीनोंके अष्टम मार्गमें एक
मिथ्य वेने पर ओ समयसंख्या ब्याने उससे मध्य अतीतकालसका अल्पगुणा मार्ग गुणकार है ।

प्रश्न—अतीतकाल अणादि है इसलिये उसका प्रमाण कैसे स्थापित किया जा
सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, यदि वसका प्रमाण नहीं माना जाय तो उसके अभावका
प्रसंग न्य आपणा । परंतु इसके अनावृत्त्यका बाध हो जाता है इसलिये उसे स्मृतित्वकी
प्राप्ति हो जायगी, ओ बाध भी नहीं है क्योंकि, वेदा मार्गमें विरोध माता है ।

सिद्धकालसे सिद्ध सप्पातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? यहाँ पर शतप्रवृत्त्यका
गुणकार केना बादिने । सिद्ध जीवोंसे अतिशयकाल अल्पगुणा है । गुणकार क्या है ?
यहाँ पर सप्पात अल्पविकल्प गुणकार है । अतिशयकालसे अतीतकाल विरोध अधिक है ।
किन्ना विरोध अधिक है ? सिद्धकाल किन्ना प्रमाण है वतने विरोधसे अधिक है । अर्थात्

पत्यधनं वा पत्यपाहिरया पुरिसा पत्यपाहिरस्याणि वीयाणि मिणदि । कथं लाएण सायस्या पुरिमो लोययं मिच्छाद्विगमिं मिणदि सि ? जणे लोमेण पण्णाए मिणिज्जते मिच्छाद्विगमिं वा तणे ण एस दासा । कथं पण्णाए मिणिज्जते मिच्छाद्विगमिं वा ? सुभदे—एकस्मिं लागागासपदमे एकस्मिं मिच्छाद्विगमिं गिच्छेवित्थं एकस्मिं लोमो इति मणणं सकप्पेयम्भो । एव पुणो पुणा मिणिज्जमाणे मिच्छाद्विरासी अमंतलोगमेवो होदि । एतुबसहारगाहा—

लोगागासपदसे एकस्मिं गिच्छेवित्थं तद्दि ।

एव गणिज्जमाणे इवति लोगा अणता हु ॥ २३ ॥

को लोगा नाम ? सेविषणा । का सेवी ? सत्तरज्जुमेवायामो । का रज्जु

राशिष्य प्रमाण लोमेके द्विये अमन्त लोक होते हैं अथवा अमन्तलोकप्रमाण मिथ्याद्विगमिं वापरादि है ॥ २२ ॥

श्रद्धा—प्रत्यसे बहिर्भूत पुरुष प्रत्यसे बहिर्भूत वीर्योंको प्रत्यसे द्वारा मापता है यह तो पुष्ट है परंतु लोकके भीतर रहनेवाला पुरुष लोकके भीतर रहनेवाली मिथ्याद्विगमिं वापरादि को लोकके द्वारा कैसे माप सकता है ?

समाधान—असंख्ये बुद्धिसे संपूर्ण मिथ्याद्विगमिं वा लोकके द्वारा मापे जाते हैं, असंख्ये उपर्युक्त दोष नहीं आता है ।

श्रद्धा—बुद्धिसे मिथ्याद्विगमिं वा कैसे मापे जाते हैं ?

समाधान—लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्याद्विगमिं वा को निश्चित करके एक लोक हो गया इसप्रकार मनसे सज्जर करना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः माप करने पर मिथ्याद्विगमिं वा अमन्तलोकप्रमाण होती है । इसप्रकार बुद्धिसे मिथ्याद्विगमिं वा मापी जाती है । इस विषयको यहां पर उपसंहाररूप वाचा कहते हैं—

लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्याद्विगमिं वा को निश्चित करने पर असा अनेकदेशके देख्य हैं अस्मिन्कार पूर्वाका लोकप्रमाणके क्रमसे गणना करते जाने पर अमन्त लोक हो जाते हैं ॥ २३ ॥

श्रद्धा—लोक किसे कहते हैं ?

समाधान—आठेवीके घनको लोक कहते हैं ।

श्रद्धा—अगच्छेणी किसे कहते हैं ?

समाधान—सात न तुल्यमाण आकाश प्रदेशोंकी संख्याको अगच्छेणी कहते हैं ।

१ अमन्तलोकप्रमाण लोकाकाशो । सि ५ प ४ ४ पर लोदी इति लोमे । अ. ५ प १५

२ लोदी सि ५ प ४ ४ । होदि अनेके अनेकप्रमाणविद्वत्तल इति । सि ५ ० अमन्तलोकप्रमाण लोकाकाशो लोदी । अ. ५ प १५

चि सिद्ध । किमिह कायप्रमाण पुच्छे ? मिच्छाद्द्विरासिस्त मोक्षस्य गच्छमावर्त्तते । पश्य
सुते वि वए व बोच्छेदो होदि चि नाणावज्जह ।

स्वेत्तेण अणेतानता लोगा ॥ ४ ॥

लोकप्रमाणमुत्सविय अप्यवप्पमित्त मावपमाय किमिदि न परुविज्जदि ? तत्त
परुवजाइ मावपरुवस महत्तरमिदि न परुविज्जदे । त जहा, मावपमाण वाम नाम । त वि
पंचविह । तत्त वि एककमणयवियप्प । तत्त वि अणेगाओ विप्पडिबचीआ चि । स्वेत्तेण
कच मिच्छाद्द्विरासी मिमिज्जदे ? पुच्छे— नचा पत्तेण जव गोघृमादिरासी मिमिज्जदि
तथा लाएय मिच्छाद्द्विरासी मिमिज्जदि । एव मिमिज्जमाणे मिच्छाद्द्विरासी जवत
ओमणेचो होदि चि । एत्तुवउत्तसी गाहा—

पत्तेण कोदयेण न जह कइ मिणेज्ज सम्पवीज्ज ।

एव मिमिज्जमाणे इवति लोगा अणता हु ॥ १२ ॥

शुद्धा—यहाँ पर कदाची अपेक्षा प्रमाण किसझिये कहा गया है ?

समाधान—मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा उसारी जीवराशिका व्यय होने पर
भी मिथ्यादृष्टि जीवराशिका सर्वथा बिच्छेद नहीं होता है । इस बातका ज्ञान करानेके लिये
यहाँ पर कदाची अपेक्षा प्रमाण कहा है ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण
है ॥ ४ ॥

शुद्धा—यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका वर्णन करके अत्यवर्त्तनीय मायप्रमाणका प्रकल्प
क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणके प्रकल्प करनेकी अपेक्षा मायप्रमाणका प्रकल्प अतिबिस्तृत
है इसलिये मायप्रमाणका प्रकल्प पहले नहीं किया गया है । मायप्रमाणका प्रकल्प
अतिबिस्तृत है व्यये इसीका स्वर्णिकरण करते हैं । ज्ञानकी भावप्रमाण कहते हैं । वह भी पाँच
प्रकारका है । उन पाँच मेंमें भी प्रत्येक अनेक प्रकार है । उसमें भी अनेक बिचार हैं । इससे
सिद्ध होता है कि मायप्रमाणका प्रकल्प क्षेत्रप्रमाणके प्रकल्पकी अपेक्षा अतिबिस्तृत है ।

शुद्धा—क्षेत्रप्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि कैसे मापी गयान् जानी जाती है ?

समाधान—जिसप्रकार मत्पसे जी, गेहूँ आदिची राशिका माप किया जाता है
उसीप्रकार लोक प्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी गयान् जानी जाती है । इसप्रकार
लोकक द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका माप करने पर वह अनन्त लोकप्रमाण है । वहाँ पर इस
विषयकी उक्तयोगी गाया ही जाती है—

जिसप्रकार चौर प्रपसे कोशक समान संपूर्ण बीजोंका माप करता है उसीप्रकार
मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी छोकरे अन्यान् छोकरे प्रदेशोंसे गुणना करने पर मिथ्यादृष्टि जीव-

तिण् वादवलयाण भाहिरमागे । त एव आपिज्जदि ? ' लोको वादपदिद्धिदो ' ति मियाह पण्णवीवयणादो । सयसुरमणसमुद्वाहिरवेदिपाए परदो केसियमदाम गमूम तिरियिलोग समणी होदि ति मणिदे अससेज्जदीपसमुद्दरुद्धोपणेदितो ससेज्जगुणाणि गमूण होदि । एव कुदो जण्णेदे ? ओइसिपाण पेछप्पणंगुलसदवग्गमसमागहारपरुवसुत्तादो ,

करमसे (पहले मतके अनुसार) दूसरा अर्धच्छेद स्वयमूरमण समुद्रमें तीसरा अर्धच्छेद स्वयमूरमण द्वीपमें इसप्रकार एक एक अर्धच्छेद उत्तरोत्तर एक एक द्वीप और एक एक समुद्रमें पड़ता है । किन्तु अथवा समुद्रमें दो अर्धच्छेद पड़ेंगे । उनमेंसे पहला जेवसाव योजन भीतर जाकर और दूसरा पचास हजार योजन भीतर जाकर पड़ता है । इनमेंसे दूसरा अर्धच्छेद जम्बूद्वीपका मान लेने पर मिलने द्वीप और समुद्र है उतने अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है । अन्तमें पचास हजार योजन सञ्चल समुद्रके और इनने ही योजन जम्बूद्वीपके सब शिष्ट रहने हैं । इनको मिला देने पर एक सप्त योजन होता है । इस एक सप्त योजनके १७ अर्धच्छेद करने पर एक योजन अवशिष्ट रहता है जिसके १९ अर्धच्छेद करमसे बाद एक सप्पगुल होप रहता है । पस्यके अर्धच्छेदोंके सग प्रमाण एक सप्पगुलके अर्धच्छेद होते हैं । इसप्रकार पहले मतके अनुसार मिलने द्वीप और समुद्र हैं उनकी संख्यामें १+१७+१९=३७ अर्धच्छेद अधिक पस्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण अर्धच्छेद मिला देने पर एक के कुछ अर्धच्छेद होते हैं । तथा दूसरे मतके अनुसार इस संख्यामें सत्पात और मिला देने पर एक के संपूर्ण अर्धच्छेद होते हैं क्योंकि इस मतके अनुसार संख्यात अर्धच्छेद हो जानेके बाद स्वयमूरमण समुद्रमें अर्धच्छेद प्राप्त होता है ।

प्रश्ना—तिर्यम्बोकका अन्त कहाँ पर होता है ?

समाधान—तीनों वातपक्षोंके बाह्य भागमें तिर्यम्बोकका अन्त होता है ।

प्रश्ना—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—छोक वातपक्षोंसे प्रतिष्ठित है इस व्याप्याप्रवृत्तिके अन्तसे जाना जाता है कि तीनों वातपक्षोंके बाह्य भागमें छोकका अन्त होता है ।

स्वयमूरमण समुद्रकी बाह्य पेरिजिसे ठस और कितना स्थान जाकर तिर्यम्बोककी समाप्ति होती है ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि असत्पात द्वीपों और समुद्रोंके व्याप्तने मिलने योजन बके हुए हैं उनसे संख्यान् गुणा जाकर तिर्यम्बोककी समाप्ति होती है ।

प्रश्ना—यह किससे जाना जाता है ?

समाधान—स्योनिपी देवोंके दोसा छप्पन अगुलोंके दगमान मापाहारके प्रकरण

१ मज्झिम निक्खये वेसवज्जयनअवुल्लकीए । अ क्ख तो एही मोदिनिवदुएणं तज्जाव । ति प पर

२ १ निग्गितवज्जोवज्जाव वेसवज्जयनअवुल्लक ५ । कदिदिपदा वेसवज्जोवज्जिक्क ५ परिमत्त ॥ तो बी १४

वेसवज्जयनअवुल्लकविमानो पपरत्त । अट्ट ५, १५२ पृ १९२

नाम । तिरियलोगस्त मन्त्रिमवित्थारो । कृषं तिरियलोगस्त रुद्रधनमाणिञ्जद । अचिपाणि दीवसागररूपाणि ज्युर्दीवन्तदृशाया च म्याहियाया कर्षि च आहिरियाममुनमण सद्येभ्यरूपाहियाया विरलिय निर्ग करिय अप्पाण्यमत्तरातिगा छिण्माविमिदु गुणिदं रज्जु पिण्यज्जदि । एमा एवि सनीए सचममागो । कम्मि तिरियलोगस्त पन्धममाण ।

शंका—एतु मिसे कहते हैं ?

समाधान—नियमोक्तक मध्यम विस्तारको एतु कहते हैं ।

शंका—विषयको कही बीडारी कैसे निकाली जाती है ?

समाधान—जितना डीपों और सामग्रियों का प्रमाण है उनका तथा एक अधिक अमूर्तियोंके क्षेत्रोंको विरहित करके तथा उस विरहित राशिमें प्रत्येक एकका होकर करके पर स्वर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें अर्धच्छेद करनेके पश्चात् अर्धच्छेद राशिमें गुणित कर देने पर एतुका प्रमाण उत्पन्न होता है । अथवा जितना ही भाषायोंके उपदेशसे जितना डीपों और सामग्रियों का प्रमाण है उससे और उत्पन्न अधिक अमूर्तियोंके क्षेत्रोंको विरहित करके और उस विरहित राशिमें प्रत्येक एकको होकर करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छेद करनेके पश्चात् अर्धच्छेद राशिमें गुणा कर देने पर एतुका प्रमाण उत्पन्न होता है । यह अर्धच्छेद का सातवां भाग आता है ।

विशेषार्थ—एतुके विषयमें दो मत पाये जाते हैं । जितने ही भाषायोंका ऐसा मत है कि स्वयंमूलक सप्तम्य की बाध बेधिका पर आकर एतु समाप्त होती है । तथा जितने ही भाषायोंका ऐसा मत है कि अक्षरोंका डीपों और समुद्रोंकी बीडारीमें दके हुए क्षेत्रसे उत्पन्न गुणें योग्य आकर एतुकी समाप्ति होती है । स्वयं वीरसेन स्वामीने इस दूसरे मतको अधिक महत्त्व दिया है । उनका कहना है कि 'मोतिवियोंके प्रमाणको छाननेके लिये २५१ अनुक्तके बर्ण प्रमाण जो मागहार बताया है उससे यही पता चलता है कि स्वयंमूलक सप्तम्यसे उत्पन्न गुणें योग्य आकर ही मध्यकोकी समाप्ति होती है । इन दोनों मतोंके अनुसार एतुका प्रमाण निश्चयसे छेद लिये एतुके जितने अर्धच्छेद हों करने के पश्चात् २५१ कर परस्पर गुणा करके जो अर्ध भाग उत्पन्न करनेके अनन्तर जो भाग अर्धच्छेद हो उससे गुणा कर देना चाहिये । इस प्रकार करनेसे एतुका प्रमाण आ जाता है । जितने डीप और समुद्र हैं उनमें एक अधिक या अक्षरोंकी अधिक अमूर्तियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर एतुके अर्धच्छेद हो जाते हैं । इनके विचारनेकी प्रक्रिया इस प्रकार है—

अथसे एतुके दो भाग करना चाहिये यह प्रथम अर्धच्छेद है । अनन्तर अर्ध भाग

णाम । तिरियलागस्म मभिप्रमरित्पारो । रूप तिरियलागस्म रुदक्षयमाणिन्द्रद । अतिपापि
दीवसागररूपाणि संप्रदीप्यद्वयाभा च रूपाद्विषयाभा केमि च आश्रियापमुनरमेण
संखेय्यरूपाद्विषयाभा निरालिय निग करिय अण्णाणग्मत्पराणिणा ठिण्णाविसिद्धु गुब्बिदे
रन्नु पिप्पज्जदि । एमा एति सदीए सधममागो । एम्मि तिरियलागस्म पन्त्रयमार्त्त ।

श्रुता—रन्नु जिसे कहते हैं ?

समाधान—निष्कलोका मध्यम बिस्तारको रन्नु कहते हैं ।

श्रुता—तिरियलागस्म कीर्त्तन किसे कहानी जानी है ?

समाधान—जितना ठीपों और सागरोंका प्रमाण है उनसे तथा एक अधिक
अम्बुप्रीपके छेदोंको विरहित करने तथा उस विरहित राशिक प्रत्येक एकको वीरूप करके पर
स्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे अर्धच्छेद करने पर पदधान् अर्धशिष्ट राशिको गुणित
कर देने पर रन्नुका प्रमाण उत्पन्न होता है । अथवा जितना ही अर्धच्छेदोंके उपदेशसे जितना
ठीपों और सागरोंका प्रमाण है उसको और संवत्त अधिक अम्बुप्रीपके छेदोंको विरहित
करके और उस विरहित राशिक प्रत्येक एकको वीरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि
उत्पन्न हो उससे छेद करनेसे पदधात अर्धशिष्ट राशिको गुणा कर देने पर रन्नुका प्रमाण
उत्पन्न होता है । यह अर्धच्छेदीका सातवां माग आता है ।

विशेषार्थ—रन्नुके विषयमें जो मत पाये जाते हैं । जितने ही आचार्योंका ऐसा मत
है कि स्वयम्भूयस्य सप्तम्रकी बाध भेदिष्य पर आकर रन्नु समाप्त होती है । तथा जितने ही
आचार्योंका ऐसा मत है कि मर्त्यपात ठीपों और समुद्रोंकी कीर्त्तनसे दके हुए क्षेत्रसे संवत्त
गुण्य योजना आकर रन्नुकी समाप्ति होती है । स्वयं औरसन स्वामीने इस नुसरे मतको
अधिक महत्त्व दिया है । उनका कहना है कि "योतिर्विषोंके प्रमाणको छानेके लिये २५१
अंगुलके बर्ग प्रमाण जो मागहार बतलाया है उससे यही पता चलता है कि स्वयम्भूयस्य
समुद्रसे संवत्तगुणे योजना आकर ही मध्यच्छेदीकी समाप्ति होती है । इस दोहों मतोंके
अनुसार रन्नुका प्रमाण निकालनेके लिये रन्नुके जितने अर्धच्छेद हों उतने स्थानपर २ रत्न
कर परस्पर गुणा करके जो अल्प अल्प अर्धच्छेद करनेसे अन्तर जो माग अर्धशिष्ट रहे
उससे गुणा कर देना चाहिये । इसप्रकार करनेसे रन्नुका प्रमाण आ जाता है । जितने ठीप
और समुद्र हैं उनमें एक अधिक वा संवत्त अधिक अम्बुप्रीपके अर्धच्छेद मिला देने पर
रन्नुके अर्धच्छेद हो जाते हैं । इनके निकालनेकी प्रक्रिया इसप्रकार है—

मध्यसे रन्नुके दो माग करना चाहिये यह मध्यम अर्धच्छेद है । अनन्तर आधा आधा

१ अनेहीन इत्यत्रां रन्नु मागठ । हि. प. प. १ अनेहीनसमागो रन्नु । नि. ठ. ७.
अनेहीनस्य अन्तरात्मा अतिवा तथा । इत्यादिप्रमाणसिद्धिर्वाचीत्यदि २४ स्वरा ४४ के १ १

‘दुग्धपदुग्धो दुग्धो मितरो तिरियसोगे’ चि तिलोयपण्णसिमुत्तादो य ण्णद । न च पदं वक्खणं चित्तिपाणि दीवमागरम्भाणि अयूदीषेदणणि च स्वाहियाणि चि परियम्म सुत्तेण सह विरुज्झद, स्वेहि अहियाणि स्वाहियाणि चि गहणादो । अण्णारिय वक्खणोण सह विरुज्झदि चि न, एदस्म वक्खणस्म च भइत्तं तण वक्खणाणामाणेष विरुज्झाण पदस्स समउद्वाणाद । त वक्खणाणामासमिदि कुदो ण्णदे ? ओइसियमाग हासुत्ताणे पदइच्चविमवमाणपरुवपतिलोयपण्णसिमुत्तादो य । न च मुत्तविरुद्ध वक्खणं होइ, अहण्यसंगाद । किं च न त वक्खणं घट्टद, तम्हि वक्खणे अवलंकिज्जमाणे सेदीए सत्तममागम्हि अट्टसुण्णदसणादो । न च सेदीए सत्तममागम्हि अट्टसुण्णभो अत्ति, तद्वरियवविहायमसुत्ताणुलमादो । तदो तत्त अट्टसुण्णविगासगट्ट केत्तिएण वि रासिप्पा

सूत्रसे और निर्यम्लोक्तमें होके बगते डेकर उत्तरोत्तर नूना नूना है इस बिलोक्तप्रकृतिके सूत्रसे जाना जाता है कि असत्पात द्वीपों और समुद्रोंके व्याप्तसे हुके हुए क्षत्रसे सत्पातगुणा आकर निर्यम्लोक्तकी समाप्ति होती है । और यह व्याख्याम कितने द्वीपों और सागरोंका संख्या है और अम्लोक्तके रूपाधिक कितने क्षेत्र हैं उक्तत सूत्रके मध्यच्छेद ई परिक्रम सूत्रके इस व्याख्याके साथ भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है क्योंकि वहाँ पर रूपने अधिक सर्वात् पक्षसे अधिक ऐसा ग्रहण न करके रूपसे अधिक मध्यान् बहुत प्रमाणसे अधिक ऐसा ग्रहण किया है ।

सूत्रका — यह व्याख्याम अन्य भाषाओंके व्याख्यानके साथ तो विरोधको प्राप्त होता है ?

समाधान नहीं क्योंकि यह व्याख्यान जिसलिये संगत है इसलिये सूत्रसे व्याख्यानाभासोंसे इसके विरुद्ध पक्षों पर भी यह व्याख्यान प्रमाणरूपसे अवस्थित ही रहता है ।

सूत्रका — अन्य भाषाओंका व्याख्यान व्याख्यानाभास है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — ज्योतिषियोंके भागधारके प्रकरण सूत्रसे और बान्ध तथा सूर्यके विरमोंके प्रमाणके प्रकरण बिलोक्तप्रकृतिके सूत्रसे जाना जाता है कि पूर्वोक्त व्याख्यानके विरुद्ध जो अन्य भाषाओंका व्याख्यान पाया जाता है वह व्याख्यानाभास है । और सूत्रविज्ञ व्याख्यान हीक नहीं कहा जा सकता है अन्यथा अतिप्रसंग दोष भा जायगा । तथा वह अन्य भाषाओंका व्याख्यान धरित भी तो नहीं होता है, क्योंकि, इस व्याख्यानके अवलम्बन करने पर जगच्छेतीके सत्तम भागका जो प्रमाण बतलाया है उसके अन्तमें ब्राह्मण्य विकार हैते हैं । परंतु जगच्छेतीके सत्तम भागरूप प्रमाणमें अन्तके ब्राह्मण्य नहीं पाये जाते हैं क्योंकि अन्तमें ब्राह्मण्योके अस्तित्वका विधायक कोई सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये

१ अट्टसुण्णविगासगट्ट य इण्णेण न च उण्णामि । कपीसत्तदुत्तवज्जा तिचड्ढा होति बीरज्जाइ एवेति विरिण्णेय्यकन्नरत्तेवेहिं मक्खिए । वेत्तिण्णो कड बल वड्ढण ओइविट्ठण ॥ वेत्तिवयेत्तमि एवेति एत्ति ॥ १९ १९ १४ ॥ ति. ५ ५५ २ ।

वदामादो । एषो अरयो अश्वि पुन्नाइगियसपदायविरुद्धो तो वि संतञ्जचिबलेण अम्हेहि पन्विदो । तदो इहमित्थ वसि वेहासगादो कायव्यो, अइदियस्यविसण छदुवेत्तविपपिद शुचीर्न शिण्णयहेठपाणुवपचीदा । तम्हा उवएस छदुण विसेसणिणायो एत्थ कायव्यो वि । ऐवपमाणपरूवणं किमिह कीरदे ! असंखेच्चपदेसे लोगागासे अर्पंतलोममेचो वि जीवरासी सम्माइ पि आवावणह । अहुमु माणंसु लोमपमाणेण मिणिज्जमाणे एत्थिपलोमा होति पि आवावणह वा । तो वि से केचिया होति पि मण्णिदे एगल्लोणेण मिण्ठाइहि रासिम्हि मागे हिंदे छदुरूवमेवा लोमा होति ।

तिण्ह पि अधिगमो भावपमाण ॥ ५ ॥

धातवसयके मध्यमागमे ओ पृथिवी ई यहाँ वातवसयकी समावना है । मार इसछिये महामत्स्य वेदनासमुदायके समय इससे स्पष्ट कर सक्ता है । इसछिये स्वयमूरमण्णी बारा बेधिकाके उन और असंख्यात जीवों और समुद्रोंके व्याससे सख्यातयुगी पृथिवीके सिद्ध हो जाने पर भी वेदनासमुदायमे पीड़ित हुआ महामत्स्य वातवसयसे संसक्त होता है वेदनाग्रन्थके इस पद्यनके साथ उस पद्यनका कोई विरोध नहीं आता है ।

यद्यपि यह अथ पृथावाचक संज्ञायके विरुद्ध है तो भी भागमके व्यापारपर युक्तिके बलसे हमने (बीरलेन व्याचर्यने) इस मध्यका प्रतिपादन किया है । इसछिये यह अर्थ इसप्रकार भी हो सकता है इस विक्षयका संग्रह यहाँ पर छोड़ना नहीं चाहिये क्योंकि भर्तामित्र्य पृथावोके विषयमें छत्तरथ जीवोंके द्वारा कल्पित युक्तियोंके विक्षय रहित निर्वयके छिये देवता नहीं पाए जाते हैं । इसछिये उपदेशको ग्रस्त करके इस विषयमें विशेष निर्णय करना चाहिये ।

प्रश्न—यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किसछिये किया है ?

समाधान—असंख्यात प्रवेशी सोकाप्रमाणमें अनन्तलोकप्रमाण जीवराशि समा जाती है इस बातके ज्ञान करानेके छिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किया है । अथवा व्युत्तरके प्रमाणोंमेंसे लोकप्रमाणका द्वारा जीवोंकी गणना करने पर इतना लोक हो जाते हैं इस बातके ज्ञान करानेके छिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किया है । तो भी यह लोक कितने दान है देना पूछने पर आवाप उत्तर देने हैं कि एक लोकका अर्थात् एक लोकके जितने प्रवेश हैं उनका मिथ्याएषि जीवराशिमें मग देने पर जितनी संख्या सत्य आने साम्प्रमाण काक होते हैं ।

उपसृक्त सीनों प्रमाणोंका ज्ञान ही भावप्रमाण है ॥ ५ ॥

१ बाराओ पुन्नाइगियस पदामादो अइदियस्यविसण छदुवेत्तविपपिद शुचीर्न शिण्णयहेठपाणुवपचीदा । तम्हा उवएस छदुण विसेसणिणायो एत्थ कायव्यो वि । ऐवपमाणपरूवणं किमिह कीरदे ! असंखेच्चपदेसे लोगागासे अर्पंतलोममेचो वि जीवरासी सम्माइ पि आवावणह । अहुमु माणंसु लोमपमाणेण मिणिज्जमाणे एत्थिपलोमा होति पि आवावणह वा । तो वि से केचिया होति पि मण्णिदे एगल्लोणेण मिण्ठाइहि रासिम्हि मागे हिंदे छदुरूवमेवा लोमा होति ।

अधिगमो णाणपमाणमिदि एगद्धा । सो वि अधिगमो पंचविधो मदि सुद ओहि मणपज्जव केवलणाणभेदेण । एकेकं तिविह दम्भ-खेच-कालभेएण । दम्भरिषिसयणाण दम्भमावपमाण । खेचरिसिद्धदम्भस्स णाण खेचभावपमाण । तद्वा कालस्स वि वचण्व । सुच भावपमाण ण पुच ? ण, तस्स अणुत्तसिद्धीदे । ण च भावपमाणमंतरेण तिण्ह पमाणाण सिद्धी मघदि, सडियपमाणाभावे गउणपमाणस्सासमवादो, भावपमाण बहु वण्णनीयमिदि वा हेतुवादाहेतुवादाण अवधारणसिस्साणममावादो वा । मघवा एयं भावपमाण वचण्व । तं जहा— मिच्छाईकिरासिणा सम्भपज्जय मागे हिदे जं मागलई त मागहारमिदि कट्ट सम्भपज्जयस्सुवरि खडिद माजिद-विरलिद अवहिदाणि वचण्वाणि । त जहा— सम्भपज्जय मागहारमघे खडे कदे उत्त एगखडपमाणं मिच्छाईकिरासी हादि । खंडिद गद । तेणेव मागहारेण सम्भपज्जय मागे हिदे मागलडपमाणं मिच्छा ईकिरासी होदि । माजिद गद । तं जेव मागहारं विरलदूण सम्भपज्जयं समखंडं कडूण

अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों एकचरित्रवाची शब्द हैं । वह ज्ञानप्रमाण मी मतिज्ञान भूतज्ञान अपधिज्ञान मनापर्ययज्ञान और केवलज्ञानके भेदसे पांच प्रकारका है । तथा उन पाँचोंमेंसे प्रत्येक ज्ञानप्रमाण द्रव्य सब और कालके भेदसे तीन तीन प्रकारका है । उन तीनोंमेंसे द्रव्योंके अस्तित्व विषयक ज्ञानको द्रव्यभावप्रमाण कहते हैं । क्षेत्रविशिष्ट द्रव्यके ज्ञानको क्षेत्रभावप्रमाण कहते हैं । इसीप्रकार काळमात्रप्रमाणके विषयमें मी ज्ञानका बाहिये ।

शंका — सूत्रमें भावप्रमाणका उक्तन कथन नहीं किया है ।

समाधान—नहीं क्योंकि उक्तकी बिना कोई ही सिद्धि हो जाती है । दूसरे भाव प्रमाणक बिना होय तीन प्रमाणोंकी सिद्धि मी नहीं हो सकती है क्योंकि योग्य मयान् मुख्य प्रमाणके समाधमें गौणप्रमाणका होना असम्भव है । अथवा भावप्रमाण बहुवचनीय है अथवा हेतुवाद और अहेतुवादके मयधारण करनेवाले शिष्योंका समाध होनेसे सूत्रमें स्वतन्त्ररूपसे भावप्रमाणका कथन नहीं किया है ।

अथवा इस भावप्रमाणका कथन करना चाहिये । वह इस प्रकार है मिथ्यादृष्टि जीवरक्षिका संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भाग छद्म भावे उसे मागहाररूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंके ऊपर अन्तिम माहित विरक्षित और मपडन इनका कथन करना चाहिये । भागे ऊर्ध्वी चार्त्तका स्पर्शीकरण करते हैं—

संपूर्ण पर्यायोंके मागहारप्रमाण बाँड करने पर जितने खंड भावें उनमेंसे एक छद्मका जितना प्रमाण हो तन्मात्र मिथ्यादृष्टि जीवरक्षि होती है । इसप्रकार खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ ।

पूर्वोक्त मागहारका ही संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो मज्जनक छद्म भावे वक्ष्यमाण मिथ्यादृष्टि जीवरक्षि होती है । इसप्रकार मासितका वर्णन समाप्त हुआ ।

पूर्वोक्त मागहारको ही विरक्षित करके और उस विरक्षित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर

ब्रह्माणादो । एते अतो अग्निं पुण्याहरियसपदायविरुद्धो तौ पि रतञ्जुचितवसेन अम्हर्हि परुषिदो । तदो इदमित्थ वेति जेहासगहो कायग्नो, अर्हदियत्यविसए छद्दुवेत्यवियप्पिइ शुचीं विष्ण्ययेहत्तामुवपत्तीइ । तम्हा उवएम् छद्दुण विसेसपिण्ययो एव कायग्नो सि । सेत्तपमागपरूवण किमहं कीरदे ! असरेज्जवदेसे लोगागासे अणत्तोगमेत्तां वि जीवरासी सम्माइ पि आणावणइ । अद्दुसु माणेसु लोगपमाणेण मिपिञ्जमाणे पत्तियसेमा होति पि आणावणइ वा । तां वि स केचिया होति पि मज्झिदे पगल्लोगेण मिच्छाअड्ढि राभिन्दि मागे हिदे छद्दुरूवमेत्ता लोगा होति ।

तिण्हं पि अधिगमो भावपमाण ॥ ५ ॥

वातवज्रके मध्यमागमें जो पृथिवी है वहाँ वातवज्रकी समायना है । और इसलिये महामास्य वेदनासमुदायके समय उससे स्पर्श कर सकता है । इसलिये स्वयम्भूरमजकी बारा बेजिराके उस ओर असंख्यात जीवों और समुद्रोंके व्याससे सबवातगुणी पृथिवीके सिद्ध हो जाने पर भी वेदनासमुदायसे पीड़ित हुआ महामास्य वातवज्रके संसक्त होता है । वेदनास्यके इस पक्षके साथ उक्त कथनका कोई विरोध नहीं जाता है ।

यद्यपि यह अर्थ पृथाचार्योंके सम्प्रदायके विरुद्ध है तो भी आगमके आधारपर मुक्तिके बखसे हमने (भीरसेन आचार्यने) इस अर्थका प्रतिपादन किया है । इसलिये यह अर्थ इसप्रकार भी हो सकता है । इस विक्षयका समग्र यहाँ पर छोड़ना नहीं चाहिये क्योंकि अतीन्द्रिय पक्षोंके विषयमें छद्मस्य जीवोंके द्वारा वसित मुक्तिवर्षोंके विक्षय रहित निर्णयके लिये हेतुता नहीं पाई जाती है । इसलिये उपदेशको प्राप्त करके इस विषयमें विशेष निर्णय करना चाहिये ।

सुंका—यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किसलिये किया है ?

समाधान—असंख्यात प्रवेशी लोककाशमें अनन्तक्षेत्रप्रमाण जीवराशि समा अती है इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किया है । अथवा मातृ प्रकाशके प्रमाणोंमेंसे लोकप्रमाणके द्वारा जीवोंकी गणना करने पर इतने लोक हो जाते हैं इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका प्रकरण किया है । तो भी वे लोक कितने होते हैं ऐसा पूछने पर व्याचार्य उत्तर देते हैं कि एक लोकका अर्धात् एक लोकके अन्तरे प्रवेश है अन्तर्ग मिष्याद्यपि जीवराशिमें भय देने पर अितनी संख्या कल्प आये तत्प्रमाण लोक होते हैं ।

उपर्युक्त तीनों प्रमाणोंका ज्ञान ही भावप्रमाण है ॥ ५ ॥

१ मातृको पुष्पेतिवदेनेन ब्रह्मणो तन्मुरववादिस्तेष्वस्य बक्षिरे ममि कोक्कात्तीइ तामने पुणीओ । तव शिन्वेकवतसेन वेवत्तपूवज्जेन तदुत्तरी आण कोक्कात्तीइ वादिस्तेषो क दो सि वच इदि ।
अनङ्क ५१ ८८९

दिवा तस्य बहुलं दानि प्लोष्ठिय एगर्गद्वगदिद मिच्छाद्विरासिपमाण होदि । विरतिद गद । त च मागहार सलागभूद ठवेदूण मिच्छाद्विरासिपमाण सम्बपन्नए अवहिरिज्जदि सलागादा एगरूवं अवणिज्जदि । पुणो मिच्छाद्विरासिपमाण सम्बपन्नयम्मि अवहिरि ज्जदि, सलागादो एग रुबमवणिज्जदि । एव पुणो पुवा कीरमाणे सम्बपन्नओ व सला गाओ च शुगवं पिड्डिशात्रा । तस्य एगवारमवहारिदपमाणं मिच्छाद्विरासी हादि । अवहिरिद गदं । मिच्छाद्विरासिस्स पमाणविसए सोदत्ताणं पिच्छपुप्पायणं मिच्छाद्वि रासिस्स पमाणपरूवणं वग्गहुणे रंदिद माविद-विरासिद अवहिरिद-पमाण-कारण-गिरुचि विपणहि वचइस्सामा । सुचामार कथमद पुचदे ? सुचेण सविदत्तादो । तं सहा—

मिद्धेरेसपुण्णहानपमाण मिच्छाद्विरासिमाविदसिद्धेरेसपुण्णहानपमाणवग्ग व

संपूर्ण पर्यायोंके समान कण्ड करके देवपक्ष दे देने पर तनमेंसे बहुत खण्डोंको छोड़कर और एक खण्डक ग्रहण करने पर मिथ्यादष्टि जीवराशिष्य प्रमाण होता है । इसप्रकार विरहितता वर्जन समाप्त हुय्य ।

उसी मागहारको शाखास्वरूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंमेंसे मिथ्यादष्टि जीव राशिष्ये प्रमाणको कम करना चाहिये एकवार कम किया इसलिये शाखास्वराशिमेंसे एक प्रमा णा चाहिये । वृक्षरीषार मिथ्यादष्टि जीवराशिष्ये प्रमाणको दोन संपूर्ण पर्यायोंमेंसे घटा देना चाहिये । वृक्षरीषार मिथ्यादष्टि जीवराशिष्ये प्रमाणको कम किया इसलिये शाखाका राशिमेंसे एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुन पुन करने पर संपूर्ण पर्यायों और उसीप्रकार शाखाका राशि शुगण्ण समाप्त हो जाती है । यहाँ पर संपूर्ण पर्यायोंमेंसे कितना प्रमाण एकवार घटाया गया है तत्प्रमाण मिथ्यादष्टि जीवराशि होती है । इसप्रकार अपहृतक कथन समाप्त हुय्य ।

जब भागे मिथ्यादष्टि जीवोंकी राशिष्ये विनयमें भोलायोंको मिद्धव उत्पन्न करानेक लिये पर्यस्पातमें गृहित मारिज्ज, विरसित अपहण प्रमाण कारण निवृत्ति और विकल्पके द्वारा मिथ्यादष्टि जीवराशिष्ये प्रमाण बतलाते हैं ।

प्रश्न—यगस्थानमें कज्जित आदिष्ये द्वारा मिथ्यादष्टि जीवराशिष्ये प्रमाणका प्रत्यक्ष रूप नहीं होने पर इसका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—रूपने गृहित होनेके कारण इसका कथन किया है जो इसप्रकार है—

मिद्ध और गाम्माद्वगम्यदष्टि आदि नेरह गुणस्थानपत्ती जीवराशिष्ये तथा सिद्ध और तरह शुक्लगावर्णी जीवराशिष्ये वगमें मिथ्यादष्टि जीवराशिष्ये प्रमाणका भाग देने पर

दिश्य तस्य बहुसंख्यापि प्लवङ्गि एगखञ्जहिदे मिच्छाङ्कुरासिपमाण होदि । विरस्तिद गद । त च व मागहारं सलागभूद ठवेदूष मिच्छाङ्कुरासिपमाण सम्बपञ्जप अवहिरिजदि, ससामादो एगरुर्ब अवणिञ्जदि । पुषा मिच्छाङ्कुरासिपमाणं सम्बपञ्जयमि अवहिरि ज्जदि, ससमादो एग ख्वमवणिञ्जदि । एव पुषो पुषो कीरमाणे सम्बपञ्जजो व सला गाजो च शुगव निङ्किराजो । तस्य एगवारमवहारिदपमाणं मिच्छाङ्कुरासी होदि । अवहिदे गद । मिच्छाङ्कुरासिस्त पमाणविसए सोदाराण मिच्छपुण्यापण्डं मिच्छाङ्कुरासिस्त पमाणपरूवणं वगगुणे छंदिद मासिद-विरस्तिद-अवहिद-पमाण-कारण-विस्ति-वियप्यदि वचइस्सामो । सुचामावे कवमेद दुषदे ? सुचेन सविदपादो । तं जहा—

सिद्धतेरसगुणद्वानपमाण मिच्छाङ्कुरासिमासिदसिद्धतेरसगुणद्वानपमाणवगं च

संपूर्ण पर्यापोंके समान कष्ट करके देयकपसे दे देने पर इनमेंसे बहुत खर्चोंको छोड़कर भीर एक कष्टके प्रहण करने पर मिष्याद्यदि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार विरक्षितका वर्जन समान हुमा ।

बसी भागहारको शस्त्राक्षरपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यापोंमेंसे मिष्याद्यदि जीवराशिके प्रमाणको कम करना चाहिये एकवार कम किया इसकिये शस्त्राक्षराशिकेमेंसे एक घटा देना चाहिये । दूसरीवार मिष्याद्यदि जीवराशिके प्रमाणको होय संपूर्ण पर्यापोंमेंसे घटा देना चाहिये । तृतीयवार मिष्याद्यदि जीवराशिके प्रमाणको कम किया इसकिये शस्त्राक्षराशिकेमेंसे एक भीर कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुन पुनः करने पर संपूर्ण पर्यापों भीर तलीप्रकार शस्त्राक्षराशि सुपपन्न समाप्त हो जाती हैं । यहां पर संपूर्ण पर्यापोंमेंसे कितना प्रमाण एकवार बढ़ाया गया है तत्प्रमाण मिष्याद्यदि जीवराशि होती है । इसप्रकार अपहृतका कथन समाप्त हुआ ।

अब आगे मिष्याद्यदि जीवोंकी राशिके नियममें धोताभोंको निश्चय उत्पन्न करावेके सिधे बमवधानमें तद्विहत भाजित विरक्षित अपहृत प्रमाण कारण निश्चि भीर विरक्षयके द्वारा मिष्याद्यदि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं ।

प्रश्न—वर्गस्थानमें विरक्षित भाजिके द्वारा मिष्याद्यदि जीवराशिके प्रमाण प्रत्यक्ष सुत्र नहीं होने पर इसका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—सूत्रसे सूचित होनेके कारण इसका कथन किया है जो इत्याकार है—

सिद्ध भीर शास्त्राक्षरमध्यद्यदि भादि तेरह गुणस्थानवती जीवराशिके तथा भिन्न भीर तेरह गुणस्थानवती जीवराशिके वर्गमें मिष्याद्यदि जीवराशिके प्रमाणका घाम देने पर

होदि । विरलित्वा गद । तं चेष धुवरासिं ससागमूद ठवेऊण मिच्छाद्विहारासिपमाण
सम्पञ्जीवरासिउपरिमवगगग्निह अवणीय धुवरासीदो एगस्वमवणिज्जदि । पुणो वि मिच्छा
द्विहारासिपमाण सम्पञ्जीवरासिउपरिमवगगग्निह अवणीय धुवरासीदो एग स्वमवणिज्जदि ।
एवं पुणा पुणो कीरमाणे सम्पञ्जीवरासिउपरिमवगगो च धुवरासी च शुगव विट्ठिदा ।
तत्थ एगवारमवणिदपमाणं मिच्छाद्विहारासी होदि । जवहिद् गद । तस्स पमाण
केविणं ? सम्पञ्जीवरासिम् अणठा मागा अण्ठाणि सम्पञ्जीवरासिपडमवगगमूलाणि वि ।
तं जहा—

सम्पञ्जीवरासिपडमवगगमूल विरलऊण एकेकस्म रुवस्स सम्पञ्जीवरासिं समल्लह

अन्तः एक गेड १३ प्रमाण मिथ्याददि जीवराशि दुर ।

पूर्वोक्त ध्यराशिको शास्त्राकारूपसे स्थापित करके और मिथ्याददि जीवराशिके
प्रमाणको संतुल्य जीवराशिके उपरिम पर्यंके प्रमाणमेंसे निष्कासकर शानाकाभूत ध्यराशिके
एक कम कर देना चाहिये । फिर भी मिथ्याददि राशिक प्रमाणको दोष संतुल्य जीवराशिके
उपरिम पर्यंके प्रमाणमेंसे स्पष्ट करके ध्यराशिके एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार
धुनः पुनः करने पर संतुल्य जीवराशिका उपरिम पर और ध्यराशि युगपत् समाप्त हो जाती
है । इसमें एकवार निष्कासी दुर रा शकः जितना प्रमाण हो उतनी मिथ्याददि जीवराशि है ।
इसप्रकार जगदलका यत्न समाप्त हुआ ।

उद्धारण (अन्तः)—

शास्त्राकारूप ध्यराशि	१	१३	जीवराशिका उपरिम पर	२१
	-१			-१३
	१८१३			२४३
	-१			-१३
	१७१३			२३

इस समय उपरिम पर्यंके मिथ्याददि राशिका प्रमाण और ध्यराशिकेमेंसे एक एक
प्रदाने जाने पर शास्त्राकाराशि और उपरिम परराशि एक साथ समाप्त होगी । इसमें एकवार
घटार जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिथ्याददि है ।

प्रश्न—इस मिथ्याददि जीवराशिका प्रमाण कितना है ?

प्रमाण—संतुल्य जीवराशिक अन्तः बहुधाप्रमाण मिथ्याददि जीवराशिका प्रमाण
है जो प्रमाण संतुल्य जीवराशिके अन्तः प्रथम प्रमाणको बताकर होता है । उक्तका स्पष्टीकरण
इसप्रकार है—

संतुल्य जीवराशिक प्रथम प्रमाणको विरलित करने और उक्त विरलित राशिक प्रमाण

फाल्गुन दिग्मे रूवं पठि सञ्चजीवरासिपठमवगमूलप्रमाण पानदि । पुणो सिद्धतेरसगुण
 द्वाणेहि भविदसञ्चजीवरासिपठमवगमूल पुण्वविरलणाए हृष्टा विरलिय उषरिमविरलणाए
 एगपठमवगमूल भेत्तुण समसंख करिय दिग्मे रूवं पठि सिद्धतेरसगुणद्वानप्रमाण
 पावेदि । तत्पुषरिमविरलणयस्त्वृणमेवसञ्चजीवरासिपठमवगमूलाणि रूवृणहेट्टिमविर
 लणमेवसिद्धतेरसगुणद्वानप्रमाणाणि च भेत्तुण मिच्छादट्टिरासी होदि । प्रमाण गद । केण
 कारणेण ? सञ्चजीवरासिणा सञ्चजीवरामिठवरिमवगमे भागे हिदे किमागच्छदि ? सञ्च

एकक ऊपर जीवराशिओ समान लण करके वेयरूपसे वे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति संपूर्ण जीवराशिका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । अनन्तर सिद्धराशि और सासादन
 भावि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो
 सञ्च भावे डले पड़से विरलनके नीचे विरलित करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त
 संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करके और उसके समान दाण्ड करके अथस्तन
 विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर वेयरूपसे स्थापित करने पर प्रत्येक एकके प्रति सिद्धराशि और
 सासादन भावि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर उपरिम
 विरलनमें प्रत्येक किये गये संपूर्ण जीवराशिका एक कम प्रथम वर्गमूलको और एक कम
 अथस्तन विरलनमात्र सिद्ध और सासादन भावि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको मिला
 देने पर मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (प्रमाण)— जीवराशि = ११, प्रथम वर्गमूल = ४ सिद्धतेरस = ३

(१ विरलन वर्गमूल) $\frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} = १$ सिद्धतेरसका प्रथम वर्गमूलमें
 भाग देने पर लब्ध

(२ विरलन) $\frac{३}{१} \frac{३}{१} \frac{३}{१}$

(अतः मिथ्यादष्टि राशिका प्रमाण प्रथम विरलनकी दोष तीन राशियाँ ४+४+४=१२
 और दूसरे विरलनमें प्रथम राशि (सिद्धतेरस) को छोड़कर दूसरी राशि १ मिला देने पर
 मिथ्यादष्टि राशिका प्रमाण १२+१=१३ मा जाता है ।)

किस कारणसे ?

जुका—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी
 राशि आती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
 संपूर्ण जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण (बीजगणितसे)—जीवराशि = क, $\frac{क}{क} = क$

होदि । विरतिर्द गद । तं चेव धुवरासि सलागभूद ठवेळण मिच्छाइहिरासिपमाण सम्बजीवरासिउपरिमवग्गमिह अवणीय धुवरासीदो एग रूवमवणिज्जदि । पुणो वि मिच्छा इहिरासिपमाण सम्बजीवरासिस्तुपरिमवग्गमिह अवणीय धुवरासीदो एग रूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणा कीरमाणे सम्बजीवरासिउपरिमवग्गो च धुवरासी च सुगव मिट्ठिहा । तस्य एमवारमवणिहपमाण मिच्छाइहिरासी होदि । अवहिद गद । तस्त पमाण कपियं ? सम्बजीवरासिस्तु अर्थता माया अणतापि सम्बजीवरासिपढमवग्गमूलाभि चि । तं जहा—

सम्बजीवरासिपढमवग्गमूल विरत्तज्ज एवेकस्म रुवस्त सम्बजीवरासि समलेद

अतः एक लीड १३ प्रमाण मिष्यादधि जीवराशि हुई ।

पूर्वोक्त धुवराशिको शब्दाकारूपसे स्थापित करके और मिष्यादधि जीवराशिके प्रमाणको संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे निष्कासकर शब्दाकारूपमें धुवराशिकेसे एक कम कर देना चाहिये । फिर भी मिष्यादधि राशिक प्रमाणको दोष संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे स्थूल करके धुवराशिकेमें एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग और धुवराशि सुगपत् समाप्त हो जाती है । इसमें एकवार निष्कासी हुई राशिका अतना प्रमाण हो गतनी मिष्यादधि जीवराशि है । इसप्रकार अपहृतक्य वर्जन समाप्त हुआ ।

उद्धारण (अपहृत)—

शब्दाकारूप धुवराशि १९११	जीवराशिका उपरिम वर्ग २५६
-१	-१३
१८११	२४३
-१	-१३
१७११	२३०

इस क्रमसे उपरिम वर्गमेंसे मिष्यादधि राशिक प्रमाण और धुवराशिकेमेंसे एक एक घटाते जाने पर शब्दाकाराशि और उपरिम वर्गराशि एक साथ समाप्त होंगे । इनमें एकवार घटाई जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिष्यादधि है ।

प्रश्न—किस मिष्यादधि जीवराशिका प्रमाण कितना है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके जलमत बहुभागप्रमाण मिष्यादधि जीवराशिका प्रमाण है जो प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके जलमत प्रथम वर्गमूलोंके बराबर होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको विरचित करके और इस विरचित राशिक प्रत्येक

काठ्ण दिग्णे रूवं पठि सन्वजीवरासिपदमवगमूलपमाण पावेदि । पुणो सिद्धतेरसगुण
 द्वाणेहि मज्झिमसन्वजीवरासिपदमवगमूल पुण्यविरलणाए हेत्वा विरलिय उवरिमविरलणाए
 एगपदमवगमूल पेत्तूण समखंड करिय दिग्णे एव पठि सिद्धतेरसगुणद्वानपमाण
 पावेदि । तत्पुवरिमविरलयस्सूषमेत्तसन्वजीवरासिपदमवगमूलाणि रूवूणहेत्विमविर
 लमेत्तसिद्धतेरसगुणद्वानपमाणाणि च पेत्तूण मिच्छाशब्दिरासी होदि । पमाण गद । केण
 कारणेण ? सन्वजीवरासिणा सन्वजीवरासिउवरिमयग्गे भागे हिंदे किमागच्छति ? सन्व

एकके ऊपर जीवराशिके समान लण्ड करके वेयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति संपूर्ण जीवराशिका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । अनन्तर सिद्धराशि और सासाधन
 भादि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो
 लब्ध मध्ये उल्लेख पहले विरलनके नीचे विरलित करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त
 संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलके ग्रहण करके और उसके समान लण्ड करके अथस्तन
 विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर वेयरूपसे स्थापित करने पर प्रत्येक एकके प्रति सिद्धराशि और
 सासाधन भादि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर उपरिम
 विरलनमें प्रकृष्ट किये गये संपूर्ण जीवराशिके एक कम प्रथम वर्गमूलको और एक कम
 अथस्तन विरलनमात्र सिद्ध और सासाधन भादि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको मिला
 देने पर मिष्टादिपि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (प्रमाण)— जीवराशि = १२, प्रथम वर्गमूल = ४, सिद्धतेरस = ३

(१ विरलन वर्गमूल) $\frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \quad \frac{३}{२} = \frac{११}{२}$ सिद्धतेरसका प्रथम वर्गमूलमें
 भाग देने पर लब्ध

(२ विरलन) $\frac{३}{१} \frac{१}{१}$
 $\frac{३}{१}$

(मतः मिष्टादिपि राशिका प्रमाण प्रथम विरलनकी ओर तीन राशियाँ ४+४+४=१२
 और दूसरे विरलनमें प्रथम राशि (सिद्धतेरस) को छोड़कर दूसरी राशि १ मिला देने पर
 मिष्टादिपि राशिका प्रमाण १२+१=१३ आ जाता है ।)

किस कारणसे ?

शुद्ध—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी
 राशि जाती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
 संपूर्ण जीवराशि ही जाती है ।

उदाहरण (बीजगणितसे)—जीवराशि = ५, $\frac{५}{५} = ५$

जीवरासी चर आगच्छति । तुमागम्भयसम्भवीरासिणा सम्भवीवरासिउपरिमवगे मागे हिदे किमागच्छति ? तिमागहीणसम्भवीवरासी आगच्छति । कण कारमेय ? सम्भवीवरासिभग्नगच्छ पुम्भावागयामण तिण्य रवडावि करिय तत्पगच्छ रेतून रूढ करिय सधिदे सम्भवीवरासिदुमागवित्थार बेति । मागायामगच्छ हादि । एद अधिय विरलगाए विण्णे एदेकस्स सस्स तिमागहीणसम्भवीवरासी पावेदि । तिमागम्भय सम्भवीवरासिणा सम्भवीवरासिउपरिमवग मागे हिदे किमागच्छति ? अठम्मागहीण

(अकगणितसे)— $२५ - १६ = ९$

छंका—तृतीय भाग अधिक संपूर्ण जीवराशि का संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जीवरासी बाशि माती है ?

समाधान—तीसरा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि माती है ।

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{५}{५ + \frac{५}{२}} = \frac{२}{३} ५ = ५ - \frac{५}{३}$

(अकगणितसे)— १६ का तृतीय भाग ५ है। अतः द्वितीय भाग ८ अधिक $१६ = २४$ का २५६ में भाग देने पर $१०\frac{२}{३}$ माता है जो जीवराशि १६ का तीसरा भाग हीन है ।

छंका—तृतीय भाग अधिक संपूर्ण जीवराशि का संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीसरा भाग हीन जीवराशि किस कारणसे माती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और जीवराशिवर्ग पश्चिमके विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक खंड ग्रहण करने बचके भी दो खंड करके संघटित वर्गात् प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिका तृतीय भागरूप विस्तार जाना जाता है । यही मागायाम क्षेत्र है । इससे अधिक विरलगाए राशिके प्रत्येक एकके ऊपर वेयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति तीसरा भागहीन संपूर्ण जीवराशि प्राप्त होती है ।

छंका—तीसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या भवता है ?

समाधान—जीवा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि माती है । यहां पर भी चारखण्ड पाहनेके समान कष्ट करना चाहिये । अर्थात् संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और पश्चिम विस्तारसे चार खंड करके और उनमेंसे एक खंडके तीन खंड करके प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिका तीसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । अन्तर्गत एक वर्गोंके

		अ
		ब
१	२	अ । ब

सम्बन्धीवरासी आगच्छति । एतत् वि कारणं पुन्यं च वसन्तम् । एव संखेज्जमागम्भहिय
सम्बन्धीवरासिणा तस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे किमागच्छति ? संखेज्जमागम्भहियसम्बन्धीव
रासी आगच्छति । उक्त्तसंखेज्जमागम्भहियसम्बन्धीवरासिणा तदुवरिमवग्गे मागे हिदे
किमागच्छति ? अहण्णपरिचासंखेज्जमागम्भहियसम्बन्धीवरासी आगच्छति । असंखेज्जमाग
म्भहियसम्बन्धीवरासिणा तदुवरिमवग्गे माग हिदे किमागच्छति ? असंखेज्जमागम्भहिय
सम्बन्धीवरासी आगच्छति । उक्त्तसंखेज्जमागम्भहियसम्बन्धीवरासिणा तदु
वरिमवग्गे मागे हिदे किमागच्छति ? अहण्णपरिचासंखेज्जमागम्भहियसम्बन्धीवरासी आगच्छति ।

अधिक विवरण राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दे देने पर नीचा माग हीन संपूर्ण जीवराशि
भा जाती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{k}{k + \frac{k}{2}} = \frac{2}{3} \quad k = k - \frac{k}{3}$$

(अन्तर्गणितसे) — (१६ का तीसरा भाग $5\frac{1}{3}$ है अतः तृतीय भाग $5 + 1\frac{1}{3} = 6\frac{1}{3}$
का २ ६ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो जीवराशि १६ का नीचा माग हीन है ।)

प्रश्न—इसीप्रकार संख्यातर्का माग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके
उपरिम वर्गमें माग देने पर क्या आता है ?

समाधान — संख्यातर्का मागहीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{k}{k + \frac{k}{n}} = \frac{n}{n+1} \quad k = k - \frac{k}{n+1} \quad (\text{संख्यातर्क} = n)$$

प्रश्न—उत्तरूप संख्यातर्का माग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके
उपरिम वर्गमें माग देने पर क्या आता है ?

समाधान — अक्षय्य परीतासंख्यातर्का माग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

प्रश्न—असंख्यातर्का माग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम
वर्गमें माग देने पर क्या आता है ?

समाधान — असंख्यातर्का माग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

प्रश्न—अक्षय्य असंख्यातर्कासंख्यातर्का माग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीव
राशिके उपरिम वर्गमें माग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान — अक्षय्य परीतासंख्यातर्का माग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

जीवरासी बंध आगच्छति । दुर्मागम्भद्वियसम्भजीवरासिना सम्भजीवरासिउपरिमर्गगे
मागे द्विदे किमागच्छति ? विमागहीनसम्भजीवरासी आगच्छति । कथं कारणम् ?
सम्भजीवरासिभग्नकटेष पुष्पावरायामण तिष्ठि खंडाणि करिष्य सत्यगखंड देह्य
खंड करिष्य सभिदे सम्भजीवरासिदुर्मागावित्त्वार वेति । मागायामण्य इति । पदं अभिय
विरुध्नाप दिन्ने पदद्वयस्य रूपस्य विमागहीनसम्भजीवरासी पावेति । विमागम्भद्विय
सम्भजीवरासिना सम्भजीवरासिउपरिमर्गगे माग द्विदे किमागच्छति ? चउम्मागहीन-

(अकगणितसे)—२ ६ + १९ = १९

श्रुति—दूसरा माग अधिक संपूर्ण जीवरासिना संपूर्ण जीवरासिके उपरिमर्गगे
माग देने पर जीवरासी पाति जाती है ।

समाधान—तीसरा माग हीन संपूर्ण जीवरासि जाती है ।

उदाहरण (जीवगणितसे)— $\frac{क}{क + \frac{क}{२}} = \frac{२}{१} क = क - \frac{क}{१}$

(अकगणितसे)—१९ का दूसरा माग ८ है, अतः द्वितीय माग ८ अधिक १९ = २७ का
२७ में माग देने पर १ ३ आता है जो जीवरासि १९ का तीसरा माग हीन है ।

श्रुति—दूसरा माग अधिक संपूर्ण जीवरासिका संपूर्ण जीवरासिके उपरिमर्गगे
माग देने पर तीसरा माग हीन जीवरासि किस कारणसे जाती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवरासिके वर्गकूप क्षेत्रके पूर्व और जीवरासिवर्ग
परिधयके विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक कण ग्रहण १
करके उसके मी दो खंड करके संयुक्त मर्णात् प्रसारित कर देने पर २
संपूर्ण जीवरासिका दूसरा मागम्भ विस्तार आता जाता है । यही ३
मागयाम्भ क्षेत्र है । इससे अधिक विस्तार पाशिके प्रत्येक एकके ऊपर हेमकूपसे देने पर
प्रत्येक एकके प्रति तीसरा मागहीन संपूर्ण जीवरासि प्राप्त होती है ।

श्रुति—तीसरा माग अधिक संपूर्ण जीवरासिका संपूर्ण जीवरासिके उपरिमर्गगे
माग देने पर क्या आता है ?

समाधान—चौथा माग हीन संपूर्ण जीवरासि जाती है । यहाँ पर मी कारणका
पक्षके समान बंधन करना चाहिये । मर्णात् संपूर्ण जीवरासिके वर्गकूप क्षेत्रके पूर्व और
परिधय विस्तारसे चार खंड करके और उनमेंसे एक कण के तीन खंड करके प्रसारित कर
देने पर संपूर्ण जीवरासिका तीसरा मागम्भ विस्तार आता जाता है । अन्तर्गत इन खण्डोंको

सम्बन्धीवरासी आगच्छति । एतस्य वि कारण पुत्र व वत्तर् । एव संखेज्जमागन्महिय सम्बन्धीवरासिणा तस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे किमागच्छति ? संखेज्जमागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । उद्धस्ससंखेज्जमागन्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुवरिमवग्गे मागे हिदे किमागच्छति ? अहण्णपरिघासंखेज्जमागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । असंखेज्जमागन्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुवरिमवग्गे मागे हिदे किमागच्छति ? असंखेज्जमागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । उद्धस्स-असंखेज्जमागन्महियसम्बन्धीवरासिणा तदुवरिमवग्गे मागे हिदे किमागच्छति ? अहण्णपरिघातमागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति ।

अधिक विरहण राशिने प्रत्येक एकके ऊपर हे देने पर बीया भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} - \frac{k^2}{k + \frac{k}{2}} = \frac{2}{3} k = k - \frac{k}{3}$$

(अजगणितसे) — (१६ का तीसरा भाग $5\frac{1}{3}$ है अतः तृतीय भाग $\frac{1}{3} + 16 = 16\frac{1}{3}$ का $25\frac{1}{3}$ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो जीवराशि १६ का बीया भाग हीन है ।)

शुद्धा—इसीप्रकार संप्रयातर्वा भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — संवशातर्वा भागहीन सपूर्ण जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} - \frac{k}{k + \frac{k}{n}} = \frac{n}{n+1} k = k - \frac{k}{n+1} \text{ (संप्रयात = } n \text{)}$$

शुद्धा—उद्धस्स संप्रयातर्वा भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — अयम्य परीतासंप्रयातर्वा भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आती है ।

शुद्धा—असंप्रयातर्वा भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — असंप्रयातर्वा भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आती है ।

शुद्धा—उद्धस्स असंप्रयातर्वाभागाभागाभागा भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देने पर बीजसी राशि आती है ?

समाधान — अयम्य परीतान्तरवा भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आती है ।

जीवरासी चर आगच्छति । दुभागमद्वियसम्बन्धीवरासिणा सम्बन्धीवरासिउपरिमन्त्रमागे हिदे किमागच्छति ? विभागहीणसम्बन्धीवरासी आगच्छति । केन कारणेन ? सम्बन्धीवरासिबग्नश्चेत् पुण्यापगामात् तृणि संज्ञाणि करिय तत्वेगच्छं हेतुं रूढ करिय सन्निदे सम्बन्धीवरासिदुभागवित्पार वेति । भागापामरुत्त इति । एव अभिय विरत्तप्राय दिग्गे एवेकस्म रूचस्म विभागहीणसम्बन्धीवरासी पावेति । विभागमद्विय सम्बन्धीवरासिणा सम्बन्धीवरासिउपरिमन्त्रमागे मागे हिदे किमागच्छति ? अत्रमागहीण

(अत्रागतिसे)— $२५ - १५ = १५$

प्रश्न—तृसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवरासिणा संपूर्ण जीवरासिके उपरिम बर्गमे मागे देने पर जीवसी राशि माती है ?

समाधान—तीसरा भाग हीन संपूर्ण जीवरासि माती है ।

उदाहरण (बीजगणितसे),— $\frac{क}{क + \frac{क}{२}} = \frac{२}{३} क = क - \frac{क}{३}$

(अत्रागतिसे)— १५ का तृसरा भाग ८ है, अतः द्वितीय भाग ८ अधिक $१५ = २३$ का २५५ में भाग देने पर $१०\frac{२}{३}$ आता है जो जीवरासि १५ का तीसरा भाग हीन है ।

प्रश्न—तृसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवरासिणा संपूर्ण जीवरासिके उपरिम बगमें मागे देने पर तीसरा भाग हीन जीवरासि किस कारणसे माती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवरासिके बर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और जीवरासिबर्ग

पश्चिमके विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक बग्न प्रत्येक करके उसके भी दो खंड करके संपित मर्णात् प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवरासिणा तृसरा भागमप्य विस्तार आना जाता है । यहाँ मागापाम क्षेत्र है । इसके अधिक विस्तार राशिके प्रत्येक एकके ऊपर द्वैयकपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति तीसरा भागहीन संपूर्ण जीवरासि प्राप्त होती है ।

		अ
		ब
अ	ब	

प्रश्न—तीसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवरासिणा संपूर्ण जीवरासिके उपरिम बर्गमें मागे देने पर क्या आता है ?

समाधान—बीया भाग हीन संपूर्ण जीवरासि आती है । यहाँ पर भी कारणतः पहलेके समान कथन करना चाहिये । अर्थात् संपूर्ण जीवरासिके बर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और पश्चिम विस्तारसे बार खण्ड करके और उनमेंसे एक खण्डके तीन खण्ड करके प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवरासिणा तीसरा भागमप्य विस्तार आना जाता है । अतएव इन बगनोंको

अथ तन्मासम्भविष्यत्तन्मासजीवरात्रिषा तदुपरिमन्त्रो मागे हिद क्रिमागच्छदि ? अथ तन्मास-
हीनसम्भजीवरात्री आगच्छदि । सम्भत्य कारण पुन्य व वचन । अथ तन्मासजीवरात्री-
गाथाओ—

अथ तन्मासजीवरात्रिषा तदुपरिमन्त्रो मागे हिद क्रिमागच्छदि ।

रुद्रादौ दाम्पत्ये होति इ वृद्धीय विवर्धना ॥ २४ ॥

अथ तन्मासजीवरात्रिषा तदुपरिमन्त्रो मागे हिद क्रिमागच्छदि ।

रुद्रादौ दाम्पत्ये होति इ वृद्धीय विवर्धना ॥ २५ ॥

अथ तन्मासजीवरात्रिषा तदुपरिमन्त्रो मागे हिद क्रिमागच्छदि ।

रुद्रादौ दाम्पत्ये होति इ वृद्धीय विवर्धना ॥ २६ ॥

श्रुत्वा— अथ तन्मासजीवरात्रिषा तदुपरिमन्त्रो मागे हिद क्रिमागच्छदि । अथ तन्मास-
हीनसम्भजीवरात्री आगच्छदि । सम्भत्य कारण पुन्य व वचन । अथ तन्मासजीवरात्री-
गाथाओ—

समाधान— अथ तन्मासजीवरात्रिषा तदुपरिमन्त्रो मागे हिद क्रिमागच्छदि । अथ तन्मास-
हीनसम्भजीवरात्री आगच्छदि । सम्भत्य कारण पुन्य व वचन । अथ तन्मासजीवरात्री-
गाथाओ—

भाष्यकारों उसीके वृद्धिरूप अंशके रहने पर मास देने से जो अथ मासहार (हर)
आता है वह क्षान्तिमें अथ अधिक और वृद्धिमें इससे विपरीत अथ एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$(१) \frac{क}{क + क} = क - \frac{क}{न + १} \quad (२) \frac{क}{क - क} = क + \frac{क}{न - १}$$

$$(अनुगणितसे)— (१) \frac{१}{१ + १} - \frac{१}{१} = १ - \frac{१}{१} \quad (२) \frac{१}{१ - १} = \frac{१}{१} = १ + \frac{१}{१}$$

भाष्यकार विशेषतः भाष्यकारों के विषय अथ अधिक माहित करने पर जो संख्या आती
है उसे अथ अधिक अथ कम कर देने पर वह क्रमसे क्षान्ति और वृद्धिमें भाष्यकार
होता है ॥ २५ ॥

अथ विशेषतः अथ अधिक विषय अथ अधिक माहित करने पर जो संख्या अथ कम हो उसे एक
अथ अधिक अथ कम कर देने पर वह क्रमसे भाष्यकारों की क्षान्ति और वृद्धिमें भाष्यकार
होता है ॥ २६ ॥

$$उदाहरण गाथा २५-२६ के (बीजगणितसे)— $\frac{क}{क} = १, \quad \frac{क}{क} = १$$$

अणतमाधममहियसम्भवीवरासिना सदुपरिमवगग मागे हिदे किमागच्छदि ? अणतमाम-
हीनसम्भवीवरासी आगच्छदि । सम्बरथ फारण पुम्भ व वचन । पथ उवतञ्जरीमो
गाहामा—

अवहारवद्विरुक्तागवहातो ह कदमवहातो ।

कवद्विजो हावीए हाप्ति ह वद्वीए विवरीदो ॥ २४ ॥

अवहारविसेसेण व ठिण्ववहारदु कदमवा ने ।

कवद्वियज्जा नि व अवहातो हागिवद्वीण ॥ २५ ॥

कद्विसेसिण्व कद्व कवद्विज्जय आवि ।

अवहारहागिवद्वीणवहातो सा मुणेयम्भो ॥ २६ ॥

टिप्पणी— अणतमा माग अधिक संपूर्ण जीवराशिपर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गमें
माग देने पर कौनसी राशि बाकी है ?

समाधान—अणतमा माग हीन संपूर्ण जीवराशि जाती है । सबत्र वारणका कथन
पहलेके समाप्त करना चाहिये । अब यहाँ पर उपयुक्त गणार्थ की ज्ञानी है—

मागहारमें उसीके वृद्धिरूप बंधके रहने पर माग देनेसे जो छाप मागहार (हर)
जाता है वह क्षतिमें कपाधिक बीर वृद्धिमें इससे विपरीत अर्थात् एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$(१) \frac{k}{k + \frac{k}{n}} = k - \frac{k}{n + 1} \quad (२) \frac{k}{k - \frac{k}{n}} = k + \frac{k}{n - 1}$$

$$(अनुगणितसे)— (१) \frac{१}{१ + \frac{१}{३}} = \frac{३}{४} = १ - \frac{१}{४} \quad (२) \frac{१}{१ - \frac{१}{३}} = \frac{३}{२} = १ + \frac{१}{२}$$

मागहार विरोधसे मागहारके छिद्र अर्थात् माजित करने पर जो संख्या जाती
है उसे कपाधिक अथवा कपान्धन कर देने पर वह कमसे क्षति बीर वृद्धिमें मागहार
होता है ॥ २५ ॥

छप्प विरोधसे कम्पको छिद्र अर्थात् माजित करने पर जो संख्या कपान्धन हो उसे एक
अधिक अथवा एक कम कर देने पर वह कमसे मागहारकी क्षति बीर वृद्धिमा मागहार
होता है ॥ २६ ॥

$$\text{उदाहरण गाथा २५-२६ के (बीजगणितसे)—} \frac{k}{k} = १, \quad \frac{k}{k} = १$$

पक्खेवगसिगुणिदो पक्खेमेणाहिणं रुद्धेण ।

मसिञ्जो बु मागहारे अवणेज्जो होइ अवहारे ॥ ३० ॥

जे अहिंया अवहारे रुवा तेहिं गुणित्तु पुम्भफळं ।

अहिंयवहारण हिणं उद्ध पुम्भफळ उण ॥ ३१ ॥

जे उणा अवहारे रुवा तेहिं गुणित्तु पुम्भफळ ।

उणवहारेण हिणं उद्ध पुम्भफळ अहिंय ॥ ३२ ॥

मागहारको प्रसेपराशिसे गुप्ता कर देने पर और प्रसेपसे अधिक सम्भराशिक्ष भाग देने पर जो सम्भ्र आता है वह मागहारमें अपनेय राशि होती है ॥ ३० ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = क$ इष्ट क प्रक्षिप्त राशि (क-क)

$$\text{अपनेय मागहार ब} - \frac{ब (क-क)}{क} = \frac{ब क}{क}$$

(कजगणितसे)— $\frac{३३}{४} = ८\frac{१}{४}$ इष्ट १२, प्रसेप ३, अपनेय मागहार ४ $\frac{३ \times ४}{१२} = ४$ १=३

मागहारमें कितनी अधिक संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा अधिक अवहारसे इष्ट अर्थात् भाजित करने पर जो आये उसे पूर्वफलमेंसे घटा देने पर नया सम्भ्र आता है ॥ ३१ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = स$, नया मागहार—ब + इ

$$\text{नया सम्भ्र} = \frac{अ}{ब+इ} = \frac{ब स}{ब+इ} = स - \frac{स इ}{ब+इ}$$

अर्थात् $\frac{स इ}{ब+इ}$ इसे पुनः मज्जनफल स में से घटा देने पर नया मज्जनफल व्य आता है ।

(कजगणितसे)— $\frac{३३}{४} = ८\frac{१}{४}$ १२ नया मागहार, मागहारमें अधिक ३,

$$\frac{४ \times ३}{१२} = १, ४ - १ = ३ \text{ नया मज्जनफल}$$

मागहारमें कितनी न्यून संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा न्यून मागहारसे इष्ट करने पर जो आये उसे पूर्वफलमें जोड़ देने पर नया सम्भ्र आता है ॥ ३२ ॥

अवयवयणसिगुमिने अवयवयणैण्यण छद्मेण ।

मन्दिरो ऽ मागहारो पक्षेभ्यो होमि व्यवहार ॥ २९ ॥

उदाहरण (जीवगणितसे) —

सम्प्रमाण राशि— n मात्रक— $s = m \times b$ ।

- (१) छम्प— k शेष— r (बुद्धिरूप)
 (२) छम्प— $(k+1)$ शेष— r' (हानिरूप)
 $n = (m \times b) k + r = (1)$
 और $n = (m \times b) (k+1) - r' = (2)$

(१) से $\frac{n}{m} = b \times k + \frac{r}{m}$ —बुद्धिरूप

(२) से $\frac{n}{m} = b (k+1) - \frac{r'}{m}$ —हानिरूप

(व्यक्तगणितसे)—

सम्प्रमाण राशि—२९३, द्वार—७२, द्वारान्तर—९,

(१) $\frac{२९३}{७२} = ४\frac{४७}{७२}$ पूर्व छम्प—३
 मान्य शेष—४७
 $\frac{२९३}{९} = ८ \times ३ + \frac{४७}{९}$ (द्वारान्तरद्वारद्वार—८)
 $= २९ + \frac{२}{९}$ —(बुद्धिरूप)।

(२) $\frac{२९३}{७२} = ४ - \frac{२५}{७२}$
 $\frac{२९३}{९} = ८ \times ४ - \frac{२५}{९} = ३ - \frac{७}{९}$ (हानिरूप)।

मागहारको अपनयन राशिसे गुणा कर देने पर और अपनयनराशिसे सम्प्रमाणसे घटाकर जो शेष रहे उसका माप दे देने पर जो छम्प आता है वह मागहारमें प्रक्षेपराशि होती है ॥ २९ ॥

उदाहरण (जीवगणितसे)— $\frac{b}{a} = k$, इष्ट k , अपनयन राशि $k - k$

$k + \frac{b (k - k)}{a} = \frac{b k}{a}$ प्रक्षेप व्यवहार

(व्यक्तगणितसे)—सम्प्रमाण ३९, मात्रक ४, इष्ट १, $३९ \div ४ = ९$ - ९ = ३ अपनयन

राशि, $\frac{४ \times ३}{९} = २$ प्रक्षेप मागहार

पन्सेवरासिगुणियो पन्सेवेणादिएण कसेण ।

मज्झिओ बु भागहारो अबणेओ होइ अबहारे ॥ ३० ॥

जे अहिया अबहारे कथा तहि गुणितु पुम्बफळ ।

अद्विपवहारण हिए कइ पुम्बफळ उण ॥ ३१ ॥

ये उणा अबहारे कथा तेहि गुणितु पुम्बफळ ।

ऊणवहारेण हिए कइ पुम्बफळ अहिय' ॥ ३२ ॥

भागहारको प्रसेपराशिसे गुणा कर देने पर और प्रसेपसे अधिक सम्प्रदाशिका भाग देने पर जो सम्प्रदाशिका है वह भागहारमें अपनेय राशि होती है ॥ ३० ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) — $\frac{४}{५} = ४$ इष्ट न प्रक्षित राशि (स्व-क)

अपनेय भागहार $४ - \frac{४(४)}{५} = \frac{४}{५}$

(अज्ञगणितसे) — $\frac{३३}{४} = ८$ इष्ट १२ प्रसेप ३, अपनेय भागहार $४ - \frac{३ \times ४}{१२} = ४ - १ = ३$

भागहारमें जितनी अधिक संख्या होती है उससे पूष फलको गुणित करने तथा अधिक अयहारसे हट करण्य भाजित करने पर जो भागे उसे पूर्वफलमेंसे घटा देने पर नया सम्प्रदाशिका है ॥ ३१ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) — $\frac{४}{५} = ४$, नया भागहार — $४ + ४$

नया सम्प्रदाशिका $= \frac{४}{४ + ४} = \frac{४}{८} = ४ - ४ = ४$

अर्थात् $\frac{४}{४ + ४}$ इसे पुनः भजनफल ४ में से घटा देने पर नया भजनफल भा जाता है ।

(अज्ञगणितसे) — $\frac{३३}{४} = ८$, १२ नया भागहार, भागहारमें अधिक ३,

$\frac{४ \times ३}{१२} = १$, $४ - १ = ३$ नया भजनफल

भागहारमें जितनी न्यून संख्या होती है उससे पूष फलको गुणित करने तथा न्यून भागहारसे हट करने पर जो भागे उसे पूर्वफलमें जोड़ देने पर नया सम्प्रदाशिका है ॥ ३२ ॥

अवगणयणसिगुमिदो अवगणयणेणूणण कसण ।

भजिणे इ मागहाणे पक्खेणे होदि अवहाणे ॥ २९ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) —

मध्यमाव राशि—न मात्रक—स = अ × ब।

$$(१) \quad \text{अव्य—क,} \quad \text{शेष—र (वृद्धिकप)}$$

$$(२) \quad \text{अव्य—(क + १)} \quad \text{शेष—र' (हानिकप)}$$

$$न = (अ \times ब) क + र - (१)$$

$$\text{और } न = (अ \times ब) (क + १) - र' - (२)$$

$$(१) \text{ से } \frac{न}{अ} = ब \times क + \frac{र}{अ} - \text{वृद्धिकप}$$

$$(२) \text{ से } \frac{न}{अ} = ब (क + १) - \frac{र'}{अ} - \text{हानिकप}$$

(वकगणितसे) —

अवमाव राशि—२९३, शार—७२, शारंतेर—९।

$$(१) \quad \frac{२९३}{७२} = ४ \frac{४७}{७२} \quad \text{पूर्व अव्य—३}$$

मात्रक शेष—४७

$$\frac{२९३}{९} = ८ \times ३ + \frac{४७}{९} \quad (\text{शारंतेरछटशार—८})$$

$$= २९ + \frac{३}{९} - (\text{वृद्धिकप})$$

$$(२) \quad \frac{२९३}{७२} = ४ - \frac{२५}{७२}$$

$$\frac{२९३}{९} = ८ \times ४ - \frac{२५}{९} = ३ - \frac{७}{९} \quad (\text{हानिकप})$$

मागहारको अवगणन राशिसे गुणा कर देवे पर और अवगणनराशिसे अव्यराशिसे पटाकर जो शेष रहे उसका माप दे देने पर जो अव्य आता है वह मागहारमें प्रक्षेपराशि होती है ॥ २९ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) — $\frac{अ}{ब} = क$, इए क अवगणन राशि क—क

$$ब + \frac{ब(क-क)}{१} = \frac{बक}{क} \text{ प्रक्षेप अवहार}$$

(वकगणितसे) — मध्यमान ३९, मात्रक ४, इए ३, $३९ \div ४ = ९, ९ - ३ = ६$ अवगणन

राशि $\frac{४ \times ३}{३} = ४$ प्रक्षेप मागहार

च्छदि ति ण सदहा (?) । कारण गद । तस्य का निरुची ? सिद्धतरसगुणगुणपमाण्य
मन्त्रजीवरामि माग हिं ज भागलद त विरलेउभ एक्कस्म स्मस्म सन्त्रजीवरामि
ममसुंर करिय दिण्ये रूढ पडि सिद्धतरसगुणगुणपमाण पावदि । सत्थ बहुसुवा
मिच्छाहृदिरामिपमाण होदि । एय खंर सिद्धतरसगुणगुणपमाण हरदि । निरुची गदा ।

यहां कारण बतलाया जा रहा है, अर्थात् सर्वजीवरामि य सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिकी
अवेक्षा धुवराशिसे ज्ञात मिथ्याएहि राशिका प्रमाण निश्चित करना । तन्नुसार पाठ कुछ
निम्न प्रकार होगा चाहिये य —

सिद्धतरसगुणगुण मिच्छा विभक्ति सिद्धतरसगुणगुणगण य अन्वहितसर्वजीवरामिणा
सर्वजीवरामिउपरिमण माग हिं विमाग टि । सिद्धतरसगुणगुणगणसर्वजीवरामि भागच्छि
ति ण मन्त्रे ।

अर्थात् सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक और मिथ्याएहि राशिसे माञ्जित
सिद्धतरसगुणस्थानवर्तीसे अधिक सप्तजीवरामिका सप्तजीवरामिके उपरिम वर्गमें माग देने पर
क्या भाता है ? सिद्धतरसगुणस्थान राशिमें हीन सप्तजीवरामि भाती है इसमें संदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (जीवगणितसे)} — \frac{५}{४ + \frac{३}{५} + ५} = ५ = ५ \text{ (मिथ्याएहि)}$$

$$\text{(अवगणितसे)} — \frac{१५}{३ + \quad + १५} = १५ = १५ \text{ (मिथ्याएहि)}$$

प्रका — इसकी अर्थात् मिथ्याएहि जीवरामिके प्रमाणके निश्चासनेकी निश्चिन्ता क्या है ?

समाधान — सिद्धराशि और सासाधनसम्यग्एहि भावि तरह गुणस्थानवर्ती राशिका
संगुण जीवरामिमें माग देने पर जो भाग मध्य भागे उसका विरलन करके और उस विरलित
राशिके प्रत्येक एकके ऊपर संगुण जीवरामिको समान लण्ण करके देयरगसे स्थापित कर देने
पर विरलित राशिके प्रत्येक एकक प्रति सिद्ध और सासाधनसम्यग्एहि भावि तरह गुणस्थानवर्ती
जीवरामि प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें अर्थात् विरलित राशिके प्रत्येक एकक प्रति प्राप्त
लण्णोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्याएहि जीवरामिका प्रमाण है और एक भाग सिद्ध
और सासाधनसम्यग्एहि भावि तरह गुणस्थानवर्ती जीवरामि प्रमाण है । इसप्रकार निश्चिन्ता
एकत्र समाप्त हुआ ।

उदाहरण सर्वजीवरामि १५ सिद्धतरस ३। १५ = १५

३ ३ ३ ३ ३ ३ इसप्रकार एक लण्ण ३ सिद्ध और सासाधनसम्यग्एहि तरह गुणस्थान
१ १ १ १ १ १ वर्ती जीवरामिका प्रमाण और एक बहुभाग १२ मिथ्याएहि
३ राशिका प्रमाण हुआ ।

एदाहि गाहाहि पडिवाहियस्य छिम्सस्य पच्छिमत्रियप्पा वसप्पा । त जहा, मिद्ध
येरसगुणह्वाणावहिदमिच्छाहिमागममहियमञ्जजीरामिणा सञ्जजीवरामिउव्वरियवग्ग माग
हिदे किमाग-हदि ? मिद्धतरसगुणह्वाणमज्जिमञ्जवासरामिमागहीममञ्जजीवरामी आग

उदाहरण (बीजगणितस)— $\frac{अ}{ब} = स$ । $ब - उ$ नया भागद्वारा

$$\text{नया छज्ज} = \frac{अ}{ब-उ} = \frac{बस}{ब-उ} = स + \frac{सउ}{ब-उ}$$

$\frac{सउ}{ब-उ}$ इसे पुरान मज्जनफल स में जाड़नेसे नया मज्जन
फल आ जाता है ।

(अरुगणितस)— $\frac{११}{१२} = १$ । १ नया भागद्वारा

$$\frac{१ \times १}{१} = १। १ + १ = ४ \text{ नया मज्जनफल}$$

इन माघामोके द्वारा जो विषय प्रतिबोधित किया जा चुका है उसको परिचय विवरण
बतलाया जाता है । यह इसप्रकार है—

शुद्धा—सिद्धराशि और आसाधनसम्पन्नदि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिक
मिथ्याराशि जीवराशिमें माग देने पर जो माग छप्प भागे उससे अधिक संपूर्ण जीवराशिका
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बीनसी राशि आती है ।

समाधान—सिद्धराशि और आसाधनसम्पन्नदि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिक
संपूर्ण जीवराशिमें माग देने पर जो प्रमाण छप्प भागे उतनी कम संपूर्ण जीवराशि आती
है इसमें कुछ भी संशेद नहीं है । इसप्रकार कारणका वणन समाप्त हुआ ।

विशेषार्थ—यहां पर जो अन्तिम विवरण बतलाया गया है उसका गणित पूर
निश्चित सबेदोंके अनुसार निम्न प्रकार बैठता है—

उदाहरण (बीजगणितस)—

$$\frac{क}{क+अ} = क - \frac{क}{अ}$$

(अरुगणितसे)—

$$\frac{११}{११+११} = ११ - \frac{११}{१}$$

विस्तु एक तो पणितसे व राशियों समान नहीं सिद्ध होती और दूसरे
उनका जो फल निकलता है वह मिथ्याराशि राशिक प्रमाण न होनेसे प्रकृतमें उसका
कोर उपयोग किया नहीं होता । बहुत कुछ सोच विचार करने पर भी हम इस
विषयमें ठीक विषय पर नहीं पहुंच सके । तथापि विषयके पूजापर प्रसंगको देखने हुए यहां
अन्तिम विवरणमें बड़ी बल आना आदिग जिससे यह प्रकरण प्रारंभ हुआ है, और जिनका कि

च्छदि वि ण मग्हा (?) । कारण गम् । तस्म का निरुची ? मिदतरसगुणद्वानपमाण
मन्त्रजीवगमि भाग हिद् व भागल्ल त विरलेत्त एवकस्म स्वस्म मन्त्रजीवरासि
ममग्हा करिय दिण्णे स्म पट्टि सिद्धतरसगुणद्वानपमाण पावदि । तस्य बहुत्तडा
मिच्छाद्विरामिपमाण होदि । एय गच्छे मिदतरसगुणद्वानपमाण हवदि । निरुची गदा ।

यदा कारण यतत्ताया जा ग्हा ह भयान सवर्ज्यगशि य सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिची
अपेक्षा ध्रुवराशिके ठारा मिथ्यादृष्टि राशिच प्रमाण निमित्त करना । तन्नुसार पाठ कुछ
निम्न प्रकाश होना चाहिये य —

सिद्धतरसगुणद्वाने मिच्छा विमिच्छिदतरसगुणद्वानवगण य अस्मद्वियमन्त्रजीवरासिणा
मन्त्रजीवरासिउपरिमग्ग माग हिद् विमागग्गि ! मिद्धतरसगुणद्वानदीनसवर्ज्यगसा भागपट्टि
वि ण मग्हा ।

अथान सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिमे अधिक और मिथ्यादृष्टि राशिमे मात्रित
सिद्धतरसगुणस्थानवर्ती अधिक सवर्ज्यगशिवा सवर्ज्यगशिचे उपरिमग्गमे भाग देने पर
क्या आता है ? सिद्धतरसगुणस्थान राशिमे हीम सवर्ज्यगशि भागी है इसमें संदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (धीनगणितम्)} — \frac{\text{क}}{\text{अ} + \frac{\text{अ}}{\text{ब}} + \text{क}} = \text{ब} = \text{क} \quad \text{ब (मिथ्यादृष्टि)}$$

$$(\text{अवगणितम्}) — \frac{१२}{३ + \quad + १२} = १२ = १२ - ३ \quad (\text{मिथ्यादृष्टि})$$

प्रका — इसकी भयान मिथ्यादृष्टि जीवराशिचे प्रमाणके निकालनेकी निशानि क्या है ?

समाधान — सिद्धराशि और सासाह्नसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका
संपूर्ण जीवराशिमें माग देने पर जो भाग तब्य भाव उसका विरलत करके और उस विरलित
राशिचे प्रत्येक एकके ऊपर संपूर्ण जीवराशिचे समान लपन करके बेयरूपमे स्थापित कर देने
पर विरलित राशिचे प्रत्येक एकक प्रति सिद्ध और सासाह्नसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती
जीवराशि प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें अधान विरलित राशिक प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त
लपनोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिचा प्रमाण है और एक भाग सिद्ध
और सार इमसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिचा प्रमाण है । इसप्रकार निरुक्तिचा
बगल समान हुआ ।

उदाहरण सवर्ज्यगशि ११, सिद्धतरस ३, $\frac{१}{३} = \frac{१}{३}$

३ ३ ३ ३ ३ ३ इमप्रकार एक लपन ३ सिद्ध और सासाह्नराशि तेरह गुणस्थान
१ १ १ १ १ १ वर्ती जीवराशिचा प्रमाण और दोय बहुभाज १२ मिथ्यादृष्टि
३ राशिच प्रमाण हुआ ।

एहाहि गाहाह पडिबाहियरुम भिस्सस पच्छिमवियप्पा वत्तन्ना । त अहा, मिद्ध तेरसगुणकानोपिद्धमिच्छाह्मिमागम्भहियसम्भवीरराक्षिणा सम्भवीवरामिउत्तरिमवग्ग माम हिदे किमागच्छदि ? मिद्धतेरसगुणकानमिद्धम्भवीरराक्षिमागहीणयम्भवीरामी भाग

उदाहरण (बीजगणितस) — $\frac{स}{ब} = स। ब - २$ तथा मागहार)

$$\text{तथा स } \frac{स}{ब-२} = \frac{स}{ब-२} - \frac{बस}{ब-२} = स + \frac{स३}{ब-२}$$

$\frac{स३}{ब-२}$ इसे पुराने मज्जनफल स में जोड़नेस तथा मज्जन फल बन जाता है ।

(अरुगणितस) — $\frac{११}{१२} = १। ९$ तथा मागहार)

$$\frac{१ \times १}{९} = १। १ + १ = २ \text{ तथा मज्जनफल}$$

इन गायामोके द्वारा जो शिष्य प्रतिपादित किया जा चुका है उसको परिश्रम विवरण बतलाया जाता है । यह इसप्रकार है—

सुद्धा — सिद्धराशि और सासाधनसम्पन्नादि यदि तेरह गुणस्यानवर्ती जीवराक्षिणा विष्याददि जीवराक्षिमें माग देने पर जो माग अन्य को जसे उससे अधिक संपूर्ण जीवराक्षिणा संपूर्ण जीवराक्षिके उपरिम वर्गमें माग देने पर कौनसी राशि जाती है ?

समाधान—सिद्धराशि और सासाधनसम्पन्नादि यदि तेरह गुणस्यानवर्ती राक्षिणा संपूर्ण जीवराक्षिमें माग देने पर जो मम ण सध्य को जतनी कम संपूर्ण जीवराक्षि जाती है इसमें कुछ भी संशय नहीं है । इसप्रकार कारणका ध्यान समाप्त हुआ ।

विशेषार्थ—यहाँ पर जो अन्तिम विवरण बतलाया गया है उसका गणित पूर निश्चित संकेतोंके अनुसार निम्न प्रकार बछा है—

उदाहरण (बीजगणितसे) —

$$\frac{क}{क + ब} = क - \frac{क}{ब}$$

(अरुगणितसे) —

$$\frac{११}{११ + १२} = ११ - \frac{११}{१२}$$

किन्तु एक तो गणितसे ये राक्षियाँ समान नहीं सिद्ध होती और दूसरे इनका जो फल निकलता है वह मिष्याददि राक्षिणा प्रमाण न होनेसे प्रकृतमें बसकर कोई उपयोग दिगार्थ नहीं होता । बहुत कुछ सोच विचार करने पर भी हम इस विषयमें ठीक निगम पर नहीं पहुँच सके । तथापि विषयके पृथक् पृथक् संश्लेषों के लिये कुछ यहाँ अन्तिम विवरणों में बड़ी बात माना बाहिय जिससे यह प्रकरण प्रारंभ हुआ है और जिसका कि

चुदि सि न मद्दा (?) । कारण गद् । तम्म क्क णिरुची ? सिद्धतरसगुणकृणपमाण
मन्त्रजीवगमि भाग हिद् ज भागलद्ध न बिगनेऊण पक्कम्म स्वम्म सन्त्रजीवराशिं
ममराइ करिय दिप्पे स्व पठि सिद्धतरसगुणकृणपमाण पावदि । तत्थ बहुमद्दा
मिच्छाद्विरासिपमाण होदि । एय सुंई मिद्धतरसगुणकृणपमाण इवदि । णिरुची गद् ।

यहां कारण बनलाया जा रहा है । अथान सप्तजीवराशि व सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिकी
संपेक्षा ध्रुवराशिके ठारा मिथ्यादृष्टि राशिप्राप्त प्रमाण मिश्रित करना । तदनुसार पाठ कुछ
निम्न प्रकार होना चाहिये —

सिद्धतरसगुणकृणेण मिच्छा द्विभित्रिसिद्धतरसगुणकृणपमाण च अगदियसत्तजीवराशिणा
सप्तजीवगमिस्यमिमांसा भाग हिं किमागच्छति ? सिद्धतरसगुणकृणप्राप्तसप्तजीवरासा भागच्छति
चि न मद्दा ।

अथान सिद्धतरस गुणस्थानवर्ती राशिसं अधिक भाग मिथ्यादृष्टि राशिसे प्राप्त
सिद्धतरसगुणस्थानप्राप्ते अधिक सप्तजीवराशिप्राप्ता सप्तजीवराशिके उपरिम भागमें माग देने पर
क्या भाग है ? सिद्धतरसगुणस्थान राशिसं हीन सप्तजीवराशि भाग है इसमें संदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (जीवगणितम्)} — \frac{क}{अ + ब + क} = ५ = क (मिथ्यादृष्टि)$$

$$(\text{अवगणितम्}) — \frac{१५}{३ + १५} = १३ = १६ - ३ (मिथ्यादृष्टि)$$

अत्रा — इसकी अथान मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणके निकटवर्ती निरूपित क्या है ?

समाधान — सिद्धराशि और सासात्तसम्यग्दृष्टि आदि नेरह गुणस्थानवर्ती राशिका
संपूर्ण जीवराशिसं माग देने पर जो भाग प्राप्त भवे उसका विरुद्ध करने और उस विरुद्धित
राशिके प्रत्येक एकके ऊपर संपूर्ण जीवराशिके समान लब्ध करने केयूपरसे स्थापित कर देने
पर विरुद्धित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सिद्ध और सासात्तसम्यग्दृष्टि आदि तरह गुणस्थानवर्ती
जीवराशि प्रमाण प्राप्त होता है । इसमें अथान विरुद्धित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त
लब्धोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है और एक भाग सिद्ध
और सासात्तसम्यग्दृष्टि आदि नेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि प्रमाण है । इसप्रकार निरुद्धित
फल समान हुआ ।

उदाहरण सप्तजीवराशि १५ सिद्धतरस ३, $\frac{१}{३} = \frac{१}{३}$

३ ३ ३ ३ ३ ३ इसप्रकार एक लब्ध ३ सिद्ध और सासात्तसम्यग्दृष्टि नेरह गुणस्थान
१ १ १ १ १ १ वर्ती जीवराशिका प्रमाण और दोष बहुभागा १३ मिथ्यादृष्टि
३ राशिका प्रमाण हुआ ।

सो सो वियप्पो सो दुविहो, हेड्डिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेड्डि मवियप्प वचइस्सामो । तं ब्रह्मा, वेरूवे हेड्डिमवियप्पो पत्तिव । कारण सम्बजीवरासीदो धुवरासी अम्महिमो ब्रह्मो पि । अह्मरूवे हेड्डिमवियप्प वचइस्सामो । धुवरासिणा सम्ब जीवरासि गुणेत्थम् सम्बजीवरासिपणे मागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि । केम् कारणेय्य ? अदि सम्बजीवरासिणा तस्स घणो अबहिरिउज्जदि तो सम्बजीवरासितवरिमवग्गो आगच्छदि । पुष्पा पि धुवरासिणा सम्बजीवरासितवरिमवग्गो मामे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि ! एवं मिच्छाइड्डिरासिमागमणं ममेणावहारिय गुणेत्थम् मागग्गह्मं कर्हं । एरव दुगुणादिकरणं वचइस्सामो । तं ब्रह्मा, सम्बजीवरासिणा सम्बजीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्बजीवरासितवरिमवग्गो आगच्छदि । दुगुणिदसम्बजीवरासिणा सम्बजीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्बजीवरासितवरिमवग्गस्स दुमागो आगच्छदि । त्रिगुणिदसम्बजीवरासिणा सम्बजीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्बजीवरासितवरिमवग्गस्स त्रिमागो आगच्छदि । अबेव

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तमविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे मध्यस्तम विकल्पको बतकाते हैं । वह इसप्रकार है—

त्रिरूपवर्गीघातमें (प्रकृतमें) अथस्तमविकल्प संभव नहीं है क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिसे शुबराशिअ प्रमाण अधिक है । अब मध्यरूप वर्गीय घनघातमें अथस्तमविकल्प बतकाते हैं । शुबराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे गुणित करके जो छम्ब भावे उभय संपूर्ण जीवराशिसे घनमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिअ प्रमाण जाता है क्योंकि, यदि संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिअ घन अग्रहत किया जाता है तो संपूर्ण जीव राशिसे उपरिम वर्गका प्रमाण जाता है । और फिर शुबराशिसे प्रमाणअ संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिअ प्रमाण जाता है । इसप्रकार मिथ्यादृष्टिरासि जाती है इस बातको घनमें निश्चित करके पहले गुणा करके अन्तर भागका ग्रहण किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १६, शुबराशि १२, १६ × १२ = १९२;

जीवराशि १६ का घन ४०९६ - १९२ = १९ मिथ्यादृष्टि

अब यहां पर त्रिगुणाधिकरूपविकल्पको बतकाते हैं । वह इसप्रकार है— संपूर्ण जीव राशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपघटित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गका प्रमाण जाता है (४०९६ - १६ = २५६) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपघटित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गका दूसरा भाग जाता है (४०९६ - २५६ = १२८) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीव राशिसे घनके अपघटित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गके प्रमाणका तीसरा भाग जाता है (४०९६ - १२८ = ८१) । इसप्रकार इसी विधिसे अन्तक शुबराशिअ प्रमाण

विहायेण पुत्रगारो बहुवेदश्चो ज्ञात्र पुत्ररासिपमान पचो चि । पुत्रो पुत्ररासिगुभिद
सम्पन्नीवरासिमा सम्पन्नीवरासिघने ओवद्धिदे सम्पन्नीवरासिठवरिमवग्गस्स पुत्ररासिमागो
आगच्छदि सो चेव मिच्छाद्विरासी । एदेण कारणेण पुत्ररासिमा सम्पन्नीवरासि गुणेऊल
सम्पन्नीवरासिघने ओवद्धिदे मिच्छाद्विरासी आगच्छदि चि ।

घणाघने वचइस्सामो । पुत्ररासिमा सम्पन्नीवरासि गुणेऊल तेण पणपढमवग्गमूळ
गुणेऊल घणाघणपढमवग्गमूळे ओवद्धिदे मिच्छाद्विरासी आगच्छदि । कण कारणेण ?
पणपढमवग्गमूळेण घणाघणपढमवग्गमूळे ओवद्धिदे सम्पन्नीवरासिस्स पचो आगच्छदि ।
पुत्रो चि सम्पन्नीवरासिमा सम्पन्नीवरासिघने ओवद्धिदे सम्पन्नीवरासिठवरिमवग्गो
आगच्छदि । पुत्रो चि पुत्ररासिमा सम्पन्नीवरासिठवरिमवग्गो मागे द्विदे मिच्छाद्विरासी
आगच्छदि । एवमागच्छदि चि षट्ठ गुणेऊल भागगहण कद । एत्थ दुग्गुणादिकरणे
कदे हेत्तिमवियप्पो समप्पदि ।

१० १/३ प्राप्त नहीं हो जाता है तबतक गुणकारको बढ़ाते जाना चाहिये । पुनः भुवराशिसे
संपूर्ण जीवराशिसे गुणित करने पर जो छम्प भागे उससे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित
करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गमें भुवराशिमा भाग देने पर जो छम्प भागे
तत्प्रमाण भाग जाता है और वही मिथ्याद्यपि जीवराशिमा प्रमाण है । इसी कारणसे यह
कहा कि भुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे गुणित करके जो छम्प भागे उससे संपूर्ण जीव
राशिसे घनके अपवर्तित करने पर मिथ्य द्यपि जीवराशिमा प्रमाण जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{1}{3} \times \frac{1}{3} = \frac{1}{9} = \frac{1}{9} + \frac{1}{9} = \frac{1}{9} \times \frac{1}{9} = \frac{1}{81} \text{ मि}$$

अब घनाघनमें अपवर्तन विच्छेदको बतलाते हैं । भुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे
गुणित करके जो गुणनफल भागे उससे जीवराशिसे घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो
गुणनफल भागे उसके द्वारा घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्धर्तित करने पर मिथ्याद्यपि जीव
राशिमा प्रमाण जाता है, क्योंकि, घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्धर्तित
करने पर संपूर्ण जीवराशिमा घन जाता है । अनन्तर संपूर्ण जीवराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे
घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिमा उपरिम वर्ग जाता है । अनन्तर भुवराशिमा
संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्यपि जीवराशिमा प्रमाण जाता है ।
घनाघनधारामें इसप्रकार जीवराशिमा प्रमाण जाता है ऐसा समझ कर पहले गुणा करके
अनन्तर, भागका प्रहण किया है । यहाँ पर त्रिगुणाधिकरणके कर लेने पर अघस्तन विच्छेद
समाप्त हो जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} १९ \text{ के घनका प्रथम वर्गमूल } १४, \text{ घनाघनका प्रथम वर्गमूल } २६२१४४,$$

$$\frac{१९}{१४} \times १९ \times १४ = \frac{२६२१४४}{१४}, \frac{२६२१४४}{१} + \frac{२६२१४४}{१४} = १९ \text{ मि}$$

सो सो वियप्पो सो बुदिहो, हेड्डिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेड्डिमवियप्प वचइस्सामो । तं ब्रह्मा, वेरूणे हेड्डिमवियप्पो णत्थि । कारण सम्मजीवरासिदिधुवरासी अम्महिओ आदो सि । अट्टरूणे हेड्डिमवियप्प वचइस्सामो । धुवरासिणा सम्मजीवरासि गुणेरुप्प सम्मजीवरासिपणे माग हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि । केय कारणेण ? अदि सम्मजीवरासिणा तस्स पणा अवहिरिज्जदि तो सम्मजीवरासिउवरिमवियप्पो आगच्छदि । पुणा वि धुवरासिणा सम्मजीवरासिउवरिमवियप्पो भागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि । एरुं मिच्छाइड्डिरासिमागमण मणेणावहारिय गुणेरुप्प मागग्गइण कइं । एत्थ दुग्गुणादिकरणं वचइस्सामो । तं ब्रह्मा, सम्मजीवरासिणा सम्मजीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्मजीवरासिउवरिमवियप्पो आगच्छदि । दुग्गुणिदसम्मजीवरासिणा सम्मजीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्मजीवरासिउवरिमवियप्पोसु दुमागो आगच्छदि । तिग्गुणिदसम्मजीवरासिणा सम्मजीवरासिपणे ओवड्डिदे सम्मजीवरासिउवरिमवियप्पोसु तिमागो आगच्छदि । अनेय

विकल्प दो प्रकारका हैं अथस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

त्रिगुणवर्णधारामें (प्रकृतमें) अथस्तनविकल्प संभव नहीं है क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिसे ध्रुवराशिपर प्रमाण व्यक्त है । जब अष्टक पर्यंत धनधारामें अथस्तनविकल्प बतलाते हैं । ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिसे गुणित करके जो छान्न माने उसका संपूर्ण जीवराशिसे घनमें भाग देने पर मिथ्याद्यपि जीवराशिपर प्रमाण आता है क्योंकि, यदि संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिपर घन अष्टक किया जाता है तो संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गका प्रमाण आता है । और फिर ध्रुवराशिसे प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्यपि जीवराशिपर प्रमाण आता है । इसप्रकार मिथ्याद्यपिरासि आती है इस बातको मनमें निश्चित करके पढ़ते गुणा करके अन्तर मागका ग्रहण किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १६, ध्रुवराशि १९.१; $१६ \times १९.१ = ३०५.६$;

जीवराशि १६ का घन $४०९६ - ३०५.६ = ३७९०.४$ मिथ्याद्यपि

जब यहां पर त्रिगुणाधिकरणविधिसे बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गका प्रमाण आता है ($४०९६ - १६ = ४०८०$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गका दृष्टत माग आता है ($४०९६ \div १६ = २५६$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गके प्रमाणका तीसरा माग आता है ($४०९६ - ४०८० = १६$) । इसप्रकार इसी विधिसे अवतक ध्रुवराशिपर प्रमाण

विहायेण गुणगारो बहुभेदेषां आव धुवरासिपमाण पचो चि । पुणो धुवरासिगुणिद सञ्जजीवरासिणा सञ्जजीवरासिघणे ओवह्मिदे सम्बजीवरासिउवरिमवग्गस्स धुवरासिमाणो आगच्छदि सो पेव मिच्छाद्विरासी । एदेण कारणेण धुवरासिणा सम्बजीवरासिं गुणेऊण सञ्जजीवरासिघणे ओवह्मिदे मिच्छाद्विरासी आगच्छदि चि ।

घणाघने वचइस्सामो । धुवरासिणा सम्बजीवरासिं गुणेऊण तेण पणपढमवग्गमूले गुणेऊण घणापणपढमवग्गमूले ओवह्मिदे मिच्छाद्विरासी आगच्छदि । कथं कारणेण ? पणपढमवग्गमूलेण घणापणपढमवग्गमूले ओवह्मिदे सम्बजीवरासिस्स पचो आगच्छदि । पुणो वि सञ्जजीवरासिणा सञ्जजीवरासिघणे ओवह्मिदे सम्बजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सञ्जजीवरासिउवरिमवग्गो मागे हिदे मिच्छाद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि बहु गुणेऊण भागगाहण कद । एत्थ दुगुणादिपरणे कदे हेत्तिमविपप्पो समप्पदि ।

१०११ प्राप्त नहीं है। जाता है तबतक गुणकारको बढ़ाते जाता चाहिये। पुनः धुवरासिसे संपूर्ण जीवरासिसे गुणित करने पर जो छप्प भाग्ये उससे संपूर्ण जीवरासिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवरासिसे उपरिमवर्गमें धुवरासिसे माग देने पर जो छप्प भाग्ये वाममात्र माग जाता है और वही मिच्छाद्वि जीवरासिसे प्रमाण है। इसी कारणसे यह कहा कि धुवरासिसे संपूर्ण जीवरासिसे गुणित करके जो छप्प भाग्ये उससे संपूर्ण जीवरासिसे घनके अपवर्तित करने पर मिच्छाद्वि जीवरासिसे प्रमाण जाता है।

उदाहरण— $1^6 \times 1^6 = 1^6 + 1^6 + 1^6 = 1^6 \times 3 = 1^6$ मि

अब घनाघनमें अपवर्तन विचक्षणको बताता है। धुवरासिसे संपूर्ण जीवरासिसे गुणित करके जो गुणनफल भाग्ये उससे जीवरासिसे घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणनफल भाग्ये उससे द्वाप घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उत्पत्ति करने पर मिच्छाद्वि जीवरासिसे प्रमाण जाता है, क्योंकि, घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उत्पत्ति करने पर संपूर्ण जीवरासिसे घन जाता है। अनन्तर संपूर्ण जीवरासिसे संपूर्ण जीवरासिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवरासिसे उपरिम वर्ग जाता है। अनन्तर धुवरासिसे संपूर्ण जीवरासिसे उपरिम वर्गमें माग देने पर मिच्छाद्वि जीवरासिसे प्रमाण जाता है। घनाघनपाठमें इसप्रकार जीवरासिसे प्रमाण जाता है। ऐसा समझ कर पहले गुणा करके, अनन्तर, मागका ग्रहण किया है। यहां पर त्रिगुणादिकरणके कर देने पर अष्टमस्तन विचक्षण समाप्त हो जाता है।

उदाहरण—१९ के घनका प्रथम वर्गमूल १४; घनाघनका प्रथम वर्गमूल २९२१४४;

$$1^6 \times 1^6 = 1^6 + 1^6 + 1^6 = \frac{292144}{1} + \frac{292144}{1} = 1^6$$

जो सो वियप्पो सो दुनिहो, हेड्डिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेड्डिमवियप्प वत्तइस्सामो । तं अहा, वेक्खे हेड्डिमवियप्पो णत्थि । कारणं सम्मजीवरासीद पुवरासी अम्महिजो भादो सि । अट्ठस्से हेड्डिमवियप्प वत्तइस्सामो । पुवरासिणा सम्मजीवरासिं गुणेत्थं सम्मजीवरासिपणे भागे हिदे मिच्छाइङ्गिरासी आगच्छदि । के कारणेण ? यदि सम्मजीवरासिणा तस्म पणो अवहिरिज्जदि तो सम्मजीवरासितवरिमवियप्प आगच्छदि । पुना पि पुवरासिणा सम्मजीवरासितवरिमवियप्पे भागे हिदे मिच्छाइङ्गिर आगच्छदि । एवं मिच्छाइङ्गिरासिमागममं मणेष्वावहारिय गुणेत्थं मागग्गइण कद । दुगुणादिकरण वत्तइस्सामो । तं अहा, सम्मजीवरासिणा सम्मजीवरासिपणे ओ सम्मजीवरासितवरिमवियप्पे आगच्छदि । दुगुणिदसम्मजीवरासिणा सम्मजीवराओवह्मिदे सम्मजीवरासितवरिमवियप्पस्स दुमागो आगच्छदि । त्रिगुणिदसम्मजीवरा सम्मजीवरासिपणे ओवह्मिदे सम्मजीवरासितवरिमवियप्पस्स त्रिमागो आगच्छदि ।

विकल्प हो प्रकरण है अथस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे विकल्पको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है—

त्रिरूपवर्गभाषमें (प्रकृतमें) अथस्तनविकल्प संभव नहीं है क्योंकि जीवराशिसे लुपराशिका प्रमाण अधिक है । जब अथस्तन वर्णात् घनघातमें अथस्तन बतलाते हैं । लुपराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो छद्म आवे उस जीवराशिके घनमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है पर संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिका घन अपहत किया जाता है तो राशिके उपरिम वर्गका प्रमाण आता है । और फिर लुपराशिके प्रमाणका संपूर्ण प्रमाणके उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । मिथ्यादृष्टिराशि जाती है इस बातको मनमें निश्चित करके पहले गुणा करके घन ग्रहण किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १९, लुपराशि १९.१३, $१९ \times १९.१३ = ३६३.२७$;

जीवराशि १९ का घन $४०१९ \div ३६३.२७ = ११$ मिथ्यादृष्टि

जब यह पर त्रिगुणादिकरणविधिको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है—

राशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशि घनका प्रमाण आता है $(४०१९ \div १९ = २११)$ । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गका प्रमाण आता है $(४०१९ \div ३९ = १०३)$ । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे राशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गके प्रमाण आता है $(४०१९ \div ४८०८१)$ । इसप्रकार इसी विधिके अवतार लुपरा

संख्याजीवगमिहि भाग द्विदे मिच्छाद्विरामी आगच्छदि । अथवा धुररामिअद्वन्द्वणया
जदि संख्याजीवगमिउत्तरिमवगमस्म अद्वन्द्वणयमरिया इवति ता अद्वन्द्वण छिन्नावमिह
गमिपमाण मिच्छाद्विगमिणा एगस्म स्वद्विदेगणवमाण होदि । पुनो धुवगमिअद्व
न्द्वणय सलागा वारुण संख्याजीवगमिउत्तरिमवगम अद्वन्द्वण छिन्म एगस्ममागच्छदि ।
पुनो तमगम्य मिच्छाद्विरामिमजिदेगस्म भागे द्विदे मिच्छाद्विरामी आगच्छदि सि ।
अथवा धुवगमिणा संख्याजीवगमिस्तुवरिमवगम गुणेऊण सद्वरिमवगमे भागे हिद मिच्छा
द्विरामी आगच्छदि सि । केण कारणेण ? संख्याजीवगमिउत्तरिमवगम सद्वरिमवगमे भागे
द्विदे संख्याजीवगमिस्म उत्तरिमवगमा आगच्छदि । पुनो धुवगमिणा संख्याजीवगमिउत्तरिमवगम
भागो हिद मिच्छाद्विरामी आगच्छदि सि । तस्म भागद्वारस्म अद्वन्द्वणयमेसे रमिस्म

११ का जीवराशिने प्रमाण १६ में भाग देने पर १३ मिथ्याचिह्न प्रमाण छप्प आता है ।

अथवा भुवराशिके अथच्छेद यदि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम योगके अर्धच्छेदोंके
समान होते हैं तो उत्तरोत्तर अर्धार्धस्मसे छिन्न करनेके अनन्तर अर्धशिखरही राशिका प्रमाण
मिथ्याचिह्न जीवराशिने एक एकको संज्ञित करके जो एक भाग आता है उतना होता है ।
अनन्तर भुवराशिके अथच्छेदको दायावामुपस स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम
योगके अर्ध अर्धस्मसे छिन्न करने पर एक आता है । अनन्तर उस एकको मिथ्याचिह्न जीव
राशिके प्रमाणस मक एक छेद द्वारा मन्त्रित करने पर मिथ्याचिह्न जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—११ के उपरिम योग ८६ के अर्धच्छेद ८६ बराबर भुवराशि ११ के
अथच्छेद करने पर आठवां अथच्छेद १ आता है जो १ में मिथ्याचिह्नके प्रमाण १३ के भाग
द्वे पर जो सन्ध आता है उसमेंके बराबर है । पुन इत ८६ अथच्छेदोंको दायावामुपस
८६ के इतनी बार अथच्छेद करत पर १ आता है । पुन इत १ में ८६ का भाग देने पर १३
छप्प भाग है यही मिथ्याचिह्नराशि है ।

अथवा भुवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम योगको गुणित करनेके जो सन्ध
आय उसका उसके उपरिम योगमें (जीवराशिके उपरिम योगके उपरिम योगमें) भाग देने पर
मिथ्याचिह्न जीवराशि आ जाती है क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिके उपरिम योगका उसके
उपरिम योगमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिना उपरिम योग आता है । पुन भुवराशिका
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम योगमें भाग देने पर मिथ्याचिह्न जीवराशि आती है ।

उदाहरण—संख्याजीवराशिना उपरिम योग २६ संख्याजीवराशिके उपरिम योग ८६
का उपरिम योग ६ ३६।

$$\frac{26}{86} \times \frac{86}{1} = \frac{26}{1} = \frac{26}{1} = 26 \text{ मि}$$

इत भागद्वारके अथच्छेदप्रमाण एक राशिके अथच्छेद करने पर भी मिथ्याचिह्न

उपरिमित्रियत्वा त्रिविधा, गहिदा गहिन्गाहिदा गदिदगुणगारा यदि। तत्तम गदिद वचदम्मासा। पुनरामिणा सन्त्रवीरामिउपरिमरग माग हिद क्रिमागच्छदि? मिच्छा इडिगामी आगच्छदि। तत्तम मागगरम्म अद्व-उत्तणयमत्तार रागिम्म अद्वच्छेदण फइ मिच्छा-इडिगामी अर अरविद्धे। कग कारणग? पुनरामिम्म अद्वच्छेदणयमत्तारा अदि सन्त्रवीरामिअद्वच्छेदणयमत्ताराहि मरिमा वि पपामि गो पुनरामि अद्वच्छेद छिदिकुत्त वगविदगसिपमाण मरुअररामि मिच्छा-इडिगामिमा संदिदपमाण हादि। एवं हादि वि काउण सन्त्रवीरामिअद्वच्छेदणय मन्नागभूदं दृवउत्त गन्त्रवीरामिउपरिमरग अद्व उत्त उप्प उप्प सन्त्रवीरामी प्रागच्छदि। पुगा मि गहिदाभिगात्रदिदमन्त्रवीरामिणा उपरिम

उपरिमित्रिस्स तीन प्रकारका है गृहीत गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे पहले गृहीत उपरिमित्रिस्सको दिखाने है—

धृक्का अणराशिना संपूर्ण जीवराशिके उपरिमित्रिस्स यगमें भाग देने पर कितना राशि आती है?

समाधान—मिष्पादधि जीवरशि माती ८ (१ - ११ = ११)।

अणराशिप्रमाण मागहारके अंतरे अणउत्ते हैं उनकोवार जीवरशिअ उपरिमित्रिस्स राशिके अर्धच्छेद करने पर मिष्पादधि जीवरशि ही आ जाती है।

उदाहरण—अणराशि १० है। इसमेंसे ११ के अणउत्ते ४ होते हैं। शेष ६ के बीच अणउत्ते पर १ अधिक रहता है इसलिये ३ के १/३ अधिक ४ अणउत्ते हुए। अतएव जीवरशि १६ के यग ६ के इतनीवार मधान् ४ + १ यग अणउत्ते करने पर ११ आ जाते हैं।

धृक्का—मागहारराशिके अणउत्तेप्रमाण जीवरशिअके उपरिमित्रिस्स के अर्धच्छेद करने पर मिष्पादधि राशि कितना कारणसे आती है?

अणराशिअ अणउत्तेशत कार्य संपूर्ण जीवरशिअ अणउत्तेप्रमाणोंके बराबर होती है यदि ऐसा प्रत्यक्ष कर दिया जाता है तो अणराशिअ अणउत्तेसे सिद्ध करने की हुई राशिअ प्रमाण संपूर्ण जीवरशिअ मिष्पादधि राशिके अणउत्ते करने पर जो अण आता है कितना होता है (११ - ११ = ११)। इसप्रकार होता है इसलिये संपूर्ण जीवरशिअके अर्धच्छेदोंको समानांतरसे व्यापित करके संपूर्ण जीवरशिअके उपरिमित्रिस्स के अर्धच्छेदोंके बराबर दिया करने पर संपूर्ण जीवरशिअ प्रमाण आ जाता है। अतएव मिष्पादधि जीवरशिअ द्वारा उद्घाटित संपूर्ण जीवरशिअके प्रमाणसे ऊपर उत्पन्न की हुई संपूर्ण जीवरशिअमें भाग देने पर मिष्पादधि जीवरशि अती है।

उदाहरण—जीवरशि ११ के अर्धच्छेद ४ के बराबर जीवरशि के यग ११ के अर्धच्छेद करने पर ११ अण आते हैं। अतएव मिष्पादधिके प्रमाणसे माहित जीवरशिअके प्रमाण

सम्बन्धीयगमिम्हि भाग हिंद मिच्छाद्विरामी आगच्छति । अथवा पुनरामिच्छाद्वयमाणा
अदि सन्ध्यावरासिउवरिमवग्गस्स अद्वयमाणावमरिमा इयति ता अद्वयमाणा छिण्णावमिच्छा
रामिपमाण मिच्छाद्विरामिणा एगस्स स्वदिदेग्वयमाणा होदि । पुनः पुनरामिच्छा
द्वयमाणा सत्तामा वाक्यं सन्ध्यावरासिउवरिमवग्गस्स अद्वयमाणा छिण्णे एगस्समागच्छति ।
पुनो तमगस्स मिच्छाद्विरामिजिदेग्वयमाणा भागे हिंद मिच्छाद्विरामी आगच्छति चि ।
अथवा पुनरामिणा सन्ध्यावरासिउवरिमवग्गस्स गुणकं तदुपरिमवग्गस्स भागे हिंद मिच्छा
द्विरामी आगच्छति चि । फेण कारणण ? सन्ध्यावरासिउवरिमवग्गस्स तदुपरिमवग्गस्स भागे
हिंद सन्ध्यावरासिउवरिमवग्गस्स आगच्छति । पुनो पुनरामिणा सन्ध्यावरासिउवरिमवग्गस्स
भाग हिंद मिच्छाद्विरामी आगच्छति चि । तस्म मागद्वास्स अद्वयमाणावमरिमावमरिमा

११ का जीवराशिके प्रमाण १६ में भाग देने पर १३ मिथ्यावादि प्रमाण सध्य जाता है ।

अथवा भूवराशिके अथच्छेद यदि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गक अथच्छेदोंके
समान होत है तो उत्तरोत्तर अथच्छेदोंसे छिन्न करनेके अनन्तर मथ्यावादी राशिके प्रमाण
मिथ्यावादि जीवराशिके एक वर्गको संज्ञित करके जो एक भाग जाता है उतना होता है ।
अनन्तर भूवराशिके अथच्छेदोंको शेषाकाकपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम
वर्गको अथच्छेदोंसे छिन्न करने पर एक भाग जाता है । अनन्तर उस एकको मिथ्यावादि जीव
राशिके प्रमाणस मत्त एकके द्वारा मन्त्रित करने पर मिथ्यावादि जीवराशि भा जाती है ।

उदाहरण—११ के उपरिम वर्ग २१ के अथच्छेद १८ बार बार भूवराशि ११ के
अथच्छेद करने पर आती अथच्छेद ५ जाता है जो १ में मिथ्यावादि प्रमाण १३ के भाग
देने पर जो सध्य जाता है उतनेके बराबर है । पुनः इन ८ अथच्छेदोंको शेषाकाकप
१८ के इतनी बार अथच्छेद करने पर १ भाग जाता है । पुनः 'स' में ५ का भाग देने पर १३
सध्य भाग है यही मिथ्यावादि राशि है ।

अथवा भूवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको गुणित करके जो अथ
भागे उसका उसके उपरिम वर्गमें (जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें) भाग देने पर
मिथ्यावादि जीवराशि भा जाती है क्योंकि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका उसके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग जाता है । पुनः भूवराशिका
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यावादि जीवराशि भाती है ।

उदाहरण—सद्य जीवराशिके उपरिम वर्ग २१, सद्य जीवराशिके उपरिम वर्ग २१

का उपरिम वर्ग १६

$$\frac{21 \times 21}{16} = \frac{441}{16} = \frac{27.5625}{1} = 27 \text{ मि}$$

इस भागद्वारेके अथच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अथच्छेद करने पर ही मिथ्यावादि

उपरिममिषाया निविहा, गहिदा गहिदगहिद गहिदगुगगारा चदि। तत्थ गहिद
पत्तइम्माया। धुरगमिणा मत्तजीरगमिउपरिममग माग हिद हिमागच्छदि? मिठा
इहिरामी आगच्छदि। तम्म मागरास्स जण उण्यमच्चार समिम्म अदुच्छइयम कइ
मिच्छादिगसी चर अचिह्दइ। कग कारणण? धुरगमिम्म अदुच्छइयममत्ताया जदि
मत्तजीरगमिअदुच्छइयमत्तायाहि गमिमा मि घणति ता धुरगमि अदुच्छइ डिदिउगु
पगविदगमिममाग मत्तजीरगमि मिच्छादिगमिमा गहिदपमाग हादि। एन हादि पि
काऊग मत्तजीरगमिअदुच्छइयम मत्तागभूदुत्तरऊग मत्तजीरगमिउपरिममगे अदुच्छइय
उिष्म मत्तजीरगमी आगच्छदि। पुमा मि आहिरापिणासोदुमत्तजीरगमिणा उपरिम

उपरिम विषय तीन प्रकारा है पूर्वात सूक्ष्म सूक्ष्म और सूक्ष्मगुणकार। उनमेंसे
पहले सूक्ष्म उपरिम विषयको विवक्षित है—

प्रश्ना अथराशिना संपूर्ण जीवराशिने उपरिम यगमें भाग क्व पर क्वंनता राशि
भाती है?

समाधान—मिष्याद्यपि जीवराशि भाती है (१ - ११ = १०)।

अथराशिम्म व मागहागके जितने अथउद्द हैं उनकीवार जीवराशिउ उपरिमवयव
राशिने अथउद्द करने पर मिष्याद्यपि जीवराशि ही न आ जाती है।

उदाहरण—अथराशि १ है। इसमें १५ के अथउद्द ४ होते हैं। यो ३,
के साथ अथउद्द पर ४ अधिक रहता है इसलिये १, ३ के १५ अधिक ४ अथ
उद्द हुए। अतएव जीवराशि १५ के यग ५ १ के उनकीवार अथान् ४ + ११ या अथउद्द
करने पर १५ आ जाते हैं।

प्रश्ना—मागहारराशिने अथउद्दप्रमाण जीवराशिने उपरिम वर्गके अथउद्द करने
पर मिष्याद्यपि राशि किस कारणसे भाती है?

धुरगमिणी अथउद्दप्रमाण कार्य संपूर्ण जीवराशिनी मथ येश्वासाकार्यके बराबर
होती है यदि ऐसा ग्रहण कर किया जाता है तो अथराशिना सार्वाकार्य छिद्र करके
योप यही हुई राशिमा प्रमाण संपूर्ण जीवराशिनी मिष्याद्यपि राशिसे व्यञ्जित करने पर जो
व्यय्य भाती है वतमा होता है (१५ - ११ = ४)। इसप्रकार होता है इसलिये संपूर्ण
जीवराशिने अथउद्दके द्वारा प्रमाणसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिने उपरिम वर्गके
अथउद्दके बराबर छिद्र करने पर संपूर्ण जीवराशिमा प्रमाण आ जाता है। अतएव मिष्या-
द्यपि जीवराशिमा प्रमाण उद्दिष्ट संपूर्ण जीवराशिने प्रमाणसे ऊपर उत्पन्न की हुई संपूर्ण जीव
राशिमें माग देने पर मिष्याद्यपि जीवराशि भाती है।

उदाहरण—जीवराशि १५ के अथउद्द ४ के बराबर जीवराशि के वर्ग २५ के अथ
उद्द करने पर १५ व्यय्य आते हैं। अतएव मिष्याद्यपि प्रमाणसे व्यञ्जित जीवराशिने प्रमाण

छेदणया मरंति । सम्भृत्य दुग्धादिकरणं वि वत्तन्व । तदो वेरुवचारापरुवभा समचा भवदि ।

अद्वरुवचाराए गहिद वत्तइस्सामो । पुवरासिणा सम्भजीवरासिउवरिमवग्गस्सु वरिमवग्ग गुणेऊण वेण घनउवरिमवग्गे मागे हिदे मिच्छाइहिरासी आगच्छदि । केन कारणेण ? सम्भजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिम वग्गे मागे हिदे सम्भजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पुवरासिणा सम्भजीवरासिउवरिमवग्गे मागे हिदे मिच्छाइहिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कहु गुणेऊण मागग्गहर्भं कद । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाइहिरासी वेव अवचिह्हे । तस्स मागहारस्स अद्व च्छेदणया केचिया ? एगरूव विरलिय विगं करिय अप्पोण्णम्मत्तरासिणा विगुणं

पर मागहार राशिसे अर्थच्छेद होते हैं । सर्वत्र द्विगुणादिकरणका भी कथन करना चाहिये । तब आकर द्विरूप वर्गघातका प्रकरण समाप्त होता है ।

अब अद्यनपघात अर्थात् घनघातमें शुद्धित उपरिम विकल्पको बतलाने हैं—
सुवराशिसे आठ संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो कथ्य भावे उसका जीवराशिसे घनके उपरिम वर्गमें माग देने पर मिथ्याद्यपि जीवराशि न्य जाती है क्योंकि संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका जीवराशिसे घनके उपरिम वर्गमें माग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग भ्रष्टा है । अनन्तर सुवराशिका संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वर्गमें माग देने पर मिथ्याद्यपि जीवराशि जाती है । घनघातमें इस प्रकार मिथ्याद्यपि जीवराशि जाती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९}{१} \times \frac{१९}{१} \times \frac{२५९}{१३} = \frac{१९७७७२१९}{१३}$$

$$\frac{१९७७७२१९}{१} + \frac{१९७७७२१९}{१३} = १३ \text{ मिथ्याद्यपि}$$

अब मागहारके अर्थच्छेदप्रमाण उक्त राशिसे अर्थच्छेद करने पर भी मिथ्याद्यपि जीवराशि ही न्य जाती है ।

शंका — उक्त मागहारके अर्थच्छेद कितने हैं ?

समाधान — एकका विरलन करके और उस से रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि भावे उसे विगुणित करके और उसमेंसे एक कम करके जो राशि रहे उससे संपूर्ण

अद्वन्द्वय एव मिच्छाद्विरासी आगच्छति । एतस्य भागहारस्तु अद्वन्द्वयसंज्ञाया
केविया ? सम्बन्धीवरासीदो उचरि दोष्मि वगगङ्गायां चिद्विदामि चि दो रूपे विरक्ति
विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासिरूपेण गुणिदसम्बन्धीवरासिअद्वन्द्वयममेवा होऊन
अंतिमभागहारो अचिया भवति । एवं भागहारस्तु विगच्छेद्वय संज्ञाया काऊन सीहि
सीहि सरूपेहि रासिमि भाग हिदे वि मिच्छाद्विरासी आगच्छति । एव चतुर्थादि
छेद्वयसंज्ञायाहि वि रासिमि छिन्नमात्रे मिच्छाद्विरासी आगच्छति चि परवेद्वय ।
एव सरोजवासलेनजापिसु वगगङ्गायां उचरि वचनं । एवमि भागहारछेद्वयमा
सकलितमात्रे एवं सकलित्वमात्रो । तं ब्रह्मा, सम्बन्धीवरासीदो अद्विद्वयमेववगगङ्गायां
विरक्ति विगं करियण्णोण्णमत्थरासिरूपेण सम्बन्धीवरासिछेद्वय गुणिदे भागहार

जीवराशि जाती है ।

प्रश्न—इस भागहारकी अर्धच्छेद्वयका कार्य क्या है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिसे ऊपर दो वगस्यान जाकर वह भागहार उत्पन्न हुआ
है इसलिये दोका विरक्तन करके भीर इस विरक्ति राशिसे प्रत्येक एकको दो कप
करके परस्पर गुणा करनेसे जो संख्या उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके अवशिष्ट राशिसे
छाया संपूर्ण जीवराशिसे अर्धच्छेद्वयको गुणित करके जो प्रमाण पाये उसे अंतिम भागहारसे
अधिक करने पर अर्धच्छेद्वयका कार्य होती है ।

उदाहरण— $2 \times 2 = 4 - 1 = 3 \times 4 = 12$ पूर्ण और $\frac{1}{2}$ अधिक कप भागहारके कुल
अर्धच्छेद्वय होते हैं ।

इसप्रकार भागहारके अर्धच्छेद्वयोंको रासायन करके तीन तीनका राशिमें भाग देने
पर भी मिच्छाद्वि जीवराशि आ जाती है । इसीप्रकार अतुल्य आदि छेद्वय रासायन्यके द्वारा
भी राशिसे छिन्न करने पर मिच्छाद्वि जीवराशि आती है ऐसा कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $\frac{259}{13}$ के $\frac{22}{13}$ $\frac{22}{13}$ इसप्रकार २ अर्धच्छेद्वय हैं अतः इतनीवार 259 में
३ का भाग देने पर 13 छल्ल आ जाते हैं ।

इसीप्रकार सप्तयात अस्त्रकाय और अथर्व वर्गस्यानोके ऊपर भी कथन करना
चाहिये । इतनी विचारता है कि भागहारके अर्धच्छेद्वयोंका सकलन करते समय इसप्रकार सक
लन करना चाहिये । जोगे इसीप्रकार स्पष्टीकरण करते हैं—

संपूर्ण जीवराशिसे कितने वर्गस्यान ऊपर गये हों उतनी वर्गस्यानोको विरक्तन
करके भीर उस विरक्ति राशिसे प्रत्येक एकको दो कप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि
उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके छेद्वय राशिसे संपूर्ण जीवराशिसे अर्धच्छेद्वयोंको गुणित करने

ॐ । तस्य भागहारस्त अद्
 ण्णोण्णम्मत्तरासिणा णवगुण
 सञ्चत्य च्चिददानसलागाओ
 ७णेण गुणिदसम्मजीवरासिच्छेदन
 गव्वत्थ दुगुणादिकरणं पि कायम् ।

रिभवगस्त अण्विमभागेण मिच्छाद्वि
 ७दो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे

जीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी

उत्त होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद १२१ होगा ।
 १ पर छप्प १३ मिथ्याद्वि राशि आती है ।
 कितने हैं ?

१८ भीर उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
 जो सप्प भाये उसमेंसे एक कम करके दो राशि होय
 तौस गुणित कर देने पर जो राशि भाये वतने उक्त

$$1/ - 1 = 13 \times 8 = 104$$

त ऊपर आये तत्प्रमाण शाखाकर्मोक्त विरचन करके भीर
 एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि
 १ जो सप्प भाये उसमेंसे एक कम करके दो राशिको संपूर्ण
 १ कर दे । ऐसा करने पर घनाघनघातमें विपक्षित भागहारके
 १ घनाघनघातके संख्यात अमंख्यात भीर अनन्त घगस्त्रातोंमें
 १ द्विगुणाधिकरण भी कर देना चाहिये । इसप्रकार करन पर
 १ होती है ।

म यिक्कस्सको वतसमते है—संगूण जीवारशिके उपरिम वगके
 जीवारशिवा ऊपर इच्छित घर्गमें भाग देने पर जो भाग सप्प
 देने पर मिथ्याद्वि जीवारशि आती है ।

१ - १३ का इच्छित घग १५५३१।

$$13 = \frac{15531}{13} ; \frac{15531}{1} \div \frac{15531}{13} = 13 \text{ मिथ्याद्वि.}$$

रूपेण गुणिदसम्बन्धीवरासिच्छेदणयमचा इति । उवरि सभ्यत्थ दोरुवादीजमन्वावा
म्बत्तरासिणा तिगुणरूपेण गुणिदसम्बन्धीवरासिच्छेदणयमचा इति । एव संख मा-
संखेन्नापत्तिस्तु जेयम् । सभ्यत्थ दुगुणादिकरणं कयम् । एव कद अहुपरुवणा
समचा मवदि ।

धणाधने गहिद वच्छस्सामा । धुवरासिणा सम्बन्धीवरासित्तरिमवगगस्तुवरिमवगग
गुणेत्थ तेष वणत्तरिमवगगस्तुवरिमवगग गुणेत्थ तेष धणाधणत्तरिमवगगे भागे हिदे
मिच्छमादिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? वणत्तरिमवगगस्तुवरिमवगगेण धणाधण
त्तरिमवगगे माये हिदे वणत्तरिमवगगो आगच्छदि । पुणो वि सम्बन्धीवरासित्तरिम
वगगस्तुवरिमवगगेण वणत्तरिमवगगे भागे हिदे सम्बन्धीवरासित्तरिमवगगो आगच्छदि ।
पुणो वि धुवरासिणा सम्बन्धीवरासित्तरिमवगगे भागे हिदे मिच्छमादिरासी आगच्छदि ।
एवमागच्छदि चि कद गुणेत्थ भागमाहण कद । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेवे

जीवराशि के अर्थच्छेदों को गुणित करने पर जो सख्या भागे उतने उक्त भागहार के अर्थच्छेद
होते हैं ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 2 = 4 - 1 = 4 \times 4 = 20$ अर्थच्छेद, पर अन्तिम $1\frac{1}{2}$ होमा ।

ऊपर सर्वत्र जो संख्या आदिष्व परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो वसे
त्रिगुणित करने और वस त्रिगुणित राशिमेंसे एक कम करके दोष राशिसे संपूर्ण जीवराशि के
अर्थच्छेदों को गुणित करने पर अर्थच्छेदों का प्रमाण होता है । इसीप्रकार संप्रपन्न असेवपात
और अन्त स्थानोंमें भी समा लेना चाहिये । सर्वत्र त्रिगुणाधिकरण भी करना चाहिये । इस
प्रकार करने पर धनधारा समाप्त होती है ।

यव धनाधनपाठमें सूचित अपरिम विकल्पको बतलाते हैं—मुखराशिसे संपूर्ण
जीवराशि के अपरिम वर्ग के अपरिम वर्ग को गुणित करके जो लघ्य भागे इससे
जीवराशि के घन के अपरिम वर्ग के अपरिम वर्ग को गुणित करके जो लघ्य भागे इसका
धनाधन के अपरिम वर्ग में भाग देने पर मिथ्याद्यपि जीवराशि जाती है क्योंकि घन के
अपरिम वर्ग के अपरिम वर्ग का धनाधन के अपरिम वर्ग में भाग देने पर धनका अपरिम वर्ग जाता
है । फिर संपूर्ण जीवराशि के अपरिम वर्ग के अपरिम वर्ग का घन के अपरिम वर्ग में भाग देने पर
संपूर्ण जीवराशि का अपरिम वर्ग जाता है । फिर मुखराशि का संपूर्ण जीवराशि के अपरिम वर्ग में
भाग देने पर मिथ्याद्यपि जीवराशि जाती है । धनाधनधारा में इसप्रकार मिथ्याद्यपि जीव
राशि जाती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका प्रमाण किया है ।

उदाहरण— $19^1 \times 19^1 \times 19^1 = 6859 \times 19^1$

$$\frac{6859 \times 19^1}{19^1} = 19 \text{ मिथ्याद्यपि.}$$

$$19^1 \times 19^1 \times \frac{19^1}{19^1} \times 19^1 \times 19^1$$

राशिस्त अदृष्टेदणए कदे वि मिच्छाद्विरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्त अदृष्टेदणया केचिया ? एगरूखं विरलेऊण विग करिय अण्णोण्णम्मत्थरासिणा णवगुण रूबूणेण सध्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदमेघा । उवरि सध्वत्थ चडिदद्वानसलागाओ पिरालिय विग करिय अण्णोण्णम्मत्थरासिणा भवगुणरूबूणेण गुणिदसध्वजीवरासिच्छेदण यमथा भवंति । एव सखेज्जासखज्जाणतेसु भेयध्व । सध्वत्थ दुगुणादिकरण पि कायध्व । एव कदे घणाघमपरूषणा समथा भवति ।

गहिदगहिद वचइस्सामो । सध्वजीवरासिउवरिभवग्गस्त अनतिममाणेव मिच्छाद्वि रासिणा उवरि इच्छिदवग्गे मागे हिदे ओ मागलद्धो तण वग्गि वेव वग्गे मागे हिदे

उक्त मागहारके कितने भर्षच्छेद हैं उतनीवार उक्त राशिके भर्षच्छेद करने पर भी मिथ्याद्वि जीवराशि भा जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके १८ भर्षच्छेद होंगे पर अन्तिम भर्षच्छेद ११ $\frac{१}{२}$ होगा । अतः इतनीवार उक्त माय राशिके छेद करने पर शेष १२ मिथ्याद्वि राशि जाती है ।

प्रश्न—उक्त मागहारके भर्षच्छेद कितने हैं ?

समाधान—एकका पिरसन करक थीर उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे भी से गुणा करके जो अन्य भाये उसमेंसे एक कम करके जो राशि शेष रहे उसे संपूर्ण जीवराशिके भर्षच्छेदोंसे गुणित कर देने पर जो राशि भाये उतने उक्त मागहारके भर्षच्छेद हैं ।

$$\text{उदाहरण—} 2 = 2 \times 9 = 18 - 1 = 17 \times 8 = 136$$

१

मागे सपन्न कितने स्थान ऊपर जायें तत्प्रमाण शकाकामोंका विरसन करके भीर उस विरमित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करक परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे भीसे गुणा करके जो शेष भाये उसमेंसे एक कम करके शेष राशिको संपूर्ण जीवराशिके भर्षच्छेदोंसे गुणित कर दे । ऐसा करने पर घनाघनघारायें विपक्षित मागहारके भर्षच्छेद भा जायेंगे । इसीप्रकार घनाघनघाराके संवधान समवशात थीर मनस्त घगस्वामोंमें भी कृपा देना चाहिये । सपन्न द्विगुणादिकरण भी कर देना चाहिये । इसप्रकार करने पर घनाघनघाराकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

भव पृथीतपृथीत उपरिम पिक्कवाओ वतमाते हैं—संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम वगके मनस्तिम मागरूप मिथ्याद्वि जीवराशिवा ऊपर इच्छित धर्ममें माग देने पर जो माग शेष भाये उसका उही वगमें माग देने पर मिथ्याद्वि जीवराशि जाती है ।

उदाहरण—उपरिम वग ५११ का इच्छित वग १५५११,

$$\frac{१११११}{१} - \frac{११}{१} = \frac{१११११}{११} - \frac{१५५११}{११} = १२ मिथ्याद्वि.$$

मिच्छाद्विरासी आमच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमच्च रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्विरासी चेव अबधिहुदे । तस्मद्वच्छेदणया कसिया ? मिच्छाद्विरासि अद्वच्छेदणएणूषत्तम्मनिदरासिअद्वच्छेदणयमेवा । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु पेयच्च । वेरूषपरूवणा गदा । अहुत्तं पत्तइस्सामा । सम्बजीवरामिपणस्स अर्णत्तिममाणेण उवरि इच्छिद्वग्गे मागे हिदे ओ मागलद्धो वेण तम्हि चेव पग्गे मागे हिदे मिच्छाद्विरासी आमच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्विरासी भागच्छदि वि । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु पेयच्च । एवमद्वरूपरूवणा गदा । पणापणे पत्तइस्सामो । पणापणपडमपग्गमूलस्स अर्णत्तिममाणेण उवरि इच्छिद्वग्गे

उक्त भागहारके कितने अर्थच्छेद हैं उतनीवार उक्त राशिके अर्थच्छेद करने पर भी मिष्पाद्यदि जीवराशि ही ब्यती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके १२ अर्थच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्थच्छेद ११^२ होगा। अतः इतनीवार उक्त मज्जमान राशिके अर्थच्छेद करने पर मिष्पाद्यदि राशि १३ ब्यती है ।

शुद्धा—उक्त भागहारके अर्थच्छेद कितने हैं ?

समाधान—जिस राशिमें मिष्पाद्यदि राशिअ भाग दिया गया है उसके अर्थच्छेदोंमेंसे मिष्पाद्यदि राशिके अर्थच्छेद कम कर देने पर उक्त भागहारके अर्थच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात, संसंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी समा लेना चाहिये । इसप्रकार पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें विकल्पवर्गभावात्मी प्रकृषणा समाप्त हुई । अब पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें अद्वक्य अर्थात् धनधाराको बतलाते हैं—

संपूर्ण जीवराशिके धनके अनन्तिम मागध्य ऊपर दृष्टिगत वर्गमें भाग देने पर जो माग लभ्य आवे उसका उही वर्गमें भाग देने पर मिष्पाद्यदि जीवराशि ब्यती है ।

उदाहरण—जनराशि ४ ९३ का दृष्टिगत वर्ग १३७७७२१३।

$$\frac{१३७७७२१३}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{१३७७७२१३}{१३} = \frac{१३७७७२१३}{१३} - \frac{१३७७७२१३}{१३} = १३ मिष्पाद्यदि.$$

उक्त भागहारके कितने अर्थच्छेद हैं उतनीवार उक्त माज्य राशिके अर्थच्छेद करने पर भी मिष्पाद्यदि जीवराशि ब्यती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २ अर्थच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्थच्छेद ११^२ होगा। अतः इतनीवार उक्त मज्जमान राशिके अर्थच्छेद करने पर मिष्पाद्यदि राशि १३ ब्यती है ।

इसीप्रकार संख्यात संसंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी समा लेना चाहिये । इसप्रकार पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें धनधाराकी प्रकृषणा समाप्त हुई । अब धनाधनधारामें पृथीत-पृथीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

धनाधनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम मागध्य ऊपर दृष्टिगत वर्गमें भाग देने पर जो

भागे हिंदे जो मागलद्धो ठेण तम्हि चव वग्ग भागे हिंद मिच्छाद्विप्रासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्वच्छेदण कदे वि मिच्छाद्विप्रासी चव आगच्छदि । (एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु नेयय्य) । एव घणापणपरूपणा गदा । गहिद्व गहिद्व गद्व ।

गहिद्वगुणगार वचइस्सामो । वेस्से सच्चजीपरासिउपरिमवग्गस्स अणतिमभागेण उपरि इच्छिदवग्गे भागे हिंदे जो मागलद्धो ठेण तमेव वग्ग गुणेष्ण तस्सुपरिमवग्गे भागे हिंदे मिच्छाद्विप्रासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमच रासिस्स अद्वच्छेदण कदे वि मिच्छाद्विप्रासी चव अवचिद्धे । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु नेयय्य ।

माग छप्प भावे उत्तत्ता उत्ती पगमे माग देने पर मिच्छाद्वि जीपरासि जाती है ।

उदाहरण—घनापनका प्रथम पगमूळ २६२१४४।

$$\frac{२६२१४४}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{२६२१४४}{१३}, \quad \frac{२६२१४४}{१} - \frac{२६२१४४}{१३} = १३ मिच्छाद्वि.$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त माग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिच्छाद्वि राशि ही जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके ३२ अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद $\frac{१}{१३}$ होता है ।

अतः इतनीवार उक्त माग्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिच्छाद्वि राशि १३ जाती है ।

(इसीप्रकार संखेय असत्येय और अनन्त वगस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये) । इसप्रकार पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें घनापनकी प्रकृपा समाप्त हुई । इसप्रकार पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अब पृथीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतसाते हैं—ठिकप वर्गपारामें संपूर्ण जीपरासिके उपरिम वर्गके अनन्तमें मागका ऊपर दक्षिण पगमें माग देने पर जो भाग छप्प भावे उत्तत्ते उत्ती वगराशिकी गुणित करके जो सप्प भावे उत्तत्त उक्त वर्गराशिके उपरिम पगमें माग देने पर मिच्छाद्वि जीपरासि जाती है ।

उदाहरण—उपरिम पग २५३ का दक्षिण वर्ग ६४०३६।

$$\frac{६४०३६}{१} + \frac{१३}{१} = \frac{६४०३६}{१३}, \quad \frac{६४०३६}{१३} \times \frac{६४०३६}{१} = \frac{६४०३६}{१३}.$$

$$\frac{६४०३६}{१} - \frac{६४०३६}{१३} = १३ मिच्छाद्वि.$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त माग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिच्छाद्वि जीपरासि ही जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके २८ अर्धच्छेद होंगे । अन्तिम अर्धच्छेद $\frac{१}{१३}$ होता है ।

अतः इतनीवार उक्त माग्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिच्छाद्वि राशि १३ जाती है ।

इसप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त वगस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार

मिच्छाद्विरासी भाग-४दि । तस्मात् मागहारस्म अद्वन्द्वेदणयमत्त रासिस्म अद्वन्द्वेदणय
 क्ते वि मिच्छाद्विरासी चैव अवशिष्टे । तस्माद्वन्द्वेदणया क्तिपया । मिच्छाद्विरासि
 अद्वन्द्वेदणयणूतस्ममिच्छाद्विरासिअद्वन्द्वेदणयमेवा । एव संखेन्नासंखेन्नाणतेसु जेयम् ।
 वेत्तुपत्तवमा गदा । अद्वन्द्व वचस्सामो । सम्बन्धीरामिधनस्म अर्धतिममागण उपरि
 इच्छिद्वग्मे भागे हिदे ओ मागलद्वो तेण तस्मि चैव वग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विरासी भाग
 ४दि । तस्मात् मागहारस्म अद्वन्द्वेदणयमेवा रासिस्म अद्वन्द्वेदणय क्ते वि मिच्छाद्विरासी
 भाग-४दि चि । एव संखेन्नासंखेन्नाणतेसु जेयम् । एवमद्वन्द्वपत्तवमा गदा ।
 पणापने वचस्सामो । पणापणपट्टमवग्गामूत्तस्म अर्धतिममागण उपरि इच्छिद्वग्मे

उक्त मागहारके कितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी
 मिथ्याएधि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके १२ अर्धच्छेद होने पर अन्तिम अर्धच्छेद ११^२ होगा । अतः
 इतनीवार उक्त मध्यमाग राशिसे अर्धच्छेद करने पर मिथ्याएधि राशि १३ आती है ।

प्रश्न—उक्त मागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान—असि राशिमें मिथ्याएधि राशि का भाग दिया गया है उसके अर्धच्छेदोंमेंसे
 मिथ्याएधि राशिसे अर्धच्छेद कम कर देने पर उक्त मागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार
 संख्यात असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी जगा लेना चाहिये । इसप्रकार पृथीतपृथीत
 उपरिम विकल्पमें शिकपवर्गघाराधी प्रकल्पना समाप्त हुई । अब पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें
 अक्षरूप अर्धत्तु वनघाराधी बतकाते हैं—

सर्वत्र जीवराशिसे घनके अनन्तिम मागका रूपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो माग
 कथ्य प्यके वसका उनी वर्गमें भाग देने पर मिथ्याएधि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनराशि ४ २६ का इच्छित वर्ग १९७७७२१९।

$$\frac{१९७७७२१९}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{१९७७७२१९}{१३} + \frac{१९७७७२१९}{१३} = १३ मिथ्याएधि$$

उक्त मागहारके कितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त माग राशिसे अर्धच्छेद करने
 पर भी मिथ्याएधि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके १ अर्धच्छेद होने पर अन्तिम अर्धच्छेद ११^२ होगा । अतः
 इतनीवार उक्त मध्यमाग राशिसे अर्धच्छेद करने पर मिथ्याएधि राशि १३ आती है ।

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी कथ्य लेना चाहिये । इसप्रकार
 पृथीतपृथीत उपरिम विकल्पमें घनघाराधी प्रकल्पना समाप्त हुई । अब घनघनघाराधी पृथीत
 पृथीत उपरिम विकल्पको बतकाते हैं—

घनघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम मागका रूपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो

आगच्छदि । तस्स भागहारस्म अद्वच्छेदणयमेवे रासिस्म अद्वच्छेदणए कद वि मिच्छा
इद्विरासी चेव आगच्छदि । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु वेयय । घणाघणपरूवणा गदा ।

सासणसम्माद्विअहुदि जाव सजदामजदा त्ति दम्बपमाणेण
केवडिया ? पलिदोवमस्स असखेज्जादिमाणो । एदेहि पलिदोवम-
मवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ६ ॥

एत्थ ताव सासणसम्माद्विरासिस्स पमाणपरूवण वचइस्सामो । सासणसम्माद्वि
दम्बपमाणेण केवडिया ? पलिदोवमस्स असखेज्जादिमाणो । खेवकालपमाणेहि किमिदि

उक्त भागहारके जितने अघच्छेद् हैं उतनीपार उक्त भाग्य राशिके अघच्छेद् करने
पर भी मिच्छाद्वि जीवराशि ही जाती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अघच्छेद् होते हैं, मतः इतनीपार उक्त मगपमाण
राशिके अघच्छेद् करने पर मिच्छाद्वि राशि १३ जाती है ।

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार
एकविगुणकार उपरिम विकल्पमें घणाघनपरूवणा समाप्त हुई ।

सामानसम्यग्द्वि गुणस्थानसे छेकर सप्तसार्धपथ गुणस्थानतक प्रत्येक गुण
स्थानवर्ती जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? पस्यापमक असंख्यातवें भागमात्र है ।
इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तस पत्थोपम
अपहन होता है ॥ ६ ॥

उनमेंसे पहले यहाँ सासादनसम्यग्द्वि जीवराशिका प्रमाण बनना है—

सासादनसम्यग्द्वि जीवराशि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी है ? पस्यापमके
अधेरपातवें भागमात्र है ।

विशेषार्थ—भाग अंकसेद्विमे सासादनसम्यग्द्वि अर्द्धि चार गुणस्थानवर्ती
जीवराशिका प्रमाण स्थानके सिधे पत्थोपमका प्रमाण १२५३३ और सासादनसम्यग्द्वि जीव
राशिका प्रमाण स्थानके सिधे अघहारकालका प्रमाण ३२ कथित किया है । इसप्रकार सामा
दनसम्यग्द्विके अघहारकाल ३२ का १५५३३ प्रमाण पस्यापममें भाग देने पर सासादन
सम्यग्द्वि जीवराशिका प्रमाण २०४८ आता है जो कि पस्यापमक असंख्यातवें भागमात्र है ।
अपमरूपणा भी इसीप्रकार जान लेना चाहिये ।

पुंछा—यहाँ शेषप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षामें भी सामादनसम्यग्द्वि

१ सासादनसम्यग्द्वि १२५३३ अघहारकाल ३२ का १५५३३ प्रमाण पस्यापममें भाग देने पर सासादनसम्यग्द्वि

१ मि. १ दिग्ग कालप्रमाणविस्तारित दुरतप्रमाण । वगैरेश्वरिवर्द्धकाल संवत्सङ्ग ॥ श्री १२५

१ पत्थोपमप्रमाण १२५३३ अघहारकाल ३२ का १५५३३ प्रमाण पस्यापममें भाग देने पर सासादनसम्यग्द्वि

वेरूपपरूषणा गदा । अद्वये वचस्सामो । घनस्त अन्तिमभागेण उवरि इच्छिद्वग्गे भागे हिदे ओ मागसद्धो तेण तमेव वग्ग गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विहारासी आमच्छदि । तस्स मागहारस्त अद्वयेद्वययमये रासिस्त अद्वयेद्वय कदे वि मिच्छाद्विहारासी येव आगच्छदि । एव सत्तेन्नासत्तेन्नापत्तेसु जेयस्व । अद्वयपरूषणा गदा । पचापण वचस्सामा । घणापणपदमवग्गमूलस अन्तिमभागेण उवरि इच्छिद्वग्गे भागे हिदे ओ मागसद्धा तेण तमेव वग्ग गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विहारासी

पृथीतगुणकार अपरिम विवक्ष्यमे द्विरूप वर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब अद्यकय धारामें पृथीतगुणकार अपरिम विवक्ष्यको बतलाते हैं—

घनके अन्तिम मागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो छप्प भाग्य उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके छप्प राशिका एक वर्गराशिके अपरिम वर्गमें भाग देने पर मिष्पाद्यदि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनराशि ४ ९९ का इच्छित वर्ग १९७७७२१९।

$$\frac{१९७७७२१९}{१} - \frac{१९}{१} = \frac{१९७७७२१९}{१९}, \quad \frac{१९७७७२१९}{१९} \times \frac{१९७७७२१९}{१} \\ = \frac{१९७७७२१९}{१९}, \quad \frac{१९७७७२१९}{१} + \frac{१९७७७२१९}{१९} = १९ मिष्पाद्यदि$$

इस मागहारके बिले अर्धच्छेद हों उतनीवार एक माग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिष्पाद्यदि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—एक मागहारके ४४ अर्धच्छेद प्रमाण एक राशिक अर्धच्छेद करने पर मिष्पाद्यदि राशि १९ छप्प आती है ।

इसीप्रकार सरूपात असेक्यात और अन्त रूपानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार पृथीतगुणकार अपरिम विवक्ष्यमें अद्यकय प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनापणधारामें उचीको बतलाते हैं—

घनापणके प्रथम वर्गमूलके अन्तिम मागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग छप्प भाग्य उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो छप्प भाग्य उसका एक वर्ग राशिके अपरिम वर्गमें भाग देने पर मिष्पाद्यदि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनापणक प्रथम वर्गमूल २३२१४४ का इच्छित वर्ग १८७१ ४७९७३६।

$$\frac{१८७१४७९७३६}{१} + \frac{१९}{१} = \frac{१८७१४७९७३६}{१९}, \\ \frac{१८७१४७९७३६}{१} \times \frac{१८७१४७९७३६}{१९} = \frac{१८७१४७९७३६}{१९}, \\ \frac{१८७१४७९७३६}{१} + \frac{१८७१४७९७३६}{१९} = १९ मिष्पाद्यदि$$

साक्षात्सम्मादृष्टिपरूषणा न परस्विदा ? न, एतत् मिच्छादृष्टिस्त्विह तद्वि परस्वेदम्बस्म
कारणामात्रा । किं तस्य कारण ? बुद्धे—असंख्येन्द्रियपरिणाम एव कथमप्यतो जीवरासी
सम्मादि चिन्नादसंदेहमिराकरणं स्वेतपमात्रं बुद्धे । आयविराद्विदस्तु सिद्धतज्जीवे
अवेक्षितव्यं सम्बन्धस्म सम्बन्धीवरासिस्तु किं बोद्धेदो होदि, न होदि चिन्नादसंदेह
मिराकरणं स्वेतपमात्रं परस्विद्विद्वि । न च प्रदेसु कारणेषु एकं पि कारणमेतत्
समबद्धं, अनुवर्तमादो । तद्वा स्वेतकालपरूषणा साक्षात्प्रादीनं गंधं न परस्विदा । एतत्

जीवराशिषा प्रकल्प कर्त्तव्यं नहीं किया ।

समाधान—नहीं क्योंकि, जिसप्रकार मिथ्यादि जीवराशिषा क्षेत्रप्रमाण और
काक्षप्रमाणकी अपेक्षासे प्रकल्प करनेका कारण या उत्पत्त्यकार यहाँ पर उक्त दोनों प्रमाणोंके
द्वारा साक्षात्सम्बन्धदि जीवराशिषाके प्रकल्प करनेका कोई कारण नहीं है । अतएव उक्त
प्रमाणोंके द्वारा साक्षात्सम्बन्धदि जीवराशिषा प्रकल्प नहीं किया ।

शुद्धा—यहाँ पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा मिथ्यादि जीवराशिषाके प्रकल्प करनेका
क्या कारण है ?

समाधान—असंख्यात प्रवेष्टी क्षेत्रमें अनन्तप्रमाण जीवराशि फेले समा जाती है,
इसप्रकारसे उत्पन्न हुए संवेदके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कारण किया जाता है । तथा
जापरहित और सिद्धयमान जीवोंकी अपेक्षा व्यवसहित संपूर्ण जीवराशिषा विच्छेद होता है
या नहीं इसप्रकार उत्पन्न हुए संवेदके दूर करनेके लिये काक्षप्रमाणका प्रकल्प किया जाता
है । परंतु इन कारणोंमेंसे यहाँ पर एक भी कारण संभव नहीं है क्योंकि यहाँ पर कोई भी
कारण नहीं पाया जाता है । अतः क्षेत्रप्रमाण और काक्षप्रमाणके द्वारा साक्षात्सम्बन्धदि
जीवराशिषा प्रकल्प प्रत्ययमें नहीं किया ।

विश्लेषार्थ—शब्दकारका कहना है कि जिसप्रकार पहले मिथ्यादि जीवराशिषाके
प्रमाणका प्रकल्प करते समय अन्तर्गततादि मोक्षपिण्डस्त्वपिण्डीति न बहिरिति काक्षेय
इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादि जीवराशिषा काक्षकी अपेक्षा प्रमाण कहा है और क्षेत्रेय
अन्तर्गतता क्षेत्रेय इति सूत्रके द्वारा मिथ्यादि जीवराशिषा क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा है
अर्थात्प्रकार प्रकृतमें भी साक्षात्सम्बन्धदि जीवराशिषा प्रमाण क्षेत्र और काक्षप्रमाणकी
अपेक्षासे कहना चाहिये । शब्दकारकी इस शब्दका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि
मिथ्यादि जीव अनन्तानन्त होते हैं अतएव उनका अक्षयप्राप्तप्रवेष्टी क्षेत्रप्रमाणमें रहना
असंभव है ऐसी शब्द किसीको हो सकती है । अतः इसके परिहारके लिये मिथ्यादि जीव-
राशिषा क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्रकल्प किया । दूसरे, मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा
मिथ्यादि जीवराशिषा व्यवस तो निरंतर बाह्य है पर उनकी बुद्धि कभी भी नहीं होती इसलिये
उनका जमाव हो जायगा ऐसी दावा भी किसीको हो सकती है अतएव इसके परिहार
करनेके लिये काक्षप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादि जीवराशिषा प्रकल्प किया कि अनन्तानन्त

मागहारपमाणसंतोमुहुचमिदि सासणसम्प्रदायिआदिरासिपमाणविसयणिज्जमुप्पायनहु परूषणं । तं च अतोमुहुचमणेयवियप्य, तदो एतियमिदि न वानिज्जदि । तस्य भिच्छय सनपमिमिच किंचि अद्यापरूषण कस्सामो । तं कच ? असंखेज्जे समए भेषूण एया आवलिया इवदि । तप्पाओगासखेउआवलियाओ पेषूण एगो उत्तासो इवदि । सच उत्तासे पेषूण एगो बोवो इवदि । सच योवे पेषूण एगो लवो इवदि । अठ्ठीस लवे अट्ठलं च पेषूण एगा पालिया इवदि । उचं च —

आवलि अससुसमया सखेज्जावलिस्समा उत्तासो ।

सपुत्तासो योवो सत्तायोवा लवो एक्को ॥ ११ ॥

उत्सर्पिणियों और अवसर्पिणियोंके हो जाने पर भी सिध्दाद्वि जीवरक्षि समाप्त नहीं हो सकती है । परन्तु सासादनसम्प्रदायि जीवोंके संख्यामें इन दोनों प्रदनोंमेंसे कोई प्रद न उपस्थित नहीं होता है क्योंकि वे केवल पक्षोपमके अंतर्भावार्थे मागप्रमाण हैं । अतः उनकी श्लोकाकारमें अवस्थिति कैसे होगी यह बात नहीं कही जा सकती है । और सासादनसम्प्रदायि जीव यद्यपि सिध्दात्त्व गुण स्थानको प्राप्त होते रहते हैं इसलिये उनका व्यय होता है फिर भी उपशमसम्प्रदायि जीवोंमेंसे कहीं अनुपातसे सासादन गुणस्थानको भी प्राप्त होते रहते हैं, अतएव व्ययके समान भाग भी निरंतर चालू है । इसलिये उनका अभाव हो आपण यह भी नहीं कहा जा सकता है । इसप्रकार श्रेय और कास्मप्रमाणकी अपेक्षा सासादनसम्प्रदायि जीवोंका प्रमाण कहनेके लिये कोई कारण नहीं होनेसे उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्प्रदायि जीवरक्षिक कथन नहीं किया ।

सासादनसम्प्रदायि आदि जीवरक्षिक प्रमाण कहते समय मागहारका प्रमाण ओ अमृतमुहूर्त कहा है वह सासादनसम्प्रदायि आदि रक्षियोंके प्रमाण विषयक निर्णयके उत्पन्न करनेके लिये कहा है । परन्तु वह अमृतमुहूर्त अनेक प्रकारका है इसलिये प्रकृतमें इतना अमृतमुहूर्त विवक्षित है यह नहीं जाना जाता है । इसलिये विवक्षित अमृतमुहूर्तके विषयमें निश्चय उत्पन्न करनेके लिये ओकेमें काष्ठका प्रकरण करते हैं ।

संक्षेप—वह काष्ठप्रकरण किसप्रकार है ?

समाधान—अंतर्भावत समयकी एक भावकी होती है । ऐसी तथोम्य संख्यात भावविषयोका एक उच्छ्वास होता है । सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है । सात स्तोकोंका एक खण होता है, और साठे अङ्गुलीय लवोंकी एक मासी होती है । कहा भी है—

असंख्यात समयोंकी एक भावकी होती है । संख्यात भावविषयोंके समूहको एक उच्छ्वास कहते हैं । सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है और सात स्तोकोंका एक खण होता है ॥ १२ ॥

सासणसम्माइहियकरुणया न परुबिदा ? न, एत्थ मिच्छाइहिसिस्सव तदि परुबदब्बस्स कारणामावा । किं तत्थ कारणं ? बुबदे—अत्तंखेज्जपएसिए लाए कप्पमर्जतो जीवरासी सम्मादि चि आदसंदेहविराकरणहुं खेचपमाण बुबदे । आपविरहिदस्स सिज्जंतजीवे अबेक्खिय सन्नयस्स सन्नजीवरासिस्स किं वोच्छेदो होदि, व होदि चि आदसंदेह विराकरणहुं कालपमाण परुबिद्वदि । न च एदेसु कारणेसु एक्कं पि कारणमेत्थ संभवह, अपुबलमादो । तम्हा खेचकालपरुणया सासणादीय गवे न परुबिदा । एत्थ

जीवराशिका प्रकल्प क्यो नहीं किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि, जिसप्रकार मिथ्याएदि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे प्रकल्प करनेका कारण या उत्तमप्रकार यहाँ पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा साक्षात्तसम्बन्धदि जीवराशिके प्रकल्प करनेका कोई कारण नहीं है । अतएव उक्त प्रमाणोंके द्वारा साक्षात्तसम्बन्धदि जीवराशिका प्रकल्प नहीं किया ।

धुंका—यहाँ पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा मिथ्याएदि जीवराशिके प्रकल्प करनेका क्या कारण है ?

समाधान—असंख्यत प्रवेष्टी शोकमें अन्तप्रमाण जीवराशि कैसे समा आती है इसप्रकारसे उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कल्प किया जाता है । तथा मायरहित और सिद्धवमाण जीवोंकी अपेक्षा व्यपसहित सपूर्ण जीवराशिका विच्छेद होता है या नहीं इसप्रकार उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये कालप्रमाणका प्रकल्प किया जाता है । परंतु इन कारणोंमेंसे यहाँ पर एक भी कारण संभव नहीं है क्योंकि यहाँ पर कोई भी कारण नहीं पाया जाता है । अतः क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा साक्षात्तसम्बन्धदि जीवराशिका प्रकल्प प्रणयमें नहीं किया ।

विश्लेषार्थ—शोककारका कहा है कि जिसप्रकार पहले मिथ्याएदि जीवराशिके प्रमाणका प्रकल्प करते समय अर्थात्तार्थादि भेदविपरितस्सविचीहि व वचदितंति कालेन इस सूत्रके द्वारा मिथ्याएदि जीवराशिका कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है और लेतेव अर्थात्तार्था बोगा इस सूत्रके द्वारा मिथ्याएदि जीवराशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा है वहीप्रकार प्रकृतमें भी साक्षात्तसम्बन्धदि जीवराशिका प्रमाण क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षासे कहा चाहिये । शोककारकी इस शोकका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि मिथ्याएदि जीव अन्तःतान्त होते हैं अतएव इनका असंख्यतप्रवेष्टी शोकप्रशमें रहना असंभव है ऐसी शोक किसीको हो सकती है । अतः इसके परिहारके लिये मिथ्याएदि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्रकल्प किया । दूसरे, मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा मिथ्याएदि जीवराशिका व्यप तो निरंतर ब्रह्म है पर वनकी बुद्धि कभी भी नहीं होती इसलिये इनका अभाव हो जायगा ऐसी शोक भी किसीको हो सकती है अतएव इसके परिहार करनेके लिये कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्याएदि जीवराशिका प्रकल्प किया कि अन्तःतान्त

सपमाण पात्रदि । एकवीससहस्र-छत्सयमेतपाभेहि सवच्छरियाण दिवसो होदि । एत्थ पुन एगलच्छ-तेरहसहस्र-णठदि-सपपाणेहि दिवसो होदि । पाणेहि विप्पविजण्णार्ण सवच्छरियाण काठववहारो कर्णं पठ्ठे ? ण, केवलमासिदिविसमुद्दुचेहि समापदिनस मुद्दुचम्मुरगमादो । एव परुविदमुद्दुपुस्सासे ठेठेऊण वत्थ एगो उस्सासो पेत्तमो । संखेज्जावलिपाहि एगो उस्सासो निष्फन्जदि चि सो उस्सासो संखेज्जावलिपाओ कयाओ । वत्थ एगमावलिप पेत्तम असंखेज्जेहि समएहि एगावलिपा होदि चि असंखजा समया कायप्पा । वत्थ एगसमए अबपिदे सेसकालपमाण भिण्णमुद्दुचो उवदि । पुनो वि अवरोगे समए अबपिदे सेसकालपमाणमंतोमुद्दुच होदि । एव पुनो पुनो समया अवरोयप्पा जाव उस्सासो पिठ्ठिदो चि । तो वि सेसकालपमाणमंतोमुद्दुच पेव होइ । एव सेसुस्सासे वि अवरोयप्पा आवेगावलिपा सेसा चि । सा आवलिपा वि

गुणनफळ भावे उसमें सात कम भी सौ बर्षोंत् माठसौ तेरागवे और मिछाने पर सत्रमें कछे गये मुहूर्तके उच्छ्रमसोंका प्रमाण होता है इसलिये प्रतीत होता है कि उपर्युक्त मुहूर्तके उच्छ्रम सोंका प्रमाण सत्रचिह्न है । यदि सातसौ बीस बर्षोंका एक मुहूर्त होता है इस कथनको मान लिया जाय तो केवल इहाँस इबार छह सौ बर्षोंके द्वारा ही ज्योतिषियोंके द्वारा माने हुए दिन बर्षोंत् महोरारक्ष प्रमाण होता है । किन्तु यहाँ भागमानुसूल कथनके अनुसार तो एक सात तेरह इबार और एक सौ गये उच्छ्रमसोंके द्वारा एक दिन बर्षोंत् महोरारक्ष होता है ।

श्रुति—इसप्रकार बर्षोंके द्वारा दिवसके विषयमें विचारको प्राप्त हुए ज्योतिषियोंके काव्यप्रकार कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि केवलीके द्वारा कथित दिन और मुहूर्तके समान ही ज्योतिषियोंके दिन और मुहूर्त माने गये हैं इसलिये उपर्युक्त कोई दोष नहीं है ।

इसप्रकार केवलीके द्वारा प्रतिपादित एक मुहूर्तके उच्छ्रमसोंको स्थापित करके अबमेंसे एक उच्छ्रमस ग्रहण करना चाहिये । उक्तपाठ भाष्यियोंसे एक उच्छ्रमस निष्पन्न होता है इसलिये उस एक उच्छ्रमसकी संख्यात भाष्यियों बना केना चाहिये । उन भाष्यियोंमेंसे एक भाष्यीको ग्रहण करके, असंख्यात समयोंसे एक भाष्यी होती है इसलिये उस भाष्यीके असंख्यात समय कर केना चाहिये ।

यहाँ मुहूर्तमेंसे एक समय निश्चय लेने पर दोय काव्यके प्रमाणको मित्रमुहूर्त कहते हैं । उस मित्रमुहूर्तमेंसे एक समय और निश्चय लेने पर दोय काव्यका प्रमाण अन्तमुहूर्त होता है । इसप्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय कम करते हुए उच्छ्रमसके उत्पन्न होने तक एक एक समय निश्चय लेना चाहिये । यह सब एक एक समय कम किया हुआ काव्य भी अन्तमुहूर्तप्रमाण ही होता है । इसीप्रकार अब तक भाष्यी उत्पन्न नहीं होती है जब तक दोष रहे हुए एक उच्छ्रमसमेंसे भी एक एक समय कम करते जाना चाहिये । ऐसा करते हुए जो भाष्यी उत्पन्न होती है उसे मा अन्तमुहूर्त कहते हैं ।

सपमाणं पावदि । एकवीससहस्र-छस्सयमेवपाणेहि संवच्छरियाण दिवसो होदि । एत्थ पुण एगलच्छ-तेरहसहस्र-णउदि-सयपाणेहि दिवसो होदि । पाणेहि विप्पविदम्माणं सवच्छरियाण कालववहारो कथं भवदे ? ण, केवलिभासिदविषतमुहुचहि समाणदिवस मुहुचम्भुवगमादो । एव परुविदमुहुपुस्तासे ठवेऊण तत्थ एगो उस्सासो वेत्थो । संखेज्जावलिपाओ एगो उस्सासो णिप्फज्जदि चि सो उस्सासो संखेज्जावलिपाओ कयाओ । तत्थ एगमावलिप वेत्तुण असंखेज्जेहि समएहि एगावलिपा होदि चि असंखेज्जा समया कायम्भा । तत्थ एगसमए अबन्निदे सेसकालपमाण विप्पमुहुचा उवदि । पुणा वि अवरंग समय अबन्निदे सेसकालपमाणमंतोमुहुच होदि । एव पुणो पुणो समया अवनेयया आन उस्सासो णिदिदो चि । तो वि सेसकालपमाणमंतोमुहुच वेव होइ । एवं सेसुस्तासे वि अवनेयया जनेगावलिपा सेसा चि । सा जावलिपा वि

गुणतफ्फ भावे उचमं सात कम नी सी अर्थात् ब्याठसी तेरानवे और मिसाने पर सूत्रमें कहा गये मुहूर्तके उच्छ्रुसोंका प्रमाण होता है इसलिये प्रतीत होता है कि उपर्युक्त मुहूर्तके उच्छ्रुसोंका प्रमाण सूत्रविकृत है । यदि सातसौ बीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है इस कथनको मान लिया जाय तो केवल इतीस हजार छह सौ प्राणोंके द्वारा ही ज्योतिषियोंके द्वारा माने हुए दिन अर्थात् महोरारत्र प्रमाण होता है । किन्तु यहां आगमातुच्छ कथनके अनुसार तो एक आन तेरह हजार बीर एक सौ नवने उच्छ्रुसोंके द्वारा एक दिन अर्थात् महोरारत्र होता है ।

संका—इसप्रकार प्राणोंके द्वारा जिसके विषयमें विचारके प्राप्त हुए ज्योतिषियोंके कसम्पवहार कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि केबलीके द्वारा कथित दिन भीर मुहूर्तके समान ही ज्योतिषियोंके दिन और मुहूर्त माने गये हैं इसलिये उपर्युक्त कोई दोष नहीं है ।

इसप्रकार केबलीके द्वारा प्रतिपादित एक मुहूर्तके उच्छ्रुसोंको स्थापित करके उनमेंसे एक उच्छ्रुस प्रहण करना चाहिये । संवत्त आबळियोंसे एक उच्छ्रुस निष्पन्न होता है इसलिये उस एक उच्छ्रुसकी संख्यात आपक्षिण बना लेना चाहिये । इन आपक्षियोंमेंसे एक आबळीको प्रहण करके, अंतख्यात समयोंसे एक आबळी होती है इसलिये उस आबळीके अंतख्यात समय कर लेना चाहिये ।

यहां मुहूर्तमेंसे एक समय निकाल लेने पर दोष कालके प्रमाणको मिथमुहूर्त कहते हैं । उस मिथमुहूर्तमेंसे एक समय भीर निकाल लेने पर दोष कालका प्रमाण अन्तमुहूर्त होता है । इसप्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय कम करते हुए उच्छ्रुसके उत्पन्न होने तक एक एक समय निकालते जाना चाहिये । वह सब एक एक समय कम किया हुआ काल भी अन्तमुहूर्तप्रमाण ही होता है । इसीप्रकार अब तक आबळी उत्पन्न नहीं होती है तब तक दोष रहे हुए एक उच्छ्रुसमेंसे भी एक एक समय कम करते जाना चाहिये । ऐसा करते हुए जो आबळी उत्पन्न होती है उसे मा अन्तमुहूर्त कहते हैं ।

अतोऽनुचमिदि मण्यदि । तदो अवरेण आवलिपाए असंखेज्जदिभाएण तस्मि आवलियमिदि
मागे हिदे ष मागसुद्धं त असज्जदसम्माइडिअवहारकालो होदि । एसो वि कालो अतो
गुह्यमेव । असज्जदसम्माइडिअवहारकालमवरण आवलिपाए असंखेज्जदिभागण गुभिदे
सम्माभिच्छाडिअवहारकालो होदि । त संखेज्जरूपेहि गुभिदे सासज्जसम्माइडिअव
हारकालो होदि । तमावलिपाए असंखेज्जदिभामेव गुभिदे हि संभदासज्जदअवहारकालो
होदि । ओषसासज्जसम्माइडि-सम्माभिच्छाडि संभदासज्जदाण अवहारकालो असंखेज्जदि
भागो ण होदि, असंखेज्जवलिपाहि होद्व । त कुदो जण्वदे ? 'उवसमसम्माइडि
ओवा । गुह्यसम्माइडि असंखेज्जगुणा । वेदपसम्माइडि असंखेज्जगुणा ' ति
अप्पावहुगसुत्तारो जण्वदे । त जहा, खइयसम्माइडिणमवहारकालेव ताव संखेज्जव
लिपमेवेण आवलिपाए संखेज्जदिभागमेवेण वा होद्व, अण्णहा मज्जुस्सेसु असंखे

तदन्तर वृत्तरी आवलीके असंख्यातवै मागका उक्त आवलीमें माग देने पर ओ
मय छप्प भावे उतथा असंयतसम्पद्यदि जीवोंके प्रमाणके निष्कलमेके विषयमें अवहारकालका
प्रमाण होता है । यह काल भी मन्तुर्मुह्यतममान ही है । असंयतसम्पद्यदिविषयक अवहार
कालके वृत्तरी आवलीके असंख्यातवै मागसे गुणित करने पर सम्पत्तिप्यादिविषयक
अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासाद्वसम्पद्यदिविषयक अवहार
काल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवै मागसे गुणित करने पर सयतासयतविषयक
अवहारकाल होता है । इसप्रकार ओ पूर्वोक्त बार गुणस्थानवाले जीवोंका अवहारकाल बत
झया है इसमें सासाद्वसम्पद्यदि, सम्पत्तिप्यादि और सयतासयतविषयक सामान्य
अवहारकाल आवलीके असंख्यातवै माग नहीं होता किन्तु उसे असंख्यात आवलीप्रमाण
होना चाहिये ।

प्रश्न—यह कैसे जाना जाता है ?

उत्तर— उपरान्तसम्पद्यदि जीव थोड़े होते हैं सायिकसम्पद्यदि जीव इनसे
असंख्यातगुणे होते हैं और वेदकसम्पद्यदि जीव इनसे असंख्यातगुणे होते हैं इस अस्य
बहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे उक्त बात जानी जाती है । इसका स्पष्टीकरण
इसप्रकार है—

सायिकसम्पद्यदियोंका अवहारकाल संख्यात आवली अथवा आपलीके संख्यातवै
भागप्रमाण होना चाहिये । यदि ऐसा न माना जाये तो मनुष्योंमें असंख्यात सायिकसम्पद्यदि

१ अक्षरद्वयमिदं दुले इत्यन्ता अक्षरद्वयमिदं । पादद्वयमिदं अक्षरद्वयमिदं । वेदद्वयमिदं
मिदं अक्षरद्वयमिदं । अ. ३. १५. १० ए इत्यन्ता (मौनविज्ञानतत्त्व) काविकमय उक्त
प्रतिपत्ति वा कल्पितेयवा इत्यन्तमिदं अक्षरद्वयमिदं । उक्त अक्षर विषयक तदुक्तमवधारणोक्तमेवमिदं वा ।
व. वि. २ ।

ज्वलत्तसम्माइड्डीण समवप्पसगादां । सत्तेज्जावलियमागहात्तुप्पायणविहाण वुचदे ।
 त अहा, वासपुचत्तमतुरिय जइ साहम्मदेवसु सत्तेज्जाण खइयसम्माइड्डीणमुप्पत्ती
 तम्मइ तो सत्तेज्जपलिदावमेसु किं लमामो चि पमाणेण फलमुभिदिच्छाए
 ओइदिदाए सत्तज्जावलियाहि पलिदावम खडिय तत्तेगखडमेचा खइयसम्माइड्डी
 होति । उवसमसम्माइड्डीणमवहारकालो पुण असत्तेज्जावलियमेचो, खइयसम्माइड्डी
 हिता तसि असत्तेज्जगुणहीणत्तण्णाणुववचीदो । सातणसम्माइडि-सम्माभिच्छा
 इड्डीण पि अवहारकालो असत्तेज्जावलियमेचो, उवसमसम्माइड्डीहितो तसिमसत्तेज्ज
 गुणहीणत्तण्णाणुववचीदो । ' एदेहि पलिदोवमवहरिदि अतोमुहुत्तेण कासण ' इति
 सुत्तेण सह विरोहा वि न होदि, सामीप्यार्थं यत्तमानान्तःसुद्धप्रवणात् । सुद्धत्तान्तः

पौकी उत्पत्तिका प्रसंग आ जायगा । अब हमने सख्यात भाषाईरूप मागहारके उत्पन्न करनेकी
 विधि कहते हैं । यह इस प्रकार है—

एक पथपुयत्तवके अनन्तर यदि सौधर्म देवोंमें सख्यात सायिक सम्मगदियोंकी
 उत्पत्ति प्राप्त होती है तो सख्यात पम्पोपमकी स्थितिबाधे देवोंमें कितने सायिक सम्मगदिय
 जीव प्राप्त होंगे इसप्रकार वैराशिक विधिसे अनुसार पम्पराशि सख्यातको इच्छराशि सख्यात
 पम्पोपमसे गुणित करके जो छम्प भागे उत्तम प्रमाणराशि बर्णपुयत्तवका भाग देने पर अर्थात्
 सख्यात सायिकियोंसे पम्पोपमके लटित करने पर जो भाग छम्प भागे उत्तमे एक द्वाह प्रमाण
 सायिक सम्मगदिय जीव होते हैं । उपशमसम्मगदियोंका अवहारकाल तो असख्यात भाषाईप्रमाण
 है, अन्यथा उपशमसम्मगदिय जीव का विकसम्मगदियोंसे असख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते
 हैं । उचीप्रकार सासाधनसम्मगदिय भीर सम्पगिमप्याइडि जीवोंका भी अवहारकाल असख्यात
 भाषाईप्रमाण है अन्यथा उपशमसम्मगदियोंसे उत्त दोनों गुणस्थानबाधे जीव असख्यातगुणे
 हीन बन नहीं सकते हैं । इन गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण
 काससे पक्षोपम अपहृत होता है इस पूर्वोक्त सूत्रके साथ उक्त कथनका
 विरोध भी नहीं आता है क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तमें जो अन्तर द्वाह भाषा है उक्तका
 सामीप्य अर्थमें ग्रहण किया गया है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो मुहूर्तके समीप हो वसे
 अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

विशेषार्थ—अन्तर्मुहूर्तका पम्पोपममें भाग देने पर जो छम्प भागे उत्तमा सासाधन
 भाषा आर गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानबाधे जीवोंका प्रमाण है, यह पूर्वोक्त सूत्रका
 अभिप्राय है । पर दीक्षाकार भीरसेनलामीने यह सिद्ध किया है कि सासाधन मित्र भीर
 देशविरतके अवहारकासका प्रमाण असख्यात भाषाईप्रमाण है । अब यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता

१ एदेहि पलिदोवमवहरिदि अतोमुहुत्तेण कासणेति इत्येन वि न विरोही तसह वववादिनिवचनचो ।

अंतोऽनुत्तमिदि मण्णदि। तदो मवरेण आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण तस्मि आवलियमिदि माये हिदे अं मागसइ त असंजदसम्माइडिअवहारकालो हादि। एसो वि कालो अंतो-
 युत्तमेव। असंजदसम्माइडिअवहारकालमवरेण आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण गुणिद
 सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि। तं संखेज्जरूपेहि गुणिदे सासयसम्माइडिअव
 हारकालो होदि। तमावलियाए असंखेज्जदिमाणेण गुणिद हि संजदासजदअवहारकालो
 होदि। ओमसासयसम्मादिडि-सम्मामिच्छाइडि संजदासजददाण अवहारकाला असंखेज्जदि
 मायो ण होदि, असंखेज्जावलियाहि होदर्कं। त कुदो णण्णदे? 'उत्तमससम्माइडि
 पोवा। सुइयसम्माइडि असंखेज्जगुणा। वेदयसम्माइडि असंखेज्जगुणा'। सि
 अप्पावहुगसुत्तादो णण्णदे। त अहा, सुइयसम्माइडिअवहारकालेण ताव संखेज्जाव
 लियमेवेण आवलियाए संखेज्जदिमाणेवेण वा होदर्कं, अपगहा मण्णस्सेसु असंखे

तद्वत्तर वृत्तरी आबलीके असंख्यातर्त्त मागका उत्त आबलीमें माग देने पर जो
 माग लभ्य भावे उत्तमा असंघतसम्पत्ति जीवोंके प्रमाणके निश्चयनेके विषयमें अवहारकाळका
 प्रमाण होता है। यह काल मी अन्तमुद्गर्तप्रमाण ही है। असंघतसम्पत्तिविषयक अवहार
 काळके वृत्तरी आबलीके असंघातर्त्त भागसे गुणित करने पर सम्पत्तिप्रमाणविषयक अवहार
 काळकाळ होता है। इसे संघातसे गुणित करने पर सासाधनसम्पत्तिविषयक अवहार
 काळ होता है। इसे आबलीके असंघातर्त्त भागसे गुणित करने पर सयतासंघतविषयक
 अवहारकाळ होता है। इसप्रकार जो पूर्वोक्त चार गुणस्थानवाले जीवोंका अवहारकाळ बात
 कही है वृत्तमें सासाधनसम्पत्ति सम्पत्तिप्रमाणविषयक और सयतासंघतविषयक सामान्य
 अवहारकाळ आबलीके असंघातर्त्त भाग नहीं होता किन्तु उसे असंघात आबलीप्रमाण
 होना चाहिये।

संज्ञा—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— उपर्युक्तसम्पत्ति जीव थोड़े होते हैं शायित्सम्पत्ति जीव उनसे
 असंघातगुने होते हैं और वेदकसम्पत्ति जीव उनसे असंघातगुने होते हैं इस अस्प-
 द्धताके प्रतिपादन करनेवाले स्वयंसे उक्त बात जानी जाती है। उसका स्पष्टीकरण
 इसप्रकार है—

शायित्सम्पत्तिविषयक अवहारकाळ संघात आबली अथवा आबलीके संघातर्त्त
 भागप्रमाण होना चाहिये। यदि ऐसा न माना जाये तो मनुष्योंमें असंघात शायित्सम्पत्ति

१ अवसरन्यासिद्विज्ञाने कथं भोजनं अवसरन्यासिद्विज्ञाने। कावचन्यासिद्विज्ञाने अवसरन्यास-
 विज्ञाने अवसरन्यासिद्विज्ञाने। जी. इ. ए. १५१। ए. तद्वत्तर (वैयक्यविशयक) कावचन्यास उक्त
 प्रतिविशिष्टावधारणवा अन्तर्गतो-अन्तर्गतवाच्य। उक्त कथं विवक्ष्यं तदुक्तवाच्यवाच्योक्त्यन्तर्गतवाच्य।
 व. वि. २।

विकालगोयरमस्तिऊण जम्हा पमाणपरूवण कदं सम्हा वड्डिहाणीओ नत्थि पि मागहार परूवण पडदि पि । सासणसम्माइडिअवहारकालेण वलिदोवमे माग हिदे सासणसम्मा इडिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइडिणी पमाणपरूवण वगगुआमे खडिद भाविद विरलिद अबहिद-पमाण-कारण णिरुत्ति-वियप्पेहि वचइस्सामो । उ अहा—

पलिदोवमे असंखेज्जावलिपमेचखडे कए तत्थ एगखंड सासणसम्माइडिरासि पमाण होदि । खडिदं गद । असंखेज्जावलिपहि पलिदोवमे भागे हिदे अ मागलदं तं सासणसम्माइडिरासिपमाण होदि । भाविदं गद । असंखेज्जावलिपओ विरलेऊण एकेइस्स रूवस्स पलिदोवम समखंड करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाणं सासणसम्मा इडिरासी होदि । विरलिदं गद । सासणसम्माइडिअवहारकाल सत्तागभूदं ठवेऊम

सम्यग्गहि अग्नि राशिपोंके विच्छेदविषयक उत्तर सप्तमका अग्रय लेकर प्रमाण कहा गया है इसलिये उस अपेक्षासे वृद्धि और हानि नहीं है । अतः पूर्वोक्त मागहारोंका कथन करना बल जाता है ।

सासाधनसम्यग्गहिपिपयक अवहारकालका पस्योपममें भाग देने पर सासाधनसम्यग्गहि जीवराशि आ जाती है ।

अब वागस्थानमें लघ्वित भाजित, विरहित, अवहत, प्रमाण कारण निरुक्ति और विरक्तके द्वारा सासाधनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण कहते हैं । यह इसप्रकार है—

असंख्यात व्यापकोंके समर्थोंका जितना प्रमाण हो उतने पस्योपमके राण्ड करन पर उनमेंसे एक लघ्विके बराबर सासाधनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार लघ्वितका बलन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पस्योपमप्रमाण १ ५३१ के सासाधनसम्यग्गहिपिपयक अवहारकास ३२ प्रमाण लघ्व करके पर २०४८ आते हैं । यही सासाधनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण है ।

असंख्यात व्यापकोंका पस्योपममें भाग देने पर जो माग लघ्व आये उतना सासाधनसम्यग्गहि जीवराशिका प्रमाण है । इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—१५ ५३१ ÷ ३२ = २०४८ सासाधनसम्यग्गहि

असंख्यात व्यापकोंके विरहित करके उस विरहित राशिसे प्रत्येक एकक प्रति पस्योपमका समान लघ्व करके देवकपसे देने पर उनमेंसे एक लघ्व प्रमाण सासाधनसम्यग्गहि जीवराशि होती है । इसप्रकार विरहितका बलन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—२०४८ २०४८ १ ४८ इसप्रकार ३२ बार विरहित करके
१ १ १ १ ५३१ को एक विरहित राशिसे

प्रत्येक एक पर समानरूपसे देने पर २०४८ सासाधनसम्यग्गहि राशि आ जाती है ।

सासाधनसम्यग्गहिपिपयक अवहारकासको शमाचारूपसे स्थापित करके पस्योपममेंसे

अन्तर्मुहूर्तः । कृत्वा पूर्वनिपातः ? राजदन्तादित्वात् । कुत ओत्वम् ? 'एष छत्र समाप्ता' इत्येतस्मात् । एदेण सणककुमारादिगुणपट्टिबन्नाजमबहारकालाण पि असंखज्जाबलियणं पसाहिं । एत्थ बोदगा मणदि । एदात्रा रासीओ अबट्टिदामो ष होति, हाणिराड्डिसुद पादो । ष च हाणिराड्डिओ पारिष सि भोर्णुं सकिज्जे, आयम्भयामावे मोक्खामावादो अपादिअपज्जवसिदसासमादिगुणकासाणुवल्होदो च । अदि एदामो रासीओ अबट्टिदामो तो एद मागहारा पडंति, अप्पहा पुम च पडंति । अप्पबट्टिदरासिमागहारेणापि अपनट्टि इसरुत्तेवेव अबट्टाणा होति । एत्थ परिहारो बुचदे— सासपसग्माइट्टिरासीणमुक्खस्ससप

है कि एक ठामों गुणस्थानोंकी संख्या करनेके क्रिये यदि अबहारकालका प्रमाण असंख्यात आवश्यकता मान लिया जाता है तो सूत्रमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण मागहारके साथ एक असंख्यात आवश्यकप्रमाण मागहारका विरोध आता है क्योंकि, उक्त एक अन्तर्मुहूर्तमें संख्यात आवश्यकता ही होती है असंख्यात नहीं । इस पर नीरसेनलामने यह समाधान किया है कि यहाँ पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती कासका प्रहस्य करवा चाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका अभिप्राय मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है ।

प्रश्न— यहाँ पर अन्तर शब्दका पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान— क्योंकि अन्तर शब्दका राजदन्तादि गणमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है ।

प्रश्न— अन्तर शब्दमें अर्के स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है ?

समाधान— एष छत्र समाप्ता इस नियामक पञ्चमके अनुसार यहाँ पर ओत्व हो गया है ।

इस उपर्युक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपक्ष सानत्कुमार आदि कल्पवासी रेवोंसंबन्धी अबहारकाक असंख्यात आवश्यकप्रमाण सिद्ध कर दिया गया ।

प्रश्न— यहाँ पर शङ्कराचार कहता है कि ये उपर्युक्त नीबट्टाणियाँ अवस्थित नहीं होती हैं क्योंकि इन राशिबोधी हानि और वृद्धि होती रहती है । यदि कहा जाय कि इन राशिबोधी हानि और वृद्धि नहीं होती है तो भी कहना ठीक नहीं है क्योंकि, यदि इन राशिबोधी हानि और वृद्धि नहीं आता तो मोक्षका भी अभाव ही आसगा । तथा कल्पि अपर्यवसितकथने सामान्य आदि गुणस्थानोंका काल भी नहीं पाया जाता है इसलिये भी इन राशिबोधी हानि और वृद्धि मान लेना चाहिये । यदि इन उपर्युक्त राशिबोधी अवस्थित माना जावे तो ये मागहार बल सकते हैं कल्पया नहीं क्योंकि, अनवस्थित राशिबोधी मागहारोंका भी अवस्थितकथने ही सम्मान माना जा सकता है ।

समाधान— अग्रे पूर्णक शङ्कराचार परिहार किया जाता है । क्योंकि सासाधन

विकासगायरमस्तिऊण जम्हा पमाणपरूवण फद तम्हा बह्निहाणीओ पारिच सि मागहार पटवण चडिदि ति । सासणसम्माइह्निअबहारकालेण वलिदोषमे भागे हिद सासणसम्मा इहिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइह्नीण पमाणपरूवण बगह्णाणे खडिद भाविद विरलिद भवदिद-पमाण-कारण गिरुचि वियण्णेहि वचइस्सामो । त जहा—

पठिदावमे असंखेज्जावलिपयेचसहे कए तत्थ एगखंड सासणसम्माइहिरासि पमाण होदि । खडिद गद । असंखेज्जावलिपयाहि पलिदोषमे भागे हिदे स मागलद ते सासणसम्माइहिरासिपमाण होदि । भाविद गद । असंखेज्जावलिपयाओ विरलऊण एकरस्स रूपम्स पठिदावम समखठ करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाण सासणसम्मा इहिरासी हादि । विरलिद गद । सासणसम्माइह्निअबहारकाल सलागभूद ठेवेऊण

सम्पगदि भावि राशिपोंक विचसविपयक उरहद सचयक भावय लेकर प्रमाण बहा गया है इसलिये उस अपेक्षासे वृद्धि और हानि नहीं है । अतः पूर्वोक्त मागहारोंका कथन करना बन जाता है ।

सासादनसम्पगदिविपयक अवधारकावका पस्वोपममे माग देने पर सासादनसम्प गदिवि जीपराशि भा जाती है ।

अब वर्गस्थानमें लघ्वित भाजित विरलित भपहत प्रमाण कारण निरुक्ति और विचमणके द्वारा सासादनसम्पगदिवि जीपराशिप्रमाण बहते हैं । यह इसप्रकार है—

असंख्यात भावसीके समर्थोंका जितना प्रमाण हो उसने पस्वोपमके लघ्वित करन पर उनमेंसे एक लघ्वितके बराबर सासादनसम्पगदिवि जीपराशिप्रमाण होता है । इसप्रकार लघ्वितका घटन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पस्वोपमप्रमाण १५३१ के सासादनसम्पगदिविपयक अवधारकाव ३२ प्रमाण लघ्वित करने पर २०४८ आने है । यही सासादनसम्पगदिवि जीपराशिप्रमाण है ।

असंख्यात भावसियोंका पस्वोपममे माग देने पर जो माग सम्प भाये उतना सासादनसम्पगदिवि जीपराशिप्रमाण है । इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—१ ५३१ × ३२ = २०४८ सासादनसम्पगदिवि.

असंख्यात भावसियोंको विरलित करके उस विरलित राशिसे प्रत्येक एक को पस्वोपमका समान लघ्वित करके देवकपमे देने पर उनमेंसे एक लघ्वित प्रमाण सासादनसम्पगदिवि जीपराशि होती है । इसप्रकार विरलितका घटन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $\frac{2048}{1} = \frac{8}{1} \times \frac{256}{1}$ इसप्रकार ३२ बार विरलित करके १ ५३१ को एक विरलित राशिसे

प्रत्येक एक पर समानकपमे दे देने पर २०४८ सासादनसम्पगदिवि राशि भा जाती है ।

सासादनसम्पगदिविपयक अवधारकावको शताधिकपमे रचापित करके पस्वोपममे

विकल्पापरमस्सिऊण अम्हा पमाणपरूवण कद उम्हा बद्धिदाणीओ गरिथि पि मागहार परूवण भवदि पि । सासणसम्माइडिअवहारकालेण वलिदावमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छन्ति । सासणसम्माइडिण पमाणपरूवण बगगट्टाणे खडिद माग्गिद विरलिद अवहिद-पमाण-कारण गिरुचि वियप्पेहि बत्तइस्सामो । उ अहा—

पलिदोवमे असंखेज्जावलिपमेचखडे कए तत्त्व एगखंड सासणसम्माइडिरासि पमाण होदि । खडिद गद । असंखेज्जावलिपयाहि पलिदोवमे भागे हिदे न मागल्लु तं सासणसम्माइडिरासिपमाण होदि । माग्गिद गद । अमखेज्जावलिपयाओ विरसेऊण एकस्स रूपस्स पलिदोवम समखुह करिय दिण्णे तत्त्व एगखंडपमाण सासणसम्माइडिरासी होदि । विरलितं गद । सासणसम्माइडिअवहारकालं सलागभूद ठवेऊण

सम्पगदहि भावि राशिपोंके विकल्पाविषयक उरठए संखयका अभ्यप लेखर प्रमाण कहा गया है इसलिये उस अपेक्षासे सृष्टि भीर जानि नहीं है । अत पूर्वाक्त मागहारोंका कथन करना बल जाता है ।

सासाद्वनसम्पगदहिविषयक अवहारकालका पस्योपममें माग देने पर सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशि भा जाती है ।

अब पर्गस्थानमें लब्धित भाजित विरलित अपहत प्रमाण कारण, निरुक्ति भीर विकल्पके द्वारा सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशिप्रमाण प्रमाण कहते हैं । यह इसप्रकार है—

असंख्यात भावलीके समर्थोंका जितना प्रमाण हो उतने पस्योपमके गण्ड करन पर उनमेंसे एक लण्डके बराबर सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशिप्रमाण होता है । इसप्रकार लब्धितका पथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पस्योपमप्रमाण १५ + ११ के सासाद्वनसम्पगदहिविषयक अवहारकाल ३२ प्रमाण लण्ड करने पर २०४८ आते हैं । यही सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशिप्रमाण है ।

असंख्यात भावसिर्थोंका पस्योपममें माग देने पर जो माग सम्म भावे बतना सासाद्वनसम्पगदहि जीवराशिप्रमाण है । इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—१ ३१ + ३२ = २०४८ सासाद्वनसम्पगदहि

असंख्यात भावसिर्थोंको विरलित करके उस विरलित राशिमें प्रत्येक एकक प्रति पस्योपमका समान लण्ड करके देयरूपसे देन पर उनमेंसे एक लण्ड प्रमाण सामाद्वनसम्पगदहि जीवराशि जाती है । इसप्रकार विरलितका पथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—२०४८ = ४८ १ ४८ इसप्रकार ३२ बार विरलित करके

१ १ १ १५ ११ के बल विरलित राशिमें प्रत्येक एक पर समानरूपसे ३ देने पर २०४८ सामाद्वनसम्पगदहि राशि भा जाती है ।

सासाद्वनसम्पगदहिविषयक अवहारकालको जानाअवगतये वर्णयित करके पस्योपममें

अन्तर्मुहूर्त'। कुतः पूर्वनिपातः ? राजदन्तादिस्वात् । कुतः ओत्वम् ? 'एष छत्र समाधा' इत्येतस्मात् । एषेण सप्तकुमारादिगुणपट्टिकगणमन्त्रहारकात्ताण पि असंख्येन्द्रावसिपत् पसाहिय । एत्थ ओदगो मणदि । एदाभा रासीओ अवट्टिदाओ न होति, हाणिकाट्टिसमुद पादो । न च हाणिकाट्टिओ पतिप पि वोणु सकिज्जेदे, आयम्भयामावे मोक्खामावादो अणादिअपन्धवसिदसासमादिगुणकात्ताणुवत्तदीदो च । अदि एदाओ रासीओ अवट्टिदाओ तो एदे मागहारा भवति, अप्पहा पुण न भवति । अणवट्टिदरासिभागहारेणापि अणवट्टि दसरूपेणैव अवट्टाभा होति । एत्थ परिहारा मुचदे— सासणसम्माद्विरासीणमुक्कस्ससपय

हे कि उक्त तानों गुणस्थानोंकी सत्त्वा धर्मोंके लिये यदि अवहारकाकक्ष प्रमाण असंख्यात व्यवस्थियां मान किया जाता है तो सूत्रमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण मागहारके साथ उक्त असंख्यात व्यवस्थिप्रमाण मागहारका विरोध पाता है क्योंकि, उक्तए एक अन्तर्मुहूर्तमें संख्यात व्यवस्थियां ही होती हैं असंख्यात नहीं । इस पर भीरसेनकामीने यह समाधान किया है कि यहां पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती व्यवस्था ग्रहण करना चाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका समीपवर्ती मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है ।

शुद्धा — यहां पर अन्तर शब्दका पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान— क्योंकि अन्तर शब्दका राजदन्तादि गणमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है ।

शुद्धा — अन्तर शब्दमें अन्ते स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है ?

समाधान— एष छत्र समाधा इस नियामक वाक्यके अनुसार यहां पर ओत्व हो गया है ।

इस उपयुक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपन्न सातकुमार आदि कल्पवाची वेदोंसंबन्धी अवहारकास असंख्यात व्यवस्थीप्रमाण सिद्ध कर दिया गया ।

शुद्धा — यहां पर शंकाहार करता है कि ये उपयुक्त जीवराशिवां अवस्थित नहीं होती हैं क्योंकि इन राशिवांकी हाणि भीर वृद्धि होती रहती है । यदि कहा जाय कि इन राशिवांकी हाणि भीर वृद्धि नहीं होती है तो भी कहना ठीक नहीं है क्योंकि, यदि इन राशिवांका आप भीर व्यप नहीं माना जाय तो मोक्षका भी सम्भाव हो जायगा । तथा अन्यत्र व्यववसितरूपसे सामान्य आदि गुणस्थानोंका काक भी नहीं पाया जाता है इसलिये भी इन राशिवांकी हाणि भीर वृद्धि मान लेना चाहिये । यदि इन उपयुक्त राशिवांको अवस्थित माना जावे तो ये मागहार बन सकते हैं अन्यथा नहीं क्योंकि, अवस्थित राशिवांके मागहारोंका भी अवस्थितरूपसे ही संज्ञाच माना जा सकता है ।

समाधान— आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार किया जाता है । क्योंकि सासाधन

विकासगापरमस्सिऊण अम्हा पमाणपरूवण कद तम्हा वड्डिहाणीओ मत्थि चि मागहार परूवण बढिदि चि । सासणसम्माइडिअवहारकोलेण वलिदोबमे माग हिदे सासणसम्मा इडिहाणी आगच्छदि । सासणसम्माइडिणी पमाणपरूवण वगड्डाने खुडिद माअिद विरलिद अइदिद-पमाण-कारण गिरुचि विपप्पेहि वचइस्सामो । त अइहा—

पलिदोबमे असंखेज्जावलिपमेचसुडे कए तत्थ एगखंड सासणसम्माइडिहासि पमाण होदि । खंडिद गदं । असंखेज्जावलिपहि पलिदोबमे मागे हिदे अ भागलई वं सासणसम्माइडिहासिपमाण होदि । माअिद गदं । असंखेज्जावलिपआओ विरलेऊण एकइस्स रूपस्स पलिदोबम समखड करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाण सासणसम्मा इडिहाणी होदि । विरलिदं गदं । सासणसम्माइडिमवहारकाल सत्तागभूद ठवेऊण

सम्पगदि आदि राशिपोंके विकासविषयक उत्कृष्ट सचयका व्याप्य छेकर प्रमाण कहा गया है इसलिये उस अयेसासे एदि भीर हानि नहीं है । अतः पूर्वोक्त मागहारोंका कथन करना बल जाता है ।

सासाइनसम्पगदिविषयक अवधारकाकाल पत्तोपममें भाग देने पर सासाइनसम्प गदि जीवरशिवा आ जाती है ।

अब बर्गस्थानमें लघित भाजित विरहित मपहत प्रमाण कारण भिक्षुकि भीर पिक्कपके द्वारा सासाइनसम्पगदि जीवरशिवा प्रमाण कहते हैं । यह इसप्रकार है—

असंख्यात आचलियोंके समर्थोंका जितना प्रमाण हो उतने पत्तोपमके लख करन पर वनमेंसे एक लण्डके बराबर सासाइनसम्पगदि जीवरशिवा प्रमाण होता है । इसप्रकार लघितका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पत्तोपमप्रमाण १५५११ के सासाइनसम्पगदिविषयक अवधारकाल १२ प्रमाण लख करने पर २०४८ आने दें । यही सासाइनसम्पगदि जीवरशिवा प्रमाण है ।

असंख्यात आचलियोंका पत्तोपममें भाग देने पर जो भाग सम्प आये उतना सासा इनसम्पगदि जीवरशिवा प्रमाण है । इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—१५ ११ + १२ = २०४८ सासाइनसम्पगदि.

असंख्यात आचलियोंको विरहित करके उस विरहित राशिसे प्रत्येक एकक प्रति पत्तो पमका समान लख करने से एककपसे देने पर उनमेंसे एक लख प्रमाण सासाइनसम्पगदि जीवरशिवा होती है । इसप्रकार विरहितका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—२०४८ २०४८ १ ४८ इसप्रकार १२ बार विरहित करके
१ १ ? १५५११ को एक विरहित राशिसे

प्रत्येक एक पर समानरूपसे दे देने पर १ ४८ सासाइनसम्पगदि राशि आ जाती है ।

सासाइनसम्पगदिविषयक अवधारकालको भाग्यकपने स्थापित करने पत्तोपममें

अचियाणि रुवाणि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । तदियवग्गमूलेण पलिशोवमे मागे हिदे विदियवग्गमूलाणि अण्णोवग्गमूले कए तत्थ अचियाणि रुवाणि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदं कमेण असंखेज्जाणि वग्गमूलाणि देह्वा ओसरिऊण द्विअसंखेज्जावलिपाहि पलिशोवमे मागे हिदे असंखेज्जाणि पलिशोवम पढमवग्गमूलाणि आगच्छति चि ण सदेहा । कारण गद । तस्स का पिरुची ? असंखेज्जावलिपाहि पलिशोवमपढमवग्गमूले मागे हिदे तत्थ अचियाणि रुवाणि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि । अथवा असंखेज्जावलिपाहि पलिशोवमविदियवग्गमूले मागे हिदे अ मागलदं तेष विदियवग्गमूल गुणिते तत्थ अचियाणि रुवाणि तचियाणि पलिशोवम पढमवग्गमूलाणि । अथवा असंखेज्जावलिपाहि पलिशोवमतदियवग्गमूले मागे हिदे अ मागलदं तेष तदियवग्गमूल गुणिते तेष गुणितरासिणा विदियवग्गमूल गुणिते तत्थ अचियाणि रुवाणि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदं कमेण असंखेज्जाणि वग्गमूलाणि देह्वा ओसरिऊण असंखेज्जावलिपाहि पदरावलिपाए मागे हिदाए अं

प्रमाण हो उतने प्रथम वगमूल छप्प आते हैं । पन्धोपमके तीसरे वगमूलका पन्धोपममें माग देने पर दूसरे वीर तीसरे वगमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आये उतने प्रथम वगमूल छप्प आते हैं । इस क्रमसे असंख्यात वगस्यान नीचे जाकर जो असंख्यात व्याखियाँ स्थित हैं उनका पन्धोपममें माग देने पर असंख्यात प्रथम वगमूल आते हैं । इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पन्धके प्रथम वगमूल २५६ का ६५३६ में माग देने पर २५६ छप्प आते हैं । दूसरे वगमूल १६ का ६५३६ में माग देने पर दूसरे वगमूल १६ बार २५६ अर्थात् ४०९६ छप्प आते हैं । तीसरे वगमूल ४ का ६५३६ में माग देने पर दूसरे वगमूल १६ वीर तीसरे वगमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो १४ छप्प आते हैं उतने अर्थात् १४ बार प्रथम वगमूल २५६ अर्थात् १६३८४ छप्प आते हैं । इसीप्रकार उत्तरोत्तर नीचे जाने पर असंख्यात प्रथम वगमूल छप्प आयेगे इसमें कोई संदेह नहीं ।

शुद्धा — अमरक्यात प्रथम वगमूल आते हैं इसकी निदर्शित क्या है ?

समाधान — असंख्यात व्याखियोंका पन्धोपमके प्रथम वगमूलमें माग देने पर जो प्रमाण आये उतने प्रथम वगमूल आते हैं । अथवा अमरक्यात व्याखियोंका पन्धोपमके द्वितीय वगमूलमें माग देने पर जो छप्प आये उससे द्वितीय वगमूलको गुणित कर देने पर त्रितम प्रमाण आये उतने पन्धोपमके प्रथम वगमूल होते हैं । अथवा, अमरक्यात व्याखियोंका पन्धोपमके तीसरे वगमूलमें माग देने पर जो माग छप्प आये उससे तीसरे वगमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वगमूलको गुणित करके यही त्रितम प्रमाण आये उतने प्रथम वगमूल होते हैं । इसी क्रमसे असंख्यात वगस्यान नीचे जाकर असंख्यात व्याखियोंका अनन्तरावर्तमें माग देने पर जो माग छप्प आये उससे अनन्तरावर्तको गुणित करके उस गुणित राशिसे अनन्तरावर्त

पल्लिवमम्भि सासणसम्माइहिरासिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकालो एगरूवमव
 विज्जदि; पुणो वि सासणसम्माइहिरासिपमाणं पल्लिवमम्भि अवणिज्जदि, अवहारकालो
 एगरूवमवणिज्जदि । एव पुणा पुणो कीरमाणे पल्लिवमो अवहारकालो च शुणं
 विद्धिदो । तस्य एगवारमवहिदपमाणं सासणसम्माइहिरासी होदि । अवहिद गदं । तस्य
 पमाणं पल्लिवमस्य असयेज्जदिमाणो असंखेज्जाणि पल्लिवमपडमवग्गमूलाणि ति ।
 पमाणं गदं । केण कारणेण ? पल्लिवमपडमवग्गमूलेण पल्लिवमे मागे हिदे पल्लिवम
 पडमवग्गमूलमागच्छदि । तस्सेव विदियवग्गमूलादो पल्लिवमे मागे हिदे विदियवग्गमूलस्य

सासाधनसम्पत्ति जीवराशि के प्रमाण के घटा देना चाहिये । पल्लोपममें से सासाधनसम्पत्ति
 जीवराशि के एकवार कम किया, इसलिये अवहारकाल रूप शाखाकाराशिमैं से एक कम कर
 देना चाहिये । फिर भी पल्लोपममें से सासाधनसम्पत्ति जीवराशि के प्रमाण के घटा देना
 चाहिये । दूसरीबार यह किया हुई, इसलिये अवहारकाल रूप शाखाकाराशिमैं से एक और कम कर
 देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर पल्लोपम और अवहारकाल एक साथ समाप्त
 हो जाते हैं । इस क्रियामें एकवार जितनी राशि घटायी जाये उतना सासाधनसम्पत्ति जीव-
 राशि का प्रमाण है । इसप्रकार अष्टवृत्त का कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—शाखाकार राशि ३२ पल्लोपम १५३९ इस क्रमसे पल्लोपममें से
 १ २४८ २ ४८ और शाखाकार
 ३१ ११४८८ मागहारमें से एक एक कम
 १ २४८ करते जाये पर दोनों
 ३ ११४४०

राशियाँ एक साथ समाप्त होती हैं । इनमें से एकवार घटायी जानेवाली संख्या २४८ प्रमाण
 सासाधनसम्पत्ति है ।

इस सासाधनसम्पत्ति जीवराशि का प्रमाण पल्लोपम का अस्तंशपात का माग है जो
 पल्लोपम के अस्तंशपात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाण का वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्लोपम १५३९ का प्रथम वर्गमूल २५ है और सासाधनसम्पत्ति
 जीवराशि का प्रमाण २४८ है । २५ का २४८ में भाग देने पर ८ व्यते हैं । इस ८ अस्तंशपात
 अस्तंशपात रूप माग देने पर यह सिद्ध हो जाता है कि पल्लोपम के अस्तंशपात प्रथम वर्गमूल
 प्रमाण सासाधनसम्पत्ति जीवराशि होती है ।

धृक्का—किस कारणसे पल्लोपम के अस्तंशपात प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासाधनसम्प-
 त्ति जीवराशि व्यती है ?

समाधान—पल्लोपम के प्रथम वर्गमूल का पल्लोपम में भाग देने पर पल्लोपम का प्रथम
 वर्गमूल व्यती है । उसीके दूसरे वर्गमूल का पल्लोपम में भाग देने पर दूसरे वर्गमूल का जितना

अचियाणि रूवाणि तचियाणि पदमवग्गमूलाणि आगच्छति । तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे मागे हिदे विदियवदियवग्गमूलाणि अण्णोण्णमत्थे कए तत्थ अचियाणि रूवाणि तचियाणि पदमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदण कमेण असंखेज्जाणि वग्गहाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण छिदअसंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमे मागे हिदे असंखेज्जाणि पलिदोवम पदमवग्गमूलाणि आगच्छति चि ण सदेहो । कारण गद । तस्स क णिरुधी ? असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमपदमवग्गमूले मागे हिदे तत्थ अचियाणि रूवाणि तचियाणि पदमवग्गमूलाणि । अथवा असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमविदियवग्गमूले मागे हिदे जं मागलद्ध तेण विदियवग्गमूल गुणिदे तत्थ अचियाणि रूवाणि तचियाणि पलिदोवम पदमवग्गमूलाणि । अथवा असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले मागे हिदे जं मागलद्ध तेण तदियवग्गमूल गुणेऊम तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊम तत्थ अचियाणि रूवाणि तचियाणि पदमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदण कमेण असंखेज्जाणि वग्गहाणाणि हेट्ठा ओसरिऊम असंखेज्जावलिपाहि पदरावलिपाए मागे हिदाए जं

प्रमाण हो उतने प्रथम वर्गमूल सध्य होते हैं । पस्योपमके तीसरे वर्गमूलका पस्योपममें माग देने पर दूसरे कीर तीसरे वर्गमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल सध्य होते हैं । इस क्रमसे अक्षय्याण वर्गस्थान नीचे जाकर जो अक्षय्याण भावलिपि स्थित हैं उनका पस्योपममें माग देने पर अक्षय्याण प्रथम वर्गमूल होते हैं । इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पस्यके प्रथम वर्गमूल २ का ६५३६ में माग देने पर २५६ सध्य होते हैं । दूसरे वर्गमूल १३ का १ १३६ में माग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ बार २५६ अर्थात् ४०९६ सध्य होते हैं । तीसरे वर्गमूल ४ का ६ १३६ में माग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ कीर तीसरे वर्गमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो ३४ सध्य होते हैं उतने अर्थात् ३४ बार प्रथम वर्गमूल २ का अर्थात् १३३८४ सध्य होते हैं । इसीप्रकार उत्तरोत्तर नीचे जाने पर अक्षय्याण प्रथम वर्गमूल सध्य आवेंगे इसमें कोई संदेह नहीं ।

गक्र—अक्षय्याण प्रथम वर्गमूल आवे हैं इसकी निश्चिन्ता क्या है ?

समाधान—अक्षय्याण भावलिपियोंका पस्योपमके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा अक्षय्याण भावलिपियोंका पस्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें माग देने पर जो सध्य आवे तमने द्वितीय वर्गमूलका गुणित कर देने पर त्रितम प्रमाण आवे उतने पस्योपमके प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा, अक्षय्याण भावलिपियोंका पस्योपमके तीसरे वर्गमूलमें माग देने पर जो माग सध्य आवे उससे तीसरे वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वर्गमूलको गुणित करके वही त्रितम प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । इसी क्रमसे अक्षय्याण वर्गस्थान नीचे जाकर अक्षय्याण भावलिपियोंका प्रत्येक स्थान माग देने पर जो माग सध्य आवे उससे प्रत्येक स्थानको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रत्येक

पल्लिदोषमग्निं सासणसम्माइहिरामिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमव
 षिज्जदि; पुणं वि सामणमम्माइहिरामिपमाणं पल्लिदोषमग्निं अवणिज्जदि, अवहारकालादो
 एगरूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणं कीरमाणे पल्लिदोषमो अवहारकालो षं जुगव
 णिहिदो । तस्स एगवारमवहिदपमाणं सासणसम्माइहिरासी होदि । अवहिदं गदं । तस्स
 पमाणं पल्लिदोषमस्स अर्सखेज्जदिमागो असखेज्जाणि पल्लिदोषमपढमवग्गमूलाणि पि ।
 पमाणं गदं । केण कारणेण ? पल्लिदोषमपढमवग्गमूलेण पल्लिदोषमे भागे हिदे पल्लिदोषम
 पढमवग्गमूलमागच्छदि । तस्सेव विदियवग्गमूलादो पल्लिदोषमे भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स

सासाइनसम्पग्गदि जीवराशिक्के प्रमाणको घटा देना चाहिये । पक्षोपममेंसे सासाइनसम्पग्गदि
 जीवराशिक्के एकवार कम किया, इसलिये अवहारकालरूप सासाइनसम्पग्गदिमेंसे एक कम कर
 देना चाहिये । फिर भी पक्षोपममेंसे सासाइनसम्पग्गदि जीवराशिक्के प्रमाणको घटा देना
 चाहिये । नृसपीवार यह किया हुई इसलिये अवहारकालरूप सासाइनसम्पग्गदिमेंसे एक और कम कर
 देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर पक्षोपम और अवहारकाल एक साथ समाप्त
 हो जाते हैं । इस क्रियामें एकवार जितनी राशि घटाई जावे उतना सासाइनसम्पग्गदि जीव
 राशिका प्रमाण है । इसप्रकार अपहृतका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—शाकाका राशि ३२ पक्षोपम १५३३ इस क्रमसे पक्षोपममेंसे
 १ २०४८ २०४८ और शाकाकरूप
 ३१ ११४८८ मापहारमेंसे एक एक कम
 १ २०४८ करते जाने पर दोनों
 ३ ३१४४०

राशियाँ एक साथ समाप्त होती हैं । इनमेंसे एकवार घटाई जानेवाली संख्या २०४८ प्रमाण
 सासाइनसम्पग्गदि है ।

यस सासाइनसम्पग्गदि जीवराशिका प्रमाण पक्षोपमका अर्धत्वात्तर्वा माग है, ओ
 पक्षोपमके अर्धत्वात् प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्जन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पक्षोपम १५३३ का प्रथम वर्गमूल २५३ है और सासाइनसम्पग्गदि
 जीवराशिका प्रमाण २४८ है । २५३ का २४८ में भाग देने पर ८ बांटे हैं । इस ८ संख्याको
 अर्धत्वात्तर्करूप मान केने पर यह सिद्ध हो जाता है कि पक्षोपमके अर्धत्वात्तर्क प्रथम वर्गमूल
 प्रमाण सासाइनसम्पग्गदि जीवराशि होती है ।

शुद्ध—किस कारणसे पक्षोपमके अर्धत्वात्तर्क प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासाइनसम्प
 गदि जीवराशि जाती है ?

समाधान—पक्षोपमके प्रथम वर्गमूलका पक्षोपममें माग देने पर पक्षोपमका प्रथम
 वर्गमूल जाता है । उसीके नृसरे वर्गमूलका पक्षोपममें माग देने पर नृसरे वर्गमूलका जितना

सासणसम्माद्विरासी होदि । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गहामाणि इहा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए मागे हिदाए खं भागलइ तेण पदरावलिय गुणेऊण ठण गुणिदरामिणा तहुवरिमवग्ग गुणंऊण एवमुवरिमवग्गहामाणि पढमवग्गमूलताणि सम्माणि गिरतर गुणिदे सासणसम्माद्विरासी होदि । जदि वि पिरुत्ति मण्यमाने एसो अत्थो पुन्ण परुविदो सो वि ण पुणठत्तो होदि, तिण्णि वि वग्गभाराआ अस्सिऊण हिद्वेद्विमवियप्पसबंधत्तादो । बेरुवे हेट्टिमवियप्पो गदो ।

अद्वरुवे हेट्टिमवियप्प वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूल गुणेऊण तेण घणपल्लपढमवग्गमूले मागे हिदे सामणसम्माद्विरासी होदि । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्लपढमवग्गमूले मागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे मागे हिदे सासणसम्माद्विरासी आगच्छदि । एवमाग

जीवराशि होती है ।

उदाहरण—१.१.३१ का तृतीय वर्गमूल ४।

$$४ + ३२ = १ \quad ४ \times \frac{१}{४} = १ \quad १ \times \frac{१}{४} = ८ \quad २५३ \times ८ = २०४८ \text{ सा}$$

इसी क्रमसे असंख्यात वगस्थान नीचे आकर असंख्यात भागलिखोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग छम्प भावे उससे प्रतरावलीको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रतरावलीके उपरिम वगको गुणित करके इसीप्रकार प्रथम वर्गमूलपर्यन्त उपरिम उपरिम संपूर्ण वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करने पर सासाङ्गसम्पदादि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—प्रतरावलि = २।

$$२ - ३२ = १\frac{१}{४} \quad १ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{४} \quad ४ \times \frac{१}{४} = १$$

$$१ \times \frac{१}{४} = ८ \quad २५३ \times ८ = २०४८ \text{ सा}$$

यद्यपि निरालिका कथन करते समय यह विषय पहले यहाँ पर कह भाये है तो भी इस विषयके यहाँ पर पुनः कथन करनेसे पुनरुक्त होय नहीं होता है क्योंकि, यहाँ पर तीनों ही वर्गपाराओंका आधय छेकर स्थित अघस्तन विकल्पका सङ्गठन है । इसप्रकार विकल्प वर्गपारामें अघस्तन विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अब घनपारामें अघस्तन विकल्पको बतलाते हैं । असंख्यात भागलिखोंसे पञ्चोपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छम्प भावे उसका घनपक्षके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सासाङ्ग सम्पदादि जीवराशि होती है क्योंकि पञ्चोपमके प्रथम वर्गमूलसे घनपक्षके प्रथम वग मूलके भाजित करने पर पञ्चोपमका प्रमाण माता है । अनन्तर अघस्तन भागलिखोंसे पञ्चोपमके भाजित करने पर सासाङ्गसम्पदादि जीवराशि आती है । घनपक्षमें इसप्रकार सासाङ्ग सम्पदादि जीवराशि आती है देखा समझ कर पहले गुणा करके अनन्तर भागका प्रवृत्त किया ।

उदाहरण—पञ्चोपमका प्रथम वगमूल ६ १। घनपक्षका प्रथम वर्गमूल १९३३३.२१५

$$६.१ \times ३२ = ८१.९२ \quad १९३३३.२१५ - ८१.९२ = २०४८ \text{ सा}$$

भागलब्ध तेष पदराशिरूप गुणेऽप्य तेष गुणिरासिना सद्बन्धनमवगा गुणेऽप्य एवमुपरि
 बन्धनमवगाह्यामापि विविद्यवर्गमूलकाणि गिरतरं सम्भाषि गुणिद तस्य सत्तियामि
 रूपाणि तत्तियामि पदमवगाह्याणि इति चेत् । निरुद्धी गदा ।

वियप्यो द्विविधा, हेक्तिमवियप्यो उच्चरिमवियप्यो च । तस्य वेत्त्ये हेक्तिमवियप्य
 बन्धनमवगाह्यामापि विविद्यवर्गमूलकाणि गिरतरं सम्भाषि गुणिद तस्य सत्तियामि
 पदमवगाह्यामापि विविद्यवर्गमूलकाणि गिरतरं सम्भाषि गुणिद तस्य सत्तियामि
 पदमवगाह्यामापि विविद्यवर्गमूलकाणि गिरतरं सम्भाषि गुणिद तस्य सत्तियामि
 पदमवगाह्यामापि विविद्यवर्गमूलकाणि गिरतरं सम्भाषि गुणिद तस्य सत्तियामि
 पदमवगाह्यामापि विविद्यवर्गमूलकाणि गिरतरं सम्भाषि गुणिद तस्य सत्तियामि

बलीके उपरिम वर्गको गुणित करके, इसप्रकार द्वितीय वर्गमूलपर्यंत सब उपरिम उपरिम वर्ग
 स्थानोंको गिरतर गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उसने प्रथम वर्गमूल होते हैं।
 इसप्रकार विविक्तक कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—असंख्यात आबलीप्रमाण ३२ का भाग पस्यके प्रथम वर्गमूल २५ में देने
 पर ८ शेष आते हैं। इसप्रकार साक्षात्सम्बन्धि जीवराशि २५८ में ८ ही प्रथम वर्गमूल
 होते हैं। द्वितीय वर्गमूल १६ में ३२ का भाग देने पर २ शेष आता है। इसका द्वितीय वर्ग-
 मूलसे गुणा करने पर ८ शेष आते हैं। तृतीय वर्गमूल ४ में ३२ का भाग देने पर ३ शेष
 आता है। इसका चतुर्थे १६ और तीसरे ४ वर्गमूलके परस्पर गुणनफल ६४ से गुणा कर देने
 पर ८ शेष आते हैं। इसप्रकार सर्वत्र समान शेष आते हैं।

विकल्प दो प्रकारका है अत्यन्तविकल्प और उपरिमविकल्प । उन दोनोंमेंसे पहले
 विरूपवर्गधारामें अत्यन्तविकल्पको बतलाते हैं—

असंख्यात आबलीप्रमाणसे पस्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर साक्षात्स-
 म्बन्धि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—पस्योपम ११११ का प्र वर्गमूल २१५ असंख्यात आबलीप्रमाण ८
 $२१५ \times ८ = २५८$ सा

अथवा अवधारकाका पस्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग शेष
 आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित
 करने पर साक्षात्सम्बन्धि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—११११ का द्वितीय वर्गमूल ११ अवधारकाका ३२

$११ - ३२ = ३$; $११ \times ३ = ८$ २ $१ \times ८ = २$ ४८ सा

अथवा अवधारकाका पस्योपमके तृतीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग शेष
 आवे उससे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे द्वितीय वर्गमूलको गुणित
 करके फिर भी उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर साक्षात्सम्बन्धि

घणाधमे षष्ठइस्सामो । असंखेज्जाबलियाहि पल्लिदोवमपद्धमवग्गमूल गुणेऊण तण
 षण्णपल्लविदियवग्गमूल गुणेऊण तेण घणाधणपल्लविदियवग्गमूल मागे हिदे सासणसम्मा
 इहिरासी आगच्छदि । केम कारणेण ? षण्णपल्लविदियवग्गमलेण घणाधणपल्लविदियवग्गमूले
 भागे हिदे षण्णपल्लपद्धमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि पल्लिदोवमपद्धमवग्गमूलेण षण्णपल्ल-
 पद्धमवग्गमूल भागे हिदे पल्लिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जाबलियाहि पल्लिदोवमे
 भागे हिदे सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि धि कट्टु गुणेऊण भागग्गहण
 कइ । एत्थ दुग्गुणादिकरणे कइ हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि ।

उपरिमवियप्पो विविहा, गहिदो गहिदगाहिदो गहिदगुणमारो चदि । तरप
 वेत्थधारण गहिद षष्ठइस्सामो । असंखेज्जाबलियाहि पल्लिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा

प्रमाण जो मागहार है वह पस्योपमके प्रथम धर्ममूलसे छोटा है इसलिये यहाँ पर अथस्तन
 विकल्प बन जाता है । परंतु मिथ्यावृत्ति जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये जो मागहार
 कइ भाये ई वह जीवराशिके उपरिम धर्मके प्रथम धर्ममूलरूप जीवराशिके बड़ा है अतएव
 यहाँ पर ठिकपधर्माधारमें अथस्तन विकल्प किसी प्रकार भी संभव नहीं है ।

अब घनाधनधारामें अथस्तन विकल्प बतलाते हैं—असंखपात आबलियोंसे पस्यो
 पमके प्रथम धर्ममूलको गुणित करके जो मध्य भागे उससे घनपस्यके द्वितीय धर्ममूलको गुणित
 करके जो मध्य भागे उसका घनाधनपस्यके द्वितीय धर्ममूलमें भाग देने पर सासादनसम्पगृहि
 जीवराशिका प्रमाण आता है क्योंकि, घनपस्यके द्वितीय धर्ममूलका घनाधन पस्यके द्वितीय
 धर्ममूलमें भाग देने पर घनपस्यका प्रथम धर्ममूल आता है । अतएव पस्योपमके प्रथम धर्म
 मूलका घनपस्यके प्रथम धर्ममूलमें भाग देने पर पस्योपम आता है । अतएव असंखपात भाष
 लियोंका पस्योपममें भाग देने पर सासादनसम्पगृहि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाधन
 धारामें इसप्रकार सासादनसम्पगृहि जीवराशिका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा
 करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—पस्योपमका प्रथम धर्ममूल १५६, घनपस्यका द्वितीय धर्ममूल ४००१,
 घनाधन पस्यका द्वितीय धर्ममूल १८७१०४७६७३६।

$$\frac{१८७१०४७६७३६}{१२ \times १५६} = ७८ \text{ सा}$$

यहाँ पर दुग्गुणादिकरणक कर देने पर अथस्तन विकल्प समान हो जाता है ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है श्रुति श्रुतिश्रुति और श्रुतिगुणना । उनमेंसे
 पहले ठिकप धर्माधारमें श्रुति उपरिम विकल्पको बताना है—असंखान आबलियोंका
 पस्योपममें भाग देने पर सासादनसम्पगृहि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१५३६ + ३३ = १०४८ सा

प्लुति पि कृत्तु गुणैः मागगाहण कद । अह्मत्वे हेडिमवियप्यो भवदु णाम, बेरूवे हेडिमवियप्यो न भवदे । केय करणेण ? अवहारकाले पतिदोषमादो हेडिमवगग ह्मणाणि मागे हिदे सासणमम्माइहिरासी न उप्पन्नइदि चि । न एस दोषो, पतिदोष मादो हेडिमवगगह्मणाणि अवहारकालेपोवहिय तप्पाभोगपगगह्मणाणि गुणिदे केवठ मोवह्मिदे च अत्य रासी आगच्छदि सो हेडिमवियप्यो चि अम्मवगमादो । मिच्छा इहिरासिपकूवणाए चि एदम्हि णए अवलविज्जमाले बेरूवे हेडिमवियप्या अरिय चि वचम्भो ? एसा परूवणा जेण अवहारकालपहाणा तेण पतिदोषमादो हेडिमवगगह्मणाणि अवहारेपोवहिय अदि सासणमम्माइहिरासी उप्पाइदु सकिन्नइदे सो हेडिमवियप्यस्स रि संमवो होज्ज । न च एव बेरूवपाराण समवइ । एद णयमस्सिऊग मिच्छाइहिरासि-परूवणाए हेडिमवियप्यो अरिय चि भविइ । एमो णजो एत्य पहाणो । प्पमट्ठरूव परूवणा गदा ।

धृक्का—धनधारामें मध्यस्तन विकस्य रहा म्यवे परंतु श्रिकप बर्गधारामें मध्यस्तन विकस्य घटित नहीं होता है क्योंकि, अवहारकाळसे पस्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंमें माग लिया जाता है तो सासादनसम्पन्नइदि जीवराशि उत्पन्न नहीं होती है ?

समाधान—यह कोर दोष नहीं है क्योंकि, पस्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकाळसे अपवर्तित करके जो अन्य म्यवे उससे उसके योग्य वर्गस्थानोंके गुणित करने पर मयवा केवल अपवर्तित करने पर अर्थात् पस्योपमको अवहारकाळसे माजित करने पर जहां पर सासादनसम्पन्नइदि जीवराशि जाती है यह मध्यस्तन विकस्य वहां पर स्वीकार किया गया है ।

उदाहरण—पस्योपमका मध्यस्तन वर्गस्थान = २५१, २५१ - ३२ = ८ २५१ × ८ = २०४८ सा मयवा १५१३१ + ३२ = २ ४८ सा.

धृक्का—मिथ्याइदि जीवराशिकी मरूपजामें मी इस नयके अवलम्बन करने पर श्रिकपबर्गधारामें मध्यस्तन विकस्य बन जाता है इसलिये वहां पर इसका कथन करना चाहिये या ?

समाधान—क्योंकि यह मरूपका अवहारकाळमाघाव है इसलिये पस्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकाळसे माजित करके यदि सासादनसम्पन्नइदि जीवराशि उत्पन्न करना शक्य है तो यहां पर मध्यस्तन विकस्य भी संभव है । परंतु मिथ्याइदि जीवराशिवा प्रमाण निष्काशने समय श्रिकपबर्गधारामें इसप्रकार मध्यस्तन विकस्य संभव नहीं है । इसी वचन व्यस्य करके मिथ्याइदि जीवराशिकी मरूपजामें मध्यस्तन विकस्य नहीं होता ऐसा कहा है । यह वच वहां पर मयान है । इसप्रकार धनधारा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ—सासादनसम्पन्नइदि जीवराशिवा प्रमाण निष्काशनेके लिये अर्धक्यात व्यवहारी

पणापणे वचइस्सामो । असखेज्जाबलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूल गुणेऊल तण
पणपल्लविदियवग्गमूले गुणेऊल तण घणापणपल्लविदियवग्गमूले मागे हिदे सासणसम्मा
इटिरासी आगच्छदि । केम कारणेन ? पणपल्लविदियवग्गमूलेण घणापणपल्लविदियवग्गमूले
मागे हिदे पणपल्लपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि पलिदोवमपढमवग्गमूलेण पणपल्ल-
पढमवग्गमूल मागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असखेज्जाबलियाहि पलिदोवमे
मागे हिदे सासणसम्माइटिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि वि कहु गुणेऊल मागग्गइण
कद । एत्थ दुग्गणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि ।

उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो वेदि । तरथ
वेरूबचारए गहिदं वचइस्सामो । असखेज्जाबलियाहि पलिदोवमे मागे हिदे सासणसम्मा

प्रमाण ओ मागहार हे बह पस्वोपमके प्रथम बर्गमूलसे छेदा है इसलिये वहाँ पर अथस्तन
विकस्य बन जाता है । परंतु मिथ्याएधि जीवराशिक प्रमाण निष्कलनेके लिये ओ मागहार
कद बाये ई बह जीवराशिके उपरिम बर्गके प्रथम बर्गमूलरूप जीवराशिके बड़ा है अतएव
वहाँ पर शिक्रपबर्गधारामे अथस्तन विकस्य किसी प्रकार भी समथ नहीं है ।

अथ घनापनधारामे अथस्तन विकस्य बतछाते हैं—असख्यात भावधर्मोंसे पस्वो
पमके प्रथम बर्गमूलके गुणित करके ओ अथ्य बाये उससे घनपस्वके द्वितीय बर्गमूलके गुणित
करके ओ अथ्य बाये उसका घनापनपस्वके द्वितीय बर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्यग्गहि
जीवराशिक प्रमाण आता है क्योंकि, घनपस्वके द्वितीय बर्गमूलका घनापन पस्वके द्वितीय
बर्गमूलमें भाग देने पर घनपस्वका प्रथम बर्गमूल आता है । अनन्तर पस्वोपमके प्रथम बर्ग
मूलका घनपस्वके प्रथम बर्गमूलमें भाग देने पर पस्वोपम आता है । अनन्तर असख्यात भाव
धर्मोंका पस्वोपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्गहि जीवराशिक प्रमाण आता है । घनापन
धारामे इसप्रकार सासादनसम्यग्गहि जीवराशिक प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा
करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—पस्वोपमका प्रथम बर्गमूल ३५३, घनपस्वका द्वितीय बर्गमूल ४०९६,
घनापन पस्वका द्वितीय बर्गमूल ३८७१०४७३३३।

$$\frac{३८७१०४७३३३३}{३२ \times २५३ \times ४०९६} = २०४८ \text{ आ}$$

वहाँ पर शिगुणाधिकरणके कर लेने पर अथस्तन विकस्य समाप्त हो जाता है ।

उपरिम विकस्य तीन प्रकारका है पृथीत पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकार । उनमेंसे
पहले शिक्रप बर्गधारामे पृथीत उपरिम विकस्यको बतछाते हैं—असख्यात भावधर्मोंका
पस्वोपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्गहि जीवराशिक प्रमाण आता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३५३३३ \div ३२ = २०४८ \text{ आ}$$

इन्द्रिरासी आगच्छति । तस्म मागहारस्त अदृच्छेदयमेचे राशिस्त अदृच्छेदय कदे वि सासणसम्माइन्द्रिरासी आगच्छति । एवं तिय-अउक-पञ्चाङ्गिण्णाणि वि अदृच्छिय सासणसम्माइन्द्रिरासी उप्पापद्वया । अथवा असंयुग्मावलिपाहि पत्तिदोषम गुणेज्ज पदरपल्ल मागे हिंदे सासणमम्माइन्द्रिरासी आगच्छति । कथ कारणेन ? पत्तिदोषमेव पदरपल्ले मागे हिंदे पत्तिदावममागच्छति । पुणा वि असंयुग्मावलिपाहि पत्तिदोषम मागे हिंदे सासणमम्माइन्द्रिरासी आगच्छति । एवमागच्छति चि कहु गुणेज्ज मागग्गइव कदं । तस्म मागहारस्त अदृच्छेदयमेचे राशिस्त अदृच्छेदय कदे सामणसम्माइन्द्रिरासी

अथ मागहारके जितने अर्धच्छेद हों वतनीबार पस्योपम राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—३२ मागहारके ५ अर्धच्छेद होते हैं अथ। वतनीबार ६ ५३६ के अर्धच्छेद करने पर २ ४८ प्रमाण सासादनसम्पत्ति राशि जाती है ।

इसीप्रकार त्रिकच्छेद चतुष्छेद और पञ्चछेद आदिका व्यवहार करने भी सासादन सम्पत्ति जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये ।

$$\text{उदाहरण—३२ के त्रिकच्छेद } 2 \frac{1}{2} \quad 2 \frac{1}{2} \quad 2 \frac{1}{2}$$

$$६५३६ के त्रिकच्छेद \frac{६५३६}{३} \quad \frac{६५३६}{३} \quad \frac{६५३६}{३}$$

$$\frac{२१५३६}{२७} + \frac{३२}{२७} = २ ४८ \text{ सा}$$

इसीप्रकार चतुष्छेद आदि के भी उदाहरण बना लेना चाहिये ।

अथवा असंयुक्ताव लिखिपोंसे पस्योपमका गुणित करने जो अन्य भावे उसका प्रत्यक्षमें भाग देने पर सासादनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण जाता है । इसका कारण यह है कि पस्योपमका प्रत्यक्षमें भाग देने पर पस्योपम जाता है और फिर असंयुक्ताव लिखिपोंका पस्योपममें भाग देने पर सासादनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण भा जाता है । त्रिकपवर्गधारा में इसप्रकार सासादनसम्पत्ति जीव राशिका प्रमाण जाता है, अतएव पहले गुणा करके अन्तर मागका प्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१-१३३}{३५१३३ \times ३२} = २ ४८ \text{ सासादनसम्पत्ति}$$

अथ मागहारके जितने अर्धच्छेद हों वतनीबार अथ सम्पत्ति राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—३२ × ६ ५३६ रूप मागहारके २१ अर्धच्छेद होते हैं इसलिये वतनीबार ३५१३३ × ६ ५३६ के अर्धच्छेद करने पर भी २ ४८ प्रमाण सासादनसम्पत्ति राशि जाती है ।

रासी आगच्छदि । तस्स अद्वन्द्वेदणयसलागा कचिया ? असंखेज्जावलिपद्वन्द्वेदण याहियपलिदोवमद्वन्द्वेदणयमेवा । मधवा असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवम गुणेऊण तेण गुणितरासिणा पदरपल्ले गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी आग च्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण तस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पदरपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पलिदोवमेण पदरपल्ले मागे हिदे पल्लो आगच्छदि । पुणो असंखेज्जावलिपाहि पलिदोवमे मागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कद्दु गुणेऊण मागगाहण कर्द । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेवे रासिस्स अद्वन्द्वेदणय कदे वि सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । तस्म मागहारस्स अद्वन्द्वेदणयसलागा केचिया ? पलिदोवमादो उवारे च्छदिद्वानसलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोणममत्तरासि रूवणेण पलिदोवमस्स अद्वन्द्वेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलिपाण छेदनापक्खित्तमेवा ।

श्रुका — उक्त मागहारकी अर्धच्छेद शालाकाए कितनी है ?

समाधान — अर्धरपात भावक्षिपोंके अर्धच्छेदोंको पस्योपमके अर्धच्छेदोंमें मिला देने पर जितना प्रमाण भावे उत्तनी उक्त मागहारकी अर्धच्छेद शालाकार्य है ।

उदाहरण—३२ के अर्धच्छेद ५ बीर ६-१३६ के अर्धच्छेद १६ इन दोनोंका जोड़ २१ होता है । यही ३२ × ६-१३६ के अर्धच्छेद जानना चाहिये ।

मधवा अर्धरपात भावक्षिपोंसे पस्योपमको गुणित करके जो गुणा की हुई राशि छप्प भावे उससे प्रतरपक्षको गुणित करके जो राशि छप्प भावे उसका प्रतरपक्षके उपरिम बर्गमें माग देने पर सासाहसम्पगदि जीवराशिका प्रमाण आता है क्योंकि प्रतरपक्षका प्रतरपक्षके उपरिम बर्गमें माग देने पर प्रतरपक्ष आता है । पुनः पस्योपमका प्रतरपक्षमें माग देने पर पस्योपम आता है । पुनः अर्धरपात भावक्षिपोंका पस्योपममें माग देने पर सासाहसम्पगदि जीवराशिका प्रमाण आता है । जिसके बर्गभारामें इसप्रकार मी सासाहसम्पगदि जीवराशिका प्रमाण आता है इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{32 \times 6-136 \times 6-136}{32 \times 6-136 \times 6-136} = 2 \text{ अ० सा}$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उत्तनीबार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासाहसम्पगदि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—३२ × ६-१३६ × ६-१३६ रूप मागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं इसलिये उत्तनीबार ६-१३६ × ६-१३६ प्रमाण मज्जमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मी २०४८ आते हैं ।

श्रुका — उक्त मागहारकी अर्धच्छेदशालाकाए कितनी है ?

समाधान — पस्योपमसे ऊपर दो स्थान भावे है इसलिये दोका विरलन करके बीर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होवे उसमेंसे एक क्रमा कर जो दोष रहे उससे पस्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो छप्प भावे उसमें अर्धरपात भावक्षिपोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त मागहारकी अर्धच्छेद

इष्टिरासी आगच्छति । तस्म मागहारस्त अद्वन्द्वेदणमेवे राशिस्त अद्वन्द्वेदणए कदे वि सातणसम्माइष्टिरासी आगच्छति । एवं तिय चउक्क-पचादिउदणापि वि अवलंबिय सातणसम्माइष्टिरासी उप्पाएदक्का । अथवा असंखेज्जावलिमाहि पलिदोषम गुणेऊण पहरपछे भागे हिदे सातणसम्माइष्टिरासी आगच्छति । कण कारणेण ? पलिदोषम पहरपछ भागे हिदे पलिदोषममागच्छति । पुणा वि असंखेज्जावलिमाहि पलिदोषमे भागे हिदे सातणसम्माइष्टिरासी आगच्छति । एवमागच्छति सि कहु गुणेऊण भागगणने कदं । तस्म मागहारस्त अद्वन्द्वेदणमेवे राशिस्त अद्वन्द्वेदणए कदे सामणसम्माइष्टि

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों तत्तमीबार पस्योपम राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी सासाधनसम्पन्नहि जीवराशिका प्रमाण भ्यता है ।

उदाहरण—३२ मागहारके ५ अर्धच्छेद होते हैं तथा इतमीबार १११३९ के अर्धच्छेद करने पर २ ४८ प्रमाण सासाधनसम्पन्नहि राशि भाती है ।

इसीप्रकार बिक्रमेष्ट चतुष्कमेष्ट और पचछेष्ट आदिका अवलोकन करके भी सासाधन सम्पन्नहि जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये ।

$$\begin{array}{r} \text{उदाहरण—३२ के बिक्रमेष्ट } 2 \quad \begin{array}{r} 1 \\ 32 \\ 3 \end{array} \quad \begin{array}{r} 2 \\ 32 \\ 9 \end{array} \quad \begin{array}{r} 3 \\ 32 \\ 27 \end{array} \\ \\ 11139 \text{ के बिक्रमेष्ट } \quad \frac{11139}{3} \quad \frac{11139}{9} \quad \frac{11139}{27} \\ \\ \frac{11139}{27} - \frac{32}{27} = 408 \text{ सा} \end{array}$$

इसीप्रकार चतुष्कमेष्ट आदि के भी उदाहरण बना लेना चाहिये ।

अथवा असंख्यात भावस्थियोंसे पस्योपमसे गुणित करके जो सन्ध भावे उसका प्रत्यक्षमे भाग देने पर सासाधनसम्पन्नहि जीवराशिका प्रमाण भ्यता है । इसका कारण यह है कि पस्योपमका प्रत्यक्षमे भाग देने पर पस्योपम भ्यता है और फिर असंख्यात भावस्थियोंका पस्योपममें भाग देने पर सासाधनसम्पन्नहि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है । त्रिकपर्णधारामें इसप्रकार सासाधनसम्पन्नहि जीव राशिका प्रमाण भ्यता है, अतएव पहले गुणा करके अन्तर मापका प्रहय किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{11139}{11139 \times 32} = 2 \quad 48 \text{ सासाधनसम्पन्नहि}$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों तत्तमीबार उक्त प्रमाण राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी सासाधनसम्पन्नहि जीवराशिका प्रमाण भ्यता है ।

उदाहरण—३२ × १११३९ रूप मागहारके २१ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतमीबार १११३९ × १११३९ के अर्धच्छेद करने पर भी २ ४८ प्रमाण सासाधनसम्पन्नहि राशि भाती है ।

आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लेणुवरिमवग्गे मागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ल मागे हिदे पल्लिदोवमा आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलिपाहि पल्लिदावम मागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि वि कट्टु गुणेऊमा मागगइण फद । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए फदे वि सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसत्तागा केसिया ? एगम्भं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्तरासितियुणम्भूणेण पल्लिनोयमस्स अद्वच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलिपाण अद्वच्छेदणयपक्किमत्तमत्ता । एवमुवरि वि अद्वच्छेदणयाण सकलण विहाण वत्तच्च । एत्थं दुग्गुणादिकरणं कापम्भं । एव सत्तज्जासंखेज्जाणितेसु लेयम्भं । अट्ठरूपपत्तवणा गदा ।

घणापण वत्तइस्सामो । अमत्तज्जावलिपाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लउव

सासाइनसम्पगइदि जीयराशिका प्रमाण भा आता ई क्योंकि, घनपद्वक्क घनपद्वक्के उपरिम पार्गमें माग हेने पर घनपद्वक्क आता ई । पुनः प्रनरपद्वक्का घनपद्वक्के माग हेने पर पद्वक्कोपम आता ई । पुनः मसध्यात आपत्तिर्षोका पद्वक्कोपममें माग हेने पर सासाइनसम्पगइदि जीव राशिक प्रमाण आता ई । घनधारामें इसप्रकार भी सासाइनसम्पगइदि जीयराशिका प्रमाण आता ई ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागकर ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{३५५३६ \times ६११३६}{३२ \times ६ \times १३६ \times ६१५३६} = २०४८$ सा

उक्त भागहारके जितने अघच्छेद हैं उतनीबार उक्त भग्नमान राशिक अघच्छेद करने पर भी सासाइनसम्पगइदि जीयराशिका प्रमाण आता ई ।

उदाहरण—उक्त भागहारक ८१ अघच्छेद होते हैं इसलिये ८१ बार उक्त भग्नमान राशिके अघच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासाइनसम्पगइदि राशि आती ई ।

श्रेष्ठ—उक्त भागहारकी अघच्छेदताकाए कितनी होती ई ?

समाधान—एकबार विरलन करके धार उक्त श्लोक करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए राशिक । तीनसे गुणा करके जा मध्य भावे इसमेंसे एक कम करके शेषसे पद्वक्कोपमके अघच्छेदोंको गुणित करके जो संख्या भाव उसमें समान्यात आपत्तिर्षोका अघच्छेद मिला हेने पर उक्त भागहारके अघच्छेद होते हैं ।

उदाहरण— $३ = ३ \times ३ = ९ - १ = ५ \times १६ = ८० + ८५$

इसीप्रकार ऊपर भी अघच्छेदोंके संवयन करनेसे विधानका वधान करना चाहिये । यहां पर दिग्गुणादिकरत्नविधि करना चाहिये । इसीप्रकार संवयन समकपाल धीर अनन्त वधानमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार घनधारा प्रकृत्या गमाल दुर ।

अब घनापनधारामें पूर्वाह उपरिम विवक्ष्यता वनयान ई—असंख्यात आपत्तिर्षोका प्रनरपद्वक्का गुणित करके जा मध्य भावे उसमें प्रनरपद्वक्क उपरिम

एवं संस्तेज्जासंस्तेज्जापत्तेसु ज्ञेयम् । बरूवपरूवणा गदा ।

अद्वैतवे बचस्सामो । असंस्तेज्जाबलियाहि पदरपल्लं गुणेऊय पणपल्ले मागे हिदे सासणसम्माइदिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लय पणपल्ले मागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंस्तेज्जाबलिपहि पलिदोवम मागे हिदे सासणसम्माइदिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कहु गुणेऊय मागगाहण कद । तस्स मागहारस्म अद्वैतदणपमेव रासिस्स अद्वैतदण कदे वि सासणसम्माइदिरासी आगच्छदि । तस्स अद्वैतदणपसत्तागा केचिया ? इगुणिदपलिदोवमद्वैतदणपसु असंस्तेज्जाबलिवाण अद्वैतदणपपक्खिचमेवा । अपवा असंस्तेज्जाबलियाहि पदरपल्लं गुणेऊय तेव गुणिदरासिया पणपल्लं गुणेऊय पणपल्लउवरिमवग्गे मागे हिदे सासणसम्माइदिरासी

हास्यकार्यं वा जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} 2 \quad 2 = 4 - 1 = 3 \times 1 = 3 + 1 = 4$$

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्तराशिमें भी ले जाता चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्रकरण समाप्त हो गई ।

अब घनभारामें सुदीप्त उपरिम विक्षर वतसाते हैं—असंख्यात आबलि योंसे प्रतरपस्वको गुणित करके जो लब्ध आये उसका घनपस्वमें भाग देने पर सासाधनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण वा जाता है क्योंकि प्रतरपस्वका घनपस्वमें भाग देने पर वस्वोपम आता है । पुन असंख्यात आबलियोंका पस्वोपधमें भाग देने पर सासाधनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण आता है । प्रथमाधमें इसप्रकार सासाधनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका प्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{34531}{32 \times 31131} = 2080 \text{ सासाधनसम्पत्ति}$$

उक्त मागहारके अन्तमें अर्धच्छेद हो बननीहार उक्त मध्यमावधि घनपस्वके अर्ध छेद करने पर भी सासाधनसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण वा जाता है ।

उदाहरण—उक्त मागहार 32×31131 के अर्धच्छेद ३७ होते हैं । इसलिये ३७ बार उक्त मध्यमान राशि 34531 के अर्धच्छेद करने पर भी २०८ आते हैं ।

उक्त—उक्त मागहारकी अर्धच्छेदशक्ताकार्यं कितनी है ?

समाधान—द्विगुणित पस्वोपमके अर्धच्छेदोंमें असंख्यात आबलियोंके अर्धच्छेद मिळा देने पर उक्त मागहारकी अर्धच्छेद हास्यकार्य होती है ।

$$\text{उदाहरण—} 11 \times 2 = 22 + 1 = 23$$

अथवा अमेकपाल आबलियोंसे प्रतरपस्वको गुणित करके आ गुणितराशि सप्त आये तबमे घनपस्वको गुणित करके लब्ध राशिका घनपस्वके उपरिम वर्गमें भाग देने पर

भागच्छदि । कृष्ण कारणेण ? घणपल्लेणुवरिमवर्गे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ल भाग हिदे पल्लिदोवमा आगच्छदि । पुणो वि असंगेज्जावलिमाहि पल्लिदावम भागे हिदे सासनसम्माश्रित्यासी आगच्छदि । एवमागच्छदि वि कड्डु गुणेरुणा भागगहण कद । तस्स भागहारस्स अदृच्छेदणयमेवे रासिस्स अदृच्छेदणए कदे वि सासनसम्माश्रित्यासी आगच्छदि । तस्सदृच्छेदणयसत्तागा केत्तिपा ? एगम्भं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमरयरासितिगुणरूपेण पल्लिदोवमस्स अदृच्छेदणाओ गुणिय अमंतेज्जावलिमाण अदृच्छेदणयपक्खित्तमचा । एवमुवरि वि अदृच्छेदणयाण सकलण विहाण वत्तम्भ । एरय बुगुणादिकरणं पापम्भं । एवं सग्गेज्जावलिमाणेतु नेयम्भ । अदृग्भपल्लवणा गदा ।

पणापण वत्तइस्सामा । अमंतेज्जावलिमाहि पदरपल्ल गुणरुण तेण घणपल्लपण

सासादनसम्पददि जीपराशिवा प्रमाण भा जाता ई कर्पोकि, घनपस्यका घनपस्यके उपरिम पगमें भाग देने पर घनपस्य जाता ई । पुनः घनरपस्यका घनपस्यमें भाग देने पर पस्योपम जाता ई । पुनः असप्यात आपसिर्पोक पस्योपममें भाग देने पर सामादनसम्पददि जीव राशिवा प्रमाण जाता ई । घनधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्पददि जीवराशिवा प्रमाण जाता ई, येमा सममकर पदके गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१५३३' \times ३५३३'}{३२ \times ३३६ \times ३६ \times ३५३३'} = २०४' \text{ सा}$$

उन भागहारके अन्तरे अर्धच्छेद हों उत्तर्नीपार उक्त मध्यमान राशिक अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्पददि जीवराशिवा प्रमाण भागा ई ।

उदाहरण—उन भागहारक ८ अर्धच्छेद होते हैं इससिध ८५ पार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सामादनसम्पददि राशि भागी ई ।

श्रृंका—उन भागहारकी अर्धच्छेदराशिकायें किन्ती होती हैं ?

ममापान—एकका विरलन करके भात उस शोकप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए राशिवा तीनसे गुणा करके आ मध्य आपे उममेंसे एक कम करके शेषसे पस्यो पमके अर्धच्छेदोंकी गुणित करके आ संख्या आप उममें समन्वयान आपनिपाके अर्धच्छेद मिला देने पर उन भागहारके अर्धच्छेद दान हैं ।

$$\text{उदाहरण—} २ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times ३६ = ८० + ८$$

इसीप्रकार ऊपर भी अर्धच्छेदोंके संकलन करनेके विधानका वर्णन करना चाहिये । यहाँ पर शिगुणादिकरणविधि करना चाहिये । इसीप्रकार संकलन, अनकलन और अनकलन रूपानोंमें भी से जाना चाहिये । इसप्रकार घनधार मध्यमान, शमाज हुए ।

अब घनधारधारामें गूदीन उपरिम विचलका बनना है—अनकलन आपनिर्पोके घनरपस्यका गुणित करके आ मध्य आप उममें घनरपस्य उपरिम

एव संश्लेषज्ञासंज्ञाव्यापनसु प्रेयम् । वेकूपरूपया गदा ।

अद्वन्द्वे वचस्सामो । असंश्लेषज्ञावल्याहि पदरपल्लं गुणेऊण पणपल्ल मागे हिदे
सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । कप क्कारणेण ? पदरपल्लेण पणपल्ले मागे हिदे
पत्तिदोवममागच्छदि । पुनो वि असंश्लेषज्ञावल्याहि पत्तिदोवम मागे हिदे सासणसम्मा-
इद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि वि कहु गुणेऊण मागगहण कद । तस्स माम
हारस्स अद्वन्द्वपणमेव रासिस्स अद्वन्द्वेदण कदे वि सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि ।
तस्स अद्वन्द्वेदणपसत्तागा केपिया ? दुगुणिदपत्तिदोवमद्वन्द्वेदणएसु असंश्लेषज्ञा
वल्याहि अद्वन्द्वेदणपपत्तिवचमेवा । अथवा असंश्लेषज्ञावल्याहि पदरपल्लं गुणेऊण तण
गुणिदरासिना पणपल्लं गुणेऊण पणपल्लउपरिमवग्गे मागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी

शलाकार्य मा जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} 2 \quad 2 \times 4 - 1 = 8 \times 11 = 88 + 4 = 92.$$

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्तराशिमें भी छे जाना चाहिये । इसप्रकार
त्रिकपमकपया समाप्त हो गई ।

अब धनधारामें स्थित उपरिम विषय्य वतकाते हैं—असंख्यात भावधि
पोंसे प्रतरपस्यको गुणित करके जो छण्य भावे वसका धनपस्यमें माग देने
पर सासाणसम्मान्दधि जीवराशिका प्रमाण बन जाता है क्योंकि प्रतरपस्यका
वचपस्यमें माग देने पर पस्योपम जाता है । पुन असंख्यात भावधियोंका पस्योपममें माग देने
पर सासाणसम्मान्दधि जीवराशिका प्रमाण जाता है । धनधारामें इसप्रकार सासाणसम्म
न्दधि जीवराशिका प्रमाण जाता है ऐसा समझकर पहले गुजा करके अनन्तर प्रमाण
महण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{859351}{88 \times 85438} = 2 \quad 88 \text{ सासाणसम्मान्दधि.}$$

कल मागहारके कितने अर्थच्छेद हों तन्वीवार कल मज्यमानराशि धनपस्यके अर्थ
च्छेद करने पर भी सासाणसम्मान्दधि जीवराशिका प्रमाण बन जाता है ।

उदाहरण—कल मागहार 82 × 85438 के अर्थच्छेद 83 होते हैं । इसछिये 83 बार
कल मज्यमान राशि 85438 के अर्थच्छेद करने पर भी 2088 आते हैं ।

संका—कल मागहारकी अर्थच्छेदशक्यकार्य कितनी है ?

समाधान—त्रिगुणित पस्योपमके अर्थच्छेदोंमें असंख्यात भावधियोंके अर्थच्छेद
मिळ देने पर कल मागहारकी अर्थच्छेद शलाकार्य होती है ।

$$\text{उदाहरण—} 18 \times 2 = 36 + 4 = 40$$

अथवा असंख्यात भावधियोंसे प्रतरपस्यको गुणित करके जो गुणितराशि छण्य
भावे वसके वचपस्यको गुणित करके छण्य राशिका वचपस्यके उपरिम धर्ममें माग देने पर

भागच्छदि । केय कारणेण ? यणपछेणुनरिमवग्ग मागे हिदे यणपछा आगच्छदि । पुणो वि पदरपछेण यणपछ भागे हिदे पलिदावमा आगच्छदि । पुणो वि असंगेज्जावलिपाहि पलिदावम भाग हिदे सामणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि छि कट्टु गुणेऊण भागगगण फद । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्वच्छेदणए फदे वि सासगसम्माइद्विरासी आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसलागा केचिपा ? एगस्स विरलिय विग करिय अण्णोण्णमरपरसितिगुणस्सूणेण पलिदावमस्स अद्वच्छेदणाओ गुणिय अमंगेऊजावलिपाण अद्वच्छेदणयपक्खित्तमसा । एवमुत्तरी वि अद्वच्छेदणमाण सफलण विहाण वत्तय । एत्थ दुगुणादिसरण फापय । गं सगुज्जावलेखेज्जाणवेसु नेयय । अद्वच्छेदणय गदा ।

यणायण वत्तस्सामा । अमंगेऊजावलिपाहि पदरपछ गुणऊण तेण यणपछउव

सासादनसम्पाद्वि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है क्योंकि, घनपस्यका घनपस्यके उपरिम वगमें भाग देने पर घनपस्य जाता है । पुनः घनरपस्यका घनपस्यमें भाग देने पर पस्योपम जाता है । पुनः असंप्र्यात व्यापित्तियोंका पस्योपममें भाग देने पर सासादनसम्पाद्वि जीव राशिका प्रमाण जाता है । घनधारामें सम्पादन भी सासादनसम्पाद्वि जीवराशिका प्रमाण जाता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{११११ \times ११११}{१२ \times ११११ \times ११११ \times ११११} = ००४ \text{ मा}$$

उक्त भागहारके क्रितमे अधच्छेद हो उत्तरीधार उक्त मध्यमान राशिक अधच्छेद करने पर भी सासादनसम्पाद्वि जीवराशिका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारक ८१ अधच्छेद होने है समक्षिय ८१ धार उक्त मध्यमान राशिके अधच्छेद करने पर भी ००४ प्रमाण सासादनसम्पाद्वि राशि जाती है ।

श्रुति—उक्त भागहारकी अधच्छेदशाताकार्यं किजनी होनी है ।

समाधान—एकका पिरमन करके आर उस दोरूप करके परपर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिका तीनमे गुणा करके आ मध्य भाग उसमेंसे एक कम करके दोरसे पस्योपमक अधच्छेदोंका गुणित करके आ संप्र्या व्याप उसमें समंख्यात व्यापित्तियोंके अधच्छेद मिलने केने पर उक्त भागहारक अधच्छेद होने है ।

$$\text{उदाहरण—} २ = २ \times १ = १ - १ = ० \times ११ = ८० + ० \quad ८१$$

१

इसाप्रकार ऊपर भी अधच्छेदोंके संकल्पन जानकर विधानका वधान करना चाहिये । यहां पर द्विगुणादिकल्पविधि जानना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात व्यक्त्यात भीर समान व्यक्त्योंमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार घनपाण प्रमाण समान हुए ।

अब घनपाणधारामें गृहीत उपरिम विचक्षणका वधान है—असंप्र्यात व्यापित्तियोंके घनरपस्यका गुणित करके आ मध्य भाग उसमें घनरपस्य उत्तरिम

रिमबग्ग गुणेऊय तेम घणापणपल्ले मागे हिंदे सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । केम कारणेण ? पणपल्लउवरिमबग्गेण घणापणपल्ल मागे हिंदे पणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण पणपल्ले मागे हिंदे पल्लिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असलेज्जावलिपाहि पल्लिदोवमे मागे हिंदे सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि वि कट्टु गुणेऊय मायग्यहणं कर्दं । तस्स भागहारस्स अट्टच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अट्टच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । तस्स अट्टच्छेदणयसलागा केचिया ? रुद्धयणवहि रुत्तेहि पल्लिदोवमस्स अट्टच्छेदणए गुणिय असलेज्जावलियट्टच्छेदणयपक्खित्तमेवा । अपवा असलेज्जावलिपाहि पदरपल्ल गुणेऊय तव घणपल्लउवरिमबग्ग गुणेऊय तेम पुणो घणापणपल्ल गुणेऊय तस्सुवरिमबग्गे मागे हिंदे सासणसम्माइहिरामी आगच्छदि । केम कारणेण ? घणापणेण उवरिमबग्गे मागे हिंदे घणापणा आगच्छदि । पुण वि

बर्गको गुणित करके जो छन्द भावे इसका घणापणपल्लयमे माग देने पर सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि प्रमाण आता है क्योंकि, घणपल्लके उपरिम बर्गका घणापणपल्लयमे माग देने पर घणपल्ल आता है । पुनः पदरपल्लका घणपल्लयमे माग देने पर पदरपोषम आता है । पुनः असल्यात नावळियोंका पल्लोपममे माग देने पर सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि प्रमाण आता है । घणापणपल्लयमे इसप्रकार सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि आती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३५१३३' \times ३५१३३' \times ३५१३३'}{३२ \times ३२५३३' \times ३५५३३' \times ३५१३३'} = २४८ \text{ सा.}$$

इस मागहारके कितने अर्थच्छेद हो बतानीवार इस भग्यमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि प्रमाण न आता है ।

उदाहरण—इस मागहारके अर्थच्छेद १३३ होते हैं इसलिये बतानीवार इस भग्यमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि २४८ आती है ।

ईका—इस मागहारकी अर्थच्छेदप्रमाणकाय कितनी है ?

समाधान—नौमेंसे एक कम करके जो होय रहते हैं उनसे पल्लोपमके अर्थच्छेदोंको गुणित करके जो छन्द भावे इसमें अस्यात नावळियोंके अर्थच्छेद मिठा देने पर इस मागहारके अर्थच्छेद होते हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ९ - १ = ८ \times १३ = १२८ + ५ = १३३$$

अथवा असल्यात नावळियोंसे पदरपल्लको गुणित करके जो छन्द भावे इससे अनन्तरपल्लके उपरिम बगले गुणित करके जो छन्द भावे इससे घणापणपल्लको गुणित करके अर्थके हुए छन्दका घणापणपल्लके उपरिम बर्गमे माग देने पर सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि प्रमाण आता है । क्योंकि, अनन्तरपल्लके इसके उपरिम बर्गमे माग देने पर घणापणपल्ल

पणपल्लुवरिमवगेण पणाघणे भागे हिदे वणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पहरपल्लेण पणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेजावलिआदि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माद्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कट्टु गुणेऊण मागग्गहर्ण कट्ट । तस्स मागहारस्स अट्टच्छेदणयमेवे रासिस्स अट्टच्छेदमए फदे वि सासणसम्मा-द्विरासी आगच्छदि । तस्सट्टच्छेदमयसलागा केचिया ? एगवणापणवग्गसलागं विरलिय विग करिय अण्णोण्णमरत्यकदणवगुयस्सव्वरासिमा पलिदोवमट्टच्छेदमए गुणिय अस खेजावलिआण अट्टच्छेदमयपविस्वचमेवा । एवं दोण्णि-वचारि आदि-वग्गद्वाणाभि विरलिय विगुणिदण्णोण्णमरत्यवगुणरूपव्वरासिमा पलिदोवमट्टच्छेदना गुणिय सादिरेगा

व्याता है । पुनः घनपक्षके उपरिम वर्गका घनाघनपक्षमें भाग देने पर घनपक्ष व्याता है । पुनः घनरूपपक्षका घनपक्षमें भाग देने पर पक्षोपम व्याता है । पुनः असंख्यात आयत्तियोंका पक्षोपममें भाग देने पर सासाधनसम्पत्ति जीवराशिक प्रमाण व्याता है । घनाघनघारांमें इसप्रकार भी सासाधनसम्पत्ति जीवराशिक प्रमाण व्याता है इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2 \times 3 \times 4 \times 5 \times 6 \times 7 \times 8 \times 9 \times 10 \times 11 \times 12 \times 13 \times 14 \times 15 \times 16 \times 17 \times 18 \times 19 \times 20}{2 \times 3 \times 4 \times 5 \times 6 \times 7 \times 8 \times 9 \times 10 \times 11 \times 12 \times 13 \times 14 \times 15 \times 16 \times 17 \times 18 \times 19 \times 20} = 2048 \text{ सा}$$

इस मागहारके अन्तर्गत अर्धच्छेदों उत्तरीयार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासाधनसम्पत्ति जीवराशिक प्रमाण व्याता है ।

उदाहरण—इस मागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः उत्तरीयार उक्त माग राशिके अर्धच्छेद करने पर २४८ प्रमाण सासाधनसम्पत्ति राशि व्याती है ।

शुद्ध—इस मागहारकी अर्धच्छेदशताकायं कितनी होगी ?

समाधान—घनाघनरूप एक वगशब्दाका विरलन करके भीर उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए दोको नीसे गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके जो दोष रहे उससे पक्षोपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो सध्य भावे उसमें असंख्यात आयत्तियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त मागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण व्याता है ।

$$\text{उदाहरण—} 2 = 1 \times 2 = 2 / - 1 = 1 \times 1 = 2 \times 2 = 2 \times 2 + 2 = 2 \times 2$$

१

इसीप्रकार दो वगशब्दान या बार वर्गशब्दान आदि ऊपर गये हों तो दो या बार आदिक विरलन करके भीर उस विरलित राशिके मल्लेक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि भावे उने नीसे गुणा करके जो सध्य भावे उसमेंसे एक कम करे जो दोष रहे उसे पक्षोपमके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो सध्य भावे उसमें असंख्यात आयत्तियोंके अर्धच्छेद मिला कर सबल मागहारके अर्धच्छेद उत्पन्न कर लेना चाहिये । सर्वत्र डिगुणादि

क्षरिय मागहारद्व्यष्टेयया उप्पाएवप्पा । सप्परत्थ द्दुग्गुणादिकरणं कादर्थ्यं । गहिद
परुवणा गदा ।

गहिदगहिदं वचइस्सामो । त अहा, पठिणवमस्स असेयेअदिमाणेण वेरुव
भाराए उभरि इच्छिदवग्गे मागे हिदे न मागतद्धं तेण तमिह भेव वग्गे माग हिदे
सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्व्यष्टेदणपमेत्ते रासिस्स
अद्व्यष्टेदणए कदे वि सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । एवमुभरि सप्परत्थ कापर्थ्यं ।
वेरुवपरुवणा गदा । अइरूप्ते वचइस्सामो । पणपन्तुपठमवग्गमूलस्स असेयेअदिमाणेण
सासणसम्माइहिरासिणा उभरि इच्छिदवग्गे मागे हिदे सं मागतद्धं तेण तमिह भेव
वग्गं मागं हिदे सासणसम्माइहिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्व्यष्टेदणपमेत्ते

कारण कर लेता चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिमधिक्यस्य प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अथ पृहीतगृहीत उपरिम विरूप्यको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— पयोपमके
असेव्यातर्षे माय (साक्षात्तसम्पत्तिराशि) का द्विरूपवर्गीयारामे ऊपर इच्छित वर्गमें माय
देने पर जो माग लम्प भाव उसका उसी इच्छित वर्गमें माग देने पर साक्षात्तसम्पत्ति
जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१५३३ का इच्छित वर्ग १५३३

$$\frac{१५३३}{२०४८} = १५३३ \times ३२ \quad \frac{१५३३}{१५३३ \times ३२} = २०४८ सा.$$

अतः मागहारके द्वितरे अर्धच्छेद हों उतनीवार एक माय राशिके अर्धच्छेद करने
पर भी साक्षात्तसम्पत्ति राशि आती है ।

उदाहरण—एक मागहारके ५१ अर्धच्छेद हैं अतः इतनीवार एक मायमान राशिके
अर्धच्छेद करने पर २ ४८ प्रमाण साक्षात्तसम्पत्ति राशि आती है ।

इसीप्रकार ऊपरके वर्गयानोंमें भी सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपवर्गीयाराभी
प्ररूपणा समाप्त हुई । अथ घनधारामें पृहीतगृहीत उपरिम विरूप्यको बतलाते हैं—

घनपण्यके प्रथम वर्गमूलके असेव्यातर्षे मायरूप साक्षात्तसम्पत्ति जीवराशिका
ऊपर इच्छित वर्गमें माय देने पर जो माय लम्प भाव उसका उसी इच्छित वर्गमें माग देने
पर साक्षात्तसम्पत्ति जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घन १५३३ का प्रथम वर्गमूल २५१

$$\frac{२५१}{२५१ \times ३२} = २४८ \quad \frac{१५३३}{२४८} = १५३३ \times ३२$$

$$\frac{१५३३}{१५३३ \times ३२} = २४८ सा.$$

रासिस्स अद्वन्द्वेदणं कदे वि सासगसम्माश्रितासी आगच्छदि । एव सच्चस्य परु
 वेदम् । अद्वन्द्वपरुषणा गदा । पणापमे वचइस्सामो । पणापणपल्लविदियवगसूस्स
 असंखेज्जदिमागेण सासगसम्माश्रित्यामिणा उरि इच्छिद्वगगे मागे हिदे अं मागल्लं वेण
 तम्हि चेव वगगे मागे हिदे सासगसम्माश्रितासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स
 अद्वन्द्वेदणममेणे रासिस्स अद्वन्द्वेदणं कदे वि सासगसम्माश्रितासी आगच्छदि ।
 गहिद्वगहिदो गदो ।

गहिद्वगुणहार वचइस्सामो । पल्लिवमस्स असंखेज्जदिमागेण सासगसम्माश्रि
 रासिणा उरि इच्छिद्वगगे मागे हिदे अं मागल्लं वेण तमेव वग गुणेऽयं तस्सुवरिम

उक्त मागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त मध्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी
 सासाङ्गसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके ८१ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीवार उक्त मध्यमान
 राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासाङ्गसम्यग्दृष्टिराशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र प्रकरण करना चाहिये । इसप्रकार घनघात समाप्त हुए । अब
 घनापनघातमें गृहीतगृहीत अपरिम बिकल्प बतलाते हैं—

घनापनपम्पके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातर्धे मागकूप सासाङ्गसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे
 प्रमाणका घनापनपम्पके ऊपर इच्छित वर्गमें माग देने पर जो माग छप्प आये उसका इसी
 वर्गमें माग देने पर सासाङ्गसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घनापन ६ ५३३ का द्वितीय वर्गमूल २५, २५ का असंख्यातर्धे माग
 २ × २५,

$$\frac{२५}{२ \times २५} = २०४८ \quad ६ \times २५ \times २ \quad \frac{२५}{२०४८} = ६ ५३३'' \times २२$$

$$\frac{६ ५३३ \times ६ ५३३}{६ ५ ३३'' \times २२} = २०४८$$

उक्त मागहारके अितने अर्धच्छेद हो इतनीवार उक्त मध्यमान राशिसे अर्धच्छेद
 करने पर भी सासाङ्गसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीवार उक्त मध्य
 मान राशिसे अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासाङ्गसम्यग्दृष्टि राशि आती है । इसप्रकार
 गृहीतगृहीत अपरिम बिकल्प समाप्त हुआ ।

अब गृहीतगुणकार अपरिम बिकल्पके बतलाते हैं—पम्पोपमके असंख्यातर्धे मागकूप
 सासाङ्गसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे प्रमाणका पम्पोपमके ऊपर इच्छित वर्गमें माग देने पर जो
 माग छप्प आये उससे इसी इच्छित वर्गके गुणित करके बाहर हूर छप्प राशिका इच्छित
 वर्गके अपरिम वर्गमें माग देने पर सासाङ्गसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

वर्गे माग हिंदे सासणसम्माइठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अइच्छेदणयमेचे रासिस्स अइच्छेदण फदे वि सासणसम्माइठिरासी अवचिइदे । एवं सम्बत्त वचन् । वेरूपपरूवणा गदा । अइरूपे वचइस्सामो । घणपल्लपडमवगमूलस्स असंखेअदिमायेव सासणसम्माइठिरासिणा उवरि इच्छिअवर्गे मागे हिंदे अ मागसई तेण तमेव वर्ग गुणेत्य तस्सवरिमवर्गे मागे हिंदे सासणसम्माइठिरासी आपच्छदि । तस्स भागहारस्स अइच्छेदणयमेचे रासिस्स अइच्छेदण फदे वि सासणसम्माइठिरासी अवचिइदे । एव सम्बत्त वचन् । अइरूपपरूवणा गदा । घणापणे वचइस्सामो । घणापण

$$\text{उदाहरण—} \frac{१११३९}{२०४८} = १५३३ \times ३२ \quad १११३९ \times १५३३ \times ३२ = ११३३९' \times ३२$$

$$\frac{१५३३३ \times १५३३}{१५३३ \times ३२} = २३८ \text{ छा}$$

एक भागहारके जितने अर्थछेद हों उतनीबार एक मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी सासादनसम्पन्नादि जीवराशि ही जाती है ।

उदाहरण—एक भागहारके ५३ अर्थछेद होते हैं अतएव इतनीबार एक मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी २३८ प्रमाण सासादनसम्पन्नादि राशि जाती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार त्रिकुपप्रकरण समाप्त हुई । अब अष्ट तपमें गृहीतगुणकार उपरिम निकस्यको बतलाने हैं—

घनपल्लके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातमें मायकप सासादनसम्पन्नादि राशिका घन पल्लके ऊपर दृष्टिगत वर्गमें माप देने पर जो माग ऊपर आये उससे उसी दृष्टिगत वर्गको गुणित करके आई हुई सप्त राशिका दृष्टिगत वर्गके उपरिम वर्गमें माप देने पर सासादन सम्पन्नादि जीवराशिका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—१५५३३' का प्रथम वर्गमूल २५३' ;

$$\frac{२५३'}{३२ \times २५३} = २४८; \quad \frac{१५५३३' \times १५५३३'}{२०४८} = १५३३ \times ३२$$

$$१५५३३ \times १५५३३ \times ३२ = १५५३३'' \times ३२;$$

$$\frac{१५५३३ \times १५५३३'}{१५५३३'' \times ३२} = २०४८ \text{ छा}$$

एक भागहारके जितने अर्थछेद हों उतनीबार एक मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी सासादनसम्पन्नादि जीवराशि जाती है ।

एक भागहारके १८१ अर्थछेद होते हैं अतएव इतनीबार एक मध्यमान राशिके अर्थ छेद करने पर भी २४८ प्रमाण सासादनसम्पन्नादि राशि जाती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार अष्टक प्रकरण समाप्त हुई । अब

विदियवग्गमूळस्स असंखेज्जदिमागेण सासजसम्माइडिरासिषा उवरि इच्छिदवग्गे मागे हिदे च मागमद्द तथ तमेव वर्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे सासजसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्दज्जेदणपमेत्ते रासिस्स अद्द ज्जेदणए कदे वि सासजसम्माइडिरासी अवचिहुदे । एव सम्भत्त घणापनधाराए वचच्च । गहिदगुणगारो गदा । एव सासजसम्माइडिपरूवणा समचा । एव सम्मामिच्छाइडि असंखइसम्माइडि-सन्नदासन्नदाण च वचच्च । णवरि विसेसो अप्पण्णो अवहारकालेहि खिदादमो वचच्चा । एत्थ एदेहिं सदिहिं वचइस्सामो—

वत्तीस सोखस चचारि माण सदसहिदमहुवीसं च ।

एदे अवहारत्वा हवति सदिहिणा दिहा ॥ १७ ॥

घनापनधारामें गृहीतगुणकार वपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनापनके द्वितीय वर्गमूलके असेक्यातवें भागकप सासाइनसम्यग्दृष्टि जीवराशिक घनापनपक्षके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध भाव उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके जो छद्म भावे उसका उसी इच्छित वर्गके वपरिम वर्गमें भाग देने पर सासाइनसम्यग्दृष्टि जीवराशिक प्रमाण आता है ।

$$\begin{aligned} \text{उदाहरण—} & \frac{18}{2 \times 18} = 2 \text{ ४८} \quad \frac{44 \times 44 \times 44}{2 \times 48} = 44 \times 44 \times 22 \\ & 4 \times 44 \times 44 \times 22 = 44 \times 44 \times 22 \\ & \frac{44 \times 44 \times 22}{44 \times 44 \times 22} = 2048 \text{ सा} \end{aligned}$$

उक्त भागहारके जितने अर्थच्छेद हों इतनीबार उक्त प्रत्यमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी सासाइनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५५५ अर्थच्छेद होने हैं इसलिये इतनीबार उक्त प्रत्यमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी २ ४८ प्रमाण सासाइनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

सर्वत्र घनापनधारामें भागे भी इसीप्रकार कहना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगुणकार वपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

इसप्रकार सासाइनसम्यग्दृष्टि प्रकरण समाप्त हुई ।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि भीर सघटासंयत जीवराशिके प्रमाणका अण्डित भाजित आदिक द्वारा कथन करना चाहिये । इतनी पिरोवता है कि अपने अपने अवधारकाके द्वारा ही अण्डित भाजित आदिका कथन करना चाहिये । भागे इन सबकी श्रद्धासदृष्टि बतलाने हैं—

सासाइनसम्यग्दृष्टिसंख्या अघहारकसका प्रमाण ३२, सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंख्या अघहारकसका प्रमाण १६, असंयतसम्यग्दृष्टिसंख्या अघहारकसका प्रमाण ४ और संयत

बम्मे भागे हिंदे सासवसम्माइठिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अइच्छेइयमेचे रासिस्स अइच्छेइय कदे वि सासवसम्माइठिरासी अबधिइदे । एव सम्भरव वचम्भ । नेरुवपरुववा गदा । अइरुने वचइस्सामो । घनपस्सपइमवग्गमूलस्स वसंखेअदिमायेव सासवसम्माइठिरासिषा उतरि इभिअइवगे भागे हिंदे अं भागलईं ठेण तमेव वग्ग गुजेअण तस्सवरिमवगे भागे हिंदे सासवसम्माइठिरासी आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अइच्छेइयमेचे रासिस्स अइच्छेइय कदे वि सासवसम्माइठिरासी अबधिइदे । एव सम्भरव वचम्भ । अइरुवपरुववा गदा । घनापगे वचइस्सामो । घनापव

$$\text{उदाहरण—} \frac{३५५३३}{२०४८} = ३५५३३ \times ३२, \quad ३५५३३ \times ३५३६ \times ३२ = ३५५३३' \times ३२$$

$$\frac{३५५३३ \times ३५३६}{३५३६ \times ३२} = २०४८ \text{ सा}$$

इस मागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीबार इका मध्यमान राशि के अर्थच्छेद करने पर भी सासादनसम्पत्ति जीवरशि होती है ।

उदाहरण—इस मागहारके ५३ अर्थच्छेद होते हैं अतएव इतनीबार इका मध्यमान राशि के अर्थच्छेद करने पर भी २३८ प्रमाण सासादनसम्पत्ति राशि होती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार इतिवृत्तप्रकरण समाप्त हुई । अब अइवर्गमें गृहीतगुणकार उपरिम विवक्ष्यको बतखाने हैं—

अनपस्सके प्रथम वर्गमूलके वसंख्यातर्षे मागइय सासादनसम्पत्ति राशिअ वग्ग पस्सके ऊपर इविअत वर्गमें माग देने पर जो माग उअव भवने उससे उसी इविअत वर्गको गुणित करके भाई हुई उअव राशिअ इविअत वर्गके उपरिम वर्गमें माग देने पर सासादनसम्पत्ति जीवरशिअ प्रमाण भवता है ।

उदाहरण—३५५३३' का प्रथम वर्गमूल २५३',

$$\frac{२५३'}{३२ \times २५३} = २४८, \quad \frac{३५५३३' \times ३५५३३'}{२४८} = ३५५३३ \times ३२$$

$$३५५३३ \times ३५५३३ \times ३२ = ३५५३३'' \times ३२$$

$$\frac{३५५३३' \times ३५५३३'}{३५५३३'' \times ३२} = २०४८ \text{ सा}$$

इस मागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीबार इका मध्यमान राशि के अर्थच्छेद करने पर भी सासादनसम्पत्ति जीवरशि होती है ।

इस मागहारके १८१ अर्थच्छेद होते हैं अतएव इतनीबार इका मध्यमान राशि के अर्थच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्पत्ति राशि होती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार अइवृत्त प्रकरण समाप्त हुई । अब

करणं । पुषपमिदि तिण्ह कोडीणमुवरि पवण्ह कोडीण हेहुदो जा सखा सा पचवा । सा अयेगवियप्पादो इमा होदि पि न जामिखदे ? न, परमगुरूवदेसादो जामिखदे । तस्य पमत्तसज्जदा न पंच कोडीओ तेमउदिसकखा अट्टाणउदिसहस्सा छठरर विसद च ५९३९८२०६ । एदमेचियं होदि पि कयं नन्वे ? आश्रियपरपरागद्विभोवदेसादो ।

अप्पमत्तसज्जदा दम्बपमाणेण केवडिया, सखेज्जा' ॥८॥

जदि पि एद संखेज्जा इदि वयनं सम्भसखेज्जविमप्पाण साहारणं इमदि तो वि कोडिपुषप न पेदि पि पम्भदे । त कय ? पुष मुत्तारमणाणुबनचीदो, 'पमत्तदादो अप्पमत्तदा संखेज्जमुणहीणो' पि सुत्तादो वा । अप्पमत्तसज्जदा पमाण गुरूवदेसादो पुण्यदे । दो कोडीओ छण्णउदिसकखा पवणउदिसहस्सा तिरहियसय च । अंकदो वि एत्थिपा हवति २९६९९१०३ । धुत्त च-

श्रुंका—पूयकत्व इस पक्षसे तीन कोटिके ऊपर और नी कोटिके नीचे जितनी संख्या है वह लेना चाहिये । परंतु यह मध्यकी संख्या अनेक विच्छेदरूप होनेसे यही संख्या यहाँ की गई है यह नहीं जाना जाता है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है । उसमें प्रमत्त सप्त जीर्णोक्त प्रमाण पांच करोड़ सेरानये खाल अनुगतये द्वार दोसी छह ५९३९८२०६ है ।

श्रुंका—यह संख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्यपरंपरासे आये हुए शिष्यश्रुतिसे उपदेशसे यह जाना जाता है कि यह संख्या इतनी ही है ।

अप्रमत्तसप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात ई ॥ ८ ॥

यद्यपि सूत्रमें आया हुआ संखेज्जा यह बचन संख्यात संख्याके जितने भी विच्छेद हैं उनमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी वह कोटिपूयकत्वसे पूरा नहीं करता है अर्थात् यहाँ पर कोटिपूयकत्वसे नाबेकी संख्या छह है यह जाना जाता है ।

श्रुंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यहाँ पर पूर्णोक्त अर्थ छह न होकर यदि कोटिपूयकत्वका अर्थ ही छह होता तो समस्त सूत्र बचनेकी कोर व्यवस्थित नहीं थी । यद्यपि प्रमत्तसप्तके कालसे अप्रमत्तसप्तका नाम सप्तसप्तगुणा हीन है इस सूत्रसे भी जाना जाता है कि यहाँ पर कोटिपूयकत्वका अर्थ छह नहीं है ।

अब गुरुपदेशसे अप्रमत्तसप्त जीर्णोक्त प्रमाण कितने हैं—

अप्रमत्तसप्त जीर्णोक्त प्रमाण दो करोड़ छयानये खाल निम्नानये द्वार एकसी तीन

करमाह । पुष्यमिदि तिन्ह कोडीणसुवरि नवन्ह कोडीण हेडुदो सा सखा सा पेचवा ।
सा अपेगवियप्पादो इमा होदि पि न आभिजदे ? न, परमगुरुपदेसादो आभिजदे ।
तरय पमचसंज्ञदा णं पंच कोडीओ तेषठदिलक्खा अट्टणउदिसइस्सा छठचरे विसद च
५९३९८२०६ । एदमेत्थिं होदि पि कर्षं पण्यवे ? आहरियपरंपरागद्विजोवदेसादो ।

अप्यमत्तसंज्ञदा द्व्यपमाणेण केवडिया, सखेज्जा' ॥८॥

अदि वि एदं सखेज्जा इदि वयं सखेज्जाविमप्यार्णं माहारणं इवदि तो
वि कोडिपुच न पूरेदि पि नण्यवे । तं कच ? पुच सुचारंमणहाशुवमचीदो, 'पमचसादो
अप्यमत्तदा सखेज्जागुनहीनो' पि सुचादो वा । अप्यमत्तसंज्ञदानं पमाण गुरुपदेसादो पुचदे ।
दो कोडीओ छण्ठदिलक्खा पवणउदिसइस्सा तिरहियसय च । अंकदो वि यत्थिया इवदि
२९६९९१०३ । पुचं च-

संज्ञा—पुष्यत्त्व इत्त पक्षे तीन कोटिके ऊपर और नौ कोटिके नीचे जितनी संख्या
है वह केना चाहिये । परंतु वह मध्यकी संख्या अनेक विकल्परूप होनेसे यही संख्या यहां
ली गई है यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान—गर्ही क्योंकि यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है । इसमें प्रमत्त-
सयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानवे लाख अठानवे हजार सोसी छह ५९३९८१०६ है ।

संज्ञा—यह संख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—माचार्यपरंपरासे आये हुए जितेन्द्रदेवके उपदेशसे यह जाना जाता है
कि यह संख्या इतनी ही है ।

अप्रमत्तसयत जीव द्व्यपमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ८ ॥

यद्यपि स्वयं आया हुआ संखेज्जा यह वचन संख्यात संख्याके जितने भी विकल्प
हैं वन्तमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी वह कोटिपुष्यत्त्वके पूरा नहीं करता है क्योंकि
यहां पर कोटिपुष्यत्त्वसे नीचेकी संख्या दण्ड है यह जाना जाता है ।

संज्ञा—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यहां पर पूर्वोक्त मर्त्य दण्ड न होकर यदि कोटिपुष्यत्त्वकय मर्त्य ही दण्ड
होता तो अङ्कगते स्वयं वननेकी कोई व्यावश्यकता नहीं थी । मर्यादा प्रमत्तसंयतके अङ्कसे
अप्रमत्तसयतका अङ्क संख्यातगुणा डाल है इस सूत्रसे भी जाना जाता है कि यहां पर
कोटिपुष्यत्त्वकय मर्त्य दण्ड नहीं है ।

अब गुरुपदेशसे अप्रमत्तसयत जीवोंका प्रमाण कहते हैं—

अप्रमत्तसयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ अठानवे लाख तिरानवे हजार एकसी तीन

तिगहिय-सद नकनठदी छण्णठदी जणमच रे कोरी ।

पनेव य तेणठदी ण्ण विजया छउत्तय येय' ॥ ४१ ॥

अणमचद्व्यादो पमचद्व्यं केण कारणेन दुगुणं ? अपमचद्व्यादो पमचद्व्या
दुगुणचादो ।

अदुण्णमुवसामगा दव्वपमाणेण केवहिया, पनेसेण एक्को वा
दो वा तिणि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ १ ॥

एमेगगुणहानमि एगसमममि चारिचमोहणीपमुवसामेवो अहण्णेण एगा बीवो
पविसइ, उक्कस्सेण चउवण्ण बीवा पविसति । एद सामण्वदो मवदि । विसेसइ पुम
अह-समयाहिय-वासपुवचम्मरे उवसमसेहिपाआगा अह समया इवति । उव
पहमसमए एगबीवमाइ काउव आ उक्कस्सेण सोसम बीवा पि उवसमसेहि चइति ।
विहियसमए एगबीवमाइ काउव आ उक्कस्सेण चउवीस बीवा पि उवसमसेहि चइति ।
तवियसमए एगबीवमाइ काउव आ उक्कस्सेण तीस बीवा पि उवसमसेहि चइति ।
चउवसमए एगबीवमाइ काउव आ उक्कस्सेण छवीस बीवा पि उवसमसेहि चइति ।

है । जहाँसे भी व्यमचसंघत २९, ३०, ३१ ३ इतने ही हैं । कहा भी है—

अमचसंघत जीवोक्का अमाव पांच करोड़ तेरागने झाड नमुनने हजार दोसी छह है
और व्यमचसंघत जीवोक्का अमाव दो करोड़ छपानने छक विम्याने हजार एकसी तीव है ॥ ४१ ॥

छंका—अमचसंघतके द्रव्यसे अमचसंघतका द्रव्य किछ चरवसे कृता है ?

समाधान—क्योंकि, व्यमचसंघतके व्यमसे अमचसंघतका काछ उगुता है ।

चारों गुणस्वान्तोंके उपश्रामक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? प्रवेशकी अपेक्षा
एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे जीवन होते हैं ॥ १ ॥

अपश्राममेजीके मत्सेक गुणस्थानमें एक समयमें चारिचमोहणीयका अपश्राम करता हुआ
अण्वसे एक जीव प्रवेश करता है और उत्कृष्टरूपसे जीवन जीव प्रवेश करते हैं । यह कथन सामा-
न्यसे है । विशेषकी अपेक्षा तो आठ समय अधिक वर्णपुचस्तके मीतर अपश्राममेजीके योग्य
(अगात्तर) अठ समय होते हैं । जवसे जव समयमें एक जीवको अग्नि केकर उत्कृष्टरूपसे
सोकर जीवतक अपश्राममेजी पर चढ़ते है । दूसरे समयमें एक जीवको अग्नि केकर उत्कृष्टरूपसे
बीबीस जीवतक अपश्राममेजी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको अग्नि केकर उत्कृष्टरूपसे
तीस जीवतक अपश्राममेजी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको अग्नि केकर उत्कृष्टरूपसे

१ मो जी. ११५ वा उव पनेव य तेणठदी न्णविजयाउत्तय येय' इति पद्यः । प. ४ ११ ११

२ पत्ता (कलामिच्छा) अनेव एको वा द्वी वा त्री वा । अनेव च द्वा त्रि च । इ ति १ ८

पत्ता पदव्या इयं कलामिच्छा व कलामिच्छा । प. ४ १ ११.

पचमसमए एगजीबमाई काऊण वा उकस्सेण बायाल जीवा चि उचसमसेदिं चडैति ।
 छठसमए एगजीबमाई काऊण वा उकस्सेण अडदाल जीवा चि उचसमसेदिमारुइति ।
 सप्तमसमए समएसु एकजीबमाई काऊण जावुक्कस्सेण चठवण्ण जीवा चि उचसमसेदिं
 चडैति । उचं च—

सोछसम चठवीस तीस छठीस तइ य बायाळ ।

अडदाल चठवण्ण चठवण्ण होइ अतिमए ॥ ४२ ॥

अर्द्ध पट्टच्च सखेज्जा ॥ १० ॥

पुम्बुचेसु अइसु समएसु एगेगुणङ्गाजम्हि उकस्सेण सखिदसम्बजीवे एगडं कदे
 चठउत्तरविसयमेत्ता इयति । तेसिं संखेयेण मेलानणविहाण बुचदे । अइ गच्छ इयिय
 सचारसमाइ काऊण छठत्तरं करिय संकलणसुचेण मेलानिदे एगेगुणङ्गाजम्हि संखिद

उत्तीस जीव तक उपशमभेणी पर चडते हैं । पाँचवें समयमें एक जीवको भादि सेकर उत्तर
 रूपसे प्यालीस जीव तक उपशमभेणी पर चडते हैं । छठे समयमें एक जीवको भादि सेकर उत्तर
 रूपसे अड़तालीस जीव तक उपशमभेणी पर चडते हैं । सातवें भीर आठवें इन दोनों समयोंमें एक
 जीवको भादि सेकर उत्तररूपसे बीचन बीचन जीव तक उपशमभेणी पर चडते हैं । कहा भी है—
 निरमतर आठ समयपर्यन्त उपशमभेणी पर चडनेवाले जीवोंमें अधिकसे अधिक प्रथम
 समयमें सोछह दूसरे समयमें बीबीस तीसरे समयमें तीस चौथे समयमें उत्तीस, पाँचवें
 समयमें प्यालीस छठे समयमें अड़तालीस सातवें समयमें बीचन भीर अन्तिम अष्टादश
 समयमें भी बीचन जीव उपशमभेणीपर चडते हैं ॥ ४२ ॥

कालकी अपेक्षा उपशमभरणोंमें संचित हुए सभी जीव सख्यात होते हैं ॥ १० ॥

पूर्वोक्त आठ समयोंमें एक एक गुणस्थानमें उत्तररूपसे संचित हुए संपूर्ण
 जीवोंको एकत्रित करन पर तीनसौ बार होते हैं । अग्रे संक्षेपसे उम्हर्कि ओइ करनेकी
 विधि कहते हैं—

आठको गच्छरूपसे स्थापित करके, सबदको भादि अष्टादश गुण करके भीर छहको
 उत्तर अष्टादश करके पद्मेगण विहानं इत्यादि संकलन सूत्रके नियमानुसार ओइ
 करन पर प्रत्येक गुणस्थानमें उपशमक जीवोंकी संचित राशिका प्रमाण तीनसौ बार
 हो जाता है ।

उदाहरण— $८ - १ = ७ + २ = १३ \times ६ = २१ + १० = ३८ \times ८ = ३०४$

१ गो जी १२० वं ६ १५ १०

२ स्वकायन लक्षितः कस्वेका । त वि १ ८ अर्द्ध वरुच वरुच इति कने नि संखेया ।

पच २ ११

३ वरवेण शिरीरं इमादि उत्तरं चडिदि । समचरि परचिदि परचिदि तं विधाया । ति वा

११५ वरुचि वरं इमा ताविं माविं विनि । माविण वरुचलनीविं वरिं वरु ॥ ५ वं ६ ००

उत्तमसमागम पमाग इति । सतकस्तपमागधीयसहिदा सन्धे समया शुगर्धं न सति
 ति के वि पुष्पुत्तपमाग पश्य करोति । एद पश्य वक्त्याय पवाइन्ममाण दक्षिण-
 साहिरिपरंपरागममिदि बं युत्तं इति । पुष्पुत्तवक्त्यागमपवाइन्ममाण वातं आहिरिपरं
 परा-अपागमिदि वायम् ।

अतर्हं स्ववा अजोगिकेवली दन्वपमाणेण केवडिया, पनेसेण
 एको वा दो वा तिणि वा, उक्स्सेण अठोत्तरसर्दं ॥ ११ ॥

अतुसमपाहिय-ठ-मासम्भतर खगसेदिपामोगा अतु समया इति । तसि
 समयायं विसेसविबक्तमकाऊण सामण्यपरूण कीरमाने नहण्येण एगो बीबो खग
 गुणहानं पडिबन्धति । उक्स्सेण अठोत्तरसयमंतजीवा खगगुणहानं पडिबन्धति ।
 विसेसमस्तिष्ठण परूविज्जमाये पढमसमए एगबीवमाइ काऊण वा उक्स्सेण वचीस बीवा
 ति खगसेदि चडति । विदियसमए एगबीवमाइ काऊण वा उक्स्सेण अठदसीस बीवा
 ति खगसेदि चडति । तदियसमए वि एगबीवमाइ काऊण वा उक्स्सेण सडि बीवा ति
 खगसेदि चडति । अठमसमए एगबीवमाइ काऊण वा उक्स्सेण वाहत्तर बीवा ति

अपने इस उत्कृष्ट प्रमाणवाले जीवोंसे पुनः अर्ध्वं समय एकसाथ नहीं प्राप्त होते हैं
 इसलिये कितने ही व्याख्यार्थ पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पाँच कम करते हैं । पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पाँच
 कमका यह व्याख्यान प्रमादरूपसे आ रहा है इसलिये है और व्याख्यार्थ परंपरगत है यह इस
 कथनका तात्पर्य है । तथा पूर्वोक्त १०४ वा व्याख्यान प्रमादरूपसे नहीं आ रहा है वाम है,
 व्याख्यार्थ-परंपरसे आया है ऐसा जानना चाहिये ।

चारों गुणस्थानोंके अणु और अपोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन
 हैं ? प्रवेष्टकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ हैं ॥ ११ ॥

आठ समय अधिक छह महीनाके भीतर अणुक्रमेणकी योग्य आठ समय होते हैं । इन
 समयोंके विशेष कथनकी विवक्षा न करके सामान्यरूपसे प्रकण करने पर अणुमयसे एक जीव
 अणु गुणस्थानको प्राप्त होता है । तथा उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ जीव अणु गुणस्थानको
 प्राप्त होते हैं । विशेषका माध्य केकर प्रकण करने पर प्रथम समयमें एक जीवको व्याधि
 केकर उत्कृष्टरूपसे वचीस जीवतक अणुक्रमेण पर बढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको व्याधि
 केकर उत्कृष्टरूपसे स्रुताधीन जीवतक अणुक्रमेण पर बढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको
 व्याधि केकर उत्कृष्टरूपसे साठ जीवतक अणुक्रमेण पर बढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको

१ पूर्वोक्तप्रमाणवाले जीवोंसे पुनः अर्ध्वं समय एकसाथ नहीं प्राप्त होते हैं ।

२ अतः अणु अपोगिकेवली अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ हैं ॥ ११ ॥

३ अथवा जीवमयी एतन् अणु होति अतएव । पञ्च १ २४

खगमेहिं चरंति । पंचमसमए एगजीवमाइ काऊण जा उक्कस्सेण चउरासीदि जीवा चि खगमेहिं चरंति । छट्ठमसमए एगजीवमाइ काऊण जा उक्कस्सेण छण्णठदि जीवा चि खगमेहिं चरंति । सत्तमसमए अट्ठमसमए च एगजीवमाइ काऊण जा उक्कस्सेण अट्ठसरसयजीवा चि खगमेहिं चरंति । उरं च—

वरीसमद्वयस सट्ठी बाहउरी य शुळसीई ।

छण्णठदी अट्ठसरसदमट्ठसरसय च वेदव्वं ॥ ४३ ॥

अद्व पट्ठस सस्सेज्जा ॥ १२ ॥

अट्ठसमयसविदसखजीवे उक्कस्सेय्ये एगट्ठे कदे अट्ठसरससयमेणजीवा इहंति । तिस्से मेलावणविहाण बुबदे । तं जहा-अट्ठ गच्छं ह्विय चोत्तीसमाइ काऊण वारसुपरं करिय सकलणसुणेन मेलाविदे खवगरासी मिलदि । एस्य करणगाहा—

आदि छेकर उक्कएरूपसे बहउर जीवतक क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । पाँचवें समयमें एक जीवको आदि छेकर उक्कएरूपसे चोरासी अथवा क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । छठे समयमें एक जीवको आदि छेकर उक्कएरूपसे छ्यान्ने जीवतक क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । सातवें और आठवें समयमें एक जीवको आदि छेकर उक्कएरूपसे प्रत्येक समयमें एकही माठ जीवतक क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । कहा मी है—

निरउतर माठ समयपर्यन्त क्षपकमेणी पर चढ़नेवाले जीवोंमें पहले समयमें बत्तीस दूसरे समयमें अड़तालीस तीसरे समयमें साठ चौथे समयमें बहउर पाँचवें समयमें चौरासी छठे समयमें छ्यान्ने सातवें समयमें एकसी माठ और आठवें समयमें एकसी माठ जीव क्षपकमेणी पर चढ़ते हैं । ऐस्य जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

काळकी अपेक्षा संचित हुए क्षपक जीव संख्यात होते हैं ॥ १२ ॥

पूर्वोक्त माठ समयोंमें संचित हुए संपूर्ण जीवोंको एकत्रित करने पर संपूर्ण जीव छहसी माठ होते हैं । आगे इसी संख्याके आड़ करनेकी विधि कहत हैं—माठको गच्छरूपसे व्यापित करके चौतीसको आदि अर्थात् मुक्त करके और बारहको उत्तर अर्थात् खय करके पचमेसेन बिधीय इत्यादि सकलनचक्रके नियमानुसार जोड़ देने पर क्षपक जीवोंकी राशिक्रममाण प्रप्यत होता है ।

उदाहरण— $८-१=७$ $७+२=९$ $९ \times १२=४२$ $४२+३४=७६$ $७६ \times ८=६०८$

अब यहाँ इसी विषयमें कटवगाथा दी जाती है—

१ पो जी ४४ पं ठ १-८

२ एवकमेव सप्रविताः उक्केवा । व मि १ ८ बहउर ववउरुपं । ववठ २ २४

३ अठिउ जीवे च इति पाठ ।

सबसामग्राज पमाण इति । सठहस्तपमाणजीवसहिदा सप्प समया शुगणं न संहति
 ति के वि पुम्भुसपमाणं पंषुण करेति । एदं पणुण बकराण पसाइज्जमाण दक्खिण-
 माहरियपरपरागयमिदि अ सुणं इह । पुम्भुसपणुणमपसाइज्जमाणं वाउं आहरियपरं
 परा मणागामिदि आयम्ह ।

चतुण्हं खवा अजोगिकेवली दब्बपमाणेण केवडिया, पवेसेण
 एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण अटोत्तरसदं ॥ ११ ॥

अहसमयाहिय-छ-मासम्मतर खवगसेति पाओग्गा अह सपमा इति । तसि
 सपमाणं विसेसविबक्खमकाळण सामण्यपरुषणं कीरमाणे अहण्येण एमो जीवा खवग
 गुणद्वयं पडिबन्धति । उक्कस्सेण अटोत्तरसयमेवजीवा खवगगुणद्वयं पडिबन्धति ।
 विसेसमस्सिद्वय परुषिज्जमाणे पदमसमए एगजीवमाइं काळण मा उक्कस्सेण बधीस जीवा
 ति खवगसेतिं चरति । विदियसमए एगजीवमाइं काळण मा उक्कस्सेण अटोत्तरस जीवा
 ति खवगसेतिं चरति । तदियसमए वि एगजीवमाइं काळण मा उक्कस्सेण सद्धि जीवा ति
 खवगसेतिं चरति । अटत्तपसमए एगजीवमाइं काळण मा उक्कस्सेण बाहत्तरि जीवा ति

अपने इस उत्कृष्ट प्रमाणपाछे जीवोंसे युक्त संपूर्ण समय एकसाथ नहीं प्राप्त होते हैं
 इसलिये कितने ही आचार्य पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पाँच कम करते हैं । पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पाँच
 कमका यह व्याख्यान प्रमादरूपसे आ रहा है इसलिये है और आचार्य परंपरागत है यह इस
 कथनका तात्पर्य है । तथा पूर्वोक्त १०४ वी व्याख्यान प्रमादरूपसे नहीं व्य रहा है वाम है
 आचार्य-परंपरासे अनापत्त है ऐसा जानना चाहिये ।

चारों गुणस्वानोंके क्षपक और अपोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन
 हैं ? प्रवेष्टकी अपेक्षा एक या दो अपवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ ॥ ११ ॥

व्याह समय अधिक कुछ महीनाके मीतर क्षपकमेजीके योग्य व्याह समय होते हैं । उक्त
 क्षमकोंके विरोध कथनकी विवक्षा न करके सामान्यरूपसे ग्रहण करने पर अध्ययसे एक जीव
 क्षपक गुणव्यापनको प्राप्त होता है । तथा उत्कृष्टरूपसे एकसौ व्याह जीव क्षपक गुणस्वानको
 प्राप्त होते हैं । विरोधका आशय लेकर ग्रहण करने पर प्रथम समयमें एक जीवको आदि
 लेकर उत्कृष्टरूपसे बधीस जीवतक क्षपकमेजी पर बढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि
 लेकर उत्कृष्टरूपसे अठ्ठासीस जीवतक क्षपकमेजी पर बढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको
 आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे साठ जीवतक क्षपकमेजी पर बढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको

१ अटोत्तरसमयमात्रा इत्यनेन न वत् क्षमाः । आचार्यपरिभाषा पंथी (मिताक्षरा) ३ पृ १८

२ अनापत्त इत्यत्र अविरोधविमर्श अनेकेन पृथे वा द्वौ वा त्रौ वा । अन्वयेणोत्तरादनुत्तरात् ।
 व ति १८ अना जीवालोकी एवम जल इति अहर्ष । पृष्ठ २ २४

एकेऽनुगच्छेत्तु अहम् समम् सचिदाण तु ।

अहम् सचिदाण उच्यते-अहम्गण परिमाण ॥ ४७ ॥

सजोगिकेवली दवपमाणेण केवडिया, पवेसणेण एको वा
वा तिणिण वा, उक्कस्सेण अट्टत्तरसयं ॥ १३ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो पुम्भं व परुवेदम्भो ।

अह् पड्डस्स सदसहस्सपुधत्त ॥ १४ ॥

अहमस्सिउग सदसहस्सपुधत्तायणविहारं बुधदे- अहममवाहियउम्मासाणम
मगे अदि अह् सिद्धसमया उक्कमि वो चालीससहस्स-अहमय-एक्केवालीसमच-अह
मयाहियउमासाकमतेरे केत्तिया सिद्धसमया उक्कमि चि तेरासिए कदे तिणिउक्क
म्भीससहस्स-सचसय अट्टावीसमेच सिद्धसमया उक्कमि । पुणो एदम्हि सिद्धकासम्हि
चिदसयोगिमीवाण पमाणायण बुधदे । तं अहा- उह् सिद्धसमयसु तिणि तिणि

एक एक गुणस्थानमें आठ समयमें संक्षिप्त हुए उपशमक और क्षयक जीर्णोक्त परि
णाम आठसौ सत्तानवे हैं ॥ ४७ ॥

सयोगिकेवली जीव दम्पप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? प्रवेशसे एक या दो
वशा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ होते हैं ॥ १३ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहिलेके समान कहना चाहिये ।

काष्ठकी अपेक्षा सपूर्ण सयोगी जिन लक्षपृथक्त्व होते हैं ॥ १४ ॥

सयोगी जिन काष्ठका आश्रय करके लक्षपृथक्त्व कहे हैं, आगे उली लक्षपृथक्त्वके
लेखी विधि कहते हैं—

आठ समय अधिक छह माहके भीतर यदि आठ सिद्ध समय प्राप्त होते हैं तो
मौन्य इकार आठसौ इकाईकी मात्र अर्थात् इतनीबार आठ समय अधिक छह माहके
भीतर कितने सिद्ध समय प्राप्त होंगे इसप्रकार वृत्तांक करने पर तीन लाख छम्भीस इकार
तककी अर्थात् सिद्ध समय आते हैं। अब आगे इस सिद्ध काष्ठमें संक्षिप्त हुए सयोगी जीर्णोक्त
मात्र जानेकी विधि कहते हैं । वह इसप्रकार है—

१ वरीमनेवमिः प्रवेसेन एको वा द्वी वा त्रयो वा । उत्तरवतागोणउत्तरवता । त मि १ <

२ लक्षमेन तद्विना तत्तद्विनापुनरुक्तवता । त मि १ < तं शिष्टं तत्रोक्तिः । परत १ २४

३ वक्ष्यतेऽप्यत्रावमेकवत् क्वा यदि । इदानीं तदा तदां तद्विनापि नदि क्वा ॥ तत्रादि
इति वक्ष्यतेऽप्यत्रावमेकवत् । मन्त्रवक्ष्यतेऽप्यत्रावमेकवत् । तद्विनापि नदि क्वा ॥ तत्रादि
तः अहम् । अनेन इति क्वा मन्त्रां तद्विना ॥ तद्विनापि नदि क्वा ॥ तद्विनापि नदि क्वा ॥ तद्विनापि
तद्विनापि नदि क्वा ॥ १ ॥ ८१-८२

उत्तरद्वयगण्डे एकपदद्वये स्यादित्येव पुनो ।

परिचयिष्य गण्यगुणिदे उच्यते-अथ गण्य परिमण ॥ ४४ ॥

एसा उत्तरपट्टिवची । एत्थ दस अबनिदे इत्थिसुखपट्टिवची हवदि । एसा उच्यते-अथ गण्यगुणिदे उच्यते-अथ गण्य परिमण ॥ ४४ ॥

तिस्रिं बरंति केरुं अतुरुत्तरमत्पर्यय केरुं

उच्यते-अथ गण्यगुणिदे उच्यते-अथ गण्य परिमण ॥ ४५ ॥

अतुरुत्तरमत्पर्यय पमाणमुच्यते-अथ गण्य परिमण ॥ ४५ ॥

तं येन य पंक्तं भवति केरुं तु परिमण ॥ ४६ ॥

एवमगुण्यगुणिदे उच्यते-अथ गण्यगुणिदे उच्यते-अथ गण्य परिमण ॥ ४६ ॥

उत्तर मर्पात् प्रत्ययको व्याख्या करके बीर वसे गण्यसे गुणित करने पर जो छप्प भावे छप्पमेंसे प्रत्ययको व्याख्या मत्ता वेसे पर बीर फिर स्वकीय व्याधि प्रमाणको जोड़ वेसे पर उत्तर राशिसे पुनः गण्यसे गुणित करने पर उपशमक बीर क्षपको प्रमाण व्यता है ॥ ४४ ॥

उदाहरण—क्षपको की अपेक्षा व्याधि १४, प्रत्यय १२ गण्य ८, उपशमको की अपेक्षा व्याधि १७ प्रत्यय १, गण्य ८

$१२ + २ = १४$ $१ \times ८ = ८$ $८ - १ = ७$ $७ + १४ = २१$ $२१ \times ८ = १६८$ एक गुणस्थानमें क्षपको का प्रमाण ।

$१ + २ = ३$ $३ \times ८ = २४$ $२४ - ३ = २१$ $२१ + १७ = ३८$ $३८ \times ८ = ३०४$ एक गुणस्थानमें उपशमको का प्रमाण ।

विशेषार्थ—यद्यपि यह करणप्रथा वहां पर उपशमको बीर क्षपको का प्रमाण काले के क्रिये वदत की गई है बीर वसमें उपशमको बीर क्षपको का प्रमाण काले की प्रतिष्ठा की की गई है, परंतु वहां समाज इति या समाज वृद्धि पारं जाती है ऐसी ब्लेक संख्याको जोड़ भी इसी विषयसे आ जाता है ।

यह उत्तरमत्पत्ता है । १०८ मेंसे १ निष्पन्न वेसे पर इतिप्रमाण्यता होती है । सब भावे उपशमक बीर क्षपक जीको का प्रमाण की प्रकृति करनेवाली व्याख्या वेते हैं—

कितने ही व्याख्या उपशमक जीको का प्रमाण तीव्रती कहते हैं । कितने ही व्याख्या तीव्रती बार कहते हैं बीर कितने ही व्याख्या तीव्रती बारमेंसे पांच कम मर्पात् बीसे निष्पन्न वे कहते हैं । इसप्रकार यह उपशमक जीको का प्रमाण है । क्षपको का इससे पूरा कालो ॥ ४५ ॥

कितने ही व्याख्या उपशमक जीको का प्रमाण तीव्रती बार कहते हैं बीर कितने ही व्याख्या पांच कम तीव्रती बार मर्पात् बीसे निष्पन्न वे कहते हैं ॥ ४६ ॥

आगे एक एक गुणस्थानमें उपशमक बीर क्षपक जीको का प्रमाण की प्रकृति करने वाली व्याख्या वेते हैं—

मेचसिद्धसमयाण केचिया सजोगिबिणि लम्भति पि तेरासिए कए सो चेव रासी
सम्भदि' । एवमण्यत्य वि जाणिठण वचम्भ । अहास्वादससदाप पमाणवण्णणा गाहा-

अट्टव सयसहस्सा गवणउदिसहस्स चेव गवयसय ।

सत्ताणठदी य तहा जहन्नात्रा होति ओषेण ॥ ४९ ॥

एवं परूषिदसर्वं ससदरासिमेगह कदे अट्टकोडीओ भवणउदिसहस्सा भवण
उदिसहस्सा गवसद सत्ताणउदिमेचो होदि ८९९९९९७ । एदम्हाओ रासीओ उव
सामग-सुवगपमानभवनेयम्भ । तेसि पमाणपरूवणगाहा—

गव चेव सयसहस्सा छम्पीससमा य होति अट्टीया ।

परिमाण जायम्भ उवसम-सुवगाणमेद तु ॥ ५० ॥

एदमवणिय तीहि भागो हायम्भो । उदमप्यमचरासी हवदि । दुगुणिदे पमचरासी

प्रकार वैराक्षिक करने पर यही पूर्वोक्त ८९५०२ सयोगी जीवराशि ही आ जाती है । इसी
प्रकार अन्यत्र भी जानकर कथन करना चाहिये ।

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	छद्म प्रमाण
८ समय	६२ केवली	समय ३२९७२८	८९८५०२
८ समय	४४ केवली	११३१६४	८९८५२
८ समय	८८ केवली	८१९८२	८९८५०९

अब यथाव्याप्त संघर्षोंकी संख्याका वर्णन करनेवाली गाथा देते हैं—

सामान्यसे यथाव्याप्तसयमी जीव आठ लाख निम्नानवे हजार नौसी सत्तानवे
होते हैं ॥ ४९ ॥

इसप्रकार प्रकल्प की गई संपूर्ण संघर्ष जीवोंकी राशिओ एकत्रित करने पर कुल संख्या
अष्ट करोड़ निम्नानवे लाख निम्नानवे हजार नौसी सत्तानवे ८९९९९९७ होती है । इस
राशिमेंसे उपशमक और क्षयक जीवोंके प्रमाणको निकाल देना चाहिये । उपशमक और क्षयक
जीवोंके प्रमाणकी प्रकल्पना करनेवाली गाथा इसप्रकार है—

उपशमक और क्षयक जीवोंका परिमाण नौ लाख दो हजार सत्र सौ अठसी
जानना चाहिये ॥ ५० ॥

संघर्षोंकी संपूर्ण राशिमेंसे इस उपशमक और क्षयक जीवराशिओ निकालकर शेषका
भाग देना चाहिये । जो तीसरा भाग छद्म व्याप उतना अग्रमत्संघर्ष जीवराशि का प्रमाण

जीवा केवलज्ञान उपायति, दोसु समयसु दो दो जीवा अदि केवलज्ञान उपायति, दो
अहमयमनेभिदसुबोमिषिणा वासीस भवति । अहसु सिद्धसमयसु अदि वासीस सजोगिबिणा
सम्भति तो विभिन्नसक-उन्नीससहस्र-सप्तसय अद्वावीसमेव सिद्धसमयसु केचिया सजो
गिबिणा सम्भति चि तेरासिए कए अहसकस अद्वाणउदिसहस्र-दुरहिय पचसद्वच
सजोगिबिणा लडा हवति । पुच न—

बोहेर सयसहस्रस्य अद्वाणउदी तदा सहस्राह ।

सखा जोगिबिणाप पचसद्व विउत्तरं जाम' ॥ ४८ ॥

एसीए दिसाए बहुएहि पपारेहि सजोइरासिस्स पमापमायेपय । तं बडा-
अहि पुम्बिस्ससिद्धकालस्स अहमपो सिद्धकालो सम्भइ तन्हि तेरासियमइमायेपय ।
त बडा— अहसु सिद्धसमयसु अदि चउवालीसमेव सजोगिबिणा सम्भति तो एक
सक-विस्सहस्र-विभिन्नसय-चउसहस्रमेव-सिद्धसमयाप केचिया सजोगिबिणा सम्भति
चि त्तरासिए कए पुम्बिस्सो पेव सजोगिरासी उप्पन्नइ । अहि जाउ पे पुम्बिस्स
सिद्धकालस्स चउमागमेवो सिद्धकालो सम्भइ तन्हि एव त्तरासिअ कएय । अहसु
सिद्धसमयसु अदि अद्वासीदि सजोगिबिणा सम्भति तो एवासीदिसहस्र-सप्तसय-वासीदि

सह सिद्ध समयोमें तीन तीन बीस, बीस दो समयोमें दो दो जीव यदि
केवलज्ञान उपपन्न करते हैं तो आठ समयोमें संक्षिप्त रूप सयोगी जिन वासीस होते हैं ।
इसप्रकार यदि आठ सिद्ध समयोमें वासीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो तीन काय
उन्नीस हजार सातसी अद्वांस सिद्ध समयोमें कितने सयोगी प्राप्त होंगे, इसप्रकार वैरागिक
करने पर आठ काय अद्वाणवे हजार पांचसी दो सयोगी जिन प्राप्त हो जाते हैं । कहा भी है—

सयोगी जीवोन्नी सख्या आठ काय अद्वाणवे हजार पांचसी दो जानो ॥ ४८ ॥

इसी विषयसे ज्ञानेक प्रकारसे सयोगी जीवोन्नी पाँच काय आहिये । माये उलीक
व्यापककरन करते हैं—

जहां पर परब्रह्मे सिद्धकायका सर्वमात्र सिद्धकाय प्राप्त होता है जहां पर इसप्रकार
वैरागिक काय आहिये । वह इसप्रकार है—आठ सिद्ध समयोमें यदि चवालीस सयोगी जिन
प्राप्त होते हैं तो एक काय भेसठ हजार तीनसी बीसठ सिद्ध समयोमें कितने सयोगी जिन
प्राप्त होंगे इसप्रकार वैरागिक करने पर पूर्वोक्त ८९,८५०२ सयोगी जीवोन्नी ही पाँच का
है । अथवा जिसमें परब्रह्मे सिद्धकायका बीधा मायमात्र सिद्धकाय प्राप्त होता है जहां पर इस-
प्रकार वैरागिक करना आहिये । आठ सिद्ध समयोमें यदि अद्वासी सयोगी जिन प्राप्त होते हैं
तो एकवासी हजार छहसी पचासीमात्र सिद्ध समयोमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे इस

मेघसिद्धसमयाण केतिया सजोगितेवधि लम्बति चितेरासिए कए सो येव रासी लम्बदि । एवमप्यस्य वि जागिरुण वचस्व । महाकृत्वादसप्तदाय पमाणवम्बया गाहा-
अहेव सयसहस्ता नवणउदिसहस्त येव नवयसय ।

सचाणउदी य तहा जहक्कादा होति ओवेण ॥ ४९ ॥

एवं परूषविदसम्ब सजदरासिमेगाहे कदे अहृफोडीओ नवणउदिलक्खा नवण उदिसहस्ता भवसद सचाणउदिमेचो होदि ८९९९९९७ । एदम्हादो रासीदो उव सामग-खवगपमानमवणेयम्ब । तेसि पमाणपरूषमगाहा—

नव येव सयसहस्ता छम्मीससया य होति जहसीया ।

परिमाण प्यायम्ब उवसम-खवगाणमेद तु ॥ ५० ॥

एदमवणिय सीहि मागो हायम्बो । छद्मप्यमचरासी इवदि । इगुणिदे पमचरासी

प्रकार वैराशिक करने पर बही पूर्वोक्त ८९८०२ सयोगी जीवरशि हो ग्य जाती है । इसी प्रकार अन्यत्र भी जानकर कथन करना चाहिये ।

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	छद्म प्रमाण
८ समय	२२ केबली	समय ३२३७२८	८९८५०२
८ समय	४४ केबली	१३३३६४	८९८५०२
८ समय	८८ केबली	८१९८९	८९८५०२

अब यथाव्याप्त संघर्षोंकी संख्याका बणन करनेवाली गाथा देते हैं—

सामान्यसे यथाव्याप्तसंघर्षी जीव बाह्य ज्ञान निव्यानने हजार नौसी सचाणने होते हैं ॥ ४९ ॥

इसप्रकार प्रकृषण की गई संपूर्ण संघर्ष जीवोंकी राशिको एकत्रित करने पर कुछ संख्या प्राप्त करोड़ निव्यानने ज्ञात निव्यानने हजार नौसी सचाणने ८९९९९९७ होती है । इस राशिमेंसे उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणको निष्काट देना चाहिये । उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्रकृषण करनेवाली गाथा इसप्रकार है—

उपशमक और क्षपक जीवोंका परिमाण नौ लाख दो हजार छह सौ अठ्ठासी जानना चाहिये ॥ ५० ॥

संघर्षोंकी संपूर्ण राशिमेंसे इस उपशमक और क्षपक जीवरशिको निष्काटकर तीनका भाग देना चाहिये । जो तीसरा भाग छद्म भाषा उतना अममलसंघर्ष जीवरशिका प्रमाण

इति । पुं च—

सत्पत्नी अस्या सम्पत्तयश्च य सत्पत्नी सम्भे ।

तिगमनिदा विगमनिदापनसत्पत्नी पमया दु ॥ ५१ ॥

एसा इतिखणपविचची । एसा गाहा न मरिया ति के बि आहरिया शुचिबलेन मर्गति । का शुची ? बुबदे—सम्पत्तिस्वपरोहितो पठमप्यहमकारभो महुसीसपरिहारो सीससहस्वाहिय विष्मिलकलमेचमुनिगणपरिवुदत्तादो । तेषु सत्तर-सप्य गुभिदेसु एकसहस्रकलाहियपथकोविमेचा संवदा होंति । एदे च पुम्बिह्मगाहाए बुचसब्रदाव पमार्थ न पार्थेति । तदा गाहा न मरियाति । एत्थ परिहारो बुबदे—सम्पत्तिपिजी-हितो ब्रह्मा हुंकोसपिणी । तत्पतगतित्वपरसिस्सपरिवारं शुगमाहप्येण ओह्मिय बहर मावमापण्य भेषुण न गाहासुचं इतिदुं सक्किञ्जदि, सेसोसपिणीतिस्वपरोसु महुसीस परिवारुवलमादो । न च भरोहरावयवासेसु मशुसाय महुचमत्ति, अनेत्थतयेककतित्ववर

है । इसे गुना करने पर प्रमत्तसंपत्त जीवराशिका प्रमाण होता है । क्या भी है—

जिस सख्याके व्यक्तिमें सात हैं अन्तमें आठ हैं और मध्यमें छहबार भी हैं उतने अर्थात् आठ करोड़ निम्नान्वये छत्र निम्नान्वये हजार भी सी सत्ताको सब संपत्त हैं । (इन्मेंसे अष्टाशमक और सप्तकोटि प्रमाण ९ २६८८ निश्चयकर जो राशि शेष रहे उसमें) तीनका भाग देने पर २९१९९१ ३ अन्तसंपत्त होते हैं । और अष्टमसंपत्तको प्रमाणको दोसे गुना कर देने पर ५९३९८२ ६ प्रमत्तसंपत्त होते हैं ॥ ५१ ॥

यह इतिव मान्यता है । यह पूर्णोक्त गाथा ठीक नहीं है ऐसा कितने ही व्यक्तार्थ युक्तिके बलसे कहते हैं ।

संक्षेप—यह भीबली युक्ति है ? आगे संक्षेपकर वही युक्तिका समर्थन करता है कि संपूर्ण तीर्थकरोंकी अपेक्षा पद्मप्रम प्रहारकक शिष्य-परिवार अधिक था, क्योंकि, वे तीन काक सीस हजार मुनिगणोंसे वेदित थे । इस सख्याको एकसी सत्तरसे गुना करने पर पाँच करोड़ इकसठ भाग संवत् होते हैं । परंतु यह संख्या पूर्व गाथामें बड़े गने संवत्को प्रमाणको नहीं मान्य होती है इसलिये पूर्व गाथा ठीक नहीं है ।

समाधान—आगे पूर्व संक्षेप परिवार करते हैं कि संपूर्ण अवसर्पिभिषोंकी अपेक्षा यह ब्रह्मवर्षिणी है इसलिये युगके माहाराजसे परकर वृत्तमापको मान्य हुए ब्रह्मवर्षिणी अष्टसंवत्ती तीर्थकरोंके शिष्य-परिवारको ग्रहण करके गाथासूत्रक युक्त करना शक्य नहीं है क्योंकि शेष अवसर्पिभिषोंके तीर्थकरोंके बड़ा शिष्य-परिवार पाया जाता है । दूसरे भारत और देवराज क्षेत्रमें मनुष्योंकी अधिक संख्या नहीं पाई जाती है जिससे इन दोनों क्षेत्रसंवत्ती एक तीर्थकरके संपदे प्रमाणसे बिदेहसंवत्ती एक तीर्थकरका संवत् समान

गणपमामेण विदेहेकवित्थयरगणो सरिसो होज्ज । किं तु एत्थवणमशुवेहितो विद्व
मणुस्सा संखेज्जगुणा । तं जहा- सप्पत्थोभा अतरदीवमणुस्सा । उत्तरकुल्लेवकुल्लमणुभा
संखेज्जगुणा । हरिस्मयथासेसु मणुभा सखेज्जगुणा । हेमवदहेरप्पवदमणुभा संखेज्जगुणा ।
मरहेरावदमणुभा संखेज्जगुणा । विदेहे मणुभा सखेज्जगुणा^१ पि । बहुपमणुस्सेसु जेण
संजदा बहुभा पेव तेयेत्थवणसज्जदाण पमाण पहाण कादूम सं दूसन मभिद तप्प दूसमं,
शुद्धिभिहणाहरियमुहभिणिग्गयचादो ।

एषो उत्तरपञ्चिषि पत्तइस्सामो । एत्थ पमत्तसंजदपमाण पचति कोडीओ
छासट्टिलक्खा छासट्टिसहस्सा छसद चउत्तड्डिमेव मवदि । पुत्त च—

चउत्तड्डि छत्त सप्प छसट्टिसहस्स पेव परिमाण ।

छासट्टिसप्पहस्सा कोटिचउत्तक पमत्ताण ॥ ५२ ॥

४६६६६६६४ । ये काडीओ सत्तावीसलक्खा णवणउत्तिसहस्सा पचतिउत्त
अट्टानउत्तिसहस्सा अप्पमत्तसज्जदा इति । उत्त च—

माना जाय । किन्तु मरत और येरावत क्षेत्रके मनुष्योंसे विदेह क्षेत्रके मनुष्य संख्यातगुणे
हैं । वसका स्पर्धीकरण इसप्रकार है—

अन्तरालीयोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं । उत्तरकुल और वेवकुलके मनुष्य उनसे संख्यात
गुणे हैं । हरि और रम्यक क्षेत्रोंके मनुष्य उत्तरकुल और वेवकुलके मनुष्योंसे संख्यातगुणे
हैं । हेमवत और हेरव्यवत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं ।
मरत और येरावत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । विदेह क्षेत्रके
मनुष्य मरत और येरावतके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । बहुत मनुष्योंमें क्योंकि संयत
बहुत ही होंगे इसलिये इस क्षेत्रसंख्या संयतोक्त प्रमाणको प्रमाण करके जो रूपन कहा
गया है वह रूपन नहीं हो सकता क्योंकि, वह बुद्धिरहित भाषायोंके मुखसे निकला हुआ
है । अब आगे उत्तर मात्पताको बतलाते हैं—

उत्तर मात्पताके अनुसार संयतोक्त प्रमाण संयतोक्त प्रमाण केवल बार करोड़ अथासठ
अथ अथासठ हजार छत्तौ बीसठ है । क्या भी है—

प्रमत्तसंयतोक्त प्रमाण बार करोड़ अथासठ अथ अथासठ हजार छत्तौ बीसठ
४९९९९९९४ है ॥ ५२ ॥

दो करोड़ सत्ताईस अथ निम्नानवे हजार बारसौ अष्टानवे अप्रमत्तसंयत जीव हैं ।
क्या भी है—

१ अन्तरालीयहस्सा बीवा ते कुवद वत्तउ तयेव्वा । तपो संखेज्जगुणा इति हरिस्मयवेसु वतेसु । वस्ति
उत्तरेव्वा हेमवदरत्ति हेमवदरत्ति । मरतेव्वा संखेज्जगुणा विदेहे व ॥ ति व प २१

१ वस्ति अन्तरालीयहस्सा इति वत्त ।

वे कोवि सचचीत्ता होति सहस्त्रा तद्देव पञ्चनददी ।

अउसद अष्टाप्तददी परितेखा होदि विदिपगुणा ॥ ५१ ॥

अकूदो वि २२७९९४९८ । उवसामग खबगपमाणपरूवणा पुष्पं व माविदम्मा ।

अवरि 'समोगिकेमली अर्द्धं पङ्कज संश्लेष्या' एदस्स परूवणा अण्णहा इवदि । उ अहा—

अकुसमयाहियसमासाणं अदि अकुसमयमेघो तिङ्गकाला सम्मदि ठो अचारि
सहस्स-सत्तसद-एगूणवीसमेघ-अकुसमयाहिय-सम्मासाण केत्थियो तिङ्गकालो सम्मदि पि
तेरासिए कदे सत्तसीसहस्स अकुसद-वचीसमेघसिङ्गसमया लम्भति । एदम्हि कासम्हि
सन्निदसजोमिजिपपमाणमानिउददे । उं अहा— अकुस समयसु चोदस चोदस समोगिजिणा
होति पि कङ्कु नदि अदण्ड समयपण बारहोत्तरसमयेचा समोगिजिणा सम्मति ठो
सत्तसीसहस्स अकुसद-वचीसमेघसिङ्गसमयाण केत्थिया सम्मति पि तेरासिए कप
पंचलसु-एगूणवीससहस्स-सस्सप अकुदालीसमेघा समोगिजिणा इवति । पुत्त प—

पयेव सप्पहस्सा होति सहस्सा तद्देव उणवीसा ।

उत्त स्या अकपासा जोगिजिणानं इवदि सत्ता ॥ ५२ ॥

द्वितीय गुणस्थान अर्थात् अग्रमस्तसप्त जीवोन्मी संख्या दो करोड़ सत्तरस अथ
निम्नानवे हजार बारसौ आठानवे है ॥ ५३ ॥

अकूदो मी २२७९९४९८ अग्रमस्तसप्त जीव हैं । उपशामक और शपक जीवोंके
प्रमाणका प्रकरण पहलेके समाज कहना चाहिये । इतनी विरोधता है कि सयोगिकेमली
जीव काककी अनेका संचित हुए संख्यात होते हैं । यहां पर केवलियोंके प्रमाणकी प्रकरण
बुद्धि प्रकाश होती है । यह इसप्रकार है— आठ समय अधिक छह महीनेका यदि अष्ट समप्रमाण
सिद्धकास प्राप्त होता है तो बार हजार सातसौ उन्नीसमात्र आठ समय अधिक छह
महीनोंके वित्तमे सिद्धकास प्राप्त होंगे, इसप्रकार वैरागिक करने पर सैंतीस हजार बारसौ
बत्तीसमात्र सिद्ध समय प्राप्त होते हैं । अब इस कासमें संचित हुए सयोगी जिनोंका प्रमाण
जाते हैं । यह इसप्रकार है— आठ समयोंमेंसे प्रत्येक समयमें बीसह बीसह सयोगी जिन
होते हैं ऐसा समझकर यदि आठ समयोंके एकसौ बारह सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो
सैंतीस हजार बारसौ बत्तीस सिद्ध समयोंके वित्तमे सयोगी जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार
वैरागिक करने पर पांच अथ उन्नीस हजार छहसौ अकृतामीस सयोगी जीव प्राप्त होते
हैं । अहा मी है—

सयोगी जिन जीवोन्मी संख्या पांच लाख उन्नीस हजार छहसौ अकृतामीस है ॥ ५४ ॥

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	अध्य
१ माह ८ समय	८ समय	४७३९	३७८३९ समय
८ समय	११२ केवली	३७८३९ समय	५३०१४८ केवलि

५२९६४८ । एदंभ अत्तपदंण अणेगहि पयारेहि सओगिरासी थायेयम्भो ।
उवत्तामग-खुवगपमाणपरूषणगाहा—

पथेव सपसदस्सा होति सद्धस्सा तद्देव तेछांसा ।

अस्यया चोचीसा उवत्तम-उवगाण केवळिणो ॥ ५५ ॥

एदे सम्बसज्जे एपट्ठे कदे सत्तर-सदकम्मभूमिगइसम्बरिसओ मर्वति । तेसिं
पमाण छकोहीओ जवणउइल्लखा जवणउदिसहस्सा जवसय छण्णउदिमेव हवदि ।
एदस्स बेविमाणा पमत्तसज्जदा हवति । विमागो अप्पमत्ताविसेससज्जदा हवति । पुण थ—

छण्णदी छण्णगा छण्णवमन्सा य सज्जदा सम्भे ।

तिगमज्जिदा विगगुणिदापमत्तपसी पमणा हु ॥ ५६ ॥

६९९९९९९६ । दम्बपमाणेण अबगदपोहसगुणहानाण अप्पणो इच्छिद-इच्छिद
रासिस्स एत्थियो एत्थियो मागो होदि चि तसिं मागमागपरूषणा कीरेदे । त द्वाहा- भागादो
मागो भागमागो । त भागमाग वत्तइस्सामो । सम्बजीवरासिं सिद्धेतरसगुणहानमज्जिदसम्ब

इस पद्धतिके अनुसार वृत्तरे प्रचरते भी सयोगी जीबोंकी राशि के भागा चाहिये ।
अथ उपशमक और क्षपक जीबोंके प्रमाणकी प्रकृषणा करनेवाली राधा कहते हैं—

चारों उपशमक, पाँचों क्षपक और केवळी ये तीनों राशिवाँ मिलकर कुछ पाँच छाक
तेलीस हजार आठसौ बीवीस हैं ॥ ५७ ॥

विशेषार्थ—ऊपर सयोगिकेसियोंकी संख्या १२९६४८ बतसा माये है । उसमें चारों
उपशमकोंकी संख्या ११९९ और पाँचों क्षपकोंकी संख्या २९०० और मिखा देने पर तीनोंकी
संख्या ५३३८३४ हो जाती है ।

इस सब सपत्तोंको एकजित करने पर एकसौ सत्तर कर्मभूमिगत संपूर्ण क्षपि होते हैं ।
उन सबका प्रमाण छह करोड़ निम्नानये छाक निम्नानये हजार बीसी छमानये है । इसका दो
बेट तीन भाग अर्थात् ४२३३३३३३ जीब प्रमत्तसंपत्त हैं और तीसरा भाग अर्थात् २३३३३३३२
जीव व्यमत्तसंपत्त आदि शेष संपत्त है । क्या भी है—

जिस छक्काके आदिमें छह अन्तमें छह और मध्यमें छहबार जी हैं उतने अर्थात्
छह करोड़ निम्नानये छाक निम्नानये हजार बीसी छमानये ६०९९९९९९ जीब संपूर्ण
संपत्त हैं । इसमें तीनका भाग देने पर छप्प माये उतने अर्थात् २३३३३३३२ जीब व्यमत्त
आदि संपूर्ण संपत्त हैं और इसे दोसे गुणा करने पर जितनी राशि उत्पन्न हो उतने अर्थात्
४६६६६६६४ जीब प्रमत्तसंपत्त हैं ॥ ५८ ॥

प्रथमप्रमाणकी अपेक्षा आगे हुए जीवों गुणस्थानोंका प्रमाण अगली इच्छित राशिके
प्रमाणका इतनावाँ इतनावाँ भाग होता है इसका ज्ञान करानेके लिये उनकी मागामाग
प्रकृषणा करते हैं । वह इसप्रकार है— मागसे दोनेवाला भाग मागामाग है । आगे उसी
मागामागको बतछाते हैं—

बीभरासिमये मागे ऋदे तस्य बहुभागो मिच्छाद्विहारासिपमाय होदि । सेस तस्यगुण
 द्वाणोबद्धिसिद्धरासिपा रूपाहिण्य खिदि बहुगुण सिद्धा इवन्ति । सेसस्य मागमाय
 परुषणई सेसरासीओ एगमागहारेणामिच्छन्ते । त जहा-संजदासंजदद्वयपमाणेय
 कीरमाणे एग भवदि । सासयसम्माइहिद्वय पि संजदासंजदद्वयपमाणेय कीरमाणे
 सासणमम्माइहि अबहारकालेणोवहिदसंजदासंजद अबहारकालमेव इपरि । सम्मामिच्छा
 इहिद्वय संजदासंजदद्वयपमाणेय कीरमाणे सम्मामिच्छाइहि अबहारकालेणोवहिदसंजदा-
 संजद अबहारकालमेव भवदि । असंजदसम्माइहिद्वय पि संजदासंजदद्वयपमाणेय
 कीरमाणे असंजदसम्माइहि अबहारकालेणोवहिदसंजदासंजद अबहारकालमेव भवदि ।

सिद्धराशि भीर सासादनसम्प्राप्ति आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिसे प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिमें माग देने पर ओ प्रमाण आये उतने संपूर्ण जीवराशिसे भाग करने पर उन्मत्ते बहुभाग मिथ्याहृदि जीवराशिका प्रमाण है। जो एक भाग शेष रहता है उसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिसे प्रमाणसे माजित सिद्धराशिमें कृपाधिक करके आ जीव हा उससे गणित करने पर ओ बहुभाग आये उतने सिद्ध होते हैं।

उदाहरण—सर्पे जीवराशि १५, सिद्ध २, सासाधन भावि १।

$74-3=71$

३	३	३	३	३	१	बहुभाग २३ मिटरवादी
१	१	१	१	१	१	भीर ३ सिद्धोत्तरस

३

$2 \div 2 = 2 + 2 = 4$, $3 \div 3 = 1$, $3 - 2 = 1$ सिय। १ खासाइन जादि

जब शेष राशिओंके प्राप्ताभावेके प्रकटन करनेके लिये शेष राशिवा एक भागदाखे धारि जाती है। उसका स्वीकरण इसप्रकार है—

संघासयत जीवपशिके द्रव्यको उत्ति म्माणसे (शासाकारप) करने पर एक होता है (१२ = १ पिङ्कप)। सासाहनसम्पद्विष्टि द्रव्य भी संघासयतके द्रव्यममासे करने पर सासाहनसम्पद्विष्टि अपहारकायका संघासयत अपहारकासमे भाव देने पर जो सग्य भवे ताममात्र होता है।

उदाहरण— $296 + 39 = 4 \times 929 = 3716$ साम्या

अवधारणाम्बुजा संवत्सरांशुल जगद्धारणाम्बुजे माग बुजे पर ओ मध्य भावे ताम्रमाण होगा है ।

उदाहरण— $196 + 19 = 6 \times 49 = 4$ १ सम्बन्धित्यादि द्वय

असेवनमभ्यगृहिणा द्रव्यं भी संपत्तासंपन्नके द्रव्यके प्रमाणरूपमे दृष्टे पर असेवन
साधगृहि अथवासाधका संपत्तासंपन्न भवद्वासाधके भाग देवे पर आ द्रव्य आश ताप्रमाण

अवसंज्ञदम्ब संज्ञदासंज्ञदम्बपमाणेण कीरमाणे एगरूपस्य असंखेज्जदिभाग मवदि ।
 एगसुप्पाइयसम्बसलागाओ एयङ्ग काऊण समदासंज्ञद-अवहारकासमोवट्टिय लहेण
 पलिदोषमे भागे द्विदे तेरसगुणहाणदम्बभागच्छदि । एवं वेसि वेसि गुणहाणार्ण दम्बाण
 मेगमागहारेणामममिच्छदि वेसि वेसि सलागादि संज्ञदासंज्ञद अवहारकासमोवट्टिय
 पलिदोषमे भागे द्विदे ते ते रासीओ आगच्छंति ।

अथवा सासणसम्माइडि अवहारकालेण संज्ञदासंज्ञद अवहारकालमोवट्टिय लहेण
 सासणसम्माइडि अवहारकालं गुणेऊण पुणां तमेव गुणगारेण रुवाहिण्ण तं वेवोवट्टिदे

होता है ।

उदाहरण— $120 - 4 = 116 \times 12 = 1392$ असंयतसम्पत्ति द्रव्य

उत्तसे लेकर बीहड़के गुणस्थानतक नी संयताका द्रव्य सयतासंयतके द्रव्यके प्रमाण
 रूपसे करने पर एकरूप जो सयतासंयतका द्रव्य कह भाये है उसका असंख्यातका भाग
 होता है ।

उदाहरण— $2 + 12 = 14 \times 12 = 168$ नवसयत द्रव्य

इसप्रकार पहले उत्पद्य की हुई सपूण शालाकाम्योके एकत्रित करके और उनसे
 संयतासंयतसम्बन्धी अवहारकाक्यो अपवर्तित करके जो द्रव्य भाये उससे पस्योपमके मात्रित
 करने पर सासाधनसम्पत्ति भादि तेरह गुणस्थानपूर्वी जीवराशिका प्रमाण भ्य जाता है ।

उदाहरण— $1 + 4 + 4 + 12 + \frac{1}{24} = 18\frac{1}{24}$

$$120 + 18\frac{1}{24} = \frac{28800}{24} + \frac{18}{24} = \frac{28818}{24} = 1200\frac{3}{4}$$

इसीप्रकार जिन जिन गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण एक भागहारसे जानेकी दृष्ट्य हो
 वन उन गुणस्थानोंकी शालाकाम्योके संयतासंयतसंयतसंयतकी अवहारकाक्यो अपवर्तित करके जो
 द्रव्य भाये उसका पस्योपममें भाग देने पर उन उन गुणस्थानोंकी राशियां भ्य जाती हैं ।

उदाहरण—असंयतसम्पत्ति शालाकापदि ३२:

$$120 - 32 = 88; 88 \times 12 = 1056; 1056 + 8 = 1064; 1064 \div 12 = 88\frac{2}{3}$$

अथवा सासाधनसम्पत्तिके अवहारकाक्यसे सयतासंयतके अवहारकाक्यको अपवर्तित
 करके जो द्रव्य भाये उससे सासाधनसम्पत्तिके अवहारकाक्यको गुणित करके जो द्रव्य भाये
 उसे एक अधिक उसी गुण्यकारसे अपवर्तित करने पर सासाधनसम्पत्ति और संयतासंयत
 इन दोनोंका अवहारकाक्य भ्य जाता है ।

उदाहरण— $120 + 32 = 152; 152 \times 12 = 1824; 1824 \div 12 = 152$ सासा
 धन और संयतासंयतका अवहारकाक्य । इसका भाग पस्योपम १२:१२ में देने पर सासाधन
 और संयतासंयत इन दोनों गुणस्थानोंका द्रव्य २०४८ + ५१२ = २५६० भ्य जाता है । इसी
 प्रकार भागे भी जानना चाहिये ।

साधन संज्ञासंज्ञाया भवहारकालो इति । पुनो त दो-गुणहानि भवहारकाल सम्म-
मिच्छाद्वि भवहारकातेनाद्विप छद्मेण सम्मामिच्छाद्वि भवहारकाल गुणेऽयं पुनो
तेनैव गुणगारेण रूपादिपुनं पुनित् अत्रहारकात्मोद्विदे तिष्ठ गुणहानिगमवहार
काता इति । पुनो तमवहारकाल असंज्ञदसम्माद्वि भवहारकातेनाद्विप छद्मेण
असंज्ञदसम्माद्वि भवहारकाल गुणेऽयं पुनो तेनैव गुणगाराणि रूपादिपुनं पुनित्
गुणित् अत्रहारकात्मोद्विदे चउर्ध्वं गुणहानिगमवहारकालो इति । पुनो यत्-संज्ञ
दस्य चउर्ध्वं गुणहानिगमं दस्यमाद्विप छद्मेण चउर्ध्वं गुणहानिगमवहारकाते गुणऽयं
पुनो तेनैव गुणगारेण रूपादिपुनं त येन गुणित् अत्रहारकात्मोद्विदे तत्संज्ञं गुणहानि
गमवहारकाता इति ।

अनन्तर इति दोनो गुणस्थानोंके भवहारकालको सम्मामिच्छाद्वि जीवोंके भवहार
कालसे माहित करके जो छद्म भावे वसे सम्मामिच्छाद्विके भवहारकालसे गुणित करके
अनन्तर एक अधिक उर्ध्व पूर्वांक गुणकारसे पहले गुणित किये हुए भवहारकालको अपवर्तित
करने पर साक्षात्सम्माद्वि, सम्मामिच्छाद्वि और संयतासंयत इति तीनों गुणस्थानोंका
भवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१२८}{५} - १२ = \frac{१२८}{८०}, \quad \frac{१२८}{८०} \times १२ = \frac{१२८}{५}, \quad \frac{१२८}{८०} + १ = \frac{२०८}{८०}$$

$$\frac{१२८}{८०} + \frac{२८८}{८०} = ९ \frac{११}{१०} \text{ सा सम्मामि और संयतासंयतका भवहारकाल ।}$$

अनन्तर इति तीनों गुणस्थानोंसंबन्धी भवहारकालको संयतसम्माद्विके भवहार
कालसे माहित करके जो छद्म भावे वसे उससे संयतसम्माद्विके भवहारकालको गुणित करके
पुनः एक अधिक उर्ध्व पूर्वांक गुणकारसे पहले गुणित किये हुए भवहारकालको अपवर्तित करने
पर द्वितीयादि चार गुणस्थानोंका मागहार का जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१२}{१३} - ४ = \frac{१२८}{५२}, \quad \frac{१२८}{५२} \times ४ = \frac{१२८}{१३}, \quad \frac{१२८}{५२} + १ = \frac{१८०}{५२}$$

$$\frac{१२८}{१३} - \frac{१८०}{५२} = २ \frac{३८}{५२} \text{ साक्षात्तयादि ४ गुणस्थानोंका भवहारकाल ।}$$

अनन्तर साक्षात्संयत यदि भी संयतोंके द्रव्यसे साक्षात्त यादि चार गुणस्थानोंके
द्रव्यका माहित करके जो छद्म भावे वसे उससे उक्त चार गुणस्थानोंके भवहारकालको गुणित
करके अनन्तर एक अधिक उर्ध्व पूर्वांक गुणकारसे वही गुणित भवहारकालको अपवर्तित
करने पर साक्षात्तयादि तेरह गुणस्थानोंका भवहारकाल होता है ।

उदाहरण—संयतसंयतपक्षि २५ साक्षात्तयादि चार गुणस्थानपक्षि २३०४०, साक्षात्तयादि

$$\text{चार गुणस्थानोंका भवहारकाल } \frac{१२८}{५१}, \quad \frac{२३४}{२} = \frac{११५२}{१}$$

$$\frac{१२८}{५१} \times \frac{११५२}{१} = \frac{२९४९१२}{१}, \quad \frac{११५२}{१} + १ = \frac{११५२३}{१}$$

अथवा संवदासजद अनहारकाल बिरलेऊम पुणो पलिदोवमं समखंड करिय दिण्णे
 रूव पडि संवदासजददम्पमाणा पावेदि । तमेगरूपस्सुवरि हिंद-संवदासजददम्प
 णवसंजदरासिणोवद्विय लद्ध बिरलेऊम उपरिमविरलणाए पढमरूपपरिहाणी हवदि । अथ
 समखंड करिय दिण्णे रूव पडि णवसंजदरासिणोवद्विय पावेदि । पुणो त पेच्च उपरिम
 विरलणाए विदियादि-रूवामुवरि हिंदसजदासजददम्पमाणावुवरि पक्खिविदम्पं चाप
 हेट्टिम विरलणोवरि हिंद णवसंजदरासी सरिसन्हेद काऊम पविट्ठो पि । जदि हेट्टिम
 विरलणादो उपरिमविरलणा रूवाहिया हवदि तो एगरूपपरिहाणी हवदि । अथ
 वेरूवाहियं दुगुणमेवा हवदि सो दोणह रूवाणं परिहाणी हवदि । अथ विरूवाहियतिठममेवा
 हवदि तो तिण्ह रूवाण परिहाणी हवदि । एत्थ पुण उपरिमविरलणादो हेट्टिमविरलणा
 असंखन्त्रगुणा पि एगरूप असंखन्त्रदिमागस्स परिहाणी हवदि । तं जहा, हेट्टिमविरलण
 रूवाहियमेचद्धाण गत्थम अदि एगरूपपरिहाणी लक्खमदि तो उपरिमविरलणमि केवद्विय

$$\frac{२९४९१२}{९} - \frac{११५२१}{१} = \frac{२९४९१२}{१०३३८९} = \frac{२७१७८}{३४१९३} \text{ सासाधन भावि १३ गुण}$$

रथान राशिक अथहारकाल.

अथवा संयतासंयतक अथहारकालके विरलित करके अनन्तर उस विरलित राशिके
 प्रत्येक एकके ऊपर पस्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके
 प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके
 एकके ऊपर स्थित उस संयतासंयतके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ संपतराशिसे अपघटित करके
 जो छान्य भागे उठे विरलित करके भीर उसके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनमें पहले
 एकके ऊपर रखने हुए संयतासंयतके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक
 एकके प्रति प्रमत्तादि नौ संयत राशिक प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके
 प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त उस नौ संपत द्रव्यको प्रहण करके उपरिम विरलनके द्वितीयदि
 रूपोंके ऊपर स्थित संयतासंयतके द्रव्योंमें तत्तत्क मिस्रात जाना चाहिये जबतक अपघटन
 विरलनके ऊपर स्थित नौ संयतराशि समान छेड़ करके प्रविष्ट हो सके । यदि अपघटन
 विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक होये तो एकही हानि होती है । यदि अपघटन
 विरलनसे उपरिम विरलन दो अधिक उगुने होयें तो दोही हानि होती है । यदि अपघटन
 विरलनसे उपरिम विरलन तीन अधिक तिगुना होये तो तीनही हानि होती है । यहां प्रकृतमें
 तो उपरिम विरलनसे अपघटन विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये एकका असंख्यातमें
 भागही हानि होती है । उसका स्पर्शकरण इसप्रकार है—

एक अधिक अपघटन विरलनमात्र रथान आकर यदि एकही हानि प्राप्त होती है तो

रूपपरिहार्णि समामो वि ठेरासिए कदे एगरूबस्स भमंउज्झदिमागो आगच्छदि ।
तसुवरिमविरलणाए भवणिदे षवसज्जदसहिदसंज्जदासज्जदागमवहारकाळो हादि ।

पुणो सासणसम्माइहि भवहारकाळे विरलेऊण पलिदोवमं समउज्झं करिय दिण्ण
रूबं पडि सासणसम्माइहिद्वयपमार्भं पावदि । पुणो उवरिमविरलणपडमरूबपरिद
सासणसम्माइहिद्वयं षवसज्जदसहिदसंज्जदासज्जदद्वयेनोवहिण्ण तत्थ उज्झमानत्तियाए
भसंखेज्जदिमाग विरलेऊण उवरिमविरलणाए पडमरूबस्सुवरि द्विदसासणसम्माइहिद्वयं
समउज्झं करिय दिण्णे रूबं पडि दमगुणङ्गाणरासीओ पावेंति । एत्थ एगरूबपरिदद्वय
गुणङ्गाणरासिपमाणं भण्ण उवरिमविरलभन्नि सुण्ण मोत्तुण तदगीतररूबस्सुवरि द्विद
सासज्जदद्वयन्नि पक्खित्ते एक्कसगुणङ्गाणरासीओ सग्गे मिळिदा हवति । एवं इत्थिम

उपरिम विरलणमें बितबी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार वैरागिक करने पर एक
भसंख्यातर्का माग क्या है । उसे उपरिम विरलणमेंसे घटा देने पर नौ संयतसहित
संयतासंयत राशिका भवहारकाळ होता है ।

उदाहरण—नौ संयतराशि २, संयतासंयत भवहारकाळ १२८, संयतासंयत द्रव्य ५१५

५१२ ११२ ५१२ ५१२ १२८ बार, भवस्तन विरलण २५९ में १
१ १ १ १ १ अधिक अर्थात् २५७ स्थान जाकर

५१२ + २ = २५९, यदि १ की हानि प्राप्त होती है

५ २ २ २ २ २ २ २५९ बार, तो उपरिम विरलण मात्र १२८
१ १ १ १ १ १ स्थान जाकर बितबी हानि होगी,

इसप्रकार वैरागिकसे १२६ की हानि प्राप्त हो जाती है । इसे उपरिम विरलण राशि १२८
मेंसे घटा देने पर १२७१२६ आते हैं । यही संयत सहित संयतासंयतके द्रव्यका भवहारकाळ है ।

अन्तर साक्षात्तसम्पत्तिके भवहारकाळके विरलित करने और इस विरलित
राशिके प्रत्येक एक पर एकोपमकी समान कण्ठ करके देवदण्डसे दे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति साक्षात्तसम्पत्ति द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अन्तर उपरिम विरलणके पहले
अंकपर एकसे हुए साक्षात्तसम्पत्तिके द्रव्यकी प्रमत्तादि नौ संयतोंके द्रव्यसहित संयत-
संयतके द्रव्यसे मात्रित करके यहाँ जो आवश्यक भसंख्यातर्का माग क्या था उसे विरलित
करके और इस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलणके पहले अंकपर स्थित
साक्षात्तसम्पत्तिके द्रव्यकी समान कण्ठ करके देवदण्डसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति
संयतसंयत आदि दश गुणस्थानकी बीबीबी सख्या प्राप्त होती है । यहाँ भवस्तन विरलणके
एक अंकपर एकसे हुए दश गुणस्थानकी राशिके प्रमाणकी प्रमाण करके उपरिम विरलणमें शून्य
स्थानकी (जिस पहले अंकके ऊपर एककी हुई संख्यामें दश गुणस्थानोंके द्रव्यका माग दिया
है उसे) छोड़कर उसके अन्तर अंकपर स्थित साक्षात्तसम्पत्तिके द्रव्यमें मिटा देने पर
सब मिला कर साक्षात्त और संयतासंयत आदि अयोगिकेद्वीपर्यंत प्यारह गुणस्थानकी

विरलममचदसगुणद्वान्द्वय उपरिमविरलणाए द्विदसासगदन्वस्मिन् विरतरं दिण्णे हेट्ठिम
विरलमेवदसगुणद्वान्द्वयसमी समप्पदि । एतस एगम्भस्स परिहाणी लम्भदि । पुणो
उपरिमविरलणाए उदण्ठवरम्भोवरि द्विदसासगदन्व हेट्ठिमविरलणाए समसुद्धं करिय दिण्णे
स्व पडि इसगुणद्वान्द्वयसमिपमाण पावेदि । एदं पि पेत्तण पुम्भ व समकरणे वदे पुणो पि
उवरि एगम्भपरिहाणी लम्भदि । एव पुणो पुमो कादन्व आ उपरिमविरलणा सन्ना
एकारसगुणद्वान्द्वयअवहारकालमेव पत्ता पि । एवं समकरण करिय परिहीनरूपाण पमाण
माभिज्जे । त जहा, हेट्ठिमविरलणरूपादिपमेवद्वान्द्वयउपरिमविरलणाए मत्तण जदि
एगरूपपरिहाणी लम्भति ता उपरिमविरलणमचसम्भस्सकेसु केवद्वियरूपपरिहाणि समामो
चि तरासिय करिय न्नादियहेट्ठिमविरलणाए उपरिमविरलणमोवद्विदे आपलिपाए
अमेवज्जादिभागमेवाणि अवणिज्जमाणरूपाणि लम्भति । ताणि उपरिमविरलणाए सरिस
प्पेद काऊम अभणि एकारसगुणद्वान्द्वयमवहारकालो हादि । तेण अवहारकालेण
पलिदोवमे भाग हिंदे एकारमगुणद्वान्द्वयमगच्छदि ।

जीवरशि हाता है । इसप्रकार अधस्तन विरलनमात्र इस गुणस्थानोंके द्रव्यको उपरिम
विरलनमें स्थित साक्षात्तसम्पत्तिके द्रव्यमें मिला देने पर अधस्तन विरलनमात्र इस
गुणस्थानोंकी जीपयति समाप्त हो जाती है और यहाँ एकछी हाति प्राप्त होती है । अनन्तर
उपरिम विरलनमें जहाँ तक इस गुणस्थानयति मिलाई हो उसके अनन्तरके विरलित
भेदपर स्थित साक्षात्तसम्पत्तिके द्रव्यको अधस्तन विरलनके ऊपर समान जण्ड करके
वेचकपमे दे देने पर प्रत्येक एकछे प्रति सयतासयत आदि इस गुणस्थानोंकी राशिवा प्रमाण
प्राप्त होता है । इस राशिवा भी छेकर पहलेके समान समीकरण करन पर अर्थात् उपरिम
विरलनके गुणस्थानकी छोड़कर भागेके स्थानोंमें अधस्तन विरलनमात्र इस गुणस्थानयतिके
मिला देने पर फिर भी ऊपर एकछी हाति प्राप्त होती है । इसप्रकार जबतक संपूर्ण उपरिम
विरलन साक्षात्त भार संपत्तासयतादि इस इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानयती राशिसे
मवहारकालके प्रमाणवा प्राप्त होये तबतक परी बिधि पुनः पुनः करत जाना चाहिये ।
इसप्रकार समाकरण करके हातिकी प्राप्त हुए भंजीका प्रमाण साने है । यह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान उपरिम विरलनमें आकर यदि एक भंजीकी
हाति प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र संपूर्ण स्थानोंमें किन्तु भंजीकी हाति प्राप्त होती
इसप्रकार वैरागिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलनके माजिन करने
पर आपत्तिके अत्यवधानसे मागमात्र अपवयमान भेद प्राप्त होने हैं । उसकी उपरिम
विरलनमेंमे समप्पेद विधान करके पडा देने पर साक्षात्त भार सयतासयत आदि इस
इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानयती राशिवा मवहारकाल प्राप्त होता है । इन मवहारकालसे
परवोपमके माजिन करन पर उपयुक्त ग्यारह गुणस्थानयती आपयति आती है ।

उदाहरण—साक्षात्त भय ३२, द्रव्य २०४८, सयतासयतादि १० गुणस्थान द्रव्य ५१४,

पुनो सम्मामिच्छाद्वि अन्वहारकालं विरलेक्य पलिदोषम समलक्ष करिय दिण्णे
 रूपं पडि सम्मामिच्छाद्विरासिपमाय पावेदि । पुनो एकारसगुणद्वानरासिजा सम्मा
 मिच्छाद्विरासिपमोवद्विय तत्त्व लद्धसंखेज्जकूपाणि विरलेक्य उवरिमविरलमपदम
 रूपवरिदसम्मामिच्छाद्विद्वम्बं समलक्षं करिय दिण्णे रूपं पडि एकारसगुणद्वानरासिजा
 पावेदि । तं पेत्तज उवरिमविरलमाय उवरि दिदमम्मामिच्छाद्विद्वम्बस्सुवरि परिवादीए
 दिण्णे रूपद्विपहेट्ठिमविरलममत्तदाण गत्तुव हेट्ठिमविरलममेत्तरासी समप्पदि, उवरिम
 विरलमाय एगरूपपरिहाणी य इवदि । तत्त्वेमरूपं पडि वारसगुणद्वानमेत्तरासी
 य इवदि । पुनो उवरिमत्तद्वत्तरएगरूपवरिदसम्मामिच्छाद्विद्वम्ब हेट्ठिमविरलमाय

$$\begin{array}{r} २४८ \quad २०४८ \quad २४८ \\ १ \quad १ \quad १ \end{array} \quad ३२ \text{ बार;}$$

$$२४८ \div ११४ = \frac{२५३}{२५७}$$

$$\begin{array}{r} ५१४ \quad ५१४ \quad ५१४ \quad ५१ \\ १ \quad १ \quad १ \quad १ \end{array} \quad \frac{२५३}{२५७}$$

$$२५१३९ - २५ \frac{७५३}{१२८१} = २५१२$$

२५१३९ रहते हैं । यही अंक ११ गुणस्थानवर्ती राशिके साकेके छिये अनन्तरागल है ।

अनन्तर सम्मामिच्छाद्विके अनन्तरागलको विरक्षित करके और उस विरक्षित
 राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पसोपमको समान अण्ड करके देवकपसे दे देने पर विरक्षित
 राशिके प्रत्येक एकके प्रति सम्मामिच्छाद्वि राशिकय प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर पूर्वोक्त
 न्वाय (सासाधन और संपत्तासपत्तादि १) गुणस्थानवर्ती राशिके सम्मामिच्छाद्वि द्रव्यको
 मात्रित करने वहाँ जो संपत्ता अंक द्रव्य भाषें उन्हें विरक्षित करके और उस विरक्षित
 राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकके ऊपर दम्बे हुए सम्मामिच्छाद्विके
 द्रव्यको समान अण्ड करके देवकपसे दे देने पर विरक्षित राशिके प्रत्येक एकके प्रति न्वाय
 (सासाधन और संपत्तासपत्तादि २) गुणस्थानवर्ती द्रव्यको प्रमाण प्राप्त होता है । उसको
 केकर उपरिम विरलनके ऊपर स्थित सम्मामिच्छाद्वि द्रव्यके ऊपर परिपत्तीसे देने पर
 उपरिम विरलनके एक अधिक अनन्तर विरलनमात्र स्थान आकर अनन्तर विरलनमात्र
 राशि समाप्त हो जाती है और उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि होती है । तथा उपरिम
 विरलनमें जहाँ तक अनन्तर विरलनके प्रति प्राप्त राशि बी गई है वहाँ तक प्रत्येक एकके
 प्रति न्वाय (सासाधन सम्मामिच्छाद्वि और संपत्तासपत्तादि ३) गुणस्थानवर्ती
 जीवराशि होती है । अनन्तर उपरिम विरलनमें जिस स्थान तक न्वाय गुणस्थानवर्ती
 जीवराशि मिटती हो उसके अनन्तरके विरक्षित एक अंकपर स्थित सम्मामिच्छाद्विके

समस्तं च करिय दिण्ये स्व पडि एकारसगुणद्वानमेवरासी पावदि । तमेकार सगुणद्वानरासि सुण्णद्वानं मान्ण उवरि गिरतर दिण्ये स्व पडि वारसगुण द्वानरासी इवदि । हेट्ठिमविरलणाए रूवाहिय गत्तण एगस्वस्स परिहाणी च इवदि । एवं पुणो पुणो साम कापय्य जाव स्वयपरिसुद्धा उवरिमविरलणा वारसगुणद्वानदम्बस्स अवहारकाल पचा चि । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाभिज्जेदे । त जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेवद्वान गत्तुम अदि एगस्वपरिहाणी लम्भदि तो सम्बिस्स उवरिमविरलणाए केवडियस्वपरिहाणि लमामो चि तेरासिम काऊम रूवाहियहेट्ठिम विरलणाए सम्मामिच्छाहिट्ठि अवहारकालमोवाह्मि लद्ध तम्हि चेव अवणिदे वारसगुण द्वानाण दम्बस्स अवहारकालो इवदि । पुणो तेण अवहारकालय पलिदोषमे भाग दिदे वारसगुणद्वानदम्बमागच्छदि ।

द्रव्यको अघरतम विरलनमें समान लण्ड करके द्वेयकपसे वे देने पर प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सात्तावन और संयतासयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । उस ग्यारह गुणस्थानसंबन्धी राशिको गुणस्थानको (जिस भंके ऊपरकी राशिको अघस्तन विरलनमें समान लण्ड करके दी है उस स्थानको) छोड़कर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर निरन्तर द्वेयनपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बारह (सात्तावन मिथ और संयतासयतादि वरा) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । तथा उपरिम विरलनमें एक अधिक अघस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एकही हानि होती है । इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण हानिरूप स्थानोंसे रहित होकर उपयुक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यके अवहारकासको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । जब यहाँ पर हानिको म्यत्त हुए स्थानोंका प्रमाण छाते हैं । यह इसप्रकार है—

एक अधिक अघस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एकही हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितना भंकोंकी हानि होगी । इसप्रकार वैराशिक करके एक अधिक अघरतन विरलनसे सम्प्रतिमध्याहणिके अवहारकासकी भाजित करके जो लब्ध जावे उसे उसी सम्प्रतिमध्याहणिके अवहारकासमेंसे घटा देने पर उपयुक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यका अवहारकास होता है । पुनः इस अवहारकाससे पम्पोपमके भाजित करने पर उपयुक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सम्प्रतिमध्याहणिके अवहारकास १९, द्रव्य ४००६।

$$\begin{array}{r} ४०६ \quad ४०६ \quad ४०६ \quad १६ \text{ घात।} \\ १ \quad १ \quad १ \end{array}$$

$$४०६ + ६४९ = \frac{१०३५}{२११२}$$

$$\frac{२०३२}{१} \quad \frac{१५३५}{१५३५}$$

$$\frac{१५३५}{१} \quad \frac{१५३५}{१५३५}$$

$$१५३५ + \frac{३८७}{११२०} = १५३८$$

अघस्तन विरलन ११२११ में एक और मिट्टाकर जो हो उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १ ही हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र १९ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार वैराशिक करने पर ११२१ लब्ध आते

पुणो सम्मामिच्छाद्वि ब्रह्महारफाल विरलेक्षण पल्लिशोभनं समस्तं करिष्य दिव्ये
 रूषं पठि सम्मामिच्छाद्विरासिपमाण पावेदि । पुणो एकारसगुणद्वान्तरासिपमा सम्मा
 मिच्छाद्विरासिद्व्यमोवद्विष्य तस्य लक्ष्यसंयोजनरूपाणि विरलेक्षण उपरिमविरलपदम
 रूषपरिदसम्मामिच्छाद्विद्व्य समस्तं करिष्य दिव्ये रूषं पठि एकारसगुणद्वान्तरासिपमामं
 पावेदि । ४ पेहण उपरिमविरलनाए उपरि द्विदसम्मामिच्छाद्विद्व्यस्तुनरि परिबाहीए
 दिव्ये रूषाद्विपहेद्विमविरलपमवद्वार्जं गहन हेद्विमविरलपमेचरासी समप्पदि, उपरिम
 विरलनाए एगरूषपरिहाणी च हवदि । सत्येगरूषं पठि चारसगुणद्वान्तरासिपमा
 च हवदि । पुणो उपरिमतद्व्यतरागरूषपरिदसम्मामिच्छाद्विद्व्य हेद्विमविरलनाए

$$\begin{array}{r} २४८ \quad २४८ \quad २४८ \\ १ \quad १ \quad १ \end{array} \quad ३२ \text{ बार,}$$

$$२०४८ - ५१४ = १५३४$$

$$\begin{array}{r} १५४ \quad ५१४ \quad ५१४ \quad ५१ \\ १ \quad १ \quad १ \end{array} \quad \frac{२५३}{२५३}$$

$$१०१३३ + २१ \frac{७४३}{१२८१} = १०१३२$$

२५१११ १/२ रहत ई । यही बन्ध ११ गुणस्थानवर्ती राशिसे लागेके छिये ब्रह्महारफाल है ।

अथस्तन विरलन ३३३३ म १ और
 मिला देने पर जो जोड़ हो उसने
 स्थान जाकर पदि उपरिम विरलनमें
 १ अंककी हानि होती है तो उपरिम
 विरलनमात्र ३२ स्थान जाकर फिटकी
 हानि होगी इसप्रकार वैराशिक करने
 पर १२११ १/२ लब्ध होते हैं । इसे उप-
 रिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने पर

अनन्तर सम्पत्तिगण्यारुपि ब्रह्महारफालको विरलित करके और उस विरलित
 राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर पम्पोपमको समान जग्न करके देयकपसे दे देने पर विरलित
 राशिसे प्रत्येक एकके प्रति सम्पत्तिगण्यारुपि राशिमा प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर पूर्वोक्त
 ग्यारह (सात्तावन और संपतासंपतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे सम्पत्तिगण्यारुपि द्रव्यको
 मापित करके वहां जो संख्यात अंक लब्ध पावे उन्हें विरलित करके और उस विरलित
 राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकके ऊपर रखने हुए सम्पत्तिगण्यारुपि
 द्रव्यको समान लब्ध करके देयकपसे दे देने पर विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह
 (सात्तावन और संपतासंपतादि द्वा) गुणस्थानवर्ती द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । उसको
 छेकर उपरिम विरलनके ऊपर स्थित सम्पत्तिगण्यारुपि द्रव्यके ऊपर परिपारीसे देने पर
 उपरिम विरलनके एक अधिक अथस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर अथस्तन विरलनमात्र
 राशि समाप्त हो जाती है और उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि होती है । तथा उपरिम
 विरलनमें जहां तक अथस्तन विरलनके प्रति प्राप्त रशि हो गई वहां तक प्रत्येक एकके
 प्रति बारह (सात्तावन सम्पत्तिगण्यारुपि और संपतासंपतादि द्वा) गुणस्थानवर्ती
 औपराशि होती है । अनन्तर उपरिम विरलनमें जिस स्थान तक ग्यारह गुणस्थानवर्ती
 औपराशि मिलार हो उससे, अनन्तरके विरलित एक अंकपर स्थित सम्पत्तिगण्यारुपि

एगम्बपरिहाणी च लम्बदि । एव पुणो पुणो कायम्ब वा उपरिमविरलणा सयपरिसुदा
 वरसगुणदान अवहारकालमेव पत्ता चि । पुणो एत्थ अवणयणम्बपमाणमाणिज्जदे । त
 अहा, स्वाहियहेडिमविरलणमेसद्धाण गतूग अदि एगम्बपरिहाणी लम्बदि तो सम्बिस्से
 उवरिमविरलणाए केवडियाणि परिहाभिरुवाणि लमामो चि तेरासिय करिय स्वाहिय
 इडिमविरलणाए असंजदसम्माइडि अवहारकाले ओषडिदे आवडिपाण असंसेजदिमाग
 मेवाणि परिहाणिरुवाणि लम्बंति । कुदो णव्वदे ? सम्बगुमद्वानेसु पडिइसम्बगुमगार
 सवग्गादो असंजदसम्माइडि अवहारकालो असखन्जगुणो चि एदम्मादो परमगुम्बदेसादो ।

असयतसम्पगद्वि जीवराशिमें मिछा देने पर उपरिम बिरलनके प्रत्येक एकके प्रति उपयुक्त
 तेरह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और एकही हानि होती है ।
 इसप्रकार जबतक उपरिम बिरलनका प्रमाण शयको प्राप्त हुए स्थानोंसे रहित होकर
 उपयुक्त तेरह गुणस्थानसंबन्धी अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होते तबतक पुनः पुनः यही
 विधि करते जाना चाहिये । अब यहाँ हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण समेत है । यह
 इसप्रकार है—

एक अधिक अथस्तन बिरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम बिरलनमें एक स्थानकी
 हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम बिरलनमें कितने हानिरूप भेद प्राप्त होंगे, इसप्रकार
 त्रैशिक करने एक अधिक अथस्तन बिरलनके प्रमाणसे असयतसम्पगद्विके अवहारकालको
 माश्रित करने पर व्यपत्तीके असख्यातमें मागमात्र हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं ।

उदाहरण—असयतसम्पगद्वि अवहारकाल ४। द्रव्य १११८४।

१११८४	१११८४	१११८४	१११८४	अथस्तन बिरलन २११११ में
१	१	१	१	१ और मिसाकर जो हो उतने
				स्थान जाकर यदि उपरिम
१११८४ - ११ ८ = १११७५				बिरलनमें १ स्थानकी हानि
११ ८	११५८	१ ८	१ ८	होती है तो उपरिम बिरलन
१	१	१	१	मात्र ४ स्थान जाकर कितनी

हानि होगी इसप्रकार त्रैशिक करने पर ११ ८ हानिरूप स्थानोंका आने है । इसे उपरिम
 बिरलन ४ मेंसे घटा देने पर २११८५१ आते हैं । यही उक्त तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल
 है । इस अवहारकालका भाग पस्योपम ३५१३२ में देने पर सामान्यतादि १३ गुणस्थानराशिक
 प्रमाण १३ ४२ होता है ।

प्रका—आधुनीक असख्यातमें माग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं यह देने जाना
 जाता है ।

समाधान—संपूर्ण गुणस्थानोंमें प्राप्त संपूर्ण गुणकारोंके संघर्षने असयत
 सम्पगद्विका अवहारकाल अवस्थानगुणा है इस परम गुणके उपरिसे जाना जाता है कि

पुणो असव्वदसम्माइदि अरुहारकाळ विरलेऊण पत्तिदोबम समयेइ करिय दिण्व रुबं पठि असव्वदसम्माइदिरासिपमाण पावेदि । पुणो पारसगुण्णहाणरासिमा असव्वद सम्माइदिदम्बमोवहिय उद्वमावलिपाण असंरज्जदिमाण हेइ विरलेऊण असव्वदसम्मा इदिदम्ब समसंइ करिय दिण्व रुब पठि पारसगुण्णहाणरासिपमाण पावेदि । पुणो उवरिमसुण्णहाण माण्ण समुवरिमरुवरिद अरुवदसम्माइदिदम्बसुवरि हेइमविरलभाए रुब पठि इदिवारसगुण्णहाणरासि पक्खिउत्त रुब पठि तेरसगुण्णहाणरासिपमाण पावेदि, हेइमविरलगरुवाहियमेघद्वान् गंतुअ एगम्बपरिहाणा च उरुमदि । पुणो वि उदवत्त एगम्बपरिद असव्वदसम्माइदिदम्ब इदिमविरलभाए समयेइ करिय दिण्वो वारभगुण्णहाण रासिपमाण पानदि । पुणो रं पचूण उवरिमविरलभाए उररि इदि असव्वदसम्माइदि दम्बसुवरि सुण्णहाण वाहिय पक्खिउत्ते रुब पठि तेरसगुण्णहाणरासिपमाण पावेदि

हैं । इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर ९,५१६ आते हैं । यही उक्त १२ गुणस्थानोंका अवहारकाळ है । इस अवहारकाळका भाग पस्वोपम ३,५३९ में देने पर उक्त बाह्य गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण ३६,५८ आता है ।

अनन्तर असंयतसम्पन्नादिके अवहारकाळको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पस्वोपमको समान कण्ट करके देयकपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्पन्नादि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर पूर्वोक्त बाह्य (साक्षात्त मिथ और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिके असंयतसम्पन्नादि जीवराशिके प्रमाणको मात्रित करके जो आचक्षीना असंख्याततां भाग द्रव्य आये उसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्पन्नादि जीवराशिके समान कण्ट करके देयकपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बाह्य गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनके मध्यम गुणस्थानको छोड़कर शेष उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त असंयतसम्पन्नादि द्रव्यप्रमाणमें अथस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बाह्य गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यको मिखा देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तेरह गुणस्थानसंबन्धी (साक्षाद्भादि १३) जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । और एक अधिक अथस्तन विरलनमात्र स्थान आकर एककी हानि प्राप्त होती है । पुनः जिस स्थानतक अवस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि मिछाई हो उसके अग्रेको एक विरलनके प्रति प्राप्त असंयतसम्पन्नादि जीवराशिके प्रमाणको अथस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान कण्ट करके देयकपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बाह्य गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः अथस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बाह्य गुणस्थानसंबन्धी राशिके द्रव्य करके उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको अर्थात् जिस स्थानकी असंयतसम्पन्नादि जीवराशि अथस्तन विरलनमें ही है उसे छोड़कर शेष विरलनोंपर स्थित

दशमोवष्टिय स्वाहिय करिय विरलेऊण एकारसगुणद्वानरासिं समखंडं करिय दिण्णे
 रुच पडि दसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुमागा सासन्नसम्माइडिरासिपमाण
 होदि । पुणो णवगुणद्वानरासिणा सब्बदासब्बदरासिमोवष्टिय रुचाहिय करिय विरलेऊण
 दसगुणद्वानरासिं समखंडं करिय दिण्णे पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेवविरलणरूप
 पडि णवगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुमागा संब्बदासब्बदरासिपमाणं होदि ।
 सेसं सखेज्जमागे कदे तत्थ बहुमागा पमत्तसब्बदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जखंडे
 कए तत्थ बहुमागा अप्पमत्तसब्बदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जमागे कदे तत्थ बहु-
 मागा सन्नोगिरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जमागे कदे तत्थ बहुमागा पच-खवग
 पमाणं होमि । सेसंगमागो चठण्हसुवसामगाणं होदि । एवं भागमागो समत्तो ।

करके भीर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति म्यारह (सासाधन भीर संपतासंपतादि
 १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान लण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके
 प्रत्येक एकके प्रति दश (संपतासंपतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त
 होता है । यहाँ पर बहुभाग सासाधनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} २०४८ \div ५१४ = ३ \frac{२१३}{२५७} + १ = ४ \frac{२१३}{२५७}$$

$$\begin{array}{cccccc} ५१४ & ५१४ & १४ & ५१४ & ५०६ & \text{यहाँ पर बहुभाग २०४८ प्रमाण} \\ , & , & १ & , & २५७ & \text{सासाधनसम्यग्दष्टि राशि है ।} \\ & & & & २५७ & \end{array}$$

अनन्तर नी (प्रमत्तसंपतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संपतासंपत राशिको मज्जित
 करके जो मत्त भागे उम रुपाधिक करके भीर उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति दश (संपतासंपतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान लण्ड करके देयरूपसे
 देने पर पस्योपमके असत्तयास्ये भागमात्र विरलनक प्रति नी (संपतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी
 राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर बहुभाग संपतासंपत जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} ५१२ \div २ = २५६ + १ = २७$$

$$\begin{array}{cccccc} २ & २ & २ & २ & २ & \text{यहाँ पर बहुभाग ५१२ संपता} \\ १ & १ & १ & १ & १ & \text{संपत राशि है ।} \\ & & & & २५७ & \end{array}$$

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंपत जीवराशिका
 प्रमाण है । शेष राशिके संख्यात लण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंपत जीवराशिका
 प्रमाण है । शेषक संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेयली जीवराशिका
 प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पाँचों रूपकैयली प्रमाण है । शेष
 एक भाग चारों उपदामर्कोंका प्रमाण है । इत्यन्तरे भागभाग समान हुमा ।

पुणो सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिपा असंबदसम्माद्विपद्मद्वारासिमोवाहिय रूपाहियकर रासिस्त असंबदसम्माद्विपद्मद्वारासि समखंड करिय दिन्ने कर्त्त पडि बारसगुण गुणद्वारासिपमाने पावदि। तस्य बहुमागा असंबदसम्माद्विपद्मद्वारासिपमाने होदि। पुणो एकारस गुणद्वारासिपा सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिमोवाहिय सद्ध रूपाहियं विरलेऊप बारसगुणद्वारासि समखंड करिय दिन्ने कर्त्त पडि एकारसगुणद्वारासिपमाने पावदि। तस्य बहुमागा सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिपमान होदि। पुणो दसगुणद्वारासिपा सासजसम्माद्वि

यहां व्यवस्थीके असंख्यातमें भाग द्वानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

पुनः सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासि बारह (सम्मामिच्छाद्विपद्म सासाह्न और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्माद्वि जीवराशिसे अपवर्तित करके ओ कथ्य जाने उसमें एक मित्रा देने पर ओ राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंबदसम्माद्विपद्मद्वारासिपमाने पावदि। तस्य बहुमागा असंयतसम्माद्विपद्मद्वारासिपमाने होदि। पुणो एकारस गुणद्वारासिपा सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिमोवाहिय सद्ध रूपाहियं विरलेऊप बारसगुणद्वारासि समखंड करिय दिन्ने कर्त्त पडि एकारसगुणद्वारासिपमाने पावदि। तस्य बहुमागा सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिपमान होदि। पुणो दसगुणद्वारासिपा सासजसम्माद्वि

$$\text{उदाहरण—} १११८४ \div १११८ = १ \frac{१५३४}{१११८} + १ = १ \frac{१५३४}{१११८}$$

$$\begin{array}{ccccccc} ११५८ & ११५८ & ११५८ & ११८ & & & \\ १ & १ & १ & १ & & & \\ & & & १५३४ & & & \\ & & & १११८ & & & \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{इसमें बहुमागा १११८४ प्रमाण} \\ \text{असंयतसम्माद्विपद्मद्वारासि राशि है।} \end{array}$$

अनन्तर ग्याह (सासाह्न और संयतासंयतादि १) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिपमाने पावदि। तस्य बहुमागा असंयतसम्माद्विपद्मद्वारासिपमाने होदि। पुणो एकारस गुणद्वारासिपा सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिमोवाहिय सद्ध रूपाहियं विरलेऊप बारसगुणद्वारासि समखंड करिय दिन्ने कर्त्त पडि एकारसगुणद्वारासिपमाने पावदि। तस्य बहुमागा सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिपमान होदि। पुणो दसगुणद्वारासिपा सासजसम्माद्वि

$$\text{उदाहरण—} ४०९९ \div २५९२ = १ \frac{१५३४}{२५९२} + १ = १ \frac{१५३४}{२५९२}$$

$$\begin{array}{ccccccc} २५९२ & २५९२ & २५९२ & २५९२ & & & \\ १ & १ & १ & १ & & & \\ & & & १५३४ & & & \\ & & & २५९२ & & & \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{इसमें बहुमागा ४०९९ प्रमाण सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासि राशि है।} \end{array}$$

अनन्तर दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासाह्नसम्माद्विपद्मद्वारासिपमाने पावदि। तस्य बहुमागा असंयतसम्माद्विपद्मद्वारासिपमाने होदि। पुणो एकारस गुणद्वारासिपा सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिमोवाहिय सद्ध रूपाहियं विरलेऊप बारसगुणद्वारासि समखंड करिय दिन्ने कर्त्त पडि एकारसगुणद्वारासिपमाने पावदि। तस्य बहुमागा सम्मामिच्छाद्विपद्मद्वारासिपमान होदि। पुणो दसगुणद्वारासिपा सासजसम्माद्वि

दम्भमोक्षद्विय स्वाद्विय करिय बिरलेऊण पकारसगुणद्वानरासिं समखंड करिय दिण्णे रुव पढि दसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुमागा सासणसम्माद्विरासिपमाणं होदि । पुणो णवगुणद्वानरासिणा सवदासंजदरासिमोवद्विय रूपाद्विय करिय बिरलेऊण दसगुणद्वानरासिं समखंड करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेवविरलणरूपं पढि णवगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुमागा संजदरासिपमाणं होदि । सेम सखेज्जमाणे कदे तत्थ बहुमागा पमचसमदरासिपमाणं हादि । सेसं संखेज्जमाणे कए तत्थ बहुमागा अप्पमचसजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जमाणे कदे तत्थ बहुमागा सन्नोभिरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जमाणे कदे तत्थ बहुमागा पच-खवग पमाणं होदि । सेसंगमाणो चउण्हमुवसामगाणं होदि । एव भागमाणो समघो ।

करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति म्यारह (सात्तावन और संयतासयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे समान लण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवरशिखा प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर बहुभाग सात्तावनसम्पददि जीवरशिखा प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} २०४८ + ५१४ = ३ \frac{५१३}{२५७} + १ = ४ \frac{२५३}{२५७}$$

$$\begin{array}{cccccc} ५१४ & ५१४ & १४ & १४ & ५०६ & \\ १ & १ & १ & १ & ५०६ & \\ & & & & २५७ & \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{यहाँ पर बहुभाग २०४८ प्रमाण} \\ \text{सात्तावनसम्पददि राशि है ।} \end{array}$$

अनन्तर नी (प्रमत्तसयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासयत राशिसे माश्रित करके जो मध्य भागे उम रूपधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे समान लण्ड करके देयरूपसे देने पर पस्योपमके असख्यातके भागमात्र बिरलनक प्रति नी (संयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर बहुभाग संयतासयत जीवरशिखा प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} ११२ + २ = २१६ + १ = २१७$$

$$\begin{array}{cccccc} १ & २ & २ & २ & २ & \\ १ & १ & १ & १ & १ & २१७ \text{ पर} \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{यहाँ पर बहुभाग ५१२ संयता-} \\ \text{सयत राशि है ।} \end{array}$$

दोष राशिसे संख्यात भाग करने पर उत्तममें बहुभाग प्रमत्तसयत जीवरशिखा प्रमाण है । दोष राशिसे संख्यात लण्ड करने पर उत्तममें बहुभाग अप्रमत्तसयत जीवरशिखा प्रमाण है । दोषक संख्यात भाग करने पर उत्तममें बहुभाग सयोगिकेवनी जीवरशिखा प्रमाण है । दोषके संख्यात भाग करने पर उत्तममें बहुभाग पाँचों क्षयवर्षोंका प्रमाण है । दोष एक भाग चारों उपनामवर्षोंका प्रमाण है । इनप्रकार भागभाग समान हुआ ।

संपहि अवगदसम्बधमानस्तसिस्तसस्त एत्येव रासीणमप्यबहुव भविस्तानो—

अङ्गमे अपियोगदारे एवं सुचगारो भविस्तदि पिय पुणरुचदोसा भविदि पिय पासंक्रमिन्, तस्त पडिबुद्धसिस्तविसयचादा। अप्यबिबुद्धसिस्ते अस्तिअण सदवार परुवर्ष पिय य दोसकारण भविदि। तस्य अप्याबहुग दुविई, सत्यापप्याबहुग सधपर स्थापप्याबहुग चेदि। एत्य मिच्छाद्विस्त सत्यापप्याबहुग परिय। किं कारणं? जष मिच्छाद्विस्तीसीदो युवरासी अम्मदियो चादो। तस्य ताव सासणसम्माद्विस्त सत्याप प्याबहुगं वचस्सामो। त अहा, सम्बत्थोरो अवहारकातो तस्तस्य दम्ममसंखेज्जगुव। का गुणगारो? सगदम्बस्त असंखेज्जदिमागो। को पडिमागो? सग अवहारकातो। अथवा गुणगारो पत्तिदोवमस्त असंखेज्जदिमागो असंखज्जाणि पत्तिदोवमपडमरण भूसापि। को पडिमागो? सगअवहारकालवगो। एत्य पडिमागपिमिचं बुगुणादिकार्ये

अथ विस्तने संपूज जीवपाथिके प्रमाणको जान किया है ऐसे शिष्यके छिये यही वर जीवपाथिका अस्पबहुत्व बतझते हैं—

शंका—सूचकार अर्द्धव अनुयोगदार्थमें इसका कथन करेंगे ही, इसछिये यही पर वसव्य कथन करनेसे पुनरुच दोष होता है।

समाधान—येसी अर्द्धाव नहीं करनी चाहिये क्योंकि, वह पुनरुचिदोषविचार प्रतिबुद्ध शिष्यका ही विषय है। किन्तु जो शिष्य अत्यतिबुद्ध है उसकी अपेक्षा सीवार वरूपक करना भी दोषका कारण नहीं है।

अस्पबहुत्व दो प्रकारका है स्वस्थान अस्पबहुत्व और सबपरस्थान अस्पबहुत्व।

अधमरूपधर्मे मिष्यादपि जीवपाथिका स्वस्थान अस्पबहुत्व नहीं पाया जाता है।

शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—क्योंकि, मिष्यादपि जीवपाथिके जुवरासि बड़ी है। अब पहले सासाहज सम्यग्दृष्टि राशिवा स्वस्थान अस्पबहुत्व बतझाते हैं। वह इसप्रकार है—सासाहजसम्यग्दृष्टिवा अवहारकाक सबसे शोक है। उसीका द्रव्य अवहारकाकसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने (सासाहजसंज्ञकी) द्रव्यका असंख्यातवा भाग गुणकार है। प्रतिमाग क्या है? अपना (सासाहजसंज्ञकी) अवहारकाक प्रतिमाग है। अर्थात् अवहारकाकका सासाहज सम्यग्दृष्टिसंज्ञकी द्रव्यमें भाग देने पर जो छन्द अथवा उसकी अवहारकाकसे शुचित करने पर सासाहजसम्यग्दृष्टि जीवपाथि होती है। अथवा, गुणकार पस्यापमका असंख्यातवा भाग है जो पस्यापमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिमाग क्या है? अपने अवहारकाकका वर्ग प्रतिमाग है।

उदाहरण—सासाहज द्रव्य २ ४८, अवहारकाक ३२, २०४८ + ३२ = २४ गुणकार

प्रतिमाग ३२, पस्यापम ३५५३६, अवहारकाकका वर्ग ३२ × ३२ = १०२४

प्रतिमाग, ३५५३६ + १ २४ = २४ गुणकार

कादम्भ । व ब्रह्म, वचइस्सामो- सगभवहारकालेण पलिदोषमे मागे हिदे सासणसम्मा इड्डिरासी आगच्छदि । विगुणिवभवहारकालेण पलिदोषमे मागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासिस्स दुमागो आगच्छदि । विगुणिवभवहारकालेण पलिदोषमे मागे हिदे सासणसम्मा इड्डिरासिस्स विभागो आगच्छदि । एवं ताव दुगुणादिकरण कादम्भ जाय सासणसम्माइड्डि अवहारकालस्स अद्वन्द्वेद्वयमेववारा गदा चि । तस्य अंतिमवियप्य वचइस्सामो । सासणसम्माइड्डि अवहारकालस्स अद्वन्द्वेद्वयं विरलेऊय विग करिय अम्भोज्जम्मासे फदे सासणसम्माइड्डिरासिस्स अवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण सासणसम्माइड्डिरासिस्स अवहारकाल गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि । सासणसम्माइड्डिदम्भादो पलि दोषममसखेज्जगुण । को गुणगारो ? सग अवहारकालो । एव सम्मामिच्छाइड्डि-असंअद्व सम्माइड्डि-सज्जदासंअदाण च अप्पायहुग वचम्भ । पमचसज्जदादीय सत्थाणप्पायहुग वरिय, तेसिमवहारकालामावादो ।

यहाँ पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये । यह जिसप्रकार है भागे उसीको बतलाते हैं— अपने अवहारकाळसे पस्सोपमको भाजित करने पर सासाङ्गसम्मग्गदि जीवराशिका प्रमाण आता है (१५ ३३ + ३२ = २०४८ स्ता) द्विगुणित अवहारकाळसे पस्सोपमको भाजित करने पर सासाङ्गसम्मग्गदि जीवराशिका सूत्रा भाग आता है (१५ ३३ - १४ = १ २४) । त्रिगुणित अवहारकाळसे पस्सोपमके भाजित करने पर सासाङ्गसम्मग्गदि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (१५ ३३ + १३ = ६८२३) । इसप्रकार जबतक सासाङ्गसम्मग्गदिसंबन्धी अवहारकाळके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनेपर द्विगुणादिकरण विधि हो जाये तबतक यह विधि करते जाना चाहिये । यहाँ जब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— सासाङ्गसम्मग्गदि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाळके अर्धच्छेदोंको विरहित करके और उसको दो रूप करने परस्पर गुणा करने पर सासाङ्गसम्मग्गदि जीवराशिके अवहारकाळका प्रमाण होता है । इस अवहारकाळसे सासाङ्गसम्मग्गदि जीवराशिके अवहारकाळको गुणित करने पर गुणकारप्रतिमाका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सासाङ्गसम्मग्गदि अवहारकाळ ३२, अर्धच्छेद ५।

$$\begin{array}{cccccc} २ & २ & २ & २ & २ & २ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array} \quad \begin{array}{l} २ = ३५ \quad ३२ \times ३२ = १०२४ \text{ गुणकार प्रतिमा} \\ १ \end{array}$$

सासाङ्गसम्मग्गदिक द्रष्टव्य पस्सापम असक्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना मयान् सासाङ्गसम्मग्गदिका अवहारकाळ गुणकार है (२०४८ × ३२ = ६५५३६ पस्सोपम) ।

इसीप्रकार सम्मग्गिम्प्यादिये, असंपत्तसम्मग्गदि और संयतासंयतोणे अस्सबहुत्थका कथन करना चाहिये । प्रमत्तसत्त आदिका व्यस्त्यान अस्सबहुत्थ नहीं पाया जाता है, क्योंकि, उनका अवहारकाळ नहीं है ।

संपदि अवगदसम्पपमावस्त सिस्सस्त एत्थेव रासीणमप्यवहुत्त मभिससामो—

अहुमे अभियामहारे एवं सुत्तगारा मणिससदि सि पुणरुत्तदोसो भवदि पि पारसकपिच्च, तस्स पठिबुद्धसिम्भविसयत्तादा । अप्पदिबुद्धसिस्से अस्सिउच्च सद्वार-
परुवर्ष पि न दोसकारण भवदि । तत्थ अप्पायहुग दुभिदं, सत्थानप्पायहुग सम्भर-
त्थानप्पायहुम वेदि । एत्थ मिच्छाद्दिस्स सत्थानप्पायहुग पत्ति । किं क्खवें ? जेव
मिच्छाद्दिस्सिदो धुवरासी अम्महिओ भादो । तत्थ ताव सात्थपसम्माद्दिस्स सत्थान-
प्पायहुम वत्थस्सामो । तं जहा, सम्भरत्थोवो अवहारकासो तस्सेव दम्ममसंखेज्जगुण ।
को गुणगारो ? सगदम्मस्स असंखेज्जदिमागो । को पठिमागो ? सग भवहारकासो ।
अपवा गुणगारो पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो असंखेजाणि पत्तिदोवमपढमवय-
मूखन्नि । को पठिमागो ? सगभवहारकासवग्गो । एत्थ पठिमागविमिव दुगुणादिकरं

अव सिद्धये संपूर्ण जीवराशिके ममानको जान किया है ऐसे शिष्यके लिये नहीं पर
जीवराशिके अव्यवहृत्य बतहाते हैं—

संज्ञा—स्वकार भावने अनुयोगात्तमे इसका कथन करेंगे ही इसलिये यहाँ पर
वत्थका कथन करनेसे पुनरुक्त होय होता है ?

समाधान—ऐसी भाषाका नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह पुनरुक्तिव्योपनिवार
प्रतिबुद्ध शिष्यका ही विषय है । किन्तु जो शिष्य प्रप्रतिबुद्ध है उसकी अपेक्षा सीकार प्रप्रव
करना भी होयका कारण नहीं है ।

अव्यवहृत्य हो प्रकारका है स्वस्थान अव्यवहृत्य और सर्वपरस्थान अव्यवहृत्य ।

ओषयकपत्तमे मिष्साद्यदि जीवराशिके अव्यवहृत्य नही पाया जाता है ।

संज्ञा—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि मिष्साद्यदि जीवराशिके सुवपशि बड़ी है । अब पण्डे स्वस्थान-
सम्पद्यदि राशिके स्वस्थान अव्यवहृत्य बतहाते हैं । वह इसप्रकार है— सात्थानसम्पद्यदि
अवहारकाक सबसे कोक है । वसीका प्रथम अवहारकाकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? अपने (सात्थानसंख्या) प्रथमका असंख्यातका माग गुणकार है । प्रतिमाय क्या
है ? अपना (सात्थानसंख्या) अवहारकाक प्रतिमाग है । यद्यपि अवहारकाकका सात्थान
सम्पद्यदिसंख्या प्रथम माग देने पर जो कल्प भावे वत्थको अवहारकाकसे गुणित करने
पर सात्थानसम्पद्यदि जीवराशि होती है । अतः, गुणकार पत्तोपमका असंख्यातका माग है
जो पत्तोपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूखप्रमाण है । प्रतिमाय क्या है ? अपने अवहारकाकका
वर्ग प्रतिमाय है ।

संज्ञाहरण—सात्थान प्रथम २ ४८ अवहारकाक ३२, २०४८ + ३२ = ३४ गुणकार
प्रतिमाग ३२, पत्तोपम ३५५३३, अवहारकाकका वर्ग ३२ × ३२ = १०२४
प्रतिमाय, ३५५३३ + १०२४ = ३४ गुणकार

सम्प्रपरीक्षायाश्चामुप यत्तद्विस्तारो । तं ब्रूया- सम्प्रत्योना यत्तारि त्वत्सामा ।
 पञ्च स्वर्गा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अष्टाद्वज्जगुणा । सप्तोमिकेवत्तिद्वयं
 संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । अप्यमत्तसप्तदा संखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । पञ्चसप्तदा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज
 समया वा । सम्प्रत्य हेडिमरासिषोऽपरिमरासिषि मागे हिद ओ मागसदो सा गुणगारो ।
 पञ्चसप्तद्वद्विमादो अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि
 सप्त अष्टद्वद्विमाद्वि संखेज्जदिमागो । को पञ्चिमागो ? पञ्चसप्तद्वद्विमाद्वि । सम्प्रमिन्नाद्वि
 अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि
 को पञ्चिमागो ? अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि
 को पञ्चिमागो ? अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि

अथ सर्वपरस्यान मत्स्यग्रामको वतलते । बह इष्टमत्तार द्वि- चारो उपग्रामक
 (उपग्राम क्षेत्रीके चारो गुणस्थानवर्ती जीव) सप्तसे स्तोत्र द्वि । पाँचो सप्त (सप्त क्षेत्रीके
 चारो गुणस्थानवर्ती और सप्तोमिकेवत्ती जीव) उपग्रामकोसं संख्यातगुणे द्वि । यहाँ गुणकार
 क्या द्वि ? द्वि संख्यात गुणकार द्वि ।

उदाहरण-चारो गुणस्थानवर्ती उपग्रामक १२१६, १२१६×२=२४ पाँचो सप्तक।

सप्तोमिकेवत्तिद्वयोऽप्यप्रमाण पाँचो सप्तकोसे संख्यातगुणा द्वि । गुणकार क्या द्वि ?
 संख्यात समय गुणकार द्वि । अप्यमत्तसप्त सप्तोमिकेवत्तिद्वयोऽप्यप्रमाणसे संख्यातगुणे द्वि । गुण
 कार क्या द्वि ? संख्यात समय गुणकार द्वि । पञ्चसप्तसप्त अप्यमत्तसप्तकोसे प्रमाणसे संख्यातगुणे
 द्वि । गुणकार क्या द्वि ? संख्यात समय गुणकार द्वि । यहाँ सर्वत्र नीचेकी राशिसे अपरिम राशिसे
 भाजित करने पर जो भाग द्रव्य भागे वह यहाँ गुणकार होता द्वि ।

उदाहरण-सप्तोमिकेवत्ती ८९८५, २, अप्यमत्त २९३९९२ ३, पञ्चसप्त ५९३९८२ ३।

५९३९९२०३ + ८९८ २ = ३३ ८९८५ २ करने पर अप्यमत्त राशि जाती द्वि ।
 ५९३९८२ ३ + २९३९९२ ३ = २ इस गुणकारसे अप्यमत्त राशिसे गुणित
 करने पर पञ्चसप्तसप्त राशि जाती द्वि ।

पञ्चसप्तसप्तके द्रव्यसे अष्टसप्तसप्तद्विद्विद्विद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि
 कार क्या द्वि ? अपने अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि
 संख्यात द्रव्यप्रमाण प्रतिमाग द्वि ।

उदाहरण-पञ्चसप्तसप्त ५९३९८२ ३ = २, अष्टसप्तसप्तद्विद्विद्विद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि
 ४ + २ = २ गुणकार, २ × २ = ४ अष्टद्वद्विमाद्वि ।

अष्टसप्तसप्तद्विद्विद्विद्विद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि
 द्वि । गुणकार क्या द्वि ? अपने अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि
 अष्टसप्तसप्तद्विद्विद्विद्विद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि अष्टद्वद्विमाद्वि

गुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । को पठिमागो ? सम्मामिच्छाद्वि अवहार कालो । संजडासज्जद अवहारकालो असंखज्जगुणो । को गुणगारो ? सग अवहारस्स असंखज्जदिमागो । को पठिमागो ? सासणसम्माद्वि अवहारकालो । तदो सज्जडासज्जद दम्ब असंखेज्जगुण । को गुणगारो ? सगदम्बस्स असंखेज्जदिमागो । को पठिमागो ? सग-अवहारकालो । अहमा पलिदोवमस्स असंखज्जदिमागो असंखज्जाणि पलिदोवमपड मवग्गमूलाणि । को पठिमागो ? सग अवहारकालवग्गो । सज्जडासंज्जददम्बस्सुपरि सासण सम्माद्विदम्ब असंखेज्जगुण । का गुणगारो ? सगदम्बस्स असंखज्जदिमागो । को पठिमागो ? सज्जडासंज्जददम्बमवहारकालो । अहना सासणसम्माद्वि अवहारकालेण

उदाहरण—सम्पमिध्याद्वि अवहारकाल १६, १६-४ = ४ गुणकार, ४ × ४ = १६ सम्पमिध्याद्वि अवहारकाल ।

सम्पमिध्याद्वि अवहारकालसे सासात्तसम्पमिध्याद्वि अवहारकाल संत्पातगुणा है । गुणकार क्या है ? संत्पात समय । प्रतिभाग क्या है ? सम्पमिध्याद्वि अवहारकाल प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सासात्तसम्पमिध्याद्वि अवहारकाल ३२ ३२-१६ = २ गुणकार, १६ × २ = ३२ सासात्तसम्पमिध्याद्वि अवहारकाल ।

सासात्तसम्पमिध्याद्वि अवहारकालसे संत्पातसयतका अवहारकाल संत्पातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालको असंख्यातर्था भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सासात्तसम्पमिध्याद्वि अवहारकाल प्रतिभाग है ।

उदाहरण—संत्पातसयत अवहारकाल १२८, १२८-३२ = ४ गुणकार, ३२ × ४ = १२८ संत्पातसयत अवहारकाल ।

संत्पातसयतके अवहारकालसे संत्पातसयत द्रव्यप्रमाण असंत्पातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंत्पातर्था भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना (संत्पातसयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा पयोपमका असंखज्जर्था भाग गुणकार है जो पयोपमके असंत्पात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने (संत्पातसयतके) अवहारकालका वग प्रतिभाग है ।

उदाहरण—संत्पातसयत द्रव्य ५१२, ५१२-१२८ = ४ गुणकार, १२८ × ४ = ५१२ संत्पातसयत द्रव्य । अथवा १२८ × १२८ = १६३८४, १६३८४-१६३८४ = ४ गुणकार ।

संत्पातसयतके प्रमाणके ऊपर सासात्तसम्पमिध्याद्वि द्रव्यप्रमाण संत्पातसयतके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने (सासात्तके) द्रव्यका असंख्यातर्था भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? संत्पातसयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा सासात्तसम्पमिध्याद्वि अवहारकालसे संत्पातसयतके अवहारकालको भाजित करने पर

सम्बन्धपरत्वात्पञ्चदश वचनस्सामो । तं चहा— सम्बन्धोवा चचारि उपसाममा ।
 पच खवमा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अङ्गुप्रज्वरुवाणि । सद्योगिकेवसिद्ध
 संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । अप्पमत्तसमदा संखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । पमत्तसमदा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज
 समया वा । सम्बन्ध इहेदिमरासिष्वावरिमरासिम्हि भागे हिद वो मागसद्धो सो गुणगारो ।
 पमत्तसमदादम्मादा असद्धसम्माहिदि अवहारकाळो असखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
 सम-अवहारकाळस्स संखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? पमत्तसमदादप्य । सम्मामिच्छदि
 अवहारकाळो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सम-अवहारकाळस्स असखेज्जदिमागो ।
 को पडिमागो ? असद्धसम्माहिदि अवहारकाळो । सासपसम्माहिदि-अवहारकाळो संखेज्ज

अथ सर्वपरत्वात् अथवाहृत्यको वतसाते हैं । यह इसप्रकार है— चारों उपशामक
 (उपशाम श्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती जीव) सबसे स्तोत्र है । पाँचों सरक (सरक श्रेणीके
 चारों गुणस्थानवर्ती और अयोगिकेवली जीव) उपशामकोसे संख्यातगुणे हैं । यहाँ गुणकार
 क्या है ? चारों संक गुणकार है ।

उदाहरण—चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक १२१६, १२१६ × ३ = ३०४ पाँचों सरक।

सयोगिकेवसिद्धोक्त द्रव्यप्रमाण पाँचों सरकोसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 संख्यात समय गुणकार है । अममत्तसमदा सयोगिकेवसिद्धोक्ते प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुण
 कार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । प्रमत्तसमदा अममत्तसमदाके प्रमाणसे संख्यातगुणे
 हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । यहाँ सर्वत्र नीचेकी राशिसे उपरिम राशिसे
 मात्रित करने पर जो भाग सम्म भवे वह वहाँ गुणकार होता है ।

उदाहरण—सयोगिकेवली ८९८१ २, अममत्त ५९३९९१ ३, प्रमत्त ५९३९९२ ३;

५९३९९१०३ + ८९८१ २ = ३३ ४८१३७ इससे सयोगी राशिसे गुणित
 ८९८१ २ करने पर अममत्त राशि जाती है ।

५९३९९८९ ६ + ५९३९९१ ३ = २ इस गुणकारसे अममत्त राशिसे गुणित
 करने पर प्रमत्तसमदा राशि जाती है ।

प्रमत्तसमदाके द्रव्यसे असंयतसम्पादितवन्नी अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुण
 कार क्या है ? अपने अवहारकाळका संप्राप्तता माग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? प्रमत्त
 संप्राप्तता द्रव्यप्रमाण प्रतिमाग है ।

उदाहरण—प्रमत्तसमदा ५९३९८५०६ = २, असंयतसम्पादित अवहारकाळ ४।

४ × २ = ८ गुणकार; २ × २ = ४ अवहारकाळ ।

असंयतसम्पादितके अवहारकाळसे सम्यगिमध्यादितिका अवहारकाळ असंख्यातगुणा
 है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकाळका असंख्यातता माग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ?
 असंयतसम्पादितका अवहारकाळ प्रतिमाग है ।

मन्त्रालादौ संज्ञदासंज्ञ-उपक्रमणकालो संज्ञेज्जगुणो इवदि तो वि सञ्ज्ञदासञ्ज्ञ
दम्बादो सासणसम्माइद्धिद्वम्बमसंज्ञेज्जगुणमेव । कुदो ? सम्मत्त-चारिचिरोहिसासण
गुणपरिणामेहिं तो समयं पढि असंज्ञेज्जगुणए सेढीए कम्मभिज्जरणहेतुभूदसंज्ञमासंज्ञम
परिणामो अइदुल्लो चि कात्थण समय पढि सञ्ज्ञमासंज्ञम पढिज्जमाणरासीदो समय पढि
सासणगुण पढिज्जमाणरासी असंज्ञेज्जगुणो इवदि चि । सासणसम्माइद्धिरासीदो सम्मा
मिच्छाइद्धिद्वम्ब संज्ञेज्जगुण, सासणसम्मादिद्धि-छ आवलि श्रमत्तर-उपक्रमणकालादो
अंतेहुत्तमेव-सम्मामिच्छाइद्धि-उपक्रमणकालात्त संज्ञेज्जगुणचादो । को गुणगारो ?
संज्ञेज्जसमया वा । एत्थ वि रासिमा रासि मागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । अब
हारकालेन अवहारकाले मागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । उवरिमरासि अवहारकालेन
हेटिमरासि गुणेत्थ पडिदोवमे मागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । सम्मामिच्छाइद्धि
दम्बस्तुपरि असंज्ञदसम्माइद्धिद्वम्बमसंज्ञेज्जगुण । कुदो ? सम्मामिच्छाइद्धि-उपक्रमण

समाधान—यह कोर दोष नहीं है क्योंकि यद्यपि सासात्नसम्पत्तिदि के उपक्रमण
कालसे संयत्तासंयत्ता उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है तो भी संयत्तासंयत्त दम्पप्रमाणसे
सासात्नसम्पत्तिदि दम्पप्रमाण असंख्यातगुणा ही है क्योंकि, सम्पत्तिदि और चारिचिरो
विरोधी सासात्नगुणस्यानसंख्या परिणामोंसे प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणी भेदीरूपसे
कर्मनिर्जराके कारणभूत संयत्तासंयत्तपरिणाम अत्यन्त दुर्लभ हैं इसलिये प्रत्येक समयमें
संयत्तासंयत्तको प्राप्त होनेवाली जीवराशिकी अपेक्षा प्रत्येक समयमें सासात्नसम्पत्तिदि
गुणस्यानको प्राप्त होनेवाली जीवराशि असंख्यातगुणी है ।

सासात्नसम्पत्तिदि जीवराशिसे सम्पत्तिदिद्वि दम्पका प्रमाण सख्यातगुणा है
क्योंकि सासात्नसम्पत्तिदि के छह भाषाकीके भीतर होनेवाले उपक्रमण कालसे सम्पत्तिदिद्वि
रहि गुणस्यानका अन्तर्गुह्यप्रमाण उपक्रमण काल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात
समय गुणकार है । यहाँ भी एक राशिका दूसरी राशिमें भाग देने पर गुणकार राशि आ
जाती है । अथवा अवहारकालसे अवहारकालके माजित करने पर गुणकार राशि आ जाती है ।
अथवा उपरिम राशिके अवहारकालसे अवस्तन राशिको गुणित करके जो लब्ध भाग उसका
पस्योपममें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है ।

उदाहरण—सम्पत्तिदिद्वि दम्प ४०९६, ४०९६ - ३२ = ३२८ गुणकार, ३ × ३२८
= ४ ९६ सम्पत्तिदिद्वि दम्प । अथवा ४ ९६ ÷ २ ४८ = २ गुणकार ।
२०४८ × २ = ४०९६ सम्पत्तिदि दम्प । अथवा ३२ ÷ १६ = २ गुणकार ।
२०४८ × २ = ४०९६ । अथवा २०४८ × १६ = ३२७३८ ९११३९ ÷
३२७३८ = २ गुणकार । २०४८ × २ = ४ ९६ ।

सम्पत्तिदिद्वि दम्पके ऊपर अनंततत्त्वसम्पत्तिदि दम्प उससे असंख्यातगुणा है,
क्योंकि, सम्पत्तिदिद्वि के उपक्रमण कालसे असंख्यात भाषासिद्धीके भीतर होनेवाला असंयत्त

संज्ञदासंज्ञद-अवहारकाले भाग हिद् गुणगारो रासी भागच्छदि । अइवा उपरिमरासि-
अवहारकालेण हेडिमरासि गुणऊण पतिदोबमे मागे हिद् गुणगाररासी आगच्छदि । एत्थ
त्रिगुणाधिकरणं कावम्ब । स बह्वा-संज्ञदासंज्ञदरासिपमाणेण पतिदाबमे भाग हिद्
संज्ञदासंज्ञद अवहारकालो आगच्छदि । विठमिदसंज्ञदासंज्ञदद्वयपमाणेण पतिदोबमे मागे
हिद् संज्ञदासंज्ञद अवहारकालस्स दुभागो आगच्छदि । त्रिगुणिदसंज्ञदासंज्ञदरासिणा
पतिदोबमे मागे हिद् तस्सेव अवहारकालस्स त्रिमागो आगच्छदि । एदेण कमण वेदम्ब
जाव संज्ञदासंज्ञदरासिस्स गुणगारो सासणसम्माइडि अवहारकालमेव पचो पि । तदा
सासणसम्माइडि-अवहारकाला' संज्ञदासंज्ञद अवहारकालस्स असंखन्नादिभागो आगच्छदि ।
एदेण पुब्बुत्तगुणगारो साहेय्या । संज्ञदासंज्ञदगुणस्स उक्कस्सकालो संखेज्जमि
वस्तामि । सासणसम्माइडिगुणस्स उक्कस्सकालो छ आबलिपामो । एदेसिमुत्तमम
काठादी अप्पण्या गुणकालपडिरूपा इति पि सासणसम्माइडिद्वारादो संज्ञदासंज्ञद
दम्भेण संखेज्जगुणेण होदम्भमिदि ? ण एम दोसा, जदि वि सासणसम्माइडि-उक्क

गुणकार राशिञ्च प्रमाण जाता है । अथवा उपरिम राशिके अवहारकालसे अपस्तव राशिओ
गुणित करने ओ छप्प मागे उससे पन्धोपमके भाजित करने पर गुणकार राशि जाती है ।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०४८, २ ४८ - १२८ = १६ गुणकार, १२८ × १६ = २ ४८

सासादन द्रव्यप्रमाण । अथवा १२८ - ३२ = ४ गुणकार, १२ × ४ = २०४८

सा । अथवा १२ × ३२ = १६३८४ ६५ ३६ - १६३८४ = ४ गुणकार

५१२ × ४ = २ ४८ सा ।

यहां पर त्रिगुणाधिकरण विधि करना चाहिये । यह इस प्रकार है—संपतासंपत
राशिके प्रमाणसे पन्धोपमके भाजित करने पर संपतासंपतका अवहारकाल जाता है
(६५ ३६ - १२ = १२८) । त्रिगुणित संपतासंपत द्रव्यके प्रमाणसे पन्धोपमके भाजित करने
पर संपतासंपतके अवहारकालका दूसरा भाग जाता है (६५ ३६ - १ २४ = ६४) । त्रिगुणित
संपतासंपत राशिसे पन्धोपमके भाजित करने पर संपतासंपतके अवहारकालका तीसरा भाग
जाता है (६५ ३६ - १५ ३६ = ४२३३३) । इसी क्रमसे चतुर्थ ले जाया चाहिये अतएव
संपतासंपत राशिञ्च गुणकार सासादनसम्माइडिके अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त हो जावे ।
उस समय सासादनसम्माइडिका अवहारकाल संपतासंपतके अवहारकालका असंपत्तातर्का
मात्र भवता है । इससे पूर्वोक्त गुणकार साथ लेना चाहिये (१२८ - ३२ = ४ गुणकार) ।

मुद्रा—संपतासंपत गुणस्थानका वक्रमुद्राका संख्यात कार्य है और सासादनसम्माइडि
गुणस्थानका वक्रमुद्राका वह आबकी है । अतः इसके अपस्तमजकाव्य आवधिक अपने अपने
गुणस्थानके कावके अनुसार होते हैं, इसलिये सासादनसम्माइडिके द्रव्यप्रमाणसे संपता
संपत द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा होना चाहिये ।

फातो । तस्सुवरि मिद्वान्तगुणा । को गुणगारो ? अमवसिद्धिर्हि अमवगुणो सिद्धान्तम
सयेज्जदिमाग । मिच्छाङ्की अणंतगुणा । को गुणगारो ? अमवसिद्धिर्हि नि अणंतगुणो
सिद्धेहि वि अणंतगुणो मवसिद्धियापमणतामागस्त अर्थविममाणो ।

एवमेवे चोरसगुणद्वान्तगुणा समा ।

द्वन्द्वद्वयमवलंबिय द्विसिस्तापमणुगगणहण्डं सामण्येण चोरसगुणद्वान्तगुणा
परूषण करिय पञ्चद्वयणपमवलंबिय द्विसिस्तापमणुगगणहण्डमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण गिरयगईए णेरइएसु मिच्छाङ्की
द्वन्द्वपमाणेण केवद्विया, असस्सेज्जा' ॥ १५ ॥

आदेसेण पञ्चद्वयणपमवलंबयेण गुणद्वान्तगुणा पमाणपरूषण कीरदे । एतस्य इत्यंमाव
लक्षणेणो सदियापिहसो चि इदृष्य । गदियाणुवादेण । सा च मेदपरूषणा चोरसमगग
ज्ञापानि अस्तिरुण द्वि । तेहि अक्षमेण परूषणा य समवदीदि अपगदमगगज्ञानाणि
अत्रणिय पयदमगगज्ञानज्ञापानाई गदिगगहण । आदेसमस्तिरुण वा गुणद्वान्तगुणा पमाण-

पस्योपमके ऊपर सिद्ध उचछे अन्तगुणे ई । गुणकार क्या है ? अमवसिद्धिसे
अन्तगुणा या सिद्धिसे अस्तिरुणता माग गुणकार है । सिद्धिसे मिच्छाङ्कि जीव अन्तगुणे
ई । गुणकार क्या है ? अमवसिद्धिसे मी अन्तगुणा सिद्धिसे मी अन्तगुणा और मवसिद्धिसे
अन्त गद्विमागका अन्तगुणा माग गुणकार है ।

इसप्रकार बोधमें बीहद गुणस्थान प्ररूपणा समाप्त हुए ।

द्रव्याधिक नमश्च अवलम्बन करके स्थित हुए द्रव्योका अनुमह करनेके लिये
सामान्यसे बीहदों गुणस्थानोंके द्रव्यप्रमाणका प्ररूपण करके अब पर्यायाधिक नमश्च
अवलम्बन करके स्थित द्रव्योका अनुमह करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

आदेसकी अपेक्षा गतिमार्गाणां अनुवाइस नरकगतिगत नारकियोमे मिध्याघटि
जीव उच्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन ई ? असक्यात इ ॥ १५ ॥

आदेससे अर्थात् पर्यायाधिक नमकी अपेक्षा गुणस्थानोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं ।
यहां आदेसेण इस पदमें मृतीया विमलिका निर्देश इत्यंमावलक्षणे ई देता समझना
चाहिये । जब गदियाणुवादेण इस पदका स्पष्टीकरण करते हैं । ऊपर जो मेदप्ररूपणाकी
मनिहा की है वह मेदप्ररूपणा बीहदों मार्गाणांमोका आशय लेकर स्थित है । परन्तु उनके आशय
अक्रमसे अर्थात् पुनपुन प्ररूपणा नहीं हो सकती है इसलिये अविवक्षित मागणास्थानोंके
ऐक्यकर प्रकृत मार्गाणास्थानके ज्ञान करनेके लिये सूत्रमें गति पदका प्रहण किया है । आदेशका
आशय करके जो गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है वह आशय परंपरके द्वारा

आत्मदा असंख्येन्द्रावलिपश्मतर असंख्यसम्माद्वि-उपकर्मणकालस्त असंख्येन्द्रगुणत्वादा ।
अहंसा दानं पि गुण्येन्द्राणामुपकर्मणकालमणवेवित्तय असंख्येन्द्रगुणत्वास्त कारणमन्वा
बुद्धे । त अहं, समय परि सम्मामिच्छत पडिबन्धमाप्तरासीदो वेदगसम्मत परि
बन्धमाणासी असंख्येन्द्रगुणा । सेण वेदगसम्माद्विपमसंख्येन्द्रादिमागो मिच्छत गच्छदि ।
तस्स पि असंख्येन्द्रादिमागो सम्मामिच्छत गच्छदि । 'सम्पकालमवद्विरासीत् वपापु-
सारिणा ज्ञापण होदम्ब' इति ज्ञापारो असंख्यसम्माद्विरासीदो गिप्फिद्विमेसा वेत्
अद्वीतसत्तकम्मिया मिच्छाद्विगो वेदगसम्मतं पडिबज्जेति । तम्हा सम्मामिच्छा-
द्विद्विमादा असंख्यसम्माद्विद्विपमसंख्येन्द्रगुणमिदि सिद्धं । एवं वक्तापमेत्य पवाप-
मिदि रेवित्तम् । को गुणगारो ? आनसियाए असंख्येन्द्रादिमागो । पत्थ पि तीहि
पयारेहि गुणगारो साहेयज्जो । पडिदोवममसंख्येन्द्रगुणं । को गुणगारो ? सग-अवहार

सम्पगद्विषा उपकर्मण आत्मा असंख्यातगुणा है । अथवा, पूर्वोक्त दोनों ही गुणस्यात्ये
उपकर्मण आत्मही अपेक्षा न करके सम्पगिमप्याद्विषोसे असंख्यसम्पगद्वि असंख्यातगुणे है
इसका कारण वृत्ते प्रकारसे कहते हैं । यह इसप्रकार है— प्रत्येक समयमें सम्पगिमप्यात्वको
प्राप्त होनेवाली राशिसे वेदकसम्पत्त्वको प्राप्त होनेवाली राशि असंख्यातगुणी है । तथा जिस
व्यवस्थे वेदकसम्पगद्विषोका असंख्यातवा भाग मिप्यात्वको प्राप्त होता है और उसका भी
असंख्यातवा भाग सम्पगिमप्यात्वको प्राप्त होता है । तथा सर्वदा अवस्थित राशिपौके व्ययके
अनुसार ही भाव होना चाहिये इस व्यापके अनुसार मोहनीयक अनुवीत कर्मोंकी सम्प
रत्नवेदाके अन्तर्गत जीव असंख्यसम्पगद्वि जीवराशिमेंसे निश्चयकर मिप्यात्वको प्राप्त होते हैं
उत्तरे ही मिप्याद्वि वेदकसम्पत्त्वको प्राप्त होते हैं इसलिये सम्पगिमप्याद्विसे द्रव्यसे
असंख्यसम्पगद्वि द्रव्य असंख्यातगुणा है यह सिद्ध हो जाता है । यह व्याख्यान यहाँ पर
प्रधान है ऐसा समझना चाहिये । गुणकार क्या है ? व्यवहारीक असंख्यातवा भाग गुणकार
है । यहाँ पर भी पूर्वोक्त तीनों प्रकारोंसे गुणकार साध सेवा चाहिये ।

उदाहरण—असंख्यसम्पगद्वि द्रव्य १९३८४, १९३८४ + १९ = १०९४ गुणकार
१९ × १०९४ = १९३८४ असंख्यसम्पगद्वि द्रव्य । अथवा १९३८४ + ४०९९
= ४ गुणकार, ४०९९ × ४ = १९३८४ असंख्यसम्पगद्वि द्रव्य । अथवा
१९ + ४ = ४ गुणकार, ४०९९ × ४ = १९३८४ असंख्यसम्पगद्वि द्रव्य ।
अथवा ४०९९ × ४ = १९३८४, १ + १३६ = १३६ गुणकार
४०९९ × ४ = १९३८४ असंख्यसम्पगद्वि द्रव्य ।

असंख्यसम्पगद्विसे द्रव्यसे पर्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अथवा
(असंख्यसम्पगद्विसे) अवधारक गुणकार है ।

उदाहरण—१९३८४ × ४ = १ १३६ पर्योपम ।

करो । वस्तुवरि मिद्वान्तगुणा । को गुणगारो ? अमवसिद्धिर्हि अर्णवगुणो सिद्धान्तम
सयेज्जदिमाणो । मिच्छाद्वी अर्णवगुणा । को गुणगारो ? अमवसिद्धिर्हि वि अर्णवगुणो
सिद्धिर्हि वि अर्णवगुणो मवसिद्धिपालमपतामारास्स अर्णवमारागो ।

एवमेवे चोदसगुणगुणपरूषणा समया ।

द्वयद्विपमवसेषिप द्विदसिस्सानमपुग्गहण्ड सामन्नेण चोदसगुणगुणपमाण
परूषणं करिय पञ्चवद्विपमवसेषिय द्विदसिस्सानमपुग्गहण्डमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण गिरयगईए णेरदपसु मिच्छाद्वी
द्वयपमाणेण केवद्विया, असस्सेज्जा ॥ १५ ॥

आदेसेण पञ्चवद्विपमवसेषेण गुणगुणार्ण पमाणपरूषणं करीरे । एत्थ इत्थमाव
छप्पणो वदियाभिदेसो चि वद्विपवो । गदियाणुवादेण । सा च मेदपरूषणा चोदसमगगण
गुणानि अस्तिउण द्विदा । तेहि अद्वमेण परूषणा प संमवदीदि अपगदमगगणगुणानि
अवणिय पयदमगगणगुणगुणानि गदिरगहणं । आदेसमसिउण आ गुणगुणार्ण पमाण

पयोपमके ऊपर सिद्ध वस्तुसे अनन्तगुणे हैं । गुणकर क्या है ? अमवसिद्धिसे
अनन्तगुणा या सिद्धिसे अर्णवकपालार्ण भाग गुणकर है । सिद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे
हैं । गुणकर क्या है ? अमवसिद्धिसे मी अनन्तगुणा सिद्धिसे मी अनन्तगुणा और अमवसिद्धिसे
अनन्त बहुभागोंका अनन्तार्ण भाग गुणकर है ।

इसप्रकार अर्थमें चौदह गुणस्थान प्ररूपणा समस्त हुई ।

ब्रह्मार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित हुए शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये
सामान्यसे चौदहों गुणस्थानोंके ब्रह्मप्रमाणका प्ररूपण करके अब पर्यापार्थिक नयका
अवलम्बन करके स्थित शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये अनेक सूत्र कहते हैं—

आदशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवासे नरकगतिगत नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि
जीव ब्रह्मप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अस्सयातु ॥ १५ ॥

आदेशसे अर्थात् पर्यापार्थिक नयकी अपेक्षा गुणस्थानोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं ।
पहल आदेशेण इस पदमें तृतीया विमर्शिका निश्चय इत्यमरब्रह्मसत्य है ऐसा समझना
चाहिये । अब गदियाणुवादेण इस पदका स्पष्टीकरण करते हैं । ऊपर जो मेदपरूषणाकी
मतेका की है वह मेदपरूषणा चौदहों मार्गणाओंका आश्रय लेकर स्थित है । परंतु इनके द्वारा
अन्तसे अर्थात् पुणपत् प्ररूपणा नहीं हो सकती है । इसलिये अविवक्षित मार्गणास्थानोंके
छन्दकर प्रवृत्त मार्गणास्थानके ज्ञान करनेके लिये सूत्रमें गति पदका ग्रहण किया है । आदेशका
आश्रय करके जो गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है वह आचार्य परंपरके द्वारा



परूषणा सा आहिरियपरंपराय अणाहिनिहणचणेण आगदा ति ज्ञानावणइ अणुरादग्गहणे ।
 सेसगदिणिवारणइ गिरयगदिग्गहण कद । ससगदीओ माचून पुण्ण गिरयगदी चव
 किमइ बुद्धे ? न, नेरइयदंसणेण समुप्पणमसन्ममस्स भवियस्स दसलफण्ये धम्मो विवस
 सरुणेण बुद्धी विट्ठदि ति काळण पुणं तप्परत्तवादो । नेरइयसु ति किमइ ? न, तत्त
 तगत्तेचकात्तपडिसेहफलत्तादो । मिच्छाद्विग्गहण किमइ ? सेसगुणद्वामणियचणं ।
 दम्भपमाज्जेति किमइ ? सेचकात्तणिवारणं । केवडिया इदि पुज्जा किंफत्ता ? मियात्त
 मत्तकत्तारचपदुप्पायणमुहम अप्पणा कत्तारचपडिमेहफत्ता । एवं गोदमसामिया पुच्छिदे
 महावीरमयत्तिथ केवलणाप्पणावगदत्तिस्सल्लगोपरासेसपपरत्तेण असंसज्जा इदि तेसि पमाव
 परूषिदं । एवमुत्ते संखेज्जाणतार्ण पडिणियसी । तं पुण अमंखेज्जमप्पेपवियप्प । त महा-

अनादिनिचयनपसे बार्ह हूर है, इसका ज्ञान करनेके लिये स्वर्गमें अनुवाद पत्रका ग्रहण किया
 है । शेष गतिपत्रोंका निराकरण करनेके लिये स्वर्गमें नरकगति पत्रका ग्रहण किया है ।

शंका— शेष गतिपत्रोंके कथनको छोड़कर पहले नरकगतिका ही वर्णन क्यों किया
 जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंके स्वरूपका ज्ञान हा जानेसे जितने मय बतल
 हो गया है देखे मध्य जीवकी वशाच्छरण धर्ममें निश्चयछरूपसे बुद्धि स्थिर हो जाती है, देख
 समझकर पहले नरकगतिका वर्णन किया ।

शंका— स्वर्गमें नेरइयसु यह पत्र किसलिये दिया गया है ?

समाधान— नहीं क्योंकि नरकगतिसेबन्धी शेष और कायका प्रतिपेक्ष करना उक्त
 पत्रका फल है ।

शंका— स्वर्गमें मिच्छाद्विग्गहण इस पत्रका ग्रहण किसलिये किया है ?

समाधान— शेष गुणस्यामोंके निवारणके लिये मिच्छाद्वि पत्रका ग्रहण किया है ।

शंका— स्वर्गमें दम्भपमाज्जे पेक्षा पत्र क्यों दिया है ?

समाधान— शेष और कायका प्रतिपेक्ष करनेके लिये दम्भपमाज्जे पत्रका
 ग्रहण किया है ।

शंका— कितने हैं इस पृष्ठाका क्या फल है ?

समाधान— जितनेप्रवेश ही कार्यकर्ता हैं इस बातके प्रतिपादन द्वारा जयने
 (मृतकलिके) कर्त्तव्यता निवेद्य करना उक्त पृष्ठाका फल है । नरकगतिमें मिच्छाद्वि नारकी
 कितने हैं इसप्रकार भीतमस्वामीके द्वारा पृष्ठने पर जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा विद्यालये
 विषयमूल समस्त पदार्थोंको ज्ञान किया है, देखे मयबान् महावीरने अक्षरंभात हैं इसप्रकार
 नारकियोंके प्रमाणका प्रकण किया ।

नरकमें मिच्छाद्वि नारकी अक्षरंभात हैं इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और नव
 स्थकी सिद्धि हो जाती है । वह अक्षरंभात जनेकप्रकारका है । भाये कसीका स्फुटीकरण करते हैं-

गाम ठवणा दविय सत्सुद गणणापदेसियमसुत्त ।

एय उमपादेसो वित्ताणे सत्त भावा य ॥ ५७ ॥

तस्य यामासंखेज्जय गाम जीवाजीवमिस्ससरूवेण द्विद्वज्जममासंखेज्जाणं कारण-
गिरिवेत्ता सज्जा । अ त दुव्वमासंखेज्जय त कक्कम्मादिस्स सग्गमावासग्गमावट्टवणाए ठविदं
असंखेज्जमिदि । अ तं दम्बासंखेज्जयं तं दुविह आगमदो णोआगमदो य । आगमो गयो
सिद्धतो सुदणायं पवयणमिदि एयहो ।

पूर्णापरविरुद्धादेभ्यपेतो दोषसङ्गतः ।

बोतक सर्वभाषानामाप्तम्यप्रतिपगम ॥ ५८ ॥

आगमाद्व्यो णोआगमो । तस्य असंखेज्जपाहुब्बाणमां अणुवणुषो आगमदो
दम्बासंखेज्जयं । किं कारणं ? खवोवसमविसिद्धजीवद्वग्गस्स कपपि खवोवसमादो अव्व
विरिचस्स आगमवदेसाविरोहादो । अ त णोआगमदो दम्बासंखेज्जय तं विभिहं, आणु
गसरीरदम्बासंखेज्जय मवियदम्बासंखेज्जयं आणुगसरीरमवियवदिरिचदम्बासंखेज्जय चेदि ।
तस्य अ त आणुगसरीरदम्बासंखेज्जयं त असंखेज्जपाहुब्बाणुगस्स सरीर मवियवदुमाण
समुज्झादत्तणेण तिमेदमावणं । कवमआगमस्स सरीरस्स असंखेज्जवपत्तो ? ण एस दोसो,

नाम स्थापना द्रव्य शास्त्रत गणना अभ्येष्टिक, एक, समय विस्तार, सर्व
भीर मात्र इत्यप्रकार असंख्यात ग्यारह प्रकारका है ॥ ५७ ॥

उनमेंसे जीव मजीव भीर मिश्ररूपसे स्थित असंख्यात पदार्थोंके मेहोंकी कारणके
बिना असंख्यात पेसी संज्ञा रखना नाम असंख्यात है । बाह्यकर्मविक्रमे साक्षर और गिराक्षर-
रूपसे यह असंख्यात है इत्यप्रकारकी स्थापना करना स्थापना असंख्यात है । द्रव्य असंख्यात
आगम और लोभागमके मेहसे दो प्रकारका है । आगम द्रव्य सिद्धान्त भूतजान भीर प्रवचन,
य प्रकारवाणी नाम है ।

पूर्णापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके घोटक व्याप्तजनको
आगम कहते हैं ॥ ५८ ॥

आगमसे अन्यको लोभागम कहते हैं । जो असंख्यातविषयक प्राप्तका जाता है परंतु
वर्तमानमें इसके उपयोगसे रहित है, उसे आगमद्रव्यासंख्यात कहते हैं क्योंकि समोपशम
युक्त जीवद्रव्य संप्रोपशमसे कर्षणित् नमिद्य है इसलिये उसे आगम यह संज्ञा देनेमें कोर
विरोध नहीं आता है ।

लोभागमद्रव्यासंख्यात तीन प्रकारका है ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात मध्यद्रव्या
संख्यात और ज्ञापकशरीर तथा द्रव्य इन दोनोंसे मिश्र तद्रूपतिरिक्तद्रव्यासंख्यात । असंख्यात
विषयक शास्त्रको ज्ञाननेपासेके मायी वर्तमान और भवीतकपसे तीन मेहको प्राप्त हुए शरीरको
ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात कहते हैं ।

शुद्ध — आगमसे मिश्र शरीरको असंख्यात, यह संज्ञा कैसे दी जा सकती है ?



आपारे आपेयोवपारदसणादो । सहा असिमद पावदि इदि । एत्थ ण पदकुमदिहंता
 पुन्नेवे, कुमस्स पदवपपसादसणादो । पदमिदं चिह्मदि पि बहुमाणकालं पदवपपसो
 कुमस्स उवसम्मदे ? ये ण, भदीराणागदकालेसु कुमस्स पदवपपसदसणादो ।
 अं तं भविपासयेन्नयं तं भविस्सकालं असंखन्नेपाहुइआपुगधीवा । ण च
 एस आगमदो दव्वासयेन्नयमिदं भिन्नइदि, सपदि एत्थ खुवेवसमसन्नयणद्वो
 ओगामावाहो । अं तं सवदिचिदव्वातंसयेन्नयं च दुविह, कम्मासंखन्नेयं जोकम्मा
 संखन्नेयं चेदि । एत्थ अह कम्माणि इदि पदुष कम्मासखन्नेय । दीनसुहादि
 जोकम्मासंखन्नेय । धम्मरिषयं अन्नम्मस्सिय दव्वपदसगण पदुष एगसरूवेण अबहिदमिदि
 कहु सस्सदासखन्नेय । अं तं गणवासंखन्नेयं च परियम्म वुत्त । अ त अपदेमासंखन्नेय
 तं ओगाविभागे पस्सिच्छे पदुष एगो जीवपदेसा । अथवा सुण्णाय भगा, जमंखन्नेय

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आधारमें आधारका उपचार देना जाता
 है। जैसे सी तरवारें (सी तरवारबाजे) झौंकती हैं। तात्पर्य यह है कि सी तरवारोंके आधारमूल
 पुइपमें आपेयमूल तरवारोंका उपचार करते जैसे सी तरवारें झौंकती हैं यह कहा गया है
 पक्षीप्रकार मनुष्योंमें भी समझ देना चाहिये।

मनुष्योंमें मूलकुम्भका इष्टान्त लागू नहीं होता है क्योंकि कुम्भकी घृत संज्ञा
 व्यपहरणमें नहीं देखी जाती है।

उत्तर—यह घृत रचना है इसप्रकार वर्तमानकालमें कुम्भकी घृत संज्ञा पायी
 जाती है।

समाधान—नहीं क्योंकि, भूतल और ज्वालित कालमें कुम्भकी घृत यह संज्ञा
 देखी जाती है।

जो जीव भविष्यकालमें समस्तप्राणविषयक प्राकृतका आवेगवाला होगा उसे माषि
 प्रव्यासक्यात कहते हैं। इसका भाषमप्रव्यासक्यातमें अन्तर्भाव नहीं हो सकता है क्योंकि
 परमात्मने इसमें (माषिप्रव्यासक्यातमें) स्वोपशमकालक प्रवृत्त उपभोगका समागम है।

तद्वपतिरिक्त प्रव्यासक्यात दो प्रकारका है कर्मतद्वपतिरिक्तप्रव्यासक्यात और
 नोकर्मतद्वपतिरिक्तप्रव्यासक्यात । इनमें व्यर्थे कर्म स्थितिही अपेक्षा कर्मतद्वपतिरिक्तप्रव्या
 संख्यात हैं। अर्थात् आठों कर्मोंकी अपेक्षा और उरठह स्थिति अपेक्षात समय पड़ती है
 इसलिये वे स्थितिही अपेक्षा असंख्यातकथ हैं। द्वीप और समुद्रादि नोकर्मतद्वपतिरिक्त
 प्रव्यासक्यात हैं।

समाप्तिवाप और अथर्माप्तिवाप प्रत्यक्ष प्रवेष्टोंकी गणनाके प्रति सर्वथा एककपले
 अवस्थित हैं इसलिये वे दोनों प्रवृत्त शाश्वतासक्यात हैं। सज्जासक्यातका स्वभाव
 परिकर्ममें कहा गया है। योगविभाषमें जो विभागप्रतिच्छेद वक्तवाचे हैं, उनही अपेक्षा
 जीवका एक प्रवेष्टाप्रवेष्टासंख्यात है। अथवा अन्तक्यातमें उक्तका यह मेघ शब्दकथ है, क्योंकि
 अन्तक्यात पर्यायीके आधारमूल अपेक्षी एक प्रवृत्तकथ नमान है। कुछ आत्माका एक प्रवेष्टा

पञ्चायाणमाहारमूद अण्णएसएगद्वामावाहो । अ च एगो जीवपदेसो दम्भ, तस्स जीवदम्भायपचाहो । पञ्चवणए पुण अवलंबित्तमाण जीवस्स एगपदेसो वि दम्भं तथो वदिरिचसमुत्तायामावाहो । जं त एयासखेज्जय त लोयायासस्स एगदिसा । कुदो ? सेहि आगारेण लोयस्स एगदिस पक्खमाण पदेसगणण पडुव सत्ताहीदाहो । अ त उमया-संखेज्जय त लोयायासस्स उमयदिसाओ, ताओ पेक्खमाणे पदेसगणण पडुव सत्ता मावाहो । अं त सत्तासखेज्जय त धनलोगो । कुदो ? पमागारेण लोग पेक्खमाणे पदेसगणण पडुव सत्तामावाहो । अ त वित्थारासम्भेज्जय त लोगागासपदर, लोग पदरागारपदेसगणण पडुव संत्तामावाहो । अ त मावासंखेज्जय तं दुषिह आगमदो णोआगमदो य । आगमदो मावासंखज्जय असंखेज्जपाडुइआमगो उवजुचो । णोआगमदो मावासंखज्जय ओहिणाणपरिणदो जीवो । एवेसु मसंखेजेसु गणणासखेज्जय पपद । अदि गणणासंखेज्जय पपद ता सेसदसविह असंखज्जपरुवणं किमइ कीरद ? अपगदमबानिय पपदपरुवणं । वुत्त च—

द्रव्य तो हो नहीं सकता है क्योंकि, एक प्रवेश जीवद्रव्यका अवयव है । पर्यायार्थिक अथवा अवयवजन करने पर जीवका एक प्रवेश भी द्रव्य है क्योंकि अवयवोंसे मिश्र समुहाय नहीं पाया जाता है ।

छोकाकाशकी एक विद्या अर्थात् एक विद्यास्थित प्रवेशपत्ति एकात्म्यात् है, क्योंकि, आकाश प्रवेशोंकी श्रेणीरूपसे छोकाकाशकी एक विद्या होने पर प्रवेशोंकी गणनाकी अपेक्षा उसकी गणना नहीं हो सकती है । छोकाकाशकी उभय विद्याएँ अथवा दो विद्याओंमें स्थित प्रवेशपत्ति सम्पादक्यात् है क्योंकि छोकाकाशके दो भोर होने पर प्रवेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संघातीत हैं । घनत्वके सर्वासंघात् है क्योंकि, घनरूपसे छोकाके होने पर प्रवेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संघातीत हैं । प्रतररूप छोकाकाश वित्तापसंख्यात् है क्योंकि प्रतररूप छोकाकाशके प्रवेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संघातीत हैं ।

माहात्म्यात् आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । असंख्यातविषयक माहात्म्ये ज्ञानमेपाके और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीवको आगममाहात्म्यात् कहते हैं । अवधिज्ञानसे परिणत जीवको नोआगममाहात्म्यं संपात् कहते हैं । इन व्यापक प्रकारके असंख्यातोंमेंसे प्रकृतमें गणनासंख्यातसे प्रयोजन है ।

सुंका - यदि प्रकृतमें गणनासंख्यातसे ही प्रयोजन है तो शेष क्या प्रकारके असंख्यातोंका धर्मेन क्यों किया गया ?

समाधान—अप्रकृत विषयका निवारण करके प्रकृत विषयका प्रकटन करनेके लिये, यहां सभी असंख्यातोंका धर्मेन किया है । कहा भी है—



परिचासखेज्यं न भवति, शुचासखेज्यं पि न भवति, असंखेज्यासखेज्यस्तेव गृहण, असंखेज्या इति बहुवचननिर्देशादो । पा३५ दोसु वि बहुवचनोपलमादो वचिमुद्येय सन्वेसु असंखेज्यबहुवचिरोहामावादो वा अप्येयतिओ हेदुरिति चेत्तोरि 'असंखेज्यासंखेज्याहि ओसपिपिउस्तपिपीहि अवहिरंति कालेय' इति पुरादो मण्यमाणमुचादो असंखेज्या संखेज्यस्त उचलद्दी इति । तं पि विविह अहण्यमुक्तसं अहण्यमुक्तसासंखेज्या सखेज्यं वेदि । तस्य वि अहण्यमसंखेज्यासंखेज्यं न भवति उक्तसमसंखेज्या संखेज्यं पि न भवति अहण्यममुक्तसासंखेज्यासंखेज्यस्तेव गृह्य । कुदो ? 'अम्हि अम्हि असंखेज्यासखेज्यं मग्गिन्नादि तम्हि तम्हि अम्हण्यममुक्तस असंखेज्यासंखेज्यस्तेव गृह्यं भवति' इति परियम्मवयवादो ।

तं पि अहण्यममुक्तसासंखेज्यासखेज्यमसंखेज्यवियप्पमिदि इम होदि ति न भाविज्जोह ? अहण्य असंखेज्यासंखेज्यादो पत्तिदोवमस्त असंखेज्यादिमागमेत्ताणि

प्रकृतमें परीतासंख्यात विवक्षित नहीं है और पुकासंख्यात भी नहीं किया गया है अतः यहाँ असंख्यातासंख्यातका ही प्रहण करना चाहिये क्योंकि सूत्रमें असंखेज्या इस प्रकार बहुवचनरूप निर्देश किया है ।

शुका—प्रकृतमें द्विवचनके स्थानमें भी बहुवचन पाया जाता है, अथवा वृत्तिसुखसे सभी असंख्यातोंमें असंख्यातके बहुत्वके स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है, इस स्थिती प्रकृतमें असंख्यातासंख्यातके प्रहण करनेसे स्थिती ओ असंखेज्या यह बहुवचनरूप हेतु किया है वह अनैकान्तिक है ।

समाधान—यदि ऐसा है तो असंखेज्यासंखेज्याहि ओसपिपिउस्तपिपीहि अव हिरंति कालेय इसप्रकार भागे कहे जानेवाले सूत्रसे असंख्यातासंख्यातका प्रहण हो जाता है ।

यह असंख्यातासंख्यात भी तीन प्रकारका है, अथम्य, उत्कृष्ट और अजथम्योत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात । इन तीनोंमें भी प्रकृतमें अथम्य असंख्यातासंख्यात नहीं है और उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात भी नहीं है किंतु प्रकृतमें अजथम्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका ही प्रहण है, क्योंकि, अहाँ अहाँ असंख्यातासंख्यात देता आता है वहाँ वहाँ अजथम्यानुत्कृष्ट अर्थात् प्रथम असंख्यातासंख्यातका ही प्रहण होता है, ऐसा परिचर्याका प्रचन है ।

शुका—यह अथम्य असंख्यातासंख्यात भी असंख्यात विवरणरूप है इसस्थिती यहाँ यह मेव किया है, यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान—अथम्य असंख्यातासंख्यातके पर्योपमके असंख्यातमें मागमात्र वर्गान्तर ऊपर जाकर और अथम्य परीतान्तसे असंख्यात लोकमात्र धर्मस्थान नीचे जाकर दोनोंके

सलागामो पदरात्रिलियादो उभरि गंतुपुण्णजाओ, तम्हा तिणिवारभरिगदसभरिगदरासीदो
गेरइयमिच्छाइहिरासी असंखेज्जगुणो । को छदम्भपक्खिचरासी ?

धम्माधम्मा खोयायासा पण्यसरीर एगजीवपदसा ।

बादरपदिहिं वि म छण्णेऽसखपक्खेवा' ॥ १२ ॥

एदाणि छ दम्भाणि पुब्बुचरासिम्हि पक्खिचे छदम्भपक्खिचरासी होदि । एष
विहाणेन भनिदअमहण्णमणुक्खसासंखेज्जासंखेज्जमयस्स अचियाणि रूपाणि तच्चियमेवो
गेरइयमिच्छाइहिरासी होदि । एव दम्भपमाण समर्थ ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ १६ ॥

किमह्म मिच्छाइहिरासी कालेण परुषिज्जे ? न, असंखेज्जरासी सच्चा गिइदि

अर्थात् अमय्य परीतासंख्यातक ऊपर और उसके उपरिम धागे नीचे उत्पन्न हुई है और
परमोपमकी धनशलाकाओंकी बर्गशलाकाए मतपयलीके ऊपर जाकर उत्पन्न हुई है । इससे
प्रतीत होता है कि तीनवार वर्णितसंवर्णित असंख्यातासंख्यात राशिसे नारक मिथ्यादृष्टि
जीपरशि असंख्यातगुणी है ।

श्रुंका—छह द्रव्य प्रसिप्त राशि कीनसी है ?

समाधान—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य, खोकाकय्य अप्रतिष्ठित प्रत्येक धनस्पति, एक
आँके प्रवेश और बाहर प्रतिष्ठित प्रत्येक धनस्पति ये छह असंख्यात राशियाँ तीनवार
वर्णितसंवर्णित राशिमें भिन्ना देना चाहिये ॥ १२ ॥

एन छह राशियोंको पूर्वोक्त राशिमें प्रसिप्त करने पर छह द्रव्य प्रसिप्त राशि
होती है ।

इस विधिसे कहे गये मध्यम असंख्यातासंख्यातका जितना प्रमाण हो उतनी नारक
मिथ्यादृष्टि जीपरशि है ।

इसप्रकार द्रव्यप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

कासकी अपेक्षा नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों
आर उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत हो जाते हैं ॥ १६ ॥

श्रुंका—नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका कासकी अपेक्षा किसद्विजे प्ररूपण किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि, संपूर्ण असंख्यात जीपरशि समाप्त हो जाती है इस

१ धम्माधम्मा खोयायासा पण्यसरीर एगजीवपदसा । यत्तारि वि जीवपण्यदेवा पण्यसरीरवत्तारिद्विज पदे । वि न

२ धम्माधम्माधर्मितकमोगत्तल्लवदेवपदेवा । उट्ठी वनवड्ढिवा पदिहिंवा वणि एतोवा । वि. ल. ४२

३ वनविज्जाहि उरवत्तेवजीवविनीहिं वपरीति कम्भो । अत न. १४२ वृ १४४

सि पण्यवण्यवृत्तादो । किमहं स्वेद्यपमाजमदकम्न कालपमाणं बुधदे ? न एतं दोषो,
'अदप्यवण्यणीयं च पुनरमन माणियम' इति वचनादो । कच कालादो रोच बहुवण्य-
णिन्द्र ? न, तमिह सति अगपदर-भिक्षममूषिपरुवणागमात्यितादो । के वि आप्रतिमा
यं बहुव त सुहुममिदि मर्जति—

सुहुमा य इति काको सचो सुहुम सु जापदे खेच ।

अंगुष्ठ-असक्तमामा हवति कप्या असक्तेज्जा ॥ ६१ ॥

एतं य पददे । हुदा ? दग्धादा पृष्ठं सुर्तं छाडिप दग्धस्त परुवणाणाहाणुव
वचीदा । कचं दग्धादो रूच पृष्ठं ? बुधदे—

सुहुम त इति लेच तच्च सुहुम सु जापदे दग्ध ।

रुग्गुहसि एक दग्धति खेचगुहणता ॥ ६२ ॥

दग्ध-स्वेद्यगुले परमाणुपदमा आगासपदेसा च सरिमा चि मेर्दं पददे ? च य,

वातवा वात कपला कायकी अवेसा प्ररूपय करनेका प्रयोजन है ।

प्रश्ना—क्षेत्रप्रमाणका वर्तमान करके पहले काष्ठप्रमाणका प्ररूपण किसप्रकारे किया
जा रहा है ?

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि, जो अक्षयवर्णनीय होता है उसका पहले
पर्यन्त करना आदिसे इस लक्षनके अनुसार पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किया है ।

प्रश्ना—कालसे क्षेत्र वर्तव्यनीय कैसे है ?

समाधान—नहीं क्योंकि क्षेत्रमें अक्षयणी आग्रस्त और विच्छिन्नसूचीकी
प्ररूपणा पारि जाती है, इसप्रकारे कालसे क्षेत्र वर्तव्यनीय है ।

चित्रने ही व्याख्यान ऐसा कहते हैं कि जो बहुत अर्थात् बहुत प्रयोगसे उपचित
होता है यह सूक्ष्म होता है । यथा—

काष्ठ सूक्ष्म होता है और क्षेत्र उससे भी सूक्ष्म होता है क्योंकि, एक अंगुष्ठके
अक्षयवातमें मागमें अक्षयवात कक्षकाष्ठ जा जाते हैं । यद्यत् एक अंगुष्ठके अक्षयवातमें मागमें
चित्रने प्रवेश होने हैं अक्षयवात कक्षकाष्ठके उतने समय होते हैं ॥ ६३ ॥

परंतु उन व्याख्याओंका यह व्याख्यान यदि नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यसे क्षेत्र सूक्ष्म
है इस बातको छोड़कर ही पहले क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा बन सकती है अन्यथा क्षेत्रप्रमाणके
प्ररूपणके पहले क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है ।

प्रश्ना—द्रव्यसे क्षेत्र सूक्ष्म कैसे है ?

समाधान—क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्म द्रव्य होता है क्योंकि एक
द्रव्यांगुष्ठमें (वर्णवासी अवेसा) अनन्त क्षत्रांगुष्ठ पाये जाते हैं ॥ ६४ ॥

प्रश्ना—एक द्रव्यांगुष्ठ और एक क्षेत्रांगुष्ठमें परमाणुपदेसा और व्याख्या अवेसा समान
होते हैं इसप्रकारे पूर्वोक्त व्याख्यान यदि नहीं होता है ?

एकम्हि स्वेच्छगुण ओगाहे अणतद्वन्गुलस्यसाधो । असंखज्जासंखज्जाण ओसप्पिणि
उससप्पिणीण समए सलागभूदे ठवेऊण भेरइयमिच्छाइडिरासी च ठवेऊण सलागादो एगो
समओ अवहिरिज्जदि, भेरइयमिच्छाइडिरासीदो एगो जीवा अवहिरिज्जदि । एवं पुणो
पुनो अवहिरिज्जमाणे सलागामी भेरइयमिच्छाइड्री च जुगव गिट्ठति । अपवा ओस
प्पिणि उससप्पिणीओ दा वि मिलिदाओ कप्पो इवदि, तेष कप्पेण भेरइयमिच्छाइडि
रासिम्हि भागे हिद ज मागलद्ध सच्चियमेवा कप्पा इवति । एवं कालपमाण समच ।

स्वेत्तेण असस्वेज्जाओ सेढीओ जगपदरस्स असस्वेज्जदिभाग-
मेत्ताओ । तासिं सेढीण विक्खभसूची' अगुलवग्गमूल विदियवग्ग
मूलगुणिदेण ॥ १७ ॥

समाधान -- नहीं क्योंकि एक क्षेत्राणुसमे अयगाहनाका अपेक्षा समस्त द्रव्याणुल
देने जात है ।

असंख्यातासंख्यात अपसंखिणियों और उरसंखिणियोंके समय शताब्दाकूपसे एक
और स्थापित करके और दूसरी ओर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको स्थापित करके शताब्दा
राशिमेंसे एक समय कम करना चाहिये और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे एक अधिक कम
करना चाहिये । इसप्रकार शताब्दाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे पुनः पुनः एक
एक कम करने पर शताब्दाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि युगपत् समाप्त
हो जाता है ।

अथवा अपसंखिणी और उरसापणी ये दोनों मिलकर एक कल्पकाल होता है । उस
कल्पकाल नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आये उतने कल्पकाल
नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिही गणनामें पाये जाते हैं ।

इसप्रकार कालप्रमाणका घणन समाप्त हुआ ।

धनकी अपेक्षा जगप्रसरक असंख्यातये मागमात्र असंख्यात जगभेणीप्रमाण
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । उन जगभणियोंकी विक्खभसूची, सप्पगुणके
प्रथम वर्गमूलको उमीक द्वितीय वर्गमूलम गुणित करने पर प्रितना लब्ध आये,
उतनी है ॥ १७ ॥

त्रिप्रार्थ -- शुद्धाकल्पमें सामान्य नारकियोंके प्रमाण क्षानक सिधे विरकमगुनीका

१ गिरि पदरेडिका वनि । पत्रक १४ १५, १६

२ कालगा भोक्ता वनमगुनि दण्डदण्डनेही । १ जी १४ पत्रक १५ वनिगुना । डेरीको वदाम
जगप्रसारको वनि न डेरीने विप्रमगुनि व उरसमगुनि विप्रमगुनिदण्डवन् । नद्वन वदमगुनिदण्ड
दण्डवदवदवदको डेरीही । अड नू १४ १ १८४ १५ (१८४६) ठाकुरनारयण गुणविरसंभूती

सि पञ्चवज्रवृक्षादौ । किमऽन्वेषणमाममद्रुक्म कालपमानं पुच्छे ? न एव दोषः,
'अवपञ्चवज्रवृक्षीयं तु पुच्छमत्र मामिष्यन्' इति वचनादौ । कथं कालादौ खंच वज्रवज्र-
शिल्पः ? न, तस्मिन् सेति जगत्पर-विस्मयमवशिष्टरूपज्ञानमास्थितादौ । के वि आश्रिया
अ वज्रं च सुदुममिति मणति—

सुदुमा य इवदि काळा तपो सुदुम सु जाये खंच ।

अगुण-असत्समागं इवति कप्या असन्नेयना ॥ ९१ ॥

एव न पडवे । कुदा ? इच्छादा पूल खंच छंडिय दणस्त परवज्राणां शाशु-
वर्त्तदौ । कथं दण्वादौ खंच पूल ? पुच्छे—

सुदुम तु इवदि खंच तपो सुदुम सु जाये न्य ।

दण्मुल्लि एवे इवति खंचगुणता ॥ ९२ ॥

दण्-खंचगुले परमाणुपदसा आगासपदेसा च सरिमा सि जदं पडवे ? च न,

वातक्य ज्ञान कथना काळजी अपेक्षा प्रकपण करनेका प्रयोजन है ।

संक्षेप—क्षेत्रप्रमाणक्य उत्तमन करने पहले काळप्रमाणका प्रकपण किसलिये किया
जा रहा है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि जो अत्यन्तवर्णनीय होता है उसका पहले
वर्णन करना चाहिये इस वचनके अनुसार पहले काळप्रमाणका प्रकपण किया है ।

संक्षेप—काळसे क्षेत्र वज्रवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—नहीं क्योंकि क्षेत्रमें जगत्प्रेक्षी अत्यन्त नीर विरुद्धमूर्त्तकी
प्रकपण पारि जाती है, इसलिये काळसे क्षेत्र वज्रवर्णनीय है ।

कितने ही व्याचार्य ऐसा कहते हैं कि जो बहुत अर्थों व बहुत प्रदेशोंसे उपचित
होता है वह सूक्ष्म होता है । यथा—

वास सूक्ष्म होता है और क्षेत्र उससे भी सूक्ष्म होता है क्योंकि, एक अंगुलके
असंख्यातवें मागमें असंख्यात कणकाक जा जाते हैं । अर्थात् एक अंगुलके असंख्यातवें मागके
विचने प्रवेश होते हैं असंख्यात कणकाकके लक्षमें समय होते हैं ॥ ९३ ॥

परंतु इन व्याचार्योंका यह व्याख्यान बरित नहीं होता है क्योंकि द्रव्यसे क्षेत्र स्पृक
है, इस बातसे छोड़कर ही पहले द्रव्यप्रमाणकी प्रकपणा बन सकती है अन्यथा क्षेत्रप्रमाणके
प्रकपणके पहले द्रव्यप्रमाणकी प्रकपणा नहीं बन सकती है ।

संक्षेप—द्रव्यसे क्षेत्र स्पृक कैसे है ?

समाधान—क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्म द्रव्य होता है, क्योंकि एक
द्रव्यांगुलमें (गणनाकी अपेक्षा) अनन्त सर्वांगुल पाये जाते हैं ॥ ९४ ॥

संक्षेप—एक द्रव्यांगुल और एक क्षेत्रांगुलमें परमाणुप्रदेश और व्यापक-प्रदेश समान
होते हैं, इसलिये पूर्णक व्याख्याय बरित नहीं होता है ?

पठिसेहफलत्तादो । किमहुं विस्वमधूर्ध्वं परुविन्धे १ न, पदरस्त असखेजदिमागो इदि सामण्येण बुधे तस्त पमाण किं संखेन्ना सेटीओ मवदि, किमसंखमा सेटीओ मवदि इदि जादसदेहस्त सिस्तस्म निच्छयज्जणद्ध सटीण विस्वमधूर्ध्वं पमाण बुध ।

दश-खेत्त-कालपमाणान सखसिं विस्वमधूर्ध्वो भेष पिच्छओ होदि चि कालण ताव विस्वमधूर्ध्वपमाणपरूपण कस्तामो । अंगुलवगमूठ विस्वमधूर्ध्व इवदि । त किं भूदमिदि बुध विदियवगमूलगुणपण उपलक्षिय । त कष साणिध्वे १ इत्थमात्र लक्ष्णतद्व्यापिदेसादो । जहा नो जहाहि सो भुवदि चि । अंगुलवगमूठमिदि बुधे

संपूज संप्रका प्रतियेध करमा सूत्रमें दिये गये उक्त वचनका फल है।

शंका — यहाँ पर विष्कमसूचीका प्रकरण किसछिये किया गया है।

समाधान — नहीं क्योंकि प्रत्येक असंप्रकातता माग येमा सामान्यरूपसे कहने पर उक्त प्रमाण क्या संप्रकात जगधेलिया है अथवा असंप्रकात जगधेलिया है इसप्रकार जिस शिष्यको संदेह हो गया है उसको निरूपण करानेके लिये जगधेलियोंकी विष्कमसूचीका प्रमाण कहा है।

विष्कमसूचीक कथनसे ही द्रष्टव्यप्रमाण क्षेत्रप्रमाण और फलप्रमाण इन सबका निरूपण हो जाता है येमा समझकर पहले विष्कमसूचीके प्रमाणका प्रकरण करते हैं—

सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलमें अर्थात् सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलका भाग्य छेकर विष्कमसूची होती है। यह सूर्यगुणका प्रथम वर्गमूल किसरूप है येमा पृष्ठने पर भाषार्थ कहते हैं कि सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलके गुणासे उपलब्धित है। अर्थात् सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलके उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित कर देने पर सामान्य मारक सिध्दादितियोंकी विष्कमसूची होती है।

$$\begin{array}{c} \frac{1}{2} \qquad \qquad \qquad \frac{1}{2} \\ \text{उदाहरण—सूर्यगुण } २ \times २ \text{ विष्कमसूची } २ \text{ सूर्यगुणका प्रथम वर्गमूल } २ \text{ सूर्य} \\ \qquad \qquad \qquad \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2} \\ \text{गुणका द्वितीय वर्गमूल } २ \times २ = २ \text{ विष्कमसूची।} \end{array}$$

शंका—यह कैसे जाना जाता है।

समाधान — विदियवगमूलगुणियेण सूत्रके इस पदमें जाये हुए इत्येमावलक्षण तृतीया विमर्शके निर्देशाने यह जाना जाता है कि यहाँ पर सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे

१ बुधियेति वेदं तदेवात् एतद्वचन किं तु तत्तमीत् एतद्वचनेन वरणात् वचनेन वा होदयवगमहा एतद्वचनमात्रयो । वरणा (पुरावच) पद १२८ अ

२ इत्येवमुक्तये । २।२।२२ पाणिनि । ब्रह्मज्ज्वा मातरप कृष्णे तृतीया इवात् । जगमित्यादि । जगज्ज्वातयन वसिष्ठ १ चर्च । इति ।

पक्षिसेहफलवादे। किमहं विस्त्रम्भस्यै परुषविज्जदे ? न, पवरस्स अरसेल्लदिमाणो इदि सामण्णेण धुचे तस्स पमाण किं संखेज्जा सेट्ठीओ भवदि, किमसंखेज्जा सेट्ठीओ भवदि इदि आदसद्वहस्स सिस्सस्स भिच्छयन्नणह्ण सट्ठीण विस्त्रम्भस्यै पमाण धुच ।

दश-खेच-कालपमाणान सन्धेसिं विस्त्रम्भस्यैदो चेव पिच्छओ होदि चि कालन तान विस्त्रम्भस्यैपमाणपरुषण कस्सामो । अंगुलवग्गमूल विस्त्रम्भस्यै इहदि । त किं भूदमिदि धुच विदियवग्गमूलगुण्येण उवलस्सिय । त कच खाणिअदे ? इत्थंमाण लक्खनतइयाणिरेसादो । जहा नो अहाहि सो भुवहि चि । अंगुलवग्गमूलमिदि धुचे

संपूर्ण संख्याका प्रत्येय करमा सूत्रमें दिये गये उक्त वचनका फल है।

श्रुका — यहाँ पर विष्कम्भसूचीका प्रकरण किसलिये किया गया है ?

समाधान — नहीं क्योंकि 'प्रतरक्य भस्तरपातवां भाग' ऐसा सामान्यरूपसे कहने पर उसका प्रमाण क्या संख्यात अगभेजियां है अथवा भस्त्रपात अगभेजियां है, इसप्रकार जिस शिष्यको संदेह हो गया है उसको निश्चय करानेके लिये अगभेजियोंकी विष्कम्भसूचीका प्रमाण कहा है।

विष्कम्भसूचीक कथनसे ही प्रथमप्राप्य क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाण इन सबका निश्चय हो जाता है ऐसा समझकर पहले विष्कम्भसूचीके प्रमाणका प्रकरण करते हैं—

सूच्यगुणके प्रथम वर्गमूलमें अर्थात् सूच्यगुणके प्रथम वर्गमूलका आश्रय लेकर, विष्कम्भसूची होती है। यह सूच्यगुणका प्रथम वर्गमूल किसरूप है ऐसा पूछने पर आवश्यक कहते हैं कि सूच्यगुणके द्वितीय वर्गमूलके गुणासे उपलब्धित है। अर्थात् सूच्यगुणके प्रथम वर्गमूलके उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित कर देने पर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची होती है।

उदाहरण—सूच्यगुण 2×2 ^१ विष्कम्भसूची २, सूच्यगुणका प्रथम वर्गमूल २, ^१ सूच्य
गुणका द्वितीय वर्गमूल २, ^१ ^१ ^१ $2 \times 2 = 2$ विष्कम्भसूची।

श्रुका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— विदियपग्गमूलगुणिविण सूत्रके इस पदमें आये हुए इत्थंमाणलक्षण मत्तीया विप्रतिके निर्देशसे यह जाना जाता है कि यहाँ पर सूच्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे

१ इतिरेवेति वेदं उक्त्वाए एतन्नर्थं किं तु अतदीए एतन्नर्थेन वदन्नाए वदन्नेन वा इतिप्रत्यक्षया उपद्रुतवामातायो । वरवा (पुत्राव) पत्र ५१८ अ

२ वचनद्वयके १, १, ११ वाचिनि । वनि वकार मातरन कहने दुर्लभा रवात् । जगद्विस्तारका । जगद्विस्तारकमिनिव ११वैः । इतिः ।

पदंगुलस्त घनगुलस्त वा पद्मगुलस्त गह्वरं कर्षं वा पावदे ? न, 'अङ्गुलं बगि-
मामे बगिगन्धमामे अर्धसंखे-माणि वगगुलामाणि गतुम् सोहम्मीसानविकर्षंमसईउत्पन्नदि।
सा सई बगिगदा नेरइयविकर्षंमसई इति। सा सई बगिगदा भवणमासिपविकर्षमसई
इति। सा सई बगिगदा घनगुलो इति' चि परियम्मवयणादो जन्मदे घन-पदंगुलान
वगगुलस्त गह्वरं वा इति किंतु सूचिभ्रगुलरगगुलस्तेव गह्वरं इति चि, अन्वहा
घनगुलविदियवगगुलस्त अणुप्यचीदो। सपहि सूचिभ्रगुलविदियवगगुल मापहार

गुणित प्रथम वर्गमूल दिया है। जैसे जो अटाओंसे युक्त है वह तगरकी गोदून करता है। यहाँ
पर इत्यंमावद्यस्य नृतीया निर्देश होनेसे अटाओंपाखा यह कार्य निश्चय होता है उसीप्रकार
प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

सूत्र— भंगुलका वर्गमूल ऐसा सामान्य कथन करने पर उससे प्रतरंगुलके
वर्गमूल वयवा घनांगुलके वर्गमूलका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि आठवा उत्तरोत्तर वय करते हुए अर्धव्यास
वर्गस्त्रान आकर सौधर्म और पेशानसंबन्धी विष्कंमसूची प्राप्त होती है। उसका (सौधर्मिक
संबन्धी विष्कंमसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक सामान्यसंबन्धी विष्कंमसूची प्राप्त
होती है। उसका (नारकसंबन्धी विष्कंमसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भवणवासी
वेधसंबन्धी विष्कंमसूची प्राप्त होती है। उसका (भवणवासिविष्कंमसूचीका) उसीसे वर्ग
करने पर घनांगुल प्राप्त होता है। इस परिकर्मके बचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें घनांगुल
और प्रतरंगुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है किंतु सूर्यगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया
है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कंमसूचीको जो घनांगुलके द्वितीय
वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है।

विशेषार्थ— ऊपर जो परिकर्मका उद्घरण दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है
कि सामान्य नारकविष्कंमसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूत्रमें
भंगुल सामान्यका उल्लेख होनेसे उससे हम सूर्यगुलका ग्रहण न करके प्रतरंगुल वा
घनांगुलका ग्रहण करें तो पूर्वोक्त सूत्रके अग्निप्रयका परिकर्मके बचनके साथ विरोध प्य
जाता है, क्योंकि उक्त सूत्रका अर्थ करते हुए, यदि हम घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय
वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कंमसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं
तो परिकर्मके उक्त बचनके साथ विरोध है ही। भंगुलका अर्ध प्रतरंगुल करने पर भी यही
आपत्ति जाती है। हाँ भंगुलका अर्ध सूर्यगुल के दिया जाता है तो कोई विरोध नहीं
जाता है क्योंकि सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण
जाता है वह घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि
सूत्रमें भंगुलके सूर्यगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलको मापहार करके और सूर्यगुलको मात्रक करते

काळण्य स्यचिअंगुल विहज्जमाणमिदि कट्टु विक्खमस्यचिपरूषण वग्गहाणे खडिद भाजिद विरलिद अरहिद पमाण-कारण निरुचि चियपेहि वत्तइस्सामा । तस्स खडिदादिपठक्क सुगम । तस्स पमाण केचिय ? स्यचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो अरुंखेज्जमाणि स्यचिअंगुल पढमवग्गमूलाणि । कप्प कारणेण ? स्यचिअंगुलपढमवग्गमूलेण स्यचिअंगुले भागे हिदे स्यचि अंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । स्यचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स पुमागेण स्यचिअंगुले भागे हिदे दोणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । पुनो पढमवग्गमूलस्स तिभागेण स्यचिअंगुले भागे हिदे तिणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । एष पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभाग भूदस्यचिअंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भाग हिदे लदेण स्यचिअंगुले भागे हिदे

वगस्थानमें अंशित, भाजित विरलित अपहृत प्रमाण कारण निरुक्ति और विक्कपके द्वारा विष्कम्भसूचीका प्रतिपादन करते हैं । उनमें प्रारंभके अण्डित आदि चारका कथन सुगम है । (इन चारोंका सामान्य सिध्दादि यशिके सम्बन्धमें उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और ४२ में किया है उसीप्रकार यहाँ भी समझना चाहिये ।)

उक्ता — विष्कम्भसूचीका प्रमाण कितना है ?

समाधान — सूच्यगुलके असंख्यातयां भाग विष्कम्भसूचीका प्रमाण है जो सूच्यगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ।

उक्ता — किस कारणसे सूच्यगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण विष्कम्भसूची होती है ?

समाधान — सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका सूच्यगुलमें भाग देने पर सूच्यगुलका प्रथम वर्गमूल आता है $\left(\frac{2 \times 2}{\frac{1}{2}} = 2^{\frac{3}{2}} \right)$ । सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय भागका

सूच्यगुलमें भाग देने पर सूच्यगुलके दो प्रथम वर्गमूल सम्मिलित होते हैं $\left(\frac{2 \times 2}{\frac{1}{2}} = 2 \times 2^{\frac{3}{2}} \right)$ । पुनः

सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके तीसरे भागका सूच्यगुलमें भाग देने पर सूच्यगुलके तीन प्रथम वर्गमूल सम्मिलित होते हैं $\left(\frac{2 \times 2}{\frac{1}{2}} = 3 \times 2^{\frac{3}{2}} \right)$ । इसीप्रकार सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके अरुं

ख्यातये भागका सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो सम्मिलित

पदरंगुलस्स पदंगुलस्स वा पद्मामूलस्स गहणं कथं नो पावदे ? ज, 'अङ्गुलं वगिदं माये वगिदं माये अत्तंवेज्जाणि वग्गह्माणि गत्थं सोहम्मीसाणविकसंमच्छं उप्पन्नमिदि । सा सइ वगिदं वेरइयविकसंमच्छं इवदि । सा सइ वगिदं मननवासिपविकसंमच्छं इवदि । सा सइ वगिदं पणगुलं इवदि ' चि परियम्मवयणादो गम्भइ पण पदरंगुलं पद्मामूलस्स गहणं य इवदि किं तु सूचिअंगुलपद्मामूलस्सेन गहणं होदि चि, अम्भइ पणगुलविदियवग्गमूलस्स अणुप्पत्तिदो । सपहि सूचिअंगुलविदियवग्गमूल मागाहा

गुचित प्रथम वर्गमूल दिया है। जैसे जो अराभोंसे युक्त है वह तपस्वी गोजन करता है। वहाँ पर इत्यम्भाबलक्षण नृतीया निर्देश होनेसे अराभोंवाला वह वर्ग निकल आता है उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

शुद्धा— अंगुलका वर्गमूल ऐसा सामान्य कथन करने पर उससे स्तरांगुलके वर्गमूल अथवा घनांगुलके वर्गमूलका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि आठका उत्तरोत्तर वर्ग करते हुए असंख्य वर्गकृत आकर सौधर्म और पेशासंबन्धी विष्कम्भसूची प्राप्त होती है। उसका (सौधर्मिकसंबन्धी विष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक सामान्यसंबन्धी विष्कम्भसूची प्राप्त होती है। उसका (नारकसंबन्धी विष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर मन्त्रवासी वेदासंबन्धी विष्कम्भसूची प्राप्त होती है। उसका (मन्त्रवासिविष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर घनांगुल प्राप्त होता है। इस परिकर्मके बचनसे ज्ञात जाता है कि प्रकृतमें घनांगुल और स्तरांगुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है किन्तु सूच्यंगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कम्भसूचीको जो घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है।

विशेषार्थ— ऊपर जो परिकर्मका उद्धारन दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है कि सामान्य नारकविष्कम्भसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूच्यमें अंगुल सामान्यका उद्देश होनेसे उससे हम सूच्यंगुलका ग्रहण न करके स्तरांगुल या घनांगुलका ग्रहण करें तो पूर्वाक्त सूत्रके समिप्रायका परिकर्मके बचनके साथ विरोध बन जाता है क्योंकि उक्त सूत्रका अर्थ करते हुए यदि हम घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कम्भसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं तो परिकर्मके उक्त बचनके साथ विरोध है ही। अंगुलका अर्थ स्तरांगुल करने पर भी यही आपत्ति प्यती है। हां अंगुलका अर्थ सूच्यंगुल के दिया जाता है तो कोई विरोध नहीं आता है क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण आता है वह घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सूच्यमें अंगुलके सूच्यंगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको मागाहार करके और सूच्यंगुलको मात्रक करके

कारण स्रुचिअंगुल विहज्जमाणमिदि कट्टु विक्खमसूचिपरुवण वग्गाङ्गणे खंडिद भाजिद
 पिरलिद अवहिद पमाण-कारण गिरुत्ति चियप्पहि वचइस्सामो । तत्तय खंडिददिषउक्क
 सुगम । तस्स पमाण कचियं ? स्रुचिअंगुलस्स असखेज्जदिभागा असखेज्जआणि स्रुचिअंगुल
 पडमवग्गमूलाणि । कण कारणेण ? स्रुचिअंगुलपडमवग्गमूलेण स्रुचिअंगुले भागे हिदे स्रुचि
 अंगुलपडमवग्गमूलमागच्छदि । स्रुचिअंगुलपडमवग्गमूलस्स दुभागेण स्रुचिअंगुले भागे
 हिदे दाणि पडमवग्गमूलाणि आगच्छति । पुणे पडमवग्गमूलस्स त्रिभागेण स्रुचिअंगुले
 भागे हिदे तिप्पि पडमवग्गमूलाणि आगच्छति । एष पडमवग्गमूलस्स अत्तसेज्जदिभाग
 भूदस्रुचिअंगुलविदियवग्गमूलण पडमवग्गमूल भागे हिदे लदेण स्रुचिअंगुले भागे हिदे

वगस्याममें स्थिति भाजित पिरखित, अपहृत प्रमाण कारण निरुक्ति और विवरणके
 द्वारा विष्कम्भसूचीका प्रतिपादन करते हैं । उनमें प्रारंभके अतिष्ठत आदि व्याख्या कथन सुगम
 है । (इन व्याख्या सामान्य सिध्दाद्वि रीतिके सम्बन्धमें उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और
 ४२ में किया है वहीप्रकार यहां भी समझना चाहिये ।)

श्रृंख — विष्कम्भसूचीका प्रमाण कितना है ?

समाधान — सूर्यगुलके अक्षरघातर्धा भाग विष्कम्भसूचीका प्रमाण है जो सूर्यगुलके
 अक्षरघात प्रथम वगमूल प्रमाण है ।

श्रृंका — किस कारणसे सूर्यगुलके अक्षरघात प्रथम वगमूलप्रमाण विष्कम्भसूची
 होती है ?

समाधान — सूर्यगुलके प्रथम वगमूलका सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलका
 प्रथम वगमूल आता है $\left(\frac{२ \times २^{\frac{१}{२}}}{\frac{१}{२}} = २ \right)$ । सूर्यगुलके प्रथम वगमूलके द्वितीय भागका

सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलके दो प्रथम वगमूल सम्बन्ध व्यत है $\left(\frac{२ \times २^{\frac{१}{२}}}{\frac{१}{२}} = २ \times २^{\frac{१}{२}} \right)$ । पुनः

सूर्यगुलके प्रथम वगमूलके तीसरे भागका सूर्यगुलमें भाग देने पर सूर्यगुलके तीन प्रथम
 वगमूल सम्बन्ध आते हैं $\left(\frac{२ \times २^{\frac{१}{२}}}{\frac{१}{२}} = ३ \times २^{\frac{१}{२}} \right)$ । इसीप्रकार सूर्यगुलके प्रथम वगमूलके अक्षर

घातर्धे भागरूप सूर्यगुलके द्वितीय वगमूलके प्रथम वगमूलके भाजित करने पर जो सम्बन्ध

असंख्यज्ञाणि सूचिअगुलपडमवग्गमूलाणि आगच्छति चि ण संदेहा । कारणं यई ।
 गिरुचि वचइस्सामा । अगुलविदियवग्गमूलेण पडमवग्गमूल भाग इदि भागसूहहि
 अचियाणि रूवाणि ठचियाणि पडमवग्गमूलाणि पेसूण विक्खममूर्ई हवदि । अथवा
 विदियवग्गमूलस्स अचियाणि रूवाणि ठचिएहि पडमवग्गमूलेहि विक्खममूर्सी होदि चि
 वचप्पं । गिरुची गदा ।

वियप्पो दुविहो हट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । उरय वेरुवे हट्ठिमवियप्पं
 वचइस्सामो । सूचिअगुलविदियवग्गमूलेण सूचिअगुलपडमवग्गमूलमोवट्ठिय सदेण पडम
 वग्गमूले गुणिदे विक्खममूर्ई हवदि । अथवा विदियवग्गमूलेण पडमवग्गमूले गुणिदे

भावे उससे सूर्यगुच्छके भाजित करने पर सूर्यगुच्छके असंख्यात प्रथम वर्गमूल छप्प गते हैं
 इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{2}{1}}{\frac{1}{2}} = 2, \quad \frac{2 \times 2}{\frac{1}{2}} = 2 \text{ सूर्यगुच्छके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण विच्छेदमूर्सी ।}$$

अथ निरक्षिप्य कथन करते हैं— सूर्यगुच्छके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
 भाजित करने पर मागमें जितनी संख्या छप्प भावे उतने प्रथम वर्गमूल ग्राह्य करते विच्छेद
 लूची उत्पद्य होती है । अथवा द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलके
 (द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़ देने पर) विच्छेदलूची होती है । इसप्रकार
 निरक्षिप्य कथन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{2}{1} \times \frac{1}{2} = 2 \text{ द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़, द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होता है उतना ही जाता है ।}$$

विच्छेद दो प्रकारका है अथस्तथ विच्छेद और उपरिम विच्छेद । उनमें पहले
 विच्छेदकारामें अथस्तथ विच्छेद बतलाते हैं— सूर्यगुच्छके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुच्छके
 प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध भावे उससे सूर्यगुच्छके प्रथम वर्गमूलके गुणित
 करने पर विच्छेदलूचीका प्रमाण होता है । अथवा, सूर्यगुच्छके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
 गुणित करने पर विच्छेदलूचीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{2}{1} \times \frac{1}{2} = 2, \quad 2 \times 2 = 2 \text{ चि अथवा } 2 \times 2 = 2 \text{ चि}$$

विस्त्रमसूची इतिदि । अङ्गुलये वत्तइस्सामो । अङ्गुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेत्तण
 षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे विस्त्रमसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? अङ्गुलपढम
 वग्गमूलेण षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे स्रचिअङ्गुलो आगच्छदि । पुणो तमङ्गुलविदिय
 वग्गमूलेण मागे हिदे विस्त्रमसूची आगच्छदि । एत्थ विठणादिकरणं वत्तइस्सामो ।
 अङ्गुलपढमवग्गमूलेण षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे स्रचिमङ्गुलो आगच्छदि । त्रिगु
 णिदपढमवग्गमूलेण षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे स्रचिअङ्गुलस्स दुमागो आगच्छदि ।
 त्रिगुणिदपढमवग्गमूलेण षण्णुलपढमवग्गमूले मागे हिदे स्रचिअङ्गुलस्स विमागो आगच्छदि ।

अब अणुरूपमें अबस्तन विस्त्रय बतछाते हैं— सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम
 वर्गमूलको गुणित करके जो सूर्य आवे उससे घनाङ्गुलके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर
 विष्कमसूचीका प्रमाण आता है क्योंकि सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनाङ्गुलके प्रथम
 वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुणका प्रमाण आता है । पुनः इसे सूर्यगुणके द्वितीय
 वर्गमूलसे माजित करने पर विष्कमसूचीका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सूर्यगुणका घन $\left(\frac{2}{3}\right)^3 = 2\frac{2}{3}$ घनाङ्गुलका प्रथम वर्गमूल $2\frac{1}{2}$ ।

$$\frac{2\frac{2}{3}}{2\frac{1}{2}} = 2 \text{ विष्कमसूची}$$

अब यहाँ त्रिगुणाधिकरण विधिको बतछाते हैं— सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनाङ्गुलके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुण आता है $\left(\frac{2}{3}\right)^3 = 2 \times 2\frac{1}{2}$ । त्रिगुणित

सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनाङ्गुलके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुणका तृतीय

भाग आता है $\left(\frac{2}{3}\right)^3 = \frac{2 \times 2\frac{1}{2}}{2 \times 2}$ । त्रिगुणित सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनाङ्गुलके प्रथम

वर्गमूलके माजित करने पर सूर्यगुणका तीसरा भाग आता है $\left(\frac{2}{3}\right)^3 = \frac{2 \times 2\frac{1}{2}}{2 \times 2}$ ।

असुरेण्यणि सृष्टिर्अगुलपदमवगमूलाणि आगच्छन्ति चि न संदहा । कारये मरं ।
 विरुचिं वचइस्सामा । अगुलविदियवगमूलेण पदमवगमूले भाग द्विद मागत्तइमि
 सचियाणि रुवाणि तचियाणि पदमवगमूलाणि चेतुण विक्खंममूर्ई इवदि । अन्ना
 विदियवगमूलेस्म सचियाणि रुवाणि तचिएहि पदमवगमूलेहि विक्खंममूर्पी इदि चि
 वचप्पं । शिरुपी गदा ।

वियप्पा दुविहो इद्विमवियप्पा उवरिमवियप्पो वेदि । तत्थ वेरूव इद्विमवियप्पं
 वचइस्सामो । सृष्टिअगुलविदियवगमूलेण सृष्टिअगुलपदमवगमूलेमोवद्विय उद्वेस पदम
 वगमूले गुणिदे विक्खंममूर्ई इवदि । अन्ना विदियवगमूलेण पदमवगमूले गुणिदे

भावे उससे सूर्यगुणके माजित करने पर सूर्यगुणके असंख्यात प्रथम वर्गमूल छप्प जाने हैं
 इसमें संदिह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{2}{1}}{\frac{1}{2}} = 2, \quad \frac{2 \times 2}{1} = 2 \quad \text{सूर्यगुणके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण विष्कंमसूची ।}$$

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
 माजित करने पर मागमें जितनी संख्या छप्प भये वतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विष्कंम
 सूची उत्पन्न होती है । अथवा द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है वतने प्रथम वर्गमूलसे
 (द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़ देने पर) विष्कंमसूची होती है । इसप्रकार
 निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{2}{1} \times \frac{1}{2} = 2 \quad \text{द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़ द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होगा वतथा ही आता है ।}$$

विकल्प दो प्रकारका है अघस्तन विकल्प और अपरिम विकल्प । इनमें पहले
 द्विरूपभाषामें अघस्तन विकल्प बतकाते हैं— सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुणके
 प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके जो छप्प जाने उससे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलके गुणित
 करने पर विष्कंमसूचीका प्रमाण होता है । अथवा सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
 गुणित करने पर विष्कंमसूचीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{\frac{2}{1}}{\frac{1}{2}} = 2, \quad \frac{2}{1} \times \frac{1}{2} = 2 \quad \text{चि अथवा} \quad \frac{2}{1} \times \frac{1}{2} = 2 \quad \text{चि}$$

विक्रमसूची इति । अङ्कत्वे वत्तइस्सामो । अगुलविदियवग्गामूलेण पढमवग्गामूल गुणेत्थं
घणगुलपढमवग्गामूले भागे हिदे विक्रमसूची आगच्छदि । केण करणेण ? अगुलपढम
वग्गामूलेण घणगुलपढमवग्गामूले भागे हिदे अचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो तमंगुलविदिय
वग्गामूलेण भागे हिदे विक्रमसूची आगच्छदि । एत्थं विठ्ठादिकरणं वत्तइस्सामो ।
अगुलपढमवग्गामूलेण घणगुलपढमवग्गामूले भागे हिदे अचिअंगुलो आगच्छदि । विगु
मिअपढमवग्गामूलेण घणगुलपढमवग्गामूले भागे हिदे अचिअंगुलस्स दुमागो आगच्छदि ।
तिगुणिअपढमवग्गामूलेण घणगुलपढमवग्गामूले भागे हिदे अचिअंगुलस्स तिमगो आगच्छदि ।

अथ अष्टकपमे अष्टस्तन विक्रम्य वत्तइते हैं— सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम
वर्गमूलके गुणित करने को लभ्य अथ ठससे घनागुणके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर
विक्रमसूचीका प्रमाण आता है क्योंकि सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनागुणके प्रथम
वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्यगुणका प्रमाण आता है । पुनः ठसे सूर्यगुणके द्वितीय
वर्गमूलसे भाजित करने पर विक्रमसूचीका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सूर्यगुणका घन $\left(\frac{8}{2}\right)^3 = 2^9$ घनागुणका प्रथम वर्गमूल २ ।

$$\frac{2^9}{\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}} = 2 \text{ विक्रमसूची}$$

अथ यहां त्रिगुणादिकरण विधिके वत्तइते हैं— सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घना-
गुणके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्यगुण आता है $\left(\frac{2}{\frac{1}{2}} = 2 \times 2^{\frac{1}{2}}\right)$ । त्रिगुणित

सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनागुणके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्यगुणका चत्वार
भाग आता है $\left(\frac{2}{\frac{1}{2}} = \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2}\right)$ । त्रिगुणित सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे घनागुणके प्रथम

वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्यगुणका तीसरा भाग आता है । $\left(\frac{2}{\frac{1}{2}} = \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{\frac{1}{2}}\right)$ ।

अमृतं उज्ज्वलं सृष्टिर्गुणपद्मवर्गमूलाणि आगच्छति चि न संदहा । कारणं यद् ।
विरुचिं वचइस्सामो । अगुलविदियवर्गमूलेण पद्मवर्गमूल भाग द्विद मागच्छइमि
वचियाणि रुचाणि तचियाणि पद्मवर्गमूलाणि पेश्चण विक्खंमसूरी हवदि । अथवा
विदियवर्गमूलस्स वचियाणि रुचाणि तचियाणि पद्मवर्गमूलहि विक्खंमसूची हवदि चि
वचम्भं । गिरुची गदा ।

वियप्पो दुविहो हक्खिमवियप्पो उवरिमविमप्पो चेदि । तस्य वेरुप्पे हेक्खिमवियप्पं
वचइस्सामो । सृष्टिअगुलविदियवर्गमूलेण सृष्टिअगुलपद्मवर्गमूलमोवक्खिय त्थेण पद्म
वर्गमूले गुणिदे विक्खंमसूरी हवदि । अथवा विदियवर्गमूलण पद्मवर्गमूले गुणिदे

भावे उससे सूर्यगुणके भाजित करने पर सूर्यगुणके असत्त्वात् प्रथम वर्गमूल छप्प भावे है
इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका बचन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{\frac{2}{1}}{\frac{1}{2}} = 2, \quad \frac{2 \times 2}{\frac{1}{2}} = 2 \text{ सूर्यगुणके असत्त्वात् प्रथम वर्गमूल प्रमाण विष्कंमसूची ।}$$

अब निरुक्तिका कथन करते हैं—सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलसे
भाजित करने पर भागमें द्वितनी संत्पा छप्प भावे उतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विष्कंम-
सूची उत्पन्न होती है । अथवा द्वितीय वर्गमूलका द्वितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलसे
(द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको ओड़ देने पर) विष्कंमसूची होती है । इसप्रकार
निरुक्तिका बचन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2}{1} \times \frac{1}{2} = 2 \text{ द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको ओड़ द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर द्वितना होता है, उतना ही भाता है ।}$$

विष्कंम हो प्रकारका है अथस्तत्र विष्कंम और उपरिम विष्कंम । उनमें पहले
विष्कंमधारामें अथस्तत्र विष्कंम बतहाते हैं—सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुणके
प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके ओ छप्प भावे उससे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलके गुणित
करने पर विष्कंमसूचीका प्रमाण होता है । अथवा सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
गुणित करने पर विष्कंमसूचीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{\frac{2}{1}}{\frac{1}{2}} = 2, \quad 2 \times 2 = 2 \text{ चि अथवा, } \frac{2}{1} \times \frac{1}{2} = 2 \text{ चि}$$

एतेषु क्रमेण येदम्बं चाव स्रवित्रं गुलपदमवगममूलस्त गुणगारो विदियवगममूलमेवं पचां चि । पुनो तेव स्रवित्रं गुलपदियवगममूलैव गुणिदपदमवगममूलैव पर्वगुलपदमवगममूले मागे हिदे विदियवगममूलैव स्रवित्रं गुलपदममूलैव आगच्छति । सो चेव विवक्षितमसूची । यथापये वच-
इत्तामो । अंगुलविदियवगममूलैव पदमवगममूल गुणैरुच्य तेव पर्वगुलविदियवगममूलं गुणैरुच्य
तेव यथापयविदियवगममूलै मागे हिदे विवक्षितमसूची आगच्छति । केव कारणेव ? पर्वगुल-
विदियवगममूलैव यथापयगुलविदियवगममूलै मागे हिदे पयगुलपदमवगममूलमागच्छति ।
पुनो वि स्रवित्रं गुलपदमवगममूलैव पर्वगुलपदमवगममूल मागे हिदे स्रवित्रं गुला आम-
च्छति । पुनो वि विदियवगममूलैव स्रवित्रं गुले मागे हिदे विवक्षितमसूची आगच्छति ।
एवमागच्छति चि कहु गुणैरुच्य मागमाह्वं कर्द । एवं हेक्तिमवियप्यो समचो ।

उपरिमवियप्यो विविहो, गहिदो महिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तव

इत्यप्रकार अवतक सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलका गुणकार द्वितीय वर्गमूलके प्रमाणको प्राप्त
होये तबतक इसी क्रमसे ले जाया जायिये । पुनः उस सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुणके
प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रजागुणके प्रथम वर्गमूलके माजित करने
पर सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे माजित सूर्यगुण क्या है और वही विवक्षितमसूची है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2}{\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}} = \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{\frac{1}{2}} = 2 \text{ विवक्षितमसूची}$$

जब यथाक्रममें अथवात्र विवक्षित कतकत है— सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलसे
सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रजागुणके द्वितीय वर्गमूलको
गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रजागुणगुणके द्वितीय वर्गमूलमें
माग देने पर विवक्षितमसूचीका प्रमाण क्या है क्योंकि, प्रजागुणके द्वितीय वर्गमूलका
प्रजागुणगुणके द्वितीय वर्गमूलमें माग देने पर प्रजागुणका प्रथम वर्गमूल क्या है । पुनः
सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलका प्रजागुणके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर सूर्यगुण क्या है । पुनः
सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूलका सूर्यगुणमें माग देने पर विवक्षितमसूचीका प्रमाण क्या
है । इसप्रकार विवक्षितमसूची क्या है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका प्रमाण
किया । इसप्रकार अवतरत विवक्षित समाप्त हुआ ।

उदाहरण—सूर्यगुणका प्रजागुण $(2)^1 = 2^1$ । सूर्यगुणके प्रजागुणका द्वितीय

$$\text{वर्गमूल } 2 = 2^{\frac{1}{2}}; \frac{2^1}{2^{\frac{1}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}}} = 2 \text{ विवक्षितमसूची}$$

अपरिम विवक्षित तीन प्रकारका है, पृथीत पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकार । उनमें

कारणेन ! घन-उपरिमवर्गमेव घनाघने मागे हिंदे घनगुले आगच्छति । पुनो वि पदगुलेन घनगुले मागे हिंदे स्तूपिश्रगुला आगच्छति । पुनो वि विविधवर्गमूलेन स्तूपिश्रगुले मागे हिंदे विक्खंमस्तूची आगच्छति । एवमागच्छति पि कङ्कु गुलेन मागगाहण कद । वस्तु मागहारस्तु अद्वन्द्वदणपमेवे रासिस्त अद्वन्द्वेदण कदे वि विक्खंमस्तूची आगच्छति । गहिदो गहो । स्तूपिश्रगुलस्त असंखञ्जदिमागेण घनगुल पदमवर्गमूलस्त असंखेज्जदिमागेण 'घनाघणविविधवर्गमूलस्त असंखेज्जदिमागेण च विक्खंमस्तूपिपमाणेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च पुम्बं च यमब्बो ।

संपदि भेरयमिच्छाद्विरासिस्त मागहारप्यायणविदि यचइस्तामो । तुप्ते अवुत्तो मागहारो कषणप्यायणदे ? ण, सुचसुचविक्खंमस्तूचीदो वदुप्पपिप्पिदीदो । त जहा-
प्रमाण आता है क्योंकि घनांशुलके उपरिम वर्गसे घनाघनांशुलके माजित करने पर घनांशुल आता है । पुनः प्रवर्गशुलसे घनांशुलके माजित करने पर स्तूप्यगुल आता है । पुनः स्तूप्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे स्तूप्यगुलके माजित करने पर विक्खंमस्तूची आती है । इसप्रकार विक्खंमस्तूची आती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(2^3)^3}{2 \times 2 \times 2} = \frac{2^9}{2 \times 2 \times 2} = \frac{2^9}{2^3} = 2^6 = 2 \text{ विक्खंमस्तूची}$$

उक्त मागहारके जितने अघच्छेद हों उतनीवार उक्त मरपमाण राशिके अघच्छेद करने पर भी विक्खंमस्तूचीय प्रमाण आता है । इसप्रकार गृहीत उपरिम विक्खंमका वर्गन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—२ के अघच्छेद ११ होते हैं। अत इतनीवार २ के अघच्छेद करने पर १२-११ १
२ = १ = २ प्रमाण विक्खंमस्तूची या आती है ।

स्तूप्यगुलके असंख्यातवें मागप्रमाण विक्खंमस्तूचीसे घनांशुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें मागप्रमाण विक्खंमस्तूचीसे और घनाघनांशुलके द्वितीय वर्गमूलके अनन्तरपातवें मागप्रमाण विक्खंमस्तूचीसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन पहलेके समान करना चाहिये ।

अब बारक मिथ्यादि जीवपक्षिके मागह रके उत्पन्न करनेकी विधिसे बतकाते हैं—

श्रेष्ठ—मागहारका कथन स्वयं नहीं किया है, फिर पहा वह कैसे उत्पन्न किया आ रहा है ?

समाधान—नहीं क्योंकि स्तूचक विक्खंमस्तूचीसे उक्त मागहारकी उत्पत्ति बन आती है । वह इसप्रकार है—

१ श्रेष्ठ पुनो य च इति पाठः ।

अङ्गच्छेदपयमेचमेतापविहाय आगिऊय वत्तव । अङ्गुत्वे वत्तइस्सामो । विदियवग्ग-
मूत्तेण पदरगुत्तं गुणेऊय तेण वणगुत्ते मागे हिदे विक्खंमसूची आगच्छदि । केव
फारवेण ? पदरगुत्तेण वणगुत्ते मागे हिदे सूचिभंगुत्तमागच्छदि । पुणा वि विदियवग्ग-
मूत्तेण सूचिभंगुत्ते मागे हिदे विक्खंमसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कहु
गुणेऊय मायग्गहणं कद । तस्स मागहारस्स अङ्गच्छेदपयमेचे रासिस्स अङ्गच्छेदपय
कदे वि विक्खंमसूची आगच्छदि । एव संखेज्जासंखेज्जापंतु पेयम्भं । पणापवे
वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूत्तेण पदरगुत्तं गुणेऊय तेण गुणिरासिणा पदरगुत्तं
वत्तरिमवग्ग गुणेऊय तेण पणापवे मागे हिदे विक्खंमसूची आगच्छदि । केव

आना चाहिये । यहां पर समस्त अर्घ्यच्छेदोंके मिळानेकी विधिको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— 2^2 के अर्घ्यच्छेद 2^2 होते हैं, अतः इतनीबार 2^2 के अर्घ्यच्छेद करने पर

$2^2 = 2^1 = 2$ प्रमाण विक्खंमसूची व्य जाता है ।

अब अष्टकपमें पृथीत उपरिम विक्खपको बतलाते हैं— सूच्यगुत्ते द्वितीय वर्गमूत्ते
मतरंगुत्तको गुणित करके जो छन्द्य भागे उससे घनागुत्ते माजित करने पर विक्खंमसूचीका
प्रमाण जाता है क्योंकि मतरंगुत्तसे घनागुत्ते माजित करने पर सूच्यगुत्त जाता है । पुन
सूच्यगुत्तके द्वितीय वर्गमूत्तसे सूच्यगुत्तके माजित करने पर विक्खंमसूचीका प्रमाण जाता है ।
इसप्रकार विक्खंमसूची जाती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका
महण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(2^2)^2}{2 \times 2} = \frac{2^4}{2 \times 2} = 2^2 = 2 \text{ विक्खंमसूची.}$$

उक्त मागहारके जितने अर्घ्यच्छेद हों उतनीबार उक्त मन्त्रमात्र राशिके अर्घ्यच्छेद
करने पर भी विक्खंमसूचीका प्रमाण व्य जाता है । इसीप्रकार संख्यात मन्त्रपात श्रीर
अनन्त स्थानोंमें के आना चाहिये ।

उदाहरण— 2^3 के अर्घ्यच्छेद 2^3 होते हैं अतः इतनीबार 2^3 के अर्घ्यच्छेद करने पर
 $2^3 = 2^1 = 2$ प्रमाण विक्खंमसूची व्य जाती है ।

अब घनाघनमें पृथीत उपरिम विक्खप बतलाते हैं— सूच्यगुत्तके द्वितीय वर्गमूत्तसे
मतरंगुत्तको गुणित करके जो गुणित राशि छन्द्य भागे उससे घनागुत्तके उपरिम वर्गको
गुणित करके जो छन्द्य भागे उससे घनाघनागुत्तके माजित करने पर विक्खंमसूचीका

कारणेन ? घन-उपरिमवर्गगेन घणाघने मागे हिंदे घणगुलो आगच्छति । पुनो वि पदरगुलेष घनगुले मागे हिंदे सूचिअगुलो आगच्छति । पुनो वि विविधवर्गामूलेष सूचिअगुले मागे हिंदे विक्खंमसूची आगच्छति । एवमागच्छति च कङ्कु गुणेषण मागगाहण कद । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वेदणपमेवे रासिस्स अद्वन्द्वेदण कदे वि विक्खंमसूची आगच्छति । गहिदो गदो । सूचिअगुलस्स असंखेज्जदिमागेण घणगुल पदमवर्गामूलस्स असंखेज्जदिमागेण 'घणाघणविदिमवर्गामूलस्स असंखेज्जदिमागेण च विक्खंमसूचापिपमाणेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च पुम्प व घनघो ।

संपदि परादयमिच्छाद्विरासिस्स मागहारुप्यायमिच्छि वचइस्सामो । सुच अपुचो मागहारो कथमुप्याइउअदे ? ण, सुचपुचविक्खमसूरीदो तदुप्पचिसिद्धीदो । त जहा-

प्रमाण आता है क्योंकि घनागुलके उपरिम वगले घनाघनागुलके भाजित करने पर घनागुल आता है । पुनः पदगुलस घनागुलके भाजित करने पर सूच्यगुल आता है । पुनः सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके भाजित करने पर विक्खंमसूची आती है । इसप्रकार विक्खंमसूची आती है, यथा समप्रकार पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(२')^1}{\frac{१}{२} \times \frac{१}{२}} = \frac{२''}{\frac{१}{२} \times \frac{१}{२}} = \frac{२''}{\frac{१}{२}} = २ \text{ विक्खंमसूची}$$

$$२ \times २ \times २$$

उक्त भागहारके जितने अघच्छेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान रासिके अघच्छेद करने पर भी विक्खंमसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार गृहीत उपरिम विक्खंमसूची वर्ज्य समान्त हुआ ।

उदाहरण—२" के अघच्छेद ११ होते हैं, अत इतनीवार २" के अघच्छेद करने पर १२-११ १
२ = २ = २ प्रमाण विक्खंमसूची आ जाती है ।

सूच्यगुलके असंख्यातये भागप्रमाण विक्खंमसूचीसे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातये भागप्रमाण विक्खंमसूचीसे और घनाघनागुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातये भागप्रमाण विक्खंमसूचीसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन पहलेके समान करना चाहिये ।

अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवरादिके भागहारक उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—
धंका—भागहारका कथन सूचने नहीं किया है, फिर यहाँ यह कैसे उत्पन्न किया आ रहा है ?

समाधान—नहीं क्योंकि सूत्रोक्त विक्खंमसूचीसे उक्त भागहारकी उत्पत्ति बन आती है । अब इसप्रकार है—

अगसेदीए अगपदरे भाग हिदे एगसेदी आगच्छति । अगसेदीदुमागेण अगपदर भाग हिदे दोप्पि सेदीओ आगच्छति । अगसेद्वितीमागेण अगपदरे भागे हिदे तिप्पि सेदीओ आगच्छति । एवमगादि-एगुत्तरक्रमण सेदीए भागहारो बन्नावेयव्वो जाव गेरइपविकसे-मसूचिमेच पचो चि । पुणो ताए विकसंमसूचीए सेदिमोवद्विय सदेण अगपदरे मागे हिदे विकसमसूचीमेचसेदीओ आगच्छति । एवमप्यत्थ वि विकसंमसूरीदो अवहारकाओ साधेयव्वो । एदेण भागहारण सेदीए उचरि खंडिदादिवियपपा वचक्का । एत्थ ताव वगद्वाण पमाण-कारण-विरुत्ति-वियप्येहि अवहारकास वचइस्सामो । तस्स पमार्य केचियं ? सेदीए असंसेन्ददिमागा असंसेन्दजाणि सेदिपढमवग्गमूलानि । पमार्य मई । केय करणेण ? सेदिपढमवग्गमूलेण सेदिमि भागे हिदे सेदिपढमवग्गमूलो आग

अगधेजीके अगप्रतरेके माजित करने पर एक अगधेजीका प्रमाण आता है (४२९४९९७२९९ - १ १३९ = ३५३९) । अगधेजीके द्वितीय मापका अगप्रतरमें माग देने पर वा अगधेजियां छप्प आती हैं (४२९४९९७२९९ + ३२७३८ = १३१७७२) । अगधेजीके तृतीय मापसे अगप्रतरके माजित करने पर तीन अगधेजियां आती हैं (४२९४९९७२९९ - २१८४५१ = १९७६८) । इसप्रकार भागहार बढ़ाते हुए अबतक बह नारक विष्कंमसूचीके प्रमाणको प्राप्त होवे तकतक बसे बढ़ाते जाना चाहिये । अनन्तर उस विष्कंमसूचीसे अगधेजीको व्यपवर्तित करके जो लम्ब आये उससे अगप्रतरके माजित करने पर जितना विष्कंमसूचीका प्रमाण है उतनी अगधेजियां छप्प आती हैं । इसीप्रकार अनन्त में विष्कंमसूचीसे अवहारकास साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—अगधेजी १११३९, अगप्रतर ४२९४९९७२९९, १५३९ - २ = ३१७६८
 ४२९४९९७२९९ + ३२७३८ = १३१७७२ नारक मिष्यादधि जीवपधि

अब इस भागहारका आश्रय करके अगधेजीके ऊपर कबिडित भादि विकल्पका कथन करना चाहिये । उनमेंसे पहले वर्गस्थानमें प्रमाण कारण विरुद्धी नीर विकल्पके द्वारा अवहारकासका प्रमाण बतसाते हैं—

प्रश्ना—सामान्य नारक मिष्यादधि जीवपधिके जानेके किये जो भागहार कहा है उसका प्रमाण कितना है ?

समाधान—उक्त भागहारका प्रमाण अगधेजीके असंख्यातवर्गे माप है जो अगधेजीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका यत्न समाप्त हुआ ।

उदाहरण—अवहारकास ३२७३८, अगधेजीका प्रथम वर्गमूल ५५९, ३२७३८ + ५५९ = १९८ (यहां १९८ को असंख्यात मान कर उतनेवार प्रथम वर्गमूल ५५९ का जोड़ ३२७३८ होता है)

प्रश्ना—अगधेजीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण अवहारकास किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, अगधेजीके प्रथम वर्गमूलसे अगधेजीके माजित करने पर

च्छदि । सेडिविदियवग्गमूलेण सेडिम्हि मागे हिदे विदियवग्गमूलस्स अचियाणि
रूवाणि अचियाणि सेडिपढमवग्गमूलानि आगच्छति । सट्ठिदियवग्गमूलेण सेडिम्हि
मागे हिदे सेडिविदिय-वदियवग्गमूलाण अण्णोप्पमाग कदे तस्य अचियाणि रूवाणि
अचियाणि सेडिपढमवग्गमूलानि आगच्छति । अपेण विहाणेण पल्लिदोषमवग्गसलागाणं
असंखेअदिमागमेववग्गहाणानि हेट्ठा ओसरिऊम धणगुलविदियवग्गमूलण सेडिम्हि
मागे हिदे असंखेज्झाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि आगच्छति सि न सदेह कायम्भ ।
कात्तं गदं । गिरुत्तिं वचइस्सामो । धणगुलविदियवग्गमूलेण सेडिपढमवग्गमूल मागे
हिदे तस्य अचियाणि रूवाणि अचियाणि पढमवग्गमूलानि । अब्बा तेणेव मागहारेण
सेडिविदियवग्गमूले माग हिदे तत्थागदेण तम्हि चेव गुणिदे तस्य अचियाणि रूवाणि
अचियाणि सेडिपढमवग्गमूलानि । अब्बा तेणेव मागहारेण सेडिपढमवग्गमूल मागे
हिदे तत्थागदेण तं चेव गुणऊम तदो तेण विदियवग्गमूले गुणिदे तस्य अचियाणि

अगभेणीका प्रथम वर्गमूल अर्थात् है $(३५५३३ + २५३ = २५३)$ । अगभेणीके द्वितीय वर्गमूलसे
अगभेणीके माजित करने पर द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण होता है उतने अगभेणीके
प्रथम वर्गमूल छप्प अर्थात् है $(३५५३३ + २३ = ४०९३ = २३ × २५३)$ । अगभेणीके तृतीय
वर्गमूलसे अगभेणीके माजित करने पर भेणीके द्वितीय और तृतीय वर्गमूलके परस्पर
गुणा करने पर वहाँ जितनी संख्या उत्पन्न हो उतने प्रथम वर्गमूल छप्प अर्थात् है $(३५५३३
+ ४ = ३६३८४ = २३ × ४ × २५३)$ । इसी विधिसे परवर्तमानकी धर्मशस्त्रकारोंके अंत
क्यातर्ब मागमात्र वर्गस्थान नीचे आकर धर्मशस्त्रके द्वितीय वर्गमूलसे अगभेणीके माजित
करने पर अगभेणीके अंतक्यात प्रथम वर्गमूल छप्प अर्थात् है, इसमें संदेह नहीं करना चाहिये ।
इसप्रकार अरजका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—धर्मशस्त्रका द्वितीय वर्गमूल २, $३५५३३ + २ = ३५७३८$ अब

अब निश्चितका कथन करते हैं— धर्मशस्त्रके द्वितीय वर्गमूलसे अगभेणीके प्रथम
वर्गमूलके माजित करने पर वहाँ जितना प्रमाण छप्प अर्थात् उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य
वारक सिध्दाष्टि अवधारकात्ममें होते हैं ।

उदाहरण— $२५३ + २ = २५८$ (उतने प्रथम वर्गमूल अवधारकात्ममें होते हैं) ।

अथवा उसी धर्मशस्त्रके द्वितीय वर्गमूलका मागहारसे अगभेणीके द्वितीय वर्गमूलके
माजित करने पर वहाँ जो प्रमाण छप्प अर्थात् उससे उसी द्वितीय वर्गमूलके गुणित कर देने
पर वहाँ जो प्रमाण छप्प अर्थात् उतने अगभेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवधारकात्ममें
छप्प अर्थात् है ।

उदाहरण— $२३ + २ = ८$, $२३ × ८ = १८८$

अथवा उसी धर्मशस्त्रके द्वितीय वर्गमूलका मागहारसे अगभेणीके तृतीय वर्गमूलके
माजित करने पर वहाँ जितना प्रमाण अर्थात् उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके

अगसेदीए जगपदरे माग हिदे एगसेदी आगच्छति । अगसेदीदुमागेण अमपदरे मागे हिदे दोम्पि सेदीओ आगच्छति । जगसेदितिमागेण जगपदरे मागे हिदे तिम्पि सेदीओ आयच्छति । एवमेगादि-एगुपरक्रमेण सेदीए मागहारो बहुविधेभ्यो जात्र वेदव्यभिक्तं मसूचिमेव पचो चि । पुनो ताए विच्छेदमसूचीए सेदिमोवद्विय स्त्रेण जगपदरे मागे हिदे विच्छेदमसूचीमेवसेदीओ आगच्छति । एवमप्यरथ वि विच्छेदमसूरीदो अवहारकासो साधेयभ्यो । एदेण मागहारमे सेदीए उपरि खंडिदादिवियप्ता वचन्ता । तत्र तात्र वगगात्वा पमाण-कारण-विरुधि वियप्येहि अवहारकास वचस्वामो । तस्य पमाणं केचित् ? सेदीए अस्तंसेज्जदिमागो अस्तंसेज्जानि सेदिपदमवगगमूलाणि । पमाणं गर्द । केज्ज कारमेण ? सेदिपदमवगगमूलेण सेदिमिद् भागे हिदे सेदिपदमवगगमूले आम

अमभेजीसे जगप्रतरके भाजित करने पर एक अमभेजीका प्रमाण आता है (४२९४९१७२९९ - १ १३९ = १११३९) । अमभेजीके द्वितीय मागका जगप्रतरमें भाग देने पर हा अमभेजियां छप्प आती हैं (४२९४९१७२९९ - ३२७९८ = १३१०७२) । अमभेजीके तृतीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन अमभेजियां आती हैं (४२९४९१७२९९ ÷ २१८४१ = १९९९ ८) । इसप्रकार मागहार बढ़ाते हुए अन्ततः वह नारक विच्छेदमसूचीके प्रमाणसे प्राप्त होते तबतक उसे बढ़ाते जाना चाहिये । अन्ततः उस विच्छेदमसूचीसे अमभेजीको अपपरित्त करके जो छप्प व्यये उससे जगप्रतरके भाजित करने पर त्रितना विच्छेदमसूचीका प्रमाण है उतनी अमभेजियां छप्प आती हैं । इसीप्रकार अग्रज भी विच्छेदमसूचीसे अवहारकास साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—जगभेजी १११३९, जगप्रतर ४२९४९१७२९९, १११३९ - २ = ३२७९८
 $४२९४९१७२९९ ÷ ३२७९८ = १३१०७२$, नारक मिष्याद्यि जीवराशि

अब इस मागहारका अध्ययन करके जगभेजीके ऊपर कल्पित यदि विच्छेदका कथन करना चाहिये । उनमेंसे पहले वर्गस्यात्ममे प्रमाण कारण, निरुधि और विच्छेदके द्वारा अवहारकासका प्रमाण बतलाते हैं—

पृथ—सामान्य नारक मिष्याद्यि जीवराशिके सानेके छिये जो मागहार क्या है उसका प्रमाण कितना है ?

समाधान—एक मागहारका प्रमाण जगभेजीके अस्तंस्यात्ममे माग है जो जगभेजीके अस्तंस्यात्म प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका पर्यंत समाप्त हुआ ।

उदाहरण—अवहारकास ३२७९८, जगभेजीका प्रथम वर्गमूल २१९, $३२७९८ ÷ २१९ = १२८$ (यहां १२८ को अस्तंस्यात्म मान कर बतानेवार प्रथम वर्गमूल २१९ का जोड़ ३२७९८ होता है)

संक्ष—जगभेजीके अस्तंस्यात्म प्रथम वर्गमूलप्रमाण अवहारकास किस प्रकारसे है ?

समाधान—क्योंकि, जगभेजीके प्रथम वर्गमूलसे जगभेजीके भाजित करने पर

पट्टपुत्रमादा । अहवा अवहारकालागमनाभिमिषभागहारेण गिरुद्वरामीदो हेद्वा न वा सं
 वा वगमूलमोवद्विष गिरुद्वरामिस्स हेद्विमवगमूलाणि एकवारं गुणिदे अत्य इच्छिदरासी
 उपज्जदि तत्थ वि हेद्विमवियणो अत्य चि मणत्ताणमभिप्पाण अट्टम्वे हेद्विमविपण
 वचइस्सामो । घणं गुलविदियवगमूलेण सट्टिपडमवगमूले भाग हिदे तत्थागदलद्वेण
 सट्टिपडमवगमूले गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा तेणैव भागहारेण सेट्टिविदियवग
 मूलमवहारिय तत्थागदेण तद्वेण सं चैव विदियवगमूल गुणेऊण वण पडमवगमूल
 गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा घणं गुलविदियवगमूलेण सेट्टिविदियवगमूलमवहारिय
 तत्थ सट्टम सं चैव विदियवगमूल गुणेऊण तेण विदियवगमूल गुणिय तेण सेट्टिपडम
 वगमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अणेण विहाणेण पल्लिदावमवगमसत्तागाणमसरेज्जदि
 भागमववगमद्वानाण पुच गिरुमण करिय अवहारगुणणकरियं काऊण अवहारकालो

क्योंकि, विम-पमाण राशि जगधेर्णीके प्रथम वगमूलस अयहारकालका प्रमाण बहुत अधिक पाया
 जाता है । अथवा अयहारकालके सानेके छिपे निमित्तभूत भागहारसे निरुद्धराशि जगधेर्णीसे
 नीचे किसी भी वगमूलको अपवर्जित करके जो सध्य भाग उससे निरुद्धराशिसे अघलन
 वगमूलोंको एकवार गुणित करने पर वहाँ पर इच्छित राशि उत्पन्न होती है वहाँ पर भी
 अघलन विरुद्ध पाया जाता है, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले आचार्योंके समिप्रायसे
 अयुक्तमें अघलन विरुद्धको बतलाते हैं—

घर्णागुमके द्वितीय वगमूलसे जगधेर्णीके प्रथम वगमूलके भाजित करने पर वहाँ
 जो प्रमाण सध्य अथ उससे जगधेर्णीके प्रथम वगमूलके गुणित कर देने पर अयहारकालका
 प्रमाण होता है ।

उदाहरण— $१ - २ = १२८, २१९ \times १०८ = ३२३६८$ अथ

अथवा उर्सा भागहारसे अथवा घर्णागुमके द्वितीय वगमूलसे जगधेर्णीके द्वितीय
 वगमूलको भाजित करके वहाँ जो सध्य भाग उससे उर्सा जगधेर्णीके द्वितीय वगमूलको गुणित
 करके पुनः उस गुणित राशिसे जगधेर्णीके प्रथम वगमूलके गुणित करने पर अयहारकालका
 प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $१९ - २ = ८, १९ \times ८ = १०८, ८ \times १०८ = १ ३६८$ अथ

अथवा घर्णागुमके द्वितीय वगमूलसे जगधेर्णीके तृतीय वगमूलको भाजित करके वहाँ
 जो सध्य भाग उससे उर्सा तृतीय वगमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे
 जगधेर्णीके द्वितीय वगमूलको गुणित करके जो सध्य भाग उससे जगधेर्णीके प्रथम वगमूलके
 गुणित करने पर अयहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $४ - २ = २, ४ \times २ = ८, १९ \times ८ = १०८, ८ \times १०८ = ३२३६८$ अथ

इसी विधिसे पञ्चापमका घर्णागुमकाभी अयहारसे भागमात्र वगधेर्णीको वृत्त-
 रूपसे राजकर और घर्णागुमके द्वितीय वगमूलप्रमाण भागहारसे अंतिम भाग अथवा

रूपाणि तत्तियाणि सेटिपदमवगममूलाणि । अपेक्ष विहायेष्व असंख्येज्जाणि वगगद्गानाणि
हेहा ओसरिऊय पञ्चगुलविदियवगममूलेण तस्सुपरिमवगमवहारिय सुदूष पञ्चगुलपदम
वगममूलं गुणिय तेण च गुणिपरासिणा घञगुला गुणैयञ्चो । एदेण कमय उवरि उवरी
अवट्टिदवगगद्गानाणि सट्टिभिदियवगममूलानि सञ्जाणि गुणैयञ्चानि । तस्य तत्तियाणि
रूपाणि तत्तियाणि पदमवगममूलाणि इवन्ति । एव पिरुची गदा ।

वियप्पो इविहो, इट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । वेरूवे हेट्टिमवियप्पो
परिय, जगसेट्टिसमापवेरूववगमस्य पदमवगममूलं केण वि मागहारेण अवहारिअति
अवहारकाळस्य अपुप्पचीदो । य च जगसेट्टिसमापवेरूववगमं अस्सिऊय अवहार
कासुप्पची बोप्पु सक्किअदे, हेट्टिम-उवरिमवियप्पेसु थिरुहेसु मज्झिमवियप्पस्य अंतं
वादो । अट्टरूवे हेट्टिमवियप्पो अस्सि, विहज्जमापसेट्टिपदमवगममूलादो अवहारकाळस्य

उदाहरणम्—उत्तमस्य द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर वहाँ जितना प्रमाण थावे उतने
जगधेजीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकाळमें छप्प आते हैं ।

उदाहरण— $४ + २ = ६$, $४ \times २ = ८$, $१६ \times ८ = १२८$

इसी विधिसे अक्षरपाठ वधस्थान बीजे आकर भर्नागुलके द्वितीय वर्गमूलसे उत्तमे
अपरिम वर्गको माजित करके जो छप्प थावे उससे धर्नागुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके
जो गुणित राशि छप्प थावे उससे भर्नागुलको गुणित करना चाहिये । इसी क्रमसे जगधेजीके
द्वितीय वर्गमूल पर्यन्त ऊपर ऊपर अवस्थित संपूर्ण वर्गस्थानोंको गुणित करना चाहिये ।
इसप्रकार गुणा करनेसे वहाँ जितना प्रमाण छप्प थावे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य मित्वा-
रहि नारक अवहारकाळमें होते हैं । इसप्रकार निकटिका वर्तमान समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $४ + २ = ६$, $४ \times २ = ८$, $१६ \times ८ = १२८$

विशेषार्थ—यहाँ ध्यानसे स्पष्ट करनेके लिये जो अक्षररहि बी है उसमें जगधेजीका
द्वितीय वर्गमूल और भर्नागुलका प्रमाण एक पङ्क जाता है जो १६ है । अतः निकटिका कथन
करते हुए जगधेजीके द्वितीय वर्गमूलका ऊपर ऊपर वर्गस्थानोंका उत्तरोत्तर गुणा करते
जाना चाहिये । इस कथनके अनुसार अक्षररहिमें वहाँ तक (१६ तक) गुणा बढ़ानेसे वह
संख्या छप्प भा जाती है जितने जगधेजीके प्रथम वर्गमूल सामान्य मित्वावरहि नारक अवहार
काळमें पाये आते हैं ।

विचक्ष्य हो प्रक्षरका है, अवस्तन विचक्ष्य और अपरिम विचक्ष्य । उनमेंसे वहाँ
प्रकृतमें द्विरूपधारामें अवस्तन विचक्ष्य संभव नहीं है क्योंकि, जगधेजीके समान द्विरूप वर्तके
प्रथम वर्गमूलको किसी भी मागहारसे अपहत करने पर अवहारकाळ नहीं उत्पन्न हो सकता
है । यदि जगधेजीके समान द्विरूपवर्गका अवग्रह करके अवहारकाळकी उत्पत्ति कही जावे तो भी
बहना ठीक वही है क्योंकि विचक्ष्यके अवस्तन और अपरिम विचक्ष्यसे निष्पन्न हो जाने पर
मध्यम विचक्ष्य नहीं बन सकता है । यहाँ मध्यममें भी अवस्तन विचक्ष्य नहीं पाया जाता है

बहुशुबलमादा । अहवा अवहारफालागमणमिचभागहारेण निरुद्धरासीदो हेद्वा ज वा त
 वा वगमूलमोषद्विष निरुद्धरासिस्स हेद्विमवग्गमूलाणि एकवारं गुणिदे अत्थ इच्छिद्धरासी
 उत्पज्जद्वि सत्थ वि हेद्विमवियप्पो अत्थि पि भणंताममभिप्पाएण अद्वरूवे हेद्विमवियप्प
 वत्तइस्सामो । पर्णगुलविदियवग्गमूलेण सत्थिपडमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागइल्लद्वेण
 सत्थिपडमवग्गमूले गुणिदे अवहारफालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सेद्विविदियवग्ग
 मूलमवहारिय तत्थागदेष लद्वेण थं चेव विदियवग्गमूल गुणेऊण तेण पडमवग्गमूलं
 गुणिदे अवहारफालो होदि । अहवा पर्णगुलविदियवग्गमूलेण सेद्वितदियवग्गमूलमवहारिय
 तत्थ लद्वेण थं चेव तदियवग्गमूल गुणेऊण तेण विदियवग्गमूलं गुणिय तेण सेद्विपडम
 वग्गमूल गुणिदे अवहारफालो होदि । अणण विहाणेण पल्लिदोवमवग्गसलागाणमसत्थेज्जदि
 मागमत्तवग्गहाणाण पुष निरुमण करिय अवहारगुणणकिरिय फाऊण अवहारफालो

क्योंकि, विमज्जमान राशि जगधेनीके प्रथम वर्गमूलसे अवहारकाष्ठका प्रमाण बहुत अधिक पाया
 जाता है । अथवा अवहारफालके मानके छिये निमित्तमूल भागहारसे निरुद्धराशि जगधेनीसे
 नीचे किसी भी वर्गमूलको अपवर्जित करके जो सध्य भाग्य उससे निरुद्धराशिके अघलन
 वर्गमूलको एकवार गुणित करने पर जहाँ पर इच्छित राशि उत्पन्न होती है वहाँ पर भी
 अघलन पितृव्य पाया जाता है इसप्रकार प्रत्येपादन करनेवाले भाषायोंके अभिप्रायसे
 अष्टरूपमें अघलन विरूपको बतलाने है—

घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगधेनीके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर वहाँ
 जो प्रमाण सध्य भाग्य उसमें जगधेनीके प्रथम वर्गमूलके गुणित कर देने पर अवहारकाष्ठका
 प्रमाण होता है ।

उदाहरण—६ १ - २ = १२८। २ १ × १२८ = ३२७१८ अथ

अथवा उसी भागहारसे अथवा घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगधेनीके द्वितीय
 वर्गमूलको माजित करके वहाँ जो सध्य भाग्य उसमें उसी जगधेनीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित
 करके पुनः उस गुणित राशिसे जगधेनीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकाष्ठका
 प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—१६ + २ = ८। १६ × ८ = १२८ ६ १ × १२८ = ३२७१८ अथ

अथवा, घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगधेनीके तृतीय वर्गमूलको माजित करके वहाँ
 जो सध्य भाग्य उसमें उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे
 जगधेनीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो सध्य भाग्य उसमें जगधेनीके प्रथम वर्गमूलके
 गुणित करने पर अवहारकाष्ठका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—४ + २ = २। ४ × २ = ८। १६ × ८ = १२८ ६ १ × १२८ = ३२७१८ अथ

इसी विधिसे पष्ठादमकी पान्नालकाशिके अंगण्यायके भागमात्र वगैरानोंको शृणु-
 कपम रोजकर भी घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण भागहारसे अंतिम आदि व्याप्तोंको

साधेयम्भो । तस्य अंतिमवियर्णं वचइस्सामो । यमगुलविदियवग्गमूलेण पर्णगुल-
पदमवग्गमूले मागे हिदे वत्थागदेण त चेव पर्णगुलपदमवग्गमूले गुणेऊम तेव
गुमिदरासिमा पर्णगुले गुणेऊम एवमुपरि उपरि अबहिदाणि वग्गकावामि
सेट्ठिपदमवग्गमूलेपच्छिमाप्ति भिरंतं गुणेयवामि । एवं गुमिदे वेरयमिच्छादि
अवहारकालो होदि । एव अन्धो जदि वि पुम्भं पक्खिदो वा वि हेक्खिमवियपत्तंवेण
मदवुद्धिसिस्सापुग्गमहं पुपरवि पक्खिदो ।

पजापगे वचइस्सामो । पर्णगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिपदमवग्गमूले गुणेऊम
यमलोपपदमवग्गमूले मागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेट्ठिपदमवग्ग-
मूलेण यमलोपपदमवग्गमूले मागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुनो पर्णगुलविदियवग्गमूलेण
सेट्ठि मागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि चि क्खु गुणेऊम मागग्गमहं कदं ।
अहवा एत्थं इगुणादिकमेण अवहारकालो साधेयम्भो । अहवा पर्णगुलविदियवग्गमूलेव
सेट्ठिपदमवग्गमूले गुणेऊम तेण यमलोपविदियवग्गमूलेमवहारिम तं चेव गुमिदे अवहार

मात्रित करके ओ छम्भ भावे उससे जगभेजीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत गुणनक्रिया करके
अवहारकाळ साध बना चाहिये । जनमेंसे अंतिम विकल्पको बतघाते हैं—

पर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे पर्णागुलके प्रथम वर्गमूलके मात्रित करने पर बां
जाये हुए छम्भसे उसी पर्णागुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके ओ गुणित राशि भावे उससे
पर्णागुलको गुणित करके पुनः जगभेजीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत ऊपर उपर स्थित वर्गस्थानोंको
विरन्तर गुणित करना चाहिये । इसप्रकार पूर्व पूर्व गुणित राशिसे उक्तोक्त वर्गस्थानके गुणित
करते जाने पर नारक मित्यादिशिसंख्या अवहारकाळका प्रमाण जाता है । इस वर्गका
प्रकरण यद्यपि पहले कर भाये हैं तो भी मन्त्रवृत्ति शिष्योंके अनुमहके लिये अवस्तान विकल्पके
संबन्धसे इसका फिरसे प्रकरण किया है ।

जब जनानमें अयस्तन विकल्प बतघाते हैं— पर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जग-
भेजीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके ओ छम्भ भावे उससे जनकोके प्रथम वर्गमूलके
मात्रित करने पर अवहारकाळका प्रमाण जाता है, क्योंकि, जगभेजीके प्रथम वर्गमूलसे जन-
कोके प्रथम वर्गमूलके मात्रित करने पर जगभेजीका प्रमाण भ्रष्टा है पुनः पर्णागुलके द्वितीय
वर्गमूलसे जगभेजीके मात्रित करने पर अवहारकाळका प्रमाण जाता है । इसप्रकार अवहार-
काळका प्रमाण जाता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके जनन्तर मागकर ग्रहण किया ।

उदाहरण—यमकाका प्रथम वर्गमूल २५१ । १ १ × २ = ५१२ ^{२५१} _{२५२} = ३२३१८ अथ

अथवा, यहां पर द्विगुणादि क्रमसे अवहारकाळ स्थापना चाहिये । अथवा
पर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगभेजीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके ओ छम्भ भावे उससे
जनकोके द्वितीय वर्गमूलको अवहत करके ओ छम्भ भावे उससे उसी जनकोके द्वितीय

काला होदि । एव हेहा वि आभिऊण वचचं । इदिमवियप्पा गदा ।

उपरिमवियप्पो विविहे, गहिदो गहिग्गहिदो गहिदुग्गगारो चेदि । तत्थ गहिदं वचइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेत्थिसमाणवेरुवग्ग गुणेऊण तेण तम्भग्गवग्गो माग हिदे अवहारकाला आगच्छदि । स क्व ? सेत्थिसमाणवेरुवग्गण तम्भग्गवग्गो भागे हिदे सती आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेत्थिहि मागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि चि फट्ठु गुणेऊण मागग्गहण कद । महमा अवहार काला विगुणादिफमण वज्जुवेयम्भो । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते राप्पिस्स अद्वच्छदमण कदे अवहारकाला आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदमयसलागा केत्थिया ? घण गुणविदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणयसदियमेत्थिसमाणवेरुवग्गस्स अद्वच्छदमयमेत्ता ।

घग्गमूलको गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण जाता है । इसप्रकार नीचेके स्थानोंमें भी जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अचस्तन विकरर समान्त दुष्सा ।

उदाहरण—घनटोकका द्वितीय घग्गमूल १९, २' ९ × २ = १२, १९' + ५१२ = ८, १९ × ८ = ३२७६८ मय

उपरिम विकरर तीन प्रकारका है गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकररको बतसले है—घनांगुलके द्वितीय घग्गमूलसे अगभेणीके समान ठिकपयगको गुणित करके जो लब्ध भागे उसका उसी अगभेणीके समान ठिकपयगके घग्गमें माग देने पर अवहारकालका प्रमाण जाता है क्योंकि अगभेणीके समान ठिकपयगका उसीके उपरिम घग्गमें माग देने पर अगभेणीका प्रमाण जाता है पुनः घनांगुलके द्वितीय घग्गमूलका अगभेणीमें माग देने पर अवहारकालका प्रमाण जाता है । अवहारकालका प्रमाण इसप्रकार जाता है यथा समप्रकार पहले गुणा करके अनन्त मागका ग्रहण किया । अथवा विगुणादि करण विधिसे अवहारकाल बहा लेना चाहिये ।

उदाहरण—१ ३९ × २ = १३१०३२, १' ३९ - १३१०३२ = ३२३९८ मय

उक्त मागहारके अन्तर्ले अर्धच्छेत् हो उत्तरीयार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेत् करने पर भी अवहारकालका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारक १९ + १ = १७ अर्धच्छेत् होने है अतः उत्तरीयार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेत् करने पर भी अवहारकालका प्रमाण जाता है ।

मुक्ता—उक्त मागहारकी अर्धच्छेत् शालावायं जितनी होती है ?

समाधान—अगभेणीके समान ठिकपयगकी अर्धच्छेत् शालावायंमें घनांगुलके द्वितीय घग्गमूलकी अर्धच्छेत् शालावायं मिला देने पर उक्त मागहारकी अर्धच्छेत् शालावायंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—अगभेणी समान ठिकपयग १९ ३९ के अर्धच्छेत् १९, घनांगुलके द्वितीय घग्गमूल २ के अर्धच्छेत् १, १९ + १ = १७ म ।

साधेयम्भो । तत्तम अंतिमविवरणं बचइस्सामा । यमगुलविदियवगममूलेम पणगुन-
पदमवगममूले भागे हिदे तत्तमागदेण त वेम भर्गगुलपदमवगममूल गुणेऊण तेम
गुणिइरासिप्पा पणगुल गुणेऊण एवमुवरि उवरि अवहिदुमाणि पणगुलभाणि
सेत्तिपदमवगममूलपच्छिमाणि विरत्तर गुणेयम्भाणि । एवं गुणिदे जेत्तपमिच्छपुटि
अवहारकासो होदि । एस अत्थो अदि वि पुम्भं परुविदो ता वि हेत्तिमविपयसंवेपेण
मंदबुद्धिसिस्सापुग्गहं पुग्गरवि परुविदो ।

पणापये बचइस्सामो । पणगुलविदियवगममूलेण सेत्तिपदमवगममूल गुणेऊण
पणलोपपदमवगममूले भागे हिदे अवहारकासा आगच्छदि । तं कथं ? सेत्तिपदमवग-
ममूलेण पणलोपपदमवगममूले भागे हिदे सेत्ती आगच्छदि । पुणो पणगुलविदियवगममूलम
सेत्ति भागे हिदे अवहारकासो होदि । एवमागच्छदि चि क्कु गुणेऊण मागगाइयं कइ ।
अइवा एत्थ इगुणादिकमेण अवहारकासो साहेयम्भो । अइवा पणगुलविदियवगममूलेप
सेत्तिपदमवगममूल गुणेऊण तेम पणलोपविदियवगममूलमवहारिय सं वेम गुणिदे अवहार

मात्रित करके ओ लघ्व भागे उल्लेख अग्रेषीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत गुणनक्रिया करके
अवहारकास साध लेना चाहिये । उनमेंसे अंतिम विकल्पको बतलाते हैं—

धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलसे धर्मागुलके प्रथम वर्गमूलके मात्रित करने पर बड़ा
अपेय रूप लघ्वसे वही धर्मागुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके ओ गुणित राशि भागे उल्लेख
धर्मागुलको गुणित करके पुनः अग्रेषीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत ऊपर बपर स्थित वर्गस्यायको
विरत्तर गुणित करना चाहिये । इसप्रकार पूर्व पूर गुणित राशिसे उल्लेखोत्तर वर्गस्यायके गुणित
करके जाने पर बारक मिथ्यादृष्टिसंख्या अवहारकासका प्रमाण आता है । इस अर्थका
प्रकल्प यद्यपि पहले कर भागे हैं तो भी मन्त्रमुद्रि शिष्योंके अनुग्रहके लिये अथस्तन विकल्पके
संबन्धसे इसका फिरसे प्रकल्प किया है ।

अब वनायनमें अथस्तन विकल्प बतलाते हैं— धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलसे अग्रे-
षीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके ओ लघ्व भागे उल्लेख धनकोके प्रथम वर्गमूलके
मात्रित करने पर अवहारकासका प्रमाण आता है, क्योंकि, अग्रेषीके प्रथम वर्गमूलसे वन-
लोका प्रथम वर्गमूलके मात्रित करने पर अग्रेषीका प्रमाण आता है । पुनः धर्मागुलके द्वितीय
वर्गमूलसे अग्रेषीके मात्रित करने पर अवहारकासका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहार-
कासका प्रमाण आता है देखा समझकर पहले गुना करके अनन्तर मागका प्रकल्प किया ।

उदाहरण—धनकाका प्रथम वर्गमूल २५९ । $२५९ \times ९ = २३३१$ $\frac{२३३१}{२५} = ९३.२४४$ अब

अथवा, बड़ा पर द्विगुणादि क्रमसे अवहारकास साध लेना चाहिये । अथवा
धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूलसे अग्रेषीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके ओ लघ्व भागे उल्लेख
धनकोके द्वितीय वर्गमूलको अपहरण करके ओ लघ्व भाग पहले उल्लेख धनकोके द्वितीय

अदृच्छेदणं फदे वि अवहारकालो आगच्छति । एतच्च विद्वद्वाणसलागामो विरलिय
 विग करिय अण्णाण्यमत्तरासिना रूक्थेण वगसेदिअदृच्छेदणं शुभिय घर्णगुल
 विदियवगगमूलस अदृच्छेदणं पक्खिते मागहारस्त अदृच्छेदणया इवति । एवं
 संखेज्जासखेज्जाणंतुस वगगमूलेसु भेयध्व । अहुरूपपरुषणा गदा । पनापणे वत्तस्सामो ।
 पणगुलविदियवगगमूलेण वगपदरं शुभेऊण पणलोगे मागे हिदे अवहारकालो आगच्छति ।
 केण कारणेण ? अगपदरेण पणलोग मागे हिदे सेदी आगच्छति । पुनो घर्णगुलविदिय
 वगगमूलेण सेदिमि मागे हिदे अवहारकालो आगच्छति । एवमागच्छति चि कहु
 गुणेऊण मागगगण फट । अहवा घर्णगुलविदियवगगमूलेण वगपदरं शुभऊण तेण
 पणलोग गुणेऊण पणलोगउपरिमवग्गे मागे हिदे अवहारकालो आगच्छति । केण
 कारणेण ? पणलोगेण सस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पणलोगो आगच्छति । पुनो वि
 वगपदरेण पणलोग मागे हिदे सेदी आगच्छति । पुनो पणगुलविदियवगगमूलेण सेदिमि

उदाहरण—उक्त मागहारके $१९ + १ = २०$ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीबार उक्त

प्रमाण राशि के अर्धच्छेद करने पर ३२७३८ प्रमाण अवहारकाख्य राशि आती है ।

यहाँ पर जितने स्थान ऊपर गये हैं उतनी शब्दाक्षरोंका विरलन करके नीर उक्त
 राशि के प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक
 कम करके शेष राशिसे अगभेजीके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो छद्म भावे उसमें घर्णगुलके
 द्वितीय घर्णमूलके अर्धच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित मागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता
 है । इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त घर्णस्थानोंमें से जाना चाहिये । इसप्रकार
 मध्यम प्ररूपका समाप्त हुई ।

अब पनापनमें पृथीत उपरिम विवक्ष्यको बतलाते हैं—घर्णगुलके द्वितीय घर्णमूलसे
 अगभेजीके गुणित करके जो छद्म भावे उससे घनकोकके माजित करने पर अवहारकाख्यका
 प्रमाण आता है क्योंकि, अगभेजीसे घनकोकके माजित करने पर अगभेजीका प्रमाण आता
 है पुनः घर्णगुलके द्वितीय घर्णमूलसे अगभेजीके माजित करने पर अवहारकाख्यका प्रमाण
 आता है । इसप्रकार अवहारकाख्य आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका
 प्रदत्त किया ।

उदाहरण— $१ \times १९ = ८ \times १९३४१९२५ \quad ६५३३१ + ८५८९३४५४२ =$
 ३२७३८ अथ

अथवा घर्णगुलके द्वितीय घर्णमूलसे अगभेजीके गुणित करके जो छद्म भावे उससे
 घनकोकके गुणित करके जो छद्म भावे उसका घनकोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर अव
 हारकाख्य प्रमाण आता है क्योंकि, घनकोकका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनकोक
 आता है पुनः अगभेजीसे घनकोकमें भाग देने पर अगभेजी आती है पुनः घर्णगुलके
 द्वितीय घर्णमूलका अगभेजीमें भाग देने पर अवहारकाख्यका प्रमाण आता है । इसप्रकार

उपरि सम्प्रत्य ऋद्धिद्वद्वाणवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्मरपरसिवा
तिरुवूणेन सप्पिसमाणवेरुववग्गस्स अद्वन्द्वेद्वण गुणिय घर्णगुलविदियवग्गमूलस्स
अद्वन्द्वेद्वयपक्खिउत्तमत्ता मवति । एव संखेन्नासखेन्नापत्तेसु वग्गद्वाणेसु वेयम्भं ।
वेरुमपरुवणा गदा । अद्वरूवे वचइस्सामा । घर्णगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिम्हि मागे
हिदे अबहारकालो आगच्छदि । तस्म मागहारस्स अद्वन्द्वेद्वयपमेत्ते रासिस्स अद्वन्द्वे
द्वय कदे वि अबहारकालो आगच्छदि । अहवा घर्णगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठि गुणेत्तम
जगपदरे भागे हिदे अबहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगसेट्ठीए जगपदरे
भागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुनो वि घर्णगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिम्हि मागे हिदे
अबहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि पि कहु गुणेत्तम मागग्गहजं कइ । अहवा
अबहारकाला पिठणादिकरणेण बहुवेय्यो । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वेद्वयपमेत्ते रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वर्गसाल ऊपर जायें उनकी वर्गसालाध्यर्थोंका विच्छेदन करके और
बस विच्छेदित राशिके प्रत्येक एकको दोहरा करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
उसमेंसे तीन कम करके शेष रही हुई राशिसे जगधेवीके समान द्विरूप वर्गकी अर्धच्छेद
सालाध्यर्थोंको गुणित करके जो लब्ध भागे उसमें घर्णागुलके द्वितीय घगमूलके अर्धच्छेद मिला
देने पर जो जोड़ हो उतने विवक्षित मागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार सवयात् अन्त-
र्यात् और अन्तर्ग वर्गस्थानोंमें से जाया चाहिये । इसप्रकार द्विरूप प्रकृपणा समाप्त हुए ।

अब अष्टरूपमें बतलाते हैं—घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगधेवीके माजित करने
पर अष्टारकासका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१ $131 - 2 = 129$ अथ

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद
करने पर भी अष्टारकासका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारका १ अर्धच्छेद है अतः उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके
अर्धच्छेद करने पर भी १२९ प्रमाण अष्टारकास आता है ।

अथवा, घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगधेवीको गुणित करके जो लब्ध भागे उसका
जगप्रतरमें भाग देने पर अष्टारकासका प्रमाण आता है क्योंकि जगधेवीसे जगप्रतरके
माजित करन पर जगधेवीका प्रमाण आता है पुनः घर्णागुलके द्वितीय घगमूलसे जगधेवीके
माजित करन पर अष्टारकासका प्रमाण आता है । इसप्रकार अष्टारकासका प्रमाण आता है
देखा समझकर पहले गुणा करके अन्तर भागका ग्रहण किया । अथवा द्विगुणादिकरण विधिसे
अष्टारकास बड़ा सता चाहिये ।

उदाहरण— $131 \times 2 = 262$, $262 - 131 = 131$ अथ

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद
करने पर भी अष्टारकासका प्रमाण आता है ।

अदृच्छेदमए कदे वि अवहारफालो आगच्छदि । एत्थ चडिद्वानसलागाओ विरलिय
 विग करिय अण्णोणमत्तरासिणा रूपेण जगसेदिअदृच्छेदमए गुणिय घर्णगुल
 विदियवग्गमूलस्स अदृच्छेदमए पक्खिते मागहारस्स अदृच्छेदमया इवति । एवं
 संखेन्नासंखेन्नामतेसु वग्गहाभेसु पेयम् । अहुरूपरूपमा गहा । पमाघणे वचस्सामो ।
 घणगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण घणलोगे मागे हिदे अवहारफालो आगच्छदि ।
 कण कारणेण ! जगपदरेण घणलोगे मागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घर्णगुलविदिय
 वग्गमूलेण सेढिम्हि मागे हिदे अवहारफालो आगच्छदि । एवमागच्छदि पि कहु
 गुणेऊण मागग्गह्व क । अहवा घर्णगुलविदियवग्गमूलम जगपदरं गुणेऊण तेण
 घणलोग गुणेऊण घणलोगउपरिमवग्गे मागे हिदे अवहारफालो आगच्छदि । कण
 कारणेण ! घणलोगेण तस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे घणलोगो आगच्छदि । पुणो वि
 जगपदरेण घणलोगे मागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घणगुलविदियवग्गमूलम सेढिम्हि

उदाहरण—उक्त मागहारके $१६ + १ = १७$ अर्थच्छब्द होते हैं अतः इतनीबार उक्त
 मध्यमाय राशिसे मध्यच्छेद करने पर ३९७६८ प्रमाण अवहारकाखण्डराशि बाकी है ।

यहाँ पर जितने स्थान ऊपर गये हैं उतनी घण्डाकाओंका विच्छेदन करके और उक्त
 राशिसे प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक
 कम करके शेष राशिसे अगम्रेणीके अर्थच्छेदोंको गुणित करके जो सध्य भावे उसमें घनांशुसके
 द्वितीय वर्गमूलके मध्यच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित मागहारके अर्थच्छब्दोंका प्रमाण होता
 है । इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें छे जाना चाहिये । इसप्रकार
 मध्यम प्रकृपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें पृथीत उपरिय विवक्ष्यको बतलाते हैं— घनांशुसके द्वितीय वर्गमूलसे
 अगम्रतरको गुणित करके जो सध्य भावे उससे घनछोकके भाजित करने पर अवहारकाखण्डका
 प्रमाण आता है क्योंकि अगम्रतरसे घनछोकके भाजित करने पर अगम्रेणीका प्रमाण आता
 है पुनः घनांशुसके द्वितीय वर्गमूलसे अगम्रेणीके भाजित करने पर अवहारकाखण्डका प्रमाण
 आता है । इसप्रकार अवहारकाख आता है ऐसा समझकर पढ़ते गुणा करके अनन्तर मागका
 महान किया ।

उदाहरण— $११११ \times २ = ८१८२२४१९२$ $११११^१ + ८१८२२४१९२ =$
 ८२७३५ अब

अथवा घनांशुसके द्वितीय वर्गमूलसे अगम्रतरको गुणित करके जो सध्य भावे उससे
 घनछोकको गुणित करके जो सध्य भावे उसका घनछोकके उपरिम वर्गमें माग देने पर अथ
 दागबसका प्रमाण आता है, क्योंकि घनछोकका उसके उपरिम वर्गमें माग देने पर घनछोक
 आता है, पुनः अगम्रतरका घनछोकमें माग देने पर अगम्रेणी आती है पुन घनांशुसके
 द्वितीय वर्गमूलका अगम्रेणीमें माग देने पर अवहारकाखण्डका प्रमाण आता है । इसप्रकार

उपरि सम्बन्धय चिद्विद्वान्बग्नसलागाग्नौ विरलिय विग करिय अण्णोण्णम्मत्तरासिवा
 विरुव्वेण सेदिसमापवेरुव्वग्नस्त अद्वन्द्वेदणए गुणिय पन्नगुलविदियवग्गमूत्तस
 अद्वन्द्वेदणयपक्खिपत्तमेत्ता भवंति । एव संखेज्जासंखेज्जागतेशु वग्गगुणेषु पेयम्भं ।
 पेत्तमपरुव्वणा गदा । अट्ठकूले वत्तइत्तामो । पर्णगुलविदियवग्गमूलेण सेदिमिह मागे
 हिदे अबहारकालो आगच्छदि । वत्त मागहारस्त अद्वन्द्वेदणयमेत्ते रासिस्त अद्वन्द्वे
 दणए कदे वि अबहारकालो आगच्छदि । अहना पर्णगुलविदियवग्गमूलेण सेदि गुणेज्ज
 जगप्परे मागे हिदे अबहारकालो आगच्छदि । केज कारणेण ? जगसेहीए जमपरे
 मागे हिदे सेटी आगच्छदि । पुणो वि घग्गगुलविदियवग्गमूलेण सेदिमिह मागे हिदे
 अबहारकालो आमच्छदि । एवमागच्छदि चि कूट गुणेज्ज मागग्गहं कदं । अहना
 अबहारकाला विट्ठादिकरणेण वट्ठावेय्यो । वत्त मागहारस्त अद्वन्द्वेदणयमेत्ते रासिस्त

ऊपर सर्वत्र कितने बग्नसलागाग्नौ विरलिय करके और
 इस विरलिय राशिसे मत्तमे पदके शीर्ष करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
 उसमेंसे तीन कम करके दोप रही हुई राशिसे जगमेयीके समान द्विरूप वर्ग्यी अर्धच्छेद
 शब्दात्म्यके गुणित करके जो छप्प भावे उसमें घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मित्रा
 देने पर जो जोड़ हो वतने विवसित मागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात भत्त-
 काल और जगत्त वर्गस्थानोंमें के जाना चाहिये । इसप्रकार द्विरूप प्रकृति समाप्त हुई ।

अब अष्टकमें बतलाते हैं—घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगमेयीके भाजित करने
 पर अबहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—१५३९ - २ = ३२७९८ अब

उक्त मागहारके कितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भग्नमान राशिसे मध्यच्छेद
 करने पर भी अबहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त मागहारका १ अर्धच्छेद है अतः उतनीवार उक्त भग्नमान राशिसे
 अर्धच्छेद करने पर भी ३२७९८ प्रमाण अबहारकाल आता है ।

अथवा, घर्णागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगमेयीको गुणित करके जो छप्प भावे उत्पन्न
 जगप्पत्तमें माग देने पर अबहारकालका प्रमाण आता है क्योंकि जगमेयीसे जगप्पत्तके
 भाजित करने पर जगमेयीका प्रमाण आता है, पुनः घर्णागुलके द्वितीय घर्णमूलसे जगमेयीके
 भाजित करने पर अबहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अबहारकालका प्रमाण आता है,
 देखा समझकर पहले गुणा करके जगत्त मागका ग्रहण किया । अथवा द्विगुणादिकरण विधिते
 अबहारकाल बड़ा सन्ना चाहिये ।

उदाहरण—१ ५३९ × २ = १३१ ७२, ४२९७९९७५५९९ + १३१ ७२ = ३२७९८ अब

उक्त मागहारके कितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भग्नमान राशिसे अर्धच्छेद
 करने पर भी अबहारकालका प्रमाण आता है ।

एतय खेडिद माजिद-विरातिद अत्रहिदपरूषणाओ पुण्व व पन्वेइम्नाआ । तस्य पमाणं वचइस्सामो । तं जघा-अगपदरस्म असंखेज्जादिमागो असंखेज्जाओ सेदीआ । पमाण गद । केण कारणेण ? सेदीए अगपदरे माग हिदे सेदी आगच्छदि । सेदिदुमागण जगपदर मागे हिदे होणि सेदीओ आगच्छति । सेदितिमागण जगपदरे मागे हिदे तिणि सेदीओ आगच्छति । एव गत्तुण विस्समसूचीमजिदसेदीए जगपदरे माग हिदे अस खेज्जाओ सेदीओ आगच्छति चि युच । फरण गद । भिरुसि वचइस्सामो । सेदीए असंखेज्जादिमागेण सेदिमिह मागे हिदे तत्प्रागदाणि जघियाणि रूपाणि तघियाओ सेदीमा । अहवा विस्समसूचीरूपमेवामो । गिरुची गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेडिमवियप्पो उवरिमवियप्पो भदि । तस्य हेडिमवियप्प वच इस्सामो । वेस्व हेडिमवियप्पो पत्ति । कारण पुण्व व वचन् । अहुरूपे हेडिमवियप्प

विरहित और अणुवचन प्रकृष्टा पहलेके समान करना चाहिये (देखो पृष्ठ ४१, ४२) । अब नारक सिध्दादि जीवराशिका प्रमाण बतछाते हैं । यह इसप्रकार है—

नारक सिध्दादि जीवराशिका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातवें भाग है जो असंख्यात जगधेणीप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका पर्यन्त समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $४२९४९९७२९६ + ३२७९८ = १३१०७२ =$ असंख्यातक २ जगधेणियोंके ।

दुका—नारक सिध्दादि जीवराशिका प्रमाण जो जगप्रतरके असंख्यातवें भाग कहा है यह असंख्यात जगधेणीप्रमाण किस कारणसे है ?

समाधान—जगधेणीसे जगप्रतरके माजित करने पर जगधेणी जाती है ($४२९४९९७२९६ + ३५१३६ = ६५३६$) जगधेणीके तृतीय भागसे जगप्रतरके माजित करने पर दो जगधेनियां जाती हैं ($४२९४९९७२९६ - ३२७९८ = १३१०७२$) । जगधेणीके तीसरे भागसे जगप्रतरके माजित करने पर तीन जगधेनियां जाती हैं ($४२९४९९७२ - ३ - २१८४५१ = १९६९०८$) । इसप्रकार उत्तरोत्तर आकर विष्कंसूचीसे माजित जगधेणीका जगप्रतरमें माग देने पर असंख्यात जगधेनियां सप्त जाती हैं ऐसा कहा है । इसप्रकार कारणका वजन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $३५१३६ - २ = ३२७९८$, $४२९४९९७२९६ - ३ = ४२९४९९७२$ बराबर असंख्यात जगधेणियोंके ।

अब निदक्षिका कथन करते हैं—जगधेणीके असंख्यातवें भागसे जगधेणीके माजित करने पर वहां जो प्रमाण छन्द जाये उतनी जगधेनियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें ही हैं । अथवा, विष्कंसूचीका जितना प्रमाण है उतनी जगधेनियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें ही हैं । इसप्रकार निदक्षिका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—जगधेणीका असंख्यातवां भाग ३२७९८ , $३५१३६ - ३२७९८ = २$ जगधेनियां । अथवा विष्कंसूची २, अथवा विष्कंसूची ३ प्रमाण जगधेणियों ।

विकल्प दो प्रकारका है, अथवा विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे पहल

मागे हिंदे अबहारकासो आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कष्टु शुभेक्ष्य भागगाह्यं कर्त्तुं ।
 तस्स मागहारस्स अद्ध्यच्छेदणयमेषे रामिस्स अद्ध्यच्छेदणए कदे चि अबहारकानो आग-
 च्छदि । एत्थ मागहारस्स अद्ध्यच्छेदणयसत्तागापमापययविही भुचदे- च्छिदद्वायवग-
 सत्तागाओ विरुद्धिय विगं करिय अण्णोण्णमरयरासिणा सिगुणरूप्णेण सेद्धिअद्ध्यच्छेदणए
 गुणिय भर्म्मगुलविदियवग्गमूलस्स अद्ध्यच्छेदणए पक्खिचे मागहारस्स अद्ध्यच्छेदणया
 ह्वंति । एवं संखेज्जासंखेजापतेण पयय । गहिदपरुवणा गदा । सद्धिसमापवेरववग्गमग्गमस्स
 असंखेज्जदिमागेण सेहीए असंखेज्जदिमागेण पणलोगपद्धमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागेण
 अबहारकालण गहिदगहिदो गहिदगुजगारो च वत्थो । एवमअहारकासपरुवणा समत्ता ।

एवम् अबहारकालेण जगपद्म माग हिंदे गेरइयमिच्छाद्दिरासी आगच्छदि ।

अबहारकालका प्रमाण ज्ञाता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर मागका ग्रहण किया।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१०५३९}{१०५३९ \times १५३९ \times २} = ३२७९८ \text{ अक्ष}$$

इस मागहारके अन्तर्गच्छेत्त हों इतनीवार इस मध्यमान राशि के अर्धच्छेत्त करने पर भी अबहारकालका प्रमाण ज्ञाता है ।

उदाहरण—इस मागहारके ८^१ अर्धच्छेत्त होते हैं अत इतनीवार इस मध्यमान राशि के अर्धच्छेत्त करने पर भी ३२७९८ प्रमाण अबहारकालका प्रमाण ज्ञाता है ।

अब यहाँ मागहारकी अर्धच्छेत्त शकाकार्यों के अन्तर्गच्छेत्त विधि कहते हैं— अन्तर्गच्छेत्त स्थाव ऊपर गये हों इतनी वर्गशकाकार्यों का विरक्षण करके और इस विरक्षित राशि के मध्येक एकछेत्त होकर करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे तीनसे गुणा करके छप्प राशिसे एक कम करके जो शेष रहे उसे जगमेयीके अर्धच्छेत्तसे गुणित करके जो छप्प स्थाने उसमें वर्मागुल के द्वितीय वर्गमूल के अर्धच्छेत्त मिला देने पर विरक्षित अबहारकाल के अर्धच्छेत्त होते हैं । इसी प्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें लगा देना चाहिये । इस प्रकार पृथीतप्रकरण समाप्त हुई ।

$$\text{उदाहरण—एक स्थान ऊपर गये इसच्छेत्ते } २ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times १९ = ८० + १$$

$$= ८१ \text{ अर्ध ।}$$

जगमेयीके समान दिक्पर्वक की वपरिम वर्ग हो उसके असंख्यात में मागक छप्पमेयीके असंख्यात में मागक और पल्लोकके प्रथम वर्गमूल के असंख्यात में मागक अबहारकाल के ज्ञाप पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इस प्रकार अबहारकाल प्रकरण समाप्त हुई ।

इस अबहारकालसे जगपद्म के माजित करने पर बारक मिथ्याद्वि जीवराशि का प्रमाण ज्ञाता है (४२९५९९०२९९ + ३२७९८ = १३१०७२) । यहाँ पर विरक्षित माजित,

सङ्घि असंख्येयमागेण अवहारकालेण सेट्ठि गुणेऊम तेण घणलोगे मागे हिदे मिच्छा
इष्टिरासी आगच्छदि । त क्व ? सेट्ठिणा घणलोगे मागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो
वि मागहारण जगपदरे मागे हिदे मिच्छाइष्टिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण
सट्ठि गुणेऊम घणलोगपदमवगमूलमवरिय तेण तं खेव गुमिदे मिच्छाइष्टिरासी होदि ।
एवं हेहा आभिसुण वचन । हेत्थिमवियप्पो गदो ।

उपरिमवियप्पो विविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो खेदि । तत्थ गहिद
वचइसामो । मेरइयमिच्छाइष्टिरासिअवहारकालेण जगपदरसमाणवेरूषवग्ग गुणेऊम तेण
तन्मग्गवग्गे मागे हिदे मिच्छाइष्टिरासी आगच्छदि । त क्व ? जगपदरसमाणवेरूष
वग्गेण तन्मग्गवग्गे मागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदर

$$२५३ \times \frac{१}{१२८} = २ \quad ३५५३६ \times २ = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

अब घनाघनमें अघस्तन विकल्प बतछाते हैं— जगघेणीके असंख्यातमें भागरूप
अवहारकाछसे जगघेणीको गुणित करके जो छप्प भावे उससे घनछोकके माजित करने पर
नारक मिष्याइदि जीबराशि आती है क्योंकि जगघेणीसे घनछोकके माजित करने पर
जगप्रतर आता है । पुनः भागहारसे जगप्रतरके माजित करने पर नारक मिष्याइदि जीब
राशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३५०३३}{३५५३६ \times ३२७३८} = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

अथवा अवहारकाछसे जगघेणीको गुणित करके जो छप्प भावे उससे घनछोकके
प्रथम वर्गमूलको अपहत करके जो प्रमाण भाव उससे उसी घनछोकके प्रथम वर्गमूलको
गुणित करने पर नारक मिष्याइदि जीबराशि आती है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें जानकर
कथन करना चाहिये । इसप्रकार अघस्तन विकल्प समाप्त हुय्य ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{२५३}{३५ \times ३६ \times ३२७३८} = १२८, २५३ \times १२८ = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है सूहीत सूहीतसूहीत भीर सूहीतगुणकार । उनमेंसे
पहले सूहीत उपरिम विकल्पको बतछाते हैं— नारक मिष्याइदि जीबराशिसंख्या अवहार
काछसे जगप्रतरके समान विकल्पवर्गको गुणित करके जो छप्प भावे उससे उस विकल्पवर्गक
वर्गमें भाव देने पर मिष्याइदि जीबराशि आती है क्योंकि जगप्रतरके समान विकल्पवर्गका
उसके वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है, पुनः अवहारकाछका जगप्रतरमें
भाग देने पर नारक मिष्याइदि जीबराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९३७२९३}{४२९४९३७२९३ \times ३२७३८} = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

वचस्सामो । सेदीय असंखजदिभागमूदभवहारकालेन सेदिमिह मागे हिदे तस्यागेद्व
सेदिमिह गुणिदे मिच्छाद्विरासी होदि । अपवा विस्वमसूचीरूपेहि सेदिमिह गुणिदे
मिच्छाद्विरासी होदि । अहवा अवहारकालेन सेदिविदियवग्गमूलमवहरिय छेदेन तं
चेव गुणिदे तेन सेदिवदमवग्गमूलं गुणेत्तल तेन सेदिमिह गुणिदे वि मिच्छाद्विरासी
आगच्छदि । अहवा अवहारकालेन सेदिविदियवग्गमूलमवहरिय छेदेन तं चेव गुणिव
तेन सेदिविदियवग्गमूलं गुणिव तेन पदमवग्गमूल गुणिव तेन गुणिवरासिणा सेदिमिह
गुणिदे मिच्छाद्विरासी होदि । एवं हेहा वि जावित्तल वचस्सं । घणापने वचस्सामो ।

अथस्तल विकस्यको वतकते हैं— प्रकृतमें द्विकपधायमें अथस्तल विकस्य संभव नहीं है ।
यहां अथस्तल कपल पदकोके समान कहना चाहिये ।

विशेषार्थ—यदि अगमेजीके किसी भी वर्गमूलमें अवहारकालका माग दिया जाता है
तो नारक मिथ्याद्वि जीवराशि वत्यत्र नहीं हो सकती है इसलिये यहां द्विकपधायमें
अथस्तल विकस्य संभव नहीं है यह कहा ।

अथ अथकपमें अथस्तल विकस्य वतकते हैं— अगमेजीके असंखजालमें मापमूल
अवहारकालसे अगमेजीके माजित करने पर वहां जितना प्रमाण ज्ञाने वससे अगमेजीके
गुणित करने पर नारक मिथ्याद्वि जीवराशि भाली है ।

$$\text{उदाहरण—} ११३९ - ३२७९८ = २, ३५५३९ \times २ = १३१०७२ ।$$

अथवा विस्वमसूचीके प्रमाणसे अगमेजीके गुणित करने पर नारक मिथ्याद्वि
जीवराशि भाली है ।

$$\text{उदाहरण—} ३५५३९ \times २ = १३१०७२ ।$$

अथवा अवहारकालके प्रमाणसे अगमेजीके द्वितीय वर्गमूलको माजित करके जो कल्प
ज्ञाने वससे वही द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो कल्प ज्ञाने वससे अगमेजीके प्रथम
वर्गमूलको गुणित करके जो कल्प ज्ञाने वससे अगमेजीके गुणित करने पर भी नारक मिथ्या
द्वि जीवराशि भाली है ।

$$\text{उदाहरण—} १९ - ३२७९८ = \frac{१}{२७८}, १९ \times \frac{१}{२७८} = \frac{१}{१२८}, ३५९ \times \frac{१}{१२८} = २$$

$$३५५३९ \times २ = १३१०७२ ।$$

अथवा अवहारकालके प्रमाणसे अगमेजीके तीसरे वर्गमूलको माजित करके जो कल्प
ज्ञाने वससे वही तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो कल्प ज्ञाने वससे अगमेजीके द्वितीय
वर्गमूलको गुणित करके जो कल्प ज्ञाने वससे अगमेजीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो
कल्प ज्ञाने वससे अगमेजीके गुणित करने पर नारक मिथ्याद्वि जीवराशि भाली है । इसप्रकार
नीचे भी आनकर कपल करना चाहिये ।

$$\text{उदाहरण—} ४ - ३२७९८ = \frac{१}{८१९२}, ४ \times \frac{१}{८१९२} = \frac{१}{२०४८}, १९ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८} ।$$

सेडिण अंसखेअदिमाणेण अबहारकालेण सेडि गुणेऊण तेण पणलागे मागे हिदे मिच्छा इड्डिरासी आगच्छदि । त कष ? सेडिणा पणलोमे मागे हिदे जगपदरमाणच्छदि । पुणो वि मागहारेण जगपदरे मागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि । अह्वा अबहारकालेण सेडि गुणेऊण पणलोगपदमवगमूलमवहरिय तेण व चेव गुमिदे मिच्छाइड्डिरासी होदि । एवं हेहा जाभिऊण पचच्च । हेड्डिमवियप्पो गरो ।

उपरिमवियप्पो विविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तस्य गहिदं पचस्सामो । णेरस्यमिच्छाइड्डिरासिअवहारकालेण जगपदरसमाणवेरूबवगं गुणेऊण तेण तव्वगवगगे मागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि । त कष ? जगपदरसमाणवेरूब वगणेण तव्वगवगगे मागे हिदे जगपदरमाणच्छदि । पुणो वि अबहारकालेण जगपदर

$$२५६ \times \frac{१}{१९८} = २, ६५५.३३ \times २ = १३१०.७२ \text{ सा मा मि}$$

अब घनाघनमें अभस्तन विकल्प बतसाते हैं— जगमेणीके अंसत्पातमें मागरूप अबहारकालसे जगमेणीको गुणित करके जो छप्प भागे उससे घनछोकेके माजित करने पर नारक मिष्यादधि जीवराशि आती है क्योंकि, जगमेणीसे घनछोकेके माजित करने पर जगमतर आता है । पुनः मागहारसे जगमतरके माजित करने पर नारक मिष्यादधि जीव राशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३५५३३}{२५५३३ \times ३२७३८} = १३१०.७२ \text{ सा मा मि}$$

अथवा अबहारकालसे जगमेणीको गुणित करके जो छप्प भागे उससे घनछोकेके प्रथम वगमूलको अपहत करके जो प्रमाण भागे उससे उसी घनछोकेके प्रथम वगमूलको गुणित करने पर नारक मिष्यादधि जीवराशि आती है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अभस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{२५६}{२५६ \times ३२७३८} = १२८, २५६ \times १२८ = १३१०.७२ \text{ सा मा मि}$$

अपरिम विकल्प तीन प्रकारका है गृहीत गृहीतगृहीत बीर गृहीतगुणपर । उनमेंसे पहले गृहीत अपरिम विकल्पको बतसाते हैं— नारक मिष्यादधि जीवराशिसबन्धी अबहार कालसे जगमतरके समान द्विकपवगको गुणित करके जो छप्प भागे उससे उस द्विकपवगके वर्गमें माग देने पर मिष्यादधि जीवराशि आती है क्योंकि जगमतरके समान द्विकपवगका उसके वर्गमें माग देने पर जगमतरका प्रमाण आता है पुनः अबहारकालका जगमतरमें माग देने पर नारक मिष्यादधि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९३२९३}{४२९४९३२९३ \times ३२७३८} = १३१.७२ \text{ सा मा मि}$$

भाग हिंदे मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । तस्म भागहारस्म अदृच्छेदणयमेत्ते राप्तिस्म अदृच्छेदणए कद वि मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । एदस्म अदृच्छेदणया केत्तिपा ? अवहारदृच्छेदणयमहिंदजगपदरसमाणवेरुवग्गच्छेदणयमत्ता । उव्वरि अदृच्छेदणयमत्ता-वपविहापं आपिउण वचम्व । वरुवपरुवणा गदा । अदुस्से वचइस्सामो । अवहारकासव जगपदरे भाग हिंदे मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । पणगुष्ठनिदियवग्गमूलदृच्छेदणएहि उग्गसेहिअदृच्छेदणयमेत्त जगपदरस्स अदृच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । अइवा अवहारकालेण जगपदर गुणऊग तेण तत्सुवरिमवग्गे भाग हिंद मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । उ अइ- जगपदरेण तत्सुवरिमवग्गे भाग हिंद जगपदरमागच्छदि । पुआ वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिंद मिच्छाद्दिरामी आगच्छदि । एदस्स भागहारस्स

उक्त भागहारके अितने अर्थच्छेद हैं इतनीबार उक्त मय्यमाण राशिके अर्थच्छेद करने पर भी नारक सिध्दाद्यि जीवराशि जाती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४७ अर्थच्छेद हैं अतः इतनीबार उक्त मय्यमाण राशिके अर्थच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक सिध्दाद्यि जीवराशि जाती है ।

धृक्का—उक्त भागहारके अर्थच्छेद कितने हैं ?

समाधान—जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गके अितने अर्थच्छेद हैं जिनमें अणहारकासव अर्थच्छेद मिछा देने पर उक्त भागहारके अर्थच्छेदोंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगप्रतरसमान द्विरूपवर्ग ४२९४९१७२९९ के अर्थच्छेद ३५ ३२७३८ के १५ अतएव $३२ + १५ = ४७$ अ. ।

ऊपरके स्थानोंमें भी अर्थच्छेदोंके मिछानेकी विधि जानकर कइना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपरूपजा समाप्त हुई ।

अब अणरूपमें सूचित उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—अवहारकासवसे जगप्रतरके मावित करने पर नारक सिध्दाद्यि जीवराशि जाती है ।

उदाहरण—४२९४९१७२९९ - ३२७३८ = १३१ ७२ स. ना मि

अथवा जगगुष्ठके द्वितीय वर्गमूलके अर्थच्छेदोंका जगधेणीके अर्थच्छेदोंमेंसे कम करके जो प्रमाण होय रहे इतनीबार जगप्रतरके अर्थच्छेद करने पर भी नारक सिध्दाद्यि जीवराशि जाती है ।

उदाहरण—१५५३३ प्रमाण जगधेणीके अर्थच्छेद १६ मसे जगगुष्ठके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्थच्छेद १ कम करने पर १५ होय रहते हैं, अतः १५ बार ४२९४९१७२९९ प्रमाण जगप्रतरके अर्थच्छेद करने पर १३१ ७२ प्रमाण नारक सिध्दाद्यि जीवराशि जाती है ।

अथवा अवहारकासवसे जगप्रतरको सुचित करके जो कल्प आवे उसका जगप्रतरके उपरिम वर्गमें माय देने पर नारक सिध्दाद्यि जीवराशि जाती है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—जगप्रतरका उसके उपरिम वर्गमें माय देने पर जगप्रतर जाता है । पुन

अद्वन्द्वयमेव राशिरस्य अद्वन्द्वय कदे वि मिच्छाद्द्विरासी आगच्छति । एष अद्वन्द्वयमेलावणविहाय पुञ्च व वचश्च । एवं संखेज्जासंखेज्जाणतेसु येयश्च । अद्वन्द्वयपरूषणा गदा । घणाघणे वचइत्तामो । अवहारकालगुणिद्वयगपदरठवरिमवगणे घन नोगउवरिमवगणे मागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छति । केण कारणेण ? अगपदरठवरिमवगणे घनलोगुवरिमवगणे मागे हिदे जगपदरमागच्छति । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे मागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छति । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वयमेव राशिरस्य अद्वन्द्वय कदे वि मिच्छाद्द्विरासी आगच्छति । एष अद्वन्द्वयमेलावण विहाय पुञ्च व वचश्च । एवं संखेज्जासंखेज्जाणतेसु येयश्च । गहिदपरूषणा गदा ।

अवहारकालका जगप्रतरमें माग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९७७९६}{४२९४९७७९६ \times ४२९७९८} = १३१०७२ \text{ सा मा मि}$$

इस मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारके १९ + १ = ४७ अर्धच्छेद हैं अतः उतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिछानेकी विधिका पहचानेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार सञ्चयात् अन्वय्यात् और अनन्त स्थानोंमें छे जाना चाहिये । इसप्रकार अष्टकप्रमाण समान्य है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विक्रय बतलाते हैं—जगप्रतरके उपरिम वर्गको अवहारकालसे गुणित करके जो सध्य आने उक्त घनलोकके उपरिम वर्गमें माग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवरशि जाती है क्योंकि जगप्रतरके उपरिम वर्गका घनलोकके उपरिम वर्गमें माग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है । पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें माग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५३९}{४२९४९७७९६ \times ४२९७९८} = १३१०७२ \text{ सा मा मि}$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

उदाहरण—उक्त मागहारका ७९ अर्धच्छेद होते हैं अतः उतनीबार उक्त मज्जमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१ ७९ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवरशि जाती है ।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिछानेकी विधिका पहचानेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार सञ्चयात्, अञ्चयात् और अनन्तस्थानोंमें भी छे जाना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिम विक्रय प्रमाण समान्य है ।

अगपदरसमापनेस्त्ववगगगस्त असंखेजदिमागेण अगपदरस्त असंखेजदिमागेण
 वणसोगस्त असंखेजदिमागेण च परइयमिच्छाइहिरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुषगारो
 च वचम्वो । मिच्छाइहिरासिपरुवणा समचा ।

सासणसम्माइट्ठिण्हुडि जाव असजदसम्माइट्ठि चि दब्बपमाणेण
 केवडिया, ओघ' ॥ १८ ॥

ओषमि बुचसिप्पिगुणट्ठणरासी सम्मा चि गरुयाणं तिप्पिगुणट्ठणरासि-
 मेचा केव होदि चि बुच मसगदीसु तिप्पि गुणट्ठणायममाणा पसज्जदे ? च एस दामो,
 नेरुयाण तिप्पि गुणट्ठणाय पमाणस्त ओपतिगुणट्ठणपमाणेण पल्लोभमस्म असख्खदि
 भागसं पडि चित्तेसामावाधो एयचाविरोदा । परजराद्धियणए पुण अबलंभिउत्रमाणे भदो
 दोण्हमरिय चेव, सेसतिगदिठिप्पि गुणट्ठणाय पमाणपरुवणागमुवरि उवमाममुचाण

अगपदरके समान हिरूपवर्णका जितना उपरिम वर्ण हो उसके असंख्यातवर्ण भागरूप
 अगपदरके असंख्यातवर्ण भागरूप और प्रत्येकके असंख्यातवर्ण भागरूप नारक मिच्छाइहि
 जीवराशि के द्वारा पृहीतपृहीत और पृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार मिच्छाइहिराशि की प्रकृष्टता समाप्त हुई ।

सासादनसम्पग्गट्ठि गुणस्थानसे लेकर असयतसम्पग्गट्ठि गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थानमें नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? गुणस्थान प्ररूपवाके
 समान हैं ॥ १८ ॥

शंका—गुणस्थानोंमें कहीं गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशि संपूर्ण नारकीयोंके
 तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशि के बराबर ही होती है ऐसा कहने पर दोष तीन पक्षोंमें
 तीनों गुणस्थानोंका अभाव प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, नारकीयोंके तीन गुणस्थानसंबन्धी
 जीवराशि के प्रमाणकी सामान्यसे कहीं गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशि के प्रमाणके साथ
 पम्पोपमके असंख्यातवर्ण भागत्वके प्रति कोई विरोधता नहीं है । इसलिये इन दोनोंको समान
 मान देनेमें कोई विरोध नहीं जाता है । परंतु पर्यापार्थिक नयका व्यवहार करने पर दोनोंमें
 भेद है ही। यदि ऐसा न माना जाय तो दोषकी तीन पक्षिसंबन्धी साक्षात्तादि तीन गुणस्थानोंकी
 जीवराशि के प्रमाणके प्रकृष्टता करनेके लिये कहे गये सूत्रोंकी सफरकता नहीं बन सकती है । अथ

सकतचण्डालाणुबन्धीदो । तस्स भेदस्स परूवणं सासणसम्माइडिआदिगुणपडिबण्णान्
अवहारकाळे वचइस्सामो । त च्छा—

ओपमसंजदसम्माइडिअवहारकालु विरलेऊम पलिदोबर्म समञ्ज करिय दिण्णे
एकइस्स रुवस्स असज्जदसम्माइडिअवपमाण पापेदि । देवगइ मोचूण सेसतिगदि
असज्जदसम्माइडिरासी सामण्णअसज्जदसम्माइडिरासिस्स असंखेज्जदिमागो । तस्स को
पडिमागो ? आबलियाए असखज्जदिमागो । ओपअसंजदसम्माइडिरासिस्स असंखेज्ज
मागा देवाणमसंजदसम्माइडिरासी होदि । कुदो ? देवेषु बहण सम्मत्तुप्पपिकारणान्
सुवर्त्तमादो । देवाण सम्मत्तुप्पपिकारणानि काणि चे ? जिणविंबेडिमहिमादंसन जाइ
स्सरण-महिदिंदादिदंसन जिणपायमूलबम्मसवणादीणि । विरिक्खणेरइया पुण गरुणपाव

बल मेवके प्रकृपण करनेके लिये सासाधनसम्यग्दृष्टि भावि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण
मानेके लिये अवहारकाळोंको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

सामान्यसे कहे गये असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाळको विरहित करके भीर
उन विरहित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पम्पोपमको समान संज्ञ करके रूपरूपसे दे देने पर
प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— १९३८४ १९३८४ १९३८४ १९३८४ एक विरहितके प्रति प्राप्त असं
यतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ।

इसमें देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको छोड़कर शेष तीन गतिसंबन्धी
असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असंख्यातवर्गे माग
प्रमाण है ।

प्रश्न— दोष तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण पम्पोपमके
असंख्यातवर्गे मागरूप मानेके लिये प्रतिमागका प्रमाण क्या है ?

समाधान— आबलोका असंख्यातवर्ग माग प्रतिमागका प्रमाण है ।

सामान्यसे कही गई असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका असंख्यात बहुमागप्रमाण
इसोसंबंधी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है क्योंकि देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे
कारण पाये जाते हैं ।

प्रश्न— देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके कारण कौनसे हैं ?

समाधान— जिनिबिम्बसंबन्धी अतिशयके माहात्म्यका दर्शन आतिस्मरणका होना
महर्षिक इन्द्रादिकका दर्शन भीर जिनिदेवके पादमूलमें धर्मका अवन भावि देवोंमें सम्यक्त्वोत्पत्तिके
कारण हैं । परंतु तिर्यक भीर मारकी शुक्तर पापोंके मारसे मरे भीर बचे होनेसे अतिशय

मोग्यं गत्वणद्वयादौ सकिंलिद्वयरादा' मदमुद्रिचादौ बह्व्य सम्मत्तुप्यचिरणमामभावाद्
 च सम्माइद्विपो बोधा इवन्ति । तदो तिगदिअसब्बदसम्माइद्विरातिणा उवरिमैगरूपपरिद
 ओपासब्बदसम्माइद्विद्वयमवहरिय तत्पागइमावलिपाए असंखेअदिमार्गं विरल्लम्य ओपा
 संब्बदसम्माइद्विद्वय समसुड करिय दिग्घे हेड्डिमविरल्लगरूप पडि सेसतिगदिअसब्ब
 सम्माइद्विरातिपमाण पावदि । तप्यमाण उवरिमविरल्लपाए उवरिमरूपं पडि द्विद्विओपा
 मब्बदसम्माइद्विद्वयमिद्वि अवनेयम् । एवमपणिदे उवरिमविरल्लमया येव देवप्रसब्ब
 सम्माइद्विरातीओ तिगदिअसब्बदसम्माइद्विरातीओ च भवति । पुगो उवरिमविरल्लमेच
 तिगदिअसब्बदसम्माइद्विरातिं देवप्रसब्बदसम्माइद्विरातिपमाणेण कस्सामो । त अहा —

रूग्गहड्डिमविरल्लमेचसु तिगदिअसब्बदसम्माइद्विद्वयेसु उवरिमविरल्लमि
 द्विद्वसु समुदिद्वेसु एगं देवप्रसब्बदसम्माइद्विरातिपमाणं सुक्कमि, अवहारकालमि एगा
 संनिष्प परिणामी होनेसे मन्नुद्रि होबेने और उनमें सम्यक्त्वही उत्पत्तिके बहुतसे कारणोंका
 भभाव होनेसे सम्यग्द्वि धोते होते हैं ।

तदनन्तर उपरिम विरल्लनके एकके प्रति रत्तनी हुई सामान्य असंयतसम्यग्द्वि जीव
 राशिमें तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्द्वि जीवराशिसे भाजित करके वहाँ ओ भावकीरा
 असंयतातर्वा माग छन्द्य भावे उसका विरल्लन करके और उस विरल्लित राशिमें प्रत्येक
 एकके प्रति सामान्य असंयतसम्यग्द्वि द्रव्यको समान लब्ध करके देवकपसे दे देने पर
 अधस्तन विरल्लनके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्द्वि जीवराशिका प्रमाण
 प्राप्त होता है । इस प्रमाणको उपरिम विरल्लनके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असंयत
 सम्यग्द्वि द्रव्यमेंसे निकाल देना चाहिये । इसप्रकार निकाल देने पर उपरिम विरल्लनमात्र
 देवगणिसंबन्धी असंयतसम्यग्द्वि जीवराशिर्वा और तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्द्वि
 जीवराशिर्वा होता है ।

उदाहरण—तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्द्वि जीवराशि ४०९१।

$$\begin{array}{ccccccc} & & ४०९ & ४०९१ & ४०९१ & ४०९१ & ४०९१ \\ १९३८४ - ४०९१ = ४ & १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array}$$

इस ४ ०९ को उपरिम विरल्लनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १९३८४ में
 बटा देने पर १९२८८ आते हैं । वहाँ देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्द्वि
 जीवराशि है और ४ ०९ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्द्वि जीवराशि है ।

अब आये उपरिम विरल्लनमात्र अघात् उपरिम विरल्लनगुणित तीन गतिसंबन्धी
 असंयतसम्यग्द्वि जीवराशिर्वा देव असंयतसम्यग्द्वि जीवराशिसे प्रमाणसे करके बतवाते हैं ।
 उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक वम अघस्तन विरल्लनमात्र अर्थात् एक वम अधस्तन विरल्लनगुणित उपरिम
 विरल्लनमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्द्वि द्रव्यको समुचित कर देने पर एक देव

यव पक्खवसलागा । पुणो वि एत्थियमत्तसु खे उवरिमविरलगम्हि तिगदिअसज्ज
सम्माइद्विदम्बेसु समुद्विदेसु देवअसज्जदसम्माइद्विदम्बे लम्भदि, अवहारकालम्हि विविद्या
च पक्खं सलागा । एव पुणो पुणो कीरमाण आवलियाए असंखेज्जदिमागमेवाभा
अवहारकालपक्खवसलागाओ लम्भंति, हेत्तुमविरलणाया उवरिमविरलणाए असंखज
गुणघा । एवाधिमवहारकालपक्खवसलागापमेगवारेण आगमणविहिं वचइस्सामो ।
इद्विमविरलनरूपणमेवत्तिगदिअसज्जदसम्माइद्विदम्बेसु अदि ग्गा अवहारकालपक्खेव
सलागा लम्भदि ता उवरिमविरलणमेवेसु तिगदिअसंज्जदसम्माइद्विदम्बेसु केत्थियाओ
पक्खेवसलागाओ लमामो चि म्बूणइद्विमविरलणाए उवरि विरलियओचअसज्जदसम्मा
इद्विस्स अवहारकाल मागे हिद आवलियाए असंखज्जदिमागमेवाभा अवहारकालपक्खेव
सलागाओ लम्भंति । ताओ ओचअसज्जदसम्माइद्विअवहारकालम्हि पक्खिसे देवअसंज्जद
सम्माइद्विअवहारकालो इदि । तमानलियाए अमत्तज्जदिमागग गुणिदे देवसम्माविच्छा
इद्विअवहारकालो इदि, असज्जदसम्माइद्विउक्कमणफालाया सम्मामिच्छाइद्विउक्कमण
फालस्स असंखेज्जगुणदीणघा । त संखेज्जगुणेहिं गुणिदे देवसावणसम्माइद्विअवहारकाला

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशालाका
प्राप्त होती है । फिर भी एक कम अवस्थान विरलनमात्र उपरिम विरलनमें स्थित तीन
गणितसंख्या अर्धयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यके समुचित कर देने पर द्वय अर्धयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यका
प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें दूसरी प्रक्षेपशालाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुनः
पुनः करने पर आबकीके अवस्थातमें मागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशालाका प्राप्त होती है
क्योंकि अवस्थान विरलनसे उपरिम विरलन अवस्थातगुणा है । अब इन अवहारकाल
प्रक्षेपशालाओंके एकचारमें मानेकी विधिको बतसाने हैं— एक कम अवस्थान विरलनमात्र
तीन गणितसंख्या अर्धयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यमें यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशालाका प्राप्त होती है
तो उपरिम विरलनमात्र अर्धयत उपरिम विरलनगुणित तीनगणितसंख्या अर्धयतसम्यग्दृष्टि
द्रव्यमें किन्ती प्रक्षेपशालाका प्राप्त होगी इसप्रकार (प्रमाणिक करके) एक कम अवस्थान
विरलनका ऊपर विरलित द्वय अर्धयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालमें माग देने पर आबकीके
अवस्थातमें मागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशालाका प्राप्त होती है । इन प्रक्षेपशालाओंके
आम अर्धयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालमें मिला देने पर द्वय अर्धयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालका
प्रमाण आता है ।

उदाहरण—एक कम अवस्थान विरलन ३; उपरिम विरलन ४; $४ - ३ = १$;

$४ + १ = ५$ $५ \times ३९ = १९५$ $१९५ - १९५ = ०$ देव अर्धयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य ।

$१९३८४ - १९३८८ = ४०$ १ तीन गणितसंख्या अर्धयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य ।

द्वय अर्धयतसम्यग्दृष्टिसंख्या अवहारकालकी आवकीक अर्धयतमें मागते गुणिन
काल पर द्वय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसंख्या अवहारकाल होता है क्योंकि अर्धयत
सम्यग्दृष्टिके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका उपक्रमणकाल अवस्थातगुणा हीन है । देव

मारण उत्पन्नद्वयादा सकलित्वपरत्वादा' मद्रुद्रिचादो बहण सम्मत्तुप्पत्तिकारणाजमभावादा च सम्माद्विणो बोवा इति । तदो तिगदिअसज्जदसम्माइहिरामिणा उवरिमगरूवपरिई ओपासज्जदसम्माइहिरामिणमहरिय सत्त्वागदमावलिपाए असंवेज्जदिमार्ग विरलज्ज ओपा मज्जदसम्माइहिरामिण समउड करिय दिण्ण इह्मिविरलज्जकरं पडि सेसतिगदिअसज्जद सम्माइहिरामिणमाणा पावदि । तप्पमाण उवरिमविरलगाए उवरिमरूव पडि हिइओपा मज्जदसम्माइहिरामिण अणणेय्य । एवमवणिदे उवरिमविरलणमता चेव देवप्रसज्जद सम्माइहिरामीओ तिगदिअसज्जदसम्माइहिरामीआ च भवति । पुनो उवरिमविरलणमेव तिगदिअसज्जदसम्माइहिरामिण देवअसज्जदसम्माइहिरामिणमाणा कस्सामो । यं सहा—

रुग्णइह्मिविरलणमेवसु तिगदिअसज्जदसम्माइहिरामिणसु उवरिमविरलणमि हिदेसु समुदिदेसु एगं देवअसज्जदसम्माइहिरामिणमाणा लभदि, अपहारकालमि एमा मविच्छप परिजामी होमेसे मद्रुद्रि होमसे और इनमें सम्पत्त्यकी उत्पत्तिके बहुतसे कारणोंका समाप होमसे सम्पत्त्यहि थोड़े होते हैं ।

तदनन्तर उपरिम विरलणके एकके प्रति एकही दूर सामान्य असंयतसम्पत्ति जीवराशिसे तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति जीवराशिसे भागित करके वहाँ जो मावकीका असंयतताका भाग छान्य जाये उसका विरलण करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति सामान्य असंयतसम्पत्ति द्रव्यको समान कंड करके देयरूपसे दे देने पर अथस्तत्र विरलणके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति जीवराशिसे प्रमाण प्राप्त होता है । इस प्रमाणसे उपरिम विरलणके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असंयत सम्पत्ति द्रव्यमेंसे निकाल देना चाहिये । इसप्रकार निकाल देने पर उपरिम विरलणमात्र देवगनिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति जीवराशिवा और तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति जीवराशिवा होता है ।

उदाहरण—तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति जीवराशि ४ ९१।

	४ ९१	४०९१	४ ९१	४०९१
१९२४ - ४ ९१ = ४।	१	१	१	१।

इस ४ ९१ को उपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १९२४ में घटा देने पर १९२८ ब्यते हैं । यही देवगतिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति जीवराशि है और ४ ९१ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति जीवराशि है ।

अब आगे उपरिम विरलणमात्र अर्थात् उपरिम विरलणगुणित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति जीवराशिसे देव असंयतसम्पत्ति जीवराशिसे प्रमाणसे करके बतकते हैं । उसका स्पर्शीकरण इसप्रकार है—

एक कम अथस्तत्र विरलणमात्र अर्थात् एक कम अथस्तत्र विरलणगुणित उपरिम विरलणमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्पत्ति द्रव्यको समुचित कर देने पर एक देव

१ प्रश्न नावद्वयो लभिहिरावयो इति च ।

एव पढमाए पुढवीए नेरइया' ॥ १९ ॥

ण पुणं मामण्णजेइयमिच्छाइडिआदिरासिस्स पमाणपरूपणा परूविवा, पढम विदियपुढविमाविसेमामावाओ । पुगा जदि पुण्वपरूविदसम्भरासी पढमाए पुढवीए मबदि तो विदियादिपुढवीसु जीवामाओ पसज्जे । ण च एव, 'विदियादि आब सचमाए पुढवीए नेरइयसु मिच्छाइडी दण्डप्रमाणेण केवडिया' इयादिसुचेहि सह विरोहाओ, तम्हा सामण्णजेइयमिच्छाइडिबिक्खमभूरे पढमपुढविमिच्छाइडीण विस्संमसूरे ण इबदि । तदो सामण्णपरूविदअमहारकाला वि पढमपुढविनेरइयास ण मबदि । एव सेमगुणपडिबण्णार्थ पि अवहारकालबन्धी बचम्वा । तम्हा एवं पढमाए पुढवीए भेयम्बमिदि नेदं पढदे ? ण एस दोसो, असंखज्जेसेडिचमेण पदरस्स असंखेज्जदिमागचणेण विदियबग्गमूलगुणिद अंगुलबग्गमूलमेचबिक्खंमसुचित्तमेण पलिदोवमस्स असंखज्जदिमागचणेण च पढमपुढवि

सामान्य नारकियोंके दण्डप्रमाणके समान पहली पृथिवीमें नारक जीव राखि है ॥ १९ ॥

टीका—पहले सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि आदि अविचारिके प्रमाणका प्ररूपण किया, क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें पहली पृथिवी दूसरी पृथिवी आदिके विशेषप्ररूपणका अभाव है । फिर यदि पहले प्ररूपण की हुई संपूर्ण जीवराशि पहली पृथिवीमें ही होती है तो द्वितीयादि पृथिवियोंमें जीवोंका अभाव प्रत्य होता है । परंतु ऐसा है नहीं क्योंकि ऐसा मान लेने पर दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक मिथ्यादृष्टि नारकी दण्डप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं इत्यादि सूत्रोंके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध प्राप्त होता है । इसलिये सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विषमसूची प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विषमसूची नहीं हो सकती है । और इसीलिये सामान्यसे कहा गया अवहारकाल भी प्रथम पृथिवीके नारकियोंका अवहारकाल नहीं हो सकता है । इसीप्रकार प्रथम पृथिवीके दोष गुणस्यानप्रतिपक्ष जीवोंके भी अवहारकालकी सूचिका कथन करना चाहिये । इसलिये इसीप्रकार पहली पृथिवीमें से जाना चाहिये यह सूत्रार्थ पड़ित नहीं होता है ?

समाधान—यह कोउ दोष नहीं है क्योंकि असंख्यात जगत्प्रेतियोंकी अपेक्षा जगत्तरके असंख्यातमें मागकी अपेक्षा सूर्यगुरुके द्वितीय धर्ममूलसे गुणित प्रथम धर्ममूल प्रमाण विषमसूचीकी अपेक्षा और परमोपरमके असंख्यातमें मागकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीमन्वन्धी

१ नारककी प्रवृत्तियां पृथिवी अथवा मिथ्यादृष्टिकर्तव्यः भेषव प्रमाणस्वेवमागविद्यतः । ४ वि. १ ८ हेतुमत्पुढवीच तविद्विहाओ इ तज्जालो इ । ५३ बारमि ३६ राती भैरवस्य तु विरेडो । भी जी १५४ वेदिकेकवपराएवपुढमदुक्कमदिब । ५५ माए १०५ । पढम २ १० अद्वैतदुक्कमपुढा कपुण्ड्रविवा क वेरव पुई । पढम १ १९ मयवदवीपीओ देवीओ संकेतगुनाओ । ६६ ने एवममए पुढवी भैरव अवहेयइया । पढम २ १६ तो टी (अद्वैतवच) ।

हादि, तयो संखेन्द्रगुणहीण-उपक्रमणकालादौ। सम्मामिच्छत् पडिवन्त्रमापरासिस्म
 संखेन्द्रदिमागमया उपसमसम्माइष्टिजो सासणगुणं पडिवन्त्रेति चि वा। तमावसियाए
 असंखेन्द्रदिमागेण गुणिदे तिरिक्खअसंखदसम्माइष्टिअवहारकासो होदि। तमावसियाए
 असंखेन्द्रदिमागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइष्टिअवहारकासो होदि। त संखेन्द्ररूपेहि
 गुणिद तिरिक्खसासणसम्माइष्टिअवहारकासो होदि। तमावसियाए असंखेन्द्रदिमागेण
 गुणिद तिरिक्खअसंखदसंखदअवहारकासो होदि, अपवक्खणावणणागुदयामावस्स अइत्त
 इचादो। तमावसियाए असंखेन्द्रदिमागेण गुणिदे वेरइयअसंखदसम्माइष्टिअवहारकासो
 होदि। तमावसियाए असंखेन्द्रदिमागेण गुणिदे वेरइयसम्मामिच्छाइष्टिअवहारकासो होदि।
 तं संखेन्द्ररूपेहि गुणिद वेरइयसासणसम्माइष्टिअवहारकासो होदि। एवेहि अवहारकासोहि
 पसिदोवमे भागे हिदे अप्पपयो दम्भमागच्छदि।

सम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी अवहारकासो संख्यातसे गुणित करने पर वेच सासावसम्यग्दृष्टि
 जीवराशिसंख्यी अवहारकास प्राप्त होता है क्योंकि, सम्पत्तिमप्यादृष्टिके उपक्रमणकालसे
 सासावसम्यग्दृष्टिके उपक्रमणकालसे संख्यातगुणा हीन है। अथवा सम्पत्तिमप्याव
 गुणस्थानको प्राप्त होनेवासी जीवराशिके संख्यातसे मापमात्र उपशमसम्पत्ति जीव
 सासावसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होते हैं इसलिये भी वेच सम्पत्तिमप्यादृष्टिके
 अवहारकाससे वेच सासावसम्यग्दृष्टिका अवहारकास संख्यातगुणा है। वेच सासावसम्यग्
 दृष्टिसंख्यी अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्यच असंयत
 सम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी अवहारकास होता है। तिर्यच असंयतसम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी अवहारकासको
 आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्यच सम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी अवहारकास
 होता है। तिर्यच सम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यच
 सासावसम्यग्दृष्टिसंख्यी अवहारकास होता है। तिर्यच सासावसम्यग्दृष्टिसंख्यी
 अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे मापसे गुणित करने पर तिर्यच संयतसंयतसंख्यी
 अवहारकास होता है क्योंकि जगत्याप्यानावरण कयापका कयामात्र असंत दुर्कर्म है।
 तिर्यच संयतसंयतसंख्यी अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर
 नारद असंयतसम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी अवहारकास होता है। नारद असंयतसम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी
 अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर नारद सम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी
 अवहारकास होता है। नारद सम्पत्तिमप्यादृष्टिसंख्यी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने
 पर नारद सासावसम्यग्दृष्टिसंख्यी अवहारकास होता है। इन उपर्युक्त अवहारकासोंसे
 पम्पेयमके मात्रित करने पर अथवा जपना प्रत्यक्ष प्रमाण आता है।

एव पढमाए पुढवीए नेरइया' ॥ १९ ॥

णं पुब्बं सामण्येणमिच्छाइड्ढिआदिरासिस्स पमाणपरूपणा परूविवा, पढम विदियपुढविआविभिसमाभावादो । पुणा जवि पुब्बपरूविवसम्बरासी पढमाए पुढवीए सबदि सो विदियादिपुढवीसु भीवामावो पसकदे । ण च एव, 'विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए नेरइएसु मिच्छाइडी दम्पपमाणेण केवडिया' इत्यादिसुसेहि सह विरोहादो, तम्हा सामण्येणमिच्छाइड्ढिविक्खमच्चर्रं पढमपुढविमिच्छाइडीण विस्सुमच्चर्रं च इवदि । तदेा सामण्यपरूविदम्बहारकालो वि पढमपुढविनेरइयाण ण मवदि । एव सेसगुणपठिबण्यार्ण पि मवहारकालवन्नी वत्तम्हा । तम्हा एव पढमाए पुढवीए नेयम्बमिदि नेर्द मवदे ? ण एस दोसो, असंखेअसेडिचणेण पदरस्स असंखेअदिमागचणेण निदियवग्गमूलगुणिइ अंगुलवग्गमूलमेवविक्खमच्चविचणेण पठिदोवमस्स असंखजदिमागचणेण च पढमपुढवि

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणके समान पहली पृथिवीमें नारक भी व राखि है ॥ १९ ॥

श्रुति—पहले सामान्य नारक मिथ्याचरि आदि अंशराशिके प्रमाणका प्ररूपण किया क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें पहली पृथिवी दूसरी पृथिवी आदिके विशेषप्ररूपणका अभाव है । फिर यदि पहले प्ररूपण की हुई संपूर्ण जीवराशि पहली पृथिवीमें ही होती है तो द्वितीयपदि पृथिवियोंमें जीवोंका अभाव प्राप्त होता है । परंतु ऐसा है नहीं क्योंकि ऐसा मान लेने पर दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक मिथ्याचरि नारकी द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं इत्यादि श्रुतोंके साथ पूर्वाक्त कथनका विरोध प्राप्त होता है । इसलिये सामान्य नारक मिथ्याचरियोंकी चिह्नमसूची प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्याचरियोंकी चिह्नमसूची नहीं हो सकती है । भीर इसीलिये सामान्यसे कहा गया मवहारकाळ भी प्रथम पृथिवीके नारकियोंका मवहारकाळ नहीं हो सकता है । इसीप्रकार प्रथम पृथिवीके दोष गुणस्यान्यतिपक्ष जीवोंके भी मवहारकाळकी वृत्तिक कथन करना चाहिये । इसलिये इसीप्रकार पहली पृथिवीमें छे जाना चाहिये यह स्वार्थ धरित नहीं होता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि असंख्यात अगमेषियोंकी अपेक्षा अगम्यतत्वे असंख्यातवै भागकी अपेक्षा सूर्यगुच्छके द्वितीय वर्गमूखसे गुणित प्रथम वर्गमूख प्रमाण चिह्नमसूचीकी अपेक्षा भीर पर्यवगमके असंख्यातवै भागकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीसंख्या

१ बरहस्पती प्रवचनार्थं पृथिव्यां वारका विप्रातश्चोमनस्वेवऽप्येवमवतलमवैवमालप्रविष्टा । व सि

१ हेतुवज्जुडरीण तमिहिवाणो इ सत्तली इ । पढमाविदि राणी नेरइयाण तु विडिउ । सो जी १५४ वेरिएककपपुसाइववर्नवड्डयमिह । वन्माए ४०० । पवर्त २ १० वार्तवृक्कपपुसा तपूवपुविवा व नेरव नुर् । पवत २ १९ मववहीवीओ देवीओ नमेवपुवाओ । इमीन एवपपमाए पुढवीए नेरका अमवैवइया । पवर्त २ १९ लो ३ (वड्डयवक)

हादि,' तयो संखेज्जगुणहीज-उबकमजकासचादो । सम्मामिच्छत्त पडिबज्जमानरासिस्स
 संखेज्जविभागमेवा उबसमसम्मइड्डिनो सासणगुण पडिबज्जइति चि वा । तमावलिपाए
 अंसखेज्जविभागेव गुणिवे तिरिक्खअंसजवसम्मइड्डिअवहारकासो होदि । तमावलिपाए
 अंसखेज्जविभागेण गुणिवे तिरिक्खसम्मामिच्छइड्डिअवहारकासो होदि । तं संखेज्जरूपेहि
 गुणिव तिरिक्खसासणसम्मइड्डिअवहारकासो होदि । तमावलिपाए अंसखेज्जविभागेण
 गुणिवे तिरिक्खसंसंवादसंसंवादवहारकासो होदि, अपक्खसापावरणाणमुदयामावस्स अइड्ड
 इचादो । तमावलिपाए अंसखेज्जविभागेण गुणिवे वेरइयअंसजवसम्मइड्डिअवहारकासो
 होदि । तमावलिपाए अंसखेज्जविभागेण गुणिवे वेरइयसम्मामिच्छइड्डिअवहारकासो होदि ।
 तं संखेज्जरूपेहि गुणिवे वेरइयसासणसम्मइड्डिअवहारकासो होदि । एवेहि अवहारकासोहि
 पत्तिदोबमे भागे द्विदे अप्पपबो वम्बमागण्डवि ।

सम्बन्धिमप्याद्यदिसंबन्धी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने पर वेच सासात्वनसम्बन्धदि
 जीवत्तदिसंबन्धी अवहारकास प्राप्त होता है क्योंकि, सम्बन्धिमप्याद्यदिके उपक्रमजकाससे
 सासात्वनसम्बन्धदि उपक्रमजकास संख्यातमुत्ता हीन है । अथवा सम्बन्धिमप्यात्त
 गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवत्तदिके संख्यातसे मातमात्र उपक्षमसम्बन्धदि जीव
 सासात्वनसम्बन्धदि गुणस्थानको प्राप्त होते हैं इसलिये मी वेच सम्बन्धिमप्याद्यदिके
 अवहारकाससे वेच सासात्वनसम्बन्धदि उपक्रमजकास संख्यातमुत्ता है । वेच सासात्वनसम्बन्ध
 दिसंबन्धी अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्येच असंयत
 सम्बन्धिसंबन्धी अवहारकास होता है । तिर्येच असंयतसम्बन्धिसंबन्धी अवहारकासको
 आबलीके असंख्यातसे मापसे गुणित करने पर तिर्येच सम्बन्धिमप्याद्यदिसंबन्धी अवहारकास
 होता है । तिर्येच सम्बन्धिमप्याद्यदिसंबन्धी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्येच
 सासात्वनसम्बन्धिसंबन्धी अवहारकास होता है । तिर्येच सासात्वनसम्बन्धिसंबन्धी
 अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्येच संयतासंयतसंबन्धी
 अवहारकास होता है क्योंकि व्याख्यानावरण कपायका कयामात्र अस्तंत तुर्कम है ।
 तिर्येच संयतासंयतसंबन्धी अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर
 नारक असंयतसम्बन्धिसंबन्धी अवहारकास होता है । नारक असंयतसम्बन्धिसंबन्धी
 अवहारकासको आबलीके असंख्यातसे मापसे गुणित करने पर नारक सम्बन्धिमप्याद्यदिसंबन्धी
 अवहारकास होता है । नारक सम्बन्धिमप्याद्यदिसंबन्धी अवहारकासको संख्यातसे गुणित करने
 पर नारक सासात्वनसम्बन्धिसंबन्धी अवहारकास होता है । इन उपर्युक्त अवहारकासोंसे
 पञ्चोपमके मादित करने पर अपना अपना द्रव्यका प्रमाण व्यता है ।

सामाण्यगेश्वरमिच्छाद्दिविस्त्रुमद्यविम्बि अबणिदे पदमपुडविनेरूपमिच्छाद्दिविरासिस्त्रु
विस्त्रुमद्य होदि । एदीए विस्त्रुमद्यए जगमेदिम्बि माग दिदे पदमपुडविनेरूप
मिच्छाद्दिविस्त्रुमद्य होदि ।

उदाहरण—बारहवां वर्गमूल ४। किंकिन् ऊन बारहवां वर्गमूल $\frac{726}{63}$

$$४ \times ५३६ + \frac{726}{63} = ३२२५ \text{ ४। } ३२२ \text{ ६} \times १ = ३२२ \text{ ६।}$$

$$३२२५ \text{ ६} \div ११३३ = \frac{९३}{१२८} = १ - \frac{१२८}{६३}$$

इस किंकिन् ऊन बारहवें वर्गमूलमात्रित एककपक्षी सामान्य नारक मिष्यादृष्टिसंज्ञा
विष्कमसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिष्यादृष्टि राशिकी विष्कमसूची
होती है। इस विष्कमसूचीसे जगमेजीक मात्रित करने पर प्रथम पृथिवीके नारक
मिष्यादृष्टियोंका व्यवहारकाळ होता है।

उदाहरण—२ - $\frac{९३}{१०८} = \frac{१९३}{१२८}$ $\frac{६५ \text{ ३३}}{१} + \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$ प्र. पु. मि. भव ।

विशेषार्थ—जगमेजीके बारहवें दशपै मादहें छडे तीसरे बीर वृत्ते वर्गमूलका
जगमेजीमें माग देने पर क्रमसे छितीयादि पृथिवीयोंके मिष्यादृष्टि नारकियोंका प्रथ्य भाता है।
बीर इन छहों नारकोंके मिष्यादृष्टि जीषोंका जितना प्रमाण हो उसे सामान्य मिष्यादृष्टि
राशिमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके मिष्यादृष्टि जीषोंका प्रमाण होता है। पहले सामान्य
मिष्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण बनसते समय उनकी विष्कमसूची घनांगुलके छितीय
वर्गमूलप्रमाण बतछाई है अर्थात् घनांगुलके छितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतनी
जगमेयियोंको एकत्रित करने पर उनके प्रवेशप्रमाण सामान्य मिष्यादृष्टि जीषराशि होती है। अब
यदि प्रथम नारकके नारकियोंके प्रमाण छानेके छिये विष्कमसूची छाना हो तो छितीयादि नारकके
मिष्यादृष्टि नारकियोंके प्रमाणमें जगमेजीका माग देने पर जो क्रम भाये उसे सामान्य
विष्कमसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नारककी विष्कमसूची भा आती है। उदाहरणार्थ— वृत्ते
नारकका १९३८४ तीसरेका ८१९२, बीयेका ४ ९६ पाँचवेंका २ ४८, छटेका १०२४ बीर
सातवेंका ५१२ द्रष्टव्य मान देने पर इनमें जगमेजी ३१ ३६ का माग देने पर क्रमसे ३, ३, ११,
११, ११ बीर ११२ भाता है जितका जोड़ ११२ होगा है। इसे सामान्य विष्कमसूची २ मेंसे
घटा देने पर ११३ प्रमाण प्रथम पृथिवीकी विष्कमसूची होती है। इसी व्यवस्थाको ध्यानमें
रखकर ऊपर यह कहा गया है कि किंकिन् ऊन बारहवें वर्गमूल मात्रित एककपक्षी सामान्य
नारक मिष्यादृष्टि विष्कमसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नारकके मिष्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण

१ उदा ३ विष्कमसूची (बारहवें दशविष्कमसूची) पृथ्वीवत् अत्रवेष्टादिमायेनूना पदम
शुद्धिनेरनाम विष्कमसूची है। ब. ब. ११ ५१८ अ

परूषणाए सामन्नेरइयपरूषणादो विमेषामावादो । पुगा पञ्चबद्विष्यए भवर्त्तविज्जमापे
विसेसो अत्ति चेष, अण्णाहा विदिपादिपुडवीसु जीवावायप्पमंगादो । तं विसेस वच
इत्तामो । तं सहा—पढमपुडविनेरइयार्णं दक्ख-कल्लपमाणेसु मण्णमायेसु ओपइय-कल्ल
पमाणानि चेष असंखेअदिमामहीणाणि इवंसि । तहा खेत्तपमार्णं पि ओपखेत्तपमावादा
असंखेअदिमागूर्णं भवदि । तं कर्णं ज्ञाणिज्जदे ? 'विदिपादि जाव सत्तमाए पुडवीण
वेरइया खेत्तेण सेहीए असंखेअदिमागो' इदि पुरदो बुद्धमायमुत्तादा पण्णदे अहा
ओपवेरइयमिच्छाइदिवादो पढमपुडविनेरइयमिच्छाइदिद्वं सेहीए असंखेअदिमायेण
हीणमिदि । एवं सुत्तमवर्त्तविय पढमपुडविनेरइयमिच्छाइदीणं विक्खमसूर्णं उप्पाइत्तामो ।
तं सहा—ओपवेरइयमिच्छाइदिरासीदो एगसेदिमवजयणं पढि अदि विक्खमसूर्णमिदि
एगसत्तागाए अवजयणं सम्मदि तो किंणववारसवग्गमूलमज्झिदसेदिमिदि किं समामा पि
सेहीए फल्लगुविदिप्पामोवद्धिदे किंणववारमवग्गमूलमज्झिदेगरूपमागच्छदि । एवं

प्रकृपजामें सामान्य नारकियोंकी प्रकृपवासे कोई विशेषता नहीं है । परंतु पर्यापार्यक नरका
अवस्थान करने पर सामान्य प्रकृपवासे प्रथम पृथिवीसंज्ञकी प्रकृपजामें विशेषता है ही । वरि
येसा व भाग्य जाय तो द्वितीयान्ति पृथिवियोंमें जीवोंके प्रमाजका प्रसंग जा जायगा । अये
उसी विशेषताको बतझाने हैं । यह इसप्रकार है—

पहली पृथिवीके नारकियोंके द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाजका कथन करने पर
सामान्यसे कहे गये द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणको अस्तक्यातर्त्तें भाग न्यून कर देने पर
पहली पृथिवीके नारकियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण होता है । उसीप्रकार पहली
पृथिवीके नारकियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण भी सामान्यसे कहे गये क्षेत्रप्रमाणसे अस्तक्यातर्त्तें
भाग न्यून है ।

प्रश्न—यह कैसे ज्ञान जाता है ?

समाधान—दूसरी पृथिवीसे केकर सातवीं पृथिवीतक नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? अग्रेणीके अस्तक्यातर्त्तें भाग हैं । इसप्रकार भागे कहे जानेवाले सूत्रसे
ज्ञान जाता है कि नारक सामान्य मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यप्रमाणसे पहली पृथिवीके नारक
मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्यप्रमाण अग्रेणीका अस्तक्यातर्त्तें भाग हीन है ।

जब अगे इस द्वितीयान्ति पृथिवियोंके प्रमाणके प्रकृप करनेवाले सूत्रका जलजंजन
केकर पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विच्छेदसूची उत्पन्न करते हैं । यह इसप्रकार
है—जब कि सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियोंसे एक अग्रेणी कम करने पर विच्छेद-
सूचीमें एक शब्दाका कम होती है तो कुछ कम अपने बारहवें वर्गमूलसे भाजित अग्रेणीमें
कितना प्रमाण स्पष्ट होया इसप्रकार विराधित करके दृष्टराशि अपने कुछ कम बारहवें वर्ग
मूलसे भाजित अग्रेणीको फलराशि एकसे गुणित करके अग्रेणीसे अपवर्तित करने पर एकमें
अपेक्षीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलका भाग देनेसे जो द्रव्य भावे कतना प्यता है ।

सामण्येतरव्यमिच्छाद्विषयमध्यमिह भवतिदे पदमपुत्रविषयमिच्छाद्विषयसिस्स
विषयमध्य होदि'। एदीए विषयमध्यए जगसेदिमिह मागे दिदे पदमपुत्रविषय
मिच्छाद्विषयबहारकालो होदि ।

उदाहरण—बारहवां वर्गमूल ४। किंचित् ऊन बारहवां वर्गमूल $\frac{१२८}{३३}$;

$$१५३६ + \frac{१२८}{३३} = १५२५३३ \quad १२८ \times १६ = १५२५३३$$

$$१२८ \times १ = १२८ = \frac{३३}{१२८} = १ + \frac{१२८}{३३}$$

इस किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलमात्रित एकरूपको सामान्य नारक मिष्याद्यदिसंबन्धी
विष्कम्बसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिष्याद्यदि राशिची विष्कम्बसूची
होती है। इस विष्कम्बसूचीमें जगमेणीके मात्रित करने पर प्रथम पृथिवीके नारक
मिष्याद्यदियोंका भवहारकाल होता है।

उदाहरण—२ - $\frac{३३}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}$, $\frac{३५}{१} = \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८४०८}{१९३}$ । प्र पू मि भव ।

विशेषार्थ—जगमेणीके बारहवें वृत्तों नाठवें छठे तीसरे और दूसरे वर्गमूलका
जगमेणीमें माग देने पर भूमसे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिष्याद्यदि नारकियोंका द्रव्य जाता है।
और इन छठों नारकोंके मिष्याद्यदि जीवोंका जितना प्रमाण हो उसे सामान्य मिष्याद्यदि
राशिमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके मिष्याद्यदि जीवोंका प्रमाण होता है। पहले सामान्य
मिष्याद्यदि नारकियोंका प्रमाण बतकाते समय उनकी विष्कम्बसूची वर्गमूलके द्वितीय
वर्गमूलप्रमाण बतकार है अर्थात् वर्गमूलके द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतनी
जगमेणियोंको पञ्चित करने पर उनके प्रवेशप्रमाण सामान्य मिष्याद्यदि जीवराशि होती है। अब
यदि प्रथम नारकके नारकियोंके प्रमाण छानेके छिन्ने विष्कम्बसूची जाना हो तो द्वितीयादि नारकके
मिष्याद्यदि नारकियोंके प्रमाणमें जगमेणीका माग देने पर जो द्रव्य भावे उसे सामान्य
विष्कम्बसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नारककी विष्कम्बसूची भव जाती है। उदाहरणार्थ—दूसरे
नारकका १६३८४ तीसरेका ८१९२, चौथेका ४९६ पाँचवेंका २४८ छठेका १०२४ और
सातवेंका ५१२ द्रव्य मान देने पर इनमें जगमेणी ३५५३३ का माग देने पर क्रमसे $\frac{१}{३}$, $\frac{२}{३}$, $\frac{१०}{१२}$
 $\frac{१०}{१२}$ और $\frac{११}{१२}$ जाता है। जिनका जोड़ $\frac{११}{१२}$ होता है। इसे सामान्य विष्कम्बसूची २ मेंसे
घटा देने पर $\frac{११}{१२}$ प्रमाण प्रथम पृथिवीकी विष्कम्बसूची होती है। इसी व्यवस्थाको ध्यावमें
एककर ऊपर यह कहा गया है कि किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूल मात्रित एकरूपको सामान्य
नारक मिष्याद्यदि विष्कम्बसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नारकके मिष्याद्यदि नारकियोंका प्रमाण

१ तथा पृथिवीविष्कम्बसूची (तात्पर्येतरविष्कम्बसूची) पदपरत अठवें विष्कम्बसूची परत
पृथिवीविष्कम्बसूची होती है। बरका पद ५१८ अ

महना अनरेण पयारण अनहारकालो उपपन्नजदे । त बहा- सामण्यप्रवहारकाल
विरलऊग रुच पडि अगपदरं समरुंड करिय दिग्ने एकैकस्य रुचस्त सामण्यगोरय
मिच्छाद्विरामिममाण पावेदि । पुगा तरय एगरूपपरिदनामग्नभोरयमिच्छाद्विरामिमि
छपुडविमिच्छाद्विरामिमा भाग हिदे किंषूषगारस्रगमूलगुणिदसामग्नभोरयमिच्छा-
द्विरामिमममयी भाग ठदि । पद पुण्याविरलणाए इहा विरलिय उतरि एगरूपपरिद
सामण्यगोरयमिच्छाद्विरामिम समरुंड करिय दिग्ने रुच पडि छपुडविमिच्छाद्विरामि
पमाण पावेदि । तं उतरिमविरलणाए द्विदपामग्नभोरयमिच्छाद्विरामिमि पुष पुष
मवणिदे उतरिमविरलणमेता पडमपुडविमिच्छाद्विरामिमा मवति । छपुडविमिच्छाद्वि
रासीमा वि तावदिया वेव ।

प्रानेके द्विप विष्कंमरुची हाती है । यहां किंचित् ऊन बारहवें भगमूमसे द्वितीयादि तरकोंके
मिथ्यादृष्टि राशिवा समिचित्त भयहारकाय भविष्यत है ।

अथवा दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके बारकमिथ्यादृष्टियोंका भवहारकाय उत्पन्न करते
हैं । यह इत्यप्रकार है— सामान्य भयहारकायका विरसन करके और विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति अगमनरको समान लब्ध करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य
भारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिवा प्रमाण मान्य होता है । पुनः इस विरसनक प्रत्येक एकक प्रति
प्रत्यक्ष सामान्य भारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमैं द्वितीयादि छह पृथिवीयोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
भाग देने पर कुछ कम बारहवें भगमूमन गुणिन सामान्य भारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिवा
विष्कंमरुची भाती है । इसे पूर विरसनके भीके विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति उपरिम विरसनक एकके प्रति प्रत्यक्ष सामान्य भारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान
लब्ध करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयादि छह पृथिवीयोंके भी भारक
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण का जाता है । उन्ने उपरिम विरसनके प्रत्येक एकके प्रति प्रत्यक्ष
सामान्य भारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमसे पूरक पूरक मिश्रण देन पर उपरिम विरसनका अतना
प्रमाण है उन्नी प्रथम पृथिवीगत भारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिवा होती है । द्वितीयादि छह
पृथिवीगत भारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिवा भी उन्नी ही होती है ।

उदाहरण—छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि राशि ३२३५९।

$$\begin{array}{r} ३२३५९ \quad ३२३५९ \\ १ \quad १ \quad ३०३५८ \text{ बार,} \end{array}$$

$$३२३५९ - ३०३५८ = \frac{२००}{१३} = २ \times \frac{१०८}{१३}$$

$$\begin{array}{r} ३२३५९ \quad ३२३५९ \quad ३२३५९ \quad ३०३५९ \quad २०३८ \text{ इन ३२३५९ को हव.} \\ १ \quad १ \quad १ \quad १ \quad ४ \text{ रिम विरसनके प्रत्येक} \end{array}$$

१३ एकके प्रति प्रमाण

३२३ ३३ में पटा देन पर ८१९ बराब प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशिवा होती है
और इन ३२३ १ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवीयोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशिवा होती है ।

पुणो उपरिमविरलपमेचछप्पुडविमिच्छाइडिद्वम् पढमपुडविमिच्छाइडिद्वम्पमानेय
 कस्सामा । तं अहा- रूयूवहेट्टिमविरलपमेचछप्पुडविद्वम्पेसु उपरिमविरलपमिह सप्पुडिदेसु
 पढमपुडविमिच्छाइडिपमाण होदि । उत्तप एगा अवहारकालसलागा लम्भइ । पुणो वि
 उपरिमविरलपमिह तच्चिएसु चम छप्पुडविद्वम्पेसु सप्पुडिदेसु अवरेग पढमपुडविमिच्छा
 इडिपमाण होदि, विदिया च अवहारकालपक्खेवसलागा लम्भइ । एवं पुणो पुणो
 कीरमाणे रूयूवहेट्टिमविरलणादो उपरिमविरलणा अमत्तेन्धगुणा चि कहु सेडीण
 अत्तेल्लदिमागमेचाओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लम्भति । तासिमेगवारेणापयप
 विही पुचदे । त अहा- रूयूवहेट्टिमविरलपमेचछप्पुडविद्वम्पेसु चदि एगा अवहारकाल
 पक्खेवसलागा लम्भदि, तो सामण्णणेरह्यमिच्छाइडिअवहारकालमेचछप्पुडविमिच्छा
 इडिद्वम्पेसु केचियाओ लमामो चि सरिसमवभिय रूयूवहेट्टिमविरलणाण सामण्ण
 अवहारकालमिह मागे हिडे अवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति । ताओ सरिसच्छेदं
 कालस सामण्णणेरह्यमिच्छाइडिअवहारकालमिह 'पक्खित्त पढमपुडविमिच्छाइडिअवहार

अथ उपरिम विरलनमाण छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यको प्रथम पृथिवीगत मिथ्या
 दृष्टि द्रव्यप्रमाणरूप करते हैं । उसका स्वीकरण इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक कम
 अधस्तन विरलनमाण छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुचित करने पर प्रथम पृथिवीगत
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और वहाँ एक अवहारकाळ प्रसेपशकाका प्राप्त
 होती है । पुनः उपरिम विरलनमें उतने ही अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनमाण छह
 पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुचित करने पर दूसरीबार प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि
 द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरी अवहारकाळ प्रसेपशकाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार
 पुनः पुनः करने पर एक कम अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन अलंकारगुणा है इसलिये
 जगभेदीके मसक्यातर्षे मागमाण अवहारकाळ प्रसेपशकाका प्राप्त होती है । मागे उन
 अवहारकाळ प्रसेपशकाकाओंकी एकवार सानेकी विधिसे बतलाते हैं । यह इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमाण अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित छह पृथिवीगत
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति यदि एक अवहारकाळ प्रसेपशकाका प्राप्त होती है तो सामान्य नारक
 मिथ्यादृष्टिसंन्यायी अवहारकाळमात्र अर्थात् सामान्य नारक अवहारकाळगुणित छह पृथिवीगत
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति कितनी अवहारकाळ प्रसेपशकाका प्राप्त होगी इसप्रकार वैराशिकमें
 सदृशका भवतयन करके एक कम अधस्तन विरलनसे सामान्य अवहारकाळसे भाजित
 करने पर अवहारकाळ प्रसेपशकाका भा जाती है । इनको समान छेड़ करके सामान्य नारक
 मिथ्यादृष्टि अवहारकाळमें मिथ्या देने पर प्रथम पृथिवीसंन्यायी नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाळ

अथवा अवशेष पयारेण अवहारकालो उत्पादन्वे । तं ब्रह्म- सामान्यमवहारकालं
विरहेत्तत्र रूपं पठि अगपदं समस्तं करिष्ये दिव्ये एकैकस्म रूपस्त सामान्यपरिष्य
मिच्छाद्विरासिपमान पावेदि । पुनो तत्र एगरूपपरिदसामान्यपरिष्यमिच्छाद्विरासिभि
छप्पुद्विमिच्छाद्विरासिभा मागे हिदे किंचूवहारसंगमूठगुनिदसामान्यपरिष्यमिच्छा-
द्विबिम्बमस्यी आगच्छदि । एव पुन्यविरासगाए हेतु विरसिप ठरि एगरूपपरिद
सामान्यपरिष्यमिच्छाद्विरासि समस्तं करिष्ये दिव्ये रूपं पठि छप्पुद्विमिच्छाद्विरासि
पमान पावेदि । तं ठरिमविरासगाए द्विदपामान्यपरिष्यमिच्छाद्विरासिभि पुष पुष
अवमिदे ठरिमविरासगमेवा पढमपुद्विमिच्छाद्विरासीओ मर्षति । छप्पुद्विमिच्छाद्वि
रासीओ वि तावदिपा नैव ।

कालके किये बिम्बमस्तुभी होती है । यहां किंचित् अत्र बारहवें वर्गमूलसे द्वितीयानि नरकोंके
मिष्याद्वि राशि। समिद्धित अवहारकाल मयिमत है।

अथवा दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके नारक मिष्याद्विर्षाका अवहारकाल उत्पन्न करते
हैं । वह इसप्रकार है— सामान्य अवहारकालका विरक्षण करने और विरक्षित राशि के प्रत्येक
एकके प्रति अमप्रकारको समान छण्ड करते रूपरूपसे वे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य
नारक मिष्याद्वि जीवराशि का प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस विरक्षणके प्रत्येक एकके प्रति
प्राप्त सामान्य नारक मिष्याद्वि जीवराशिमें द्वितीयानि छह पृथिवीकोके मिष्याद्वि द्रव्यका
भाग देने पर कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित सामान्य नारक मिष्याद्वि जीवराशि
बिम्बमस्तुभी जाती है । इसे पूर्व विरक्षणके नीचे विरक्षित करते और विरक्षित राशि के प्रत्येक
एकके प्रति उपरिम विरक्षणके एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिष्याद्वि द्रव्यको समान
लंब करते रूपरूपसे वे देने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयानि छह पृथिवीसंख्या नारक
मिष्याद्वि द्रव्यका प्रमाण भा जाता है । उसे उपरिम विरक्षणके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त
सामान्य नारक मिष्याद्वि द्रव्यमेंसे पृथक् पृथक् निकाल देने पर उपरिम विरक्षणका जितना
प्रमाण है उतनी प्रथम पृथिवीगत नारक मिष्याद्वि जीवराशिवां होती है । द्वितीयानि छह
पृथिवीगत नारक मिष्याद्वि जीवराशिवां भी उतनी ही होती है ।

उदाहरण—छह पृथिवीगत मिष्याद्वि राशि ३२२ ९

१३१०७२

१३१०७२

३२७३८ बार ।

$$१३१०७२ \div ३२२९९ = \frac{२५९}{३३} = २ \times \frac{१२}{३३}$$

३२२९९ ३२२९९ ३२२९९ ३२२९९ २ ४८

इस ३२२९९ को उप-
रिम विरक्षणके प्रत्येक
एकके प्रति प्राप्त

१३१०७२ से घटा देने पर १८८१९ प्रमाण प्रथम पृथिवीगत मिष्याद्वि द्रव्य राशिवां होती है
और शेष ३२२९९ प्रमाण द्वितीयानि छह पृथिवीकोके मिष्याद्वि द्रव्य राशिवां होती है ।

कातो हादि । एदाओ अवहारकालपक्षेवससागाओ सामान्यवेरूपमिच्छाद्विजवहार
कालमेवउत्पुदविमिच्छाद्विदम्बमस्तिऊय उप्पज्जाओ ।

पुणो एदाओ वेव अवहारकालपक्षेवससागाओ विक्खंमद्यधिम्हि अवजयवत्त
पमाणं च पुदधिं पुदधिं पडि एत्थि एत्थियं होदि चि परुविज्जदे । तत्थ ताव विक्खंम-
द्यधिम्हि अवजिज्जमाणरूपाण पमाणं पुब्बदे । तं जहा- एगसेडिअवजयण पडि अदि
सामान्यवेरूपविक्खंमद्यधिम्हि एगरूबस्स अवजयणं लब्धमदि तो विदियपुदविदम्बस्स
अवजयणं पडि किं लभामो चि सरिसमवजिय सेडिबारसवग्गमूलेण एगरूबं सेडिदे
विदियपुदविमस्तिऊय विक्खंमद्यधिम्हि अवजयणपमाणमामच्छदि । तं च एद ११ । एवं
सेसपुदवीण वि तेरामियकमेण विक्खंमद्यधिम्हि अवजिज्जमाणरूपमाममाणयणं । तेमि

दोता है । ये अवहारकाल प्रक्षेपशब्दादय सामान्य वारक सिध्दादधि अवहारकालमात्र नर्णय
सामान्य वारक सिध्दादधि अवहारकालगुणित कइ पृथिवीगत सिध्दादधि प्रपञ्चा आश्रय
सेकर उत्पन्न हुई हैं ।

उदाहरण—उपरिम विरलन ३२७१८ अवस्तन विरलन $\frac{२५९}{१३}$

$$\frac{२५९}{१३} - १ = \frac{१९६}{१३}, ३२७१८ - \frac{१९६}{१३} = १,९४३,८७ \text{ अथ प्रक्षेपसामान्यं ।}$$

$$३२७१ + \frac{१,९४३,८७}{१९६} = \frac{८३८९०८}{१९६} \text{ पू पू अथ ।}$$

अथ प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारकाल प्रक्षेपशब्दादयैका प्रमाण नीर विक्खंमस्तीमें
अपनयनरूप संख्याका प्रमाण इतना इतना होता है इसका प्रनयन करते हैं । उसमें भी पहले
विक्खंमस्तीमें अपनीयमान संख्याका प्रमाण कहते हैं । वह इसप्रकार है—एक जगत्सेवीके
अपनयनके प्रति यदि सामान्य वारक विक्खंमस्तीमें एक संख्या कम होती है तो द्वितीय
पृथिवीके प्रपञ्चे प्रत्येके प्रत्येके प्रति कितनी संख्या प्राप्त होगी इसप्रकार सदृशका अपनयन करके
(अथान् दूसरी पृथिवीके प्रपञ्चके अपक्षेपीते अपनयन करके अथान् भाजित करके) अप-
क्षेपीके वारहवें वर्गमूलसे एकको संज्ञित करने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके विक्खंमस्तीमें
अपनयनरूप संख्याका प्रमाण आ जाता है । यह यह ११ है ।

उदाहरण— $१ \times १९३,८७ = १९३,८७$ $१९३,८७ \div १० = १९,३८७ = \frac{१}{१०}$ अपनयनरूप ।

$$\text{अथवा } १ + ४ = \frac{१}{४}, \left(१ - \frac{१}{४} = \frac{३}{४} \right)$$

इसीप्रकार दोन पृथिवीयोंका भी वैराशिक क्रमसे विक्खंमस्तीमें अपनीयमान
संख्याका प्रमाण ले आता चाहिये । प्रत्येक पृथिवीके प्रति इन अपनीयमान संख्याओंका

प्रमाण सेविद्वसम अङ्क छद्म-सदिय विदियवग्गमूलेहि पुष पुष एगरूबं सविदे तरय
एगमाग होदि । विदियादिपुद्गलीय एदे अवहारकाता होति सि कच पचदे ?

बारस दस अष्टेय य मूला छप्पि दुग च' गिरण्णु ।

एकारस णव सप्त य पण य चउक च देवेसु ॥ १६ ॥

गद्गहादो आरिसादो पच्यदे । तेसिमफट्टवणा एसा ११ १२ १३ १४ १५ । सविबारम

प्रमाण क्रमसे जगधेणीके दशर्ये अष्टर्ये, छठर्ये तीसरे और दूसरे वर्गमूलसे पृथक् पृथक् एक
संख्याको कथित करने पर वहाँ जो एक भाग छप्प आधे उतना होता है ।

उदाहरण—दशर्ये वर्गमूल ८, आठर्ये वर्गमूल १६, छठा वर्गमूल ३ । तीसरा वर्ग

मूल १४। दूसरा वर्गमूल १२। $१ - ८ = \frac{१}{८}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा ।

$१ + १६ = \frac{१}{१६}$ बीसवीं पृथिवीकी अपेक्षा । $१ + ३२ = \frac{१}{३२}$ पचासवीं पृथिवीकी

अपेक्षा । $१ - १४ = \frac{१}{१४}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा । $१ + १२ = \frac{१}{१२}$

सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा अपनीयमान संख्याका प्रमाण ।

द्रव्य—जगधेणीका बारहवां वर्गमूल दशर्ये वर्गमूल आदि य सब द्वितीयादि
पृथिवियोंके अवहारकाय होते हैं यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—गरुडमें द्वितीयादि पृथिवीसंबन्धी द्रव्य छानेके लिये जगधेणीका
बारहवां दशर्ये अष्टर्ये, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाय होता है । तथा
देवीमें (सातकुमार आदि पाँच कल्पयुगधर्मोंका प्रमाण छानेके लिये) जगधेणीका बारहवां
तीसरा सातवां पाँचवां और बीसवां वर्गमूल क्रमसे अवहारकाय होता है ॥ १६ ॥

इस कार्य पक्षसे जाना जाता है कि कर्पुर्ण वर्गमूल द्वितीयादि पृथिवियोंके द्रव्य
छानेके लिये अवहारकाय होते हैं ।

उन अपनीयमान अंशोंकी स्थापना क्रमसे ११ १२ १३ १४ १५ इसप्रकार है ।

विशेषार्थ—वहाँ पर जगधेणीके बारहवें वर्गमूल आदि का जान करानेके लिये इनके

१ प्रथिगु इवंच इति पठ ।

२ तमकुवर काज हरहरमन्त्रकपराधिवरवा वरमनुवर्णीयते । कुवा केहीव अकधःअमागधवेच
पुटेवि तपो मेघावाकरी । मिठेहरो पुन मेरो अवि केहीव एवपुन-नवन ववन वचन-वड वरपमूलाव अतावव
केहीवमन्त्रकपरी वरकलो । वरका पण १२ अ । तीसरीहरे विविहवा कर्मावपुटीवपुवजमेवि । नकावुवव
इवदिवचपुमेवि विविहवा कवलो विरिवावव नवन ठठव वचन वरुवमन्त्रकपवेवि । कवला पण इवविवा
वका । टी. जी. जी. ३५, टी. १५१

स्थानमें अंकद्वयसे १२, १ आदि संख्याओंका प्रहण किया है। तथा अंशके स्थानमें १ अंक प्रहण करके वह बतलाया है कि १ में बारहवें आदि वर्गमूलोंका माग देनेसे सामान्य विच्छेद मूलोंमें अपरिणीतमान संख्या आ जाती है। पर इससे वहाँ बारहवें वर्गमूलका प्रमाण १२ और दशवें वर्गमूलका प्रमाण १० आदि नहीं देना चाहिये। ये १२ १० आदि एक तो केवल अनुसंधान के द्वारा उक्त वर्गमूलोंका ज्ञान करनेके लिये संकेतमात्र हैं। इसीप्रकार इसी प्रकार प्रकृत विषयके स्पष्ट करनेके लिये अंकसंश्लिष्ट अपेक्षा अग्रमेचीका प्रमाण १५ १९ दिया है उसके भी ये १२, १ आदि अंक बारहवें और दशवें आदि वर्गमूल नहीं हैं जो द्वितीयादि पृथिवीयोंके अंकसंश्लिष्ट अपेक्षा लिये गये अग्रमेचीकोसे स्पष्ट समझमें आ जाता है। यद्यपि १५११९ के पहले, दूसरे तीसरे और चौथे वर्गमूलको छोड़कर शेष सभी वर्गमूल करबीजत होते हैं फिर भी वीरचनस्वामीने वर्गमूलोंके परस्परके तारतम्यको प्रहण न करके द्वितीयादि वर्गोंमें गारक अंशोंकी उत्तरोत्तर हीन संख्याका परिज्ञान करानेके लिये बारहवें वर्गमूलके स्थानमें ४ दशवेंके स्थानमें ८, ग्यारहवेंके स्थानमें १९ छहवेंके स्थानमें ३२ तीसरेके स्थानमें १४ और दूसरेके स्थानमें १२८ दिया है। इस प्रकारमें ब्याहण केवल जीवराशि आदिही जो संख्या निश्चयी है वह पूर्वोक्त व्यापार पर ही निर्याही गई है। इससे बारहवें वर्गमूल आदिमें परस्पर भिन्नता तारतम्य है वह उक्त संकेतक संख्याओंमें नहीं रहता है और इसलिये वहाँ कभी दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें अंतर प्रतीय होता है। जैसे अनेक जगह छठी और सातवीं पृथिवीका मध्य हुआ जो मातृहार निर्याही उस प्रकारमें अपरिम विरक्षण भी अग्रमेचीका तृतीय वर्गमूलप्रमाण है और अग्रस्तन विरक्षण भी उतना ही है। पर वर्गमूलोंके उक्त संख्याओंके अनुसार वहाँ अपरिम विरक्षण १४ प्रमाण और अग्रस्तन विरक्षण २ संख्याप्रमाण ही जाता है क्योंकि अंशोंके द्वारा मापी हुई सातवीं पृथिवीकी जीवराशि ५१२ वय प्रमाणका छठी पृथिवीके मध्य १ २४ में माग देने पर २ ही व्यक्त होते हैं। वर्गमूलोंमें परस्पर जो तारतम्य है वह इन संकेतोंमें नहीं रहनेसे ही वहाँ दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें इसप्रकारका वैयर्थ्य निर्याही होता है। पर यदि हम वर्गमूलोंके तारतम्यको केवल अंकसंश्लिष्ट अंशोंमें तो सुव्याप्यसे दृष्टान्तमें कोई अंतर नहीं पड़ सकता है। फिर भी दृष्टान्त एकदशा होता है इसी व्याप्यके अनुसार ही वहाँ अंकसंश्लिष्टसे दार्ष्टान्तको समझना चाहिये। इससे वहाँ कभी दृष्टान्तसे दार्ष्टान्तका साम्य नहीं मिलता होगा वहाँ दृष्टान्तमें प्रहण किये गये अंशोंमें अपेक्षित तारतम्यका अभाव ही कारण है दार्ष्टान्तमें कोई दोष नहीं। यह बात निश्चयेष्टक अतिशय समझमें आ जायगी—

१५११९ के वर्गमूल	बारहवाँ	दशवाँ	आठवाँ	छठा	तीसरा	दूसरा	विच्छेदमूल
यजमानार द्वारा मागे गये संकेतक	१२	१४	३२	१९	८	४	२
१५११९ = १ ^१ के विरहित वर्गमूल	१२	१४	३२	१९	८	४	बारहवें वर्गमूलसे नीचे आकर

याममूलमज्झिद्वयगम्वं विक्खुमम्वचिम्हि अवाणीय मन्दि गुणिद विदियपुडविद्वयण विणा समछपुटविद्वयमागच्छदि । पुणा ताए चर ऊणविक्खंमम्वचीए जगमेडिम्हि भागे हिद विदियपुटविक्खंमरिचछपुटविमिच्छाद्विद्वयस्स अवाहारफालो हादि । पुणो तम्हि चेव छपुटविक्खंमम्वचिम्हि एगम्व मन्दिममग्गमूलग मन्थिय तत्थ एगम्वमवणीए विदिय तदियपुटविक्खंमरिचछपुटविमिच्छाद्विद्वयस्स विक्खंमम्वची हादि । पुणो ताए चर विक्खंमम्वचीए जगमन्दि भागे हिदे पचपुटविमिच्छाद्विद्वयस्स अवाहारफालो हादि । पुणा तम्हि चर पचपुटविक्खंमम्वचिम्हि एगम्व सेत्तिम्वमवणीए मन्थिय एगम्वमवणीए विदिय-तदिय चउयपुटविक्खंमरिचछपुटविमिच्छाद्विद्वयस्स विक्खंमम्वची हादि । पुणो ताए विक्खंमम्वचीए जगमन्दि भागे हिद चउण्ह पुटवीण मिच्छा

जगभेणीके पाट्ठमं यगमूलस एक संवपाको भाजित करके जो सप्त भावे उस विक्खंमम्वचीमेस घटाकर दोष प्रमाणमे जगभेणीके गुणित करने पर तिसीय पृथिवीगत द्रव्यक पिता शय छह पृथिवीसंख्या मिथ्यारदि द्रव्यका प्रमाण होता है । तथा उनी ऊन विक्खंमम्वचीमे जगभेणीको भाजित करने पर दूसरी पृथिवीक अवधारकालके बिना दोष छह पृथिवियोंके मिथ्यारदि द्रव्यका अवधारकाल जाता है ।

उदाहरण— $1-8 = \frac{1}{8}$, $-\frac{1}{8} = \frac{3}{8}$ $\therefore 132 \times \frac{3}{8} = 49\frac{1}{2}$ दूसरी पृथिवीके द्रव्यक

पिता शय छह पृथिवियोंका मिथ्यारदि द्रव्य । $12 \times 36 = \frac{432}{3}$

दूसरी पृथिवीके अवधारकालक पिता शय छह पृथिवियोंका अवधारकाल ।

अनन्तर जगभेणीके द्वाये यगमूलस एक रूपको लभित करके जो एक सप्त सप्त भावे उस पुराण उनी छह पृथिवीसंख्या विक्खंमम्वचीमेस घटा देने पर दूसरी और तीसरी पृथिवीके पिता शय पाँच पृथिवीसंख्या मिथ्यारदि द्रव्यका विक्खंमम्वची जाती है । पुनः उनी विक्खंमम्वचीस जगभेणीक भाजित करने पर (दूसरी और तीसरीक पिता) पाँच पृथिवियोंके मिथ्यारदि द्रव्यका अवधारकाल जाता है ।

उदाहरण— $1-6 = \frac{1}{6}$, $\frac{1}{6} = \frac{1}{6}$ दूसरी और तीसरीक पिता शय पाँच

पृथिवियोंका विक्खंमम्वची । $132 \times \frac{1}{6} = 22$ दूसरी और तीसरी

पिता शय पाँच पृथिवियोंका अवधारकाल ।

अनन्तर जगभेणीक द्वये यगमूलस एक रूपको लभित करके जो एक सप्त सप्त भावे उस पुराण उनी पाँच पृथिवीसंख्या विक्खंमम्वचीमेस घटा देने पर दूसरी तीसरी और चारवी पृथिवीका छहका दोष और पृथिवियोंके मिथ्यारदि द्रव्यका विक्खंमम्वची जाती

स्थानमें अंककपसे १२, १ अङ्गि संख्याओंका प्रहण किया है। तथा अंशके स्थानमें १ अंक प्रहण करके यह बतलाया है कि १ में बारहवें आदि वर्गमूलोंका माग देनेसे सामान्य विधेय सूचीमें अपनीयमान संख्या आ जाती है। पर इससे यहां बारहवें वर्गमूलका प्रमाण १२ और दशवें वर्गमूलका प्रमाण १ आदि नहीं देना चाहिये। ये १२, १० आदि अंक तो वे बह अनुसंधानोंके द्वारा उक्त वर्गमूलोंका ज्ञान करनेके लिये संकेतमान हैं। इसीप्रकार हमी प्रकरणमें प्रहृत विषयके स्पष्ट करनेके लिये अक्षरसंक्षिप्त मनेसा अंगशेषीका प्रमाण १५५३६ दिया है उसके भी ये १२, १० आदि अंक बारहवें और दशवें आदि वर्गमूल नहीं हैं जो द्वितीयादि पृथिवीयोंके अक्षरसंक्षिप्त मनेसा दिये गये मन्त्रादिकाओंसे स्पष्ट समझमें आ जाता है। परन्ति १५५३६ के पहले, दूसरे तीसरे और चौथे वर्गमूलको छोड़कर दोप सभी वर्गमूल करनीयत होते हैं फिर भी बीरसमस्यामीने वर्गमूलोंके परस्परके तारतम्यको प्रहण न करके द्वितीयादि वर्गमूलोंके आधारे उल्लेखित हीन संख्याका परिज्ञान करावेके लिये बारहवें वर्गमूल स्थानमें ४ दशवेंके स्थानमें ८, आठवेंके स्थानमें १६ छठवेंके स्थानमें ३२, तीसरेके स्थानमें ६४ और दूसरेके स्थानमें १२८ दिया है। इस प्रकरणमें उदाहरण देकर जीवराशि आदिषु जो संख्या निम्नलिखी है वह पूर्वोक्त आधार पर ही निकाली गई है। इससे बारहवें वर्गमूल आदिमें परस्पर अतना तारतम्य है वह उक्त संकेतरूप संख्याओंमें नहीं रहता है और इसलिये कहीं कहीं दशान्त और द्वाध्वान्तमें अन्तर प्रतीत होता है। जैसे अतो बहकर छठी और सातवीं पृथिवीका मिक्र द्रव्य जो मागद्वार निष्कास्य है उस प्रकरणमें उपरिम विरहण भी अंगशेषीका तृतीय वर्गमूलप्रमाण है और अक्षरसम विरहण भी उतना ही है। पर वर्गमूलोंके उक्त संख्याओंके अनुसार यहां उपरिम विरहण १४ प्रमाण और अक्षरसम विरहण २ संख्याप्रमाण ही आता है क्योंकि, अक्षरोंके द्वारा मानी हुई सप्तवीं पृथिवीकी जीवराशि ११२ रूप प्रमाणका छठी पृथिवीके द्रव्य १ २४ में माग देने पर २ ही लभ्य आते हैं। वर्गमूलोंमें परस्पर जो तारतम्य है वह इन संकेतोंमें नहीं रहनेसे ही यहां दशान्त और द्वाध्वान्तमें इसप्रकारका वैयर्थ्य दिखाई देता है। पर यदि हम वर्गमूलोंके तारतम्यको केवल अक्षरसंक्षिप्त अमात्रों तो अक्षरार्थसे दृष्टान्तमें कोई अन्तर नहीं पड़ सकता है। फिर भी दृष्टान्त परदेष्ट होता है इसी व्यापके अनुसार ही यहां अंकसंक्षिप्तसे द्वाध्वान्तको समझना चाहिये। इससे जहां कहीं दृष्टान्तसे द्वाध्वान्तका साम्य नहीं मिलता होगा वहां दृष्टान्तमें प्रहण दिये गये अंशोंमें अपेक्षित तारतम्यका अभाव ही कारण है द्वाध्वान्तमें कोई दोष नहीं। यह बात निम्नोक्तको अतिशीघ्र समझमें आ जायगी—

१९ ३६ के वर्गमूल	बारहवां दशवां आठवां	छठा तीसरा	दूसरा	चिह्नमसूची
पचमद्वार द्वारा माने गये संकेतार्थ	१२८	३४	३२	१६ ८ ४ २
१९ ३६ = ११ के निरिक्त वर्गमूल	१६१	२४	१६	१६ २ २
	१	२	२	२ २

बारहवें वर्गमूलसे नीचे आकर

पुणो दोपुदविमिच्छमसुविमिह सेत्रिनिदियवगगपूलेण एगरूव सुंठिय तत्थ एगसुंठ
मवपिदे पडमपुनविमिच्छाइडिदन्वस्स विमसुंमसुंभी होदि । पुणो ताए विमसुंमसुंभीए
अगसेदिमिह मागे हिदे वि पडमपुदविमिच्छाइडिदन्वस्स अवहारकालो मागञ्चदि ।

पुणो सपहि सामण्यअवहारकालमेचछपुदविदन्वमस्सिऊण पुदविं पठि अवहार
कालपक्खवसलागाओ आणिञ्जवि । तत्थ ताव विदियपुदविमिच्छिऊण उप्पण्णअवहार
कालपक्खवसलागाओ माणिस्सामो । तं अहा— विदियपुदविमिच्छाइडिदन्वेण पडमपुदवि
मिच्छाइडिदन्वमवहारिय लद्धमेचेसु विदियपुदविमिच्छाइडिदन्वेसु सामण्यअवहारकालमेच
विदियपुदविदन्वमि मसुविदेसु एगं पडमपुदविमिच्छाइडिदन्वपमाणं लब्भइ, एगा
अवहारकालपक्खवसलागा । पुणो वि एचियमेचेसु विदियपुदविमिच्छाइडिदन्वेसु समु
दिदेसु पडमपुनविमिच्छाइडिदन्वपमाणं लब्भइ, विदिया अवहारकालपक्खवसलागा य ।
एव पुणो पुणो कीरमाणे सदीए अयंसेअमागमेचाओ अवहारकालपक्खवसलागाओ

पृथिवीका अवहारकाल ।

अनन्तर अग्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे एकरूपको सन्धि करके जहां ओ एक ऊंड
सम्य भावे उसे पूर्णक दो पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि विष्कमसूचीमेंसे घटा देने पर पड़ती
पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यकी विष्कमसूची होती है । अनन्तर उस विष्कमसूचीका अग
ग्रेणीमें माग देने पर पड़ती पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यका अवहारकाल जाता है ।

उदाहरण— $1 \div 120 = \frac{1}{120}$ $\frac{1}{120} \times \frac{10}{10} = \frac{1}{12}$ पड़ती पृथिवीकी मिथ्याएदि

विष्कमसूची । $1 \div 120 = \frac{1}{120}$ $\frac{1}{120} \times \frac{10}{10} = \frac{1}{12}$ पड़ती पृथिवीका मिथ्याएदि

अवहारकाल ।

अब सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनीबार यह पृथिवीको द्रव्यका
माध्य लेकर मध्येक पृथिवीके प्रति प्रत्येक अवहारकाल शास्त्राकार करते हैं । उनमें पड़ते दूसरी
पृथिवीका माध्य लेकर उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रत्येकशास्त्रार्थीका कथन करते हैं । वह
इसप्रकार है—दूसरा पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यसे पड़ती पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि
द्रव्यको अवहार करके आ सम्य भावे तन्मान स्थानों पर स्थापित दूसरी पृथिवीसंख्या
मिथ्याएदि द्रव्यको सामान्य अवहारकालमात्र (सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है
उतनी बार स्थापित) दूसरी पृथिवीसंख्या द्रव्यमेंसे समुचित करने पर पड़तीबार प्रथम
पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यका प्रमाण जाता है और अवहारकालमें एक प्रत्येकशास्त्र
उत्पन्न होती है । फिर भी इतनेमात्र दूसरी पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यके समुचित कर देने
पर दूसरीबार प्रथम पृथिवीसंख्या मिथ्याएदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है, और अवहार
कालमें दूसरी प्रत्येकशास्त्राका प्राप्त होती है । इतनेप्रकार पुनः पुनः करने पर अग्रेणीके

इद्विद्वन्स्य अवहारकालो होदि । पुणो तन्मिदं च चउपुडविमिच्छाइद्विद्वन्स्य मय्यभिदि
एगरूय सेदिछडवग्गमूलेय रंदिछग तत्थ एगउंठमय्यभिदे विदिय-तदिय-चउरय-ययम
पुडविदिदिदिचसेसविपुडविमिच्छाइद्विद्वन्स्य विकलंमय्यइ हादि । पुणो ताए विकलंमय्यइए
अगसेदिमिदि मागे दिदि विपुडविमिच्छाइद्विद्वन्स्य अवहारकालो हादि । पुणो सेदि
तदियवग्गमूलेय एगरूय रंदिच तत्थ एग रंठं तिद्व पुडवीण विकलंमय्यभिदि अवभिदे
पडम-सचमपुडवीण मिच्छाइद्विद्वन्स्य विकलंमय्यइ आगच्छदि । पुणो ताए विकलंमय्यइए
अगसेदिमिदि मागे दिदे पडम-सचमपुडवीण मिच्छाइद्विद्वन्स्य अवहारकालो आगच्छदि ।

है । अन्तर उस विष्कम्भसूचीका अग्रमेजीमें माग देने पर पूर्वोक्त चार पृथिवियोंके मिश्राद्यदि
द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 + 12 = \frac{1}{12}, \quad \frac{12}{12} - \frac{1}{12} = \frac{11}{12} \text{ दसरी तीसरी और चौथी पृथिवीके}$$

$$\text{बिना शेष चार पृथिवियोंकी विष्कम्भसूची । } 1.1224 + \frac{11}{12} = \frac{1.1224}{12}$$

पूर्वोक्त चार पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अन्तर अग्रमेजीके छठे वर्गमूलसे एक रूपको लब्ध करके वहां जो एक लंब ऊंच
भावे उसे उन्हीं पूर्वोक्त चार पृथिवीसंख्या मिश्राद्यदि विष्कम्भसूचीमेंसे घटा देने पर
दसरी तीसरी चौथी और पांचवी पृथिवीको छोड़कर शेष तीन पृथिवीसंख्या मिश्राद्यदि
द्रव्यकी विष्कम्भसूची होती है । अन्तर उस विष्कम्भसूचीका अग्रमेजीमें माग देने पर पूर्वोक्त
तीन पृथिवीसंख्या मिश्राद्यदि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 + 12 = \frac{1}{12}, \quad \frac{12}{12} - \frac{1}{12} = \frac{11}{12} \text{ पहली छठी और सातवीं पृथिवी}$$

$$\text{संख्या मिश्राद्यदि विष्कम्भसूची । } 1.1224 + \frac{11}{12} = \frac{1.1224}{12} \text{ पूर्वोक्त}$$

तीन पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अन्तर अग्रमेजीके नौतीय वर्गमूलसे एक रूपको लब्ध करके वहां जो एक लंब ऊंच
भावे उसे उन्हीं पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंकी मिश्राद्यदि विष्कम्भसूचीमेंसे घटा देने पर पहली
और सातवीं पृथिवीके मिश्राद्यदि द्रव्यकी विष्कम्भसूची जाती है । अन्तर उस विष्कम्भसूचीका
अग्रमेजीमें माग देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिश्राद्यदि द्रव्यका अवहारकाल
मिलता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 + 12 = \frac{1}{12}, \quad \frac{12}{12} - \frac{1}{12} = \frac{11}{12} \text{ पहली और सातवीं पृथिवीकी मिश्रा-}$$

$$\text{द्यदि विष्कम्भसूची । } 1.1224 + \frac{11}{12} = \frac{1.1224}{12} \text{ पहली और सातवीं}$$

- पक्षमेव अवहारकालमलागाग्रो आणेष्वन्वात्रा । गवरि विसेमा सेतिदमवगममूलगुणिद
- पत्रमपुत्रिविक्त्वममूर्ध्व सामण्यअवहारकालमिदं भागं हिदं तदियपुत्रविअवहारकाल
- पक्षमवमलागाग्रो आगच्छति । एदाग्रो पुत्रिछदोष्ट विरलमाण पस्से विरलिय सामण्य
- अवहारकालमत्ततदियपुत्रविद्वय समस्त करिय दिण्णे रुव पठि पदमपुत्रविद्वयपमाग
- पावदि । पत्रमपुत्रिविक्त्वममूर्ध्वगुणिदमन्त्रिअद्वमवगममूलण सामण्यअवहारकालमिदं भागे
- हिदं चउत्थपुत्रविअवहारकालपक्षमेवमलागाग्रो आगच्छति । ताग्रो वि पुत्रिछदोष्ट
- विरलमाण पस्म विरलिय सामण्यअवहारकालमेवचउत्थपुत्रविमिच्छाद्विद्वय समस्त

पृथिवीकी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्थ से आना चाहिये । केवल इनकी विशेषता है कि जगत्पैदा करने के लिये समस्त पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विपरीतवृत्तीको गुणित करके जो सत्य भावे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर तीसरी पृथिवीका आश्रय करके अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्थ आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} \times \frac{293}{12} = \frac{293}{12}, 22396 - \frac{293}{12} = \frac{6442}{12} \text{ तीसरी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्र. म. श. ।}$$

इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्थोंके पूर्णतः दोनों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका समान अणु करके वेयरूपसे वे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीकेवर्गी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} 22396 \times 102 = 2284392$$

$$2284392 - \frac{2284392}{102} = 2261550 \text{ प्र. म. श. द्रव्य}$$

प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विपरीतवृत्तीसे जगत्पैदा करने के लिये समस्त पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विपरीतवृत्तीको गुणित करके जो सत्य भावे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्थ आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} 12 \times \frac{293}{12} = \frac{293}{12}, 22396 - \frac{293}{12} = \frac{6442}{12} \text{ चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्थ ।}$$

चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्थोंकी पूर्णतः तीन विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान अणु करके वेयरूपसे वे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके

[illegible]

असंख्यतवे मापमात्र अन्वहारकाल प्रसेपशब्दाकार्य प्राप्त होती है। उसे— अग्रेणीके बागवत वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्याद्वि विच्छेदमूर्च्छिका शुचित करने ओ अन्य अये तन्मात्र क्यान आकर यदि एक अन्वहारकाल प्रसेपशब्दाकार्य प्राप्त होती है तो सामान्य अन्वहारकालमें कितनी प्रसेपशब्दाकार्य प्राप्त होगी इसप्रकार वैरागिक करने प्रथम पृथिवी संबन्धी मिथ्याद्वि विच्छेदमूर्च्छिकासे शुचित अग्रेणीके पारद्वये वर्गमूलका सामान्य अन्वहार कालमें माप देने पर दूसरी पृथिवीका मापव करने उपर्युक्त हुई संपूर्ण प्रसेप शब्दाकार्य या जाती है।

उदाहरण— $8 \times \frac{193}{196} = \frac{193}{196} \cdot \frac{8 \cdot 196}{196} = \frac{193}{196} \cdot \frac{1568}{196} = \frac{193}{196} \cdot 8$ सूखी पुष्पिकादि

आम्रपक्षे उत्पन्न हुई प्रक्षेप भग्नहारवास शाखाकायं ।

इस अन्वहारकाष्ठ प्रत्येकशकानामोको पृथक् रूपसे सामान्य अन्वहारकाष्ठके पाठमें विरचित करके और इस विरचित राशिके प्रत्येक पङ्क्तिके अन्वहारकाष्ठमात्र अर्थात् त्रितना सामान्य अन्वहारकाष्ठका प्रमाण हो उठनीवार स्थापित नृक्षी पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यको समान कण्ड करके वेपकपसे वे वेन पर विरचित राशिके प्रत्येक पङ्क्तिके प्रति प्रथम पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यका प्रमाण मान्य होता है।

उदाहरण—ऊपर जो १४२३११११ मध्ये बज्जहारकाळ आया है उसका बिरहन करके बिरकित राशिसे मध्येक पत्रके प्रति सामान्य बज्जहारकाळमात्र अर्थात् सामान्य बज्जहारकाळगुणित द्वितीय पृथिवीसंबन्धी मिथ्याद्यपि द्रव्यको हेयरूपसे दे देने पर मध्येक पत्रके प्रति प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्याद्यपि द्रव्य प्राप्त होता है जो सामान्य बज्जहारकाळगुणित द्वितीय पृथिवीके द्रव्यमें उक्त मध्येक बज्जहारकाळका भाग देने पर भी आ जाता है। यथा—

$$\text{কর} = ১০০০ \times ১০\% = ১০০০০০ \text{ টাকা}$$

= ५८८१३ प्र पु मि द्रव्य

इसी प्रकार सामान्य व्यवहारक्रममात्र अर्थात् बित्तमा सामान्य व्यवहारकाकता प्रमाण
श्री उतनीवार लौसरी भ्यान्नि पांन प्रविधिकोके मिष्ट्याददि प्रत्यक्षा भाष्य केकर उत उत

पञ्चमप्रवहारात्मलागात्रा आणयन्वात्रा । जशरि विसमा मन्दिदमवगममूलगुणिद
 पञ्चमपुत्रिविस्मयमग्राह्य मापण्यप्रवहारकालमिह भाग द्विद तदियपुत्रिविप्रवहारकाल
 पञ्चममलागात्रा आणयन्ति । एतात्रा पृथ्विहृत्पण्ड विरल्लणाय पञ्चम विरल्लिय सामण्य
 अरवहारकालममदिपुत्रिविद्वय ममगड करिय दिण्य २५ पडि पञ्चमपुत्रिविद्वयपमाग
 पारति । पञ्चमपुत्रिविस्मयमग्राह्यगुणिमन्दिदमवगममूलण सामण्यप्रवहारकालमिह भाग
 द्विद चउम्यपुत्रिविप्रवहारकालपञ्चममलागात्रा आणयन्ति । तात्रा वि पृथ्विहृत्विण्ड
 विरल्लणाय पञ्चम विरल्लिय सामण्यप्रवहारकालममउचपुत्रिविद्वयमग्राह्य

पृथिवीर्षीका मयद्वारकाल प्रत्यक्षकालार्थे मा जानी वादिये । केवल रत्नी पितृपता द्वे कि
 जगधेपीका इत्ये पणमूलम प्रथम पृथिवीर्षी मिथ्याहृदि विरल्लमग्राह्यीको गुणित करके ओ
 मप्य भापे उतका सामान्य अयद्वारकालमें भाग २५ पर नीमरी पृथिवीका आधय करके
 अयद्वारकाल प्रत्यक्षकालार्थे मा जानी है ।

$$\text{उदाहरण—} \times \frac{103}{127} = \frac{103}{127} \cdot 32061 - \frac{103}{127} = \frac{14}{127} \text{ नीमरी पृथिवीके} \\ \text{आधयसे उत्पन्न हुई म. अ. १ ।}$$

इस प्रत्येक अयद्वारकाल शास्त्राकारोंको पूर्वोक्त दोनों विरल्लोंके पासमें विरल्लित करके
 मीर विरल्लित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अयद्वारकालमात्र अथवा सामान्य अय
 द्वाकाल गुणित नीमरी पद्विर्षीके मिथ्याहृदि द्रव्यका समान मीर करके देवकपसे दे देने पर
 विरल्लित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीर्षीका मिथ्याहृदि द्रव्यका प्रमाण
 प्राप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} 3 \cdot 56 \times 1/2 = 29683 \cdot 4191$$

$$29683 \cdot 4191 - \frac{29683}{1/2} = 14841 \cdot 7095 \text{ पृ. मि. द्रव्य}$$

प्रथम पृथिवीका मिथ्याहृदि विरल्लमग्राह्यीके जगधेपीके प्रथम पणमूलक गुणित करके
 ओ मप्य भापे उतका सामान्य अयद्वारकालमें भाग २५ पर नीमरी पृथिवीके आधयसे उत्पन्न
 हुई अयद्वारकाल प्रत्यक्षकालार्थे मा जानी है ।

$$\text{उदाहरण—} 1/2 \times \frac{103}{127} = \frac{103}{254} \cdot 32061 - \frac{103}{254} = \frac{14}{254} \text{ नीमरी पृथिवीके}$$

$$\text{आधयसे उत्पन्न हुई प्रत्येक अयद्वारकाल कालार्थे ।}$$

नीमरी पृथिवीके आधयसे उत्पन्न हुई उन प्रत्येक अयद्वारकाल शास्त्राकारोंको पूर्वोक्त
 नीम विरल्लोंके पासमें विरल्लित करके मीर विरल्लित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य
 अयद्वारकालमात्र अथवा सामान्य अयद्वारकालगुणित नीमरी पृथिवीके मिथ्याहृदि द्रव्यको
 प्रमाण मगड करके देवकपसे दे देने पर विरल्लित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके

करिय दिण्णे रुवं पडि एद पडमपुडविद्वन्पमान हादि । पुणो पडमपुडविद्विक्कलमस्यपि
गुणिदसेदिहकूमवगमूलेण सामण्यअवहारकालमि मागे हिदे पंचमपुडविपक्खेवअवहार
कालो आगच्छदि । त पुण्णित्तुपचण्डं विरलपाण पम्मे विरलिय सामण्यअवहारकालमेवपंचम
पुडविद्वन् समल्लं करिय दिण्णे रुवं पडि पडमपुडविमिच्छाइद्विद्वन् पावदि । पुणो पडम-
पुडविद्विक्कलमस्यपिगुणिदसेदिहदियवगमूलेण सामण्यअवहारकालमि मागे हिद छट्टपुरति-
पक्खेवअवहारकालो आगच्छदि । एद पि पुण्णित्तुपचण्डं विरलपाण पामे विरलिय सामण्यअव

मिप्पाएदि द्रव्यका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२.७९ \times ४ \frac{१९}{४} = १३४२.७७२८$$

$$१३४२.७७२८ - \frac{२३२१४४}{१९३} = ०.८१९ \text{ म. पु. मि. द्रव्य}$$

अन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कम्भसूचीसे जगभेरीके छठे वगमूसरो गुणित करके
जो लब्ध थावे उसका सामान्य अवहारकालमें माग देने पर पांचवी पृथिवीके आधयसे उत्पन्न
हुई प्रसेप अवहारकाल शास्त्रकार्य जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२ \times \frac{१९३}{१८} = \frac{१९३}{४}, ३२.७९८ + \frac{१९३}{४} = \frac{१३१.०७२}{१९३} \text{ पांचवी पृथिवीका}$$

आधय करके उत्पन्न हुई प्रसेप अवहारकालशास्त्रकार्य ।

पांचवी पृथिवीके आधयसे उत्पन्न हुई उन प्रसेप अवहारकाल शास्त्रकार्योंको पूर्वोक्त
चारों विरलनोंके पासमें विरचित करके और विरचित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य
अवहारकालमात्र नर्पात् सामान्य अवहारकालगुणित पांचवी पृथिवीके द्रव्यको समान काट
करके देयकपसे वे देवे पर विरचित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पृथिवीके मिप्पाएदि द्रव्यको
प्रमाण प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२.७९८ \times २.०४८ = ६७.१८९४$$

$$६७.१८९४ + \frac{१३१.०७२}{१९३} = ९८.१९ \text{ म. पु. मि. द्रव्य}$$

अन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कम्भसूचीसे जगभेरीके तृतीय वर्गमूसरो गुणित करके
जो लब्ध थावे उसका सामान्य अवहारकालमें माग देने पर छठी पृथिवीके आधयसे उत्पन्न
हुई प्रसेप अवहारकाल शास्त्रकार्य जाती हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ६४ \times \frac{१९३}{१८} = \frac{१९३}{२}, ३२.७९८ + \frac{१९३}{२} = \frac{३५५.३९}{१९३} \text{ छठी पृथिवीके}$$

आधयसे उत्पन्न हुई प्रसेप अवहारकाल शास्त्रकार्य ।

छठी पृथिवीके आधयसे उत्पन्न हुई उन प्रसेप अवहारकाल शास्त्रकार्योंको पूर्वोक्त
पांच विरलनोंके पासमें विरचित करके और विरचित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य
अवहारकालमात्र नर्पात् सामान्य अवहारकाल गुणित छठी पृथिवीके मिप्पाएदि द्रव्यको

हारकालमेचछट्टपुवविदम्भं समखंडं करिय दिण्णे रूपं पठि एदं पि पढमपुवविमिच्छाइडि
दम्भपमाणेण पावदि। पुणो पढमपुवविमिच्छाइडिविक्खंमसुविगुमिदसेडिविदियवग्गमूलेण
सामण्यभवहारकालमिद्द भागे हिदं सचमपुवविपक्खेवभवहारकालो आगच्छदि। तं
पुवविच्छल्लं विरलणाण पाते विरलिय सामण्यभवहारकालमेचसचमपुवविमिच्छाइडिदम्भं
समखंडं करिय दिण्णे रूपं पठि पढमपुवविमिच्छाइडिदम्भपमाणेण पावदि। एदाओ सच
वि विरलणाओ वेत्तुण पढमपुवविमिच्छाइडिभवहारकालो होदि।

तेति सचम्ह पि अवहारकालायं मेलावणविहाणं युषदे। स जहा— सचमपुववि
पक्खेवभवहारकालो सगपमाणेण एको हवदि। सचमपुवविपक्खेवभवहारकालपमाणेण
छट्टपुवविपक्खेवभवहारकालो सेडितदियवग्गमूलमेचो हवदि। पंचमपुवविपक्खेवभवहार

समान खंड करके देयरूपसे देने पर विरलित राशि के प्रत्येक एक के प्रति प्रथम पृथिवी के
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times १०२४ = ३३५५४४३२,$$

$$३३५५४४३२ \div \frac{३५५३३}{१९३} = ९८१९ \text{ प्र पृ मि द्र}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवी की मिथ्यादृष्टि विष्कंसत्तुषीसे जगभेदी के दूसरे बगामूसको
गुणित करके जो दम्भ व्यंजे उत्तरा सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर सातवीं पृथिवी के
भाग्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल राशिकार्य आती है।

$$\text{उदाहरण—} १२८ \times \frac{१९३}{१२८} = १९३, ३२७९८ - १९३ = \frac{३२७९८}{१९३} \text{ सातवीं पृथिवी के}$$

भाग्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल राशिकार्य।

सातवीं पृथिवी के भाग्रयसे उत्पन्न हुई इन प्रक्षेप अवहारकाल राशिकार्योंको पूर्वात्त
छो विरलनों के पासमें विरलित करके भीर विरलित राशि के प्रत्येक एक के ऊपर सामान्य
भवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित सातवीं पृथिवी के मिथ्यादृष्टि द्रव्यको
समान लक्ष्य करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशि के प्रत्येक एक के प्रति प्रथम पृथिवी के
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\text{उदाहरण—} ३२७९८ \times ५१२ = १६७७७२१६,$$

$$१६७७७२१६ - \frac{३२७९८}{१९३} = ९८८१९ \text{ प्र पृ मि द्र}$$

इन सातों विरलनोंको ग्रहण करके भी प्रथम पृथिवी के मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहार
काल होता है। भागे उन्हीं सातों अवहारकालों के मिश्रण की विधि का कथन करते हैं। वह
इत्यकार है—

सातवीं पृथिवी के भाग्रयसे उत्पन्न हुआ प्रक्षेप अवहारकाल अपने प्रमाणसे एक है
(११११ = १ विरलक) सातवीं पृथिवी के प्रक्षेपरूप अवहारकाल की अपेक्षा छठी पृथिवी का



कालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारकालवमाणेन सदितदियवग्गमूलमादि काल्ण जाव
छदमवग्गमूलो सि चउण्ह वग्गार्ण अण्णोण्णमासेजुप्पण्णरासिमेचो इवदि । चउरव
पुटविपक्तेवप्रवहारकालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारवमाणेन सेदितदियवग्गमूलमादि
काल्ण जाव अहुमवग्गमूलो सि ताव छण्ण वग्गाण अण्णोण्णमासेजुप्पण्णरासिमेचो
इवदि । सदियपुटविपक्तेवप्रवहारकालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारवमाणेन सदितदिय
वग्गमूलमादि काल्ण जाव दसमवग्गमूलो सि ताव अहुण्ह वग्गार्ण अण्णोण्णमासेजु-
प्पण्णरासिमेचो इवदि । सिदियपुटविपक्तेवप्रवहारकालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहार
वमाणेन सदितदियवग्गमूलपुटुदि दसण्ह वग्गाणमण्णोण्णमासेजुप्पण्णरासिमेचो इवदि ।
सामाण्यवप्रवहारकालो सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारकालवमाणेन पदमपुटविपक्तेवप्रवहार
गुणिदसेदिविदियवग्गमूलमेचो इवदि । पुणो एदामो सप्पसत्तागाओ एगई करिय
सप्तमपुटविपक्तेवप्रवहारकालं गुणिदे पदमपुटविमिच्छाद्विप्रवहारकालो होदि ।

अवप्रवहारकाल अग्रेणीके तृतीय वर्गमूलमान होता है ($1^3 1^3 1^3 = 2$) पाँचवीं पृथिवीका प्रसेप
अवप्रवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रसेपरूप अवप्रवहारकालकी अपेक्षा अग्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
छेकर छेते वर्गमूलपर्यन्त जाव वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है
($1^3 1^3 1^3 \times 2 = 4$) चौथी पृथिवीका प्रसेप अवप्रवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रसेपरूप अवप्रवहार
कालकी अपेक्षा अग्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे छेकर आठवें वर्गमूलपर्यन्त छह वर्गोंके परस्पर
गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($1^3 1^3 1^3 \times 4 = 8$) तीसरी पृथिवीका प्रसेप
अवप्रवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रसेपरूप अवप्रवहारकालकी अपेक्षा अग्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
छेकर दशवें वर्गमूलपर्यन्त आठ वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है
($1^3 1^3 1^3 \times 8 = 16$) दूसरी पृथिवीका प्रसेप अवप्रवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रसेपरूप
अवप्रवहारकालकी अपेक्षा अग्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे छेकर दश वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे
जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($1^3 1^3 1^3 \times 16 = 32$) सामान्य अवप्रवहारकाल सातवीं पृथिवीके
प्रसेपरूप अवप्रवहारकालक प्रमाणकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीकी मिथ्याद्यदि विन्यस्तस्त्रीसे
अग्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध न्यारे बतला है ($16 \times 2 = 32$) ।

अनन्तर इन सर्व शब्दाकाओंको एकत्रित करके उससे सातवीं पृथिवीके प्रसेप अवप्रवहार
कालके गुणित करने पर पहली पृथिवीका मिथ्याद्यदि अवप्रवहारकाल आता है :

उदाहरण— $1 + 2 + 4 + 8 + 16 + 32 + 64 = 127$

$$\frac{127}{16} \times 16 = \frac{2032}{16} \text{ म पु मि मव}$$

अहसा तादि चैव सलागाहि समुदिदाहि पढमपुढबिसामण्णविकसंमसूचीहि
अण्णोण्णमत्थाहि गुमिदमेत्तिविदियवग्गमूलमोवहिय सेदिमि मागे हिदे पढमपुढबि-
मिच्छादिअवहारकालो आगच्छदि । अहसा छण्ण पुग्गीण सचमपुढविपक्खवअवहार-
कालपमाणेण कयसम्भसलागाहि सदिमिदियवग्गमूलमोवहिय अण्णाण्णमत्थपढमपुढबि-
सामण्णनेरइयविकसंमसूचीहि गुणिय जगमेदिमि मागे हिदे सम्भत्तुप्पण्णपक्खेवअवहार-
कालो आगच्छदि । तेण सम्भत्तुप्पण्णअवहारकालेण सामण्णनेरइयअवहारकालमि मागे
हिदे अ मागसदं तेण सामण्णनेरइयविकसंमसूची गुमिदे पुणो त रात्ति तेमेव गुमगारेण,
रवादिणोवहिय जगसेदिमि मागे हिदे पढमपुढबिअवहारकालो आगच्छदि ।

अथवा प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विप्लवमसूची और सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
विप्लवमसूची इन दोनोंके परस्पर गुणा करनेसे जो सध्य भावे उससे जगभेदीके द्वितीय वर्ग,
मूलकी गुणित करके जो सध्य भावे उसे परवर्धित की हुई पूर्वोक्त शलाकाओंसे अपवर्तित
करके जो सध्य भावे उसका जगभेदीमें भाग देने पर पड़ती पृथिवीका मिथ्यादृष्टि जीव-
राशिसंख्या अयहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{193}{12} \times 2 = \frac{193}{6}, \quad 12 \times \frac{193}{6} = 386, 386 + 249 = \frac{193}{12}$$

$$386 + \frac{193}{12} = \frac{4637}{12} \text{ प्र. पु. मि. अ.}$$

अथवा सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अयहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा छह पृथिवियोंके
आम्रसे उत्पन्न हुए प्रक्षेप अयहारकालकी जो सद्य शलाकाएं की गई उनसे जगभेदीके
द्वितीय वर्गमूलको अवर्तित करके जो सध्य भावे उसको प्रथम पृथिवी और सामान्य
नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विप्लवमसूचियोंके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए राशिसे गुणित
करके जो सध्य भावे उसका जगभेदीमें भाग देने पर सबत्र उत्पन्न हुए प्रक्षेप अयहारकालका
प्रमाण आता है । सर्वत्र उत्पन्न हुए उस प्रक्षेप अयहारसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके
अयहारकालके भावित करने पर जो माग सध्य भावे उससे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी
विप्लवमसूचीके गुणित करने पर अनन्तर इस गुणित राशिको एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुण
कारसे अपवर्तित करके जो सध्य भावे उसका जगभेदीमें भाग देने पर प्रथम पृथिवीका
मिथ्यादृष्टिसंख्या अयहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} 12 - 11 = \frac{12}{11}, \quad 2 \times \frac{12}{11} = \frac{24}{11}, \quad \frac{12}{11} \times \frac{24}{11} = \frac{24}{11}$$

$$\frac{24}{11} - \frac{24}{11} = \frac{24}{11} \text{ प्रक्षेप अयहारकाल ।}$$

$$32312 + \frac{24}{11} = \frac{355332}{11}, \quad 2 \times \frac{355332}{11} = \frac{710664}{11}, \quad 1 + \frac{710664}{11} = \frac{710665}{11}$$

अथवा पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो एगरूपमेग-
रूपस्स असंखेज्जदिमागो आगच्छदि । तस्स एगरूपान्तेज्जदिमागस्स को पडिमागो ?
किंनूपसेहेबारसवगमूलगुणितपदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो पडिमागो । पुणो एदाओ दो
रासीओ पुष मन्त्र इविय तेरासिय कायम् । त अथा— सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो
एगरूपं एगरूपस्स असंखेज्जदिमागा च पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो आगच्छदि ।

$$\frac{३८९}{१३} - \frac{२५९}{१३} = \frac{१३०}{१३} \quad \frac{३५९१९}{२५९} - \frac{१८९}{२५९} = \frac{८३८८९}{१९३} \text{ प्र पू मि. नव}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विच्छाहृदिमवहारकासो सामान्य पारक मिथ्यादृष्टि
विच्छाहृदिमवहारकासो असंखेज्जदिमागो आगच्छदि । तस्स एगरूपान्तेज्जदिमागस्स को पडिमागो ?
किंनूपसेहेबारसवगमूलगुणितपदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो पडिमागो । पुणो एदाओ दो
रासीओ पुष मन्त्र इविय तेरासिय कायम् । त अथा— सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो
एगरूपं एगरूपस्स असंखेज्जदिमागा च पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो आगच्छदि ।

$$\text{उदाहरण—२—} \frac{१९३}{१२८} = \frac{२५९}{१९३} = \frac{१९३}{१९३}$$

शुंका—तस एकके असंख्यातवें भागके छानेके किये प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—अग्रेणीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलके गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्या-
दृष्टि विच्छाहृदिमवहारकासो एकके असंख्यातवें भागके छानेके प्रतिभाग है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{१३} = \frac{१९३}{१३} \text{ प्रतिभाग ।}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विच्छाहृदिमवहारकासो सामान्य पारक मिथ्यादृष्टि
विच्छाहृदिमवहारकासो असंखेज्जदिमागो आगच्छदि । तस्स एगरूपान्तेज्जदिमागस्स को पडिमागो ?
किंनूपसेहेबारसवगमूलगुणितपदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो पडिमागो । पुणो एदाओ दो
रासीओ पुष मन्त्र इविय तेरासिय कायम् । त अथा— सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो
एगरूपं एगरूपस्स असंखेज्जदिमागा च पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासमेव सामान्यपेररूपविच्छाहृदिमवहारकासो सम्मदि तो
पदमपुडविमिच्छाहृदिमवहारकासो आगच्छदि ।

उदाहरण—यहां १३१०७२ प्रमाय पारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमायराशि है १२१
पञ्चराशि है और सामान्य अवहारकास १२०७८ गुणित सामान्य पारक राशि १३१०७२
इच्छादृष्टि है । इसलिये इच्छादृष्टि और पञ्चराशि गुण्य करके जो छान्य व्यये इसमें प्रमाय
राशि भाग देने पर प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि अवहारकास व्य जाता है । अथा—

$$\frac{१२०७८ \times १३१०७२ \times २५९}{१३१०७२ \times १९३} = \frac{८३८८९०८}{१९३} \text{ प्र पू मि. नव}$$

अहमा पढमपुदविमिच्छाद्विद्वद्विअवहारकालो अण्णेण पयारेण आभिअदे । त अहा-
 छट्टमपुदविअवहारकाल विरलेऊण एकेऊस रुवस्स अगसेडिं समसंड करिय दिण्णे रुवं
 पडि छट्टमपुदविमिच्छाद्विद्वद्वि पावदि । पुणा तस्य एगरुवपरिदछट्टपुदविद्वद्व सत्तम
 पुदविद्वद्वेण भागे द्विदे सेडितदियवग्गमूलमागच्छदि । त विरलेऊण छट्टपुदविद्वद्व
 समसंड करिय दिण्णे रुवं पडि सत्तमपुदविद्वद्व पावदि । त कमेण उवरिमविरलण
 छट्टमपुदविद्वद्वस्सुवरि सुम्भट्ठाण मोत्तम दिण्णे रुवं पडि छट्ट सत्तमपुदविद्वद्वपमाण
 पावदि हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेचट्ठाण गत्तु एगरुवस्म परिहाणी च लम्भदि । पुणो
 उवरिमअगतरछट्टपुदविद्वद्व हेट्ठिमविरलणाए समसंड करिय दिण्णे रुवं पडि सत्तम
 पुदविद्वद्वपमाण पावदि । त पेत्तण उवरि सुण्णट्ठाण मोत्तम छट्टमपुदविद्वद्वस्सुवरि दिण्णे
 हेट्ठिमविरलणमेचट्ठाण पडि छट्ट सत्तमपुदविद्वद्वपमाण होदि हेट्ठिमविरलणरूवाहिय

हर भीर अशरूप सवदाक्य अपनयन करने पर उक्त अशरणक्य निम्नरूप होता है—

$$\frac{2}{192} \times 22021 = \frac{44042}{192} \text{ प्र पू मि अ}$$

अथवा प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवधारकात्त इत्ये प्रकारसे माते है । यह
 इसप्रकार है— छठवीं पृथिवीके अवधारकात्तका विरलित करके भीर उस विरलित राशिसे प्रत्येक
 एकके प्रति अगमेणीको समान लंब करके देयकपसे दे देने पर विरलित राशिसे प्रत्येक
 एकके प्रति छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर यहाँ एक
 विरलनके प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको सातवीं पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर
 अगमेणीका तीसरा पगमून मध्य जाता है । भागे उस लघ्व राशिसे विरलन करके भीर
 विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके द्रव्यको समान लंब करके देयकपसे दे देने
 पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है । उस अवस्थान विरलनके प्रति
 प्राप्त सातवीं पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर द्रव्य स्थानको
 (उपरिम विरलनमें जिस स्थानका द्रव्य अवस्थान विरलनमें दिया है उसे) छठवर क्रमसे
 दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवीं भीर सातवीं पृथिवीका द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है
 भीर एक अधिक अवस्थान विरलनमात्र स्थान आकर एकको दामि प्राप्त होती है । पुनः उपरिम
 विरलनके अनन्तर स्थान (अर्थात् सातवीं पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके भागेके स्थान)
 के प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यका अवस्थान विरलनमें समान लंब करके देयकपसे दे देने
 पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । उसे मकर उपरिम
 विरलनमें द्रव्यस्थानको (जिस स्थानका द्रव्य अवस्थान विरलनमें दिया है उसे) छठवर
 छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनका अवस्थान विरलनमें जिस स्थानके प्रति
 छठवीं भीर सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है भीर उपरिम विरलनमें एक अधिक

अहवा पढमपुढविमिक्खंमसूअए सामण्येअरइयपिक्खंमसूअमोवड्ठिदे एगरूबमेग-
रूबस्स अत्तेअदिमागो भागअदि । तस्स एगरूवासुत्तेअदिभागस्स को पडिमागो ?
किंअसेडिबारसवग्गमूसगुणिअपढमपुढविमिक्खंमसूअी पडिमागो । पुणो एअमो दो
रासीआ पुण मअसे क्वयिअ तेरासिअ कयअअ । त अहवा—सामण्येअरइयपरासिअि अदि
एगरूअ एगरूबस्स अत्तेअदिमागा अ पढमपुढविमिक्खंमसूअिअमवहारकासो सम्मदि तो
सामण्येअरइयअवहारकासमेअसामण्येअरइयमिक्खंमसूअिरासिअि किं अमामो चि सरिअ
मवयिअ सामण्येअरइयमिक्खंमसूअिअवहारकासेअ एगरूबमेगरूबस्स अत्तेअदिमागं गुणिदे
पढमपुढविमिक्खंमसूअिअवहारकासो आयअदि ।

$$\frac{३८९}{११} = \frac{२५९}{११} - \frac{३८९}{२५९}, \quad ३५५३९ \div \frac{३८९}{२५९} = \frac{८३८९०८}{१९३} \text{ अ पू मि अअ}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि बिम्बमसूअीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
बिम्बमसूअीके अणवर्तित करने पर एक और एकअ अर्धक्यातका भाग अथ्य जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} २ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{२५९}{१२८} = २ \frac{१३}{१२८}$$

शुद्धा—अस एकके अर्धक्यातके भागके जानेके छिये प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—अगमेअीके कुछ कम बारहवें बर्गमूखसे गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्या
दृष्टि बिम्बमसूअी एकके अर्धक्यातके भागके जानेके प्रतिभाग है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{१३} = \frac{१९३}{१३} \text{ प्रतिभाग ।}$$

अन्तर इत दो राशिओंको पुनरूपसे अण्वमें व्यापित करके त्रिपक्षिक अहवा
अदिये । अह इसप्रकार है—सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्या-
दृष्टि जीवोंअ अवहारकाअ यदि एक और एकअ अर्धक्यातका भाग अथ्य होता है तो सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाअमात्र सर्वात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाअगुणित
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें कितना प्राप्त होगा इसप्रकार सरल राशि अह और
इरूप सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिअ अण्वयन करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
अवहारकाअसे एक और एकके अर्धक्यातके भागको गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि जीवराशिअ अवहारकाअ जाता है ।

उदाहरण—यहां १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमाणराशि है १२१
फलराशि है और सामान्य अवहारकाअ ३२७९ गुणित सामान्य नारक राशि १३१०७२
इच्छराशि है । इसछिये इच्छराशि और फलराशिअ गुण्य करके जो अथ्य जाने अतमें प्रमाण
राशिअ भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाअ अ्य जाता है । यथा—

$$\frac{३२७९ \times १३१}{१३१०७२ \times १९३} = \frac{८३८९०८}{१९३} \text{ अ पू मि अअ}$$

पञ्चमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भपमाण पावेदि । पुनो छट्ठ-सत्तमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भपदि पञ्चम
पुद्गविमिच्छाद्विदम्भमि माग हिदे सेदितदियवग्गमूलादीण हेट्ठा षउण्हं वग्गण
अप्पोप्पन्नमसेणुप्पणरासिं स्त्वाहियसेदितदियवग्गमूलण खंडिदेयसुद्धमागच्छदि । पुनो
चि तं विरलल्लम उवरिमविरलल्लमेगस्सवपरिदपचमपुद्गविदम्भ समसंख करिय दिण्णे रूप
पडि छट्ठ-सत्तमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भपमाण पावेदि । पुणा तम्ववरिमविरलल्लमि सुप्पण्णान
मात्तण पञ्चमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भस्सुवरि परिवाडीण पक्खिसे हेट्ठिमविरलल्लमेचउवरिम
विरलल्लरूपेसु पञ्चम छट्ठ-सत्तमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भपमाण पावेदि एगरूपपरिहाणी च
उत्तमदि । पुनो तदणत्तरउवरिमरूपोवरिद्विदपञ्चमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भ हेट्ठिमविरललाए
समसंख करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठ सत्तमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भ पावेदि । पुनो तसु
वरिमविरललाए सुप्पण्णान मोत्तण हेट्ठिमविरलल्लमेचपञ्चमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भमि पक्खिसे
रूप पडि पञ्चम छट्ठ सत्तमपुद्गविमिच्छाद्विदम्भ पावेदि विदियरूपपरिहाणी च उत्तमदि ।
एवं पुनो पुनो कायस्स ज्ञाव उवरिमविरलला परिसमचोत्ति । एत्थ परिहीणरूपपमाण

एक ऊपर जगधेनीके समान भंन करके देयरूपस दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवीं
पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर छठी और सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें माग देने पर जगधेनीके सीसरे
वगमूलसे लेकर नीचेके चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे जगधेनीके
एक अधिक तृतीय वगमूलसे लक्षित करने पर एक रूँ प्राप्त होता है । पुनः उसे विरलित करके भी
उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त पांचवीं पृथिवीके
द्रव्यका समान भंन करके देयरूपस दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके
द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनमें उस द्रव्यस्थानको (जिसके द्रव्यको
अपस्तन विरलनमें बांटा है उसे) छोड़कर पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर क्रमसे
लक्षित करने पर अपस्तन विरलनप्रमाण उपरिम विरलनके अर्धों पर पांचवीं छठी और
सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एकही हानि प्राप्त होती है ।
पुनः तदनन्तर उपरिम विरलनके एक अंक पर स्थित पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको
अपस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान भंन करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम
विरलनमें उस द्रव्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अपस्तन विरलनमें बांटा है उसे)
छोड़कर अपस्तन विरलनप्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यको पांचवीं पृथिवीके द्रव्यमें
मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरे अंकही हानि भी प्राप्त होती है । इसप्रकार अबतक
उपरिम विरलन समान होये अबतक पुनः पुनः करना चाहिये । अब वहाँ पर हानिकर
विच्छेदोंका प्रमाण मिले है । यह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अपस्तन

मेचद्वायं गंतुं एगस्त्वस्त्व परिहाणी च सम्भवि । एवं पुणो पुणो कथयन् आव उवरिम
 बिरल्लणा परिसमचेत्ति । एत्थ पुण हेट्ठिम-उवरिमबिरल्लणाओ सरिसाओ चि एममवि रुव
 च परिहायदि । पुणो एत्थ एचिय परिहायदि चि बुद्धदे । ठ अहा- हेट्ठिमबिरल्ल
 रुवाहियमेचद्वाय गंतुं अदि एमस्त्वपरिहाणी सम्भवि तो उवरिमबिरल्लजम्हि किं
 परिहाणि लभामो चि रुवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलज सेट्ठितदियवग्गमूले भाग हिद एग
 क्कस्स अत्तयेज्जमागा आगच्छति चि किंभूगेगरूव सरिसच्छदं काळप्प तदियवग्ग
 मूलम्हि अबन्निदे सेट्ठिविदियवग्गमूल रुवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलज भन्निदएगमागो
 छट्ठ-सत्थमपुडवीमिच्छाह्मिद्वयाण मागहारो हादि । तेण अगसेट्ठिम्हि भाग हिदे छट्ठ
 सत्थमपुडविमिच्छाह्मिद्वयं होदि ।

पुणो सेट्ठिछट्ठमवग्गमूल बिरल्लिय अगसेट्ठि समत्तुं करिय दिन्ने रुव पडि

अधस्तन बिरल्लनमात्र स्थान आकर एकधी हानि होती है । इसप्रकार जब तक उपरिम
 बिरल्लन समाप्त होवे तब तक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । परंतु यहाँ अधस्तन
 और उपरिम बिरल्लन समान हैं इसलिये एक ही बिरल्लनकी ही हानि नहीं होती है । फिर भी
 यहाँ इतनी हानि होती है भागे वसीको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है- उपरिम बिरल्लनमें एक
 अधिक अधस्तन बिरल्लनमात्र स्थान आकर यदि एकधी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम
 बिरल्लनमें कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार शैराशिक करके अगधेणीके एक अधिक तृतीय
 वर्गमूलसे अगधेणीके तृतीय वर्गमूलके माश्रित करने पर एकके बसन्त्वात् बहुतभाग प्राप्त
 होते हैं इसलिये कुछ कम एकको समान छेद करके तृतीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर
 अगधेणीके द्वितीय वर्गमूलको अगधेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे माश्रित करके जो एक
 भाग शेष्य ब्यावे वह छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्याहृदि द्रव्यका मागहार होता है । उक्त
 भागहारसे अगधेणीके माश्रित करने पर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्याहृदि द्रव्यका
 प्रमाण होता है ।

उदाहरण—१ २४ १ २४

१ १ १४ बार ।

१ २४ - १२ = १२

५१२ ११२

१ १

१ ११२ - १२८ = १५२४

प्राप्त होती है । इसे उपरिम बिरल्लन १४ मेंसे घटा देने पर ४२३ ब्याते हैं । इसका अग
 धेणीमें भाग देने पर १ २४- १२=१५११ प्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य ब्याता है ।

अनन्तर अगधेणीके छठे वर्गमूलको बिरल्लित करके और बिरल्लित राशिके प्रत्येक

१ गति, ४ गति पात्र ।

१ गति, अथवा १ गति पात्र ।

पचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्बपमाण पावेदि । पुणो छट्ठ सत्तमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्बेदि पचम
पुडविमिच्छाशङ्खिदम्बमिह माग हिदे सेवित्तदियवग्गगूलादीण हेट्ठा चत्थं वग्गान
अण्णाण्णमासेणुप्पण्णरासिं रूपादियसेवित्तदियवग्गमूलण खंडियेखंडमागच्छदि । पुणो
वि त विरलेत्थ उवरिमविरलमेगरूवधरिदपचमपुडविदम्ब समखंड करिय दिप्पे रूव
पडि छट्ठ-सत्तमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्बपमाण पावेदि । पुणो तसुवरिमविरलममिह सुण्णह्वाण
मोनूण पचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्बस्सुवरि परिवाहीण पक्खित्त हेट्ठिमविरलणमेत्तपचम
विरलमस्सेसु पचम छट्ठ-सत्तमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्बपमाण पावेदि एगरूपपरिहाणी च
लम्बदि । पुणो तदणंतरत्तवरिमरूपोवरिदपचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्ब हेट्ठिमविरलणाए
समखंड करिय दिप्पे रूव पडि छट्ठ-सत्तमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्ब पावेदि । पुणो तसु
वरिमविरलणाए सुण्णह्वाण मोनूय हेट्ठिमविरलणमेत्तपचमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्बमिह पक्खित्ते
रूव पडि पचम-छट्ठ सत्तमपुडविमिच्छाशङ्खिदम्ब पावेदि विदियरूपपरिहाणी च लम्बदि ।
एवं पुणो पुणो कायव्व जाव उवरिमविरलणा परिसमत्तेचि । एत्थ परिहीणस्वपमाण

एक ऊपर अग्रेणीको समान बंध करके वेयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवीं
पृथिवीके मिथ्याएदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर छठी और सातवीं पृथिवीके
मिथ्याएदि द्रव्यप्रमाणमे पांचवीं पृथिवीके मिथ्याएदि द्रव्यमे माग देने पर अग्रेणीके सीसे
वगमूखसे छेकर नीचेके चार धर्माके परस्पर गुणा करनेसे या राशि उत्पन्न हो उसे अग्रेणीके
एक अधिक तृतीय वगमूखसे मंडित करने पर एक बंध जाता है । पुनः उसे विरलित करके और
उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त पांचवीं पृथिवीके
द्रव्यको समान बंध करके वेयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके
द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको
अपस्तन विरलनमें बांटा है उसे) छेड़कर पांचवीं पृथिवीके मिथ्याएदि द्रव्यके ऊपर अग्रसे
मंडित करने पर अपस्तन विरलनप्रमाण उपरिम विरलनके अर्थ पर पांचवीं छठी और
सातवीं पृथिवीके मिथ्याएदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एकही हानि प्राप्त होती है ।
पुनः तदनन्तर उपरिम विरलनके एक बंध पर स्थित पांचवीं पृथिवीके मिथ्याएदि द्रव्यको
अपस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान बंध करके वेयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्याएदि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम
विरलनमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अपस्तन विरलनमें बांटा है उसे)
छेड़कर अपस्तन विरलनप्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यको पांचवीं पृथिवीके द्रव्यमे
मिसा देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्याएदि द्रव्यका
प्रमाण प्राप्त होता है और हमारे अंककी हानि भी प्राप्त होती है । इसप्रकार अबतक
उपरिम विरलन समाप्त होये तबतक पुनः पुनः करना चाहिये । अब यहां पर हानिरूप
विरलनोंका प्रमाण माने हैं । अब इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अपस्तन

मापिच्छेद । स अथा- इष्टिमविरलपञ्चमस्य गतुष्य यदि एगस्यपरिहाणी तन्मदि
तो उतरिमविरलपञ्चमि केवदियरूपपरिहाणि तन्मामो सि रूपादिपदेष्टिमविरलपञ्चम
सेष्टिलङ्घनगमस्यमोष्टिय लङ् तमिद चेव अनभिदे सेष्टिविदियवगमस्य लदिपादिपञ्च
वगगावममोष्टियमोष्टियपञ्चरासिमिद रूपादियमेष्टितदियवगमस्य पञ्चस्रविप अवहिर
एगमागो तिन्ष्ट पुढवीच अवहारकासो होदि । तेन जगसेष्टिमिद भाग हिदे पञ्चमादि
तिन्ष्ट हेष्टिमपुढवीच मिच्छाष्टिदन्ममागच्छदि ।

पुणो जगमेष्टिमिद अष्टवगमस्य विरलङ्घन जगसर्दि समस्तं करिय दिप्ये रू।
पडि अठरपपुढविमिच्छाष्टिदन्म पावेदि । पुणो अठरपपुढविमिच्छाष्टिदन्म पञ्चमादि
हेष्टिमतिपुढविमिच्छाष्टिदन्मेदि ओवद्विप लङ् देहा विरलिय अठरपपुढविदन्म उतरिम
विरलपञ्चम पढमरूपोवदि हिद समस्तं करिय दिप्ये पञ्चमादिहेष्टिमतिपुढविमिच्छाष्टि

विरलपञ्चम स्थान आकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलपञ्चम
कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार वैरागिक करके एक अधिक अधस्तम विरलपञ्चमे जग-
मेष्टीके छठे वर्गमूलको अपवर्तित करके जो द्रव्य भावे उसे उर्ध्व जगमेष्टीके छठे वर्गमूलमेंसे
घटा देने पर जो बाधा है वह जगमेष्टीके तृतीय वर्गमूल भावि बार वर्षोंके परस्पर गुणा
करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें एक अधिक तृतीय वर्गमूलको मिटाकर जो ओङ्क भावे
उससे जगमेष्टीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करने पर जो एक माग द्रव्य भावे उतना होता
है और यही पूर्वोक्त तीव्र पृथिवियोंका अवहारकाण्ड है । उक्त अवहारकाण्डसे जगमेष्टीके भाजित
करने पर पांचवीं भावि तीव्र पृथिवियोंके मिष्पादधि द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—२ ४८ २ ४

१ १ ३२ बार ;

$$२ ४८ - १५३९ = \frac{४}{१}$$

$$\frac{१५३९}{१} = \frac{५१२}{३}$$

$$१५३९ - \frac{१५८}{३} = १५८४$$

अधस्तम विरलपञ्चम ११ में १ ओङ्ककर २१ होते
हैं । यदि इतने स्थान आकर उपरिम विर-
लपञ्चम १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम
विरलपञ्चम कितनी हानि होगी इसप्रकार
वैरागिक करने पर ११ हानिकर ओङ्क होते
हैं । इसे उपरिम विरलपञ्चम ३२ मेंसे घटा देने
पर १३ बाते हैं । इसका जगमेष्टीमें माप
पर १५८४ प्रमाण पांचवीं भावि तीव्र पृथि-
वियोंका मिष्पादधि द्रव्य व्यता है ।

अन्तर जगमेष्टीके भाजने वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके
प्रत्येक एकके प्रति जगमेष्टीको समान कण्ड करके दोषरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति
चौथी पृथिवीके मिष्पादधि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः चौथी पृथिवीके मिष्पादधि
द्रव्यको पांचवीं भावि नीचेके तीव्र पृथिवियोंके मिष्पादधि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो द्रव्य
भावे उसे नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम
विरलपञ्चमे अथम एक पर स्थित चौथी पृथिवीके द्रव्यको समान कण्ड करके दोषरूपसे दे देने पर

दम्ब पावेदि । एत्थ पुम्ब व समकरणं काइच्च । एत्थ परिहीणरूवाण पमाणमाभिज्जदे ।
 तं सहा- हेट्टिमविरलणरूवाहियमचट्ठाण गत्तुं अदि उवरिमविरलणमहि एगरूवपरिहाणी
 सम्मदि ता उवरिमविरलणमहि केवडियस्सपरिहाणि लभामां पि रुवाहियहेट्टिमविरलणाए
 जगसदिअट्टमवग्गमूलमोवाहिय लद्धं सम्हि चेष अवाणिदे चउत्थ पचम-सुह-सत्तमपुडवीण
 सत्तमपुडविमिच्छाइडिसलागाहि जगमेविदिविदियवग्गमूलमोवाहिय चउत्थपुडविआदिहेट्टिम
 मिच्छाइडिदम्बस्स अवहारकाळो होदि । तेण जगसदिमि मागे हिदे चउत्थं पुडवीण
 मिच्छाइडिदम्बमागच्छदि ।

पुणो जगसेविदिसमवग्गमूल विरलल्लम जगसंदि समखंड करिय दिण्णे रूपं पडि

प्रत्येक एक पर पांचवीं भादि नीचेकी तीन पयिधियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ पर समीकरण पहलेके समान कर केना चाहिये । अब यहाँ पर हानिकर भंक्षकोंका प्रमाण छाते हैं । यह इसप्रकार है— उपरिम विरलल्लमें एक अधिक अघस्तन विरलल्लमात्र स्थान आकर यदि उपरिम विरलल्लमें एकही हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलल्लमें कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार त्रैशिक करके एक अधिक अघस्तन विरलल्लसे जग भेणीक आठवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो सध्य भाग्ये उसे उसी जगभेणीके आठवें वर्गमूल मेंसे घटा देने पर जो आता है वह चौथी पांचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई मिथ्यादृष्टि शक्यक्रमसे जगभेणीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो सध्य आता है बतना होता है । और यही चौथी भादि नीचेकी बार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाळ है । उक्त अवहारकाळसे जगभेणीके माजित करने पर बार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—४०९६

४०९६

१ १ १६ बार

४०९६ + १ ८४ = $\frac{८}{७}$

१८४ ५१२

१

१

७

१८१६ - $\frac{१२८}{१५}$ = ७१८ ।

अघस्तन विरलल्ल १७ में १ जोड़ने पर २७ होते हैं । यदि इतने स्थान आकर उपरिम विरलल्लमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलल्ल १६ में कितनी हानि होगी इसप्रकार त्रैशिक करने पर $\frac{१६}{७}$ हानिकर भंक्ष भाते हैं । इसे उपरिम विरलल्ल १६ मेंसे घटा देने पर $\frac{१६}{७}$ होता है जो सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई चौथी भादि बार

पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शक्यक्रमसे १ + २ + ४ + ८ = १५ से जगभेणीके द्वितीय वर्गमूल १२८ को अपवर्तित करने पर कितना आता है उतनेके बराबर होता है । इससे १८१६ प्रमाण जगभेणीके माजित करने पर ७१८० प्रमाण चौथी भादि बार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगभेणीक आठवें वर्गमूलको विरलल्ल करके और उस विरलल्ल राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जगभेणीको समान लंब करके दृक्पक्षसे दे देने पर प्रत्येक एकके स्थिति

मागिज्जद । तं अहा— इड्ढिमविरल्लयस्सुवाहियमत्तद्धाये गत्तुण यदि एगस्सपरिहाणी सत्तमदि
 या उत्तरिमविरल्लयमिदं केवदियस्सुपरिहाणि सनामो पि स्सुवाहियइड्ढिमविरल्लयाए अग-
 सेदिल्लद्वयममूलमोवहिय लद्ध तमिदं चेव अबधिदे सेदिल्लदियवग्गमूलं तदिपाहिचउत्तं
 वग्गापमज्जोप्पमसासेणुप्पमरासिमिदं स्सुवाहियसदित्तदियवग्गमूलं पक्खिउदिय अबहिद
 एगमागो तिहं पुडवीण अबहारकालो होदि । तेण अगमेदिमिदं माग हिदे पच्चमादि
 तिहं हेड्ढिमपुडवीण मिच्छाइड्ढिद्वयमागच्छदि ।

पुणो अगमेदिमिदं अड्ढमवग्गमूलं विरल्लय अगसदि समल्लंठ करिय दिम्मे रू।
 पडि अठस्यपुडविमिच्छाइड्ढिद्वय पावेदि । पुणो अठस्यपुडविमिच्छाइड्ढिद्वय पच्चमादि
 हेड्ढिमतिपुडविमिच्छाइड्ढिद्वयेहि ओवहिय लद्धं देहा विरल्लिय अठस्यपुडविद्वय उत्तरिम
 विरल्लयाए पडमस्सोवरि दिदं समल्लंठ करिय दिम्मे पच्चमादिइड्ढिमतिपुडविमिच्छाइड्ढि

विरल्लयमात्र स्थान जाकर यदि एकही हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरल्लयमें
 कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार वैराशिक करके एक अधिक अघस्तन विरल्लयसे अघ-
 धेयीके छठे वर्गमूलको अपवर्तित करके जो मध्य भाग उसे उसी अगधेयीके छठे वर्गमूलमेंसे
 घटा देने पर जो बाता है वह अगधेयीके तृतीय वर्गमूल भाग है चार बागों परस्पर गुणा
 करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें एक अधिक तृतीय वर्गमूलको मिश्रकर जो जोड़ भाग
 उत्तरे अगधेयीके द्वितीय वर्गमूलको माश्रित करने पर जो एक भाग कल्प्य भाग उत्पन्न होता
 है और यही पूर्वांक तीन पृथिवियोंका अवधारकांक है । उक्त अवधारकांकसे अघधेयीके माश्रित
 करने पर पाँचवीं भाग तीन पृथिवियोंके मिश्रावधि द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—२०४८ १ ४८

१ १ ३२ बार।

$$२४८ - ११३९ = \frac{४}{३}$$

$$\frac{१५३९}{१} \quad \frac{५१२}{१}$$

$$\frac{१}{१}$$

$$\frac{१५३९ + \frac{१५८}{३} = ३१८४$$

अघस्तन विरल्लय १३ में १ जोड़कर २३ होते
 हैं । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विर-
 ल्लयमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम
 विरल्लयमें कितनी हानि होगी इसप्रकार
 वैराशिक करने पर १५ हानिकर अंक आते
 हैं । इसे उपरिम विरल्लय ३२ मेंसे घटा देने
 पर १३ आते हैं । इसका अगधेयीमें मध्य
 पर १५४ प्रमाण पाँचवीं भाग तीन पृथि-
 वियोंका मिश्रावधि द्रव्य जाता है ।

अन्तर अघधेयीके भागमें वर्गमूलको विरल्लित करके और वस्तु विरल्लित राशिके
 प्रत्येक एकके प्रति अघधेयीको समान लब्ध करके द्वेयकपसे वे देने पर प्रत्येक एकके प्रति
 चौथी पृथिवीके मिश्रावधि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः चौथी पृथिवीके मिश्रावधि
 द्रव्यको पाँचवीं भाग लीयेके तीन पृथिवियोंके मिश्रावधि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो कल्प्य
 भाग उसे लीये विरल्लित करके और वस्तु विरल्लित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम
 विरल्लयके प्रथम एक पर स्थित चौथी पृथिवीके द्रव्यको समान लब्ध करके द्वेयकपसे वे देने पर

तथियमेव । तेण अगसेडिम्हि भागे हिदे पचपुदविमिच्छाइडिद्वन्मागच्छदि । पुणो सेडिबारसबग्गमूल विरलेऊण अगसेडिं समखंड करिय दिण्णे रूव पडि विदियपुदवि मिच्छाइडिद्वन् पावेदि । हेडिमपचपुदविद्वन्नेण तमोवडिय उड्ढ विरलिय उवरिमविरलण पदमरूवोवरि हिद्विदियपुदविमिच्छाइडिद्वन् समखंड करिय दिण्णे रूव पडि तदिपादि पचपुदविमिच्छाइडिद्वन् पावेदि । तमुवरिमविरलणोवरि हिद्विदियपुदविमिच्छाइडिद्वन् स्सुवरि पक्खिविय समकरण करिय परिहाणिरूवाणि आयेयन्वाणि । तेसिं पमाणमेग बारेणागित्ते । ए अहा—रूवाहिपदेडिमविरलणमेवत्ताण गंतून अदि एगरूवपरिहाणी उम्मदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणि पेच्छामो पि रूवाहिपदेडिम विरलणाए सेडिबारसबग्गमूलमोवडिय उड्ढं तम्हि चेव सरिसखेडं कळण अबणिदे

एन्माअ उच्छ मागहारका प्रमाण है । उच्छ मागहारसे अगमेणीके माजित करने पर तृतीयादि पांच पृथिवियोंके मिथ्याद्वि द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} १६ + ८ + ४ + २ + १ = ३१, \quad १२८ + ३१ = \frac{१२८}{३१}$$

$$१८३१ + \frac{१२८}{३१} = १८७२ \text{ तृतीयादि पांच पृथिवियोंका मिथ्याद्वि द्रव्य ।}$$

अनन्तर अगमेणीके बारहवें बगमूलको विरचित करने और उस विरचित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति अगमेणीको समान लण्ड करने देवकपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बृहती पृथिवीके मिथ्याद्वि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उस बृहती पृथिवीके द्रव्यको नीचेकी तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्याद्वि द्रव्यसे अपवर्तित करने जो सम्प आये उसका विरलन करने और उस विरचित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति अपरिम विरलनके प्रथम अंक पर स्थित बृहती पृथिवीके मिथ्याद्वि द्रव्यको समान लण्ड करने दे देने पर अच्युतन विरलनराशिसे प्रत्येक एकके प्रति तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्याद्वि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस अच्युतन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको अपरिम विरलनके प्रति प्राप्त बृहती पृथिवीके मिथ्याद्वि द्रव्यके ऊपर माक्षित करने पड़नेके समान समीकरण करके हानिरूप अंक छे आता आहिये । आगे उन्ही हानिरूप अंकोंका एकबारमें प्रमाण लाते हैं । जैसे—

अपरिम विरलनमें एक अधिक अच्युतन विरलनमात्र स्थान आकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण अपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार विचारित करके एक अधिक अच्युतन विरलनके प्रमाणसे अगमेणीके बारहवें बगमूलको अपवर्तित करने जो सम्प आये उसे समान छेद करने वही अपमेणीके बारहवें बगमूलमेंसे घटा देने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवधारकास प्राप्त होता है ।

तदियपुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयपमात्र पावति । पुनः त तदियपुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयं द्विद्वयपुत्रं
पुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयेन भोज्यं सद्धं विरलेन तदियपुत्रविद्वयमुपरिमिरलनादय
स्वावरि द्विद्वयं समस्तं करिय दिग्भे चउरयपुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयं स्व पति पावति ।
पुनः एव उपरिमिरलनाद्विद्वयपुत्रविद्वयमिदं दाऊन पुत्र व समकरण करिय परि
हायिरुवाणि आयेवन्नाणि । त अहा— हेद्विमिरलनरुवाहियमेवदाय गेवूग जदि एग-
रुवपरिहायी लक्ष्मदि तो उपरिमिरलनमिदं कवदियस्वपरिहायि पेन्नामो चि स्पाहिय
हेद्विमिरलनाए सदिदममगमूलमोवद्विय लद्ध तमिदं चैव सरिमज्जं काऊन अविने
तदियादियपुत्रविमिष्टाद्द्विद्वयमहारकातो होदि । वस्तु पमात्र कथियं ? तदियादि
पचपुत्रवीज सचमपुत्रविद्वयस्व सलागादि सेविमिदियवगमूलमिदं ओवद्विदे जं लद्ध

तासरी पृथिवीके मिथ्याद्विद्वयका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस तीसरी पृथिवीके
मिथ्याद्विद्वयको भीजेवी बार पृथिवियोंके मिथ्याद्विद्वयके प्रमाणसे अपवर्तित करने
जो लक्ष्य भावे वस्तुका विरक्षण करके इस विरक्षित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम
विरक्षणके प्रथम चक्रके ऊपर स्थित तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्विद्वयको माहण करके और
समान लण्ड करके वेचकपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बीवी भादि बार पृथिवियोंके
मिथ्याद्विद्वयका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस अष्टस्तन विरक्षणके प्रति प्राप्त द्व्यको
उपरिम विरक्षणके प्रति प्राप्त तीसरी पृथिवीके द्व्यके ऊपर देकर पहलेके समान समीकरण करके
हायिरुप विरक्षण अंक से भागा जाहिये । जैसे—उपरिम विरक्षणमें एक अधिक अष्टस्तन विरक्षण
मात्र स्थान आकर यदि एकवी हायि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरक्षणमें कितनी हायि
प्राप्त होगी इसप्रकार वैराशिक करके एक अधिक अष्टस्तन विरक्षणसे अग्रमेणीके दशवें
वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लक्ष्य भावे वस्तु समान छेद करके अग्रमेणीके उसी दशवें
वर्गमूलमेंसे अपवर्तन करने पर तीसरी भादि पांच पृथिवियोंके मिथ्याद्विद्वयका अन्वहार
काय होता है ।

उदाहरण—८१९२ ८१९२
१ १ ८ बार।

८१९२ × ७२८० = $\frac{18}{25}$

७२८ ५२२
१ १
१५

अष्टस्तन विरक्षण १५ में १ मिखा देने पर
२५ होते हैं । यदि इतने स्थान आकर उप-
रिम विरक्षणमें १ बी हायि प्राप्त होती है तो
उपरिम विरक्षणमात्र ८ स्थान जाने पर
कितनी हायि होगी, इसप्रकार वैराशिक
करने पर १५ बी हायि या जाती है । इसे

उपरिम विरक्षण ८ मेंसे घटा देने पर $\frac{18}{25}$ शेष रहते हैं ।

श्रृंखला—चूरीपादि पांच पृथिवियोंके वल मागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—चूरीपादि पांच पृथिवियोंकी सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्विद्वयको अवेसा
की गई शलाकाओंसे अग्रमेणीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करने पर कितना लक्ष्य भावे

विदियादिछप्पुडविमवहारकालो होदि । तस्स पमाण केचिय ? विदियादिछप्पुडवीथ सचम पुडविमिच्छाद्दुसलागाहि अगसेद्विदिपवगममूलमवहिदएगमाणो इवदि । तेण अगसेद्विमि मागे हिदे छप्पुडविमिच्छाद्दुद्वमागच्छदि । त अगसेदिषा खंडेऊमगखंड सामण्येएव विस्संयद्यविमि अवचिय सेवेण अगसेद्विमि भागे हिदे पडमपुडविमवहारकालो आय च्छदि । अहवा पुण्यमायिदछप्पुडविदम्बेण सामण्येएवमवहारकालं गुणेऊय वमि

उदाहरण—१९३८४ १९३८४

१ १ ४ पार

१९३८४ - १५८७२ = ३५
३१

१५८७२ ५१२
१ १
३१

अधस्तम विरलम १२ $\frac{१}{२}$ में १ मिळा वेवे पर २ $\frac{१}{२}$ हेता है । यदि इतने स्थान आकर उपरिम विरलममें १ की हाथि होती है तो उपरिम विरलममात्र ४ स्थान आकर कितनी हाथि प्राप्त होगी ? इस प्रकार वैराक्षिक करने पर ११ $\frac{१}{२}$ हाथिरूप संकल्प ज्ञाते हैं ।

इसे उपरिम विरलम ४ मेंसे घटा देने पर ११ $\frac{१}{२}$ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहार काल होता है ।

प्रश्न—द्वितीयादि छह पृथिवियोंका काल मागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शब्दाकार्योंसे अगम्येजीके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर जो एक भाग अव्यक्त होता है वतना द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल है । कल मागहारसे अगम्येजीके भाजित करने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

उदाहरण—३२ + १९ + ८ + ४ + २ + १ = ६६, १२८ - ६६ = ६२, द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल ।

६५६३६ ÷ ६२ = १०५८६ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य ।

कल छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको अगम्येजीसे भाजित करने जो एक लघु अव्यक्त भाग वसे समस्त मागहार मिथ्यादृष्टि विष्कमयुषीमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे अगम्येजीको भाजित करने पर पड़ती पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल जाता है ।

उदाहरण—३२५१६ + ६५६३६ = ९८१, २ - ९८१ = ९८१, ९८१

९८१३६ ÷ ९८१ = ८८८०८ प्र. पू. मि. अव

अथवा पड़के अये हुए छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे समस्त मिथ्यादृष्टि नापियोंके अवहारकालको गुणित करने जो सम्यक्त भाग वसे वसे पड़ती पृथिवीके

पदमपुत्रविदम्बेण भागे हिदे सम्वत्पुष्पणपरसेवअवहारकालो आगच्छदि । सं सरिसञ्छेद
काळण सामप्पअवहारकालमिह पभिसूचे पदमपुत्रविमिन्हाइट्टिअवहारकालो होदि ।

एतत् परिहाणिपक्खवाण सुहावगमणद सदिट्ठि वत्तइस्सामो । व बहा- सोलस
स्वाणि विरलिय वेसदछप्पणं स्व पडि समखंढ करिय दिण्णे एक्केस्स स्वस्स सोलस
सोलस स्वाणि पावेंति । एतत् तिण्ह स्वाण वट्ठिमिच्छामो चि वट्ठिरूवेदि एगस्वघरिद
मावट्ठिदे पंचस्वाणि सतिमागाणि आगच्छवि । ताणि हेट्ठा विरलिय एगस्वघरिद
सोलसस्वाणि समखंढ करिय दिण्णे स्व पडि तिण्णि तिप्पि स्वाणि पावेंति । एग
स्वविभागस्स एगस्व पायेदि । व क्व ? सकलेगरूवस्स वदि तिण्णि स्वाणि लप्पमवि
वो एगस्वविभागस्स किं लभामो चि कलेप्प इच्छ गाणिय पमाअण भागे दिदे एगमेव

मिथ्याहति द्वयके प्रमणका भाग देने पर सय जगह शयप हुमा प्रक्षेप अयहारकयल जाठा दे। उस प्रक्षेप कयहारकालको समान छद् करके सामान्य अयहारकालमें मिला देने पर पहली पृथिवीके मिथ्याहति द्वयका अयहारकाल होता दे।

उदाहरण— $\frac{3 \times 10^8 \times 3 \times 10^8}{9 \times 10^8} = 2 \times 10^8$ प्र. मय

$$12040 + \frac{2044200}{100} = \frac{4366200}{100} \text{ म प मि अय}$$

अब यहाँ पर हानिकारक भार प्रक्षेपरूप में शीघ्र सारसतास प्राप्त कराने के लिये संरक्षित
रखाते हैं। यह इस प्रकार है—

सोमद्वयं चोक्ता विरसज करके भीत उस विरसित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दोसो छप्पन भंकोको समान तंड करके देयरूपसे दे देने पर विरसित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सोमद्वय सोमद्वय सख्या प्राप्त होती है। यहाँ पर हम तीन संख्याकी गृहि करमा चाहते हैं हम सिधे गृहिकरूप सख्या तीनसे एक विरसजक प्रति प्राप्त सोमद्वयके व्यपवित्त करने पर एक गृहीत भाग सहित पाँच पूर्णक मध्य भागे हैं। इसे पूरा विरसजके नीचे विरसित करके भीत उस विरसित राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक विरसजके प्रति प्राप्त सोमद्वयको समान तंड करके देयरूपसे दे देने पर विरसजराशिके प्रत्येक एकके प्रति तीन सख्या प्राप्त होती है। तथा एक गृहीतभांशके प्रति एक संख्या प्राप्त होती है क्योंकि पूर्णकरूप एक विरसजके प्रति यदि तीन संख्या प्राप्त होती है तो एक गृहीतभांशके प्रति क्या प्राप्त होगा इसप्रकार विरसित करके प्राप्त राशि तीनसे छप्पनराशि एक गृहीतभांशको गुणित करके जो मध्य भागे उसमें प्रमाप्तराशि एकका भाग इसे पर एक संख्या ही प्राप्त होगी है।

उदाहरण—विरसन १६, रेव २५१, गृहिकण भं. ३।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15
 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30

रूपं लम्बदि ति । पुनो ताणि तिष्णि रूपाणि येषूण उवरिमविरलणपचरूवोवरि द्विद
 पंचसु सोसथेसु परिबाढीए पक्खिचे रूप पडि एक्कणवीसरूपाणि हवति । पुना सत्तम
 रूपं तिष्णि भागे करिय तेहिं विभागानं सोससरूपाणि समरुंढं करिय दिप्पे एक्केसस
 विभागसस सतिभागपचरूपाणि पावेंति । पुनो एगस्वरविभागपरिदसतिभाग पचरूपं
 तथेव वुविय सेस-वे विभागे अप्पथो धरिदरासिसिद्धिद पुच द्वाविय पुनो सद्धानिद्धिद
 एगरूपविभागेण परिदसतिभागपचरूवेसु हेट्ठिमविरलणाए विभागरूवोवरि द्विद एगरूपं
 पक्खिचे तस्य सतिभागछ-रूपाणि^१ हवति, एत्थ एगस्वरपरिहाणी उद्धा । पुना
 तदण्ठवररूपपरिद-सोससरूपाणि हेट्ठिमविरलणाए समरुंढं करिय दिप्पे पुच्च व रूप
 पडि तिष्णि तिष्णि रूपाणि पावेंति । पुनो तस्य सकलपचरूपावरि द्विद-तिष्णि रूपाणि
 येषूण सुप्पद्धानं वचिय उवरिमविरलण पंचरूवोवरि द्विद पचसु सोसथेसु परिबाढीए
 पक्खिचेसु रूप पडि एगणवीसरूपाणि हवति । पुनो पुच्चमानेअय पुच इनिद-वे

$$१९ + २ = २१, \quad \begin{matrix} १ & १ & १ & १ & १ & १ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{matrix}$$

पुनः नीचेके विरलणके प्रति प्राप्त इन तीन तीन संकोंको छेकर उपरिम विरलणके
 (मितीबाहि) पांच विरलण संकों पर स्थित पांच सोलह संकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे
 दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस संक प्राप्त होते हैं । पुनः सप्तम विरलणरूप एक
 संकके तीन भाग करके इन तीन भागोंके ऊपर सोलहको समान बाँड करके देयकपसे दे देने
 पर प्रत्येक एक विभागके प्रति एक विभागसहित पांच संक प्राप्त होते हैं । अगन्तर एक
 विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पांच संकोंको वहाँ पर रखकर और दोष
 दो विभागोंको अपने ऊपर रखी हुई राशिसे साथ मध्यग स्थापित करके अगन्तर अपने
 स्थान पर स्थित एक विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पांच संकोंमें अगलान विरलणके
 एक विभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहाँ एक विभागसहित छह संक भव
 जाते हैं । इसप्रकार वहाँ एक विरलण संककी हानि प्राप्त हुई । पुनः अनेके अर्थान् सप्तम
 विरलणके अगन्तर एक विरलण संक पर स्थित सोलहको अगलान विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
 समान बाँड करके देयकपसे दे देने पर पहलेके समान अगलान विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
 तीन तीन संक प्राप्त होते हैं । अगन्तर वहाँ पूर्वीक पांच विरलणरूप संकोंके ऊपर स्थित
 तीन संकाको ग्रहण करके शून्यस्थानको (विश्व व्याख्ये स्थानके १९ को अगलान विरलणमें
 बाँध है उसे) छोड़कर अपरिम विरलणके पांच विरलण संकोंके ऊपर स्थित पांच सोलह
 संकोंके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर अपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस संक प्राप्त
 होते हैं । अगन्तर पहले केकर मध्यग स्थापित दो विभागोंमेंसे एक विभागके ऊपर रखके हुए

रुवं सम्मदि वि । पुणो णामि तिप्पि रुक्कानि पेसूण उवरिमविरलणपचरूबोवरि द्विद
 पंचसु सोलसेसु परिवाडीए पक्खिचे रुवं पडि एक्कुमबीसरूक्कामि इवति । पुणो सवम
 रुवं तिप्पि मागे करिय तेसिं तिमागाणं सोलसरूक्कामि समसुंढं करिय दिप्पे एवेकस्स
 तिमागास्स सतिमागपंचरूक्कामि पावेंति । पुणो एगरूक्कतिमागपरिदसतिमाग पचरूवं
 ठरवेव इविय सेस-वे तिमागे अप्पणो परिदरासिसिद्ध पुच इविय पुणो सट्ठाणडिद
 एगरूक्कतिमागेण परिदसतिमागपंचरूवेसु हेड्डिमविरलणाए तिमागरूबोवरि द्विद-एगरूवं
 पक्खिचे तस्य सतिमाग-रूक्कामि' इवेंति, एत्थ एगरूक्कपरिहाणी लद्धा । पुणो
 तदर्थवररूक्कपरिद-सोलसरूक्कामि हेड्डिमविरलणाए समसुंढं करिय दिप्पे पुम्भ व रुवं
 पडि तिप्पि तिप्पि रुक्कानि पावेंति । पुणो तस्य सकलपचरूबोवरि द्विद तिप्पि रुक्कामि
 पेसूण सुप्पण्णाणं पंचिय उवरिमविरलण-पंचरूबोवरि द्विद-पचसु सोलसेसु परिवाडीए
 पक्खिचेसु रुवं पडि एगूणबीसरूक्कामि इवति । पुणो पुम्भमावेत्थ पुच इविद व

$$19-1=1\frac{1}{2}, \quad \frac{1}{2}, \quad \frac{1}{2}, \quad \frac{1}{2}, \quad \frac{1}{2}, \quad \frac{1}{2}, \quad \frac{1}{2}$$

पुनः बीजके विरलणके प्रति प्राप्त इन तीन तीन अंकोंको लेकर उपरिम विरलणके
 (द्वितीयाभि) पांच विरलण अंकों पर स्थित पांच सोलस अंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे
 दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बचीस अंक प्राप्त होते हैं । पुनः सप्तम विरलणक एक
 अंकके तीन माप करके इन तीन मापोंके ऊपर सोलसको समान बाँट करके देवकपसे दे देने
 पर प्रत्येक एक विभागके प्रति एक विभागसहित पाँच अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर एक
 विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पाँच अंकोंको वहाँ पर रखकर बीर सेप
 हो विभागोंको अपने ऊपर रखी हुई पक्षिके साथ मध्य स्थापित करके अनन्तर अपने
 स्थाप पर स्थित एक विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पाँच अंकोंमें अथस्तम विरलणके
 एक विभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहाँ एक विभागसहित छह अंक भ
 जाते हैं । इसप्रकार यहाँ एक विरलण अंककी इति प्राप्त हुई । पुन इससे अर्थात् सातवें
 विरलणके अनन्तर एक विरलण अंक पर स्थित सोलसको अथस्तम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
 समान बाँट करके देवकपसे दे देने पर पहलेके समान अथस्तम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
 तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर वहाँ पूर्वोक्त पाँच विरलणक अंकोंके ऊपर स्थित
 तीन संख्याको ग्रहण करके हायस्थानको (जिस व्युत्पत्ति स्थानके १९ को अथस्तम विरलणमें
 बाँटा है उसे) छोड़कर उपरिम विरलणके पाँच विरलण अंकोंके ऊपर स्थित पाँच सोलस
 अंकोंके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर उपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति बचीस अंक प्राप्त
 होते हैं । अनन्तर पहले काकर मध्य स्थापित हो विभागोंमेंसे एक विभागके ऊपर रखने हुए

रूपं सम्मदिषि । पुनो वाणि तिष्णि रूपाणि पेक्ष्य उपरिमविरलणपचरूबोवरि द्विद
पंचसु सोलसेसु परिबाढीए पक्षित्ते रूपं पक्षि एकद्वयवीसरूपाणि हवति । पुनो सप्तम
रूपं तिष्णि माये करिय वेसि विमागाणं सोलसरूपाणि समखंडं करिय दिण्ये एकेकस्स
विमागस्स सविमागपंचरूपाणि पावेंति । पुनो एगरूपविमागपरिदसविमाग पंचरूप
तत्पेक्ष इविय सेस-वे-विमागे अप्पथो परिदरासिसिद्धि पुन इविय पुन सङ्काण्डिद
एगरूपविमागेण परिदसविमागपचरूवेसु हेट्टिमविरलणाए विमागरूबोवरि द्विद-एगरूप
पक्षित्ते तत्त्व सविमाग छ-रूपाणि' इवति, एत्थ एगरूपपरिहाणी लद्धा । पुन
तदर्पवररूपपरिद-सोलसरूपाणि हेट्टिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्ये पुम्ब व रूपं
पक्षि तिष्णि तिष्णि रूपाणि पावेंति । पुनो तत्त्व सफलपंचरूबोवरि द्विद तिष्णि रूपाणि
पेक्ष्य सुण्यद्वयं वंचिय उपरिमविरलण पचरूबोवरि द्विद-पचसु सोलसेसु परिबाढीए
पक्षित्तेसु रूपं पक्षि एगूणवीसरूपाणि हवति । पुनो पुम्बमावेत्तण पुन इरिद-वे

$$११ - १ = ५ \frac{१}{१} \quad \frac{१}{१} \quad \frac{१}{१} \quad \frac{१}{१} \quad \frac{१}{१} \quad \frac{१}{१} \quad \frac{१}{१}$$

पुनः नीचेके विरलणके प्रति प्राप्त उन तीन तीन अंकोंको लेकर उपरिम विरलणके
(द्वितीयादि) पाँच विरलण अंकों पर स्थित पाँच सोलह अंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे
दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं । पुनः सप्तम विरलणरूप एक
अंकके तीन भाग करके उन तीन भागोंके ऊपर सोलहको समान खंड करके देयरूपमें दे देने
पर प्रत्येक एक विभागके प्रति एक विभागसहित पाँच अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर एक
विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पाँच अंकोंको वहाँ पर रखकर बीर दोप
को विभागोंको अपने ऊपर रखी हुई राशिसे साथ मलग स्थापित करके अनन्तर अपने
स्थान पर स्थित एक विभागके प्रति प्राप्त एक विभागसहित पाँच अंकोंमें अघस्तन विरलणके
एक विभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहाँ एक विभागसहित छह अंक आ
जाते हैं । इसप्रकार वहाँ एक विरलण अंककी इतनी प्राप्ति हुई । पुन उसके अर्थात् सातवें
विरलणके अनन्तर एक विरलण अंक पर स्थित सोलहको अघस्तन विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
समय खंड करके देयरूपसे दे देने पर पड़नेके समान अघस्तन विरलणके प्रत्येक एकके प्रति
तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर वहाँ पूर्णक पाँच विरलणरूप अंकोंके ऊपर स्थित
तीन संख्याको ग्रहण करके शून्यस्थानको (जिस स्थानमें स्थानके ११ को अघस्तन विरलणमें
आता है उसे) छोड़कर उपरिम विरलणके पाँच विरलण अंकोंके ऊपर स्थित पाँच सोलह
अंकोंके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर उपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त
होते हैं । अनन्तर पड़ने जाकर मलग स्थापित दो विभागोंमेंसे एक विभागके ऊपर रखने हुए

विरलणम्हि किं लमामो पि रूवाहिमेहेट्टिमविरलणात् फलमुपिदिञ्चाए भागे हिदाए सम्भवपरिहीणरूवाणि आगच्छति । तापि उवरिमविरलणरूवेसु अवणिदे अवहारकाली होदि । एवम्बत्तम् समकरणविहाण जाणित्ठण मच्चय ।

सपदि रासिपरिहाणिविहाण वत्तइस्सामो । त अहा- तत्त तत्र तिण्हं रूवाण परिहाणि उच्चदे- उवरिमविरलणरूवधरिदसोत्तसरूवेसु हेट्टिमविरलणात् सगलेगरूवधरिद तिण्णि रूवाणि रूव पदि अवणिय पुध द्वेयम्बाणि । सपदि उवरिमविरलणमेवतिण्णि रूवाणि अवणिदसेसपमाणेण कस्सामो । त अहा- उवरिमविरलणवत्तम्बधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि एगद्ध करिय पुनो पच्चमत्तधरिदतिण्हं रूवाणं तिमाग पेत्तम् तत्त पक्खिउत्ते अवणिदसेसपमाण हादि । हेट्टिमविरलणाए अत एगरूव विरलिय अणत्तरुप्पण

कितनी इानि प्राप्त होगी इसप्रकार त्रैपाशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि सोलहवें गुणित करके जो छप्प भागे उसमें एक अधिक मधस्तर विरलणमात्र इच्छात्रपाशिका भाग देने पर संपूर्ण इानिरूप विरलणस्थान भा आते हैं । इन्हें उपरिम विरलणकी संप्रयामेंसे घटा देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसीप्रकार सबन समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ३१ फलराशि १, इच्छाराशि १६

$$१६ \times १ = १६ \quad १६ \div \frac{१९}{३} = २ \frac{१०}{१९} \text{ इानिरूप भंड ।}$$

$$१६ - २ \frac{१०}{१९} = १३ \frac{९}{१९} \text{ अवहारकाल ।}$$

अब राशिके इानिरूप विधानको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—उस विषयमें तीन भंडोंकी इानिछ कथन किया जाता है—उपरिम विरलणके प्रत्येक विरलणके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे मधस्तर विरलणके सकल एक विरलणक प्रति प्राप्त तीन संप्रयामें घटा कर पूरक स्थापित कर देना चाहिये । अब उपरिम विरलणमात्र अर्थात् सोलहवार स्थापित तीन तीन भंडोंको उपरिम विरलणके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो दोप रहता है उसका प्रमाणमे करते हैं । जैसे—उपरिम विरलणके चार विरलणोंके प्रति प्राप्त तीन तीन भंडोंको एकत्रित करके पुनः पाँचवें विरलणके ऊपर रखे हुए तीनके विभागाको ग्रहण करके मिला देने पर सोलहमेंसे तीनको घटा कर जो दोप रहता है उसका प्रमाण होना है । इस भाँती उत्पन्न हुए तीनको घटा कर दोप रहे हुए प्रमाणको मधस्तर विरलणके अन्तर्में एकत्र विरलण करके उसका ऊपर दे देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलणके चार विरलणोंके प्रति प्राप्त तीन तीन सक्काको

इन्द्रदे । त अहा—एगूणवीसरूपाण यदि एग बिरलभरूपं लम्भदे तो वषभ् रूपं किं समामो चि एगूणवीसदि फलगुणिदिच्छाए माग हिद एगरूपं एगूणवीस खंडाणि कात्थ्य तस्य वन खंडाणि आगच्छति । अवधिद्वेसाणि रूपाणि एगडे कदे सेरहस्त्राणि एगरूपं एगूणवीसखंडाणि कदे वन खंडाणि च इवति । सपहि परिहाविरूपाणि आगच्छते । त अहा—हेडिमविरलभरूपादियमेचद्वाण गत्तुण यदि एगरूपपरिहावी लम्भदि तो सतिमागतिर्ह रूपं किं समामो चि फलगुणिदिच्छाए पमावण माये हिदे एगरूप एगूणवीसखंडाणि कदे तस्य वन खंडाणि लम्भति । पुत्रसद्व-दा-रूपाणि तस्य पवित्र्यते परिहाविरूपाणि इवति । अहवा सध्वहीयरूपाणि एगवारेयाणि ज्ञेते । त अहा—हेडिमविरलभरूपादियमेचद्वाण गत्तुण यदि एगरूपपरिहावी लम्भदि तो उवरिम-

अब इन अवधिए नी भंकोंका बिरलभ नितना होगा यह उत्पन्न करके बतल्यते हैं । यह इसप्रकार है—उन्नीस भंकोंके प्रति यदि एक बिरलभ प्राप्त होता है तो बी भंकोंके प्रति कितना प्राप्त होगा इसप्रकार वैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाप्रति नीचा गुणित करके जो लब्ध भावे उसमें प्रमाणराशि उन्नीसका माप देने पर एकके उन्नीस खंड करके उनमेंसे ९ खंड लब्ध भाते हैं । इसप्रकार उपरिम बिरलभमेंसे कितनी सख्या पर जाली है उससे दोष रहे हुए सभी भंकोंको एकत्रित करने पर पूर्णक तेरह और एक भंकोंके उन्नीस खंड करके उनमेंसे नी खंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९, फलराशि १, इच्छाप्रति ९,

$$९ \times १ = ९, ९ - १९ = १० \text{ नाके प्रति बिरलभरूपका प्रमाण ।}$$

$$१९ - ११ = १९११ \text{ कुछ बिरलभरूप भंकोंका प्रमाण ।}$$

अब द्वानिकप अब छाते हैं । जैसे एक अधिक अघस्तन बिरलभमात्र स्थान जाकर यदि एकही द्वानि प्राप्त होती है तो एक विभागसहित तीन बिरलभस्थानोंके प्रति क्या प्राप्त होगा इसप्रकार वैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाप्रति एक विभागसहित तीन बिरलभनी गुणित करके जो लब्ध भावे उसमें प्रमाणराशि एक अधिक अघस्तन बिरलभका माप देने पर एकके उन्नीस खंड करने पर उनमें दस खंड लब्ध भाते हैं । पुनः पहले लब्ध भावे हुए दोनो उसमें मिला देने पर सपूर्ण द्वानिकप अब हो जाते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ११, फलराशि १, इच्छाप्रति १,

$$\frac{१०}{१} \times १ = १, \frac{१}{१} + \frac{१९}{१} = \frac{१}{१९}, \frac{१०}{१९} + २ = २\frac{१}{१९} \text{ द्वानि भंका ।}$$

अथवा सपूर्ण द्वानिकप बिरलभस्थान एकवारमें साते हैं । जैसे—एक अधिक अघस्तन बिरलभमात्र स्थान जाकर यदि एकही द्वानि प्राप्त होती है तो उपरिम बिरलभमें

विरलणम्मि किं समामो पि रुवाहियहेट्ठिमविरलणाण फलगुणिदिञ्चाण भागे हिंदाए सन्नपरिहीणरूपाणि आगच्छति । तानि उपरिमविरलनस्त्वेसु अबणिदे अबहारकालो होदि । एवं सव्वस्य समकरणविहाय आणित्थण वत्तच्च ।

सपहि रासिपरिहाणिविहाय वत्तहस्सामो । सं जहा—तत्तय ताव तिण्हं रूवाण परिहाणि वत्तदे—उपरिमविरलणरूपधरिदसोत्तसत्त्वेसु हेट्ठिमविरलणाण सगलेगरूवपरिद तिणिण रूवाणि रूवं पडि अबणिय पुच्च इत्तयप्पाणि । संपहि उपरिमविरलणमेत्ततिणिण रूवाणि अबणिदसेसपमाणेण वत्तहामो । त अहा—उपरिमविरलणचउत्तवपरिदतिणिण तिणिण रूवाणि एगह करिय पुणो पच्चमरूवपरिदविण्ह रूवाणं तिमागं पत्तूण तत्तय पक्खिसे अबणिदसेसपमाणं होदि । हेट्ठिमविरलणाए अते एगरूवं विरलिय अणत्तरूपपण्य

कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार तैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि सोलहको गुणित करके जो लब्ध भाये उसमें एक अधिक मघस्तन विरलनमात्र इच्छाराशिका भाग देने पर संपूर्ण हानिरूप विरलनरूपान् भा जाते हैं । इन्हें उपरिम विरलनकी संख्यामेंसे घटा देने पर अवहारकलब्ध प्रमाण जाता है । इसीप्रकार सर्वत्र समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ३१; फलराशि १; इच्छाराशि १६,

$$३१ \times १ = ३१ \quad ३१ - \frac{१६}{२} = २ \frac{१}{२} \text{ हानिरूप भेद ।}$$

$$३१ - २ \frac{१}{२} = २८ \frac{१}{२} \text{ अवहारकाल ।}$$

अब राशिके हानिरूप विधानको पतसाते हैं । वह इसप्रकार है—उस नियममें तीन भंक्तोंकी हानिक कथन किया जाता है—उपरिम विरलनके प्रत्येक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे मघस्तन विरलनके सकेल एक विरलनका प्रति प्राप्त तीन संख्याको घटा कर पूरक स्थापित कर देना चाहिये । अब उपरिम विरलनमात्र मघान् सोलहपार स्थापित तीन तीन भंक्तोंको, उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो शेष रहता है उसका प्रमाणसे करते हैं । जैसे—उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन भंक्तोंको एकत्रित करके पुनः पाँचों विरलनके ऊपर देने हुए तीनके विभागको ग्रहण करके मिस्र देने पर सोलहमेंसे तीनको घटा कर जो शेष रहता है उसका प्रमाण होगा है । इस मरी उत्पन्न हुए तीनको घटा कर शेष रहे हुए प्रमाणको मघस्तन विरलनके मत्तमें एकका विरलन करके उसके ऊपर दे देना चाहिये । पुन उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको

इज्जदे । तं ब्रह्म—एगूणशीलरूपाणं नदि ण्ण विरत्तणरूपं सम्मदे तो जण्ह रूपाणं किं समामो सि पगूणशीलेहि फल्लगुणिदिण्डाए माग हिद एगरूपं' एगूणशीलं छेदापि फल्लगु तत्त्व जण छेदाणि आगच्छेति । अत्रापिदमेसाणि रूपाणि एगडे कद तेरहरूपाणि एगरूपं पगूणशीलसंज्ञाणि कदे जण संज्ञाणि च इवति । सपहि परिहाणिरूपाणि प्राणिज्जयेति । त ब्रह्म—हेडिमविरत्तणरूपाहियमचद्धानं गतूणं अदि एगरूपपरिहाणी सम्मदि तो सविमागतिण्ह रूपाणं किं समामो सि फल्लगुणिदिण्डाए पमाणेण माय हिदे एगरूप एगूणशीलसंज्ञाणि कदे तत्त्व दस संज्ञाणि सम्मति । पुण्हत्तु-दो-रूपाणि तत्त्व पक्खिउत्ते परिहाणिरूपाणि इवति । अहवा सम्बहीणरूपाणि पगवारेणाणि ज्ञेते । तं ब्रह्म—इडिमविरत्तणरूपाहियमचद्धानं गतूणं अदि एगरूपपरिहाणी सम्मदि तो उवरीम

अथ इमं अथविषय मी भंजोका विरत्तन कितना होगा यह उत्पन्न करके बतझते हैं । यह इसप्रकार है—अर्थात् भंजोके प्रति यदि एक विरत्तन प्राप्त होता है तो भी भंजोके प्रति कितना प्राप्त होगा इसप्रकार वैराशिक करके फल्लराशि एकसे इच्छराशि बीस गुणित करके जो अल्प भागे उसमें प्रमाणराशि उधीसका भाग देने पर एकके उधीस खंड करके उनमेंसे ९ खंड अल्प भाते हैं । इसप्रकार उपरिम विरत्तनमेंसे त्रितनी संख्या बट जाती है उससे होप रहे हुए सभी भंजोको एकत्रित करने पर पूर्णक तेरह और एक भंजके उधीस खंड करके उनमेंसे भी खंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९, फल्लराशि १, इच्छराशि ९,

$$९ \times १ = ९, ९ - १९ = \frac{१०}{१९} \text{ भाके प्रति विरत्तनरूपका प्रमाण ।}$$

$$१९ - २\frac{१}{१९} = १७\frac{१८}{१९} \text{ कुल विरत्तनरूप भंजोका प्रमाण ।}$$

अथ हाविरूप भक्त झते हैं । जैसे एक अधिक अथस्तन विरत्तनमात्र स्थान जाकर यदि एकही हाति प्राप्त होती है तो एक विभागसहित तीन विरत्तनस्थानोंके प्रति क्या झप होगा इसप्रकार वैराशिक करके फल्लराशि एकसे इच्छराशि एक विभागसहित तीन विरत्तनको गुणित करके जो अल्प भागे उसमें प्रमाणराशि एक अधिक अथस्तन विरत्तनका भाग देने पर एकके उधीस खंड करने पर उनमें दस खंड अल्प भाते हैं । पुनः पहले अल्प भागे हुए दोनो उसमें मिला देने पर संपूर्ण हाविरूप भंज हो जाते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १, फल्लराशि १, इच्छराशि १,

$$\frac{१०}{१} \times १ = \frac{१०}{१}, \frac{१}{१} - \frac{१९}{१} = \frac{१}{१९}, \frac{१०}{१९} + १ = २\frac{१०}{१९} \text{ हाति भंज ।}$$

अथवा संपूर्ण हाविरूप विरत्तनस्थान एकवारमें झते हैं । जैसे—एक अधिक अथस्तन विरत्तनमात्र स्थान जाकर यदि एकही हाति प्राप्त होती है तो उपरिम विरत्तनमें

विरलजम्हि किं लमामा चि स्वादियहेद्विमविरलणाए फलगुणिदिच्छाए मागे हिदाए सम्बपरिहीनरूपाणि आगच्छति । ताणि उवरिमविरलणरूवेसु अवणिदे अवहारकाळो होदि । एष सम्बरय समकरणविहाण आभिरुण वचध्व ।

सपहि रासिपरिहाणिविहाण वचइस्सामो । ए अहा— तस्य ताव तिण्हं रूपाण परिहाणि उचदे— उवरिमविरलणरूपधरिदसोलसरूवेसु हेद्विमविरलणाए सगलेगरूपधरिद विणिग्गि रूपाणि रूबं पडि अवणिय पुष द्वेयम्बानि । संपहि उवरिमविरलणमेचतिणिग्गि रूपाणि अवभिदसेसपमाणेण कस्सामो । तं अहा— उवरिमविरलणवउरवधरिदतिणिग्गि विणिग्गि रूपाणि एगइ करिय पुणो पचमरूपधरिदतिण्हं रूपाणं तिमाग पेचूण तत्त पक्खिसे अवणिदसेसपमाणं होदि । हेद्विमविरलणाए अवे एगरूब विरलिय अपतलरूपण

कितनी हानि प्राप्त होगी इसप्रकार त्रैधाशिक करके फलदाशि एकसे इच्छराशि सोलहको गुणित करके जो सम्ब ग्राहे उसमें एक अधिक अघस्तन विरलनमात्र इच्छराशिक भाग देने पर संपूर्ण हानिरूप विरलनस्यान आ जाते हैं । इन्हें उपरिम विरलनकी संप्रामांसे घटा देने पर अवहारकाळका प्रमाण आता है । इसीप्रकार सर्वत्र समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणदाशि ३१ फलदाशि १, इच्छराशि १६.

$$१६ \times १ = १६ \quad १६ - \frac{१९}{३} = २ \frac{१०}{३} \text{ हानिरूप अंक ।}$$

$$१६ - २ \frac{१०}{३} = १३ \frac{२}{३} \text{ अवहारकाळ ।}$$

अब दाशिके हानिरूप विधानको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—उस धिपयमें तीन अंकोंकी हानिका कथन किया जाता है—उपरिम विरलनके प्रत्येक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे अघस्तन विरलनके सफल एक विरलनक प्रति प्राप्त तीन संख्याको घटा कर पूरक स्थापित कर देना चाहिये । अब उपरिम विरलनमात्र अघात् सोलहपार स्थापित तीन तीन अंकोंको उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो शेष रहता है उसके प्रमाणसे करते हैं । जैसे—उपरिम विरलनके बार विरलनोंक प्रति प्राप्त तीन तीन अंकोंको एकत्रित करके पुनः पाँचवें विरलनके ऊपर रखे हुए तीनके विभागको ग्रहण करके मिला देने पर सोलहमेंसे तीनको घटा कर जो शेष रहता है उसका प्रमाण होगा है । इस अभी उत्पन्न हुए तीनको घटा कर शेष रहे हुए प्रमाणको अघस्तन विरलनके अन्तमें एकका विरलन करके उसके ऊपर दे देना चाहिये । पुन उपरिम विरलनके बार विरलनोंक प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको

अवशिष्टसत्त्वरूपमात्र दादक्य । पुनोऽवशिष्टविरलणम्बि चतुर्विधविरलणम्बि विधि
रूपाणि एवम् करिय पुम्बविद्वेतिमागम्बि' एवम् विमाग येनूष पक्खिचे एदमवि
अवशिष्टसत्त्वरूपमात्र होदि । एदस्स कारणेण पुम्बविरल्लिद्वेतिमागस्स पासे अवशिष्टसत्त्वरूप
विरल्लिच वस्सुवरि सो संपदि कुप्पण्यवविद्वेतिमागसी दादम्बो । पुना वि अवशिष्ट
विरल्लणचतुर्विधविरलणम्बि विधि रूपाणि येनूषिय पुष क्विय विमाग तत्त पक्खिचे
एदमवि अवशिष्टसत्त्वरूपमात्र होदि । एदस्स कारणेण पुम्बविरल्लिद्वेतिमागस्स रूपाण पास अन्नेय
रूप विरल्लिच वस्सुवरि सो रासी ठवेयम्बो । पुना अवशिष्टाणि विरूचविरल्लिच विधि
रूपाणि यव मवति । एदाण विरल्लणरूपाण पमाणमुप्पाद्वद्वे । रूचविरल्लिचविरल्लणमेव
दात्तं गंतुं यदि एवमवहारपक्खेणरूप लब्धमदि तो विष्टं रूपाणि किं समामो चि रूच-

एकचित्त करके पहले मलग स्थापित हुए तीनके दो विभागोंमेंसे एक विभागको ग्रहण करके
मिक्ख देने पर यह भी तीनको घटाकर जो दोष रहे उसका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
विरल्लण किये हुए एक विरल्लणके पासमें दूसरे एकको विरल्लित करके उसके ऊपर यह भी
उत्पन्न हुए तीनको घटाकर दोष रही राशि दे देना चाहिये । फिर भी अपरिम विरल्लणके बाद
विरल्लणोंके प्रति प्राप्त तीन तीन लब्धियोंको मिक्का कर मलग स्थापित करके तीनका विभाग
उसमें मिक्ख देने पर यह भी तीन घटा कर दोष रही राशिका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
विरल्लण किये हुए दो विरल्लणोंके पासमें तीसरे एकका विरल्लण करके उसके ऊपर यह राशि
स्थापित कर देना चाहिये । पुनः अपरिम विरल्लणको अवशिष्ट तीन विरल्लणोंके प्रति प्राप्त
अवशिष्ट तीन तीन भेद मिक्का कर भी होते हैं ।

उदाहरण—अपरिम विरल्लणके प्रत्येक १९ मेंसे ३ मिक्का देने पर १३ रहते हैं । यथा—

१९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९
१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

जब १९ जगह जो ३ हैं उनको १९ रूप करनेके लिये इसप्रकार जोड़ो—

३+३+३+३+१=१३ ३+३+३+३+१=१३ ३+३+३+३+१=१३
३+३+३=९

इसप्रकार अपरिम विरल्लणके १९ स्थानोंमें से ३ और मिक्का देने पर कुल १९ स्थान
होते हैं जिनमें प्रत्येक पर १३ प्राप्त है । बाकी ९ रहते हैं जिसके लिये ११ विरल्लण प्राप्त
होगा । इसप्रकार १९-११ कुल विरल्लण भेद होते हैं । २५९ में भाग देकर १३ लब्ध होनेके
लिये बाकी १९-१३ भागद्वारा है ।

अब इस तीन विरल्लणके प्रति प्राप्त तीन भेदोंका विरल्लण प्रमाण उत्पन्न करते हैं— एक
क्रम व्यवस्थित विरल्लणप्रमाण स्थान आकर यदि एक अवधारणप्रमाणका उत्पन्न होती है तो तीनके

हेटिमविरलगाए तिणि रूपाणि ओवडिदे एगरूय वेरहसंडाणि बदे तस्य भव खंडाणि
हवति । एद पुञ्चिछुतिण्ड रूपाणि पासे विरलिय एदस्सुवरि भव रूपाणि दावम्भाणि ।
अहथा सम्भपक्खेवरूपाणि एगवारेण आणिज्जेते । स जहा— रूयणहेटिमविरलणमेचद्वार्ण
गतुण जदि एगा अवहारपक्खेवसलागा लम्भदि तो उवरिमविरलणमिह केचियाओ
अवहारपक्खेवसलागाओ लमामो चि पमाणेभ इन्जाए ओवडिदाए सग्गाओ पक्खेव
सलागाओ लम्भति । एदामो उवरिमविरलणमिह पक्खिउचे इण्डिअवहारकाओ होदि ।
एव सम्भरय रासिपरिहाणिमिह जाणिऊण समकरमं कायम्भ ।

अहथा सामण्यअवहारकाळं विरलेऊण एकेकस्स रूपस्स जगपदं समसंड करिय
दिण्णे रूप पडि सामण्यणेइयमिच्छाइडिदम्भ पावेदि । तस्य एगम्भपरिदसामण्यणेइय

मति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार विराशिक करके एक कम भयस्तन विरलनसे तीनको भयपतित
करने पर एकके तेरह वंड करने पर उनमेंसे भी एण्ड सम्भ भाते हैं । इसे पूर्णको तीन
विरलन बंधोंके पासमें विरलित करके इसके ऊपर नौ बंध दे देना चाहिये ।

उदाहरण— $1\frac{1}{3} - 1 = \frac{2}{3}$ प्रमाणराशि, १ फलराशि, ३ इच्छराशि ।

$1 \times 1 = 1 + \frac{1}{3} = \frac{4}{3}$ * तीन विरलनोंके मति तीन तीन रूपसे दिये हुए
१ × १ = १ + $\frac{1}{3} = \frac{4}{3}$ * बंधोंका भयहारकाळ ।

अथवा, संपूर्ण प्रक्षेपरूप भयहारकाळको एकवारमें छाते हैं । जैसे— एक कम भय
स्तन विरलनमान रयान जाकर यदि एक भयहारकाळ प्रक्षेपरकाळ प्राप्त होती है तो उपरिम
विरलनमें कितनी प्रक्षेपशालाकार्य प्राप्त होंगी इसप्रकार विराशिक करके फलराशि एकसे
इच्छराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो सम्भ भाये उसमें एक कम भयस्तन विरलन
मात्र प्रमाणराशिका भाग देने पर संपूर्ण भयहारकाळ प्रक्षेपशालाकार्य क्या जाती है । इनको
उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित भयहारकाळ होता है । इसीप्रकार सब राशिकी
हानिमें जानकर समीकरण करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $\frac{2}{3}$, फलराशि १, इच्छराशि १९।

$19 \times 1 = 19$, $19 + \frac{1}{3} = \frac{58}{3}$ प्रमाण भयहारकाळ ।

$19 + \frac{58}{3} = 19\frac{2}{3}$ इच्छित भयहारकाळ ।

अथवा सामान्य भयहारकाळका विरलन करके और उस विरलित राशिक प्रत्येक
एकके प्रति जगपदको समान बंड करके देने पर प्रत्येक एकके मति सामान्य नारक
मिथ्याराशि जीवराशि प्राप्त होती है ।

अवधिद्वयसंयुक्तपमान दादव्य । पुणो उवरिमविरलणाम्नि अउरुवपरिदतिणि तिणि
रूपाणि एगः करिय पुम्बद्विद्वेतिमागाम्नि' एगं तिमाग पेचूम पक्खित्त एदमवि
अवधिद्वयसंयुक्तपमान दादि । एदस्स कारणेण पुम्बविरलिद्वेणरूवस्स पासे अवमेगरूव
विरलिय वस्सुवरि सो सपहि बुप्पण्णअवधिद्वयसंयुक्तासी दादव्यो । पुणा वि उवरिम
विरलणवठरूवपरिदतिणि तिणि रूपाणि मेलाविय पुच बुविय तिमागं तस्य पक्खित्ते
एदमवि अवधिद्वयसंयुक्तपमानं होदि । एदस्स कारणेण पुम्बविरलिद्वेणरूव रूपाणि पासे अवमेक
रूव विरलिय वस्सुवरि सो रासी ठवेपव्यो । पुणो अवसेसाणि तिरूवपरिदतिणि तिणि
रूपाणि णव भवंति । एदाम विरलणरूपाण पमानम्प्याद्वयदे । रूवद्वेणुमविरलणमेव
ज्ञाप गंतव्य अदि एगअवहारपक्खनरूव लम्मदि तो तिणं रूपाणि किं समामो चि रूव-

एकचित्त करके पहले मर्यादा स्थापित हुए तीनके दो विभागोंमेंसे एक विभागको ग्रहण करके
मिला देने पर यह भी तीनके बराबर जो शेष रहे उसका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
विरलण किये हुए एक विरलणके पासमें दूसरे एकको विरलित करके उसके ऊपर यह भी
वर्तव्य हुए तीनको बराबर शेष रही राशि दे देना चाहिये । फिर भी उपरिम विरलणके बार
विरलणोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको मिला कर मर्यादा स्थापित करके तीनका विभाग
उसमें मिला देने पर यह भी तीन बराबर शेष रही राशिका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
विरलण किये हुए दो विरलणोंके पासमें तीसरे एकका विरलण करके उसके ऊपर यह राशि
स्थापित कर देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलणके अवशिष्ट तीन विरलणोंके प्रति प्राप्त
अवशेष तीन तीन संक मिला कर भी होते हैं ।

उदाहरण—उपरिम विरलणके प्रत्येक ११ मेंसे ३ निकाल देने पर १३ रहते हैं । यथा

१३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

जब १३ अगह जो ३ हैं उनको १३ रूप करनेके लिये इसप्रकार जोड़ो—

३+३+३+३+३=१५ ३+३+३+३+३=१५ ३+३+३+३+३=१५
३+३+३=९

इसप्रकार उपरिम विरलणके ११ स्थानोंमें से ३ और मिला देने पर कुछ १९ स्थान
होते हैं जिनमें प्रत्येक पर १३ प्राप्त है । बाकी ९ रहते हैं जिसके लिये १३ विरलण प्राप्त
होगा । इसप्रकार १९ $\frac{१}{३}$ कुछ विरलण संक माते हैं । २५१ में माग देकर १३ छान्य जानेके
लिये यही १९ $\frac{१}{३}$ मागहार है ।

जब हम तीन विरलणके प्रति प्राप्त भी संश्लेष विरलण प्रमाण वर्तव्य करते हैं—एक
कम अवसरतन विरलणमात्र स्थान आकर यदि एक अवहारपक्षेपशब्दाका वर्तव्य होती है तो तीनके

हेट्टिमविरलणाए विष्णि रूपाणि ओवद्धिदे एगरूव ठेरहत्तंठाणि कदे तत्थ भव खंढाणि
 हवति । एद पुब्बिच्छविष्ण रूपाणि पासे विरलिय एदस्सुवरि णव रूपाणि दादब्बाणि ।
 अहवा सम्भपक्खेवरूपाणि एगयारेण आभिन्ने । सं सहा—रूवूनहेट्टिमविरलणमेचद्दार्प
 गंदण अदि एगा अवहारपक्खेवसलागा लम्भदि षो उवरिमविरलमम्हि केसियाओ
 अवहारपक्खेवसलागामो लमामो चि पमामेण इच्छाए ओवद्धिवाए सम्भाओ पक्खेव
 सलागाओ लम्भति । एवाओ उवरिमविरलणम्हि पक्खिच्छे इच्छिदजपहारकाओ होदि ।
 एव सम्भस्य रासिपरिहाणिम्हि आभिऊण समकर्थं कायर्त्थं ।

अहवा सामान्यअवहारकांठं विरलेऊण एकेकस्स रूयस्स सगपदरे समसंढं करिय
 दिप्पे रूवं पडि सामान्यणेइयमिच्छाइद्धिदम्भ पावेदि । तत्थ एगरूववरिदिसामान्यणेइय

प्रति क्या प्राप्त होगा इसप्रकार वैयक्तिक करके एक कम मध्यस्तन विरलनसे तीनको अपवर्तित
 करने पर एकके ठेरह खंड करने पर उनमेंसे भी सगुट्ट लम्भ आते हैं । इसे पूर्वोक्त तीन
 विरलन अंकोंके पासमें विरलित करके इसके ऊपर भी अंक दे देना चाहिये ।

उदाहरण— $4\frac{1}{2} - 1 = 3\frac{1}{2}$ प्रमाणराशि । १ फलराशि । ३ इच्छराशि ।

$3 \times 1 = 3$ $3 + \frac{1}{2} = \frac{7}{2}$ तीन विरलनोंके प्रति तीन तीन रूपसे दिये हुए
 १ अंकोंका अवहारकाण्ड ।

अथवा, संपूर्ण प्रक्षेपकाय अवहारकाण्डको एकवारमें छाते हैं । जैसे—एक कम मध्य
 स्तन विरलनमात्र स्थान आकर यदि एक अवहारकाण्ड प्रक्षेपशास्त्राकार प्राप्त होती है तो उपरिम
 विरलनमें कितनी प्रक्षेपशास्त्राकार प्राप्त होंगी इसप्रकार वैयक्तिक करके फलराशि एकसे
 इच्छराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो लम्भ आवे उसमें एक कम मध्यस्तन विरलन
 मात्र प्रमाणराशिका भाग देने पर संपूर्ण अवहारकाण्ड प्रक्षेपशास्त्राकार व्य आती है । इनको
 उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित अवहारकाण्ड होता है । इसीप्रकार सभ्य राशिही
 हाथमें आनकर समीकरण करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $4\frac{1}{2}$; फलराशि १ ; इच्छराशि ३ ;

$1 \times 1 = 1$; $1 + \frac{1}{2} = \frac{3}{2}$ प्रक्षेप अवहारकाण्ड ।

$1 + \frac{3}{2} = 2\frac{1}{2}$ इच्छित अवहारकाण्ड ।

अथवा, सामान्य अवहारकाण्डका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति अगमतरको समान अंड करके देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक
 भिष्पादाष्टि औपराशि प्राप्त होती है ।

मिच्छाशुद्धिद्वय सचमपुटविमिच्छाशुद्धिद्वयपमाणेन कस्तामो । स वहा सेडिविदियवग्ग
मूत्तमविदवगसेदीए यदि एवं सचमपुटविमिच्छाशुद्धिद्वयपमाण सम्मदि तो सामान्य-
वेरूपमिच्छाशुद्धिद्वयमि केचिय समामो चि फलेग इच्छ गुणिय पमाणेन भागे हिदे
विच्छेदमप्यधिगुणिविदिविदियवग्गमूत्तमेचाणि सचमपुटविमिच्छाशुद्धिद्वयलंकाणि आग
च्छति । एवं सामान्यवेरूपमवहारकालरूपाणमुपरि द्विदसामान्यवेरूपरासी पचेय पचेयं
सचमपुटविमिच्छाशुद्धिद्वयपमाणेन कायवो । पुणो तत्त एगरूपपरिदखंहेसु सचम
पुटविमिच्छाशुद्धिद्वयपमाणं एगलंठपमाण होदि । छट्ठपुटविमिच्छाशुद्धिद्वय सेडिविदिय
वग्गमूत्तमेचलंकाणि पेत्तून भवदि । पुणो पंचमपुटविमिच्छाशुद्धिद्वय सेडिविदियवग्ग
मूत्तादिचठवग्गमूत्ताणि गुणिवे तत्त अचियाणि रूपाणि तचियमेचलंकाणि पेत्तून इवदि ।

उदाहरण—१३१ ७२ १३१०७२ सा ना मि रा
१ १ १२७९८ वाट

अब एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्याद्वि द्रव्यको सातवीं पृथिवीके
मिथ्याद्वि द्रव्यके प्रमाणरूपसे करके बतलाते हैं । जैसे— जगज्जेवीके द्वितीय बर्गमूलका जग
ज्जेवीमें माग देने पर यदि एकबार सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्वि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है तो
सामान्य नारक मिथ्याद्वि द्रव्यमें कितना प्राप्त होमा इसप्रकार विचारित करके फलप्राप्तिसे
इच्छाप्रतिषेधे गुणित करके जो लब्ध भावे वसमें प्रमाणप्राप्तिका माग देने पर जगज्जेवीके
द्वितीय बर्गमूलको विच्छेदमूल्यसे गुणित करके जो लब्ध भावे बतने सातवीं पृथिवीके मिथ्या
द्वि द्रव्यके लंब होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणप्राप्ति $\frac{१५५३९}{१२८}$, फलप्राप्ति १, इच्छाप्रति १३१ ७२,

$$१३१०७२ \times १ = १३१ ७२, १३१०७२ - \frac{१५५३९}{१२८} = २५९ = १२८ \times २ लंब$$

इसीप्रकार सामान्य नारक मिथ्याद्वि अवहारकालकी संख्याके ऊपर स्थित प्रत्येक
सामान्य नारक मिथ्याद्वि जीवप्राप्तिको सातवीं पृथिवीके मिथ्याद्वि द्रव्यके प्रमाणरूपसे
कर केया चाहिये । परंतु वहां पर एक विरलनके प्रति प्राप्त लंबोंमें सातवीं पृथिवीके
मिथ्याद्वि द्रव्यका प्रमाण एक लंब प्रमाण होता है । छठी पृथिवीका मिथ्याद्वि द्रव्य
जगज्जेवीके तृतीय बर्गमूलमात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-लंबोंको डेकर होता है । पुनः पांचवीं
पृथिवीका मिथ्याद्वि द्रव्य जगज्जेवीके तीसरे बर्गमूलसे डेकर बार बर्गमूलोंके परस्पर गुण्य
करणे पर वहां कितना प्रमाण भावे लब्धमात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-लंबोंको डेकर होता है ।

पञ्चपुटविमिच्छाश्चिद्वर्षं सेदितदियवग्गमूलादिछम्बग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्ति
याणि रूपाणि तत्थियमेचत्तहाणि पेत्तूण इवदि । तदियपुटविमिच्छाश्चिद्वर्षं सेदितदिय
वग्गमूलादिछम्बग्गमूलाणि अज्जाण्य गुभिदे तत्थ अत्थियाणि क्कमाणि तत्थियमेचत्तहाणि
पेत्तूण पावदि । विदियपुटविमिच्छाश्चिद्वर्षं तदियवग्गमूलादिदसवग्गमूलाणि अज्जोण्य
म्मत्थाणि क्कदे तत्थ अत्थियाणि रूपाणि तत्थियमेचत्तहाणि पेत्तूण इवदि । पुणो एदाओ
छपुटविमिच्छाश्चिद्वर्षं सत्तागाओ विवत्तमज्जणीगुणिदसेदिविदियवग्गमूलादो सोपिदे
पढमपुटविमिच्छाश्चिद्वर्षं सत्तागा इवति । एष सामान्यअवहारकालमेचत्तामज्ज-
णेरइयमिच्छाश्चिद्वर्षं सत्तागाओ पुच पुच करिय दरिसेदम्माओ । पुणो एव
ठविय पढमपुटविमिच्छाश्चिद्वर्षं उप्पाइज्जदे । त जहा— पढमपुटविमिच्छाश्चिद्वर्षं सत्तागा

चापी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगभेजीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छह वर्गमूलोंके परस्पर
गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण उत्पन्न होये तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-लक्षकोंको लेकर
होता है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगभेजीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठ वर्ग
मूलोंके परस्पर गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण आये तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य
लक्षकोंको लेकर प्राप्त होता है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगभेजीके तीसरे वर्गमूलसे
लेकर दहा वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण आये तन्मात्र सातवीं
पृथिवीके द्रव्य-लक्षकोंको लेकर होता है ।

उदाहरण—सामान्य अवहारकालके एक बिच्छनके प्रति प्राप्त सामान्य राशि १३१०७२
के सातवीं पृथिवीके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा लंब करने पर २५९ लंब हुए । उनमेंसे एक लंब प्रमाण
सातवीं पृथिवीका द्रव्य है । दो लण्ड प्रमाण छठीका चार लण्ड प्रमाण पांचवीका ब्याड
लण्ड प्रमाण बीधीका १६ लण्ड प्रमाण तीसरीका बीर बत्तीस लण्ड प्रमाण दूसरीका द्रव्य
है । इसप्रकार ये लण्डशालाकार्य ९३ होती हैं । यदि वर्गमूलोंके अपेक्षित तारतम्यसे
लण्डशालाकार्य की जाय तो जो मूलमें कहा है तदनुसार लण्डशालाकार्य आबैगी ।

पुनः हम छह पृथिवीलंबन्धी मिथ्यादृष्टि लण्डशालाकार्यको विष्कम्बूची शुभित
अगभेजीके छिंताय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीलंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके
लक्षकोंका जितना प्रमाण हो उतनी लं शालाकार्य छप्प जाती है ।

उदाहरण— $120 \times 2 = 240$ $240 - 93 = 147$

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अथवा सामान्य अवहारकालशुभित सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें दण्डशालाकार्य पृथक् पृथक् निवास करके दिखाना चाहिये । पुनः
इसप्रकार लण्डशालाकार्य स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । वह
इसप्रकार है—प्रथम पृथिवीलंबन्धी मिथ्यादृष्टि लं शालाकार्यमेंसे यदि एक अवहारकालशालाका

चउत्त्यपुढविमिच्छाद्विदम्ब सेदितदियवग्गमूलादिछम्बग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ अचि
याणि रूवाणि तच्चियमेचख्खवाणि भेत्तूण इवदि । तदियपुढविमिच्छाद्विदम्ब सेदितदिय
वग्गमूलादिअद्वग्गमूलाणि अप्पोष्ण गुणिदे तत्थ जच्चियाणि रूवाणि तच्चियमेचख्खवाणि
भेत्तूण पावदि । विदियपुढविमिच्छाद्विदम्ब तदियवग्गमूलादिदसवग्गमूलाणि अप्पोष्ण
म्भत्याणि क्खे तत्थ अचियाणि रूवाणि तच्चियमेचख्खवाणि भेत्तूण इवदि । पुणो एद्वाओ
छपुढविमिच्छाद्विद्विदसलागाओ विवर्त्तमसूणीगुणिदसेदिविदियवग्गमूलाओ सोपिदे'
पढमपुढविमिच्छाद्विद्विदपमाणसलागा इवति । एव सामप्पअवहारकालमेचसामप्प-
णेरइयमिच्छाद्विदम्बि खंडसलागाओ पुष पुष करिय दरिसेदम्बाओ । पुणो एवं
ठविय पढमपुढविअवहारकालो उप्पाइज्जेदे । त जहा—पढमपुढविमिच्छाद्विद्विदसलागा

बीची पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगधेनीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छह वगमूलोंके परस्पर
गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण उत्पन्न होये तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-लक्षकोंको लेकर
होता है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगधेनीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठ वर्ग
मूलोंके परस्पर गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण भावे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य
लक्षकोंको लेकर प्राप्त होता है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अगधेनीके तीसरे वर्गमूलसे
लेकर दस वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर यहाँ जितना प्रमाण भावे तन्मात्र सातवीं
पृथिवीके द्रव्य-लक्षकोंको लेकर होता है ।

उदाहरण—सामान्य अवधारकाखके एक बिच्छनके प्रति प्राप्त सामान्य राशि १३१०७२
के सातवीं पृथिवीके द्रव्यप्रमाणनी अपेक्षा टीड करने पर २ १ कई हुए । उनमेंसे एक कई प्रमाण
सातवीं पृथिवीका द्रव्य है । दो अण्ड प्रमाण छठीका बार अण्ड प्रमाण पाँचवीका, अठ
अण्ड प्रमाण बीधीका १६ अण्ड प्रमाण तीसरीका और बत्तीस अण्ड प्रमाण दूसरीका द्रव्य
है । इसप्रकार ये अण्डशाखाकार १३ होती हैं । यदि वर्गमूलोंके अपेक्षित तारतम्यसे
अण्डशाखाकार की जाय तो जो मूलमें कहा है तदनुसार अण्डशाखाकार भावैगी ।

पुनः इन छह पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि अण्डशाखाकारोंका विच्छेदमसूची गुणित
अगधेनीके विज्ञाप वर्गमूलमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके
लक्ष्मोंना जितना प्रमाण हो उतनी लक्ष्म शाखाकारें उत्पन्न जाती हैं ।

उदाहरण— $120 \times 2 = 240$ $240 - 13 = 227$

इसीप्रकार सामान्य अवधारकाखप्रमाण अथवा सामान्य अवधारकालगुणित सामान्य
तारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें अण्डशाखाकार पृथक् पृथक् निष्काट करके निश्चयाना चाहिये । पुनः
इसप्रकार अण्डशाखाकार स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवधारकाख उत्तरदा करने हैं । यह
इसप्रकार है—प्रथम पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि अण्डशाखाकारोंसे यदि एक अवधारकालगुणा

हिं तो यदि एगा अवहारकाससत्तागा छम्दि तो सामान्यअवहारकासमेतसामान्यवेरूप
खंडसत्तागार्थ किं तमामो चि पमायेण इच्छाप ओषद्धिदाप पडमपुडविमिच्छाद्वि
अवहारकासो होदि । अहवा पडमपुडविमिच्छाद्विखंडसत्तागाहि सामान्यअवहारकास-
मोषद्विप ल्पेण छपुडविलंबसत्तागा गुणिदे पन्तेवअवहारकासो होदि । अहवा छ
छप्पद्विरासि कास्य छप्प पुडवीण सग-सगखंडसत्तागाहि गुणिदे सग-सगपन्तेवअव

मास होती है तो सामान्य अवहारकासमात्र नारक मिष्याद्वि अहवासाकास्योंकी कितनी
अहवासाकास्ये प्राप्त होगी इसप्रकार गैराधिक्य करके प्रमाणराशि प्रथम पृथिवीसंख्या की कइ
हासाकास्योंसे इच्छायाशि सामान्य मिष्याद्वि अवहारकासगुणित सामान्य नारक मिष्याद्वि
अहवासाकास्योंको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिष्याद्वि प्रत्यक्ष अवहारकास
होता है ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९३, फलराशि १, इच्छायाशि ३२७९८ × ९९३

$$\frac{३२७९८ \times ९९३}{१९३} = \frac{८३८९०८}{१९३} \text{ म पृ मि अ.}$$

अथवा प्रथम पृथिवीकी मिष्याद्वि अहवासाकास्योंसे सामान्य नारक मिष्याद्वि
अवहारकासको अपवर्तित करके जो छप्प भागे ठससे छह पृथिवियोंकी मिष्याद्वि अह-
वासाकास्योंके गुणित करने पर प्रत्यक्ष अवहारकास होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२७९८ + १९३ = \frac{३२७९८}{१९३}, \quad \frac{३२७९८}{१९३} \times ९९३ = \frac{२ ३४९८४}{१९३} \text{ म. अ. वा}$$

अथवा प्रथम पृथिवी मिष्याद्वि अहवासाकास्योंसे सामान्य नारक मिष्याद्वि
अवहारकासको अपवर्तित करके जो छप्प व्यापारसकी छह प्रतिपाशियां करके छह पृथिवियोंकी
अपनी अपनी हासाकास्योंसे गुणित करने पर अपना अपना प्रत्यक्ष अवहारकास होता है ।

उदाहरण— $\frac{३२७९८}{१९३} \times १ = \frac{३२७९८}{१९३}$	सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा
$\frac{३२७९८}{१९३} \times २ = \frac{६५५९६}{१९३}$	छठी पृथिवीकी अपेक्षा
$\frac{३२७९८}{१९३} \times ३ = \frac{९८३९४}{१९३}$	पांचवीं पृथिवीकी अपेक्षा
$\frac{३२७९८}{१९३} \times ४ = \frac{१३११८४}{१९३}$	चौथी पृथिवीकी अपेक्षा
$\frac{३२७९८}{१९३} \times ५ = \frac{१६४४२४}{१९३}$	तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा,
$\frac{३२७९८}{१९३} \times ६ = \frac{१९७६६४}{१९३}$	दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा म अवहारकास

हारकालो होदि । एवं विहाणेपुण्यपक्षेव अवहारकालं सामण्यवहारकालमिह पक्खिणे
 पढमपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो होदि । एदमत्थपढमवहारिय अण्यत्थ वि बहरासिपमा
 णेण महत्तरासीओ कालण पक्खेव अवहारकालो साधेयव्वो । एय मिरयगईए सदिही-
 ६५५१६ एदं जगसेडिपमाणं । एद वि जगपदरपमाण ४२९४९६७२९६ । सामण्यमेर
 इयमिच्छाशुद्धिविक्खंमएई 'एसा २ । सामण्यवहारकालो ३२७६८ । दम्ब १३१०७२ ।
 पक्खेव अवहारकालो ' ११३१ ' । पढमपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो ' ११३१ ' ।
 छद्मपमाण ९८८१६ । विदियपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो ४, दम्ब १६३८४ । तदिय
 पुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो (८, दम्ब ८१९२ । चउत्थपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो)
 १६, दम्ब ४०९६ । पचमपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो ३२, दम्ब २०४८ । छहम
 पुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो ६४, दम्ब १०२४ । सत्तमपुढविमिच्छाशुद्धिमवहारकालो

इस विधिसे जो प्रसेप अवहारकाळ उत्पन्न हो उसे सामान्य अवहारकाळमें मिला देने
 पर प्रथम पृथिवीक मिथ्यावृत्तियोंका अवहारकाळ होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३२७६८}{१९३} + \frac{१५३१}{१९३} + \frac{१३१०७२}{१९३} + \frac{२९५१४७}{१९३} + \frac{५२४२८८}{१९३} + \frac{१०४८५७२}{१९३}$$

$$= \frac{२०५४३८४}{१९३} \text{ प्र म का}$$

$$\frac{३२७६८}{१९३} + \frac{२९५१४७}{१९३} = \frac{८३८८३५}{१९३} \text{ प्र पु का अव}$$

इसप्रकार इस अर्थपरका व्यवहारण करके सम्पन्न भी बड़ी राशिके छोटी राशिके प्रमा
 नसे करके प्रसेप अवहारकाळ साध लेना चाहिये । अब यहाँ नरकगतिकी संक्षेप दी जाती है—

१-१-१६ जगजेणीका प्रमाण है । ४२९४९६७२९६ यह जगप्रतरका प्रमाण है । सामान्य
 नारक मिथ्यावृत्ति पिण्डमच्छीका प्रमाण २ है । सामान्य नारक मिथ्यावृत्ति अवहारकाळका
 प्रमाण ३२७६८ है । सामान्य नारक मिथ्यावृत्ति दम्ब १३१०७२ है । प्रसेप अवहारकाळ
 ' ११३१ ' है । प्रथम पृथिवीका मिथ्यावृत्ति दम्बसंबन्धी अवहारकाळ ' ११३१ ' है । प्रथम
 पृथिवीमें छप्परासि मिथ्यावृत्ति राशिका प्रमाण ९८८१६ है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यावृत्ति
 अवहारकाळ ४ और दम्ब १६३८४ है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यावृत्ति अवहारकाळ ८ और
 दम्ब ८१९२ है । चौथी पृथिवीका मिथ्यावृत्ति अवहारकाळ १६ और दम्ब ४०९६ है । पाँचवी
 पृथिवीका मिथ्यावृत्ति अवहारकाळ ३२ और दम्ब २०४८ है । छठी पृथिवीका मिथ्यावृत्ति
 अवहारकाळ ६४ और दम्ब १०२४ है । सातवीं पृथिवीका मिथ्यावृत्ति अवहारकाळ १२८ और

है तो यदि एका अवहारकालसलागा उभदि तो सामान्यअवहारकालमेससामान्यपेरुय खंडसलागा किं समानो पि पमाणेय इच्छाप ओवह्मिदाए पदमपुडविमिच्छाह्मि अवहारकालो होदि । अहवा पदमपुडविमिच्छाह्मिखंडसलागाहि सामान्यअवहारकाल-मोह्मिय रुदेण छपुडविखंडसलागा गुणिदे पक्खेअवहारकालो होदि । अहवा सई छप्पडिरासि कळय छन् पुडवीयं सग-सगखंडसलागाहि गुणिदे सग-सगपक्खेअवन

प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमात्र नारक मिष्याहदि खंडशाखाकाम्योकी कितनी दंडशाखाकाम्य प्राप्त होयी इसप्रकार तैराशिक करके प्रमाणपशि प्रथम पृथिवीखंडकी कण्ड शाखाकाम्योसे इच्छापशि सामान्य मिष्याहदि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिष्याहदि कण्डशाखाकाम्योको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिष्याहदि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—प्रमाणपशि १९३, फळपशि १, इच्छापशि ३२७९८ × २५३

$$\frac{३२७९८ \times २५३}{१९३} = \frac{८३८८०८}{१९३} \text{ म पृ मि अ}$$

अथवा प्रथम पृथिवीकी मिष्याहदि खंडशाखाकाम्योसे सामान्य नारक मिष्याहदि अवहारकालको अपवर्तित करके जो द्रव्य माने उससे छह पृथिवियोंकी मिष्याहदि खंड शाखाकाम्योके गुणित करने पर प्रसेप अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—३२७९८ ÷ १९३ = ३२७९८, $\frac{३२७९८}{१९३} \times ६ = \frac{२०१४३८४}{१९३}$ म. अ. का.

अथवा प्रथम पृथिवी मिष्याहदि खंडशाखाकाम्योसे सामान्य नारक मिष्याहदि अवहारकालको अपवर्तित करके जो द्रव्य व्यापकसकी छह प्रतिप्राप्ति करके छह पृथिवियोंकी अपनी अपनी शाखाकाम्योसे गुणित करने पर अपना अपना प्रसेप अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $\frac{३२७९८}{१९३} \times १ = \frac{३२७९८}{१९३}$ सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा

$\frac{३२७९८}{१९३} \times २ = \frac{६५५९६}{१९३}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा

$\frac{३२७९८}{१९३} \times ३ = \frac{९८३९४}{१९३}$ पाँचवीं पृथिवीकी अपेक्षा

$\frac{३२७९८}{१९३} \times ४ = \frac{१३१२४८}{१९३}$ चौथी पृथिवीकी अपेक्षा

$\frac{३२७९८}{१९३} \times ५ = \frac{१६४५४६}{१९३}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७९८}{१९३} \times ६ = \frac{१९७८४४}{१९३}$ दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा म अवहारकाल

'स्तेतेण सेढीए असस्तेज्जदिमागो । तिस्से सेढीए आयामो
असस्तेज्जाओ जायणकोढीओ पढमादियाण सेढिवग्गमूलाण
सस्तेज्जाणं अण्णोण्णव्मासेण' ॥ २२ ॥

एदस्स सुचस्स जत्था पुब्बद । उ अह्मा-उप्पकालपमाणमुच्चेहि विदिपादि
छप्पुडविमिच्छाद्विजीवाण पमाण परूविदमसंखेलमिदि । उ च असंखेज्जं पछ-सापरगुल
जगसेदि पदर-लोगादिभेदेण अणयवियप्पमिदि इम होदि चि ण जाणिअवे, तदो सेदि
जगपदरादितवरिमसत्ताणियचावणवृमिदमाह 'सेढीए असंखेज्जदिमागो' चि । सेढीण
असंखेज्जदिमागो चि परल सायर-कप्पंगुलादिभेएण अपेयवियप्पो चि वृहअंगुलादि
हेट्टिमवियप्पपडितेहट्ठं 'तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोढीओ' चि पुब्ब ।
सेढीए असंखेज्जदिमागो चि पुरिसछिगभिद्दसो तिस्से चि त्थीसिगभिद्दसो, तदा दोणं

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि
जीव जगभेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उस जगभेणीके असंख्यातवें भागकी जो
भेणी है उसका आयाम असंख्यात कोटि योजन है, जिस असंख्यात कोटि योजनका
प्रमाण, जगभेणीके संख्यात प्रथमादि धर्ममलोंके परस्पर गुणा करनेसे मिलना प्रमाण
उत्पन्न हो, वतना है ॥ २२ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है— प्रथमप्रमाण और कालप्रमाणके
प्रकरण करनेवाले सुत्तेश्वर द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अर्ध
ख्यात है ऐसा कह भाये हैं । परंतु यह असंख्यात परल सायर अंगुल, जगभेणी जगप्रतर
और लोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है इसलिये इनमेंसे यहाँ यह असंख्यात लिया गया
है यह कुछ नहीं जाना जाता है । अतः जगभेणी और जगप्रतर आदि उपरिम संख्याकर
निर्वाचन वर्णान् विचारण करनेके लिये द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी
जगभेणीके असंख्यातवें भाग हैं यह कहा । जगभेणीका असंख्यातवां भाग भी परल, सायर,
कप्प और अंगुल आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है इसलिये सुक्खंगुल आदि अयस्सम
निकस्सोअ लियेय करनेके लिये 'उस भेणीका आयाम असंख्यात कोटि योजन है यह कहा ।

सुंका— सेढीए असंखेज्जदिमागो इममें पुरिसिग निर्देस है और तिस्से यह

१ द्वितीयादिवा उत्तरवा मिथ्यादृष्टि क्षेत्रक्षेत्रमात्रप्रमाण । उ जगभेणीका अर्ध ऐसा वाचन
कोय । उ चि १ विदिवादिवात्तवच्चतिगुणजपदिरा ठेदि । वो ओ १५१ तदिअक्षेत्रज्ज ।
तेसाह जहीयं वह न । पचम २ १३

२ प्रतिगु जगमाओ इति वात । भिनु पुत्तः र्द्विजयो अण्माभेणीउ उच्यते ।

१९८, दम्भं ५१२' । विविधाविष्टपुद्गलिभिः छादित्विदम्भमूहो ३२२५६ ।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दब्ब पमाणेण केवढिया, असंखेजा ॥ २० ॥

एदस्स सुचस्स आदेसोपदब्बपरूवयसुचस्सव वक्खामं कायम्भं ।

असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण ॥ २१ ॥

एदस्स वि सुचस्स आदेसोपकालप्रमाणपरूवयसुचस्सेव वक्खामं कायम्भं । एदामो दम्भकालपरूवणाओ पूसाओ । कुदो ? सोदाराण भिण्णपाणुप्पायणाइ । दम्भ परूवणाओ कासपरूवणा सुदुमा, असंखजासखेजसखाविससिददब्बगिरूपणाओ । इदावि दम्भकालपरूवणाहिंओ सुदुमखेचपरूवणाइ सुत्तमाइ —

द्रव्य ५१२ है । दूसरी पृथिवीमे छेकर सातवीं पृथिवीतक छह पृथिवीयोके मिथ्याएहि द्रव्यका समूह ३२२ ५ है ।

दूसरी पृथिवीमे छेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्याएहि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात है ॥ २ ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्याएहि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याप्यत्वके समान इस सूत्रका व्याप्यत्व करना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीमे छेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्याएहि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्गिणियों और उत्सर्गिणियोंके द्वारा भगदत होते हैं ॥ २१ ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्याएहि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याप्यत्वके समान इस सूत्रका भी व्याप्यत्व करना चाहिये । यहाँ यह जो द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और काळप्रमाणकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवीयोकी मिथ्याएहि जीवराशिकी प्ररूपणा की है यह स्पष्ट है क्योंकि ओठाभीको इस प्ररूपणासे निर्भव नहीं हो सकता है । फिर भी द्रव्य प्ररूपणासे काळप्ररूपणा सूत्रम है क्योंकि काळप्ररूपणाके द्वारा असंख्यातासंख्यात संख्या विविध द्रव्यका प्ररूपण किया गया है । जब द्रव्य और कास इन दोनों ही प्ररूपणामेंसे सूत्रम शेषप्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

‘स्वेतेण सेढीए असस्वेज्जदिमागो । तिस्से सेढीए आयामो
असस्वेज्जाओ जोयणकोढीओ पढमादियाण सेढिवग्गमूलाण
सस्वेज्जाणं अण्णोण्णन्भासेण ॥ २२ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो वुचदे । त जहा—दशमकालपमाणसुचोदि विदियादि
छप्पुढविमिच्छाइडिजीवाण पमाण परुविदमसंखअमिदि । त च असस्वेज्जं पछ-सायंरगुल
अगपेहि-पहर-सोगादिभेदेण अणयविपप्पमिदि इमं होदि चि ण जाभिअदे, तदो सेढि
अगपदरादित्तरिमसत्तामियचावणहुमिदमाह ‘सेढीए असस्वेज्जदिमागो’ चि । सदीए
असस्वेज्जदिमागो चि पल्ल सायर रुप्पगुलादिमेएण अपेयविमप्यो चि मूअरगुलादि
हेडिमविपप्पपडिसेहं ‘तिस्से सेढीए आयामो असस्वेज्जाओ जोयणकोढीओ’ चि वुचं ।
सेढीए असस्वेज्जदिमागो चि पुरिसलिंगणिदेसो तिस्से चि त्पीलिंगणिदेसो, तदो दोण्हं

छेप्रकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्यक्ष पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि
जीव जगभेणीके असम्प्रातर्षे भागप्रमाण है । उस जगभेणीके असम्प्रातर्षे भागकी जो
भेणी है उसका मायाम असम्प्रात फानि योजन है, जिस असम्प्रात फोनि योजनका
प्रमाण, जगभेणीके सम्प्रात प्रथमादि वर्गमणों परस्पर गुणा करनेसे जितना प्रमाण
उत्पन्न हो, उतना है ॥ १९ ॥

यद्यपि इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह सम्प्रात है—प्रथमप्रमाण कीर कछप्रमाणके
प्रकरण करनेवाले सूत्रोप्राय द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण असं
प्रात है ऐसा कह आये है । परंतु यह असम्प्रात पश्य सागर मंगुल, जगभेणी जगप्रतर
कीर लोक भादिके मेहसे अनेक प्रकारका है इसलिये हमसे यहाँ यह असम्प्रात छिया गया
है यह कुछ नहीं जाना जाता है । अतः जगभेणी कीर जगप्रतर भादि उपरिम सचवाका
नियमन वर्ध्यान् विचारण करनेके लिये द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी
जगभेणीके असम्प्रातर्षे भाग है यह कहा । जगभेणीका असम्प्रातर्षा भाग भी पश्य सागर
कस्य कीर मंगुल भादिके मेहसे अनेक प्रकारका है इसलिये सूर्यमंगुल भादि मपस्तन
धिकरणोंका नियम करनेके लिये ‘उस भेणीका मायाम असम्प्रात फेदि योजन है यह कहा ।

शुंकर— सेढीए असस्वेज्जदिमागो इयमें पुत्तिग निर्देश है कीर तिस्से यह

१ द्वितीयादि सा सचवाका विचारण करनेका जेहमागमिथा । त चान्दमवमासः अर्ध रेखा यात्रन
कीम । त मि १ ८ निरिवादिवाहरमवकण्डिपिअपदिहा केह । मो जी १५१ सेदिअहंअजना
वैरागु जीवोत्तरं तद्व न । पचन २ १३

२ अतिउ कम्पानो इति पाठ । किउ पुता रीनावा अम्प्रातर्षा कम्पते ।

संलग्नं कदे विदियादिपुद्बिमिच्छाद्विद्वां दम्बपमानं होति चि कथं आनिजदे ? आदिरियपरंपरागय अबिरुद्धोपदेसादो आनिजदि ।

वत्स दस जडेव य मूढा छलिय दुग च' गिरपुत्त ।

एकदस गव सप्त य पण य चठकं य देवेत्तु ॥ ६७ ॥

एदासि अवहारकालपरुषयगाहासुधादो वा परिमम्बपमानादो वा आनिजदे ।

एदासि पुद्बनीय दम्बमाद्विष्णापावगुहं किंचि अरथपरुषणं कस्सामो । त बहा-विदियपुद्बिमिच्छाद्विद्वं तदियपुद्बिमिच्छाद्विद्वमादो ताव उप्पाद्विजदे । वत्स

इति द्रव्यक प्रमाण होता है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्य परंपरासे व्यये हुए अभिरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि इतने इतने बर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्याइति द्रव्यक प्रमाण होता है । अथवा—

गणकियोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य करनेके लिये अगभेणीय बारहवां बारहवां, अठारवां छठा तीसरा और दूसरा बर्गमूल अवहारकाय है और दोनोंमें सातकुमार आदि पांच कल्युपकोक द्रव्य करनेके लिये अगभेणीय व्याहवां बीसवां, सातवां पांचवां और बीसवां बर्गमूल अवहारकाय है ॥ ६७ ॥

इस अवहारकायोंके प्रकपन करनेवाले इस गाथा सुनछे जाना जाता है । अथवा परिकर्मके बचनसे जाना जाता है कि अगभेणीके प्रथमादि इतने इतने बर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य भ्रता है ।

विशेषार्थ—एक बर्गात्मक राशिके प्रथम भावि जितने बर्गमूल होंगे उन्मेंसे जिस बर्गमूलका अन्त बर्गात्मक राशिमें माग देनेसे जो सध्य व्ययगा वह जिस बर्गमूलका माग विधा उस बर्गमूलका प्रथमादि बर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी उतना ही होगा । बहाहरणार्थ १५३६ में उसके बीस बर्गमूल २ का माग देनेसे ३२७६८ व्यय भ्रते हैं । अब यदि प्रथमादि बार बर्गमूलोंका परस्पर गुणा किया तो भी ३२७६८ प्रमाण ही राशि उत्पन्न होगी । १५३६ का पहला बर्गमूल १५३ दूसरा १६ तीसरा ४ और बीस २ है । अब इनके परस्पर गुणा करनेसे $१५३ \times १६ \times ४ \times २ = ३२७६८$ ही भ्रते हैं । पर वरकोंमें जो अंकसंहरिकी भयेस। राशिमां वतकार हैं उनके निष्पन्नमें कल्पित बर्गमूल छिये गये हैं, इसलिये ही बहा यह नियम नहीं पडाया का सक्तता है ।

अब इस पृथिवियोंके द्रव्यके महत्त्वक ज्ञान करानेके लिये किंचित् सर्वमरूपका करते हैं । वह इत्तमकार है—उसमें भी पहले दूसरी पृथिवीके मिथ्याइति द्रव्यको तीसरी पृथिवीके

समाप्तमहियरम् परितः च सुचमिदमसंबद्धमिदि ! न एस दोसो, तिस्से सेडीए असरे
 च्छदिमागस्स सेडीए वा आयामो चि जेवं बचच्च, मिण्णाहियरण्णा बिसेसबस्स फ़ल
 मावादो च । किंतु सेडीए असंखज्झदिमागस्स आ सेडी पती तिस्से सेडीए आयामो चि
 बचच्चमिदि । असंखज्झाओ सोयनकोहीओ वि पदरंगुल धणगुलादिभेदण असंखज्झ-
 बियप्पाओ चि सेडिपढमवग्गमूलादिहेट्ठिमसखापाडिसेहं 'पढमादियामं सेडिवग्गमूलम्
 संखेज्झाण अण्णोण्णमासे' चि बुधं । तस्य सेडिपढमवग्गमूलमार्दि कात्तल हेट्ठा वारसं
 वग्गमूलानं अण्णोण्णमासो विदियपुढविजेइयमिच्छाइडिद्वयपमानं होदि । तं चेव
 आदि करिय हेट्ठा दसण्ह वग्गमूलानं अण्णोण्णमासे कदे तदियपुढविमिच्छाइडिद्वय
 पमानं हवदि । तं चेव आदि करिय अट्ठण्ह वग्गमूलानं संवग्गो षट्ठवपुढविमिच्छाइडि
 द्वयपमानं हवदि । छण्ह सेडिवग्गमूलानं संवग्गो पंचमपुढविद्वयं होदि । तिण्ह संवग्गो
 छट्ठमपुढविद्वयं होदि । दोण्ह संवग्गो सप्तमपुढविद्वयं होदि । एवियामं वग्गमूलानं

अग्रिष्ठम निर्देश है । अतः इन दोनों पक्षोंका समान अधिकरण नहीं है इसलिये वह पूर्णतः
 सूत्र असंबद्ध है ।

समाधान—यह कोई शोध नहीं है क्योंकि, यहां पर तिस्से सेडीए इस पक्ष
 केपीके अंतर्गतार्थें मागका आपाम मयवा जगमेजीका आपाम देसा नर्च नहीं करवा बाहिये
 क्योंकि, इससे मित्राधिकरणत्व प्राप्त हो जाता है और विशेषतः कोई सार्थकता नहीं रहती
 है । किंतु प्रकृतमें जगमेजीके अंतर्क्यातार्थें मागकी ओ भेजी मर्यात् पंक्ति है उस भेजीका
 आपाम देसा नर्च करना बाहिये । अंतर्क्यात केहि योजना भी प्रत्यंगुल और प्रनांगुल
 ध्वनिके भेदसे अंतर्क्यात प्रकटका है, इसलिये जगमेजीके प्रथम वर्गमूल, द्वितीय वर्गमूल
 आदि बीषघ्नी संख्याका प्रतिपेक्ष करनेके लिये सूत्रमें जगमेजीके प्रथमादि संख्यात वर्गमूलोंके
 परस्पर गुणा करनेसे इतना पद कहा है । उनमेंसे यहां जगमेजीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर
 बीषघ्ने बारह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे द्विती संख्या उत्पन्न हो इतना दूसरी पृथिवीके
 बारह मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण है । तथा जगमेजीके वही पहले वर्गमूलसे लेकर दश
 वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर तीसरी पृथिवीके बारह मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।
 तथा जगमेजीके वही प्रथम वर्गमूलसे लेकर आठ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर ओ
 राशि आवे इतना चौथी पृथिवीके बारह मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगमेजीके
 प्रथमादि छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे ओ राशि उत्पन्न हो इतना पांचवी पृथिवीके
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगमेजीके प्रथमादि तीन वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे
 ओ राशि उत्पन्न हो इतना छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा पहले और
 दूसरे वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे ओ राशि उत्पन्न हो इतना सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 द्रव्यका प्रमाण है ।

सूत्र—इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्या-

संपदि पढमपुढनिमिच्छाशङ्खिदम्बादो विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बस्स उप्पादम्ब
विहाय बुधदे-पढमपुढविमिच्छाममच्चिगुपिदसेत्तिवारसवग्गमूठेम्ब पढमपुढविमिच्छाशङ्खि
दम्बम्हि मागे हिदे विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बमागच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वच्छेदण
यमेपे पढमपुढविदम्बस्स अद्वच्छेदणम् कदे नि विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बमागच्छदि ।
सेटिवारसवग्गमूलस्स अद्वच्छेत्ताओ पढमपुढविमिच्छाममच्चिअद्वच्छेदणयसहिदाओ
विरालिय भिग करिय अप्थोप्थम्मत्यरासिणा पढमपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बम्हि मागे हिदे
विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बमागच्छदि । एदे तिणि मंगा पुण्डिछयण्णारसमंगेसु पक्खिसे
विदियपुढविमिच्छा अहारस मंगा इवति । एव सम्भासि पुढवीण पचेग पचेग अहारस मंगा
उप्पादम्बा । सध्वमगसमासो सद छम्भीसुधर' ।

मी जहां जितने बर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो राशि छाई गए हो उसी राशिसे
अर्धच्छेदोंका विरखन करके बीच उस विरखित राशिसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे
जो छम्ब भाये उससे उस उस पृथिवीके द्रव्यको गुणित करना चाहिये । अथवा, इसी क्रमसे
अर्धच्छेद छाकर उतनीवार उस उस पृथिवीके द्रव्यको द्विगुणित करना चाहिये । इसप्रकार
करनेसे दूसरी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

अब पहली पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यके उत्पन्न
करनेकी विधि पतलाते हैं—पहली पृथिवीकी मिथ्यादधि पिच्छमसूत्रीसे जगभेपीके बारहवें
बर्गमूलको गुणित करके जो छम्ब भाये उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यके माजित
करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्यादधि द्रव्य जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२} = \frac{१९३}{३}, ९ \div ८१९ = \frac{१९३}{३२} = १९३८४ \text{ दि पृ मि द्र}$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार भ्रममाण राशि प्रथम पृथिवीके
द्रव्यके अर्धच्छेद करने पर मी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

अथवा जगभेपीके बारहवें बर्गमूलके अर्धच्छेदोंमें पहली पृथिवीकी मिथ्यादधि
विष्कमसूत्रीके अर्धच्छेद मिखा देने पर जितना योग हो उतनी राशिका विरखन करके बीच
उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादधि
द्रव्यके माजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यका प्रमाण जाता है । इन तीन
मार्गोंको पूर्वाक्ष पन्त्रह मार्गोंमें मिखा देने पर दूसरी पृथिवीके अठारह भंग होते हैं । इसीप्रकार
सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अठारह भगाव भंग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन सब
भेगोंका जोड़ एकसी छम्बीस होता है ।

विशेषार्थ—अथमादि पृथिवियोंके द्रव्यकी अवेसा दूसरी पृथिवीका द्रव्य किसप्रकार

वगमूलेष्य एकारसवगममूलं गुणिय तदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बमिह गुभिदे विदियपुढवि
मिच्छाद्द्विदम्बं होदि । तस्म गुणगारस्स अद्ध्येदणयमेवचारं तदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बं
दुगुभिदे' तदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बं होदि । अहवा गुणगारद्ध्येदणयससागात्रो
विरलिय विग करिय अण्णोण्णमत्तरासिणा तदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बमिह गुभिदे
विदियपुढविमिच्छाद्द्विदम्बं हादि । अहा तीहि पयारेहि तदियपुढविदम्बादो विदिय
पुढविदम्बमुप्पाद्दं तथा सेसपठपुढविदम्बेहिंतो तीहि तीहि पयारेहि विदियपुढविदम्ब
मुप्पाद्दम्बं । एममुप्पादिदे पण्णारस मगा सहा मवति ।

मिथ्याद्यदि द्रव्यप्रमाणसे उत्पन्न करते हैं—अगधेजीके बारहवें वर्गमूलसे अगधेजीके ग्यारहवें
वर्गमूलको गुणित करके जो द्रव्य भाये उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यके गुणित
करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्याद्यदि द्रव्यका प्रमाण होता है । यद्यपि उक्त गुणकारके
(बारहवें वर्गमूलसे ग्यारहवें वर्गमूलको गुणा करनेसे जो द्रव्य भाया उसके) कितने
अर्धच्छेद हो उतनीबार तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यके द्विगुणित करने पर भी दूसरी
पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यका प्रमाण होता है । यद्यपि, उक्त गुणकारकी अर्धच्छेद शताका
भोका पिरछन करके बीर उतरो हो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि द्रव्यके गुणित कर देने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्याद्यदि
द्रव्यका प्रमाण होता है । यहाँ त्रिसप्तकार उक्त तीन प्रकारसे तीसरी पृथिवीके द्रव्यसे दूसरी
पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न किया है, उर्ध्वप्रकार नीची भावि होय बार पृथिवियोंके द्रव्यसे उक्त
तीन तीन प्रकारसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार उत्पन्न करने
पर पंद्रह भंग प्राप्त होते हैं ।

विशेषार्थ—नीची पृथिवीकी अयेसा दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय
अगधेजीके नीचे वर्गमूलसे बारहवें वगमूलतक बार वगमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि उत्पन्न हो उससे नीची पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता
है । पाँचवी पृथिवीकी अयेसा अगधेजीके छतवें वर्गमूलसे छह बारहवें वगमूलतक छह
वगमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पाँचवी पृथिवीके द्रव्यको गुणित
करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है । छठी पृथिवीकी अयेसा अगधेजीके बीये वर्गमूलसे
सेकर बारहवें वर्गमूलतक भी वगमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छठी
पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है । सातवी पृथिवीकी
अयेसा अगधेजीके तीसरे वर्गमूलसे सेकर बारहवें वर्गमूलतक दश वगमूलोंके परस्पर
गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सातवी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर
दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है । गुणकार राशिसे अर्धच्छेदोंका पिरछनादि करते समय

सपहि पडमपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बादो विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बस्स उप्पादण विहारण पुष्पदे-पडमपुढविमिच्छमध्विगुणितसेटिवारसवगमूलेण पडमपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बमिह माग हिदे विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बमागच्छदि । तस्स मागहारस्स अदृच्छेदण यमचे पडमपुढविदम्बस्स अदृच्छेदणए फदे वि विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बमागच्छदि । सेटिवारसवगमूलस्स अदृच्छेदणाआ पडमपुढविमिच्छमध्वीअदृच्छेदणयसहिदाओ विरासिय विग करिय अण्णोण्णमत्तरासिणा पडमपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बमिह मागे हिदे विदियपुढविमिच्छाशङ्खिदम्बमागच्छदि । एदे तिणि मगा पुष्पिल्लपम्मारसमंगेसु पविस्सचे विदियपुढविण अहारस मंगा इवति । एव सम्भासिं पुढवीम पचेग पचेग अहारस मंगा उप्पाणदम्बा । सव्वमगसमासो सदं छन्वीसुत्तर' ।

मी जहां जितने बगमूलोंका परस्पर गुणा करके जो राशि छार्ई गई हो उसी राशिसे अर्धच्छेदोंका पिरछन करके और उस निरक्षित राशिको शोक्ष करके परस्पर गुणा करनेसे जो जण्य भावे उससे इस इस पृथिवीके द्रव्यको गुणित करना चाहिये । अथवा इसी क्रमसे अर्धच्छेद छाकर उतनीबार उस उस पृथिवीके द्रव्यको द्विगुणित करना चाहिये । इसप्रकार करनेसे दूसरी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अब पहली पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यके उत्पन्न करनेकी विधि बतलाते हैं—पहली पृथिवीकी मिथ्यादधि पिष्कमसूचीसे जगधेवीके बारहवें बगमूलको गुणित करके जो जण्य भावे उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यके माजित करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्यादधि द्रव्य आता है ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}, ९८८१४ - \frac{१९३}{३२} = १९३८४ \text{ द्वि पृ मि द्र}$$

उक्त मागहारके जितने अर्धच्छेद हैं उतनीबार भग्यमान राशि प्रथम पृथिवीके द्रव्यके अर्धच्छेद करने पर मी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अथवा जगधेवीके बारहवें बगमूलके अर्धच्छेदोंमें पहली पृथिवीकी मिथ्यादधि पिष्कमसूचीके अर्धच्छेद मित्रा देने पर जितना योग हो उतनी राशिका पिरछन करके और उसे शोक्ष करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यके माजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादधि द्रव्यका प्रमाण आता है । इन तीन भगोंको पूर्वोक्त पत्रद्वय भगोंमें मित्रा देने पर दूसरी पृथिवीके अठारह भग होते हैं । इसीप्रकार सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अठारह अठारह भग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन सब भगोंका जोड़ एकही छन्वीस होता है ।

विशेषार्थ—प्रथमादि पृथिवियोंके द्रव्यकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य किसप्रकार

व्यता है इसका योहासा विशेषण मूत्रमें ही किया है। और वहां यह भी कहा है कि इक्षीमकर तृतीयानि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेसे कुछ १२१ मग होते हैं। उनमेंसे त्रिग १८ मगोंसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है उन १८ मगोंको १२१ मेंसे कम कर देने पर होय १०८ मग रहते हैं। इसलिये आये उन्हीं १८ मगोंका स्पष्टीकरण किया जाता है। द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें बर्गमूत्रसे तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा द्वादशवें बर्गमूत्रसे चौथी पृथिवीकी अपेक्षा चारवें बर्गमूत्रसे पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे बर्गमूत्रसे छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे बर्गमूत्रसे और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे बर्गमूत्रसे पहले नरककी मिथ्यादृष्टि बिम्बमच्छीके शुचित करने पर जो छप्प आये उससे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पुण्य पुण्य शुचित करने पर कमशा द्वितीयादि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य व्यता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी चौथी पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि बिम्बमच्छीसे पुण्य पुण्य द्वादशवें, छठे, तीसरे और दूसरे बर्गमूत्रको शुचित करके जो जो छप्प आये उस उससे पहली पृथिवीके द्रव्यके माजित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा कमशा तीसरी चौथी, पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य आते समय बारहवें और बारहवें बर्गमूत्रका चौथी पृथिवीका द्रव्य आते समय नौवेंसे छेकर बारहवें तक बार बर्गमूत्रोंका पांचवी पृथिवीका द्रव्य आते समय सातवेंसे छेकर बारहवें तक छह बर्गमूत्रोंका छठी पृथिवीका द्रव्य आते समय बीसवें छेकर बारहवें तक बी बर्गमूत्रोंका सातवीं पृथिवीका द्रव्य आते समय तीसरेसे छेकर बारहवें तक द्वादश बर्गमूत्रोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि आये उस उसका माग दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर कमशा दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी चौथी पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य व्यता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य आते समय नौवें और द्वादशवें बर्गमूत्रका पांचवी पृथिवीका द्रव्य आते समय सातवेंसे छेकर द्वादशवें तक बार बर्गमूत्रोंका छठीका द्रव्य आते समय बीसवेंसे छेकर द्वादशवें तक सात बर्गमूत्रोंका और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आते समय तीसरेसे छेकर द्वादशवें तक चार बर्गमूत्रोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके माजित करने पर कमशा चौथी पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य आते समय सातवें और आठवें बर्गमूत्रका छठी पृथिवीका द्रव्य आते समय बीसवेंसे छेकर चारवें तक पांच बर्गमूत्रोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य आते समय तीसरेसे छेकर आठवें तक छह बर्गमूत्रोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके माजित करने पर कमशा पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आते समय बीसवें पांचवें और छठे बर्गमूत्रका तथा सातवीं

पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरेसे लेकर छठे तक बार बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस वृत्तसे पाँचवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जाता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरे बर्गमूलसे छठी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर सातवीं पृथिवीका द्रव्य जाता है। चौथी, पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य साते समय चौथीकी अपेक्षा नीचे और दशवें बर्गमूलका पाँचवींकी अपेक्षा सातवेंसे लेकर दशवें तक बार बर्गमूलोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर दशवेंतक सात बर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर दशवेंतक आठ बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस वृत्तसे चौथी पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमशः चौथी पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है। पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य साते समय पाँचवींकी अपेक्षा सातवें और आठवें बर्गमूलोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर आठवें तक पाँच बर्गमूलोंका सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर आठवेंतक छह बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि ब्यबे उस वृत्तसे पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जाता है। छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पाँचवीं पृथिवीका द्रव्य साते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर छठेतक तीन बर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर छठेतक बार बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि ब्यबे उस वृत्तसे छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पाँचवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जाता है। तथा सातवीं पृथिवीके द्रव्यके तीसरे बर्गमूलसे गुणित करने पर सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जाता है। पहले जहाँ ऊपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो मागहार कह भाये हैं उस वृत्तके अर्धच्छेद करके तत्प्रमाण मास्य राशिके भाये भाये करने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य भा जाता है। अथवा अर्धच्छेदप्रमाण हो रज्जकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि भाये उसका मास्य राशिमें भाग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य भा जाता है। वहीप्रकार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य साते समय जहाँ जो गुणकार हो उसके अर्धच्छेदोंका अन्तर्भा प्रमाण हो वतनीबार गुण्य राशिके मूलें मूलें करत पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य भाता है। अथवा उक्त अर्धच्छेदप्रमाण हो रज्जकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य भा जाता है। इसप्रकार ये कुछ भाग १०८ हुए इनमें दूसरी पृथिवीके १८ भाग मिखा देने पर सातों पृथिवियोंके द्रव्य निश्चयनेके १२६ भाग होते हैं।

व्यता है, इसका थोटासा विवेचन मूलमें ही किया है। और वहाँ यह भी कहा है कि इसीप्रकार तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेसे कुल १२६ भग होते हैं। उनमेंसे जिन १८ भगोंसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य जाता है उन १८ भगोंको १२६ मेंसे कम कर देने पर तोय १८ भग रहते हैं। इसलिये ज्ञाने उन्हीं १०८ भगोंका स्वीकरण किया जाता है। द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें बर्गमूलसे तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा द्वावें बर्गमूलसे चौथी पृथिवीकी अपेक्षा आठवें बर्गमूलसे पाँचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे बर्गमूलसे छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे बर्गमूलसे और सातवी पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे बर्गमूलसे पहले नरककी मिथ्यादृष्टि विच्छेदमस्त्रीके गुणित करने पर जो सध्य भावे उससे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पुनः पुनः गुणित करने पर क्रमशः द्वितीयादि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य जाता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी चौथी पाँचवी छठी और सातवी पृथिवीका द्रव्य साते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विच्छेदमस्त्रीसे पुनः पुनः द्वावें आठवें छठे, तीसरे और दूसरे बर्गमूलको गुणित करके जो जो सध्य भावे उस उससे पहली पृथिवीके द्रव्यके मात्रित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा क्रमशः तीसरी चौथी पाँचवी छठी और सातवी पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य छठे समय म्पारहवें और बारहवें बर्गमूलका, चौथी पृथिवीका द्रव्य साते समय नौवेंसे छेकर बारहवें तक बार बर्गमूलोंका पाँचवी पृथिवीका द्रव्य साते समय सातवेंसे छेकर बारहवें तक छह बर्गमूलोंका, छठी पृथिवीका द्रव्य साते समय बीघेसे छेकर बारहवें तक नौ बर्गमूलोंका सातवी पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरेसे छेकर बारहवें तक द्वा बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो दृष्टि भावे उस उसका भाग दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर क्रमशः दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी चौथी पाँचवी छठी और सातवी पृथिवीका द्रव्य व्यता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य साते समय नौवें और द्वावें बर्गमूलका पाँचवी पृथिवीका द्रव्य साते समय सातवेंसे छेकर द्वावें तक बार बर्गमूलोंका छठीका द्रव्य साते समय बीघेसे छेकर द्वावें तक सात बर्गमूलोंका और सातवी पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरेसे छेकर द्वावें तक आठ बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो दृष्टि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके मात्रित करने पर क्रमशः चौथी पाँचवी, छठी और सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जाता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पाँचवी पृथिवीका द्रव्य साते समय सातवें और आठवें बर्गमूलका छठी पृथिवीका द्रव्य साते समय बीघेसे छेकर आठवें तक पाँच बर्गमूलोंका सातवी पृथिवीका द्रव्य साते समय तीसरेसे छेकर आठवें तक छह बर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो दृष्टि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके मात्रित करने पर क्रमशः पाँचवी छठी और सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पाँचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य साते समय बीघे, पाँचवें और छठे बर्गमूलका तथा सातवी

पृथिवीका द्रव्य छाते समय तीसरेसे छेकर छेड़ तक बार बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे पाँचवीं पृथिवीके द्रव्यके भागित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य छाते समय तीसरे बर्गमूर्खसे छठी पृथिवीके द्रव्यके भागित करने पर सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। चौथी पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य छाते समय चौथीकी अपेक्षा चौथे और दशवें बर्गमूर्खका पाँचवींकी अपेक्षा सातवेंसे छेकर दशवें तक बार बर्गमूर्खोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे छेकर दशवेंतक सात बर्गमूर्खोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे छेकर दशवेंतक आठ बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पाँचवीं छठी और सातवींके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमशः चौथी पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तात्परी पृथिवीका द्रव्य आता है। पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य छाते समय पाँचवींकी अपेक्षा सातवें और आठवें बर्गमूर्खोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे छेकर आठवें तक पाँच बर्गमूर्खोंका सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे छेकर आठवेंतक छह बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आये उस उससे पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः पाँचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके मिष्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पाँचवीं पृथिवीका द्रव्य छाते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे छेकर छेड़तक तीन बर्गमूर्खोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे छेकर छेड़तक बार बर्गमूर्खोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आये उस उससे छठी और सातवीं पृथिवीके मिष्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पाँचवीं पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य आता है। तथा सातवीं पृथिवीके द्रव्यको तीसरे बर्गमूर्खसे गुणित करने पर सातवीं पृथिवीके मिष्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिष्यादृष्टि द्रव्य आता है। पहले जहाँ ऊपरकी पृथिवियोंमें नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो भागद्वार कह आये हैं उस उसके अन्धच्छेद करके तत्प्रमाण भाग्य राशिके आये आये करने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य भा जाता है। अथवा अन्धच्छेदप्रमाण दो रत्नहर बनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आये उसका भाग्य राशिमें भाग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य भा जाता है। उदाहरणार्थ नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य छाते समय जहाँ जो गुणकार हो उसके अन्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनीवार गुण्य राशिके बून बून करने पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है। अथवा उक्त अन्धच्छेदप्रमाण दो रत्नहर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य भा जाता है। इसप्रकार ये कुछ संग १०८ हुए इनमें वृक्षी पृथिवीके १८ संग निजा देने पर खानों पृथिवियोंके द्रव्य निजा देनेके १२६ संग होते हैं।

सासणसम्माइठिप्पहुडि जाव असजदसम्माइठि ति ओव ॥२३॥

पलिदोषमस्त असंखेज्जदिमागच पडि विसेसामावादा विदियादिपुढविगुणपडि
पण्णाय पक्खणा ओपमिदि बुत्ता इत्थद्वियसिस्सापुग्गाहट्ठ । पन्धवद्वियपण पुण अ
संविन्जमागे विससो अरिय चेव, यच्चहा एगपुढविगुणपडिविगुणाण सत्तपमामाचरणा
च दुप्पडिसेज्जा पसन्ने । त गुणपडिविगुणपडिविसेस पुम्माइरियावमविक्खोषमेव
आइरियपरंपरागदेण भवइस्सामो । त अहा— पुम्भसुप्पाइयसामण्णणरइयअसजदसम्माइठि
अवहारकसमावलिपाण असंखेज्जदिमागच मागे हिदे छंद तम्हि चेव पभित्ते पदम

सासादनसम्पगदठि गुणस्थानम छेकर असयतसम्पगदठि गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंमेंसे प्रत्येक पृथिवीके नारकी जीव सामान्य
प्ररूपजाके समान पत्थोपमके असंख्यातवें माग हैं ॥ २३ ॥

विशेषार्थ— इस सूत्रमें द्रव्यपमापेय केवडिया अर्थात् द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं? ऐसा
पृच्छमान्य नहीं पाया जाता जिससे सूत्रतत्त्वा २ की सीधमें जो उक्त पृच्छाबान्यका फल
स्वकर्तृत्वनिष्कर्षपूर्वक प्राप्तकर्तृत्वप्रतिपादन बतलाया है उसकी वहाँ धारासा रह जाती
है। तथापि सूत्र सर्वत्र संक्षेपाद्य हुआ करते हैं और उनमें यह सावधान विषय है कि 'सुवेपरसे
पूर्व सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र' अर्थात् जो अपेक्षित पद प्रस्तुत सूत्रमें न पाया जाय उसकी
स्थान सूत्रोंसे अनुवृत्ति सर्वत्र कर लेना चाहिये। इसप्रकार प्रस्तुत सूत्रमें भी उक्त पृच्छ-
परकी अनुवृत्ति हो जाती है। मागे भी अहाँ वहाँ उक्त पद न पाया जाय वहाँ वही विषयका
अधिकार समझ लेना चाहिये।

द्वितीयादि गुणस्थानोंकी सामान्य संख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंमें गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या ये राशिर्पा पत्थोपमके असंख्यातवें मागत्वके प्रति समान हैं, इसविषे
द्रव्यार्थिक बयकी अपेक्षा रत्नमेवादे शिष्योंक अनुग्रहके विषे द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या सामान्य प्ररूपजाके समान है ऐसा कहा। परोपार्थिक बयका
अवर्तन करने पर तो गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य नारकी जीवोंकी संख्या और द्वितीयादि
पृथिवियोंके गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी संख्या इन दोनोंमें विशेष है ही। यदि ऐसा नहीं माना
जाय तो एक पृथिवीके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या और सार्वों पृथिवियोंके गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या एकही हो जायगी जिसके विषेयके कुछर दोनेका प्रसंग आ जाता है।
अब गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके इस विशेषको आशय-परंपरासे माये हुए पूर्वोक्तार्थके अवि-
पक्ष उपदेशके अनुसार बतलाते हैं। यह इसप्रकार है—

सामान्य नारक असंखतसम्पगदठियोंका अवहारकाज जो पहले उत्पन्न करने बतला
आये हैं, उसे आबर्तोंके असंख्यातवें मागसे याजित करने पर जो धर्म आये उसे वही नारक
सामान्य असंखतसम्पगदठियोंके अवहारकाजमें ही मिला देने पर प्रथम पृथिवीके असंखत

पुदविअसज्जदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेजदिमाणेण गुणिदे पढमपुदविसम्माभिच्छाडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूहेहि गुणिदे सासण सम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेजदिमाणेण गुणिदे विदियाए असंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेजदिमाणेण गुणिदे सम्माभिच्छाडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूहेहि गुणिदे सासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । एव तदियादि जाव सचमपुदवि त्रिअवहारकाला परिपाठीए उप्पाएदण्ण । एवेहि अवहारकालहि पलिदोमस्सुअरि खंदिदादीण ओपमणा ।

मागामागे दम्बपमाणविसयपिण्णयन्नमण्डं पचइस्सामो । सम्बजीवरासिस्स अण्णत्तेसु मागेसु कदेसु तत्थ बहुमागा विरिक्खा होति । सेसस्स अण्णत्तेसु मागेसु कदेसु तत्थ बहुमागा सिद्धा होति । सेसस्स असंखेज्जेसु मागेसु कदेसु तत्थ बहुमागा देवा होति । सेसस्स असंखेज्जेसु मागेसु कदेसु तत्थ बहुमागा भेरइया होति । सेसगमागो मज्झसा इवति । पुणो भेरइपरासिस्स असंखेज्जेसु खंहेसु कदेसु तत्थ बहुमागा पढमपुदवि

सम्पगइदि जीर्णोका अवहारकास होता है । उस पहली पृथिवीके असंयतसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकासको आबलीके असंयतातर्हे मागसे गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके सम्पगिम्य्याइदिसंबन्धी जीर्णोका अवहारकास होता है । उस पहली पृथिवीके सम्पगिम्य्याइदिसंबन्धी अवहारकासको संयतातसे गुणित करने पर प्रथम नरकका सासाइनसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकास होता है । पहले नरकके सासाइनसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकासको आबलीके असंयतातर्हे मागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका असंयतसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकास होता है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकासको आबलीके असंयतातर्हे मागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका सम्पगिम्य्याइदिसंबन्धी अवहारकास होता है । उस दूसरी पृथिवीके सम्पगिम्य्याइदिसंबन्धी अवहारकासको संयतातसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके सासा इनसम्पगइदिसंबन्धी अवहारकास होता है । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक अवहारकास परिपाटी-अन्तसे उत्पन्न कर केना चाहिये । इन अवहारकासोंके द्वारा पस्योपमके ऊपर लंकित आदिकका कथन सामान्य प्ररूपणाके समान है ।

अब मध्यप्रमाणविषयक निर्वयअज्ञ ज्ञान करनेके द्विय भागामागको बतलाने हैं—
संपूर्ण जीवराशिसे अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग तिर्यब होते हैं । शेष एक भागके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सिद्ध होते हैं । शेष एक भागके असंयतात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण देव होते हैं । शेष एक भागके असंयतात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण नारकी होते हैं । शेष एक भागप्रमाण मनुष्य होते हैं । पुनः नारक जीवराशिके असंयतात लंक करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्याइदि जीव

मिच्छाद्दी ह्येति । सेसस्व असंख्येभ्यो खंडेभ्यो कदेसु तस्य बहुमाणा विविधपुनरि-
मिच्छाद्दी ह्येति । एव तदिय-चउरय-यचम-छट्ट-सत्तमपुनरिषी अत्रामोदेष माममापो
कायभ्यो । पुनो सेसस्व असंख्येभ्यो भागसु कदेसु तस्य बहुमाणा पदमाए पुनरिषीए
असंख्यदसम्माहट्ठिपो ह्येति । सेसस्व असंख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा पदम-
पुनरिविसम्माहट्ठिपो ह्येति । सेसस्व संख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा
पदमपुनरिविसासणसम्माहट्ठिपो ह्येति । सेसस्व असंख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा
विदिपपुनरिविसासणसंख्यदसम्माहट्ठिपो ह्येति । सेसस्व असंख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा
तस्यतणसम्माहट्ठिपो ह्येति । सेसस्व संख्येभ्यो भागेसु कदेसु तस्य बहुमाणा
तस्यतणसासणसम्माहट्ठिपो ह्येति । एवं तदियादि आब सत्तमपुनरिषी चि गुणपडिबन्नामं
मागामागो कायभ्यो । एव मागामागो समचो ।

अप्याबहुग विविद्धं, सरपार्णं पररपार्णं सत्त्वपररपार्णं चदि । तस्य सत्त्वाबन्ना
बहुग बुधदे । सम्पत्तोबा सामन्त्येरेपमिच्छाहट्ठिबिक्खमसूची । अबहारकासो असंख्य-
गुणो । के गुणगारो ? अबहारकासस्व असंख्यदिमागो । के पडिमागो ? सगविकसंम

होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वृत्तरी पृथिवीके
मिथ्याहटि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी चौथी पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी
जीवपक्षिका सावधानीसे भागामाग कर केना चाहिये । पुनः सातवीं पृथिवीके मिथ्याहटिपोके
मन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पड़ती
पृथिवीके असंख्यतसम्पत्ति जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण पड़ती पृथिवीके सम्पत्तिमिथ्याहटि जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पड़ती पृथिवीके सासाहससम्पत्ति जीव होते हैं । शेष एक
भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वृत्तरी पृथिवीके असंख्यतसम्पत्ति
जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वृत्तरी
पृथिवीके सम्पत्तिमिथ्याहटि जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण वृत्तरी पृथिवीके सासाहससम्पत्ति जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीके
केकर सातवीं पृथिवीतक शुचक्यायप्रतिपत्ति जीवोंका भागामाग करना चाहिये ।

इसप्रकार भागामाग समाप्त हुआ ।

अप्यबहुत्वं तीन प्रकारका है, स्वस्यान अप्यबहुत्वं परस्यान अप्यबहुत्वं और सर्व-
परस्यान अप्यबहुत्वं । उनमेंसे पहले स्वस्यान अप्यबहुत्वंका कथन करते हैं— सामान्य
नारक मिथ्याहटिबोधी विष्कंमसूची सत्ते स्तोका है । सामान्य नारक मिथ्या-
हटिबोधी अबहारकास सामान्य नारक मिथ्याहटि विष्कंमसूचीसे असंख्यातगुणा है । शुचकर

पृथी । अहवा सेटीए असंखेजदिमागो, असंखेज्जाभि सेडिपडमवगमूलाणि । को पडिमागो ? सगविकुसंमसूचीवगो घमगुलपडमवगमूल वा । सेटी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकुसंमसूची । दम्पमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? विकुसंमसूची । पदरमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखज्जगुणो । को गुणगारो ? सेटी । सासपसम्माइडि-सम्मामिच्छाइडि-असंखदसम्माइडि-मोघसरपाणमगो । पर्थ चेव पडमाए पुडवीए । विदियाए पुडवीए सम्पत्थोपो मिच्छाइडिअवहारकालो । तस्सेव दम्पम संखेज्जगुण । को गुणगारो ? सगदम्पस्स असंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? सग अवहारकालो । अहवा सेटीए असंखज्जदिमागो असंखज्जाभि सेडिपडमवगमूलाणि । को पडिमागो ? सगअवहारकालवगो सेडिपकारसवगमूल वा । सेटी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेडिपकारसवगमूलं । पदरो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेटी । लोगो

क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातर्था भाग है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंमसूची प्रतिभाग है । अथवा जगभेणीका असंख्यातर्था भाग गुणकार है जो जगभेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंमसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा भर्मागुलका प्रथम वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारक मिष्यादृष्टि अवहारकालसे जगभेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंमसूची गुणकार है । जगभेणीसे सामान्य नारक मिष्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंमसूची गुणकार है । सामान्य नारक मिष्यादृष्टि द्रव्यसे जगभेणी असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सामान्य नारक मिष्यादृष्टि अवहारकाल गुणकार है । जगभेणीसे धनछोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेणी गुणकार है । सामान्य नारक सात्तादनसम्पददृष्टि, सम्प मिष्यादृष्टि और असंपदसम्पददृष्टि जीवोंका स्वस्यान अत्यवहुत्वं सामान्य स्वस्यान अत्यवहुत्वंके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पृथ्वी पृथिवीमें स्वस्यान अत्यवहुत्वं है । वृक्षी पृथिवीमें मिष्यादृष्टि अवहारकाल सबसे लोक है । वृक्षी पृथिवीके मिष्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातर्था भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा जगभेणीका असंख्यातर्था भाग गुणकार है जो जगभेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकाल (वाच्यं वर्गमूलका) वर्ग अथवा जगभेणीका व्यापक वर्गमूल प्रतिभाग है । वृक्षी पृथिवीके मिष्यादृष्टि द्रव्यसे जगभेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगभेणीका नारक वर्गमूल गुणकार है । जगभेणीसे जगभेणी असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेणी गुणकार है । जगभेणीसे धनछोक असंख्यातगुणा है । गुणकार

मिथ्याह्नी ह्येति । सेसस्त असंख्येभ्यो लब्धेभ्यु कदेभ्यु तस्य बहुभागा विविधपुनरिति मिथ्याह्नी ह्येति । एवं तदिय-वत्त्व-यत्नम-छद्म-सत्तमपुनरिति अप्यामोहेय मागमागो कायभ्यो । पुनो सेसस्त असंख्येभ्यो मागसु कदेभ्यु तस्य बहुभागा पदमाप पुनरीप असंख्यसम्माह्नीभ्यो ह्येति । सेसस्त असंख्येभ्यो मागेषु कदेभ्यु तस्य बहुभागा पदम पुनरितिसम्माह्नीभ्यो ह्येति । सेसस्त संख्येभ्यो मागेषु कदेभ्यु तस्य बहुभागा पदमपुनरितिसत्तमसम्माह्नीभ्यो ह्येति । सेसस्त असंख्येभ्यो मागेषु कदेभ्यु तस्य बहुभागा विविधपुनरितिसत्तमसम्माह्नीभ्यो ह्येति । सेसस्त असंख्येभ्यो मागेषु कदेभ्यु तस्य बहुलंदा तत्त्वतगसम्माह्नीभ्यो ह्येति । सेसस्त संख्येभ्यो मागेषु कदेभ्यु तस्य बहुमात्र तत्त्वतगसत्तमसम्माह्नीभ्यो ह्येति । एवं तदियादि जाय सत्तमपुनरिति चि गुणपदिवन्मात्र मागामागो कायभ्यो । एवं मागामागो समग्रो ।

अप्याह्नुर्म विविहं, सरथाय परत्वाय सम्प्रपरत्वाय चेति । तस्य सत्तावन्ना- बहुगं बुधदे । सम्प्रत्तोवा सामान्येतर्यमिच्छाह्नीविस्मयमह्वी । अवहारकास्ते असंख्य- गुणो । को गुणगारो ? अवहारकस्तस्य असंख्यदिमागो । को पदमागो ? सगविस्मय

होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्याह्नी जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी चौथी पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीके जीवराशिक्र सावधानीसे मर्यादाय कर लेना चाहिये । पुनः सातवीं पृथिवीके मिथ्याह्नीके समन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके असंख्यसम्प्रदाय जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सम्यमिच्छाह्नी जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके साक्षात्सम्प्रदाय जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके असंख्यसम्प्रदाय जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सम्यमिच्छाह्नी जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके साक्षात्सम्प्रदाय जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीके लेकर सातवीं पृथिवीतक गुणज्ञानप्रतिपन्न जीवोंका मागामाग करना चाहिये ।

इसप्रकार मागामाग समाप्त हुय ।

अन्यबहुत्व तीन प्रकारका है स्वस्थान अन्यबहुत्व परस्थान अन्यबहुत्व और तर्क परस्थान अन्यबहुत्व । उनमेंसे पहले स्वस्थान अन्यबहुत्वका कथन करते हैं— सामान्य नारक मिथ्याह्नीकी विन्ध्यमह्वी तबसे श्लोक है । सामान्य नारक मिथ्याह्नीका अवहारकक सामान्य नारक मिथ्याह्नी विन्ध्यमह्वीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार

एषी । अहया सेदीण अर्सेखेज्जदिभागो, अर्सेखेज्जगणि सेदिपदमवगमूलाणि । को पडिभागो ? सगविक्खमएषीयग्गो पणगुलपदमवगमूल वा । सेदी अर्सेखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खमएषी । दम्भमर्सेखेज्जगुण । को गुणगारो ? विक्खमएषी । पदरमर्सेखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकाला । छगो अर्सेखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । सासणसम्माइद्धि-सम्भामिच्छाइद्धि असज्जदसम्माइद्धीणमोपसत्तणमंगो । एव पेव पदमाण पुदवीण । निदियाण पुदवीण सम्भरथोवा मिच्छाइद्धिअवहारकालो । तस्मैव दम्भमर्सेखेज्जगुण । को गुणगारो ? सगदम्भम अर्सेखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग अवहारकाला । अहया सेदीण असगज्जदिभागो अर्सेखेज्जगणि सेदिपदमवगमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालमग्गो सेदिण्हारसवगमूल वा । सेदी अर्सेखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेदियारसवगमूल । पदरो अर्सेखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । छगो

कया हे ? अपने अवहारकालस्य अर्सेख्यातर्षा भाग हे । प्रतिभाग कया हे ? अपनी विष्केमएषी प्रतिभाग हे । अथवा अगधेणीका अर्सेख्यातर्षा भाग गुणकार हे जो अगधेणीके अर्सेख्यात प्रथम पगमूसप्रमाण हे । प्रतिभाग कया हे ? अपनी विष्केमएषीका चर्ग प्रतिभाग हे । अथवा, पणागुलका प्रथम पगमूस प्रतिभाग हे । सामान्य नारक मिध्यादहि अवहारकालसे अगधेणी अर्सेख्यातगुणी हे । गुणकार कया हे ? अपनी विष्केमएषी गुणकार हे । अगधेणीसे सामान्य नारक मिध्यादहि द्रव्य अर्सेख्यातगुणा हे । गुणकार कया हे ? अपनी विष्केमएषी गुणकार हे । सामान्य नारक मिध्यादहि द्रव्यसे अगमतर अर्सेख्यातगुणा हे । गुणकार कया हे ? सामान्य नारक मिध्यादहि अवहारकाल गुणकार हे । अगमतरसे घनसोक अर्सेख्यातगुणा हे । गुणकार कया हे ? अगधेणी गुणकार हे । सामान्य नारक सासादनसम्भरथि, सभ्य मिध्यादहि और अर्गवतसम्भरथि जीवोंका स्वस्थान अव्यक्तद्वय सामान्य स्वस्थान अव्यक्तद्वयके समान जानना चाहिये । इतीप्रकार पदमी पृथिवीमें स्वस्थान अव्यक्तद्वय हे । नृगरी पृथिवीमें मिध्यादहि अवहारकाल राखते ग्ताक हे । नृगरी पृथिवीके मिध्यादहि जीवोंका प्रमाण अवहारकालसे अर्सेख्यातगुणा हे । गुणकार कया हे ? अपने द्रव्यका अर्सेख्यातर्षा भाग गुणकार हे । प्रतिभाग कया हे ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग हे । अथवा अगधेणीका अर्सेख्यातर्षा भाग गुणकार हे जो अगधेणीका अर्सेख्यात प्रथम चर्गमूसप्रमाण हे । प्रतिभाग कया हे ? अपने अवहारकालका (बारहसे पगमूसका) चर्ग अथवा अगधेणीका व्यावृद्धा चर्गमूल प्रतिभाग हे । नृगरी पृथिवीका मिध्यादहि द्रव्यसे अगधेणी अर्सेख्यातगुणी हे । गुणकार कया हे ? अगधेणीका बारहवां पगमूस गुणकार हे । अगधेणीसे अगमतर अर्सेख्यातगुणा हे । गुणकार कया हे ? अगधेणी गुणकार हे । अगमतरसे घनसोक अर्सेख्यातगुणा हे । गुणकार

असंख्यजगुणो । को गुणगारो ? सेही । सासजसम्माइडि-सम्मामिन्नाइडि-असंखदसम्मा
इडिजमोपसत्तावमगो । तदियादि आब सचमपुडवि चि एवं वेव सत्ताणप्पावहुम
वत्तम् । जवरि अप्पप्पवो अबहारकाळे जानिळ्ळ माणिदम् ।

परत्थाणप्पावहुम वत्तइस्सामो । सम्पत्थोवो असंखदसम्माइडिजवरहारकाळो । एव
आब पत्तिदोवमो चि जेदम् । पत्तिदोवमाहो उवरि सामण्णजेइयमिच्छाइडिबिक्खुमए
असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंसमयूरए असंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ?
पत्तिदोवम । अइवा अविज्जगुलसस असंखेज्जदिमामो असंखेज्जामि अविज्जगुलपदमवम
मूलाणि । को पडिमागो ? पत्तिदोवमगुणिदध्दमगुलविदियवमामूल । उवरि सत्तावममो ।
एवं वेव पदमाए पुडवीए । मिदिपाए पुडवीए सम्भरवोवो असंखदसम्माइडिजवर
काळो । एवं आब पत्तिदोवमो चि जेदम् । तदो मिच्छाइडिअवहारकाळो असंखेज्जगुणो ।
को गुणगारो ? वारसवमामूलस असंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? पत्तिदोवम । उवरि
सत्तावममो । एवं तदियादि आब सचमपुडवि चि परत्ताणप्पावहुम वत्तम् । जवरि

क्या है ? जगमेणी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके सासज्जसम्माइडि, सम्मामिन्नाइडि और
असंखदसम्माइडिओंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।
तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन इसीप्रकार करना
चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अपने अपने
ज्वहारकाळको जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

अब परस्मान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— असंखदसम्माइडि ज्वहारकाळ सबसे
छोटा है । इससे सम्मामिन्नाइडिका, इससे सासज्जसम्माइडिका ज्वहारकाळ इसप्रकार
अल्पबहुत्व कहते हुए पस्वोपम तक के जाना चाहिये । पस्वोपमके ऊपर सामान्य गारक
मिध्याइडि विक्खंसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विक्खंसूचीका अठत्पातवां
भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पस्वोपम प्रतिभाग है । जयथा सूर्यगुणका असंख्यातवां
भाग गुणकार है जो सूर्यगुणके असंख्यात प्रथम वर्गमूखप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ?
पस्वोपमसे सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूखके गुणित करने पर जो लब्ध आवे बतना प्रतिभाग
है । इस विक्खंसूचीके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना
चाहिये । इसीप्रकार पड़वी पृथिवीमें परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें असंखदसम्माइडिका ज्वहारकाळ सबसे स्तोक है । इसीप्रकार
बत्तवेत्तर अल्पबहुत्व कहते हुए पस्वोपमतक के जाना चाहिये । पस्वोपमसे दूसरी पृथिवीके
मिध्याइडिओंका ज्वहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेणीके गारक
वर्गमूखका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पस्वोपम प्रतिभाग है । इसके
ऊपर अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी
पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इतना

अप्यप्यथो अग्रहारकाले आभिळण पचम्भ ।

सम्भपरत्वागप्याबहुगं पचइस्सामो । सम्भत्योरो पढमपुढविअसंजदमम्माइहि
अग्रहारकालो । सम्मामिच्छाइहिअग्रहारकालो असंखज्जगुणो । को गुणगारो ? आबलि
याए असंखज्जदिमागो । सासणसम्माइहिअग्रहारकालो संखज्जगुणो । को गुणगारो ?
संखेज्जा समया । तदो विदियपुढविअसंजदसम्माइहिअग्रहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? आबलिपाए असंखेज्जदिमागो । सम्मामिच्छाइहिअग्रहारकालो असंखेज्जगुणो ।
सासणसम्माइहिअग्रहारकालो संखेज्जगुणो । एव आप सचमाए पुढवीए सासणसम्माइहि
अग्रहारकालो पि नेयम्भो । तस्सेव दम्भमसंखेज्जगुण । सम्मामिच्छाइहिदम्भं सखेज्ज
गुण । असंजदसम्माइहिदम्भमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? आबलिपाए असंखज्जदिमागो ।
एव पढिलोमेण नेदम्भ जाव पढमपुढविअसंजदसम्माइहिदम्भं पचमिदि । तदो पलि
दोवममसंखेज्जगुण । तदो पढमपुढविअसंखेज्जगुणमिच्छाइहिपिस्संमय्हरं असंखेज्जगुणा ।
सामण्णयरइयमिच्छाइहिपिस्संमय्हरं विससाहिया । तदो विदियपुढविमिच्छाइहिअग्रहार

पिरोए ई कि अपना अपना अग्रहारकाळ जानकर ही कथन करना चाहिये ।

अब सर्प परस्परान् अग्रहद्वन्द्वको बतलाते हैं—पहली धृतिपीके असंखतसम्भग्रहणियोंका
अग्रहारकाळ सखे स्तोके है । उन्से पहली धृतिपीके सम्भग्रहणियोंका अग्रहारकाळ
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आपसीका असंख्याततां भाग गुणकार है । सम्भग्रहणियों
का अग्रहारकाळसे पहली धृतिपीके सासाधनसम्भग्रहणियोंका अग्रहारकाळ संख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? संख्यात ममय गुणकार है । पहली धृतिपीके सासाधनसम्भग्रहणियोंके
अग्रहारकाळसे दूसरी धृतिपीके असंखतसम्भग्रहणियोंका अग्रहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? आपसीका असंख्याततां भाग गुणकार है । दूसरी धृतिपीके असंखतसम्भग्रहणियोंके
अग्रहारकाळसे तृतीये सम्भग्रहणियोंका अग्रहारकाळ असंख्यातगुणा है । सम्भग्रहणियों
का अग्रहारकाळसे तृतीये सासाधनसम्भग्रहणियोंका अग्रहारकाळ संख्यातगुणा है ।
इसीप्रकार सातवीं धृतिपीतक सासाधनसम्भग्रहणियोंके अग्रहारकाळसे अष्टमीका द्रव्य असंख्यातगुणा है ।
सातवीं धृतिपीके सासाधनसम्भग्रहणियोंका अग्रहारकाळसे नवमीका द्रव्य असंख्यातगुणा है ।
सासाधनसम्भग्रहणियोंके द्रव्यसे अष्टमी सम्भग्रहणियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । सम्भ
ग्रहणियोंके द्रव्यसे अष्टमीके असंखतसम्भग्रहणियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? आपसीका असंख्याततां भाग गुणकार है । अष्टमीका अष्टमोत्तर प्रतिशोम पक्षमिसे
अब पहली धृतिपीके असंखतसम्भग्रहणियोंका द्रव्य भाग दोष तब तक से जाना चाहिये ।
पहली धृतिपीके असंखतसम्भग्रहणियोंके द्रव्यमे पक्षोपम असंख्यातगुणा है । पक्षोपमसे
पहली धृतिपीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी चिन्तमन्त्री असंख्यातगुणी है । उक्त चिन्तमन्त्रीसे
सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी चिन्तमन्त्री विशेष अधिक है । सामान्य मिथ्यादृष्टि
नारकियोंकी चिन्तमन्त्रीसे दूसरी धृतिपीके मिथ्यादृष्टियोंका अग्रहारकाळ असंख्यातगुणा

असंख्येन्द्रगुणो । को गुणगारो ? सेही । सासणमम्माइहि-सम्मानिच्छाइहि असमइसम्मा
इहीणमोचसत्ताणमगो । तदियादि जाव सत्तमपुढवि सि एवं चेव सत्ताणप्पावहुम
वत्तम् । गवरि अप्पप्पयो अवहारकाळे आचिरुण माप्पिदम्भ ।

परत्ताणप्पावहुम वत्तस्सामो । सम्भत्तावो असमइसम्माइहिअवहारकाळा । एव
जाव पत्तिदोवमा सि जेदम्भ । पत्तिदावमादो उवरि सामण्णमेरुपमिच्छाइहिअवहारकाळा
असंख्येन्द्रगुणा । को गुणगारो ? विस्संमम्वरूप असंखेअदिमागो । को पटिमागो ?
पत्तिदोवम । अइवा अवित्रंगुलस्स असंखेअदिमागा असंखेअविमि अवित्रंगुलपदमग्ग
मूसाणि । को पटिमागो ? पत्तिदोवमगुणिद्वयमंगुलविदिपवग्गमूठ । उवरि सत्ताणमगो ।
एवं चेव पदमाए पुढवीए । विदिपाए पुढवीए सम्भत्तोवो असमइसम्माइहिअवहार
काळे । एवं जाव पत्तिदोवमो सि जेदम्भो । तदो मिच्छाइहिअवहारकाळो असंखेन्द्रगुणो ।
को गुणगारो ? वारसवग्गमूठस्स असंखेअदिमागो । को पटिमागो ? पत्तिदावम । उवरि
सत्ताणमगो । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि सि परत्ताणप्पावहुम वत्तम् । गवरि

क्या है ? अग्रेणी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके साक्षात्तसम्पत्ति, सम्पत्तिव्यापि और
असंख्यसम्पत्तिर्षोका स्वस्थान अत्यवहुत्व सामान्य स्वस्थान अत्यवहुत्वके समान है ।
तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अत्यवहुत्वका कथन इसीप्रकार करना
चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अत्यवहुत्व कहते समय अपने अपने
अवहारकाळको जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

जब परत्ताण अत्यवहुत्वको बतकाते हैं— असंख्यसम्पत्ति अवहारकाळ सबसे
श्रेष्ठ है । उससे सम्पत्तिव्यापि, उससे साक्षात्तसम्पत्ति अवहारकाळ इसप्रकार
अत्यवहुत्व कहते हुए पस्सोपम तक के जाना चाहिये । पस्सोपमके ऊपर सामान्य भाव
मिथ्यावृत्ति विषमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विषमसूचीका असंख्यातवीं
भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पस्सोपम प्रतिभाग है । अथवा सूर्यगुणका असंख्यातवीं
भाग गुणकार है जो सूर्यगुणके असंख्यात प्रथम वर्गमूळप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ?
पस्सोपमसे सूर्यगुणके द्वितीय वर्गमूळके गुणित करने पर जो लब्ध भाग बतना प्रतिभाग
है । इस विषमसूचीके ऊपर परत्ताण अत्यवहुत्व स्वस्थान अत्यवहुत्वके समान जानना
चाहिये । इसीप्रकार पाँचवीं पृथिवीमें परत्ताण अत्यवहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें असंख्यसम्पत्ति अवहारकाळ सबसे श्रेष्ठ है । इसीप्रकार
उत्तरोत्तर अत्यवहुत्व कहते हुए पस्सोपमतक के जाना चाहिये । पस्सोपमसे दूसरी पृथिवीके
मिथ्यावृत्तियोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अग्रेणीके भागसे
वर्गमूळका असंख्यातवीं भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पस्सोपम प्रतिभाग है । इसके
ऊपर अत्यवहुत्व स्वस्थान अत्यवहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी
पृथिवीके लेकर सातवीं पृथिवीतक परत्ताण अत्यवहुत्वका कथन करना चाहिये । एतत्

असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? तदियवग्गमूल । पचमपुढविमिच्छाइड्ढिद्वयं असंखेज्जगुण ।
 को गुणगारो ? चट्ठत्थ-पचम छट्ठवग्गाभि अण्णोण्णगुणिदाणि । अइथा सेदित्तदियवग्गमूलस्स
 असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सेत्तिचउत्तवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? छट्ठमवग्गमूलं ।
 चउत्तपुढविमिच्छाइड्ढिद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोण्णगुणिदसेदित्तचम अट्ठमं
 वग्गमूलाणि । अइथा छट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सचमवग्गमूलाणि ।
 को पडिमागो ? अट्ठमवग्गमूल । तदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्वयमसंखेज्जगुण । को गुण
 गारो ? अण्णोण्णगुणिदसेत्तिपचम-दसमवग्गमूलाणि । अइथा अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि
 मागो असंखेज्जाणि पचमवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? दसमवग्गमूलं । विदियपुढवि
 मिच्छाइड्ढिद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोण्णमत्थेकारस-चारसवग्गमूलाणि ।
 अइथा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को
 पडिमागो ? चारसवग्गमूलं । सामण्येयमिच्छाइड्ढिअवहारफाळो असंखेज्जगुणो । को

मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेर्णीका तीसरी पगमूल गुणकार
 है । छठवींके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पाँचवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? जगधेर्णीके चौथे पाँचवे और छठवे धर्ममूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो
 राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगधेर्णीके तीसरे धर्ममूलका असंख्यातयां भाग
 गुणकार है जो जगधेर्णीके असंख्यात चौथे धर्ममूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगधेर्णीका
 छठव धर्ममूल प्रतिभाग है । पाँचवींके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य
 असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेर्णीके सातवें और आठवें धर्ममूलोंके परस्पर
 गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगधेर्णीके छठवें धर्ममूलका
 असंख्यातयां भाग गुणकार है जो जगधेर्णीके असंख्यात सप्तम धर्ममूलप्रमाण है । प्रतिभाग
 क्या है ? जगधेर्णीका आठवां धर्ममूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे
 तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेर्णीके नौवें
 और दहावें धर्ममूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा
 जगधेर्णीके आठवें धर्ममूलका असंख्यातयां भाग गुणकार है जो जगधेर्णीके असंख्यात नौवें
 धर्ममूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगधेर्णीका दहावां धर्ममूल प्रतिभाग है । तीसरीके
 मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 जगधेर्णीके ग्यारहवें और बारहवें धर्ममूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
 उतमान गुणकार है । अथवा जगधेर्णीके दहावें धर्ममूलका असंख्यातयां भाग गुणकार है जो
 जगधेर्णीके असंख्यात ग्यारहवें धर्ममूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगधेर्णीका बारहवां
 धर्ममूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नागिकियोंका मिथ्यादृष्टि

काळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वरसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि
 तेरसवन्नामूलाणि । तस्स को पडिमागो ? वणं गुठविदियवग्गमूलं । तदियपुडविमिच्छा
 इड्डिववहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो
 असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? सेट्ठिवारसवग्गमूलं । चठस्वपुडवि
 मिच्छाइड्डिववहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अट्टमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि
 मागो असंखेज्जाणि पचमवन्नामूलाणि । को पडिमागो ? दसमवग्गमूलं । पचमपुडवि
 मिच्छाइड्डिववहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? छट्ठवग्गमूलस्स असंखेज्जदि
 मागो असंखेज्जाणि सचमवग्गमूलाणि । तस्स को पडिमागो ? अट्टमवग्गमूलं । छट्ठ
 पुडविमिच्छाइड्डिववहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवन्नामूलस्स असं
 खेज्जदिमागो असंखेज्जाणि चठस्ववग्गमूलाणि । को पडिमागो ? छट्ठवग्गमूलं ।
 सचमपुडविमिच्छाइड्डिववहारकाळो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलं ।
 तस्सेव दप्पमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेट्ठिपदमवग्गमूलं । छट्ठपुडविमिच्छाइड्डिव

है । गुणकार क्या है ? जगधेवीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो
 जगधेवीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? धनार्मुलका द्वितीय
 वर्गमूल प्रतिभाग है । दूधरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकाळसे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि-
 पौंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेवीके द्वावें वर्गमूलका
 असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगधेवीके असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रति
 भाग क्या है ? जगधेवीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अव
 हारकाळसे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टिपौंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगधेवीके असंख्यात नौवें वर्गमूल
 प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? द्वावां वर्गमूल प्रतिभाग है । चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 अवहारकाळसे पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टिपौंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? जगधेवीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग है जो असंख्यात सातवें वर्गमूल-
 प्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? जगधेवीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है । पाँचवीं
 पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकाळसे छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टिपौंका अवहारकाळ असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेवीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।
 जो जगधेवीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगधेवीका छत्र वर्गमूल
 प्रतिभाग है । छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकाळसे सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टिपौंका
 अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेवीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है ।
 सातवीं पृथिवीके अवहारकाळसे दसवीं मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 जगधेवीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है । सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे छठवीं पृथिवीका

असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? तदियवग्गमूल । पंचमपुदविमिच्छाइहिद्वं असंखेज्जगुण ।
को गुणगारो ? चउत्थ-पंचम छडुवग्गानि अणोब्भगुणिदाणि । अइवा सेवितदियवग्गमूलस्त
असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेविचउत्थवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? छडुमवग्गमूल ।
चउत्थपुदविमिच्छाइहिद्वंमसखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अप्पोण्णगुणिदसेडित्तम अडुमं
वग्गमूलाणि । अइवा छडुमवग्गमूलस्त असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि ।
को पडिभागो ? अडुमवग्गमूल । तदियपुदविमिच्छाइहिद्वंमसंखेज्जगुणं । को गुण-
गारो ? अप्पोण्णगुणिदसेडिणपम-दसमवग्गमूलाणि । अइवा अडुमवग्गमूलस्त असंखेज्जदि-
भागो असंखेज्जाणि षडमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? दसमवग्गमूल । विदियपुदवि-
मिच्छाइहिद्वंमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अप्पोण्णमरयेकारस-वारसवग्गमूलाणि ।
अइवा दसमवग्गमूलस्त असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को
पडिभागो ? वारसवग्गमूल । सामण्येयरइयमिच्छाइहिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को

मिध्यादधि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगभेयीका तीसरा वर्गमूल गुणकार
है । छठवींके मिध्यादधि द्रव्यसे पाँचवीं पृथिवीका मिध्यादधि द्रव्य असंख्यातगुणा है ।
गुणकार क्या है ? अगभेयीके नीचे पाँचवे और छठवे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा अगभेयीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग
गुणकार है जो अगभेयीके असंख्यात नीचे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगभेयीका
छठा वर्गमूल प्रतिभाग है । पाँचवींके मिध्यादधि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिध्यादधि द्रव्य
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगभेयीके सातवें और आठवें वर्गमूलोंके परस्पर
गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा अगभेयीके छठवें वर्गमूलका
असंख्यातवां भाग गुणकार है जो अगभेयीके असंख्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग
क्या है ? अगभेयीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिध्यादधि द्रव्यसे
तीसरी पृथिवीका मिध्यादधि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगभेयीके नीचे
और दहावें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा
अगभेयीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो अगभेयीके असंख्यात नीचे
वर्गमूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगभेयीका दहावां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरीके
मिध्यादधि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिध्यादधि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अपभेयीके स्यादहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
उत्पन्न गुणकार है । अथवा अगभेयीके दहावें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो
अगभेयीके असंख्यात स्यादहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगभेयीका बारहवां
वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिध्यादधि द्रव्यसे सामान्य नारिकेलीका मिध्यादधि

काष्ठो अर्धेन्द्रगुणो । को गुणगारो ? नारसवग्गमूलस्त अर्धेन्द्रदिमागो अर्धेन्द्रजाति
 वेरसवग्गमूलाणि । तस्म को पट्टिमागो ? पञ्चगुलविदियवग्गमूलं । तदियपुट्टविमिच्छा
 इष्टिअवहारकाष्ठो अर्धेन्द्रगुणो । को गुणगारो ? दसमवग्गमूलस्त अर्धेन्द्रदिमागो
 अर्धेन्द्रजाति एकारसवग्गमूलाणि । को पट्टिमागो ? सेट्टिनारसवग्गमूल । चठरवपुट्टवि
 मिच्छाइष्टिमवहारकाष्ठो अर्धेन्द्रगुणो । को गुणगारो ? अट्टमवग्गमूलस्त अर्धेन्द्रदि
 मागो अर्धेन्द्रजाति षडमवग्गमूलाणि । को पट्टिमागो ? दसमवग्गमूलं । पपमपुट्टवि
 मिच्छाइष्टिमवहारकाष्ठो अर्धेन्द्रगुणो । को गुणगारो ? छट्ठवग्गमूलस्त अर्धेन्द्रदि
 मागो अर्धेन्द्रजाति सप्तमवग्गमूलाणि । तस्म को पट्टिमागो ? अट्टमवग्गमूलं । छट्ठ
 पुट्टविमिच्छाइष्टिमवहारकाष्ठो अर्धेन्द्रगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलस्त अर्धेन्द्र
 गुणदिमागो अर्धेन्द्रजाति चठरववग्गमूलाणि । को पट्टिमागो ? छट्ठवग्गमूलं ।
 सवमपुट्टविमिच्छाइष्टिमवहारकाष्ठो अर्धेन्द्रगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलं ।
 तस्मेर दसमवग्गमूलस्त अर्धेन्द्रगुणो । को गुणगारो ? सेट्टिपट्टमवग्गमूल । छट्ठपुट्टविमिच्छाइष्टिम

६ । गुणकार क्या है ? अगधेवीके बारहवें वर्गमूलका अर्धेन्द्रजाति भाग गुणकार है जो
 अगधेवीके अर्धेन्द्रगुण लेखने वर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? पञ्चगुलका द्वितीय
 वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकाष्ठसे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 चौथा अवहारकाष्ठ अर्धेन्द्रगुण है । गुणकार क्या है ? अगधेवीके द्वादशवें वर्गमूलका
 अर्धेन्द्रजाति भाग गुणकार है जो अगधेवीके अर्धेन्द्रगुण गारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रति
 भाग क्या है ? अगधेवीका बारहवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अव
 हारकाष्ठमे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टिचौथा अवहारकाष्ठ अर्धेन्द्रगुण है । गुणकार क्या
 है ? बारहवें वर्गमूलका अर्धेन्द्रजाति भाग गुणकार है जो अगधेवीके अर्धेन्द्रगुण तीसरे वर्गमूल
 प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? द्वादशवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 अवहारकाष्ठसे पाँचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टिचौथा अवहारकाष्ठ अर्धेन्द्रगुण है । गुणकार
 क्या है ? अगधेवीके छठवें वर्गमूलका अर्धेन्द्रजाति भाग है जो अर्धेन्द्रगुण सप्तमवें वर्गमूल
 प्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? अगधेवीका बारहवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । पाँचवीं
 पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकाष्ठमे छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टिचौथा अवहारकाष्ठ अर्धेन्द्रगुण
 है । गुणकार क्या है ? अगधेवीके तीसरे वर्गमूलका अर्धेन्द्रजाति भाग गुणकार है ।
 जो अगधेवीके अर्धेन्द्रगुण चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अगधेवीका छठा वर्गमूल
 प्रतिभाग है । छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकाष्ठमे सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टिचौथा
 अवहारकाष्ठ अर्धेन्द्रगुण है । गुणकार क्या है ? अगधेवीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है ।
 सातवीं पृथिवीके अवहारकाष्ठमे आठवाँ मिथ्यादृष्टि मूल अर्धेन्द्रगुण है । गुणकार क्या है ?
 अगधेवीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है । सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्विष्टमे छठी पृथिवीका

असंखेज्जगुण । को गुणगारो ? तदियवग्गमूल । पचमपुढविमिच्छाइडिद्वय असंखेज्जगुण । को गुणगारो ? चउत्थ-पचम छट्ठवग्गानि अण्णोष्मगुणिदाणि । अइवा सेडितदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सेडितउत्थवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? छट्ठमवग्गमूल । चउत्थपुढविमिच्छाइडिद्वयमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोष्मगुणिदसेडिसचम अट्ठमवग्गमूलाणि । अइवा छट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सचमवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? अट्ठमवग्गमूल । तदियपुढविमिच्छाइडिद्वयमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोष्मगुणिदसेडिणवम-दसमवग्गमूलाणि । अइवा अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? दसमवग्गमूल । तदियपुढविमिच्छाइडिद्वयमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोष्मरवेकारस-वारसवग्गमूलाणि । अइवा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को पडिमागो ? वारसवग्गमूल । सामन्नेरइपमिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को

मिप्पाइदि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेजीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है । छठवींके मिप्पाइदि द्रव्यसे पाँचवीं पृथिवीका मिप्पाइदि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेजीके चौथे पाँचवे और छठवे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगभेजीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है जो जगभेजीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगभेजीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है । पाँचवींके मिप्पाइदि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिप्पाइदि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेजीके सातवें और आठवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगभेजीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है जो जगभेजीके असंख्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगभेजीका आठवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिप्पाइदि द्रव्यसे तीसरी पृथिवीका मिप्पाइदि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेजीके नौवें और दहावें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगभेजीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है जो जगभेजीके असंख्यात नौवें वर्गमूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगभेजीका दहावाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरीके मिप्पाइदि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिप्पाइदि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेजीके ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा जगभेजीके दहावें वर्गमूलका असंख्यातवाँ भाग गुणकार है जो जगभेजीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगभेजीका बारहवाँ वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिप्पाइदि द्रव्यसे सामान्य नारिकेलीका मिप्पाइदि

तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिन्हाइट्टिप्पट्टुडि जाव सजदा-

सजदा ति ओघ' ॥ २४ ॥

एदस्म सुत्तस्स अत्थो उचचे । तं जहा- अणत्तत्थेण तिरिक्खगदिमिन्हाइट्टीण
आपमिन्हाइट्टीणैवेहिंते विसेमामावादो तिरिक्खगइमिन्हाइट्टीण दम्भ-त्थेच-काले अस्सि
स्स्य जा ओघमिन्हाइट्टिपरुवणा सा सन्ना समवदि । गुणपट्टिवण्णाण पि असत्थेत्तत्थेण
ओघपट्टिवण्णेहि समाणाण जा ओघपट्टिवण्णपरुवणा सा मन्ना सैमवदि । तम्हा दम्भ
ट्टियणए अवलंबिच्चमाणे तिरिक्खोपस्स परुवणा ओघवचदेस्स सम्भदे । पत्तवट्टियणए
अवलंबिच्चमाणे पुण ओघपरुवणा ण भवदि, तिरिक्खगइमदिचित्तिगदीणमत्तिचस्स

सम्पत्तत्थेको मिच्छाकर करण किया जाता तो प्रथम तत्त्वके असंपत्तसम्पत्तद्वि
षयोऽथ व्यवहारका सबसे स्तोक कहा है उसके स्थानमें नारक सामान्य असंपत्तसम्प
त्तद्विषयोऽथ व्यवहारका सबसे स्तोक है और इससे विशेष अधिक प्रथम पृथिवीके असंपत्त
सम्पत्तद्विषयोऽथ व्यवहारका है इत्यादि कहा जाता । पर यहां पर इस सब कथनको टीका
कारने क्यों छोड़ दिया है यह बतकाना कठिन है ।

इसप्रकार तत्त्वगतिका वर्णन समाप्त हुआ ।

तिर्यच गतिका आश्रय करके तिर्यचोंमें मिथ्यादृष्टिसे छेकर सयतासंयत तक
प्रत्येक गुणस्यानवर्ती तिर्यच सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रपर वर्ण करते हैं । वह इसप्रकार है—तिर्यचगतिके मिथ्यादृष्टियोंमें ओघ
मिथ्यादृष्टि जीवोंसे अनन्तत्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है, इसलिये द्रव्य क्षेत्र और
असम्प्रमाप्यक आश्रय करके जो ओघ मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणा है वह संपूर्ण तिर्यच मिथ्या
दृष्टि जीवोंके समान है । इसीप्रकार गुणस्यानप्रतिपक्ष तिर्यच भी असम्प्रमाप्यत्वकी अपेक्षा
सामान्य गुणस्यानप्रतिपक्ष जीवोंके समान है इसलिये गुणस्यानप्रतिपक्ष सामान्य जीवोंकी
जो प्ररूपणा है वह संपूर्ण गुणस्यानप्रतिपक्ष तिर्यचोंके समान है । मतएव प्रध्यायिक नयक
अवलम्बन करने पर सामान्य तिर्यचोंकी प्ररूपणा ओघ व्यपदेशको प्राप्त होती है । परंतु
पर्यायार्थिक नयक अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणा तिर्यचोंके नहीं पार् जाती है क्योंकि
यदि ऐसा नहीं माना जाय तो तिर्यच गतिके अतिरिक्त दोष तीन गतियोंका अस्तित्व ही नहीं

गुणस्यानप्रतिपक्षीतिर्यचो बोधाय तत्त्वस्याप्यपुनर्वाप मेरुवा पुरास्मिन्पञ्चविंशत्यनेन अवलम्बयन्ना दृष्टिर्नैव
अवलम्बयन्ना । दृष्टिर्नैवैहिंते वक्तव्यमप्युत्पत्तिमेवैहिंते इमेति वक्तव्यमात्र पुनर्वाप मेरुवा पुरास्मिन्पञ्चविंशत्यनेन
अवलम्बयन्ना दृष्टिर्नैव अवलम्बयन्ना । प्र ६ १ १ पु २४८-२५

१ तिर्यचतां शिखां शिखाद्वयोऽन्वयान्ताः । तान्तावद्वयमवध्वं तदवध्ववदन्ता वयोवक्तव्येव
वक्तव्यताः । उ शि १ ८ वतां ×× शिवशिखरा ×× वाक्पत्ता ×× वैरीका । यो. जी १५५.

मपहि अणतरामीसु दम्परवणादा कालपरम्बणा सुहुमा मबदु णाम, तस्य अणताणत्तस्स पुप्फमणुबलद्दस्य उवलदीदा अदीदकालादो अणतगुणसुबलमादो च । ण कालपरम्बणादा गच्छपरम्बणा सुहुमा, अधिगावत्तदीण अणिमित्ततादो । तदो परम्बण परिवाही ण घट्ठे इदि ! ण, अणतलोगमेत्ताण एगतागम्मि अवगातो अरिप त्ति विससुबलमादा कालादो गच्छस्स सुहुमच पडि निराहामावादो ।

पचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी दम्पपमाणेण केवडिया, अस-
स्सेज्जा ॥ २५ ॥

एदस्स सुचस्स गिरिआपदम्परम्बणामुत्तस्समं पक्खताण कायस्स । एवं कए दम्परम्बणा गदा मयदि ।

असस्सेज्जासस्सेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ २६ ॥

शुद्ध—अनन्तप्रमाण राशियोंमें द्रव्यप्रमाणसे कासप्रमाण सूक्ष्म रही आभी कर्षोंकि, कासप्रमाणमें पहले नहीं उपसब्ध हुए अनन्तानन्तकी उपसब्धि पारि जाती है और अन्तकालसे अनन्तगुणाय पाया जाता है । परंतु कासप्रमाणसे क्षेत्रप्रमाण सूक्ष्म नहीं हो सकती है क्योंकि क्षेत्रप्रमाणमें अधिक उपलब्धिरा और निमित्त नहीं पाया जाता है । इसलिये द्रव्यप्रमाणक अनन्तर कासप्रमाण और कासप्रमाणके अनन्तर क्षेत्रप्रमाण, हमप्रकार प्रमाणकी परिपाटी नहीं बन सकती है ।

समाधान—नहीं अनन्त क्षेत्रमात्र द्रव्योंका एक लोकमें अवकाश पाया जाता है इसप्रकारकी विशयताकी उपसब्धि होनेसे कासकी अपेक्षा क्षेत्र सूक्ष्म है इसमें और विशेष नहीं आता है ।

पचन्त्रिय तियच मिध्यादटि बीब द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंग्र्यात्त हैं ॥ २५ ॥

सामान्य नाटकियोंके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा प्रकरण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान ही इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये (देखो सूत्र १५) । इसप्रकार व्याख्यान करने पर द्रव्यप्रमाणकी प्रकरण समाप्त होती है ।

कासकी अपेक्षा पचन्त्रिय तियच मिध्यादटि बीब असंग्र्यात्तासंग्र्यात् अवसर्विणियों और उत्सर्विणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २६ ॥

अहाशुबवशीरो । तदो पञ्चवद्विपजए अवसंविज्जमाय ओयपरुवणात्ता तिरिक्खगदिपरु
वजाए गावसं वचइस्सामो । सम्मजीवरासिस्सुवरि सगुमपडिबण्णसिद्धतिगदिरासिं पक्खि
विय पुणो वेसिं चेव वग तिरिक्खमिच्छाइड्डिरासिमिदं च पक्खिसे तिरिक्खमिच्छा
इदीमं धुवरासी होदि । एसो मिच्छाइड्डिपरुवणमिह विसेसो ? गुणपडिबण्णपरुवजाए विसेस
वचइस्सामो । तं अहा— देवसासणसम्माइड्डिअवहारकाले आबलियाए असंखेअदिभागण
गुणिदे तिरिक्खअसवदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । सो आबलियाए असंखेअदिभागण
गुणिदे तिरिक्खसम्माभिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । सो संखेअद्विह गुणिदे सासणसम्मा-
इड्डिअवहारकालो होदि । सो आबलियाए असंखेअदिभागण गुणिदे तिरिक्खअसवदसंखेअद
अवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पल्लिदोवमे भागे हिदे तिरिक्खगदिगुणपडिबण्णाय
रासीओ इवन्ति । एसो गुणपडिबण्णपरुवजाए विसेसा, जसिअ अण्णमिह कम्मि वि ।

बन सकता है । अतः पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर जोय प्रकृपासे तिर्येव गतिथी
प्रकृपायमे मेव है । अथे इसी बातको बतझते हैं—

संपूर्ण जीवराशिमें गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धराशिओ
मिच्छाकर पुनः गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धराशिओ वर्गओ तिर्येव
मिष्यादृष्टि जीवराशिसे माजित करके ओ कथ्य अथे उसे मी पूर्वोक्त राशिमें मिछा देवे
पर तिर्येव मिष्यादृष्टिथीकी सुचराधि होती है । तिर्येव मिष्यादृष्टिथीकी प्रकृपायमे इतना
विरोध है ।

विशेषार्थ—यहां पर सुचराधिरूपसे ओ तिर्येव मिष्यादृष्टि जीवराशिओ बलव
करनेके किये भागहार बलव करके बतझाया है, इसका भाग संपूर्ण जीवराशिओ उपरिम
वर्गमें देनेसे तिर्येव मिष्यादृष्टि जीवराशिओ प्रमाण ज्ञात है ।

अब अथे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्रकृपायमें विरोधताको बतझते हैं । वह
इसप्रकार है— देव सासाणसम्पन्नदियोंके अवहारकालको आबलिके अलंकारातमें मायसे
गुणित करने पर तिर्येव असंखतसम्पन्नदृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । तिर्येव असंखत
सम्पन्नदियोंके अवहारकालको आबलिके अलंकारातमें मायसे गुणित करने पर तिर्येव
सम्बन्धिमिष्यादृष्टिथीका अवहारकाल होता है । तिर्येव सम्बन्धिमिष्यादृष्टिथीके अवहारकालको
अलंकारातसे गुणित करने पर तिर्येव सासाणसम्पन्नदृष्टिथीका अवहारकाल होता है । तिर्येव
सासाणसम्पन्नदियोंके अवहारकालको आबलिके अलंकारातमें मायसे गुणित करने पर तिर्येव
संखतसंखतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे परस्परमके माजित करने पर
गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्येवोंकी राशिर्था होती है । यही गुणस्थानप्रतिपन्न प्रकृपायकी विरोधता
है । अन्य कथनमें कहीं मी कोई विरोधता नहीं है ।

मपहि अणंतरामीसु द्वयपम्बणादा कालपम्बणा सुहुमा भवदु णाम, तस्य अणेतानतस्स पुम्बमणुवलदस्म उवलदीदा अदीदकालादो अणेतगुणसुवलमादो च । ण कालपम्बणादा गुप्तपम्बणा सुहुमा, अधिगावलदीए अणिमिच्चत्तादो । तदो परवण परिवादी ण पड्दे इदि ? ण, अणतलाममेत्ताण एगलामम्मि अवगासो अतिय सि विसुमुवलमादा कालादा गुप्तस्म सुहुमच पडि विराहामात्तादो ।

पचिदियतिरिक्तामिच्छाइट्ठी द्वयपमाणेण केवडिया, अस-
स्वेज्जा ॥ २५ ॥

पदस्म सुत्तस्म निरापदद्वयपरवणामुत्तस्मच वक्तुआण कायम्ब । एवं कए द्वयपम्बणा गदा भवदि ।

असस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ २६ ॥

शुद्धा—अनन्तप्रमाण राशियोंमें द्रव्यप्रमाणसे अक्षप्रमाणका सूत्र रखी आओ क्याकि, काष्ठप्रमाणमें पहले नहीं उपलब्ध हुए अनन्तानन्तकी उपलब्धि पाई जाती है और अतीतकालसे अनन्तगुणत्व पाया जाता है । परन्तु काष्ठप्रमाणसे क्षेत्रप्रमाणका सूत्र नहीं हो सकती है क्योंकि क्षेत्रप्रमाणमें अधिक उपलब्धि का कोई निमित्त नहीं पाया जाता है । इसलिये द्रव्यप्रमाणका अनन्तर काष्ठप्रमाणका और अक्षप्रमाणका अनन्तर क्षेत्रप्रमाणका, इसप्रकार प्रमाणानी परिपटी नहीं बन सकती है ?

समाधान—नहीं अनन्त क्षेत्रमात्र द्रव्योंका एक क्षेत्रमें अवकाश पाया जाता है इसप्रकारकी विशिष्टताकी उपलब्धि होनेसे अक्षकी अपेक्षा क्षेत्र सूत्र है इसमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पचन्त्रिय तियच मिच्चाएटि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असम्प्यात हैं ॥ २५ ॥

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा प्रमाण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान ही इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये (वेम्बो सूत्र १५) । इसप्रकार व्याख्यान करने पर द्रव्यप्रमाणकी प्रमाणता समाप्त होती है ।

कालकी अपेक्षा पचन्त्रिय तियच मिच्चाएटि जीव असम्प्यातासम्प्यात अवसर्पिणियों और उरसर्विणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २६ ॥

एहस्त सुचस्त वि दोहि पयसेहि अबहार' परुबिय विरजोपकाठपरुबया-
सुचस्तेब वक्तार्यं कायर्ष्यं । एत्थ मिच्छाद्विनिरेसो किमहुं न कदो ? न, अबरारादीद
सुचादो मिच्छाद्वि पिय मपुबहुमापचादो ।

अथ सिया अतंसेनबासेसेनबासु ओत्तपिणि-उत्तपिणीसु अदिक्कतासु विरिक्क
गर्हण पविदियतिरिक्कत्तां बोच्छेदो इवदि, पविदियतिरिक्कद्विदीए उवरि उत्त
अबहुत्तामाभादो पिय ? न एस दोसा, एहिदिय-विगळिदिएहिंठो देव वेत्तय-मपुस्सेहिंठो न
पविदियतिरिक्कत्तेसुप्पन्नामापजीवसंमभादो । आयविस्सिय-सत्त्वयरासीए बोच्छेदो इवदि ।
एसा पुम सम्मया आयसहिया वेदि न बोच्छिन्नदो । सम्मामिच्छाद्विरासीए किं न
मवदीदि वेत्त, उत्त गुणद्विदिक्कतादो अंतरकाठस्त बहुत्तुवसंमादो । न न एत्थ
पविदियतिरिक्कत्तेसु मवद्विदिक्कतादो विरहकाठस्त बहुत्तुवमरिय, अंतरकाठस्त अंठो

इस खूबछ भी दोनों प्रकारसे अबहारका मरुपज करके सम्मान्य नारकियोंके काय
प्रमाणही ज्येष्ठा मरुपज करनेवाले खूबके व्याख्यातके समान व्याख्यान करना चाहिये
(देख्ये सूत्र १६) ।

शंका—इस सूत्रमें मिष्पाद्यदि पक्ष निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—वहीं क्योंकि, जलन्तर पूर्ववर्ती सूत्रसे मिष्पाद्यदि इस पक्षही अनुवृत्ति
कसी भी रही है ।

शंका—कदाचित् अस्वक्यातात्तत्वात् अवसरपिणियों और वत्सपिणियोंके निष्क
जाये पर तिर्य्यग्यतिके एवेन्द्रिय तिर्य्यबोध्य विच्छेद हो जायगा क्योंकि एवेन्द्रिय तिर्य्यबो
स्थितिके ऊपर तिर्य्यग्यतिमें वक्तव्य अवस्थान नहीं रह सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि एवेन्द्रियों और विच्छेन्द्रिबोमिसे तथा
देव नारकी और मनुष्योंमिसे एवेन्द्रिय तिर्य्यबोमि वत्तय होनेवाले जीव संभव हैं । जो राशि
व्ययसहित और व्यापारहित होती है उसका ही सर्वथा विच्छेद होता है । परंतु वह एवेन्द्रिय
तिर्य्यब मिष्पाद्यदि राशि तो व्यय और व्याप हन दोनों सहित है इसलिये इसका विच्छेद नहीं
होता है

शंका—विसमकार सम्पन्निष्पाद्यदि राशि कदाचित् विच्छिन्न हो जाती है, उसीप्रकार
यह राशि भी क्यों नहीं होती है ?

समाधान—वहीं क्योंकि वहां पर गुणस्थानके कालसे अन्तरकाठ बड़ा है, इसलिये
सम्पन्निष्पाद्यदि राशिअ कदाचित् विच्छेद हो जाता है । परंतु वहां एवेन्द्रिय तिर्य्यबोमि
प्रवर्तितिके कालसे विरहकाठ बड़ा नहीं है क्योंकि, मागममें एवेन्द्रिय तिर्य्यबोमि अन्तर

सुदुशुब्रसदो । मन्त्रिदिकलस्त सादिरपतिष्णिपसिद्धोवमोवदेसादो । 'पानानीर्ष पडुष सम्बद्धा' चि सुचादो वा विरहामात्रो णञ्चदे । एव कालपरूपणा गदा ।

खेत्तेण पञ्चिदियतिरिक्त्वमिच्छाद्द्विदि पदरमवहिरदि देव अवहारकालादो असखेज्जगुणहीणकालेण ॥ २७ ॥

असिद्धण देवअवहारकालेण कव पञ्चिदियतिरिक्त्वमिच्छाद्द्विदिमवहारकालो साहि ज्ञदे ? य एस दोसो, अमाहिणहणस्त आगमस्त असिद्धाशुब्रसदीदो । अणमगमो असिद्धचनमिदि चे ण, वक्खानादो तदमगमसिद्धीदो । सपहि वेसय-छप्पण्णगुलमग्ग मावलिपाए असंखेज्जदिमागेण भागे हिदे पञ्चिदियतिरिक्त्वमिच्छाद्द्विदिअवहारकालो द्विदि । अहवा आवलिपाए असंखेज्जदिमागेण वेसय-छप्पण्णमेचपिअगुलेसु मागे हिदेसु तस्य च छद् त वरिगेदे पञ्चिदियतिरिक्त्वमिच्छाद्द्विदिअवहारकालो द्विदि । अहवा पुम्भिसु मावलिपाए असंखेज्जदिमागे वरगेऊण पण्णदिसहस्स-यपसय छपीसमेचपदगुलेसु भागे

काळका अन्तमुद्धर्तमान उपदेश पाया जाता है। और मन्त्रियति काळका कुछ अधिक तीन पन्थोपमका उपदेश दिया है। इसलिये पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि पश्चिका विच्छेद नहीं होता है। अथवा 'वाता जीर्णोन्मी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि जीव सर्व काल रहते है' इस सूत्रसे भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका विरहामात्र जाना जाता है। इसप्रकार काळ प्रकृपणा समाप्त हुई।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणे हीन कालसे अग्रतर अपहृत होता है ॥ २७ ॥

सूक्त—देवोंका प्रमाण छानेके लिये जो अवहारकाळ कहा है यह व्यभिक्त है, इसलिये अस्मिन् देश अवहारकाळसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाळ कैसे साधा जाता है ?

समाधान—यह कोर होय नहीं है क्योंकि अमाहिनिधन आगम अस्मिन् नहीं हो सकता है।

सूक्त—आगमका ज्ञान नहीं होता ही आगमका आसिद्धत्व है ?

समाधान—नहीं क्योंकि व्याप्यामसे आगमके ज्ञानकी सिद्धि हो जाती है।

अब बतलाते हैं कि दोसी छप्पन सूर्यगुणके वर्गको आबद्धीके असंख्यातसे भागसे भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाळ होता है। अथवा आबद्धीके असंख्यातसे भागसे दोसी छप्पन सूर्यगुणोंके भाजित करने पर वही जो छप्प भाग उसका वग कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टिसंख्या अवहारकाळ होता है। अथवा पहले स्थापित आबद्धीके असंख्यातसे भागको वर्गित करके जो प्रमाण भाग उससे पंचसहस्र पांचवी

हिंदेसु पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्गजहारकाला आगच्छदि । अहवा पप्पिद्धिमहस्म-पच
सय-छत्तीसम्वोवद्दिग्गजहारकालाए अयंछत्तीसदिमागस्म वगेष पदरंगुले मागे हिंदे पंचि
दियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्गजहारकाला आगच्छदि ।

एतत् खड्गिद्विद्विहिं वचस्मामो । स जहा- पदरंगुले असंगेज्ज
खंडे कए एयं खंडं पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्गजहारकाला होदि ।
खड्गिदं गदं । आबलिपाए अमखेज्जदिमागेग पदरंगुलं माग हिंद पंचि
दियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्गजहारकालो होदि । भाविदं गदं । आबलिपाए अमखेज्जदिमाग
विरलेज्जए एकेहस्म रूचस्म पदरंगुलं समएज्ज करिप दिण्णे ठत्थगखड्ग पंचिदियतिरिक्ख
मिच्छाद्दिग्गजहारकालो होदि । विरलिदं गदं । ठमवहारकालं मलागमूर्दं ठवज्जए
पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिग्गजहारकालपमाणे पदरंगुलाणे अबहिरिज्जदि सत्तमागहिंठो
एगस्ममवणिज्जदि । एव पुणा पुणा अबणिज्जमाय सत्तागाओ पदरंगुलं च जुगं
णिद्धिदं । तत्थ आदीग वा अत वा मज्झ वा एगमारमवहिंदपमाण पंचिदियतिरिक्ख

छत्तीसमात्र प्रतरंगुलोंके माजित करन पर पंचेन्द्रिय निर्वह मिष्याद्यपि सुंभन्धी अवहारकाल
होता है । अथवा पंचद्विज्ज पंचत्तीस छत्तीससे आबलीके अंतर्गतमें मागके वर्गीको
अपवर्तित करके जो छप्प मागे उससे प्रतरंगुलोंके माजित करन पर पंचेन्द्रिय निर्वह
मिष्याद्यपि सुंभन्धी अवहारकाल जाता है । अब यहां ज्ञानित आदिछद्दी विधिसे बतलाते
हैं । यह इसप्रकार है—

प्रतरंगुलमें अंतर्गत सब करन पर उममेंस एव खट्टप्रमाण पंचेन्द्रिय निर्वह
मिष्याद्यपि अवहारकाल होता है । इसप्रकार जेहेनका धर्मन समान हुआ । आर्याक
अंतर्गतमें मागसे प्रतरंगुलोंके माजित करने पर पंचेन्द्रिय निर्वह मिष्याद्यपि अवहारकाल
होता है । इसप्रकार माजितका वयन समान हुआ । आर्याके अंतर्गतमें मागको विरमिन
करके और उस विरमिन राशिमें प्रचर एकरे प्रति प्रतरंगुलोंको समान बद्ध करके देयकपसे
हं बने पर उममेंस एक विरलमक प्रति प्राप्त एक लंकाप्रमाण पंचेन्द्रिय निर्वह मिष्याद्यपि
अवहारकाल जाता है । इसप्रकार विरमिनका धर्मन समान हुआ । इस आबलीके अंतर्गतमें
मागरूप अवहारकालको गमाकरकपसे वपायित करके मज्जनर पंचेन्द्रिय निर्वह मिष्याद्यपि
अवहारकालके प्रमाणको प्रतरंगुलमेंस प्रग वना चाहिये । एकरा घटाया इसलिये दामाज-
राशिमेंस एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः प्रतरंगुलमेंस आर्याक अंतर्गतमें
मागको और दामाजराशिमेंस एकरा उत्तरोत्तर कम करन जानेपर दामाजराशि और
प्रतरंगुल एक साथ समान होत हैं । यहां पर ध्यातमें अथवा मध्यमें अथवा अन्तमें एकरा
जिनका प्रमाण घटाया जना पंचेन्द्रिय निर्वह मिष्याद्यपि अवहारकाल जाता है । इसप्रकार

मिच्छाशुद्धिअवहारकालो हादि । अमहिद गद । तस्स पमाणं पदरगुलस्स असंखेज्जदिमाणो असंखेजाणि स्रुचिअगुलाणि । पमाण गद । केण कारणेण ? स्रुचिअगुलेण पदरगुले मागे हिदे स्रुचिअगुलमागच्छदि । स्रुचिअगुलपदमवगमूलेण पदरगुले मागे हिदे स्रुचिअगुल पदमवगमूलमिह चत्थियाणि रूवाणि चत्थियाणि स्रुचिअगुलाणि लभमति । एवमसंखेज्जजाणि वग्गहाणाणि हेहा मोसरिक्ख आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण^१ पदरगुले मागे हिदे असंखेज्जजाणि स्रुचिअगुलाणि आगच्छति । कारण गद । आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण स्रुचिअगुल मागे हिदे छद्ममि चत्थियाणि रूवाणि चत्थियाणि स्रुचिअगुलाणि । अहवा आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण स्रुचिअगुलपदमवगमूलमवहारिय लद्धेण स्रुचिअगुल-पदमवगमूल चव गुणिदे सत्थ चत्थियाणि रूवाणि चत्थियाणि स्रुचिअगुलाणि पण्डिय तिरिक्खमिच्छाशुद्धिअवहारकालो हादि । एव गत्तण आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण आवलियाए मागे हिदाए छद्मेण आवलिय गुणिय ततो पदरावलिप गुणिय एव जाव स्रुचिअगुलपदमवगमूल ति निरतरं सयलवगगार्थं अण्णोण्णमरवे कदे सत्थ चत्थियाणि

अपहतक कथन समाप्त हुआ । उस पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादि अवहारकालका प्रमाण प्रतीतिगुणके असंख्यातवर्गे मागे जो असंख्यात सूर्यगुणप्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शुद्धा — पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात सूर्यगुण किस कारणसे है ?

समाधान — सूर्यगुणसे प्रतीतिगुणके माजित करने पर एक सूर्यगुणका प्रमाण आता है । सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलसे प्रतीतिगुणके माजित करने पर सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूर्यगुण छप्प आते हैं । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे आकर व्यापसीके असंख्यातवर्गे मागसे प्रतीतिगुणके माजित करने पर असंख्यात सूर्यगुण छप्प आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

आवलीके असंख्यातवर्गे मागसे सूर्यगुणके माजित करने पर वहाँ जितना प्रमाण छप्प आये उतने सूर्यगुणप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादि अवहारकाल है । अथवा आवलीके असंख्यातवर्गे मागसे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलको अपहन करके जो छप्प भाग उससे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण छप्प आये उतने सूर्यगुणप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादि अवहारकाल है । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे आकर व्यापसीके असंख्यातवर्गे मागसे आवलीके माजित करने पर जो छप्प भाग उससे आवलीके गुणित करके पन । इस गुणित राशिसे प्रतीतिगुणको गुणित करके इसीप्रकार सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलपर्यंत संपूर्ण वर्गोंके निरंतर परस्पर गुणित करने पर वहाँ जितना प्रमाण छप्प भाग आये उतने सूर्यगुण आते हैं और वही पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादि अवहारकाल

हिंदेसु पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिअवहारकालो आगच्छदि^१ । अहवा पण्णट्ठिमइस्स-पच
सय-छत्तीसरूपोवड्ढिअवसियाए अंसखेज्जदिमामस्स वग्गेण पदरंगुले माग हिंदे पंचि
दियतिरिक्खमिच्छाद्दिअवहारकालो आगच्छदि ।

एत्थ खडिदादिभिदि वचइस्सामो । तं अहा- पदरंगुले असखे-
खंडे कए एयं खंड पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिअवहारकालो होदि ।
खडिदं गइ । आबलिपाए असंखेज्जदिमागेण पदरंगुले मागे हिंद पंचि
दियतिरिक्खमिच्छाद्दिअवहारकालो होदि । मादिदं गइ । आबलिपाए असंखेज्जदिमागे
विरलेज्ज एकेइस्स रूपस्स पदरंगुलं समखइ करिय दिग्घे उत्तेगखइ पंचिदियतिरिक्ख
मिच्छाद्दिअवहारकालो होदि । विरलिदं गइ । तमवहारकाल मत्तागभूदं ठवेठम
पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दिअवहारकालपमापेण पदरंगुलादो अवहिरिज्जदि सत्तागाहिदो
एगकूपमवविज्जदि । एव पुणो पुणा अवपिज्जमानो सत्तागाओ पदरंगुलं च जुगलं
विड्ढि । तत्थ आदीए वा जंते वा मन्ते वा एगवारमवहिदपमाप पंचिदियतिरिक्ख

छत्तीसमात्र प्रतरांगुलके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यं मिष्यादृष्टिबन्धी अवहारकाळ
होता है । जयवा पैसठ हजार पांचसी छत्तीससे मावलीके असंख्यातमें मागके बर्गको
अपवर्तित करके जो छद्म माने उससे प्रतरांगुलके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यं
मिष्यादृष्टिबन्धी अवहारकाळ जाता है । अब यहां स्पष्टित आदिछद्म विधिसे बतलाते
हैं । यह इसप्रकार है—

प्रतरांगुलके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यं
मिष्यादृष्टि अवहारकाळ होता है । इसप्रकार कथितका वर्णन समाप्त हुआ । मावलीक
असंख्यातमें मागसे प्रतरांगुलके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यं मिष्यादृष्टि अवहारकाळ
होता है । इसप्रकार माजितका वर्णन समाप्त हुआ । मावलीक असंख्यातमें मागको विरहित
करके और उस विरहित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलको समाप्त करके वैषम्यसे
दो देने पर उनमेंसे एक विरलमके प्रति प्राप्त एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यं मिष्यादृष्टि
अवहारकाळ होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ । उस मावलीके असंख्यातमें
मागका अवहारकाळको शाखाकापसे स्थापित करके अन्तर पंचेन्द्रिय तिर्यं मिष्यादृष्टि
अवहारकाळके प्रमाणको प्रतरांगुलमेंसे मटा देना चाहिये । एकवार धराया इसलिये दामाका
राशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः प्रतरांगुलमेंसे मावलीके असंख्यातमें
मागको और दामाका राशिमेंसे एकको उत्तरोत्तर कम करते जातेपर दाखाका राशि और
प्रतरांगुल एक साथ समाप्त होते हैं । यहां पर आदिमें जयवा मयमें जयवा अन्तम एकवार
जितना प्रमाण धराया वतना पंचेन्द्रिय तिर्यं मिष्यादृष्टि अवहारकाळ होता है । इसप्रकार

१ अर्थां होदि आ-पना इति आवच्छिदि इति पठ ।

२ अतिउ मिरेड इति पाठ ।

असंखेज्जदिमागेण गुणिद्वयचित्रगुलेन धर्मागुलपदमवगमूलं गुणेऊन तेन घणाधमगुल पदमवगमूले मागे हिदे पंचिदियतिरिक्कमिच्छाद्द्विजवहारकाळो होदि । तं चहा-
घणगुलपदमवगमूलेन घणाधर्मागुलपदमवगमूले मागे हिदे धर्मगुलमागच्छदि । पुनो
द्वयचित्रगुलेन धर्मगुले मागे हिदे पदरगुलमागच्छदि । पुनो आधलियाए असंखेज्जदि
माएण पदरगुले मागे हिदे पंचिदियतिरिक्कमिच्छाद्द्विजवहारकाळो होदि । एव
हेट्टिमवियप्पो गदो ।

उपरिमवियप्पो तिभिहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगतो चेदि । तत्त वेरूपे
गहिद वचइस्सामो । आधलियाए असंखेज्जदिमागेण पदरगुलं मागे हिदे पंचिदिय
तिरिक्कमिच्छाद्द्विजवहारकाळो आयच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वयेद्वयमेवे
रासिस्स छेदणए क्खे पंचिदियतिरिक्कमिच्छाद्द्विजवहारकाळो होदि । एसो मत्तिम
वियप्पो, एदमवेक्खिय हेट्टिम-उपरिमवचएससमवाहो । एसो उचयारेण उपरिमवियप्पो

अब घनाधममें अधस्तन विकस्य बतलाते हैं— आधलीके असंख्यातवें भागसे सूर्य
गुलको गुणित करके जो सूर्य भागे उससे घनागुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो सूर्य
भागे उससे घनाधर्मागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्वि
जवहारकाळ होता है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनागुलके प्रथम वर्गमूलसे
घनाधर्मागुलके प्रथम धर्मागुलके भाजित करने पर घनागुलका प्रमाण आता है । पुनः सूर्यगुलसे
घनागुलके भाजित करने पर घनागुलका प्रमाण आता है । पुनः आधलीके असंख्यातवें भागसे
घनागुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्वि जवहारकाळ होता है । इसप्रकार
अधस्तन विकस्य समाप्त हुआ ।

उपरिम विकस्य तनि प्रकारका है गृहीत गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकस्यको बतलाते हैं— आधलीके असंख्यातवें भागसे घनागुलके
भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्वि जवहारकाळ आता है । उक्त मागहारके जितन
अर्थछेद हो उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्थछेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक्
मिथ्याद्वि जवहारकाळ होता है । वास्तवमें यह मध्यम विकस्य है और इसकी अपेक्षा करके
ही अधस्तन और उपरिम संज्ञा सम्यक् है इसलिये उपचारसे यह उपरिम विकस्य कहा
जाता है ।

विशेषार्थ— विवक्षित मात्रकका किसी विवक्षित माध्यमें भाग देनेसे जो सूर्य आता है
वही सूर्य अब उस विवक्षित माध्य और मात्रकसे नीचेकी संख्याओंका आधय लेकर निकाला
जाता है । तब वह अधस्तन विकस्य कहलाता है । और अब वही सूर्य उस विवक्षित माध्य और
मात्रकसे ऊपरकी संख्याओंका आधय लेकर निकाला जाता है तब उसे उपरिम विकस्य कहते
हैं । इस नियमके अनुसार प्रकृतमें मात्रक आधलीका असंख्यातवें भाग और माध्य घनागुल,
इस दोनोंसे नीचेकी संख्याओंका आधय लेकर अब पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्वि जवहारकाळ

रूपाणि तृतिपाणि स्रुचिर्गुणानि हवन्ति । त्रिचुपी गदा ।

वियप्यो दुविहो, इष्टिमवियप्यो तृचरिमवियप्यो चेदि । तत्र हेष्टिमवियप्यं वचस्सामो । आवलिपाए अस्तंखज्जदिमागेण स्रुचिर्गुणे मागे हिदे सदेव तं चेव गुणिदे पंचिदियतिरिक्तमिच्छाष्टिभवहारकातो होदि । अहवा तेवेव मागहारेव स्रुचि अगुत्तमवममापूठ मागे हिदे सदेव तं चेव गुणेठ्ठम तेव स्रुचिर्गुण गुणिदे पंचिदिय तिरिक्तमिच्छाष्टिभवहारकातो होदि । एवमस्तंखज्जदिमागेण वग्गह्वाणानि हेह्वा जोसरिऊव आवलिपाए अस्तंखज्जदिमागेण आवलिपाए मागे हिदाए ज्ज उद्द तेव तं चेव गुचिव तस्सुवरिमवग्ग गुचिय एव आव स्रुचिर्गुणेति णिरंतव सव्ववग्गाणं अण्णोप्पज्जमासे कप पंचिदियतिरिक्तमिच्छाष्टिभवहारकातो होदि । वच्चे हेष्टिमवियप्यो गदो । अहूस्से वचस्सामो । आवलिपाए अस्तंखज्जदिमागेण गुणिदस्रुचिर्गुणेण पचगुणे मागे हिदे पंचिदियतिरिक्तमिच्छाष्टिभवहारकातो होदि । त अह्वा—स्रुचिर्गुणेण^१ पचगुणे मागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुमो आवलिपाए अस्तंखज्जदिमागेण पदरंगुले मागे हिदे पंचिदिय तिरिक्तमिच्छाष्टिभवहारकातो होदि । पणापणे इष्टिमवियप्य वचस्सामो । आवलिपाए

है । इस प्रकार विवक्षित कर्मन समाप्त हुआ ।

विक्षय दो प्रकारका है अथस्तन विक्षय और उपरिम विक्षय । उनमेंसे अथस्तन विक्षयको बतलाते हैं— व्याखीके अंतर्गतातर्कें मागसे सूर्यगुणके मात्रित करने पर ओ छम्प ग्यवे उससे उसी सूर्यगुणके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्यदि अवहारकाक्य प्रमाण होता है । अथवा, उसी व्याखीके अंतर्गतातर्कें मागकप मागहारसे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूकके मात्रित करने पर ओ छम्प ग्यवे उससे सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूकको गुणित करने ओ छम्प ग्यवे उससे सूर्यगुणके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्यदि अवहारकाक्य होता है । इसीप्रकार अंतर्गतातर्कें वर्गस्थान नीचे आकर व्याखीके अंतर्गतातर्कें मागसे व्याखीके मात्रित करने पर ओ छम्प ग्यवे उससे उसी व्याखीको गुणित करने पुनः उस गुणित पक्षिसे उस व्याखीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार गुणित करते हुए सूर्यगुणपर्यंत सर्व वर्गोंके विस्तार परस्पर गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्यदि अवहारकाक्य होता है । इस प्रकार विक्षयमें अथस्तन विक्षय समाप्त हुआ ।

अथ अष्टकपर्यंत अथस्तन विक्षय बतलाते हैं— व्याखीके अंतर्गतातर्कें मागसे सूर्यगुणको गुणित करके ओ छम्प ग्यवे उससे वर्गगुणके मात्रित करने वर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्यदि अवहारकाक्य होता है । इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है— सूर्यगुणका वर्गगुणमें माग देने पर प्रथमगुण आता है । पुनः व्याखीके अंतर्गतातर्कें मागसे प्रथमगुणके मात्रित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्यदि अवहारकाक्य होता है ।

असंखेज्जदिमाणेण गुण्दिद्वयचिअंगुलेण षणंगुलपदमवगममूलं गुणेऊम तेण षणापणंगुल पदमवगममूले मागे हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइडिमवहारकासो होदि । त जहा-
 षणंगुलपदमवगममूलेण षणाघणगुलपदमवगममूले मागे हिदे पणंगुलमागच्छदि । पुणो
 छचिअंगुलेण षणंगुले मागे हिदे पदंगुलमागच्छदि । पुणो आबलिपाए असंखेज्जदि
 माएण पदरगुले मागे हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइडिमवहारकासो होदि । एवं
 हेडिमवियण्णो गइ ।

उवरिमवियण्णो सिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो षदि । उरव वेरूने
 गहिद षचइस्सामो । आबलिपाए अमखेज्जदिमाणेण पदंगुलं मागे हिदे पंषिदिय
 तिरिक्खमिच्छाइडिमवहारकासो आमच्छदि । तस्स मागहारस्स अइच्छेदणयमेणे
 रासिस्स छेदणए कदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइडिमवहारकासो होदि । एसो मज्झिम
 वियण्णो, एदमवेक्खिय हेडिम-उवरिमवयणसर्ममवादो । एसो उषयारेण उवरिमवियण्णो

अथ घनापनमे मधस्तन विक्षय बतसाते ई— आबलीके असंखपातवें मागसे छप्प
 गुलको गुणित करके जो सप्प आने उससे घनांगुलके प्रथम वगमूलके गुणित करके जो छप्प
 आने उससे घनाघनांगुलके प्रथम वगमूलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि
 अवहारकाय होता है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके प्रथम वगमूलसे
 घनाघनांगुलके प्रथम वगमूलके भाजित करने पर घनांगुलका प्रमाण आता है । पुनः सूक्ष्मगुलसे
 घनांगुलके भाजित करने पर प्रतरांगुलका प्रमाण आता है । पुनः आबलीके असंखपातवें मागसे
 प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाय होता है । इसप्रकार
 मधस्तन विक्षय समाप्त हुआ ।

उपरिम विक्षय तत्र प्रचारका है गृहीत गृहीतगृहीत और गृहीतगुणवार । उनमेंसे
 द्विरूपमें गृहीत उपरिम विक्षयको बतसाते ई— आबलीके असंखपातवें मागसे प्रतरांगुलके
 भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाय आता है । उक्त मागहारके जितने
 अर्धच्छेद हैं उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक्
 मिथ्यादृष्टि अवहारकाय होता है । वास्तवमें यह मध्यम विक्षय है और इसीकी अपेक्षा करके
 ही मधस्तन और उपरिम संज्ञा समझ है इसलिये उपचारसे यह उपरिम विक्षय कहा
 जाता है ।

विश्लेषार्थ— विवक्षित मात्रकका किसी विवक्षित मात्रकमें माग देनेस जो छप्प आता है
 यही सप्प अब उस विवक्षित मात्रक और मात्रकसे मीथवी संख्याओंका आशय लेकर निवाडा
 जाता है तब वह मधस्तन विक्षय कहलाता है और अब यही सप्प उस विवक्षित मात्रक और
 मात्रकसे उपरार्थ संख्याओंका आशय लेकर निवाडा जाता है तब इसे उपरिम विक्षय कहत
 है । इस नियमका अनुसार बहुतमें मात्रक आबलीका असंखपातवें माग और मात्रक प्रतरांगुल,
 इन दोनोंस मीथवी संख्याओंका आशय लेकर अब पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाय

रूपाणि तत्पिपायि स्रविअंगुलाणि इवन्ति । मिरुची गदा ।

वियप्पो इविहो, हेड्डिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेड्डिमवियप्पं वचइस्सामो । आबळिपाए अत्तंखेन्नादिमाणेण स्रविअंगुले मागे हिदे लद्धेण तं चेव गुण्णिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छइड्डिमवहारकासो होदि । अहसा तेजेव मागहारेण स्रवि अंगुलमहमवगामूले मागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणेत्थम तेण स्रविअंगुले गुण्णिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छइड्डिमवहारकासो होदि । एवमत्तंखेन्नाणि वग्गाह्वाणाणि हेड्डा ओसरित्थ आबळिपाए अत्तंखेन्नादिमाणेण आबळिपाए मागे हिदाए जं लद्धं तेण तं चेव गुणिव तस्सुवरिमवगं गुणिय एवं आब स्रविअंगुलेपि णित्तं सक्कवग्गाणं अप्पोक्कवग्गासे कए पंषिदियतिरिक्खमिच्छइड्डिमवहारकासो होदि । वग्गे हेड्डिमवियप्पो गदो । अड्डुस्से वचइस्सामो । आबळिपाए अत्तंखेन्नादिमाणेण गुणिवस्रविअंगुलेण पवगुले मागे हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छइड्डिमवहारकासो होदि । तं बहा— स्रविअंगुलेण' पवगुले मागे हिदे पदंगुलमागच्छदि । पुणो आबळिपाए अत्तंखेन्नादिमाणेण पदंगुले मागे हिदे पंषिदियतिरिक्खमिच्छइड्डिमवहारकासो होदि । वणापणे हेड्डिमवियप्पं वचइस्सामो । आबळिपाए

है । इसप्रकार विकल्पित वचन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तव विकल्प और उपारिम विकल्प । इनमेंसे अथस्तव विकल्पके वक्तव्यते हैं— आबळीके अत्तंख्यातवें मागसे सूर्यगुलके भाजित करने पर जो छग्न भागे उससे उसी सूर्यगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यावृत्ति अवधारकात्मक प्रमाण होता है । अथवा उसी आबळीके अत्तंख्यातवें मागसे मागहारसे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो छग्न भागे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छग्न भागे उससे सूर्यगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यावृत्ति अवधारकात्मक होता है । इसीप्रकार अत्तंख्यात वर्गस्थान नीचे आकर आबळीके अत्तंख्यातवें मागसे आबळीके भाजित करने पर जो छग्न भागे उससे उसी आबळीको गुणित करने पुनः उस गुणित राशिसे उस आबळीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार गुणित करते हुए सूर्यगुलपर्यंत सर्व वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यावृत्ति अवधारकात्मक होता है । इसप्रकार विकल्पमें अथस्तव विकल्प समाप्त हुआ ।

अब अथस्तवमें अथस्तव विकल्प वक्तव्यते हैं— आबळीके अत्तंख्यातवें मागसे सूर्यगुलको गुणित करके जो छग्न भागे उससे वर्गगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यावृत्ति अवधारकात्मक होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूर्यगुलका वर्गमूलमें भाग देने पर प्रथमगुल जाता है । पुनः आबळीके अत्तंख्यातवें मागसे प्रथमगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यावृत्ति अवधारकात्मक होता है ।

अवहारकालो आगच्छदि । एव संखेज्जासंखेज्जाणतेसु भेयत्तं । पचापणे वचइस्सामो ।
 भावत्तियाए अंतखेज्जादिमाएण पदरगुलउपरिमवग्ग गुणेऊअ तज घणगुलउपरिम
 वग्गस्सुवरिमवग्ग गुणेऊअ घणाघणेगुलउपरिमवग्गे मागे हिदे पंचिदियतिरिक्ख
 मिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छदि । त अहा— घणगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो
 पचापणगुलउपरिमवग्गे मागे हिदे घणगुलउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुल
 उपरिमवग्गेण घणगुलउपरिमवग्गे मागे हिदे पदरगुलमागच्छदि । पुणो भावत्तियाए
 अंतखेज्जादिमाएण पदरगुल माग हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो
 आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अइच्छेदणपमेच रातिस्स अइच्छेदणए कदे वि पंचिदिय
 तिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छदि । पदरगुलस्स घणगुलस्स घणाघणगुलपदमवग्ग
 तस्स चांतखेज्जादिमागेण पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिद
 जगारो वचव्वो । एदेअ अवहारकालेण जगसेदिमिह मागे हिदे पंचिदियतिरिक्ख
 पेच्छाइड्डिविक्खममूर्ह आगच्छदि । अहा नेरइयमिच्छाइड्डिअवहारकालस्स खंडिदादि
 कूवणा कदा तहा एदिस्से विक्खममूर्हए खंडिदादिपरूवणा कपव्व्वा । एवेण अवहार
 एतेअ जगपदेरे माग हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारमागच्छदि । एत्थ खंडिद

गता है । इसीप्रकार संख्यात अंतख्यात नीर अतन्तस्थानोंमें से जाना चाहिये ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विक्खय बतकावे हैं— भावत्तियोंके अंतख्यातमें मागसे
 प्रतंगुलके उपरिम बर्गको गुणित करके जो सध्य भावे उससे घनांगुलके उपरिम बर्गके
 उपरिम बर्गको गुणित करके जो सध्य भावे उससे घनाघनांगुलके उपरिम बर्गके भाजित
 करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकालका प्रमाण आता है । उसका स्पष्टीकरण
 इसप्रकार है— घनांगुलके उपरिम बर्गके उपरिम बर्गसे घनाघनांगुलके उपरिम बर्गके भाजित
 करने पर घनांगुलका उपरिम शरा माना है । पुनः प्रतंगुलके उपरिम बर्गसे घनांगुलके
 उपरिम बर्गके भाजित करने पर प्रतंगुल आता है । पुनः भावत्तियोंके अंतख्यातमें मागसे
 प्रतंगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकालका प्रमाण आता
 है । वच मागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीपर उक्त मध्यमान राशिके अर्थछेद करने
 पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकालका प्रमाण आता है । प्रतंगुलका अंतख्यातमें
 समरूप घनांगुलके अंतख्यातमें भागरूप नीर घनाघनांगुलके प्रथम घनामूलक अंतख्यातमें
 साधारण पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुलपरकर
 करण (पाछेके समान) करना चाहिये । इस अवहारकालमें जगध्वनीके भाजित करने पर
 पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याएदि विरहमस्त्रीका प्रमाण आता है । पहले जितनेपर नारक
 मिथ्याएदि विरहमस्त्रीके रंजित जादिकनी प्रकणना का गाते हैं, जनीप्रकार इस
 विरहमस्त्रीके रंजित जादिकका प्रकरण करना चाहिये ।

पि बुद्धदे । सपदि अजुबयारण उबरिमवियप्प वचइस्सामो । त जहा—आवतियार
असंखेज्जदिमाण गुणिदपवरगुलेय तस्सुबरिमवग्ग भाग हिदे पंविदियतिरिक्खमिञ्जा
इड्डिअवहारकाओ होदि । तस्म भागहारस्स अड्डच्छेदणयमेव रासिस्स अड्डच्छेदण क
वि पंविदियतिरिक्खमिञ्जाइड्डिअवहारकाओ हादि । एरव अड्डच्छेदणयमेवरावविहानं
चितिय वचप्प । एव संखउमासंखेज्जायंतमु येयप्पं । अड्डरूपे वचइस्सामो । आवतियार
असंखेज्जदिमाण पदरंगुलउबरिमवग्ग गुणेरुग वेण घनंगुलउबरिमवग्गे मागे दिर
पंविदियतिरिक्खमिञ्जाइड्डिअवहारकाओ होदि । त जहा—पदरंगुलउबरिमवग्गव प
गुलउबरिमवग्गे मागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणा आवतियार असंखेज्जदिमाण
पदरंगुले मागे हिदे पंविदियतिरिक्खमिञ्जाइड्डिअवहारकाओ आगच्छदि । तस्म वाय
हारस्स अड्डच्छेदणयमेवे रासिस्स अड्डच्छेदण क्खे वि पंविदियतिरिक्खमिञ्जाइ

आवा मापणा तव इस प्रक्रियाको मध्यस्तन विहस्य करेंगे, और अब उक्त दोनों संख्याओंसे
ऊपरकी संख्याओंका माध्य लेकर उक्त अजुबहारकाऊ का मापणा तव उसे उपरिम विहस्य
करेंगे । मापणकी असंख्यातवें भागसे प्रतरंगुलको मापित करके पंचेन्द्रिय तियव अवहार
काऊक छानेकी जा प्रक्रिया है वही वास्तवमें मध्यस्तन या उपरिम विहस्य नहीं नहीं या
सकती है क्योंकि मध्यस्तन और उपरिम विहस्यके निश्चित करनेके लिये यहाँ वही मापण
है । अतः वास्तवमें वह मध्यम विहस्य ही है, उपरिम नहीं ।

अब अनुपचारसे उपरिम विहस्यको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—आवणकी
असंख्यातवें भागसे प्रतरंगुलको गुणित करके जो कल्प आवे उसका प्रतरंगुलके उपरिम
वर्गमें भाग दान पर पंचेन्द्रिय तियव मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊका प्रमाण होता है । उक्त
मापणहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनेवार उक्त मध्यमान राशि के अर्थच्छेद करने पर ही
पंचेन्द्रिय तियव मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊका प्रमाण होता है । यहाँ पर अर्थच्छेदोंके मिथ्यात्व
विभिन्न विचार कर कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यत असंख्यात और अल्प
ख्यातोंमें भी के आवा जाहिये ।

अब अग्रक्रममें उपरिम विहस्य बतलाते हैं—आवणकी असंख्यातवें भागसे
प्रतरंगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो कल्प आवे उससे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गसे
मापित करने पर पंचेन्द्रिय तियव मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊका प्रमाण जाता है । वह इसप्रकार
है—प्रतरंगुलके उपरिम वर्गसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके मापित करने पर प्रतरंगुल आवत
है । पुनः आवणकी असंख्यातवें भागसे प्रतरंगुलके मापित करने पर पंचेन्द्रिय तियव
मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊका प्रमाण जाता है । उक्त मापणहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनेवार
उक्त मध्यमान राशि के अर्थच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तियव मिथ्यादृष्टि अवहारकाऊ

अवहारकालो आगच्छदि । एव सखेज्जामसुआणसेसु पेयव्वं । घणापणे वचइस्तामो ।
 आबलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरगुलउवरिमवग्गो गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिम-
 वग्गस्तुवरिमवग्गो गुणेऊण घणापणंगुलउवरिमवग्गो मागे हिंदे पंधिदियतिरिक्ख
 मिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छदि । त अहा- घणगुलउवरिमवग्गस्तुवरिमवग्गो
 पणापणंगुलउवरिमवग्गो मागे हिंदे घणगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुल
 उवरिमवग्गो घणंगुलउवरिमवग्गो मागे हिंदे पदरगुलमागच्छदि । पुणो आबलियाए
 असंखेज्जदिभाएण पदरगुल माग हिंदे पंधिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो
 आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अदण्ठेदणपमेचे राखिस्स अदण्ठेदणए कदे वि पंधिदिय-
 तिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छदि । पदरगुलस्स घणंगुलस्स घणापणंगुलपदमवग्गो
 मूलस्स चासंखेज्जदिभागेण पंधिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिद
 गुणगारो वचव्वो । एदेण अवहारकालेण अगघेदिमिह मागे हिंदे पंधिदियतिरिक्ख
 मिच्छाइड्डिमिक्खममग्गं आगच्छदि । वहा भेरइयमिच्छाइड्डिअवहारकालस्स खंडिदादि
 परुवणा कदा तथा पदिस्से विक्खममग्गं खंडिदादिपरुवणा कायणा । एदेण अवहार
 कालेण जगपदरे मागे हिंदे पंधिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालगच्छदि । एत्थ खंडिद

भाठा ई । इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें छे जाना चाहिये ।

अब घनापणमें गृहीत उपरिम विचार बतलाते हैं— आपसीके असंख्यातवें भागसे
 प्रतंगुलके उपरिम घणको गुणित करके जो सध्य भावे उससे घनांगुलके उपरिम घर्गके
 उपरिम घर्गको गुणित करके जो सध्य भावे उससे घनापणंगुलके उपरिम घर्गके भाजित
 करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याइष्टि अवहारकालका प्रमाण जाता है । इसका स्पष्टीकरण
 इसप्रकार है— घनांगुलके उपरिम घर्गके उपरिम घर्गमें घनापणंगुलके उपरिम घर्गके भाजित
 करने पर घनांगुलका उपरिम घण जाता है । पुनः प्रतंगुलके उपरिम घर्गसे घनांगुलके
 उपरिम घर्गके भाजित करने पर प्रतंगुल भ्रता है । पुनः आपसीके असंख्यातवें भागसे
 प्रतंगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याइष्टि अवहारकालका प्रमाण जाता
 है । उक्त मागहारके जितने अघच्छेद हैं उतनीवार उक्त मध्यमान पक्षिके अघच्छेद करने
 पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याइष्टि अवहारकालका प्रमाण जाता है । प्रतंगुलपर असंख्यातवें
 भागकय घनांगुलके असंख्यातवें भागकय और घनापणंगुलके मध्य घणमूलके असंख्यातवें
 भागकय पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याइष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारक
 कयन (पड़लेके समान) करना चाहिये । इस अवहारकालसे अगमणीके भाजित करने पर
 पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याइष्टि चिन्हममग्गीका प्रमाण जाता है । पहले विसमवार बारक
 मिथ्याइष्टि चिन्हममग्गीके संज्ञित आदिक्की प्रकल्पना का भावे ई, इसीप्रकार इस
 चिन्हममग्गीके संज्ञित आदिक्का प्रकल्प करना चाहिये ।

पुनः अवहारकालसे अगमतरक भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याइष्टि

मात्रिद-विरासिद अत्रिद-पमात्र-कारण-गिरुचि-वियप्या अहा येरइयमिच्छाइडिद्वपुरु
पमात्र परुविदा तहा परुवेयप्या ।

सासणसम्माइडिपिहुडि जाव सजदासजदा ति तिरि
फस्सोर्ध ॥ २८ ॥

एदस्स सुचस्स अहा तिरिक्खोपगुणपडिवप्पपमाणपरुवणमुचस्स वक्तव्यं कर
तहा अयम्भं । तिरिक्खेसु पंविदिए मोशूण अण्णरव गुणपडिवप्पजीवाने समवामावाहो ।
एवं पंविदियतिरिक्खपरुवणा समवा ।

संपदि पञ्चचशामकम्मोदयपंविदियतिरिक्खपमाणपरुवणं इवदि—

पंविदियतिरिक्खपञ्चमिच्छाइट्टी दन्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा' ॥ २९ ॥

एरव पंविदियगइण एइदिय-विगडिदियबुदासइं । तिरिक्खमिइसो देव-नेरइय
मणुसबुदासइो । पन्चचमिइसो अपन्चचबुदासइो । मिच्छाइडिपिइसेण सेसगुणइण

द्रव्यका प्रमाण आता है । अहित भाजित विपक्षित अणुत प्रमाण कारण विरक्ति
भीर विकल्पका प्रकरण विसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी प्रकरणके समय कर
व्यये है वसीप्रकार यहां पर वच सबका प्रकरण करना चाहिये ।

सासादनसम्पगइति गुणस्वानसे सेकर संयतासुपत गुणस्वानतक पंचेन्द्रिय
तिर्य्यक प्रत्येक गुणस्वानमें सामान्य तिर्य्यकोंके समान पन्थोपमके असंख्यातबें माग हैं ॥ २८ ॥

वित्तप्रकार सामान्य तिर्य्यकोंमें गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रमाणके प्रकरण करनेवाले
सूक्ष्म व्याख्यान कर भाये हैं वसीप्रकार इस सूक्ष्म व्याख्यान करना चाहिये क्योंकि
तिर्य्यकोंमें पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर दूसरे तिर्य्यकोंमें गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव संभव नहीं हैं ।
इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्य्यक प्रकरण समाप्त हुई ।

अब वित्तके पर्याप्त नामकर्मका उक्त पाया जाता है देखे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्य्यकोंके
प्रमाणका प्रकरण करते हैं—

पंचेन्द्रिय तिर्य्यक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ २९ ॥

सूक्ष्म पंचेन्द्रिय भीर विकल्पेन्द्रियोंके निराकरण करनेके लिये पंचेन्द्रिय पक्ष प्रहण
किया है । देव नारकी भीर मनुष्योंके निराकरण करनेके लिये तिर्य्यक पक्ष निर्देश किया है ।
अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके लिये पर्याप्त पक्ष निर्देश किया है । सूक्ष्म मिथ्यादृष्टि

बुदासो कदो इषदि । दम्बप्रमाणेणेचि निदेसेन रोच-कालबुदासो कदो इषदि । केवडिया इदि पुच्छासुचणिदेसेण छदुमरयाण कचारचमवणिद इषदि । असंखेन्जा इदि निदेसेण संखेन्जाणंवाण बुदासो कदो । किमह दम्बप्रमाणमेव पढम परुषिज्जदि ? न एस दोसो, अदीबंथूलसादो दम्बपरुषणा पढम परुषिज्जदे । कधमेदिस्से थूलचण ? असंखेज्जमेच विसेसिदसीवोवसमणिमिषादो । खेच-कालेहिंठो दम्बं थोवेसि वा पुन्व परुषिज्जदे । दम्बयोवचण कर्षं आणिज्जदे ? 'वट्ठीदु जीव-योग्गस-कासागासा अणतगुणा' एदम्हादो गाहासुचादो णम्पदे । सेसपरुषणा जहा गेरइयमिच्छाइदिदम्बप्रमाणपरुषणमुचस्स उषा तदा वचम्मा ।

असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण ॥ ३० ॥

पहले निर्देशसे दोय गुणस्थानोंका निराकरण हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इसप्रकारके निर्देशसे दोस भीर कामप्रमाणका निराकरण हो जाता है । कितने हैं 'इसप्रकार पृष्ठाकूप सूत्रके निर्देशसे छद्मप्रमाणकृत्यका निराकरण हो जाता है । 'असंख्यात है इसप्रकारके निर्देशसे संख्यात भीर अन्तर्गत निराकरण हो जाता है ।

श्रुका—पहले द्रव्यप्रमाणका ही प्रकरण क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—यह जोर दोष नहीं है क्योंकि, द्रव्यप्रमाणका अतीव स्थूल है इसलिये उसका पहले प्रकरण किया जाता है ।

श्रुका—यह द्रव्यप्रमाणका स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्योंकि यह द्रव्यप्रमाणका केवल असंख्यात विशेषणस युक्त जीवोंके ग्रहण करनेमें निमित्त है इसलिये स्थूल है ।

अथवा दोस भीर काइसे द्रव्य स्लोक है इसलिये उक्त दोनों प्रकरणोंके पहले द्रव्यप्रमाणका कथन किया जाता है ।

श्रुका—दोस भीर काइसे द्रव्य स्लोक है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—इदिक, अपेक्षा जीव पुत्रस वास भीर भावात् उचरोत्तर अन्तर्गतगुणे है इन गाथासूत्रसे जाना जाता है कि कास भीर दोससे द्रव्य स्लोक है ।

दोय प्रकरण का प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणके प्रकरण करनेवाले सूत्रकी वद भावे है उसप्रकार कहना चाहिये ।

कासकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय विषय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव अमग्न्यावासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्तर्पिणियों द्वारा प्रपट्ट हात है ॥ ३० ॥

मात्रिद-विरस्तिद-अवहिद-पमाप-कारण-निरुचि-वियप्या अहा येरूपमिच्छाद्विदम्बरु
वयाप परुविदा तदा परुवेयम्बा ।

सासपसम्माद्विप्यद्वि जाव सजदासजदा सि तिरि
फस्त्रोर्ध्व ॥ २८ ॥

एवस्तु सुचस्त अहा तिरिक्रोषगुणपद्विबन्धपमापपरुवगसुचस्त वनराग फ
तदा क्यप्यर्ध्व । तिरिक्रोषे सु पंचिदिए मोचूज अन्तरा गुणपद्विबन्धजीवाप समवाभावाद्दो ।
एवं पंचिदियतिरिक्त्वपरुवना समवा ।

संपदि पञ्चचपामकम्बोदयपंचिदियतिरिक्त्वपमापपरुवगं इवदि—

पंचिदियतिरिक्त्वपञ्चमिच्छाद्वि दव्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा' ॥ २९ ॥

एव पंचिदियगहणं पंचिदिय-विगडिदियबुदासहं । तिरिक्त्वविदेसो देव-नेरप
मधुसबुदासहो । पञ्चचविदेसो अपञ्चचबुदासहो । मिच्छाद्विदिदेसेण सेसगुणद्वय

द्रव्यका प्रमाण जाता है । अहित मात्रित विरहित अपहत प्रमाण कारण तिरि
और विकल्पका प्ररूपक त्रिसप्तकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी प्ररूपणाके समय कर
ज्ये है वसीप्रकार वहां पर सबका प्ररूपण करना चाहिये ।

साप्तादनसम्यग्दृष्टि गुणस्वानसे सेकर संपतासपत गुणस्वानतक पंचेन्द्रिय
तिर्य्य प्रत्येक गुणस्वानमें सामान्य तिर्य्यको समान पन्थोपमके असंख्यातवें माग हैं ॥ २८ ॥

त्रिसप्तकार सामान्य तिर्य्यकोमें गुणस्वानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाछे
सबका व्याख्या कर ज्ये है वसीप्रकार इस सबका व्याख्यान करना चाहिये क्योंकि
तिर्य्यकोमें पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर वृत्तरे तिर्य्यकोमें गुणस्वानप्रतिपक्ष जीव समब नहीं हैं ।
इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्य्य प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब जिनके पर्याप्त नामकर्मका बख पाया जाता है ऐसे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्य्यकोके
प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

पंचेन्द्रिय तिर्य्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ २९ ॥

सूत्रमें पंचेन्द्रिय और विकल्पेन्द्रियोंके निराकरण करनेके छिजे पंचेन्द्रिय पक्ष प्रहण
किया है । देव नारकी और मनुष्योंके निराकरण करनेके छिजे तिर्य्य पक्ष निर्देश किया है ।
अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके छिजे पर्याप्त पक्ष निर्देश किया है । सूत्रमें मिथ्यादृष्टि

पच्चिदियतिरिक्खुपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । मइमा तप्पाभोगासंखेज्जकूवे
वगिगळ्ळ पडरगुल भागे हिं पच्चिदियतिरिक्खुपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि ।
एत्थस्स संद्धिदत्तओ आणिय भाणियम्मा । एत्थ अवहारकालेण जगप्परे भागे हिदे
पच्चिदियतिरिक्खुपज्जत्तमिच्छाइट्ठिदम्ब होत्ति । एव पच्चिदियतिरिक्खुपज्जत्तमिच्छाइट्ठि
दम्बपक्खणा गदा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति ओध ॥ ३२ ॥

एत्थस्स सुत्तम्ब गदा तिरिक्खुगुणपट्टिक्खण सुत्तस्स वक्खमाण कं तदा कायम्ब,
मिसेमामावाणे । एव पच्चिदियतिरिक्खुपक्खणा समत्ता ।

पच्चिदियतिरिक्खुजोणिणीसु मिच्छाइट्ठी दम्बपमाणेण केव
डिया, असखेज्जा' ॥ ३३ ॥

एत्थ पच्चिदियणिरमो समिन्धियुत्तासङ्का । तिरिक्खुणिदमा ससगदिपुदासङ्का ।
जोणिणीणिरसो पुरिम-यपुमयमिगनुत्तासङ्को । मिच्छाइट्ठिणिरमो मसगुणपट्टिक्खुपुदासङ्को ।

६ । मयथा तद्योग्य संवत्सराका धरा करके और उस वर्णित राशिका प्रत्यक्षगुह्यमें भाग देन
पर पंचेन्द्रिय तिर्यक्ष पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकास होता है । इस अवहारकासके
गन्धित आदिकको समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकासस जगप्रत्ययेका प्रतिपादन करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक्ष पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका
द्रव्य होता है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक्ष पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्रकृति समान है ।

सामादनसम्पगदटि गुणस्थानमे लेपर मपत्तासयस गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यक्ष पर्याप्त जीव औपद्रव्यपणाके समान पन्थोपमके अमंस्यातये
माग ह ॥ ३२ ॥

जिसप्रकार तिर्यक्षोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रतिपादन करनेवाले मूलका व्याख्यान
कर भाषे हैं इसप्रकार इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये क्योंकि, उस मूलके
व्याख्यानमे इस सूत्रके व्याख्यानमे कोई बिरोधना नहीं है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक्ष
प्रकृति समान है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक्ष योनिमतिर्योगे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा किन्तु
है । अमरण्यात ह ॥ ३३ ॥

मूलमें पंचेन्द्रिय पक्ष निरुद्ध होय इन्द्रियोंके निवारण करनेके लिये किया है । तिर्यक्ष
पक्ष निरुद्ध होय गतिर्योगे निवारण करनेके लिये किया है । योनिप्रती पक्ष निरुद्ध
पुरुषलिंग और नपुंसकलिंगके निवारण करनेके लिये किया है । मिथ्यादृष्टि पक्ष निरुद्ध

पंचिदियतिरिक्खपञ्चचमिच्छाइट्ठीमभवहारकालो होदि । अइवा तप्पाओगासंखेज्जरूने वगिस्सण पदंगुणे मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खपञ्चचमिच्छाइट्ठीमभवहारकालो होदि । एदस्स खंडिदादओ आभिय माभियम्भा । एदेण अवहारकालेण अगपदरे मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खपञ्चचमिच्छाइट्ठिदम्ब होदि । एव पंचिदियतिरिक्खपञ्चचमिच्छाइट्ठि दम्बपरूणया गहा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासंजदा ति ओष ॥ ३२ ॥

एदस्स सुत्तस्य अहा तिरिक्खगुणपडिबन्नाण सुत्तस्स बफम्भाय कद तहा कायम्ब, विसेसामाबादो । एव पंचिदियतिरिक्खपरूणया समचा ।

पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केव डिया, असस्सेज्जा ॥ ३३ ॥

एत्थ पंचिदिमभिदेसो सेसिणियुदासट्ठो । तिरिक्खभिदेसा सेसगदियुदासट्ठो । आभिणीभिदेसो पुरिस-णवुसपग्गिगुदासट्ठो । मिच्छाइट्ठिभिदेसो सेसगुणपडिबन्नायुदासट्ठो ।

ई । मयथा तद्योग्य संवयातक्य वर्ग करके धीर उस वर्गित राशिवा प्रत्यंगुलमें माग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिष्यादृष्टियोंका अवहारकास होता है । इस अवहारकासके लक्षित ध्यादिकको समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकाससे अगप्रतरके माजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच पयास मिष्यादृष्टियोंका द्रव्य होता है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिष्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्रकृषया समाप्त हुई ।

मामाइनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर मयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त जीव ओषप्ररूपणाके समान पत्थोपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३२ ॥

जिसप्रकार तिर्यचोंमें गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रतिपादन करनेपाछे सूत्रका ध्याक्याम कर भाये हैं वसीप्रकार इस सूत्रका भी ध्याव्यान करना चाहिये, क्योंकि, उस सूत्रके ध्याक्यामसे इस सूत्रके ध्याव्यानमें कोई विशेषता नहीं है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यच प्रकृषया समाप्त हुई ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतिषोंमें मिष्यादृष्टि जीवें द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ३३ ॥

सूत्रमें पंचेन्द्रिय पदका निर्देश दोष दृष्टियोंके निवारण करनेके छिये किया है । तिर्यच पदका निर्देश दोष गतिषोंके निवारण करनेके छिये किया है । योनिमती पदका निर्देश पुनर्पक्षिण और नर्पुसचक्षिणके निवारण करनेके छिये किया है । मिष्यादृष्टि पदका निर्देश

कवित्या इति दुर्लभमेव सुखं संप्राप्यमानम् । अन्येभ्य इति विप्र
मनसःपुत्रस्य विनिर्दिष्टं मेव सुखं वदन्ति यथा ।

असत्त्वे-ज्ञानत्वे-नाहि व्योमिति-उत्तर-नाहि अवहिरसि
कालेण ॥ ३८ ॥

मम पितृपितृगणैश्च ज्ञानैश्च पुत्रैश्च नान्यतु नैव पुत्रोत्पत्तेरसम्भवात् ।

स्वेत्तेण पण्डित्यनिरिक्त्वा नोतिगिनिच्छाड्डीहि पदरमवहिरादि
त्वअवहारकालादो सुवेज्जगुणेण कालेण ॥ ३९ ॥

[illegible]

इस गुणधर्मप्रतिपक्ष अर्थोंक निश्चाय करनेक लिये किया है। किन्तु है इसका
 नृपसामय तत्त्वा (ईश गुणधर्म) प्रमाणताक प्रतिपादन करनेके लिये किया है। असेव्याप्त
 इस तत्त्वा निर्वेश करनेक तत्त्वा धर्मधर्म और समानता प्रतिपक्ष करता है। दोन व्याख्या
 तत्त्वाक सामान्यता का (ईश)

गन्ध्यात् अथवा पचन्ति पचयन्ति पचिष्यन्ति च अस्मत्प्राप्तं
गन्ध्यात् अथवा पचन्ति पचयन्ति पचिष्यन्ति च अस्मत्प्राप्तं ॥ ३४ ॥

यहाँ गद्यरूप गृह्य । मिथ्यादृष्टि इस पक्षी अनुसृष्टि कर सेवा चाहिये ।
गुहाय नहीं बन सकना है । शेष कथन पक्षेन्द्रिय स्थिति पर्याप्त मिथ्यादृष्टियों के प्रमाण
बान्धव । अपेक्षा प्रकथन करतबाल गृह्ये अनुसार करना चाहिये ।

अवहारकानाम् सम्पत्तयः अवहारकानाम् अग्रतः अपहृतः होता है ॥ ३५ ॥

[illegible]

पंचेन्द्रिय निर्बन्ध बोधिमती मिथ्यावादिप्रवर्गी अन्धकारवास है। अथवा, छहरी योजनाके अनुसार करके हम करन पर इच्छावर्गी बोधितोषी लेखीत बोधाद्येष्टी उत्तीत बोधी प्राक्त नीर बीसत बोधी इन्कार प्रवर्गीगुण प्रमात पंचेन्द्रिय विषय योगमती मिथ्यावादिपोंका अन्धकारवास होता

१ कल्पवृक्षोत्पत्तिरूपगारा अभिषेचन परिधान । नो. जी २५४

कोडिसद-तेषीसकोडाकोडि-छत्तीसकोडिलकख घउमट्टिकोडिसहस्रकरुनेहि पदरगुलमोबहे
 लण तस्सुवरिमवग्गे माग हिद पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाइड्डिमवहारकात्तो होदि ।
 एउ केसिंभि आइरियवक्खण पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिजोगिणीवहारकालपडिपइ ग
 पड्ठे । कुटो ? पुरदो पाणवैतरदेवाणं विष्णिजोयणसुदमगुलवग्गेमववहारकात्तो होदि
 सि वक्खणाणप्पमात्ता । इद वक्खाम असख पाणवैतरमवहारकालपमाणवक्खुण्ण सखमिदि
 कष जाणिज्जे ? गरिब एत्थ अम्हाणमेयत्तो, किंतु दोण्ण वक्खणाणं मउत्ते एकेण
 वक्खणेण असखण हादव्व । अहवा दोणिं वि वक्खणाणि असखाणि, एसा अम्हाणं
 पइत्ता । कपमेत्ता जाणिज्जे ? पंचिदियतिरिक्खजोगिणीहिंता पाणवैतरदेवा संखजगुणा,

ई । मयथा इक्ष्मीसत्ती कोडाकोडी तेषीस कोडाकोडी छत्तीस कोडी व्याप्त भीर बीसउ
 कोडी हजार प्रमाण संख्यासे प्रतरांगुलको मयबर्णित करके जो छप्प भाये उसका प्रतरांगुलके
 उपरिम वर्गमें माग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका मयहारकाळ होता है ।

विश्लेषार्थ—एक योजनके चार कोस एक कोसक दो हजार धनुष एक धनुषके
 चार हाथ भीर एक हाथके बीबीस अंगुल होते हैं, इसलिये एक योजनके अंगुल करने पर
 $१ \times ४ \times २००० \times ४ \times २४ = ७६८०००$ प्रमाण अंगुल आते हैं । ७६८०० को १०० से गुणा
 कर देने पर ७६८०० योजनके ४६८०००००० प्रमाण अंगुल हो जाते हैं । ४६८०००००० संख्यातक
 वग कर देने पर २१ २३ १६ १४ ०००० ०० प्रमाण प्रतरांगुल होते हैं । इनका भाग
 अष्टप्रतरमें देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिषोंके मयहारकाळसे संवत्स रत्नेचासा यह किन्ने ही
 व्याख्याओंका व्याख्यान घण्टित नहीं होता है क्योंकि, तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र व्यंत्तर
 हेतोंका मयहारकाळ होता है ऐसा भाग व्याख्यान देखा जाता है ।

श्रृंखला—यह पूर्वांक पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिषोंके मयहारकालका व्याख्यान असत्य
 है भीर व्याख्यंतर देयाके मयहारकाळके प्रमाणका व्याख्यान सत्य है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—इस विषयमें पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतीसंबन्धी मयहारकाळका व्याख्यान
 असत्य ही है भीर व्यंत्तर वृत्तोंके मयहारकाळका व्याख्यान सत्य ही है ऐसा कुछ हमारा
 प्रकृत मत नहीं है किंतु हमारा इतना ही कहना है कि उक्त दोनों व्याख्यानोमेंसे कोई एक
 व्याख्यान असत्य होना चाहिए । अथवा उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं यह हमारी
 प्रतिज्ञा है ।

प्रश्न—उक्त दोनों व्याख्यान असत्य हैं अथवा उक्त दोनों व्याख्यानोमेंसे एक

जो अशुद्धि वादी वेत्तावेहि निश्चिन्ता न । दोषि निदोषी इति वेदवेदि एव रिक्तः ॥ वेदिकवृत्ति
 दोषो वक्तव्यो वक्तव्येति वृत्तक वा । एतत् तथा वाच्यं वेदवक्तव्यव वेदः ॥ वक्तव्येति शेषः x x ।
 श्रि. ५ व ५ ।

तस्यैव देवीमो संलज्जमुणाया' एदम्हादो रुद्रार्चपसुपादो आभिजते । य च सुचम
प्यमार्थं कात्स्न्यं वक्तव्यार्थं पमाणमिदि बोरुं सक्रिजदे, अइप्पसगादो । य च एदंस्स
देवस्स एका येव देवी हादि पि शुची अरिय, भवणादियाण' भूओदवीनमागमेवो-
वर्लमादो देवेहिंतो देवीमो वचीसगुणाओ पि वक्तव्यानदसपादा च । तम्हा अदि
वाणवेंतरदेवभवहारकाओ तिण्णिओयणसद्वं गुलवग्गमेचो पि चिन्डओ अरिय तो
ओपिणीमवहारकासगुप्पायणहुं तिण्णिओयणसद्वं गुलवग्गमिह वचीसोचरमदपहुदि विव-
दिहुमावो गुणगारो पवेसेयणो । अथ ओपिणीमवहारकाओ छज्जोपणमद्वं गुलवग्गमसा
पि विण्णओ अरिय तो वाणवेंतरववहारकासगुप्पायणहुं छज्जोयणसद्वं गुलवग्गा वेचीम
पहुदि विण्णदिहुमावसेल्लवक्करूपेहि ओवहेयण । अहवा उमपरम वि पहरगुलस्स तणा-
ओम्हो गुणगारो दाद्वओ ।

एत्थं संविदादिनिहिं वचइस्सामो । त अहा— पहरगुलउपरिमवग्गे पहरगुलस्स

वाक्यान् तो असत्य है ही यह कैसे जाना जाता है ?

प्रमाणान — पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिपोंके बाधव्यस्तर् देव संवपातगुणे है और
उनकी देवियां बाधव्यस्तर् देवोंसे संवपातगुणी हैं' इस सुदृढार्थके सूत्रसे उक्त अभिप्राय ज्ञात
जाता है । सूत्रको समझाने के उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है,
अथवा अतिप्रसंग होय या आपत्ता । यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है यह मुक्ति
ही आप सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि मन्त्रवाची यदि देवोंके बहुतसी देवियोंका ध्यायमें उप-
देश पाया जाता है । और 'देवोंसे देवियां वचीसगुणी होती हैं' ऐसा व्याख्यान भी देता जाता
है । इसलिये बाधव्यस्तर्देवोंका व्यवहारकाक तीवरी योजनोंके भंगुलोंका वर्गीकरण है यदि ऐसा
निश्चय है तो पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिपोंके व्यवहारकाकके उत्पन्न करनेके लिये तीवरी
योजनके भंगुलोंके वर्गमें जो राशि मिलेवते देवी हो तदनुसार वचीस अधिक ही यदि
उप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये । अथवा, पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिपोंका व्यवहारकाक
छहसी योजनोंके भंगुलोंका वर्गीकरण है यदि ऐसा निश्चय है तो बाधव्यस्तर् देवोंका व्यवहार
काक उत्पन्न करनेके लिये तेसीस यदि जो संख्या मिलेन्द्रदेवने देवी हो उससे छहसी योजनोंके
भंगुलोंके वर्गको अपवर्जित करना चाहिये । अथवा बाधव्यस्तर् और पंचेन्द्रिय तिर्यक् बन्धिसती,
एक दोनोंके व्यवहारकाककोके लिये दोनों स्वार्थोंमें भी प्रत्यंगुलके उसके योग्य गुणकार दे
देवा चाहिये ।

अब यहां लंघित व्याधिकार्य विधियों बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— प्रत्यंगुलके
व्यतिरिक्त वर्गके प्रत्यंगुलके संख्यातर्थात् प्राणमात्र जोड़ करने पर उनमेंसे एक लंघ प्रमाण

१ अत्रिः कर्माविपत्तौ इति पाठः ।

२ एतिसिद्धिं वरीय देवी । श्री जी. २७

३ अत्रिः विष्णुजीवन इति पाठः ।

संख्खज्झदिभागमत्तपुंठ कए तत्थेयपुंठ पंचिदियतिरिक्खज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालो होदि । खंदिदं गद । पदरंगुलस्स संख्खज्झदिमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गे मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालो होदि । माजिद गद । पदरंगुलस्स संगुलज्झदिभाग विरलळण एकेकस्स रूपस्स पदरंगुलस्सुवरिमवग्ग समख्ख करिय दिण्णे तत्थ एगपुंठ पंचिदियतिरिक्खज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालो होदि । विरलिद गद । पदरंगुलस्स संख्खज्झदिभाग सलागभूदं उवेळण पदरंगुलउवरिमवग्गादो पंचिदियतिरिक्ख ज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहारकालपमाणमवणिय मलागादो एगख्वमवणियम्भं । एवं पुणो पुणो अबहिरिज्झमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गो सलागाओ च शुगबं णिट्ठिदाओ । तत्थ आदीए अत्ते मज्जे वा एयवारमवहिदपमाण पंचिदियतिरिक्खज्झोणिणीमिच्छाइडिअबहार-कालो होदि । अवहिद गद । तस्स पमाण पदरंगुलउवरिमवग्गस्स असंख्खज्झदिभागो संख्खज्झाणि पदरंगुलाणि । त भद्दा— पदरंगुलेण पदरंगुलउवरिमवग्ग मागे हिदे पदरंगुल मागच्छदि । पदरंगुलस्स दुमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गे मागे हिदे दाण्णि पदरंगुलाणि आगच्छति । पदरंगुलस्स विमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गे मागे हिदे तिण्णि पदरंगुलाणि

पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भवहारकाल होता है । इसप्रकार खंडितना बर्चन समाप्त हुआ । प्रतरंगुलके संख्यातर्षे भागसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके माजित करने पर पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भवहारकाल होता है । इसप्रकार माजितका वजन समाप्त हुआ । प्रतरंगुलके संरपातर्षे भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरंगुलके उपरिम वर्गको समान लंब करके वृक्षरूपसे वे देने पर यहाँ एक लंबमात्र पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भवहारकाल होता है । इसप्रकार विरलितना वजन समाप्त हुआ । प्रतरंगुलके संरपातर्षे भागको दासाकाररूप स्थापित करके प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमेंसे पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भवहारकाल घटा देना चाहिये । एकवार घटाया इसलिय दासाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमेंसे पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भवहारकाल और दासाकाराशिमेंसे एक पुनः पुनः घटाते जाते पर प्रतरंगुलका उपरिम वर्ग और दासाकार एकसाथ समाप्त हो जाती है । यहाँ भाजिमें अन्तमें अथवा मध्यमें एकवार खितना प्रमाण घटाया जाए उतना पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भवहारकाल होता है । इसप्रकार अग्रहतका वजन समाप्त हुआ । उस पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि भवहारकालका प्रमाण प्रतरंगुलके उपरिम वर्गका अनन्यात्मकी भाग है जो संख्यात प्रतरंगुलप्रमाण है । इसका स्वरूपीकरण इसप्रकार है— प्रतरंगुलका प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर एक प्रतरंगुल भूता है । प्रतरंगुलके दूसरे भागका प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरंगुल मध्य भाग है । प्रतरंगुलके तीसरे भागका प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरंगुल सध्य भाग है । इसीप्रकार कमसे भागे जाकर

तत्वेन देवीशो संलेखगुणाशो' एवमादौ सुरार्चयसुचादो आभिजडे । न च सुचम
 प्यमात्र काष्ठग वक्षसार्च पमाणमिदि शोशु सक्तिजडे, अह्मसगादा । न च वक्षसम्
 देवस्य एक चेव देवी होदि चि शुची अरिय, मन्वादिदियार्च' भूमादेवीवमात्रपेवो-
 वसंमादो देवेहितो देवीशो वचीसगुणाशो चि वक्षसापदसगादो च । तन्मा यदि
 वामवैतरदेवअवहारकाशो तिन्निजोपयसद्वर्गगुलवगमेचो चि पिच्छजो अरिच तो
 ओणिजीअवहारकासमुप्यापयङ्गु तिन्निजोपयसद्वर्गगुलवगमादि वचीसोचरमद्वपुडि विव-
 दिङ्गमाचो गुणगारो पवेसेयम्भो । अथ ओणिजीअवहारकाशो छज्जोयममर्दगुलवगमयो
 चि विन्निजो अरिच तो वामवैतरमवहारकासमुप्यापयङ्गु छज्जोयममर्दगुलवगमा तेचीम
 पपुडि विवदिङ्गमावसंलेखरूपेहि मोवद्वयम्भ । अहवा उमयत्य वि पदंगुलस्त तन्मा
 ओमो गुणगारो दादम्भो ।

एव संदिवादिभिर्हि वक्षस्सामो । त अहा— पदंगुलउवरिमवगो पदंगुलस्त

व्याख्यान तो असत्य है ही, यह कैसे जाना जाता है ?

ममाधान — पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिर्योति वाचस्पत्यर देव संख्यातगुणे है और
 उनकी देवियां वाचस्पत्यर देवोंसे संख्यातगुणी है' इस सुरार्चयके सूत्रसे उक्त अभिप्राय जाना
 जाता है । सूत्रको अभिप्राय करके उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है,
 कल्पया जतिप्रसंग शेष था जायगा । यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है यह पुनः
 ही जाय तो मी ठीक नहीं है, क्योंकि मन्वावाची आदि देवोंके बहुतसी देवियोंका व्यागमने उक्त
 है। पावा जाता है । और 'देवोंसे देवियां वचीसगुणी होती है' ऐसा व्याख्यान मी देखा जाता
 है । इसलिये वाचस्पत्यरदेवोंका अवहारकास तीनही योजनोंके अंगुल्लोंका वर्गमात्र है यदि ऐसा
 निश्चय है तो पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिर्योतिके अवहारकासके उत्पन्न करनेके लिये तीनों
 योजनके अंगुल्लोंके वर्गमें जो राशि जिनदेवने देवी हो तदनुसार वचीस अधिक सौ अरि
 रूप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये । अथवा, पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिर्योतिका अवहारकास
 छहही योजनोंके अंगुल्लोंका वर्गमात्र है यदि ऐसा निश्चय है तो वाचस्पत्यर देवोंका अवहार
 कास उत्पन्न करनेके लिये तेसीस आदि जो संख्या जिनैन्द्रदेवने देवी हो उससे छहही योजनोंके
 अंगुल्लोंके वर्गसे अपवर्तित करना चाहिये । अथवा वाचस्पत्यर और पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती
 इन दोनोंके अवहारकासोंके लिये दोनों क्षान्तोंमें मी प्रत्यंगुल्लके उसके योग गुणकार है
 देना चाहिये ।

अब यहां लंघित आदिककी विधिको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— प्रत्यंगुल्लके
 उपरिम वर्गके प्रत्यंगुल्लके संख्यातर्च भागमात्र जोड़ करने पर इनमेंसे एक जोड़ प्रमाण

१ महीन वाचस्पत्यर इति पाठः ।

२ इतिपुनश्चि वचीस देवी । यो जी. २७८

३ महीन तिन्निजोपय इति पाठः ।

अवहारकालो आगच्छति । अद्वयवृत्त्या गदा । घणाघणे वचस्मात् । पदरगुलस्स संस्नेहदिभाषण पदरगुल गुणेऽप्य तेण पदरगुलघणस्स पदमवगमूल गुणिय-घणाघणगुले मागे हिं पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छति । त अहा-घणगुलेण घणाघणगुल भाग हिं घणगुलउपरिमवग्गो आगच्छति । पुणो पदरगुलेण घणगुलउपरिमवग्गे भाग हिं पदरगुलउपरिमवग्गो आगच्छति । पुणो पदरगुलस्स संस्नेहदिभाषण पदरगुलउपरिमवग्गे मागे हिं पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छति । हेडिमवियप्पो गदो ।

गहिदादिमेण उपरिमवियप्पो तिजिहो । सत्य वेरुवे गहिं वचस्मात् । पदरगुलस्स संस्नेहदिभाषण पदरगुलउपरिमवग्गे मागे हिं पंचिदियतिरिक्खजोणिणी मिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छति । तस्स भागहारस्स अद्वेदणपमेस रासिस्स अद्वेदणप कदे वि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो होति । एसो मन्तिमवियप्पो उपरिमवियप्पणिणयज्जणह समाविदो । पदरगुलस्स संस्नेहदिभाषण पदरगुलउपरिमवग्गं गुणेऽप्य तस्सुपरिमवग्गे मागे हिं पंचिदियतिरिक्खजोणिणी

योनिमती मिथ्यादृष्टिर्षोका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अथर्व प्रपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें अथर्वन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातमें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करने को छप्प भाग उल्लेख प्रतरांगुलके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने को छप्प भाग उसका घनाघनांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टिर्षोका अवहारकाल आता है । उसका स्वीकरण इसप्रकार है—घनांगुलसे घना घनांगुलके माहित करने पर घनांगुलका उपरिम घन आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके उपरिम घनके माहित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम घन आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातमें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम घनके माहित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टिर्षोका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अथर्वन विकल्प समाप्त हुआ ।

पृथीक आदिक भेदमें उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे प्रथममें पृथीक उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातमें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम घनके माहित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टिर्षोका अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके कितने अथर्वेष्ट हों उतनीवार उक्त अथर्वमात्र आदिक अथर्वेष्ट करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका निगण कराने के लिये बतलाया गया है । प्रतरांगुलके संख्यातमें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम घनमें गुणित करने को छप्प भाग उसका प्रतरांगुलके उपरिम घनके उपरिम घनमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । इसप्रकार

आगच्छति । एवं क्रमेण गतुं पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुलवरिमवगमे मागे हिदे संखेज्जभाणि पदरंगुलाणि आगच्छन्ति । पमाण-कारणानि गदाणि । तस्म का भिरुची ? पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुल भागे हिद लद्धमिह अशियाणि रुवाणि तथियाणि पदरंगुलाणि हवन्ति । भिरुची गदा ।

वियप्पो हुविहो, हेड्डिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चदि । तत्त हेड्डिमवियप्पं वचस्सामो । पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धेण त चेव गुविदे पंधिदियतिरिक्खओणिणीमिष्ठाद्धिअवहारकाळा होदि । अहवा वेरुमे हेड्डिमवियप्पो गत्थि, विहज्जमाणरासीदो हेड्डिमपदरंगुल पेक्खिय पंधिदियतिरिक्खओणिणीमिष्ठाद्धि अवहारकस्तस्म बहुगुवलमायो । न च योवरामिमवहरिय ततो बहुवरासी उप्पादेदु सद्धि-ज्जदे, विरोहा । अहुरुवे वचस्सामो । पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुलं गुभेज्ज पदरंगुलपणे भागे हिदे पंधिदियतिरिक्खओणिणीमिष्ठाद्धिअवहारकाळो होदि । त अहा-पदरंगुलेण पदरंगुलपणं भागे हिद पदरंगुलवरिमवगमो आगच्छदि । पुणा पदरंगुलस्त संखेज्जदिभागेण पदरंगुलवरिमवगमे भागे हिदे पंधिदियतिरिक्खओणिणीमिष्ठाद्धि

प्रतरंगुलके संप्यातवें मागसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गमें माग देने पर संख्यात प्रतरंगुल सध्य आते हैं । इसप्रकार प्रमाण और करणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शंका— इसठी क्या बिबक्ति है ?

समाधान— प्रतरंगुलक संप्यातवें मागसे प्रतरंगुलके माजित करने पर सध्यमें जो प्रमाण आये उससे प्रतरंगुल बोनिमती मिष्ठाद्धि अवहारकाळमें होते हैं । इसप्रकार बिबक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

बिबक्ष्य दो प्रकारका है अथस्तन बिबक्ष्य और उपरिम बिबक्ष्य । इनमेंसे अथस्तन बिबक्ष्यको बतछाते हैं— प्रतरंगुलके संप्यातवें मागसे प्रतरंगुलके माजित करने पर जो सध्य आये उससे उसीके अर्थात् प्रतरंगुलके गुणित कर देने पर पंधेन्द्रिय तीर्थज बोनिमती मिष्ठाद्धिप्योक्त अवहारकाळ होता है । मण्वा वहाँ बिबक्ष्यधारामें अथस्तन बिबक्ष्य नहीं बजता है क्योंकि, मज्जमान राशिची अपेक्षा अथस्तन प्रतरंगुलको देखते हुए पंधेन्द्रिय तीर्थज बोनिमती मिष्ठाद्धिप्योक्त अवहारकाळ बहुत बड़ा है । कुछ स्तोत्र राशिको अपहत करने उससे बड़ी राशि नहीं उत्पन्न की जा सकती है क्योंकि, देसा मानमें बिरोध स्पष्ट है ।

जब अथकपमें अथस्तन बिबक्ष्य बतछाते हैं— प्रतरंगुलके संप्यातवें मागसे प्रतरंगुलको गुणित करने जो सध्य आये उससे प्रतरंगुलके बगके माजित करने पर पंधेन्द्रिय तीर्थज बोनिमती मिष्ठाद्धिप्योक्त अवहारकाळ होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरंगुलसे प्रतरंगुलके बगके माजित करने पर प्रतरंगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरंगुलके संप्यातवें मागसे प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके माजित करने पर पंधेन्द्रिय तीर्थज

अवहारकालो आगच्छदि । अद्वयव्यवस्था गदा । वणावधे वचइस्सामो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाएण पदरगुल गुणेऊण तेण पदरगुलवणस्स पडमवग्गमूल गुणिय वणावणगुले मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खवोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो आगच्छदि । त वहा-
वणगुलण वणावणगुले मागे हिदे वणगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुलेण वणगुलउवरिमवग्गो माग हिदे पदरगुलवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुलस्स संखेज्जदिमाएण पदरगुलवरिमवग्गो मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खवोणिणीमिच्छाइडिअव-
हारकालो आगच्छदि । हेड्डिमवियप्पो गदो ।

गदिदादिमेएण उवरिमवियप्पो तिचिहो । तत्थ वेरुव गदिदं वचइस्सामो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाएण पदरगुलवरिमवग्गो मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खवोणिणी मिच्छाइडिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वयेदणपमेचे रासिस्स अद्वयेदमए कदे वि पंचिदियतिरिक्खवोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिमवियप्पो उवरिमवियप्पणिणायजणहू सभाविदो । पदरगुलस्स संखेज्जदिमाएण पदरगुलउवरिमवग्ग गुणेऊण वस्सुवरिमवग्गो मागे हिदे पंचिदियतिरिक्खवोणिणी

योनिमती मिष्पादृष्टिपोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टरूप मन्त्रपणा समाप्त हुई ।

अथ घनाघनमें अष्टरूप विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संप्रयातर्ग भागसे प्रतरांगुलके गुणित करने जो लघ्य भावे उससे प्रतरांगुलके वर्गके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने जो लघ्य भावे उसका घनाघनांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्पादृष्टिपोंका अवहारकाल आता है । उसका स्वीकरण इसप्रकार है—घनांगुलसे घना घनांगुलके माश्रित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके उपरिम वर्गके माश्रित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संप्रयातर्ग भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके माश्रित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्पादृष्टिपोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टरूप विकल्प समाप्त हुआ ।

स्वीत नाविके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे प्रथममें स्वीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संप्रयातर्ग भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके माश्रित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्पादृष्टिपोंका अवहारकाल आता है । उक्त मागहारके अन्तर्गत अर्धच्छेद हैं इतनीवार उक्त अष्टमान राशि अष्टच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्पादृष्टि अवहारकाल आता है । यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका मिश्रण करानेके लिये बतलाया गया है । प्रतरांगुलके संप्रयातर्ग भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लघ्य भावे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिष्पादृष्टि अवहारकाल आता है । इसप्रकार

मिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । एवमुपरि आपिऊण वचन्य ।

अद्वन्द्वे वचइस्सामो । पदरगुलस्स संयेज्जदिमाण पदरगुलउपरिमवग्गस्स वरिमवग्गं गुणेऊण पणगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पचिदिपतिरिक्ख ज्जेविणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा- पदरगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं वणंगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पदरगुलउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुन पदरगुलस्स संयेज्जदिमाण पदरगुलउपरिमवग्ग मागे हिदे पचिदिपतिरिक्खज्जेविणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । तस्स मागहारस्स अद्वन्द्वेवपमेवे रामिस्स अद्वन्द्वेवप क्खे वि पचिदिपतिरिक्खज्जेविणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । पणापमे वचइस्सामो । पदरगुलस्स संयेज्जदिमाण पदरगुलउपरिमवग्गस्स वरिमवग्ग गुणेऊण तेण वणंगुलउपरिमवग्गस्स तन्वग्गारग्ग गुणेऊण पणापणंगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पचिदिपतिरिक्खज्जेविणीमिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा- पणंगुलउपरिमवग्गस्स वणंगवग्गेण पणापणंगुलउपरिमवग्गस्स वरिमवग्गे मागे हिदे वणंगुलउपरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुन पदरगुलउपरिम

ऊपर ज्ञानकर मी कथन करना चाहिये ।

अथ अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विक्षयको बतलाते हैं— प्रतरंगुलके संख्यातमें भागसे प्रतरंगुलके उपरिम बर्गके उपरिम बर्गको गुणित करके जो छब्ब मावे उसका वर्ग गुलके उपरिम बर्गके उपरिम बर्गमें माय देने पर एवेन्द्रिय तिर्व्व योनिमती मिष्यादपि अवहारकाल भवता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरंगुलके उपरिम बर्गके उपरिम बर्गका वर्गागुलके उपरिम बर्गके उपरिम बर्गमें माग देने पर प्रतरंगुलका उपरिम बर्ग आता है । पुनः प्रतरंगुलके संख्यातमें भागसे प्रतरंगुलके उपरिम बर्गके गुणित करने पर एवेन्द्रिय तिर्व्व योनिमती मिष्यादपि अवहारकाल भवता है । उक्त मागहारके श्रितने अर्धच्छेद हो पतनीकार उक्त मज्जमाव राशिके अर्धच्छेद करने पर मी एवेन्द्रिय तिर्व्व योनिमती मिष्यादपि अवहारकाल भवता है ।

अथ ज्ञानात्ममें गृहीत उपरिम विक्षयको बतलाते हैं— प्रतरंगुलके संख्यातमें भागसे प्रतरंगुलके उपरिम बर्गके उपरिम बर्गको गुणित करके जो छब्ब मावे उससे वर्गागुलके उपरिम बर्गके बर्गके वर्गको गुणित करके जो छब्ब मावे उसका वर्गागुलके उपरिम बर्गके उपरिम बर्गमें माय देने पर एवेन्द्रिय तिर्व्व योनिमती मिष्यादपि अवहारकाल भवता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— वर्गागुलके उपरिम बर्गके वर्गके वर्गका वर्गागुलके उपरिम बर्गके उपरिम बर्गमें माय देने पर वर्गागुलके उपरिम बर्गका उपरिम बर्ग आता है । पुनः

वगस्सुवरिमवग्गेण वणगुलठवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे पदरगुलठवरिमवग्गे
आगच्छदि । पुनो पदरगुलस्स संखज्जदिमाण पदरगुलठवरिमवग्गे मागे हिदे पधि
दियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाद्विट्ठिमवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अदन्धेदणय
मेत्ते रामिस्स अदन्धेदणय कदे वि पध्दिदियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाद्विट्ठिमवहारकालो
आगच्छदि । एवमुवरि आबिठ्ठण भेयम् । पदरगुलठवरिमवग्गस्स पणंगुलठवरिमवग्गस्स
घणापणंगुलस्स च असंखज्जदिमाण पध्दिदियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाद्विट्ठिमवहारकालेन
गदिदगहिदो गदिदगुणगारा च साहेयम्भो । एदण अबहारकालेन जगमेत्तिदि मागे
हिद पध्दिदियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाद्विट्ठिमवहारकालो आगच्छदि । तेनेव जगपन्ने मागे
हिद पध्दिदियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाद्विट्ठिमवहारकालो आगच्छदि ।

सासणसम्माहट्ठिणहुडि जाव संजदासजदा त्ति ओघ ॥ ३६ ॥

दशपद्यालुगमे तिरिक्कण्णिपमाणपरुवण इवदि । पदववट्टियणए पुन अवलपिज्जमाणे
तिरिक्कोपपरुवणाए पध्दिदियतिरिक्खज्जोपपरुवणाए वा पध्दिदियतिरिक्खज्जोणिणी
गुणपडिबण्णपरुवणा समाना य इवदि, विषेदरामीदो इरिपवेदेगरासिस्स समानचाजुव
प्रतंगुलके उपरिम वगके उपरिम वगका घनांगुलके उपरिम वगके उपरिम वगमें भाग देने
पर प्रतंगुलके उपरिम वग भाता है । पुनः प्रतंगुलके संख्यातमें भागमे प्रतंगुलके
उपरिम वगके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि भयहारकाल भाता
है । उक्त भागहारके जितने भयच्छेद हो उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके भयच्छेद करने पर
भी पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि भयहारकाल भाता है । इसीप्रकार ऊपर जानकर
छे जाना चाहिये । प्रतंगुलके उपरिम वगके मसख्यातमें भागकर घनांगुलके उपरिम वगके
भयख्यातमें भागकर भीर घनापणंगुलके मसख्यातमें भागकर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती
मिथ्यादृष्टि भयहारकालके छाय गृहीतगृहीत भीर गृहीतगुणधरके साथ लेना चाहिये । इन
भयहारकालसे जगधेयीके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टि भिन्न
मूर्ती भाती है । भीर इसी भयहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक्
योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य भाता है ।

मासादनसम्पग्गदि गुणस्थानम लेकर सयतारंपठ गुणस्थान तक प्रत्येक गुण
स्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती कीव तिर्यक्-सामान्य प्ररूपणाकं समान पन्थोपमक
अमख्यातमें भाग है ॥ ३६ ॥

प्रध्यायिक नवका भाधय लेकर मासादनसम्पग्गदि भादि गुणस्थानकी पंचेन्द्रिय
तिर्यक् योनिमती जीर्णोद्दी प्ररूपणा तिर्यक् सामान्य प्ररूपणाके समान है । परन्तु
पयाध्यायिक नवका भयसम्भ करने पर तिर्यक् सामान्य प्ररूपणा भयया पंचेन्द्रिय तिर्यक् पयाज
सामान्य प्ररूपणाकं समान पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती गुणस्थानप्रतिपक्ष जीर्णोद्दी प्ररूपणा
नहीं होती है क्योंकि तीन वेदपामी राशिमे एक कीवकी जीर्णोद्दी समानता नहीं बन

वर्त्तय, तम्हा विसृज्य होदम्ये । ते विमस पुम्नाइरियाधिरुद्रोवणस्य वचइस्सामो । तं
जहा- पंचिदियतिरिक्खपञ्चमसंभदसम्माइड्डिअवहारकात्ते भावलिपाए असंखेअदि
माण गुणिदे पंचिदियतिरिक्खजोनिनीअसंभदसम्माइड्डिअवहारकात्तो इदि । तमावलि-
पाए असंखेअदिमाण गुणिदे पंचिदियतिरिक्खजोनिनीसम्माभिन्नाइड्डिअवहारकात्ता
होदि । तं सखन्वरूवेहि गुणिदे तत्तेव साधनसम्माइड्डिअवहारकात्ता इदि । तमावलिपाए
असंखेअदिमाण गुणिदे सभदासवदमवहारकात्तो होदि । एवेदि अवहारकात्तहि
खडिदादओ ओषमंगा । पंचिदियतिरिक्खपञ्चमसंभदसम्माइड्डिरासीदा
तत्तेव इतिवेदासंभदसम्माइड्डिरासी किमड्डुमसखन्वरूगुणीया ? पुरिसवेदासंभदसम्माइड्डिरासीदा
सखिपिबेदोदण पठर दसणमोहणीयखोपसमामावादो । जदि एवं तो तत्पठवइति
भदमसंभदसम्माइड्डिरासीदा ततो अप्पत्तत्तवणगमुसगरेदअसंभदसम्माइड्डिरासिस्स असं-
खेअगुणीयत्त पञ्चमदे ? मवदु णाम अबिदुत्तादा । पंचिदियतिरिक्खपञ्चमसंभद-
सम्माभिन्नाइड्डिरासीदो पंचिदियतिरिक्खजोनिनीअसंभदसम्माइड्डिरासी किं समो किं

सकती है । इसलिये सामान्य प्रकृपासे यह प्रकृपा विरोध होता चाहिये । भाष्य उस
विरोधके पूर्व आचार्योंके अविरुद्ध तत्पेक्षाके अनुसार बतलाते हैं । यह इत्यन्तर है—
पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त असंपत्तसम्बन्धिसंबन्धी अवहारकात्तको आचर्यके असंख्यातके
मात्रसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती असंपत्तसम्बन्धिसंबन्धी अवहारकात्त होता है ।
उसे आचर्यके असंख्यातके भाष्यसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती सम्प्रतिष्ठा-
इति अवहारकात्त होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर वही पंचेन्द्रिय तिर्यक्
योगिमतीमें सत्सत्तसम्बन्धिसंबन्धी अवहारकात्त होता है । इसे आचर्यके असंख्यातके मात्रसे
गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती संपत्तासंपत्त अवहारकात्त होता है । इन अवहार
कात्तोंके द्वारा कथित आधिक्य अथवा सामान्य तिर्यक्के कथित आधिक्यके कथनके समान है ।

छंदा— पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंमें प्रकृपवेदी असंपत्तसम्बन्धिसंबन्धी जीवराशि
वही पर जीवेदी असंपत्तसम्बन्धिसंबन्धी जीवराशि अवस्थातगुणी हीन किस कारणसे है ?

समाधान— प्रकृपवेदी अपेक्षा अप्रकृत स्वीकृतके उदयके साथ प्रकृपके द्वारा
मोहनीयके उपयोगका अभाव है ।

छंदा— यदि ऐसा है तो कहीं पंचेन्द्रिय तिर्यक्में जीवेदी असंपत्तसम्बन्धिसंबन्धी जीव
राशिसे जीवेदिनीसे भी अप्रकृत प्रकृपवेदी असंपत्तसम्बन्धिसंबन्धी जीवराशिसे असंख्यातगुणी
हीनता प्राप्त हो जाती है ?

समाधान— जीवेदिनीसे प्रकृपवेदीके असंख्यातगुणी हीनता प्राप्त होती है
तो हो जाये क्योंकि ऐसा स्वीकार कर देनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त हीनों वेदाधी सम्प्रतिष्ठाइति जीवराशिसे पंचेन्द्रिय तिर्यक्
योगिमती असंपत्तसम्बन्धिसंबन्धी जीवराशि क्या समान है, या संख्यातगुणी है, या असंख्यातगुणी

संखेज्जगुणा किमसंखज्जगुणा किं सुखज्जगुणहीणो किमसंखज्जगुणहीणा किं विसेसा
हिओ विसंखहीणो वा वि णरिय सपहियकाळ उवएसो ।

पंचिदियतिरिक्त्तअपज्जत्ता दव्वपमाणेण कवडिया, असं-
खेज्जा ॥ ३७ ॥

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहिं अवहिरंति
कालेण ॥ ३८ ॥

एवानि बोष्णि पि सुत्तानि सुगमाणि । किंतु एत्थ अपज्जत्ता इदि पुत्ते
अपज्जत्तयामकम्मोदयपंचिदियतिरिक्त्ता वेचन्ता । पज्जत्तणामकम्मस्स उण्ण अपज्जत्तो
वि पज्जत्तो वेव, योक्कम्मणिन्वविप्रवेक्खामावणा ।

स्वेत्तेण पंचिदियतिरिक्त्तअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहार
कालादो असखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पण्हित्तहस्स पत्तसप-छत्तीसपदंगुलमेत्तदेवअवहारकालमावलिपाए असंखेज्जदि
माएण मागे हिदे पंचिदियतिरिक्त्तअपज्जत्तअवहारकालो होति । अवसेसा खंदिदादि
वियप्पा पंचिदियतिरिक्त्तमिच्छाद्विणीय व माणेदम्मा ।

है, या संख्यातगुणी हीन है या असंख्यातगुणी हीन है या विशेषाधिक है या विशेष हीन
है, इत्यादिकप्रसे इस काळमें कोई उपदेस नहीं पाया जाता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त त्रीन द्रव्यप्रमाणकी अपधा कितने हैं ? अर्गस्यात
हैं ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त बीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी पूरा सुगम हैं । किंतु यहाँ पर अपर्याप्त वेसा कथन करने पर अपर्याप्त
माधर्म्यके उद्घासे युक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा जिसके पर्याप्त
माधर्म्यके उद्घा है वह (द्वार पयातिके पूर्य होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पर्याप्त ही
है क्योंकि यहाँ पर मोक्षमयी निवृत्तिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपधा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्वारा द्रव्योंके अवहारकालसे अर्ग
स्यातगुणे हीन कालसे अग्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

वेसद इन्द्राव पांचवी छत्तीस प्रतरंगुलमात्र द्रव्योंके अवहारकालमें आपसीके असंख्या
तये मागका माग रूप पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकाळ होता है । अवशिष्ट अर्हित
भावि विद्युत्तोंका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अर्हित भाविके कथनके समान
करना चाहिये ।

पक्षीय, तम्हा बिसेसेय होइन् । त बिसेसं पुम्माइरियाविरुद्धोपपन्न बचइस्सामो । तं जहा- पण्हियतिरिक्खपञ्चत्तमसज्जदसम्माइड्डिमवहारकाळे आनत्तियाए असंखेन्नादि माएण गुणिदे पण्हियतिरिक्खजोपिणीमसंज्जदसम्माइड्डिमवहारकाळा होदि । तमावत्ति- याए असंखेन्नादिमाएण गुणिदे पण्हियतिरिक्खजोपिणीसम्माभिन्नाइड्डिमवहारकाळ होदि । तं सत्तज्जत्तेहि गुणिदे तत्थेन सात्तणसम्माइड्डिमवहारकाळो होदि । तमावत्तिमाए असंखेन्नादिमाएण गुणिदे सज्जदासज्जदमवहारकाळो होदि । एदेहि अपहरत्ततेहि खंडिदादमो ओघमणा । पण्हियतिरिक्खपञ्चत्तमेसु पुरिसवेदासंज्जदसम्माइड्डिरासीदो तत्थेन इत्तिवेदासज्जदसम्माइड्डिरासी किमहुमसत्तेज्जगुणहीया ? पुरिसवेदादो सुहु बन्- सत्तिस्सिबेदोदयण पठरं दंसणमाहुणीपत्तमोपसमामावादो । जदि एव तो तत्पत्तवत्ति- पदजसज्जदसम्माइड्डिरासीदो तथो अप्पसरत्तवत्तगजुंसगवेदजसंज्जदसम्माइड्डिरासिस्स अस- खेन्नागुणहीयणं पसज्जवे ? ममदु णाम भविकइत्तादो । पण्हियतिरिक्खपञ्चत्तविदे- सम्मामिच्छाड्डिरासीदो पण्हियतिरिक्खजोपिणीमसंज्जवसम्माइड्डिरासी किं समो किं

सकत्ती है । इसविधे सामान्य प्रकृपासे यह प्रकृपा विशेष होना चाहिये । आगे उस विरोधको पूर्ण व्यापारोंके अधिकार उपवेशके अनुसर बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त असंयतसम्यग्दृष्टिसम्बन्धी अवधारकाखण्डो भावकीके असंख्यातके मापसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती असंयतसम्यग्दृष्टि अवधारकाख होता है । उसे भावकीके असंख्यातके भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती सम्यग्धिष्या- दृष्टि अवधारकाख होता है । उसे संख्यातसं गुणित करने पर वही पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिपूर्वमें साक्षात्तसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाख होता है । उसे भावकीके असंख्यातके भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती संयतासंयत अवधारकाख होता है । इन अवधार- काखोंके द्वारा खंडित व्याक्तिका कथन सामान्य नियमोंके खंडित आदिकके कथनके समान है ।

प्रश्न— पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंमें पुनःपुनः ही असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिते वही पर स्वीकृती असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि असंख्यातगुणी हीब किंस करणसे है ?

समाधान— पुनःपुनः वही भोक्ता अग्रशक्त कीतिवृत्ते उद्यके साथ अनुसरणसे वही- भोक्तृत्वके सपोषणमध्य अभाव है ।

प्रश्न— यदि ऐसा है तो वही पंचेन्द्रिय तिर्यक्में कीनेही असंयतसम्यग्दृष्टि जी- वराशिते स्वीकृतिवृत्ते ही अग्रशक्त अनुसरणसे ही असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असंख्यातगुणी हीवता प्राप्त हो जाती है ?

समाधान— स्वीकृतिवृत्ते अनुसरणसे वहीके असंख्यातगुणी हीनता प्राप्त होती है तो हो जाओ क्योंकि ऐसा स्वीकार कर देनेमें कोई विरोध वही आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त हीमें वेदवादी सम्यग्धिष्यादृष्टि जीवराशिते पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि क्या समान है या संख्यातगुणी है, या असंख्यातगुणी

संखेज्जगुणो किमसंखेज्जगुणो किं संखेज्जगुणहीणो किमसंखेज्जगुणहीणा किं विसेसा
हिओ विसेसहीणो वा वि गत्थि सपहियकाल उवएसो ।

पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता दम्बपमाणेण कवडिया, अस-
खेज्जा ॥ ३७ ॥

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहिरंति
कालेण ॥ ३८ ॥

एवापि दाप्पि वि सुत्ताणि सुगमाणि । किंतु एत्थ अपज्जत्ता इवि भुत्ते
अपज्जत्तामकम्मोदपपंचिदियतिरिक्खा पेचत्ता । पज्जत्तामकम्मस्स उए अपज्जत्ता
वि पज्जत्तो खं, गोक्कम्मणिन्नसिअवेक्खामावादा ।

खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तोहि पदरमवहिरदि देवअवहार
कालादो असखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पप्पट्टिसहस्स पचसय-छत्तीसपदरंगुलमेवदेवअवहारकालमावलिपाए असंखेअदि
माण भागे हिंदे पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होदि । अवसेसा खंदिदि
वियप्पा पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्दीण व भागेदम्मा ।

है या संख्यातगुणी हीन है या असंख्यातगुणी हीन है या विशेषाधिक है या विशेष हीन
है इत्यादिरूपसे इस कालमें केही उपदेश नहीं पाया जाता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त बीब इत्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात
है ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त बीब असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी सृष्ट सुगम हैं । किंतु यहाँ पर अपर्याप्त ऐसा कथन करने पर अपर्याप्त
नामकमेंके बहससे कुछ पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा जिसके पयाप्त
नामकमेंका बहस है वह (शरीर पयाप्तिके पूरे होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पयाप्त ही
है क्योंकि यहाँ पर जोकर्मकी निर्भूतिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असं-
ख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

सैंसठ हजार पाँचसी छत्तीस प्रतरांगुलमान देवोंके अवहारकालमें आपसीके अस्तव्या
तबे भागका माप देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकाल होता है । अवशिष्ट अहित
आदि विकल्पाँका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यावृत्तियोंके अन्ति आदिके कथनके समान
करना चाहिये ।

मागामागं वचइस्सामो । तिरिक्तरासिमयंतखंडे कटे तत्प बहुलंदा परदिप-
 बियतिदिया होति । सेस संखजखंडे कटे तत्प बहुलंदा पंचिदियतिरिक्खत्तइअजया
 होति । सेस संखेज्जखंडे कए तत्प बहुलंदा पंचिदियतिरिक्खत्तपज्जचमिच्छादिगी होति ।
 सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्प बहुलंदा पंचिदियतिरिक्खत्तबोणिणीमिच्छाद्वी होति ।
 ससमसंखेज्जखंडे कए तत्प बहुलंदा पंचिदियतिरिक्खत्तविषेदअसज्जसम्माइद्विदम्बं हादि ।
 ससं संखेज्जखंडे कए तत्प बहुलंदा पंचिदियतिरिक्खत्तविषेदसम्मामिच्छाद्विदम्बं हादि ।
 सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्प बहुलंदा पंचिदियतिरिक्खत्तविषेदसाजसम्मामिच्छाद्विदम्बं हादि ।
 सेसेगलंदा समदासंबदा होति ।

अप्याबहुअं तिबिह सत्थाण परत्थाणं सम्भवरत्तायं चेदि । तत्प सत्थाण मण्ण-
 माण तिरिक्खत्तमिच्छाद्वीयं सत्थाण णत्थि, रासीदो पुवरसिस्स बहुभुवत्तभादा ।
 सासजादीय सत्थाणमोयं । पंचिदियतिरिक्खत्तमिच्छाद्वीयं सत्थाणप्याबहुग दुबदे ।
 सम्भरयोबो पंचिदियतिरिक्खत्तमिच्छाद्विदम्बहारकासो । तस्सेव विक्खंमच्च अंसंखेज्जगुणा ।
 को गुजगारो ? सगविक्खत्तमच्च अंसंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? सगअवहारकासा ।

अब भागामागको बतछाते हैं— तिर्विच राशिके अगस्त खंड करने पर उनमेंसे
 बहुलंदाप्रमाण पंचेन्द्रिय और चिरसेन्द्रिय जीव हैं । दोपके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्विच सम्प्यपर्वाप्तक जीव हैं । दोपके संख्यात खंड करने
 पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्विच पर्वाप्त मिष्यादृष्टि जीव हैं । दोपके अंसंख्यात
 खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्विच योगिमती मिष्यादृष्टि जीव हैं । दोपके
 असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्विच तीन वेदवाले असंयतसम्भरदृष्टि-
 योक्ता द्रव्य हैं । दोपके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्विच तीन
 वेदवाले सम्प्यमिष्यादृष्टियोक्ता द्रव्य हैं । दोपके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग
 पंचेन्द्रिय तिर्विच तीन वेदवाले सासाधनसम्भरदृष्टियोक्ता द्रव्य हैं । दोप एक खंडप्रमाण
 पंचेन्द्रिय तिर्विच तीन वेदवाले संयतासंयत हैं ।

अस्यबहुत्प तीन प्रकारक हैं स्वस्थान अस्यबहुत्प परस्थान अस्यबहुत्प और
 तर्कपरस्थान अस्यबहुत्प । उनमेंसे स्वस्थान अस्यबहुत्पका कथन करने पर तिर्विच मिष्या
 दृष्टियोक्ता स्वरथाय अस्यबहुत्प नहीं पाया जाता है क्योंकि, तिर्विच मिष्यादृष्टि जीवराशिसे
 सुकराशिक प्रमाण बड़ा है । सासाधनसम्भरदृष्टि भावि जीवोंका स्वरथाय अस्यबहुत्प सामान्य
 प्रमाणवाले सामान है । अब पंचेन्द्रिय तिर्विच मिष्यादृष्टियोक्ता स्वस्थान अस्यबहुत्प बतछाते
 हैं— पंचेन्द्रिय तिर्विच मिष्यादृष्टियोक्ता सम्भरदृष्टि सक्ते थोड़ा है । उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्विच
 मिष्यादृष्टियोक्ता विक्खंमच्च अंसंखेज्जगुणी है । गुजकार क्या है ? अपना विक्खंमच्चयीका
 असंख्यातका भाग गुजकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाम प्रतिभाग है । अपना

अहवा सेदीण असंखेज्जाणि असंखेज्जाणि सेट्ठिपदमवगमूलाणि । को पट्ठि-
मागो ? सगअवहारकालमगो । अहवा असंखेज्जाणि घणगुलाणि । केसियमेचाणि ?
अधिअगुलस्स असंखेज्जाणिमागमेचाणि । सेदी असंखेज्जगुणा । को गुणमारो ? सग
अवहारकालो । दम्भमसंखेज्जगुण । को गुणमारो ? सगयिक्खंमच्छ । पदरमसंखेज्जगुणं ।
को गुणमारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणमारो ? सेदी । एवं
वेव पट्ठिदियतिरिक्त्वापज्जचमिच्छाइट्ठीणं पि । णवरि जम्हि अघिअगुलस्स असंखेज्जदि-
मागमेचाणि घणांगुलाणि चि वुत्त तम्हि अधिअगुलस्स संखेज्जदिमागमेचाणि चि
वत्तम्भ । एवं वेव पट्ठिदियतिरिक्त्वाजोणिणीमिच्छाइट्ठीणं हि । णवरि जम्हि अधि
अगुलस्स सगमेज्जदिमागमेचाणि चि वुत्त तम्हि संखेज्जअधिअगुलमेचाणि चि वत्तम्भं ।
पट्ठिदियतिरिक्त्वापज्जचसरत्ताणप्पावहुग पट्ठिदियतिरिक्त्वामिच्छाइट्ठिसरत्ताणमगो ।
पट्ठिदियतिरिक्त्वापज्जच-पट्ठिदियतिरिक्त्वाजोणिणीगुणपट्ठिवण्णाण सत्ताणं तिरिक्त्वागुण
पट्ठिवण्णसरत्ताणमगो ।

परत्ताणं पयदं । असज्जदसम्माइट्ठिअवहारकालादो जाय पट्ठिदोवमेति

जगभेणीका असत्त्यातर्वा माग गुणकार है जो जगभेणीके असत्त्यात प्रथम धर्ममूळप्रमाण
है । प्रतिमाग क्या है ? अपने अवहारकालका यह प्रतिमाग है । अथवा असत्त्यात घर्मांगुल
गुणकार है । ये कितने हैं ? सूर्यगुलके असत्त्यातयें मागमात्र हैं । चिक्कमसूचीसे जगभेणी
असत्त्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगभेणीसे पंचेन्द्रिय
तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असत्त्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी चिक्कमसूची गुणकार
है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रसर असत्त्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रसरसे मोक्ष असत्त्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
जगभेणी गुणकार है । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक् पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अव्यवहृत्य कहना चाहिये । पर इतना बिदेय है कि जहाँ पर सूर्यगुलके असत्त्यातयें मागमात्र
घर्मांगुल होते हैं ऐसा कहा है यहाँ पर सूर्यगुलके सत्त्यातयें मागमात्र घर्मांगुल होते हैं ऐसा
कहना चाहिये । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक् पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अव्यवहृत्य होता है । इतना बिदेय है कि जहाँ पर सूर्यगुलके सत्त्यातयें मागमात्र घर्मांगुल होते
हैं ऐसा कहा है जहाँ पर सत्त्यात सूर्यगुलमात्र घर्मांगुल होते हैं ऐसा कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय
तिर्यक् अर्थात्पोंका स्वस्थान अव्यवहृत्य पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अव्यवहृत्यके समान है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् पयाप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यक् पंचेन्द्रिय गुणस्थान
प्रतिपक्ष जीवोंका स्वस्थान अव्यवहृत्य तिर्यक् गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके स्वस्थान अव्यवहृत्यके
समान है ।

अब परत्ताणमें अव्यवहृत्यका कथन प्रारंभ है— असत्त्यातमम्यदृष्टि अवहारकालसे

मागामाग वचइस्सामो । तिरिक्खरासिमणंतस्संठे क्खे तत्थ बहुलंहा पंदिप-
 भियल्लिंशिया होति । सस संखत्तउंठे क्खे तत्थ बहुलंहा पंदिपितिरिक्खउत्तद्वियपत्तया
 होति । सेस संखत्तउंठे क्खे तत्थ बहुलंहा पंदिपितिरिक्खपन्नममिच्छादिही होति ।
 सेसमसंखत्तउंठे क्खे तत्थ बहुलंहा पंदिपितिरिक्खजोमिणीमिच्छादिही होति ।
 सेसमसंखत्तउंठे क्खे तत्थ बहुलंहा पंदिपितिरिक्खतिवेदमसमदसम्मद्विदम्भं हादि ।
 मस संखत्तउंठे क्खे तत्थ बहुलंहा पंदिपितिरिक्खतिवेदसम्मामिच्छाद्विदम्भं हादि ।
 मेममसंखत्तउंठे क्खे तत्थ बहुलंहा पंदिपितिरिक्खतिवेदसासणसम्मद्विदम्भं हादि ।
 सपेगणंहा सज्जसंज्जदा होति ।

अप्पाबहुलं तिपिहं सत्थाम परत्थारणं सत्थपरत्थारणं चेदि । तत्थ सत्थामे मण-
 माणे तिरिक्खमिच्छाद्विणीण सत्थाय णरिष, रासीदो पुनरासिस्स बहुमुवत्तभादा ।
 सासणादीण सत्थाणमोष । पंदिपितिरिक्खमिच्छाद्विणीण सत्थाणप्पाबहुलं पुव्वे ।
 सत्थरबोवो पंदिपितिरिक्खमिच्छाद्विभवहारकाळो । तस्सव विक्खंतमूर्खं अत्तंउत्तगुणा ।
 को गुणगारा ! सगविक्खंतमूर्खं अत्तंउत्तदिमागो । को पढिमागा ! सगभवहारकाळा ।

अब मागामागक बतछात हैं— तिरिक्ख राशिके अनन्त लंड करने पर उनमेंसे
 बहुलंउत्तमाय पंचेन्द्रिय और विषसंश्रिय जीव है । शेषके संख्यात लंड करने पर
 उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिरिक्ख सम्पत्पर्याप्तक जीव हैं । शेषके संख्यात लंड करने
 पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिरिक्ख पर्याप्त मिष्यादृष्टि जीव हैं । शेषके अंतर्काल
 न करन पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिरिक्ख योनिमती मिष्यादृष्टि जीव हैं । शेषके
 असंख्यात लंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिरिक्ख तीन वेदवासे असत्तसम्पदृष्टि-
 योक्क द्रव्य हैं । शेषके संख्यात लंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिरिक्ख तीन
 वेदवासे साम्यमिष्यादृष्टियोक्क द्रव्य हैं । शेषके अंतर्काल लंड करने पर उनमेंसे बहुभाग
 पंचेन्द्रिय तिरिक्ख तीन वेदवासे सासाहजसम्पदृष्टियोक्क द्रव्य हैं । शेष एक लंडप्रमाण
 पंचेन्द्रिय तिरिक्ख तीन वेदवासे संयत्तासंयत हैं ।

अस्यबहुल्य तीन प्रकारका है स्वस्थान अस्यबहुल्य परस्थान अस्यबहुल्य और
 राक्षपरस्थान अस्यबहुल्य । उनमेंसे स्वस्थान अस्यबहुल्यका कथन करने पर तिरिक्ख मिष्या-
 दृष्टियोक्क स्वस्थान अस्यबहुल्य नहीं पाया जाता है क्योंकि, तिरिक्ख मिष्यादृष्टि जीवराशिके
 सुवराशिका प्रमाण बड़ा है । सामाहजसम्पदृष्टि आदि जीवोंका स्वस्थान अस्यबहुल्य सामान्य
 प्रकृष्याके समान है । अब पंचेन्द्रिय तिरिक्ख मिष्यादृष्टियोक्क स्वस्थान अस्यबहुल्य बनताने
 हैं— पंचेन्द्रिय तिरिक्ख मिष्यादृष्टियोक्क भवहारकास सबसे छोड़ा है । उन्हीं पंचेन्द्रिय तिरिक्ख
 मिष्यादृष्टियोक्क विष्कंमूर्खी अंतर्कालगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना विष्कंमूर्खीका
 अंतर्कालका माय गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना भवहारकास प्रतिभाग है । अथवा

पञ्चषट्प्रवहारकालो असंख्यजगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंख्यजगुणो ।
 संख्यजगुणो । पंचिदियतिरिस्त्रजगुणिमीच्छाद्विषयप्रवहारकालो संख्यजगुणो । को
 गुणगारो ? संख्यजगुणो । तस्सेव विस्त्रमस्य असंख्यजगुणो । को गुणगारो ?
 पुण्यमणिगुणो । पंचिदियतिरिस्त्रपञ्चषट्प्रवहारकालो असंख्यजगुणो । को गुणगारो ?
 संख्यजगुणो । पंचिदियतिरिस्त्रपञ्चषट्प्रवहारकालो असंख्यजगुणो । को गुणगारो ?
 आवलियाए असंख्यजगुणो । पंचिदियतिरिस्त्रमिच्छाद्विषयप्रवहारकालो विसेसाहिया ।
 केचियमेचेण विसेसो ? आवलियाए अमरुजगुणो गंदिदमेचो । सेढी असंख्यजगुणो ।
 को गुणगारो ? अमरुजगुणो । पंचिदियतिरिस्त्रमिच्छाद्विषयप्रवहारकालो संख्यजगुणो ।
 को गुणगारो ? सगविस्त्रमस्य । पंचिदियतिरिस्त्रमिच्छाद्विषयप्रवहारकालो संख्यजगुणो ।
 को गुणगारो ? संख्यजगुणो । पंचिदियतिरिस्त्रपञ्चषट्प्रवहारकालो असंख्यजगुणो । को
 गुणगारो ? आवलियाए असंख्यजगुणो । पंचिदियतिरिस्त्रमिच्छाद्विषयप्रवहारकालो

ओ एक भंड सध्य भाये तगमात्र पिशयसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंके अवहार
 कालसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुण है ।
 गुणकार क्या है ? अवयवोंके असंख्यातपे मागका संख्यातपे माग गुणकार है । पंचेन्द्रिय
 तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका
 अवहारकाल संख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? सवयान समय गुणकार है । ऊर्ही पंचेन्द्रिय
 तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंमगुणी ऊर्हीके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है ।
 गुणकार क्या है ? पहले वह भाये है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी
 विष्कंमगुणीसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंमगुणी अवयवगुणी है । गुण
 कार क्या है ? सवयान समय गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंम-
 गुणीसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंकी विष्कंमगुणी अवयवगुणी है । गुणकार क्या है ?
 अवयवोंका असंख्यातपे माग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंकी विष्कंमगुणीसे
 पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंमगुणी पिशय अधिक है । किन्तुमात्रने अधिक
 है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंकी विष्कंमगुणीके अवयवोंके अवयवगुणी मागसे अधिक करते
 पर जितना सध्य भावे तगमात्र अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंम
 गुणीसे जगधर्मी अवयवगुणी है । गुणकार क्या है ? अवयव अवहारकाल गुणकार है ।
 जगधर्मीसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुण है । गुणकार क्या
 है ? अवयवोंकी विष्कंमगुणी गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे
 पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि वयवोंका द्रव्य संख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? सवयान
 समय गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि वयवोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंका
 द्रव्य असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? अवयवोंके अवयवगुणी मागसे संख्यातपे माग
 गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवयवोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य

असखेज्जासखेज्जाहि ओसपिणिउस्सपिणीहि अवहिरति-
कालेण ॥ ४१ ॥

दम्बपनामपक्खिय कालपमाणस्य महत्तावलमादो असखेज्जासखेज्जादिआस
पिणिउस्सपिणित्रिसेसमवापम्बनाणे वा कालपमाणम्म सुद्धमत्तण वचनम् । असपम्बणा
पुन्य व पम्बेयम्मा ।

खेत्तेण सेढीए अमखेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो
असखेज्जदिजोयणकोडीओ । मणुसमिच्छाङ्गोहि रुत्ता पक्खित्तएहि
सेढी अवहिरदि अगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ४२ ॥

सुतीए असखेज्जदिभागो इति मामप्यवयवण सखेज्जोयणपम्बुडि इद्विममखा
त्रियप्पाण मम्बेसि गण्णे मपत्त तप्पडिसेह्म अमखेज्जोयणकोडीआ चि भुत्त । तिस्स
सुतीए असखेज्जदिभागम्म सुतीए पतीए आयामो गीहत्तणमिदि मम्बेयम्ब । अमखेज्जदि

कालकी अपञ्चा मनुप्य मिध्याद्यष्टि जीव अमम्यातामम्यात् अवसर्पिपियो
जाग उन्मर्षिपियोऽङ्गं द्वारा अपहृतं हात ई ॥ ४१ ॥

असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण

असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण

असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण
असखेज्जदिभागो अमखा कालपमाणस्य महत्ता पाद जालेके कारप भयवा कालपमाण

१ मनुष्याणां वन्या निपातश्च येनमनुष्यमनुष्यादिना । २ वन्यायेयमागः अङ्गवत्ता संज्ञ
कीम् । ३ मि १८ तटी दूरम्-उत्तरदिशदिशरहमादिरेता । वन्या-उत्तर । वा ३६ १००
वर्गमीतवा मन्वा तटी वन्यादिश वन्यादि । उत्तरदिशदिश अङ्गवत्तायेति । वन्या २, २३

दम्ब विसेसादिर्य । केचिपमेतेषां ? आबसियाए असंखेज्जदिमायेउंढिवमेसेण । पदरम सखिज्जगुण । को गुणगारो ? अबहारकासो । सोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेही । तिरिक्खमिच्छाइडिक्खमणत्तगुण । को गुणगारो ? अभवसिद्धिपहि अर्णत्तगुणा सिद्धेहि वि अर्णत्तगुणो भवसिद्धियमीवाणमणत्तामागस्स असंखेज्जदिमागो ।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइटी दब्बपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा' ॥ ४० ॥

एस्य मणुसमगइहणेण सेसगइपडिसेहो कटो । मणुस्सेसु चि वयणेण तरप ड्ढिद सेसबीवादिदम्बपाडिसेहो कटो । मिच्छाइडि चि वयणेण सत्तगुणद्वामपडिसेहो कटो । छेच-कलसपमान्नुदासहु दब्बगइयं । सुचस्स पमाणपरुवजहुं केवडियगइय । संखेज्जापताण बुदासहुं असंखेज्जगइय । अइपूसपरुवण परुविय सुहुमहुपरुवणद्ध उचरसुचं मयदि—

विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पंचेन्द्रिय तिर्यक् अवर्णान्तोंके द्रव्यको माकलीके असंख्यातमें भागसे अन्तित करके ओ एक जीव दम्ब भावे तन्मात्रसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिच्छादृष्टियोंके द्रव्यसे जगत्तर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिच्छादृष्टियोंका व्यवहारकरके गुणकार है । जगत्तरसं छोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगत्पेजी गुणकार है । छोकसे तिर्यक् मिच्छादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अमप्यस्मिन्नांसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या मप्यसिद्ध जीवोंके अनन्त बहुमात्रोंका असंख्याततां मात्रा गुणकार है ।

मनुष्यगतिप्रतिपक्ष मनुष्योंमें मिच्छादृष्टि जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने ह ? असंख्यात हैं ॥ ४ ॥

इस सूत्रमें मनुष्यगति इस पक्षके ग्रहण करनेसे शेष गतिर्वैज्य प्रतिपेक्ष कर दिया गया है । मनुष्योंमें इसप्रकारके वचनसे वहाँ पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिपेक्ष कर दिया है । मिच्छादृष्टि इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिपेक्ष कर दिया है । शेषप्रमाण जीव दम्बप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पक्ष ग्रहण किया है । सूत्रकी प्रमाणताका प्रकटण करनेके लिये कितने हैं इस पक्षका ग्रहण किया है । संख्यात जीव अनन्तका निराकरण करनेके लिये असंख्यात पक्षका ग्रहण किया है । अब अतिस्वल्प प्रकटणका प्रकटण करके सूत्रम प्रकटणका प्रकटण करनेके लिये आवेक्ष सूत्र कहते हैं—

विदियवर्गगमूले मागे हिंदे छद्मस्त वचियाणि रूपानि वचियाणि पदमवर्गगमूलानि ।

वियप्पो दुबिहो, हङ्किमवियप्पो ठवरिमवियप्पो चेदि । तत्प हङ्किमवियप्पं वचइस्सामो । विदिय वदियवर्गगमूले अप्पोज्जगुणे करिय पदमवर्गगमूले मागे हिंदे छद्मेण तं चंव गुभिदे अवहारकालो होदि । अहवा वेरुव हङ्किमवियप्पो गरिय, वचिअगुल-पदमवर्गगमूलादो अवहारकालस्स वहुचावो । अहुत्तवे वचइस्सामो । वचिअगुलविदिय वर्गगमूलगुणिदवदियवर्गगमूलेम पदमवर्गगमूलं गुणेऊज वणगुलपदमवर्गगमूले मागे हिंदे अवहारकालो हादि । त चहा- वचिअगुलपदमवर्गगमूलेम पदमगुलपदमवर्गगमूले मागे हिंदे वचिअगुलमागच्छदि । विदियवर्गगमूलगुणिदवदियवर्गगमूलेण वचिअगुले मागे हिंदे अवहारकालो आगच्छति । वनापणे वचइस्सामो । विदियवर्गगमूलगुणिदवदियवर्गगमूलेम अगुलवर्गगमूलं गुणेऊज तेम वणगुलविदियवर्गगमूलं गुणिय वनापणगुलविदियवर्गगमूले मागे हिंदे अवहारकालो आगच्छति । तं चहा- वणगुलविदियवर्गगमूलेम वनापणगुल

अवहारकालो निश्चित इत्यत्रार है— स्वर्गगुलके तृतीय वर्गमूलसे स्वर्गगुलके द्वितीय वर्गमूलके माजित करने पर छम्प राशिका जितना प्रमाण हो उतने स्वर्गगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिष्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अथस्तन विकल्पको बतकाते हैं— स्वर्गगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो छम्प आवे उसका स्वर्गगुलके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर जो छम्प आया उससे उसी स्वर्गगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिष्यादृष्टि अवहारकाल होता है । अथवा, यहां विकल्पधारामें अथस्तन विकल्प नहीं बनता है क्योंकि स्वर्गगुलके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिष्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा है ।

अब उपरिममें अथस्तन विकल्प बतकाते हैं— स्वर्गगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो छम्प आवे उससे स्वर्गगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छम्प आये उससे वनागुलके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर मनुष्य मिष्यादृष्टि अवहारकाल होता है । जैसे स्वर्गगुलके प्रथम वर्गमूलसे वनागुलके प्रथम वर्गमूलके माजित करने पर स्वर्गगुल आया है । पुनः स्वर्गगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करने जो छम्प आवे उससे स्वर्गगुलके माजित करने पर मनुष्य मिष्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब वनापणमें अवस्तन विकल्प बतकाते हैं— स्वर्गगुलके द्वितीय वर्गमूलसे स्वर्गगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो छम्प आवे उससे स्वर्गगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो छम्प आये उससे वनागुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके और दुई छम्प राशिसे वनावनागुलके द्वितीय वर्गमूलके माजित करने पर मनुष्य मिष्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, वनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे वनापनागुलके द्वितीय वर्गमूलके माजित करने पर

द्योयणकोटीमो च वयमे पदंगुल पदंगुलादीन् ग्रहणे पते तप्यन्तिसेहर्षं अंगुलबन्धमूर्तं
तदियवगममूलमुनिरेवेति वयम् । अंगुलवगममूलमिदि बुधे अथिअंगुलपदमवगममूर्तं
गह्यम् । तदियवगममूलमिदि बुधे अथिअंगुलतदियवगममूलस्स गह्यम् । कुदो ? अथि
अंगुलसहपारादो अणुबहुनादो वा । अथिअंगुलतदियवगममूलमेव तस्सेव पदमवगममूर्तं
गुम्भिदे मज्जसमिच्छाद्विज्ज अवाहरकालो इति । अहवा अथिअंगुलविदियवगममूलस्य तदिय
वगममूर्तं गुणिय अथिअंगुले मागे हिदे मज्जसमिच्छाद्विज्जअवाहरकालो आगच्छति । तस्स
अंदिद-माजिद-विरसिद-अवहिदाणि आभिरुप वचन्त्याणि । तस्स पमाप्य अथिअंगुलस्स
असंखेअदिमागो असंखेज्जाणि अथिअंगुलपदमवगममूलाणि । उ अह- अथिअंगुलपदम
वगममूलेण अथिअंगुले मागे हिदे पदमवगममूलमेव तमामहे । विदियवगममूलस्य अथि-
अंगुलं माग हिदे विदियवगममूलमिदि अथियाणि रुमाणि तथियाणि पदमवगममूलाणि
सम्भति । विदिय-तदियवगममूलमयोअस्मत्त्वं करिय अथिअंगुले मागे हिदे असंखेज्जाणि
अथिअंगुलपदमवगममूलाणि सम्भति चि प सवेदो । तस्स निरुची तदियवगममूलमेव

करना चाहिये । असंख्यात करोड़ योजन इसप्रकारका कथन रहने पर प्रतीगुल और
प्रागुल व्यवस्था प्रहज प्राप्त होता है अतः इसका प्रतिषेध करनेके लिये सूर्यगुलका प्रथम
वर्गमूल तृतीय वर्गमूलसे गुणित इसप्रकारका कथन दिया है । यहाँ पर अंगुलका वर्गमूल
ऐसा कथन करने पर उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका प्रहज करना चाहिये । तृतीय
वर्गमूल ऐसा कथन करने पर उससे सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलका प्रहज करना
चाहिये । क्योंकि, यहाँ पर सूर्यगुलका साहचर्य संबन्ध है । अथवा ऊपरसे उसीकी अनुवृत्ति
है । इसका वास्तव यह हुआ कि सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलसे उसी सूर्यगुलके प्रथम
वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टिबोका अवधारकाल होता है । अथवा सूर्यगुलके
द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो अणु भावे उसका सूर्यगुलमें मात्र
वेने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टिबोका अवधारकाल जाता है । इस अवधारकालके ज्ञात मात्रित
विच्छित और अवहतको ज्ञानकर कथन कथन करना चाहिये । उस मनुष्य मिथ्यादृष्टि
अवधारकालका प्रमाण सूर्यगुलके असंख्यातमें मात्राप्रमाण है जो सूर्यगुलके असंख्यात प्रथम
वर्गमूलप्रमाण है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूर्यगुलके
मात्रित करने पर सूर्यगुलका प्रथम वर्गमूल ही प्राप्त होता है । सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे
सूर्यगुलके मात्रित करने पर सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलमें जितनी संख्या हो उतने सूर्य-
गुलके प्रथम वर्गमूल सन्ध भावे है । इसीप्रकार सूर्यगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलोंका
परस्पर गुणा करके जो अणु भावे उससे सूर्यगुलके मात्रित करने पर सूर्यगुलके
असंख्यात प्रथम वर्गमूल अणु भावे है इसमें संदेह नहीं । उसी मनुष्य मिथ्यादृष्टि

विदियवग्गमूले भागे हिदे लद्धस्स नचियाणि रुवाभि तचियाणि पढमवग्गमूलाणि ।

वियप्पो दुविहो, इट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तस्य हेट्ठिमवियप्प वचइस्सामो । विदिय तदियवग्गमूले अप्पोण्णगुणे करिय पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेष गुभिं अवहारकालो होदि । अइवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो वरिय, सुधिअंगुल पढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स बहुचादो । अट्ठरूवे वचइस्सामो । सुधिअंगुलविदिय वग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊम षणगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो होदि । त अइवा- सुधिअंगुलपढमवग्गमूलेण षणगुलपढमवग्गमूले भाग हिदे सुधिअंगुलमागच्छति । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण सुधिअंगुल भाग हिदे अवहारकालो आगच्छति । घणाघणे वचइस्सामो । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण अंगुलवग्गमूलं गुणेऊम तेण घणगुलविदियवग्गमूलं गुणिय घणापर्णगुलविदियवग्गमूले भाग हिदे अवहारकालो आगच्छति । त अइवा- घर्णगुलविदियवग्गमूलेण घणापर्णगुल

अवहारकालको निरुपि इत्थमवहार ई- सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलसे सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्य राशिके जितना प्रमाण हो उतने सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते ई ।

विकल्प हो प्रकारका ई अथस्तन विकल्प भीर उपरिम विकल्प । उनमेंसे अथस्तन विकल्पको बतलाते ई- सूर्यगुलके तूतरे और नीतरे वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो सूर्य भावे उसका सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो सूर्य भावा उससे उसी सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता ई । अथवा यहां विकल्पकारमें अथस्तन विकल्प नहीं पतता ई क्योंकि सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा ई ।

अब अथस्तनमें अथस्तन विकल्प बतलाते ई- सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो सूर्य भावे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके सूर्य राशिका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता ई । जैसे, सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्यगुल आता ई । पुनः सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो सूर्य भावे उससे सूर्यगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता ई ।

अब घनापनमें अथस्तन विकल्प बतलाते ई- सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो सूर्य भावे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो सूर्य भावे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका गुणित करके और फिर सूर्य राशिमें घनापनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता ई । जैसे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनापनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर

विदियवर्गमूले मागे हिंदे धर्मगुलपदमवर्गमूलमागच्छति । पुनो धर्मिप्रगुलपदम
वर्गमूलेण (धर्मगुलपदमवर्गमूल) माग हिंदे धर्मिप्रगुलमागच्छति । पुनो अण्णाण्य
गुणिद्विदिय-तदियवर्गमूलेण (धर्मिप्रगुल) माग हिंदे अवहारकाना आगच्छति ।

गहिदादिमेण उचरिमवियप्यो तिबिहा । तथ गहिदे वचस्सामा । तेणव
मागहारण धर्मिप्रगुलं गुणिय पदरगुले मागे हिंदे मणुसमिच्छाद्विअवहार
कालो मागच्छति । तं अहा- धर्मिप्रगुलेण पदरगुले माग हिंदे धर्मिप्रगुल-
मागच्छति । पुनो पुनमागहारेण धर्मिप्रगुल मागे हिंदे अवहारकालो मागच्छति ।
अहुरवे वचस्सामा । धर्मिप्रगुलविदिय-तदियवर्गमूलं अण्णाण्य गुणिय तण पदरगुल
गुणिय धर्मगुल मागे हिंदे मणुसमवहारकालो मागच्छति । एता मन्मिमवियप्ये किंण्य
पददि-सि बुचे न, धर्मिप्रगुलादो म्हायरासिमवलविय उप्पाइज्जमाण उचरिमवियप्यच
पदि विरोहामावाणे । पणाममे वचस्सामा । विदिय-तदियवर्गमूलेहि पदरगुलं गुणिय
तेण धर्मगुलउचरिमवर्ग गुणिय तेण धर्मापणगुले मागे हिंदे मणुसमिच्छाद्विअवहारकालो

धर्मागुलक प्रथम वर्गमूल आता है । पुनः सूर्यगुलक प्रथम वर्गमूलसे धर्मागुलके प्रथम
वर्गमूलके माहित करने पर सूर्यगुल आता है । पुनः सूर्यगुलके दूसरे और तीसरे वर्ग
मूलक-परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सूर्यगुलके माहित करने पर मनुष्य
मिथ्याचरि अवहारकाल आता है ।

गृहीत धर्मिके मेवम उपरिम विक्षय तीन प्रकारका है । अथमेसे गृहीत उपरिम
विक्षयको बतलाते हैं— उनी मागहारसे धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित तृतीय
वर्गमूलसे सूर्यगुलके गुणित करके जो अन्त्य भागे उससे प्रतरंगुलके माहित करने पर
मनुष्य मिथ्याचरि अवहारकाल आता है । अन्ते सूर्यगुलसे प्रतरंगुलके माहित करने पर
सूर्यगुल आता है । पुनः पूर्वोक्त मागहारसे अथात् सूर्यगुलके विनाय धर्मागुल गुणित तृतीय
वर्गमूलसे सूर्यगुलके माहित करने पर मनुष्य मिथ्याचरि अवहारकाल आता है ।

अथ अष्टममसे गृहीत उपरिम विक्षयको बतलाते हैं— सूर्यगुलके दूसरे और तीसरे
वर्गमूलके परस्पर गुणित करके जो अन्त्य भागे उससे प्रतरंगुलके गुणित करके आह हई
अन्त्य राशिसे धर्मागुलके माहित करने पर मनुष्य मिथ्याचरि अवहारकाल आता है ।

संज्ञा—प्रस्तुत विक्षय मन्मिम विक्षयमें समाविष्ट क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सूर्यगुलसे बड़ी राशिवा अवहारकाल करने मनुष्य मिथ्या
चरि अवहारकालके उत्पन्न करने पर इसे उपरिम विक्षयके होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

अथ अष्टममसे गृहीत उपरिम विक्षयको बतलाते हैं— परस्पर गुणित सूर्यगुलके
दूसरे और तीसरे वर्गमूलसे प्रतरंगुलके गुणित करके जो अन्त्य भागे उससे धर्मागुलके
उपरिम वर्गको गुणित करके अन्त्य राशिवा धर्मागुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्याचरि अव-

आगच्छति । तस्य भागहारस्त अद्वन्द्वेदणयमेवे घणाघणुगुलस्य अद्वन्द्वेदणय कदे वि मनुसमिच्छाद्विषयहारकालो आगच्छति । सवित्रंगुल-घणुगुलपदमवगमूल-घणाघणुगुल विदियवगमूलाण असंख्यज्जिमाएण भागहारेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेय्यो । एदेण भागहारेण जगसेहिमि भाग हिदे रूपाहिओ मनुसरसी आगच्छति । तं कर्ष जायिज्जिदि चि घुसे 'मनुमग्रेण मनुमेदि रूव पक्खिचण्हि सेही अवहिरदि अंगुलपगमूलं तदियवगमूलगुणिदेण' इदि तुहावपसुचादो । एत्थ रासी दुविहा मवदि, मोजं शुम्मं वेदि । मोज दुविह, तेजोमं कल्लिमोम वेदि । तं जहा-जमि रासिमि चदुहि अव हिरिज्जमाने सिणि क्कति सो तेजोम । चदुहि अवहिरिज्जमाने जमि एणं गदि त कल्लिमोमं । शुम्मं दुविहं, कदलुम्म बादरुम्म वेदि । तं जहा-चदुहि अवहिरिज्जमाने जमि रासिमि चचारि क्कति तं कदलुम्म । जमि रासिमि दोणि क्कति तं बादरुम्म । जमहा मनुसरसी तेजोमं जहा उदमि कदलुम्ममि एगरूवमववेय्यं । अवसेसिद

हारकाल आता है । उक्त भागहारके मिलने अर्धच्छेद हों उतनीबार उक्त भग्यमान राशि घना घनागुलके अर्धच्छेद करने पर भी मनुष्य मिथ्याद्विषयहारकाल आता है । सूर्यगुलके मसदयातये भागद्वय घनागुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातये भागद्वय और घनाघणुगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातये भागद्वय भागहारसे पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकारके साथ लेना चाहिये ।

उक्त भागहारसे जगभेजीके माजित करने पर एक अधिक मनुष्यराशि आती है । यह कैसे जाना जाता है ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि 'मनुष्यगतिये सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करने को सध्य भावे उसे शलाक्यराशि करके एक अधिक मनुष्य जीवोंके द्वारा जगभजी भगवत होती है अर्थात् एक अधिक मनुष्यराशिसे जगभजीमेंसे घटाते जाना चाहिये और शलाक्यराशिमेंसे उत्तरोत्तर एक कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार करनेसे शलाक्यराशिसे साथ जगभजी समाप्त हो जाती है' । इस तुहावपके मूलसे जाना जाता है कि उक्त भागहारसे जगभेजीके भगवत करने पर एक अधिक मनुष्य राशि सध्य आती है ।

राशि दो प्रकारकी है ज्येष्ठराशि और युग्मराशि । उनमेंसे ज्येष्ठराशि दो प्रकारकी है तेजोम और कल्लिमोम । भागे इन्हींका स्वरूपकरण करते हैं— जिस राशिसे बारसे माजित करने पर तीन दोष रहते हैं वह तेजोमराशि है । जिस राशिसे बारसे माजित करने पर एक दोष रहता है वह कल्लिमोमराशि है । युग्मराशि दो प्रकारकी है ह्ययुग्म और बादरुग्म । भागे उसी युग्मराशिसे भेदोंका स्वरूपकरण करते हैं— जिस राशिसे बारसे माजित करने पर बार दोष रहते हैं अर्थात् जिसमें बारका पूरा भाग जाता है वह ह्ययुग्म राशि है । तथा बारसे माजित करने पर जिस राशिमें दो दोष रहते हैं वह बादरुग्मराशि है । प्रवृत्तमें क्योंकि मनुष्यराशि तेजोमकण है इसलिये जगभेजीमें सूर्यगुलके प्रथम



मनुसरातिपरुवमादो शुचं सुदावधमि मागलद्वादो परुवस्स अणययं, परुव पुण जीवहानमि मिच्छचवितसिद्धजीवपमाणपरुवण कीरमाणे रुवाहियेतरसमुगह्वाणमेस्य अणययपरासिण होदणमिदि । त कर्षं जामिजेदे ? 'मणुसमिच्छाद्दीहि रुवा पक्खि चएहि सेही अबहिरिज्जदि' चि सुचमिद् रुवा इदि बहुवपणपिदसादो । अहमा रुवपक्खि चएहि चि बहुवीहिसमासेण लक्खणविससेण कपपुण्यनिवाएण अबपिदबहुवपमादो बहुसोवत्तही होज्ज । रुव पक्खिचएहि चि एगवययमपि कहिं दिस्सदे वो वि ष दोसो, बह्वं जीवाण आदिदुवारेण एयचदसमादो । क्व परुव आई याम ? वेदमाविसमाग-परिणामो । तदो मागलद्वादो रुवाहियेतरसमुगह्वाणपमाणे अबपिदे मणुसमिच्छाद्दि

और तृतीय वर्गमूखके गुणफलरूप भाग देनेसे जो राशि सभ्य आयमी वह कृतपुण्यरूप होनेसे उसमेंसे एक कम कर देना चाहिये ।

चतुर्दशवर्गमें मिथ्यादृष्टि इत्यादि विशेषणसे रहित सामान्य मनुष्यराशिप्रत्येक प्रकरण होनेसे वहाँ पर सूक्ष्मगुणके प्रथम और तृतीय वर्गमूलोंके परस्पर गुणफलरूप भागहारका जगभेजीमें भाग देनेसे जो सभ्य भावे उसमेंसे एक संख्याका कम करना युक्त है । परंतु वहाँ जीवस्थायीमें तो मिथ्यात्व विशेषणसे युक्त जीवोंके प्रमाणका प्रकरण किया गया है, अतएव मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि जालेके किये उक्त भागहारसे जगभेजीके माजित करने पर जो सभ्य भावे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि अपवपनराशि होना चाहिये ।

संक्षेप—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्याधिक मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा जगभेजी अपवृत्त होती है इस सूत्रमें क्या यह बहुवचन निर्देश पाया जाता है जिससे जाना जाता है कि यहाँ पर उक्त भागहारसे जगभेजीके माजित करने पर जो सभ्य भावे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि अपवपनराशि है । अतएव, बहुवचनरूपहिं इस परमें नियम विशेषणसे जिसमें पूर्वनिपात हो गया है ऐसा बहुवीहि समाप्त होनेके कारण रूप परके बहुवचनसे रहित होनेके कारण भी वयसे बहुवचनी उपलब्धि हो जाती है । यहाँ पर कर्षं पक्खिचएहि इसप्रकार एकवचन भी यहाँ देखा जाता है तो भी कोई दोष नहीं प्यठा है क्योंकि बहुत जीवोंका आतिहास्य प्रकरण देनेमें आता है ।

संक्षेप—वहाँ पर ज्ञातिसे क्या कर्षं अभिप्रेत है ?

समाधान—यहाँ पर केतना ज्ञाति समाप्त परिणाम आतिसे अभिप्रेत है ।

इसलिये उक्त भागहारका जगभेजीमें भाग देने पर जो भाग सभ्य भावे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणके कम कर देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि

रासी होदि चि सिद्ध । एदस्स संदिदाओ विदियपुद्धिमिच्छाद्वीणि अहा पुचा तहा वचम्मा । णवरि एत्थ अंगुलवग्गमूलेण तदियवग्गमूल गुणिदे अवहारकालो होदि । सम्भत्य रूत्राहियत्तेरमगुणद्वानपमाणमवणेयम्भ ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति दम्बपमाणेण केवडिया, सत्तेज्जा ॥ ४३ ॥

एत्थ पडुडिसरो आदिसइत्थे बद्धे । तेण सासणसम्माइट्ठिमादि करिय जाव संवदासजदा एदसु गुणद्वानेसु मनुमरामी मंखज्जा चेव होदि चि अ पुर्च होदि । संखेज्जा इदि सामण्णेण पुचे वावण्णकोडिमेचा सासणसम्माइट्ठिपो इवति । तपो दुग्गाण सम्मामिच्छाइट्ठिपो इवति । मत्तसयकाटिमेचा असंजदसम्माइट्ठिपो इवति । संजदा

जीवरशिक्का प्रमाण होता है यह सिद्ध हो गया ।

विशयार्थ—मूर्ध्पंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूल परस्पर गुणा करके जो छम्प भागे उसका अग्रेणीमें भाग देने पर एक अधिक सामान्य मनुष्यराशिक्का प्रमाण पाता है । अतएव छम्पमें एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिक्का प्रमाण जाना है । परंतु प्रकृतमें मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि जाना है अतएव उक्त सामान्य मनुष्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशिके प्रमाणको और कम कर देना चाहिये तब मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशिक्का प्रमाण होगा ।

असप्रकार दूसरी दृष्टिके मिथ्यादृष्टियोंके रंजित आदिका कथन कर भागे हैं उसा प्रकार हम मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवरशिक्के रंजित आदिका कथन करना चाहिये । इतना विशेष है कि यहां पर मूर्ध्पंगुलके प्रथम वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण होता है । तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिक्का प्रमाण मानेके लिये सयत्र एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवरशिक्का प्रमाण घटा देना चाहिये ।

सासादनमम्यगदृष्टि गुणस्थानम सकर सयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अवस्था कितने हैं ? सम्पात ६ ॥ ४३ ॥

यहां पर प्रयुक्तिक्षार आदि शब्दके अर्थमें आया है हमलिये सासादनमम्यगदृष्टिसे प्रारंभ करके संपतासंपन गुणस्थानतक इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संक्पात ही होती है यह हम सूत्रका अभिप्राय है । सासादनसम्यगदृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संक्पात है ऐसा सामान्यकरणसे कथन करने पर सासादनसम्यगदृष्टि मनुष्य बावन करोड़ है । सम्यगमिथ्यादृष्टि मनुष्य सामादनसम्यगदृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे दूने हैं । असयतमम्यगदृष्टि मनुष्य छानसौ करोड़ प्रमाण है । संपतासंपनका प्रमाण तेरह

१ सासादनमम्यगदृष्टि संयतासंपनका अर्थदेता । त मि १ ८
२ त्रिगु अत्र च । तपो दुग्गाण सम्माइट्ठिपो इवति । इतिक्का वाह ।

संज्ञार्थं पमानं तेरहकोटीशो । केचि आश्रिया सामान्यसम्प्राप्तिं पमाणं पञ्चास
कोटीशो हवति सम्मामिच्छद्भिपमार्थं तथो दुर्गुणमिदं भवति । पुष्पिष्ठपमानमेव
वेत्तव्यं । किं कारणं ? आश्रयपरंपरागदादौ । पुत्रं च—

तेरह कोटी दस पाण्यास सासने ऽ गुणेभ्यः ।

मिसे वि ष तद्गुणा असन्ते सप्तकोटिसु ॥ १८ ॥

अथवा—

तेरह कोटी दस पाण्यास सासने गुणेभ्यः ।

मिसे वि ष तद्गुणा असन्त सप्तकोटिसु ॥ १९ ॥

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओघ' ॥ ४४ ॥

एदसस सुचसस अत्था पुष्पं परुचिदो चि इह न सुचद । इहा ? मणुसगदि
वदिरिचसेसगर्सस पमत्तादिगुणज्ञानागमसमवादा । मणुपेसु पमत्तादीन ओघवरूपा येन ।

करोड है । किन्तु ही आचार्य साक्षात्तसम्प्राप्ति मनुष्योंके प्रमाण पचास करोड कहते हैं ।
साम्यमिच्छादि मनुष्योंके प्रमाण साक्षात्तसम्प्राप्ति मनुष्योंके प्रमाणसे दूना कहते हैं । परंतु
यहां पर पूर्वोक्त प्रमाण ही महान करना चाहिये क्योंकि, पूर्वात प्रमाण आचार्य परंपरासे
आया गुण है । क्या सी है—

संपत्तासंघतमें तेरह करोड, साक्षात्तमें पाचन करोड मिथमें साक्षात्तके प्रमाणसे
दूने थीर असंपत्तसम्प्राप्ति गुणस्थानमें सातसी करोड मनुष्य ज्ञानना चाहिये ॥ १८ ॥

अथवा—

संपत्तासंघतमें तेरह करोड साक्षात्तमें पचास करोड मिथमें साक्षात्तके प्रमाणसे
दूने थीर असंपत्तसम्प्राप्ति गुणस्थानमें सातसी करोड मनुष्य ज्ञानना चाहिये ॥ १९ ॥

प्रमत्तसंपत्त गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें
मनुष्य सामान्य प्ररूपवाके समान संख्यात है ॥ ४४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह व्यर्थ है । इसलिये यहाँ नहीं कहा जाता है क्योंकि, मनुष्य
वर्तिके छोड़कर शेष तीन वर्तियोंमें प्रमत्तसंपत्त आदि गुणस्थानोंमें जोना असंभव है । अतः
मनुष्योंमें प्रमत्तसंघत वदिरिच प्रमाणप्रकरण साक्षात्त प्रमत्तके समान ही है ।

१ गी जी १४२, व वि १ टि ।

२ श्रीगु कुरुना इति पाठ ।

३ प्रमत्तसंघत नामाश्रित । संख्या । व वि १

मेवा सि अं वक्तव्ये ममिद् शुचीय बोद्धव्यमाणे त न पठेदे, 'कोडाकोडाकोडीए उवदि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेडुदो' चि सुषेण सह विरोधपादो । तं कथ जाभिजदे ? एगुणतीसङ्कापेसु द्विदवायालवगपणस्स एगुणतीसङ्कापेहिं तो उणवविरोहादो । किं च अदि वायालवगपणमेवो मनुसपञ्चरासी होऊ सौ माणुससेवे ६१९७०८४६६८१६-४१६९०००००००० ।*

गणनङ्गय-कसपा अठठठि-मिपक-वमु-अर-दम्मा ।

छायाक-अनु-गमाचअ-यपप-अरो रिदू कमसो ॥ ७१ ॥

मनुष्य पपात्त जीवराशि बादाखके घनमात्र है यह ओ ऊपर व्याख्यान करते समय कह भाये हैं सुकिते विचार करते पर यह कथन पठित नहीं होता है क्योंकि, 'कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे मनुष्य पर्याप्त राशि है' इस सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध आता है ।

शुद्ध—यह कैसे आता जाता है ?

समाधान—क्योंकि इनतीस स्थानोंमें स्थित बादाखरूप बगैके घनको इनतीस स्थानोंसे कम अक्षरूप माननेमें विरोध आता है ।

विशेषार्थ—ऊपर सूत्रद्वारा पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे बीसवीं कोट संख्या बतलाई जा चुकी है । अब कि एक अङ्के ऊपर २१ शून्य रखनेसे बारस अक्षरमाण कोडाकोडाकोडी होती है और एक अङ्के ऊपर २८ शून्य रखनेसे इनतीस अक्षरमाण कोडाकोडाकोडाकोडी होती है तब यह निश्चित हो जाता है कि सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण इनतीस अङ्के नीचे और बीसवीं अङ्के ऊपर बीसवीं कोट संख्या होना चाहिये । अब यदि द्विरूपके पाँचवें अङ्के घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशि मानी जाय तो पूर्वोक्त सूत्रके कथनके साथ इस कथनका विरोध आ जाता है क्योंकि द्विरूपके पाँचवें अङ्के घनका प्रमाण इनतीस अक्षरमाण होते हुए भी कोडाकोडाकोडाकोडीके प्रमाणके ऊपर है इसलिये द्विरूपके पाँचवें अङ्के घनका प्रमाण इनतीस अङ्कसे नीचेकी संख्या नहीं हो सकती है । पर सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण इनतीस अङ्कसे नीचेकी संख्या निश्चित है इसलिये पञ्चमअविषयसमा पुण्या इत्यादि रूपसे ओ पपात्त मनुष्यराशिका प्रमाण पाया जाता है, वह सूत्रानुसार नहीं है ऐसा प्रतीत होता है ।

दूसरे यदि बादाखरूप बगैके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि होये तो वह राशि मनुष्य-क्षेत्रमें ६१९७०८४६६८१६४१६९ ०००० ०० अर्थात्—

कमरा आठ शून्य नव अर्थात् दो, कपाय अर्थात् सोलह बीसठ मृगांक अर्थात् एक

विशेषार्थ—यद्यपि विषयमपगन्वहगुणकरणी यद्गुम्स परिरम्भो होदि' अथात् किसी वृत्त क्षेत्रकी परिधि सानेके छिये पहले उम् क्षेत्रका जितना विस्तार हो उसका वर्ग कर ले। अन्तर उस वर्गित राशिको वरासे गुणित करके उसका वर्गमूल निम्नछ ले। इसप्रकार जो वर्गमूलका प्रमाण होगा वही उस गोष्ठ क्षेत्रकी परिधिका प्रमाण होगा। इस नियमके अनुसार एक साध विस्तारवाले अम्बुषीपक्षी परिधिका प्रमाण तीन छाल सोछह इञ्चार होसी सत्ताईस योजन तीन छेल एकसी अम्बुसि घनुप और साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिक आता है। परंतु धपकाकरने साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिकके स्थानमें साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ कम ग्रहण किया है। उन्होंने कुछ कमका प्रमाण $\frac{1}{2}$ मेंसे $\frac{1}{2} \times 1022$ कम बतलाया प्रतीत होता है। यद्यपि इसका निश्चित कारण प्रतीत नहीं होता है फिर भी इसे ग्रहण करके उक्त परिधिके प्रमाणके ऊपरसे अम्बुषीपक्ष क्षेत्रफल सानेके छिये 'वासवउत्पाहवो यु क्षेत्रफल' अर्थात् परिधिके प्रमाणको व्यासकी बीधाकरूप प्रमाणसे गुणित कर देने पर क्षेत्रफलका प्रमाण होता है, इस नियमके अनुसार पक्षीस इञ्चारसे गुणित कर देने पर अम्बुषीपक्ष क्षेत्रफल आ जाता है। यहां सब क्षेत्रफल योजनोंमें सानेके छिये यथायोग्य प्रक्रिया कर लेना चाहिये। अब यहां पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलको छोड़कर अम्बुषीप, घातकीलइषीप और पुष्कराक्षीपका सम्मिश्रित क्षेत्रफल खाना है अतएव बाहिरचूर्णगा इत्यादि करणक्षेत्रसे हार्डिपके अम्बुषीपप्रमाण सह साने पर वे १३२९ होने हैं। इनसे उपर्युक्त क्षेत्रफलके गुणित करने पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके बिना हार्डिपका क्षेत्रफल योजनोंमें आता है। इसके प्रत्यंगुल बनानेके छिये एक योजनके बार कोर्स एक कोसके दो इञ्चार घनुप एक घनुपके बार हाथ और एक हाथके बीबीस अंगुलोंके बर्गसे गुणा कर देना चाहिये क्योंकि, पूर्वाक्त राशि वर्गात्मक है अतएव वर्गात्मक राशिके गुणकर और मागहार भी वर्गात्मक ही होना चाहिये। इस प्रक्रियासे दो समुद्रोंके क्षेत्रफलका बिना हार्डिपका क्षेत्रफल प्रमाणप्रत्यंगुलोंमें आ जाता है। आगे गणितद्वारा ठसीका स्पष्टीकरण किया गया है। यहां धपकाके उपसम्प पाठमें जो संशोधनकी कल्पना पाण्डित्यमें व्यक्त की गई ठसीके अनुसार भय किया गया है क्योंकि मूलकी संकसंछपि की सार्यकता समी निम्न होती है जो कि निम्न उदाहरणसे स्पष्ट है—

उदाहरण—३१६२३ यो., ३ को., १ ८ घ और कुछ कम $1\frac{1}{2}$ अंगुल जो भी धप

छके अनुसार $\frac{23}{2} - \frac{1}{2} \times \frac{1}{10000}$ अंगुल होते हैं। यह अम्बुषीपक्षी परिधि है।

अम्बुषीपक्ष क्षेत्रफल सानेके छिये उपर्युक्त प्रमाणमें अम्बुषीपके व्यासके अनुपात मयान् पक्षीस इञ्चारसे गुणा करना चाहिये जिससे अम्बुषीपक्ष क्षेत्रफल आया—

$$\frac{21 \ 30620 \ 13224 \ 0220}{100000000} \text{ प्रमाण प्राप्त}$$

७९२२८१६३५१४२६३३७५९३५३९५०३३६ एतियमेचमणुसपन्त्रच-
रासिम्हि संखन्त्रपदरंगुलेहि गुणिदे माणुसप्रेषादो संखेज्जगुणचप्पसगा । माणुससोम
खेचपत्तपमाणपदरंगुलेसु संखेज्जस्सेहंगुणमेचोगाइथो मणुसपन्त्रचरासी सम्मादि पि
पासंक्खिज्जं, सम्बुक्खस्सोगाइमणुसपन्त्रचरासिम्हि संखेज्जपमाणपदरंगुलमेचोगाइथ-
गुणमारसुहिरियाणुसंसादो । सम्बुद्धिसिद्धिदेवान पि मणुसपन्त्रचरासीदो संखेज्जगुणार्थ
पसम्पदसिद्धिविमाये जंइवीवपमाणे भोगाहो अत्थि, सचो संखेज्जगुणोगाइवान
वत्थावक्कायविरोहादो । सन्हा मणुसपन्त्रचरासी एयकोडाकोडाक्केटीओ सादिरैया
पि धेत्तम्मा ।

इसे दो समुद्रों के बिना बार्हस्पत्य की परी संज्ञास्थानों पर्याप्त
१३२९ से गुणित कर देने पर दो समुद्रों के बिना बार्हस्पत्य क्षेत्रफल मापा—

2020040000000000 94

१ ८८७१५८

इसके प्रमाणपत्रांप्रमाण बनायेके छिये पूर्णोक्त मापके प्रमाणानुसार ४ x २ • ४ x १४' से श्रवित करने पर इय क्षेत्रफल व्यापा—

४१९७०८४३४८१४४१४२००००००० प्रमाण प्रतर संग्रह.

अब यदि ७९२२८११२५१४२३४३३४५१३५४३९-१ ३३३ इतनी मनुष्य पर्याप्त राशिको संख्यात मत्तरांगुलियोंसे गुणा किया जाय तो उस प्रमाणसे मनुष्य क्षेत्रसे संख्यातगुण्येक प्रतीय वा जायमा । यदि कोई ऐसी भाषाका करे कि मनुष्यकोकय क्षेत्रफल जो प्रमाण मत्तरांगुलियोंसे दिया गया है उसमें छरपात उत्तेषांगुल्यमात्र भवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त राशि समा आयगी, सो ठीक नहीं है, क्योंकि, सबसे उत्कृष्ट भवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त राशिये संख्यात प्रमाण-मत्तरांगुल्यमात्र भवगाहनाके गुणकारका युक्त विस्तार पाया जाता है । उसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त राशिसे संख्यातगुण्ये सर्वायसिद्धिके देवोंकी मी अम्बद्रोपप्रमाण सर्वायसिद्धिके विमानमें भवगाहना नहीं बन सकती है, क्योंकि सर्वायसिद्धि विमानके क्षेत्र फलसे संख्यातगुणी भवगाहनासे युक्त देवक्षेत्र वहाँ पर अवस्थाप माननेमें विरोध पाता है । इसलिये मनुष्य पर्याप्त राशि एक कोइकोइकोइसे अधिक है । ऐस प्रमाण करना चाहिये ।

विशेषार्थ—मनुष्यों का निवास क्षेत्र बार्ड ग्रीप है जिसका व्यास पेंटागोन काज
योग्य है। इसका क्षेत्रफल १९ ००.३ ३-४९ ११११ योग्यप्रमाण होता है। इसके मरवांगुल
५५५५१०५९३८१९५३४० ००००० होते हैं परंतु बार्ड ग्रीपके क्षेत्रफलमेंसे दो मनुष्यों का

[illegible]

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति दम्बपमाणेण
केवडिया, सस्सेज्जा ॥ ४६ ॥

शेकफल्त घटा देने पर दोष शेकफल्त ६१७०८४६६८१६४१६००० ०००० प्रतरांगुलप्रमाण
रहता है, क्योंकि दोनों समुद्रोंमें अन्तर्द्विपन्न मनुष्य होते हुए भी उनका प्रमाण अत्यल्प होनेसे
उनके शेकफल्तकी यहाँ विषया नहीं की गई है। एक मनुष्यका निपात शेष सप्तात प्रतरांगुल
प्रमाण है इसलिये ऊपर आ प्रतरांगुलोंकी संख्या बतझार है मनुष्यरानि उससे कम ही
होता चाहिये। पर मनुष्यराशिसे ९ अंशप्रमाण मान लेने पर २५ अंशप्रमाण शेकफल्तपाठे
मनमें उत्पन्न रहता किसी प्रकार भी संभव नहीं है। कारण कि द्वार द्वीपका शेकफल्त
२५ अंशप्रमाण ही है। कदाचित् यह कहा जाय कि ऊपर जो २५ अंश प्रतरांगुल
प्रमाण शेकफल्त कहा है यह प्रमाणांगुलका अर्थसा कहा गया है। यदि इसके उत्तेष्ठा-
गुण कर लिये जाय तो हममें २५ अंशप्रमाण मनुष्यराशि समा जायगी जो
भी बात नहीं है क्योंकि उत्कृष्ट मणगाहनाकी अपेक्षा २५ अंशप्रमाण मनुष्यराशिसे उक्त
क्षेत्रमें समा जाना अशक्य है। माकाशकी मणगाहनाकी विचित्रतासे यह क्षेत्र दोष नहीं
रहता है ऐसा कहना भी युक्तियुक्त नहीं है, क्योंकि, मणगाहनाम पद योंकर संयोगरूप मन्मोष्य
प्रवेशरूप संशय ही अरु क्षेत्रमें पहुँच पड़ावोंके अधिष्ठानके लिये कारण है। परन्तु मनुष्योंमें
परस्पर इत्यप्रकारका संशय गमादि अवस्थाको छोड़कर प्रायः नहीं पाया जाता है, इसलिये सूत्रमें
जो कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ा नीचेकी भीर कोड़ाकोड़ाकोड़ाके ऊपरकी संख्या मनुष्योंका
प्रमाण कहा है वही युक्तियुक्त है। दूसरे यदि उत्तरीय अंशप्रमाण मनुष्यराशि मान ली जाय
तो मनुष्यनियोंसे तिगुने अथवा सातगुने जो सप्तायसिद्धिके देवोंका प्रमाण कहा है वह
नहीं बन सकता है क्योंकि एक स्थान योजनप्रमाण सप्तायसिद्धिके बिमानमें इनके देवोंका
रहना अशक्य है। इसका कारण यह है कि एक स्थान योजनके अक्षरफल्तक उत्सवक
प्रतरांगुल करने पर भी उनका प्रमाण अष्टादश अंशप्रमाण जाता है और सप्तायसिद्धिके देवोंका
प्रमाण मनुष्यराशिका २५ अंशप्रमाण मान लेने पर ३ अंशप्रमाण जाता है। यह तो विचित्र
है कि एक देश संशयान प्रतरांगुलोंमें रहता है परन्तु यहाँ शेकफल्तके प्रतरांगुल देवोंके प्रमाणसे
कम है इसलिये ३० अंशप्रमाण देवोंका १ अंशप्रमाण अक्षरफल्तपाठे क्षेत्रमें रहना किसी
प्रकार भी संभव नहीं है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि सूत्रमें सप्ताय मनुष्यराशिका
प्रमाण जो कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ा नीचे की भीर कोड़ाकोड़ाकोड़ाके ऊपर कहा है वही ठीक है।

सासादनमम्पगटि गुणस्थानम सकर सपतामपत गुणस्थानवरु प्रयेक गुण
स्थानमें पर्याप्त मनुष्य दम्बप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? सम्पात है ॥ ४६ ॥

पदमि सुचमि मनुसोपे अं चउण्हं गुणङ्गाणाण पमाणं पुचं सं चेव पमाण
पचम्भ, समिहिरिपेदत्तणेण पञ्चचमावेण च रोम्भं विसेसामावादा ।

पमत्तसजदप्पट्टुडि जाव अजोगकेवल्लि ति ओघ ॥ ४७ ॥

एवस्स सुचस्स अत्थो पुण्य परुक्खिणे सि ण बुधे ।

मणुसिणीसु मिच्छाद्वी दव्वपमाणेण केवडिया ? कोडाकोडा
कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्टदो छण्ह वग्गाणसुवरि
सत्तण्ह वग्गाण हेट्टदो ॥ ४८ ॥

पदस्स सुचस्स वक्खामं मणुसपञ्चससुचनक्खणेण तुल्लं । गवरि पंचमवग्गस्स
विमाणे पंचमवग्गमि चेव पक्खित्ते मणुसिणीणमवहारफालो होदि । तेण सत्तमवग्गे
माणे हिरे मणुसणीणं दग्गमागच्छवि । सद्दादो सगोतेरसगुणङ्गाणपमाणे अपमिदे मणु
सिणीमिच्छाद्विदम्भ होदि ।

सामान्य मनुष्य राशिअ प्रमाण कहते समय सासाद्विचार गुणस्यानवर्ती राशिअ
ओ प्रमाण कह माये है, इस सूत्रअ व्याख्यान करते समय उसी प्रमाणका व्याख्यान करना
चाहिये क्योंकि संगृहीत विशेषत्वकी अपेक्षा और पर्याप्तपनेकी अपेक्षा कुछ दोनों राशियोंमें
कोई विशेषता नहीं है ।

प्रमत्तसजद गुणस्यानमे सेकर अपागिकेवली गुणस्यानतक् प्रत्येक गुणस्यानमें
पर्याप्त मनुष्य सामान्य प्रत्येकके समान संख्यात है ॥ ४७ ॥

इस सूत्रअ मध्य पछे कह माये है, इसलिये यहां नहीं कहा जाता है ।

मनुष्यनिर्णोमे मिच्छाद्विटी बीव इत्थमप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? कोडाकोडा
कोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे छठवें बर्गके ऊपर और सातवें बर्गके
नीचे मध्यकी संख्याप्रमाण है ॥ ४८ ॥

इस सूत्रअ व्याख्यान मनुष्य पर्याप्तकी संख्याके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके
गुण्य है । इसकी विशेषता है कि पाँचवें बर्गके विभापके पाँचवें बर्गमें प्रसिद्ध कर देने पर
मनुष्यनिर्णोके प्रमाण कालेके सिधे अवहारकाय होता है । उस अवहारकायसे सातवें बर्गके
मात्रित करने पर मनुष्यनिर्णोके प्रथम प्रमाण जाता है । इसप्रकार ओ मनुष्यनिर्णोकी संख्या
छथ्य व्यक्ते पक्षमेंसे अपने तेरह गुणस्यानके प्रमाणके बरा देने पर मनुष्यनी मिच्छाद्विटीका
प्रमाण होता है ।

१ है पच तव इव जम्भव तव पच इति पच वरा एव । तिव वच इव वाउ उचव अउउ एव इत्येत ।

इति इव वच वच पच व वचमितिपठित्त्य परिचयः । ५५४२११११८८५६९८५५५५५५५५ ७५५२७५२ सि
व ११ वच पचवचवचवच सिचवली माहवीन परिचयः ॥ श्री. श्री. १५१

मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति
द्वयपमाणेण केवडिया ? सखेज्जा ॥ ४९ ॥

मणुसोपे धुत्तमासणादीण संखेज्जिमागा सामणादीण गुणपडिक्कणाण पमाण
मणुसिणीसु इहमि । इदं ? अप्पसत्थवेदोदण सह पठर सम्मइसणलमामावादो । तं
कष आणिल्ले ? 'सम्भत्थोका णमुसपवेदअमज्जदसम्मादिट्ठिणो । इत्थिपेदअसंजदसम्मा
इट्ठिणो असंजदसंजगुणा । पुरिसवेदमसज्जदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पावहुअ
सुत्तादो कारणस्स योवत्तण आणिल्ले । तदा सामणसम्माइट्ठिमादीण पि योवत्तण सिद्ध

विशेषार्थ—किसी भी विषयिज बगमें इसाके विभाग को जोड़कर उसका उसके
उपरिम धर्मके उपरिम बगमें भाग देने पर उस विषयिज बगके मतका तीन अनुपात छम्प
आता है । तदनुसार पाँचवें बगमें उसीका विभाग जोड़कर सातवें धर्ममें भाग देने पर पाँचवें
बगके पतकूप मनुष्य राशिका तीन अनुपात छम्प आता है । यही मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण
है । इसमेंसे साक्षात्त भादि तेरह गुणस्थानबर्गी राशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्याइदि
त्रियोंका प्रमाण होता है यह जो मूलमें कहा है इसमें प्रतीत होता है कि उपयुक्त प्रमाण त्रियोंका
मात्रवेदकी प्रधानतासे कहा गया है । यदि यह प्रमाण द्रव्यत्रियोंका होता तो मूलमें 'इसमेंसे
साक्षात्त भादि तेरह गुणस्थानराशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्याइदि मनुष्य योनिमतियोंका
प्रमाण होता है' ऐसा न कह कर केवल इतना ही कहा जाता कि इस प्रमाणमेंसे
सामान्य भादि बार गुणस्थानबर्गी राशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्याइदि योनिमतियोंका प्रमाण
होता है । परंतु गोमयसारकी टीकामें यह प्रमाण द्रव्यवेदकी अपर्याप्त बताया है ।

मनुष्यनियोंमें साक्षात्तमम्यगइदि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान
तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? सख्यात है ॥ ४९ ॥

सामान्य मनुष्योंमें सामान्यमम्यगइदि भादि गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंकी जो संख्या
कही गई है उसके संख्यातवें भाग मनुष्यनियोंमें साक्षात्तमम्यगइदि भादि गुणस्थानप्रतिपक्ष
जीवोंका प्रमाण है क्योंकि, मम्यगम्य वेदके उदयक माय प्रचुर जीवोंको मम्यगम्यसाध साध
नहीं होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'मनुष्यवेदी मसपतसम्यगइदि जीव सखम इत्ताक है । त्वीवेदी मस-
पतसम्यगइदि जीव इमस असंख्यातगुणे है । भारपुकरेदी मसंयतसम्यगइदि इमसे असंख्यात
गुणे है । इस मसपतसम्यगइदि प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे त्वीवेदियोंके अर्थ होनेके कारणका
स्फोटनमा जाना जाता है । और इसीसे सामान्यमम्यगइदि भादिके भी स्फोटनमा सिद्ध हो

इति । नवरि एतिय तेसिं पमाणमिदि न गच्छेदे, सपदि उवएसामावादो ।

मणुसअपज्जता दव्वपमाणेण केवडिया ? असखेज्जा ॥ ५० ॥

एव धिम्मचि अपज्जे मोहण उदि अपज्जत्ताणं गहण स्ययम्भ । इदो ? एव
मुणपडिबन्धपमाणपरुवणामागम्याहाउववत्तीदो । सामन्नेण अवगद् अस्सखेज्जससिसिउपरु
वगहमुचरमुचमाह—

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ५१ ॥

एवस्स मुचस्स अत्थो पुम्भ बहुसो परुविश ति पुणा न मुचदे पुणरुचमएय ।

खेत्तेण सेढीए असखेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो
असखेज्जाओ जोयणकोहीओ । मणुस अपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तोहि
सेढिमवाहिरदि अंगुलवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५२ ॥ इदि
एदं वयण न पडदे, फलामावा । संते संमोव विपहिचारे न विसेमवमत्तयवैतं

आता है । परंतु इतनी बिशेषता है कि इन साक्षात्तसम्पत्तयि आदि योक्त्रिमतिर्योक्त्र प्रमाण इतना
है यह नहीं आता आता है क्योंकि इस कालमें इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

सम्पत्तयर्पात्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ५१ ॥

यहां पर निवृत्त्यर्पात्तको प्रहण न करके सम्पत्तयर्पात्तको प्रहण करना चाहिये
क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोके प्रमाणके प्रहणका अभाव सम्पत्तय न नहीं सकता है ।

अपत्तय मनुष्य एतदि असंख्यातम्प है यह बात सामान्यरूपसे तो आब की पर
बिरोधरूपसे उत्तका जान नहीं हुआ अतः इस असंख्यातके बिरोधरूपसे प्रहण करनेके विषे
भागेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा सम्पत्तयर्पात्त मनुष्य असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५२ ॥

इस सूत्रका अर्थ यहसे अनेकवार कह गये हैं, अतः पुनरुक्त बोधके अर्थसे पुनः
नहीं कहते हैं ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगभेजीके असंख्यातके भागप्रमाण सम्पत्तयर्पात्त मनुष्य हैं ।
उस जगभेजीके असंख्यातके भागरूप भेजीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है ।
सूर्यमुखके तृतीय वर्गमूल गुणित प्रथम वर्गमूलको इसाकाररूपसे स्थापित करके रूपा
धिक सम्पत्तयर्पात्तक मनुष्योंके द्वारा जगभेजी अपहृत होती है ॥ ५३ ॥

संक्षेप—यह सूत्र बचन धरित नहीं होना है क्योंकि, इस बचनका कोई फल नहीं

मवदि । एतस्य पुनः समनो णव इदि । परिहारो भुषदे । सुत्तप विणा सेती असंखज
जोयणकान्तिप्रमाणो होदि ति ण जाणिमदे, तदो असंखज्जाओ जोयणकोडीओ सेत्तिप्रमाण
मिदि जाणावणइमिद वयप । परियम्मादो असंखज्जाओ जोयणकोडीओ सेतीण प्रमाण
मवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स पलेण परियम्पपवुत्तीदो । अइवा सेतीए असंखज्जि
भागो वि सेती पुषदे, अवयविणामस्स अवयवे पवुत्तिदमणादो । जहा गामगेदसे ददे
गामो दद इदि । अइवा एवे संवषा कायम्भो । तस्स सतीए असंखज्जिप्रमाणस्स आयामो
दीहत्तण असंखज्जाओ जोयणकोडीओ होदि ति । अपन्नत्तएहि रुक्कपक्खित्तएहि रुक्का
पक्खित्तएहि रुक्क पक्खित्तएहि ति तिसु वि पात्तु रुक्कादियपन्नत्तरासी पक्खिविद्वन्वा ।
पुणो लट्ठिद रुक्कादियमशुमपन्नत्तरासिमवणिद मनुस्मापन्नत्त होति । अंगुलवग्गमल
च त तदियवग्गमल्लमुणिद च अंगुलवग्गमल्लत्तिपवग्गमल्लमुणिद सेण सत्तागमूदण सेती
अरुहिरिज्जदि ति अ सुत्त होदि ।

ई । स्पष्टिकारकी समाधना होने पर ही विशयण फलवाला होता है । परन्तु यहां पर तो उसकी
समाधना ही नहीं है ?

समाधान—भागे पूरात हाकाका परिहार करते हैं । सूत्रके विमा अगभर्षिके
असंख्यातये भागरूप भेणी असंख्यात करोड़ योजनप्रमाण है यह नहीं जाना जाता है अतः
अगभर्षिके असंख्यातये भागरूप भेणीका प्रमाण समख्यात करोड़ याजन है इसका ज्ञान
करानके तिष्ठ उक्त ययन दिया है ।

टिप्पणी—अगभर्षिक असंख्यातये भागरूप भेणीका आयाम समख्यात करोड़ याजन है
यह परिक्रमसे जाना जाता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, इस सूत्रके अन्तमें परिक्रमभी प्रकृति हुई है ।

अथवा अगभर्षिके असंख्यातये भागको भी भेणी कहन है क्योंकि अथवापाके नामकी
अवयवमें प्रकृति होती जाती है । जैसे ग्रामक एक भागके रूप होने पर ग्राम उक्त गया ऐसा
कहा जाता है । अथवा इसप्रकारका संख्या कर लेना चाहिये कि उस भेणीके समख्यातये
भागका आयाम अथवा सत्ता समख्यात करोड़ योजन है । अथवात्तरदि रुक्कपक्खित्तएहि
रुक्का पक्खित्तएहि रुक्क पक्खित्तएहि इन तीनों भी स्थानोंमें किसी भी स्थानसे
रुक्काधिक पयात्त मनुष्य राशिवा प्रक्षय करना चाहिये । पुनः सध्यमे रुक्काधिक पयात्त
मनुष्य राशिके घटा देने पर सध्यपयात्त मनुष्योंका प्रमाण होता है । मूर्ध्वगुल्के प्रथम
वगमूत्त मूर्तीय वगमूत्तम गुणित करके जो सध्य भाग सत्ताकाक्य उस स्थानमें अगभर्षिकी
अपहन होगी है यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

निष्प्राय—नामाय मनुष्यराशि प्रमाणमें पयात्त मनुष्यराशिवा प्रमाण घटा देने
पर सध्यपयात्त मनुष्यराशिवा प्रमाण शेष रहता है । मूर्ध्वगुल्के प्रथम मूर्तीय
वगमूत्त वगमूत्त गुणा करनेमें जो राशि भागे उरगे अगभर्षिकी याजित करके सत्ता

कालवगा । अहं पदगुठस्त असंखेज्जदिमागो असंखेज्जगणि सविअगुलाणि । केचिय-
मेत्ताणि ? विदियवग्गमूलमेत्ताणि । सेद्वी असंखज्जगुणा । को गुणगारो ? सगअवहारकालो ।
एव मनुसपज्जत्त-मनुसिणीय पि सत्थाणप्पावद्वग वचन् । सासणादीण सत्थानं णरिय ।
मनुसपज्जत्त-मनुसिणीय पि णरिय सत्थाणप्पावद्वग ।

परत्थाणे पयद्-सम्बरयोवा चचारि उवसामगा । पच खरगा संखेज्जगुणा ।
सम्भोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसम्भदा संखेज्जगुणा । पमत्तसम्भदा संखेज्जगुणा ।
संभदासम्भदा संखेज्जगुणा । सासणसम्माइही संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइही संखेज्जगुणा ।
असंभदसम्माइही संखेज्जगुणा । तदो मिच्छाइद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? सगअवहारकालस्त संखेज्जदिमागो । को पदिमागो ? असंभदसम्माइद्विणो ।
तस्मैव द्वन्द्वमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? पुण्णमणिदो । सेद्वी असंखेज्जगुणा । को
गुणगारो ? पुण्णं मणिदो । मनुसपज्जत्तेसु सम्बरयोवा चचारि उवसामगा । पच खरगा
संखेज्जगुणा । एवं जाव असंभदसम्माइद्वि पि । तदो मिच्छाइद्विद्वन्द्व संखेज्जगुणं । को

गुणधार है जो प्रतीतिगुणका असंख्यातर्था भाग असंख्यात सूर्यगुणप्रमाण है । असंख्यात
सूर्यगुणोंका प्रमाण कितना है ? सूर्यगुणके द्वितीय वगमूलप्रमाण है । मनुष्यमिच्छादि द्रव्यसे
जगत्तत्त्वी असंख्यातगुणी है । गुणधार क्या है ? अपने अवधारकास गुणधार है । इसीप्रकार
मनुष्य छप्पपयात्तोंके स्थस्थान अवधारका मी कथन करना चाहिये । सासादनसम्पत्ति
आदि गुणस्थानवर्ती मनुष्योंका स्थस्थान अवधारका नहीं है । उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्य
मी मनुष्यनिर्वाह मी स्थस्थान अवधारका नहीं है ।

अब परस्थान अवधारका का प्रपञ्च क्षेत्र प्रवृत्ति विषयका पथन करते हैं— चारों
गुणस्थानवर्ती उपशामक सप्तम स्तोत्र है । पाँचों गुणस्थानवर्ती सप्तक संख्यातगुणे हैं । सप्तो
मिनेपत्ती सप्तकोसे संख्यातगुणे हैं । अष्टमस्तमपत्त जीव सप्तमिनेपत्तियोग संख्यातगुण है ।
प्रमत्तसप्तत जीव अष्टमस्तमपत्तमे संख्यातगुणे हैं । सप्ततासप्तत मनुष्य प्रमत्तसप्ततकोसे
संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्पत्ति मनुष्य सप्ततासप्तत मनुष्योंसे संख्यातगुण है । सम्प
मिच्छादि मनुष्य सासादनसम्पत्ति मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्पत्ति मनुष्य
सम्पत्तिमिच्छादि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । अमयतसम्पत्ति मनुष्योंके प्रमाणसे मनुष्य
मिच्छादि अवधारकास संख्यातगुणा है । गुणधार क्या है ? अपने अवधारकास
संख्यातर्था भाग गुणधार है । प्रतिमाग क्या है ? असंयतसम्पत्ति मनुष्योंका प्रमाण मणिमाग
है । उही मिच्छादि मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण अवधारकासमे असंख्यातगुणा है । गुणधार क्या
है ? पदमे वद भावे है । मनुष्य मिच्छादि द्रव्यप्रमाणमे जगत्तत्त्वी असंख्यातगुणी है । गुणधार
क्या है ? पदमे वद भाव है । मनुष्य पयात्तर्था चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सप्तसे पादे
हैं । पाँचों गुणस्थानवर्ती सप्तक उपशामकोसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार उच्यतेतर
असंयतसम्पत्ति तच्च अवधारका सप्तमना चाहिये । असंयतसम्पत्ति मनुष्योंके प्रमाणसे

गुणगारो ! संखेन्द्रा समया । एवं चेव मनुसिपीषु वि परत्थानं वचस्यं ।

सम्बन्धपरत्थापने पद- सम्बन्धबोधा अयोगिकेवस्थित्यो । चत्वारि उक्तानामगा संखेन्द्रा गुणा । चत्वारि खगगा संखेन्द्रगुणा । सद्योगिकेवली संखेन्द्रगुणा । अप्यमत्तमसदा संखेन्द्रगुणा । पमत्तसदा संखेन्द्रगुणा । संसदासंसदा संखेन्द्रगुणा । सातणसम्मा इत्थिपो संखेन्द्रगुणा । सम्मामिच्छाइत्थिपो संखेन्द्रगुणा । असंघदसम्माइत्थिपो संखेन्द्रगुणा । मनुसपन्नचमिच्छाइत्थिपो संखेन्द्रगुणा । मनुसिपीमिच्छाइत्थिपो संखेन्द्रगुणा । मनुस-अपत्तचअवहारकसो असंखेन्द्रगुणो । मनुसअपत्तचअवहारमसंखेन्द्रगुणं । उवरि वाव सोगो वि ताव वाविच्छा वचस्य । मनुसिपीगुणपडिबन्ध्याण पमापमेत्थिपमिदि वावहारिदं तम्हा सम्बन्धपरत्थापणावहुण्ठेति परवणा व कदा ।

एव मनुस्मर्प समसा ।

देवगईए देवेसु मिच्छाइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया, असं
खेन्द्रा ॥ ५३ ॥

मिथ्याएदि पर्याप्त मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार मनुष्यनिर्बोमें भी परत्थापन अत्यवहुत्वका कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परत्थापनमें अत्यवहुत्वका कथन प्रारंभ है- अयोगिकेवली मनुष्य सबसे स्तोक है । चारों गुणस्थानवर्ती उपहामक अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानवर्ती सपर उपहामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली सपरकोंसे संख्यातगुण हैं । अमत्तसपत्त मनुष्य सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसपत्त मनुष्य अमत्तसपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । संवतासपत्त मनुष्य प्रमत्तसपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सासात्मसम्यग्दृष्टि मनुष्य सपत्तासपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्याएदि मनुष्य सासात्मसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । असंघतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्याएदियोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य पर्याप्त मिथ्याएदि जीव असंघतसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्यनी मिथ्याएदि जीव पर्याप्त मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाक मनुष्यनी मिथ्याएदियोंसे असंख्यातगुणा है । मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकानसे असंख्यात गुणा है । इसके ऊपर कोऊ तक जानकर अत्यवहु-त्वका कथन करना चाहिये । गुणस्थानप्रतिपन्न मनुष्यनिर्बोका प्रमाण इतना है यह निश्चित नहीं है इसलिय सर्व परत्थापन अत्यवहुत्वका कथन करने समय गुणस्थानप्रतिपन्न उनके प्रमाणकी प्रकृष्टता नहीं थी ।

इसप्रकार मनुष्यगतिका कथन समाप्त हुआ ।

देवमतिप्रतिपन्न देवोंमें मिथ्याएदि तीन द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ ५३ ॥

एवम् देवगद्गहमेण सेसगद्गहमेणो कदो इवदि । देवेसु चि वयणेण तस्य द्विदम्बपडिसेहो कदो इवदि । मिच्छाहृदि चि वयणेण सेमगुणद्वामपडिसेहो कदो इवदि । दम्बपद्मणेनेचि वयणेण सेचादिपडिसेहो कदो इवदि । केवडिया इदि वयणेण सुचस्स पद्मपञ्च छपिद् इवदि । असंखेआ इदि वयणेण संखेज्जाणताय पडिपियसी कदो इवदि ।

किमसंखेज्जाणाम ? ओ रासी एगेगरूवे अबणिज्जमाणे पिट्ठादि सो असंखेज्जो । ओ पुण्ण न समप्पइ सो रासी अणतो । अदि एव तो वयसइदिसकखयअद्दपोग्गलपरियइ कालो वि असंखेज्जो आयदे ? होइ णाम । कथं पुणो तस्स अद्दपोग्गलपरियइस्स अणतववएसो ? इदि नेण, तस्स उवयारपिबधयत्तादो । त अहा—अणतस्स केवलणामस्स विसयत्तादो अद्दपोग्गलपरियइकालो वि अणतो होदि । केवलणामविसयत्त पडि विसेसामाया सम्भसत्ताणामणतवण आयदे ? ने न, ओहिणामविसयवदिरिचसत्तामे अणणविसयत्तमेण तदुवयारपपुत्तीदो । अहा ज सत्ताण पडिदियविसओ त सखज्जं

सूत्रमे देवगति पत्रके प्रहय करनेसे दोय गतियोंका प्रतिपेय हो जाता है । दोनोंमें ' येसा वचन देनेसे देवलोकेमें स्थित भव्य द्रव्योंका प्रतिपेय हो जाता है । मिथ्याहृदि इस वचनसे भव्य गुणस्थानोंका प्रतिपेय हो जाता है । द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा ' इस वचनसे केवल विप्रमाणोंका प्रतिपेय हो जाता है । किन्तु ' इस वचनसे सूत्रकी प्रमाणात्ता सूचित हो जाती है । असत्प्रातर्हं ' इस वचनसे संख्यात्ता और अनन्त सत्प्रातर्हं सिद्धि हो जाती है ।

प्रश्ना—असत्प्रातर्हं किले कहते हैं अर्थात् अनन्तसे असत्प्रातर्हं क्या मेर है ?

समाधान—एक एक संख्याके घटते जाने पर जो राशि समाप्त हो जाती है वह असत्प्रातर्हं और जो राशि समाप्त नहीं होती है वह अनन्त है ।

प्रश्ना—यदि ऐसा है तो व्ययसहित होनेसे नाशके प्राप्त होनेवाला अर्धपुत्रल परिवर्तन काय भी असत्प्रातरूप हो जायगा ?

समाधान—हो जाये ।

प्रश्ना—तो फिर इस अर्धपुत्रल परिवर्तनरूप कायके अनन्त संख्या कैसे ही गई है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, अर्धपुत्रल परिवर्तनरूप कायके जो अनन्त संख्या ही गई है वह उपकारनिमित्तक है । आगे उर्तीका स्पर्शकरय करते हैं—अनन्तरूप केवलज्ञानका विषय होनेसे अर्धपुत्रल परिवर्तनरूप भी अनन्त है ऐसा कहा जाता है ।

प्रश्ना—केवलज्ञानके विषयत्वके प्रति कोई विशयता न होनेसे सभी संख्याओंके अनन्तत्व प्राप्त हो जायगा ?

समाधान—नहीं क्योंकि जो संख्याएं अवधिज्ञानका विषय हो सकती हैं उनसे अतिरिक्त ऊपरकी संख्याएं केवलज्ञानके छोड़कर दूसरे और किसी भी ज्ञानका विषय नहीं हो सकती हैं अतएव ऐसी संख्याओंमें अनन्तरूपके उपकारकी प्रवृत्ति हो जाती है । अथवा जो संख्या पाँचों इन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात्ता है । उसके ऊपर जो संख्या अवधिज्ञानका विषय

नाम । तदो उबरि अमोहिणाजबिसमो समसंखेज्ज नाम । तदो उबरि चं केवसनाजस्तेज
बिसजो समर्णत नाम । सपहि सुहुमदरपरुवणहुसुचरसुचमाह—

असखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ५४ ॥

पावत्समिदं सुचं ।

खेत्तेण पदरस्स वेळ्ळप्पण्णगुलसयवग्गपडिभागेण' ॥ ५५ ॥

देवमिच्छाद्वि वि अणुवह्वे । अंगुलमिदि सुचं एत्थं सप्पिअगुलं पंचम्व । सद्

हे वह असम्पात है । उसके ऊपर जो केवलज्ञानके विषयभावको ही प्राप्त होती है वह जगत्त है ।
जब अतिसूक्ष्म प्रकृपणाके प्रकृपण करनेके लिये भागेका सूत्र कहते हैं—

कासकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि देव असंख्यातासम्पात अवसर्पिभिर्यो और उत्त
र्विधिपाँके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले बतकाया जा चुका है ।

क्षेत्रक्षी अपेक्षा अगप्रतरके दोसौ छप्पन अंगुलोंके बर्गरूप प्रतिभागसे देव मिथ्या
दृष्टि राशि आती है, अर्थात् दोसौ छप्पन सूच्यगुलके बर्गरूप मागहारका अगप्रतरमें
माग देने पर देव मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—पद्यवि दोसौ छप्पन सूच्यगुलोंके बर्गरूप माग अगप्रतरमें देनेसे ज्योतिषी
देवोंकी संख्या आती है फिर मी व्यस्तर जादि होय देवोंका प्रमाण ज्योतिषी देवोंके संख्यातमें
मापमात्र है इसलिये यहाँ पर द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा संपूर्ण देवराशिका प्रमाण पूर्वोक्त
कहा है । विशेषरूपसे विचार करने पर तो दोसौ छप्पन सूच्यगुलोंके बर्गरूप अगप्रतरमें माग
देने पर जो कल्प आये उससे कुछ अधिक संपूर्ण देवोंका प्रमाण है ऐसा समझना चाहिये ।
साय ही यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि यहाँ जीवब्रह्ममें बीबद्द मार्गणामोंमें मिथ्यादृष्टि
आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा पृथक् पृथक् संख्या बतलाई है । इसलिये उस उस मार्गणामें
सामान्य संख्याके प्रमाणसे मिथ्यादृष्टिके प्रमाणको कुछ कम कहना चाहिये था । परंतु बिना
न कह कर सामान्य संख्याका प्रमाण ही यहाँ माग कर मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण कहा है
तो यह कथन मी द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे ही सर्वत्र समझना चाहिये । विशेषरूपसे
विचार करने पर तो सामान्य संख्याके प्रमाणमेंसे गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके प्रमाणको घटा
देने पर ही मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण होगा ।

यहाँ पर देव मिथ्यादृष्टि पक्षी अनुवृत्ति हुई है । सूत्रमें अंगुल ऐसा सामान्य पर

सदो वेम्ह विसेसण इपदि, ण छप्पण्णस्स। वेहि विसेसिदछप्पण्णसदस्स गहणं पसज्जदि ति
 ण च एव, अपिठ्ठसादो । पडिमागो मागदारा । सदो वेसपछप्पण्णगुलवग्गेय अगपदरे
 खडिदे तस्य एगसंवेण तुल्ला देवमिच्छाद्वी होति ति च पुच होदि । पण्णडिसइस्स
 पचसय-छत्तीसपदरगुलानि मागदारा कहु अगपदरस्सुवरि खडिदादओ पडिदियतिरिक्ख-
 ओपिणीमिच्छाद्वीय पचया ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणं ओधं

॥ ५६ ॥

पदेसिं देवगुणपडिवण्णाण परूवणा सामण्णेण ओपगुणपडिवण्णदम्पपमाण
 परूवणमणुहरदि ति ओधेजेति मणिव । पज्जवट्ठियण्ण अवलविज्जमाणे अरिष विसेसो,
 अण्णहा सेमगइगुणपडिवण्णाणममावप्पसंगा । त विसेस पचइत्तामो । त जहा—
 आवलियाए असंछज्जदिमाण्य ओपअसज्जदसम्माइट्ठिअवहारकाल खडेऊण छद
 तमिह चेव पक्खित्ते देवअसज्जदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असं

कहने पर वहां ठससे सुख्यगुणका प्रहण करना चाहिये । हाठ शब्द बोध विरोध है
 छप्पण्णका नहीं । यदि कोई कहे कि वो विशिष्ट छप्पण्णसौका प्रहण हो जामा चाहिये सो बात
 नहीं है क्योंकि, ऐसा मानना इष्ट नहीं है । प्रतिमापन्न अर्थ मागदारा है अतः यह अमिष्य
 हुआ कि बोली छप्पण्ण सुख्यगुणोंके वर्गसे अग्रतरके अंकित करने पर इनमेंसे एक बर्गके
 परावर देव मिष्याद्वि जीव होते हैं । पैंसठ हजार पाँचसी छत्तीस प्रतरगुणोंको मागदारा
 करके अग्रतरके ऊपर अंकित चाहिये पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमयी मिष्याद्वियोंके अंकित
 अदिकके समान कहना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यमिष्याद्वि और असपतसम्यग्दृष्टि सामान्य देवोंका
 द्रव्यप्रमाण आध प्ररूपणाक समान वस्योपमके असम्पातवें माग है ॥ ५६ ॥

इन गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी संख्या-प्ररूपणा सामान्यरूपसे गुणस्थानप्रतिपन्न
 सामान्य जीवोंकी संख्या प्ररूपणाका अनुकरण करती है अतएव ओघसे' ऐसा कहा है । पर्या
 यार्थिक नयका अलङ्कार करने पर ता विरोधता है ही अन्यथा शेष गतिसंबन्धी गुणस्थान
 प्रतिपन्न जीवोंके अभावका प्रसंग आ जाता है । आगे उसी विरोधताको बतलाते हैं । यह
 इसप्रकार है—

आवलीके असेक्यातवें मागसे सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाकको अंकित
 करके जो छप्प आगे उसे उसी सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाकमें मिखा देने पर देव
 असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाक होता है । इस देव असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाकको

स्वेज्जदिमाप्य गुणिदे देवसम्मामिच्छाद्विभवहारकालो होदि । त सस्वेज्जस्वेदि गुणिदे
देवसासपसम्मामिच्छाद्विभवहारकालो होदि । एवेदि अबहारकालेदि पत्तिरोवमस्सुवरि खदि
दादजो पुब्ब व वत्तम्भा ।

भवणवासियदेवेषु मिच्छाद्वि दब्बपमाणेण केवडिया, अस
स्वेज्जा ॥ ५७ ॥

एवस्स सुचस्स अत्थो सुगमो ।

असस्वेज्जासस्वेज्जादि ओसपिणि उस्सपिणीदि अबहरति
कालेण ॥ ५८ ॥

एवस्स वि अत्थो सुगमो चेव ।

स्वेत्तेण असस्वेज्जाओ सेठीओ पदरस्स असस्वेज्जदिभागो । तेसिं
सेठीणं विक्खंमसूह अगुल अंगुलवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५९ ॥

एवस्स अस्सट्ठमहसुचस्स विवरण सुचदे । असस्वेज्जासस्वेज्जमपेपविपप्य । तस्य

आवडीके मसंस्पातवें मागसे गुणित करने पर देव सम्पत्तिष्पादधियोका अवहारकाल
होता है । उस देव सम्पत्तिष्पादधि अवहारकालके संस्पातसे गुणित करने पर देव साता-
दत्तसम्पत्तिधियोका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालोंके द्वारा पञ्चोपमके ऊपर कथित
आविकल्प कथन पहलेके समान कहना चाहिये ।

भवनवासी देवोंमें मिष्पादधि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अत-
स्पात हैं ॥ ५७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा मिष्पादधि भवनवासी देव असस्पातासम्पात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी मिष्पादधि देव असस्पात अवभेगीप्रमाण हैं जो
असस्पात अवभेगियों अवप्रवरके अस्पातवें मापप्रमाण हैं । उन अस्पात अव-
भेगियोंकी विष्क्रमद्वयी, धूप्यगुलके दृश्यगुलके प्रथम वर्गमूलमे गुणित करके जो सङ्घ
आवे, उठनी है ॥ ५९ ॥

अत्यन्त सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका विवरण सिद्ध आता है—

१ अवभेगी अवप्रवरता येन अवभेगी विविद्वता । अत इति १ १ १

२ अतिवृत्तव्यवस्थायि इति वाद ।

३ अत्यन्तव्यवस्थायि $\times \times$ वीर्यव्यवस्थायि $\times \times$ । अत $\times \times$ देवता इति वीर्यव्यवस्थायि । यो अत १ १ १

असंख्येन्द्राग्रो सेद्रीओ इदि बुलं जगपद्ममाइ काळण उबारिम अमंवेज्जामंसेन्द्रविपप्य पडिमइहं । पदस्म अमंसेज्जदिमागो वि अनेयविपप्या इदि कहु तं गिण्ययद् मडीण विक्खमसूरं उवा । तस्से पमाण पुब्बे । अंगुल अंगुलवगमूलगुमिदं मवणवासिय मिच्छाइइविक्खमसूरं इदि वि सबसंयमं । धणगुलपडमवगमूलमिदि अं पुच होदि । अंगुलवगमूलगुनिदेणेण तइयाणिदमो कव घड्दे ? पडमाविहरीए अहु एसो तइया निदेमो दहुवो । अण्णत्थ ण एव दिस्सदीदि वे ण, 'वेछप्पणंगुलसदवगपडिमाणेय' इच्छात्ति सुचेमुबलेमा । अइवा विमिसे एसा तइयाविहरी इहुवा । अंगुलवगमूल गुणयकारणेण जम्भप्पणगुलं सा विक्खमसूरं होदि वि अ बुलं होदि । एदाए विक्खमसूरं जगमदि गुनिदे मवणवासियमिच्छाइइपमाणं होदि ।

सासणसम्माइट्टि-सम्मामिच्छाइट्टि-असंजदसम्माइटिपरुवणा ओधं ॥ ६० ॥

मसक्यातासप्पात अनेक प्रकारका हैं इसलिये जगपद्मको भावि करके उपरिम असंख्याता संख्यातके विच्छेदको प्रतिपेक्ष करनेके लिये मयनवासी मिच्छादृष्टि देखीका प्रमाण मसक्यात जगभेणियप्रमाण कहा है । वह जगपद्मका मसक्यातवा भाग ही अनेक प्रकारका है ऐसा समझकर उसका निर्णय करनेके लिये वन मसक्यात जगभेणियोंकी विच्छेदसूची करी । आगे उस विच्छेदसूचीका प्रमाण कहते हैं—सूच्यगुलको सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो छम्प भागे हतनी मयनवासी मिच्छादृष्टियोंकी विच्छेदसूची है, ऐसा इस कथनका संवत्स करना चाहिये । जो विच्छेदसूची वर्णगुलके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है यह इस कथनका अतिप्रमाण है ।

श्रुक्क— अंगुलवगमूलगुनिदेण इसप्रकार यहां तृतीया विमलिक्य निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान— प्रथमा विमलिक्य अर्थमें यह तृतीया विमलिक्य निर्देश जानना चाहिये ।

श्रुक्क— इधरी जगइ ऐसा नहीं बुजा जाना है ?

समाधान— नहीं क्योंकि वेछप्पणंगुलसदवगपडिमाणेय इत्यारिक सूच्यमें प्रथमा विमलिक्ये अर्थमें तृतीया विमलिक्य देखी जाती है । मयवा निमित्तत्वं अर्थमें यह तृतीया विमलिक्य जानना चाहिये । जिससे यह अभिप्राय हुआ कि अंगुलके वर्गमूलके गुणनकारणसे जो अंगुल उत्पन्न हो तत्प्रमाण मयनवासी मिच्छादृष्टियोंकी विच्छेदसूची है । इस विच्छेदसूचीसे जगभेणिके गुणित करने पर मयनवासी मिच्छादृष्टियोंका प्रमाण होता है ।

मासादनमम्पगइदि, मम्पग्मिच्छादृष्टि और अमंयतमम्पगइदि मयनवासी जीवोंकी प्रकृषपा सामान्य प्रकृषपाके समान है ॥ ६० ॥

द्वन्द्वद्विषय एव भवति विज्ञमात्रे ओषेय सह एव चर्तुर्दसजादो । पञ्चद्विषय एव
 संविज्ञमात्रे अस्मि विसेसा तं पुरदो भविस्मामो ।

वाणर्वेतरदेवेसु मिच्छादृष्टी दब्धपमाणेण केवहिया, असखेज्जा'
 ॥ ६१ ॥

एदस्स वृत्तस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंसज्जासंखेज्जाहि ओसथिणि उस्सपिणीहि अवहिरंति
 कालेण ॥ ६२ ॥

एदस्स वि सुद्धमत्तसुत्तस्स अत्थो भवदे ।

खेत्तेण पदरस्स सखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण ॥ ६३ ॥

एदस्स अदसुद्धमद्वन्द्वद्विषयमागदसुत्तस्स अत्थो भवदे । पदरस्सेदि विज्ञमात्र-
 रासिभिरेमो । संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएणेहि सद्धभिरेमो । पदरस्स संखेज्जजोयण

द्रव्याधिक नयन्य भवत्यन्व करने पर ओष प्रकृषणाके साथ गुणस्यानप्रतिपक्ष भवन
 वासी प्रकृषणाकी एकता अर्थात् समानता देखी जाती है । परंतु पयापार्षिक नयन्य अवलम्बन
 करने पर तो उक्त दोनों प्रकृषणाओंमें विशेषता है ही । इस विशेषताको हमें बतलावेंगे ।

वानभ्यन्तर देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अमंस्मात्
 ई ॥ ६१ ॥

सुद्ध अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा वानभ्यन्तर देव अमंस्मात्तामस्यात् अवसर्पिणियों और
 उस्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६२ ॥

सुद्ध अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका भी अर्थ सात है ।

क्षत्रकी अपेक्षा अगप्रतरके यस्यात्तमौ योजनोंके बर्गरूप प्रतिमागसे वानभ्यन्तर
 मिथ्यादृष्टि राशि जाती है, अथात् यस्यात्तमौ योजनोंके बर्गरूप मागहारका अगप्रतरमें
 माग देने पर जो लब्ध आने उतन वानभ्यन्तर मिथ्यादृष्टि दृष्ट है ॥ ६३ ॥

अति सुद्ध अर्थका प्रतिपादन करनेके लिये जाये हुए इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—
 भवदे पदरस्स इस पदसे अपरिहार्यमाण राक्षिक निर्देश किया है । संखेज्जजोयणसदवग्ग-
 पडिभाएण इस पदसे मागहार राक्षिक प्रतिपादनपूर्वक लब्ध राक्षिक निर्देश किया है ।

मयवग्गपडिभागो वाणवेंतरमिच्छाइड्ढिदम्बपमार्ग होदि । पडिभागो इदि किं वुच
इवदि ? संखेज्जजोयणसयवग्गमेवमगपदरस्स मागेसु एगमागो पडिभागो णाम ।
पडिभागसदो भागहारम्मि वट्टमाणो कज्जे फारणोवपारेण लद्धम्मि वट्टदि पि पेचव्वं ।
एत्थ पडमाए विहत्तीए अट्ठे उदिया दट्टव्वा । अहवा एस भिदेसो पडमाविहत्ती चेव
ज्झा इवदि तहा साहेयव्वो । संखेज्जजोयणेपि वुचे तिप्पिजोयणसयमगुल काऊम्म बग्गिदे
ओ लप्पज्जदि रासी सो पेचव्वो । तस्स पमाण पंच कोढाकोडिसयाभि तीसकोढा
कोढीओ षडरासीदिस्कोडिसयसहस्साणि सोलसकोडिसहस्साणि च भवदि । अदि
ओणिणीणमवहारकालो तप्पाओग्गसखेज्जज्जगुणिदसकज्जोयणसयमगुलवग्गमेवो इवदि
तो वाणवेंतरमिच्छाइड्ढीण पि अवहारकालो एधियपदरंगुलमेवो इवदि । अध व्दि
पचिदियतिरिक्खओणिणीमिच्छाइड्ढीणमवहारकालो लज्जोयणसयमगुलवग्गमेवो चेव तो
वाणवेंतरमिच्छाइड्ढिअवहारकालेण' तिप्पिजोयणमयगुलवग्गस्स संखेज्जदिमाएण होइव्व,
अप्पहा अप्पावहुगसुचेण सह विरोहादो । एदेण अवहारकालेण अगपदरे मागे हिदे

इसका यह तात्पर्य हुआ कि अगमतरमे संख्यातसी योजनोंके वर्गका भाग देने पर जो प्रतिभाग
आये वतना वाजप्यस्तर मिथ्यादृष्टि वेबोंका प्रमाण है ।

श्रुंका — प्रतिभाग इस पक्षे यहाँ क्या कहा गया है ?

समाधान — संख्यातसी योजनोंके वर्गका जितना प्रमाण हो वतने अगमतरके भाग
करने पर वनमेंसे एक भागरूप प्रतिभाग है । मर्यात् प्रतिभाग शब्दसे यहाँ सम्पूर्ण अर्थ लिया
गया है । यद्यपि प्रतिभाग शब्द भागहाररूप अर्थमें रहता है तो भी कार्यमें कारणके वपचारसे
यहाँ सम्पूर्ण उसका ग्रहण करना चाहिये ।

यहाँ प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । अथवा, -पडिमाण'
यह विश्व प्रथमा विभक्तिरूप जितप्रकार होये उसप्रकार सिद्ध कर लेना चाहिये । सूत्रमें
'सख्यात योजन' देखा कहने पर तीनही योजनोंके अंगुल करके वर्गित करने पर जो राशि
उत्पन्न हो वह राशि लेना चाहिये । उन अंगुलोंका प्रमाण पाँचवीं कोड़ाकोड़ी तीस
कोड़ाकोड़ी बीरासी लाख कोड़ी बीर सोलह हजार कोड़ी ५३०८४१९००००००००००
है । यदि तिर्यक् योनिप्रतियोजक अयहारकाल तथोप्य संख्यात गुणित एहसी योजनोंके
अंगुलोंका वर्गमात्र हो तो वाजप्यस्तर मिथ्यादृष्टियोंका भी अयहारकाल इतने अयात् तीनही
योजनोंके अंगुलोंके वर्गरूप प्रतीगुलप्रमाण हो सकता है । और यदि पंचेन्द्रिय तिर्यक्
योनिप्रती मिथ्यादृष्टियोंका अयहारकाल एहसी योजनोंके अंगुलोंके वर्गमात्र हो है तो
वाजप्यस्तर मिथ्यादृष्टियोंका अयहारकाल तीनही योजनोंके दिये गये अंगुलोंके वर्गके
संख्यातयें भाग होना चाहिये अथवा अथवहुत्वके सूत्रके साथ इस कथनका विरोध व्यता है ।

माणवैतरमिच्छादृष्टिपमाणमागच्छदि ।

सासणसम्मादृष्टि-सम्मामिच्छादृष्टि-असंजदसम्मादृष्टी ओष

॥ ६४ ॥

दम्पट्टियणए अवलंबिज्जमाणे केण वि अंमम विसेसामावादो ओषत्तमिदि
पुब्बे । पज्जवट्टियणए अवलंबिज्जमाणे अतिव विसेसो । त विसेस पुरदो मयिस्सामो ।

उक्त अक्षरारकासे अक्षरप्रकारके माहित करने पर बाणस्पन्तर मिथ्याचट्टिबोका प्रमाण आता है ।

विशेषार्थ—बाणस्पन्तर दोबोका अक्षरारका तीनसी योजनोंके अंगुलीका वर्ग है और
दोबेन्मिथ्य तिर्यक् योनिमतिषोका अक्षरारका छहसी योजनोंके अंगुलीका वर्ग है । तीसरी
योजनोंके प्रतरांगुल ५३ ८४१९०००००००० होते हैं और छहसी योजनोंके प्रतरांगुल
२१२३११९४०००००००० होते हैं । किसी विशाल राशि के वर्गसे बस राशिसे बनी राशि का
वर्ग बीगुना होता है । जैसे ४ के वर्ग १६ से ४ के दूने ८ का वर्ग ६४ बीगुना है । तथा किसी एक
मूल्यमें ८ के वर्ग ६४ का भाग देनेसे जो अक्ष्य भागया, ४ के वर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वोक्त
अक्ष्यसे बीगुना ही अक्ष्य भागया । इसीप्रकार यहाँ तीनसी योजनोंके प्रतरांगुलीसे छहसी
योजनोंके प्रतरांगुल बीगुने होते हैं अतएव छहसी योजनोंके प्रतरांगुलीका अक्षप्रकारमें भाग
देनेसे तिर्यक् योनिमतिषोका अक्षना प्रमाण अक्ष्य भागया उससे तीनसी योजनोंके प्रतरा
गुलीका बसी अक्षप्रकारमें भाग देने पर बाणस्पन्तर दोबोका प्रमाण बीगुना ही अक्ष्य आता है ।
पर अक्ष्यगुण्य अनुबोधद्वारामें तिर्यक् योनिमतिषोसे बाणस्पन्तर दोब संख्यातगुने कहे हैं और
उन्हींकी दोबोकी दोबोसे संख्यातगुणी बड़ी है । दृष्टान्तमें निम्न दोबके भी बसीस
दोबोकी होती हैं । इसप्रकार भागमानुसार तिर्यक् योनिमतिषोके प्रमाणसे बाणस्पन्तर
दोबोका प्रमाण १ + १२ = १३ गुनेसे अधिक ही होना चाहिये पर पूर्वोक्त भागद्वाराके अनुसार
बीगुना ही आता है । इससे प्रतीत होता है कि उक्त दोनों भागद्वारोंमेंसे कोई एक भागद्वार
असत्य है । यदि बाणस्पन्तरोंका भागद्वार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमतिषोका
भागद्वार छहसी योजनोंके प्रतरांगुलीसे संख्यातगुण्य होना चाहिये और यदि तिर्यक्
योनिमतिषोका भागद्वार सत्य मान लिया जाय तो बाणस्पन्तरोंका भागद्वार तीनसी योजनोंके
प्रतरांगुलीका संख्यातका भाग होना चाहिये ।

सासाइममम्पगट्टि, सम्पग्मिप्पाट्टि और अमपतमम्पगट्टि बाणस्पन्तर दोब
सामान्य प्ररूपणाक समान पश्योपमके असम्पत्तये भाग ६ ॥ ६४ ॥

प्रथमार्थक अक्ष्य अक्षप्रकार करने पर किसी भी प्रकारसे गुणस्थानप्रतिपक्ष सामान्य
प्ररूपणा और गुणप्रतिपक्ष बाणस्पन्तरोंकी प्ररूपणामें बिशेषता न होनेन गुणस्थानप्रतिपक्ष
बाणस्पन्तरोंकी प्ररूपणा गुणस्थानप्रतिपक्ष सामान्य प्ररूपणाके समान बड़ी । पचावार्थक
अक्ष्य अक्षप्रकार करने पर तो बिशेषता है ही । उक्त विशेषताका रूपन मागे कहेंगे ।

किमिदं सम्भय दम्बद्विप पञ्चशद्विपणयदयमवर्तविम परुषणा कीरदे ! न एम दोसो,
सगह बित्तररुविम साणुगहवापदचादो । अप्णहा अममाणपसगादो ।

जोहसियदेवा देवगर्हण भगो ॥ ६५ ॥

दम्बगर्हणमिदि बहुवयणविसेसो न घट्ट, एक्काए देवगर्हण बहुचामात्राणे इदि ?
ण एम दासो, सगहिदाणेपसे ण्यसे बहुचाविरोहादो । जोहसियदेवा इदि गुणा
विमिहदमगाहणादो आहसियदेवेसु बहुण्ड गुणह्वाणाण पमाणपरुषणा ओपपेरुषणाए
तुछा । एमा दम्बद्विपणयमवर्तविम निहमा क्रमो । पञ्चशद्विपणय अवर्तविज्जमाणे
अरिय विसेसा । तं जहा—तरय साय मिच्छाह्दीसु विसेसा युच्छेद । बाणवेतरादिसेसुसम्भे
देवा आहसियदेवाण मग्गेअदिमागमचा इवति । तहि सामण्यदेवरात्रिमोवद्विदे सखेज्ज

श्रुत्वा—सधम द्रव्याधिक भार पयापाधिक इन दो तथोका अपसम्भन करने प्रमाण.
प्रकृपणा कथों की जा रही है ?

समाधान—यह कोर दोष नहीं है, क्योंकि, समग्रदक्षि और बित्तररुवि शिष्योंके
अनुग्रहके लिये इन दोमों तथोका व्यापार हुआ है । यदि ऐसा नहीं माना जाय तो असमानताका
प्रसंग भा जाता है ।

देवगतिप्रतिपक्ष मामान्य द्धोकी ममथा त्रितनी कही है ज्यातिपी देव
उत्तन है ॥ ६५ ॥

प्रश्ना—मूर्खमें भाये हुए देवगर्हण यह उदुपयन निर्देश प्रदिन नहीं होता है,
क्योंकि दम्बगति एक ही भगः उमे बहुत प्राप्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोर बात नहीं है क्योंकि, जिसमें बहुत संशुद्धीन है वेमे एकत्वमें
बहुत्वके रटनमें विरोध नही आता है ।

आहसियदेवा इमप्रकार मिष्यादृष्टि आदि गुणोंकी विशेषतासे रहित सामान्य
ज्यातिगी श्रुतोंका प्रत्यक्ष करनेमे स्वीकृति द्धोमें भारों गुणस्यार्थोंकी संख्या प्रकृपणा मामान्य
स्वर्गानुभवकी संस्था-प्रकृपणाके समान है एमा निश्च होता है । यह कथन द्रव्याधिक तथका
भाग्रय लेकर किया है । परंतु पयापाधिक तथका अपसम्भन करने पर विशेषता है ही । यह
इमप्रकार है । उनमें भी यहल मिष्यादृष्टियोंमें विशेषताका बतलाने है— पाण्यप्यन्त आदि दोष
समूह देव ज्यातिपी श्रुतोंके संख्यात्मक भाग है । उनमें सामान्य स्वराशिके अपपानित करने पर

१ अमणिजा मनुजभा । अन् ६५ १४१ व १७ व ४४ देवद्विपणय कां ४१ कर्हिदि
४१ ४४ अतिवर्तन व वीर्या ॥ ६५ अं ११ अमर्हण मनुजपण मरुत पवरी । अतिवर्तन (मनु
४४ ४५ मनुजभा । पवरी १ १

प्रतिपक्षी केवद इति वदः ।

१ अतिवर्तन केवद इति वदः ।

वाचस्पत्यन्तरमिच्छादृष्टिमात्रमागच्छति ।

सासणसम्मादृष्टि-सम्मामिच्छादृष्टि-असंजदसम्मादृष्टी ओघ

॥ ६४ ॥

इन्द्रविजयण अरुविजयमाणे केव वि अंसेव विसेसामावादो ओघमिदि
बुद्धे । पञ्चविजयण अरुविजयमाणे अत्थि विसेसो । तं विसेसं पुरदो मविस्सामो ।

उक्त व्यवहारकायसे जगत्प्रत्ययके भाजित करने पर वाचस्पत्यन्तर मिथ्यादृष्टिबोधका प्रमाण जाता है ।

विशेषार्थ—वाचस्पत्यन्तर दोषोंका व्यवहारकाय तीनही योजनोंके अंगुल्लोंका वर्ग है और
संवेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिषोका व्यवहारकाय छहसी योजनोंके अंगुल्लोंका वर्ग है । तीसरी
योजनोंके प्रतरांगुल्ल ५१ ८४१९ ०००० होते हैं और छहसी योजनोंके प्रतरांगुल्ल
२१२३३३३३०००००० ०० होते हैं । किसी विवक्षित राशिसे वर्गसे उस राशिसे तृती राशिक्क
वर्ग बीगुना होता है । जैसे ४ के वर्ग १६ से, ४ के दूने ८ का वर्ग १६ बीगुना है । तथा किसी एक
मध्यममें ८ का वर्ग ६४ का भाग देनेसे जो छप्प भागया, ४ के वर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वोक्त
छप्पसे बीगुना ही छप्प भागया । इसीप्रकार यहाँ तीसरी योजनके प्रतरांगुल्लसे छहसी
योजनोंके प्रतरांगुल्ल बीगुने होते हैं अतएव छहसी योजनोंके प्रतरांगुल्लोंका जगत्प्रत्ययमें भाग
देनेसे तिर्यक् योनिमतिषोका जितका प्रमाण छप्प भागया बससे, तीनही योजनोंके प्रतरां
गुल्लोंका उही जगत्प्रत्ययमें भाग देने पर वाचस्पत्यन्तर दोषोंका प्रमाण बीगुना ही छप्प जाता है ।
पर अल्पबहुत्व अनुयोगप्रारम्भमें तिर्यक् योनिमतिषोके वाचस्पत्यन्तर वेव संख्यातगुने कहे हैं और
उन्हींकी दोषीया दोषोंसे संख्यातगुनी कही हैं । वेवगतिमें निरूप्य देयके भी बलीय
दोषिया होती हैं । इसप्रकार ध्यमानुसार तिर्यक् योनिमतिषोके प्रमाणसे वाचस्पत्यन्तर
दोषोंका प्रमाण १ + ३२ = ३३ गुनेसे अधिक ही होना चाहिये पर पूर्वोक्त भागहारके अनुसार
बीगुना ही जाता है । इससे प्रतीत होता है कि उक्त दोषों भागहारमेंसे कोई एक भागहार
असत्य है । यदि वाचस्पत्यन्तरोंका भागहार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमतिषोका
भागहार छहसी योजनोंके प्रतरांगुल्लोंसे संख्यातगुना होना चाहिये और यदि तिर्यक्
योनिमतिषोका भागहार सत्य मान लिया जाय तो वाचस्पत्यन्तरोंका भागहार तीनही योजनोंके
प्रतरांगुल्लोंका संख्यातवर्ग भाग होना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वाचस्पत्यन्तर द्वा
सामान्य प्ररूपणाके समान पत्त्योपमके असंख्यातवर्ग भाग है ॥ ६४ ॥

द्रव्यार्थिक नपका अवलम्बन करने पर किसी भी प्रकारसे गुणस्थानप्रतिपक्ष सामान्य
प्ररूपणा और गुणप्रतिपक्ष वाचस्पत्यन्तरोंकी प्ररूपण्यमें विशेषता न होनेसे गुणस्थानप्रतिपक्ष
वाचस्पत्यन्तरोंकी प्ररूपणा गुणस्थानप्रतिपक्ष सामान्य प्ररूपण्यके समान बड़ी । पर्यावार्थिक
नपका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही । उस विशेषताका कथन भागे करेंगे ।

किमदं सम्भवत्य दम्भद्विप पञ्चबद्धिपणयइयमबलविय परुषणा क्षीरदे । न एम दोसो,
सगह बित्तररुचिसिचाणुगइवावदचादो । अप्पाहा असमाणदापसगादो ।

जोइसियदेवा देवगईण भगो ॥ ६५ ॥

देवगईणमिदि बहुपणणिइमा न पढदे, एक्काए देवगईए बहुचामावादो इदि ।
न एम दासो, सगहिदाणपचे एयचे बहुचाविरोहादो । ओइसियदेवा इदि गुणा
विमिट्टदमगाइणादो जोइसियदेवेसु चदुण्ड गुणङ्काणाण पमाणपरुषणा ओपपेरुषणाए
तुल्ला । एमो दम्भद्विपणयमबलविय निइमा कप्पो । पञ्चबद्धिपणय अबलविज्जमाणे
अत्थि विसेसो । तं अहा—तस्य ताव मिच्छाइइमि सुसो भुबदे । वाणवेतरादिसेससम्भे
देवा चाइसियेबाण संयेज्जदिमाणमवा इवति । तेहि सामण्यदेवरासिमोवहिदे सखेज्ज-

प्रश्ना—सबब द्रव्याधिक भार पयायाधिक इन दो नयोंका भबलम्भन करके प्रमाण
परुषणा क्यों की जा रही है ?

समाधान—यह क्षीर होय नहीं है क्योंकि, सघट्टरुचि क्षीर बित्तररुचि शिष्योंके
अनुग्रहके लिये इन दोमों नयोंका व्यापार हुआ है । यदि ऐसा नहीं माना जाय तो अनमानताका
प्रसंग आ जाता है ।

देवगतिप्रतिपक्ष सामान्य दुबोंकी संख्या मिथनी कही है ज्योतिषी देव
उत्तन है ॥ ६५ ॥

प्रश्ना—सूत्रमें भाये हुए देवगइले यह बहुपणन निर्देश घटित नहीं होता है,
क्योंकि इयगणि एक है अतः उसे बहुप प्राप्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह बोर शब्द महा है क्योंकि, जिसमें बहुप्य संपूर्ण है ऐसे पक्षमें
बहुप्यके रत्नमें विरोध नहीं माना है ।

आहमियववा इमप्रकार मिष्याएदि आदि गुणोंकी विरोधतासे रहित सामान्य
ज्योतिषी बेजोहा प्रहय करनेमें ज्योतिषी ज्योंमें चारों गुणस्थानोंकी संख्या-प्रकृषणा सामान्य
इयगणिमबन्धी संख्या-प्रकृषणाके समान है ऐसा मिथ्य होना है । यह कथन द्रव्याधिक नयका
आश्रय लेकर किया है । परंतु पयायाधिक नयका भवतम्भन करने पर विरोधता है ही । यह
इमप्रकार है । उनमें भी पहले मिष्याएदियोंमें विरोधताको बनसाने है— पापप्यप्पर आदि होय
सूत्र देव ज्योतिषी इधोंके संख्यागत भाग है । उनसे सामान्य देवराशिके भवपनिष्ठ करने पर

१ अत्राशुभं ज्ञेयम् । अत्र ३६, १४३ व १ ५ व ४४ XX देवगतिप्रमाणका है । यथार
४४ XX ज्योतिषी व बोधना ॥ दो, अ १६ अत्राशुभं ज्ञेयम् नारायण पक्षी । ज्योतिषी ईश
हन्त त्वं व नारायण । वचने १ १

अत्र ज्योतिषी वचने इति वटा ।

२ अत्र पक्षपक्षित्वे इति वटा ।

रूपायि आमच्छन्ति । तापि विरलिय द्बमिच्छाद्विरासि समसुख करिय दिज्जे रुखं
पडि बाणवैतरप्पमुहमिच्छाद्विरासी पवेदि । तमुक्करिरूपभरिदसामण्णदेवमिच्छाद्वि
रासिमिह भवणिदे बोइसियदेवमिच्छाद्विरासी होदि । एव समकरण करिय रुक्खहट्ठिम
विरलणाए देवअवहारकाळ मागे हिदे पदरगुलस्स सत्तेज्जदिमागा आगच्छदि । त देव
अवहारकाळमिह पक्खित्ते बोइसियदेवमिच्छाद्विअवहारफालो होदि । सेस द्बमिच्छा
द्विर्मगो । सामणादिगुणपूजाणगविसेम पुरदा वचइस्सामो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाद्वी दवपमाणेण केव
डिया, असम्बेजा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अस्या अवगदो ति पुणो व पुब्बदे ।

असंखेज्जासंखेज्जादि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्सत्वा सुगमो चेप । सप्परत्थ सुहुम-सुहुमदर सुग्गमवमेएण ठिठिहा
परुक्कमा किमहु परुक्खिज्जवे ? य एम दोसो, तिग्ग मंद मीप्पमतत्ताजुग्गहट्ठवादे । अण्णहा

संख्यात लब्ध होते हैं । इनका (उत्पत्त्या) विरक्षण करके सामान्य देव मिथ्याद्वि राशिसे
समान बन्ध करके वे देने पर विरहित राशिके प्रत्येक पत्रके प्रति वाणप्पमत्तर आदि मिथ्याद्वि
देवराशि प्राप्त होती है । उसे उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्याद्वि राशिमसे
अन्य देने पर ज्योतिषी मिथ्याद्विराशि आती है । इसप्रकार समीकरण करके एक कम
अप्यक्तन विरक्षणसे देव अवहारकाळके माश्रित करने पर प्रत्यंगुलता उत्पत्त्याका माप लब्ध
आता है । उसे देव अवहारकाळमें मिश्र देने पर ज्योतिषी देव मिथ्याद्वि अवहारकाळ होता
है । शेष कथन देव मिथ्याद्वि प्रकल्पके समान है । साक्षात्त आदि गुणस्वात्मगत विद्योपलब्धि
आगे बतलावेंगे ।

सौधम और ऐश्वान कल्पनामी देवोंमें मिथ्याद्वि तीव्र द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने ह ? असम्प्राप्त ह ॥ ६६ ॥

इस सूत्रका अर्थ अलगत है इसलिये फिरसे नहीं कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा सौधर्म और ऐश्वान कल्पनासी मिथ्याद्वि देव असम्प्राप्त-
सम्प्राप्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते ह ॥ ६७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम ही है ।

संक्षेप—सब जगह सुदृश्य सूक्ष्मतर नीर सूक्ष्मतरके सेवसे तीन प्रकारकी प्रकल्पना
किशकिशे कही जा रही है ?

समाधान—यह थोड़ा थोड़ा नहीं है क्योंकि तीन बुद्धिबाके, मंत्र बुद्धिबाके और मत्पम
बुद्धिबाके जीवोंके अनुग्रहके लिये तीन प्रकारकी प्रकल्पना कही है । यदि देसा न माना जाय तो

त्रिषाण सम्बसचसुमाणचविरोहो । ण पुणरुचशोसो वि विषवयणे समवह, मदभुद्धि
सवापुगाहइदा एदस्स साफहादो ।

स्वेत्तेण असस्वेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असस्वेज्जदिमागो ।
तासि सेढीण विक्खमसूई अगुलविदियवग्गमूल तदियवग्गमूल
गुणिदेण ॥ ६८ ॥

पदरस्स असस्वेज्जदिमागो इति निदेमो जगपदरादिठवरिमवियप्पभियत्तावण्हो ।
असस्वेज्जाओ सेढीओ इति निदेमो जगसेढीदो हेट्ठिमअसस्वेज्जासंखेज्जवियप्पभियत्ता
वण्हो । तासि सेढीण पमाणपरिच्छेद काठ अंगुलविदियवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणिदेण
इति विक्खमसूई मुत्ता । गुणिदेणेति पदमाभिदेमो दइक्खा । सुविअगुलविदियवग्गमूल
तदियवग्गमूलेण गुणिद सोहम्मीमाणमिच्छाइडिबिक्खमसूई होइ । अइवा सुविअगुल
तदियवग्गमूलेण पदमवग्गमूले मागे दिदे सोहम्मीमाणदेवमिच्छाइडिबिक्खमसूई होदि ।
एदिस्से विक्खमसूईए सुदिदादआ जहा णेरइएविक्खमसूईए तहा वत्तया ।

जिनवच सय जीबोंम समान परिणामी होते हैं इस कथनमें विशेष भा साधना । जिनवचनमें
पुनरुक्त दोष भी समझ नहीं है क्योंकि, जिनपञ्चन मंत्रबुद्धि शिष्योंका भी अनुग्रह करनेवाला
होमसे पुनः पुनः कथन करनेकी सफसता है ।

सुप्रकी अपछा सौधर्म और एमान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि इव असम्प्रात
जगभेषीप्रमाण है जो असम्प्रात जगभेषियोंका प्रमाण जगप्रतरके असम्प्रातके भाग
है । उन असम्प्रात जगभेषियोंकी विष्कमसूची, सूर्यगुप्तके त्रितीय वर्गमूलको तृतीय
वर्गमूलसे गुणा करने पर विसता सत्य आये, उतनी है ॥ ६८ ॥

सूर्यमें जगप्रतरका असंख्यातार्थ माय यह निर्देश जगप्रतर भावि उपरिम विद्वत्पोंके
निराकरण करनेके छिये दिया है । असंख्यात जगभेषियों इसप्रकारका निर्देश जगभेषीसे
नीचेके असंख्यातासम्प्रात विद्वत्पोंकी निरुक्तिके छिये दिया है । उन भेषियोंके प्रमाणका
ज्ञान करनेके छिये सूर्यगुप्तके त्रितीय वर्गमूलको उर्तीके तृतीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो
सत्य आये उतनी उन भेषियोंकी विष्कमसूची बड़ी । गुणिदेण यह पद प्रथमा विमलिकय
आनना चाहिये जिससे यह तात्पर्य हुआ कि सूर्यगुप्तके त्रितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे
गुणित करने पर जो सत्य आये उतनी सौधर्म और देशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि ऐकोंकी
विष्कमसूची होती है । अथवा सूर्यगुप्तके तृतीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने
पर सौधर्म और देशान कल्पवासी ऐकोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कमसूची होती है । ऊपर जिसप्रकार
मातृक मिथ्यादृष्टि विष्कमसूचीके ललित भाविइव कथन कर आये हैं उसीप्रकार इस विष्कम
सूचीके ललित भाविइका कथन करना चाहिये ।

रूपाणि जायन्ति । तापि विरलिय द्रव्यमिच्छाश्चिरासि समग्रं करिय दिन्ने रूप
पदि बाधैतरप्यमुहमिच्छाश्चिरासी पावेदि । तमुपरिमरुमभरिदसामभ्यदेवमिच्छाश्चि
रासिन्नि अबणिद ओहसियदेवमिच्छाश्चिरासी होदि । एव समकरण करिय रूपवहेहिम
विरलगाए देवअवहारकाले मागे हिदे पदरंगुलस्स सपेन्नविमागो आगच्छदि । त देव
अवहारकाले पक्खिउचे ओहसियदममिच्छाश्चिरासीअवहारकालो होदि । सेस देवमिच्छा
श्चिमंगो । सासपादिगुणद्वयमगद्विसेसं पुरो वचइस्सामो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेषु मिच्छाहन्ती दव्वपमाणेण केव
दिया, असंवेज्जा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो अवगदो सि पुणो न पुचदे ।

असस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुचस्समत्तो सुगमो वेय । सवत्थ सुदुम-सुदुमदर सुमत्तमभेएण तिबिहा
पक्कवा किमई पक्खिउदे ? न एस दोत्तो, तिअ मंद मज्झिमसत्तापुग्गाहत्तादे । अप्पहा

सम्पात कम्प भाते हैं । इनका (सम्पातक) विरलन करके सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिसे
समान बंध करके दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति बाधप्यन्तर भावि मिथ्यादृष्टि
देवराशि प्राप्त होती है । उधे उपरिम परके प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे
प्या देवे पर ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिराशि भाती है । इसप्रकार समीकरण करके एक कम
अपस्तन विरलनसे देव अवहारकालमें मात्रित करने पर प्रतरंगुलका संपातका माग कम्प
भाता है । उधे देव अवहारकालमें मिछा देने पर ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाळ होता
है । शेष कथन देव मिथ्यादृष्टि प्रत्येकके समान है । सासादन भावि गुणस्यालगत विशेषताके
भागे वसतावेगे ।

सौधम और ऐशान कल्पवामी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? असम्पात हैं ॥ ६९ ॥

इस सूत्रका अर्थ अवगत है इसलिये फिरसे नहीं कहते हैं ।

काष्ठकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असम्पाता
सम्पात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ७० ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम ही है ।

धृंका—यह अगद सूत्र सूत्रमत्तर और सूत्रमत्तमे मेवसे तीन प्रकारकी प्रकपणा
विशेषिणे कही जा रही है ।

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि तीन बुद्धिवाले, मंत्र बुद्धिवाले और मन्त्र
बुद्धिवाले जीवोंके अनुग्रहके लिये तीन प्रकारकी प्रकपणा कही है । यदि ऐसा न माना जाय तो

साधियाओ । त कर्षं जाणिओदे ? अण्णहा वग्गहाणं हट्ठिम-उत्तरिमवियप्पापुववपीदो । सुहावधमिह वुत्तमिक्खंमसूअओ संपुण्णाओ किण्ण होंति चि वे प, उदाविषगुरुवदेसा मावा । अहवा एत्थ वुत्तमिक्खंमसूअओ देवणाओ सुहावधमिह वुत्तमिक्खंमसूअओ संपुण्णाओ । कुदो ? अट्ठरूपे वग्गिज्जमाने सोहम्मीसाणमिक्खंमसूअवि पावदि, सा सई वग्गिदा येरइपमिक्खंमसूअ पावदि, सा सइ वग्गिदा मवणवासियमिक्खंमसूअवि पावदि चि परियम्मे वग्गसमुत्तिवसाम्पमिक्खंमसूअविपादादो सुहावधे वि वणवाठप्पण्य विक्खंमसूअए पादोवळमादो वा । जीवहाणमिच्छाहट्ठिविक्खंमसूअविपादो वि सुहावध सामण्यमिक्खंमसूअविपादेण समाणो उवळमदे वे प, दम्बवट्ठियणपदो समाणमुवळमा । पज्जवट्ठियणप पुण अवलविज्जमाने मियमेण तत्थ अरिय विसेसो । सुहावधुवसंहार जीवहाणस्त मिच्छाहट्ठिविक्खंमसूअए सामण्यमिक्खंमसूअविसमाणचविरोहा । एवं सुहा वधमिह वुत्तसम्बअवहारकाळा जीवहाणे सादिरेया वचम्वा । एद वक्खाणमेत्थ पचायमिदि गेण्हिद्वर्ज न पुम्बिल्ल ।

श्रुका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यदि देसा न माना जाय तो वर्गस्थानमें अथस्तन और उपरिम विच्छेद नहीं बन सकता है ।

श्रुका— सुहावधमें कही गई विच्छेदसूत्रियां संपूर्ण क्यों नहीं होती हैं ?

समाधान— नहीं क्योंकि इसप्रकारका गुच्छा उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अथवा यहां जीवहाणमें कही गई विच्छेदसूत्रियां कुछ कम हैं और सुहावधमें कही गई विच्छेदसूत्रियां संपूर्ण हैं क्योंकि अष्टरूपके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर सौधमें और देशान्नेषोंमें विच्छेदसूत्रीका प्रमाण प्राप्त होता है । उसका (सौधमेंद्विकसंबन्धी विच्छेद सूत्रीका) उत्तीसे वर्ग करने पर नारक विच्छेदसूत्री प्राप्त होती है । उसका (नारक विच्छेदसूत्रीका) उत्तीसे वर्ग करने पर मयनवासी बेशोंकी विच्छेदसूत्री प्राप्त होती है, इसप्रकार परिकर्ममें वर्गस्थान प्रकरणमें कही गई सामान्य विच्छेदसूत्रियोंके अतिप्रत्यक्ष अथवा सुहावधमें भी वनपापमें उत्पन्न हुई विच्छेदसूत्रियोंके अतिप्रत्यक्ष पाये जानेसे यह जाना जाता है कि सुहावधमें कही गई विच्छेदसूत्रियां संपूर्ण हैं ।

श्रुका— जीवहाणमें कहे गये मिथ्यावादियोंकी विच्छेदसूत्रियोंके अतिप्रत्यक्ष सुहावधमें कहा गया सामान्य विच्छेदसूत्रियोंका अतिप्रत्यक्ष समान पाया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि इन दोनों कथनोंमें प्रत्यार्थिक नयकी अपेक्षा समानता पाई जाती है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो नियमसे उन दोनों कथनोंमें विशेषता है ही क्योंकि, सुहावधमें उपसंहाररूपसे जीवहाणमें कही गई मिथ्यावादि विच्छेदसूत्रियोंसे सामान्य विच्छेदसूत्रियोंके समान माननेमें विरोध जाता है । इसीप्रकार सुहावधमें कहे गये संपूर्ण अवहारकाळ जीवहाणमें कुछ अधिक जान लेना चाहिये । यह व्याख्यान यहां पर प्रधान है, इसलिये इसका ग्रहण करना चाहिये पहलेके व्याख्यानका नहीं ।

सपरि सुरार्चयेन सामप्येन जीवपमागपरूपेण आभो विष्कम्भस्योत्रो
 नेरुय-सोहम्मीसाण-मवणवासियदेवान पुचाओ तामो धव विष्कम्भस्योत्रो एरु
 वि जीबानां मिष्ठद्विष्टपरूपेण अप्पुणाहियामो पुचाओ । त अहा-
 अगुलस्स वगमूळ विदियवगमूळगुणिदेव इदि एसा सुरार्चये नेरुयविष्कम्भ
 स्यो उता । तासिं सेडीण विष्कम्भस्यो अगुल अगुलवगमूळगुणिदेव इदि एसा
 मवणवासियविष्कम्भस्यो सुरार्चये उता । तासिं सेडीण विष्कम्भस्यो अगुलविदियवगमूळ
 वदियवगमूळगुणिदेव इदि एसा सोहम्मीसाणदेवविष्कम्भस्यो सुरार्चये पुचा । एरु वि
 नेरुय मवणवासिय-सोहम्मीसाणमिच्छद्विष्ट विष्कम्भस्यो यदाओ वेव पुचाओ ।
 एवं प ग मवदे, सामप्यविसेसपरूपेणमेवविरोहादो । तम्हा एरु पुचविष्कम्भस्यो
 उविद्याहि सुरार्चपुचविष्कम्भस्यो हि वा अविद्याहि हावप्पमिदि चोदगो मपदि । एरु
 परिहारो पुचदे । जीबानामपुचविष्कम्भस्यो संपुष्पाओ सुरार्चमदि पुचविष्कम्भस्यो

श्रुका—सामान्यसे जीवराशिसे प्रमाणका प्रकल्प करनेवाले सुरार्चपके द्वारा
 नारकी सौधर्म-वेद्यान और मवणवासी देवोंकी ओ विष्कम्भस्योत्रियां कही हैं स्पृता और
 अधिष्ठासे रहित वे ही विष्कम्भस्योत्रियां यहां जीबानामे भी नारकी सौधर्म-वेद्यान और
 मवणवासी देवोंसंबन्धी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्रकल्पामें कही हैं । अग्रे इसी विषयका
 स्पष्टीकरण करते हैं—सूर्यगुह्यके प्रथम वर्गमूळको द्वितीय वर्गमूळसे गुणित करके पर
 जितना छप्प आये उतनी सुरार्चधर्मे सामान्य नारकीयोंकी विष्कम्भस्योत्रियां कही हैं । मवण
 वासियोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगधेयियां बतलाई हैं उन जगधेयियोंकी विष्कम्भस्योत्रियां
 सूर्यगुह्यके प्रथम वर्गमूळको द्वितीय वर्गमूळसे गुणित करके पर जितना छप्प आये उतनी हैं,
 यह मवणवासियोंकी विष्कम्भस्योत्रियां सुरार्चधर्मे कही हैं । सौधर्म और वेद्यान कस्यवासी
 देवोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगधेयियां बतलाई हैं उन जगधेयियोंकी विष्कम्भस्योत्रियां
 सूर्यगुह्यके द्वितीय वर्गमूळको तृतीय वर्गमूळसे गुणित करके जो छप्प आये उतनी हैं,
 वह सौधर्म और वेद्यान कस्यवासी देवोंकी विष्कम्भस्योत्रियां सुरार्चधर्मे कही हैं । यहां जीबानामें
 भी नारकी, मवणवासी और सौधर्म-वेद्यान मिथ्यादृष्टि जीबोंकी विष्कम्भस्योत्रियां वे ही
 (सुरार्चधर्मे कही हुईं) कही हैं । परंतु यह कल्प छदित नहीं होता है क्योंकि सामान्य
 प्रकल्प और विशेष प्रकल्प इन दोनोंके एक माननेमें विरोध व्यता है । अतएव जीबानामें
 जो विष्कम्भस्योत्रियां कही गई हैं वे सुरार्चधर्मे कही गई विष्कम्भस्योत्रियोंसे स्पृता होनी चाहिये
 वा सुरार्चधर्मे कही गई विष्कम्भस्योत्रियां यहां जीबानामें कही गई विष्कम्भस्योत्रियोंसे अधिक
 होनी चाहिये ऐसा ईच्छाकरना कटना है ।

समाधान—अग्रे इस श्रुकाका परिहार करते हैं—जीबानामें जो विष्कम्भस्योत्रियां
 कही गई हैं वे संपूर्ण हैं और सुरार्चधर्मे कही गई विष्कम्भस्योत्रियां जीबानामें कही गई
 विष्कम्भस्योत्रियोंसे साक्षि हैं ।

मूर्छ । सदार-सहस्तरकप्ये षष्ठ्यवन्मामूर्छ भागहारो इवदि । सासन्दीयं पमाणपरुषणा वि सचमपुद्गविपरुषणाए समाना । विसेसपरुषणं पुरदो वचइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेष्वाविमाणवासियदेवेसु मिच्छाद्वि-
प्यहुदि जाव असंजदसम्माद्वि ति दम्बपमाणेण केवडिया, पलिदो-
वमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहु-
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसरो कालवाची चेव, तेण पुघ कलम्माहण ण कर्द । दम्बपमाणपरुषणाए चेव अत्यभिच्छ्रो आदो पि एत्थ खेच-कालेहि परुषणा न कदा । 'पलिदोवमस्स असं खेज्जदिभागो' इदि सामण्येण बुचे दम्बपमाणेण मुहु गिच्छ्रो न आदो पि एत्थ भिच्छयठप्पायणई 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' पि सामान्यपरुषणा विहज-
माणपरुषणा न कदा । एत्थ आहिरिओवसमस्सिऊण विसेसवक्खार्यं पुरदो मणिस्सामो ।

अणुहिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असजदसम्माद्वि
दम्बपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि
पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

जगन्नेपीका प्राणहार जगन्नेपीका पाँचवीं बर्गमूख है । शतार और सहस्रार कल्पमें जगन्नेपीका मातृहार जगन्नेपीका बीया बर्गमूख है । सातकुमारसे लेकर सहस्रारतक साक्षात्पञ्चम्यगद्वि व्याप्ति गुणस्थानवर्ती देवोंके प्रमाणकी प्रकृष्टता भी सातवीं पृथिवीके साक्षात्पञ्चम्यगद्वि व्याप्ति बीजोंके प्रमाणकी प्रकृष्टताके समान है । विशेष प्रकृष्टताको भागे बतलावेंगे ।

आनत और प्राणतसे लेकर नौ त्रैलोक्य तक विमानवासी देवोंमें मिथ्याद्वि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्द्वि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें बीज द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पञ्चोपमके असंख्यातमें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीव राक्षियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पञ्चोपम अपहृत होता है ॥ ७१ ॥

मुहूर्त शब्द काष्ठवाची ही है इसलिये स्वप्ने पृथक्कृतसे काष्ठ पक्का प्रहृत नहीं किया । प्रहृतमें द्रव्यप्रमाणके प्रकृष्टता करनेसे ही शरीरका निश्चय हो जाता है इसलिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाण और काष्ठप्रमाणके द्वारा प्रकृष्टता नहीं की । पञ्चोपमके असंख्यातमें भाग हैं इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अच्छी तरह निश्चय नहीं हो पाता है इसलिये इस विषयमें निश्चयके उत्पन्न करानेके लिये इन जीवराक्षियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पञ्चोपम अपहृत होता है इसप्रकार प्राणहारप्रकृष्टता और विमन्यमाजराक्षीकी प्रकृष्टता की । इस विषयमें व्यापारोंके उपदेशका आशय करके विशेष व्याख्यात भागे करेंगे ।

अमुदिष्ट विमानसे लेकर अपरात्रित विमानतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्य

सासणसम्माइट्टि-सम्माभिच्छाइट्टि-असजदसम्माइट्टी ओर्थ

॥ ६९ ॥

सोहम्मीसायकप्पवासियदेवेसु देवर्गए इदि च दुवयममणुबहुरे । एसा दम्म
द्वियणयमस्सिऊण परूवणा उवा । पच्चवद्वियणयमस्सिऊम एदेसि परूवण
पुरवो मविस्सामो ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा
सत्तमाए पुढवीए णेरहयाण मंगो ॥ ७० ॥

एत्थ जहा इदि पुचे त जहा इदि एवस्स जरणो न वत्तम्भो किं तु उवमत्थे जहा
सरो वेत्तम्भो । जहा सत्तमाए पुढवीए णेरहयाण पमाज परूविदं तथा सणक्कुमारादि
देवाण पमारणं परूवेदम्भं । जवरि जाइरियपरपरागदोपदेसेन विसेसपरूवणं कस्सामो ।
तं जहा—

सणक्कुमार माईदे अमसेहीए भागहारो सेहीए हेडा एकारसवग्गमूल । बम्ह-बम्भो
चरकप्पे जवमवग्गमूल । छांतव काविहुकप्पे सत्तमवग्गमूलं । सुक्क-महासुक्कप्पे पंचमवग्ग

सासादनसम्पगट्टि, सम्पतिमप्पाट्टि और असंपत्तसम्पगट्टि सौषर्म प्रेक्षान
कल्पवासी देव सामान्य प्ररूपवाके समान पर्योपमके असम्पत्तायें माग हैं ॥ ६९ ॥

सोहम्मीसायकप्पवासियदेवेसु देवर्गए इन दो शब्दोंकी यहां अनुवृत्ति होती है ।
यहां द्रव्यार्थिक अथवा आत्म्य करने के यह प्ररूपणा कही है । पर्यायिक नयना आत्म्य करने
इन्हीं प्ररूपणा भागे कहेंगे ।

त्रिसप्तकार सातवीं पृथिवीमें नारकिपोंकी प्ररूपणा कही गई है उसीप्रकार
सनक्कुमारसे लेकर छठार और सहस्रार तक कल्पवासी देवोंमें मिथ्याएट्टि देवोंकी
प्ररूपणा है ॥ ७० ॥

सूत्रमें जहा इसप्रकार कहने पर त जहा इसप्रकार बर्ण नहीं करना चाहिये, किंतु
यहां उपमाकल्प बर्णमें जहा शब्दका ग्रहण करना चाहिये । इससे यह अभिप्राय हुआ कि
त्रिसप्तकार सातवीं पृथिवीमें नारकिपोंका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सनक्कुमार आदि
देवोंके प्रमाणका ग्रहण करना चाहिये । अब भागे आचार्य परंपरासे जाये हुए उपदेशके
अनुसार विशेष प्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है—

सात्ताकुमार और माहेन्द्र स्वर्गमें अगमेजीवा मागहार अगमेजीके नीचे ग्यारहवां वर्ग-
मूल है । इस नीचे ऋद्धोत्तर कल्पमें अगमेजीका मागहार अगमेजीका नीचा वर्गमूल है । छांतव और
अपिष्ट कल्पमें अगमेजीका मागहार अगमेजीका सातवां वर्गमूल है । शुक्क और महाशुक्क कल्पमें

मूल । सदार-सहस्सारकप्ये षठरयवगमूलं मागहारो इवदि । सातणदीर्घं पमाणपरूषणा
पि सत्तमपुट्ठविपरूषणाय समाणा । विसेसपरूषणं पुरदो वचइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठि-
प्पट्ठि जाव असजदसम्माइट्ठि ति दव्वपमाणेण केवडिया, पल्लिदो-
वमस्स असखेज्जदिमागो । एदेहि पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहु-
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसरो काष्ठवाची चेव, तेष पुच काष्ठगइण म कदं । दम्भपमाणपरूषणाए
चेव अत्थणिज्जओ जादो पि एत्थ खेच-काळेहि परूषणा ण कदा । 'पल्लिदोवमस्स असं
खेज्जदिमागो' इदि सामज्जेय पुचे दम्भपमाणेण मुहु भिज्जओ ण जादो पि तरय
विज्जयठप्पायणं 'एदेहि पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेय' पि मागहारपरूषणा विहज्ज
माणपरूषणा थ कदा । एत्थ आइरिओवसमस्सिज्जण विसेसवक्खणं पुरदो मणिस्सामो ।

अणुदिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असजदसम्माइट्ठि
दव्वपमाणेण केवडिया, पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिमागो । एदेहि
पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

अपमेणीका मागहार जगमेणीका पांचदां बर्गमूल है । शतार और सहस्रार कल्पमें जगमेणीका
मागहार जगमेणीका बीया बर्गमूल है । सातकुमारसे लेकर सहस्रारतक सासतनसम्पगदि
आदि गुणस्थानवर्ती देवोंके प्रमाणकी प्रणयना मी सातवीं दूषिणीके सासाइनसम्पगदि आदि
जीवोंके प्रमाणकी प्रणयनाके समान है । पिरोप प्रणयनाको आगे बतलावेंगे ।

मानव और प्राणतसे लेकर नौ प्रैषयक तक विमानवासी दशोंमें मिथ्यागदि
गुणस्थानसं लेकर असंयतसम्पगदि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्य
प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पस्यापमके असंख्यातवें माग हैं । इन उपर्युक्त जीव
राशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पत्थोपम अपहत होता है ॥ ७१ ॥

मुहूर्त शब्द काष्ठवाची ही है, इसलिये स्वर्गमें पूयद्रूपसे कास पदका प्रहय नहीं
किया । प्रकृतमें द्रव्यपमायके प्रणयन करनेसे ही अर्थका निश्चय हो जाता है इसलिये यहाँ
पर क्षेत्रप्रमाण और काष्ठप्रमाणके द्वारा प्रणयना नहीं की । पत्थोपमके असंख्यातवें माग हैं
इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अर्धवीं तरह निश्चय नहीं हो पाया है
इसलिये इस विषयमें निश्चयके उत्पन्न करानके लिये इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे
पत्थोपम अपहत होता है इसप्रकार मागहारप्रणयना और विमन्यमाणराशिची प्रणयना की ।
इस विषयमें आचार्योंके उपदेशका आश्रय करके विशेष व्याख्याय आगे कहेंगे ।

अनुदिष्ट विमानसे लेकर अपरात्रिप्त निम्नतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्प

सासणसम्माइट्टि-सम्माभिच्छाइट्टि-असंजदसम्माइट्टी ओषं

॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगए इदि च दुवयणमणुबहूदे । एसा इम्म
ट्टियणयमस्सिळण परूवणा उवा । पच्चवट्टियणयमस्सिळण एदेसि परूवणं
पुरदो मणिस्सामो ।

सणक्कुमारप्पट्टि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा
सत्तमाए पुढवीए जेरहयाणं भंगो ॥ ७० ॥

एत्थ अहा इदि पुचे तं अहा इदि एदस्स अत्थो ण वत्तन्तो किं तु उवमए अहा
सरो वत्तन्ता । अहा सत्तमाए पुढवीए जेरहयाण पमाणं परूविद तहा सणक्कुमारादि
देवाण पमाणं परूवेवन् । जवरि आहरियपरंपरागदोदेमेण विसेमपरूवणं कस्सामो ।
तं अहा—

सणक्कुमार माहिदे अगसेवीए मागहारो सेवीए हेहा एकारसवग्गमूल । बम्ह-बम्हो
चरकप्पे ववमवग्गमूल । सत्तव व्यापिद्वकप्पे सत्तमवग्गमूल । सुक्क-महासुक्ककप्पे ववमवग्ग-

सासादनसम्पट्टि, सम्पग्गिम्पट्टि आर असंयत्तमम्पट्टि सौधर्म पेक्षान
कप्पवासी दव सामाम्य प्ररूपणाक समान परूपोपमके असम्प्यातये माग हैं ॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगए इत्थ वा शम्भोकी यहाँ अनुगृति होती है ।
यहाँ द्रव्याधिक नयका आश्रय करके यह प्ररूपणा कही है । पर्वार्थिक नयका आश्रय करके
इतनी प्ररूपणा मागे कहेंगे ।

त्रिसप्तकार सातवीं शृण्णिमी नारकियोकी प्ररूपणा कही गई है उसीप्रकार
सनत्तुमारमे सत्तर नुत्तर और सहस्तर तक कल्पवासी देवोंमें विष्णुट्टि देवोंकी
प्ररूपणा है ॥ ७० ॥

श्रुतमें अहा इसप्रकार कहने पर 'त अहा' इसका अर्थ नहीं कहना चाहिये किंतु
यहाँ उपमाकर अर्थमें अहा शब्दका प्रयोग करना चाहिये । इससे यह अभिप्राय हुआ कि
त्रिसप्तकार सातवीं शृण्णिमी नारकियोंका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सानत्तुमार अर्थात्
देवोंके प्रमाणका बयान करना चाहिये । अब आगे सत्तव परंपरामे आगे हुए उपदेशके
अनुसार विशेष प्ररूपणा करना है । यह इसप्रकार है—

सानत्तुमार और महाइन्द्र वर्गमें अगधेवीका मागहार अगधेवीके तीन स्फारदवां वा
मूल है । अब और प्रत्येक वर्गमें अगधेवीका मागहार अगधेवीका मार्ग वगमूल है । सत्तव और
वाहित वर्गमें अगधेवीका मागहार अगधेवीका सातवां वगमूल है । शुक और महाशुक वर्गमें

मूलं । सहा-सहस्रारकल्पे चतुर्थवर्गामूल मागहारो ह्यदि । सासगदीर्घं पमाणपरूषणा वि सप्तमपुटविपरूषणाए समाप्ता । विसेसपरूषण पुरदो वचस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाहट्ठि-
प्यहुहि जाव असजदसम्माहट्ठि ति द्व्यपमाणेण केवहिया, पल्लिदो-
वमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहु-
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसदो कासबासी चैव, तेण पुन कासग्गहण ण कर्दं । द्व्यपमाणपरूषणाए चैव अत्थमिच्छओ आदो चि एत्थ खेच-कालेहि परूषणा ण कदा । 'पल्लिदोवमस्स अत्तं खेज्जदिभागो' इदि सामग्गेण पुत्ते द्व्यपमाणेण मुहु निच्छओ ण आदो चि एत्थ मिच्छपठप्पापण्डं 'एदेहि पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण' चि मागहारपरूषणा विहज्ज माणपरूषणा च कदा । एत्थ आहिरिओवपसमास्सिअम् विसेसवत्साणं पुरदो मयिस्सामो ।

अणुदिस जाव अचराइदविमाणवासियदेवेसु असजदसम्माहट्ठि
द्व्यपमाणेण केवहिया, पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि
पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

अगमेयीका मागहार अगमेयीका पांचदां वगमूल है । सहा-सहस्रार कल्पमें अगमेयीका मागहार अगमेयीका बीया वर्गमूल है । सातसुन्दारसे लेकर सहस्रारतक साक्षात्तसम्पत्ति आदि गुणस्थानमार्गों बीकोंके प्रमाणकी प्रकृष्टता भी सातवीं शृङ्खलीके साक्षात्तसम्पत्ति आदि बीकोंके प्रमाणकी प्रकृष्टताके समान है । विरोध प्रकृष्टताको आगे बतलावेंगे ।

मानत और प्राथम्यसे लेकर नौ प्रकृष्ट तक विमानवासी वर्गोंमें मिथ्यापट्टि गुणस्थानसे लेकर असत्यतत्त्वसम्पत्ति गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें बीज द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पस्यापमके अर्धस्युतमें माग हैं । इन उपर्युक्त बीज राशिपोंके द्वारा अन्तर्हर्तसे पस्योपम अपहृत होता है ॥ ७१ ॥

मुहुत्त शब्द कासबासी ही है । इसलिये वर्गमें पृथक्प्रकृष्टसे कास परूषण महान नहीं किया । प्रथममें द्रव्यप्रमाणके प्रकृष्टता करनेसे ही पर्युक्त मिथ्य हो जाता है इसलिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाण और कासप्रमाणके द्वारा प्रकृष्टता नहीं की । पस्योपमके मत्तक्यातमें माग हैं । इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अच्छी तरह मिथ्य हो जाता है इसलिये इस विषयमें मिथ्ययके उत्पन्न करानके लिये इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहुत्तसे पस्योपम अपहृत होता है । इसप्रकार मागहारप्रकृष्टता और विमज्जमाधराशिजी प्रकृष्टता की । इस विषयमें आचार्योंके उपदेशका आश्रय करके विरोध व्याख्यात आगे बढ़ेंगे ।

अनुदिष्ट विमानसे लेकर अपरात्रित विमानतक उनमें रहनेवाले अर्धपठसम्प

एतय असङ्गदसम्माइङ्गिदङ्गपरूवणं समगुणद्वयाणं तत्ताभायं धूयेदि । न च
 सतं न परूवेति विद्या, तमिमज्जिपत्तप्पमगादो । एतय आइरिमोवएसेण सम्मदेवगुण
 पडिबब्बायं विससपरूवणं मणिस्सामा । ४ अथा— देवअसङ्गदसम्माइङ्गिअवहारकात्त-
 मावसियाए अंसंखेज्जदिमाणं खंडियं तत्तेगएउडं तमिहं पेव पक्खिउत्ते सोहम्मीसत्त-
 असङ्गदसम्माइङ्गिअवहारकात्तो हादि । तमिहं भावसियाए अमंउज्जदिमाणं गुणिदे
 सम्मामिज्जाइङ्गिअवहारकात्तो हादि । कुदो ? उवक्कमणकात्तमदादो । तमिहं संखेज्जरूपेदि
 गुणिदे सासणसम्माइङ्गिअवहारकात्तो होदि । कुदो ? उवक्कमणकात्तमदादा तमयगुणं
 पडिबब्बममाजराविस्ससंसा वा । तमिहं भावसियाए अंसंखेज्जदिमाणं गुणिदं सव
 ककुमार माईदंअसङ्गदसम्माइङ्गिअवहारकात्तो होदि । कुदो ? सुहक्कमाहिपजीववहुत्ता
 मावाधो । एव पेयव्वं आव सदास-सहस्सरो पि । तस्म सासणसम्माइङ्गिअवहारकात्त
 भावसियाए अमंखेज्जदिमाणं गुणिदे आइसियदेवअमंअदसम्माइङ्गिअवहारकात्तो हादि ।

गच्छति देव द्रुम्यप्रमाणकी अपेक्षा किन्तु हैं ? पत्न्योपमके असंख्यातवें माग हैं । इन
 उपर्युक्त जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसं पत्न्योपम अपहृत होता है ॥ ७२ ॥

इत बलुविशं भावि विमानोंमें असंयतसम्यग्गच्छि जीवराशिजी प्रकृपणा नहीं पर होय
 गुणस्थानोंके अभावका सूचित करती है । यदि कोई कहे कि यहां पर होय गुणस्थानोंके प्रमाणकी
 प्रकृपणा नहीं की होगी सो बात नहीं है क्योंकि जिनद्वय विद्यमान मर्त्यना प्रकृपण
 नहीं करते हैं ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि, ऐसा मान लेने पर उन्हें अजिनपनेका प्रसंग
 न्य जाता है । मर यहां भाषायोंके उपदेशानुसार रूपेण गुणस्थानमतिपक्व देवोंकी
 विशेष प्रकृपणाको कहते हैं । यह हमप्रकार है— देव असंयतसम्यग्गच्छि अवहारकात्तको
 भावकीके असंख्यातवें मागने कठिन करके उनमेंसे एक खंडको बसी देव असंयतसम्यग्गच्छि
 अवहारकात्तमें मिला देने पर सौधर्म और ऐशानसबन्धी असंयतसम्यग्गच्छियोंका अवहारकात्त
 होता है । इसे भावकीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर सौधर्म और ऐशानसबन्धी
 सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकात्त होता है, क्योंकि, सम्यग्गच्छियोंके उपक्रमण कात्तसे सम्य
 मिध्यादृष्टियोंके उपक्रमण कात्तमें मर है । सम्यग्मिध्यादृष्टियोंके अवहारकात्तको सख्यातसे गुणित
 करने पर सौधर्म और ऐशानसबन्धी साक्षात्तसम्यग्गच्छियोंका अवहारकात्त होता है, क्योंकि
 सम्यग्मिध्यादृष्टियोंके उपक्रमण कात्तसे साक्षात्तसम्यग्गच्छियोंके उपक्रमण कात्तमें मर है । अथवा
 कथं होनीं गुणस्थानोंको प्राप्त होनेवाली राशियोंमें निधोयता है । सौधर्म और ऐशान साक्षा
 त्सम्यग्गच्छियोंके अवहारकात्तको भावकीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर साक्षात्तुमार
 और माईदं असंयतसम्यग्गच्छियोंका अवहारकात्त होता है क्योंकि, ऊपर गुम कर्मोंकी बहुलता
 होनेसे बहुत जीव नहीं पाये जाते हैं । इसीप्रकार शतार सहस्रार कल्पतक के जाना जातिवे ।
 इन शतार-सहस्रार कल्पके साक्षात्तसम्यग्गच्छिसबन्धी अवहारकात्तको भावकीके असंख्यातवें
 मागसे गुणित करने पर ज्योतिषी असंयतसम्यग्गच्छि देवोंका अवहारकात्त होता है क्योंकि

पाण्डमिच्छाद्विभवाहारकालो हादि । कुदा ? त्रिगतिं पतन दम्भसंयमेन द्विद्वयद्वय
 बह्वर्ण मनुष्येसु मनुष्यलभादो । तस्मि संयोज्यरूपेहि गुणिदे आरण्यपुद्गमिच्छाद्विभवाहार
 कालो होदि । एतत् कारण पुद्ग न वक्तव्य । एवं ययन् आव उवरिमउवरिमगेवज्ज
 मिच्छाद्विभवाहारकालो चि । तस्मि संयोज्यरूपेहि गुणिदे गवाणुदिमससदमम्माद्वि
 भवाहारकालो होदि । तस्मि संयोज्यरूपेहि गुणिदे अणुत्तरविजय बह्वयत संयत-अवराद्
 विमाणवासीयमसंसदसम्माद्विभवाहारकालो हादि । तमावलि राए असंयोज्यदिमाण गुणिदे
 आणद-पाणदसम्मा मिच्छाद्विभवाहारकालो हादि । कुदा ? उवदमगवीवाण पोषादा ।
 तस्मि संयोज्यरूपेहि गुणिदे आरण्यपुद्गसम्मा मिच्छाद्विभवाहारकालो हादि । एव ययम्
 आव उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मा मिच्छाद्विभवाहारकालो चि । तस्मि संयोज्यरूपेहि गुणिदे
 आणद-पाणदसासमसम्माद्विभवाहारकालो होदि । कुदा ? पोयुरदमगकालचादो । तस्मि
 संयोज्यरूपेहि गुणिदे आरण्यपुद्गसासमसम्माद्विभवाहारकालो होदि । एव ययम् आव
 उवरिमउवरिमगेवज्जसासमसम्माद्विभवाहारकालो चि । एदि अवहारकालो हि संदि

अवहारकाळ होता है क्योंकि त्रिगतिपक्षो स्वीकार करके द्रव्यसंयमके साथ रिपत हुए
 बहुतसे संयमोंका मनुष्योंमें सञ्चार नहीं पाया जाता है । आणत और प्राणतसंयमों मिच्छाद्वि
 भवाहारकाळको संत्पातसे गुणित करने पर आरण और अणुपुतके मिच्छाद्विपक्षोंका अवहारकाळ
 होता है । यहाँ कारण पहिलेके समान कहना चाहिये अर्थात् त्रिगतिपक्षो स्वीकार करके
 द्रव्यसंयमके साथ बहुतसे मनुष्य नहीं होते हैं इसलिये आरण और अणुपुतमें कम मिच्छाद्वि
 पाये जाते हैं । इसीप्रकार उपरिम अपरिम त्रैवेपक्षके मिच्छाद्वि भवाहारकाळ तक ले जाया
 चाहिये । अपरिम उपरिम त्रैवेपक्षके मिच्छाद्वि भवाहारकाळ से संत्पातसे गुणित करने पर
 नौ अनुदिशोंके असंयतसम्माद्विपक्षोंका अवहारकाळ होता है । इसे संत्पातसे गुणित करने
 पर विजय वैजयन्त अयन्त और अपरिचित इन चार अनुत्तर विमानवासी संय
 तसम्माद्विपक्षोंका अवहारकाळ होता है । इसे भावकोंके असंत्पातसे मागसे
 गुणित करने पर आणत और प्राणतके सम्मिश्रमिच्छाद्विपक्षोंका अवहारकाळ होता है
 क्योंकि, यहाँ पर सम्मिश्रमिच्छातके साथ अन्य होनेवाला जीव पाया है । आणत और प्राणतके
 सम्मिश्रमिच्छाद्विपक्षोंके अवहारकाळको संत्पातसे गुणित करने पर आरण और अणुपुतके
 सम्मिश्रमिच्छाद्विपक्षोंका अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार उपरिम अपरिम त्रैवेपक्षके
 सम्मिश्रमिच्छाद्विभवाहारकाळको संत्पातसे गुणित करने पर आणत और प्राणतके सासादन
 सम्मिश्रमिच्छाद्विपक्षोंका अवहारकाळ होता है क्योंकि, सासादनसम्माद्विपक्षोंका उपक्रमकाळ स्तोत्र
 है । आणत और प्राणतके सासादनसम्माद्विपक्षोंका अवहारकाळको संत्पातसे गुणित करने पर आरण
 और अणुपुतके सासादनसम्माद्विपक्षोंका अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार उपरिम अपरिम

१ इतल अवगत होति अर्थसेव हाणि अवतिव । तत्रैव न पतिकरुते तीक्ष्णबीजान् अवाता न तीक्ष्ण

पाण्डुमिच्छाद्विभवहारकालो होदि । कुयो ? जिण्णिर्गं चत्तु इम्मसंजमेण छिदसत्तदाण
 वृद्धं मणुसेसु अणुबलमादो । तम्हि संखेज्जरूहेहि गुणिदे आरमण्युदमिच्छाद्विभवहार
 कालो होदि । एत्थ कारणं पुम्भ व वचण । एव पेयम्भ आब उवरिमउवरिमगेवज्ज
 मिच्छाद्विभवहारकालो सि । तम्हि संखेज्जरूहेहि गुणिदे पावाणुदिसअसंजमसम्माद्वि
 भवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूहेहि गुणिदे अणुचरविषय वृद्धयस-अयत्त मवराइद
 विमानवासियअसंसदसम्माद्विभवहारकालो होदि । तमावलि राए असंखेज्जदिमाएव गुणिदे
 आपद-पाण्डसम्मा मिच्छाद्विभवहारकालो होदि । कुयो ? उवक्कमज्जीवाणं पोवत्तादो ।
 तम्हि संखेज्जरूहेहि गुणिदे आरमण्युदसम्मा मिच्छाद्विभवहारकालो होदि । एवं पेयम्भ
 आब उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मा मिच्छाद्विभवहारकालो सि । तम्हि संखेज्जरूहेहि गुणिदे
 आपद-पाण्डसासणसम्माद्विभवहारकालो होदि । कुयो ? वोपुवक्कमज्जीवाणं पोवत्तादो । तम्हि
 संखेज्जरूहेहि गुणिदे आरमण्युदसासणसम्माद्विभवहारकालो होदि । एव पेयम्भ नाव
 उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माद्विभवहारकालो सि । एवेहि अवहारकासेहि खेहि

अवहारकाळ होता है क्योंकि जिनहिंकाको स्वीकार करके द्रव्यसंपन्नके साथ स्थित हुए
 बहुतसे संघटोका मनुष्योंमें सञ्ज्ञान नहीं पाया जाता है । आगत और प्राणतत्त्वबन्धी मिथ्याद्वि
 अवहारकाळको संघातसे गुणित करने पर आगत और अच्युतके मिथ्याद्विषयोका अवहारकाळ
 होता है । यहाँ कारण यहके समान कहना चाहिये अर्थात् जिनहिंकाको स्वीकार करके
 द्रव्यसंपन्नके साथ बहुतसे मनुष्य नहीं होते हैं इसलिये आगत और अच्युतमें कम मिथ्याद्वि
 पाये जाते हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्वैवेयके मिथ्याद्वि अवहारकाळ तक ले जाना
 चाहिये । उपरिम उपरिम द्वैवेयके मिथ्याद्वि अवहारकाळको संघातसे गुणित करने पर
 नौ अनुविशोक्ति अर्थात् सत्त्वगुणधर्मोका अवहारकाळ होता है । इसे संघातसे गुणित करने
 पर विजय वैजयन्त जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी अर्थात्
 सत्त्वगुणधर्मोका अवहारकाळ होता है । इसे आकर्षणके अर्थात् सत्त्वगुणधर्मोका भागसे
 गुणित करने पर आगत और प्राणतत्त्वके सम्मगिमिथ्याद्विषयोका अवहारकाळ होता है
 क्योंकि, यहाँ पर सम्मगिमिथ्यात्वके साथ उपाध होनेपाछे जीव पाङ् है । आगत और प्राणतत्त्वके
 सम्मगिमिथ्याद्विषयोके अवहारकाळको संघातसे गुणित करने पर आगत और अच्युतके
 सम्मगिमिथ्याद्विषयोका अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्वैवेयके
 सम्मगिमिथ्याद्विषयबन्धी अवहारकाळतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम द्वैवेयके
 सम्मगिमिथ्याद्वि अवहारकाळको संघातसे गुणित करने पर आगत और प्राणतत्त्वके साक्षात्त
 सम्मगिद्विषयोका अवहारकाळ होता है क्योंकि, साक्षात्तसम्मगिद्विषयोका उपरिममणकाळ स्वीक
 र्ति । आगत और प्राणतत्त्वके साक्षात्तसम्मगिद्वि अवहारकाळको संघातसे गुणित करने पर आगत
 और अच्युतके साक्षात्तसम्मगिद्विषयोका अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम

१ देवान् अवस्था होति अनन्तरं तस्मिन् अवस्थित । तत्रैव व निश्चिते होन्मन्त्राणां अवस्था ॥ श्रीमन्

आधुवरिमठवरिमगेवन्त्रो वि । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुमागा आणद-पाणदमिच्छा-
इड्डिणो होति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुमागा आरणन्नुदमिच्छाइड्डिणो होति । एव
जेयम्ब आधुवरिमठवरिमगेवन्त्रो वि । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुमागा अणुरिस
मधसदसम्माइड्डिणो होति । सेससंखेज्जखंडे कए बहुमागा अणुवरवित्रय-वद्वयत मयंत
मवरद्वद्वसदसम्माइड्डिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुमागा आणद-पाणदसम्मा
मिच्छाइड्डिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुमागा आरणन्नुदसम्माइड्डिणो
होति । एव जेयम्ब आधुवरिमठवरिमगेवन्त्रो वि । सेस संखेज्जखंडे कए बहुमागा
आणद पाणदसासणसम्माइड्डिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुमागा आरणन्नुद
सासणसम्माइड्डिणो होति । एवं जेयम्ब आधुवरिममज्झिमगेवन्त्रसासणसम्माइड्डि वि ।
सेसमसखेज्जखंडे कए बहुमागा उवरिमठवरिमगेवन्त्रसासणसम्माइड्डिणो होति । एव
खंडे सम्मइमिद्विअसद्वद्वसम्माइड्डि होति । एवं मागामाग समत्त ।

इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्विषेयक तक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम द्विषेयकके अक्ष
पक्षसम्पगद्विषोंके प्रमाण मानेके अनन्तर जो एक माग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर
बहुमागप्रमाण आगत और मायतके मिथ्याद्विष देव है । शेष एक मागके संख्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुमाग प्रमाण और अच्युतके मिथ्याद्विष देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम
द्विषेयकतक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम द्विषेयकके मिथ्याद्विषमायके अनन्तर
जो एक माग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुमाग अनुविशके
अक्षपक्षसम्पगद्वि होत है । शेषके अक्षपक्ष खंड करने पर बहुमाग वित्रय वद्वयत,
वयत और अपराधित इन चार अनुत्तर विमार्गोंके अक्षपक्षसम्पगद्वि देव हैं । शेषके
संख्यात खंड करने पर बहुमागप्रमाण आगत और मायतके सासाइनसम्पगद्वि देव हैं । शेष एक
मागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण कारण और अच्युतके सम्पगद्वि
द्विष देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्विषेयक तक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम
द्विषेयकके सम्पगद्विषाद्विषोंके प्रमाण मानेके अनन्तर जो एकमाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण आगत और मायतके सासाइनसम्पगद्वि देव हैं । शेष एक मागके
संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण कारण और अच्युतके सासाइनसम्पगद्वि देव
हैं । इसीप्रकार उपरिम मध्यम द्विषेयकके सासाइनसम्पगद्विषोंके प्रमाण माने तक के जाना
चाहिये । उपरिम मध्यम द्विषेयकके सासाइनसम्पगद्विषोंके प्रमाण मानेके अनन्तर जो एक माग
शेष रहे उसके अक्षपक्ष खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण उपरिम उपरिम द्विषेयकके
सासाइनसम्पगद्वि देव हैं । शेष एक मध्यममाय सचापसिद्धिके अक्षपक्षसम्पगद्वि देव हैं । इस-
प्रकार आगामाग समान हुआ ।

सर्वसिद्धिविमानवासियदेवा दन्वपमाणेण केवढिया,
संखेज्जा ॥ ७३ ॥

मनुसिमीरासीदो तिउणमेचा इवति ।

मायामागं वचस्सानो । सम्भवेवरासिमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुलंढा जोद
सियदेवमिच्छाइही होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुलंढा बाणवैतरमिच्छाइही
होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुमागा सोहम्मीसाणमिच्छाइही होति । एवं बाव
सदार-सहस्सारमिच्छाइहि पि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुमागा सोहम्मीसाणमसंख
सम्माइही होति । सेस संखे-ज्जखंडे कए बहुमागा सम्मामिच्छाइहिपो होति । सेस
संखेज्जखंडे कए बहुमागा सासणसम्माइहिपो होति । एवं सणककुमार-माहिंदप्पहुदि
बाव सहस्सारो पि वेयम्भ । तयो जोइसिय-बाणवैतर मवणवासिएपि वेयम्भ । पुनो
सेसस संखेज्जखंडे कए बहुलंढा भाणद-पाणदजसंखदसम्माइहिपो होति । सेसस
संखेज्जखंडे कए बहुलंढा आरण्यपुदजमज्जदसम्माइहिपो होति । एवं वेयम्भ

सर्वासिद्धि विमानवासी देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सम्पात हैं ॥७३॥

सर्वासिद्धि विमानवासी देव मनुष्यनिर्णयके प्रमाणसे सिद्ध हैं ।

भाग मायामाग्यो बतकाते हैं— सर्व देवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहु मायप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यावृत्ति देव हैं । होय एक मागके असंख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुमाग बाण्यन्तर मिथ्यावृत्ति देव हैं । होय एक मागके असंख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुमागप्रमाण सीधर्म और देशाल कल्पके मिथ्यावृत्ति देव हैं । इसीप्रकार शठार और
सहकार कल्पके मिथ्यावृत्ति देवों तक के जाना चाहिये । शठार और सहकारके मिथ्यावृत्ति
प्रमाणके अनन्तर जो एक माग होय रहे उसके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण
सीधर्म और देशाल कल्पके असंखतसम्पत्ति देव हैं । होय एक मागके असंख्यात खंड
करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण बहिर्निर्णयमिथ्यावृत्ति देव हैं । होय एक मागके असंख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण बहिर्निर्णयसाक्षात्सम्पत्ति देव हैं । इसीप्रकार
कालकुमार और माहेन्द्र कल्पसे लेकर सहकार कल्पतक के जाना चाहिये । सहकार कल्पसे
ज्यो ज्योतिषी बाण्यन्तर और मवणवासी देवों तक यही क्रम के जाना चाहिये । पुनः
मवणवासी साक्षात्सम्पत्तिनिर्णयके प्रमाणके अनन्तर जो एक माग होय रहे उसके असंख्यात
खंड करने पर बहुमागप्रमाण बावत और प्रत्यक्षके असंखतसम्पत्ति देव हैं । होय एक मागके
असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण प्रत्यक्ष और अच्युतके असंखतसम्पत्ति देव हैं ।

आधुवरिमठवरिमगेवन्धो चि । सेसस्स संखेज्जसुंढे कए बहुमागा आप्पद-पावदमिच्छा-
इड्डिणो होति । सेसस्स संखेज्जसुंढे कए बहुमागा आरगन्नुदमिच्छाइड्डिणो होति । एव
णेयम्ब आधुवरिमठवरिमगेवन्धो चि । सेसस्स संखेज्जसुंढे कए बहुमागा अणुविस
असवदसम्माइड्डिणो होति । सेससंखेज्जसुंढे कए बहुमागा अणुविसिअय-वइअयत-अयत
अवरइदअसवसम्माइड्डिणो होति । सेस संखेज्जसुंढे कए बहुमागा आप्पद-पावदसम्मा
मिच्छाइड्डिणा होति । सेस संखेज्जसुंढे कए बहुमागा आरगन्नुदसम्माभिच्छाइड्डिणो
होति । एव अपम्ब आधुवरिमठवरिमगेवन्धो चि । सेस संखेज्जसुंढे कए बहुमागा
आणइ पावदसासपसम्माइड्डिणो होति । सेस संखेज्जसुंढे कए बहुमागा आरगन्नुद
सासपसम्माइड्डिणो होति । एव णेयम्ब आधुवरिममन्निमगेवन्धसासपसम्माइड्डि चि ।
सेसमसंखेज्जसुंढे कए बहुमागा ठवरिमठवरिमगेवन्धसासपसम्माइड्डिणो होति । एव
सुंढ सण्हसिदिअसवदसम्माइड्डि होति । एवं मागामार्ग समथ ।

इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रियेयक तक छे जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रियेयकके अर्ध
पतसम्पगइडिपोंके प्रमाण मानेके अनन्तर ओ एक माग होय रहे उसके संख्यात बँड करने पर
बहुमागप्रमाण भानत और प्रायतके सम्पगइडि देब हैं । होय एक मागके संख्यात बँड करने
पर वनमेंसे बहुमाग प्रमाण और अणुयुतके सम्पगइडि देब हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम
प्रियेयकक छे जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रियेयकके सम्पगइडिप्रमाणके अनन्तर
ओ एक माग होय रहे उसके संख्यात बँड करने पर बहुमाग अनुविशके
असंयतसम्पगइडि होतें हैं । होयके असंख्यात बँड करने पर बहुमाग विअय, वैअयत,
अयत और अयतवित इन चार अणुयुत विमानोंके असंयतसम्पगइडि देब हैं । होयके
संख्यात बँड करने पर बहुमागप्रमाण भानत और प्रायतके सम्पगइडि देब हैं । होय एक
मागके संख्यात बँड करने पर वनमेंसे बहुमागप्रमाण प्रमाण और अणुयुतके सम्पगइडि
देब हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रियेयक तक छे जाना चाहिये । उपरिम उपरिम
प्रियेयकके सम्पगइडिप्रमाणके अनन्तर ओ एकमाग होय रहे उसके संख्यात बँड करने
पर वनमेंसे बहुमागप्रमाण भानत और प्रायतके सासाइनसम्पगइडि देब हैं । होय एक मागके
संख्यात बँड करने पर वनमेंसे बहुमागप्रमाण प्रमाण और अणुयुतके सासाइनसम्पगइडि देब
हैं । इसीप्रकार उपरिम मध्यम प्रियेयकके सासाइनसम्पगइडिपोंके प्रमाण माने तक छे जाना
चाहिये । उपरिम मध्यम प्रियेयकके सासाइनसम्पगइडिपोंके प्रमाणके अनन्तर ओ एक माग
होय रहे उसके असंख्यात बँड करने पर वनमेंसे बहुमागप्रमाण उपरिम उपरिम प्रियेयकके
सासाइनसम्पगइडि देब हैं । होय एक बँडप्रमाण सर्वाधिसिधिके असंयतसम्पगइडि देब हैं । इस
प्रकार मागामार्ग समाप्त हुन ।

अप्याबहुव्रं तिविह, सरवाण परत्वाण सम्बपरत्वाणं चेदि । सरवाणे परं । सम्बत्त्वोपो देवमिच्छाद्विभवहारकालो । विच्छंमसूर् अस्तंस्त्रिगुणा । को गुणगारो ? विच्छंमसूर् अस्तंस्त्रिगुणा । को पडिमागो ? सगब्रवहारकालो । अहवा सेदीय अस्तंस्त्रिगुणा अस्तंस्त्रिगुणा सेदिपदमवगमूसाणि । को पडिमागो ? अबहारकाळ बगो । अहवा अस्तंस्त्रिगुणा मगगुसाणि । केत्तिपमेचाणि ? पण्डितसहस्तपंचसय छत्तीसवगमसुविमं गुणमेचाणि । सेदी अस्तंस्त्रिगुणा । को गुणगारो ? अबहारकालो । द्धमसंस्त्रिगुणा । को गुणगारो ? सगविच्छंमसूर् । पदमसंस्त्रिगुणा । को गुणगारो ? सगब्रवहारकालो । सोगो अस्तंस्त्रिगुणा । को गुणगारो ? सेदी । सासपादीयं मूलोचमं । एवं जोइसिय-वाचवैतराण पि वेयम् । मवपवासियाणं सरवाणे सम्बत्त्वोपो मिच्छाद्वि विच्छंमसूर् । अबहारकालो अस्तंस्त्रिगुणा । को गुणगारो ? सगब्रवहारकाळस् अस्तंस्त्रिगुणा । को पडिमागो ? विच्छंमसूर् । अहवा सेदीय अस्तंस्त्रिगुणा अस्तंस्त्रिगुणा सेदिपदमवगमूसाणि । को पडिमागो । विच्छंमसुविमं । अहवा वनेगुठ । सेदी

अप्यबहुव्रं तमि प्रकाश है स्वस्थान अप्यबहुव्रं परत्वाण अप्यबहुव्रं और सर्वपरत्वाण अप्यबहुव्रं । हमेंसे स्वस्थान अप्यबहुव्रंमें प्रकृत विषयका निरूपण करते हैं देव मिच्छाद्वि अबहारकाळ सबसे स्तोत्र है । बन्दीकी विच्छंमसूची अबहारकाळसे जलं ववातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विच्छंमसूचीका अस्तंस्त्रिगुणा भाग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? अपना अबहारकाळ प्रतिमाग है । मयवा जगमेजीका अस्तंस्त्रिगुणा भाग गुणकार है जो जगमेजीके अस्तंस्त्रिगुणा प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ? अबहारकाळका वर्ग प्रतिमाग है । जयवा अस्तंस्त्रिगुणा बनागुण गुणकार है । वे कितने हैं ? पैंसठ हजार पाँचसौ छत्तीसके बराबर सूर्यगुणप्रमाण हैं । देव विच्छंमसूचीसे जगमेजी अस्तंस्त्रिगुणा गुणी है । गुण कार क्या है ? अपना अबहारकाळ गुणकार है । जगमेजीसे मिच्छाद्वि देवोंका प्रमाण अस्तंस्त्रिगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विच्छंमसूची गुणकार है । देव मिच्छाद्वि प्रथमसे जगमेजी अस्तंस्त्रिगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अबहारकाळ गुणकार है । जगमेजीसे पनकोक अस्तंस्त्रिगुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेजी गुणकार है । देव सास-पादीयसम्यक्विमं स्वस्थान अप्यबहुव्रं सामान्य प्रकृत्यके समान है । इसीप्रकार ज्योतिषी और वाचस्पत्यरीयका भी स्वस्थान अप्यबहुव्रं के आना चाहिये । मवपवासियोंके स्वस्थान अप्यबहुव्रंमें सबसे स्तोत्र मिच्छाद्वि विच्छंमसूची है । इससे अबहारकाळ अस्तंस्त्रिगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अबहारकाळका अस्तंस्त्रिगुणा भाग गुणकार है प्रतिमाग क्या है ? विच्छंमसूची प्रतिमाग है । जयवा, जगमेजीका अस्तंस्त्रिगुणा भाग गुणकार है जो जगमेजीके अस्तंस्त्रिगुणा प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ? अपनी विच्छंमसूचीका वर्ग प्रतिमाग है । जयवा पनागुण गुणकार है । जगमेजी अबहारकाळसे अस्तंस्त्रिगुणा गुणी है । गुणकार क्या

असंखेज्जगुणा । को गुणमारो ? सगविकसंमस्रं । दम्बमसंखेज्जगुण । को गुणमारो ?
विकसमस्रं । पदमसंखेज्जगुणं । को गुणमारो ? भवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो ।
को गुणमारो ? सेदी । सासप्यादीनं मूलेषमगो । सोहम्मादि वाव उवरिमगेवज्जो पि
सत्थानप्यावहुम चाणिय नेयर्थ ।

परत्थाणे पयं । सम्बत्थोवो असंखदसम्माद्विभवहारकालो । एवं नेयर्थ वाव
पल्लिदोवमो पि । तदो उवरि मिच्छाद्विभवहारकाले असंखेज्जगुणो । को गुणमारो ?
सगभवहारकालस्स असंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? पल्लिदोवमो । अहवा पदंगुलस्स
असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि सुचिभंगुलाणि । केचियमेचाणि ? सुचिभंगुलस्स
असंखउज्जदिमागमेचाणि । को पडिमागो ? पल्लिदोवमस्स सुखेउज्जदिमागो । उवरि
सत्थावमंगो । भवववासियाणं सम्बत्थोवो असंखदसम्माद्विभवहारकालो । एवं नेयर्थ
वाव पल्लिदोवमो पि । तदो उवरि भवववासियमिच्छाद्विविकसमस्रं असंखेज्जगुणा ।
को गुणमारो ? सगविकसंमस्रं असंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ? पल्लिदोवमो । अहवा
पदंगुलस्स असंखेज्जदिमागो । असंखेज्जाणि सुचिभंगुलाणि । केचियमेचाणि ? सुचि-
भंगुलपडमवन्नामूलस्स असंखेज्जदिमागमेचाणि । को पडिमागो ? पल्लिदोवमो । उवरि

है ! अपनी विष्कंमसूची गुणकार है । जन्मीका द्रव्य जगमेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? विष्कंमसूची गुणकार है । द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
भवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेणी
गुणकार है । सासप्यादिमप्यादि आदिका मूलेषके समाज स्वस्थान अस्पबहुत्व है । सौधर्मसे
लेकर उपरिम प्रियेयकतक स्वस्थान अस्पबहुत्व जान कर ले जाना चाहिये ।

अब परस्थानमें अस्पबहुत्व प्रकृत है— असंखतसम्पत्तिर्षोका भवहारकाल
सबसे श्लोक है । इसीप्रकार पस्सोपमक ले जाना चाहिये । पस्सोपमके
ऊपर मिप्याद्विषोका भवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अपने भवहारकाल असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पस्सोपम प्रतिभाग
है । अथवा प्रतंगुलक असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूर्यगुलप्रमाण है ।
असंख्यात सूर्यगुलको प्रमाण कितना है ? सूर्यगुलक असंख्यातवां भाग इनका प्रमाण है ।
प्रतिभाग क्या है ? पस्सोपमक असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है । इसके ऊपर अपने अस्पब
अस्पबहुत्वके समाज है । भवववासियोंके परस्थानक कथन करने पर असंखत
सम्पत्तिर्षोका भवहारकाल सबसे श्लोक है । इसीप्रकार पस्सोपमक ले जाना चाहिये ।
पस्सोपमके ऊपर भवववासी मिप्याद्वि विष्कंमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? अपनी विष्कंमसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पस्सोपम
प्रतिभाग है । अथवा प्रतंगुलक असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूर्यगुल
प्रमाण है । ये कितने हैं ? सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवां भागप्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या
है ? पस्सोपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर चाजप्यन्तरोसे लेकर उपरिम उपरिम प्रियेयकतक अपने

अप्राबुद्धं विविधं, सत्यानां परत्यान सम्बन्धपरत्वात् चेदि । सत्याने पदं । सम्बन्धो दो देशमिच्छाद्विषयहारकात् । विच्छेदमर्ह्य असंख्यजगुषा । को गुणगारो ? विच्छेदमर्ह्य असंख्यजगुषा । को पदभागो ? सगन्धहारकात् । अहं सतीत्य असंख्यजगुषा असंख्यजगुषा सेद्विषयमवगममूलाभि । को पदभागो ? अवहारकात् वगो । अहं असंख्यजगुषा पदगुणभि । केचित्तमेवाभि ? पद्विषयसहस्र-पदस्य छत्तीसवर्गमवगममूलाभि । सेद्वि असंख्यजगुषा । को गुणगारो ? अवहारकात् । द्वावमसंख्यजगुषा । को गुणगारो ? सगन्धहारकात् । पदमसंख्यजगुषा । को गुणगारो ? सगन्धहारकात् । लोको असंख्यजगुषा । को गुणगारो ? सेद्वि । सातषादीर्घं मूलोपमं । पदं बोधिस्य-वाजवैतराण पि वेयम् । भवजवातिस्यानां सत्याने सम्बन्धो दो मिच्छाद्वि विच्छेदमर्ह्य । अवहारकात् असंख्यजगुषा । को गुणगारो ? सगन्धहारकात् असंख्यजगुषा । को पदभागो ? विच्छेदमर्ह्य । अहं सतीत्य असंख्यजगुषा असंख्यजगुषा सेद्विषयमवगममूलाभि । को पदभागो । विच्छेदमर्ह्य । अहं पदगुणं । सेद्वि

अप्राबुद्धत्वं तीन प्रकारका है स्वस्यान अप्राबुद्धत्वं परत्यान अप्राबुद्धत्वं और सर्वपरत्यान अप्राबुद्धत्वं । इनमेंसे स्वस्यान अप्राबुद्धत्वं प्रकृत विषयका निरूपण करते हैं वेच मिच्छाद्वि अवहारकात् सबसे स्तोत्र है । उन्हींकी विच्छेदमर्ह्यी अवहारकात्से असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विच्छेदमर्ह्यीका असंख्यातका भाग गुणकार है । प्रतिमाय क्या है ? अपना अवहारकात् प्रतिमाय है । अपना जगत्सेवीका असंख्यातका भाग गुणकार है जो जगत्सेवीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाय क्या है ? अवहारकात्का वर्ग प्रतिमाय है । अपना, असंख्यात पदगुण गुणकार है । वे कितने हैं ? पैंसठ हजार पंचसौ छत्तीसके वर्गरूप सूर्यगुणप्रमाण हैं । इस विच्छेदमर्ह्यीसे जगत्सेवी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकात् गुणकार है । जगत्सेवीसे मिच्छाद्वि वेचोका प्रमाण असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विच्छेदमर्ह्यी गुणकार है । वेच मिच्छाद्वि प्रथमसे जगत्सेवी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकात् गुणकार है । जगत्सेवीसे जगत्सेवी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगत्सेवी गुणकार है । वेच सातषादीर्घमूलमर्ह्योका स्वस्यान अप्राबुद्धत्वं सामान्य प्रकृत्यात्से समान है । इसीप्रकार उभोतिपी और वाजप्यवैतराण भी स्वस्यान अप्राबुद्धत्वं से जाना चाहिये । भवजवातिस्योके स्वस्यान अप्राबुद्धत्वं सबसे स्तोत्र मिच्छाद्वि विच्छेदमर्ह्यी है । सबसे अवहारकात् असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकात्का असंख्यातका भाग गुणकार है प्रतिमाय क्या है ? विच्छेदमर्ह्यी प्रतिमाय है । अपना जगत्सेवीका असंख्यातका भाग गुणकार है जो जगत्सेवीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाय क्या है ? अपनी विच्छेदमर्ह्यीका वर्ग प्रतिमाय है । अपना पदगुण गुणकार है । जगत्सेवी अवहारकात्से असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या

सासणाम् अबहारफालो आणद-पाणदमसम्वदसम्माइडिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदअसव्वदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं नेयम्भ जाव उवरिम उवरिमगेमन्वअसव्वदसम्माइडिअवहारफालो चि । तदो आणद-पाणदमिच्छाडिअवहार फालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदमिच्छाडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं नेयम्भ जाव उवरिमउवरिमगंजो चि । तदो अणुदिसअसव्वदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्ज- गुणो । तदो अणुसरविमय-वइज्जयंत-जयत अबारादअसव्वदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्ज- व्वगुणो । तदो आणद पाणदसम्माभिच्छाददिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदसम्माभिच्छाडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं नेयम्भ जाव उवरिमउवरिम गेवज्जो चि । तदो आणद पाणदमासणसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुद सासणसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एव नेयम्भ जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो चि । तदो उवरि तस्संभ दप्पमसंखेज्जगुण । उवरिममन्निमसासणसम्माइडिदुर्ब संखेज्जगुणं । तदो उवरिमइडिमसासणसम्माइडिदुर्ब संखेज्जगुणं । एव नेयम्भ

मननवासी साक्षात्तसम्यग्दर्शियोंके अवहारकाष्ठसे मानत और प्राणतके असंयतसम्यग्दर्शि
 योंका अवहारकाष्ठ असंयतावगुणा है। उससे आरज और अच्युतके असंयतसम्यग्दर्शियोंका
 अवहारकाष्ठ संयतावगुणा है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम निवेद्यके असंयतसम्यग्दर्शि
 अवहारकाष्ठक के जाना चाहिये। उपरिम उपरिम निवेद्यके असंयतसम्यग्दर्शि अवहार
 काष्ठसे व्यक्त और प्राणतके मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाष्ठ संयतावगुणा है। इससे आरज
 और अच्युतके मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाष्ठ संयतावगुणा है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम
 निवेद्यकक के जाना चाहिये। उपरिम उपरिम निवेद्यके मिथ्यादर्शि अवहारकाष्ठसे वतु
 त्रियोंके असंयतसम्यग्दर्शियोंका अवहारकाष्ठ संयतावगुणा है। इससे विज्ञप वैश्वान्त अपान्त
 और अवशब्धित इन चार अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दर्शियोंका अवहारकाष्ठ संयताव
 गुणा है। इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाष्ठ असंयतावगुणा है।
 इससे आरज और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाष्ठ संयतावगुणा है। इसीप्रकार
 उपरिम उपरिम निवेद्यकक के जाना चाहिये। उपरिम उपरिम निवेद्यके सम्यग्मिथ्यादर्शि
 अवहारकाष्ठसे मानत और प्राणतके साक्षात्तसम्यग्दर्शियोंका अवहारकाष्ठ संयतावगुणा है।
 इससे आरज और अच्युतके साक्षात्तसम्यग्दर्शियोंका अवहारकाष्ठ संयतावगुणा है। इसी
 प्रकार उपरिम उपरिम निवेद्यकक के जाना चाहिये। तदनन्तर उपरिम उपरिम निवेद्यके
 साक्षात्तसम्यग्दर्शि अवहारकाष्ठके ऊपर इसी उपरिम उपरिम निवेद्यका साक्षात्तसम्यग्दर्शि
 द्रव्य संयतावगुणा है। इससे उपरिम मध्यम निवेद्यके साक्षात्तसम्यग्दर्शियोंका द्रव्य
 संयतावगुणा है। इससे उपरिम अपस्तम्ब निवेद्यके साक्षात्तसम्यग्दर्शियोंका द्रव्य संयतावगुणा
 है। इसीप्रकार अवहारकाष्ठके प्रतिबोमरूपसे अवतक सौम्य और येष्टान रूपके असंयत

सगत्सत्त्वावर्तयो (भागवतसारादि ज्ञान उपरिमउपरिमगोबक्षो चि ।) उपरि परत्वात्
नस्ति, तस्य ससगुणद्वान्नाथमभावादो । सम्बन्धे सत्त्वाय पि यत्पि एगपदत्वाद्दो ।

सम्बन्धपरत्वात्मे पयर्दु । सम्बन्धोवा सम्बन्धसिद्धिविमात्रवासियदेवा । सोहम्मीसाध
असंबद्धसम्माद्विभवहारकातो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आश्रयिण्य असंखेज्जदि
मागस्त संखेज्जदिमागो । को पविमागो ? सम्बन्धसिद्धिदेवसम्माद्विद्धि चि । तत्वेव सम्मा
मिच्छाद्विभवहारकातो असंखेज्जगुणो । सासन्नसम्माद्विभवहारकातो संखेज्जगुणो । उदो
सज्जन्तुमार-मार्हिदअसंबद्धसम्माद्विभवहारकातो असंखेज्जगुणो । एव जेयम्भं ज्ञान सद्ध
सहस्यारेपि । उदो बोधिसिय-भागवत-मन्त्रावासियार्ण पि कमेय जेयम्भं । मन्त्रावासिय

स्वस्थानके समान है । उपरिम उपरिम प्रियेयकके ऊपर परत्वात् अस्यबहुत्व नहीं पाया जाता
है, क्योंकि वहाँ पर शेष गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । सर्वाधीनसिद्धिमें एक पक्षाय होनेसे
स्वस्थान अस्यबहुत्व भी नहीं है ।

विशेषार्थ—प्रतिपक्षोंमें दोनोंके स्वस्थान और परत्वात् अस्यबहुत्वके पाठ गुरुबुद्ध
और कुछ छूटे हुए प्रतीत होते हैं । बहुत कुछ विचारके पश्चात् दूसरे प्रकरणोंके अस्यबहुत्वके
विमर्शानुसार यहाँ भी उन्हें व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है । प्रतिपक्षोंमें पहले सामान्य
दोनोंका स्वस्थान और परत्वात् अस्यबहुत्व कहकर अनन्तर इसी प्रकार बाध्यअनन्तर और
श्रुतिविपक्षोंका ही ऐसा कहा है । तत्पश्चात् मन्त्रावासिपक्षोंका स्वस्थान और परत्वात् अस्यबहुत्व
कह कर सौधमार्हि उपरिम उपरिम प्रियेयकक स्वस्थान अस्यबहुत्वको समझकर छाया होनेकी
सूचना की है । अनन्तर अनुविद्याविमें परत्वात्के नमावका कारण और सर्वाधीनसिद्धिमें
दोनोंके नमावका कारण बतलाया है ।

इस अस्यबहुत्वोंको व्यवस्थित कर देने पर भी सौधमार्हि उपरिम उपरिम प्रियेयकक
परकप्रत्यक्ष कोई व्यवस्था नहीं पाई जाती है । अनुविद्याविमें परत्वात्के नमावका कारण
बतलाया है पर स्वत्वात् अस्यबहुत्व नहीं पाया जाता है । इसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है
कि यहाँ कुछ पाठ भी छूट गया है ।

अब सर्व परत्वात् अस्यबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— सर्वाधिसिद्धि विमात्र
बाह्य देव सबसे स्तोत्र है । वनसे सौधमर्भ और देशात् कस्यके असंयतसम्बन्धद्विष्योका
अवधारकात् असंयतसगुणा है । गुणकार क्या है ? आश्रयके असंयतसर्व मायका संयतवा
माग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? सर्वाधीनसिद्धिके सम्पन्नादि दोनोंका प्रमाण प्रतिमाग
है । वहाँ पर सम्पन्निष्ठाद्विष्योका अवधारकात् असंयतसम्पन्निष्ठाद्विष्योका अवधारकात्से
असंयतसगुणा है । सम्पन्निष्ठाद्विष्योका अवधारकात्से सासन्नसम्पन्निष्ठाद्विष्योका अवधारकात्से
संयतसगुणा है । सौधमर्भ और देशात् कस्यके सासन्नसम्बन्धद्विष्योका अवधारकात्से
सासन्नसम्बन्ध और साहकार कस्यके असंयतसम्बन्धद्विष्योका अवधारकात्से असंयतसगुणा
है । इसीप्रकार शतार और सहकार कस्यके से जाना चाहिये । शतार और सहकार
कस्यके जाने श्रुतिपक्षी मायअनन्तर और मन्त्रावासिपक्षोंका भी क्रमसे से जाना चाहिये ।

सासपान अवहारफालादो आणद-पाणदअसंसदसम्माइडिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदअसंसदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं भेयस्व चाव उवरिम उवरिमगेवज्जअसंसदसम्माइडिअवहारफालो चि । तदो आणद-पाणदमिच्छाइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदमिच्छाइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एवं भेयस्व चाव उवरिमउवरिमगेवज्जो चि । तदो अणुदिसअसंसदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । तदा अणुत्तरविषय-वज्जयंत-ज्जयत अवराइअसंसदसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । तदो आणद पाणदसम्मामिच्छाइडिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तदो आरण्णुदसम्मामिच्छाइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एव भेयस्व चाव उवरिमउवरिमगेवज्जो चि । तदो आणद पाणदसासपानसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । तदा आरण्णुद सासपानसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुणो । एव भेयस्व चाव उवरिमउवरिमगेवज्जो चि । तदो उवरि तस्सेव दम्भमसंखेज्जगुण । उवरिममज्झिमसासपानसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुण । तदो उवरिमइडिमसासपानसम्माइडिअवहारफालो संखेज्जगुण । एवं भेयस्व

अवहारफालो सासापानसम्माइडिअवहारफालो अवहारफालो आणत और प्राणतके असंयतसम्माइडिअवहारफालो अवहारफालो असंयतगुणो है । उससे आरण और अणुदके असंयतसम्माइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके असंयतसम्माइडिअवहारफालो के ज्ञाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके असंयतसम्माइडिअवहारफालो के ज्ञान और प्राणतके सिध्दाइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इससे आरण और अणुदके सिध्दाइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सिध्दाइडिअवहारफालो के ज्ञान चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सिध्दाइडिअवहारफालो के ज्ञान और प्राणतके सम्मिमिध्दाइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इससे आणत और प्राणतके सम्मिमिध्दाइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इससे आरण और अणुदके सम्मिमिध्दाइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सम्मिमिध्दाइडिअवहारफालो के ज्ञान चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सम्मिमिध्दाइडिअवहारफालो के ज्ञान और प्राणतके सासापानसम्माइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इससे आरण और अणुदके सासापानसम्माइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सासापानसम्माइडिअवहारफालो के ज्ञान चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सासापानसम्माइडिअवहारफालो के ज्ञान और प्राणतके सासापानसम्माइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इससे आणत और प्राणतके सासापानसम्माइडिअवहारफालो अवहारफालो संयतगुणो है । इसीप्रकार अवहारफालो के प्रतिष्ठेमरूपसे अवतक लीपन और प्रेक्षण रूपके असंयत-

अवहारकालपक्षिणेण चाप सोहम्मीसाणअसंखेज्जग्गुणं पच सि । तदो पखि
 होवममसंखेज्जग्गुण । तदो उवरि सोहम्मीसाणविक्खमध्वी असंखेज्जग्गुण । को
 गुणगारो ? सगविक्खमध्वी असंखेज्जग्गुणमागो । को पडिमागो ? पडिशोवमपडिमायो ।
 अहवा अविमंगुलपडमवग्गामूलास्स असंखेज्जग्गुणमागो असंखेज्जग्गुणि विदिपवग्गामूलाणि ।
 केचियमेचाणि ? तदियवग्गममूलास्स असंखेज्जग्गुणमागमेचाणि । को पडिमागो ? पखि
 होवमपडिमागो । अवमवासियमिच्छाह्मिविक्खमध्वी असंखेज्जग्गुण । को गुणगारो ?
 पदंगुलस्स असंखेज्जग्गुणमागो असंखेज्जग्गुणि अविमंगुलाणि । केचियमेचाणि ?
 तदियवग्गममूलास्स असंखेज्जग्गुणमागमेचाणि । को पडिमागो ? सोहम्मीसाणमिच्छाह्मिविक्खमध्वी ।
 मिच्छाह्मिअवहारकालो असंखेज्जग्गुणो । को गुणगारो ? अविमंगुलस्स असंखेज्जग्गुणमागो
 असंखेज्जग्गुणि अविमंगुलपडमवग्गामूलाणि । को पडिमागो ? अवमवासियमिच्छाह्मि
 विक्खमध्वी पडिमायो । ओइसियदेवमिच्छाह्मिअवहारकालो विसेसाहो । केवडिओ
 विसेसो ? पदंगुलस्स असंखेज्जग्गुणमागो । बाणवैतरमिच्छाह्मिअवहारकालो असंखेज्जग्गुण ।
 को गुणगारो ? असंखेज्जग्गुणमागो । सवककुमार माहिंमिच्छाह्मिअवहारकालो असंखेज्जग्गुण ।

सम्यग्दर्शियोंका द्रव्य प्राप्त होने तक के ज्ञान चाहिये । सौधर्म और देशान्तरके
 असंख्यातसम्यग्दर्शियोंके द्रव्यसे पस्योपम असंख्यातगुण है । पस्योपमके रूपर सौधर्म और
 देशान्तरके मिथ्यादर्शिविषयमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी
 विषयमसूचीका असंख्यातता माप गुणकार है । प्रतिमाप क्या है ? पस्योपम प्रतिमाप है ।
 अपना सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातता माप गुणकार है जो सूर्यगुणके असंख्यात
 द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है । सूर्यगुणके उन असंख्यात द्वितीय वर्गमूलका प्रमाण कितना
 है ? तीसरे वर्गमूलके असंख्यातता माप है । प्रतिमाप क्या है ? पस्योपम प्रतिमाप है । सौधर्म
 और देशान्तरके मिथ्यादर्शियोंकी विषयमसूचीसे अवनवासी मिथ्यादर्शिविषयमसूची
 असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? प्रत्यगुणका असंख्यातता माप गुणकार है जो असंख्यात
 सूर्यगुणप्रमाण है । उन असंख्यात सूर्यगुणोंका प्रमाण कितना है ? तृतीय वर्गमूलप्रमाण
 है । प्रतिमाप क्या है ? सौधर्म और देशान्तरके मिथ्यादर्शिविषयमसूचीके
 प्रतिभागके समान प्रतिमाप है । सामान्य रूप मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाळ असंख्यातगुण है ।
 गुणकार क्या है ? सूर्यगुणके असंख्यातता माप गुणकार है जो सूर्यगुणके संख्यात प्रथम
 वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाप क्या है ? अवमवासियोंकी मिथ्यादर्शिविषयमसूची प्रतिमाप
 है । इस रूप मिथ्यादर्शिव्यवहारकाळसे ज्योतिषी देखेंगे मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाळ
 विशेष अधिक है । कितना विशेष है ? प्रत्यगुणका संख्यातता माप विशेष है । ज्योतिषियोंके
 मिथ्यादर्शिव्यवहारकाळसे वाक्यन्तरोंके मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाळ संख्यातगुण है ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाक्यन्तर मिथ्यादर्शिव्यवहारकाळसे
 सप्तकुमार और माहेन्द्रके मिथ्यादर्शियोंका अवहारकाळ असंख्यातगुण है । गुणकार

को गुणगारो ? सेट्टिएकारसवग्गमूलस्स असंखेज्जादिमागो असंखेज्जाणि बारसवग्गमूलाणि ।
को पडिमागो ? वाण्वेतरमिच्छाइड्डिअवहारकालो पडिमागो । तस्सुवरि पम्द-बम्भोचर
मिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेट्टिवमवग्गमूलस्स असंख
ज्जादिमागो असंखेज्जाणि दसमवग्गमूलाणि । लांतव कायिदमिच्छाइड्डिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सचमवग्गमूलस्स असंखेज्जादिमागो असंखेज्जाणि अट्ठम
वग्गमूलाणि । सुक्क-महासुक्कमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
पचमवग्गमूलस्स असंखेज्जादिमागा असंखेज्जाणि छट्ठमवग्गमूलाणि । सदार सहस्सार
मिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पचमवग्गमूल । तदो सदार
सहस्सारदब्बमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदब्बस्स अमसंखेज्जादिमागो । को पडिमागो ?
सगमवहारकालपडिमागो । एय येयम्ब पडिलोमेण जाव सणक्कुमार माहिंदमिच्छा
इड्डिदम्बमिदि । तस्सुवरि वाण्वेतरमिच्छाइड्डिविक्खमसंखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
तस्सेव विक्खमसंखेज्जगुणा असंखेज्जादिमागो एकारसवग्गमूलस्स असंखेज्जादिमागो असंखेज्जाणि

क्या है ? जगभेणीके ग्यारहवें बर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेणीके
असंख्यात बारहवें बर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पाण्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका
अवहारकाल प्रतिभाग है । सानत्कुमार और माहेन्द्रके मिथ्यादृष्टि अवहारकालके ऊपर द्रव्य
भीर द्रव्योत्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेणीके
नौवें बर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेणीके असंख्यात द्वादश बर्गमूलप्रमाण
है । प्रत्यक्षिकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे आन्तर और कायिष्ठके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेणीके सातवें बर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार
है जो जगभेणीके असंख्यात आठवें बर्गमूलप्रमाण है । क्षणवक्षिकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
शुक्क और महाशुक्कके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
जगभेणीके पाँचवें बर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेणीके असंख्यात
छठवें बर्गमूलप्रमाण है । शुक्लक्षिकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार भीर सहस्रारके
मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभेणीका पाँचवां बर्गमूल
गुणकार है । शताधिकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार भीर सहस्रारका मिथ्यादृष्टि
द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? मयने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।
प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । इसीप्रकार प्रतिसोमक्रमसे सानत्कुमार
और माहेन्द्र रूपके मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण आये तक छे जाना चाहिये । सानत्कुमारक्षिकके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर बाण्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कंमसंखेज्जा असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? उन्हीं बाण्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंमसंखेजीका असंख्यातवां भाग गुणकार
है । अथवा जगभेणीके ग्यारहवें बर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगभेणीके

भारसवग्गमूलाणि वा । को पडिमागो ? सपक्खुमार-माहिंसमिच्छाद्विदम्भपडिमागो ।
 जोइसियमिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तं ससंज्जगुणा । को गुणगारो ? सत्ते-असमया । देव
 मिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तं वितेसाहिया । कोसियमेत्थेण ? संखज्जकवसुद्धिदयपल्लमेत्थेण ।
 भवणवासिमिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तं असंखज्जगुणो । को गुणगारो ? पुण्य मणिदो ।
 सोइस्मीसाणमिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तं असंखज्जगुणो । को गुणगारो ? पुण्य मणिदो ।
 सेही असंखज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खमधूर्त्तं । सत्तेव दम्भमसंखज्जगुण । को
 गुणगारो ? सगमिक्खमधूर्त्तं । भवणवासियमिच्छाद्विद्विक्खमसंखज्जगुण । को गुणगारो ?
 पुण्य मणिदो । बाणवैतरमिच्छाद्विद्विक्खमसंखज्जगुण । को गुणगारो ? सेहीए
 असंखज्जगुणा । असंखज्जगुणा । सेहीएवदम्भमसंखज्जगुण । को पडिमागो ? भवण
 वासिविक्खमधूर्त्तं गुणिसदसगवहारकासपडिमागो । जोइसियमिच्छाद्विद्विक्ख
 संखज्जगुणं । को गुणगारो ? संखज्जगुणसमया । देवमिच्छाद्विद्विक्ख वितेसाहिया । कसियमेत्थेण ?
 संखज्जकवसुद्धिदयपल्लमेत्थेण । पदरमसंखज्जगुण । को गुणगारो ? भवहारकासो । सोमो

असंख्यात बाणवैतरं वर्गमूखप्रमाण है । प्रतिमाग क्या है ? सावत्थुमार और माहिंस्र कस्यके
 मिच्छाद्विद्विक्ख प्रमाण प्रतिमाग है । बाणवैतर मिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तसे ज्योतिषियोंकी
 मिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्त संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।
 ज्योतिषी मिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तसे देव मिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्त विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे
 अधिक है । ज्योतिषी मिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तसे सत्तातसे अधिक करके जो एक बंध छप्प
 आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तसे भवणवासी मिच्छाद्विद्विक्ख
 मवहारकास असंख्यातगुण्य है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । भवणवासी मिच्छाद्विद्विक्ख
 मवहारकाससे सौमर्य और देशान कस्यके मिच्छाद्विद्विक्ख मवहारकास असंख्यातगुण्य है ।
 गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । सौमर्य और देशान कस्यके मिच्छाद्विद्विक्ख मवहारकाससे
 जगदीश असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विक्खमधूर्त्त गुणकार है । जगदीशसे जमी
 सौमर्य कस्यके मिच्छाद्विद्विक्ख प्रमाण असंख्यातगुण्य है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खमधूर्त्त
 गुणकार है । सौमर्य और देशान कस्यके मिच्छाद्विद्विक्ख प्रमाणसे भवणवासियोंके मिच्छाद्विद्विक्ख
 असंख्यातगुण्य है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । भवणवासी मिच्छाद्विद्विक्ख प्रमाणसे
 बाणवैतर मिच्छाद्विद्विक्ख असंख्यातगुण्य है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं जो
 जगदीशके असंख्यातसे माय है । जिस जगदीशके असंख्यातसे मायका प्रमाण जगदीशके
 असंख्यात प्रथम वर्गमूख है । प्रतिमाग क्या है ? भवणवासी मिच्छाद्विद्विक्खमधूर्त्तसे अपने
 मवहारकासके गुणित करके जो छप्प आवे तन्मात्र प्रतिमाग है । बाणवैतर मिच्छाद्विद्विक्ख प्रमाणसे
 ज्योतिषी मिच्छाद्विद्विक्ख प्रमाण संख्यातगुण्य है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय
 गुणकार है । ज्योतिषी मिच्छाद्विद्विक्ख प्रमाणसे देव मिच्छाद्विद्विक्ख विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे
 अधिक है । संख्यातसे ज्योतिषी मिच्छाद्विद्विक्ख प्रमाणसे अधिक करके पर जगदीशके एक बंध-

असंखेज्जगुणो ? कां गुणगारो ? सदी ।

अठमाहमागामाग बत्तइस्सामो । रं जहा- सम्भवीवरासिमणंसखं कए तस्य बहुखडा एइदिय विगल्लिदिया होति । सेसमसखखे कए बहुखडा सिद्धा होति । सेसम सखेज्जखं कए बहुखडा पण्डियतिरिक्खअपज्जा होति । सेस सखेज्जखं कए बहुखडा पण्डियतिरिक्खअपज्जाचमिच्छाइड्डिणो होति । सेस सखेज्जखं कए बहुखडा सोइसियमिच्छाइड्डिणो होति । सेसमसखज्जखं कए बहुखडा मणवासियमिच्छाइड्डिणो होति । सेसमसखेज्जखं कए बहुखडा पडमपुडविमिच्छाइड्डि होति । सेसमसखेज्जखं कए बहुखडा सोइम्मीसाजमिच्छाइड्डि होति । सेसमसखेज्जखं कए बहुखडा मधुस अपज्जा होति । सेसमसखेज्जखं कए बहुखडा विदियपुडविमिच्छाइड्डि होति । सेसम सखेज्जखं कए बहुखडा सजककुमार-मार्हिदमिच्छाइड्डि होति । एवं तदियपुडवि-बम्ह बम्होत्तर अतरपुडवि-छांतवकाविड्ड पचमपुडवि-सुक्कमहासुक्क-सदारसइस्सार-छट्ठपुडवि-सप्तमपुडविमिच्छाइड्डि पि भेयम् । सेसमसखेज्जखं कए बहुखडा सोइम्मीसाजजसज्ज

मात्र विशेषसे अधिक है । दोष मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगत्तर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? मन्वहारक गुणकार है । जगत्तरसे जोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जग भेयी गुणकार है ।

अब अतुर्गत्तिबंधी भागागामागसे बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— सर्व जीवराशिके अन्तर्गत खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय और विकसेन्द्रिय जीव हैं । दोष एक भागके अन्तर्गत खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक अपर्याप्त हैं । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक पर्याप्त मिथ्या दृष्टि हैं । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि दोष हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अन्तर्गताक्षी मिथ्यादृष्टि दोष हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारक्षी हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और देशान्तरकल्पके मिथ्यादृष्टि दोष हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य अपर्याप्त हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारक्षी हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण क्षान्तकुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टि दोष हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवी ब्रह्म और व्योमोत्तर, चौथी पृथिवी, छांतव और कापिष्ठ, पांचवी पृथिवी शुक्र और महाशुक्र शतार और स्रहकार छठवी पृथिवी और छातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टिषोडश प्रमाण भागैतक के जाना चाहिये । सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टिषोडश प्रमाण व्यनेके अन्तर्गत दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुखंडप्रमाण सौधर्म और देशान्तरकल्पके असंख्यातपंचेन्द्रियषोडश प्रमाण हैं । दोष एक भागके

सम्माइडिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तस्सेव सम्मामिच्छाइडिणो होति । सेस असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइडिणो होति । एवं वेयम्भं वाव सदार सहस्सरो चि । तवो वोइसिय-भाणवैतर मवणवासिय तिरिक्ख-पढमादि नाव सचमपुइनि चि वेयम्भं । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आनद-पाणदमसंजदसम्माइडिणो होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आनद-पाणदमसंजदसम्माइडिणो होति । एवं वेयम्भं वाव उवरिमउवरिमगेवज्जमसंजदसम्माइडि चि । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आनद-पाणद मिच्छाइडि होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आनद-पाणदमिच्छाइडि होति । एवं वेयम्भं वाव उवरिमुवरिमगेवज्जमिच्छाइडि चि । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणु दिसवज्जदसम्माइडिणो होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुत्तरविज्जय-मय जयंत-जयंत जवरदमसंजदसम्माइडि होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आनद पाणदसम्मामिच्छाइडि होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आनद-पाणदसम्मामिच्छाइडि होति । एवं वेयम्भं वाव उवरिमुवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइडि चि । सेस संखेज्जखंडे कए

संख्यात खंड करने पर इनमेंसे बहुमात्रप्रमाण इन्हीं सौपरम और पेशाव कल्पके सम्मिश्रणा इष्टि जीवोक्त प्रमाण है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर इनमेंसे बहुमात्रप्रमाण सौपरम और पेशाव कल्पके साक्षात्सम्पत्ति जीव है । इसप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक के जाना चाहिये । इसके भागे ज्योतिषी बाणधम्मतर, मचनवासी तिसैंब और प्रथमप्रति सातों पृथिविपौतक के जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सत्प्रदानसम्पत्तिपौके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुमात्रप्रमाण आनत और प्राणतके असंयतसम्पत्ति जीव है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुमात्र प्रमाण आनत और अणुतके असंयतसम्पत्ति जीव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्वैवेपकके असंयतसम्पत्तिपौके प्रमाण अनेकतक के जाना चाहिये । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुमात्रप्रमाण आनत और प्राणतके मिथ्याचष्टि देव है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुमात्रप्रमाण आनत और अणुत कल्पके मिथ्याचष्टि देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्वैवेपकके मिथ्याचष्टि देवोंके प्रमाण अनेकतक के जाना चाहिये । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुमात्रप्रमाण अनुविशके असंयतसम्पत्ति देव है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुमात्रप्रमाण विजय वैजयंत जयंत और अपर्युजित इन चार अनुत्तरोंके असंयतसम्पत्ति देव है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर इनमेंसे बहुमात्रप्रमाण आनत और प्राणतके सम्मिश्रणाचष्टि देव है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर इनमेंसे बहुमात्रप्रमाण आनत और अणुतके सम्मिश्रणाचष्टि देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम द्वैवेपकके सम्मिश्रणाचष्टि देवोंके प्रमाण अनेकतक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम द्वैवेपकके सम्मिश्रणाचष्टि देवोंके प्रमाणके अनन्तर शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर इनमेंसे

बहुसंख्य आण्ड-पाण्डसासणसम्माद्वृत्तिं ह्येति । सेस संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य आण्ड-
 च्छुदसासणसम्माद्वृत्तिं ह्येति । एव णेयत्वं जाव उवरिममज्झिमसासणेति । ससमसंख्यजखंडं
 कथं बहुसंख्य उवरिमउवरिमसासणसम्माद्वृत्तिं ह्येति । सेस संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य
 सख्यद्विमिद्विमाणागमिपदेशं ह्येति । सेस संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य मणुसिणीमिच्छाद्वृत्तिं
 ह्येति । समं संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य मणुसपज्जसमिच्छाद्वृत्तिं ह्येति । समं संख्यजखंडं
 कथं बहुसंख्य मणुमज्झसंख्यद्विमाणाद्वृत्तिं ह्येति । सेस संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य सम्मा
 मिच्छाद्वृत्तिं ह्येति । सेस संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य सासणसम्माद्वृत्तिं ह्येति । ससं संख्यज
 खंडं कथं बहुसंख्य संजडासंजडा ह्येति । सेस संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य पमत्तसंजडा
 ह्येति । सेस संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य अपमत्तसंजडा ह्येति । ससं संख्यजखंडं कथं
 बहुसंख्य सजोगिणि । सेस संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य चठणं खडगा । सेस
 संख्यजखंडं कथं बहुसंख्य चठणं सुवमामगा । ससंगखंडं अजोगिकेवली ह्येति । एवं
 चउमप्रमाणामागं समर्थं ।

एतो चउमप्रमाणप्यावृत्तं पचइत्तमो । सं अहा । सम्बत्थोवो अजोगिकेवलिरासी ।

बहुभागप्रमाण मानत और प्राणतके साक्षात्तसम्प्यद्वि देखे हैं । दोष एक भागके संप्रपात खंड
 करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण भारण और मध्युतके साक्षात्तसम्प्यद्वि देखे हैं । इसीप्रकार
 उपरिम मध्यम मध्येयके साक्षात्तसम्प्यद्वि देखोवा प्रमाण मानेतक के जाना चाहिये । दोष
 एक भागके संप्रपात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम मध्येयके साक्षा-
 त्सम्प्यद्वि देखे हैं । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सर्वार्थ
 सिद्धि विमानपाटी देखे हैं । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 मनुष्यणी मिष्याद्वि जीव है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 मनुष्य पर्पात मिष्याद्वि जीव है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर उनमेंसे
 बहुभागप्रमाण मनुष्य असपत्तसम्प्यद्वि जीव है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिष्याद्वि मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण साक्षात्तसम्प्यद्वि मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सपत्तासंयत मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सयोगिकेवली जिन है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानके रूपक है । दोष एक भागके संप्रपात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानोंके उपशामक है । दोष एक खंडप्रमाण अयोगि
 केवली जिन है ।

इक्ष्वाक चारों गतिसंबन्धी मागामाग समान्त हुआ ।

अब इसके भागे चारों गतिसंबन्धी अक्षरवक्ष्यको बतलाते हैं । अब इसप्रकार है—

चउच्छ्रुत्सामगा संखेज्जगुणा । कउणं खवगा संखेज्जगुणा । सओगिकेनली संखेज्जगुणा ।
 जप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । मज्जुससंजदा संखेज्जगुणा ।
 मज्जुससासणा संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छद्वि संखेज्जगुणा । असंजदसम्मद्वि संखेज्जगुणा ।
 मज्जुसपन्नवत्तिच्छद्वि संखेज्जगुणा । मज्जुसिणीमिच्छद्वि संखेज्जगुणा । सअद्विद्वि
 विमानवासिपदेवा तिठणा सत्तगुणा वा । सोहम्मीसाणअसंजदसम्मद्विअवहारकालो
 असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अत्तलियाए असंखेज्जदिमागस्त संखेज्जदिमागो । को
 पडिमागो ? सम्मद्विद्विद्विअवहारकालो । सम्मामिच्छद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
 गुणगारो ? अत्तलियाए असंखेज्जदिमागो । सासणसम्मद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । को
 गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं पेयय्यं जाव सदार-सहस्मारो चि । तयो ओत्तसिय नायवत्त
 मवगवामिपदेवि चि पेयय्यं । तयो तिरिक्खअसंजदसम्मद्वि अवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
 सम्मामिच्छद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो ।

अयोगिकेनली जीवद्वयि सबसे स्तोत्र है । इससे चारों गुणस्थानोंके उपशामक संख्यातगुणे
 हैं । चारों गुणस्थानोंके रूपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सपोगिकेनली रूपकोंसे संख्यात-
 गुणे हैं । अग्रमत्तसंपत्त जीव सपोगिकेनलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंपत्त जीव
 अग्रमत्तसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । मज्जुप्य संपत्तासंपत्त प्रमत्तसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं ।
 सासादनसम्पद्वि मज्जुप्य संपत्तासंपत्त मज्जुप्योसे संख्यातगुणे हैं । सम्मामिच्छाद्वि मज्जुप्य
 सासादनसम्पद्वि मज्जुप्योसे संख्यातगुणे हैं । असंपत्तसम्पद्वि मज्जुप्य सम्मामि-
 च्छाद्वि मज्जुप्योसे संख्यातगुणे हैं । पर्याप्त मिच्छाद्वि मज्जुप्य असंपत्तसम्पद्वि मज्जुप्योसे
 संख्यातगुणे हैं । मिच्छाद्वि मज्जुप्यवी पर्याप्त मिच्छाद्वि मज्जुप्योसे संख्यातगुणे हैं । सर्वायं
 सिद्धि विमानवासी द्वे मिच्छाद्वि मज्जुप्यमिच्छोसे तिगुणे अथवा सातगुणे हैं । सीधर्म भीर
 देशाव कल्पके असंपत्तसम्पद्विओंका अवहारकाल सर्वायंसिद्धिके द्वेओंसे अक्षय्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? आपसीके असंख्यातवर्गे मामका संख्यातार्थी माम गुणकार है । प्रतिमाम क्या
 है ? सर्वायंसिद्धिके द्वेओंका प्रमाण प्रतिभाग है । सीधर्म और देशाव कल्पके द्वेओंका सम्मामिच्छा
 द्वि अवहारकाल उन्हींके असंपत्तसम्पद्वि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? आदसीका असंख्यातार्थी भाग गुणकार है । उन्हींके सासादनसम्पद्विओंका अवहारकाल
 उन्हींके सम्मामिच्छाद्विओंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात
 समस्त गुणकार है । इसीगुणकार शतार भीर सहस्रार कल्पक के जाना चाहिये । शतार भीर
 सहस्रार कल्पके सासादनसम्पद्वि अवहारकालसे ज्योतिषी बाजम्यन्तर भीर भयनवासी
 देवियों तक के जाना चाहिये । भयनवासी देवियोंके सासादनसम्पद्वि अवहारकालसे त्रिष्वोंका
 असंपत्तसम्पद्वि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्मामिच्छाद्वि
 अवहारकाल असंख्यातगुण है । इससे उन्हींका सासादनसम्पद्वि अवहारकाल संख्यातगुणा

सज्जसंज्ञदवहारकालो असंखेज्जगुणो । ततो पदमपुत्रविअसंज्ञदसम्माइद्विअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सात्तमसम्माइद्विअवहारकालो
संखेज्जगुणो । एव पेयय आब सचमपुत्रि चि । तदो आणद-पाणदअसंज्ञद-
सम्माइद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आबलियाण असंखेज्जदिमागो ।
आरणच्युदअमअदमसम्माइद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जममया ।
एव णयय आब उवरिमउवरिमगेवजो चि । तदो आणद-पाणदमिच्छाइद्विअवहारकालो
संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जममया । आरणच्युदमिच्छाइद्विअवहारकालो संखेज्ज
गुणो । को गुणगारो ? संखेज्जममया । एवं पेयय आब उवरिमउवरिमगेवजो चि ।
ततो अणुदिमअमअदसम्माइद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जममया ।
अणुचरविजय यइवयत-जयत-अपराभिद अमज्जसम्माइद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? संखेज्जममया । तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
को गुणगारो ? आबलियाण अमसंज्ञदिमागो । आरणच्युदसम्मामिच्छाइद्विअवहारकालो

हे । इससे उर्दीका संपत्तासंपत्त अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । तिर्यक संपत्तासंपत्तोंके
अवहारकाळसे प्रथम पृथिवीके असंपत्तसम्पत्तद्विषयोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है ।
इससे उर्दीका सम्पत्तिमिष्याद्विषय अवहारकाळ संख्यातगुणा है । इससे उर्दीका सात्तावन
सम्पत्तद्विषय अवहारकाळ संख्यातगुणा है । इसीप्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं
पृथिवीतक के जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सात्तावनसम्पत्तद्विषय अवहारकाळसे आमत
भीर प्राणतके असंपत्तसम्पत्तद्विषयोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
आयसीका असंख्यातया माग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके असंपत्तसम्पत्तद्विषयोंका
अवहारकाळ संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार
उपरिम उपरिम त्रिषेकतक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रिषेकके असंपत्तसम्पत्तद्विषय
अवहारकाळसे आमत भीर प्राणतके मिष्याद्विषयोंका अवहारकाळ संख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके मिष्याद्विषयोंका अवहार
काळ संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम
उपरिम त्रिषेकतक के जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रिषेकके मिष्याद्विषय अवहारकाळसे
अनुदिशके असंपत्तसम्पत्तद्विषयोंका अवहारकाळ संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात
समय गुणकार है । अनुदिशके असंपत्तसम्पत्तद्विषय अवहारकाळसे पित्रय, धर्मयत्त जयत्त
भीर अपराभिद इन अनुत्तरवासी द्वेषोंका असंपत्तसम्पत्तद्विषय अवहारकाळ संख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आमत भीर प्राणतके
सम्पत्तिमिष्याद्विषयोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आयसीका
असंख्यातया माग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सम्पत्तिमिष्याद्विषयोंका
अवहारकाळ संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार

षष्ठ्यङ्गुलसामगा संखेन्द्रगुणा । षष्ठ्यङ्गुलसामगा संखेन्द्रगुणा । मञ्जुगिरिवली मन्त्रेन्द्रगुणा ।
 मञ्जुमत्तसङ्गा संखेन्द्रगुणा । मञ्जुमत्तसङ्गा संखेन्द्रगुणा । मञ्जुमत्तसङ्गा संखेन्द्रगुणा ।
 मञ्जुसप्तसङ्गा संखेन्द्रगुणा । सम्मामिच्छाद्वि संखेन्द्रगुणा । असङ्गदमम्माद्वि संखेन्द्रगुणा ।
 मञ्जुसप्तसङ्गासिच्छाद्वि संखेन्द्रगुणा । मञ्जुसिद्धिमिच्छाद्वि संखेन्द्रगुणा । सम्मामिच्छाद्वि
 विमानवासिपदेवा विठ्ठला सप्तगुणा वा । सोहम्मीसाणअसङ्गदमम्माद्विअवहारकालो
 अमन्त्रेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? आत्तसिपाए असंखेन्द्रदिमागस्म संखेन्द्रदिमागा । को
 पठिमागो ? सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो अमन्त्रेन्द्रगुणा । को
 गुणगारो ? आत्तसिपाए असंखेन्द्रदिमागा । सात्तणमम्माद्विअवहारकालो संखेन्द्रगुणो । का
 गुणगारो ? संखेन्द्रसमया । एवं जेयव्वं आर मदार-सहस्सारो पि । तदो ओत्तमिय गगगैत्त-
 मवगवासिपदवि पि णियव्वं । तदा विरिक्खअसङ्गदसम्माद्वि अवहारकालो असंखेन्द्रगुणो ।
 सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो असंखेन्द्रगुणो । सात्तणमम्माद्विअवहारकालो संखेन्द्रगुणा ।

अयोगिकेवली जीवराशि सबसे स्तोके है । इससे चारों गुणस्थानोंके उपशामक संप्रदायगुणे
 हैं । चारों गुणस्थानोंके संप्रदाय उपशामकोंसे संप्रदायगुणे हैं । अयोगिकेवली संप्रदायोंसे संप्रदाय-
 गुणे हैं । अमन्त्रेन्द्रसंघत जीव अयोगिकेवलीसिद्धिसे संघपातगुणे हैं । मन्त्रसंघत जीव
 मन्त्रसंघतोंसे संघपातगुणे हैं । मनुष्य संघतासंघत मन्त्रसंघतोंसे संप्रदायगुणे हैं ।
 सात्तणसम्पत्ति मनुष्य संघतासंघत मनुष्योंसे संघपातगुणे हैं । सम्मामिच्छाद्वि मनुष्य
 सात्तणसम्पत्ति मनुष्योंसे संघपातगुणे हैं । असंघतसम्पत्ति मनुष्य सम्पत्ति
 प्याद्वि मनुष्योंसे संघपातगुणे हैं । पर्याप्त मिच्छाद्वि मनुष्य असंघतसम्पत्ति मनुष्योंसे
 संघपातगुणे हैं । मिच्छाद्वि मनुष्यनी पर्याप्त मिच्छाद्वि मनुष्योंसे संघपातगुणे हैं । सर्वोप-
 सिद्धि विमानवासी देव मिच्छाद्वि मनुष्यसिद्धिसे विगुणे मयवा सातगुणे हैं । सौधर्म और
 देशात्त कर्मके असंघतसम्पत्तिद्विोंका अवहारकाल सर्वोपसिद्धिके देवोंसे असंघपातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? आत्तजीके असंघपातवें मायवा संप्रदायवा माय गुणकार है । प्रतिमाय क्या
 है ? सर्वोपसिद्धिके देवोंका प्रमाण प्रतिमाग है । सौधर्म और देशात्त कर्मके देवोंका सम्पत्तिमिच्छा
 द्वि अवहारकाल उन्हींके असंघतसम्पत्ति अवहारकालसे असंघपातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? आत्तजीका असंघपातवा माय गुणकार है । उन्हींके सात्तणसम्पत्तिद्विोंका अवहारकाल
 उन्हींके सम्पत्तिमिच्छाद्विोंके अवहारकालसे संघपातगुणा है । गुणकार क्या है ? संघपात
 समय गुणकार है । इसीमकार शान्तर और सहकार कर्मक के जाना चाहिये । शान्तर और
 सहकार कर्मके सात्तणसम्पत्ति अवहारकालसे ज्योतिषी वायव्यतर और मन्त्रवासी
 देवियोंक के जाना चाहिये । मन्त्रवासी देवियोंके सात्तणसम्पत्ति अवहारकालसे त्रिर्बोध्य
 असंघतसम्पत्ति अवहारकाल असंघपातगुणा है । इससे उन्हींका सम्पत्तिमिच्छाद्वि
 अवहारकाल असंघपातगुणा है । इससे उन्हींका सात्तणसम्पत्ति अवहारकाल संघपातगुणा

तिरिक्त्वमिच्छद्द्विअवहारकालो असंख्यजगुणो । को गुणगारो ? सच्चिअंगुलपत्रमवग
मूलम् असंख्यजदिमागो । पंचिदियतिरिक्त्वअपज्जत्तअवहारकालो विससादिआ । कसिय
मचेण ? आवलियाए अमंखजदिमागस खंदिदमचण । पंचिदियतिरिक्त्वअपज्जत्तमिच्छा
द्द्विअवहारकालो अमंखजगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखजदिमागस्त संखजदि
मागो । देवमिच्छद्द्विअवहारकालो संखजगुणो । को गुणगारो ? संखजसमया । ओ
सियमिच्छद्द्विअवहारकालो विससादिओ । कसियमचेण ? संखजअवेहिं खंदिदमखट
मचेण । पावनेतरमिच्छद्द्विअवहारकालो संखजगुणो । को गुणगारो ? संखजसमया ।
पंचिदियतिरिक्त्वमोणिणीमिच्छद्द्विअवहारकालो संखजगुणो । को गुणगारो ? संखज
समया । विनियपुढमिच्छद्द्विअवहारकालो अमंखजगुणो । को गुणगारो ? धारइवग-
मूलस असंखजदिमागो असंखेज्जाणि तेरमवगमूलाणि । को पदिमागो ? जोमिणीअव

मिष्याददि विष्कमसूची गुणकार है । मधनवासी मिष्याददि विष्कमसूचीसे पंचमित्रिय
तिर्येख मिष्याददि अवहारकाल असंख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ? संप्यगुणके मधम
परामूलका असंख्यातवा माग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्येख मिष्याददि अवहारकालसे
पंचमित्रिय तिर्येख अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
आपकीके असंख्यातयें मागसे पंचेन्द्रिय तिर्येख मिष्याददियोंके अवहारकालसे उचित करके
ओ एक माग संप्य भाये तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्येख अपर्याप्त अवहारकालसे
पंचेन्द्रिय तिर्येख पर्याप्त मिष्याददियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ?
आपकीके असंख्यातयें मागका संख्यातवा माग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्येख पर्याप्त
अवहारकालसे देव मिष्याददियोंका अवहारकाल संख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ?
संख्यात समय गुणकार है । देव मिष्याददि अवहारकालसे ज्योतिरी मिष्याददियोंका
अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? देव मिष्याददियोंके
अवहारकालको संख्यातसे उचित करके ओ एक मंड संप्य भाये तन्मात्र विशेषसे अधिक
है । ज्योतिरी मिष्याददियोंके अवहारकालस पाण्यन्तर मिष्याददियोंका अवहारकाल
संख्यातगुणो है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पाण्यन्तर मिष्याददियोंके
अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्येख योनिमयी मिष्याददियोंका अवहारकाल संख्यातगुणो
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । तिर्येख योनिमयी मिष्याददियोंके अव
हारकालसे मूलगी पृथिवीके मिष्याददियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणो है । गुणकार
क्या है ? जगभेजीके वारदयें परामूलका असंख्यातवा माग गुणकार है ओ जगभेजीके
असंख्यात तेरदयें परामूलमाग है । प्रतिमाग क्या है ? यातिमनियोंका अवहारकाल प्रतिमाग

संज्ञगुणा । को गुणगारा ? मंगलममया । एवं गपय्य ज्ञात उपरिमउपरिमगज्जा वि । तदो भाषद-पाणदमामणमम्मद्धिअवहारकाला मंगलगुणा । का गुणगारा ? संज्ञममया । आरपञ्चुदसामपमम्मद्धिअवहारकाला मंगलगुणा । का गुणगारा ? संज्ञममया । एवं वेपय्य ज्ञात उपरिमउपरिमगज्जा वि । तस्मिन् दृश्यममंगलगुण । उपरिममज्जिमममप-सम्माद्धिदृश्य मसंज्ञगुण । एवमवहारकालपटिलमण गपय्य ज्ञात माहम्मिमापममवद-सम्माद्धिदृश्य वि । तदा पल्लिदामममसंज्ञगुण । का गुणगारा ? अवहारकाल । साहम्मि-साम्पत्तिकरममवद अमसंज्ञगुणा । का गुणगारा ? सुचिअंगुलपदममगमूलमम अमसंज्ञदि-मागा अमसंज्ञाणि विदियवगममूलानि । कसियमचाणि ? तदियवगममूलमम असंज्ञा-वि-भागमचाणि । का पटिमागा ? पल्लिदामपटिमागा । मणुमअपञ्चउपरिमवहारकाला अम-येनगुणा । का गुणगारा ? सुचिअंगुलविदियवगममूल । गरुपमिच्छाद्धिविक्खेममवद-असंज्ञगुणा । का गुणगारा ? सुचिअंगुलविदियवगममूल । मयणामियमिच्छाद्धि-विक्खेममवद अमसंज्ञगुणा । का गुणगारा ? गरुपमिच्छाद्धिविक्खेममवद । पण्दिय

उपरिम उपरिम त्रैलोक्यक के ज्ञाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सम्ममिष्या-दृष्टिपोंके अवहारकालसे व्यक्त भीर प्राणके सासादनसम्पददृष्टिपोंका अवहारकाल-सम्पत्तगुणा है । गुणकार क्या है ? संप्रदात समय गुणकार है । इससे आरप और अप्युतके सासादनसम्पददृष्टिपोंका अवहारकाल संप्रदातगुणा है । गुणकार क्या है ? मप्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैलोक्यक के ज्ञाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैलोक्यके सासादनसम्पददृष्टि अवहारकालसे ज्ञाना दृश्यप्रमाण असंप्रदातगुणा है । इससे उपरिम मध्यम त्रैलोक्यके सासादनसम्पददृष्टिपोंका दृश्य संप्रदातगुणा है । इसप्रकार अवहार-कालके प्रतिष्ठोम कमसे जब सौधर्म और देशावधारके असंप्रदातसम्पददृष्टिपोंका दृश्य आये तबतक के ज्ञाना चाहिये । सीधर्मद्विकके असंप्रदातसम्पददृष्टि दृश्यसे पक्षोपम असंप्रदातगुणा है । गुणकार क्या है ? मपया अवहारकाल गुणकार है । पक्षोपमसे सीधर्म भीर देशाव-धारके मिष्यादृष्टिपोंकी विष्कम्भसूची असंप्रदातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणके प्रथम वर्गमूलका असंप्रदातर्षा भाग गुणकार है जो सूर्यगुणके असंप्रदात द्वितीय वर्गप्रमाण है । ये असंप्रदात द्वितीय वर्गमूल कितने हैं ? सूर्यगुणके तृतीय वर्गमूलके असंप्रदातर्षे मागमात्र हैं । प्रतिमाग क्या है ? पक्षोपम प्रतिमाग है । सीधर्मद्विककी मिष्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल असंप्रदातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणका द्वितीय वर्ग-मूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्त अवहारकालसे नारक मिष्यादृष्टि विष्कम्भसूची असंप्रदातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । नारक मिष्यादृष्टि विष्कम्भ-सूचीसे मयनवासिपोंकी मिष्यादृष्टि विष्कम्भसूची असंप्रदातगुणी है । गुणकार क्या है ? नारक

रुद्धिदप्यरुद्धमचण । पंचिदियतिरिक्खपञ्चमिच्छद्दुद्धिद्विक्खंमग्गइ सरउज्जगुणा । को
 गुणगारा ? सम्भेज्जपमया । पंचिदियतिरिक्खपञ्चमिच्छद्विक्खंमग्गइ असंखजगुणा । को
 गुणगारा ? आबलियाए असंखज्जदिमागम्म सरउज्जदिमागा । पंचिदियतिरिक्खमिच्छा-
 इद्धिद्विक्खमग्गइ विसेसाहिया । कचियमचण ? आबलियाए असंखेज्जदिमागण रुद्धिद
 प्यरुद्धमेत्तेण । मचणवासियमिच्छद्दुद्धिअवहारकाला असउज्जगुणा । का गुणगारा ?
 मूचिअंगुलपट्टमवग्गमूलम्म असंखज्जदिमागो । पट्टमपुट्टमिच्छद्दुद्धिअवहारकालो असंखेज्ज
 गुणो । का गुणगारा ? पारइपविक्खंमग्गइ । मणुअपञ्चचद्वयमसंखज्जगुण । का गुणगारा ?
 मूचिअंगुलतदियवग्गमूलं । साहम्मोसाणमिच्छद्दुद्धिअवहारकाला असंखज्जगुणा । को
 गुणगारा ? मूचिअंगुलविट्ठियवग्गमूलं । सदी असंखज्जगुणा । को गुणगारा ? विक्खंमग्गइ ।
 साहम्मोसाणमिच्छद्दुद्धिदम्भमसंखज्जगुणं । का गुणगारा ? विक्खमग्गइ । पट्टमपुट्टमिच्छा-
 इद्धिदप्यमसंखज्जगुण । को गुणगारा ? सोहम्मोसाणविक्खमग्गइ । मचणवासियमिच्छद्दुद्धि
 दप्यमसंखज्जगुणं । का गुणगारा ? पारइपमिच्छद्दुद्धिद्विक्खंमग्गइ । पंचिदियतिरिक्ख
 आभिणीमिच्छद्दुद्धिदप्यमसंखज्जगुण । को गुणगारा ? सदीए असंखज्जदिमागा असंख

तिर्येक पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात
 समय गुणकार है । इससे पञ्चेन्द्रिय तिर्येक अपर्याप्तोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है ।
 गुणकार क्या है ? आपत्तीरु असंख्यातसे भागका संख्यातवा भाग गुणकार है । इससे पञ्चेन्द्रिय
 तिर्येक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
 आवश्यकके असंख्यातसे भागसे पञ्चेन्द्रिय तिर्येक अपर्याप्तोंकी विष्कम्भसूचीको रूडिग करके जो
 एक अष्ट सप्त भागे तन्मात्र पिशयसे अधिक है । इससे मयनवासियोंका मिथ्यादृष्टि अपहार
 काल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणके प्रथम वगमूलका असंख्यातवा भाग
 गुणकार है । इससे पट्टी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अपहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? आरक्तियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची गुणकार है । पट्टी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 अपहारकालसे मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणका
 मूर्तीय वगमूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्तोंके द्रव्यसे सौधर्म और देशानन्द मिथ्यादृष्टियोंका
 अपहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुणका द्वितीय वगमूल गुणकार है ।
 सौधर्मद्रव्यके मिथ्यादृष्टि अपहारकालसे जगज्जोती असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ?
 विष्कम्भसूची गुणकार है । जगज्जोतीसे सौधर्म और देशानन्दके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? अपर्याप्त विष्कम्भसूची गुणकार है । सौधर्मद्रव्यके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे
 पट्टी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सौधर्म और देशानन्दकी
 मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची गुणकार है । पट्टी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे मयनवासी मिथ्या
 दृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आरक्तियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची
 गुणकार है । मयनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पञ्चेन्द्रिय तिर्येक योजिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य

हारकाष्ठपट्टिमाणा । ततो सणककुमारमाहिंद-तदियपुटवि-मम्हम्होत्तर-चउत्तपुटवि-संतन-
काविहृ-पंचमपुटवि-सुकमहासुह-सदारसहस्मत्-छट्ट-सप्तमपुटविर्ण मिच्छाद्रुद्विजवहारकाष्ठ
क्रमेण असंख्यजगुणा । को गुणगरो ? मन्दिबारसम-द्वारसम-दमम-धरम-अहम-सप्तम-छट्टम-
पंचम-चउत्त-तदियवगमूलाणि ब्रह्मक्रमेण गुणगारा । तदा सप्तमपुटविजवहारकाष्ठसुसुरि
तस्सेव दशमसंख्यजगुर्ण । को गुणगरो ? पदमगममूल । तदा छट्टपुटवि-सदारसहस्मत्-सुह
महासुह-पंचमपुटवि-संतनकाविहृ चउत्तपुटवि-मम्हम्होत्तर-चउत्तपुटवि-सणककुमारमाहिंद-
तदियपुटवि-मिच्छाद्रुद्विजवहारकाष्ठ-क्रमेण असंख्यजगुर्ण । को गुणगरो ? सविस्वदिय-चउत्त-
पंचम-छट्ट-सप्तम-अहम-धरम-दमम-एकरमम-वारसमवगममूलाणि ब्रह्मक्रमेण गुणगारा ।
ततो विदियपुटवि-मिच्छाद्रुद्विजवहारकाष्ठ-पंचिंदियतिरिक्तजगुर्णाणि-मिच्छाद्रुद्विजवहारकाष्ठ-
जसख-जगुणा । को गुणगरो ? वारसमवगममूलस्त अखखदिमाणा असंख्यजगुर्णाणि
तेरवगममूलाणि । बागोत्तरमिच्छाद्रुद्विजवहारकाष्ठ-संख्यजगुणा । को गुणगरो ?
सखेज्जसमया । खसिपमिच्छाद्रुद्विजवहारकाष्ठ-संख्यजगुणा । को गुणगरो ? संखेज्ज-
समया । देवमिच्छाद्रुद्विजवहारकाष्ठ-विसेसाहिपा । केचियमचण ? संखेज्जसमय-

है । वृक्षी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि मयहारकाष्ठसे सावरकुमार-मोहेन्द्र तीसरी पृथिवी, मन्दि-
मोहेन्द्र चौथी पृथिवी काष्ठ-वदिय पांचवीं पृथिवी शुद्ध महाशुद्ध शतार-सहस्रार
छट्टी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका मयहारकाष्ठ क्रमसे असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? जगधेवीका बारहवां स्यारहवां दशवां गौवां आठवां सातवां छठवां पांचवां चौथा
तीसरा नवमूख क्रमसे गुणकार है । तदनन्तर सातवीं पृथिवीके मयहारकाष्ठके ऊपर उसीका
मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेवीका प्रथम नवमूख गुणकार
है । इससे छठे पृथिवी शतार-सहस्रार शुद्ध महाशुद्ध पांचवीं पृथिवी काष्ठ-वदिय
चौथी पृथिवी मन्दिमोहेन्द्र, तीसरी पृथिवी सावरकुमार-मोहेन्द्र और वृक्षी पृथिवीके
मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य क्रमसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेवीका तीसरा,
चौथा पांचवां छठवां सातवां आठवां गौवां दशवां स्यारहवां और बारहवां नवमूख क्रमसे
गुणकार है । अनन्तर वृक्षी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर पंचेन्द्रिय तिर्यक योनिमयी
मिथ्यादृष्टियोंकी बिम्बमयूखी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगधेवीके बारहवें
नवमूखका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगधेवीके असंख्यात तेरहवें नवमूखप्रमाण है ।
इससे बाणधरन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी बिम्बमयूखी संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात
समय गुणकार है । इससे क्योतिपी मिथ्यादृष्टियोंकी बिम्बमयूखी संख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे देव मिथ्यादृष्टियोंकी बिम्बमयूखी विद्येय अधिप
है । कितनेमात्र विद्येयके अधिप है । संख्यात समयसे क्योतिपी मिथ्यादृष्टियोंकी बिम्बम-
यूखीके अंतर्गत करके जो एक भाग छठवां आठवां स्यारहवां विद्येयसे अधिप है । इससे पंचेन्द्रिय

सुखिदप्यसंख्यमप्य । पंचिदियतिरिक्तसुखमिच्छद्द्विविक्तमसुखं सगुणगुणा । को गुणगारो ? संख्यजनमया । पंचिदियतिरिक्तसुखमप्यसंख्यमसुखं असंख्यगुणा । को गुणगारो ? आबलिपाए असंख्यजनमागम्य सुखजनदिमागो । पंचिदियतिरिक्तसुखमिच्छद्द्विविक्तमसुखं विवेकाहिया । कतिममप्ये ? आबलिपाए असंख्यजनदिमाग्य सुखिदप्यसंख्यमप्ये । मयनवासियमिच्छद्द्विविक्तमसुखं असंख्यजनगुणा । को गुणगारो ? सुखिअगुलपदमममूलम्य असंख्यजनदिमागो । पदमपुदविमिच्छद्द्विविक्तमसुखं असंख्यजनगुणा । को गुणगारो ? मयनअपप्रचनमसंख्यजनगुणा । को गुणगारो ? सुखिअगुलविदियवगमूलं । सोहम्मीप्राणमिच्छद्द्विविक्तमसुखं असंख्यजनगुणा । को गुणगारो ? सुखिअगुलविदियवगमूलं । सटी असंख्यजनगुणा । को गुणगारो ? विक्तमसुखं । सोहम्मीप्राणमिच्छद्द्विविक्तमसंख्यजनगुण । को गुणगारो ? विक्तमसुखं । पदमपुदविमिच्छद्द्विविक्तमसंख्यजनगुण । को गुणगारो ? सुहम्मीप्राणमिक्तमसुखं । मयनवासियमिच्छद्द्विविक्तमसंख्यजनगुणं । को गुणगारो ? मयनमिच्छद्द्विविक्तमसुखं । पंचिदियतिरिक्तसुखमिच्छद्द्विविक्तमसंख्यजनगुण । को गुणगारो ? सटी असंख्यजनदिमागो असंख्य

तिर्यक् पयात् मिथ्यादृष्टिर्विषयः । विषयमसुखं संप्रदातगुणी है । गुणकार क्या है ? संप्रदात सम्य गुणकार है । इससे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्तोंकी विषयमसुखी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? बाह्यहीन असंख्यातमय मागका संप्रदातमय माग गुणकार है । इससे पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टिर्विषयः विषय मधिक है । कितनेमात्र विरोधसे अधिक है ? व्यवर्तके असंख्यातमय भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्तोंकी विषयमसुखीको रक्षित करके जो एक ऋजु सत्य चाये तन्मात्र विरोधसे अधिक है । इससे मयनवासियोंका मिथ्यादृष्टि अग्रहार कास असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सुखगुणके मयन वगमूलक असंख्यातमय माग गुणकार है । इससे पहली वृथिवीके मिथ्यादृष्टिर्विषय अग्रहारकास असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? कारकिर्षीकी मिथ्यादृष्टि विषयमसुखी गुणकार है । पहली वृथिवीके मिथ्यादृष्टि अपहारकाससे मनुष्य अपर्याप्तोंका द्वय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सुखगुणका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्तोंके द्वयसे सीधम र्भार देशानके मिथ्यादृष्टिर्विषय अपहारकास असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सुखगुणका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । सीधमर्षिकके मिथ्यादृष्टि अग्रहारकाससे अग्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विषयमसुखी गुणकार है । अग्रेणीसे सीधम र्भार देशानके मिथ्यादृष्टिर्विषय अग्रमात्र असंख्यात गुणा है । गुणकार क्या है ? अपर्याप्त विषयमसुखी गुणकार है । सीधमर्षिकके मिथ्यादृष्टि द्वयसे पहली वृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्वय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सीधम र्भार देशानकी मिथ्यादृष्टि विषयमसुखी गुणकार है । पहली वृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्वयसे मयनवासी मिथ्या दृष्टिर्विषय द्वय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? नादिकीकी मिथ्यादृष्टि विषयमसुखी गुणकार है । मयनवासी मिथ्यादृष्टि द्वयसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् बोधिमती मिथ्यादृष्टि द्वय

ज्वालि सन्निपद्यमन्त्राणां । का पट्टिमाणा ? असंख्यज्वालि परंगुलाणि पट्टिमाणा ।
 कचियमेवाणि ? सख्यज्वालिपट्टिमाणां मूलमेवाणि । वापवेतरमिच्छाद्विद्वन् संख्यज्वालि ।
 का गुणगता ? संख्यज्वालि । ज्ञेयसिद्धिद्वयं संख्यज्वालि । को गुणगता ?
 सख्यज्वालि । दन्मिच्छाद्विद्वन् विमलसिद्धि । केचियमेवेण ? संख्यज्वालिद्विद्वन् ।
 पश्चिद्विद्वन्तिरिक्तपञ्चदश संख्यज्वालि । का गुणगता ? संख्यज्वालि । पश्चिद्विद्वन्
 निरिक्तपञ्चदशमसंख्यज्वालि । को गुणगता ? आनन्दिनाय असंख्यज्वालि । पश्चिद्विद्वन्
 निरिक्तपञ्चदशमसंख्यज्वालि विमलसिद्धि । केचियमेवेण ? आनन्दिनाय असंख्यज्वालि
 रंख्यज्वालि । पदमसंख्यज्वालि । को गुणगता ? सगज्वालि । उ गमसंख्यज्वालि
 को गुणगता ? सख्य । सिद्धा अर्णतगुणा । को गुणगता ? अमवसिद्धिद्विद्वन् अर्णतगुणा
 सिद्धात्मसंख्यज्वालि । को पट्टिमाणा ? सगज्वालि । पश्चिद्विद्वन् विमलसिद्धि अर्णतगुणा ।
 का गुणगता ? अमवसिद्धिद्विद्वन् अर्णतगुणा सिद्धिद्वि वि अर्णतगुणा जीवज्वालि

असंख्यज्वालि । गुणकार क्या है ? अगमसिद्धिद्विद्वन् असंख्यज्वालि । जो अगमसिद्धिद्विद्वन्
 असंख्यज्वालि प्रथम सगज्वालि । प्रतिमाणा क्या है ? असंख्यज्वालि अर्णतगुणा प्रतिमाणा है । इन
 असंख्यज्वालि अर्णतगुणा प्रमाण किता है ? सख्यज्वालि सख्यज्वालि प्रथम अर्णतगुणा अर्णतगुणा
 प्रमाण हो उतना है । पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्याद्विद्वन् प्रथमे बाणध्वज
 मिथ्याद्विद्वन् प्रथम संख्यज्वालि । गुणकार क्या है ? संख्यज्वालि समय गुणकार है । बाण-
 ध्वज मिथ्याद्विद्वन् प्रथमे ज्योतिषी मिथ्याद्विद्वन् प्रथम संख्यज्वालि ।
 गुणकार क्या है ? संख्यज्वालि समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्याद्विद्वन् प्रथमे
 देव मिथ्याद्विद्वन् प्रथम विशेष अधिक है । कितामेवाव विशेषसे अधिक है ?
 संख्यज्वालि ज्योतिषी मिथ्याद्विद्वन् प्रमाणको अर्णतगुणा करके जो एक भाग
 सख्य बाणध्वज विशेषसे अधिक है । देव मिथ्याद्विद्वन् प्रथमे पञ्चेन्द्रिय तिर्यक्
 पश्चिद्विद्वन् मिथ्याद्विद्वन् प्रथम संख्यज्वालि । गुणकार क्या है ? सख्यज्वालि समय गुणकार
 है । तिर्यक् पश्चिद्विद्वन् मिथ्याद्विद्वन् प्रथमे पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् अर्णतगुणा मिथ्याद्विद्वन् प्रथम संख्यज्वालि
 गुणा है । गुणकार क्या है ? अगमसिद्धिद्विद्वन् असंख्यज्वालि । पञ्चेन्द्रिय तिर्यक्
 अर्णतगुणा मिथ्याद्विद्वन् प्रथमे पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्याद्विद्वन् प्रथम विशेष अधिक है । कितामेवाव
 विशेषसे अधिक है ? अगमसिद्धिद्विद्वन् असंख्यज्वालि प्रमाणसे पञ्चेन्द्रिय तिर्यक् अर्णतगुणा मिथ्याद्विद्वन्
 प्रथमे अर्णतगुणा करके जो एक भाग सख्य बाणध्वज विशेषसे अधिक है । पञ्चेन्द्रिय
 तिर्यक् मिथ्याद्विद्वन् प्रथमे अगमसिद्धिद्विद्वन् असंख्यज्वालि । गुणकार क्या है ? अर्णतगुणा अर्णतगुणा
 गुणकार है । अगमसिद्धिद्विद्वन् असंख्यज्वालि । गुणकार क्या है ? अगमसिद्धिद्विद्वन् असंख्यज्वालि ।
 सख्यसे सिद्ध अगमसिद्धिद्विद्वन् । गुणकार क्या है ? अगमसिद्धिद्विद्वन् असंख्यज्वालि और सिद्धिद्विद्वन्
 असंख्यज्वालि भाग गुणकार है । प्रतिमाणा क्या है ? सख्य प्रतिमाणा है । सिद्धिद्विद्वन् पश्चिद्विद्वन्
 पश्चिद्विद्वन् जीव अगमसिद्धिद्विद्वन् । गुणकार क्या है ? अगमसिद्धिद्विद्वन् असंख्यज्वालि सिद्धिद्विद्वन्
 जीव अगमसिद्धिद्विद्वन् प्रथम अर्णतगुणा प्रमाण अगमसिद्धिद्विद्वन् और अगमसिद्धिद्विद्वन् जीवोंके अगम

वि अर्णतगुणा भवसिद्धिर्वावाणमणतामागस्त अर्णतिममागो । को पठिमागा ? सिद्धपठि
मागो । एष चदुगदिअप्पाचदुग समर्थ ।

एव गम्भमाणा समता ।

अदियाणुवादेण एइदिया वादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दब्ब
पमाणेण वेवड्डिया ? अणत्ता' ॥ ७४ ॥

एत्थ एद्रियगहणेण ससिद्धियाण पडिसहो कदा मभदि । सुहुमपडिसेइह वादर
ग्गहर्ण । वादरपडिसइफला सुहुमणिसेसा । अपज्जत्तपडिसइफलो पज्जत्तणिसेसा । पज्जत्त
पडिसइफला अपज्जत्तणिसेसा । एद्रिया वादरदिया सुहुमईदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता च
एद णव वि रासीओ दम्बपमाणण कवडिया इदि पुच्छिई होदि । किमइं सज्जत्तय पणप्पुम्भ
परिमाण बुद्ध ? ण एस दोसा, मद्दुदिसिस्साणुग्गहणइत्तादे । अर्णत्ता इदि परिमाणणिसेसा
संखेअ अर्णत्तपरिमाणपडिसइफलो । संस जहा मूलोपमुचे बुच तहा वचम्भ ।

बहुमागोअ मनस्तर्वा माग गुणधार है । प्रतिमाग क्या है ? सिद्धप्राप्ति प्रतिमाग है । इसप्रकार
चारों पनित्तवन्धी अक्षरबहुत्व समाप्त हुआ ।

इसप्रकार गतिमार्गवा समाप्त हुए ।

इन्द्रिय मार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय
अपर्याप्त, वादर एकेन्द्रिय, वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म
एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितनी है ? अनन्त है ॥ ७४ ॥

इस सूक्ष्मे एकेन्द्रिय पदके ग्रहण करनेसे शेषेन्द्रिय जीवोंका निषेध किया है । सूक्ष्म
जीवोंका निषेध करनेके लिये वादर पदका ग्रहण किया है । वादर जीवोंका निषेध करनेके
लिये सूक्ष्म पदका ग्रहण किया है । अपर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये पर्याप्त पदका
ग्रहण किया है । और पर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये अपर्याप्त पदका ग्रहण किया
है । एकेन्द्रिय जीव वादर एकेन्द्रिय जीव और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव ये तीन पक्षियां तथा
ये तीनों पर्याप्त और तीनों अपर्याप्त इसप्रकार कुछ नौ जीवपक्षियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितनी हैं यहां ऐसा पूछनेका अविशेष है ।

संज्ञा—सबब प्रत्यययुक्त परिमाण (संख्या) किसलिये कहा जाता है ?

समाधान—यह बोर होय नहीं है क्योंकि मन्त्रबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये
ऐसा कहा गया है ।

संख्यात और असंख्यातका निषेध करनेके लिये सूक्ष्मे अनन्तरूप परिमाणका निर्देश

१ एकेन्द्रिया सिक्खरोत्तमज्जात्ता । ४ वि १ < उद्देशी की उद्देशी दृष्टका ताव उद्देशा कथा ।
उम्मा पत्तेवा उद्देशदिसं अनुज्जा ४ गो. जी. १०१

ज्वापि सन्निपदमवगममूलाणि । का पट्टिमाणा ? असंखज्वापि धर्मागुलाणि पट्टिमाम्ना ।
 कचियमवापि ? संखज्वापि पदमवगममूलमवापि । बाणनेतरमिच्छद्विद्वन् संखज्वापि ।
 का गुणगारा ? संखज्वापि । अक्षयिमिच्छद्विद्वन् संखज्वापि । को गुणगारो ?
 संखज्वापि । दमिच्छद्विद्वन् विसमिच्छ । कचियमचण ? संखज्वापि । पंचिद्वि
 निरिच्छद्विद्वन् संखज्वापि । को गुणगारा ? संखज्वापि । पंचिद्वि
 निरिच्छद्विद्वन् संखज्वापि । को गुणगारा ? अक्षयिमाणा असंखज्वापि । पंचि
 दिवतिरिच्छद्विद्वन् विसमिच्छ । कचियमचण ? अक्षयिमाणा असंखज्वापि ।
 संखज्वापि । पदमसंखज्वापि । का गुणगारा ? सगज्वापि । लयमसंखज्वापि
 को गुणगारा ? सेदी । सिद्धा अणतगुणा । का गुणगारा ? अमवसिद्धिहि अणतगुणो
 सिद्धागमसंखज्वापि । का पट्टिमाम्ना ? लोपपट्टिमाम्ना । एद्विद्वन्-विगमिद्विद्वन् अणत-
 गुणा । का गुणगारा ? अमवसिद्धिहि अणतगुणो सिद्धिहि वि अणतगुणो जीववगममूलम्

असंखज्वापि । गुणकार क्या है ? अणतगुणों का असंख्याततां भाग गुणकार है जो अणतगुणों के
 असंख्यात प्रथम वर्गमूलकप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात धर्मागुल प्रतिभाग है । उन
 असंख्यात धर्मागुलों का प्रमाण किता है ? सूर्यगुणों के संख्यात प्रथम वर्गमूलकों का अितम
 प्रमाण हो उतता है । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योविमती मिथ्यादृष्टियों के द्रव्यसे बाणध्वन्तर
 मिथ्यादृष्टियों का द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । बाण-
 ध्वन्तर मिथ्यादृष्टियों के द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियों का द्रव्य संख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियों के द्रव्यसे
 देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ।
 संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियों के प्रमाणको संज्ञित करके जो एक मात्र
 द्रव्य व्याप्ते तन्मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक्
 पर्याप्त मिथ्यादृष्टियों का द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार
 है । तिर्यक् पर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? व्याप्ती का असंख्याततां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यक्
 अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र
 विशेषसे अधिक है ? व्याप्ती के असंख्याततां भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि
 द्रव्यको संज्ञित करके जो एक लक्ष द्रव्य व्याप्ते तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय
 तिर्यक् मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगत्तर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपवा नवहारका
 गुणकार है । जगत्तरसे जो एक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगत्तरी गुणकार है ।
 जोकसे सिद्ध अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अनन्तगुणों से अनन्तगुणा और किन्हीं का
 असंख्याततां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? जोक प्रतिभाग है । सिद्धोंसे पंचेन्द्रिय और
 विज्ञेन्द्रिय और अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अनन्तगुणों से अनन्तगुणा सिद्धोंसे
 भी अनन्तगुणा जीवराशिके प्रथम वर्गमूलकसे भी अनन्तगुणा और मध्यासिद्ध जीवों के अनन्त

विष्वासिदय-वीर्यदिय-वीर्यदिय-चतुरिदिय-असम्पिपविदिय-असम्पिप विरिक्ख भवजवासिय
वाप्यवैतर-वेधसिय-वीर्य-अयुसय-इय गय गयश्च नागादि-ससारिवीवाण पुण्यो ठेसु यवेसा-
मावाधो । तदो एह यव वि रासीओ वयसदिया निष्कण्ण इति । एव हि वय सते
वि एदे यव वि रासीओ ण बोधेअत्ति' सरागसरूपेण द्विद्वीदकालपादो । सम्प
वीर्यासीदो अदीदकाले अणतगुणे सते अदीदकालेण सम्पवीवा अवहिरिजति । न च एवं,
तथा अणुवसमादा । जे तेण कालेण सम्पवीवाण बोधेअदो किण्ण होदि पि मन्दि ण,
अमम्पविदिवक्खमात्तं अमम्पचस्स विविष्वासप्पसादो । सेस वपसाण जहा ओपकाल-
सुत्तम्हि मन्दि तहा वचम् ।

स्वेत्तेण अणताणता लोगा ॥ ७६ ॥

एदस्स सुचस्स वक्खत्ते मण्णमत्ते जहा मूलोपसुचसुचस्स भणिं तहा मन्दिम् ।
परि एत्थ सुवरासी एवमुप्पापद्वयो । त जहा— वेहदिय वेहदिय चतुरिदिय-पेविदिय

वीर्यदिय, वीर्यदिय चतुरिदिय असम्पिपवेन्द्रिय नारकी तिरिक्ख भवजवासि, वाप्यवैतर
व्योतिषी स्त्रीवैध नपुंसकवेद् योहा हायी गंधर्व भीर नाग व्यादि पर्यायोंका नाश
कर दिया है वे पुनः उन पर्यायोंमें प्रवेश नहीं करते हैं इसलिये वे नौ राशियाँ नियमसे
प्यसहित हैं । इसप्रकार इन नौ राशियोंके व्यवसहित होने पर भी ये नौ राशियाँ कभी भी
विच्छिन्न नहीं होती हैं क्योंकि, अतीतकालसे वे अपने सरागरूपसे स्थित हैं । यदि
संपूर्ण जीवराशिसे अतीतकाल मरुतगुणा होता तो अतीतकालसे संपूर्ण जीवराशि अपहृत
होती । परंतु ऐसा तो है नहीं क्योंकि, इसप्रकारकी उपकाम्य नहीं होती है ।

श्रुक्क—उस अर्थात् कालके श्राप संपूर्ण जीवराशिसे विच्छेद क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जमम्परीताशकी प्रतिपक्षभूत मम्पराशिक विच्छेद मात्र
उने पर जमम्पत्यकी सत्ताके नाशका प्रसंग आ जाता है ।

शेष व्याख्यान ज्येष्ठप्रकरणके काव्यसूत्रमें जिसप्रकार कर आये हैं उसप्रकार उसका
करण करना चाहिये ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रियादि नौ जीवराशियाँ अनन्तानन्त लोकप्रमाण
हैं ॥ ७६ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान करने पर जिसप्रकार सूक्ष्म प्रकृत्यके समय क्षेत्रसूत्रका
वर्णन आये हैं उसप्रकार कथन करना चाहिये । परंतु यहां पर सुवराशि इसप्रकार व्याख
करना चाहिये । यह इसप्रकार है—

वीर्यदिय, वीर्यदिय, चतुरिदिय पवेन्द्रिय भीर अनिन्द्रिय जीवोंकी राशिको संपूर्ण जीव

अणताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण

॥ ७५ ॥

अदीक्षता ओसपिणि-उस्सपिणिपमात्थम कीरमाणो अणतोसपिणि-उस्सपिणि पमाणं होदि । तेष तारिसेण वि अदीक्षकालेण एवे णव वि राक्षीओ ण अवहिरिन्तंति । एण्णिण्हितो एगजीवमद् कालुण जा उक्कस्सथ पदरस्स अणंसेअदिमागमता बीषा तसकप्पसुप्पजति । तसकप्पया वि एगजीवमद् कालुण जा उक्कस्सेथ पदरस्स अणंसे अज्जदिमागमेत्ता एण्दिपसुप्पजति । वादेरुंदिया निसप पडि अणता सुहुमण्दिपसुप्पजति । सुहुमण्दिया वि तथिया जेव वादेरुंदियसुप्पजति । एवं जेव सुण्णेसि पज्जत्ताणमपज्जत्ताणं च वचन् । तदो सरिसाय-अयत्तादो एवेसि णवण् गसीण बोण्छदो तिसु वि कससु वरिष पि अणुचसिदीदो एदं सुचं वादेरुद्वमिदि । एत्थ परिहरो बुधे । तं अहा-एदसि वचन् गसीणं अदि आय-अयत्ता सरिसा हवति तो एदं सुचं वादेरुद्वं मवदि । किं तु आयादा वओ अम्महिजा । बुदो ? ततो मिप्पदिअय तसेसुप्पजिय सम्मचं वेत्तु किया है । होय कथन तिस्रप्रकार मूत्रों में कइ जाने हैं इसप्रकार जानना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रिय बीष आदि नौ राक्षियों अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ ७५ ॥

अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर अल्प अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीप्रमाण अतीत काल होता है । इसप्रकारके नौ उस अतीत कालके द्वारा ये नौ राक्षियां अपहृत नहीं होती हैं ।

धुंका — एकेन्द्रियोंमेंसे एक जीवको ध्वनि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असंख्यातमें प्रागप्रमाय जीव तसत्रायिण्यमें उत्पन्न होते हैं और तसत्रायिक मी एक जीवको ध्वनि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असंख्यातमें प्रागप्रमाण जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । विषयकी अपेक्षा अल्प वाद एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव मी बतने ही वाद एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । इसप्रकार सभी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका मी कथन करना चाहिये । इसप्रकार समान आय और व्यय होनेसे इन नौ राक्षियोंका विच्छेद तीनों मी कालोंमें नहीं होता है, इसलिये यह कथन अनुचित होवेसे यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं है ।

समाधान — व्यये पूर्वोक्त कथनका परिहार किया जाता है । यह इसप्रकार है — इन पूर्वोक्त नौ राक्षियोंका आय और व्यय यदि समान हो तो यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं होवे किन्तु इन राक्षियोंका व्ययसे व्यय अधिक है, क्योंकि, पूर्वोक्त नौ राक्षियोंमेंसे विच्छेद कर और बलोंमें उत्पन्न होकर तथा सम्पन्नबद्धे ग्रहण करके त्रिण संसारी जीवोंने एकेन्द्रिय

विशासिदयद्विदिय-वीददिय-वीददिय-चउरिदिय असन्निपत्तिदिय-वेरदिय-तिरिबस मवमवासिय
 वागवैठर-जोषसिय-इत्थि-अधुसय-इय गय गयचव नागादि-संसारिजीवाण पुणो तेसु पवेस-
 मामादो । उदो एद गव वि रासीओ वयसहिया निच्छएण इवति । एव हि वय संते
 वि एदे पव वि रासीओ ग वोच्छेज्जति सरागसरुवेण छिदज्जदीदकालचादो । सम्भ
 जीवरासीदो अदीदकाल जणतगुणे सत अदीदकालेण सम्भजीवा अवहिरिजति । य च एवं,
 तथा अणुमठमादा । तं तेण कलण सम्भजीवाण वाच्छदो किण्ण इदि चि मणिद प,
 अमम्भपविजकसुवोच्छेदे अमम्भचस्स विधिमासप्यसगादो । सेस वक्खाम्मं जहा आपकास-
 सुचम्हि मणिद तथा वचम्मं ।

स्वेतेण अणंताणता लोगा ॥ ७६ ॥

एदस्स सुचस्स वक्खाम्म मणमणे जहा मूळोपग्रहसुचस्स मणिद तथा मणिदम्भ ।
 गवरि एत्थ पुमणसी एवमुप्पाएदम्भो । तं जहा— वददिय-वेददिय-चउरिदिय-यंविदिय

मीन्द्रिय मीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय असंज्ञीपधन्द्रिय मारकी तिर्पण, मवमवासी, वाणप्यभार,
 ज्योतिषी कविप नपुसकवेद मोहा हायी गच्छं वीर माय व्यादि पर्यायोंका नाश
 कर दिया है वे पुनः उन पर्यायोंमें प्रवेश नहीं करते हैं इसलिये वे भी राशियां नियमसे
 व्यवसहित हैं । इसप्रकार हम भी राशियोंके व्यवसहित होने पर भी ये भी राशियां कभी भी
 विच्छिद्य नहीं होती हैं, क्योंकि अतीतकालसे वे अपने सरागस्वरूपसे स्थित हैं । यदि
 संपूर्ण जीवराशिके अतीतकाल अनन्तगुण होता तो अतीतकालसे संपूर्ण जीवराशि अपहृत
 होती; परंतु ऐसा तो है नहीं, क्योंकि, इसप्रकारकी उत्पत्ति नहीं होती है ।

श्लोक—उस अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके विच्छेद क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि अमप्यराशिकी प्रतिपक्षमृत मप्यराशिके विच्छेद मान
 देने पर अमप्यत्पत्ती सत्ताके नाशका प्रसंग आ जाता है ।

शेष व्याप्यान व्योमप्रकपणाके कालसूत्रमें जिसप्रकार कर भाये हैं उसप्रकार उसका
 कथन करना चाहिये ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रियादि नौ जीवराशियां अनन्तानन्त लोकप्रमाण
 हैं ॥ ७६ ॥

इस सूत्रका व्याप्यान करने पर जिसप्रकार मूळोप प्रकपणाके समय क्षेत्रसूत्रका
 अर्थ कह भाये हैं उसप्रकार कथन करना चाहिये । परंतु यहाँ पर सुवराशि इसप्रकार उत्पन्न
 करना चाहिये । यह इसप्रकार है—

मीन्द्रिय मीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय और अत्रिन्द्रिय जीवोंकी राशिके संपूर्ण जीव

अर्बिदियात्प रासिं सञ्जमीवरासिस्तुवरि पक्विष्ठपि तस्य चैव बगं एदियमाजिद् तत्वेव पक्विष्ठे एदियधुवरासी होदि । स संखेन्जस्वेदि भागे हिदे लद्द तम्हि चैव पक्विष्ठे एदियपन्जचधुवरासी होदि । एदियधुवरासिं संखेन्जस्वेदि गुम्हिदे एदियअपन्जच धुवरासी होदि । पुनो एदियधुवरासिमसंखेन्जलोपण गुम्हिदे बादरेदियधुवरासी होदि । तमसंखेन्जलोपण गुम्हिदे बादरेदियपन्जचाण धुवरासी होदि । तमसंखेन्जलोपण भाये हिदे लद्दं तम्हि चैव पक्विष्ठे बादरेदियअपन्जचाण धुवरासी होदि । सामण्णेदिय धुवरासिमसंखेन्जलोपण भागे हिदे लद्दं तम्हि चैव पक्विष्ठे सुहुमेदियधुवरासी होदि । तम्हि संखेन्जस्वेदि भागे हिदं लद्दं तम्हि चैव पक्विष्ठे सुहुमेदियपन्जचधुवरासी होदि । सामण्यसुहुमेदियधुवरासिं संखेन्जस्वेदि गुम्हिदे सुहुमेदियअपन्जचधुवरासी होदि । सग-सगधुवरासीदि सञ्जमीवरासिठवतिमवमो खंदिदल्लमो ओपमिच्छाद्वीर्यं य वचन्ना । ववरि पमाणं भण्यमाये एदियायं ओवमगो । एदियपन्जचा सञ्जमीवरासिस्त संखेन्जा मागा । तस्मिं चैव अपन्जचाणं पमाणं सञ्जमीवरासिस्त संखेन्जदिमागो । बादरेदियात्प

राशिमें ऊपर प्रसिद्ध करके नीचे उन्हीं शीर्षिकादि जीवोंके प्रमाणके वर्गीको एकेन्द्रिय जीवराशिसे भाजित करके जो छद्म भावे उसे उन्हीं पूर्वोक्त राशिमें प्रसिद्ध करने पर एकेन्द्रिय जीवराशिसंबन्धी भुवराशि होती है । इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो छद्म भावे उसे उन्हीं पूर्वोक्त भुवराशिमें मिखा देने पर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी भुवराशि होती है । एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी भुवराशिसे संख्यातसे गुणित करने पर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी भुवराशि होती है । पुनः एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी भुवराशिसे असंख्यात छोड़के गुणा करने पर बाहर एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी भुवराशि होती है । इसे असंख्यात छोड़के गुणित करने पर बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी भुवराशि होती है । इसमें असंख्यात छोड़के भाग देने पर जो छद्म भावे उसे उन्हींमें मिखा देने पर बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी भुवराशि होती है । सामान्य एकेन्द्रियसंबन्धी भुवराशिमें असंख्यात छोड़के भाग देने पर जो छद्म भावे उससे उन्हींमें मिखा देने पर सूत्रम एकेन्द्रिय जीवोंकी भुवराशि होती है । इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो छद्म भावे उसे उन्हीं सूत्रम एकेन्द्रिय भुवराशिमें मिखा देने पर सूत्रम एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी भुवराशि होती है । सामान्य सूत्रम एकेन्द्रियसंबन्धी भुवराशिसे संख्यातसे गुणित करने पर सूत्रम एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी भुवराशि होती है । इन अपनी अपनी भुवराशिपरोंके आप संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके ऊपर खंडित आधिक्य कथन जोय मित्यादीश्योंके खंडित आधिक्यके कथनके समान करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि प्रमाणका कथन करते समय एकेन्द्रियोंका प्रमाण सामान्य प्रकरणके समान कहना चाहिये । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संपूर्ण जीवराशिके संख्यात बहुमागप्रमाण है । उन्हीं एकेन्द्रिय अपराशियोंका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके संख्यातसे भाग है । बाहर एकेन्द्रिय तथा बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त

तेसि पञ्चचापपञ्चचाण पमाण सञ्चजीवरासिस्स असंखेज्जदिमाणो । सुहुमेइदिया सञ्च-
जीवरासिस्स असंखेज्जा मागा । सुहुमेइदियपञ्चचा सञ्चजीवरासिस्स संखेज्जा मागा ।
सुहुमेइदियापञ्चचा सञ्चजीवरासिस्स संखेज्जदिमाणो । कारणमइदियाण ताव बुधदे ।
सेसिदियाणिदिहि सञ्चजीवरासिम्हि मागे हिदे लद्ध विरठ्ठण एहत्तस्स रूपस्स
सञ्चजीवरासिं समख्ठ करिय दिण्णे तत्थेयसंख्ठ सेसिदियाणिदिया च होति । सेसबहुसंख्ठ
एइदिया इवन्ति । सेसिदियाणिदिय एइदियापञ्चचेहि य सञ्चजीवरासिम्हि माग हिदे लद्ध
सखन्जरूपाणि विरलिय सञ्चजीवरासिं समख्ठ करिय दिण्णे तत्थ बहुसंख्ठ एइदियपञ्चचा
होति । एइदियपञ्चचेहि य सञ्चजीवरासिम्हि मागे हिदे संखेज्जरूपाणि लम्भति ।
तापि विरलिय सञ्चजीवरासिं समख्ठ करिय दिण्णे तत्थ एगसंख्ठ एइदियपञ्चचा
होति । सेसिदिय अणिदिय धट्ठेइदिहि य सञ्चजीवरासिम्हि मागे हिदे तत्थ लद्धजस
खेज्जलोगरासिं विरलिय सञ्चजीवरासिं समख्ठ करिय दिण्णे तत्थ बहुसंख्ठ सुहुमेइदिया
होति । वि ति यद्दु पंचाणिदिय गट्ठेइदियसहितसुहुमेइदियपञ्चचाएहि सञ्चजीवरासिम्हि

और अपर्याप्तोक्त प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके असंख्यातर्षे भाग है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव संपूर्ण
जीवराशिके असंख्यात बहुभागप्रमाण है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके
संख्यात बहुभागप्रमाण है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके संख्यातर्षे भाग है ।
यस्य एकेन्द्रियोके प्रमाणका कारण कहते हैं— शेषेन्द्रिय अपर्याप्त द्वीन्द्रियादि जीव और अनिन्द्रिय
जीव इनके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके माजित करने पर जो छप्प भागे उसको विरलित
करके और उस विरलित राशिके मध्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके दे देने
पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले और अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण
होता है । शेष बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय जीव है । द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले अनिन्द्रिय
और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके माजित करने पर जो संख्यात
छप्प भागे उसका विरलन करके और विरलित राशिके मध्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव होते
हैं । एकेन्द्रिय अपर्याप्तोक्त प्रमाणसे भी सर्व जीवराशिके माजित करने पर संख्यात छप्प
भागे हैं । उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके मध्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडप्रमाण एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं ।
द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले अनिन्द्रिय और बाहर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीव
राशिके माजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि छप्प भागे उसे विरलित
करके और उस विरलित राशिके मध्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके
देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होते हैं । द्वीन्द्रिय द्वीन्द्रिय,
बहुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, अनिन्द्रिय और बाहर एकेन्द्रिय जीवोंसे युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय
अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके माजित करने पर संख्यात छप्प भागे हैं । इसका

मागे हिंद संश्लेषरूपाणि आगच्छति । तानि विरलिय सम्प्रजीवराशिं समसंखं करिय दिग्गे तत्त्व बहुसंखं सुदुमेइदियपन्नञ्चा होति । सुदुमेइदियपन्नञ्चाहि सम्प्रजीवराशिं मागे हिंदे तत्त्व छद्मसंश्लेषरूपाणि विरलिय सम्प्रजीवराशिं समसंखं करिय दिग्गे तत्त्व गलंख सुदुमेइदियपन्नञ्चा होति । बादरंइदियहि सम्प्रजीवराशिं मागे हिंदे तत्त्व छद्मसंश्लेषरूपाणि विरलिय सम्प्रजीवराशिं समसंखं करिय दिग्गे तत्वेगम्भपरिद बादरंइदिया होति । बादरंइदियपन्नञ्चाहि सम्प्रजीवराशिं मागे हिंदे तत्त्व छद्मसंश्लेषरूपाणि विरलिय सम्प्रजीवराशिं समसंखं करिय दिग्गे तत्वेगम्भपरिद बादरंइदियपन्नञ्चा होति । एव बादरंइदियपन्नञ्चापि वचनं । एसा चेव विरुपी इवदि । कुरो ? एत्थ कारणादो गिरुचीए मेदापुबलमादा ।

वेडदिय-तीइदिय-वउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्व पमाणेण केवडिया, असस्सेज्जा ॥ ७७ ॥

विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सब जीवराशिओ समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्राप्त होते हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिओ माजित करने पर वहां जो संख्यात खंड छद्म मात्रें ठगवा विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सब जीवराशिओ समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंड प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिओ माजित करने पर वहां जो असंख्यात खंड छद्म मात्रें ठग्वे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिओ समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय जीव होते हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिओ माजित करने पर वहां जो असंख्यात खंडप्रमाण राशि छद्म मात्रें उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिओ समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । इसीप्रकार बादर एकेन्द्रिय पर्यंतोंका भी कथन करना चाहिये । और यही निदलित है क्योंकि, यहां पर कारणसे निदलितमें भेद नहीं पाया जाता है ।

हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा किन्तुने ई ? असंख्यात इ ॥ ७७ ॥

ब्रह्म ब्रह्मविद्यादिषु तत्सर्वेति एवमप्यपिदोषो कश्च चद्वे ? न एतद्
 दासो, ब्रह्म पि ज्ञादीष्ट एवचविगेहामावादे । एष्य अपञ्चतययमेण
 अपञ्चतययामकम्भोदयसहिद्विजा पञ्चत्वा । अपञ्चत्वा पञ्चतययामकम्भोदयसहिद्विजस्यति
 अपञ्चतययाम पि अपञ्चतययमेण गहणप्यसगादा । एव पञ्चत्वा इति युक्त पञ्चतययाम
 कम्भोदयसहिद्विजा येचत्वा । अपञ्चत्वा पञ्चतययामकम्भोदयसहिद्विजस्यतिअपञ्चतययाम
 गहणायुक्तयवादि । वि-ति-पञ्चतययाम इति युक्त ब्रह्मविद्या-ब्रह्मविद्या-पञ्चतययामज्जादिपदानामकम्भोदय
 सहिद्विजाय गहण । वेष्मि इन्द्रियाणि ज्ञेयं त ब्रह्मविद्या इति चप्यमाण का दासो ? न न,
 अपञ्चतययामे वहुमाणाजीवाणमिन्द्रियानामावण तसिमगहणप्यसगादो । सञ्जावसमो इतिप्यं न
 ब्रह्मविद्यामिन्द्रियमिन्द्रियं च न, सञ्जावसमो तसिमगहणप्यसगादो । अणिन्द्रियचप्यसगादा ।
 हादु ? न न, सुचस्य पविन्द्रियचप्यसगादा । कम्भि तं सुचमिदि न एत्यव । त

शुद्धा—ब्रह्मविद्यादिषु जीव बहून् ई अतएव तनके सिद्धे तत्सर्वे' इत्यमकार एक
 वचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—यह कोर दोष नहीं है क्योंकि, बहूतके भी जातिसे एकरूपके प्रति कोर
 विरोध नहीं आता है ।

यहां शुद्धमें अपर्याप्त पहले अपर्याप्त नामकर्मके उद्देशसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना
 चाहिये । अन्वया पर्याप्त नामकर्मके उद्देशसे युक्त निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवोंका भी अपर्याप्त इस
 वचनसे ग्रहण प्राप्त हो आया । इसीप्रकार पर्याप्त ऐसा कहने पर पर्याप्त नामकर्मके
 उद्देशसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्वया पर्याप्त नामकर्मके उद्देशसे युक्त
 निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होगा । ब्रह्मविद्या ब्रह्मविद्या और अनुब्रह्मविद्या ऐसा कहने
 पर ब्रह्मविद्या जाति ब्रह्मविद्या जाति और अनुब्रह्मविद्या जाति नामकर्मके उद्देशसे युक्त जीवोंका
 ग्रहण करना चाहिये ।

शुद्धा—अब जीवोंके दो ब्रह्मविद्या पार जाती हैं वे ब्रह्मविद्या जीव हैं ऐसा ग्रहण
 करनेमें क्या दोष आता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि उपयुक्त कार्यके ग्रहण करने पर अपर्याप्त अन्वयमें
 विद्यमान जीवोंके ब्रह्मविद्या नहीं पाई जानेसे उनके नहीं ग्रहण होनेका प्रसंग प्राप्त हो आया ।

शुद्धा—सद्योपशमको ब्रह्मविद्या कहते हैं द्रष्टेन्द्रियको ब्रह्मविद्या नहीं कहते हैं । इसलिये
 अपर्याप्त अन्वयमें द्रष्टेन्द्रियोंके नहीं रहने पर भी ब्रह्मविद्यादि परोंके द्वारा उन जीवोंका ग्रहण
 हो आया ?

समाधान—नहीं क्योंकि यदि ब्रह्मविद्याका अर्थ सद्योपशम किया जाए तो त्रिनका
 सद्योपशम नष्ट हो गया है ऐसे सद्योपशमकी ओर अनिन्द्रियपदका प्रसंग न आता है ।

शुद्धा—न आने दो ?

समाधान—नहीं क्योंकि सब सद्योपशमकी ओर अनिन्द्रियरूपसे प्रतिपादन करता है ।

जहा— पंचविद्या सासप्तसम्मन्त्राद्विष्णुर्दृष्टिं ज्ञानं अत्रोभयैकवर्तिं चिं दृश्यमानेषु कैवल्या, भोषमिति ।

सुहृन्महत्पुरुषाद् सुचमाह—

असंख्येज्जाहि ओसपिणि-उस्तपिणीहि अवहिरति कालेण ॥७८॥

एदस्म सुचस्स भृत्यो सुगमो चिं न बुधे । एदाजो रासीजो सन्नकस्समायापु
स्मन्नयसहिदाजो चिं न बोधेदसुबहुकन्ते तदो असंख्येज्जाहि ओसपिणि-उस्तपिणीहि
अवहिरति चिं कथमेदं बहदे ? सत्यं, न बोधिञ्जति चेव किं तु एदासिमाएय विणा अवि
बभो चेव भवदि तो भिच्छएय बोधिञ्जति । अप्पहा असंख्येज्जापुववचादो । एदस्स-
त्पस्स अवबोहणं अवहिरति चिं बुधं ।

शंका— यह सच कहाँ पर है ?

समाधान—यहाँ आये है । यथा— पंचेन्द्रिय जीव सासात्वनसम्यग्वादि गुणस्यावसे
केकर व्योमिकेवली गुणस्यावतक इव्यममाजकी अवेसा कितने हैं ? सामान्य प्रकृपनाके
समान पांचवें गुणस्यावतक परबोधमके असंख्यातवें माता और छठवेंसे संख्यात हैं ।

भव एदम् अव्यक्त प्रकृप्य करनेके छिये सृज करते हैं—

काठकी अवेसा इन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उनहीके पर्याप्त
और अपर्याप्त जीव असंख्यात अवसर्पिणियों और उस्तर्पिणियोंके द्वारा अवहृत
होते हैं ॥ ७८ ॥

इस सृजका अर्थ सुगम है इसलिये यहाँ कहते हैं ।

शंका—ये इन्द्रियादि सर्व जीवराशिप्रां सर्व काळ आपके अनुरूप व्यपसे सुख
हैं इसलिये यदि विच्छेद्वेषे प्राप्त नहीं होती हैं तो असंख्यात अवसर्पिणियों और
उस्तर्पिणियोंके द्वारा अवहृत होती हैं यह कथन कैसे धरित हो सकता है ?

समाधान—यह सत्य है कि उपर्युक्त इन्द्रियादिक जीवराशिप्रां विच्छिन्न नहीं
होती हैं, किन्तु इन राशिप्रांका आपके बिना यदि व्यप ही होता तो निश्चयसे विच्छिन्न हो
जाती । यदि ऐसा न माना जाय तो इन्द्रियादि राशिप्रां असंख्यात हैं यह कथन नहीं बन
सकता है । इसी अव्यक्त काल करामेके छिये अवहिरति देसा कहा ।

विशेषार्थ—यहाँ सृजमें असंख्येज्जादि पाठ है किन्तु अव्यक्तार्थकी दृष्टिसे
यहाँ असंख्येज्जासंख्येज्जादि देसा पाठ प्रतीत होता है । पुरुरार्थक ब्रह्मके इसी प्रकरवर्मे हर्षी
जीवोंकी सामान्य संख्या बतहाते हुए यह सृज पावा जाता है— असंख्येज्जासंख्येज्जादि
ओसपिणि-उस्तपिणीहि अवहिरति कावेण । किन्तु यहाँ टीकमें भी असंख्येज्जादि पर
होनेसे उसी पाठकी रक्षा की गई ।

स्वेतेण वेदितुं-तीव्रदिय-चतुरिंदिय तस्मेव पञ्जत्त-अपञ्जत्तेहि पदर-
मवहिरदि अगुलस्म असस्वेज्जदि भागवग्गपडिभाएण अगुलस्म सस्वेज्जदि
भागवग्गपडिभाएण अगुलस्म असस्वेज्जदि भागवग्गपडिभाएण ॥७९॥

एदस्म सुचस्स अघो सुचत्त । य जहा- 'जहा उदमा तहा णिरेसो' चि पायादो
पुच्छुरिद्वि-वि-चतुरिंदियाणं पमाणं पुच्छुरिद्वमेव मवदि । मज्झिमुख मज्झमिं समुदिरिद्वयमचार्यं
मवदि । अतिष्ठं पि अंतुरिद्व तमिमपञ्जत्तणं इवदि । एदेहि सामण्यविगलित्तिपिहि तेसि
चेव पञ्जत्तहि विगलित्तिदियअपञ्जत्तणहि जगपदरमवहिरदि । अगुलस्म अविअगुलस्म
अमंतुज्जदिभागा सुविअगुलस्ममन्तिपाए अमंतुज्जदिभाएण उंदिदियभागो । तस्स वग्गो
तारिमेण अवग्ग गुप्पिदरासी पडिभागा अवहग्गफलो । एवं चव अपञ्जत्तमुच पि
विचयेयम् । एवं चेव पञ्जत्तमुचं पि वक्तव्येयम् । एवहि अविअगुलस्म संयुज्जदिभाए

क्षेत्रकी अपेक्षा द्विन्त्रिय, त्रीन्त्रिय और चतुरिन्त्रिय जीवोंके द्वारा सूक्ष्मगुलके
असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे अगप्रतर अपहृत होता है । तथा उन्हींके पर्याप्त
और अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः सूक्ष्मगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे
और सूक्ष्मगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे अगप्रतर अपहृत होता
है ॥ ७९ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है— उद्देशके अनुसार निर्देश किया
जाता है इस व्यापके अनुसार सर्व प्रथम कहे गये द्विन्त्रिय त्रीन्त्रिय और चतुरिन्त्रिय
जीवोंका प्रमाण सर्व प्रथम कहा गया है । प्रथम कहे गये पर्याप्तोंका प्रमाण प्रथम कहे
गया है । और अन्तमें कहा गया प्रमाण भी अन्तमें कहे गये उन्हींके अपर्याप्तोंका है । इनके
द्वारा अर्थात् सामान्य विकलत्रयोंके द्वारा उन्हींके पर्याप्तोंके द्वारा और विकलेन्त्रिय
अपर्याप्तोंके द्वारा अगप्रतर अपहृत होता है । यहाँ पर अगुलसे तात्पर्य सूक्ष्मगुलका और
उसके असंख्यातवें भागसे तात्पर्य सूक्ष्मगुलके व्यापकीक असंख्यातवें भागसे कटित करके
जो एक भाग उच्य भागसे उससे है । उस सूक्ष्मगुलके असंख्यातवें भागका वग इसका यह
तात्पर्य हृद्य कि उस सूक्ष्मगुलके असंख्यातवें भागको तत्प्रमाण दूसरी राशिके गुणित कर
दो । ऐसा करने पर जो राशि उत्पन्न होगी वह यहाँ पर प्रतिभाग अर्थात् अवहग्गफल है ।
इसीप्रकार अपर्याप्त-सूत्रका भी वरीकृत करना चाहिये और इसप्रकार पर्याप्त-सूत्रका भी
व्याख्यान करना चाहिये । इनका विशेष है कि सूक्ष्मगुलके संख्यातवें भागके वर्गित करने पर

वमिद पञ्चापमवहारकालो ह्यदि । तण पडिमाएण । पदरगुलस्स असंखेज्जदिमार्ग
ससगभूदं ठविय विगल्लिदियअपञ्जचेहि अगपदर अवहिरिन्जमाण ससगगहि सह अग-
पदरं समप्पदि । पदरगुलस्स संखेज्जदिमार्ग मत्तागभूदं ठविय विगल्लिदियपञ्जचेहि अग-
पदरे अवहिरिन्जमाण ससगगहि सह अगपदरं समप्पदि पि अं पुणं ह्यदि ।

पंचिदिय-पंचिदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
असंखेजा' ॥ ८० ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुगमो पि न बुद्धे ।

असंखेज्जाम्खेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण
॥ ८१ ॥

एदस्स पि सुचस्स अत्थो सुगमो पि न बुद्धे ।

स्वेत्तेण पंचिदिय-पंचिदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि
अंगुलस्स अमस्खेज्जदिभागवम्मापडिमाणेण अंगुलस्स सस्खेज्जदिभाग
वगगपडिमाणेण ॥ ८२ ॥

पर्याप्तोक्त व्यवहारकाळ होता है । इस प्रतिभागसे । प्रत्यंगुलके असंख्यातवर्ग मापको शब्दका
रूपसे स्थापित करके विच्छेदित्व पर्याप्तोक्तोंके द्वारा अग्रप्रत्ययके पुनः पुनः अपहृत करने पर
अर्थात् धराते पर शब्दकार्योंके साथ अग्रप्रत्यय समाप्त होता है । तथा प्रत्यंगुलके संख्यातवर्ग
भागको शब्दकारूपसे स्थापित करके विच्छेदित्व पर्याप्तोक्तोंके द्वारा अग्रप्रत्ययके पुनः पुनः अप-
हृत करने पर शब्दकार्योंके साथ अग्रप्रत्यय समाप्त होता है यह कथन कथनका तात्पर्य है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त बीजोंमें मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमायकी अपेक्षा
कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८० ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है इसलिये नहीं कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त बीज असंख्यातसंख्यात
अवसाधिविधियों और उत्सविधियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है इसलिये नहीं कहते हैं ।

स्वेत्तकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त बीजोंमें मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा
संख्यातके असंख्यातवर्ग भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और संख्यातके संख्यातवर्ग भागके
वर्गरूप प्रतिभागसे अग्रप्रत्यय अपहृत होता है ॥ ८२ ॥

१ × × वज्रसूत्रिका अथवा ३ । अमरकालीन्या ॥ पृ. ३, ५.

२ पंचेन्द्रिये मिथ्यादृष्टिर्नस्तेषां क्षेत्रज्ञा अन्तर्गतवैयर्थ्यविता । न हि १ । अतिष्ठ ह्ये-
व्यतिशयानिवाप्य इति नाम ।

‘जहा जरेमा तहा गिरेसो’ चि मायादा अगुलस्स असंखेज्जदिमागस्स वग्गो पंचिदियानं अगपदरस्स पडिमाणो होदि । सुचिअंगुलस्स सत्तज्जदिमागस्स वग्गो अग पदरस्स पडिमाणो होदि पंचिदियपज्जसाण । पडिमाणो मागहारो चि एयहो । त्रिगलि-दियसुत्तेण सह पंचिदियसुत्तं किमिदि ण वुत्त ? न एस दोसो, उवरिसगुणपडिबणसुत्तस्स पंचिदियसाणुबहुत्तपट्टादो पुंथ पंचिदियसुत्तं वुत्तदे । तत्थ द्वियपंचिदियमिदसो किमिदि साणुबहुत्तविज्जदे ? ण, एगजोगणिदिक्कणमेगदेसस्स अनुवहुणामावादो ।

संपहि उवरि पुंथमाणाअपावहुगअभियोगहारसुत्तबलेण पुंथउरिओत्तएसबलेण च एदेण सुत्तण सुचिद्विगल-मयलिदियानमवहारकालविसमे मयिस्सामो । तं जहा—आवलिपाए असंखेज्जदिमाएण सुचिअंगुले मागे हिदे तत्थ ज लट्ठं त वगिगदे वेदियाणमवहारकालो हादि । तमिह आवलिपाए असंखज्जदिमाएण मागे हिदे ठह तमिह भेव पक्खिसे वेदिय अपत्तअवहारकालो होदि । तं आवलिपाए असंखज्जदिमाएण मागे हिदे लट्ठं तमिह भेव

उदेछके अनुसार निर्देश होता है । इस व्यापके अनुसार अंगुलके असंख्यातवें मागका वर्ग पंचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होनेके छिये अगप्रतरक प्रतिमाण है और सूच्यगुलके संख्यातवें मागका अग पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होनेके छिये अगप्रतरक प्रतिमाण है । प्रतिमाण और मागहार ये दोनों एकवर्धवाची शब्द हैं ।

टीका—विकल्पोत्पत्तियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि मागे कहे जानेवाले गुणप्रतिपक्ष जीवोंके सूत्रमें पंचेन्द्रियत्वकी अनुवृत्ति करनेके छिये पूरकरूपसे पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र कहा ।

टीका—विकल्पोत्पत्तियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके एकत्र कर देने पर कहा निश्चय पंचेन्द्रिय पक्षके निर्देशकी अनुवृत्ति क्यों नहीं होती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि एक योगरूपसे निर्दिष्ट अनेक पक्षोंमेंसे एक देशकी अनुवृत्ति नहीं होती है ।

अब आगे बड़े होनेवाले अक्षयबहुत्व अनुयोगधारके सूत्रके बलसे और पूर्वाचार्योके उपदेशके बलसे इस सूत्रके द्वारा सुचित विकल्पोत्पत्ति और सक्लेन्द्रिय जीवोंके अवहारकाय विशेषोंको कहते हैं । वे इसप्रकार हैं—व्यवहारीके असंख्यातवें मागसे सूच्यगुलके माजित करने पर जो अक्षय भावे उसको वर्णित करने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाय होता है । त्रीन्द्रियोंके अवहारकायको आबलीके असंख्यातवें मागसे माजित करने पर जो अक्षय भावे उसे उसी त्रीन्द्रियोंके अवहारकायमें मिला देने पर षोडश्रिय अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाय होता है । इस त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकायको आबलीके असंख्यातवें मागसे माजित

पक्वित्त तद्दियप्रवहारकाला इति । पुनः तस्मिन् च आतलियाए अर्सेउज्जदिमाएण माग हिंदे उद्धं तं तस्मिन् च पक्वित्तुचे तद्दियप्रवज्जचाणमवहारकाला इति । एवं चउत्तिदिय चउत्तिदियप्रवज्जच-पंचिदिय-पंचिदियप्रवज्जचाण जहाकमण आतलियाए अर्सेउज्जदि माएण उद्धिदपर्युद्धिण अवहारकाला अम्मदिया कापम्भा । तदा पंचिदियप्रवज्जच अवहारकाल आतलियाए अर्सेउज्जदिमाएण गुणिद् पदरगुलस्स संउज्जदिमागा तद्दिय- प्रवज्जचाण अवहारकाला इति । तस्मिन् आतलियाए अर्सेउज्जदिमाएण माग हिंदे उद्धं तस्मिन् च पक्वित्तुचे तद्दियप्रवज्जचाणमवहारकाला इति । तस्मिन् आतलियाए अर्सेउज्जदि माएण माग हिंदे उद्धं तस्मिन् च पक्वित्तुचे पंचिदियप्रवज्जचाणमवहारकाला इति । तस्मिन् आत लियाए अर्सेउज्जदिमाएण माग हिंदे उद्धं तस्मिन् च पक्वित्तुचे चउत्तिदियप्रवज्जचप्रवहार काला इति । एतस्य सुखस्य रासिबिससण राभिमावहुविषय उद्धं रूपं करिय ममज्जर मूदआतलियाए अर्सेउज्जदिमागा उप्पाएदम्भा । यद्धि अवहारकालाणि पुन पुन समपदे माग हिंदे अप्पण्णा दम्भपमण्याणि मवेति । एतस्य संटिदादजा आपिऊय वत्तम्भा ।

—

करने पर जो छम्भ भावे उसे उसी जीमित्रिय अपर्णात् अवहारकाळमें मिछा देने पर जीमित्रिय जीबोका व्यवहारकाळ होता है । पुनः इस जीमित्रिय जीबोके व्यवहारकाळको व्यवहारीके असंख्यातवर्षे मागसे माझित करने पर जो छम्भ भावे उसे उसी जीमित्रिय-जीबोके व्यवहारकाळमें मिछा देने पर जीमित्रिय अपर्णात्कोका व्यवहारकाळ होता है । इसीप्रकार चतुरिन्मित्रिय चतुरि- मित्रिय अपर्णात् पंचेन्मित्रिय और पंचेन्मित्रिय अपर्णात् जीबोके व्यवहारकाळको क्रमसे भावलीके असंख्यातवर्षे मागसे संज्ञित करके उत्तरोत्तर एक एक मागसे अधिक करना चाहिये । अनन्तर पंचेन्मित्रिय अपर्णात् जीबोके व्यवहारकाळको भावलीके असंख्यातवर्षे मागसे गुणित करने पर प्रवर्णगुणके संख्यातवर्षे भागप्रमाण जीमित्रिय पर्णात् जीबोका व्यवहारकाळ होता है । इसे भावलीके असंख्यातवर्षे मागसे माझित करने पर जो छम्भ भावे उसे उसी जीमित्रिय पर्णात्कोके व्यवहारकाळमें मिछा देने पर जीमित्रिय पर्णात् जीबोका व्यवहारकाळ होता है । इस जीमित्रिय पर्णात्कोके व्यवहारकाळको भावलीके असंख्यातवर्षे मागसे माझित करने पर जो छम्भ भावे उसे उसी जीमित्रिय पर्णात् व्यवहारकाळमें मिछा देने पर पंचेन्मित्रिय पर्णात् जीबोका व्यवहार काळ होता है । इस पंचेन्मित्रिय पर्णात् जीबोके व्यवहारकाळको भावलीके असंख्यातवर्षे मागसे माझित करने पर जो छम्भ भावे उसे इसी पंचेन्मित्रिय पर्णात् व्यवहारकाळमें मिछा देने पर चतुरिन्मित्रिय पर्णात् जीबोका व्यवहारकाळ होता है । यहाँ सर्वत्र राशि विशेषसे रसिधको अपवर्तित करके जो छम्भ भावे वसर्सेसे एक क्रम करके भागहारक व्यवहारीका असंख्यातवर्षे माग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन व्यवहारकाळोंसे पृथक् पृथक् अग्रप्रकारके माझित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण भ्याय है । यहाँ पर संज्ञित व्यधिकका कथन समझ कर करना चाहिये ।

सासणमम्माडिट्टिण्डुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओष ॥८३॥

यदुद्दिष्टो किरियाविशसम् । सासणसम्माहिष्णुति आह करियासि । एत्थ पुत्र
सुत्तादो पण्डिय इदि अणुवद्दे । तेण सम्म गुणपडिबण्णा पण्डिया चेद । सजाणि
अजाणिक्केवलीण पण्डुत्तेसिंदियाण पण्डियवण्णो कर्ष घट्ठे ? न, पण्डियजादियाम-
कम्म इयमवक्खिय तसि पण्डियवण्णसादा । एत्ति पमापपरुव मा मूलापपरुवणाए तुत्ता ।
इदो ? पण्डियवदित्तजादीसु गुणपडिबण्णामात्तादो ।

पंचिन्द्रियअपज्जत्ता दब्बपमाणेण केवडिया, असस्सेज्जा ॥ ८४ ॥

एवम्सु सुखस्य सुखस्योऽस्त्योः ।

असस्वेज्जार्सस्वेज्जाहि ओमपिणि उस्सपिणीहि अवहिराति कालेण
॥ ८५ ॥

एदस्स बि अ-य। सुगमे।।

साक्षादनुसम्पगच्छति गुणस्थानम् लङ्कर अयोगिकपत्नी गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें पञ्चिन्द्रिय और पञ्चोद्भ्रिय पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पश्योपमके
असंस्पृहतवे माग हैं ॥ १३ ॥

यहाँ पर प्रकृति शब्द व्याख्येय है। जिससे साक्षात्सम्पत्ति प्रकृति का अर्थ साक्षात्सम्पत्ति के अर्थ से होता है। यहाँ पर पूर्व सूत्रों के अर्थों पर पक्षी अनुवृत्ति होती है इसलिये पूर्ण शुद्धप्राप्तिपक्ष ही पक्ष अर्थों का अर्थ है।

संका—सयोगिकेबन्दी बार भयोगिकेवर्धियोंके संपूर्ण इच्छियां नष्ट हो गई हैं मत्तपम जनके पनेन्द्रिय यह सदा कैसे धरित होती है ?

समाधान—जहाँ क्योंकि, ऐकस्मिन्प्राति नामकर्मच्य अपेक्षा सप्तोपिदेवली और अपोपिनेवलीयोंके ऐकस्मिन्प सहा बन जाती है।

इन गुणस्यानप्रतिपक्ष पक्षेन्द्रिय कीर्तके प्रमाणकी प्रकृपया मूखोप प्रकृपयाके समान है क्योंकि, पक्षेन्द्रियप्रतिपक्षो छेककर वृत्तरी जातिपोंमें गुणस्यानप्रतिपक्ष कीव नहीं पाये जाते हैं।

पक्षेत्रिय अपर्याप्त जीव इक्ष्म्यप्रमाणाक्षी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८४ ॥

इस सुत्रार्थ अर्थ सुगम है ।

काष्ठस्य अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात असप्तविंशत्यो
जीव उत्सर्वविंशत्योऽङ्गारा अपर्याप्त द्वौ ॥ ८५ ॥

इस सुखस्य मी भयं सुगम हि ।

स्वेत्तेण पंचिंदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अगुलस्स असंसे
उज्जदिभागवम्मापडिभाएण ॥ ८६ ॥

एहं वि सुचं सुगमं भव । एदाणि विधिं वि सुचानि पंचिंदियअपज्जत्तएहि
पदाणि विगर्हिदिमापज्जत्तसुचं न पंचिंदियमिच्छद्द्विमुचमिह चेन किण्वं सुचानि वि
कुचे न, पंचिंदियअपज्जत्तसु गुणपडिबन्धामावपज्जत्तएहिचादो पुच सुचारंमस्स । अपज्ज-
कस्से वि पंचिंदियसु गुणपडिबन्धा अरिष वेठ्ठिय ओरास्सियमिस्स-कम्मइयकामजोसु
सम्मात्त-पाप-इसजोबलंमादो । इदि चे, होदु जाम निम्बदि पडि अपज्जत्तएहि गुणपडि
बन्धावमन्तिच, अपज्जत्तजामकम्मदएण सह गुणाण अवहाणविरोहा ।

म गामाग बचइस्सामो । सम्मजीवराधिं सखेज्जखंडे कए तत्त बहुखंडा सुहुमेइदिय
पज्जत्ता होति । मेसमसखेज्जखंडेतामचखंडे कए तत्त बहुखंडा सुहुमेइदियअपज्जत्ता होति ।
सममसखेज्जखंडे कए बहुखंडा बद्धेइदियअपज्जत्ता होति । सममज्जखंडे कए बहुखंडा

खेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्वारा सृष्ट्यंगुलके असंख्यात
भागके बर्गरूप प्रतिभागसे अगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८६ ॥

बह स्रज भी सुगम ही है । ये पूर्वोक्त तीनों भी स्रज पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके
प्रमाणसे प्रतिबन्ध है ।

श्रृंखला—जिसप्रकार विकसेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंके प्रमाणका प्रतिपादक स्रज वस्तुतः न
होकर विकसेन्द्रिय और उनके पर्याप्तजीवोंके प्रमाणके प्रतिपादक स्रजके स्रज ही निबद्ध है
वस्तीप्रकार पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके प्रतिपादक स्रजोंमें ही पंचेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंके
प्रमाणके प्रतिपादक स्रज निबद्ध करके क्यों नहीं कहे ?

समाधान—येसा पूछने पर माचार्य कहते हैं कि नहीं क्योंकि, पंचेन्द्रिय
अपर्याप्तजीवोंके प्रमाणके प्रतिपादक स्रजोंका दृष्टकूपसे अग्रम पंचेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंमें
गुणस्वावप्रतिपक्ष जीवोंके जमापके प्रकल्प करनेके विषये किया है ।

श्रृंखला—अपर्याप्त ब्रह्ममें भी पंचेन्द्रियोंमें गुणस्वावप्रतिपक्ष जीव होते हैं क्योंकि,
वैद्विबिधमिध औदारिकमिध और बर्मब्रह्मययोपमं सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान तथा इहानकी
वपकथि पारं आती है ?

समाधान—यदि ऐसा है तो निर्दुष्टिकी अवस्था अपर्याप्तजीवोंमें गुणस्वावप्रतिपक्ष
जीवोंका सद्भाव रहा भावे परंतु अपर्याप्त ब्रह्मके कल्पके स्रज सम्यग्दर्शन जर्मि
श्रृंखला सद्भाव माननेमें विरोध आता है ।

अब मागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवदृष्टिके स्रजपात बंद करने पर हममेंसे
बहुभागप्रमाण स्रज पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खोजप्रमाण बंद
करके पर हममेंसे बहुभागप्रमाण स्रज पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात
बंद करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात

बादगर्दियपञ्चषा ह्येति । सेममर्जतखंडे कए बहुखंडा अणिदिया ह्येति । ससरामीदो पलिशिवमअसंखज्जदिमोगमवणअग ससरामिमावलिषाए असंखेअदिभाए ऊणगखंडे पि पुमो पुष हविय सेमबहुभाग यत्तण चचारि मग्गिपुंज काळस्य ठयेयथा । पुणो आव लियाए असंखज्जदिमागं विरलळण अवभिदएगखंडे समखंड करिप दिण्णे तत्थ बहुखंडे पद्मपुंज पक्खिसे वेइदिया ह्येति । पुमो आवलियाए अमंखज्जदिमागं विरलळण दिण्ण-सेमेगखंडे समखंड करिप दिण्ण तत्थ बहुभाग त्रिदियपुंजे पक्खिसे वेइदिया ह्येति । पुण्व विरलळणादो संपदि विरलळणा किं सरिसा, किमविया, किमूणा ति पुच्छिद पत्थि एत्थ उवएसा । पुण्णा त्रि सप्पाअग्गमावलिषाए अमंखज्जदिमागं विरलळण ससगखंड समखंड करिप दिण्ण तत्थ बहुखंडे त्रिदियपुंजे पक्खिसे चउरंदिद्या ह्येति । ममगखंड चउरपुंजे पक्खिसे पणिंदिपमिच्छद्वी ह्येति । वेइदियगसिममखज्जखंडे कए बहुखंडा वेइदिय अपञ्चषा ह्येति । ससेगखंडे सेमि पञ्चषा ह्येति । त्रैदिय-चउरंदिद्य-पणिंदिद्याणं पि एव चव वत्तम । पुण्वमवणिदपलिशेवमस्य असंखज्जदिमागसिमसंखेज्जखंडे कए

खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं। दोप एक मागके अन्तर्गत खंड करने पर उनमेंसे बहुमागप्रमाण अग्निन्द्रिय जीव हैं। दोप राशिमेंसे पशुपमके अर्धप्यातमें मागको घटा कर जो राशि अवशिष्ट रहे उसके आबर्हीके अर्धप्यातमें मागप्रमाण खंड करके बहु मागमेंसे एक मागको भी पुनः पृथक् स्थापित करके दोप बहुमागको लेकर बार समान पुनः करके स्थापित कर देना चाहिये। पुनः आबर्हीके अर्धप्यातमें भग्नो विरहित करके उस विरहित राशिमें प्रत्येक एकके ऊपर लिखा कर पृथक् रखे हुए एक खंडको समान खंड करके दोपकपसे दो दोनेके पदबान् उनमेंसे बहुमागोंको मध्य पुनःमें प्रक्षिप्त करने पर त्रिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः आबर्हीके अर्धप्यातमें मागको विरहित करके उस विरहित राशिमें प्रत्येक एकके ऊपर मध्य पुनःमें दोनेसे दोप रहे हुए एक मागको समान खंड करके दोपकपसे दोनेके पदबान् उनमेंसे बहुमागको दूसरे पुनःमें मिला देने पर त्रिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है।

पूर्व विरछनसे यह दूसरा विरछन कपा समान है। क्या अधिक है या क्या कम है ?
 ऐसा पूछने पर माचार्य उत्तर देते हैं कि इस विषयमें उपदेश नहीं पाया जाता है।
 फिर भी तद्योग्य भाष्यकीसे असंख्यातवै मागको विरक्षित करके भीर इस विरक्षित राशिसे
 श्लोक एकके ऊपर शेष एक काइको समान रखा करनेसे शेषरूपसे वे देनेके अनन्तर उनमेंसे
 बहुभाग हीसे पुत्रमें मिष्टा देने पर क्षत्रिणिय जीर्णका प्रमाण होता है। शेष एक यज्ञको
 भीये पुत्रमें मिष्टा देने पर पंचेन्द्रिय मिथ्यावादि जीर्णका प्रमाण होता है। द्वीन्द्रिय जीवराशिसे
 असंख्यात वेद करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण द्वीन्द्रिय मपवाप्त जीव है। त्रीन्द्रिय क्षत्रि
 णिय भीर पंचेन्द्रियोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये। पहले घटा कर पूषक रक्षकी

बहुभागा भर्षजदमम्माद्वृद्धिं होति । एव भयम् आर पञ्चागिकवृत्तिं चि । अह्ना एर-
दियार्धं भागामागो एवं वा वचन्ते । मन्त्रेदियरामी अह्ना छन्द्या आव बादेरदिय-
रासी अवचिद्विरो चि । तस्य छन्द्यद्वन्द्वेद्वयपसलागा विरलज्ज विग कलज्ज अण्णाज्ज-
ग्मात्तं कद् अश्वेज्जसोमचरासी उपपञ्जदि । एत रासिं विरलेज्ज एवेदस्म रुवस्म
सम्भमेरदियगमि ममसुर्द्धं करिय दिष्ण रुर्द्धं पडि बादेरदियाण पमार्धं पावदि । तस्य
बहुसुठ्ठा सुहुमेरदिया एयसुर्द्धं बादेरदिया । पुण्ण सुहुमेरदियरासी अह्ना छिदिद्वन्द्वो
आव सुहुमेरदियज्जपञ्चरासी अवचिद्विदा चि । तस्य अह्नाद्वन्द्वेद्वय विरलिय विगं करिय
अण्णोक्काग्मात्तकरणेणुप्यज्जसुखन्त्ररासिं विरलेज्ज एवेदस्म रुवस्म सुहुमेरदियगमि समसुर्द्धं
करिय दिष्णे रुर्द्धं पडि सुहुमेरदियमपञ्चरासी पावुणदि । तस्य बहुसुठ्ठा सुहुमेरदिय
पञ्चरा एयसुर्द्धं तसिमपञ्चरा होति । एवं बादेरदियाण चि वचन्ते । एत सदिद्वि । तं
अह्ना— एरदियरासी वेछप्पज्जसुदमेचो २५६ । सुहुमेरदियरासी चार्त्तसम्भदियवसयमेचो

हृर् पश्योपमके भर्षज्ज्यातर्धं भागरूप राशिके भर्षज्ज्यात बाह करणे पर उन्नमेसे बहुभागाग्रमात्र
भर्षजतसम्भरादि जीव है । इसीप्रकार भयोगिकेनक्षिपोंके प्रमाण मानेतक के जाना
बाहिये । भयथा एवेन्द्रियोंके भागामागको इसप्रकार भी कहना बाहिये— बाह एवेन्द्रिय
राशि प्राप्त होने तक एवेन्द्रिय राशिके भापी भापी करते जाना बाहिये । इसप्रकार
अर्धार्थ करनेसे जितनी अर्धच्छेद शास्त्रकार्य प्राप्त होने उन्का विरलन करके और उस राशिके
प्रत्येक एकके दोरूप करके परस्पर गुणा करने पर भर्षज्यात सोक्षप्रमाण राशि उत्पन्न
होती है । इस राशिके विरलित करके और इस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति
सर्व एवेन्द्रिय राशिको समान बाह करके देवकपसे दे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति बाह एवेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । वहां बहुभागाग्रमाण
सूक्ष्म एवेन्द्रिय जीव और एक भागाग्रमाण बाह एवेन्द्रिय जीव है । पुनः
सूक्ष्म एवेन्द्रिय अपर्णात्त राशि प्राप्त होने तक सूक्ष्म एवेन्द्रिय जीवराशिके अर्धार्थकपसे
छेदित करना बाहिये । देखा करनेसे वहां जितने अर्धच्छेद प्राप्त हों उन्का विरलन
करके और इस विरलित राशिके प्रत्येक एकके दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
भर्षज्यात राशि उत्पन्न होने उसका विरलन करके और इस राशिके प्रत्येक एकके प्रति
सूक्ष्म एवेन्द्रिय राशिको समान बाह करके देवकपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति सूक्ष्म एवेन्द्रिय अपर्णात्त राशि प्राप्त होती है । वहां पर बहुभागाग्रमाण सूक्ष्म
एवेन्द्रिय पर्णात्त राशि है और एक भागाग्रमाण सूक्ष्म एवेन्द्रिय अपर्णात्त राशि है । इसीप्रकार
बाह एवेन्द्रियोंका भी कथन करना बाहिये । वहां पर संक्षिप्त देते हैं । वह इसप्रकार है—

एवेन्द्रिय जीवराशि होती छप्पन २५९ है । सूक्ष्म एवेन्द्रिय राशि होती बासीस
२४ है । बाह एवेन्द्रियराशि सोडह १९ है । सूक्ष्म एवेन्द्रिय पर्णात्तराशि एकली नस्ती

२४० । बादेरईदियरासी सोलसमेचो १६ । सुहुमेईदियपञ्जचरासी असीदिसयमेचो १८० ।
 सधिमपञ्जचा सङ्की ६० हवति । बादेरईदियअपञ्जचा बारस १२ हवति । तेसि पञ्जचा
 चचारि ४ ।

सपहि बेईदियपञ्जचरासीदो बेईदिय-तेईदियरासीन बिसेसो किं सरिसो किमहिओ
 हीणो वा इदि शुषे अतंसेज्जगुणो इवदि । तं जहा । बुषदे- तेईदिय-चउरिंदियरासीणं
 बिसेमादो बेईदिय-तेईदियरासिविसेसो अतंसेज्जगुणो । तं कष जाणिज्जे ? आप्रिओव
 देसदो मागामागमि परुबिदवक्खाणादो य जाणिज्जे । तेईदिय-चउरिंदियरासिविसेसो
 पुण तेईदियपञ्जचरासीदो बहुगो । त कष जव्वदे ? तईदियअपञ्जचरासीदा चउरिंदियरासी
 बिसेसहीणो चि बुचअप्पावहुगसुचादो । तेईदियपञ्जचरासीदो पुण बेईदियपञ्जचरासी
 बिसेसहीणो । तं कषं जव्वदे ? एदं पि अप्पावहुगसुचादो चव जव्वदे । उदो जाणिज्जे
 जहा बीईदियपञ्जचरासीदो बिसेसहिपतीईदियपञ्जचरासीदो बहुदरतीईदिय-चउरिंदिय

है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तराशि साठ ६० है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि बारह १२ है
 और बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि बार ४ है ।

अब द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशियोंका विशेष
 अथवा अन्तर क्या समान है क्या अधिक है या हीन है ? देखा पछने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त
 राशिके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है देखा समझना चाहिये । यह इसप्रकार है । आगे उसीको
 कहते हैं— द्वीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय जीवराशिका
 विशेष असंख्यातगुणा है ।

शुद्ध— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— आचार्योंके उपदेशसे और मागामागमें प्ररूपण किये गये व्याख्यानसे
 जाना जाता है ।

त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे
 अधिक है ।

शुद्ध— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— त्रीन्द्रिय अपर्याप्त राशिके प्रमाणसे चतुरिन्द्रिय राशि विशेष हीन है
 देखा अस्पष्टवृत्त्यके सूत्रमें कहा है अतएव इससे जाना जाता है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिका प्रमाण विशेष हीन है ।

शुद्ध— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह भी अस्पष्टवृत्त्यके सूत्रसे ही जाना जाता है ।

इसलिये जाना जाता है कि जिसप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तराशि
 विशेष अधिक है और इससे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष बढ़ा है । त्रीन्द्रिय

राशिबिसेसाहो असंखजगुणा भेदिय-संखदियगतिबिसेसा भेदियपञ्चतर्हिता अमलेत्र गुणा पि ।

अप्यापहुर्म तिबिह सखाय परदाण-सम्भपरदाणमप्य । एत्थ तत्र मत्वाप प्यापहुम बुद्धे । सम्भत्थोना बादरदियपञ्चत्ता । तसिमपञ्चत्ता असंखजगुणा । को गुणगारो ? असंखत्ता सागा । बादरदिया बिसेसाहिया । कथियमपेय ? सगपञ्चत्तपत्तिवचमेतेण । सम्भत्थावा सुहुमेदियअपत्तत्ता । तसि पञ्चत्ता संख-गुणा । को गुणगारो ? संख-त्ता समया । सुहुमेदिया बिसेसाहिया । कथियमपेय ? सगअपञ्चत्तमपेय । सम्भत्थायो भेदियअवहारकाला । विक्रमसूर अमलत्तगुणा । को गुणगारो ? सगविक्रमसूर असंखजगुणमागो । को पढिमागो ? सगअवहारकाला । अहत्ता सेढीय असंखजगुणमागो असंखजगुणमि सेढिपढमवग्गमूलानि । क्व पढिमागो ? सगअवहारकालवग्गो । सा वि असंखजगुणानि पणगुणानि च्चिन्नेगुणस्स असंखजगुणमागमेवापि । सेढी असंखजगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । द्वयमसंखजगुणं । को गुणगारो ? विक्रमसूर । पदरमसंख-जगुण । का गुणगारो ? अवहारकाला । लोगा असंखज

और बहुरिन्ध्रिय राशिके बिशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका बिशेष असंख्यातगुण है बहीमकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका बिशेष असंख्यातगुण है ।

कल्याण, परत्थान और सर्व परत्थानके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे यहां पर पढ़के स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हमसे असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? असंख्यात को गुणकार है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे बाहर एकेन्द्रिय जीव बिशेष अधिक है । कितनेमात्र बिशेषसे अधिक है ? अपनी पर्याप्त राशिको प्रसिद्ध करने रूप बिशेषसे अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे संख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे बिशेष अधिक है । कितनेमात्र बिशेषसे अधिक है ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र बिशेषसे अधिक है । द्वीन्द्रियोंका अवहारकाय सबसे स्तोत्र है । अवहारकायसे विष्कंभसूत्री असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूत्रीका असंख्यातका भाग गुणकार है । प्रतिमाय क्या है ? अपना अवहारकाय प्रतिमाय है । जयथा, जगमेवीचर असंख्यातका भाग गुणकार है जो जगमेवीचर असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाय क्या है ? अपने अवहारकायका वर्ग प्रतिमाय है । वह प्रतिमाय मी सुखगुणके असंख्यातके भागमात्र असंख्यात कागुणप्रमाण है । विष्कंभसूत्रीके जगमेवी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाय गुणकार है । जगमेवीचर द्वीन्द्रियोंका द्वयप्रमाण असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूत्री गुणकार है । द्वीन्द्रियोंके द्वयसे जगप्रकार असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाय गुणकार है । जगप्रकारसे स्तोत्र असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगमेवी

गुणो । को गुणगारो ? सद्धी । एवं वेइदियअपन्नचाण पि वत्तम्भ । एव पन्नचाण पि ।
 पत्तरी जम्हि छचिअगुलस्स असंखज्जदिमागमचाणि घणंगुलाणि पि बुधं तम्हि छचि
 अगुलस्स संखज्जदिमागमचाणि पि वत्तम्भ । ति-बुध-पेविदियाण तेसि पन्नचापन्नचाण
 पि जहाकमम वेइदिय उइदियपन्नचापन्नचाण मंगो । सासुणादीण मूलापसरथात्ममंगो ।

परत्थाणि पपदं । तत्थ ताव परादियपरत्थाण बुधदे- सम्भत्थोवा वादेरुइदिया ।
 सुद्धमेइदिया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अमंखज्जा लोगा । तेसि छेइया वि असं
 खेज्जा लोगा । एव चेव विदियवियप्पो । पत्तरी एइदिया विसंसाहिया । अइवा
 सम्भत्थोवा वादेरुइदियपन्नचा । तस्मिपन्नचा असंखज्जगुणा । को गुणगारो ? अमंखज्जा
 लोगा । सुद्धमेइदियअपन्नचा अमंखज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसि
 छेइया वि असंखेज्जा लोगा । सुद्धमेइदियपन्नचा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज-
 समया । पत्तया वियप्पो एव च । पत्तरी एइदिया विसंसाहिया । कचियमेवण ? वादेरु
 इदियसाहिसुद्धमेइदियअपन्नचमत्थेण । सम्भत्थोवा वादेरुइदियपन्नचा । तस्मिपन्नचा

गुणकार है । इसीप्रकार इतिव्रिय अपर्याप्त जीवोंका भी अस्मद्वद्वत्त कहना चाहिये । इसीप्रकार
 इतिव्रिय पर्याप्तजीवोंका भी कहना चाहिये । इतना विशेष है कि जहाँ पर स्वप्नगुणके
 असम्प्राप्तके भागमात्र घनांगुल कहें हैं वहाँ पर स्वप्नगुणके सम्प्राप्तके भागमात्र घनांगुल
 कहना चाहिये । इतिव्रिय कतुरितिव्रिय और पंचेन्द्रिय तथा इन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त
 जीवोंके स्वस्थान अस्मद्वद्वत्तका कथन यथाक्रमसे इतिव्रिय, इतिव्रिय पर्याप्त और इतिव्रिय
 अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अस्मद्वद्वत्तके समान जानना चाहिये । इतिव्रियमार्गमात्रे सासावृत
 सम्यग्दृष्टि आदिवा स्वस्थान अस्मद्वद्वत्त मूखीय स्वस्थान अस्मद्वद्वत्तके समान है ।

अब परत्थाणमें अस्मद्वद्वत्त प्रकट है । उनमेंसे पहले एकेन्द्रियोंके परत्थाण अस्म
 द्वद्वत्तका कथन करते हैं— बाहर एकेन्द्रिय जीव सबसे स्लोक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव
 इनसे असंख्यातगुण हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अपर्याप्त में असं-
 ख्यात लोक है । इसीप्रकार दूसरा विकल्प है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे
 एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । अथवा बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्लोक है । बाहर एके-
 न्द्रिय अपर्याप्त जीव बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुण हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात
 लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुण हैं ।
 गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अपर्याप्त में असंख्यात लोकप्रमाण है । सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तजीवोंसे संप्राप्तगुण हैं । गुणकार क्या है ? संप्राप्त
 समय गुणकार है । चौथा विकल्प भी इसीप्रकार है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके
 प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय
 अपर्याप्तजीवोंके प्रमाणमें बाहर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर जो प्रमाण हो तन्मात्र
 विशेषसे अधिक है । बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्लोक है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव

असंख्यगुणा । को गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा । बादरैर्दिया विससाहिया । का विससो ?
 पुष्पं मविदो । सुदुमैर्दियमपन्त्रचा असंख्यगुणा । को गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा ।
 सुदुमैर्दियपन्त्रचा संख्यगुणा । को गुणगारो ? संख्यज्ञसमया । सुदुमैर्दिया विससाहिया ।
 को विससो ? पुष्पं मविदो । छद्वा वियप्या एवं च । नचरि एर्दिया विससाहिया ।
 कसियमचेण ? बादरैर्दियमचण । अहवा सव्यव्योदा बादरैर्दियपन्त्रचा । तसिमपन्त्रचा
 असंख्यगुणा । का गुणगारो ? असंख्यज्ञा सागा । बादरैर्दिया विससाहिया । सुदुमैर्दिय
 अपन्त्रचा असंख्यगुणा । को गुणगारो ? असंख्यज्ञा लेगा । एर्दियमपन्त्रचा
 विससाहिया । कसियमचेण ? बादरैर्दियमपन्त्रचमचण । सुदुमैर्दियपन्त्रचा संख्य-
 गुणा । को गुणगारो ? संख्यज्ञसमया । एर्दियपन्त्रचा विससाहिया । कसियमचण ?
 बादरैर्दियपन्त्रचमेचण । सुदुमैर्दिया विससाहिया । कसियमचेण ? बादरैर्दिय-

बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोकर गुण
 कार है । बाहर एकेन्द्रिय जीव बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे बिरोध अधिक है । बिरो-
 धका प्रमाण कितना है ? पहले कहा जा चुका है अर्थात् बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका जितना
 प्रमाण है बिरोधका प्रमाण उतना है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बाहर एकेन्द्रिय जीवोंके
 प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोकर गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात
 समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे बिरोध
 अधिक है । बिरोध क्या है ? पहले कहा जा चुका है अर्थात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका
 जितना प्रमाण है उतना बिरोध है । उदा बिचका हसीमकार है । उतना बिरोध है कि एकेन्द्रिय
 जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे अधिक है ? बाहर
 एकेन्द्रियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक है । अथवा बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव इनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या
 है ? असंख्यात छोकर गुणकार है । बाहर एकेन्द्रिय जीव बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके
 प्रमाणसे बिरोध अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बाहर एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे
 असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोकर गुणकार है । एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे
 अधिक है ? बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक है ।
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव एकेन्द्रियमपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार
 क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके
 प्रमाणसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे अधिक है ? बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका
 जितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रियजीव एकेन्द्रिय पर्याप्तकों
 जीवोंके प्रमाणसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे अधिक है ? बाहर एकेन्द्रिय

पञ्चचमिरिहिसुदुमेईदियापञ्चचमेतेन । एव च न अहुमे । धियप्पो । मवरि एरुदिया
 विससाहिया । सञ्चत्तेत्तो । वेईदियअवहारकालो । तस्सेव अपञ्चचमवहारकालो
 विससाहियो । केचित्तमेत्तण ? आत्तलियाए असत्तेज्जदिमाण सुद्धिदमेत्तेण । पञ्चच
 अवहारकालो असत्तेज्जगुणो । को गुणगारो ? आत्तलियाए असत्तेज्जदिमाणो । तस्सेव
 विक्खमसुई असत्तेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकल्हमसुई असत्तेज्जदिमाणो । को
 पडिमाणो ? सगमवहारकालो । अहवा सेदीए असत्तेज्जदिमाणो असत्तेज्जानि सेट्ठिपदम
 बग्गमूलाणि । को पडिमाणो ? सगजवहारकालवम्भो असत्तेज्जानि मज्जगुलाणि । केचित्त
 मेत्तानि ? सुचित्तगुलस्स सत्तेज्जदिमाणमेत्तानि । वेईदियमपञ्चचविकल्हमसुई असत्तेज्जगुणा ।
 को गुणगारो ? आत्तलियाए असत्तेज्जदिमाणो । वेईदियविक्खमसुई विससाहिया । केचित्त
 मेत्तो ? आत्तलियाए असत्तेज्जदिमाण सुद्धिदमेत्तो । सेदी असत्तेज्जगुणा । को गुणगारो ?
 वेईदियमवहारकालो । वेईदियपञ्चचदम्भमसत्तेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविकल्हमसुई ।

पर्याप्तकोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे
 अधिक है । इसीप्रकार आठवां विक्षेप है । इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म
 एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाळ सबसे शोक है ।
 जहाँके अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाळ पूर्णका अवहारकाळसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र
 विशेषसे अधिक है ? आठवींके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय जीवोंके अवहारकाळको खंडित
 करके जो एक भाग आये तन्मात्र विशेषसे अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका अवहारकाळ
 द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आठवींका
 असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कमसूची उन्हींके
 अवहारकाळसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कमसूचीका असंख्यातवां भाग
 गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाळ प्रतिभाग है । अथवा अग्रश्रेणीका
 असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूक्षप्रमाण है । प्रतिभाग
 क्या है ? अपने अवहारकाळका वर्ग प्रतिभाग है जो असंख्यात प्रतागुणप्रमाण है । असंख्यात
 प्रतागुण कितने हैं ? सूक्ष्मगुणके संख्यातवें मात्रमात्र हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी
 विष्कमसूची द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ?
 अष्टावलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कमसूची द्वीन्द्रिय अपर्याप्त
 जीवोंकी विष्कमसूचीसे विशेष अधिक है । इस विशेषका कितना प्रमाण है ? आठवींके
 असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंकी विष्कमसूचीको खंडित करके जो एक भाग
 आये तन्मात्र विशेष समझना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कमसूचीसे अग्रश्रेणी असंख्यातगुणी
 है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाळ गुणकार है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका
 सूक्ष्म अग्रश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी (द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी)

[illegible]

सम्पत्पराश्रये पपद । सत्यत्प्रेषमन्नागिकवसिद्धिद्वयं । चत्वारि तनसामगा संखञ्जगुणा ।
चत्वारि खवगा संखञ्जगुणा । सञ्जागिकवसिद्धिद्वयं संखेज्जगुणं । अप्पमचसंजद्वयं
संखेज्जगुणं । पमचसजद्वयं संखेज्जगुणं । असंजद्वयवहारकत्वा असंखेज्जगुणा ।
उपरि पस्सिदावम पि ओषं । तदो वीरिदियववहारकत्वा अमखञ्जगुणो । को गुणगातो ?
सगजवहारकत्वास्य मखलदिमागा । को पडिमागा ? पस्सिदवमं । अह्मा पदं
गुलस्य अमखेज्जदिमतो अमखञ्जगुणि सुविअंगुलाणि । को पडिमागा ? आवसियाए
अमखेज्जदिमाएण गुमिदपस्सिदवमं । तस्मिअ अपन्जचप्रवहारकत्वा विममाहिजो ।

विषममूर्खी गुणकार है। उन्हीं शीघ्रिय अर्थात् जीबोंका द्रव्य शीघ्रिय पचात जीबोंके द्रव्यसे जलक्षयातगुणा है। गुणकार क्या है? व्यवहारीक बसंज्यातमें मागध संपाततां माय गुणकार है। शीघ्रिय जीबोंका द्रव्य शीघ्रिय अर्थात् जीबोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है। कितनामात्र विशेष अधिक है? शीघ्रिय अर्थात् जीबोंके प्रमाणको जाबजीके बसंज्यातमें मागसे जांचित करके जो द्रव्य बाये तन्मात्र विशेष अधिक है। अथवा शीघ्रिय जीबोंके द्रव्यसे जलक्षयातगुणा है। गुणकार क्या है? शीघ्रिय जीबोंका अवधारकात् गुणकार है। अथवा शीघ्रिय जीबोंके जलक्षयातगुणा है। गुणकार क्या है? अथवा शीघ्रिय गुणकार है। इसीप्रकार शीघ्रिय और चतुरिन्द्रिय जीबोंका परस्थान व्यवहार है। तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय जीबोंका भी परस्थान व्यवहार है। इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीबोंका परस्थान व्यवहार व चतुरिन्द्रिय जीबोंका परस्थान व्यवहार जांच करके उक्त कथन करना चाहिये।

अथ सर्वपरस्परान्तरापेक्षान्तरमे प्रकृत विषयको कहते हैं— उपयोगिबन्धियोंका प्रत्यप्रमाण सबसे श्लोक है। चारों गुणस्थानोंके उपशामक उपयोगिबन्धियोंसे संख्यातगुणे हैं। चारों गुणस्थानोंके संपद उपशामकोंसे संप्यातगुणे हैं। उपयोगिबन्धियोंका प्रत्यप्रमाण अपर्योते संख्यातगुणा है। ध्यमत्तसंपत्तोंका प्रमाण सयोगियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है। प्रमत्तसंपत्तोंका प्रमाण अप्रमत्तसत्तोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है। अर्धपत्तोंका अन्वहारक्यक प्रमत्तसंपत्तोंके प्रमाणसे अर्धसंख्यातगुणा है। इसके ऊपर पक्षोपम तक मोक्षके समान है। पक्षोपमसे शीघ्रियोंका अन्वहारक्यक अर्धसंख्यातगुणा है। गुणाकर क्या है? अपने अन्वहारक्यक अर्धसंख्यातका भाग गुणकर है। प्रतिमाप क्या है? पक्षोपम प्रतिमाप है। अथवा प्रवर्गगुणका संख्यातका भाग गुणकर है जो अर्धसंख्यात सूर्यगुणप्रमाण है। प्रतिमाप क्या है? आचारीके अर्धसंख्यातके भागसे पक्षोपमको गुणित करके जो ह्रस्व अथवा वतना प्रतिमाप है। उन्हीं शीघ्रियोंके अपर्याप्तक जीवोंका अन्वहारक्यक शीघ्रियोंके

केचियमचे ? आतलियाए अमंखज्जदिमाण खंडिदमेत्तो । एमं खंडिदिय-खंडिदियअपञ्जच
 खंडिदिय-खंडिदियअपञ्जच-पंचिदिय-पंचिदियअपञ्जचान अब्बहमकाला कमेण विससा
 हिया । ततो तीरदियपञ्चअबबहमकाला अमंखज्जगुणा । को गुणगारो ? आतलियाए
 असंखेज्जदिमाम्म मंखज्जदिमाणो । वेद्विअपञ्जचअबहारकाला विससाहिओ । कचिय
 मेत्तो ? आतलियाए अमंखज्जदिमाण खंडिदतीरदियपञ्चअबहारकाला विससेत्तो ।
 पंचिदियपञ्चअबहारकालो विमत्तो । खंडिदियपञ्चअबहारकाला विससाहिआ । तस्सेव
 विक्खमसूई अमंखज्जगुणा । को गुणगारो ? पुअ मणिआ । पंचिदियपञ्चविक्खमसूई
 विससाहिया । वेद्विअपञ्चविक्खमसूई विससाहिआ । तीरदियपञ्चविक्खमसूई विस
 साहिया । पंचिदियअपञ्चविक्खमसूई अमंखज्जगुणा । को गुणगारो ? आतलियाए
 अमंखज्जदिमाम्म सखेज्जदिमाण । पंचिदियविक्खमसूई विससाहिया । कचियमचेण ?
 आतलियाए असंखज्जदिमाण खंडिदपंचिदियअपञ्चविक्खमसूचिमचेण । एमं णयव्वं

अपहारकाळसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आसलीके असंख्यातनें
 भागसे हीमिदियोंके अपहारकाळसे खंडित करके जो एक भाग छम्प भावे लग्गात्र विशेष
 अधिक है । इसीप्रकार हीमिदिय हीमिदिय अपर्णात्त अतुरिमिदिय अतुरिमिदिय अपर्णात्त
 पंचेमिदिय और पंचेमिदिय अपर्णात्त जीकोंके अपहारकाळ की क्रमसे विशेष अधिक है । पंचेमिदिय
 अपर्णात्तकोंके अपहारकाळसे हीमिदिय अपर्णात्तकोंका अपहारकाळ असंख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? आसलीके असंख्यातनें भागका संख्यातनीं भाग गुणकार है । हीमिदिय अपर्णात्तकोंके
 अपहारकाळसे हीमिदिय अपर्णात्तकोंका अपहारकाळ विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष
 अधिक है ? अपसलीके असंख्यातनें भागसे हीमिदिय अपर्णात्तकोंके अपहारकाळसे खंडित करके
 जो भाग छम्प भावे लग्गात्र विशेष अधिक है । हीमिदिय अपर्णात्तकोंके अपहारकाळसे पंचेमिदिय
 अपर्णात्तकोंका अपहारकाळ विशेष अधिक है । पंचेमिदिय अपर्णात्तकोंके अपहारकाळसे अतुरिमिदिय
 अपर्णात्तकोंका अपहारकाळ विशेष अधिक है । अतुरिमिदिय अपर्णात्तकोंके अपहारकाळसे तर्हीकी
 बिक्कमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है । अतुरिमिदिय
 अपर्णात्तकोंकी बिक्कमसूचीसे पंचेमिदिय अपर्णात्तकोंकी बिक्कमसूची विशेष अधिक है । पंचेमिदिय
 अपर्णात्तकोंकी बिक्कमसूचीसे हीमिदिय अपर्णात्तकोंकी बिक्कमसूची विशेष अधिक है । हीमिदिय
 अपर्णात्तकोंकी बिक्कमसूचीसे पंचेमिदिय अपर्णात्तकोंकी बिक्कमसूची विशेष अधिक है । हीमिदिय
 अपर्णात्तकोंकी बिक्कमसूचीसे पंचेमिदिय अपर्णात्तकोंकी बिक्कमसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार
 क्या है ? आसलीके असंख्यातनें भागका संख्यातनीं भाग गुणकार है । पंचेमिदिय अपर्णात्तकोंकी
 बिक्कमसूचीसे पंचेमिदियोंकी बिक्कमसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे
 अधिक है ? आसलीके असंख्यातनें भागसे पंचेमिदिय अपर्णात्तकोंकी बिक्कम

तस्मैव अपञ्चतद्व्यमसंखेन्द्रगुण । का गुणगारा ? आत्मस्याप्य असंखजदिमात्म
संखेन्द्रदिमागो । वरदियद्व्य विसेसद्विय । केचित्तमेवा ? आत्मस्याप्य असंखेन्द्रदिमात्म
खेन्द्रिसगजपञ्चमया । पदरमसंखजगुण । का गुणगारा ? वरदियत्रवहारकात् । सोमो
असंखजगुणो । को गुणगारो ? सेही । एव सीद्विय-वउतिदिपाण । एवं पविदिपायं
पि । पवति अत्रोगिमगनतमात्रं काठम् वचनं ।

सम्भरतत्त्वमे पयद । सम्भरतत्त्वमत्रागिकवलिद्व्यं । अचारि उवसामगा संखेन्द्रगुणा ।
अचारि स्वमगा संखेन्द्रगुणा । सजोगिकवलिद्व्यं संखेन्द्रगुण । अप्पमचसंखद्व्यं
संखेन्द्रगुण । पमचसजद्व्यं संखेन्द्रगुण । असंखद्व्यवहारकात् असंखेन्द्रगुणा ।
उवति पलिद्व्यम चि आर्षं । तदा वरद्वियत्रवहारकात् असंखजगुणो । का गुणगारा ?
सगजवहारकात् असंखजदिमागो । को पविमागो ? पलिद्व्यम । अह्वा पदं
गुणस्म असंखजदिमागो अर्षं गुणाणि सुचित्रगुणाणि । का पविमागा ? आत्मस्याप्य
असंखजदिमाप्य गुणिद्व्यम । तस्मैव अपञ्चतद्व्यवहारकात् विसेमाद्व्यं ।

विष्णुमूर्त्ति गुणगार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पयात्त जीवोंके
द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणगार क्या है ? आबलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग
गुणगार है । द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक
है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणको आबलीके असंख्यातवें
भागसे जड़ित करके जो द्रव्य भाग तन्मात्र विशेष अधिक है । अगमनर द्वीन्द्रिय जीवोंके
द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणगार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका व्यवहारकात्त गुणगार है ।
अगमनरसे जोक असंख्यातगुणा है । गुणगार क्या है ? अगमणी गुणगार है । इसीप्रकार
द्वीन्द्रिय और अतुरिन्द्रिय जीवोंका परस्परान्तर व्यवहार है । तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय
जीवोंका भी परस्परान्तर व्यवहार है । इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीवोंका परस्परान्तर
व्यवहार कहते समय अयोगी मगबाधको भाँति करके उसका कथन करना चाहिये ।

अब सर्वपरस्परान्तर व्यवहारमें प्रकृत विषयको कहते हैं— अयोगिविषयविषयोंका
द्रव्यप्रमाण सबसे इतना है । चारों गुणरयानोंके उपशामक अयोगिविषयविषयोंसे संख्यातगुणे
हैं । चारों गुणरयानोंके अपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिविषयविषयोंका द्रव्यप्रमाण
अपकोंसे संख्यातगुणा है । अगमनसंख्यातका प्रमाण सयोगिविषयोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा
है । प्रमत्तसंख्यातका प्रमाण अगमनसंख्यातोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । असंख्यातका
अवधारकात्त प्रमत्तसंख्यातोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर पक्षोपम तक जोबके
समान है । पक्षोपमसे द्वीन्द्रियोंका व्यवहारकात्त असंख्यातगुणा है । गुणगार क्या है ? अपने
व्यवहारकात्त असंख्यातवां भाग गुणगार है । प्रतिभाग क्या है ? पक्षोपम प्रतिभाग
है । अथवा प्रमत्तगुणका संख्यातवां भाग गुणगार है जो असंख्यात सूर्यगुणप्रमाण है ।
प्रतिभाग क्या है ? आबलीके असंख्यातवें भागसे पक्षोपमको गुणित करके जो द्रव्य भाग
उतना प्रतिभाग है । उन्हीं द्वीन्द्रियोंके अपर्याप्त जीवोंका व्यवहारकात्त द्वीन्द्रियोंके

केसियमेवो ? आबलियाए असंखेज्जदिमाएण खंदिदमेत्ता । एवं त्थदिय-त्थदियअपज्जच
 चठरिंदिय चठरिंदियअपज्जच पंचिदिय पंचिदियअपज्जचान्ण भवहारफालो कमेण विसेसा
 हिया । ततो सीधदियपज्जचअवहारफालो असंखेज्जगुणो । को गुणगतो ? आबलियाए
 असंखेज्जदिमागस्स संखेज्जदिमागो । वेहदियपज्जचअवहारफालो विसेसाहिओ । केसिय
 मेवो ? आबलियाए अमखेज्जदिमाएण खंदिदवीहदियपज्जचअवहारफालमेवो विसेसो ।
 पंचिदियपज्जचअवहारफालो विमसो । चठरिंदियपज्जचअवहारफालो विसेसाहिओ । तस्सेव
 विक्खमसूरं असंखेज्जगुणा । को गुणगतो ? पुब्ब भविदो । पंचिदियपज्जचविक्खंमसूरं
 विसेसाहिया । वेहदियपज्जचविक्खंमसूरं विसेसाहिया । त्थदियपज्जचविक्खंमसूरं विसे
 साहिया । पंचिदियअपज्जचविक्खंमसूरं असंखेज्जगुणा । को गुणगतो ? आबलियाए
 असंखेज्जदिमागस्स संखेज्जदिमागो । पंचिदियविक्खंमसूरं विसेसाहिया । केसियमेवो ?
 आबलियाए असंखेज्जदिमाएण खंदिदपंचिदियअपज्जचविक्खंमसूरंविमेवण । एवं वेववजं

अवहारफालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आबलीके असंख्यातवें
 भागसे द्वीन्द्रियोंके अवहारफालको खंडित करके जो एक भाग छप्प भाग तन्मात्र विशेष
 अधिक है । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय द्वीन्द्रिय अपर्याप्त चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त
 पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त बीबीके अवहारफाल भी कमसे विशेष अधिक हैं । पंचेन्द्रिय
 अपर्याप्तकोंके अवहारफालसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारफाल असंख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? आबलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके
 अवहारफालसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारफाल विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष
 अधिक है ? आबलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारफालको खंडित करके
 जो भाग छप्प भाग तन्मात्र विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारफालसे पंचेन्द्रिय
 पर्याप्तकोंका अवहारफाल विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारफालसे चतुरिन्द्रिय
 पर्याप्तकोंका अवहारफाल विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारफालसे तन्हींकी
 विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है । चतुरिन्द्रिय
 पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय
 पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय
 पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय
 पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार
 क्या है ? आबलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी
 विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रियोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे
 अधिक है ? आबलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कम्भ-

तस्सेव अपञ्चदशमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? आवलियाए असंखज्जदिमाएस
संखज्जदिमागो । अइदियदम्बं विसेसाहिय । केचियमेचो ? आवलियाए असंखज्जदिमाएस
संखेदसगजपञ्चमेचो । पवरमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? वेइदियमवहारकातो । समो
असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । एवं सीइदिय-अटर्दिदियाण । एव पंचिदियानं
पि । अवरि अबोगिमगवतमइं काउज्ज वचनं ।

सम्यपरत्वात्ते पयदं । सम्भरत्वावमज्जेनिकेवलिदम्बं । यचारि उवसामगा संखेज्जगुणा ।
यचारि खवगा संखेज्जगुणा । समोगिकेवलिदम्बं संखेज्जगुणं । अप्पमत्तसंखदम्बं
संखेज्जगुण । पमत्तसंखदम्बं संखेज्जगुण । असंखदववहारकातो असंखेज्जगुणा ।
उवरि पस्सिदोवम पि ओपं । तदो वीइदियववहारकातो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
सगमवहारकाउत्तस संखज्जदिमागो । को पडिमागो ? पस्सिदोवमं । अहवा पवरं
गुत्तस असंखेज्जदिमागो अमसंख-अपि सुचिमगुलापि । को पडिमागो ? आवलियाए
असंखेज्जदिमाएस गुणिदपत्तिदोवम । तस्सेव अपञ्चदशववहारकातो विसमाहिओ ।

विषयमर्था गुणकार है । इन्हीं द्वीन्द्रिय अपर्णात्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पर्णात्त जीवोंके
द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आबलीके असंख्यातमें भागका संख्यातर्था माप
गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्णात्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक
है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? द्वीन्द्रिय अपर्णात्त जीवोंके प्रमाणको आबलीके असंख्यातमें
भागसे बंदिट करके जो छद्म भावे तन्मात्र विशेष अधिक है । अतएव द्वीन्द्रिय जीवोंके
द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाक गुणकार है ।
अतएवसे ओक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अगमेणी गुणकार है । इसीप्रकार
द्वीन्द्रिय नीर बहुचिन्द्रिय जीवोंका परस्परान्तर असंख्यात है । तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय
जीवोंका भी परस्परान्तर असंख्यात है । इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीवोंका परस्परान्तर
असंख्यात कहते समय अयोपी मयबलको भावे करके बसका कथन करना चाहिये ।

अथ सर्वपरस्परान्तर असंख्यातमें प्रकृत विषयको कहते हैं— अयोगिकेवलिदोंका
द्रव्यप्रमाण सबसे श्लोक है । चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवलिदोंसे संख्यातगुणे
हैं । चारों गुणस्थानोंके शपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवलिदोंका द्रव्यप्रमाण
शपकोंसे संख्यातगुणा है । अमत्तसपत्तोंका प्रमाण सयोगिकोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा
है । प्रमत्तसपत्तोंका प्रमाण अमत्तसपत्तोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । असंखत्तोंका
अवहारकाक प्रमत्तसपत्तोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर परस्परान्तर तक ओपके
समान है । परस्परान्तर द्वीन्द्रियोंका अवहारकाक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अन्ते
अवहारकाक असंख्यातर्था भाग गुणकार है । प्रतिमाप क्या है ? परस्परान्तर प्रतिमाप
है । अथवा प्रतर्गुणका संख्यातर्था भाग गुणकार है जो असंख्यात स्वर्णगुणप्रमाण है ।
प्रतिमाप क्या है ? आबलीके असंख्यातमें भागसे परस्परान्तरों गुणित करके जो छद्म भावे
इतना प्रतिमाप है । इन्हीं द्वीन्द्रियोंके अपर्णात्तक जीवोंका अवहारकाक द्वीन्द्रियोंके

आत चतुरिदियअपञ्जच-चतुरिदिय-सुईदियअपञ्जच-सुईदिय-वेईदियअपञ्जच-सुईदियानं वि
 कर्तमसुईआ पि । सेढी असंखेज्जगुण । को गुणगारो ? पईदियअवहारकत्तो । चतुरि
 दियपञ्जचदणं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंमसुई । पंथिदियपञ्जचदणं विसे
 साहियं । वेईदियपञ्जचदणं विसेसाहियं । सुईदियपञ्जचदणं विसेसाहियं । पंथिदिय
 अपञ्जचदणं असंखेज्जगुण । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिमागो । पंथिदिय
 दणं विसेसाहियं । केथियमेचेण ? आवलियाए असंखेज्जदिमाएण सुंदिदपविदियअपञ्जच
 दणमेचेण । एवं चतुरिदियअपञ्जच-चतुरिदिय-सुईदियअपञ्जच-सुईदिय-वेईदियअपञ्जच-
 वेईदियानं दणानि अहाकमेण विसेसाहियानि । उदो पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ?
 वेईदियअवहारकत्तो । सोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । अविदिया अणत्तगुणा ।
 को गुणगारो ? अमवसिद्धिएहि अणत्तगुणो सिद्धानमसंखेज्जदिमागो । को पडिमागो ?
 सोगो । बादेवेईदियपञ्चचा अणत्तगुणा । को गुणगारो ? अमवसिद्धिएहि अणत्तगुणो, सिद्धेहि

पूबीके खंडित करके जो माय छद्म भये तन्मात्र विरोधसे अधिक है । इसी
 प्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय
 अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कमसूची भावेतक से जाना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी
 विष्कमसूचीसे अग्रेभी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकम
 गुणकार है । अपर्याप्तसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? अपनी विष्कमसूची गुणकार है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकींके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय पर्याप्त
 जीवोंका द्रव्य विरोध अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विरोध
 अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विरोध अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्त
 द्रव्यसे पंचेन्द्रियोंका अपर्याप्त द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका जल-
 क्पातवा माय गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रिय द्रव्य विरोध अधिक
 है । कितनेमात्र विरोधसे अधिक है ? व्यवलीके असंख्यातके भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त-
 द्रव्यको लंकित करके जो छद्म भये तन्मात्र विरोधसे अधिक है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय
 अपर्याप्त चतुरिन्द्रिय त्रीन्द्रिय अपर्याप्त त्रीन्द्रिय द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय
 जीवोंका द्रव्यप्रमाण पचाकमसे विरोध अधिक है । द्वीन्द्रिय द्रव्यप्रमाणसे अग्रेतर असंख्यात-
 गुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकम गुणकार है । अग्रेतरसे लोक
 असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अग्रेभी गुणकार है । लोकसे अनिन्द्रिय जीवोंका
 प्रमाण अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? मध्यस्थिद जीवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोका
 असंख्यातका भाग गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? लोकका प्रमाण प्रतिमाग है । बाहर
 पंचेन्द्रिय पर्याप्तकींका प्रमाण अविन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ?
 मध्यस्थिदोंसे भी अनन्तगुणा सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा जीवपक्षिके प्रथम वर्गमूलसे भी

वि अर्पणगुणा जीववग्गमूतम् वि अपन्नगुणो सत्त्वजीवरासिस्त अर्पणसुखदिमागस्त अर्पण-
विममागा । को पक्षिमागो ? अर्णिन्या । सेसिमपञ्चत्ता अर्णसुखेन्द्रगुणा । पादेरेन्द्रिया
विमेषाहिया । सुद्धमर्णियअपन्नत्ता अर्णसुखेन्द्रगुणा । एण्णियअपन्नत्ता विसेसाहिया ।
सुद्धमर्णियपञ्चत्ता संसृज्जगुणा । ण्णदियपञ्चत्ता विसमाहिया । सुद्धमर्णिया विसे-
साहिया । एण्णिया विसमाहिया ।

एव इन्द्रियमगणना समुत्था ।

कायाणुवातेण पुढविकाइया आउकाइया तेइउकाया वाउकाइया
 वादरपुढविकाइया वादरआउकाइया वादरतेउकाइया वादरवाउकाइया
 वादरवणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा तम्मेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया
 सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता
 पज्जत्ता दब्बपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ल्लेगा ॥ ८७ ॥

अनन्तगुणा जीव सब जीवप्राणिके असंख्यातमें मागका सबन्तर्पा माग गुणकार है। प्रतिमाग क्या है? अतिश्रिय जीवोंका प्रमाण प्रतिमाग है। बाहर एकेन्द्रिय पपातर्कके प्रमाणसे ठन्हाक अपपातक जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे बाहर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपपात जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे एकेन्द्रिय अपपात जीव पिशाय अधिक हैं। इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय पपात जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे एकेन्द्रिय पपात जीव विशेष अधिक हैं। इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। इनसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं।

इसप्रकार इन्द्रियमागणा समाप्त हुई ।

अपातुनादये श्रुतिश्रुतिकायिक, अप्कायिक, तजस्कायिक, वायुकायिक जीव
तथा बादर श्रुतिश्रुतिकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक, बादर वायुकायिक,
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकधरीर जीव तथा इन्हीं पांच बादरसंबन्धी अपर्णास जीव,
सूक्ष्म श्रुतिश्रुतिकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा
इन्हीं चार सूक्ष्मसंबन्धी पयास जीव और अपर्णास जीव, ये सब प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? अर्थात् सोकप्रमाण हैं ॥ ८७ ॥

[illegible]

एतत् पुढपी काजो सरिं जेसिं ते पुढपीकाया सि य बचम्, विगाइगर्भए बहु-
माम्पायं जीवायमकाम्पसंगादो । पुणो कर्षे बुचदे ? पुढविकाइयपामकम्मोदयवणे
जीना पुढविकाइया सि बुचति । पुढविकाइयपामकम्मं न कहिं वि बुचमिदि ये न, तस
एइदियजदिपामकम्मतम्भूदचदो । एवं सदि कम्मायं संसाधियमो सुचसिदो न पढिं
वि बुचे बुचदे । न सुचे कम्माणि अहेव अहेदासउपमेवेपि, संसतरपडिसेइविपाय
एवकारामादो । पुणो केचियाणि कम्माणि होति ? इय-गय-विय-फुल्लुधुव-सलइ-मसु-
पुरेहि-गोमिइदीवि जेचियाणि कम्मफलाणि लागे उवसम्मंते कम्माणि वि तचियाणि
चेव । एवं सेसकाम्पायं पि बचम् । बाइरवामकम्मोदयसहिइपुढविकाइयपाम्जो
बादरा । भूत्तराउमं जीवामं बाइरसं किन्ना बुचदे ? न, बाइरेइदियमोनाइबाइो

यहां पर पृथिवी है काय अर्थात् शरीर जिनके अर्न्त में पृथिवीकाय जीव रहते हैं
देखा नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, पृथिवीकायका देसा अर्थ करने पर विग्रहगतिमें विद्यमान
जीवोंके अन्तर्गतत्वका अर्थात् पृथिवीकायित्वके समावयव प्रस्ता या जाता है ।

शुद्धा—तो फिर पृथिवीकायविकका अर्थ कैसा कहना चाहिये ?

समाधान—पृथिवीकाय नामकर्मके अर्थसे शुद्ध जीवोंको पृथिवीकायिक कहते
हैं इत्यन्तकार पृथिवीकायिक शब्दका अर्थ करना चाहिये ।

शुद्धा—पृथिवीकायिक नामकर्म कहीं भी अर्थात् कर्मके भेदोंमें नहीं कहा गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पृथिवीकाय नामका कर्म एकेन्द्रिय नामक नामकर्मके
माधिर अन्तर्भूत है ।

शुद्धा—यदि देसा है तो सूक्ष्मिक कर्मोंकी संख्याका नियम नहीं रह सकता है ?

समाधान—देसा प्रत्य करके पर व्याचार्य कहते हैं कि सूक्ष्ममें कर्म अ.ह ही अथवा
एकही अङ्गतासीस ही नहीं बडे हैं क्योंकि, अष्ट वा एकसी अङ्गतासीस संख्याको छोड़कर
बृहती संख्याओंका प्रतिषेध करनेवाला 'यत् देसा पद् सूक्ष्मं नहीं पाया जाता है ।

शुद्धा—तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान—छोकमें छोडा हाथी बृह (मेडिया) भ्रमर शङ्खम मत्कुथ बरेहिअ
(दीमक) गोमी वीर इन्द्र गारि कपसे जितने कर्मोंके फल पाये जाते हैं कर्म भी बतने
ही होते हैं ।

इसीप्रकार शेष कयिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये । अबमें बाइर
नामकर्मके अर्थसे शुद्ध पृथिवीकायिक गारि जीव बाइर कहलाते हैं ।

शुद्धा—एतत् शरीरवाडे जीवोंको बाइर क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, देहवसेवियपावसे बाइर एकेन्द्रियोंकी अन्तर्गततासे

सुहृमेर्द्विपञ्चगोहाहणात् वेदणत्वेनविद्वान्गदो बहुषोवर्त्तमा । तदो पद्विद्वन्ममाजसरीरो
 वासरो । अर्ष्महि पोम्गलेहि अपद्विद्वन्ममाजसरीरो जीवो सुहृमो चि वेचम्ब । एकमेक
 प्रति प्रत्येकम्, प्रत्येक शरीरं येषां ते प्रत्येकशरीराः । एतत् पचेयसरीरपिरेतो
 साहजसरीरवपञ्चकद्वयपद्विद्वान्गदो । पुनरिन्द्रादिप्रमाणो जीवा पचेयसरीरा चेष । तेसि
 पचेयवपञ्चसा सुचे किञ्च कदो ? तत्तत् पचेयसरीरस्त संमवो चेष अस्मवो गतिव चि न
 तेन ते वितेसिज्जते 'सति संमवे न्यमिचारे न विद्वज्जमवपञ्चकद्वयसि' इति न्यायत् । सुहृम
 पामकम्मेत्तमसहितपुनरिन्द्रादिप्रमाणो जीवा सुहृमा इवेति । बोवसरीरोगाहणात् वद्वाम्ना
 जीवा सुहृमा चि न वेप्पवि, सुहृमेर्द्विपञ्चगोहाहणात् वाद्वोर्द्विपञ्चगोहाहणात् वेदनासेच-
 विद्वान्सुचादो बोवजुवर्त्तमा । अपञ्चवपामकम्मेत्तमसहितपुनरिन्द्रादिप्रमाणो अपञ्चवा चि
 वेचम्बा गाणिप्पणसरीरा, पञ्चवपामकम्मेत्तमसहितपुनरिन्द्रादिप्रमाणो गणिप्पणसरीरा
 तद्वा पञ्चवपामकम्मेत्तमसहित जीवा पञ्चवा । अण्णाहा गिप्पणसरीरजीवाणमेव गणिप्प

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी अलग्गहना बड़ी पारी जाती है, इसलिये स्पष्ट शरीरवाले जीवोंको
 बाहर नहीं कर सकते हैं। मतः जिनका शरीर प्रतिभातयुक्त है वे बाहर हैं और अन्य
 पुनर्जन्मे प्रतिभातरहित जिनका शरीर है वे सूक्ष्म जीव हैं, यह कार्य यहां पर बाहर और
 सूक्ष्म शब्दसे केना चाहिये।

एक एक जीवके प्रति जो शरीर होता है उसे प्रत्येक कहते हैं। जिन जीवोंका
 प्रत्येकशरीर होता है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं। यहां सूत्रमें 'प्रत्येकशरीर' पदका
 निर्देश साधारणशरीर वनस्पतिआदिकके प्रतिपेक्षके किये किया है। पृथिवीकायिक आदि
 जीव प्रत्येकशरीर ही होते हैं।

श्रृंका—सूत्रमें पृथिवीकायिक आदि जीवोंको प्रत्येक संज्ञा क्यों नहीं दी गई है ?

समाधान—उन पृथिवीकायिक आदि जीवोंमें प्रत्येक शरीरका संमव ही है अर्थात्
 नहीं है, इसलिये प्रत्येक पक्षसे उन्हें विरोधित नहीं किया गया है क्योंकि धर्मिचारके होने
 पर, मयवा इसकी संभावना होने पर, दिया गया विरोध सार्थक होता है, ऐसा व्याप है।

सूक्ष्म नामकर्मके उद्भवसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव सूक्ष्म होते हैं। यहां शरीरकी
 स्तोत्र अलग्गहनामें विद्यमान जीव सूक्ष्म होते हैं ऐसा कार्य नहीं किया गया है क्योंकि
 वेदनासेचविधानके सूत्रसे सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी अलग्गहनाकी अपेक्षा बाहर एकेन्द्रियोंकी
 अलग्गहना ही स्तोत्र पारी जाती है। अपर्याप्त नामकर्मके उद्भवसे युक्त बाहर पृथिवीकायिक
 आदि जीव अपर्याप्त हैं, ऐसा कार्य यहां पर केना चाहिये। किंतु जिनका शरीर अग्नी विष्णु
 नहीं हुआ अर्थात् जिनकी शरीर-पर्याप्ति पूर्व नहीं हुई है वे अपर्याप्त हैं ऐसा कार्य यहां नहीं
 केना चाहिये, क्योंकि, ऐसा कार्य केने पर पर्याप्त नामकर्मका उद्भव रहते हुए ही जिनका
 शरीर पूर्व नहीं हुआ है अपर्याप्त पक्षसे उनके ही ग्रहणका प्रसंग था जाता है। उदीयकार
 पर्याप्त नामकर्मके उद्भवसे युक्त जीव पर्याप्त हैं मूलतः पर्याप्त पक्षसे ऐसा कार्य केना चाहिये,
 अन्यथा जिन जीवोंका शरीर विष्णु हो श्रुका है पर्याप्त पक्षसे उनका ही ग्रहण होता।

एव पुत्रोपि कायो सरीरं वेत्ति ते पुत्रोपि काया पि न वचन्, विगाहगर्भं न ह
 मात्पार्थ जीवाणमकल्पय्यसंगादो । पुत्रो कथं बुधे ? पुत्रविकार्यणामकम्मोदयवतो
 जीना पुत्रविकार्या पि बुधन्ति । पुत्रविकार्यणामकम्मं न कश्चि वि बुधमिदि ये न, तस्म
 प्यरिदियज्जविणामकम्मसम्भूदत्ततो । एवं सदि कम्मार्थं संखाणियमो सुचसिदो न पठति
 पि बुधे बुधे । न सुते कम्मणि अहेव अहेदासकयमेवेति, संखतरपडिसेहविषायय
 ययकारमादादो । पुत्रा केचियाणि कम्मणि ह्वेति ? इय-गप-विय-कुत्तुपुद-सत्तह-मक्क-
 पुदेहि-गोमिदादीनि ओचियाणि कम्मफलाणि लोभो उवसम्मते कम्मणि वि तथियाणि
 येव । एवं सेसकप्पयाण पि वचन् । बाहरणामकम्मोदयसहिबपुत्रविकार्यपादो
 बादरा । पूससरीरार्थं जीवाणं बादरं किं न बुधे ? न, बादरेरिदियज्जोगाहनादो

यहां पर पृथिवी है कथं अर्थात् हाथीर जिनके उन्हें पृथिवीकथ जीव करते हैं
 ऐसा नहीं करना चाहिये क्योंकि, पृथिवीकथकथ ऐसा अर्थ करने पर विगाहगतित्तं विधमान
 जीवोंके अकल्पितकथ अर्थात् पृथिवीकथितकथे अभावकथ प्रसंग था जाता है ।

प्रश्न—तो फिर पृथिवीकथिकथ अर्थ कैसा करना चाहिये ?

समाधान—पृथिवीकथ नामकर्मके अर्थसे पुत्र जीवोंको पृथिवीकथिक कहते
 हैं इसप्रकार पृथिवीकथिक शब्दका अर्थ करना चाहिये ।

प्रश्न—पृथिवीकथिक नामकर्म कहां भी अर्थात् कर्मके क्षेत्रोंमें नहीं कहा गया है ?

समाधान—नहीं क्योंकि पृथिवीकथ नामका कर्म एकेन्द्रिय नामक अभावकर्मके
 अतिर अन्तर्भूत है ।

प्रश्न—यदि ऐसा है तो सूक्ष्मज जर्मोंकी संख्याकथ नियम नहीं रह सकता है ?

समाधान—ऐसा प्रश्न करने पर अन्वय करते हैं कि सूत्रमें कर्म अ. ३ ही अथवा
 एकही अक्षराक्षर ही नहीं होते हैं, क्योंकि, अष्ट या एकही अक्षराक्षर संख्याको छोड़कर
 सूक्ष्मी संख्याकथ प्रतिषेध करनेवाला 'एव' ऐसा पद सूत्रमें नहीं पाया जाता है ।

प्रश्न—तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान—अनेकमें जोड़ा हाथी वृक (मेकिवा) अमर शकम मन्कुज बरेहिक
 (बीमक) गोमी और इन्द्र आदि कथसे जितने कर्मोंके कथ पाये जाते हैं, कर्म भी इतने
 ही होते हैं ।

इसीप्रकार शेष कथिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये । इनमें बाहर
 नामकर्मके अर्थसे पुत्र पृथिवीकथिक आदि जीव बाहर कहलाते हैं ।

प्रश्न—सूत्र हाथीरपाक जीवोंको बाहर क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदसंश्लेषिषानसे बाहर एकेन्द्रियोंकी अवगाहनासे
 उरःप्राक न व अर्थात् बाहर । अ. ६, १४१, १४ १७१

एतय परिहाग युक्ते । जण जीवण ण्ठेय चर ण्ठसरीगट्टिएण सुह-दु-समशुम-
वेठम्भमिदि कम्मसुवज्जिद सो जीवा पचेयसरीरा । जण जीवण एगसरीरद्वियबह्वि जीवहि
सह कम्मफलमशुमवयम्भमिदि कम्मसुवज्जिद सो साहारणसरीरा । न च अचिच्छणाउअस्स
ठक्कवएसा, तत्र प्रत्यन्तरमावत् । विग्गाहगईए पुण पच्चासत्ती अनिय चि इवदि एसा
बवण्णो तम्हा ण पुप्फुवदासस्स समवा । अहवा पचेयसरीरणामकम्मदयवतो बणण्ण
कम्पया पचेयसरीरा । साहारणामकम्मदयवतो साहारणसरीरा चि बघच्च । सरीगगहिद
पढमसमए दोञ्च सरीराणमगदरम्म उद्ओ इवदीदि विग्गाहगईए बहुमाणजीवाण पचेय
साहारणसरीरववएसा ण पावणि चि पुत्त, न एम दत्ता, तय वि पच्चासत्ती अनिय चि
उवपणेण तमि पचेय-साहारणमरीरववएसमसवात्ता । विग्गाहगईए बहुमाणलंतप्रिमाण
साहारणकम्मपयववसाणमण्णोपणाशुगयचणण एयचदुवगयएयसरीरम्म बहुमाणवात्ता वा

समाधान - यहाँ पर उपयुक्त वाक्याका परिहार करते हैं । जिस जीवने एक शरीरमें स्थित होकर भोजन ही मुख्य गुणके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है यह जीव प्रत्येकशरीर है । तथा जिस जीवने एक शरीरमें स्थित बहुत जीवोंके साथ सुख दुःखरूप कर्मफलके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है यह जीव साधारणशरीर है । परंतु जिसकी आयु छिन्न नहीं हुए है अर्थात् जो जीव अपनी पचायको छोड़कर प्रत्येक य साधारण पर्यायमें उत्पन्न नहीं हुआ है उस जीवके इसप्रकारका व्यवहार नहीं हो सकता है क्योंकि, यहाँ पर प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है । विग्रहणमें तो प्रत्यासत्ति पाई जाती है इसलिये यहाँ पर यह व्यवहार होता है अतएव यहाँ पूर्वाक्त रूप समझ नहीं है । अथवा प्रत्येकशरीर नाम कर्मके रूपमें युक्त अनस्यविशेषिक और प्रत्येकशरीर है और साधारण नामकर्मके रूपमें युक्त अनस्यविशेषिक और साधारणशरीर है ऐसा कथन करना चाहिये ।

सूत्र - शरीर ग्रहण होनेके प्रथम समयमें दोनों शरीरोंमेंसे किसी एकका उद्भव होता है इसलिये विग्रहणमें रहनेवाले जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनोंमेंसे कोर भी संज्ञा नहीं प्राप्त होती है ?

समाधान - यह कोर दोर नहीं है क्योंकि विग्रहणमें भी प्राप्तासत्ति पाई जाती है इसलिये उपकारने उन जीवोंके प्रत्येकशरीर अथवा साधारणशरीर संज्ञा संभव है । अथवा साधारण नामकर्मके उद्भवे आधीन हुए और विग्रहणमें विद्यमान हुए अनस्य जीव परस्पर अनुगत होनेसे एकद्वयको प्राप्त हुए एक शरीरमें रहने हैं इसलिये वे प्रत्येकशरीर नहीं हैं ।

विशेषाद्य - वनमान अथुके समाप्त होने पर वनमान शरीरको छोड़कर उत्तर शरीरके ग्रहण करनेके लिये जा गति होती है उसे विग्रहण कहते हैं । यहाँ विग्रहण अर्थ शरीर है इसलिये विग्रह अर्थात् शरीरके लिये जा गति होती है उस विग्रहण कहते हैं । इसके श्रुति वाचिमुक्तगति आगतिवागति और श्रेयश्चिवागति समप्रकार वार वार हैं ।

संगा । बाहर-सुष्ठुमन्त्रिनसु पंच-चउन्मएसु तस्सेनचि एगवयणनिदेसो कथं वडदे ? अ, तेसिं सादीए एगचर्समवादो ।

एतय चेतुगो मणदि । विन्नाहगर्हए बडुमाणवणप्फइकइया किं पचेयसरिा आहो साहारवसरिा इदि ? किं चात्त ? अ पचेयसरिा, कम्मइयफायजेगे बडुमाणवणप्फइ कइया अर्पता पि कहु बणप्फइकइयपचेयसरिाजमणतचप्पसगा । अ अ एवं सुचे, तेसिं अस्सेल्लेन्नेल्लेगेमेचपमाणपदुप्पाययात्त । अ ते साहारवसरिा वि, तत्त्व—

साधारणप्रहारो साधारणमाजपणगणं च ।

साधारणजीवाण साधारणकम्मजण मणिंदे ॥ ७७ ॥

इहादिगाहादि धुत्तसाहारवसकसुवाजुबलंभात्तो । अ अ पचेय-साहारवसरिावदिरिा वणप्फइकइया अत्थि, तहाविहोवएसामानादो । तस्मात्प्रत्येकं छरीं देहो येषां ते प्रत्येकं छरीा इत्येतन्न भटत्त इति ?

टीका — बाहर जीव पांच प्रकारके और सुष्ठुम जीव चार प्रकारके होते हैं, अतः सूत्रमें तस्सेन 'इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जब पांच प्रकारके बाहर और चार प्रकारके सुष्ठुम जीवोंके अतिरिक्त अनेका एकत्व संभव है इसलिये एकवचन निर्देश करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

टीका — वही पर टीकाकार कहता है कि विग्रहपद्धतिमें विद्यमान वनस्पतिकायिक जीव क्या प्रत्येकशरीर हैं या साधारणशरीर हैं ? यदि इस प्रश्नका फल पूछा जाय तो यह है कि वे जीव इन दोनों विकल्पोंमेंसे प्रत्येकशरीर तो हो नहीं सकते क्योंकि कर्मवकाययोगमें रहने वाले वनस्पतिकायिक जीव अनन्त होनेसे परमस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके अनन्तत्वका प्रसंग न्य आता है । परंतु सूत्रमें ऐसा है नहीं क्योंकि सूत्रमें वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका अन्तर्याम लोकमान्य प्रमाण कहा है । वहीप्रकार वे जीव साधारणशरीर भी नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, वही पर—

साधारण जीवोंका साधारण ही तो आहार होता है और साधारण स्वासोच्छ्वासका ग्रहण होता है । इसप्रकार आधममें साधारण जीवोंका साधारण कक्षय कहा है ॥ ७८ ॥

इत्यादि ग्रन्थार्थोंके द्वारा कहा गया साधारण जीवोंका संक्षेप नहीं पाया जाता है । और प्रत्येकशरीर तथा साधारणशरीर इन दोनोंसे व्यक्तिगत वनस्पतिकायिक जीव पाये नहीं जाते हैं क्योंकि, इसप्रकारका अपेक्षा नहीं पाया जाता है । इसलिये जिनका देह प्रत्येक है वे प्रत्येकशरीर हैं ' यह कथन बहित नहीं होता है ?

एष्य परिहारो बुधदे। जेण जीवेण एष्यण चेव एकसरीरद्विषण सुह-भु-समशुभ-
वेदम्भमिदि कम्मसुवजिदं सो जीवो पचेयसरीरो। जेण जीवेण एकासरीरद्विषणहहि जीवेहि
सह कम्मफलमशुभवेयम्भमिदि कम्मसुवजिदं सो साहारणसरीरो। ण क अछिप्पाउअस्स
सम्भवएसो, सत्त प्रत्यत्तसरमात्तात्। विग्गाहगण्ण पुण पच्चासची अत्थि चि इवदि एसो
ववएसो सम्हा ण पुब्बुत्तदोसस्स सभवो। अइवा पचयसरीरपामकम्मोदयवतो वणप्फ
कम्मा पचयसरीरा। साहारणगामकम्मोदयवतो साहारणसरीरा चि वचम्भ। सरीरगहिद
पढमसमए दोण्णं सरीराणमगदरस्स उदमो इवरीदि विग्गाहगण्ण वहुमाणाप्रीवाणं पचेय
साहारणसरीरववएसो ण पावदि चि बुचे, ण एअ दोसो, तय चि पच्चासची अत्थि चि
उचयतेण तसि पचेय-साहारणसरीरववएससभवतो। विग्गाहगण्ण वहुमाणाप्यतजीवानं
साहारणकम्मपयपरवसाणमप्पोप्पाणुगयत्तणेण एयत्तसुवगयपयसरीरिम्म वहुमाणाप्यदो वा

समाधान - यहाँ पर उपर्युक्त टीकाका परिहार करते हैं। जिस जीवने एक शरीरमें स्थित होकर भयेले ही सुख दुःखके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है यह जीव प्रत्येकशरीर है। तथा जिस जीवने एक शरीरमें स्थित बहुत जीवोंके साथ सुख दुःखकर्म कर्मफलके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है यह जीव साधारणशरीर है। परंतु जिसकी आयु छिन्न नहीं हुई है अर्थात् जो जीव अपनी पर्यायको छोड़कर प्रत्येक प साधारण पर्यायमें उत्पन्न नहीं हुआ है उस जीवके इसप्रकारका व्यवहार नहीं हो सकता है क्योंकि, यहाँ पर प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है। विग्रहगतिमें तो प्रत्यासत्ति पाई जाती है इसलिये यहाँ पर यह व्यवहार होता है अतएव यहाँ पूर्णतः दोष समझ नहीं है। मद्यथा प्रत्येकशरीर नाम कर्मके उत्पत्ति युक्त धनस्पतिकारिक जीव प्रत्येकशरीर है और साधारण नामकर्मके उत्पत्ति युक्त धनस्पतिकारिक जीव साधारणशरीर है ऐसा कथन करना चाहिये।

संका - शरीर ग्रहण होनेके प्रथम समयमें दोनों शरीरोंमेंसे किसी एकका व्यवहार होता है इसलिये विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनोंमेंसे कोई भी संका नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान - यह कोई दोष नहीं है क्योंकि विग्रहगतिमें भी प्रत्यासत्ति पाई जाती है इसलिये उपकारने उन जीवोंके प्रत्येकशरीर मद्यथा साधारणशरीर संका संभव है। मद्यथा साधारण नामकर्मके उत्पत्ति आधीन हुए और विग्रहगतिमें विद्यमान हुए अनन्त जीव परकार अनुगत होनेसे एकत्रकी प्राप्त हुए एक शरीरमें रहने है, इसलिये ये प्रत्येकशरीर नहीं है।

विश्लेषार्थ - धनमान आयुके समाप्त होने पर धनमान शरीरको छोड़कर उत्तर शरीरके ग्रहण करनेके लिये आ गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं। यहाँ विग्रहक अर्थ शरीर है इसलिये विग्रह अर्थात् शरीरके लिये आ गति होती है उस विग्रहगति कहते हैं। इसके उपरान्त पाणिमुच्यगति, सर्गलक्ष्मणगति और गोमुच्यगति इसप्रकार बार बार हैं।

न ते पच्येयसरीरा । एवै छम्भीसरासीभो दृक्पपमाप्यन असंखेजलेगमेचा हवति । एव तिस्र पदुप्यापयोवाप्यामावादे कल-खपेहि परुवणा न कदा ।

संप्रति सुधाविरुद्धेष्वतिथिपरंपरागद्गणपक्षेय तेउकद्वयरासितुप्यापयविहायं नच इस्त्वामो । तं जहा— एगं भणत्तेगं सत्तागमूदं ठविय अबरेगं भणत्ताग विरत्तिय एकद्वयस रुवस्स एकक भणत्ताग दात्तम गगिदसंभगिद कगिय सत्तागगसीत्ता एगस्त्वमवनेयम् । ताथे एक्का अप्पोप्पगुणगारसत्तागा' सद्धा हवदि । तस्सुप्पणारासिस्स पत्तिश्रवमस्स

इतनेसे प्रथम गतिथो छोड़कर दोप तीन गतियां विमल अर्थात् मोक्षरूप हैं । जब जनस्पति कत्रियक जीव ऐसी मोक्षेवाणी गतिसे न्युत्पन्न शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या तीन समयतक साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उद्भय नहीं होता है क्योंकि, प्रत्येक वा साधारण नामकर्मका उद्भय शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे छप्यकर होता है । इसी अमिवायथो अगमने रक्कडर हांफ्यकरने यह हांफ्य की है कि जबतक जनस्पतिप्रत्येक जीव विमलगतिये रहता है तबतक उसके कल्ल होनों कर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका उद्भय नहीं पाया जाता है, इसलिये उसकी साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर इन दोनोंमें किसी भी भेदमें गबना नहीं हो सकती है । इस हांफना समाधान हो मध्यरसे किया गया है । एक तो यह कि यद्यपि विमल अर्थात् मोक्षेवाणी गतिमें उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी कर्मका उद्भय नहीं पाया जाता है, यह हीन है; फिर भी प्रत्येकगतिसे ऐसे जीवथो भी प्रत्येक वा साधारण कल्ल सकते हैं । अर्थात् ऐसा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक वा साधारण नामकर्मके उद्भयसे पुनः होनेवाला है अतएव उपचारसे उसे प्रत्येक वा साधारण कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है । दूसरे विमलका अर्थ मोक्षा न देकर शरीर के देने पर द्युपतिथी अथेसा विमलगतिये अर्थात् न्युत्पन्न शरीरके ग्रहण करनेके क्षिणे होनेवाणी गतिमें साधारण वा प्रत्येक नामकर्मका उद्भय पाया ही जाता है क्योंकि, द्युपतिसे उत्पन्न होनेवाला जीव माहारक ही होता है ।

ये पूर्वोक्त छम्भीस जीवपशियां द्व्यप्रमाणकी अथेसा अलंभ्यात् लोकप्रमाण हैं । यहां पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करनेका कोई उपाय नहीं पाया जाता है इसलिये काळ और क्षेत्रप्रमायकी अथेसा इन छम्भीस जीवपशियांकी प्रकृपना नहीं की ।

अब सुधाविरुद्ध अन्वार्थ परंपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार तेजस्कत्रियक जीव पतिथे प्रमाणके वत्पन्न करनेकी विधिथो बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— एक जनस्पतिको हाथ्याकरूपसे स्थापित करके और दूसरे जनकोकको विरचित करके बस विरचित पतिथे प्रत्येक एकके प्रति जनकोकको द्वेयरूपसे देकर और परस्पर वर्गितसंवर्गित करके हाथ्याकराशियेमेंसे एक कम कर देना चाहिये । तब एक अप्पोप्प गुणगार हाथ्याका माप्य होती है । परस्पर

असंखेजदिमागमेचवग्गसलागा इवसि । वस्सद्वच्छेदणयसलागा असंखेज्जा लोगा । रासी
 वि असंखेज्जलोगमेचो जादे । पुणो उट्ठिदमहारासि विरलेस्स तत्थ एकेकस्स रूपस्स
 उट्ठिदमहारासिपमाणं दात्थमग्गिदसवग्गिदं करिय सलागारासीदो अबेरं रूपमवणेयव्वं ।
 ताभे अप्पोण्यगुणगारसलागा होप्पि । वग्गसलागा अद्वच्छेदणयसलागा रासी च असंखेज्जा
 लोगा । एवमेदेम कमेव नेदव्वं आत्थ लोगमेचसलागरासी समचो वि । ताभे अप्पोण्य-
 गुणगारसलागपमाणं लोगो । सेसत्तिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासि विरलेस्स तं
 चेव सलागमूदं ठविय विरलिय-एककेकस्स रूपस्स उप्पण्यमहारासिपमाणं दात्थमग्गिद
 संवग्गिदं करिय सलागारासीदो एगरूपमवणेयव्वं । ताभे अप्पोण्यगुणगारसलागा लोगो
 रूपाहिओ । सेसत्तिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उप्पण्यरासि विरलिय रूपं पडि उप्पण्य
 रासिमेव दात्थमग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागारासीदो अप्पेगरूपमवणेयव्वं । तदो अप्पोण्य
 गुणगारसलागाओ लोगो दुरूपाहिओ । सेसत्तिगमसंखेज्जा लोगा । एवमेदेम कमेव

वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई इस पश्चिमी वर्गशब्दाकार्यं पदोपमके असंख्यातयं मागमात्र
 होती है, इस उत्पन्न पश्चिमी वर्गशब्दशब्दाकार्यं असंख्यातलोकप्रमाण होती है और वह
 उत्पन्न पश्चिमी असंख्यात लोकप्रमाण होती है । पुनः इस उत्पन्न हुई महाराशिके विरक्षित
 करके और इस विरक्षित पश्चिमी प्रत्येक एकके प्रति इसी उत्पन्न हुई महाराशिके दोष
 रूपसे लेकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शब्दाकार्यशक्तिसे वृत्तरीतिर एक कम करना
 चाहिये । तब अप्पोण्य गुणकार शब्दाकार्यं दो होती है और वर्गशब्दाकार्यं वर्गशब्दशब्दाकार्यं,
 तथा उत्पन्नपश्चिमी असंख्यात लोकप्रमाण होती है । इसीप्रकार लोकप्रमाण शब्दाकार्यपश्चिमी समाप्त
 होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब अप्पोण्य गुणकार शब्दाकार्यंका प्रमाण लोक होगा
 और दोष तीन पश्चिमी वर्गोत् उत्पन्न समय उत्पन्न हुई महाराशि और इसकी वर्गशब्दाकार्यं
 तथा वर्गशब्दशब्दाकार्यं असंख्यात लोकप्रमाण होगी । पुनः इसप्रकार उत्पन्न हुई महाराशिके
 विरक्षित करके और इसी पश्चिमी शब्दाकार्यपद स्थापित करके विरक्षित पश्चिमी प्रत्येक
 एकके प्रति इसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको दोषरूपसे लेकर वर्गितसंवर्गित करके
 शब्दाकार्यशक्तिसे एक कम कर देना चाहिये । तब अप्पोण्य गुणकार शब्दाकार्यं एक अधिक
 लोकप्रमाण होती है । दोष तीनों पश्चिमी वर्गोत् उत्पन्न हुई महाराशि, वर्गशब्दाकार्यं और
 वर्गशब्दशब्दाकार्यं असंख्यात लोकप्रमाण होती है । पुनः उत्पन्न हुई महाराशिके विरक्षित
 करके और इस विरक्षित पश्चिमी प्रत्येक एकके प्रति इसी उत्पन्न हुई महाराशिके लेकर
 वर्गितसंवर्गित करके शब्दाकार्यशक्तिसे वृत्तरीतिर एक पदा देना चाहिये । इस समय अप्पोण्य
 गुणकार शब्दाकार्यं दो अधिक लोकप्रमाण होती है । दोष तीनों पश्चिमी असंख्यात लोकप्रमाण

न ते पचेयसरिता । एदे छब्बीसरासीजो दण्णपमापेण असंखेखल्लोनामेत्ता इवन्ति । एत्थ निसेस-
पदुप्पायबोवायामात्तादो कस्स-खेचेहि पत्थना न कदा ।

सपदि मुचाविरुद्धेनप्रतियपरंपरागदोवएसेन तेउकाइपरासितप्यायजनिहार्यं वच
इस्वामो । तं बहा- एगं पयत्तोर्गं सलगाभूदं ठविय अवरेर्गं पयत्तोर्गा विरतिय एकेइस्व
रुबस्व एकेइं पयत्तोर्गं दत्तगा बमिदसबमिद करिय सलगागारीदो एगरुजमबयेपय्यं ।
वाये एका अण्णोप्यागुणगारसलगा' लहा इवदि । तस्सुप्यप्परासित्स पत्तिशामस्य

इसमेंसे प्रथम गतिच्छेद छोड़कर शेष तीन गतियाँ विग्रह अर्थात् मोक्षरूप हैं। जब वनस्पति कृषिक जीव पेसी मोक्षबाजी गतिसे न्यूनतम शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या तीन समवर्तक साधारण या प्रत्येक नामकर्मका कल्प नहीं होता है क्योंकि, प्रत्येक साधारण नामकर्मका कल्प शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे सम्पन्न होता है। इसी अभिप्रायको ध्यानमें रखकर हांछाकारने यह हांछा भी है कि जबतक वनस्पतिकृषिक जीव विग्रहगतिमें रहता है तबतक उसके एक दोनों कर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका कल्प नहीं पाया जाता है इसलिये उसको साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर इन दोनोंमें किसी भी कर्ममें वनस्पति नहीं हो सकती है। इस हांछाका समाधान दो प्रकारसे किया गया है। एक तो यह कि वक्ष्य विग्रह अर्थात् मोक्षबाजी गतिमें एक दोनों कर्मोंमेंसे किसी कर्मका कल्प नहीं पाया जाता है, यह ठीक है। फिर भी प्रत्यासत्तिसे देखे जीवको भी प्रत्येक या साधारण कल्प सकते हैं। अर्थात् ऐसा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक या साधारण नामकर्मके कल्पसे युक्त होनेवाला है अतएव वक्ष्यकारने इसे प्रत्येक या साधारण कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है। दूसरे विग्रहका अर्थ मोक्ष न लेकर शरीर के लेने पर इगुगतिची अपेक्षा विग्रहगतिमें अर्थात् न्यूनतम शरीरके ग्रहण करनेके लिये होनेवाली गतिमें साधारण या प्रत्येक नामकर्मका कल्प पाया ही जाता है क्योंकि, इगुगतिसे उत्पन्न होनेवाला जीव व्यापारक ही होता है।

ये पूर्वोक्त छात्रों में जीवपशियों अध्ययनमात्र की अपेक्षा सर्वोत्कृष्ट जोरप्रमाण है। यहाँ पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करने का कोई क्पाव नहीं पाया जाता है। इसलिये काळ और क्षेत्रप्रमाण की अपेक्षा इन छात्रों में जीवपशियों की प्रकृष्टता नहीं थी।

मन सृष्ट्याधिक्य भाचार्य परंपराओं में यह रूप उत्पन्न के अनुसार वैज्ञानिक जीवन पद्धति प्रमाणों के बल पर करने की विधि को बताते हैं। वह इस प्रकार है— एक मनकोकशो राजाधिराजसे स्थापित करके और दूसरे मनकोकशो विरहित करके उस विरहित पक्षि से प्रत्येक एकके प्रति मनकोकशो रोककर और परस्पर वर्णितसंवर्धित करके राजाधिराजविनिसे एक कम कर देना चाहिये। तब एक अत्यन्त गुणधार राजाधिराज प्राप्त होती है। परस्पर

गुणगारसलागा चउत्तरारं द्विविदसलागरासिपमाण होदि ।

के वि अद्रिया सलागरासिस्म अद्र गदे तेउक्कद्रयरासी उप्पज्जदि चि मणति ।
 के वि तं गेण्ठेति । कुदो ? अद्रुक्कुरासिसमुदयस्स वग्गसमुद्धिदामावादो । तेउक्कद्रय
 अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुद्धिदा चि क्व ज्ञापिज्जे ? परियम्मवयपादो । के वि
 अद्रिया एव मणति । अहा— एसो रासी तेउक्कद्रयरासिस्स गुणगारसलागपमार्ण ण मवदि ।
 पुणो को होदि चि पुचे बुद्ध— गुणकमाणस्स लोगस्स गुणगारसरूपेण पवेसमाणलोगार्ण
 जाओ सलागाओ ताओ तेउक्कद्रयअण्णोण्णगुणगारसलागा पुणंति । एदाओ वग्गसमुद्धि
 दाओ ण पुत्तिस्सओ चि । तम्हा अद्रुक्कुरागारसलागोत्तरसो विरुज्जे, एसो ण विरुज्जे
 इदि । एव पि ण मवदे । कुदो ? लोगदछेप्पण्णं तेउक्कद्रयरासिस्स अद्रच्छेदमए मागे
 हिदे अ ठद्र तं पिरलिय एक्केक्कस्स रूपस्स ममलोग दाऊण्णोण्णमत्थे क्खे तेउक्कद्रय
 रासी उप्पज्जदि । हेत्तिष्ठिरिल्लिदरासी वि तेउक्कद्रयअण्णोण्णगुणगारसलागपमार्ण मवदि ।

राशि उत्पन्न होती है । उस तेजस्वयिक राशि की अम्योम्य गुणकार शास्त्रकार जीपीवार
 स्थापित अम्योम्य गुणकार शास्त्रकारादिप्रमाण हैं ।

कितने ही आचार्य जीपीवार स्थापित शास्त्रकाराशिके भाषे प्रमाणके व्यतीत होने
 पर तेजस्वयिक जीपीराशि उत्पन्न होती है ऐसा कहते हैं । परंतु कितने ही आचार्य इस
 कथनको नहीं मानते हैं क्योंकि चाहे तीनवार राशिके समुदाय वर्गपाठमें उत्पन्न नहीं है ।

श्रुति—यह ठीक है कि द्विवार (चाहे तीनवार) राशिके समुदाय वर्गोत्तरक नहीं है
 पर तेजस्वयिक राशिकी अम्योम्य गुणकार शास्त्रकार वर्गपाठमें उत्पन्न है यह कैसे जाना
 जाता है ?

समाधान—कह आचार्योंके मतमें यह बात परिकर्मके पक्षसे जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य इसप्रकार कहते हैं कि यह पूर्वोक्त राशि (द्विवार राशि) तेजस्वयिक
 राशिकी गुणकार शास्त्रकाराशिके प्रमाणरूप नहीं है । फिर कौनसी राशि तेजस्वयिक राशिकी
 गुणकार शास्त्रकाराशिके प्रमाणरूप है, ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुणमान कोके
 गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले कोकोकी मितमी शास्त्रकारों की कतमी तेजस्वयिक
 राशिकी अम्योम्य गुणकार शास्त्रकार की जानी हैं । ये अम्योम्य गुणकार शास्त्रकार वर्गमें उत्पन्न
 हुई हैं यहकोकी सर्वात् चाहे तीनवार राशिकरूप नहीं, इसलिये द्विवार राशिप्रमाण गुणकार
 शास्त्रकारोंका उपदेश विरोधको प्राप्त होता है यह उपदेश नहीं ।

परंतु इसप्रकारका कथन भी प्रहित नहीं होता है, क्योंकि, कोकेकी सर्वात्कोसे
 तेजस्वयिक राशिके सर्वोक्तोंके भागित करने पर जो क्षम्य भाषे इसे विरलित करने और
 उस विरलित राशिके मत्थेक एकके प्रति वनकोकोके रूपरूपसे लेकर परस्पर गुण्य करते पर
 तेजस्वयिक राशि उत्पन्न होती है और अमस्तन विरलित राशि भी तेजस्वयिक राशिकी

दुग्धशुक्लरूपसंयुज्जमेचलोमावस्रगस्तु दुग्धवाहियतागमिह पविद्वास्तु चचारि वि अमंतुजा
 ताया हवति । एवं जेयम् ज्ञात विदियवाहदुविहमस्रगतासी समचो वि । तापे वि चचारि
 वि असंखेजा लोमा । पुनो उद्धिदगतिं मलतामृद ठविय अहरेगमुद्धिदमहारासिपमत्वं विर
 सेऊव उद्धिदमहारासिपमायमव रुवं पठि दाऊव बगिदमं वमिदं करिय सलागतासीदो एग
 रुमवजेयम् । तापे चचारि वि असंखेजा लोमा । एवमयेय कमेग जेदम् ज्ञात विदियवा
 ठवियसलागतासी समचो वि । तापे चचारि वि असंखेजा लोमा । पुनो उद्धिदमहारासि
 तिप्यठिरासिं काऊव तयेगं सलागमृदं ह्विय अण्येगतासिं निरेलेऊव तत्त एक्केवकम्म
 रुवस्म एगारासिपमाव दाऊव बगिदमं वगिदं करिय सलागतासीदो एगरुमवजेयम् ।
 एवं पुनो पुनो करिय जयम् ज्ञात अदिक्कं तअण्णोण्णगुणगारसलागाहि ऊवचउम्यवाहिद
 अण्णोण्णगुणगारमल्लयगतासी समचो वि । तापे तेउकम्पगतासी उद्धिदो हवति । तस्स

होती है । इसप्रकार इसी क्रमसे दो कम ताऊव संत्पातमात्र कोकप्रमाण अण्योम्य गुणकार शब्दा
 कार्त्तिके दो अधिक कोकप्रमाण अण्योम्य गुणकार शब्दाकार्त्तिके प्रविष्ट होने पर चारों राशिवां
 भी संस्रव्यात कोकप्रमाण होती है । इसीप्रकार वृश्चरीवार स्थापित शब्दाकार्त्तिके समाप्त
 होनेतक इसी क्रमसे छे जाना चाहिये ।—तब भी चारों भी राशिवां—अस्रव्यात कोकप्रमाण
 होती है । पुनः अन्तमें वररघ हूर्—महाराशिवां शब्दाकार्त्तिके स्थापित करके और वृश्चरी
 उद्धि—उत्पन्न हूर् महाराशिवां प्रमाणको विरक्षित करके और वररघ हूर् उद्धि महाराशिवां
 प्रमाणको विरक्षित राशिवां प्रत्येक एकके प्रति द्वैयरूपसे द्वैकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके
 शब्दाकार्त्तिके—एक कम कर देना चाहिये । तब भी चारों राशिवां संस्रव्यात कोकप्रमाण
 होती है । इसीप्रकार तीसरीवार स्थापित शब्दाकार्त्तिके समाप्त होनेतक इसी क्रमसे छे
 जाना चाहिये । तब भी चारों राशिवां अस्रव्यात कोकप्रमाण है । पुनः अन्तमें वररघ
 हूर्—महाराशिवां तीस प्रविष्टाशिरूप करके अन्तमें एक राशिवां शब्दाकार्त्तिके स्थापित
 करके, वृश्चरी एक राशिवां विरक्षित करके और वररघ विरक्षित राशिवां प्रत्येक एकके प्रति एक
 राशिवां प्रमाणको द्वैयरूपसे द्वैकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शब्दाकार्त्तिके—एक कम
 कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करके तब तक छे जाना चाहिये जब तक कि अतिरिक्त
 शब्दाकार्त्तिके अर्थात् पक्षी वृश्चरी और तीसरीवार स्थापित अण्योम्य गुणकार शब्दाकार्त्तिके
 न्यून चौथीवार स्थापित अण्योम्य गुणकार शब्दाकार्त्तिके समाप्त होती है । तब तेजस्व्यधिक

१ एत वचन द्वितीयावृत्तिवत्प्रत्ययविच्छेदकालात्किमुच्यतेवृत्तिवत्प्रत्ययविच्छेदकालाद्विपरितोषादी काला वरो-
 सप्रत्ययप्रतिः केवलप्रतिपत्तिः । प्रमाणं अस्ति ।—'मो. जी. जी. १४' पुनः उपरोक्तप्रत्ययविच्छेदकालात्
 निम्नलिखित कथा वर्णितप्रत्ययप्रत्ययविच्छेदकालात्किमुच्यतेवृत्तिवत्प्रत्ययविच्छेदकालात्प्रतिपत्तिः । मो. जी.,—जी. १
 यो. पु. १८४ (वर्णित विपरित)

गुणगारसलागा चउत्पत्तारं दृषिदसलागरासिपमार्णं होदि ।

के वि अद्रिया सलागरासिस्स अद्र गदे तेउक्काइयरासी उप्पज्जदि चि मणंति ।
 के वि सं येच्छेत्ति । कुदा ? अद्रुकरासिसमुदयस्स वग्गमसुद्धिदत्तामाभादो । तेउक्काइय
 अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुद्धिदा चि कप जाणिजदे ? परियम्मवयणादो । के वि
 अद्रिया एव मणंति । जहा— एस। रासी तेउक्काइयरासिस्स गुणगारसलागपमां ष मभदि ।
 पुणो को होदि चि बुधे बुधद— गुणअमाणस्स लोगस्स गुणगारसरूपेण पवेसमाणलोगाण
 आभो सलागाआ ताभो तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागा बुधंति । एदाओ वग्गसमुद्धि
 दाओ ष पुत्तिगुहाआ चि । तम्हा अब्धुहुगुणगारसलागावपसा विरुद्धदे, एसो ष विरुद्धदे
 इदि । एव पि ण पढेदे । कुदो ? लोगदळेयणएहि तेउक्काइयरासिस्स अद्रच्छेदणए भागे
 हिदे व सद्द वं विरलिय एककेक्कस्स रुवस्स वमलोग दाऊणण्णोण्णमत्थे कद् तेउक्काइय
 रासी उप्पज्जदि । हेत्तिहुविरलित्तिदराणी वि तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागपमां मभदि ।

राशि उत्पन्न होती है । इस तेजस्त्रयधिक राशिकी अन्त्योन्म गुणकार शब्दाकार कीधीवार
 स्थापित अन्त्योन्म गुणकार शब्दाकारराशिप्रमाण है ।

किन्तु ही आचार्य कीधीवार स्थापित शब्दाकारराशिके भाषे प्रमाणके व्यतीत होने
 पर तेजस्त्रयधिक कीधीराशि उत्पन्न होती है ऐसा कहते हैं । परंतु किन्तु ही आचार्य इस
 कथनको नहीं मानते हैं क्योंकि सरदे तीनवार राशिका समुदाय वर्गोत्पत्ति उत्पन्न नहीं है ।

संका— यह ठीक है कि हुत्तवार (सादे तीनवार) राशिका समुदाय वर्गोत्पत्ति नहीं है,
 पर तेजस्त्रयिक राशिकी अन्त्योन्म गुणकार शब्दाकार वर्गोत्पत्ति उत्पन्न है यह कैसे जाना
 जाता है ?

समाधान— एक भाषायोक्ति मतमें यह बात परिकर्मके वचनसे जानी जाती है ।

किन्तु ही भाषाय इत्यकार कहते हैं कि यह पूर्वोक्त राशि (हुत्तवार राशि) तेजस्त्रयिक
 राशिही गुणकार शब्दाकारराशिके प्रमाणरूप नहीं है । फिर कीनसी राशि तेजस्त्रयिक राशिही
 गुणकार शब्दाकारराशिके प्रमाणरूप है ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुण्यमान छोक्के
 गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाला छोक्कोही सितनी शब्दाकार ही उत्पत्ति तेजस्त्रयिक
 राशिही अन्त्योन्म गुणकार शब्दाकार नहीं जानी है । व अन्त्योन्म गुणकार शब्दाकार वर्गमें उत्पन्न
 हुई है यहछेकी अर्थात् सादे तीनवार राशिकरूप नहीं, इसलिये हुत्तवार राशिप्रमाण गुणकार-
 शब्दाकारकोका उपेक्षा विरोधको प्राप्त होता है यह वपदेश नहीं ।

परंतु इसप्रकारका कथन भी यदित नहीं होता है, क्योंकि, छोक्के अद्रच्छेदोत्ते
 तेजस्त्रयिक राशिके अर्धच्छेदोत्ते प्राकृत करने पर जो छण्य भागे वसे विरलित करने और
 वस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनछोक्को होयकपसे हुत्त परस्पर गुणा करने पर
 तेजस्त्रयिक राशि उत्पन्न होती है और अथस्तन विरलित राशि भी तेजस्त्रयिक राशिही

जपरि अण्योऽप्यगुणगारसत्तागा तेउद्वद्वयरासिबन्नासत्तागाहिता असंखेज्जगुणचर्चं पचाओ ।
 कुदो ? तेउद्वद्वयरासिस्स अद्वध्देद्वयपसत्तागापद्वमवगमूहादा असंखेज्जगुणचर्चो । न न
 एदमिच्छिज्जवे । कुदो ? तेउद्वद्वयरासिबगसत्तागादो तस्स असंखेज्जगुणहीनचर्चा । तं कर्पं
 गण्धे । परियम्मवयणादो । तं चहा— तेउद्वद्वयरासिस्स अण्योऽप्यगुणगारसत्तागा वगिज्ज
 माणा वगिज्जमाणा असंखज्जं छेत्ता वग्गं हेहोदो उव्वरिमसखज्जगुण गत्तुव तेउद्वद्वय-
 रासिस्स वगसत्तागां पत्तदि पि । एस विरल्लिद्वरसी न वग्गसमुत्तिदो वि । कुदो ? तोम-
 द्धेद्वयपसत्तागातेउद्वद्वयरासिस्स अद्वध्देद्वयमेववादो । विरल्लिद्व— दिव्यमाप्तरसीव
 समावचणेण तेउद्वद्वयरासिस्स ववावचणभारासमुप्यप्यवचणेण न तेउद्वद्वयरासिस्स अद्व-
 ध्देद्वयपसत्तागाओ न वग्गसमुत्तिदाओ पि ? न एद, इहवाचो । न न परियम्मेव सह
 विरोदो, तस्स तदुदेवपदुप्यायणे वावारादो । एत्थ पुन अद्वध्दुव्वारमेवाओ वेव तेउद्व-

अण्योऽप्य गुणकार शास्त्राकारोंके समानरूप होती है। पर इस मतमें इतना विरोध है कि अण्योऽप्य
 गुणकार शास्त्रकार तेजस्वयिकराशिची वर्गशास्त्राकारोंसे असंख्यातगुणी हो जाती है,
 क्योंकि, इसप्रकार जो अण्योऽप्य गुणकार शास्त्राकार वत्पद्य होती है वे तेजस्वयिकराशिची
 वर्गशास्त्राकारोंके प्रथम वर्गमूहसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं। लेकिन यह सब
 नहीं है क्योंकि तेजस्वयिकराशिची वर्गशास्त्राकारोंसे अण्योऽप्य गुणकार शास्त्राकाराधि
 असंख्यातगुणी हीन है।

प्रश्न—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—परिकर्मके बचनसे जाना जाता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—
 तेजस्वयिकराशिची अण्योऽप्य गुणकार शास्त्राकारोंको वत्तरोत्तर वर्णित करते हुए अर्ध-
 प्यात लोकप्रमाण अर्थात् अक्षरान्त वर्गोंसे ऊपर असंख्यातगुणे जाकर तेजस्वयिकराशिची
 वर्गशास्त्राकार प्राप्त होती हैं।

इससे यह विपक्षित राशि अर्थात् गुणकाररूपसे प्रवेशके प्राप्त होनेवाले लोकोंकी
 श्रितकी शास्त्राकार हो वह राशि वर्गसमुत्पद्य मी नहीं है क्योंकि, यह लोकके वर्गशास्त्रोंसे
 छिन्न तेजस्वयिकराशिके अर्धप्राप्तप्रमाण है।

प्रश्न—विपक्षितराशि और वत्तरोत्तर समान होनेसे और तेजस्वयिकराशि समाधान
 प्राप्तमें वत्पद्य हुई होनेसे तेजस्वयिकराशिची अर्धप्राप्तप्रमाण मी तो वर्गसमुत्पद्य नहीं है।

समाधान—पर यह कोई बात नहीं है क्योंकि, यह बात हमें इस है। और इसतत्त्व
 परिकर्मके साथ मी विरोध नहीं व्याता है, क्योंकि, परिकर्मका इसके वद्वेवमात्रके प्रतिपादन कर
 भेमें व्यापार होता है। यहां पर तो केवल तेजस्वयिकराशिची साके तीन राशिवाक अण्योऽप्य

इयरासिअण्णोण्णगुणगारसलागाओ चि वेचम्भ, आइरियपरंपरागाओवपसचादो । म च वग्गससुद्धिदत्त गुणगारसलागाणं गत्थि चि अद्दुक्खएसो न मइओ, अद्दुक्खनपसण्णहाण्णव पत्तिदा चेन तद्वग्गससुद्धिदत्तस्म अवगमत्तो । न परियम्मदा वग्गवसिद्धी, तस्स तेउक्का इयअद्दुक्खेवणएदि मनेपत्तियचादो ।

अहंसा तेउक्काइयरासिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागाओ सलागभूदाओ वुविकम

गुणकार शसाक्षर्यं होती है ऐसा प्रमाण करना चाहिये । क्योंकि आचार्य परंपरासे इसी-प्रकारका उपदेश आ रहा है । गुणकार शसाक्षर्य वर्गसमुत्पन्न नहीं है, इसलिये साढ़े तीनवारका उपदेश ठीक नहीं है, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, साढ़े तीनवारका उपदेश सम्यग्भा बन नहीं सकता है, इसीसे गुणकार शसाक्षर्य वर्गसमुत्पन्न नहीं है, यह बात जानी जाती है । परिकर्मसे इनके वर्गत्वकी भी सिद्धि नहीं होती है । क्योंकि, इसका तेजस्व्यविकाराधिके वर्गव्येष्टियोंके साथ अनैकान्त है ।

विशेषार्थ—यहां पर तेजस्व्यविकाराधिकी अम्योग्य गुणकारशसाक्षर्यं कितनी है इस विषयमें आचार्य परंपरासे भाषे हुए मतके अतिरिक्त दो और मतोंका उल्लेख किया गया है । उनसोकको लेकर विरुद्ध रूप और शसाक्षर्यक्रमसे तीसरीवार शसाक्षर्याधिके समाप्त होने पर ओ महाप्राप्ति उत्पन्न हो उसकेसे पहली दूसरी और तीसरी शसाक्षर्याधिके प्रदा होने पर दोष राशिबो शसाक्षर्य मान कर साढ़े तीन राशिपार अम्योग्य गुणकार शसाक्षर्यबोध प्रमाण आ जाता है । यह मत आचार्य-परंपरासे आया हुआ होनेसे प्रमाण है । दूसरा मत यह है कि तीसरीवार शसाक्षर्याधिके समाप्त होने पर ओ महाप्राप्ति उत्पन्न हो उसके भाषे प्रमाणकी शसाक्षर्यपसे स्थापित करना चाहिये तब जाकर साढ़े तीन राशिपार अम्योग्य गुणकार शसाक्षर्यबोध प्रमाण होता है । पर कितने ही आचार्य इस मतका विरोध करते हैं । इनके मतसे यह साढ़े तीन राशिपार अम्योग्य गुणकार शसाक्षर्याधिके उपदेश वर्गसमुत्पन्न नहीं है इसलिये प्रमाणभूत नहीं है । तेजस्व्यविकाराधिकी अम्योग्य गुणकार शसाक्षर्य वर्गसमुत्पन्न है इस मतकी पुष्टि य आचार्य परिकर्मके आधारसे करते हैं । कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि कितने लोकप्रमाणराशिबो प्रत्येक एक पर सोककी स्थापित करके परस्पर गुणित करनेसे तेजस्व्यविकारादि उत्पन्न होती है उनसे लोकप्रमाणराशि तेजस्व्यविकाराधिकी अम्योग्य गुणकार शसाक्षर्य होती है । एवं ये वर्गसमुत्पन्न भी मानते हैं । पर बीरसेनमार्गान् दूसरे मतके समान इस मतको भी प्रमाणभूत नहीं माना है । क्योंकि, इसप्रकार अम्योग्य गुणकार शसाक्षर्यबोध ओ प्रमाण प्राप्त होता है यह तेजस्व्यविकाराधिकी वर्गशसाक्षर्याधिके संसंस्थानगुणा हो जाता है । पर ब्रह्मातृसार अम्योग्य गुणकार शसाक्षर्याधिके वर्गशसाक्षर्याधिके संसंस्थानगुणी होनी चाहिये ।

अथवा, तेजस्व्यविकाराधिकी अम्योग्य गुणकार शसाक्षर्यबोध शसाक्षर्यपसे स्थापित

तदुपपत्तिविमिश्ररासीय षण्मिदसद्विगदे काठ्म तउक्काइपरासी उप्पाएवणा । तेउका इपरासि मागहार काठ्म तसुवरिमवग्ग विहज्जमाणरासि करिय खंविद मज्झिद-विस्सिद भवहिदाणि आधिस्स वचणाणि । तस्म पमाणसुवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिमाणो । करण, तेउक्काइपरासिणा उवरिमवग्गे मागे हिदे तेउक्काइपरासी चव आगच्छदि सि । एत्थ संदेहा-माया निठरी य वचणा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो भदि । एत्थ हेट्ठिमवियप्पो पत्ति, तेउक्काइपरासिस्म विहज्जमाणरासिपडमवग्गमूलमेवणादो । उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिद वचइस्सामो । तेउक्काइपरासिणा उवरिमवग्गे मागे हिदे तेउक्काइपरासी आगच्छदि । तस्म मागहारस्स अज्जच्छेदययमे रासिस्स अज्जच्छेदयये क्खे तेउक्काइपरासा आगच्छदि । अहवा तेउक्काइपरासिणा तसु वरिमवग्ग गुणेत्थ तदुवरिमवग्गे मागे हिद तेउक्काइपरासी आगच्छदि । तस्स अज्जच्छेदययमेचे रासिस्म अज्जच्छेदयये क्खे वि तेउक्काइपरासी आगच्छदि । अजरूपे वचइस्सामो । तेउक्काइपरासिणा तेउक्काइपरासिउवरिमवग्गसमाणअजरूपवग्ग गुणेत्थ तसुवरिमवग्गो मोक्ष

करके और उक्काइ उत्पत्तिकी निमित्तभूत राशिर्षोको धर्मितसंबर्धित करके तेजस्वाधिकराशि वत्तय कर देना चाहिये । तेजस्वाधिकराशिर्षो मागहार करके और उसके उपरिम वर्गको भग्नमानराशि करके खंडित भाजित विरहित और अणुवत्तय जानकर वधन करना चाहिये । इसका प्रमाण तेजस्वाधिक राशिर्षोके उपरिम वर्गका भक्तवत्तयों भाग है । इसका कारण यह है कि तेजस्वाधिकराशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित करने पर तेजस्वाधिक जीवराशि ही आती है । यहाँ पर संदेह नहीं होनेसे निश्चिन्त वधनकी व्यवस्थाप्रता नहीं है ।

विकल्प दो प्रकारका है, अथलन विकल्प और अपरिम विकल्प । परंतु यहाँ पर अथलन विकल्प नहीं पाया जाता है क्योंकि तेजस्वाधिकराशि भग्नमान राशिर्षोके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

अपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, पृथीत पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकार । उन्नतेसे पृथीत अपरिम विकल्पको वतछाते हैं—तेजस्वाधिक राशिर्षोके उसके अपरिम वर्गके मज्झित करने पर तेजस्वाधिक राशिर्षोका प्रमाण आता है । उक्त मागहारके अथच्छेदप्रमाण उक्त भग्नमान राशिर्षोके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्वाधिक राशि आती है । अथवा तेजस्वाधिक राशिर्षोके प्रमाणसे उसके अपरिम वर्गको गुणित करके अन्य राशिर्षोका उपरिम वर्गके अपरिम वर्गमें घात देने पर तेजस्वाधिक राशिर्षोका प्रमाण आता है । उक्त मागहारके अथच्छेदप्रमाण उक्त भग्नमान राशिर्षोके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्वाधिक राशिर्षोका प्रमाण आता है ।

जब अणुवत्तय अपरिम विकल्पको वतछाते हैं—तेजस्वाधिक राशिर्षोके तेजस्वाधिक राशिर्षोके अपरिम वर्गके समान धक्के अपरिम वधनको गुणित करके जो अणु घाते इसका तेजस्वाधिक राशिर्षोके अपरिम वर्गको घेवकर उसके अपरिम वर्गमें भाग देने

तदुपरिमवर्गो मागे हिंदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्दच्छेदणयमेपे रासिस्स अद्दच्छेदणय करे वि तेउक्काइयरासी आगच्छदि । घणावने वचस्सामे । तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासिउत्तमवर्गसममाणअद्दच्छेदणय गुणेऊय तस्सुपरिमवर्ग मोत्तम तदुपरिमवर्गसममाणवेरुवरम्मा गुणेऊय तस्सुपरिमवर्ग मोत्तम तदुपरिमवर्गो मागे हिंदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्दच्छेदणयमेपे रासिस्स अद्दच्छेदणय करे वि तेउक्काइयरासी अरत्तिहृदे । विहज्जमाणवममाण असंखेखदिमाण गहिद गहिदो गहिदगुणगारो च वचम्भे । एन तेउक्काइयपरुवणा समवा ।

तेउक्काइयरासिमसखेज्जलगण मागे हिंद लद्ध तम्हि चेव पक्खिचे पुढवि काइयरासी हादि । तम्हि असखजलगण मगे हिंदे लद्ध तम्हि चेव पक्खिचे आउक्काइयरासी हादि । तम्हि असखजलगण मगे हिंदे लद्ध तम्हि चेव पक्खिचे आउक्काइयरासी हादि । एदेवि तिण रासिणि अगारकाळस्सुणायण

पर तेउक्काइय राशिक्का प्रमाण जाता है । उक्त भागहारके जितने अर्थछेत्त हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिसे अर्थछेत्त करने पर भी तेउक्काइय राशिक्का प्रमाण जाता है ।

अब घनावनमें उपरिम विचवारको बनवाने हैं— तेउक्काइय राशिसे तेउक्काइय राशिसे उपरिम वर्गके समान अनेके उपरिम वर्गोंके गुणित करने पुन तेउक्काइय राशिसे उपरिम वर्गको छोड़कर इसके उपरिम वर्गके समान चिकपके मगरो गुणित करने तेउक्काइय राशिसे उपरिम वर्गके उपरिम मगरो छोड़कर इसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेउक्काइय राशिक्का प्रमाण जाता है । उक्त भागहारके जितने अर्थछेत्त हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिसे अर्थछेत्त करने पर भी तेउक्काइय राशिक्का प्रमाण जाता है । निमज्जमाण वर्गोंके असत्प्रातये मकरूप तेउक्काइय राशिसे द्वारा पृथीतपृथीत और पृथीतगुणकारण करण करता चाहिये । इनप्रकार तेउक्काइय जीयरासिही प्रकरण समाप्त हुए ।

तेउक्काइय राशिसे असत्प्रात छोड़के प्रमाणसे भाजित करने पर जो मध्य भागे उसे उक्त तेउक्काइय राशिसे प्रमाणमें प्रक्षिप्त करने पर पृथिवीकायिक राशिक्का प्रमाण होता है । इस पृथिवीकायिक राशिसे असत्प्रात छोड़के प्रमाणसे भाजित करने पर जो मध्य भागे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिमें मिला देने पर अन्तराधिक राशिक्का प्रमाण होता है । इस अन्तराधिक राशिसे असत्प्रात छोड़के प्रमाणसे भाजित करने पर जो मध्य भागे उसे उसी अन्तराधिक राशिमें मिला देने पर पायुकायिक राशिक्का प्रमाण होता है ।

अब इन तीनों राशिपोंके व्यवहारकाउके उत्पन्न करनेकी विधियेको बतलाने

तदुपपत्तिविमिश्रतासीत् समिदसवर्गिदे काल्प्य तेउककप्ररासी उपाएद्व्या । तउका
इयरासि मागहार काल्प्य तसुवरिमवग्ग विहज्जमापरासि करिय एहिद-माज्जिद-विरुद्धि
अवदिदाणि आबिऊग वचय्याणि । तस्म पमागसुवरिमवग्गसम असंखज्जदिमागो । काल्प्य,
तेउककप्ररामिण्या उवरिमवग्ग माग हिदे तेउककप्ररासी चैव आगच्छदि पि । एत्थ संबो-
भाया विरुची य वचय्या ।

वियप्पो दुविहो, इट्ठिमवियप्पा उवरिमवियप्पा चदि । एत्थ इट्ठिमवियप्पा गरिब,
तेउककप्ररासिस्म विहज्जमापरासिपडमवग्गमूलमचचादो । उवरिमवियप्पो तिविहा,
गहिदा गहिदगहिदो गहिदगुणगतो चदि । तत्थ गहिद वचइस्सामो । तेउककप्ररामिणा
उवरिमवग्ग माग हिदे तेउककप्ररासी आगच्छदि । तस्म मागहारस्स अट्ठच्छदयमचे
राधिरस्स अट्ठच्छदमये कद तेउककप्रराणा आगच्छदि । अहवा तेउककप्ररासिणा तसु
वरिमवग्ग गुणेऊय तदुवरिमवग्गो माग हिदे तेउककप्ररासी आगच्छदि । तस्सट्ठच्छेद-
यमच रासिस्म अट्ठच्छदय कद रि तेउककप्ररासी आगच्छदि । अट्ठस्से वचइस्सामा ।
तेउककप्ररासिणा तउककप्रयउवरिमवग्गसमागज्जस्सवग्गो गुणेऊय तसुवरिमवग्गो मोल्ल

करके और उसकी उत्पत्ति की निमित्तमूल राशियोंको वर्गीतसवर्गित करके तेजस्वाधिकराशि
उत्पन्न कर लेना चाहिये । तेजस्वाधिकराशि को मागहार करके और उसके उपरिम वर्गों
अन्वयावराशि करके संश्लिष्ट भाजित विरहित और अपहृतका जानकर बयन करना चाहिये ।
उसका प्रमाण तेजस्वाधिक राशिसे उपरिम वर्गका अन्वयशतर्था भाग है । इसका
कारण यह है कि तेजस्वाधिकराशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित करने पर तेजस्व विक
औपराशि ही बानी है । यहाँ पर संदेह नहीं होनेसे निश्चितिके कथन की आवश्यकता नहीं है ।

पिच्छय दो प्रकारका है, अपलान विक्षय और उपरिम विक्षय । परंतु यहाँ पर
अपलान विक्षय नहीं पाया जाता है क्योंकि तेजस्वाधिकराशि अन्वयमान राशिसे प्रथम
वर्गमूल्यप्रमाण है ।

उपरिम विक्षय तीन प्रकारका है पृथीत पृथीतपृथीत या पृथीतगुणकर । उनमेंसे
पृथीत उपरिम विक्षयको बतसाना है—तेजस्वाधिक राशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित
करके पर तेजस्वाधिक राशि का प्रमाण बाना है । उक्त मागहारके अपहृतेप्रमाण उक्त
अन्वयमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्वाधिक राशि बानी है । अथवा तेजस्वाधिक
राशिसे प्रमाणसे उसके उपरिम वर्गको गुणित करके सप्त राशि का उपरिम वर्गके उपरिम
वर्गमें भाग देने पर तेजस्वाधिक राशि का प्रमाण बाना है । उक्त मागहारके अपहृतेप्रमाण
उक्त अन्वयमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्वाधिक राशि का प्रमाण बाना है ।

जब महाकर्म उपरिम विक्षयको बतसाना है—तेजस्वाधिक राशिसे तेजस्वाधिक
राशिसे उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके जो सप्त जपे उसका
तेजस्वाधिक राशिसे उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने

एसा किरिया इन्द्रिय-कसाय वोगमगणासु विसेसाहियरासीण विसेसहीणरासीण च
 गिरबयवा कायव्वा । एदे पुब्बुत्त चचारि अबहारकाल विरलिय तेउकाइयरासिस्सुवरिम
 वर्गं चठण्हं विरलमाण पुच पुच समसुंढं करिय दिण्णे अप्पप्पणो रासिपमाण पावदि ।
 पुणो सगसगबादरजविहिं सगसगविरलमाण एगरुवोवरि हिंदमगसगरामिहिं मागे हिंदे
 असंखेज्जलोगमेचारासी आगच्छदि । तेण रूपूणेण मगसगअवहारकालसु ओवहिंदेसु लद्ध
 तमिहं चेव पक्खिचे सगसगसुहुमार्णं अवहारकालां भवति । पुणो एदे चचारि वि सुहुम-
 जीवअवहारकाले पुच पुच विरलिय तउकाइयरासिस्सुवरिमवर्गं समसुंढं करिय दिण्णे
 रूपं पडि सगसगसुहुमपमार्णं पावदि । पुणो सगसगविरलमाण एगरुवोवरि हिंदसुहुमरासिं
 सगसगसुहुमअपञ्चचण्हिं माग हिंदे तत्थ लद्धसंखेज्जलूवि रूपूमेहिं सगसगसुहुम
 अवहारकाल ओवहिंय लद्ध तमिहं चेव पक्खिचे सगसगसुहुमपञ्चपाणमवहारकाला
 भवति । पुणं मागलद्धसंखेज्जलूस्तेहिं सगसगसुहुमजीवअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसग
 सुहुमअपञ्चचअवहारकाला भवति । चठण्हं बादराण पुब्बुप्पादिदिहिं असंखेज्जलोगमच

इन्द्रिय कसाय और योग इन तीन मार्गणाओंमें विशेष अधिक राशिओंके और विशेष
 हीन राशिओंके संबन्धमें संपूर्ण रूपसे यह किया करना चाहिये । पूर्वोक्त इन चारों अवहारकाओंको
 विरचित करके और तेजस्व्याधिक राशिोंके उपरिम वर्गको चारों विरचनोंके ऊपर पृथक् पृथक्
 समान लंघ करके दे देने पर अपनी अपनी राशिश्च प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः अपनी
 अपनी वाद्व्याधिक जीवराशिश्च प्रमाणका अपने अपने विरचनके एक एकके ऊपर स्थित
 अपनी अपनी राशिोंके प्रमाणमें माग देने पर असंप्रयात जोहप्रमाण राशि प्राप्त होती है ।
 एक कम उस असंप्रयात जोहप्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकाओंके माश्रित करने पर
 जो जो ह्य भवे उसे उही अपने अपने अवहारकाओंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म
 जीवोंके प्रमाण सानेके सिधे अवहारकाळ होते हैं । पुनः सूक्ष्म जीवसंबन्धी इन चारों भी
 अवहारकाओंको पृथक् पृथक् विरचित करके और उन विरचनोंके प्रत्येक एकके ऊपर
 तेजस्व्याधिक राशिोंके उपरिम वर्गको समान लंघ करके दे देने पर विरचनोंके प्रत्येक एकके
 प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः अपने अपने विरचनके एक
 विरचन-अंकके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिोंके प्रमाणसे अपनी अपनी सूक्ष्म अप्रयात
 जीवराशिोंके प्रमाणसे माश्रित करने पर वहां जो संप्रयात ह्य भवे उनमेंसे एक कम करके
 दोष राशिसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकाओंको माश्रित करके जो ह्य भवे उसे
 उही अवहारकाओंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त जीवोंके अवहारकाळ होते हैं ।
 पहले माग देने पर जो संप्रयात ह्य भवे ये उनसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकाओंके
 गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाळ होते हैं । चारों वाद्व्योंके

विहानं उच्यते । त महा— तेजस्कक्षयराशिं पुढविकक्षयरासिम्हि सोऽपि सेसेष तेज-
स्कक्षयरासिम्हि मागे हिदे अर्धखेज्जलगरासी आगच्छदि । तेन स्वादिण तेजस्क-
क्षयराशिमावक्ष्य सद् तम्हि चेव अवधिदे पुढविकक्षयअवहारकात्मे होदि । पुनो पुढवि-
कक्षयराशिं आतकक्षयरासिम्हि सोऽपि सेसेष पुढविकक्षयरासिम्हि मागे हिदे अर्धखेज्ज-
लोगमचरासी आगच्छदि । तेन स्वादिण पुढविकक्षयअवहारकात्मोवक्ष्य सद् तम्हि
चेव अवधिदे आतकक्षयअवहारकात्मे होदि । पुनो आतकक्षयराशिं आतकक्षयरासिम्हि
सोऽपि तत्पावसिद्धरासिणा आतकक्षयरासिम्हि मागे हिदे अर्धखेज्जलोगमेचरासी
उम्मदि । तेन स्वादिण आतकक्षयअवहारकात्मे मागे हिदे सद् तम्हि चेव अवधिदे
आतकक्षयअवहारकात्मे होदि । एतपुढवर्जती गाहा—

राशिभिसेणराशिदरासिम्हि य वं विधे' उमुक्कम् ।

कक्षयदिणवदिदहाते उणादिओ तेण ॥ ७५ ॥

है । यह इत्यन्तर है— तेजस्कक्षय राशिसे पृथिवीकायिक राशिमेंसे घटा कर
जो शेष रहे उससे तेजस्कक्षय राशिसे माजित करने पर अर्धखपात होक्यमाण राशि जाती
है । एक अधिक उस अर्धखपात होक्यमाणराशिसे तेजस्कक्षय राशिसे माजित करके
जो छम्प भावे उसे उसी तेजस्कक्षय राशिमेंसे घटा देने पर पृथिवीकायिक राशिसेबन्धी
अवहारकात्मे होता है । पुनः पृथिवीकायिक राशिसे अक्षयिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष
रहे उससे पृथिवीकायिक राशिसे माजित करने पर अर्धखपात होक्यमाणराशि जाती है । एक
अधिक उस अर्धखपात होक्यमाण राशिसे पृथिवीकायिक राशिसे अवहारकात्मे माजित
करके जो छम्प भावे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिसे अवहारकात्मे घटा देने पर
अक्षयिक राशिसेबन्धी अवहारकात्मे होता है । पुनः अक्षयिक राशिसे वायुकायिक राशि
मेंसे घटा कर वहाँ जो राशि अवशिष्ट रहे उससे अक्षयिक राशिसे माजित करने पर अर्ध-
खपात होक्यमाण राशि छम्प जाती है । एक अधिक उस अर्धखपात होक्यमाण राशिसे
अक्षयिक राशिसे अवहारकात्मे माजित करने पर जो छम्प भावे उसे उसी अक्षयिक
राशिसे अवहारकात्मे घटा देने पर वायुकायिक राशिसेबन्धी अवहारकात्मे होता है । वहाँ
पर उपयुक्त गाना ही जाती है—

राशिभिसेपने राशिसे माजित करने पर जो भाग छम्प भावे उसमेंसे यदि एक कम
करके शेष राशिसे भागहार माजित किया जाय तो उस छम्पकी वही भागहारमें शिखा देने
और यदि छम्प राशिमें एक अधिक करके उससे भागहार माजित किया जाय तो भागहारके
माजित करने पर जो छम्प राशि भावे उसे भागहारमेंसे घटा देना चाहिये ॥ ७५ ॥

एसा किरिया इंदिय-कसाय खोगमग्गासु बिसेसाहिरासीर्ण बिसेसहीनरासीर्ण च
 बिरबयवा फायग्गा । एदे पुन्नुचे चचारि अवहारकाले विरलिय तेउकद्वयरासिस्तुवरिम
 घग्ग चउण्ह विरलमाण पुन पुन समखंड करिय दिण्णे अप्पप्पयो रासिपमाण पावदि ।
 पुणो सगसगभादरजीवाहि सगसगविरलमाण एगरुबोविरि छिदसगसगरासिम्हि मागे हिदे
 असंखेज्जलेगमेचारासी आगच्छदि । तेण रूपूणण सगसगभवहारकालेसु ओवडिदेसु लड
 तम्हि चेव पक्खिसे सगसगसुहुमाण अवहारकाला भवति । पुणो एदे चचारि वि सुहुम
 जीवभवहारकाले पुन पुन विरलिय तेउकद्वयरासिस्तुवरिमवर्ग समखंड करिय दिण्णे
 रूपू पठि सगसगसुहुमपमाण पावेदि । पुणो सगसगविरलमाण एगरुबोविरि छिदसुहुमरासि
 सगसगसुहुमअपञ्चपएहि मागे हिदे तत्थ लडसंखेज्जलेगमेहि रूपूमेहि सगसगसुहुम
 अवहारकाल ओवडिय लड तम्हि चेव पक्खिसे सगसगसुहुमपञ्चवाणमवहारकाला
 भवति । पुण्व मागलडसंखेज्जलेगमेहि सगसगसुहुमजीवअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसग
 सुहुमअपञ्चपअवहारकाला भवति । चउण्ह भादराय पुष्मुप्पादिदेहि असंखेज्जलेगमेच-

इन्द्रिय, कषाय और योग इन तीन मार्गवाच्योंमें विशेष अधिक राशिओंके और विशेष
 हीन राशिओंके संख्यामें संपूर्ण रूपसे यह किया करना चाहिये। पूर्वोक्त इन चारों अवहारकाळोंको
 विरलित करने और तेजस्वाधिक राशिोंके उपरिम वर्गोंको चारों विरलनोंके ऊपर पूषष् पूषष्
 समान लंड करके दे देने पर अपनी अपनी राशिअ प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपनी
 अपनी बाह्यराधिक जीवराशिोंके प्रमाणका अपने अपने विरलनके एक मंडके ऊपर स्थित
 अपनी अपनी राशिोंके प्रमाणमें माग देने पर असंख्यत छोड़प्रमाण राशि प्राप्त होती है।
 एक कम बड़ असंख्यत छोड़प्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकाळोंके मात्रित करने पर
 जो जो छप्प भागे लडे उन्ही अपने अपने अवहारकाळमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म
 जीवोंके प्रमाण जानेके लिये अवहारकाळ होते हैं। पुनः सूक्ष्म जीवसंख्या इन चारों भी
 अवहारकाळोंको पूषष् पूषष् विरलित करने और उन विरलनोंके प्रत्येक एकके ऊपर
 तेजस्वाधिक राशिोंके उपरिम वर्गोंको समान लंड करके दे देने पर विरलनोंके प्रत्येक एकके
 प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपने अपने विरलनके एक
 विरलन मंडके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिोंके प्रमाणको अपनी अपनी सूक्ष्म अपर्णाप्त
 जीवराशिोंके प्रमाणसे मात्रित करने पर बहां जो संख्यात छप्प भागें उनमेंसे एक कम करके
 दोष राशिसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकाळको मात्रित करके जो छप्प भागे लडे
 उन्ही अवहारकाळोंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्णाप्त जीवोंके अवहारकाळ होते हैं।
 पहले माग देने पर जो संख्यात छप्प भागे लडे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकाळोंके
 गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्णाप्त जीवोंके अवहारकाळ होते हैं। चारों बाहरोंके

गुणगार्हि सगमगमाम्नाअरहारकात्सु गुणिदेसु सगसगभान्तराणमवहारकात्ता मर्नति ।

पुनो सुचाविरुद्ध आइरिअवएसण सुर्ष व पमापभूदेण बादगगमदृष्टेदमप वचइम्भामा । त अह— एगमागेत्तमादो पगं पलिदोवमं वेणुण समावत्तियाए असंखज्जदि मागज खटिय तयगसुर्ष पुच इविय ससयइमगो तम्हि वेव पक्खित्ते बादगउकम्भय अदृग्छद्वयममलागा इवति । न पुच इतिदेयसुखं त पुणो वि आवत्तियाए असंखज्जदिमाएव प्पाठय तयेगसंठमनिय बहुसुंठे पुव्वरासि दुप्पडिरासि कात्तग पक्खित्ते बादगवपम्भ पचयमगीण अदृग्छद्वयममलागा इवति । एवं बादगगिगेत्तपदिहिइ-मादरपुडित्ति-बादर आऊण च वचयं । अते अवप्पिदएगसुंठ बादगआउकम्भयअदृग्छद्वयममलागासु पक्खित्ते बादरबाउकम्भयअदृग्छद्वयममलागा सामरोत्तममेवा आदा । बादरतेउकम्भयअदृग्छेदमप विरत्तिय विग करिय अप्पेण्णममत्ते कदे बादरतेउकम्भयरासी उप्पज्जदि । अहवा यमलोयछयगएहि बादरतेउकम्भयअदृग्छद्वयमसु ओरहिदेसु लद्ध विरत्तेऊण रुवं पदि

जो पइठे असंख्यात छोक्यमात्र गुणकार तरय किये ये उनसे अपने अपने सामान्य व्यवहार कामोंके गुणित करने पर अपने अपने बादर जीवोंके व्यवहारकाष्ठ होते हैं ।

अब मागे सुर्षके समान प्रमाणमूल सुजाविरुद्ध आचार्योंके उपदेशके अनुसार बादर जीवोंके अर्थच्छेद बतलाते हैं । उसका स्पर्शकारण इसप्रकार है— एक सागरोपममेंसे एक पत्थरोपमको ग्रहण करके अगर उसे न बसीके असंख्यातमें भागसे विभक्त करके वहां जो एक भाग छप्प भागसे उसे पूषक स्थापित करके दोष बहुभागसे उसी राशिमें अर्घ्य पस्पकम सागरमें मिला देने पर बादर तेजस्वाधिक राशिकी अर्थच्छेद शाखाकार्य होती है । जो एक भाग पूषक स्थापित किया या उसे फिर भी आपसीके असंख्यातमें भागसे विभक्त करके वहां जो एक भाग छ-अ भाग उसे प्रदा कर अवशय बहुभागको पूर्वर्राशि अर्घ्य बादर तेजस्वाधिक राशिसे अर्थच्छेदोंकी दो प्रतिराशिवां करके भीर उनमेंसे एकमें मिला देने पर बादर बनवति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्थच्छेदशाखाकार्य होती हैं । इसीप्रकार बादर विगोदप्रतिष्ठित बादर पृथिवीकाविक भीर बादर अन्तराविक भीरराशिसे अर्थच्छेदोंका कथन करना चाहिये । अग्रिम जगतीत एक लङ्घको बादर जगतीविक जीवोंकी अर्थच्छेद शाखाकार्यमें मिला देने पर सागरोपमप्रमाण बादर वायुकाविक जीवोंकी अर्थच्छेदशाखाकार्य हो जाती है ।

बादर तेजस्वाविक राशिही अर्थच्छेदशाखाकार्यमें विरक्त करने भीर उस विरक्त राशिसे प्रत्येक एकछ दोष करके परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्वाविक भीरराशि उत्पन्न दानी है । अथवा घनछोकके अर्थच्छेदोंमें बादर तेजस्वाविक राशिसे अर्थच्छेदोंके

१ अर्थच्छेदमात्रेण विरक्तान्तराणामवहारकात्ता मर्नति । बादरतेविद्वत्ताद्यन परिगणनां पुन ४ यो

धनलोग दत्तुम् अण्योष्णममत्ये कए वादरतेउकअयरासी उपपन्नदि । अइवा वादर
तेउअइच्छेदणए वादरवणफअदिपचैयसरीरइच्छेदमएहिता साहिय अवसेसरसिं बिरत्तिय विगं
करिय अण्योष्णममत्यरासिणा वादरवणफअपचैयसरीरसिं मागे हिंदे वादरतेउकअय
रासी उपपन्नदि । अइवा वादरवणफअपचैयसरासिं अहियइच्छेयवयमेवे' अइच्छे-
यणए कए वादरतेउकअयरासी उपपन्नदि । अइवा वणसेगछेदणएहि अहियइच्छेदणएसु
आवहिंसु तत्तु छड बिरत्तेऊय एक्केककस्त रूपस्त वणलोग दत्तुम् अण्योष्णममत्ये कए
सो रासी तेम वादरवणफअपचैयसरीरसिं मागे हिंदे वादरतेउकअयरासी इदि ।
एव वादरविगोदपहिदिद-वादरपुनर्विक्रय-वादरआउकअय-वादरवाउकअयार्थ अप्पण्यो
अइच्छेदणएहिता वादरतेउकअयरासी उपपादेदव्वा । एवं वादरतेउकअयरासिस्त
सचारसविहा पकववा कहा ।

माजित करने पर जो छप्प भावे उसे विरक्षित करके और उस विरक्षित राशि के प्रत्येक
एक के प्रति धनलोकको लेकर परस्पर गुणित करने पर बाहर तेजस्वयिक राशि उत्पन्न
होती है । अथवा, बाहर तेजस्वयिक राशि के अर्धच्छेदोंको बाहर वनस्पति प्रत्येकशरीर
जीवोंके अर्धच्छेदोंमेंसे घटाकर जो राशि शेष रहे उसे विरक्षित करके और उस विरक्षित
राशि के प्रत्येक एकको लेकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बाहर
वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी राशि के माजित करने पर बाहर तेजस्वयिक राशि उत्पन्न
होती है । अथवा बाहर वनस्पति प्रत्येकशरीर के जिसने अधिक अर्धच्छेद हों उतनीबार बाहर
वनस्पति प्रत्येकशरीर राशि के अर्धच्छेद करने पर भी बाहर तेजस्वयिक राशि उत्पन्न होती
है । अथवा धनलोकके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके माजित करने पर वहां जो छप्प
भावे उसे विरक्षित करके और उस विरक्षित राशि के प्रत्येक एक के प्रति धनलोकको लेकर परसे
लेकर परस्पर गुणित करने पर जो राशि भावे उससे बाहर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशि के
माजित करने पर बाहर तेजस्वयिक राशि आती है । इसीप्रकार बाहर निगोषप्रतिष्ठित, बाहर
पुष्टिबीजयिक बाहर अण्यविक और बाहर वायुयिक जीवोंके अपने अपने अर्धच्छेदोंसे
बाहर तेजस्वयिक राशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार बाहर तेजस्वयिक राशि की
समस्त प्रकारकी प्रकल्पना की ।

विशेषार्थ—ऊपर पाँच प्रकारसे तेजस्वयिक जीवराशि उत्पन्न करके बतला भावे
हैं । प्रथमबार तेजस्वयिक जीवराशि के अर्धच्छेदोंका और दूसरीबार धनलोकके अर्धच्छेदोंका
आश्रय लेकर तेजस्वयिक जीवराशि उत्पन्न की गई है । अंतिम तीन प्रकारसे तेजस्वयिक
जीवराशि के उत्पन्न करनेमें बाहर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशि के अर्धच्छेदोंकी सृज्यता

गुणगान्धि सगमगसामन्यप्रवहसकालेसु गुणिदसु सगसगबादरापमनहारकाला मर्वति ।

पुणो सुधाविरुद्धेण अद्विजवर्षेण सुतं च पमाणमूदेण वादरापमद्वच्छद्वप
वचश्चमाणा । च जहा— एगसागोवमादो एगं पल्लोवमं चक्षुषं तमावलिषाप अर्धसेज्जदि
मायन राटिय तन्पगुणं पुष ह्विय संसवहुमत्तं समिहं चैव पक्खिच वादरतेउक्कम्प
अद्वच्छेदणयमलागा हवन्ति । तं पुष द्विविदेयत्तं च पुणो वि भावलिषाप अर्धसुमदिमापच
राटिय तत्पेगुणं तमनिय बहुपुणं पुक्करासिं दुप्पडिरासिं फत्तण पक्खिच वादरवपपद्व
पत्तयमनिय अद्वच्छेदणयमलागा हवति । एवं वादरणिगदपदिद्विद-वादरपुटनि-वाद
आत्तण च वचच । अत एवपिदएगसुठ वादराउक्कम्पअद्वच्छेदणयससागासु पक्खिच
वादराउक्कम्पअद्वच्छेदणयमलागा सायरोपममेचा आदा । वादरतेउक्कम्पअद्वच्छेदवप
विगलिय विग करिय अप्पोण्णमत्ते कदे वादरतेउक्कम्परासी उपपज्जदि । अद्वा
घणसेत्येयपण्णि वादरतेउक्कम्पअद्वच्छेदणयसु ओवद्विदेसु सद्धं विरलेत्तण रुवं पवि

जो पद्वे मर्धक्यात लोक्कमात्र गुणकर उतरव किये थे उनसे अपने अपने सामान्य व्यवहार
कामोंके गुणित करने पर अपने अपने वादर जीवोंके व्यवहारकाफ़ होतें हैं ।

जब आगे सूचके समान प्रमाणमूल सूत्राविरुद्ध भाषाओंके उपदेशके अनुसार वादर
जीवोंके अर्थच्छेद बनलाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— एक सागरोपममेंसे एक
पत्थरोपमरो महुच करके बाहर उसे म बनीके अर्धस्यातर्धे भागसे लङ्घित करके वहाँ जो
एक भाग छम्प आये उसे पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको उसी राशिमें अर्थात्
पत्थरम सागरमें मिखा देने पर वादर तेजस्वाधिक राशिकी मध्यच्छेद शब्दाकार्य
होती है । जो एक भाग पृथक् स्थापित किया था उसे फिर भी भाष्यकीके अर्धस्यातर्धे भागसे
लङ्घित करके वहाँ जो एक भाग छम्प आया उसे घटा कर अवशेष बहुभागको पूर्वराशि मध्य
वादर तेजस्वाधिक राशिसे मध्यच्छेदोंकी दो प्रतिराशिवा करके भीर उनमेंसे एकमें मिखा
देने पर वादर पनरति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्थच्छेदशब्दाकार्य होती है । इसीप्रकार वादर
निगोत्रप्रतिष्ठित वादर पृथिवीकायिक भीर वादर अस्त्राधिक जीवराशिसे मध्यच्छेदोंका कथन
करना चाहिये । अन्तमें अपनीत एक लङ्घनी वादर अस्त्राधिक जीवोंकी अर्थच्छेद शब्दाकार्यमें
मिखा देने पर सागरोपमप्रमाण वादर वायुकायिक जीवोंकी अर्थच्छेदशब्दाकार्य हो जाती है ।

वादर तेजस्वाधिक राशिकी मध्यच्छेदशब्दाकार्यका विरलन करके भीर उस विरलित
राशिसे प्रत्येक एकको शेष करके परस्पर गुणित करने पर वादर तेजस्वाधिक जीवराशि
उत्पन्न होती है । मध्या घनकोके मध्यच्छेदोंमें वादर तेजस्वाधिक राशिसे अर्थच्छेदोंके

छेयणए विरलिय विग करिय अण्णाणम्मत्थकदरासिणा बादरतेउकअपरसिं गुणिदे
 बादरयणप्फदिपपेयसरीररासी होइ । अइना अदियछेयणए पणलोमछेयणएहि ओवहिय
 रुवं विरलेत्थम रुवं पडि घणलोम इत्थम अण्णाणम्मत्थकदरासिणा बादरतेउकअपरसिं
 गुणिदे बादरवणप्फइपपेयसरीररासी होइ । बादरणिगोदपदिद्धिद-बादरपुडविकअय बादर
 आउकअय-बादरबाउकअएहिंते बादरवणप्फइपपेयसरीररासिणुप्पाइज्जमाणे जहा तेउका
 इयरासी उप्पाइदा तहा उप्पादेइदा । बादरणिगोदपदिद्धिद-बादरपुडविकअय-बादरआउ
 कअय-बादरबाउकअयाण न एवं येन सचारसहिहा परूषणा परूवेइम्हा । पचेग
 साभागणसरीरविदिचो बादरणिगोदपदिद्धिदरासी न जाणिअदि पि भुत्ते सध, तेहिं विदिचो
 वणप्फइकअएसु बीवरासी मण्णि येव, किं तु पचेयसरसि दुविहा मरंति बादरणिगोदजीवाणे

इस विरहित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करने परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
 उससे बाहर तेजस्कायिक राशिके गुणित करने पर बाहर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
 जीवराशि होती है । अथवा अधिक भर्षच्छेदोंको घनछोकरके भर्षच्छेदोंसे भाजित करने
 जो छम्भ भावे इसे विरहित करने और इस विरहित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनछोकरके
 बेवकपसे बेकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बाहर तेजस्कायिक जीव
 राशिके गुणित करने पर बाहर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है । बाहर
 निगोहप्रतिष्ठित बाहर ध्रुवबीजायिक बाहर मण्णायिक और बाहर वायुकायिक जीवराशिके
 प्रमाणसे बाहर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर जिसप्रकार इन
 राशिमेंसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई उसीप्रकार उत्पन्न करना चाहिये । बाहर
 निगोहप्रतिष्ठित बाहर ध्रुवबीजायिक, बाहर मण्णायिक और बाहर वायुकायिक जीवराशिका
 इसीप्रकार सबह सबह प्रकारकी प्रकृपासे प्रकृपण करना चाहिये ।

विशेषार्थ — जहाँ बड़ी राशिका आभय छेकर छोटी राशि उत्पन्न की जावे वहाँ पर
 छोटी राशिके भर्षच्छेदोंसे बड़ी राशिके भर्षच्छेद जितने अधिक होवें उतनीबार बड़ी राशिके
 भावे भावे करने पर, अथवा उतने भर्षच्छेदप्रमाण होके परस्पर गुणित करनेसे जो छम्भ
 भावे उसका बड़ी राशिमें माप देने पर छोटी राशि जाती है । तथा जहाँ छोटी राशिका
 आभय छेकर बड़ी राशि उत्पन्न की जावे वहाँ अधिक भर्षच्छेदप्रमाण छोटी राशिके विगुणित
 करने पर अथवा उतने भर्षच्छेदप्रमाण होके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
 उससे छोटी राशिके गुणित कर देने पर बड़ी राशि आ जाती है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।
 इसप्रकार तेजस्कायिक राशिकी सबह प्रकारकी प्रकृपाके समान प्रकृपा करनेसे उपर्युक्त
 प्रत्येक राशिकी प्रकृपा सबह सबह प्रकारकी हो जाती है ।

श्रेष्ठ — प्रत्येकशरीर और सामान्यशरीर इन दोनों जीवराशियोंको छोड़कर बाहर-
 निगोह प्रतिष्ठित जीवराशि क्या है यह नहीं मालूम पड़ता है !

समाधान — यह खल है कि उक्त दोनों राशिओंके अतिरिक्त वनस्पतिकायिकोंमें
 और कोई जीवराशि नहीं है किन्तु प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव हो मकरके है, एक

पत्रम्भसंखन्त्राण गहण पत्ते अण्णिच्छिदासंखेज्जपडिसेइहुमुत्तरसुत्त भणदि—

असखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउत्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ८९ ॥

एवस्स विमुत्तस्स अत्थो सुगमो चेव । एदेण अबगद असंखेज्जासंखेज्जस्स विससेण
तत्तदिणिमिच्चमुत्तरसुत्तमाह—

स्वेत्तेण वादरपुढविकाइय-वादरआत्तकाइय-वादरवणफइकाइय
पत्तेयसरीरपज्जतएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असखेज्जदिभागवग्ग
पडिभागेण' ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उच्च पमाणांगुलं धेत्तव्वं । तस्म असंखज्जदिभागस्स ओ वग्गो
तेण पडिभागेण मागहरेण । एत्थ निमित्तं तद्धवा । एदंण अवहारकत्तेण वादर
पुढविपज्जचादीहि अगपदरमवहिरदि ति व पुत्तं होदि ।

सामान्य बचन देनेसे भी प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिश्चित असंख्यातोंके
प्रतिषेध करनेके लिये भागेका सूत्र कहते हैं—

काठकी अपेक्षा वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त वादर अप्कायिक पर्याप्त और
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातासरूपात् अवसर्विणियों और
उत्सर्विणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी मर्म सुगम ही है । यद्यपि इस सूत्रसे असंख्यातासंख्यात भगवत् हो
गया फिर भी उसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करनेके लिये भागेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, वादर अप्कायिक पर्याप्त और
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यगुलके असंख्यातवै भागके
वर्गरूप प्रतिभागसे अगमत्तर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहाँ सूत्रमें अंगुल ऐसा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये । इस
प्रमाणांगुलके असंख्यातवै भागका जो बर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् मागहारसे । यहाँ निमित्तमें
नृत्तीया विमट्ठि आगता चाहिये । इस अवहारकाइसे वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त आदि
जीवोंके द्वारा अगमत्तर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

विशेषार्थ—उत्सेपांगुल, प्रमाणांगुल और भारमांगुलके मेलसे अंगुल तीन प्रकारका
है । बाठ परका एक उत्सेपांगुल होता है । पांचवी उत्सेपांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है ।

१ पडाइविज्जपडिपदइत्तमाहिदे उक्कपरो । उक्कपविपत्तरवा पुग्गा वात्तिवत्तवविदरवा ॥
पो जी. ९९

जीमीमूदसरीरा तन्निवरीदसरीरा चेदि । सस्य जे बादरनिगोदार्ण जीमीमूदसरीरपसेय-
सरीरजीवा ते बादरनिगोदपदिष्ठिदा मसंति । क ते ? मूतपदु मछप-घरण-गठोद्वे-लोपेसरप-
मादभो । उचं च—

बीजे जीमीमूदे जीवो वरुम्ह सो व जणो वा ।

जे बि य मूलादीना ते पसेया फडमदए ॥ ७६ ॥

सुच बादरवणफुद्विपसेयसरीराणमेव गहण कर्द, (ज तप्पेदार्ण) ? जे,
बादरवणफुद्विपसेयसरीरजीवेसु चेव तेसिमंतम्मावाहो । एदसि बादरवणज्जाण परु
वमत्ताय परुवगहणमुचसुचमाह—

बादरपुठविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणफुद्विकाइयपसेयसरीर
पज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८८ ॥

एदसस सुचसस भत्थो सुगमो पि ण बुद्धे । असंखत्ता इदि सम्मप्यवयणं

तो बादरनिगोद जीवोंके पोनिमूत प्रत्येकशरीर थीर दूसरे उमसे विपरीत शरीरबाहे जयाँत
बादरनिगोद जीवोंके ज्योनिमूत प्रत्येकशरीर जीव । उनमेंसे जो बादरनिगोद जीवोंके
पोनिमूतशरीर प्रत्येकशरीर जीव हैं उन्हें बादरनिगोद प्रतिष्ठित कहते हैं ।

श्रुका—जे बादरनिगोद जीवोंके पोनिमूत प्रत्येकशरीर जीव कौन हैं ?

समाधान—मूछी वररक (१) मछक (मद्रक) सूरण गम्भो (गुह्वी या गुरवेड)
छोकेम्भत्तमा ? ज्यदि बादरनिगोद प्रतिष्ठित हैं । कहा मी है—

पोनिमूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है जज्जा बूझरा कर्दि जीव उत्पन्न होता है ।
यह थीर जितने मी मूछी ज्यदिक समतिष्ठितमरयेक हैं जे प्रथम वररकामें प्रत्येक ही हैं ॥ ७७ ॥

श्रुका—सूचमें बादर वनस्पतिकप्रविक प्रत्येकशरीर जीवोंका ही ग्रहण किया है वनके
मेसोंक कयों मही किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि, बादर वनस्पतिकप्रविक प्रत्येकशरीर जीवोंमें ही उनका
धर्मभाव हो जाता है ।

अब इन बादर पर्याप्तोंकी प्रकृष्टताके प्रकृष्ट करकेके सिधे ज्योदका सूत्र कहते हैं—

बादर पृथिवीकायिक, बादर अण्कायिक आर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इतकिये नहीं कहते हैं । सूत्रमें असंख्यात है वेसा

१ वा. वरीं जजोरे इति पाठः ।

२ टी. जी १ = बीज जीमिमूद जीमी वरुम्ह जो व जवो वा । जीमि व पूछे जीमी जमि व वरीं
वरवत्त ॥ प्रकृत्या १ ४५ पा. ५२ ॥ ११९

३ वरिड वरुं कर्द व इति पाठः । ४ वरिड वरुं वरुं कर्द व इति पाठः वरिड ।

गवश्चमसंखज्जायं गह्वण पचे अपिच्छिद्रासंखज्जपठिसेहृष्टुचरसुच भणदि—

असंखेज्जासखेज्जाहि ओसपिणि-उस्तपिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ८९ ॥

एहस्स वि सुचस्स अत्थो सुगमो चेव । एदेण अवगद असंखेज्जासंखेज्जस्स विससेण
तल्लदिणिमिचसुचरसुचमाह—

स्वेतेण वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरवणफहकाइय
पत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग
पडिमाणेण ॥ ९० ॥

एह अंगुलमिदि उत्ते पमाणांगुलं धेचच्च । तस्म असखज्जदिभागस्स ओ वग्गे
तेण पडिमाणेण भागहारेण । एत्थ विमिसे तइया दह्ठवा । एदेण अवहारकस्सेण वादर
पुढविपज्जवादीहि जगपदरमवहिरदि ति जं वुच होदि ।

सामान्य पञ्चन हेनेसे भी प्रकारके भक्ष्यार्थोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिश्चित भक्ष्यार्थोंके
प्रतिषेध करनेके लिये भागेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त वादर अप्कायिक पर्याप्त और
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त भीम असंख्यातासंख्यात अवसर्विणियों और
उत्सर्विणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है । यद्यपि इस सूत्रसे भक्ष्यार्थासंख्यात व्यवगत हो
गया फिर भी इसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करनेके लिये भागेका सूत्र कहते हैं—

धेचक्की अपेक्षा वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, वादर अप्कायिक पर्याप्त और
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त भीमोंके द्वारा अंशगुलके अंतर्ख्यातर्षे भागके
वर्गरूप प्रतिभागसं जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहाँ सूत्रमें अंगुल ऐसा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये । उस
प्रमाणांगुलके अंतर्ख्यातर्षे भागका जो वर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् मागहारसे । यहाँ निमित्तमें
मृत्तीका विभक्ति ज्ञानना चाहिये । इस व्यवहारकाळसे वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त माहि
भीमोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अस्मिन्माय है ।

विशेषार्थ— वृत्तेषांगुल, प्रमाणांगुल और अतर्मांगुलके मेलसे अंगुल तीन प्रकारका
है । माह यत्रका एक वृत्तेषांगुल होता है । पाँचसौ वृत्तेषांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है ।

१ पञ्चविंशतिरित्यष्टाङ्गमस्मिन्ने अक्षरं । अङ्गमृत्तियत्तरता गुप्ता वातस्मिन्वद्विदम्मा ॥
यो जी. १ ९

एतत् सुचञ्चिदमप्रतिजोषयमेव मागहारत्वं विमर्शं मथिस्तामो । तं अहा-
पलितोवमस्त अर्सेखदिमागण चञ्चिर्गुत्तमवहणिय स्तुर्दं वमिदे वादरआउकृत्पणञ्च-
मवहारकस्तो हदि । तमिह आबलियाए अर्सेखदिमाएण गुण्णिदे वादरपुदविक्रप-
पणञ्चअवहारकात्ते हदि । तमिह आबलियाए अर्सेखदिमाएण गुण्णिदे वादरविगोद-
पदिह्दिपञ्चअवहारकस्तो हदि । तमिह आबलियाए अर्सेखदिमाएण गुण्णिदे वादर-
वणफदिपत्तेयसरीरपणञ्चअवहारकस्तो हदि । करण, सगरसिबहुचविर्षणया । पदमि
मवहारकस्तो रूदिदत्तिया पंविदिपतिरिक्कभंगो । पवरि पदंगुलमागहारो एतत् पत्ति-
दोवमस्त अर्सेखदिमागो । पदेहि अवहारकत्तेहि अगपदेरे माग हिदे सगमगद्वपमाव-
मागण्ठदि ।

वादरतेउपन्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असखेज्जा । असंखेज्जा
वलियवमो आवलियघणस्स अतो ॥ ९१ ॥

अपने अपने अंगुलको आमांगुल कहते हैं । हमसे यहां प्रमाणगुलरूप स्वर्यंगुलका ही महत्त्व
छिया गया है, क्योंकि, छीप आदिकी गणनामें यही अंगुल छिया गया है । इसीप्रकार द्रव्य
प्रमाणानुसारेण यहां अंगुलका संख्य आया है यहां इसी अंगुलका अभिप्राय जानना चाहिये ।

अब यहां पर आचार्योंके अपेक्षानुसार स्वसे सुचित मागहारोंके विशेषको कहते हैं ।
यह इसप्रकार है— पक्षोपमके अर्सेख्यातमें मागसे स्वर्यंगुलको माहित करने को छम्प अपने
हस्ते वर्णित करने पर वादर अन्त्ययिक पर्याप्त जीर्णोक्त अवहारकाक होता है । इस
वादर अन्त्ययिक पर्याप्त जीर्णोक्त अवहारकाकको आबलीके अर्सेख्यातमें मागसे गुणित
करने पर वादर पृथिवीक्ययिक पर्याप्त जीर्णोक्त अवहारकाक होता है । इस वादर पृथिवी
क्ययिक पर्याप्त जीर्णोक्त अवहारकाकको अन्त्ययिक अर्सेख्यातमें मागसे गुणित करने पर
वादर विषोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीर्णोक्त अवहारकाक होता है । इस वादर विगोदप्रतिष्ठित
पर्याप्त जीर्णोक्त अवहारकाकको आबलीके अर्सेख्यातमें मागसे गुणित करने पर वादर
वणफति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीर्णोक्त अवहारकाक होता है । यहां अवहारकाकोंके वृत्तरेतर
अधिक होनेका कारण यह है कि पूर्व पूर्ववर्ती अपनी अपनी राशि बहुत बहुत पार जाती
है । इन अवहारकाकोंके अहित न सिक्क कयम पनेमिप तिर्पिकके अहित म्यधिकके सत्यके
समाप्त करना चाहिये । इसका विशेष है कि यहां पर प्रत्यंगुल मागहार है और यहां पर
पक्षोपमका अर्सेख्यातका नाम प्रमाणहार है । इन अवहारकाकोंसे अगमतेरेके माहित करने पर
अपने अपने द्रव्यका प्रमाण जाता है ।

वादर वेअन्त्ययिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमायकी अपेक्षा कितने हैं ? अर्सेख्यात
है । यह अर्सेख्यातरूप प्रमाण अर्सेख्यात आबलियोंके वर्णरूप है जो आबलीके घनके
सीतर आता है ॥ ९१ ॥

असंख्यज्ञा इति सामान्येण उच्ये भवविहस्त असंख्यज्ञस्त गृह्यं पञ्च तत्पद्धिते
 इदं असंख्यज्ञावलिपवगो वि निहसो कदो । असंख्यज्ञावलिपवगो वि वयमेण
 घणावलिप्यादीन्मवविमगो गृह्ये पञ्च तत्पद्धितेइदमावलिपवगम अतो इति निहसो कदो ।
 घणावलिप्या अन्मतेरे चेव बादरतेउपन्जचरासी होदि वि उचं भवदि । अद्ग्नियपर
 परागओषधेष्व बादरतेउपन्जचरासिस्व अवहाकालं मणिस्सामो । तं जहा—आवलिप्याप
 असंख्यज्ञदिमाप्प पदरावलिपमवहारिय ल्हेण पदरावलिपउवरिमवगो मागे हिदे बादर
 तेउकाइयपन्जचरासी होदि । एत्थ रुंठि माजि विरुद्धि अवहिदापि नाणिऊव मणिऊम
 माणिदठ्यापि । तस्स पमाम् उचद । पदरावलिपउवरिमवमास्व असंख्यज्ञदिमागो असंख्य
 ज्ञाओ पदरावलिप्याओ । त जहा—पदरावलिप्या एतुवरिमवगो मागे हिदे पदरावलिप्यं
 आगच्छदि । तस्से दुमागेण मागे हिदे दोप्पि, तिप्पिमागेण मागे हिदे तिप्पि, एवं

सूत्रमें असंख्यात है इसप्रकार सामान्यरूपसे कथन करने पर भी प्रत्येकके असं
 ख्यातोंका प्रत्येक प्राप्त होता है अतः उनके प्रतिषेध करनेके लिये वह असंख्यातक प्रमाण
 असंख्यात व्यापकोंके वर्गक है । ऐसा निर्देश किया है । 'असंख्यात व्यापकोंके वर्गक है
 इस कथनसे प्रत्येकी व्यापक उपरि असंख्यातोंके प्रमाणके प्राप्त होने पर इससे प्रतिषेध करनेके
 लिये व्यापकोंके घनके भीतर है इसप्रकारका निर्देश किया । इसका समीप यह हुआ कि
 बादर तेजस्वयिक पर्याप्त राशि प्रत्येकीके भीतर ही है । अब आचार्य परंपरासे भाये हुए
 कथेयके अनुसार बादर तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका व्यवहारका कहते हैं । वह इसप्रकार
 है—व्यापकोंके असंख्यातोंके भागसे प्रत्येकीके माजित करके जो लप्प भाये उससे प्रत्ये
 कीके उपरि वर्गके माजित करने पर बादर तेजस्वयिक पर्याप्त राशि होती है । यहाँ पर
 उचित माजित विरुद्ध भीर अपहर्तोंको जानकर कहकर कहलपाना चाहिये ।

विशेषार्थ—यद्यपि ऊपर बादर तेजस्वयिक पर्याप्त राशिके व्यवहारका कहनेकी
 प्रतिज्ञा की गई है भीर अन्तमें बादर तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका प्रमाण चितना है वह
 बतलाया है । फिर भी इससे ऊपरकी प्रतिज्ञामें कोई विसंगति नहीं आती है क्योंकि,
 व्यापकोंके असंख्यातोंके भागसे प्रत्येकीके माजित करके जो लप्प भाये इस कथनके
 द्वारा बादर तेजस्वयिक पर्याप्त राशिके व्यवहारका कथन हो जाता है ।

भागे बादर तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कहते हैं । प्रत्येकीके उपरि
 यथा असंख्यातोंके भाग बादर तेजस्वयिक पर्याप्त राशिका प्रमाण है जो प्रत्येकीके
 उपरि यथा असंख्यातोंके भाग असंख्यात प्रत्येकीके प्रमाण है । भाये इसीधर स्पष्टीकरण
 करते हैं—प्रत्येकीके उत्तीके उपरि वर्गमें भाग देने पर प्रत्येकीका प्रमाण आता है ।
 प्रत्येकीके द्वितीय भागका प्रत्येकीके उपरि वर्गमें भाग देने पर दो प्रत्येकीके लप्प

गन्तव्य आश्रयिण्या अमरुज्जदिमाएण संदिदपदरात्रिणाण तदुपरिमवग्ग माग हिं
असंखेज्जआ पदरात्रिणाओ उम्मति । स्मरणं गइ । पदरात्रिणाए अमरुज्जदिमाएण
पदरात्रिणाए आरुद्धिण तय उचियाणि रूपाणि सचियाओ पदरात्रिणाओ इवंति ।
विरुपी गदा ।

वियप्पा दुविहा, इट्ठिमवियप्पा उपरिमवियप्पा चेदि । तय इट्ठिमवियप्पं वरुने
वचइस्सामा । पदरात्रिणाए असंखेज्जदिमाएण पदरात्रिणमावडिय सत्तेण तं पर
पदरात्रिणं गुणिदे बादरेतेउपज्जचरामी हादि । अट्ठरूब वचइस्सामा । पदरात्रिणाए
अमरुज्जदिमाएण पदरात्रिणं गुणिय पदरात्रिणपणे माग हिंदे बादरेतेउपज्जचरामी
होदि । तं जहा—पदरात्रिणाए पदरात्रिणपण माग हिंदे पदरात्रिणउपरिमवग्ग
आगच्छदि । पुणो पदरात्रिणाए असंखेज्जदिमाएण तम्हि माग हिंदे बादरेतेउपज्जचरामी
हादि । पणापणे वचइस्सामो । पदरात्रिणाए असंखेज्जदिमाएण पदरात्रिणं गुणिय तेव
पदरात्रिणपणपटमवग्गमूले गुणिय पदरात्रिणपणापमपटमवग्गमूले माग हिंदे बादरे-

भाटी है । प्रत्यक्षीके तृतीय मागस्य प्रत्यक्षीके उपरिम वर्गमें माग देने पर तीन प्रत्यक्षी
वर्गों का सम्पत्ति भाटी है । इसीप्रकार नीचे जाकर आश्रयि के असंख्यातवर्ग मागसे प्रत्यक्षीके
गणित करके जो सम्पत्ति भाटी है उसका प्रत्यक्षीके उपरिम वर्गमें माग देने पर असंख्यात
प्रत्यक्षीका सम्पत्ति भाटी है । इसप्रकार बारम्बार कथन समाप्त हुआ । प्रत्यक्षीके असंख्यात
वर्ग मागसे प्रत्यक्षीके गणित करने पर बड़ा जितना प्रमाण सम्पत्ति भाटी है तत्प्रमाण प्रत्यक्षी
का बारम्बार तेजस्वयिक पर्याप्त औचित्य प्रमाण होता है । इसप्रकार निश्चित कथन
समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है अथस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे विकल्पमें
अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रत्यक्षीके असंख्यातवर्ग मागसे प्रत्यक्षीके गणित
करके जो सम्पत्ति भाटी है उसका प्रत्यक्षीके उपरिम वर्गमें माग देने पर बारम्बार तेजस्वयिक
पर्याप्त औचित्य होता है ।

अथ उपरिमवर्गमें अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं । प्रत्यक्षीके असंख्यातवर्ग मागसे
प्रत्यक्षीके गणित करके जो सम्पत्ति भाटी है उसका प्रत्यक्षीके वनके गणित करने पर
बारम्बार तेजस्वयिक पर्याप्त पाति होती है । वनका स्वीकरण इसप्रकार है—प्रत्यक्षीके
प्रत्यक्षीके वनके गणित करने पर प्रत्यक्षीके उपरिम वर्ग भाटी है । पुनः प्रत्यक्षीके
असंख्यातवर्ग मागसे वनके प्रत्यक्षीके उपरिम वर्गके गणित करने पर बारम्बार तेजस्वयिक
पर्याप्त पाति होती है ।

अथ वनपदममें अथस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रत्यक्षीके असंख्यातवर्ग मागसे
प्रत्यक्षीके गणित करके जो सम्पत्ति भाटी है उसका प्रत्यक्षीके वनके प्रथम वर्गमूलके गणित
करके जो सम्पत्ति भाटी है वनका प्रत्यक्षीके वनपदमके प्रथम वर्गमूलमें माग देने पर बारम्बार

ततपञ्चचरासी होदि । तं जहा—पदरावलिपयणपदमवगमूल्य पणापणपदमवगमूले
मागे हिदे पदरावलिपयणो आगच्छदि । पुणो पदरावलिपयण पदरावलिपयणे मागे हिदे
पदरावलिपयणपरिमवगो आगच्छदि । पुणो पदरावलिपयण असंखेज्जदिमागेण तम्हि मागे
हिदे बादरततपञ्चचरासी आगच्छदि ।

उपरिमवियणो तिविहो गहिठादिमेण । वरुमे गहिद वचइस्सामो । पदरावलिपयण
असंखेज्जदिमाएण पदरावलिपयणपरिमवगो मागे हिदे बादरततपञ्चचरासी होदि । अहवा
पदरावलिपयण असंखेज्जदिमाएण पदरावलिपयणपरिमवगो गुणेज्ज पदरावलिपयणो मागे हिदे
बादरततपञ्चचरासी होदि । (एवमागच्छदि पि कइ गुणेज्ज मागगाहव कइ । तस्स
मागगाहव अदुच्छेदवयमेव रावित्त अदुच्छेदण कइ पि बादरततपञ्चचरासी आग
च्छदि ।) अइस्स वचइस्सामो । पदरावलिपयण असंखेज्जदिमाएण पदरावलिपयणपरिमवगो
स्सुपरिमवगो गुणेज्ज पदरावलिपयणपरिमवगोस्सुपरिमवगो मागे हिदे बादरततपञ्चचरासी
होदि । तं अहा—पदरावलिपयणपरिमवगोस्सुपरिमवगो पणावलिपयणपरिमवगोस्सुपरिमवगो
मागे हिदे पदरावलिपयणपरिमवगो आगच्छदि । पुणो पि पदरावलिपयण असंखेज्जदिमाएण

तेजस्सविक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्वपीकरण इसप्रकार है—प्रतरावलीके घनके
प्रथम वर्गमूलके प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर प्रतरावलीका घन
भ्रष्टा है । पुनः प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग
भाता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवै मागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित
करने पर बादर तेजस्सविक पर्याप्त राशि भाती है ।

गृहीत आविके मेवसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे त्रिकपमे गृहीत
उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरावलीके असंख्यातवै मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके
भाजित करने पर बादर तेजस्सविक पर्याप्त राशि होती है । यद्यपि प्रतरावलीके असंख्यातवै
मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गसे गुणित करके जो छप्प भावे वसका प्रतरावलीके उपरिम
वर्गके उपरिम वर्गमें माग देने पर बादर तेजस्सविक पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भी बादर
तेजस्सविक पर्याप्त राशि भाती है ऐसा समझकर पहले गृह्य करके अनन्तर मागका ग्रहण
किया । उक्त मागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीबार उक्त मध्यममा राशिके अर्थच्छेद करने
पर भी बादर तेजस्सविक पर्याप्त राशि भाती है ।

अथ अष्टकपमे गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरावलीके असंख्यातवै
मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे गुणित करके जो छप्प भावे वसका
प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें माग देने पर बादर तेजस्सविक पर्याप्त राशि
होती है । उसका स्वपीकरण इसप्रकार है—प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे
प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग भाता

पदगवस्त्रियउवरिमवग्ग मागे हिदे बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि पि
 क्कु गुणेऊग मागग्गहण फदं । तस्स मागहारस्स अदुच्छेदणयमेव रासिस्स अदुच्छेदणए
 क्क बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । घणापणे वचइस्सामे । पदरात्रिलिपाए असंसेअदि
 मागण पदरात्रिलियउवरिमवग्गस्सुउरिमवग्ग गुणेऊग तण पदगवस्त्रियउवरिमवग्गस्सु
 वरिमवग्ग गुणेऊग तेण गुणिदग्गविणा घणापणात्रिलियउवरिमवग्गस्सुउरिमवग्गो मागे हिदे
 पादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । तं अहा— पदगवस्त्रियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गण
 घणापणात्रिलियउवरिमवग्गस्सुउरिमवग्ग मागे हिदे घणावस्त्रियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो
 आगच्छदि । पुणा पि पदरात्रिलियउवरिमवग्गस्सुउरिमवग्गेण समिह मागे हिदे पदरात्रिलि
 उवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणा पि पदरात्रिलिपाए अमंयञ्जइमाएण पदरात्रिलियउवरिम
 वग्गे मागं हिदे बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि पि क्कु गुणेऊग
 मागग्गहणं क्कं । तस्स मागहारस्स अदुच्छेदणयमेव रासिस्स अदुच्छेदणए क्कं पि
 बादरतेउपञ्जचरासी आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जान्तेसु नेयग्गं । पदरात्रिलि
 उवरिमवग्गस्स घणात्रिलियउवरिमवग्गस्स घणापणा (त्रिलियउवरिमवग्गस्स) च असंसेअदि
 हे । पुनः प्रतरावलीके असत्प्राप्तये मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर
 तेज्जस्त्रायिक पपांत्त राशि भवती है । इसप्रकार बादर तेज्जस्त्रायिक पपांत्त राशि भवती है
 पसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके कितने
 अर्धच्छेद हैं उतनीबार उक्त मध्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर बादर तेज्जस्त्रायिक
 पपांत्त राशि भवती है ।

अब घनावलीमें सूचीत उपरिम विहस्पन्ने बतलाते हैं— प्रतरावलीके असत्प्राप्तये
 मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जी सध्य आवे उससे
 प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जी गुणित राशि सध्य आवे
 इससे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेज्जस्त्रायिक
 पपांत्त राशि भवती है । उसका स्वधीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके
 उपरिम वर्गमें घनापनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनावलीके
 उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे
 घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता
 है । फिर भी प्रतरावलीके असत्प्राप्तये मागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर
 बादर तेज्जस्त्रायिक पपांत्त राशि भवती है । इसप्रकार बादर तेज्जस्त्रायिक पपांत्त राशि
 भवती है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके
 कितने अर्धच्छेद हैं उतनीबार उक्त मध्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी बादर
 तेज्जस्त्रायिक पपांत्त राशि भवती है । इसीप्रकार संवत्त भरावत्त कीर अनन्त रूपान्ते
 से जाना चाहिये । प्रतरावलीके उपरिम वर्गके अर्धमध्यमानये मागका घनावलीके उपरिम वर्गके

भापण बातरुतेउपज्जवरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगतो च वचव्वो । एत्थ सुचगाहा—
 भावसियाए वणा भावसियाससभागुणिदेइ दु ।
 तम्हा वणरस अंतो बादरपन्थत्तेत्तण ॥ ७७ ॥

नादरवाचकाह्यपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असखेज्जा ॥९२॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुगमो । असखेज्जा इदि सामण्यवयणेण गवविहासखेज्जस्स
 गहणे पच अणिच्छिदासस्सन्नपठिमेइहुमुत्तरसुत्तमाह—

असखेज्जामखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति
 कालेण ॥ ९३ ॥

एदस्स वि सुचस्स अत्था निक्खवागीहि पुब्बं च पन्थदव्वो । एदम्हादो सुचादो
 सेमअट्ठविइअसंखज्जस्स पठिसइ जाते वि अजइप्पाणुक्कस्सअमेखेज्जसंखज्जआसप्पिणि
 उस्सप्पिणीओ पयसागादिमेएण अपययियप्पाओ तदो तप्पडिसेइहुमुत्तरसुत्त मणदि—

खेत्तेण असखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स सखेज्जदिभागो ॥९४॥

असंख्यातके भागरूप और घनाघनाखलीने उपरिम वगने असंख्यातके भागरूप बाहर लेज
 रकायिक पर्याप्त राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।
 यह सूत्रगाथा ही जाती है—

कृत्ति भावलीके असंख्यातके भागसे भावलीके वर्गको गुणित कर देने पर बादर
 लेजरकायिक पर्याप्त राशिवा प्रमाण होता है इसलिये यह प्रमाण घनापलीके
 भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर पायुकायिक पर्याप्त बीज द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? असंख्यात
 है ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । सूत्रमें असंख्यात है ' ऐसा सामान्य वचन होनेसे भी
 प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिश्चित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये
 भागोका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर पायुकायिक पर्याप्त बीज असंख्यातासंख्यात अनसं
 सर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अवहृत होते हैं ॥ ९३ ॥

नित्येव आदिके द्वारा इस सूत्रके भी अधिका पदलेखे समान प्रत्युपल करना चाहिये । इस
 सूत्रसे दोष आद प्रकारके असंख्यातोंके प्रतिषेध हो जाने पर भी भावसम्पानुत्तरण असंख्याता
 संख्यात असंख्यपिणियों और उत्सर्पिणियों घनलोक आदिके क्षेत्रसे अनन्त प्रकारकी है इसलिये
 अनन्त प्रतिषेध करनेके लिये भागोका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर पायुकायिक पर्याप्त बीज असंख्यात जगप्रतरप्रमाण है,

१ X क्षेत्री X क्षेत्र X भाग्य । पञ्चदश पञ्च । वा बी. ९२ भाग ५ क्षेत्री । पञ्च १ ११

पदरात्रिपञ्चमिमग्ग भाग हिद पदरात्रिपञ्चमिमग्ग आगच्छदि । एवमागच्छदि पि
 कट्ट गुणऊण भागग्गह्य कट्ट । तस्म भागहारस्स अट्टच्छदणयमच रात्रिस्म अट्टच्छदण
 कट्ट बादरतउपञ्चमिमग्ग आगच्छदि । पणापणा रत्तमामा । पदरात्रिपञ्चमिमग्ग असंखज्जदि
 मागण पदरात्रिपञ्चमिमग्गस्सुरमिमग्ग गुणऊण तण पदरात्रिपञ्चमिमग्गस्सुरमिमग्ग
 रत्तमामा गुणऊण तेण गुणिदगमिणा पणापणा रत्तमामा पदरात्रिपञ्चमिमग्गस्सुरमिमग्ग भाग हिद
 बादरतउपञ्चमिमग्ग आगच्छदि । तं अहा— पदरात्रिपञ्चमिमग्गस्सुरमिमग्ग
 पणापणा रत्तमामा पदरात्रिपञ्चमिमग्गस्सुरमिमग्ग भाग हिद पणापणा रत्तमामा
 आगच्छदि । पुणा पि पदरात्रिपञ्चमिमग्गस्सुरमिमग्ग तस्मि भाग हिद पदरात्रिप
 उचमिमग्ग आगच्छदि । पुणा पि पदरात्रिपञ्चमिमग्ग अमग्गज्जदिमाएण पदरात्रिपञ्चमिम
 गग्ग भाग हिद बादरतउपञ्चमिमग्ग आगच्छदि । एवमागच्छदि पि कट्ट गुणऊण
 भागग्गह्य कट्ट । तस्म भागहारस्स अट्टच्छदणयमच रात्रिस्म अट्टच्छदण कट्ट पि
 बादरतउपञ्चमिमग्ग आगच्छदि । एव मग्गज्जदिमाएण अट्टच्छदणयमच रात्रिस्म
 उचमिमग्गस्स पणापणा रत्तमामा पदरात्रिपञ्चमिमग्गस्सुरमिमग्ग (रत्तमामा) च अमग्गज्जदि
 ह । पुनः प्रतरात्रि के अमग्गज्जदि भागमे प्रतरात्रि के उपरिम पग्गे भाजित करे पर बादर
 तेज्जहाविक पणाए रात्रि भागी है । हमप्रचार बादर तेज्जहाविक पणाए रात्रि भागी है
 एसा समग्रर पदमे गुणा करके अमग्गज्जदि भागका प्रहण किया । उक्त भागहारक जिनमे
 अट्टच्छदण हो उतनीवार उक्त मग्गज्जदि रात्रि के अट्टच्छदण करने पर बादर तेज्जहाविक
 पणाए रात्रि भागी है ।

यस्य अमग्गज्जदि गृहीत उपरिम विहस्यता वत्तमात है— प्रतरात्रि के अमग्गज्जदि
 भागमे प्रतरात्रि के उपरिम पग्गे उपरिम पग्गे गुणित करके आ एण्य भागे उचमे
 प्रतरात्रि के पग्गे उपरिम पग्गे उपरिम पग्गे गुणित करके आ गुणित रात्रि सप्त्य भागे
 उचमे पणापणा रत्तमामा उपरिम पग्गे उपरिम पग्गे भाजित करके पर बादर तेज्जहाविक
 पणाए रात्रि भागी है । उमका गृहीतकरण इत्यचार है— प्रतरात्रि के पग्गे उपरिम पग्गे
 उपरिम पग्गे पणापणा रत्तमामा उपरिम पग्गे उपरिम पग्गे भाजित करके पर पणापणा
 के उपरिम पग्गे उपरिम पग्गे भाग है । फिर भी प्रतरात्रि के उपरिम पग्गे उपरिम पग्गे
 पणापणा के उपरिम पग्गे उपरिम पग्गे भाजित करके पर प्रतरात्रि के उपरिम पग्गे भाग
 है । फिर भी प्रतरात्रि के अमग्गज्जदि भाग : प्रतरात्रि के उपरिम पग्गे भाजित करके पर
 बादर तेज्जहाविक पणाए रात्रि भागी है । हमप्रचार बादर तेज्जहाविक पणाए रात्रि
 भागी है एसा समग्रर पदमे गुणा करके अमग्गज्जदि भागका प्रहण किया । उक्त भागहारक
 जिनमे अट्टच्छदण हो उतनीवार उक्त मग्गज्जदि रात्रि के अट्टच्छदण करने पर भी बादर
 तेज्जहाविक पणाए रात्रि भागी है । हमीउचार मग्गज्जदि मग्गज्जदि भाग
 के भाग चाहिये । प्रतरात्रि के उपरिम पग्गे अमग्गज्जदि भागका, पणापणा के उपरिम पग्गे

माएण बादरवेउपन्जचरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वचब्बो । एत्थ सुचगाहा-
आसब्बियाए बम्भो आसब्बियासंखमागुणिदो दु ।
तस्मा धरस्स अतो वात्तरपन्जचतेज्जण ॥ ७७ ॥

बादरवाउकाइयपज्जत्ता दब्बपमाणेण केवडिया, असंखेजा ॥ ९२ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुगमो । असंखेजा इदि सामण्यवयणण णवविहासंखेजस्स
गहणे पत्त अणिच्छिदासपन्जपटिसेइहुमुत्तरसुत्तमाह—

असखेज्जामखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्मप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ ९३ ॥

एत्थस्म वि सुत्तस्म अत्था णिक्खुवाणीहि पुब्ब व पम्भेदब्बो । एदम्हाणे सुचद्दो
समग्रविद्विअसंखजस्स पटिसेहे जा वि अज्जह्णाणुक्कस्मअर्मरत्तज्जासखज्जमासप्पिणि
उस्सप्पिणीआ षणलगादिभएण अणयविमप्पाआ तदा तप्पाटिसेइहुमुत्तरसुत्त मभदि—

खेत्तेण असखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स मखेज्जदिभागो ॥ ९४ ॥

असंख्यातवै भागरूप और घनाघनाबलीके उपरिम यगके असंख्यातवै भागरूप बादर तेज
स्कायिक पर्याप्त राक्षिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारक कथन करना चाहिये ।
यह सूत्रगाथा ही जाती है—

शुद्धि भावनीके असंख्यातवै भागसे भावनीके वर्गको गुणित कर देने पर बादर
तेजस्कायिक पर्याप्त राक्षिका प्रमाण होता है इसलिये यह प्रमाण घनाघनीके
भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? असंख्यात
है ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । सूत्रमें 'असंख्यात है' ऐसा सामान्य वाक्य देनेसे भी
प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिश्चित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये
आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवस
सर्पिलियों और उत्सर्पिलियोंके द्वारा अवहृत होते हैं ॥ ९३ ॥

निम्न आदिके द्वारा हम सूत्रके भी अर्थका पदसेके समान प्रकरण करना चाहिये । हम
सूत्रसे होय आठ प्रकारके असंख्यातोंका प्रतिषेध हो जाने पर भी अज्जह्म्यानुदए असंख्याता
संख्यात अवसर्पिलियों और उत्सर्पिलियों घनत्वके आदिके भेदसे धनक प्रकारकी है इसलिये
उनका प्रतिषेध करनेके लिये भागना सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यात जगप्रतरप्रमाण है,

१ x छोटा x छंद x x वाक्छं । वाक्छं वाक्छं । वा ७१ ७३ व छं ७३ ७३ १ ११

असंख्येज्जाणि चि विरेसा अगपइरादिहंहुमिअसंखुज्जासंखेज्जपडिसइफला । पन-
 सेगादिउपरिमसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहंहुं लेगास्स संखेज्जादिमागवययं । खुत्तण इति
 वयये त्थया दइप्पया । सेसं सुगमं । संखुज्जम्बहि पणलाग माग हिंद बादरगाउपज्जप
 दम्बमागच्छदि चि तुपं हादि । एत्थ गाहा—

अगसेयीए वण्णे अगसेयीसंखमागगुणिजे इ ।

उम्हा पणजेगलो बात्तापत्तवाउण ॥ ७८ ॥

वणप्फइकाइया णिगोदजीवा वादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता
 दव्वपमाणेण केवाडिया, अणंता ॥ ९५ ॥

वनस्पति' कय' प्ररित' येषां त' मनस्पत्तिकया', वनस्पत्तिकया एव वनस्पति-

जो असंख्यात अगप्रतरप्रमाण लोकके सम्प्रयातवें माग है ॥ ९४ ॥

सूत्रमें असंख्यात यह वचन अगप्रतर आदि अघस्तत असंख्यातासंख्यातके
 प्रतिषेधके लिये दिया है । वनलोक आदि अपरिम असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेध करनेके लिये
 लोकके संख्यातवें मागप्रमाण यह वचन दिया है । खेलेज इस पदमें तृतीया विभक्ति
 आगमा आदिसे । रोप कथन सुगम है । संख्यातसे वनलोकके सम्प्रित करने पर बाहर बापु
 कायिक पर्याप्त जीवोंका द्रव्य व्यता है यह इस कथनका तात्पर्य है । यहाँ गाया ही जाती है—
 चूंकि अगसेयीके वर्गको अगसेयीके संख्यातवें मागसे गुणित करने पर बाहर बापु
 कायिक पर्याप्त पाति जाती है । इसलिये एक प्रमाण वनलोकके सीतर आता है ॥ ७८ ॥

वनस्पत्तिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पत्तिकायिक बादर जीव, वनस्पति-
 कायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पत्तिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पत्तिकायिक बादर अपर्याप्त
 जीव, वनस्पत्तिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पत्तिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद
 बादर जीव, निगोद सूक्ष्म जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त
 जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, प्रत्येक द्रव्यप्रमायकी
 अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ ९५ ॥

वनस्पति ही काय पर्याप्त राशीर जिन जीवोंके होता है वे वनस्पत्तिकाय कहलाते हैं ।

१ उत्तलजिपुष्पिमिदिबअकपत्तेरहीनसवाती । तत्तात्पज्जत्ता पत्तिवाण होदि विपत्ति ॥ वयव-
 क्कसवाप्ते वज्जत्तवत्ता होदि वत्तिवाण । केवा तटुववत्ता पत्तिवाणो पुष्पविट्ठो ॥ तटुवेत्त वत्तवत्ता वत्तवत्ता
 वत्तवत्ता वत्त । वत्ति वत्तवत्तावत्ता पुष्पत्ता वत्तवत्तवत्ता ॥ वी जी. १ १-२ ८ वात्तवत्तावत्ता वत्त
 वत्ता वत्तवत्ता वत्ता । पुष्पवत्तवत्ता पत्तिवाण होदि वत्तवत्ता ॥ वी जी २११ वात्तवत्ता वत्ता वत्त
 वत्ता । वत्तवत्ता २, ९

कायिका' । एवं सदि विग्गाहार्हं नहुमाणां न वणप्पइकइयत्त ण पावेदि ! चे, न एस दोसो, वणप्पइकइयत्तसंघेण सुह-दुक्खाणुहवणमिचित्थमभेयत्तमुवगयजीवाणमुवमारोव वणप्पइकइयत्ताविरोहा । वणप्पइणामत्तमोदया जीवा विग्गाहार्हं नहुमाणा वि वणप्पइकइया मवन्ति । अमिमर्णसाणत्तजीवाणमक्क षेव सरीरं मवदि साधारणरूपेण से पियोदजीवा मण्ति । संखज्जासंखज्जपडिसइफले अणत्तणिसे । सत्तं सुगम । अर्पता इदि सामण्यवयनेण मवविहस्स अपत्तस्स गहणे पत्ते अविवक्खिदस्स अहुविहाणत्तस्स पडिसेहइमुत्तरसुत्त मवदि—

तथा वनस्पतिकाय ही वनस्पतिकायिक कह्यत है ।

शंका—यदि ऐसा है तो विग्रहणमें विद्यमान जीवोंका वनस्पतिकायिकपना नहीं प्राप्त होता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, वनस्पतिकायके संबन्धसे कुछ और कुछके अनुभव करनेमें निमित्तमूल कर्मके साथ एकत्वको प्राप्त हुए जीवोंके उपकारसे विग्रहणमें वनस्पतिकायिक कहनेमें कोई विरोध नहीं आता है । जिन जीवोंके वनस्पति नामकर्मका उद्भव पाया जाता है वे विग्रहणमें रहते हुए भी वनस्पतिकायिक कहे जाते हैं ।

विशेषार्थ—यहाँ पर शंकाकारका यह समझाय है कि जो जीव विग्रहणमें रहते हैं उनके एक, दो या तीन समयतक जोकर्म वर्गीयार्थोंका ग्रहण नहीं होता है, इसलिये उन्हें उस समय वनस्पतिकायिक भादि नहीं कह सकते हैं । इस शंकाका समाधान यह है कि विग्रहणमें प्रथम समयसे ही जीवोंके स्थावरकाय या असत्काय नामकर्मका उद्भव हो जाता है । स्थावरकायके पृथिवीकायिक भादि पाँच अवान्तर भेद हैं और सामान्य अपने विशेषोंके छेड़कर स्वतंत्र नहीं पाया जाता है इसलिये पृथिवी जीवके पृथिवीकाय वनस्पति जीवके वनस्पतिकाय नामकर्मका उद्भव विग्रहणमें प्रथम समयसे ही हो जाता है यह सिद्ध हुआ । अब यदि एक दो या तीन समयतक उसके जोकर्म वर्गीयार्थोंका ग्रहण नहीं भी होता है तो भी वह जीव उस उस पर्यायमें कुछ और कुछके अनुभव करनेमें निमित्तमूल कर्मोंके साथ एकत्वको प्राप्त हो चुका है इसलिये उसे उपकारसे वनस्पतिकायिक व्यादि कहना विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

जिन अश्वत्थान्त जीवोंका साधारणरूपसे एक ही शरीर होता है उन्हें त्रियोद् जीव कहते हैं । सूक्ष्म संख्यात और असंख्यातक प्रतिषेध करनेके लिये 'अनन्त' पदका निर्वोध किया है । दोष कथन सुगम है । सूक्ष्म अनन्त है ऐसा सामान्य बचन देनेसे भी प्रश्नकारके अश्वत्थोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर अधिषक्षित आठ प्रश्नकारके अनश्वत्थोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

अणताणताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरति कालेण
॥ ९६ ॥

अदि पुम्भरासीणमभताप्यतचावहाणहुमातादमिदं सुच, ता न अवहिरति कस्मत्तपि
वयम निरत्थपमिदि च, न एस दोमा, उमयकन्जमाहणहुचादो । पुम्भरासीणमभता-
प्यतर्च च संते वि वप अणतेण वि अदीदकस्सेण असमंति च पदुप्पाददि चि । अवमम सुमं ।

स्वेत्तेण अणताणता लोमा ॥ ९७ ॥

अदीदकाल ओसपिणि उस्सपिणीपमाणेण कस्मत्तपि न अवताप्यताओ ओसपिणि-
उस्सपिणीआ मर्षति । एदाहि अणतामताहि आसपिणि-उस्सपिणीहि पुम्भरासीणमभ-
ताप्यतचावहाणहुमातादमिदं सुच, ता न अवहिरति कस्मत्तपि वयम निरत्थपमिदि च,
न एस दोमा, उमयकन्जमाहणहुचादो । पुम्भरासीणमभताप्यतर्च च संते वि वप अणतेण
वि अदीदकस्सेण असमंति च पदुप्पाददि चि । अवमम सुमं ।

कालाक्षी अपेक्षा पूर्वोक्त चौदह जीवराशिवां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अवहृत नहीं होती हैं ॥ ९६ ॥

शुद्धा—यदि पूर्वोक्त जीवराशिओंके अनन्तानन्तत्वके ज्ञान करानेके लिये यह सूत्र
ध्याया है तो न अवहिरति कालेण यह वचन निरर्थक है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि हमसब काशिके साधन करनेके लिये
इस वचन दिया है । इस पद एक तो पूर्वोक्त राशिओंके अनन्तानन्तत्वका और दूसरे उनमेंसे
प्रत्येक राशिसे ध्यत होने पर भी अनन्त अतीत कालके ज्ञान भी वे समाप्त नहीं होती हैं
इसका प्रतिपादन करता है । शेष कथन सुगम है ।

वे चौदह जीवराशिवां क्षेत्राक्षी अपेक्षा अनन्तानन्त साध्यमान हैं ॥ ९७ ॥

शुद्धा—अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमायसे करने पर वे अवस-
र्पिणियां और उत्सर्पिणियां अनन्तानन्त नहीं होती हैं, ऐसी अनन्तावस्था अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके ज्ञान पूर्वोक्त चौदह जीवराशिवां अवहृत नहीं होती हैं इसप्रकार प्रतिपादन
करनेवाले इसके पहले सूत्रसे हम चौदह राशिओंके अनन्तानन्तत्वका और अतीतकालसे
बहुतका ज्ञान हो जाता है । परंतु इस समय कहे गये इस सूत्रसे कीमता अपूर्व मर्य ज्ञान
जाता है जिससे इस सूत्रका मर्म स्पष्ट होवे ।

समाधान—पूर्व अतीत सूत्रसे हम चौदह राशिओंका अतीत कालसे बहुतका ज्ञान
करा दिया किंतु इसकी विशेषताका ज्ञान नहीं कराया । परंतु यह सूत्र इन राशिओंका अतीत
कालसे अनन्तगुणावस्था : १ । आ-... स्वपीकरण करते हैं—पूर्व सूत्रमें

गुणच जाणाविसदे । तं अहा— पुत्रविकारहादिपमानपरूषण कप्पा, एत्थ पुण तदो असंखेज्जगुणो लोको चि बुत्तो । कप्पस्स गुणगारासीदो षण्णलोगगुणगारो अर्भवत्तगुणा । इदो ! एदस्स सुत्तस्स अवयवभूदसेलसवडियअप्पात्तदुगवयणादो जाविसदे । तग्हा सक्को एस सुत्तारमो चि भेत्तव्यं ।

सपीहि एत्थ धुवरासी उप्पाज्जज्जे । तं जहा— पुत्रविकारहादिपमानपरूषण-आउकाइय-तेउकइयवत्त कइय-तसकइय अकाइय च, एदेसिं सेव पमान वग्ग षण्णफइयकइयमाजिदं च सम्भजीव रासिभिह पक्खिचे षण्णफइयकइयधुवरासी होदि । षण्णफइयकइयवदिरिचससरासिभा' सम्भजीव रासिमोवदिय लद्धरूवेण मज्झिदसग्गजीवरासिं तमिह सेव पक्खिच षण्णफइयकइयधुवरासी होदि चि बुत्त भवदि । एदेण धुवरासिणा सम्भजीवरासिस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे षण्णफइयकइयरासी आगच्छदि । षण्णफइयकइयधुवरासिमसंखेज्जलोगेण खुडिदेयखडं तमिह चव पक्खिचे सुद्धमवणफइयकइयधुवरासी होदि । एदेण पुत्तचअसंखलोगेण षण्णफइयकइय धुवरासिमागहातेण रूवाहिण षण्णफइयकइयधुवरासिं गुणिदे भादरवणफइयकइयधुवरासी

गुण्यमान राशि कल्प कही गई है, परंतु इस सूत्रमें कल्पसे असंख्यातगुणा श्रेष्ठ गुण्यमान राशि कहा गया है । तथा कल्पकी गुणकार राशिसे धनश्लोकका गुणकार अनन्तगुणा है ।

प्रश्न— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— इस सूत्रके अवयवभूत सोढहप्रतिक अल्पवहुत्वके पक्षनसे यह जाना जाता है ।

इसलिये इस सूत्रका मारम सफळ है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये ।

अब यहां भुवराशि उत्पन्न की जाती है । उसका स्वरूपकरण इसप्रकार है— पृथिवी क्षयिक अक्षयिक ऐकस्वक्षयिक बायुक्षयिक जलक्षयिक और अक्षयिक इन जीवराशियोंके प्रमाणको तथा वनस्पतिक्षयिक जीवराशिके प्रमाणसे माजित उक्त राशियोंके प्रमाणके बर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिक्षयिक भुवराशि होती है । वनस्पतिक्षयिक जीवराशिको छोड़कर शेष राशिके द्वारा सर्व जीवराशिको माजित करके जो छद्म भावे उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सर्व जीवराशिको माजित करके जो छद्म भावे उसे इसी सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिक्षयिक जीवराशि की भुवराशि होती है यह उक्त कण्ठका तात्पर्य है । इस भुवराशिसे सर्व जीवराशिके उपरिम बर्गके माजित करने पर वनस्पतिक्षयिक जीवराशि आती है । वनस्पतिक्षयिक भुवराशिको असंख्यात श्लोकप्रमाणसे कथित करके जो एक खंड छद्म भावे उसे इसी वनस्पतिक्षयिक भुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिक्षयिक जीवराशि की भुवराशि होती है । ऊपर जो असंख्यात श्लोकप्रमाण वनस्पतिक्षयिक भुवराशिका मागहार कह भाये हैं उसमें एक मिला कर जो प्रमाण हो उससे वनस्पतिक्षयिक भुवराशिके गुणित करने पर भादर वनस्पतिक्षयिक भुवराशि होती है । पुनः

अणंताणताहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि ण अवहिरति कालेण

॥ ९६ ॥

अदि पुष्परसीणमगतार्ततावबोद्धम गमिद सुच, तो ण अवहिरति कालेणपि वयम गिरम्यममिदि च, ण एम दोमा, उमयकज्जमाइणहृत्तादो । पुष्परसीणमगतार्तताव वतं च सेते वि वण अणतेण वि अदीदकालेण असमत्ति च पदुप्पाददि ति । अवसमं सुगमं ।

स्वेत्तेण अणंताणंता ल्रेगा ॥ ९७ ॥

अदीदकाले ओसपिणि उस्मपिणीपमाणेण करिमाणे ण अवतार्तताव आसपिणि उस्मपिणीओ मवति । एदाहि अणंताणंताहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि पुष्पुचचोदस-अविरामीओ ण अवहिरति पि मवतिप पुष्पिणसुचप एदाणं रासीणमगतार्ततावमदीद कालेण बहुच च ज्ञापविद । सपदि इमेण सुचप को अपुष्पो अत्यो ज्ञापविद ज्ञेयवम सुचसम पारेमो मफला हान्ज ? बुधे— एदाण रासीणमदीदकालेण बहुचमच पुष्पिण सुचम ज्ञापविद, ण तस्म विमसा । एदम पुण सुचण तसि रासीणमदीदकालेण अणं-

कालकी अपेक्षा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उरसर्पिणियोंके द्वारा अवहृत नहीं होती ॥ ९६ ॥

श्रुंका— यदि पूर्वोक्त जीवराशियोंके अवस्तावन्तत्वके ज्ञान करानेके लिये यह सूत्र ध्याया है तो ण अवहिरति कालेण यह वचन निरर्थक है ?

समाधान— यह चोर्ध्व वाच नहीं है क्योंकि वयम वाचोंके साधन करनेके लिये उक्त वचन दिया है । वक्त पद एक तो पूर्वोक्त राशियोंके अवस्तावन्तत्वका और दूसरे उक्तसे प्रत्येक राशिके ध्यय होने पर भी अनन्त अतीत कालके द्वारा भी वे समाप्त नहीं होती हैं, इसका प्रतिपादन करता है । शेष कथन सुगम है ।

वे चौदह जीवराशियां श्रेष्ठकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकाप्रमाण हैं ॥ ९७ ॥

श्रुंका— अतीत कालको अवसर्पिणी और उरसर्पिणीके प्रमाणसे करने पर वे अवसर्पिणियों और उरसर्पिणियों अवस्तावन्त नहीं होती हैं ऐसी अवस्तावन्त अवसर्पिणियों और उरसर्पिणियोंके द्वारा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अवहृत नहीं होती हैं इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले इसके पहले सूत्रसे इन चौदह राशियोंके अवस्तावन्तत्वका और अतीतकालसे बहुत्वका ज्ञान हो जाता है । परंतु इस समय को गये इस सूत्रसे औनसा नपूर्व अर्थ जाना जाता है, जिससे इन सूत्रका प्रारम्भ सफल होने ?

समाधान— पूर्व अतीत सूत्रसे इन चौदह राशियोंका अतीत कालसे बहुत्वका ज्ञान करा दिया किन्तु उसकी विशेषताका ज्ञान नहीं कराया । परंतु यह सूत्र इन राशियोंका अतीत कालसे अवस्तावन्तत्वका ज्ञान कराता है । अग्रे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं— पूर्व सूत्रमें

एदस्स सुवस्स अरथा असई पम्बिदो चि ण बुधदे । असंखजा इदि सामण्य-
ययणण णवण्हमसख्खार्ण गहणे मंपचे अविषक्खिदे अवणिय विवक्खियपरुवण्हमुत्तर
सुत्त मणदि ।

असखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ९९ ॥

एदस्स वि अत्थो बहुसो उच्चा चि ण उब्बदे । त च असंखज्जासंखेज्जयमणेय
वियप्पमिदि तस्स विममपरुवण्हमुत्तरसुत्त मणदि—

खेत्तेण तमकाइय-तमकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि
अगुलस्स अमखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण अगुलस्स संखेज्जदिभाग-
वग्गपडिभाएण ॥ १०० ॥

एदण सुत्तेम जगपदराण जगसदीदा च उव्वरिम-इट्ठिमसंखज्जवियप्पा अवणिदा
मंथंति । 'अंगुलस्स असखज्जदिभागवग्गपडिभागण' इमण ययणेण जगपदरस्स अंतम्भूद

इस सूत्रका मय प्रकार कह चुके हैं, इसलिये यहाँ नहीं कहते हैं । 'एवमे अंत
क्यात है' इस सामान्य पक्षके बनेले भी ही प्रकारके अमक्यातोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर
अविषयित अमक्यातोंका अपनयन करके विषयित अंतक्यातके प्रकरण करनेके लिये
भागका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा त्रमकायिक और त्रमकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात
असंविणियों और उत्सर्विणियोंके द्वारा अपहृत होत है ॥ ९९ ॥

इस सूत्रका भी मय प्रकारका कहा जा चुका है इसलिये नहीं कहते हैं । यह
असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है इसलिये उसके विद्योयके प्रकरण करनेके लिये भागका
सूत्र कहते हैं—

ध्वजकी अपेक्षा त्रमकायिकोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूर्यगुलक असंख्यातवै
भागक वर्गरूप प्रतिभागस और त्रमकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा
सूर्यगुलक संख्यातवै भागक वर्गरूप प्रतिभागमे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०० ॥

इस सूत्रमे जगप्रतर और जगभर्त्तामे ऊपर और नीचेक अंतक्यात विवरण अश्लील
होते हैं । 'अंगुलक अमक्यातवै भागके वर्गरूप प्रतिभागस' इस पक्षमे जगप्रतरके अंतर्भूत

होति । पुनः सुहृन्मवणपञ्चअपञ्चरासिणा सुहृन्मवणपञ्चकप्यरासिम्हि मागे हिरे त्व
 नं त्स्वं तं दुप्पडिरासिं कात्तम तत्त्वेगेण सुहृन्मवणपञ्चकप्यपुवरासिं गुणिदे सुहृन्मवणपञ्च
 कप्यअपञ्चपुवरासी होदि । पुनो पुनइवियपुक्किगल्लसंखेज्जस्सेहि रूप्पेहि सुहृन्-
 मवणपञ्चकप्यपुवरासिं खंडिय तत्त्वयल्लं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहृन्मवणपञ्चकप्यपञ्च
 पुवरासी होदि । बादरवणपञ्चकप्यपञ्चत्तपहि बादरवणपञ्चकप्यरासिम्हि मागे हिरे त्स्वं
 असंखेज्जल्लेगे दुप्पडिरासिं कात्तम तत्त्वेगेण बादरवणपञ्चकप्यपुवरासिं गुणिदे बादर
 वणपञ्चकप्यपञ्चत्तपुवरासी होदि । पुन इवियरासिणा रूप्पेण बादरवणपञ्चकप्य
 पुवरासिं खंडिय तत्त्वयल्लं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरवणपञ्चकप्यअपञ्चत्तपुवरासी
 होदि । एव चेव विगोत्तापं पि पुवरासी उत्पप्पेद्दम्भो । नवरि पत्तेयसरीरोहि सह सप
 पक्खवरसीओ मवति । सेसविहीर्यं वणपञ्चकप्यमंगो ।

तसकाइयत्तसकाइयपञ्चत्तपसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
 असंखेज्जा ॥ ९८ ॥

सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीवराशिसे सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक जीवराशिसे माजित
 करने पर वहाँ जो छप्प म्भावे उससे ही प्रतिपाशिकां करके वनमेंसे एक प्रतिपाशिके द्वारा
 सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक भुवराशिके गुणित करने पर सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीवोंकी
 भुवराशि होती है । पुनः पूयक् स्थापित पूर्वोक्त प्रतिपाशिके संख्यात प्रमाणमेंसे एक कम
 करके जो शेष रहे उससे सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक भुवराशिके खंडित करके वहाँ जो एक खंड
 छप्प भावे उसे वही सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक भुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक
 पर्याप्त जीवोंकी भुवराशि होती है । बादर वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त राशिसे प्रमाणसे बादर
 वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त राशिसे माजित करने पर जो असंख्यात छोटा छप्प भावे उनही से
 प्रतिपाशिकां करके वनमेंसे एक प्रतिपाशिके बादर वनस्पतिक्रायिक भुवराशिके गुणित करने
 पर बादर वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त जीवराशिकी भुवराशि होती है । पुन पूयक् स्थापित
 प्रतिपाशिकेसे एक कम करके जो शेष रहे उससे बादर वनस्पतिक्रायिक भुवराशिका खंडित
 करके वहाँ जो एक खंड छप्प भावे उसे वही बादर वनस्पतिक्रायिक भुवराशिमें मिला देने
 पर बादर वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीवोंकी भुवराशि होती है । इसीप्रकार निगोव जीवोंकी
 भी भुवराशि उत्पन्न कर बना चाहिये । इसका निदेश है कि प्रत्येकपाटीर वनस्पतिक्रायिकोंके
 साथ साथ प्रत्येकपाशिकां होती हैं । शेष विधि वनस्पतिक्रायिकोंके कथनके समान है ।

त्रसक्रायिक और त्रसकप्यिक पर्याप्तोंमें मिच्छाइट्टी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
 कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ९८ ॥

वेदिदिय-वेदिदिय चर्तदिय-वेदिदियअपञ्चचर्तवेदि' एगइ कदे तउकअपअपअप
हवति । कचं तेसि पख्खणा पचिदियअपअपअपअपअपअप समाणा मभदि ? ण एस दोसो,
उमयत्थ पदरगुत्तस्स असंखेज्जदिमाग मागहार पेक्खिऊण तहोवएसो । अत्यदो पुणो
तेसि विसेसो गमहरेहि वि ण वारिजदे ।

मागामाग वचइत्तामो । सम्बजीवरसि संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुइम
मिगोदजीवपञ्चचा होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुइममिगोदअपञ्चचा
होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बाहरमिगोदअपञ्चचा होति । सेस
अर्णतखंडे कए बहुखंडा बाहरमिगोदअपञ्चचा होति । सेस अर्णतखंडे कए
बहुखंडा अकअया होति । संसरासीदा असंखेज्जसागपमाणमवषेऊण पुष ठविय पुणो
सेसरासिमसंखेज्जलोएण खंडिय एयखंडमवषेऊण त पि पुष ठविय पुणो सेसरासि
पचारि समपुंवे कळ्ळ अविइएयखंड असंखेज्जलोगेण खंडिय तए बहुखंडे पदमपुमि
पक्खिसे सुइमबाउकअया होति । सेसगखंडमसंखेज्जलोगेण खंडिय तए बहुखंडा

टीका—अब कि प्रीमिष्य प्रीमिष्य क्कामिन्निष्य और पंचेन्निष्य छव्यपर्याप्तकोंको
एक करके पर असंख्यिक छव्यपर्याप्त जीव होते हैं, तब फिर असंख्यिक छव्यपर्याप्त-
कोंकी प्रकृति पंचेन्निष्य छव्यपर्याप्तोंकी प्रकृतिपाके समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि, हमयब अर्थात् पंचेन्निष्य छव्यपर्याप्तक
और असंख्यिक छव्यपर्याप्तक, इन दोनोंका प्रमाण ज्ञानेकी छिये प्रतरंगुळके असंख्यातवे
भागरूप भागहारके देकर इस प्रकारका उपदेश दिया । अर्थात् अपेक्षा जो उन दोनोंकी
प्रकृतिपाके विशेष है उसका गणपर भी निवारण नहीं कर सकते हैं ।

अब भागामागको बतहाते हैं—सर्व जीवरसिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण सुइम मिगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सुइम मिगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर मिगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर मिगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अक्षयिक जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण राशिमेंसे
असंख्यात कोट्यमान राशिको निरक्षररूप रूप स्थापित करके पुनः शेष राशिको असंख्यात
कोट्यमानसे खंडित करके दो एक अक्षरोंसे निरक्षररूप और शेष भी रूप स्थापित करके
पुनः जो शेष बहुभाग राशि है उसके बार समान पुनः करके निरक्षर रूप रूप स्थापित एक
अक्षरको असंख्यात कोट्यमानसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागको प्रथम पुनः मिखा देवे पर
सुइम वायुकायिक जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक खंडको असंख्यात कोट्यमानसे खंडित

संसर्गियप्ता पडित्तिदा त्रि दकुम्भा । उगपदरे कदलुम्मं वगसमुत्तिदं पदरुगुलं पि कदलुम्म
वगसमुत्तिदं चेव । तेसिं इत्थिदसम्भमागहता वि वगसमुत्तिदा कदलुम्मं चेदि जाणाववहु
मंगुलस्स असंखेज्जदिमागवमावयण । अण्णाहा तस्म फलाशुवत्तमादो । पदरुगुलस्स
असंखेज्जदिमावयण पदरुगुलस्स संखेज्जदिमागेण च उगपदरे मागे हिदे जइत्तमेण तम
काप्पा तसकम्पपन्नञ्चा च भवसि त्रि पुत्त मवदि ।

सासणसम्माहट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवल्लि त्रि ओधं ॥ १०१ ॥

परम तमकम्प-ससकम्पपन्नञ्चा इति पुष्पसुषादो अणुबद्धे । कुरो ? उवरि पुष
अपन्नञ्चसुषारंमण्णाहाशुवत्तीदो । सेसं सुगमं ।

तसकाहयअपज्जत्ता पंचिदियअपज्जत्ताण भगो ॥ १०२ ॥

शेष विक्षय प्रतिपिद्य हो जाते हैं ऐसा समझना चाहिये । अग्न्यतर इत्युक्त संख्यारूप और
पर्याप्तसुरिपत्त है । प्रत्यरंगुल भी इत्युक्त संख्यारूप और वगसमुत्तिपत्त है । उसीप्रकार उनके
स्थापित मापहार भी पर्याप्तसुरिपत्त और इत्युक्तारूप हैं इसका ज्ञान करानेके किये मंगुलके
असंख्यातर्षे मापका वर्ण यह बतल दिया अग्न्यया उसकी दूसरी कोर सफाई नहीं पाई
जाती है । प्रत्यरंगुलके असंख्यातर्षे मापसे और प्रत्यरंगुलके संख्यातर्षे मापसे अग्न्यतरके
मापित करने पर पद्याक्रमसे असंख्याधिक और असंख्याधिक पर्याप्त जीव होते हैं यह इस
सूत्रका अन्विष्टार्थ है ।

सासादनसम्पगच्छि गुणस्यानसे सेकर जयोगिकेवली गुणस्यानतक प्रत्यक
गुणस्यानमें असंख्याधिक और असंख्याधिक पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपजाके समान
हैं ॥ १०१ ॥

इस सूत्रमें 'असंख्याधिक और असंख्याधिक पर्याप्त' इस बतलनकी पूर्ण सूत्रसे अनुवृत्ति
होती है क्योंकि अग्रेके सग्न्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका आरंभ
पृथक्कृत्यसे अग्न्यया बल नहीं सञ्चला था । शेष कथन सुगम है ।

विशेषार्थ—नृकि जग असंख्याधिक सग्न्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणका प्रतिपादन
करनेवाला सूत्र पृथक्कृत्यसे रखा गया है इससे प्रतीत होता है कि पूर्वोक्त सूत्रमें असंख्याधिक
और असंख्याधिक पर्याप्त परकी अनुवृत्ति अपने पूर्ववर्ती सूत्रसे हुई है । इस कथनका
कारण यह है कि यद्यपि सामान्य असंख्याधिक जीवोंमें सग्न्यपर्याप्तक जीवोंका अन्तर्भाव
हो जाता है फिर भी सग्न्यपर्याप्तक जीव गुणस्यानप्रतिपत्त नहीं होते हैं अर्थात् मिथ्यादृष्टि
ही होते हैं । अतएव इस विरुद्ध ज्ञान करानेके किये असंख्याधिकोंके प्रमाणके अनन्तर
बीचमें सासादनसम्पगच्छि अग्नि गुणस्यानप्रतिपत्त जीवोंका प्रमाण कह कर अनन्तर सग्न्य
पर्याप्त असंख्याधिकोंका प्रमाण कहा ।

असंख्याधिक सग्न्यपर्याप्त जीवोंका प्रमाण पंचेन्द्रिय सग्न्यपर्याप्तकोंके प्रमाणके
समान है ॥ १०२ ॥

वेर्दिय-सेर्दिय-वर्दरिदिय-परिदिय-अपञ्जचर्दिवे' एगड़े कदे तपकद्वयधपञ्चचा
हवति । कवे तेसि परुवणा परिदियअपञ्जचपरुवणार समाभा भवदि ? न एस दोसो,
उमयत्य पदरंगुलस अर्सेखेज्जिभाग भागहार पेक्खिऊण सद्दोपसादो । अत्यदो पुणो
तेसि विसेसो गगहरदि पि ण वारिऊदे ।

भागामाग वचइस्सामो । सम्मवीवरासि सखेज्जिऊ कए बहुखंडा सुहुम
मिगोदवीवपञ्चचा होति । सेसमसंखेज्जिऊ कए बहुखंडा सुहुममिगोदअपञ्चचा
होति । सेसमसंखेज्जिऊ कए बहुखंडा बादरमिगोदअपञ्चचा होति । सेस
अजंतखंडे कए बहुखंडा बादरमिगोदअपञ्चचा होति । सेस अर्णसखंडे कए
बहुखंडा अकट्टया होति । सेसरासीदो अर्सेखेज्जसोगपमाणमन्येऊण पुन ठविय पुणो
सेसरासिमसंखेज्जलोएण खंडिय एयखंडमन्येऊण त पि पुन ठविय पुणो सेसरासि
वचारि समपुजे कट्टम अमिदिएयखंड अर्सेखेज्जलोएण खंडिय तस्य बहुखंडे पठमपुमि
पक्खिणे सुहुमवाठकट्टया होति । सेसगखंडमसंखेज्जलोगम खंडिय तस्य बहुखंडा

टीका—अब कि प्रीतिप्रिय प्रीतिप्रिय वरुतिप्रिय और पंचेष्ट्रिय छम्पपर्याप्तको
एकत्र करने पर वस्तुव्यक्तिक छम्पपर्याप्त जीव होते हैं, तब फिर वस्तुव्यक्तिक छम्पपर्याप्त-
कोई प्रकृपया पंचेष्ट्रिय छम्पपर्याप्तोंकी प्रकृपयाके समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि वनयन न्याय पंचेष्ट्रिय छम्पपर्याप्तक
धीर वस्तुव्यक्तिक छम्पपर्याप्तक, इन दोनोंका प्रम व छानेके लिये प्रत्यंगुलके वस्तुव्याप्तके
मागकप मागहारको देखकर इस प्रकारका उपदेश दिया । अर्थात् अनेका ओ इन दोनोंकी
प्रकृपयामें विशेष है उसका गणपर भी निवारण नहीं कर सकते हैं ।

अब मागामागधे बतलाते हैं—सर्व जीवपक्षिके संख्यात बंड करने पर इनमेंसे
बहुभागप्रमाण सूक्ष्म मिगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक मागके वस्तुव्याप्त बंड करने पर
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म मिगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक मागके वस्तुव्याप्त बंड
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर मिगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक मागके वनयन
बंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर मिगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक मागके वनयन
बंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अकट्टया जीव हैं । शेष एक मागप्रमाण पक्षिके
वस्तुव्याप्त कोकप्रमाण पक्षिको विकासकर पूयक स्थापित करके पुनः शेष पक्षिके वस्तुव्याप्त
कोकप्रमाणसे बंडित करके ओ एक बंड बाधे उसे विकासकर और उसे भी पूयक स्थापित करके
पुनः ओ शेष बहुभाग पक्षि है उसके चार समान पुंज करके निष्पक्षे रूप पूयक स्थापित एक
बंडको वस्तुव्याप्त कोकप्रमाणसे बंडित करके उनमेंसे बहुभागको प्रथम पुंजमें मिला देने पर
सूक्ष्म बाधुपक्षिक जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक बंडको वस्तुव्याप्त कोकप्रमाणसे बंडित

विदियपुत्रे पक्खिणे सुद्धमआठकप्पया होति । ससेयखंबमसंखेज्जलोएय खंडिय बहुसंढा
तदियपुत्रे पक्खिणे सुद्धमपुढविक्रया होति । सेसेयखंबं चउत्थपुत्रे पक्खिणे सुद्धम-
तेउकप्पया होति । सग-सगरासि संखेज्जखंडे कये तत्थ बहुसंढा अप्पप्पया पन्त्रचा
होति । एयखंबं सेसिमपन्त्रचा । पुग्गमवगिदमसंखेज्जलोगरासिमसंखेज्जखंडे कय बहुसंढा
बादरनाठअपन्त्रचा होति । सेसमसंखेज्जखंडे कय बहुसंढा बादरआठकप्पयअपन्त्रचा
होति । सेसमसंखेज्जखंडे कय बहुसंढा बादरपुढविक्रयअपन्त्रचा होति । सेसमसंखेज्जखंडे
कय बहुसंढा बादरगिगोदपदिद्धिदा अपन्त्रचा होति । सेसमसंखेज्जखंडे कय बहुसंढा बादर-
वमप्फदिकप्पयअपन्त्रचा होति । संसमसंखेज्जखंडे कय बहुसंढा बादरतेउकप्पयअपन्त्रचा
होति । सेसमसंखेज्जखंडे कय बहुसंढा बादरमाठकप्पयअपन्त्रचा होति । बादरआठकप्पय-
बादरपुढविक्रय-बादरगिगापदिद्धिद-बादरवमप्फयपेगसरिपन्त्रचाअमेयं येव जेयम्भं ।
तदो सेसे असंखेज्जखंडे कय बहुसंढा तसकप्पयअपन्त्रचा' होति । सममसंखेज्जखंडे

करके उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर स्रष्टा अण्व्याप्तिक जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः शेष एक भागको मसक्यात कोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागको तीसरे पुंजमें मिला देने पर स्रष्टा पृथिवीव्याप्तिक जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः शेष एक खंडको चौथे पुंजमें मिला देने पर स्रष्टा तेजस्कृत्याप्तिक जीवोंका प्रमाण होता है। इन चारों पृथिवीमेंसे अपनी अपनी राशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अपेक्ष जपने पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है और एक भागप्रमाण उन उनके अपर्याप्त जीव होते हैं। पुनः पहले विच्छेद कर पृथक् स्थापित की हुई मसक्यात कोकप्रमाण राशिके मसक्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर वायुव्याप्तिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके मसक्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर अण्व्याप्तिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके मसक्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर पृथिवीव्याप्तिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके मसक्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर तेलस्कृत्याप्तिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके मसक्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर विद्युत्प्रतिष्ठित वनस्पति अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके मसक्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर वनस्पतिव्याप्तिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके मसक्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर तेलस्कृत्याप्तिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके मसक्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाहर वायुव्याप्तिक पर्याप्त जीव होते हैं। अग्रे बाहर अण्व्याप्तिक बाहर पृथिवीव्याप्तिक बाहर विद्युत्प्रतिष्ठित और बाहर वनस्पति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका भागाभागा इसीप्रकार के जावा चाहिये। बाहर प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके प्रमाणके मतानुसार जो एक भाग शेष रहे उसके

पञ्चचा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेजा समया । सुहुमववपञ्चकद्रया विसेसाहिया । मन्वत्योवो तसकाह्यजवहासकातो । विषखंमसर् अंसखेज्जगुणा । सेटी अंसखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगअवहारकातो । दधमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? विषखंमसर् । पठरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकातो । सोगा अमखं जगुणो । को गुणगारो ? सेटी । एवं बादरवपञ्चपञ्चच-पथेयसरिरपञ्चच बादरपिगोदपदिद्विदपञ्चच-बादरपुदवि पञ्चच बादरआउपञ्चच-समकद्रयपञ्चचमिष्ठाद्रुहि-समकद्रयअपञ्चचान च दधम । सप्त यादीत्यमोषसत्यापमर्गो । एवं सत्यापप्यत्वहुग समच ।

परस्यामे पयइ । सन्वत्योवा बादरपुदविकाद्रया । सुहुमपुदविकाद्रया अंसखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंसखेजा लता । सन्वत्योवा बादरपुदविकाद्रया । सुहुमपुदविकाद्रया अंसखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंसखेजा लता । पुदविकाद्रया विषसाहिया । सन्वत्योवा बादरपुदविपञ्चचा । तस्सेन अपञ्चचा अमखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंसखेजा लता । सुहुमपुदविकाद्रयअपञ्चचा अंसखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंसखेजा लता ।

अपर्याप्तोसे संख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पति व्यापिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक पर्याप्तोसे विशेष अधिक है । वनस्पतिक जीवोंका अवहारकाळ सबसे स्तोक है । उन्हींकी विषयमसूची अवहारकाळसे अंसख्यातगुणी है । जग ज्येष्ठी विषयमसूचीसे अंसख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाळ गुणकार है । वनस्पतिक जीवोंका द्रव्य जगज्येष्ठीसे अंसख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विषयम सूची गुणकार है । जगमठर वनस्पतिक जीवोंके द्रव्यसे अंसख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाळ गुणकार है । लोक जगमठरसे अंसख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगज्येष्ठी गुणकार है । इसीगुणकार बादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त प्रत्येकवारीर पर्याप्त बादर विशेषव्यतिष्ठित पर्याप्त, बादर पृथिवीकाविक पर्याप्त बादर अन्तःपिक पर्याप्त वनस्पतिक पर्याप्त मिथ्यावृद्धि भीर वनस्पतिक अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान अपरवहुत्व कहना चाहिये । कावमर्त्यस्थाने सासारमधमन्वदि आशिक स्वस्थान अपरवहुत्व सामान्य कस्यान अदरवहुत्वके समान है । इसमकार कस्यान अदरवहुत्व समाप्त हुअ ।

अब परस्यामर्गे अस्ववहुत्व प्रकृत है— बादर पृथिवीव्यापिक जीव सबसे स्तोक है । सूक्ष्म पृथिवीव्यापिक जीव बादर पृथिवीव्यापिकोंसे अंसख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? अंसख्यात स्तोक गुणकार है । अपना बादर पृथिवीव्यापिक जीव सबसे स्तोक है । सूक्ष्म पृथिवीव्यापिक जीव उनसे अंसख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? अंसख्यात स्तोक गुणकार है । पृथिवीव्यापिक जीव सूक्ष्म पृथिवीव्यापिकोंसे विशेष अधिक है । अपना बादर पृथिवीव्यापिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक है । बादर पृथिवीव्यापिक अपर्याप्त जीव उनसे अंसख्यातगुण है । गुण कार क्या है ? अंसख्यात स्तोक गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीव्यापिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीव्यापिक अन्वयाप्तोसे अंसख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? अंसख्यात स्तोक गुणकार है । सूक्ष्म

सुद्धमपुढविकाइयपञ्जचा संखेज्जगुणा । एवं चउत्थो विपप्यो । भवति पुढविकाइया
विसेसाहिया । सम्भत्थोवा बादरपुढविकाइयपञ्जचा । तेसिमपञ्जचा । असंखेज्जगुणा । को
गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइयपञ्जचा
असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुद्धमपुढविकाइयपञ्जचा संखेज्ज
गुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुद्धमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चेष छट्ठो
विपप्यो । भवति पुढविकाइया विसेसाहिया । सम्भत्थोवा बादरपुढविकाइयपञ्जचा ।
तेसिमपञ्जचा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढवि
काइया विसेसाहिया । केपियमचेण ? बादरपुढविकाइयपञ्जचमेचेण । सुद्धमपुढवि
काइयपञ्जचा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयपञ्जचा
विसेसाहिया । केपियमेचेण ? बादरपुढविकाइयपञ्जचमेचेण । सुद्धमपुढविकाइयपञ्जचा
संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पुढविकाइयपञ्जचा विसेसाहिया ।
केपियमेचेण ? बादरपुढविकाइयपञ्जचमेचेण । सुद्धमपुढविकाइया विसेसाहिया । केपिय

पुथिबीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पुथिबीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार
जीवा विकल्प है । इतनी विशेषता है कि पुथिबीकायिक जीव सूक्ष्म पुथिबीकायिक पर्याप्तोंसे
विशेष अधिक हैं । बादर पुथिबीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर पुथिबीकायिक
अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर
पुथिबीकायिक जीव बादर पुथिबीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पुथिबीकायिक
अपर्याप्त जीव बादर पुथिबीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक
गुणकार है । सूक्ष्म पुथिबीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पुथिबीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे
हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म पुथिबीकायिक जीव सूक्ष्म पुथिबीकायिक
पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार छठवां बिन्दु है । इतनी विशेषता है कि पुथिबी
कायिक जीव सूक्ष्म पुथिबीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । बादर पुथिबीकायिक पर्याप्त जीव सबसे
स्तोक हैं । बादर पुथिबीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पुथिबीकायिक जीव बादर पुथिबीकायिक अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्रसे विशेष अधिक हैं ? बादर पुथिबीकायिक पर्याप्तोंका जितना
प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म पुथिबीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पुथिबी
कायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पुथिबीकायिक
अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पुथिबीकायिक अपर्याप्तोंसे विहाय अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक
हैं ? बादर पुथिबीकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है उतने प्रमाणसे अधिक हैं । सूक्ष्म
पुथिबीकायिक पर्याप्त जीव पुथिबीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
संख्यात समय गुणकार है । पुथिबीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पुथिबीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष
अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? बादर पुथिबीकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है

पञ्चचा संखेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? संखेन्द्रा समया । सुकुम्बपञ्चकपञ्चया विसंखेन्द्रिया ।
सम्बरयोरो तमकापञ्चकपञ्चकाळा । विस्वमर्द्ध अंसखेन्द्रगुणा । सेटी अंसखेन्द्रगुणा ।
को गुणगारो ? सगअवहारकाळो । दग्गममखेन्द्रगुण । को गुणगारो ? विस्वमर्द्ध ।
पदममखेन्द्रगुण । को गुणगारो ? सगअवहारकाळो । सेता अंसखेन्द्रगुणो । को गुणगारो ?
सेटी । एवं बादरपञ्चकपञ्चच-पथेयसरीरपञ्चच बादरपिणोत्पदिष्टिदपञ्चच-बादरपुडवि
पञ्चच-बादरआउपञ्चच-तमकापञ्चचमिच्छादि-तमकापञ्चचअपञ्चचाय च चत्तव्वं । सप्त
गादीत्यमोपमत्यागमगो । एव सत्यान्प्यावहुग समच ।

परत्वाय पय । सम्बरयोला बादरपुडविकाया । सुकुम्बपुडविकाया अंसखेन्द्रगुणा ।
को गुणगारो ? अंसखेन्द्रा सेता । सम्बरयोला बादरपुडविकाया । सुकुम्बपुडविकाया
अंसखेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? अंसखेन्द्रा सेता । पुडविकाया विसंखेन्द्रिया । सम्बरयोला
बादरपुडविपञ्चच । तम्मेन अपञ्चचा अंसखेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? अंसखेन्द्रा
सेता । सुकुम्बपुडविकायाअपञ्चचा अंसखेन्द्रगुणा । को गुणगारो ? अंसखेन्द्रा सेता ।

अपर्याप्तोसे संख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूत्रम बनस्पति
कायिक जीव सूत्रम बनस्पतिकायिक पर्याप्तोसे नियोग अधिक है । वसकायिक जीवोंका
अवहारकाळ सत्रसे स्तोक है । वर्णाकी विष्कम्भसूची अवहारकाळसे अंसख्यातगुणी है । अग
धेणी विष्कम्भसूचीसे अंसख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अयना अवहारकाळ गुणकार है ।
वसकायिक जीवोंका द्रव्य अगधेणीसे अंसख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अयनी विष्कम्भ
सूची गुणकार है । अगमतर वसकायिक जीवोंके द्रव्यसे अंसख्यातगुणा है । गुणकार क्या
है ? अयना अवहारकाळ गुणकार है । लोक अगमतरसे अंसख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अगधेणी गुणकार है । इसीप्रकार बाहर बनस्पतिकायिक पर्याप्त प्रत्येकवर्गीय पर्याप्त बाहर
नियोगव्यतिष्ठित पर्याप्त बाहर पृथिवीकायिक पर्याप्त बाहर अन्धकायिक पर्याप्त वसकायिक
पर्याप्त मिथ्यावादि भीर वसकायिक अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान अत्यवहुत्व कहना चाहिये ।
कल्पमार्गधर्मो तासात्तन्मध्यव्यतिष्ठि व्यादिका स्वस्थान अत्यवहुत्व सामान्य कल्पान अत्यवहुत्वके
समान है । इसप्रकार कल्पान अत्यवहुत्व समान हुआ ।

अथ परस्थानमे अस्यवहुत्व प्रकृत है— बाहर पृथिवीकायिक जीव सत्रसे स्तोक है ।
सूत्रम पृथिवीकायिक जीव बाहर पृथिवीकायिकसे अंसख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ?
अंसख्यात लोक गुणकार है । अयना बाहर पृथिवीकायिक जीव सत्रसे स्तोक है । सूत्रम पृथिवी-
कायिक जीव इनसे अंसख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? अंसख्यात लोक गुणकार है ।
पृथिवीकायिक जीव सूत्रम पृथिवीकायिकसे नियोग अधिक है । अयना बाहर पृथिवीकायिक
पर्याप्त जीव सत्रसे स्तोक है । बाहर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव इनसे अंसख्यातगुणे है । गुण-
कार क्या है ? अंसख्यात लोक गुणकार है । सूत्रम पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बाहर पृथिवी
कायिक अपर्याप्तोसे अंसख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? अंसख्यात लोक गुणकार है । सूत्रम

पदमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेही । बादरपुढविकाइयअपञ्जचइठमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसैसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपञ्जचा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपञ्जचा विसैसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपञ्जचा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पुढविकाइयअपञ्जचा विसैसाहिया । सुहुमपुढविकाइया विसैसाहिया । पुढविकाइया विसैसाहिया । एवं चाठ-तेठ वाठण परत्तण आभि-उत्तम वचचर्च ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहार काय गुणकार है । लोक जगत्तरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगद्गोपी गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक है । इसीप्रकार मन्त्रायिक तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके परस्थान अत्यबहुत्वका समझकर कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके एकोत्तर वृत्तिक्रमसे जेहोंके अत्यबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक.

बा पु	बा पु	बा पु प	बा पु प	बा पु प	बा पु प	बा पु प	बा पु प.
सू पु	सू पु	बा पु अप	बा पु अप	बा पु अप	बा पु अप.	बा पु अ.	बा पु अ.
	पु सा	सू पु अप	सू पु अप	बा पु	बा पु	बा पु	बा पु
		सू पु प	सू पु प	सू पु अप.	सू पु अप.	सू पु अ	सू पु अ
			पु सा	सू पु प	सू पु प	पु अ	पु अ
				सू पु	सू पु	सू पु प	सू पु प.
					पु सा.	पु प.	पु प
						सू पु	सू पु सा.

मेतेष ! बादरपुटविकारायपञ्चपरिहीणसुदुमपुटविकारायअपञ्चमयम् । एवं चेत् अहुमा
वियप्पो । भवति पुटविकाराया विसेमाहििया । एगुत्तरवट्टिकमय एविया चेत् अप्पात्तदुम-
वियप्पा । अवहारकात्त-विकलंमच्छ-मट्टि-पट्ट-सोम कमन पराविय अप्पात्तदुम कीरमाण
वि वियप्पा सम्मति चि ! ग, ताण कमप्पसस्म काप्पामाया । पुटविकारायपरामिस्म
सगाहमेयपदुप्पायणह पुटविकारायपरामिस्म कमण भदो कीरत् । ग च अवहारकात्तमि-
कमेय परमिन्ममायेसु पुटविकारायपरासी मिज्जे । सद्दो एविया चत्त एगुत्तरवट्टिवियप्पा
होति चि हिद् । अस्तिमवियप्प वत्तस्सामा । सम्मत्थोना बादरपुटविकारायपञ्चपरि-
हारकात्तो । तस्सेव विकलंमच्छ अस्संखेज्जगुणा । का गुणगारा ! सगविकलंमच्छए
अस्संखेज्जदिमागो । को पट्टिमागो ! मगअरहारकात्ता । अहवा सद्दीए अस्संखेज्जदिमागो
अस्संखेज्जाणि सद्दिपट्टमरगगमुत्ताणि । को पट्टिमागो । अवहारकात्तवग्गो । सद्दी अस्संखेज्ज
गुणा । का गुणगारो ! अवहारकात्तो । दम्ममस्संखेज्जगुण । के गुणगारो ! विकलमच्छ ।

इतने प्रमाणसे अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक
है । कितने प्रमाणसे अधिक है ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे हीन सूक्ष्म पृथिवी
कायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे उतनेसे अधिक है । इसकारण आठवाँ विक्षय है ।
इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक है ।
एकोत्तर बुद्धिके कमसे ज्यादागुणके इतने ही विक्षय होने हैं ।

श्रृंखला — अवहारकात्त विष्कंमसूची अगमेवी अगमत्तर और लोक इत्येक कमसे
प्रविष्ट करने अवस्थादुत्तर करने पर भी विक्षय प्राप्त होते हैं ?

समाधान—नहीं क्योंकि इन अवहारकात्त आदिकके कमप्रवेशका कोई कारण
नहीं है । संप्रहृत्त पृथिवीकायिक राशिसे मेरीके प्रतिपादन करनेके लिये पृथिवीकायिक
राशिका कमसे भेद किया है । परंतु अवहारकात्तादिकके कमसे प्रविश्यमान होने पर
पृथिवीकायिक राशि मेरीके प्राप्त नहीं होती है । इसलिये एकोत्तर बुद्धिके कमसे विक्षय
इतने ही होते हैं यह बात निश्चित हो जाती है ।

अब अस्तिम विक्षयको बतलाते हैं— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका
अवहारकात्त सबसे स्तोका है । ऊर्ध्वकी विष्कंमसूची अवहारकात्तसे अस्संख्यात-
गुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंमसूचीका अस्संख्यातवाँ माग
गुणकार है । प्रतिमाग क्या है ? अपना अवहारकात्त प्रतिमाग है । अथवा अगमेवीका
अस्संख्यातवाँ माग गुणकार है ओ अगमेवीके अस्संख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिमाग क्या
है ? अपने अवहारकात्तका वर्ग प्रतिमाग है । अगमेवी विष्कंमसूचीसे अस्संख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? अपना अवहारकात्त गुणकार है । उन्नीका (बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका) प्रथम
अगमेवीसे अस्संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंमसूची गुणकार है । अगमत्तर

पदमसंख्येज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंख्येज्जगुणो । को गुणगारो ?
 सेडी । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तदव्वमसंख्येज्जगुण । को गुणगारो ? असंख्येज्जगुणो ।
 बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंख्येज्जगुणो । को गुणगारो ?
 असंख्येज्जगुणो । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुद्धमपुढविकाइयअपज्जत्ता संख्येज्ज
 गुणो । को गुणगारो ? संख्येज्जसमया । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुद्धमपुढवि
 काइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चाउ-तेउ-वाउण परत्थाण आपि-
 उअ वत्तम् ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपत्ता मयहार
 काळ गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगमेयी गुणकार
 है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे
 हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म
 पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवी
 कायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । पृथिवी
 कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक
 जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवी-
 कायिकोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार मण्डपायिक तेजस्कयिक और वायुकायिक जीवोंके
 परत्थाण असंख्यातकाल समसकार कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके एकोत्तर वृद्धिक्रमसे मेवोंके असंख्यातकालके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक.

बा पृ	बा पृ	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा. पृ प
स् पृ	स् पृ	बा पृ अप.	पा पृ अप.	बा पृ अप.	बा पृ अप.	बा पृ अ.	बा पृ अ.
	पृ सा	स् पृ अप	स् पृ अप.	बा पृ	बा. पृ	बा पृ	बा पृ
		स् पृ प	स् पृ प	स् पृ अप	स् पृ अप	स्. पृ अ	स् पृ अ
			पृ सा	स् पृ प	स् पृ प	पृ अ.	पृ अ.
				स् पृ	स् पृ	स् पृ प	स् पृ प
					पृ सा.	पृ प	पृ प
						स् पृ	स् पृ सा.

सपदि वणप्त्रपरत्वाप्यप्यहर्गं मयइस्तामा । सम्ययोना बादरवणप्त्रकद्रया ।
 सुदुमवणप्त्रकद्रया असंखजगुणा । एवं विदियं पि । नारि वणप्त्रकद्रया विसेसाहिया ।
 अहवा सभ्यत्वाया बादरवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वा । बादरवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वा असंखजगुणा ।
 को गुणगारो ? असंखजगुणा । सुदुमवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वा असंखजगुणा । का गुण-
 गारो ? असंखजगुणा । सुदुमवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वा संखजगुणा । को गुणगारो ? संख-
 समया । एवं अउत्यं पि । पत्रि वणप्त्रकद्रया विसेसाहिया । अहवा सभ्यत्वाया बादर-
 वणप्त्रपञ्चत्वा । बादरवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वा असंखजगुणा । बादरवणप्त्रकद्रया विसे-
 साहिया । केचियमेवेण ? बादरवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वाचमयेण । सुदुमवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वा
 असंखजगुणा । को गुणगारो ? असंखजगुणा । सुदुमवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वा संखजगुणा ।
 सुदुमवणप्त्रकद्रया विसेसाहिया । केचियमेवेण ? सुदुमवणप्त्रकद्रयपञ्चत्वाचमयेण ।
 एवं छई पि । नारि वणप्त्रकद्रया विसेसाहिया । अहवा सभ्यत्वाया बादरवणप्त्र

अथ वनस्पतिव्यधिक जीवोंके परत्वाय अस्पष्टरूपको बतलाते हैं— बाहर वनस्पति
 वायिक जीव सबसे स्तोत्र है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं ।
 इसीप्रकार वृक्षों विषय भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म
 वनस्पतिव्यधिक जीवोंसे विशेष अधिक है । अथवा बाहर वनस्पतिवायिक पर्याप्त जीव
 सबसे स्तोत्र है । बाहर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव वनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार
 क्या है ? असंख्यात छोटा गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव बाहर
 वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोटा गुणकार
 है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समान गुणकार है । इसीप्रकार जीवा विषय भी है । इतनी वि-
 शेता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । अथवा
 बाहर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । बाहर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव
 सबसे असंख्यातगुणे हैं । बाहर वनस्पतिव्यधिक जीव बाहर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक है । किन्तुमात्र विशेषसे अधिक है । बाहर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है
 तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव बाहर वनस्पतिव्यधिकोंसे
 असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोटा गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक
 जीव सूक्ष्म वनस्पतिवायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । किन्तुमात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म
 वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार
 कद्रवा विषय भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिकोंसे
 विशेष अधिक है । अथवा बाहर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । बाहर

काश्यपपञ्चचा । बादरवणपञ्चकाश्यपपञ्चचा असंख्येजगुणा । बादरवणपञ्चकाश्या विसंसा-
हिया । सुहुमवणपञ्चकाश्यपपञ्चचा असंख्येजगुणा । वणपञ्चकाश्यपपञ्चचा विसंसा-
हिया । केचियमेतेषां ! बादरवणपञ्चकाश्यपपञ्चचमेतेषां । सुहुमवणपञ्चकाश्य-
पपञ्चचा संख्येजगुणा । वणपञ्चकाश्यपपञ्चचा विसंसाहिया । केचियमेतेषां ! बादरवणपञ्च-
काश्यपपञ्चचमेतेषां । सुहुमवणपञ्चकाश्या विसंसाहिया । केचियमेतेषां ! बादरवणपञ्च-
काश्यपपञ्चचविरहिदसुहुमवणपञ्चकाश्यपपञ्चचमेतेषां । एवमहुम पि । यदरि वणपञ्च-
काश्या विसंसाहिया ।

वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव तत्से असंख्यातगुणे है । बादर वनस्पतिक्रायिक जीव बादर
वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव बादर
वनस्पतिक्रायिकोंसे असंख्यातगुणे है । वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक
अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर वनस्पतिक्रायिक
अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त
जीव वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे है । वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म
वनस्पतिक्रायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर
वनस्पतिक्रायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म वनस्पति-
क्रायिक जीव वनस्पतिक्रायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
बादर वनस्पतिक्रायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिक अपर्याप्तोंका
जितना प्रमाण रहे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार माठवां विकल्प भी है । इसमें
इतनी विशेषता है कि वनस्पतिक्रायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिकोंसे विशेष अधिक है ।

वनस्पतिक्रायिक जीवोंके एकोत्तर वृद्धिकालसे प्रेक्षकोंके अल्पबहुत्वके कथना बतलानेवाला कोट्यक-

बा. व	बा. व	बा. व. व.	बा. व. व.	बा. व. व.	बा. व. व.	बा. व. व.	बा. व. व.
सू. व	सू. व	बा. व. व.	बा. व. व.	बा. व. व.	बा. व. व.	बा. व. व.	बा. व. व.
	व	सू. व. व.	सू. व. व.	बा. व.	बा. व.	बा. व.	बा. व.
		सू. व. व.	सू. व. व.	सू. व. व.	सू. व. व.	सू. व. व.	सू. व. व.
			व	सू. व. व.	सू. व. व.	व. व.	व. व.
				सू. व.	सू. व.	सू. व. व.	सू. व. व.
					व	व. व.	व. व.
						सू. व.	सू. व.
						व. व.	व. व.
						सू. व.	सू. व.
						व. व.	व. व.
						सू. व.	सू. व.
						व. व.	व. व.

संपदि वणप्पपरत्तामप्पत्तुगं वत्तस्सामा । सम्भत्तोवा वाद्वरवणप्पक्कप्पया ।
 सुद्धमवणप्पक्कप्पया असंखेज्जगुणा । एवं विदियं पि । वररि वणप्पक्कप्पया विसेसाहिया ।
 अहवा सम्भत्तोवा वाद्वरवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चा । वाद्वरवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चा असंखेज्जगुणा ।
 को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुद्धमवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चा असंखेज्जगुणा । को गुण-
 गारो ? असंखेज्जलोगा । सुद्धमवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संख-
 जमया । एवं चउत्तं पि । वररि वणप्पक्कप्पया विसेसाहिया । अहवा सम्भत्तोवा वाद्व-
 रवणप्पयपन्नञ्चा । वाद्वरवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चा असंखेज्जगुणा । वाद्वरवणप्पक्कप्पया विसे-
 साहिया । केचियमेत्थेण ? वाद्वरवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चमेत्थेण । सुद्धमवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चा
 असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखजा सोगा । सुद्धमवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चा संखेज्जगुणा ।
 सुद्धमवणप्पक्कप्पया विसेसाहिया । कचियमेत्थेण ? सुद्धमवणप्पक्कप्पयपन्नञ्चमेत्थेण ।
 एवं छट्ठं पि । वररि वणप्पक्कप्पया विसेसाहिया । अहवा सम्भत्तोवा वाद्वरवणप्प-

अथ वनस्पतिव्यधिक जीवोंके परत्त्यान अस्ववदुत्तको वतकाते हैं— वाद्वर वनस्पति-
 व्यधिक जीव सबसे स्तोका है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं ।
 इसीप्रकार वृक्षों का विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म
 वनस्पतिव्यधिक जीवोंसे विशेष अधिक है । अथवा, वाद्वर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव
 सबसे स्तोका है । वाद्वर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार
 क्या है ? असंख्यात जोका गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव वाद्वर
 वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात जोका गुणकार
 है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समग्र गुणकार है । इसीप्रकार बीया विकल्प भी है । इतनी विशेष-
 ता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । अथवा
 वाद्वर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोका है । वाद्वर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव
 उनसे असंख्यातगुणे हैं । वाद्वर वनस्पतिव्यधिक जीव वाद्वर वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वाद्वर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है
 तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव वाद्वर वनस्पतिव्यधिकोंसे
 असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात जोका गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक
 जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सूक्ष्म
 वनस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार
 छठवां विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिव्यधिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यधिकोंसे
 विशेष अधिक है । अथवा वाद्वर वनस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोका है । वाद्वर

छप्पदाणि पुर्व्वं व । अहवा सप्परयोवा बादरणिगोदपज्जचा । बादरवणप्फ़काइयपज्जचा
 विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जचा असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फ़काइयअपज्जचा
 विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फ़काइया विसेसाहिया । सुद्धमवण
 प्फ़काइयअपज्जचा असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जचा विसेसाहिया । वणप्फ़काइय
 अपज्जचा विसेसाहिया । केचियमचेण ? असंखेज्जसेगमेचपचैयसरीरमेचेण । उवरि
 चचारि पदाणि पुर्व्वं व । अहवा सप्परयोवा बादरणिगोदपज्जचा । बादरवणप्फ़काइय
 पज्जचा विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जचा असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फ़काइयअपज्जचा
 विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फ़काइया विसेसाहिया । सुद्धमवणप्फ़
 काइयअपज्जचा असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जचा विसेसाहिया । वणप्फ़काइयअपज्जचा
 विसेसाहिया । सुद्धमवणप्फ़काइयपज्जचा संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जचा विसेसाहिया ।

विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर छह स्थान पहलेके समान हैं । मयथा बादरणिगोद पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक हैं । बादर
 निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिक्रयिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर
 वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद
 जीव बादर वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिक्रयिक जीव
 बादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्त जीव
 बादर वनस्पतिक्रयिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिक्रयिक
 अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे
 विशेष अधिक हैं । इसके ऊपर चार स्थान पहलेके समान हैं । मयथा, बादरनिगोद पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव बादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिक्रयिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं ।
 बादर वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद
 जीव बादर वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिक्रयिक जीव
 बादर निगोदोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति
 क्रयिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक हैं । वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं ।
 सूक्ष्म वनस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव वनस्पतिक्रयिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । निगोद
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिक्रयिक पर्याप्तोंसे विशेषसे अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे

संपदि यदेसु बरपदेसु निगोदृष्टपदाणि पविसिय पप्पारसपदअप्पत्तुर्गं वच
इस्सामो । सम्भत्थोवा वादरणिगोदपज्जचा । वादरवणप्फक्काइयपअज्जचा विससाहिया ।
केचियमचेण ? वादरवणप्फक्काइयपचपसरिरपज्जच व पदरम्म असंसुज्जदिमागमचव ।
उवरि अट्टपदाणि पुब्बं व । अहवा सम्भत्थोवा वादरणिगादपज्जचा । वादरवणप्फक्काइय
पज्जचा विससाहिया । वादरणिगादमपज्जचा अंसंसुज्जगुणा । को गुणगाता ? असंसुज्ज
सेणा । वादरवणप्फक्काइयमपज्जचा विससाहिया । केचियमचव ? वादरवणप्फक्काइय-
पचेयसरिरमपज्जचमसंसुजेज्जसेणामेचेण । उवरि सचपदाणि पुब्बं व । अहवा सम्भत्थोवा
वादरणिगोदपज्जचा । वादरवणप्फक्काइयपज्जचा विससाहिया । वादरणिगादमपज्जचा ।
असंसुज्जगुणा । वादरवणप्फक्काइयमपज्जचा विससाहिया । वादरणिगोद्वा विससाहिया ।
केचियमेचेण ? वादरवणप्फक्काइयपचेयसरिरमपज्जचेषूवादादरणिगोदपज्जचमचेण । वादर
वणप्फक्काइया विससाहिया । केचियमचव ? वादरवणप्फक्काइयपचपसरिरमेचेण । उवरि

अथ इत्थं पूर्वोक्तं नौ स्थानांमिं निगोदृष्टवन्ती छद् स्थानांका प्रवेश करके पन्द्र
स्थानांमिं अस्ववद्वन्तो वतछते है— वादरनिगोद् पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । वादर
वणस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव वादरनिगोद् पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितने अधिक है ?
वादर वणस्पतिव्यधिक पर्याप्त जो कि जगत्प्रतरके अस्वप्पातसे माग है, तन्मात्र विशेषसे
अधिक है । इसके ऊपर मात्र स्थान पाहेंके समान है । यथवा वादरनिगोद् पर्याप्त जीव
सबसे स्तोत्र है । वादर वणस्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक है । वादरनिगोद्
अपर्याप्त जीव वादर वणस्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे अस्वप्पातगुणे है । गुणधर क्या है ? अस्
वप्पात जोकि गुणधर है । वादर वणस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव वादरनिगोद् अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर वणस्पतिव्यधिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्त जो कि अस्वप्पात जोकप्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसके ऊपर मात्र
स्थान पाहेंके समान है । यथवा वादरनिगोद् पर्याप्त जीव सबसे स्तोत्र है । वादर वण
स्पतिव्यधिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक है । वादरनिगोद् अपर्याप्त जीव वादर वण
स्पतिव्यधिक पर्याप्तोंसे अस्वप्पातगुणे है । वादर वणस्पतिव्यधिक अपर्याप्त जीव वादरनिगोद्
अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । वादरनिगोद् जीव वादर वणस्पतिव्यधिक अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर वणस्पतिव्यधिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्तोंके प्रमाणसे स्पून वादरनिगोद् पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे
अधिक है । वादर वणस्पतिव्यधिक जीव वादरनिगोद् जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र
विशेषसे अधिक है ? वादर वणस्पतिव्यधिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र

छप्पदाणि पुर्व्वं व । अहवा सम्भयोवा बादरभिगोदपज्जचा । बादरवणप्फ़्फ़ाद्वयपज्जचा
विसेसाहिया । बादरभिगोदअपज्जचा असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फ़्फ़ाद्वयअपज्जचा
विसेसाहिया । बादरभिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फ़्फ़ाद्वया विसेसाहिया । सुद्धमवण
प्फ़्फ़ाद्वयअपज्जचा असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जचा विसेसाहिया । वणप्फ़्फ़ाद्वय
अपज्जचा विसेसाहिया । केचियमेत्थं ? असंखेज्जलेगमेत्थपत्तेयसीरमेत्थे । उवरि
चत्तारि पदाणि पुर्व्वं व । अहवा सम्भयोवा बादरभिगोदपज्जचा । बादरवणप्फ़्फ़ाद्वय
पज्जचा विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जचा असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फ़्फ़ाद्वयअपज्जचा
विसेसाहिया । बादरभिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फ़्फ़ाद्वया विसेसाहिया । सुद्धमवणप्फ़्फ़
ाद्वयअपज्जचा असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जचा विसेसाहिया । वणप्फ़्फ़ाद्वयअपज्जचा
विसेसाहिया । सुद्धमवणप्फ़्फ़ाद्वयअपज्जचा संखेज्जगुणा । भिगोदपज्जचा विसेसाहिया ।

विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर छह स्थान पहलेसे समान हैं । अथवा बादरभिगोद पर्याप्त
जीव सबसे स्तोका हैं । बादर वनस्पतिकार्यिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । बादर
भिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकार्यिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर
वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव बादरभिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरभिगोद
जीव बादर वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकार्यिक जीव
बादरभिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव
बादर वनस्पतिकार्यिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । भिगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक
अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव भिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष
अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । असंख्यात लोकममात्र प्रत्येकशरीर जीवोंसे
विशेष अधिक हैं । इसके ऊपर चार स्थान पहलेसे समान हैं । अथवा, बादरभिगोद पर्याप्त
जीव सबसे स्तोका हैं । बादर वनस्पतिकार्यिक पर्याप्त जीव बादरभिगोद पर्याप्तोंसे विशेष
अधिक हैं । बादरभिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकार्यिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं ।
बादर वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव बादरभिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरभिगोद
जीव बादर वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकार्यिक जीव
बादर भिगोदोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति
कार्यिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । भिगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्त जीव भिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं ।
सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकार्यिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । भिगोद
पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकार्यिक पर्याप्तोंसे विशेषसे अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे

कवियमचेण ? बादरभिगोदपञ्चमचेण । वयण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । केचियमचण ? पचयसरीरपञ्चमचेण । सुहुमवण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । वयण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । अइवा सम्पञ्चावा बादरभिगोदपञ्चचा । बादरवण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । बादरभिगादपञ्चचा अमरुजगुणा । बादरवण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । बादरभिगादा विसेसाहिया । बादरवण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । सुहुमवण्फरकादपञ्चचा अमरुजगुणा । बिगादपञ्चचा विसेसाहिया । वयण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । सुहुमवण्फरकादपञ्चचा संखेजगुणा । विगादपञ्चचा विसेसाहिया । वयण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । सुहुमवण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । निगोदा विसेसाहिया । कवियमचण ? बादरभिगोदमचेण । वयण्फरकादपञ्चचा विसेसाहिया । केचियमचेण ? पचयसरीरपञ्चमचेण ।

अधिक हैं ? बादर भिगोद पयाप्तोंका अितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक हैं । वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त जीव भिगोद पयाप्तोंसे बिरोध अधिक हैं । किन्तुनेमात्र बिरोधसे अधिक हैं । मरयेकशरीर पर्याप्तोंका अितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक हैं । मूल्य वनस्पतिव्यापिक जीव वनस्पतिव्यापिक पयाप्तोंसे बिरोध अधिक हैं । वनस्पतिव्यापिक जीव मूल्य वनस्पतिव्यापिकोंसे बिरोध अधिक हैं । अपवा, बादर भिगोद पर्याप्त जीव रक्ते स्लोक हैं । बादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त जीव रक्ते बिरोध अधिक हैं । बादर भिगोद अपवाप्त जीव बादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुण है । बादर वनस्पतिव्यापिक अपवाप्त जीव बादर भिगोद अपवाप्तोंसे बिरोध अधिक हैं । बादर भिगोद जीव बादर वनस्पतिव्यापिक अपवाप्तोंसे बिरोध अधिक हैं । बादर वनस्पतिव्यापिक जीव बादर भिगादोंसे बिरोध अधिक हैं । मूल्य वनस्पतिव्यापिक अपवाप्त जीव बादर वनस्पतिव्यापिकोंसे अलंकारगुण हैं । भिगोद अपवाप्त जीव मूल्य वनस्पतिव्यापिक अपवाप्तोंसे बिरोध अधिक हैं । वनस्पतिव्यापिक अपवाप्त जीव भिगोद अपवाप्तोंसे बिरोध अधिक हैं । मूल्य वनस्पतिव्यापिक पयाप्त जीव वनस्पतिव्यापिक अपवाप्तोंसे संख्यागुण हैं । भिगाद पयाप्त जीव मूल्य वनस्पतिव्यापिक पयाप्तोंसे बिरोध अधिक हैं । वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त जीव भिगोद पर्याप्तोंसे बिरोध अधिक हैं । मूल्य वनस्पतिव्यापिक जीव वनस्पतिव्यापिक वनस्पतिव्यापिकोंसे बिरोध अधिक हैं । भिगोद जीव मूल्य वनस्पतिव्यापिकोंसे बिरोध अधिक हैं । किन्तुनेमात्र बिरोधसे अधिक हैं ? बादर भिगादोंका अितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक हैं । वनस्पतिव्यापिक जीव भिगोद जीवोंसे बिरोध अधिक हैं । किन्तुनेमात्र बिरोधसे अधिक हैं । मरयेकशरीर वनस्पतिव्यापिकोंका अितना प्रमाण है तन्मात्र बिरोधसे अधिक हैं ।

संपदि बादरवमण्फ़्काइयपचेयसरीरपञ्चत्त-बादरणिगोदपदिङ्गिदपञ्चत्त-बादरवण-
 ण्फ़्काइयपचेयसरीरमपञ्चत्त-बादरवणण्फ़्काइयपचेयसरीर-बादरणिगोदपदिङ्गिदमपञ्चत्त
 बादरणिगोदपदिङ्गिदा एदाणि छप्पदाणि पुष्पिछप्पण्णारसपदेसु पक्खेमिय एक्कासीसपद
 मप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सप्पत्थोर्बं बादरवमण्फ़्काइयपचेयसरीर-
 पञ्चत्तदम्भं । बादरणिगोदपञ्चत्तदम्भमणंतुगुमं । को गुणमारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदि

पूर्वोक्त श्री राशिर्वांमे निगोत्तकी छह राशिर्वां मिसा देने पर मत्पबहुत्वके

क्रमको बतलावेबाका क्रोत्तक

बा नि प.	बा. नि. प	बा नि प	बा नि प	बा नि प	बा. नि प
बा व प	बा. व प	बा व प	बा व प	बा व प	बा व प
बा व. म.	पा. नि म	बा नि म	बा नि म	बा नि म.	बा. नि म.
बा व	बा व म.	बा व म	बा व म	बा व म	बा व म
सू व म.	बा. व	बा नि	बा नि	बा नि	बा नि
व म.	सू व म.	म व.	पा व	बा व	बा व
सू व. प	व म.	सू व म.	सू व म	सू व म	सू व म
व प	सू व. प	व म.	नि म	नि म.	नि म.
सू व	व प	सू व प	व म.	व म	व म
व	सू. व	व प	सू व. प	सू व प	सू व प
	व.	सू व	व. प	नि प	नि. प
		व	सू व	व प	व प
			व.	सू. व	सू. व.
				व	नि
					व

अब बादर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त बादर निगोत्त प्रतिष्ठित पर्याप्त
 बादर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त बादर वनस्पतिक्रमिक प्रत्येकशरीर, बादर
 निगोत्तप्रतिष्ठित अपर्याप्त और बादर निगोत्तप्रतिष्ठित इन छह स्थानोंको पूर्वोक्त पञ्चद्व स्थानोंमें
 मिसाकर इकट्ठीस स्थानोंमें मत्पबहुत्वको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— बादर वनस्पति-
 क्रमिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका ग्रन्थ सबसे स्तोत्र है । बादर निगोत्त पर्याप्तोंका ग्रन्थ उससे
 अनन्तगुण्य है । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातकी मग्य गुणकार है । प्रतिमाग

कचित्पमचय ? बादरणिगोदपञ्चमचय । वनष्फरकृष्णपञ्चचा विमसाहिया । केचित्पमचय ? पचपमरिगपञ्चमचय । सुहुमवणष्फरकृष्ण विसेसाहिया । वनष्फरकृष्ण विमसाहिया । अहवा सम्पधावा बादरणिगोदपञ्चचा । बादरवणष्फरकृष्णपञ्चचा विसेसाहिया । बादरणिगोदपञ्चचा अमरुगुणा । बादरवणष्फरकृष्णपञ्चचा विसेसाहिया । बादरणिगोद विमसाहिया । बादरवणष्फरकृष्ण विसेसाहिया । सुहुमवणष्फरकृष्णपञ्चचा अमरुगुणा । विगोदपञ्चचा विसेसाहिया । वनष्फरकृष्णपञ्चचा विसेसाहिया । सुहुमवणष्फरकृष्णपञ्चचा अमरुगुणा । विगोदपञ्चचा विसेसाहिया । वनष्फरकृष्णपञ्चचा विसेसाहिया । सुहुमवणष्फरकृष्णपञ्चचा अमरुगुणा । विगोदपञ्चचा विसेसाहिया । कचित्पमचय ? बादरणिगोदमचय । वनष्फरकृष्ण विमसाहिया । कचित्पमचय ? पचपमरिगपञ्चमचय ।

अधिक है ? बादर निगोद पयाप्तोका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त जीव निगोद पयाप्तोके विशेष अधिक है । जितनेमात्र विशेषसे अधिक है । प्रायेच्छरीर पयाप्तोका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक जीव वनस्पतिव्यापिक पयाप्तोके विशेष अधिक है । वनस्पतिव्यापिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिकोसे विशेष अधिक है । अथवा, बादर निगोद पर्याप्त जीव लक्ष्मणे कोक है । बादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त जीव हस्ते पिशाच अधिक है । बादर निगोद अथवा जीव बादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्तोके अलंबवानगुण है । बादर वनस्पतिव्यापिक अथवा जीव बादर विशेष अथवा पर्याप्तोके विशेष अधिक है । बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिव्यापिक अथवा जीव विशेष अधिक है । बादर वनस्पतिव्यापिक जीव बादर निगोदोके विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक अथवा जीव बादर वनस्पतिव्यापिकोसे अलंबवानगुण है । निगोद अथवा जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक अथवा जीव विशेष अधिक है । वनस्पतिव्यापिक अथवा जीव निगोद अथवा जीव विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक पयाप्त जीव वनस्पतिव्यापिक अथवा जीव अलंबवानगुण है । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिक पयाप्तोके विशेष अधिक है । वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त जीव निगोद अथवा जीव विशेष अधिक है । निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिव्यापिकोसे विशेष अधिक है । जितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर निगोदोका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वनस्पतिव्यापिक जीव निगोद जीवोके विशेष अधिक है । जितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? अथेच्छरीर वनस्पतिव्यापिकोका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है ।

काइयपचेयसरीरअपज्जचदम्बमसंखेज्जगुण । बादरवणप्फइकाइयपचेयसरीरा विसेसाहिया ।
 बादरभिगोदपदिट्ठिदअपज्जचदम्बमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखखा लोगा । उवरि
 पण्णारस पदाणि पुब्ब व । अइवा सम्बत्थोर्ब बादरवणप्फइकाइयपचेयसरीरपज्जचदम्बं ।
 बादरभिगोदपदिट्ठिदपज्जचदम्बमसंखेज्जगुण । बादरवणप्फइकाइयपचेयसरीरअपज्जचदम्बम
 संखेज्जगुण । बादरवणप्फइकाइयपचेयसरीरा विसेसाहिया । बादरभिगोदपदिट्ठिदअपज्जचदम्ब
 असंखेज्जगुण । बादरभिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । कत्थियमेचेण ? बादरभिगोदपदिट्ठिद
 पज्जचमचेण । उवरिमपण्णारस पदाणि पुब्ब व ।

अपर्याप्त द्रव्य बाहर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पतिक्रयिक
 प्रत्येकशरीर जीव बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं ।
 बाहर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात छोड़ गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके
 समान हैं । अथवा, बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बाहर
 निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य सबसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर
 अपर्याप्त द्रव्य बाहर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बाहर वनस्पति
 क्रयिक प्रत्येकशरीर जीव बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
 अधिक हैं । बाहर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बाहर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे
 असंख्यातगुणा है । बाहर निगोदप्रतिष्ठित जीव बाहर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
 अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बाहर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका जितना प्रमाण
 है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं ।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक नीर आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका
 ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें और तीसरे आदिसे बीये आदिमें
 क्या अन्तर है । यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर असम्बद्धत्वकी विशेषता नहीं बतझरती है तो भी
 इनसे असम्बद्धत्वका क्रम अवश्य ही समझमें आ जाता है । विशेषताका ज्ञान मूलसे किया जा
 सकता है । वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें नी मेर्सीकी मुख्यतासे दूसरेमें उन नी मेर्सीमें ६ और
 मिछाकर पन्द्रह मेर्सीकी मुख्यतासे और निम्न तीसरे कोष्ठकमें उपयुक्त पन्द्रह मेर्सीमें छह मेर
 और मिछाकर दसौस मेर्सीकी मुख्यतासे असम्बद्धत्व बतझाया है । जहां 'ऊपर छत स्थान पह
 लेके समान है पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं इत्यादि कहा है उसका यह अभिप्राय है कि
 प्रारम्भके जितने स्थानोंमें विशेषता कबनी थी यह कह बी । आये अन्तके छत या पन्द्रह आदि
 स्थान पहलेके कोष्ठक द्वारा जोड़ देना चाहिये ।

काश्यपचेयसरीरअपञ्चचदब्बमसंखेजगुण । बादरवणफ्फइकाश्यपचेयसरीरा विसेसाहिया ।
बादरणिगादपदिट्ठिदअपञ्चचदब्बमसंखेजगुण । को गुणगारो ? असंखेखा लोणा । उवरि
पण्णात्तस पदाणि पुब्बं व । अहवा सम्भत्थोर्न बादरवणफ्फइकाश्यपचेयसरीरपञ्चचदब्बं ।
बादरणिगोदपदिट्ठिदपञ्चचदब्बमसंखेजगुणं । बादरवणफ्फइकाश्यपचेयसरीरअपञ्चचदब्बम
संखेजगुण । बादरवणफ्फइकाश्यपचेयसरीरा विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपञ्चचदब्बं
असंखेजगुण । बादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । केचियमेत्थेण ? बादरणिगादपदिट्ठिद
पञ्चचमेत्थेण । उवरिमपण्णात्तस पदाणि पुब्बं व ।

अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिक्रयिक
प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं ।
बादर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असंख्यात
गुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके
समान हैं । यद्यपि बादर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर
निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य सबसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पति
क्रयिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
अधिक हैं । बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे
असंख्यातगुणा है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका कितना प्रमाण
है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं ।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक और आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका
ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें और तीसरे आदिसे बीये आदिमें
क्या अन्तर है । यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर अल्पबहुत्वकी विशेषता नहीं बतलाई है तो भी
इनसे अल्पबहुत्वका कम अन्तर ही समझमें आ जाता है । विशेषताका ज्ञान मूलसे किया जा
सकता है । वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें बी मेर्सीकी मुख्यतासे दूसरेमें उन बी मेर्सीमें ९ और
मिखाकर पन्द्रह मेर्सीकी मुख्यतासे और निम्न तीसरे कोष्ठकमें अपर्युक्त पन्द्रह मेर्सीमें छह मेर
और मिखाकर इकीस मेर्सीकी मुख्यतासे अल्पबहुत्व बतलाया है । जहाँ 'ऊपर सात स्थान पह
लेके समान हैं पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं' इत्यादि कहा है इसका यह अभिप्राय है कि
प्रारंभके कितने स्थानोंमें विशेषता कहीं भी यह कह दी । आगे अन्तके सात या पन्द्रह आदि
स्थान पहलेके कोड़े हुए जोड़ देना चाहिये ।

संपत्ति बाहरनिगोदपदिष्टिदप अथ अनहारफालो यादरवणपत्रकपत्रपत्रेयसरीरपत्रक-
अवहारफालो सस्तेव विष्णुमध्या बादरनिगोदपदिष्टिदपत्रकविष्णुमध्या सेदी अगपत्र-
इति सच पदाणि एकावीसपदेसु पक्षिष्वपि अष्टावीसपदप्राबुग वचइत्ताना ।

पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें छह स्थान जोड़कर इस्तीस स्थानोंमें अक्षरबहुत्वके
क्रमका नाम करनेवाला पद्यक-

बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.
बा. नि. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.
बा. व. प.	बा. नि. प.	बा. व. प्र. म.	बा. व. प्र. म.	बा. व. प्र. म.
बा. नि. म.	बा. व. प.	बा. व. प्र.	बा. व. प्र.	बा. व. प्र.
बा. व. म.	बा. नि. म.	बा. नि. प.	बा. नि. प्रति. म.	बा. नि. प्रति. म.
बा. नि.	बा. व. म.	बा. व. प.	बा. नि. प.	बा. नि. प्रति.
बा. प.	बा. नि.	बा. नि. म.	बा. व. प.	बा. नि. प.
सु. व. म.	बा. व.	बा. व. म.	बा. नि. म.	बा. व. प.
नि. म.	सु. व. म.	बा. नि.	बा. व. म.	बा. नि. म.
व. म.	नि. म.	बा. व.	बा. नि.	बा. व. म.
सु. व. प.	व. म.	सु. व. म.	बा. व.	बा. नि.
नि. प.	सु. व. प.	नि. म.	सु. व. म.	बा. व.
व. प.	नि. प.	व. म.	नि. म.	सु. व. म.
सु. व.	व. प.	सु. व. प.	व. म.	नि. म.
नि.	सु. व.	नि. प.	सु. व. प.	व. म.
व.	नि.	व. प.	नि. प.	सु. व. प.
	व.	सु. व.	व. प.	नि. प.
		नि.	सु. व.	व. प.
		व.	नि.	सु. व.
			व.	नि.
				व.

जब बाहर निगोदपदिष्टिद पद्यांश जीवार्थ अवहारफाल बाहर वनस्पतिव्यापिक
प्रत्येकछापीर पद्यांशोंका अवहारफाल बलीधी विष्णुमध्या बाहर निगोदपदिष्टिद पद्यांशोंकी
विष्णुमध्या, अवधारणी अवधारणी और जोक इन सात स्थानोंके पूर्वोक्त इस्तीस स्थानोंमें
मिकाकर मध्यांश स्थानोंमें अक्षरबहुत्वके वतकते हैं— यहां ये सातों स्थान एकसाथ मिका

एवाणि सप्त वि पञ्चाणि एकवारण पविसिदङ्गाणि । इन्द्रो ? कमप्यवेसकरणा-
मात्रा । रासिर्तगाहमेदपदुप्यायणं कमेण पवेसो कीरदे । ण च एत्थ रासिमेदो
अत्थि, पत्तमिञ्जमावमेदपञ्चत्तत्तो । सम्भत्थेत्थो बादरणिगोदपदिद्धिदपञ्चअवहार
फ़लो । बादरवणफ़्फ़काइयपत्तेयसरीरपञ्चअवहारफ़लो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
अवलिआए असंखेज्जदिमागो । तस्सेव विस्संमद्धं असंखेज्जगुणा । बादरणिगोदपदि
द्धिदपञ्चविस्समद्धं असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवस्मिआए असंखेज्जदिमागो ।
सेट्ठी असंखेज्जगुणा । बादरवणफ़्फ़काइयपत्तेयसरीरपञ्चअवहारमसंखेज्जगुण । बादरणिगोद
पदिद्धिदपञ्चअवहारमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवलिआए असंखेज्जदिमागो । पदरम
संखेज्जगुण । को गुणगारो ? बादरणिगादपदिद्धिदपञ्चअवहारफ़लो । ओगो असंखेज्जगुणो ।
को गुणगारो ? सेट्ठी । बादरवणफ़्फ़काइयपत्तेयसरीरपञ्चअवहार असंखेज्जगुण । को
गुणगारो ? असंखेज्जा ओगा । बादरवणफ़्फ़काइयपत्तयमरीरा विसेमहिआ । केत्थियमत्तेण ?
तस्सेव बादरवणफ़्फ़काइयपत्तयसरीरपञ्चअवहारमत्तेण । बादरणिगोदपदिद्धिदपञ्चअवहार असं
खेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा ओगा । बादरणिगोदपदिद्धिदा विससहिआ ।

देना चाहिये । क्योंकि, उनके कामसे मिळानेका कोई कारण नहीं है । संप्रत्यक्ष राक्षसोंके मेवके
 प्रतिपादन करनेके लिये हमसे राशि मिळारि जाती है । परंतु यहां पर तो राशिमें कोई मेव
 पाया नहीं जाता है । क्योंकि मिथ्यमान राक्षसोंमें कितने मेव प्राप्त थे वतने मेव किये जा चुके
 हैं । बाहर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाळ सबसे स्तोक है । बाहर वनस्पतिक्रायिक
 प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाळ पूर्वोक्त अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? आबलीका असंख्यातर्षा माग गुणकार है । उन्हीं बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकशरीर
 पर्याप्तोंकी विष्कमसूची अवहारकाळसे असंख्यातगुणी है । बाहर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी
 विष्कमसूची पूर्वोक्त विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आबलीका
 असंख्यातर्षा माग गुणकार है । जगमेणी वनस्पतिक्रायिक असंख्यातगुणी है । बाहर
 वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य जगमेणीसे असंख्यातगुणा है । बादर निगोद
 प्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बाहर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? आबलीका असंख्यातर्षा माग गुणकार है । जगप्रसर बादर निगोद
 प्रतिष्ठित पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित
 पर्याप्तोंका अवहारकाळ गुणकार है । लोक जगप्रसरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 जगमेणी गुणकार है । बाहर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकशरीर अवपाप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बाहर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येक
 शरीर जीव बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकशरीर अवपाप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र
 विशेषसे अधिक हैं ? उन्हींके पर्याप्तोंका अर्थात् बादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका
 कितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बाहर निगोदप्रतिष्ठित अवपाप्त जीव बादर
 वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे असंख्यातगुण हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक

केचित्तममेवेण ? बादरणिगोदपदिद्विदपन्त्रतमचण । बादरणिगोदपञ्चत्ता अणत्तगुणा । को गुणगारो ? सगतासिस्स असंखेज्जदिमागो । तस्म को पडिमागो ? बादरणिगोदपदिद्विदा पडिमागो । बादरवणप्फइकायपञ्चत्ता विससाहिया । केचित्तममेवेण ? बादरवणप्फइकायपचेयसरीरपञ्चत्तमेवेण । बादरणिगोदमपञ्चत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्ज लोगा । बादरवणप्फइकायपञ्चत्ता विससाहिया । केचित्तममेवेण ? बादरवणप्फइकायपचेयसरीरपञ्चत्तमेवेण । बादरणिगोदा विससाहिया । केचित्तममेवेण ? पंचयसरीर अपञ्चत्तेणूणबादरणिगोदपन्त्रतममेवेण । बादरवणप्फइकायया विससाहिया । केचित्तममेवेण ? बादरवणप्फइदिपचेयसरीरममेवेण । सुद्धमवणप्फइकायपञ्चत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्ज लोगा । विगोदमपञ्चत्ता विससाहिया । केचित्तममेवेण ? बादरणिगोदमपञ्चत्त मेवेण । वणप्फइकायपञ्चत्ता विससाहिया । केचित्तममेवेण ? बादरवणप्फइकायपचेय-

गुणकार है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । बादर निगोद पर्याप्त जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंसे अल्पतगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपर्याप्त राशिका असंख्यातर्था माय गुणकार है । उच्चत्वा प्रतिभाग क्या है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्त जीव बादर निगोद पर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर वनस्पतिव्यापिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिव्यापिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात क्षेत्र गुणकार है । बादर वनस्पतिव्यापिक अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर वनस्पतिव्यापिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिव्यापिक अपर्याप्त जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक है । बादर वनस्पतिव्यापिक जीव बादर निगोद जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर वनस्पतिव्यापिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सुद्धम वनस्पतिव्यापिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिव्यापिक जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अल्पस्यात क्षेत्र गुणकार है । निगोद अपर्याप्त जीव सुद्धम वनस्पतिव्यापिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वनस्पतिव्यापिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर वनस्पति व्यापिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सुद्धम

सरीरअपञ्चमत्तम । सुद्धमवणप्फदिक्काइयपञ्चचा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ! संखेज्जा समपा । भिगोदपञ्चचा विससाहिपा । कच्चियमत्तेण ? बादरभिगोदपञ्चत्तमत्तेण । वणप्फइ काइयपञ्चचा विससाहिपा । कच्चियमत्तण ? बादरवणप्फइपच्चैयसरीरपञ्चत्तमत्तेण । सुद्धमवणप्फदिक्काइया विसेसाहिपा । केवियमत्तेण ? बादरवणप्फदिपञ्चत्तेण सुद्धमवण प्फदिअपञ्चत्तमत्तेण । भिगोदा विसेसाहिपा । कच्चियमत्तेण ? बादरभिगादमेत्तेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिपा । कच्चियमत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपच्चैयसरीरमत्तम । एव वणप्फइकाइयपरत्याणप्पावहुग समत्तं । तसक्काइयपरत्याणस्स पच्चिदियपरत्याणमगो । एव परत्याणप्पावहुग समत्त ।

सुद्धपरत्याणप्पावहुग बच्चइत्तामो । सुद्धत्तोबा अजागिक्कवली । चत्तारि उव सामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा मंखेज्जगुणा । सजागिक्कवली मंखेज्जगुणा । अपमत्तसंज्जा संखेज्जगुणा । पमत्तसंज्जा संखेज्जगुणा । पमत्तापमत्तारामीहिंत्तो बादरबाउ पञ्चत्तअवहारकात्तो किमहिओ उमा चि ण अणिज्जदे । कुदो ? सपहि उवएसामावदो ।

बनस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव बनस्पतिक्रयिक अपर्याप्तोत्से संख्यातगुणे ई । गुणकार पया ई ! सख्यात समय गुणकार ई । भिगोइ पर्याप्त जीव सूक्ष्म बनस्पतिक्रयिक पर्याप्तोत्से विशेष अधिक ई । कितनेमात्र विशेषसे अधिक ई ! बाहर भिगोइ पर्याप्तोत्का जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक ई । बनस्पतिक्रयिक पर्याप्त जीव भिगोइ पर्याप्तोत्से विशेष अधिक ई । कितनेमात्र विशेषसे अधिक ई ! बाहर बनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोत्का जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक ई । सूक्ष्म बनस्पतिक्रयिक जीव बनस्पतिक्रयिक पर्याप्तोत्से विशेष अधिक ई । कितनेमात्र विशेषसे अधिक ई ! बाहर बनस्पति पर्याप्तोत्के प्रमाणसे म्यून सूक्ष्म बनस्पति अपर्याप्तोत्का जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक ई । भिगोइ जीव सूक्ष्म बनस्पतिक्रयिक जीवोत्से विशेष अधिक ई । कितनेमात्र विशेषसे अधिक ई ! बाहर भिगोइ जीवोत्का जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक ई । बनस्पतिक्रयिक जीव विशेष अधिक ई । कितनेमात्र विशेषसे अधिक ई ! बाहर बनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर जीवोत्का जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक ई । इसप्रकार बनस्पतिक्रयिक जीवोत्का पररधान अस्यबहुत्व समाप्त हुआ । प्रसक्तयिक जीवोत्का पररधान अस्यबहुत्व वैशेन्द्रिय जीवोत्के पररधान अस्यबहुत्वके समान ई । इसप्रकार परम्प्यान अस्यबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सर्वपरस्यान अस्यबहुत्वको बतलात ई—अयोगिकैपची जीव सबसे पोई ई । बारो गुणस्यानोके उपशामक अयोगिकैपचियोत्से सख्यातगुण ई । बारो गुणस्यानोके सपक उपशामकोत्से संख्यातगुणे ई । सयोगिकैपची जीव सपकोत्से संख्यातगुणे ई । अममत्तसपत्त जीव सयोगिकैपचियोत्से संख्यातगुणे ई । ममत्तसपत्त जीव अममत्तसपत्तोत्से संख्यातगुणे ई । ममत्तसपत्त और अममत्तसपत्त औपराशिसे बाहर मायुकायिक पर्याप्त जीवोत्का अवधारकात्त क्या अधिक है या कम यह नहीं जाना जाता है क्योंकि, इस समय हम प्रकाश

कचित्पयमत्तेण ? बादरणिगादपदिद्विदपञ्चमत्तेण । बादरणिगादपञ्चचा अर्धतुगुणा । का
 गुणगारा ? सगरासिस्त अर्धेष्टेष्टदिभागा । तस्म का पट्टिभागा ? बादरणिगादपदिद्विद
 पट्टिभागा । बादरवणपञ्चकादपञ्चचा विमसाद्विया । कचित्पयमत्तेण ? बादरवणपञ्चकादप
 पत्तेयसरीरपञ्चमत्तेण । बादरणिगादपञ्चचा अर्धेष्टेष्टतुगुणा । का गुणगारा ? अर्धतुगु
 णा । बादरवणपञ्चकादपञ्चचा विमसाद्विया । कचित्पयमत्तेण ? बादरवणपञ्चकादप
 पत्तेयसरीरपञ्चमत्तेण । बादरणिगोत्ता विमसाद्विया । कचित्पयमत्तेण ? पत्तेयसमि
 अपञ्चपेणूणबादरणिगोत्तादपञ्चमत्तेण । बादरवणपञ्चकादपञ्चचा विमसाद्विया । कचित्पयमत्तेण ?
 बादरवणपञ्चकादपत्तेयसरीरमत्तेण । सुदुमवणपञ्चकादपञ्चचा अर्धेष्टेष्टतुगुणा । को गुणगारा ?
 अर्धेष्टेष्टा षोढा । निगादपञ्चचा विमसाद्विया । कचित्पयमत्तेण ? बादरणिगादपञ्चचा
 मत्तेण । वणपञ्चकादपञ्चचा विमसाद्विया । कचित्पयमत्तेण ? बादरवणपञ्चकादपत्तेयसरीर-

गुणकार है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है ।
 कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र
 विशेषसे अधिक है । बादर निगोद पर्याप्त जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंसे अत्यन्तगुणे है ।
 गुणकार क्या है ? अपनी राशिका अक्षप्यातर्ज माग गुणकार है । कसका प्रतिभाग क्या है ?
 बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर वनस्पतिश्चाधिक पर्याप्त जीव
 बादर निगोद पर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर
 वनस्पतिश्चाधिक प्रत्येककारीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है ।
 बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिश्चाधिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे अक्षप्यातगुणे है ।
 गुणकार क्या है ? अक्षप्यात षोढ गुणकार है । बादर वनस्पतिश्चाधिक अपर्याप्त जीव
 बादर निगोद अपर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे
 अधिक है । बादर वनस्पतिश्चाधिक प्रत्येककारीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र
 विशेषसे अधिक है । बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिश्चाधिक अपर्याप्त जीवोंसे विशेष
 अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? प्रत्येककारीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून बादर
 निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक है । बादर वनस्पतिश्चाधिक
 जीव बादर निगोद जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर
 वनस्पतिश्चाधिक प्रत्येककारीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । तस्म
 वनस्पतिश्चाधिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिश्चाधिक जीवोंसे अक्षप्यातगुणे है । गुणकार
 क्या है ? अक्षप्यात षोढ गुणकार है । निगोद अपर्याप्त जीव तस्म वनस्पतिश्चाधिक
 अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? बादर निगोद अपर्याप्त
 जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । बादर निगोद अपर्याप्त
 निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । वनस्पतिश्चाधिक अपर्याप्त जीव
 निगोद प्रत्येककारीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । तस्म

तदो असंज्ञदसम्माप्रतिभनहारकालो असंखेज्जगुणा । एवं ज्ञापिऊय वेयम् ज्ञान संबन्ध-
संबन्धनहारकालो च । तदो बादरेतेउपन्जया असंखज्जगुणा । तदो संज्ञासंबन्धदम्भम
संखेज्जगुण । एवं ज्ञापिऊय वेदम् ज्ञान पत्तिद्वामो च । तदो बादरेतेउपन्जय
अवहारकालो असंखज्जगुणा । पाप्पुडभिपन्जयअवहारकालो असंखेज्जगुणा । क्व
गुणगतो ? आवलिपाए अमंखेज्जदिमागा । बादरेभिगोदपदिद्विपन्जयअवहारकालो
अमंखेज्जगुणो । क्व गुणगतो ? आवलिपाए असंखज्जदिमागा । बादरेवणप्पकाए
पत्तेपपन्जयअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगतो ? आवलिपाए अमंखे-
ज्जदिमागो । तसकाएपमिच्छद्विअवहारकालो असंखज्जगुणा । को गुणगतो ? पत्तिद्वामस
असंख-
ज्जदिमागो । तसकाएपमपन्जयअवहारकालो विसमाहिओ । केचियमत्तेण ? आवलिपाए
असंखज्जदिमाएण खंदिदेगसंखेण । तसकाएपपन्जयअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणगतो ? आवलिपाए असंखज्जदिमागसं संखज्जदिमागो । तद् तसकाएपपन्जय

इच्छेता नहीं पाया जाता है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंके अवहारकाळसे असंखतसम्प्राप्ति-
योंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार समझकर संपत्तासंपत्तोंके अवहारकाळतक
के जाया चाहिये । संपत्तासंपत्तोंके अवहारकाळसे बादर तेजस्वायिक पर्याप्त असंख्यातगुणे
हैं । इससे संपत्तासंपत्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार जानकर पस्वोपमतक के
जाना चाहिये । पस्वोपमतसे बादर अन्वायिक जीवोंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है । बादर
पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाळ बादर अन्वायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकाळसे
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आबलीका असंख्यातता माग गुणकार है । बादर
निगोपप्रतिष्ठित प्रत्येक जीवोंका अवहारकाळ बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके अवहारकाळसे
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आबलीका असंख्यातता माग गुणकार है । बादर
वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाळ बादर निगोपप्रतिष्ठित पर्याप्तोंके
अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आबलीका असंख्यातता माग गुणकार है ।
वसकायिक मिष्याद्विषयोंका अवहारकाळ बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्तोंके
अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पस्वोपमतका असंख्यातता माग गुणकार
है । वसकायिक संपत्ता जीवोंका अवहारकाळ वसकायिक मिष्याद्विषयोंके अवहारकाळसे
विशेष अधिक है । विलम्बमात्र विशेषसे अधिक है ? आबलीके असंख्यातता मागसे वसकायिक
मिष्याद्विषयोंके अवहारकाळको अंशित करते जो एक माग छव्य मागे लगभग विशेषसे
अधिक है । वसकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाळ वसकायिक संपत्ताओंके अवहारकाळसे
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आबलीके असंख्यातता मागका असंख्यातता माग
गुणकार है । वसकायिक पर्याप्तोंके अवहारकाळसे वसकायिक पर्याप्तोंकी विष्णुमन्त्री

विकृतमसूहं अर्धसंज्ञगुणा । तसकाद्यपञ्चचविकृतमसूहं अर्धसंज्ञगुणा । तमकाद्यप
विकृतमसूहं विसमाहिया । बादरवणपञ्चकाद्यपचयसरीरपञ्चचविकृतमसूहं अर्धसंज्ञगुणा ।
बादरणिगोदपदिष्टिदपञ्चचविकृतमसूहं अर्धसंज्ञगुणा । बादरपुत्रविकाद्यपञ्चचविकृतम-
सूहं अर्धसंज्ञगुणा । बादरआउकाद्यपञ्चचविकृतमसूहं अर्धसंज्ञगुणा । बादर
बाउकाद्यपञ्चचविकृतमसूहं अर्धसंज्ञगुणा । सदी संज्ञगुणा । तसकाद्यप
पञ्चचदन्मसंज्ञगुण । तमकाद्यपञ्चचदन्मसंज्ञगुण । तसकाद्यपदन् विसे
माहिय । बादरवणपञ्चकाद्यपचयसरीरपञ्चचदन्मसंज्ञगुण । बादरणिगोदपदि
ष्टिदपञ्चचदन्मसंज्ञगुण । (बादरपुत्रविकाद्यपञ्चचदन्मसंज्ञगुण ।) बादरआउ
पञ्चचदन्मसंज्ञगुण । पदरमसंज्ञगुण । बादरवाउपञ्चचदन्मसंज्ञगुण । लोगा
संज्ञगुणो । तदा बादरतेउअपञ्चचदन्मसंज्ञगुण । बादरतेउदन् विसेमाहियं ।

असंख्यातगुणी है । असंख्यातिक अथवात् जीवोंकी विष्कमसूची असंख्यातिक पर्याप्तोंकी
विष्कमसूची असंख्यातगुणी है । असंख्यातिक जीवोंकी विष्कमसूची असंख्यातिक अथवात् जीवोंकी
विष्कमसूचीसे विशेष अधिक है । बादर जनस्यविकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंकी
विष्कमसूची असंख्यातिकोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त
जीवोंकी विष्कमसूची बादर जनस्यविकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे
असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कमसूची बादर निगोदप्रतिष्ठित
पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर अन्ध्यायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कमसूची
बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंकी
विष्कमसूची बादर अन्ध्यायिक पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगमेकी बादर
वायुकायिक पर्याप्तोंकी विष्कमसूचीसे संख्यातगुणी है । असंख्यातिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगमेकीसे
असंख्यातगुणा है । असंख्यातिक अथवात् जीवोंका द्रव्य असंख्यातिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा
है । असंख्यातिकोंका द्रव्य असंख्यातिक अथवात् जीवोंके द्रव्यसे विशय अधिक है । बादर
जनस्यविकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातिकोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर
निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर जनस्यविकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठितोंसे अ-
संख्यातगुणा है । बादर अन्ध्यायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । जगमेकी बादर अन्ध्यायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर
वायुकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगमेकीसे असंख्यातगुणा है । एक बादर वायुकायिक
पर्याप्तोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । एकसे बादर जनस्यविकायिक अथवात् जीवोंका द्रव्य
असंख्यातगुणा है । बादर जनस्यविकायिकोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित अथवात् जीवोंके द्रव्यसे विशेष

विसंसाहिया । सुद्धमवाठपज्जत्ता विसंसाहिया । वाठपज्जत्ता विसंसाहिया । सुद्धमतेउ
 काह्या विसंसाहिया । ठेउकाह्या विसंसाहिया । सुद्धमपुत्रविकाह्या विसंसाहिया । पुत्रवि
 काह्या विसंसाहिया । सुद्धमआठकाह्या विसंसाहिया । आठकाह्या विसंसाहिया । सुद्धम
 वाठकाह्या विसंसाहिया । वाठकाह्या विसंसाहिया । अकाह्या अणत्तगुणा । बादरभिगोद्
 पज्जत्ता अणत्तगुणा । बादरवणप्फअपज्जत्ता विसंसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्ज-
 गुणा । बादरवणप्फअपज्जत्ता विसंसाहिया । बादरणिगोदा विसंसाहिया । बादरवणप्फ
 काह्या विसंसाहिया । सुद्धमवणप्फअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । गिगादअपज्जत्ता विसं
 साहिया । वणप्फअपज्जत्ता विसंसाहिया । सुद्धमवणप्फअपज्जत्ता संखेज्जगुणा । भिगोद्
 पज्जत्ता विसंसाहिया । वणप्फअपज्जत्ता विसंसाहिया । सुद्धमवणप्फकाह्या विसंसाहिया ।

सूक्ष्म अण्मायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । अण्मायिक
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म अण्मायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त
 जीव अण्मायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । वायुकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म
 वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म तेजस्कायिक जीव वायुकायिक पर्याप्त
 द्रव्यसे विशेष अधिक है । तजस्कायिक जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है ।
 सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म
 पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म अण्मायिक जीव पृथिवीकायिक द्रव्यसे
 विशेष अधिक है । अण्मायिक जीव सूक्ष्म अण्मायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म
 वायुकायिक जीव अण्मायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है । वायुकायिक जीव सूक्ष्म
 वायुकायिक जीव द्रव्यसे विशेष अधिक है । अण्मायिक जीव वायुकायिक द्रव्यसे अनन्तगुणे
 है । बादर भिगोद् पर्याप्त जीव अण्मायिक जीवोंसे अनन्तगुणे है । बादर वनस्पति पर्याप्त
 जीव बादर भिगोद् पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । बादर भिगोद् अपर्याप्त जीव बादर
 वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे अनन्तगुणे है । बादर वनस्पति अपर्याप्त जीव बादर भिगोद्
 अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । बादर भिगोद् जीव बादर वनस्पतिमायिक अपर्याप्त द्रव्यसे
 विशेष अधिक है । बादर वनस्पतिमायिक जीव बादर भिगोद् द्रव्यसे विशेष अधिक है ।
 सूक्ष्म वनस्पतिमायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिमायिक द्रव्यसे अनन्तगुणे है ।
 भिगोद् अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । वनस्पति अपर्याप्त
 जीव भिगोद् अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव वनस्पति अपर्याप्त
 द्रव्यसे अनन्तगुणे है । भिगोद् पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है ।
 वनस्पतिमायिक पर्याप्त जीव भिगोद् पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पति

निगोदा विसेसाहिया । वनपञ्चक्या विसेसाहिया ।

एव कथयन्मग्ना समया ।

जोगाशुवादेण पंचमणजोगि-तिष्णिवचिजोगीसु मिच्छाद्वी दव्व
पमाणेण केवढिया ? देवानं संसेज्जदिमागो ॥ १०३ ॥

एतत् तिष्ठं चेन्न बचिजोगीनां संगहो किमहो कदो ? न एत दोसो । इदा !
बचिजोगि-असत्त्वमोसबचिजोगि सह एदेसिं तिष्ठं बचिजोगाण दम्मात्तावं पढि समात्ता-
मावात्तो । समात्तात्तावाग्गेमाज्जेमो भवदि, न मिष्णात्तात्तावा । देवानं आप्ति दव्व कस-
पमाणेण पुम्बं पक्खिदापि तेसिं संसेज्जदिमागो एदेसिमह्वं रासीणं पमाणं होदि ।
इदो ! अदो एदे अह्व वि जोगा सत्त्वमि चेन्न भवति, गो असत्त्वमि, तस्य पढिसिद्धत्तात्तो ।
सत्त्वमि वि पहात्ता देवा चेन्न, सेसगदिसत्त्वमि देवानं संसेज्जदिमागत्तात्तो । तस्य वि
देवसु पहागो कथयजोगरासी, मज्ज-बचिजोगरासीत्तो संसेज्जगुणत्तात्तो । त पि कथं आप्तिदो !

जीव बलस्पति पर्पात्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । निगोद जीव सूक्ष्मबलस्पतिक्रमिक द्रव्यसे
विरोध अधिक है । बलस्पतिक्रमिक जीव निगोद जीवोंसे विरोध अधिक है ।

इत्यन्तर कायमार्ग्या समाप्त हुई ।

योगमार्ग्याके अनुवादसे पांचों मनायोगियों और तीन बचनयोगियों
मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? क्योंकि संख्यातवें भाग
हैं ॥ १०३ ॥

सुत्र — यहाँ तीन ही बचनयोगियोंका संग्रह किसलिये किया है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है क्योंकि बचनयोगियों और अनुसृत्य बचनयो-
गियोंके साथ इन तीन बचनयोगियोंकी द्रव्यप्रमाणके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समा-
कायिका ही एक योग होता है मिथ्याकायोंका नहीं । क्योंकि द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा
को प्रमाण पहले कर लिये है उसके संख्यातवें भाग इन व्याप्त राशिओंका प्रमाण है । क्योंकि,
ये व्याप्त योग संक्षिप्तोंके ही होते हैं अस्तित्वोंके नहीं क्योंकि, अस्तित्वोंमें ये व्याप्त
योग प्रतिनिध है । संक्षिप्तोंमें ही प्रमाण देव ही है क्योंकि, दोष तीन राशिके संगी
जीव क्योंकि संख्यातवें भाग ही है । यहाँ दोनों ही प्रमाण काययोगियोंकी राशि है क्योंकि,
काययोगियोंका प्रमाण मनीषोपियों और बचनयोगियोंके संख्यातगुण है ।

प्रश्न — यह कैसे जाना जाता है ?

जोगद्विप्यपहुगादो । त जहा— 'सम्भृत्योषा मणजोगद्वा । बन्धिजोगद्वा संखेज्जगुणा ।
कायजोगद्वा संखेज्जगुणा पि ।' पुनो एदेसिमद्वाण समास क्कळ्म तेण तिच्छं जोगाण
सण्णिरासिमोवद्धिय अप्पप्पणो अद्वाहि पुच पुच गुणिदे मण-बन्धि-कायजोगरसीओ हवति ।
तदो द्विदेमद् एदे अद्द पि मिच्छद्वाहिउसीओ देषाणं संखेज्जिमणो पि ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा त्ति ओघ ॥ १०४ ॥

पत्तिओषमस्स मसंसज्जदिमागत्त पडि ओषधीषेहि सह एदेसिं समानत्तमसि पि
ओषमिदि उच । पन्जवद्धियणए पुण अमलविज्जमाने तेहिंते एदेसिं अरिप मईतो मेदो ।
इदो ? एदेसिमोपरासिस्स संखेज्जदिमागत्तादो । त पि क्वं णप्पदे ? पुप्पुचद्दप्पापहु
गादो । संसं सुगमं ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति दम्बपमाणेण केव
डिया, संखेज्जा ॥ १०५ ॥

समाधान—योगवासके अस्पष्टदृश्यसे यह जाना जाता है । यह इसप्रकार है—
'मनोयोगका काल सबसे शोक है । यत्नयोगका काल इससे संख्यातगुणा है । काययोगका
काल यत्नयोगके कालसे संख्यातगुणा है । अनन्तर इन काओंका जोड़ करके जो फल
हो उससे तानों योगोंकी संकी जीपराशिओ अपघणित करके जो कर्म भाये उसे अपने
अपने कालसे पूरक पूरक गुणित करने पर मनोयोगी यत्नयोगी और काययोगी जीपराशि
होती है । इसलिये यह निश्चित हुआ कि ये आठ ही मिप्यादष्टि जीपराशिवां देशोंके
संख्यातवें भाग हैं ।

सासादनसम्पगट्टि गुणस्थानसे लेकर सपत्तासपत्त गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें पूर्वोक्त आठ योगवाले जीबोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान प्रत्ये
पमके मसंख्यातवें भाग है ॥ १ ४ ॥

प्रत्येपमके असंख्यातवें भागके प्रति ओष जीबोंके साथ इन आठ जीपराशिधोंकी
समानता है इसलिये धर्म ओष 'देसा बहा । परंतु पर्यायाधिक मयका अपघटन करने
पर ही सासादनदि सपत्तासपत्तात्त गुणस्थानप्रतिपक्ष ओषप्ररूपणासे गुणस्थानप्रतिपक्ष इन
आठ राशिधोंमें महान् मेघ है, क्योंकि, ये राशिधों ओषप्राधके संख्यातवें भाग हैं ।

धका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—पूर्वोक्त मातृकालके अस्पष्टदृश्यसे यह जाना जाता है । ओष कथन
पुणम है ।

प्रमत्तसपत्त गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवर्ती गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें

विगोदा विसेसाहिया । वज्रपञ्चम्या विसेसाहिया ।

एव क्रम्यमम्या समाप्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि तिण्णिवचिजोगीसु मिच्छाहट्ठी दब्ब-
पमाणेण केवडिया ? देवानं संखेज्जदिमागो ॥ १०३ ॥

एत्थ तिण्हं च वचिजोगीसं संगहो किमहुो कदो ? न एत्थ दोसो । हुदो ?
वचिजोग-मसच्चमोसवचिजोगेहि सह एदेसिं तिण्हं वचिजोगीसं दब्बवात्तां पडि समाव-
मात्तादो । समत्थात्तात्तामेगजोगो मवदि, न मिप्पात्तात्तां । देवानं आत्ति दब्ब-कल्ल-लेख
पमात्ताणि पुब्बं पस्सिदात्ति तेसिं संखेज्जदिमागो एदेसिमहुं रत्तीं पमात्तां हरि ।
हुदो ? बहो एदे अहु वि जोगा सण्णीं चैव मवत्ति, जो असण्णीं, तथ पडिदिद्विपादो ।
सण्णीसु वि पहात्ता देवा चैव, सेसगदिसण्णीं देवानं संखेज्जदिमात्तादो । तथ वि
देवेषु पहात्तो कायजोगरत्ती, मज-वचिजोगरत्तीदो संखेज्जगुत्तादो । त पि कथं आत्तिद्वे ?

जीव वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विरोध अधिक है । मियोद जीव सूक्ष्मवनस्पतिक्रयिक द्रव्यसे
विरोध अधिक है । वनस्पतिक्रयिक जीव विगोद जीवोंसे विरोध अधिक है ।

इसप्रकार कायमार्ग्या समाप्त हुई ।

योगमार्ग्याके अनुवादसे पाँचों मनायोगियों और तीन वचनयोगियोंमें
मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? देवोंके संख्यातमें माप
है ॥ १०३ ॥

पुंछा—यहाँ तीन ही वचनयोगियोंका संग्रह किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई श्रेय नहीं है क्योंकि वचनयोगियों और अनुमय वचनवाचि-
कोंके साथ इन तीन वचनयोगियोंकी द्रव्याकापेके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समावा-
कायोंका ही एक योग होता है मिथ्याकापेका नहीं । देवोंका द्रव्य काय और सेवकी अपेक्षा
जो प्रमाण पढ़ते वह व्यपे है उसके संख्यातमें माप इन आठ राशियोंका प्रमाण है । क्योंकि,
ये आठों योग संवित्तोंके ही होते हैं अशक्तियोंके नहीं क्योंकि, अशक्तियोंमें ये व्यपे
योग प्रतिगुह्य है । संवित्तोंमें भी प्रमाण देव ही है क्योंकि, देव तीन गतिके संवित्त
जीव देवोंके संख्यातमें माप ही है । यहाँ देवोंमें भी प्रमाण काययोगियोंकी राशि है क्योंकि
काययोगियोंका प्रमाण मनोयोगियों और वचनयोगियोंसे संख्यातगुण्य है ।

पुंछा—यह कैसे जाना जाता है ?

एत्थ मिच्छाड्ढी इदि एगवयणणिदमो, भेवडिया इदि बहुवयणणिदसा; कधमेदण
मिप्पाहियग्गाणमेयद्वपउत्ती ? ण, एयाणेयाणमणोण्णाजइमुत्तीणमयद्वचापिगाहा । मस
सुगमं । असंरुज्जा इदि सामण्णो गवविहस्सामंखन्त्रस्स गहणे पमचे अणिच्छिन्ना-
संखन्त्रपडिसेहहुमुत्तरमुत्त मज्झि—

अमस्वेज्जासम्वेज्जाहि ओसप्पिणि—उस्मप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ १०७ ॥

एदं सुचमदसुगम । अणिच्छिदासंखन्त्रासंखद्वियप्पपडिमहनिमित्तमुत्तरमुत्ता-
पदारो मज्झि—

खेत्तेण वचिचोगिअमन्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाड्ढीहि पदरम
वहिरदि अगुलस्स सम्वेज्जदिभागवग्गपडिभागेण ॥ १०८ ॥

वचिजोगा अमन्चमामवचिजगा च बीदिदियप्पद्वृत्तिणव्वरिमत्थं बीत्तसमासाण
सामापन्त्रचीए पज्जयाण मज्झि, तेण विन्तिअउरिस्सिअसप्पिणपडिदियपन्त्रचरामीओ

धुक्का—इस धुक्के मिच्छाड्ढी यह एकवचन निर्देश है और 'वचिचोगा' यह
बहुवचन निर्देश है । अतएव मिथ मिथ अधिकरणवाले इन दोनोंकी एकार्थमें कर्म प्रवृत्ति
हो सकती है ।

समाधान—महाँ, पयोकि एक और अनेक सम्बन्ध मज्झिप्रवृत्ति हैं इसलिये इन
दोनोंकी एकार्थमें प्रवृत्ति होनेमें कोर विरोध नहीं आता है ।

शेष वचन सुगम है । असम्प्यात है इसप्रकार सामान्य वचन देनस वा प्रक्षरके
असम्प्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है अतएव अनिच्छित असम्प्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये
आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वचनयोगी और अनुमय वचनयोगी बीत्त असम्प्यातासंख्यात
अवधारिणियों और उस्मविमियोंके द्वारा अपहृत होता है ॥ १०७ ॥

यह सूत्र अतिसुगम है । अनिच्छित असम्प्यातासंख्यातके विहस्यके प्रतिषेध
करनेके लिये आगेके सूत्रका ध्यानर हुआ है—

भेदकी अपेक्षा वचनयोगियों और अनुमय वचनयोगियों मिप्पाहटि बीत्तोंके
द्वारा अंगुलके संख्यातके भागरु भगरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०८ ॥

ठीन्द्रियोंसे लेकर ऊपरके संपूर्ण जीवसमाखोंमें भाषापर्यायोंसे पचाप्य हुए बीत्तोंके
वचनयोग और अनुमय वचनयोग पाया जाता है इसलिये ठीन्द्रिय बीन्द्रिय कतुरिन्द्रिय

१ प्रथम मज्झि इति पठः ।

२ बोधसुखत्वं २०४ इत्योभितरं विधातव्योन्त्यभेदा भेदव्यवहारस्यव्यवहारमिशा । व ति १८

एतत् ओभरासिना संखेज्जर्ष पडि एदेसिं रामीणं समागचे संते किमहुमोपमिनि
 य पत्तुविदं सुचे ? न, एतत् अवलंविदपञ्चवह्निपणपचादो । सो मि एतत् किमहुम-
 वलंविज्जे ? जगद्धृत्वावहुगमस्सिद्धम रासिधिसेसपवुप्पायणहं । कथं जोगद्धृत्वावहुममिनि
 पुचे पुचदे— 'सम्बत्थोवा सञ्चमणजोगद्धा । मासमणजोगद्धा संखेज्जगुणा । सञ्चमोसमण-
 जोगद्धा संखेज्जगुणा । असञ्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा । मणजोगद्धा विसेसाहिया ।
 सञ्चवपिजोगद्धा संखेज्जगुणा । मोसवपिजोगद्धा संखेज्जगुणा । सञ्चमासवपिजोगद्धा
 संखेज्जगुणा । असञ्चमोसवपिजोगद्धा संखेज्जगुणा । वपिजोगद्धा विसेसाहिया । कप-
 जगद्धा संखेज्जगुणा' ति' ।

वचिजोगि-असञ्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाद्दृष्टी दव्वपमाणेण केव
 णिया, असंखेज्जा ॥ १०६ ॥

पूर्वोक्त जाठ बीबरासिणां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी है ? संख्यात है ॥ १ ५॥

यहाँ पर संख्यातत्वकी अपेक्षा प्रमत्तादि ओभरासिके साथ इन राशिपोंकी समागता
 रहने पर सूत्रमें ओषं ऐसा किसझिये नहीं कहा ?

समाधान—यहाँ क्योंकि यहाँ पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन किया गया है
 अतः सूत्रमें ओषं ऐसा नहीं कहा ।

श्रुति—यह पर्यायार्थिक नय भी यहाँ पर किसझिये ग्राह्य किया गया है ?

समाधान—योगकायका आश्रय केकर राशिबिधोपका प्रतिपादन करनेके झिये
 यहाँ पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है ।

योगकायके आश्रयसे व्यस्यवहृत्य किस्मकार है ऐसा पूछने पर व्याख्य करते हैं—
 सत्य मनोयोगका काळ सत्तसे सत्तोक है । सूयामनोयोगका काळ सत्तसे सत्प्यातगुणा है ।
 उमवमनोयोगका काळ सूयामनोयोगके काळसे संख्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगका काळ
 वमय मनोयोगके काळसे संख्यातगुणा है । इससे मनोयोगका काळ बिशेष अधिक है । सत्त
 वचनयोगका काळ मनोयोगके काळसे संख्यातगुणा है । सूया वचनयोगका काळ सत्य वचन
 योगके काळसे संख्यातगुणा है । वमय वचनयोगका काळ सूया वचनयोगके काळसे संख्यात
 गुणा है । अनुमय वचनयोगका काळ वमय वचनयोगके काळसे संख्यातगुणा है । वचनयोगका
 काळ अनुमय वचनयोगके काळसे बिशेष अधिक है । काययोगका काळ वचनयोगके काळसे
 संख्यातगुणा है ।

वचनयोगियों और असत्यमूया अर्थात् अनुमय वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि और
 द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी है ? असंख्यात है ॥ १०६ ॥

१ अनेकदृष्टिवा वचनयोगी वचन वचनवा । २-तीनों सावज्ज वचनविधोवा । ३-तीनों वचनवा ।
 ४-तीनों वचनवा । ५-तीनों वचनवा । ६-तीनों वचनवा । ७-तीनों वचनवा । ८-तीनों वचनवा । ९-तीनों वचनवा । १०-तीनों वचनवा ।

होदि । तन्मि संखेज्जस्वेहि गुणिदे षेठवियमिस्मअवहारकालो हादि । तन्मि संखज्ज
 रूपहि गुणिदे सच्चमोसवधिजोगिअवहारकालो हादि । तन्मि संखेज्जस्वेहि गुणिदे मोस
 धिजोगिअवहारकालो होदि । तन्मि संखज्जस्वेहि गुणिदे सच्चवधिजोगिअवहारकालो
 होदि । तन्मि संखेज्जस्वेहि गुणिदे मजजोगिअवहारकालो हादि । त हि संखज्जस्वेहि खंडिय
 उद्ध तन्मि चेव पक्खिचे असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तन्मि संखेज्जस्वेहि
 गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तन्मि संखज्जस्वेहि गुणिदे मोसमण
 जोगिअवहारकालो हादि । तन्मि संखज्जस्वेहि गुणिदे सच्चमणजोगिअवहारकालो होदि ।
 तन्मि संखेज्जस्वेहि गुणिदे षेठवियमिस्मअवहारकालो होदि । किं कारणं ? जेय अंतो
 सुद्धमेचवठवियमिस्सुद्धमण्युगमकालो संखेज्जस्वमाउदवेमाणमुवहमण्युगमकालो संखेज्जगुणो
 तण देवार्थं संखेज्जदिमागो षेठवियमिस्मरासी हादि । हेतो वि सच्चमणरासिस्स
 संखेज्जदिमागो । कुतो ? सच्चमणयोगावावुद्धिसपलद्धसमासंतोसुद्धमेचदाप भार
 तियगुणगारसंखेज्जस्वहिंतो षेठवियमिस्मदावुद्धिसंखेज्जवस्सेसु संखेज्जगुणस्वोप
 र्तमादो ।

सपदि ओभअसंसदसम्माद्विअवहारकालं संखेज्जस्वेहि खंडिय उद्ध तन्मि चेव

होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर समय बचनयोगियोंका अवहारकाळ होता है ।
 इसे संप्यातसे गुणित करने पर भूया बचनयोगियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे
 गुणित करने पर सत्यबचनयोगियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने
 पर मतयोगियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संप्यातसे रक्षित करके जो समय जाये उसे
 इसी मनोयोगियोंके अवहारकाळमें मिला देने पर अनुमय मनोयोगियोंका अवहारकाळ होता
 है । इसे संप्यातसे गुणित करने पर समय मनोयोगियोंका अवहारकाळ होता है । इसे
 संख्यातसे गुणित करने पर भूया मनोयोगियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित
 करने पर सत्यमनोयोगियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर
 वैकल्पिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाळ होता है ।

मुक्क—इसका क्या कारण है ?

समाधान—यूक्ति अस्तमुद्धर्तमात्र वैकल्पिकमिश्रके उपक्रमकाळसे संख्यात वर्णकी
 आयुकाळे दोनोंका उपक्रमकाळ संप्यातगुणा है इसमें तो यह सिद्ध हुआ कि वैकल्पिकमिश्र
 काययोगियोंकी एतद्दि दोनोंके संख्यातमें माग है पर यह वैकल्पिकमिश्रकाययोगियोंकी एतद्दि
 दोनोंके संख्यातमें माग होते हुए भी सत्यमनोयोगियोंके प्रमाणके संख्यातमें माग है क्योंकि
 सत्यमनोयोगके काळसे सत्य काळके जीवरूप अस्तमुद्धर्त काळके अपवर्तित करने पर जो समय
 व्यये इसके छिपे आवलीके शुक्लर संख्यातसे वैकल्पिकमिश्रके काळसे अपवर्तित संख्यात
 वर्णों संख्यातगुणी संख्या पार्य जाती है ।

अब ज्येष्ठ अस्तपतसत्यवृद्धियोंके अवहारकाळको संख्यातसे रक्षित करके जो

एगङ्ग करिय बन्धिमोग-कायबोगद्वासमासेष खन्धिय एगखर्ब बन्धिमोगद्वाए गुन्धिय पंथि
रियप्रसन्धमोसबन्धिमोगरासि पन्धिये असन्धमोसबन्धिमोगरासी होदि । एत्थ सबादि
सेसबन्धिमोगरासि पन्धिये बन्धिमोगरासी होदि । अद्वासमासेस आबलियाए गुन्धियएव
हुबिदसंखेन्धरूपेहिं तो पदरंगुलस्स हेड्डा मागद्वाएव हुबिदसंखेन्धरूपानि जेव संखे-
गुन्धानि तेव पदरंगुलस्स संखेजदिमागो मागद्वाए मबदि ।

सेसाणं मणिजोगिमगो' ॥ १०९ ॥

जथा मज्जिमोगरासी ओषसासपादीणं संखेजदिमागो, तथा बन्धिमोयि असन्धमोस
बन्धिमोगीसु सासपादओ ओषसासपादणि संखेजदिमागो । सेसं सुगमं ।

संपीह अप्पाबहुगल्लेण पुग्गिस्सुवेसु बुचरासीत्तमवहारकात्ता पस्सिन्धते । तं
अहा-संपन्धरूपेहिं बन्धिमोसुं माग हिंदि सखे वग्गिदे बन्धिमोगिमवहारकस्से होदि ।
तस्मि संखेन्धरूपेहिं खन्धिय सई तस्मि जेव पन्धिये असन्धमोसबन्धिमोगिमवहारकस्स

धीर असेही पबेन्धिय पर्याप्त जीवराशिओ एकजित करके धीर उसे बचनयोग और काययोगके
कामके ओङ्कूप प्रमाणसे ज्ञित करके ओ एक माग खम्भ अये उसे बचनयोगके कामसे गुणित
करके ओ प्रमाण हो इसमें पंचन्द्रिय अनुमय बचनयोगी राशिके मिछा देने पर अनुमय
बचनयोगी जीवराशि होती है । इसमें सत्यबचनयोगी जीवराशि यदि शेष बचनयोगी
जीवराशिओके मिछा देने पर बचनयोगी जीवराशि होती है । यहाँ पर अद्वासमासेके सिधे
आबडीके गुणचाररूपसे क्यापित संख्यातसे प्रतरंगुलके नीचे मागद्वाएसे स्थापित
संख्यात अर्थात् संख्यातमुणा है इसलिये प्रवृत्तमें प्रतरंगुलका संख्यातका माग मागद्वाए है ।

सासादनसम्पगृहि आदि शेष गुणस्थानवर्ती बचनयोगी और अनुमय बचन
योगी जीव सासादनसम्पगृहि आदि मनोयोगिराशिक समान हैं ॥ १०९ ॥

त्रिसप्रकार मनोयोगी जीवराशि ओषसासपादसम्पगृहि आदिके संख्यातमें माय है
इसीप्रकार बचनयोगियों धीर अनुमय बचनयोगियोंमें सासादनसम्पगृहि आदि जीवराशि
ओष सासादनसम्पगृहि आदिके संख्यातमें माग है । शेष कथन सुगम है ।

अब अस्पष्टबुद्धके बलसे पूर्वोक्त सर्वोंमें कही गई राशिओंके अवधारकाय को
जाते हैं । वे इसप्रकार हैं— संख्यातसे सूर्यगुलके भाजित करने पर ओ खम्भ अये उसके
वर्णित करने पर बचनयोगियोंका अवधारकाय होता है । इसे संख्यातसे ज्ञित करके ओ
खम्भ अये उसे इन्हीं बचनयोगियोंके अवधारकायमें मिछा देने पर अनुमय बचनयोगियोंका
अवधारकाय होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर बन्धिमोयि काययोगियोंका अवधारकाय

असञ्जदसम्माद्विअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे वेउ
 विवयमिस्सकायजोगिअसञ्जदसम्माद्विअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि
 माएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसञ्जदसम्माद्विअवहारकालो हादि । एवं सम्मामिच्छा-
 द्द्विस्स । णवरि वेउविवयमिस्सं कम्मइयं च छोट्टिय वचण्व । आपसासणसम्माद्विअव
 हारकाल संखेज्जरूवेहि खडिय छद्द तम्हि चेव पक्खिसे कायजोगिसासणसम्माद्वि
 अवहारकालो होदि । तं हि आवलियाए असंखेज्जदिमाएण खडिय छद्द तम्हि चेव
 पक्खिसे वेउविवयकायजागिमासणसम्माद्विअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि
 गुणिदे वचिअगिसासणसम्माद्विअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि मागे हिदे
 छद्द तम्हि चेव पक्खिसे असञ्चमोसवचिजोगिसासणसम्माद्विअवहारकालो होदि । तम्हि
 संखेज्जरूवेहि गुणिदे सञ्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । एवं मासवचिजोगि-सञ्चवचि-
 जोगिअवहारकालानं बहाकमेण संखेज्जरूवेहि गुणेयव्वं । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे
 मज्जोगिसामणसम्माद्विअवहारकालो हादि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय छद्द तम्हि चेव
 पक्खिसे असञ्चमोसमज्जोगिसासणसम्माद्विअवहारकालो होदि । तदो सञ्चमोसमण-

काययोगी असंयतसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसे आपसीके असंख्यातके मागसे
 गुणित करने पर वैद्विषिकमिन्नकाययोगी असंयतसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसे
 आबद्धीके असंख्यातके मागसे गुणित करने पर कायमणकाययोगी असंयतसम्पन्नदृष्टियोंका
 अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार सम्पन्नमिषादृष्टियोंका भी अवहारकाळ करना चाहिये । परंतु
 इतनी विधेयता है कि वैद्विषिकमिन्नकाययोगी और कायमणकाययोगी छोड़कर ही कथन
 करना चाहिये । ओष सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंके अवहारकाळको संख्यातसे बहिर्गत करके
 जो छप्प भागे उसे उसी ओष सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंके अवहारकाळमें मिला देने पर
 काययोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसे आबद्धीके असंख्यातके मागसे
 बहिर्गत करके जो छप्प भागे उसे उसी काययोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंके अवहारकाळमें
 मिला देने पर वैद्विषिककाययोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसे
 संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसे
 संख्यातसे माश्रित करने पर जो छप्प भागे उसे उसी वचनयोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंके
 अवहारकाळमें मिला देने पर अनुभव वचनयोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता है ।
 इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता
 है । इसीप्रकार मृदावचनयोगी और सत्यवचनयोगी बीजोंका अवहारकाळ छानेके लिये यथाक्रमसे
 संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यवचनयोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंके अवहारकाळको संख्या-
 तसे गुणित करने पर मनोयोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे
 बहिर्गत करके जो छप्प भागे उसे इसी मनोयोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंके अवहारकाळमें
 मिला देने पर अनुभव मनोयोगी सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसके भागे

पक्षिण्ये कायजगिअसंनदसम्मद्विअवहारकाळो होदि । तमि आवत्तिमाए असंसज्जदि
माएन मागे द्विदे उइं तमि श्व पक्षिण्ये वेठवियअसंनदसम्मद्विअवहारकाळो होदि ।
तमि संखेज्जरूवेदि गुणिदे पक्षिजोगिअसंनदसम्मद्विअवहारकाळो होदि । तं हि संखेज्ज-
रूवेदि संखिय उइं तमि श्व पक्षिण्ये असंनचमोसवपक्षिजोगिअसंनदसम्मद्विअवहार-
काळो होदि । तमि संखेज्जरूवेदि गुणिदे संचमोसवपक्षिजोगिअसंनदसम्मद्विअवहार-
काळो होदि । तमि संखेज्जरूवेदि गुणिदे मांसवपक्षिजोगिअसंनदसम्मद्विअवहारकाळो
होदि । तमि संखेज्जरूवेदि गुणिदे संचवपक्षिजोगिअसंनदसम्मद्विअवहारकाळो होदि ।
तमि संखेज्जरूवेदि गुणिदे मणजोगिअवहारकाळो होदि । तं हि संखेज्जरूवेदि
संखिय उइं तमि श्व पक्षिण्ये अमंनचमोसमणजोगिअवहारकाळो होदि । (तमि
संखेज्जरूवेदि गुणिदे संचमोसमणजोगिअवहारकाळो होदि ।) तमि संखेज्जरूवेदि
गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकाळो होदि । तमि संखेज्जरूवेदि गुणिदे संचमणजोगि
अवहारकाळो होदि । तमि आवत्तिमाए अमंखेज्जदिमाएण गुणिदे ओराठियकायजोगि

छप्प भावे उसे उसी श्लेष असंयतसम्पगदियोंके अवहारकाळमें मिछा देने पर कायजोगी
असंयतसम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है । इस कायजोगी असंयतसम्पगदियोंके
अवहारकाळको आबसीके असंयतातमें मायसे माजित करने पर जो छप्प
भावे उसे उसी कायजोगी असंयतसम्पगदियोंके अवहारकाळमें मिछा देने पर
वैधियिककायजोगी असंयतसम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है । इस वैधियिककायजोगी
असंयतसम्पगदियोंके अवहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर वचनजोगी असंयतसम्प-
गदियोंका अवहारकाळ होता है । इस वचनजोगी असंयतसम्पगदियोंके अवहारकाळको
संख्यातसे न्हित करके जो छप्प भावे उसे उसी वचनजोगी असंयतसम्पगदियोंके अवहार
काळमें मिछा देने पर अनुमय वचनजोगी असंयतसम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है । इस
अनुमय वचनजोगी असंयतसम्पगदियोंके अवहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर उमय
वचनजोगी असंयतसम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है । इस उमय वचनजोगी असंयतसम्प-
गदियोंके अवहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर मूपावचनजोगी असंयतसम्प-
गदियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनजोगी असंयत
गदियोंका अवहारकाळ होता है । इस सत्यवचनजोगीयोंके अवहारकाळको संख्यातसे गुणित
करने पर मनजोगियोंका अवहारकाळ होता है । इस मनजोगियोंके अवहारकाळको संख्यातसे
न्हित करके जो सप्प भावे उसे उसी मनजोगियोंके अवहारकाळमें मिछा देने पर अनुमय मनो
जोगियोंका अवहारकाळ होता है । इस अनुमय मनजोगियोंके अवहारकाळको संख्यातसे गुणित
करने पर उमयमनजोगियोंका अवहारकाळ होता है । इस उमय मनजोगियोंके अवहारकाळको
संख्यातसे गुणित करने पर मूपामनजोगियोंका अवहारकाळ होता है । इस मूपामनजोगियोंके
अवहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनजोगियोंका अवहारकाळ होता है । इस
सत्यमनजोगियोंके अवहारकाळको आबसीके असंयतातमें मायसे गुणित करने पर वीवरिक

असज्जदसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे गुणिदे वेठ
 विवयमिस्सकायजोगिअसज्जदसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि
 माणए गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसज्जदसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । एवं सम्मामिच्छा-
 इद्धिस्सु । णवति वउज्वियमिस्सं कम्मइय च छाडिय वत्थं । ओपसासणसम्माइद्धिअव
 हारकालं संपज्जन्वेहि सटिय लद्धं तम्हि च व पक्खिचये कायजोगिसासणसम्माइद्धि
 अवहारकालो हादि । त हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणे सटिय लद्धं तम्हि च व
 पक्खिचये वउज्वियकायजोगिसासणसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि संखज्जन्वेहि
 गुणिदे वचिज्जागिसासणसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि संखज्जन्वेहि मागे हिदे
 लद्धं तम्हि च व पक्खिचये असञ्चमोमवचिजोगिसासणसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि
 संखेज्जन्वेहि गुणिदे सञ्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । एवं मोसवचिजोगि-सञ्चवचि-
 जोगिअवहारकालाणं ब्रह्मकमेण संखेज्जन्वेहि गुणेयं । तम्हि संखेज्जन्वेहि गुणिदे
 मणजोगिसासणसम्माइद्धिअवहारकालो हादि । त हि संखेज्जन्वेहि खंडिय लद्धं तम्हि च व
 पक्खिचये असञ्चमोममणजोगिसासणसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । ततो सञ्चमासमण-

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इसे आबलीके असंख्यातवें भागसे
 गुणित करने पर वैश्वियिकमित्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इसे
 आपलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कायजोगिअसंयतसम्यग्दृष्टिओंका
 अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सम्यग्मिष्यादृष्टिओंका भी अवहारकाल करना चाहिये । परंतु
 इसकी विशेषता है कि वैश्वियिकमित्रकाययोग और कायजोगिअसंयतसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल
 करना चाहिये । ओष सासादनसम्यग्दृष्टिओंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके
 जो छप्प भागे उसे उसी भाग सासादनसम्यग्दृष्टिओंके अवहारकालमें मिला देने पर
 काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इस आबलीके असंख्यातवें भागसे
 खंडित करके जो छप्प भागे उस उसी काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंके अवहारकालमें
 मिला देने पर वैश्वियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इसे
 संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इसे
 संख्यातसे मात्रित करने पर जो छप्प भागे उसे उसी वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंके
 अवहारकालमें मिला देने पर अनुमय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है ।
 इस संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता
 है । इसीप्रकार मृतावचनयोगी और सत्यवचनयोगी दोनोंका अवहारकाल छानेके छिये वयाक्रमसे
 संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंके अवहारकालको संख्या-
 तसे गुणित करने पर मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे
 खंडित करके जो छप्प भागे उसे इसी मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंके अवहारकालमें
 मिला देने पर अनुमय मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इसके आगे

बोगि-मोसमनबोगि-सम्भमपाणं अहाक्रमण संसेञ्जस्वेहि गुणिद्विदि । तन्दि अतस्मिन्नाय
असंसेञ्जद्विमाएण गुणिदे ओरात्थियकायवागिमागसम्मद्विअवहारकालो इदि । तन्दि
आवत्थियाए असंखञ्जद्विमाएण गुणिदे आरात्थियमिम्मसासणमम्मद्विअवहारकालो इदि ।
तन्दि आवत्थियाए असंखञ्जद्विमाएण गुणिदे अउत्थियमिम्मसागिसामणसम्मद्विअवहार-
कालो इदि । तन्दि आवत्थियाए असंखञ्जद्विमाएण गुणिदे कम्मइयसासणसम्मद्वि
अवहारकालो इदि । एवं संसदासंजदानं । पररि ओपावहारकाल संखञ्जस्वेहि रंथिय
सद्धं तन्दि येव यक्खित्त ओरात्थियकायबोगिसद्वदासंजद्वयं अवहारकालो इदि । तन्दि
संसेञ्जस्वेहि गुणिदे यथिवागिसद्वदासंजद्वयवहारकालो इदि । सत्त पुणं व वत्थये ।
पमचादीयं वृत्तदे । मज्झोग-वथिजोग-कायजोगाद्वय समासेण अप्पप्यो रासिन्दि भागे
हिदे सद्धं तिप्पठिरासिं कळ्मस पुणो अप्पप्यो अद्वाहि गुणिदे एदेवन्दि गुणद्वय
मज्झोग-वथि-कायजोगरासीमा इति । पुणो सन्धमोस-अस-धमोसमज्झोगाद्वय समासेण
मज्झोगरासिं रंथिय सद्धं च दुप्पठिरासिं कळ्मस अप्पप्यो अद्वाहि गुणिदे सन्धमस-

वृत्तममोयोगी मृगमनोयोगी और सत्यमनोयोगी जीवोंका व्यवहारका कालके विषे
पचाससे संपातसे गुणित करना चाहिये । सत्यमनोयोगी साक्षात्सम्पन्नद्विषोंके
व्यवहारका कालके संपातसे भागसे गुणित करने पर औदारिकमध्ययोगी साक्षात्स
सम्पन्नद्विषोंका व्यवहारका होता है । इसे व्यापकीके संपातसे भागसे गुणित करने पर
औदारिकमध्ययोगी साक्षात्सम्पन्नद्विषोंका व्यवहारका होता है । इसे व्यापकीके संपा
तसे भागसे गुणित करने पर वैदिकमध्ययोगी साक्षात्सम्पन्नद्विषोंका व्यवहार
का होता है । इसे व्यापकीके संपातसे भागसे गुणित करने पर कर्मव्यापयोगी
साक्षात्सम्पन्नद्विषोंका व्यवहारका होता है । इसीप्रकार संपातसंपत्त वचनयोगी मनोयोगी
और काययोगीका व्यवहारका ज्ञानमा चाहिये । यहाँ इतनी विशेषता है कि संपातसंपत्त योग
व्यवहारका संपातसे व्युत्पन्न करने को कर्म व्यापके वसे वसी संपातसंपत्त योग व्यवहार
का कर्म सिद्धा देने पर औदारिकमध्ययोगी संपातसंपत्तका व्यवहारका होता है । इसे संपातसे
गुणित करने पर वचनयोगी संपातसंपत्तका व्यवहारका होता है । योग कर्म पढ़नेके समाप्त
करना चाहिये । पर ममत्तसंपत्त व्यापक वृत्तमममम कहते हैं— मनोयोग वचनयोग और
काययोगके काळके जोड़ने अपने अपने गुणव्यापकवर्गीय रूपात्म भाग देने पर जो कर्म व्याप
कवर्गीय तीन प्रतिपत्तिपूर्ण करने पुनः वहाँ अपने अपने कर्मसे गुणित कर देने पर एक एक
गुणव्यापक मनोयोगी वचनयोगी और काययोगीकी रूपात्म होती है । पुनः वृत्त
मनोयोग और वृत्तमम मनोयोगके कर्मोंके जोड़ने मनोयोगी जीवव्यापकी व्युत्पन्न करने
को कर्म व्यापके वचनयोगी प्रतिपत्तिपूर्ण करने अपने अपने काळसे गुणित करने पर वृत्तम

असम्पन्नमोक्षमणजागरासीओ इति । एवं वचिजोगरासिस्म वि वच्यते ।

कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाहट्टी मूलोष' ॥ ११० ॥

एदे दो वि रासीओ अणंता । अणताणताहि ओसपिणि उस्सपिणीहि म अवरति
कलेण । खेचेण अणताणता लेणा इदि बुध इदि । ससं सुगमं ।

सामणसम्माइट्ठिपहुडि जाव सजोगिकेवलि ति जहा मणजोगि
मगो ॥ १११ ॥

एदे सुच सुगम । एत्थ पुवरामिविहाण पुच्छद । तं जहा—सगुणपटिवप्पमण
जोगि-वचिजोगिरासि सिद्ध अजोगिरासि य कायजोगिमज्जिद एदसि बग च सम्बधीव
रासिम्हि पक्खिचे कायजोगिधुवरासी होदि । त पटिरासि काउम्य तत्थेकरासिम्हि
संखेजस्सेहि मागे हिदे लद्ध ठम्हि चेव पक्खिचे ओरालियकायजोगिधुवरासी होदि ।

मनोयोगी और अनुमय मनोयोगी जीवराशिपां होती हैं । इसीप्रकार वचनयोगी जीवराशिपा
मी कथन करना चाहिये ।

काययोगियों और औदारिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके
समान हैं ॥ ११० ॥

उपर्युक्त ये दोनों मी राशिपां बनस्य हैं । वास्तवी भवेसा काययोगी और औदारिक
काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव बनन्तामन्त अथसंपिणियों और उरसंपिणियोंके द्वारा अपहन
नहीं होते हैं और क्षेत्रकी भवेसा बनन्तामन्त लोकप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य
है । दोष कथन सुगम है ।

साक्षादनसम्पद्यदृष्टि गुणस्थानमे लेकर सयोगिकेवसी गुणस्थानतक काययोगी
और औदारिककाययोगी जीव मनोयोगियोंके समान हैं ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है । अथ यहाँ पर धुवराशिकी विधिका कथन करते हैं । यह
इसप्रकार है—गुणस्थानप्रतिपद्य मनोयोगिराशि वचनयोगिराशि सिद्धराशि और वधोगि
राशिसे तथा इन चारों राशियोंके धर्मों काययोगिराशि का भाग देने पर जो छम्प भागे
बसे सार्व औदारिकमें मिद्धा देने पर काययोगियोंकी धुवराशि होती है । अन्तर इसकी
प्रतिपत्ति करके उनमेंसे एक राशिमें संस्पातका भाग देने पर जो छम्प भागे बसे उसी
धुवराशिमें मिद्धा देने पर औदारिककाययोगियोंकी धुवराशि होती है । साक्षादनसम्पद्यदृष्टि

लक्ष्मपञ्चदश गुणिदे ओरालियमिस्तरासी हवदि । तमद्वाए गुणगारेण गुणिदे ओरालियकायजोगरासी हवदि । तेम ओरालियकायजोगरासीदे ओरालियमिस्तरासीजोगरामी संखेज्जगुणहीणो ।

सासणसम्माइट्टी ओध ॥ ११३ ॥

सासणसम्माइट्टिणो देव-गेरइया जेण तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववन्जमाणा पल्लोवमस्स असखेज्जदिमागवा लम्भंति तेन एदेसिं पमाणपरुवपाए ओधमंगो हवदि । एदेसिमवहार कालो पुचद । त अहा- ओरालियकायजोगिसासणमवहारकालमावलियाए असखेज्जदिमाण गुणिदे ओरालियमिस्तरासीजोगिसामणसम्मइट्टिअवहारकालो होदि । कुतो ? देव-गेरइएहिंते तिरिक्ख-मणुस्सेसु तप्यन्जमाणरासिणो पुव्वट्ठिदरासिस्स असखेज्जदिमागवावो ।

असजदसम्माइट्टी मजोगिवेली दव्वपमाणेण केवडिया, मंस्सेज्जा

॥ ११४ ॥

देव गेरइयसम्माइट्टिणो मणुस्सेसु उववन्जमाणा संखेज्जा चेव लम्भंति, मणुस पन्वचरासिस्स अप्पहा अमंस्खेज्जत्तप्पसगा । ओरालियमिस्तरासीजोगिह सुपाविस्सेण

जो सत्त्व भावे इसे अपर्याप्त काखसे गुणित कर देने पर औदारिकमिधकाययोगी राशि होती है । इस औदारिकमिधकाययोगी जीवराशिओ औदारिककाययोगके काखसे गुणकरसे गुणित कर देने पर औदारिककाययोगीराशि होती है । इसलिये औदारिककाययोगी जीव राशिसे औदारिकमिधकाययोगी जीवराशि सत्पातगुणी हीन है यह सिद्ध हुआ ।

औदारिकमिधकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सामान्य प्ररूपजाके समान हैं ॥ ११३ ॥

भूति तिर्यक् और मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए सासादनसम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव पम्पोपमके असंख्यातवें माग पाये जाते हैं इसलिये औदारिकमिधकाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान होती है । जब इतना अवहारकाय कहते हैं । इसका स्वपीकरण इसप्रकार है— औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकायओ भावसीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर औदारिकमिधकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाय होता है क्योंकि देव और नारकीयोंमेंसे तिर्यक् और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवासी राशियां पहले स्थित राशिओ असंख्यातवें मागमात्र होती हैं ।

असयत्तसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेयसी औदारिकमिधकाययोगी जीव कितने हैं ? सत्पात हैं ॥ ११४ ॥

सम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए सत्पात ही पाये जाते हैं । यदि वेसा न माना जाय तो मनुष्य पर्याप्त राशिओ असंख्यातपनेका प्रसंग भा जाता है ।

अप्रिओषणसे सजोगिकबलिजो चवालीमें हवति । तं जहा— कवाठ आखंडता बीस २०, ओखंडता बीस २० ।

वेठव्यिकायजोगीसु मिच्छाद्वी दव्वपमाणेण केवाडिया, देवाण संसेअदिमागूणो ॥ ११५ ॥

एवस्त सुचस्त अत्ता बुद्धे । देवाणं जो रासी' अप्पण्णो संसेअदिमाएण परिहीणो वेठव्यिकायजोगिमिच्छाद्वी' पमाणं होदि । बुद्धो ? देव-वेरअरासिमेमई करिय मग-वधिकायजोगादासमासेण खंडिय रुद्धं तिप्पहिरासि कस्स अप्पण्णो अद्वि गुणिदे सग-सगरासीजो हवति । जेण मय रथिओगरासीजो देवाण संसेअदिमाणो हवति,

विशेषार्थ— अत्यंतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिथकाययोग तिष्ठत और मनुष्य दोनोंमें पाया जाता है । फिर भी जो सम्यग्दृष्टि जीव मरकर तिर्थस्थोंमें उत्पन्न होते हैं वे मनुष्य ही होते हैं, अतएव ऐसे उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण स्वरूप ही रहेगा । तथा मनुष्य पतितसे जो जीव सम्यक्त्वके साथ मनुष्योंमें उत्पन्न होंगे उनका भी प्रमाण स्वरूप ही रहेगा । मर रह गई नरक और देवगतिजी बात सो हम दोनों पतिपोंसे सम्यग्दृष्टि मरकर मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं । किन्तु पतित मनुष्योंका प्रमाण संख्यात ही है । अतएव नरक और देवगतिसे मरकर मनुष्योंमें होनेवाले सम्यग्दृष्टि जीव संख्यात ही उत्पन्न होंगे अधिक नहीं । इसलिये औदारिकमिथकाययोगी सम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण संख्यात ही होगा अधिक नहीं यह सिद्ध हो जाता है ।

सूत्रके अधिकृत व्याचार्योंके उपदेशानुसार औदारिकमिथकाययोगमें लघोमिनेकही जीव बाकीस होते हैं । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— कपाट समुदायमें आरोहण करनेवाले औदारिकमिथकाययोगी बीस और उतरते हुए बीस होते हैं ।

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ब्रह्मप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातमें माग कम है ॥ ११५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— अपनी अपनी राशिसे संख्यातमें मानसे न्यून देवोंकी जो राशि है उतना वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण है क्योंकि देव और नाटकियोंकी राशिसे परहित करके मनोयोग बचनयोग और काययोगके बाधके ओढ़से बहित करके जो सत्य भावे उसकी ठीक प्रतिराशिवां करके अपने अपने ब्रह्मसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण होता है । कृंकि मनोयोगी जीवरशि और बचनयोगी जीव-

१ अतिशु ५—ओषण ६ति पाठः ।

२ हारितकलायें तथा वैक्रियिककाययोगी ३ पां ओ ११५.

३ अतिशु ५ओओ ६ति पाठः ।

तेन वडम्बियकायजोगिमिच्छाद्विगणसिपमाण संखेअदिमागपरिहीणदेवरासिणा समान भवति ।

एतय अवहारकालो उच्यते । दव-अरयमिच्छाद्विगणसिपमासम्मि मण वचि-वेउम्बिय मिस्सकाय-कम्मइयकायजोगिण-वेअरयमिच्छाद्विगणसिपमासेण माग हिद संखेजरूपाणि लब्धमति । तेहि रूप्पेहि संखेज्जपदरंगुलमेव दव-अरयसमत्सअवहारकाल खडिय लद्ध तम्हि चेव पक्खिचे वेउम्बियकायजोगिमिच्छाद्विअवहारकालो होदि ।

सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी अमजदमम्माइट्ठी द्व्यपमाणेण केवाडिया, ओघ ॥ ११६ ॥

देवगुणपडिबण्णाण रासिपमाण अप्पप्पणो संखेज्जदिमाण ऊण वडम्बियकाय जोगिगुणपडिबण्णरासिपमाण होदि । तं बहा— देव-गेअरयगुणपडिबण्णरासिम्हि अप्पप्पणो मण-वचि-वडम्बियमिस्स-कम्मइयरासीहि मागे हिदे तण्ण लद्धसंखेज्जरूपाणि रूप्पेहि देव-गेअरयसमासअवहारकाल खडिय लद्ध तम्हि चव पक्खिचे वेउम्बियकायजोगिगुणपडि बण्णाणभवहारकाला भवति ।

राशि वेधोंके संख्यातर्षे माग है इसलिये बैक्रियिककाययोगी मिष्यादृष्टि राशिका प्रमाण सत्या तर्षे माग कम वेधराशिके समान होता है ।

अब यहाँ पर अवहारकाखण्ड कथन करते हैं— देव मिष्यादृष्टिराशि और नारक मिष्यादृष्टिराशिका जितना योग हो उसे मनोयोगी ब्रह्मयोगी बैक्रियिकमिष्यकाययोगी और कार्मणकाययोगी देव और नारकी मिष्यादृष्टि राशिके योगसे मासित करने पर संख्यात छम्प आते हैं । एक कम उस संख्यातसे संख्यात प्रत्यंगुलमात्र वेध और नारकियोंके जोड़कर अवहारकाखण्डो संहित करके जो छम्प आये उसे उन्हीं दोनोंके जोड़कर अवहारकाखण्डमें मिला देने पर बैक्रियिककाययोगी मिष्यादृष्टियोंका अवहारकाख होता है ।

सासादनसम्पगदृष्टि, सम्यग्मिष्यादृष्टि और असंयतसम्यगदृष्टि बैक्रियिककाय योगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणोके समान हैं ॥ ११६ ॥

गुणस्थानप्रतिपन्न वेधोंकी राशिअ जो प्रमाण है अपनी अपनी उस राशिमेंसे सत्यात माग न्यून करने पर बैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न अपनी अपनी राशिका प्रमाण होता है । वह इसप्रकार है— गुणस्थानप्रतिपन्न देव और नारक राशिमें अपनी अपनी मनोयोगी ब्रह्मयोगी बैक्रियिकमिष्यकाययोगी और कार्मणकाययोगी जीवोंकी राशिमेंसे माग देने पर वहाँ जो सत्यात छम्प आये उसमें एक कम करके छेपसे देव और नारकियोंके योग रूप अवहारकाखण्डो संहित करके जो छम्प आये उसे वही देव और नारकियोंके मिले हुए अवहारकाखण्डमें मिला देने पर बैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाख होते हैं ।

वेदव्यमिस्मकायजोगीसु मिच्छाद्दृष्टी दव्यपमाणेण केवडिया,
देवाण सस्वेज्जदिभागो ॥ ११७ ॥

एदस्म सुचस्स वकत्तुण सुप्पदे । मँउज्जवम्माउअम्भतरआणसियाण असंछेज्जदि
मागमचउववमणकालम् । वदि' देवरासिमचआ लम्भदि, तो एदम्हादा संखज्जगुणहीन-
वउग्नियमिस्मउववमणकालम् । केपियमेधरासिसंभयं लमामा धि इच्छारामिणा पमत्त-
रासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धंसंखज्जस्वेदि देवरासिम्हि । माग हिदे त्थयेगमागा वउग्निय-
मिस्मकायजागिमिच्छाद्दृष्टिपमार्थं हादि । सेस सुगमं ।

वैदिकमिभ्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ब्रह्मप्रमाणकी अपेक्षा कितने
है ? वेदोंके संप्रदायमें भाग है ॥ ११७ ॥

अब इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं— संप्रदाय वपकी आयुके भीतर व्यापकीके
जसंप्रदायमें मागमात्र उपक्रमण कायसे यदि देवराशिख संभय प्राप्त होता है तो इससे
संप्रदायगुण हीन वैदिकमिभ्र उपक्रमण कायसे भीतर कितनामात्र राशिख संभय प्राप्त होय,
इसप्रकार वैदिक कहे इच्छावाशिसे प्रमाणवाशिसे भाजित करने पर वहाँ जो संप्रदाय
काय कायों उससे देवराशिखे भाजित करने पर वहाँ एक मागप्रमाण वैदिकमिभ्रकाययोगियों
मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है । शेष कथन सुपम है ।

विशेषार्थ— अत्यधिक उपक्रमण करते हैं और इस सहित कायको सोपक्रमणक
कहते हैं । यह सोपक्रमणकाय कायकीके असंप्रदायमें मागमात्र है । अर्थात् वेदोंमें यदि निरन्तर
जीव उत्पन्न हों तो इतने काय तक उत्पन्न होंगे । इसके पश्चात् अन्तर पद जायगा । वह
अन्तरकाय काय एक समय है और उत्पन्न सोपक्रमणकायसे संप्रदायगुण है । वेदोंमें संप्रदाय
पर्यन्त आयु केकर अतिर जीव उत्पन्न होते हैं इसलिये वहाँ कहींकी विवक्षा है । इसप्रकार
संप्रदाय वपके भीतर कितने उपक्रमणकाय होने हैं उनमें यदि देवराशिख संभय प्राप्त होता है
तो इससे संप्रदायगुण हीन मिभ्रकायमें (अपवाय अथवाके सोपक्रमणकायमें) कितने जीव होंगे ।
इसप्रकार वैदिक करने पर सर्व देवराशिखे संप्रदायमें मागमात्र वैदिकमिभ्रकाययोगियोंका
प्रमाण होता है । वहाँ असंप्रदाय वपकी आयुकावे वेदों और नापिकियोंकी अपेक्षा वैदिकमिभ्र-
काययोगियोंके प्रमाणके नहीं छायेका कारण यह है कि उनका अनुपक्रमणकाय अधिक होनेसे
उनमें वैदिकमिभ्रकाययोगियोंका प्रमाण अल्प होगा इसलिये वपकी वहाँ विवक्षा नहीं की है ।

१ सोपक्रमणानुपक्रमणको वपे-अपठठिरिणा । अत्यधिकउपक्रमणो पठेयान्तिवरा वपको ॥ तदि
तमे वृद्धका तेजवववववव वृद्धका । वपको पठवपूना वपुण्णज्जदि वृद्धका ॥ वृद्धवववववववव
वपुण्णज्जदि वृद्धका । वृद्धवववववव वपे वपुण्णज्जदि वृद्धका ॥ तदि वपुण्णज्जदि वपुण्णज्जदि
वो जो २२२ २२२

२ वप वपदि वपक्रम वपदि वप वपवववव वपुण्णज्जदि वपुण्णज्जदि वपुण्णज्जदि
३ व वपे —कलेन वपदि वपे वपि वप

सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
ओध ॥ ११८ ॥

तिरिक्ख-मथुससासण-असंजदसम्माइट्ठिणा जेण देवसुप्पज्जमाना पलिदोबमस्स असंखेज्जदिमागमेचा सम्मंति तेणेदेसिं पमाणपरुषणा ओधं, ओधेण समाना सि धुत्तं होदि । एदेसिमवहारकातुप्पत्ती धुत्तं । ठ वडा- आरासियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहार कालमावलिआए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे वेठवियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठि अवहारकालो हादि । ओरासियकायजोगिअवहारकालमावलिआए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे वेठवियमिस्सकायजोगिमसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । किं कारण ? तिरिक्खानमसंखेज्जदिमागस्स दवसुप्पत्तीदो । केण कात्थेण वेठवियमिस्सकायजोगिसासणे हिंतो ओरासियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा ? म एस दोसो, कुदो ? देवसुप्पज्जमाणतिरिक्खसासणेहिंतो तिरिक्खसुप्पज्जमानादेवसासणान्मसंखेज्जगुणादो ।

आहारकायजोगीसु पमत्तसजदा दव्वपमाणेण केवडिया, चट्ट-
वण्ण' ॥ ११९ ॥

सासादनसम्यग्गटि और असंयतसम्यग्गटि बैक्तिधिकमिभकाययोगी जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? ओधप्ररूपण्यके समान है ॥ ११८ ॥

बुकि सासादनसम्यग्गटि और असंयतसम्यग्गटि तिर्येच और मजुप्प देवोंमें उत्पन्न होते हुए पर्योपमके असंख्यातवर्ग मागप्रमाण पाये जाते हैं इसलिये इनके प्रमाणकी प्ररूपणा व्येध मर्याद व्योपमरूपण्यके मुख्य होती है यह इसका भूमिमाय है । अब इनके अवहारकाळकी उत्पादिका कथन करते हैं । यह इसप्रकार है— भौतिकमिभकाययोगी सासादनसम्यग्गटियोंके अवहारकाळको मावडीके असंख्यातवर्ग मागसे गुणित करने पर बैक्तिधिकमिभकाययोगी सासादन सम्यग्गटियोंका अवहारकाळ होता है । असंयतसम्यग्गटि भौतिककाययोगियोंके अवहारकाळको मावडीके असंख्यातवर्ग मागसे गुणित करने पर बैक्तिधिकमिभकाययोगी असंयतसम्यग्गटियोंका अवहारकाळ होता है, क्योंकि, तिर्येचोंके असंख्यातवर्ग मागप्रमाण राशि देवोंमें उत्पन्न होती है ।

संज्ञा— बैक्तिधिकमिभकाययोगी सासादनसम्यग्गटि जीवोंसे भौतिकमिभकाययोगी सासादनसम्यग्गटि जीव असंख्यातगुणे किंच कारणसे है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्येच सासादन-सम्यग्गटि जीवोंसे तिर्येचोंमें उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्गटि जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

आहारकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?

१ आहारकाययोगी वदवण्ण होति पच्छददन्दि ॥ पो. जी. २७

आहारसरीरमण्यगुणद्वयेषु परित्यजि ज्ञानान्तरं पमत्तगह्वं कदं । संसं मुहु
सुगम ।

आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया,
संसेज्जा ॥ १२० ॥

एतच्च अप्रतियपरंपरागतत्वेण आहारमिस्सकायजोगीसु सत्तावीस २७ जीवा इवन्ति ।
अहंवा आहारमिस्सकायजोगीसु द्विपदिहमात्वा संसेज्जजीवा इवन्ति, य सत्तावीस, सुपे
संसेज्जणिइस्सण्णहाणुवचदिदा मिस्सकायजोगीसु आहारमिस्सकायजोगीसु संसेज्जगुणचदो च ।
य च दाण्णमेत्थ गह्वं, अज्जहण्णमणुदस्ससंसेज्जसु सम्भगहण्णदा, सम्भअपक्कचद्वारिणे
पक्कचद्वारं अहण्णायं पि संसेज्जगुणचदंसणादो ।

कम्महयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, मूलेषं
॥ १२१ ॥

बीरन है ॥ ११९ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानको छोड़कर दूसरे गुणस्थानोंमें आहारप्राप्त नहीं पाया जाता
है, इसका नाम कटालेके छिपे प्रमत्तसंयत परका ग्रहण किया । रोष कथन सुगम है ।

आहारमिस्सकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
संख्यात हैं ॥ १२० ॥

यहां पर व्याख्यान परंपरासे आये हुए उपदेशानुसार आहारमिस्सकाययोगमें सत्तावीस
जीव होते हैं । अथवा आहारमिस्सकाययोगमें त्रिवेदेके त्रितनी संख्या देखी जा उतने
संख्यात जीव होते हैं । सत्तावीस नहीं, क्योंकि सूत्रमें संख्यात, यह निर्देश कल्पना बन
गई सफ़ता है । तथा मित्रयोगियोंसे आहारप्राप्तयोगी जीव संख्यातगुणे हैं इससे भी
प्रतीत होता है कि आहारमिस्सकाययोगी जीव संख्यात हैं । सत्तावीस नहीं । कदम्बिद
कहा जाय कि दो भी तो संख्यात हैं । परंतु दो यह संख्या संख्यात होते हुए भी संख्या
यहां पर ग्रहण नहीं किया है । क्योंकि उसके द्वारा अज्जहण्णानुदस्सकाय संख्यातका ही ग्रहण
किया है । अथवा, सर्व अपर्याप्तकालसे अल्प पर्याप्त काल भी संख्यातगुण्य है, इससे
भी प्रतीत होता है कि आहारमिस्सकाययोगी सत्तावीस नहीं केवा आदिपे ।

कर्मकाययोगियोंमें मिच्छाइट्ठी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
ओषप्रकृपाके समान हैं ॥ १२१ ॥

अदो सम्बजीवरासी गगापवाहो व्य गिरतरं विग्गहं काऊण्यप्यञ्जदि, तेण कम्मइय रासिस्स मूलोपपरूवणा ण विरुद्धा । एदस्स सुचस्स धुवरासी बुच्चदे । काययोगिधुव रासिमतोद्धुत्तेण गुणिदे कम्मइयजोगिधुवरासी होदि । त जइ— संखेज्जाबलियमेच अतोद्धुत्तफलेण जदि सम्बजीवरासिस्स संचमो होदि, सो सिण्हं समयाणं केचियं संचयं समामो पि पमाणेण इच्छासुप्पिदफलमोबहि्य अतोद्धुत्तोवहि्यसम्बजीवरासी आगच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दम्बपमाणेण केवडिया, ओघ ॥ १२२ ॥

अत्र पल्लिद्वेनमस्य असंखेज्जदिमागमेघा तिरिक्खजसंजदसम्माइट्ठियो विग्गाहं काऊण्य देवेसुप्यञ्जमाणा लभमति, देव तिरिक्खसासणसम्माइट्ठियो पल्लिद्वेनमस्य असंखे ज्जदिमागमेघा तिरिक्ख-देनेसु विग्गाहं करिय उववन्धमाणा लभमति, तेण एदेसिं पमाण-परूवणा ओषपरूवणाए तुह्मा । एदेसिमवहारकाऊण्यपी बुच्चदे । असंजदसम्माइट्ठि-सासण-सम्माइट्ठिवेत्तिवियमिस्समवहारकाळे आबलिमाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे कम्मइयकाम ओगिमसंजदसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिवहारकाळा भवति । कुदा ! विग्गहं करिय

क्योंकि सर्व जीवराशि गंगानदीके प्रवाहके समान गिरतर विग्रह करके उत्पन्न होती है इसलिये कर्मफलका राशिही प्रकृष्टता मूलोप प्रकृष्टताके समान होती है, चित्तव्यवहारी ।

अब इस सूत्रमें कहे गये कर्मफलकायोगियोंके प्रमाणकी भुवराशि कहते हैं— काययोगियोंकी भुवराशिसे अन्तर्गृहीतसे शुभित करने पर कर्मफलकायोगियोंकी भुवराशि होती है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सख्याय भावधीमाय अन्तर्गृहीतकाळके द्वारा यदि सर्व जीवराशिवा सन्नप होता है तो तीन समयमें कितना संबन्ध प्राप्त होया इसप्रकार इच्छावाशिसे फलवाशिसे शुभित करके जो फल पाये उसे प्रमाणवाशिसे माजित करने पर अन्तर्गृहीतकाळसे माजित सर्व जीवराशि जाती है ।

सासादनसम्पगदि और असपतसम्पगदि कर्मफलकायोगी जीव इत्यप्रमात्यकी अपेक्षा कितने हैं ! सामान्य प्रकृष्टताके समान पश्योपमके असख्यातवर्गे माग हैं ॥ १२३ ॥

क्योंकि पश्योपमके असेख्यातवर्गे मागप्रमाण तिरिक्ख असपतसम्पगदि जीव विग्रह करके देवोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं । तथा पश्योपमके असख्यातवर्गे मागप्रमाण देव सासादनसम्पगदि जीव भीर उठने ही तिरिक्ख सासादनसम्पगदि जीव क्रमसे तिरिक्ख भीर देवोंमें विग्रह करके उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं इसलिये सासादनसम्पगदि भीर असंजदसम्पगदि कर्मफलकायोगियोंकी प्रकृष्टता सामान्य प्रकृष्टताके तुल्य है । अब इनके व्यवहारकाळकी उत्पत्तिसे कहते हैं— असपतसम्पगदि भीर सासादनसम्पगदि हैचिद्विद मित्र व्यवहारकाळको भावकीके असेख्यातवर्गे मागसे शुभित करने पर क्रमसे कर्मफलकायोगी असपतसम्पगदि भीर सासादनसम्पगदि जीवोंके व्यवहारकाळ होते हैं, क्योंकि, मित्रह

मरमाप्तरासीए देवसु उच्यन्त्यमाणरासिस्स असंखेज्जदिमागचादा ।

सजोगिकेवली दव्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२३ ॥

एत्थ पुण्वहरिओपपत्तेण सङ्खी जीवा इवति । कुदो ? पदेरे बीस, सागपूरमे बीस, पुणरवि ओदरमत्था पदेरे बीस भव मवति सि ।

मागामार्गं वत्तइस्सामो । सम्पजीवरामि संखंज्जखंडे कए सव्व बहुखंडा ओरा-
स्सियक्कायजोगरासीओ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओराठियमिस्सक्कायजोगरासी हेदि ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयक्कायमिच्छाप्रवृत्तिरासी हेदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए
बहुखंडा सिद्धा होति । सेसमसंखंज्जखंडे कए बहुखंडा असंखमोसवविजोगिमिच्छा-
इत्थिओ होति । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखंडा वडमियक्कायजोगिमिच्छाप्रवृत्तिओ होति ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वमोसवविजोगिमिच्छाप्रवृत्तिओ होति । सस संखंज्जखंडे
कए बहुखंडा मोसवविजोगिमिच्छाप्रवृत्तिओ होति । सम संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्व
वविजोगिमिच्छाप्रवृत्तिओ होति । ससं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंखमोसमममिच्छाप्रवृत्ति
होति । समं संखंज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वमोसमममिच्छाप्रवृत्ति होति । सेसं संखंज्जखंडे
कए बहुखंडा मोसमममिच्छाप्रवृत्तिओ होति । ससं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वमममिच्छा-

करके मरनेवासी राशि देवोंमें उच्यत होनेवासी राशिके असंख्यातमें मागमात्र पारि जाती है ।

कर्मजक्काययोगी सपोगिकेवली बीस कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १२३ ॥

पूर्व भाषाओंके उपदेशानुसार सपोगिकेवलीयोंमें कर्मजक्काययोगी जीव सप्त
होते हैं क्योंकि प्रतर समुदायमें बीस छोकरूप समुदायमें बीस और उतरते हुए प्रतर
समुदायमें पुनः बीस जीव होते हैं ।

यस्य मागामायको वत्तहाते है— सर्व जीवराशिके सख्यात ऋद्ध करने पर उन्नमंसे
बहुमायप्रमाय औदारिककाययोगी जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर
बहुमायप्रमाय औदारिकमिमज्जावयोगी जीवराशि है । रोप एक भागके वनन्त ऋद्ध करने पर
बहुमायप्रमाय कर्मजक्काययोगी मिथ्यादृष्टि राशि है । रोप एक भागके वनन्त ऋद्ध करने पर
बहुमायप्रमाय सिद्ध जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर बहुमाय अनुमय
वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर बहुमाय वैकल्पिक-
काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर वनमंसे बहुमाय
वचन वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर बहुमाय
भूया वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर बहुमाय सप्त
वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर बहुमाय अनुमय
मनोबोधी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर बहुमाय वचन
मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर बहुमाय भूया मनोबोधी
मिथ्यादृष्टि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात ऋद्ध करने पर बहुमाय सप्त मनोयोगी

मरमाणरासीए देवेसु उबबन्जमाणरासिस्त असंखेज्जदिमाणचादो ।

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२३ ॥

एत्थ पुब्बपरिआवपसेण सङ्की जीना हवति । कुदो ? पदेरे बीस, सोगपूये बीस, पुपरवि ओदरमाणा पदर बीस चेव भवति पि ।

मागामार्गं वचस्सामा । सप्पजीवरामिं सखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओत-
लियक्कायजोगरासीओ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओतलियमिस्तक्कायजोगरासी होदि ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयक्कायमिच्छाद्विरासी इदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए
बहुखंडा सिद्धा होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असप्पमोसवपिआमिच्छा
इदिओ होति । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखंडा वउत्थियक्कायमागिमिच्छाद्विओ होति ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सप्पमोसवपिजोगिमिच्छाद्विओ होति । सस संखेज्जखंडे
कए बहुखंडा मोसवपिजोगिमिच्छाद्विओ होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सप्प
वपिजोगिमिच्छाद्विओ होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असप्पमासमपमिच्छाद्वि
होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सप्पमोसमपमिच्छाद्वि होति । सेस संखेज्जखंडे
कए बहुखंडा मोसमपमिच्छाद्विओ होति । सस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सप्पमपमिच्छा
करके मरनेबाजी राशि देवोंमें उत्पन्न होनेवाली राशिसे असंख्यातमें मागमात्र पारि जाती है ।

कार्मणक्काययोगी सयोगिकेवली जीव कियने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२३ ॥

पूर्व माचार्योंके वपदेशानुसार सयोगिकेवलीमें कार्मणक्काययोगी जीव साठ
होते हैं क्योंकि प्रथम समुदायमें बीस लोकपूज्य समुदायमें बीस और उतरते हुए प्रथम
समुदायमें पुनः बीस जीव होते हैं ।

यस मागामागको वसयाते है— सर्व जीवराशिसे संख्यात बंड करने पर इनमेंसे
बहुभागप्रमाण औदारिकक्काययोगी जीवराशि है । रोप एक भागके असंख्यात बंड करने पर
बहुभागप्रमाण औदारिकमिक्काययोगी जीवराशि है । रोप एक भागके समस्त बंड करने पर
बहुभागप्रमाण कार्मणक्काययोगी मिष्पाद्वि राशि है । रोप एक भागके समस्त बंड करने पर
बहुभागप्रमाण सिद्ध जीव हैं । रोप एक भागके असंख्यात बंड करने पर बहुभाग अनुस्य
वचनयोगी मिष्पाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग वैदिकिक
क्काययोगी मिष्पाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके असंख्यात बंड करने पर उबमेंसे बहुभाग
वस्य वचनयोगी मिष्पाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग
धृपा वचनयोगी मिष्पाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग सज
वचनयोगी मिष्पाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग अनुस्य
मनोयोगी मिष्पाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग वस्य
मनोयोगी मिष्पाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग धृपा मनोयोगी
मिष्पाद्वि जीव हैं । रोप एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग सज मनोयोगी

योगिमम्मामिच्छाद्द्विरासी इति । सेत संयज्जखंडं कर्षं बहुखंडं । असन्धमोसमवज्राणि-
सम्मामिच्छाद्द्विरासी इति । सेत संयज्जखंडं कर्षं बहुखंडं । सन्धमासमवज्राणिसम्मामिच्छा-
द्द्विरासी इति । सेत संयज्जखंडं कर्षं बहुखंडं । मासमवज्राणिसम्मामिच्छाद्द्विरासी इति । सेत
संयज्जखंडं कर्षं बहुखंडं । सन्धमवज्राणिसम्मामिच्छाद्द्विरासी इति । आपसासप्राप्तीनां
आपसम्मामिच्छाद्द्विरासी संयज्जगुणा च सुचमिद्वा । तपहि आपसम्मामिच्छाद्द्विरामिस्र
संयज्जदिमाणा सन्धमवज्राणिसम्मामिच्छाद्द्विरासी कर्षं आपसासप्राप्तीनां संयज्जगुणा
इति च उच्यते— आगद्वागुणगारदो^१ सम्मामिच्छाद्द्विरामि पति सासप्राप्तीनां
द्द्विरासिस्म गुणगारा बहुगा, तप सन्धमवज्राणिसम्मामिच्छाद्द्विरासी सेतम् संयज्ज
माणा । तं कर्षं यज्जखंडं सुचमं विष्णोः । पति सुचं यज्जखंडं वा, किंतु आदित्यपययमव
केवलमपि । सेतं सन्धमवज्जखंडं कर्षं बहुखंडं । वज्रियकाययोगिमासपसम्मामिच्छाद्द्विरासी
इति । सेत संयज्जखंडं कर्षं बहुखंडं । असन्धमासवज्राणिसापसम्मामिच्छाद्द्विरासी इति ।

बहुभाग सत्यवचनयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात बंड करने
पर बहुभाग अनुमय मनोयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात बंड
करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात
बंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशि है । शेष एक भागके
संख्यात बंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशि है । शेष
साक्षात्सत्यमिच्छादिति जीवराशिसे शेष सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशि संख्यातगुणी है यह सूत्र सिद्ध
है । यह शेष सम्पत्तिमिच्छादिति राशिसे संख्यातमें भाग्यमान सत्यमनोयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति
जीवराशि शेष साक्षात्सत्यमिच्छादिति जीवराशिसे संख्यातगुणी कैसे है, ज्ञाने इसी विषयके पूछने
पर कहते हैं— शेषकाश्रमे गुणकारसे सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशिजी अवेक्षा साक्षात्सत्यमिच्छादिति
जीवराशिस्म गुणकार बहुत है इसलिये सत्यमनोयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशि
भागभागमें मृषामनोयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति प्रमाण धानेके अनन्तर जो एक भाग शेष
रहता है उसका संख्यातमें भाग है ।

संज्ञा—सूत्रके बिना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वद्यपि इस विषयमें सूत्र या व्याख्यान नहीं पाया जाता है किंतु व्याख्यान
बोके वचन ही केवल पाये जाते हैं जिससे यह कथन जाना जाता है ।

सत्यमनोयोगी सम्पत्तिमिच्छादिति जीवराशिसे अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके
संख्यात बंड करने पर बहुभाग वैश्विदिकव्ययोगी साक्षात्सत्यमिच्छादिति जीवराशि है । शेष
एक भागके संख्यात बंड करने पर बहुभाग अनुमयवचनयोगी साक्षात्सत्यमिच्छादिति जीवराशि

१ वा गरा जीवद्वय इव— इति वाग ।

२ यज्जखंडं यज्जखंडं मानी इति वाग ।

योगिसम्मानिच्छाद्द्विरासी होदि । सेस संखेज्जउंढे कए बहुखंडा असबमोसमबजोमि-
सम्मानिच्छाद्द्विरासी होदि । सेस संखेज्जउंढे कए बहुखंडा सवमोसमजोगिसम्मानिच्छा-
द्द्विरासी होदि । सेस संखेज्जउंढे कए बहुखंडा मासमणजोगिसम्मानिच्छाद्द्विरासी होदि । सेस
संखेज्जउंढे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसम्मानिच्छाद्द्विरासी होदि । ओपसासणरासीदो
ओपसम्मानिच्छाद्द्विरासी संखजगुणा पि सुचसिदो । सपदि ओपसम्मानिच्छाद्द्विरासीस
मंखेज्जदिमागो सच्चमणजोगिसम्मानिच्छाद्द्विरासी कर्षं ओपसासणरासीदो संखेज्जगुणा
होदि पि उषं पुब्बदे—जोगदुसुणगारासीं सम्मानिच्छाद्द्विरासीं पदि सासवसम्मा
द्द्विरासीस गुणगतो बहुगो, तेण सच्चमणजोगिसम्मानिच्छाद्द्विरासी सेससं संखेज्ज
मागो । १ कर्षं गण्ढ सुपेण विणा ? पत्ति सुचं वकसाय वा, किंतु अप्रतिपक्षपक्षम
कवत्तमत्ति । मम संखेज्जउंढे कए बहुखंडा वउमिपक्षपक्षजोगिमासुनसम्मानिच्छाद्द्विरासी
होदि । सेस संखेज्जउंढे कए बहुखंडा अमण्णमामवपिजोगिसासवसम्मानिच्छाद्द्विरासी होदि ।

बहुभाग सासववचनयोमी सम्मगिमिप्पादधि जीवरति है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने
पर बहुभाग अनुमय मबोयोमी सम्मगिमिप्पादधि जीवरति है । रोप एक भागके संख्यात खंड
करने पर बहुभाग उमयमबोयोमी सम्मगिमिप्पादधि जीवरति है । रोप एक भागके संख्यात
खंड करने पर बहुभाग मृयामबोयोमी सम्मगिमिप्पादधि जीवरति है । रोप एक भागके
संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्पमबोयोमी सम्मगिमिप्पादधि जीवरति है । जोब
सासाइनसम्मगि जीवरतिसे जोब सम्मगिमिप्पादधि जीवरति संख्यातगुणी है यह सूच सिद्ध
है । अब जोब सम्मगिमिप्पादधि रतिसे संख्यातने मागप्रमाण सत्पमबोयोमी सम्मगिमिप्पादधि
जीवरति जोब सासाइनसम्मगि जीवरतिसे संख्यातगुणी कैसे है भागे इसी विषयके पूछने
पर कहते हैं—योगवाक्यके गुणकारसे सम्मगिमिप्पादधि जीवरतिजी अपेक्षा सासाइनसम्मगि
जीवरतिज्या गुणकार बहुत है इसलिये सत्पमबोयोमी सम्मगिमिप्पादधि जीवरति
मायामासमें मृयामबोयोमी सम्मगिमिप्पादधिका प्रमाण भावके अनन्तर जो एक भाग रोप
रहता है वक्का संख्यातयां भाग है ।

धुंका—सूचके विना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यद्यपि इस विषयमें सूच या प्याप्यान नहीं पाया जाता है, किंतु मात्रा
बोके वक्क ही केवल पाये जाते हैं जिससे यह कथन जाना जाता है ।

सासवमबोयोमी सम्मगिमिप्पादधि जीवरतिसे अनन्तर जो एक भाग रोप रहे उसके
संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैकिपिक्कपयोमी सासाइनसम्मगि जीवरति है । रोप
एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुमयवचनयोमी सासाइनसम्मगि जीवरति

वेतध्वय-वउध्वयमिस्तकायवोगीण सत्वाणस्त देवगद्मगो । वधिजोगि-असञ्चमोस-
वधिजोगीण सत्वाणस्त पंचिन्द्रियतिरिक्खपञ्चमगो । सेसकायजोगिस्तु मिच्छद्दहीनं
सत्त्वार्णं गतिं । सासनसम्माद्दुट्ठि-सम्माभिच्छद्दुट्ठि-असंखदसम्माद्दुट्ठि-सखदासखदार्थं
सत्त्वाणस्त ओधमगो ।

परत्थाणं पयदं । सत्त्वत्थोवा असञ्चमोसमनजोगिणो वचारि उवसामगा । असञ्च
मोसमनजोगिणो वचारि खवगा सत्त्वेज्जगुणा । असञ्चमोसमनजोगिणो सजोगिकेवलीं
सत्त्वेज्जगुणा । असञ्चमोसमनजोगिणो अप्पमत्तसंजदा सत्त्वेज्जगुणा । असञ्चमोसमन-
जोगिणो पमत्तसंजदा सत्त्वेज्जगुणा । असञ्चमोसमनजोगिससजदसम्माद्दुट्ठिअवहारकालो
असत्त्वेज्जगुणो । असञ्चमोसमनजोगिसम्माभिच्छद्दुट्ठिअवहारकालो असत्त्वेज्जगुणो । असञ्च-
मोसमनजोगिसासनसम्माद्दुट्ठिअवहारकालो सत्त्वेज्जगुणो । असञ्चमोसमनजोगिसंजदा-
संजदअवहारकालो असत्त्वेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमसत्त्वेज्जगुणं । असञ्चमोसमनजोगि-
सासनसम्माद्दुट्ठिदम्भमसत्त्वेज्जगुणं । असञ्चमोसमनजोगिसम्माभिच्छद्दुट्ठिदम्भं सत्त्वेज्जगुणं ।

स्वस्थान अस्पवहुत्वं देवगतिके समान है । वचवयोगी और अनुमपमनजोगियोंका स्वस्थान
अस्पवहुत्वं पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंके स्वस्थान अस्पवहुत्वंके समान है । रोप काययोगियोंमें
मिथ्यादृष्टि जीवोंके स्वस्थान अस्पवहुत्वं नहीं पाया जाता है । इन्हींके सासात्नसम्पददृष्टि,
सम्पग्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्पददृष्टि और संयतासंयतोंका स्वस्थान अस्पवहुत्वं औष स्वस्थान
अस्पवहुत्वंके समान है ।

अथ परत्थानमें अस्पवहुत्वं प्रकृत है । अनुमप मनोयोगी चारों गुणस्थानवर्ती
उपशामक सबसे स्तोत्र है । अनुमप मनोयोगी चार गुणस्थानवर्ती रूपक उपशामकोंसे
सरयातगुणे हैं । अनुमप मनोयोगी सयोगिकेवली जीव उक्त रूपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमप
मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीव उक्त सयोगिकेवलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमप मनोयोगी प्रमत्त
संयत जीव उक्त प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमपमनोयोगी असंयतसम्पददृष्टियोंका अ-
वहारकाल उक्त प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । अनुमपमनोयोगी सम्पग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहार
काल उक्त असंयत अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुमपमनोयोगी सासात्नसम्पददृष्टियोंका
अवहारकाल उक्त सम्पग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । अनुमपमनोयोगी संयता-
सयतोंका अवहारकाल उक्त सासात्नसम्पददृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इन्हीं अनुमप
मनोयोगी संयतासयतोंका द्रव्य इन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुमपमनोयोगी
सासात्नसम्पददृष्टियोंका द्रव्य उक्त संयतासंयतोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । अनुमपमनोयोगी
सम्पग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य उक्त सासात्नसम्पददृष्टियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । अनुमपमनो

मयजागिसंजडासंजदरासी हादि । सेस मयेज्जउंढे कए बहुउंढा माममजजोगिसंजडा-
संजदरासी होदि । ससं संखेज्जउंढे कए बहुउंढा सज्जमजजोगिमअदामंजदरासी हादि ।
सुखेण बिजा बठभियमिस्सकायजागिसंजदसम्मअदिरासी तिरिक्खसम्मामिच्छअदि
प्यहुदि तीहिं नि रासीहिं तो असंउं-जगुणहीना पि कए मन्वे ? अदरियपपणा । अए
रियपपमजपतमिदि पे, हाहु पाम, पत्ति मज्झन्व अग्गहा । ससमसंखेज्जउंढे कए बहु
उंढा बठभियमिस्सकायजोगिसंजदसम्मअदिरासी हादि । ससमसंखेज्जउंढे कए बहुउंढा
कम्मइयकायजोगिसंजदसम्मअदिरासी होदि । ससमसंखेज्जउंढे कए बहुउंढा ओरत्ति-
यमिस्सकायजोगिसासजसम्मअदिरासी होदि । ससमसंखेज्जउंढे कए बहुउंढा बठभिय-
मिस्सकायजोगिसासना होति । ससमसंखेज्जउंढे कए बहुउंढा कम्मइयकायजोगिसासज
सम्मअदिरासी होदि । सेस आभिरुण भेयण्ये ।

अप्याबहुअं तिभिहं सरधानादिमेएव । सरधाने पपद । पंचमजजोगि-तिप्पिबपिजेमि-

है । होय एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृणालनोबोधी संयत्तासंयत जीवपत्ति
है । होय एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी संयत्तासंयत जीवपत्ति है ।

उंछा—सूचके बिना वैद्विषिकमिश्र काययोगी साम्यमिच्छादृष्टि जीवपत्ति तिर्षब
सम्भविष्यादृष्टि जीवपत्तिसे छेकर तीनों पक्षियोंसे असंख्यातगुणी हीन है, यह कैसे जाना
जाता है ?

समाधान—यह कथन आचार्योंके बचनसे जाना जाता है ।

उंछा—आचार्योंके बचनमें अनेकान्त है अर्थात् वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं ।

समाधान—यदि वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं तो पाये जाने इस्में इमाप
न्याय है ।

सत्यमनोबोधी संयत्तासंयत पक्षिके अन्तर ओ एक माय होय रहे उसके असंख्यात
खंड करने पर बहुभाग वैद्विषिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्भवादृष्टि जीवपत्ति है । होय एक
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग कर्मवक्ष्ययोगी असंयतसम्भवादृष्टि जीवपत्ति
है । होय एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिकमिश्रकाययोगी साक्षात्क-
कम्यपत्ति जीवपत्ति है । होय एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैद्विषिकमिश्र
काययोगी साक्षात्कसम्भवादृष्टि जीव है । होय एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
कर्मवक्ष्ययोगी साक्षात्कसम्भवादृष्टि जीवपत्ति है । होय कथन समस्तकर छे जाना चाहिये ।

स्वस्थान आदि के भेदसे असंख्यरूप तीन प्रकारका है । उनमेंसे लक्षण असंख्यरूप बहुत
है । वनों जलोबोमी तीव्र बचनबोमी वैद्विषिककाययोगी और वैद्विषिकमिश्रकाययोगी

वेदध्विय-वेदध्वियमिस्सकाययोगीण सत्याणस्त देवगामगो । षषिजोगि-असञ्चमोस
षषिजोगीण सत्याणस्त पक्षिद्वियविरिक्खपञ्चमगो । सेसकाययोगीसु मिच्छाद्विणी
सत्याणं णत्थि । सासणसम्माद्वि-सम्माभिच्छाद्वि असदसम्माद्वि-समदासदत्तं
सत्याणस्त ओषमगो ।

परस्थाने पयदं । सञ्चस्थोवा असञ्चमोसमणजोगिणो चचारि उवसामगा । असञ्च-
मोसमणजोगिणो चचारि खवगा संखेज्जगुणा । असञ्चमोसमणजोगिणो सजोगिकेवली'
संखेज्जगुणा । असञ्चमोसमणजोगिणो अप्पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । असञ्चमोसमण-
योगिणो पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । असञ्चमोसमणजोगिअसमदसम्माद्विअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । असञ्चमोसमणजोगिसम्माभिच्छाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असञ्च
मोसमणजोगिसासणसम्माद्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । असञ्चमोसमणजोगिसज्जदा-
सज्जदावहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दध्वमसंखेज्जगुणं । असञ्चमोसमणजोगि-
सासणसम्माद्विद्वन्मसंखेज्जगुणं । असञ्चमोसमणजोगिसम्माभिच्छाद्विद्वन् संखेज्जगुणं ।

स्वस्थान अस्पृहदुत्थ देवगतिके समान है । ब्रह्मयोगी और अनुमयब्रह्मयोगियोंका स्वस्थान
अस्पृहदुत्थ पक्षेध्विय तिरिय पर्याप्तोंके स्वस्थान अस्पृहदुत्थके समान है । शेष काययोगियोंमें
मिष्साद्वि जीवोंके स्वस्थान अस्पृहदुत्थ नहीं पाया जाता है । उन्हींके सासादनसम्प्राद्वि,
सम्पगिमप्याद्वि अर्धपतसम्प्राद्वि और संपतासपत्तोंका स्वस्थान अस्पृहदुत्थ शेष स्वस्थान
अस्पृहदुत्थके समान है ।

अथ परस्थानमें अस्पृहदुत्थ प्रकृत है । अनुमय मनोयोगी चारों गुणस्थानवर्ती
उपशामक सबसे स्तोत्र है । अनुमय मनोयोगी चार गुणस्थानवर्ती सपक उपशामकोंसे
संप्यातगुणे हैं । अनुमय मनोयोगी सयोगिकेवली जीव उक्त सपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमय
मनोयोगी अग्रमत्तसपत्त जीव उक्त सयोगिकेवलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमय मनोयोगी प्रमत्त
संपत्त जीव उक्त अग्रमत्तसपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुमयमनोयोगी अर्धपतसम्प्राद्वियोंका अथ
हारकाळ उक्त प्रमत्तसंपत्तोंसे अर्धप्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी सम्पगिमप्याद्वियोंका अवहार
काळ उक्त अर्धपत अवहारकाळसे अर्धप्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी सासादनसम्प्राद्वियोंका
अवहारकाळ उक्त सम्पगिमप्याद्वि अवहारकाळसे संख्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी संपता
सपत्तोंका अवहारकाळ उक्त सासादनसम्प्राद्वि अवहारकाळसे अर्धप्यातगुणा है । उन्हीं अनुमय
मनोयोगी संपतासपत्तोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकाळसे अर्धप्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी
सासादनसम्प्राद्वियोंका द्रव्य उक्त संपतासपत्तोंके द्रव्यसे अर्धप्यातगुणा है । अनुमयमनोयोगी
सम्पगिमप्याद्वियोंका द्रव्य उक्त सासादनसम्प्राद्वियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । अनुमयमनो

१. इति ब्रह्मयोगी इति पाठः ।

२. इति अर्धपत इति पाठः ।

असञ्जसममज्जोगिअसञ्जदसम्माइद्धिदम्भमसंखेज्जगुणं । पत्तिदोवममसंखेज्जगुणं । असञ्ज-
मोसममज्जोगिमिच्छाइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खेमसुअं असंखेज्जगुणा ।
सेद्धी असंखेज्जगुणा । दम्भमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुण । लोमो असंखेज्जगुणो ।
एवं पचारिमम-पंचपथिजोगीण्य परत्थाणप्पायहुगं वचघ्न । वेउत्थियकायजोगीण्यु सम्भत्थोतो
असञ्जदसम्माइद्धिअवहारकालो । उवरि मणजोगपरत्थाणमंगो । वउत्थियमिस्सकायजोगीण्यु
सम्भत्थावो असंजदसम्माइद्धिअवहारकालो । सासनसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
तस्मं दम्भमसंखेज्जगुणं । असञ्जदसम्माइद्धिदम्भमसंखेज्जगुण । उवरि मणजोगिपरत्थाण-
मंगो । सम्भत्थोत्ता कायजोगीणा उवसम्मगा । रुधगा-संखेज्जगुणा । एवं वेयघ्नं ज्ञाप पत्ति-
दोवमं ति । पत्तिदोवमादो उवरि मिच्छाइद्धी अणतगुणा । एवं आराळियकायजोगीण्य ति
वचघ्नं । भोराळियमिस्सकायजोगीण्यु सम्भत्थोत्ता सजोगिकेवली । असंजदसम्माइद्धी संखेज्ज-
गुणा । सासनसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणा । तस्सेव दम्भमसंखेज्जगुणं । पत्तिदो-
वममसंखेज्जगुणं । मिच्छाइद्धी अणतगुणा । आहार-आहारमिस्सेसु पत्थि सत्थाण परत्थाणं

योगी असंयतसम्यग्दृष्टिषोका द्रव्य उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टिषोके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । पश्यो-
पम उक्त असंयतसम्यग्दृष्टिषोके द्रव्यसं असंख्यातगुणा है । अनुपपन्नमनोयोगी मिथ्यादृष्टिषोका
अवहारकाळ पश्योपमसे असंख्यातगुणा है । उन्हींकी विषयमसूची अवहारकाळसे असंख्यातगुणी
है । जगधेयी विषयमसूचीसे असंख्यातगुणी है । उन्हीं अनुपपन्नमनोयोगी मिथ्यादृष्टिषोका
द्रव्य जगधेयीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुण है । कोक
जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । हसीप्रकार रोप बार मनोयोगी बीर पाँचों कथनयोमिषोका
परत्थाण अवधारकत्वं कहना चाहिये । वैकृतिककाययोगियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टिषोका अवहार
काळ सबसे स्तोत्र है । इसका ऊपर मनोयोगिके परत्थाण अवधारकत्वंके समान जानना
चाहिये । वैकृतिकमिश्रकाययोगियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टिषोका अवहारकाळ सबसे स्तोत्र
है । सासाइनसम्यग्दृष्टिषोका अवधारकाळ असंयतसम्यग्दृष्टिषोके अवहारकाळसे असंख्यात
गुणा है । उन्हीं सासाइनसम्यग्दृष्टि वैकृतिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य अपने अवधारकाळसे
असंख्यातगुणा है । असंयतसम्यग्दृष्टि वैकृतिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य सासाइन द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । इसका ऊपर मनोयोगिके परत्थाण अवधारकत्वंके समान जानना चाहिये ।
काययोगी उपशमक सबसे स्तोत्र है । काययोगी सबकाययोगी उपशमकोंसे संख्यातगुणे है ।
हसीप्रकार पदकायमठक से जाना चाहिये । पश्योपमका ऊपर काययोगी मिथ्यादृष्टि बीर भगवत्
गुणे है । हसीप्रकार भौतिककाययोगियोंका भी कथन करना चाहिये । भौतिकमिश्रकाय
योगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोत्र है । असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सयोगिकेवलीसे
संख्यातगुणे है । सासाइनसम्यग्दृष्टिषोका अवधारकाळ असंयत सम्यग्दृष्टिषोके असंख्यातगुणा
है । उन्हींका द्रव्य अपने अवधारकाळसे असंख्यातगुणा है । पश्योपम सासाइनसम्यग्दृष्टि भौति-
कमिश्रकाययोगियोंमें असंख्यातगुणा है । भौतिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव पश्योपमसे

वा । कम्मइयकायजोगीसु सञ्चरयोवा सजागिणो । असंजदसम्माइड्ढिअवहारफालो असं
खेज्जगुणो । सासणसम्माइड्ढिअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दध्ममसंखेज्जगुणं ।
असंजदसम्माइड्ढिदध्ममसंखेज्जगुणं । पल्लिदोवममसंखेज्जगुण । कम्मइयकायजोगिमिज्ज-
इड्ढिगो अणंतगुणा ।

सञ्चपरस्याण पयद । सञ्चरयोवा आहारमिस्सकायजोगिजीवा । आहारकायजोगि-
जीवा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तमज्जा संखेज्जगुणा । पमत्तसज्जा संखेज्जगुणा । सञ्चसिम-
सज्जदसम्मादिड्ढिण अवहारफालो असंखेज्जगुणो । एव नेयम्ब ज्ञाव पल्लिदोवम पि ।
किमहुमेव आपिज्जदे ? वठम्बियमिस्स-ओरात्थियमिस्स-कम्मइयकायजोगीसु सासणसम्मा-
इड्ढि असंजदसम्माइड्ढिरासीण माहाण्ण ण आपिज्जदि पि । पुण्ण किमिदं परस्विदं ? ण,
अट्ठरियाणं तस्स अभिप्पायसन्दरिसण्हत्तादो । पल्लिदोवमात्रो उवरि वत्थिजोगिअवहारफालो
असंखेज्जगुणो । असञ्चमासवत्थिजोगिअवहारफालो विमेषाड्ढिओ । वठम्बियकायजोगि-

अनन्तगुणे हैं । आहारकाययोग और आहारकमिधकाययोगमें स्वरक्षान अथवा परस्वान
अस्पृहत्त्व नहीं पाया जाता है । कर्मणकाययोगियोंमें सयोगिकेपछी जीव सबसे स्तोक
हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाळ सयोगियोंके प्रमाणसे असंयतागुणा है । साक्षात्त
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाळ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकाळसे असंयतागुणा है । कर्मका
द्रव्य अपने अवहारकाळसे असंयतागुणा है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य साक्षात्त द्रव्यसे
असंयतागुणा है । परस्वोपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंयतागुणा है । कर्मणकाय-
योगी मिध्यादृष्टियोंका द्रव्य परस्वोपमसे अनन्तगुणा है ।

अब सब परस्वानमें अस्पृहत्त्व प्रकृत है । आहारमिधकाययोगी जीव सबसे स्तोक है ।
आहारकाययोगी जीव आहारमिध जीवोंसे संयतागुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव आहारकाय-
योगियोंसे संयतागुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संयतागुणे हैं । समीक्षा असंयत-
सम्यग्दृष्टि अवहारकाळ प्रमत्तसंयतोंसे असंयतागुणा है । इतीमकार परस्वोपमतक छे
जाना बाहिये ।

सुंका—देसा किसलिये समझें ?

समाधान—कैत्रियिकमिध धीरारिक्कमिध और कर्मणकाययोगियोंमें साक्षात्त
सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि दृष्टियोंका माहात्म्य अथात् परस्पर अस्पृहत्त्व नहीं जाना
जाता है इसलिये देसा समझना बाहिये ।

सुंका—तो फिर इनके अस्पृहत्त्वका पढ़ते वक्तपर किसलिये किया है ?

समाधान—नहीं क्योंकि वहाँ दूसरे भाषाओंका अतिप्रामाण्य दिखाना उनके
अस्पृहत्त्वके कथनका प्रयोजन था ।

परस्वोपमके ऊपर वत्थनयोगियोंका अवहारकाळ असंयतागुणा है । अनुपपन्नजन्मयोगि-
योंका अवहारकाळ वत्थनयोगियोंका अवहारकाळसे विशेष अधिक है । कैत्रियिककाययोगियोंका

अवहारकाष्ठो संस्तेज्यगुणो । एव सञ्चमोसवचिञ्जोगि-मोसवचिञ्जोगि-सञ्चवचिञ्जोगि-
मवचोनीयं अवहारकाष्ठो संस्तेज्यगुणो । असञ्चमोसमवचोनीयं अवहारकाष्ठो विसेसाहिभो ।
सञ्चमोसमवचोनिमवहारकाष्ठे संस्तेज्यगुणो । एवं मोसमवचोनि-सञ्चमवचोनि-वेठविय-
मिस्सकायवचोनीयं अवहारकाष्ठ संस्तेज्यगुणो । तस्सेव विक्खंमसूई असंस्तेज्यगुणो ।
सञ्चमवचोनिविक्खंमसूई संस्तेज्यगुणो । एवं मोसमवचोनि-सञ्चमोसमवचोनि-असञ्च-
मोसमवचोनीयं । तदो मवचोनिविक्खंमसूई विसेसाहिया । सञ्चवचिञ्जोगिविक्खंमसूई
संस्तेज्यगुणो । एवं मोसवचिञ्जोगि- (सञ्चमोसवचिञ्जोगि) -वठवियकायवचोनि-असञ्च-
मोसवचिञ्जोगिविक्खंमसूई सञ्चो संस्तेज्यगुणो । वचिञ्जोगिविक्खंमसूई विसेसाहिया ।
सेही असंस्तेज्यगुणो । तदो वेठवियमिस्सकायवचोनिमिच्छाद्विदम्भमसंस्तेज्यगुणं । सञ्चमव-
चोनिद्वयं संस्तेज्यगुणं । एवं मोसमवचोनि-सञ्चमोसमवचोनि असञ्चमोसमवचोनि-
द्वयाणि बह्वाक्रमेण संस्तेज्यगुणाणि । मवचोनिद्वयं विसेसाहिय । सञ्चवचिञ्जोगिद्वयं

मवहारकाष्ठ अनुमयवचनयोगियोंके अवहारकाष्ठसे संख्यातगुणो है । इसीप्रकार उभय-
वचनयोगी मूपावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका मवहारकाष्ठ उत्तरोत्तर संख्यातगुणो
है । अनुमयमनोयोगियोंका मवहारकाष्ठ सत्यवचनयोगियोंके मवहारकाष्ठसे विशेष अधिक
है । उभयमनोयोगियोंका मवहारकाष्ठ अनुमयमनोयोगियोंके मवहारकाष्ठसे संख्यातगुणो
है । इसीप्रकार असत्यमनोयोगी सत्यमनोयोगी और वैकल्पिकमिथ्याकाययोगियोंका मवहारकाष्ठ
उत्तरोत्तर संख्यातगुणो है । वन्हीकी मर्यात् वैकल्पिकमिथ्याकाययोगियोंकी विष्कम्भसूची वन्हीके
मवहारकाष्ठसे असंख्यातगुणी है । सत्यमनोयोगियोंकी विष्कम्भसूची वैकल्पिकमिथ्याकाययोगि-
योंकी विष्कम्भसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मूपावचनयोगी उभयमनोयोगी और अनुमय-
मनोयोगियोंकी विष्कम्भसूची मी समझना चाहिये । अनुमयमनोयोगियोंकी विष्कम्भसूचीसे मनो-
योगियोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंकी विष्कम्भसूची मनोयोगियोंकी
विष्कम्भसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मूपावचनयोगी उभयमनोयोगी वैकल्पिककाययोगी
और अनुमयवचनयोगियोंकी विष्कम्भसूची मी उत्तरोत्तर संख्यातगुणी हैं । वचनयोगियोंकी
विष्कम्भसूची अनुमयवचनयोगियोंकी विष्कम्भसूचीसे विशेष अधिक है । जगमेची वचनयोगि-
योंकी विष्कम्भसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगमेचीसे वैकल्पिकमिथ्याकाययोगियोंका द्रव्य
असंख्यातगुणो है । सत्यमनोयोगियोंका द्रव्य वैकल्पिकमिथ्याकाययोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणो है ।
इसीप्रकार मूपावचनयोगी उभयमनोयोगी अनुमयमनोयोगियोंका द्रव्य वयाक्रमसे संख्यातगुणो
है । मनोयोगियोंका द्रव्य अनुमय मनोयोगियोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंका

संखेज्जगुण । एवं मोसमधिजोगि-सन्धमोसवचिजोगि-वठम्भियकायजोगि-असन्धमोसमधि
जोगिदम्भाणि जहाक्कमेण संखेज्जगुणाभि । तदो वचिजोगिदम्भं विसेसाहिय । पद्ममसंखेज्ज
गुण । सोगो असंखेज्जगुणो । तदो अज्जणो अगतगुणा । कम्मइयकायजागिणो अमंत
गुणा । ओरात्थियमिस्सकायजागिणो असंखेज्जगुणा । ओरात्थियकायजोगिणो मिच्छाहट्ठी
संखेज्जगुणा ।

एव भोगमगणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छाहट्ठी दव्वपमाणेण केवाढिया,
देवीहि सादरेय' ॥ १२४ ॥

देवगृहमगणाए देवणि पमाणमेत्थिय इदि चि सुचम्हि ण वुच, सो कच आणिज्जे
इत्थिवेदरासी देवीहिता सादरेगो इदि ? अदि वि एत्थ ण वुचो तो वि 'ईसाणकप्प
वासियदेवाप्पमुवरि तम्हि चेव दवीओ संखेज्जगुणाओ । तदो सोहम्मकप्पवासियदेवा
संखेज्जगुणा । तम्हि चेव दवीओ संखेज्जगुणाओ । पढमाए पुढसीए जेरया असंखेज्ज-

द्रव्य मनोयोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार भूपायबनयोगी समययजनयोगी
पैश्वर्यिककाययोगी और अनुमय यजनयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संप्रयातगुणा है । अनुमय
यजनयोगियोंके द्रव्यसे यजनयोगियोंका द्रव्य विशेष अधिक है । जगत्तर यजनयोगियोंके द्रव्यसे
असंप्रयातगुणा है । लोक जगत्तरसे असंप्रयातगुणा है । लोकसे भयोगी जीव मनस्तगुणे है ।
भयोगियोंसे कर्मकाययोगी जीव मनस्तगुणे है । कर्मकाययोगियोंसे भौतिकमिमांसाययोगी
जीव असंप्रयातगुणे है । आहारिकमिमांसाययोगियोंसे भौतिककाययोगी मिथ्याहृदि जीव
संप्रयातगुणे है ।

इसप्रकार योगमायका समाप्ति हुई ।

वेदमार्गवाके अनुवादसे स्वीयेदियोंमें मिथ्याहृदि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने है ? देवियोंसे कुछ अधिक है ॥ १२४ ॥

श्लोक—वेदगति मागणामे वेदियोंका प्रमाण इतना है यह सुनमें नहीं कहा है
मत्तएय यह कैसे जाना जाता है कि स्वीयेदगति वृत्तियोंसे साधिक होती है ?

समाधान—यद्यपि यहाँ जीवभूतमें यह बात नहीं कही है तो भी ऊपर ईशान
कल्पवासी देवोंके यहाँ पर वेदियों उनसे संप्रयातगुणी हैं । उनसे सौधम कल्पवासी देव
संख्यातगुणे हैं और यहाँ पर वेदियों देवोंसे संख्यातगुणी हैं । यहाँ पृथिवीमें
नारदी जीव सौधम कल्पकी देवियोंसे असंप्रयातगुण हैं । भवनवासी देव नारदियोंसे

अवहारकालो संलेख्यगुणो । एवं सृष्ट्यमोसवचिवागि-मोसवचिजोगि-सृष्ट्यनचिजोगि-
मचजोगीर्णं अवहारकाला' संलेख्यगुणा । असृष्ट्यमासमजजोगीर्णं अवहारकालो विसंसाह्रिजो ।
सृष्ट्यमोसमजजोगिजवहारकालो संलेख्यगुणा । एवं मोसमजजोगि-सृष्ट्यमजजोगि-वेठविय
मिस्सक्यजोगीर्णं अवहारकाला संलेख्यगुणा । तस्तेन विकर्तमर्द्धं असंलेख्यगुणा ।
सृष्ट्यमजजोगिमिविकर्तमर्द्धं संलेख्यगुणा । एवं मोसमजजोगि-सृष्ट्यमोसमजजोगि-जसृष्ट्य-
मोसमजजोगीर्णं । तदो मजजोगिविकर्तमर्द्धं विसंसाह्रिया । सृष्ट्यनचिजोगिविकर्तमर्द्धं
संलेख्यगुणा । एवं मोसवचिजोगि-(सृष्ट्यमोसवचिवागि)-वठवियक्यजोगि-जसृष्ट्य-
मोसवचिजोगिविकर्तमर्द्धमर्द्धीजो संलेख्यगुणाजो । वचिवागिविकर्तमर्द्धं विसंसाह्रिया ।
सेढी असंलेख्यगुणा । तदो वेठवियमिस्सक्यजोगिमिच्छाद्विद्वम्भसंलेख्यगुणं । सृष्ट्यमज-
जोगिद्व्यं संलेख्यगुण । एवं मोसमजजोगि-सृष्ट्यमोसमजजोगि असृष्ट्यमोसमजजोगि-
द्व्यापि जहाकमज संलेख्यगुणापि । मजजोगिद्व्यं विसंसाह्रिय । सृष्ट्यवचिजोगिद्व्यं

अवहारकालं अनुमयवचनयोगिपौके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार जमप-
मचनयोपी मृपावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीबोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुण्य
है । अनुमयमनोयोगिपौका अवहारकाल सत्यवचनयोगिपौके अवहारकालसे विशेष अधिक
है । जमयमनोयोगिपौका अवहारकाल अनुमयमनोयोगिपौके अवहारकालसे संख्यातगुण्य
है । इसीप्रकार असत्यमनोयोगी सत्यमनोयोगी और वैकल्पिकमिथ्यापयोगिपौका अवहारकाल
उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है । जन्तीकी मर्याद वैकल्पिकमिथ्यापयोगिपौकी विष्कम्भसूची जन्तीके
अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । सत्यमनोयोगिपौकी विष्कम्भसूची वैकल्पिकमिथ्यापयोगि-
पौकी विष्कम्भसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृपामनोयोगी, जमयमनोयोगी और अनुमय-
मनोयोगिपौकी विष्कम्भसूची भी समस्तता चाहिये । अनुमयमनोयोगिपौकी विष्कम्भसूचीसे मयो-
जोगिपौकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगिपौकी विष्कम्भसूची मनोयोगिपौकी
विष्कम्भसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृपावचनयोगी जमयवचनयोगी वैकल्पिकवचनयोगी
और अनुमयवचनयोगिपौकी विष्कम्भसूचीपों भी उत्तरोत्तर संख्यातगुणी हैं । वचनयोगिपौकी
विष्कम्भसूची अनुमयवचनयोगिपौकी विष्कम्भसूचीसे विशेष अधिक है । जगजोगी वचनयोगि-
पौकी विष्कम्भसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगजोगीसे वैकल्पिकमिथ्यापयोगिपौका द्रव्य
जसंख्यातगुण्य है । सत्यमनोयोगिपौका द्रव्य वैकल्पिकमिथ्यापयोगिपौके द्रव्यसे संख्यातगुणा है ।
इसीप्रकार मृपामनोयोगी, जमयमनोयोगी अनुमयमनोयोगिपौका द्रव्य पदान्तरसे संख्यातगुणा
है । मनोयोगिपौका द्रव्य अनुमय मनोयोगिपौके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगिपौका

खण्डे चद्रगुणव्यापिणो बीजा पलिशोचमस्त असंखजदिमागमेचा तेमेदेसिं परूजणा ओच होदि । ओचपमाणादो ऊणइत्यिवेदगुणपडिबण्णार्ण कषमोचचं शुद्धे ? न, ओचमिव ओचमिदि उवयारेण तिस्रे आपचसिद्धिदो । आपअसजदसम्माइडिअवहारकाल-मात्रलियाए असंखजदिमाएण गुणिदे इत्यिवेदअसजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । कुदो ? कारिमगिसमाणइत्यिवेदेण ढन्हातइययाणमित्थीम सुणिदाणाण पठर सम्मचपरिणामा-मसदादो । तम्हि आवलियाए असंखजदिमाएण गुणिदे सम्मामिच्छइडिअवहारकालो होदि । तम्हि सखजत्वेहि गुणिदे सासणमम्मइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखजदिमाएण गुणिदे सजदासंजदअवहारकालो होदि । एदहि अवहारकालेहि पलिशोचमे मागे हिदु सग-मगरासीओ भवति ।

पमत्तसजदण्डुडि जाव अणियट्टिवादरसापराइयपविट्ट उवसमा
स्वा दव्वपमाणेण केवढिया, सस्सेज्जा ॥ १२६ ॥

स्यान्मे स्त्रीवेदी जीव ओषधप्ररूपणाक समान पन्थोपमके असस्यावर्णे भाग ह ॥ १२५ ॥

इति ये चार गुणस्यानर्था जीव पक्षोपमके असंख्यातये मागप्रमाण है इसलिये इनकी प्रकृपणा भोषप्रकृपणाये समान होती है ।

श्रृंका— गुणस्थानप्रतिपक्ष भोषप्ररूपणसे म्यून गुणस्थानप्रतिपक्ष स्त्रीसेवियोंके प्रमा
नाको भोषपना कैसे बन सकता है !

समाधान—नहीं क्योंकि ओषध के समानको भी ओषध कहा जाता है इसलिये उपचारके लक्ष्येद्विषाई संस्थाको ओषधत्व सिद्ध हो जाता है।

शेष असपतसम्पत्तियोंके अवहारकासको आबखीके असंपत्तातमें भागसे गुणित करने पर खीबेरी असपतसम्पत्तियोंका अवहारकास होता है क्योंकि, उपरोक्ती क्षतिसे समान खीबेरीके जिनका हव्य बल रहा है और जो कामामिन्नाय सहित है, ऐसी क्षियोंके प्रचुरतासे सम्पत्तपरिश्राम संभव नहीं है। अर्थात् खीबेरीके साथ प्रचुर सम्पत्तर्हि जीव नहीं होते हैं। इस खीबेरी असपतसम्पत्तियोंके अवहारकासको आबखीके असंपत्तातमें भागसे गुणित करने पर खीबेरी सम्पत्तिप्रकारियोंका अवहारकास होता है। खीबेरी सम्पत्तिप्रकारियोंके अवहारकासको संपत्तातसे गुणित करने पर खीबेरी सासादनसम्पत्तियोंका अवहारकास होता है। खीबेरी सासादनसम्पत्तियोंके अवहारकासको असंपत्तातमें भागसे गुणित करने पर खीबेरी संपत्तासंपत्तोंका अवहारकास होता है। इन अवहारकासोंसे पर्योपमके माजिन करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण जाता है।

प्रमत्तसेवत गुणस्थानसे ठेकर अनिष्टविनाशरसांपरायप्रविष्ट उपद्रमक और

१ प्रतिपु ननुपुनःपुनः इति पाठः ।

३. प्रसिद्ध अग्निवाक्यात् इति पाठः ।

गुणा । मणवासियदेवा असंखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ । पंकिदियसिरिक्ख
 लोणिपीओ संखेज्जगुणाओ । पाणवत्तदेवा संखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ ।
 ओदसियदेवा संखेज्जगुणा । दपीओ संखेज्जगुणाओ पि ' एदम्हादे सुदावपसुवादा
 कप्पिक्खे अहा देवानां संखेज्जगुणा मागा देवीओ होसि पि । तिरिक्खलोणिपीओ देवीओ
 संखेज्जगुणाओ । ताम्हा देवीसु पक्खिणे इत्थिपेदरासी होदि पि क्खु देवीहि सादरेयमिदि
 तामि पमाव सुचे भुच ।

तासिमवहारकात्तुप्पपि वचइस्साम्हा । देवअवहारकात्तुमि वचीसत्तुपि मागे हिदे
 त्थं तम्हि वेव पक्खिणिय तिरिक्ख-मणुसिरिपेदगामजीणिमिच तपो एक्खस्स पदंगुत्तस्स
 संखेज्जगुणाओ अवगिदे इत्थिपेदअवहारकात्तुस्स मागाहारो होदि । वचीसत्तुपि देव-
 अवहारकात्तुस्स मागाहारा होति पि क्ख पक्खदे ? तेहिहा देवीओ वचीसगुणा इति पि
 अप्ररिपपरपरागमुवदेसाओ पक्खदे । पदग अवहारकात्तेण अगपदे मागे हिदे इत्थिपेद
 रासी होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सज्जदासंज्जदा ति ओघ' ॥ १२५ ॥

संख्यातगुणे हैं । तथा वही पर देविणां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमती
 जीव भयनवासी देवोंसे संख्यातगुणे हैं । पाचम्यन्तर देव पंचेन्द्रिय तिर्यक् योगिमतिगुणे
 संख्यातगुणे हैं । तथा वही पर देविणां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । षोडशी देव पाचम्यन्तर
 देविणोंसे संख्यातगुणे हैं । तथा वही पर देविणां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । इस पुरुषावस्थे
 सूत्रसे यह जाना जाता है कि देवोंके संख्यात बहुमात्र देविणां होती हैं । तथा तिर्यक् योगिमती
 जीव देविणांके संख्यातमे प्राग होते हैं । अतएव इस तिर्यक् योगिमतिगुणोंके प्रमाणक देविणोंके
 प्रमाणमें मिश्र होने पर अत्रिदे जीवराशि होती है । ऐसा समझकर देविणोंके कुछ अधिक इस-
 प्रकार अत्रिदे जीवोंके प्रमाण सूत्रमें कहा ।

अब अत्रिदेविणोंके अवहारकात्तु की उत्पत्तिके बतलाते हैं— देवोंके अवहारकात्तु की
 वचीससे माजित करके ओ छम्प व्यापे उसे उची देव अवहारकात्तुमें मिश्र कर ओ योग हो
 छम्पसे, तिर्यक् जीव मनुष्य अत्रिदे जीवोंका प्रमाण छानेक छिये एक प्रमाणगुणके संख्यातमे
 प्रागके निष्पन्न होने पर अत्रिदे जीवोंका अवहारकात्तु होता है ।

सूत्र— देव अवहारकात्तुका मागाहार वचीस होता है यह फैल जाना जाता है ।

समाधान— देवोंसे देविणां वचीसगुणी हैं इसप्रकार व्यापार्य-परंपरासे व्यापे हुए
 उपदेशसे यह जाना जाता है ।

योगिमतिगुणोंके इस पूर्णक अवहारकात्तुसे अगप्रतरके माजित करने पर अत्रिदे
 जीवराशि होती है ।

सासाइनसम्पगइटि गुणस्थानसे छेकर संयतामंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण

अपेने चद्रगुणद्विगुणो बीजा पलित्वमस्य अर्धसुजदिभागमथा तणदेसि परवणा ओष होति । आपपमाणदा उणइण्णिवदगुणपडिवणाण कभमोषच जुज्जे ! ण, आपमिव आपमिदि उवयासज निम्म आपचसिद्धिदो । आपअसवदसुम्माद्विअवहारकाळ-मापन्याए अर्धसुजदिमाण गुणिद इणियवदअसवदसुम्माद्विअवहारकाळो होदि । कुतो ? काग्मिगिममाणइण्णिवदेण इज्जतहिययाणमियणि मुणिदाणाण पउर सम्मचपरिणामा-ममत्ता । तम्हि आवलिपाए असवदसुजदिमाण गुणिने सुम्माविच्छद्विअवहारकाळा हानि । तम्हि मखजम्बेहि गुणि ससणमसुम्माद्विअवहारकाळो हानि । तम्हि आवलिपाए अर्धसुजदिमाण गुणि मवडासुजदअवहारकाळा हानि । एवेहि अवहारकाळहि पन्निगेवमे माग हि सग-मगरामीआ मवति ।

पमत्तमुजत्पहुडि जाव अणियट्टिनाटरमापराड्यपविट्ट उवममा स्ववा दज्वपमाणेण केवडिया, मवेज्जा ॥ १२६ ॥

स्थानमे स्त्रीवती बीज ओषप्ररूपणाक समान पर्योपमके असंख्यातवें माग है ॥ १२५ ॥

श्रीके ये बार गुणस्थानवती बीज परागमके असंख्यातवें भागप्रमाण है इसलिये इनकी प्ररूपणा ओषप्ररूपणाके समान होती है ।

सूत्रा— गुणस्थानप्रतिपक्ष भाषप्ररूपणामे मूल गुणस्थानप्रतिपक्ष स्त्रीवेदियोंके प्रमा-
णको ओषपणा केसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि ओषक समानको भी ओष कहा जाता है इसलिये उपचारसे स्त्रीवेदियोंकी संख्याको ओषमय सिद्ध हो जाता है ।

ओष असपतसम्पदियोंके अवहारकाळकी भाषकीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवती असपतसम्पदियोंका अवहारकाळ होता है क्योंकि, उपरोक्ती श्रुतिके समान स्त्रीवेदमे जिनका इत्य अत्र रहा है बार आ कामामिसाय सहित है देखी श्रियोंके प्रचुरतामे सम्पदप्रतिपक्षमे संमय नहीं है । अथान् स्त्रीवेदके मध्य प्रचुर सम्पदरहित अथ नहीं होते हैं । इस स्त्रीवती असपतसम्पदियोंके अवहारकाळका भाषकीके असंख्यातवें भागमे गुणित करने पर स्त्रीवती सम्पदप्रतिपक्षियोंका अवहारकाळ होता है । स्त्रीवती सम्पदप्रतिपक्षियोंके अवहारकाळकी संख्यातसे गुणित करने पर स्त्रीवती साक्षात्तसम्प-
दियोंका अवहारकाळ होता है । स्त्रीवती सामाज्यसम्पदियोंके अवहारकाळका भाषकीके असंख्यातवें भागमे गुणित करने पर स्त्रीवती संवत्संपत्तीका अवहारकाळ होता है । इन अवहारकाळोंमे पर्योगमके मात्रित करण पर अरुनी मरनी श्रितियोंका प्रमान आता है ।

प्रमत्तसपत गुणस्थानमे सहर अनिहृषिवादरसापरायप्रविष्ट उपग्रमक और

१ इति चद्रगुणद्विगुणो बीज इति वाद ।

२ - ३ इति वाद ।

३ अवहारकाळको निहृषिवादरसा संख्या - ४ वि १ ८

पमचादीना ओषरासि संखेज्जसंखे कए एयसंखेमितिबेदपमचादो मनति ।
इतिबेदतपसामया इस १ , खबगा वीस २० ।

पुरिसवेदएसु मिच्छाद्वी दव्वपमाणेण केवढिया, देवेहि सादि
रेयं' ॥ १२७ ॥

देबलोए देवीन संखेज्जदिभागमेचा देवा मनति । पण्डितियतिरिक्खओणिबीजं
संखेज्जदिभागमेचा तिरिक्खेसु पुरिसवेदा मनति । तसु देबेसु पक्खिसेसु देवेहि सादितेयं
पुरिसवेदरासिपमाण होदि ।

एएव अवहारकात्तुप्यसि बचइस्सामो । देवज्जवहारकात्तं तपीससुजेहि गुणिय तपो
एककपदरंगुलं भेतुण संखेज्जसंखे कात्तम तत्त्वेमसंखेमवणिय बहुसंखे तत्त्वेव पक्खिसे
पुरिसवेदमिच्छाद्विमवहारकात्तो होदि । एदेव जगपदरे मागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाद्वि
रासी होदि ।

सासणमम्माइद्विणहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपविट्ठ ज्व
समा स्त्वा दव्वपमाणेण केवढिया, ओष' ॥ १२८ ॥

अपक गुणस्यानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२९ ॥

प्रमत्तसंपत्त भावि गुणस्यानसंबन्धी ओषरासिसे संपत्तात्ते बंधित करने पर एक
संख्यामान अविही प्रमत्तसंपत्त भावि गुणस्यानवर्ती जीव होते हैं । अविही तपशामक इस और
अपक वीस हैं ।

पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके कुछ
अधिक हैं ॥ १३० ॥

देवलोकांमें देवियोंके संपत्तात्ते भागमात्र देव हैं । एवेमिद्वय तिर्यंच योनिप्रतिबंधों
संपत्तात्ते भागमात्र तिर्यंचोंमें पुरुषवेदी जीव हैं । इन पुरुषवेदी तिर्यंचोंके प्रमाणको देवोंमें
प्रतिष्ठ कर देने पर देवोंसे कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिका प्रमाण होता है ।

अब वहां उक्त जीवोंके अवहारकात्तकी वृत्तियोंको बतलाते हैं— देवोंके अवहारकात्तकी
तेतीससे गुणित करके जो द्रव्य उनके उसमेंसे एक प्रत्यक्षगुणः प्रत्यक्ष करके और उनके संपत्तात्
बंध करके उनमेंसे एक बंधको बराबर बहुभाग उसी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने पर पुरुषवेदी
मिथ्यादृष्टि अवहारकात्त होता है । इस अवहारकात्तके जगप्रत्यक्षके माजित करने पर पुरुषवेदी
मिथ्यादृष्टि राशि होती है ।

सासादनसम्पददृष्टि गुणस्यानसे लेकर अनिद्विषि वादरसांपरायप्रविष्ट तपशमक

१. वेदमुद्रयेन X X पुनरावृत्ति विधानात्तत्त्वैनां देवता प्रत्यक्षदेवतावस्थिता । इति १८
देवता वादितेना पुरिहा । ५५ जी २५२

इतिवेद-गर्भस्ययवरासिपरिहीनो ओषरासी पुरिसवेदस्तु भवति । कथं तस्य ओषरां मुञ्चेद ? न एस दासो, ओषमिष आपमिदि तस्य ओषरासिहीदा ।

एतय अवहारकालो बुधद । आपअसंजदसम्मइहिअवहारकाल आपलियाए असं-
खज्जदिमागेण मागे हिद लई तम्हि चन पक्खिणे पुरिसवेदअसंजदसम्मइहिअवहारकालो
होदि । तम्हि आपलियाए असंखज्जदिमागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइहिअवहारकालो
हादि । तम्हि संखज्जदइ गुणिद सासणसम्मइहिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए
असंखज्जदिमागेण गुणिद संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओषपमचादिसु अप्पणो संसेज
मागमूइइति-गर्भस्ययवरासिपमाणमवणिद पुरिसवेदपमचादआ भवति ।

णवुसयवेदेसु मिच्छाइहिणहुडि जाव सजदासजदा ति ओष
॥ १२९ ॥

और धरक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपक्षा कितन हैं ? ओषप्ररूपणाके समान ह ॥ १२८ ॥
ओषरादिमेंसे स्त्रीपक्षी और नपुंसकपक्षी राशिके कम कर देने पर जो सम्प रहे
उतना पुदपवेदियोंका प्रमाण है ।

शुक्रा—इस सासाइनसम्परादि आदि पुदपवेदीराशिके ओषपमा कैसे बन
सकता है ?

समाधान—यह कोई शोच नहीं है क्योंकि आपके समानका भी भ्रम कहते हैं
इसलिये इस सासाइनसम्परादि आदि पुदपवेदीराशिके ओषपमा सिद्ध हो जाता है ।

अब पुदपवेदियोंके अयहारकालका कहत हैं—ओष असंयतसम्परादियोंके अयहार
कालको आपसीके असंयतातमें भागसे भाजित करने पर जो दस्य आये उसे उसी ओष
असंयतसम्परादियोंके अयहारकालमें मिला देने पर पुदपवेदी असंयतसम्परादियोंका
अयहारकाल होता है । इसे आपसीके असंयतातमें भागसे गुणित करने पर पुदपवेदी सम्प-
मिष्यारादियोंका अयहारकाल होता है । इसे सख्यातमें गुणित करने पर पुदपवेदी सामान्य-
सम्परादियोंका अयहारकाल होता है । इसे आपसीके असंयतातमें भागसे गुणित करने पर
पुदपवेदी सपठासंयतोंका अयहारकाल होता है । ओष प्रमत्तसंयत आदि राशियोंमेंसे कहींके
संयतातमें भागमूल स्त्रीपक्षी और नपुंसकपक्षी राशिके प्रमाणका घटा देने पर पुदपवेदी
प्रमत्तसंयत आदि जीव होत हैं ।

नपुंसकवेदियोंमें मिष्यारादि गुणस्थानम सकर सपठासंयत गुणस्थानतक जीव
आपप्ररूपणाके समान ह ॥ १२९ ॥

१ नपुंसकवेदी मिष्यारादिगुणस्थानाः । x x नपुंसकवेदीराशः अयहारकालप्रमाणः । अयहारकालप्रमाणः । न पि १ ८ ३११ नपुंसकवेदीराशः अयहारकालप्रमाणः । न पि १ ८ ३११ नपुंसकवेदीराशः अयहारकालप्रमाणः ।

पमचादीना ओषरासि संयेज्जखंडे कए एयखंडमित्थिवेदपमचाओ मवति ।
इत्थिवेदउपसामगा दस १०, खगगा बीस २० ।

पुरिसवेदएसु मिच्छाद्विटी दज्वपमाणेण केवढिया, देवेहि सादि
रेयं ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीन सखेज्जदिभागमेचा देवा मवति । पंक्षिदिपसिरिक्खजोविणीन
सखेज्जदिभागमेचा तिरिक्खसु पुरिसवेदा मवति । तेसु देवेसु पक्खिसेसु देवेहि सादितेयं
पुरिसवदरासिपमायं होदि ।

एतव अनहारकस्तप्पसि वचइस्सामो । देवअनहारकत्तं तेचीसरुवेहि गुप्पिय तपो
एकपदरंगुत्तं पेत्तुण संखेज्जखंडे काऊय तत्तेमखंडमवपिय बहुखंडे तत्तेन पक्खिसे
पुरिसवेदमिच्छाद्विअनहारकस्तो होदि । एवेण अगपदरे मागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाद्वि
रासी होदि ।

सासणसम्माद्विप्पहुडि जाव अणियद्वियादरसांपराइयपविट्ठ उव
समा खवा दज्वपमाणेण केवढिया, ओवं ॥ १२८ ॥

धपक गुणस्यामतक जीव द्रव्यप्रमाणाकी अपेक्षा कितने हैं ? सस्युत्तं ॥ १२९ ॥

प्रमत्तसंयत भादि गुणस्यानसंयत जी ओषरासिखे संख्यातसे बंधित करने पर एक
अंशप्रमाण लीवेरी प्रमत्तसंयत भादि गुणस्यानवर्ती जीव होते हैं । लीवेरी उपशामक वरा और
क्षपक बीस हैं ।

पुरुषवेदियोंमें मिच्छाद्विटी जीव द्रव्यप्रमाणाकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोवे इड
अधिक हैं ॥ १३० ॥

देवलोअमें देवियाके संख्यातसे मागमात्र देव हैं । पंक्षेभिय तिर्थेव ओमिमतिथोके
संख्यातसे मागमात्र तिर्थेओमें पुरुषवेदी जीव हैं । इन पुरुषवेदी तिर्थेओके प्रमाणको देवोंमें
प्रक्षित कर देने पर देवोंन कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिजा प्रमाण होता है ।

अब वहाँ उक्त जीवोंके अनहारकाकार्य वत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अनहारकाकार्य
तेतीससे गुप्पित करके आ कप्प भावे इसमेंसे एक प्रतरागुलका प्रदव्य करके और बलके संख्यात
अंश करके इनमेंसे एक अंशको घटाकर बहुभाग इसी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने पर पुरुषवेदी
मिच्छाद्विटी अनहारकाह होता है । इस अनहारकाहसे अगप्रतरके मात्रित करने पर पुरुषवेदी
मिच्छाद्विटी राशि होती है ।

सामाइनसम्पगद्वि गुणस्यानसे लेकर अनिदृशि बादरसांपरायप्रविट्ठ उपशमक

१ वेदपुरा देव ४४ पुरुषप्रव मि रात्रयोजस्वेना । देवता अत्रात्रास्वेवमागमिता । ४ मि १८
देवी वादिना पुरिता । ४८ जी २५५

इतिवेद-अर्षुसययन्नामिपतिहिनो आपरासी पुसिपवेदस्त मवदि । कर्षं तस्त ओषत्तं शुभदे ? य एस दासो, ओषमिष आपमिदि तस्त ओषत्तसिद्धिदा ।

यस्य अवहारकासो शुभदे । ओषत्तसंयदसम्माहृष्टिअवहारकाल आवलियाए अत्त-
स्तेअदिमागेण माग रिद त्थं तम्हि चव पक्खित्त पुसिपदअसअदसम्माहृष्टिअवहारकालो
हादि । तम्हि आवलियाए अत्तस्सजदिमागेण गुणिदे सम्मामिच्छाहृष्टिअवहारकालो
हेदि । तम्हि संस्सजदरुद्धि गुणिदे सासणयम्महृष्टिअवहारकालो हेदि । तम्हि आवलियाए
अत्तस्सजदिमागेण गुणिदे संजदासिअदअवहारकालो हादि । आपपमचादिसु अप्पणा संस्तेज
मागभूदइति-गणुमयबदरासिपमाणमवणिद पुसिपदपमचादआ मवति ।

णवुसयवेदेसु मिच्छाहृष्टिणहुडि जाव सजदासजदा त्ति ओष
॥ १२९ ॥

और छपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन है ? ओषप्ररूपणाके समान है ॥ १२८ ॥

ओषपयिमेंसे स्त्रीवैरी और मनुष्यवैरी राशिको कम कर देने पर जो सम्प रहे
उतना पुरुषवैरियोंका प्रमाण है ।

संज्ञा—इस साक्षात्तसम्पत्ति भादि पुरुषवैरीराशिके ओषपमा कैसे बन
सकता है ?

समाधान—यह छोड़ दोप नहीं है क्योंकि ओषके समानकी भी ओष कहते हैं,
इसलिये उस साक्षात्तसम्पत्ति भादि पुरुषवैरीराशिके ओषपमा सिद्ध हो जाता है ।

यह पुरुषवैरियोंके अवहारकासको कहते हैं—ओष असत्तसम्पत्तिमेंसे अवहार
कालको आबसीक असत्प्रातर्बे भागसे शक्ति करने पर जो सम्प भावे उसे वही ओष
असत्तसम्पत्तिमेंसे अवहारकासमें मिला देने पर पुरुषवैरी असत्तसम्पत्तिमेंसे
अवहारकास होता है । इसे आपसीके असत्प्रातर्बे भागसे गुणित करने पर पुरुषवैरी सम्प
मिच्छाहृष्टियोंका अवहारकास होता है । इसे सत्प्रातर्बे गुणित करने पर पुरुषवैरी साक्षात्त-
सम्पत्तिमेंसे अवहारकास होता है । इसे आपसीके असत्प्रातर्बे भागसे गुणित करने पर
पुरुषवैरी सत्प्रातर्बे भागसे अवहारकास होता है । ओष प्रमत्तसत्त भादि राशिमेंसे तन्हाके
सत्प्रातर्बे भागसे स्त्रीवैरी और मनुष्यवैरी राशिके प्रमाणको घटा देने पर पुरुषवैरी
प्रमत्तसत्त भादि जीव होने हैं ।

नपुसकवैरियोंमें मिच्छाहृष्टि गुणस्थानम सत्त सत्प्रातर्बे गुणस्थानतक जीव
ओषप्ररूपणाके समान है ॥ १२९ ॥

१ मनुष्यवैरी मिच्छाहृष्टिगणना । × × मनुष्यवैरी सत्प्रातर्बे सत्प्रातर्बे सत्प्रातर्बे सत्प्रातर्बे
सत्प्रातर्बे सत्प्रातर्बे । न दि. १ ८ तदि मिच्छाहृष्टि सत्प्रातर्बे सत्प्रातर्बे सत्प्रातर्बे सत्प्रातर्बे

इतिवेदपमत्तादिरासिस्त संखेज्जदिमागमेचो णवुसयवेदपमत्तादिरासी होदि ।
 कुदो ? इदुपागगिसमाप्तेण णवुसयवेदोदयेण सणिदाणेण' पउरं सम्मत्त-सवमादीणमुवत्तमा-
 भावादो । ओषपमाण य पत्तेति ति आणावण्णु सुचे संखेज्जणिदेसो कसो । णवुसयवेद
 उवत्तमागा पंच ५, सुवगा दस १० । इतिवेद णवुसयवेदे पमत्ता अपमत्ता च एतिया
 चेव होति ति सपदि उपपसो मत्थि ।

अपगदवेदएसु तिण्ह उवत्तमागा' केवहिप्पा, पवेसेण एको वा
 दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण चउवण्णं' ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरतो मण्यमाणअपगदवेदजीविसंययपदुप्पायणसुत्तेणेव पञ्चत्तं किमणेण
 अवगदवेदपवेसपरूषणसुत्तेणेति ? ण एस दोसो, उवत्तमसेद्विपवेसणतुल्लो अवगयवेदपञ्चाय
 पवेसो ति आप्तावणफलत्तादो । तिण्हमिदि नेद छट्ठीवहुवयणं किंतु पवत्तमाहुवयणमिदि
 वेत्तमं, छट्ठिविहत्तिउप्पचिणिमिचामावादो । कपमुवत्तसकसायस्स उवत्तमागवत्तपसा ? ण,

जीवेदी प्रमत्तसंयत आदि रात्रिके संख्यातर्हे मागमात्र णवुसकवेदी प्रमत्तसंयत आदि
 जीवरशि होती है क्योंकि इष्टपाककी अधिकते समान णवुसकवेदे उवत्ते मत्तिक्कमाभिधायसे
 युक्त होनेके कारण प्रचुरतासे सम्पत्त और उपमादि परिणामोंका उपसंग नहीं पाया जाता
 है । प्रमत्तसंयत आदि णवुसकवेदी जीवरशि ओषप्रमाणको नहीं प्राप्त होती है इसका ज्ञान
 करानेके लिये सुत्रमें संख्यात पक्ष निर्देश किया है । णवुसकवेदी उपशामक पांच और सपक
 दश होते हैं । ऊपरकी और णवुसकवेदी प्रमत्तसंयत और अपमत्तसंयत जीव होने ही होते हैं,
 इतमकार इस समय उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव कितने हैं ? प्रवेशसे एक,
 दो या तीन, और उत्कृष्टरूपसे चौबन हैं ॥ १३१ ॥

शुक्ल—यहां मागे कहा जानेवाला अपगतवेदी जीवोंके सङ्गपका प्ररूपक सूत्र ही
 पर्याप्त है फिर अपगतवेदी जीवोंके प्रवेशके प्ररूपण करनेवाले इस सूत्रका क्या प्रयोजन है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, उपशामकेणोंमें प्रवेश करनेके समान
 ही अपगतवेद पर्यायमें प्रवेश होता है इस बातका ज्ञान कराना इस सूत्रका फल है ।

सुत्रमें क्या हुआ ' तिण्ह पं पटी विमत्तिक्क बहुवचन नहीं है किंतु प्रथमा
 विमत्तिक्का बहुवचन है यहां देसा अर्थ लेना चाहिये क्योंकि यहां पर पटी विमत्तिक्की
 उत्पत्तिक्का कोई निमित्त नहीं पाया जाता है ।

१ प्रतिशु 'विमत्तवेद' इति पाठः ।

२ प्रतिशु 'वत्तमागेण' इति पाठः ।

३ अपगतवेद मत्तिक्कविहत्तिउवत्तमागेण उवत्तमागेण/मत्तिक्क । इति १४

द्वन्द्वद्वयवर्ग पञ्चस्य त्वसंतकसायस्स वि त्वसामगववर्णं पठि विरोहामानादो । एतस्य
पवेसविषी त्वसतमसेद्विपवेसजेण तुष्टा । एदेण स्वगत्रगद्वेदपवेसो वि स्वगसेद्वि
पवेसेष तुष्टो वि ज्ञानाविद् । हृदो ? स्वगत्रगद्वेदपवेस पठि पुत्र सुचारमामावादो ।

अदं पदुश्च ससेज्जा ॥ १३२ ॥

एतस्य संसेज्जा वि ष मणिय ओषमिदि वचन् ? ष, अवसेमियपञ्चपचादो ।
सेसं सुगमं ।

तिणि स्ववा अजोगिकेवली ओष ॥ १३३ ॥

ओषादो एदेसि पमल पठि वितेसामावा ओषर्ष जुमदे ।

श्रुति—उपशान्तकृपाय जीवके उपशामक सखा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्रत्यार्थिक नयनी अपेक्षा उपशान्तकृपाय जीवके भी
उपशामक इस संज्ञाके प्रति कोई विशेष नहीं जाता है ।

यहाँ अपगतवेदस्थानमें प्रवेशविधि उपशामकेजीवसम्बन्धी प्रवेशविधिके समान है । इसी
कारणसे सपर अपगतवेदियोंका प्रवेश भी सपरकेजीवसम्बन्धी प्रवेशके समान है इसका ज्ञान
करा दिया क्योंकि सपर अपगतवेदियोंके प्रवेशके प्रति पृथक्कृपासे सूत्रका आरम्भ नहीं
पाया जाता है ।

विशेषार्थ—वित्तप्रचार उपशामकेजीवके प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्यसे अल्प एक
और उत्कृष्ट जीवजीव प्रवेश करते हैं और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे
छेकर सोलह आदि जीवतक प्रवेश करते हैं । तथा सपरकेजीवमें सामान्यसे अल्प एक और
उत्कृष्ट एकसौ आठ जीव प्रवेश करते हैं और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे
छेकर बत्तीस आदि जीव प्रवेश करते हैं । यही नियम यहाँ अपगतवेदियोंके किये भी प्रवृत्त
अपेक्षा समझना चाहिये ।

कास्तकी अपेक्षा अपगतवेदी उपशामक संख्यात ह ॥ १३२ ॥

श्रुति—इस नृपमें संख्यात हैं इसप्रकार न कहकर ओषमकृपाके समान हैं
देसा करना चाहिये ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहाँ पर्यायार्थिक नयना अपसम्यग सिद्धा है । शेष
कथन सुगम है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती सपर और अजोगिकेवली जीव ओष
प्रकृपाका समान ह ॥ १३३ ॥

ओषसे इन तीन गुणस्थानवर्ती सपर और अजोगिकेवलीयोंके प्रमाणके प्रति कोई
विरोधता नहीं है इसलिये ओषमना बन जाता है ।

मजोगिकेवली ओघ ॥ १३४ ॥

गदत्पमेद सुचं ।

मागामार्ग वचस्सामा । सण्जीवरामिमणत्तं कए बहुखंडा णवुसयवेदमिच्छा-
इत्थिणो भवति । सेसमणत्तं कए बहुखंडा अवगदवेदा हवति । सेस सखेज्जखंडे कए
बहुखंडा इत्थिवेदमिच्छाइत्थिणो होति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा पुत्तिसवदमिच्छा-
इत्थिणो होति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा सखेसिमसंजदसम्मइत्थिणो होति । सेसमोपं ।

अप्याबहुग विविहं सत्थाणादिमेयण । सत्थाणे पयदं । इत्थिवेद-पुत्तिसवेदाण
सत्थाण देवमिच्छाइत्थिण मंगो । सासणादि जाव संजदासजदाणं मत्थाणमोपं । नवुसयवद
मिच्छाइत्थिसत्थाण णत्थि । सासणादीण सत्थाणमोपं ।

परत्थाणे पयदं । सम्बत्थोवा इत्थिवेदुत्तसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्प-
मत्तसवदा सखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा सखेज्जगुणा । असंजदसम्मइत्थिअवहारकालो
असंखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइत्थिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मइत्थिमवहारकालो

अपगतवेदिमोमं सभोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३४ ॥

इस सूत्रका अर्थ भी वही है सीसा ऊपर कड़ भाये हैं ।

अब मागामार्गको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके मनस्त कह करने पर बहुभाग
गुप्तकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके मनस्त कह करने पर बहुभाग अपगतवेदी
जीव हैं । शेष एक भागके सत्थाण कह करने पर बहुभाग स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।
शेष एक भागके असंख्यात कह करने पर बहुभाग पुत्रपत्नी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक
भागके असंख्यात कह करने पर बहुभाग सर्व असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष कथन
मोघप्ररूपणाके समान है ।

स्वस्थान आदिकके प्रेक्षसे अस्पष्टबुद्धि तीन प्रकारका है । उनमेंसे सामानमें अस्पष्टबुद्धि
प्रकृत है । स्त्रीवेदी और पुत्रपत्नी जीवोंका स्वस्थान अस्पष्टबुद्धि वेव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अस्पष्टबुद्धिके समान है । सासाधनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर समतासंयततक स्वस्थान
अस्पष्टबुद्धि ओघ स्वस्थान अस्पष्टबुद्धिके समान है । गुप्तकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान
अस्पष्टबुद्धि नहीं पाया जाता है सासाधनसम्यग्दृष्टि आदि गुप्तकवेदियोंका स्वस्थान अस्पष्टबुद्धि
ओघ स्वस्थानके समान है ।

अब परस्थानमें अस्पष्टबुद्धि प्रकृत है— स्त्रीवेदी उपशामक सबसे स्तोक हैं । स्त्रीवेदी
सपक जीव स्त्रीवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अग्रतसंयत जीव स्त्रीवेदी
अग्रतसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी मध्यमसंयतोंसे
संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतोंसे
संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासाधनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी

संखेन्द्रगुणो । सञ्जदासञ्जदप्रवहारकाला अर्धसंखेन्द्रगुणो । तस्मैव दशमसंखेन्द्रगुणं । एवं
पक्षिसामग्येयस्य आब अर्धसंजदसम्माद्विद्वस्यं चि । तदो पक्षिदोवममसंखेन्द्रगुणं । तदो
इत्यिवेदमिच्छाद्विद्वप्रवहारकाला अर्धसंखेन्द्रगुणो । विस्संमर्द्ध अर्धसंखेन्द्रगुणो । सेनी
अर्धसंखेन्द्रगुणो । दशमसंखेन्द्रगुणं । पदममसंखेन्द्रगुण । तागा अर्धसंखेन्द्रगुणो । एवं
पुरिसदस्स वि वत्तस्यं । एवं च ननुसयवेदस्स । पवरि पन्निरोममादा उवरि मिच्छाद्वि
अणतगुणा वि वत्तस्यं ।

मन्मपराधान पपदं । सम्भरथेवा मन्ममयबदुपमामगा । सुवगा संखेन्द्रगुणो ।
इत्यिवेदुपमामगा तत्तिया च । तेसिं सुवगा संखेन्द्रगुणो । पुरिसबदुपमामगा संखेन्द्रगुणो ।
तेसिं सुवगा संखेन्द्रगुणो । ननुसयवेदे अप्पमचसंजदा संखेन्द्रगुणो । तमिह चेव पमच
संजदा संखेन्द्रगुणो । इत्यिवेदे अप्पमचसंजदा संखेन्द्रगुणो । तमिह चेव पमचसंजदा
संखेन्द्रगुणो । सवोगिकेवती संखेन्द्रगुणो । पुरिसबदुपमामचसंजदा संखेन्द्रगुणो । तमिह

सम्पत्तिमिच्छाद्विषयोके अवहारककाले संख्यातगुणो है । क्खीवेरी संपत्तासंपत्तौका अवहारककाल
क्खीवेरी सासावन्सम्पत्तिद्वि अवहारककाले संख्यातगुणो है । उन्नीं संपत्तासंपत्तौका द्रव्य
मपुं अवहारककाले संख्यातगुणो है । इत्तप्रकार मतिबोमरूपसे क्खीवेरी असंपत्तिसम्पत्तिद्विषयोके
द्रव्य भवेत्तक से ज्ञाना चाहिये । क्खीवेरी असंपत्तिसम्पत्तिद्विषयोके द्रव्यसे पस्योपम असंख्यातगुणो
है । पस्योपमसे क्खीवेरी मिच्छाद्विषयोका अवहारककाल असंख्यातगुणो है । क्खीवेरी मिच्छाद्वि
अवहारककाले स्वविशिष्टोकी विस्संमर्द्धी संख्यातगुणी है । क्खीवेरीविषयोकी विस्संमर्द्धीसे
अगमेयी संख्यातगुणी है । अगमेयीसे क्खीवेरीविषयोका द्रव्य अवधारणतगुणो है । द्रव्यसे
अगमतर संख्यातगुणो है । अगमतरसे कोक असंख्यातगुणो है । इत्तीप्रकार पुरिसवेदस्य
मी परस्वान् अवधारणत कहना चाहिये । तथा इत्तीप्रकार ननुसकवेदस्य मी । परंतु इतनी
विशेषता है कि ननुसकवेदविषयोका कहने समय पस्योपमके ऊपर मिच्छाद्वि अवधारणतगुणे है
यह कहना चाहिये ।

अथ सर्व परस्वान् अवधारणत मन्म है— ननुसकवेरी उपशामक जीव सबसे स्तोत्र
है । ननुसकवेरी सपक जीव संख्यातगुणे है । क्खीवेरी उपशामक जीव ननुसकवेरी सपकोका
जितना प्रमाण है उतने ही है । क्खीवेरी सपक जीव क्खीवेरी उपशामकसे संख्यातगुणे है ।
पुरिसवेरी उपशामक जीव क्खीवेरी सपकोसे संख्यातगुणे है । पुरिसवेरी सपक जीव पुरिसवेरी
अपशामकसे संख्यातगुणे है । ननुसकवेरीमं अयमत्तसपत्त जीव पुरिसवेरी सपकोसे संख्यात-
गुणे है । ननुसकवेरीमं ही अयमत्तसपत्त जीव ननुसकवेरी अयमत्तसंपत्तौसे संख्यातगुणे है ।
क्खीवेरी अयमत्तसंपत्त जीव ननुसकवेरी अयमत्तसंपत्तौसे संख्यातगुणे है । क्खीवेरी ही
अयमत्तसपत्त जीव क्खीवेरी अयमत्तसंपत्तौसे संख्यातगुणे है । सयोगिकेवती जीव क्खीवेरी
अयमत्तसंपत्तौसे संख्यातगुणे है । पुरिसवेरी अयमत्तसंपत्त जीव सयोगिकेवतीसे संख्यात

अथ पमचसंजदा संखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्मिच्छिअवहारफालो असंखेज्जगुणो ।
सम्मामिच्छाद्विअवहारफालो असंखेज्जगुणो । सासनसम्मिच्छिअवहारफालो संखेज्जगुणो ।
संजदसंजदअवहारफालो असंखेज्जगुणो । इत्थिवेदअसंजदसम्मिच्छिअवहारफालो असंखेज्ज-
गुणो । सम्मामिच्छाद्विअवहारफालो असंखेज्जगुणो । सासनसम्मिच्छिअवहारफालो संखेज्ज-
गुणा । संजदासंजदअवहारफालो असंखेज्जगुणो । नपुंसपवेदअसंजदसम्मिच्छिअवहारफालो
असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाद्विअवहारफालो असंखेज्जगुणो । सासनसम्मिच्छिअवहारफालो
संखेज्जगुणा । संजदासंजदअवहारफालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दध्ममसंखेज्जगुण । एवं
पठिष्ठामेव पदध्वं आव पलिदोवमं ति । तदो इत्थिवेदमिच्छाद्विअवहारफालो असंखेज्ज-
गुणो । पुरिसवेदमिच्छाद्विअवहारफालो संखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंसमध्वं असंखेज्जगुणा ।
इत्थिवदमिच्छाद्विविक्खंसमध्वं संखेज्जगुणा । सेही असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदमिच्छाद्वि

गुणे ई । पुरुषवेदमं ई । प्रमत्तसयत्त जीव पुरुषवेदा प्रमत्तसंयत्तोसे संख्यातगुणे ई । पुरुषवेदी
असंयत्तसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाळ पुरुषवेदी प्रमत्तसंयत्तोसे असंख्यातगुणा ई । पुरुषवेदी
सम्यग्मिध्यादृष्टिओंका अवहारकाळ पुरुषवेदी असंयत्तसम्यग्दृष्टिओंके अवहारकाळसे असंख्यात
गुणा ई । पुरुषवेदी सासाधनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाळ पुरुषवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टिओंका अवहार
काळसे संख्यातगुणा ई । पुरुषवेदी संयत्तासंयत्तोका अवहारकाळ पुरुषवेदी सासाधनसम्यग्दृष्टि
ओंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा ई । स्त्रीवेदी असंयत्तसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाळ पुरुषवेदी
संयत्तासंयत्तोके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा ई । स्त्रीवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टिओंका अवहारकाळ
स्त्रीवेदी असंयत्तसम्यग्दृष्टि अवहारकाळसे असंख्यातगुणा ई । स्त्रीवेदी सासाधनसम्यग्दृष्टिओंका
अवहारकाळ स्त्रीवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टि अवहारकाळसे संख्यातगुणा ई । स्त्रीवेदी संयत्तासंय
त्तोका अवहारकाळ स्त्रीवेदी सासाधनसम्यग्दृष्टि अवहारकाळसे असंख्यातगुणा ई ।
नपुंसकवेदी असंयत्तसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाळ स्त्रीवेदी संयत्तासंयत्तोके अवहारकाळसे
असंख्यातगुणा ई । नपुंसकवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टिओंका अवहारकाळ नपुंसकवेदी असंयत्त-
सम्यग्दृष्टि अवहारकाळसे असंख्यातगुणा ई । नपुंसकवेदी सासाधनसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाळ
नपुंसकवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टि अवहारकाळसे संख्यातगुणा ई । नपुंसकवेदी संयत्तासंयत्तोका
अवहारकाळ नपुंसकवेदी सासाधनसम्यग्दृष्टि अवहारकाळसे असंख्यातगुणा ई । जग्ही
नपुंसकवेदी संयत्तासंयत्तोका द्रव्य अपन अवहारकाळसे असंख्यातगुणा ई । इसीप्रकार मति
क्षोभकसे पक्षोपमत्तक से जाना चाहिये । पक्षोपमसे स्त्रीवेदी मिध्यादृष्टिओंका अवहारकाळ
असंख्यातगुणा ई । पुरुषवेदी मिध्यादृष्टिओंका अवहारकाळ स्त्रीवेदी मिध्यादृष्टिओंके अवहार
काळसे संख्यातगुणा ई । जग्ही पुरुषवेदी मिध्यादृष्टिओंकी विष्कम्भसूची जग्हीके अवहारकाळसे
असंख्यातगुणी ई । स्त्रीवेदी मिध्यादृष्टिओंकी विष्कम्भसूची पुरुषवेदी मिध्यादृष्टिओंकी विष्कम्भ
सूचीसे संख्यातगुणी ई । जगमेवी स्त्रीवेदी मिध्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे असंख्यातगुणी ई ।

दम्भमसंख्येज्जगुण । इतिवचमिच्छाद्विदुष्यं संखेज्जगुण । पदमसंख्येज्जगुण । सागा
असंख्येज्जगुणो । अबगत्तेदा अणतगुणा । पणुसयेवमिच्छाद्विदुष्यं अणतगुणा । वेदगुणपदि
बुद्धगुणगारा य शब्ददि पि के वि अद्विरिया मणंति । तस्मिन्मिच्छापण्य सन्नपरत्त्याणं
बुद्धदे । सन्नपरत्त्याणा अप्पमचसंजदा तिवेदगदा । (पमचसंजदा संखेज्जगुणा । संजदा)
तिवेदा विसेसाहिया । तिवेदअर्ममममाद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणा । एवं वेदम्यं
आव पत्तिमोचमं ति । उवरि इत्थिवेदमिच्छाद्विअवहारकाला असंखेज्जगुणा । तदुपगि पुनं
य वत्तन् ।

एव वेदमग्गा सम्या ।

कसायाणुवादेण कोधकसाह-माणकसाह मायकसाह-लोभकसाहसु
मिच्छाद्विदुष्यहृदि जाय संजदासंजदा ति ओघ ॥ १३५ ॥

पदस्य सुत्तस्य अरयो बुद्धदे । र्त्तं अहा- अर्धतत्तपण पत्तिदावमस्त असंख्येज्जदि

पुरववेदी मिच्छाद्विष्योका द्रव्य अयमेवसे असंख्यातगुणा है । कीवेदी मिच्छाद्विष्योका द्रव्य
पुरुववेद मिच्छाद्वि द्रव्यसे संख्यातगुणा है । जगत्तर कीवेद मिच्छाद्वि द्रव्यसे असंख्यात
गुणा है । ओक जगत्तरसे असंख्यातगुणा है । अपगतवेदी जीव ओकसे भग्नगुणे है
गुरुसंख्येदी मिच्छाद्वि जीव अपगतवद्विष्योसे भग्नगुण है । वेद गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोके
अवहारकालका गुणकार बात बर्ही है । ऐसा कितने ही व्याख्यातोंका कथन है । आगे उन्हीके
अभिप्रायानुसार सर्व परस्थान अक्षयवृत्तका कथन करते हैं । तीनों वेदोंसे युक्त प्रमत्तसंपत्त
जीव अक्षय स्तोके हैं । तीनों वेदोंसे युक्त प्रमत्तसंपत्त जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । तीन
वेदवाले संपत्त जीव विशेष अधिक हैं । बिबेदी असंख्येज्जमिच्छाद्विष्योका अवहारकाल असंख्या
तगुण है । इसीप्रकार पक्षोपमत्तक के आना चाहिये । इससे ऊपर कीवेदी मिच्छाद्विष्योका
अवहारकाल असंख्यातगुण है । इससे ऊपर पहलेके समान कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार वेदमार्गजा समाप्त हुई ।

कपायमार्गजाके अनुवादसे क्रोधकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और सोम
कपायी जीवोंमें मिच्छाद्वि गुणस्थानसं केकर संपत्तसंपत्त गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें जीव सामान्य प्रकृषाके समान हैं ॥ १३५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है— भग्नत्वकी अपेक्षा मिच्छाद्वि जीव
और पक्षोपमके असंख्यातके मागत्वकी अपेक्षा गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव ओघ मिच्छाद्वि और

१ अहिंसा इत्यनेन इति शब्द ।

२ अनात्मत्वस्य जीवत्ववाचक विमलत्ववाचक अतत्त्ववाचक इत्यनेन उच्यते । ओघकपाल
इति शब्द । यं ति १ ५

भागचनेन च मिच्छाद्दृष्टी गुणपट्टिविष्णा च ओषमिच्छाद्दृष्टि-गुणपट्टिविष्णेहि समाजा चि
 क्व सुचे एदेसि परुवणा ओषमिदि बुधा । पञ्चवट्टियणए पुण अवलविज्जमाणे अतिथ
 निसेसा । सं कम् ? चदुकसायमिच्छाद्दृष्टीसु तिरिक्खरासी पहाभो, सेसगदिरासिस्स
 उदम्भतमागचादो । तत्थ वि चदुकसायमिच्छाद्दृष्टिरासी ण' अण्णोण्णेन समाणो । इदो ?
 उदम्भं सारिच्छामावा । व अहा—

तिरिक्ख मणुसेसु सख्वत्थोवा माणद्धा । कोषद्धा विसेसाहिया । केसियमेसेण ?
 भावत्थियाए असंखेज्जदिमागमेसेण । मायद्धा विसेसाहिया । केसियमेसो विसेसो ? पुण्णं
 परुविदो । लोभद्धा विसेसाहिया । केसियमेसो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिमागमेसो ।
 न च अद्धासु असरिसासु तत्थ द्विवरासीण समाप्पणिमाम-पवेसाण संतामं पडि रंगाप-
 बाभो ष्व अवट्ठिदाव ससिसं वुज्जे । तदो चठम्भमद्वाण समसं कात्थम चदुकसायमिच्छा-
 द्दृष्टिरासिहि भागे हिदे उद्ध चठप्पठिरासिं करिय माणादीणमद्वाहि पडिवादीए गुणिदे
 सम-सगरासीभो मवंसि । एदमट्ठपदं कात्थम चदुकसायमिच्छाद्दृष्टिस्स रासिस्स अवहार

गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके समान हैं वेसा समझकर सूत्रमें केषादि कषाययुक्त शेष मिथ्यादृष्टि
 और शेष गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंकी प्रकृषणा शेषप्रकृषणाके समान है यह कहा । परंतु पर्या
 यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर बिरोधता है ही ।

झका—यह बिरोधता कैसे है ?

समाधान—चारों कषायषाके मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तिर्यंचराशि प्रधान है क्योंकि
 रोप तीन गतिसंबन्धी जीवराशि तिर्यंचराशिके जन्यमें भाग है । इसमें भी चारों
 कषायषाकी मिथ्यादृष्टिराशि परस्पर समान नहीं है क्योंकि चारों कषायोंका काळ समान
 नहीं है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—तिर्यंच और मनुष्योंमें मानका काळ सबसे स्तोक
 है । श्लोथका काळ मानकाछसे बिरोध अधिक है । कितनेमात्र बिरोधसे अधिक है ? आषाढीके
 मसंख्यातमें मायमात्र बिरोधसे अधिक है । मायाका काळ श्लोथके काळसे बिरोध अधिक है ।
 कितनामात्र बिरोध है ? पहले प्रकृषय कर दिया है अर्थात् व्याघ्रीका असंख्यातकी माय
 बिरोध है । शोमका काळ मायाके कालसे बिरोध अधिक है । कितनामात्र बिरोध है ? व्याघ
 रीका असंख्यातकी मायप्रमाण बिरोध अधिक है । इसप्रकार काळोंके बिसदृश रहने पर
 शिवका तिर्यंच और प्रवेष्ट समान है और सत्तामकी अपेक्षा रंगानदीके प्रवाहके समान जो
 पवस्तिष्ठ है वेसी वहाँ स्थित इन राशिपोंकी सद्यता नहीं बन सकती है । तदन्तर
 चारों कषायोंके काळोंका योग करके इसका चारों कषायषाकी मिथ्यादृष्टिराशिमें भाग देने
 पर जो दृष्य जावे उसकी चार प्रतिराशिवां करके मानादिकके काळोंसे परिपाटीक्रमसे

१ त्रिष्टु ५ इति पाठः ।

२ त्रिष्टुतिवज्जोमपाकीरो नामो विविधादिष्व । जलविप्रलम्बमस्या उपकालं न तदाशेषः ॥
 पी. बी. २२८.

कात्मे पुनर्बदे—

चतुष्पदाग्रगण्यपडिबन्धपमात्मकसाहचर्यमायं च चतुष्पदाग्रमिच्छाद्विहारासिद्धिद
 तत्त्वगर्ग्यं च सम्पत्तीवरासिस्तुतिरपि पक्वित्युत्ते चतुष्पदाग्रपुवरासी हादि । तं चतुर्हि गुप्तिद कस्य-
 रासिचतुष्पदाग्रस्य भागद्वारा हादि । पुनो तन्मिह आवसित्याए असंख्येयदिमागेण भागे हिदे छर्द
 तन्मिह चैव पक्वित्युत्ते मायकसाग्रपुवरासी होदि । पुनर्भागहारमम्महियं कस्यच कस्यचउ
 म्भागभागहारसिद्धि माग हिदे छर्द तन्मिह चैव पक्वित्युत्ते कोपकस्यपुवरासी होदि । पुनो
 कोपकस्यपुवरासिमागहारमम्महियं कस्यच पुनर्भागपुवरासिमाग हिदे छर्द तन्मिह चैव पक्वित्युत्ते
 मायकसाग्रपुवरासी होदि । कस्यचउत्तमभागपुवरासिमावसित्याए असंख्येयदिमापण छर्दिय
 छर्द तन्मिह चैव अवधिदे सोमकसाग्रपुवरासी होदि । एदेहि भवहारकस्यहि सम्पत्तीव
 रासिस्तुतिरमवगणे भागे हिदे सग-सगस्यसीओ आगच्छति । तन्मिह कस्यचमिच्छाद्विहारी
 पमागं सम्पत्तीवरासिस्तु चतुष्पदाग्रो देहणो । तामकसाग्रमिच्छाद्विहारीपमायं चतुष्पदाग्रो
 सादित्तरेणो । गुणपडिबन्धेषु दशरासी पहाणो । इदो ! सेसगदिरासिस्तु छर्दसंख्येयदि

गुणित करने पर अपनी अपनी राशिपां होती है । इस मर्त्यपक्षो समहृत्तर बार कयापवाली
 मिथ्यादृष्टिराशि का व्यवहार करना करते हैं—

गुणस्यामप्रतिपक्ष चारों कयापवाले जीवोंके प्रमाणसे और कयाप रहित जीवोंके
 प्रमाणसे तथा चारों कयापवाले मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणसे भक्त पूर्वोक्त दोनों राशिओंके
 वर्गको सर्व जीवराशिसे ऊपर प्रक्षिप्त करने पर चारों कयापवाले जीवोंकी सुबराशि होती
 है । इसे बारसे गुणित करने पर कयापराशिसे बीये मायका मायहार होता है । पुनः इसे
 भावकीके नरसंख्यातर्ग मापसे माहित करने पर जो छन्द भावे इसे वहीमें मिखा देने पर
 मायकयापवाले जीवोंकी सुबराशि होती है । पुनः इस मागहारको नभ्यधिक करके वसका
 कयापराशिसे बीये मागकी मागहारराशिमें माग देने पर जो छन्द भावे इसे वही मागहार
 राशिमें मिखा देने पर कोपकयापवाले जीवोंकी सुबराशि होती है । पुनः कोपकयापके
 मायहारको नभ्यधिक करके वसका पूर्वोक्त सुबराशिमें माग देने पर जो छन्द भावे इसे
 वही सुबराशिमें मिखा देने पर मायाकयापवाले जीवोंकी सुबराशि होती है । कयापराशिसे
 बीये मागकी सुबराशिको (मागहारको) भावकीके नरसंख्यातर्ग मापसे माहित करके जो छन्द
 भावे इसे वही सुबराशिमें मिखा देने पर कोमकयाप जीवोंकी सुबराशि होती है । इन
 व्यवहारवालोंसे सर्व जीवराशिसे उपरि वर्गके प्रक्षिप्त करने पर अपनी अपनी राशिपां जाती
 है । कोप माग और माय, इन तीनों कयापवाले मिथ्यादृष्टियोंका पुण्य पुण्य प्रमाण सर्व
 जीवराशि का कुछ कम औषा माग है । कोमकयापवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कुछ
 अधिक औषा माग है । गुणस्यामप्रतिपक्ष जीवोंमें देवराशि प्रधान है, क्योंकि, दोष तीन
 गतिर्गोकी गुणस्यामप्रतिपक्ष जीवराशि गुणस्यामप्रतिपक्ष देवराशिसे नरसंख्यातर्ग माग है ।

मागचादो । देवेसु चतुस्रस्यगुणपडिज्जणरासी ण समाणो तद्द्वयाण समणचामावादो ।
 तं जहा—देवेसु सम्भस्योवा कोषदा । माणदा संखेज्जगुणा । मायदा संखेज्जगुणा ।
 सोमदा संखेज्जगुणा । गेरप्पसु सम्भस्योवा सोमदा । मायदा संखेज्जगुणा । माणदा
 संखेज्जगुणा । कोषदा संखेज्जगुणा । एय देवगदिअदाण समास काठण ओपअसज्जद
 रासिं खंडिय चतुप्पडिरासिं काठण परिवादीए कोषादिअदाहि गुणिदे सग-सगरासीओ
 भवति । एयं सम्मामिच्छाद्वि-सासणसम्मदिहीण पि कायस्यं । संजदासज्जदाण पुण
 विरिक्खगइअदासमास काठण ओपअसज्जदसंजदरासिं खंडिय चतुप्पडिरासिं करिय
 कमण कोषादिअदाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवति । एदण बीयपदेव एणेसिमबहार
 काठुप्पी पुप्पदे । त जहा—ओपअसज्जदसम्मदिहीअवहारकाठ संखेज्जसूरेहि खंडिय
 उदं तमिह चेप पक्खिसे लोमकसइअसज्जदसम्मदिहीअवहारकाठो इदि । तमिह संखेज्ज
 सूरेहि गुणिदे मायकसइअसज्जदसम्मदिहीअवहारकाठो इदि । तमिह संखेज्जसूरेहि

बेहोंमें चारों कपायवाली गुणम्यानप्रतिपक्ष जीवरशि समान नहीं हैं क्योंकि, उन चारों
 कपायोंके काष्ठ समान नहीं हैं । आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं— बेहोंमें ओषका काष्ठ
 सबसे स्तोका है । मानका काष्ठ उससे संप्यातगुणा है । मापाका काष्ठ मानके काष्ठसे
 संप्यातगुणा है । सोमका काष्ठ मापाके काष्ठसे संप्यातगुणा है । नारकियोंमें सोमका काष्ठ
 सबसे स्तोका है । मापाका काष्ठ सोमके काष्ठसे संप्यातगुणा है । मानका काष्ठ मापाके काष्ठसे
 संप्यातगुणा है । ओषका काष्ठ मानके काष्ठसे संप्यातगुणा है । यहां बेपगत्रिके कपायसवापी
 काष्ठका योग करके उससे बेहोंकी ओष असंयतसम्पगदहि जीवरशियोंके कथित करके जो
 छप्प भाषे उसकी चार प्रतिपाशियां करके उन्हें परिपाटीक्रमसे ओषादिकके
 काष्ठोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इसीप्रकार सम्पमिप्पारादि
 और सासाइनसम्पगदहि जीवरशियोंका भी करना चाहिये । सपतासयोंका प्रमाण छठे
 समय हो त्रिपेचगतिचवापी कपायोंके काष्ठका योग करके और उसमें ओषसयतासयत
 राशियोंके कथित करके जो छप्प भाषे उसकी चार प्रतिपाशियां करके प्रमसे ओषादिकके
 काष्ठोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इस बीजपत्रके अनुसार इन पूर्वोक्त
 राशियोंके अपहारकाष्ठकी उत्पत्तिको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— ओष असंयतसम्प-
 गदियोंके अपहारकाष्ठको संप्यातस कथित करके जो छप्प भाषे उसे उसी अपहारकाष्ठमें
 मिला देने पर सोमकपायवाले असंयतसम्पगदियोंका अपहारकाष्ठ होता है । इस सोम
 असंयतसम्पगदहि अपहारकाष्ठको संप्यातसे गुणित करने पर मापाकपायवाले असंयत

१ पु १२ १२५ कावकाको विरि वेहेइउपयिका । लोपरी वपुडा देव व अपपुदीरी ॥ ४५
 ववादेवविद्वज्जगणदी पुनो वि वंउमिदे । वज्जगणपरिदि व वपुपराजीन परिवर्ण ॥ गो जी १११ ११७
 २ अतिउ कोषाओ इति वा ॥

फालो पुष्पदे—

चतुःकसद्विषयपडिबन्धपमानमकसद्वपमान च चतुःकसद्विमिच्छाद्विरासिमज्जि-
तम्भर्गं च सम्भजीवरासिस्तुवरि पक्खिचे चतुःकसद्वपुवरासी होदि । तं चतुःदि गुणिदे कसाय-
रासिचतुःमागस्य मागहारो होदि । पुन तमिह आन्तरियाए अस्संखेज्जदिमागेण मागे हिदे छई
तमिह येव पक्खिचे मायकसद्वपुवरासी होदि । पुम्भमागहारमम्महियं क्कत्थं कसायचत-
म्भमागमागहारसिमिह मागे हिदे छई तमिह येव पक्खिचे कोपकसद्वपुवरासी होदि । पुनो
कोपकसद्वमागहारमम्महियं क्कत्थं पुम्भिक्खपुवरासिमिह मागे हिदे छई तमिह येव पक्खिचे
मायकमाद्वपुवरासी होदि । कसायचतम्भमागपुवरासिमावलिआए अस्संखेज्जदिमाएण खंडिय
छई तमिह येव अन्तरिदे सोमकसद्वपुवरासी होदि । एदेहि अबहारफालेहि सम्भजीव
रासिस्तुवरिमन्मो मागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति । तिन्हे कसायमिच्छाद्विषयं
पमात्वं सम्भजीवरासिस्स चतम्भानो देहूओ । सोमकसद्विमिच्छाद्विषयमात्वं चतुःमाओ
सादिरेगो । गुणपडिबन्धेसु देवरासी पहायो । कुदो ? सेसगदिरासिस्स तदस्संखेज्जदि

गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इस बर्णपक्षों समझकर बार कपायपक्षों
मिथ्यादृष्टिपक्षों अबहारकाळ करते हैं—

गुणस्थानप्रतिपक्ष चारों कपायपक्षों जीवोंके प्रमाणको और कपाय रहित जीवोंके
प्रमाणको तथा चारों कपायपक्षों मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणसे मूल पूर्वोक्त दोषों राशियोंके
बर्णको सर्व जीवराशिके ऊपर प्रक्षिप्त करने पर चारों कपायपक्षों जीवोंकी भुवराशि होती
है । वैसे बारसे गुणित करने पर कपायराशिके बीये प्रगल्भा मागहार होता है । पुन इधे
व्यवहारीके वसंत्थातर्वे मायसे माजित करने पर जो छम्भ भावे वसे वसीमें मित्रा देने पर
मायकपायपक्षों जीवोंकी भुवराशि होती है । पुन इस मागहारको न्ययधिक करके उसका
कपायराशिके बीये मागकी मागहारराशिमें माय देने पर जो छम्भ भावे वसे वसी मागहार
राशिमें मित्रा देने पर कोपकपायपक्षों जीवोंकी भुवराशि होती है । पुन न्ययकपायके
मागहारको न्ययधिक करके उसका पूर्वोक्त भुवराशिमें माय देने पर जो छम्भ भावे वसे
वसी भुवराशिमें मित्रा देने पर मायकपायपक्षों जीवोंकी भुवराशि होती है । कपायराशिके
बीये मायकी भुवराशिके (मागहारको) व्याकलीके वसंत्थातर्वे प्रगसे चंडित करके जो छम्भ
भावे वसे वसी भुवराशिमेंसे निरुद्ध लेने पर सोमकपाय जीवोंकी भुवराशि होती है । इन
अवहारकाळोंसे सर्व जीवराशिके उपरि बर्णके माजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती
हैं । कोय माय और माया इन तीनों कपायपक्षों मिथ्यादृष्टियोंका पृथक् पृथक् प्रमाण सर्व
जीवराशिके कुछ कम बीया प्रग है । सोमकपायपक्षों मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कुछ
अधिक बीया माय है । गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंमें देवराशि प्रधान है क्योंकि, दोष तीन
गणियोंकी गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवराशि गुणस्थानप्रतिपक्ष देवराशिके वसंत्थातर्वे प्रग है ।

पमचादिरासि चतुर्ह कसायाण पठिमागण चउविहा बिहचे सत्य ओपरासिपमाणाणुव
 लमादो । कषमेत्य बिहज्जदे ? बुन्धदे— चउण्ह कसायाणमद्वासमास करिय चतुप्पदिरासि
 अप्पप्पया अद्वाहि ओषडिय रुद्धसंखेज्जरूवेहि इच्छिदरासिम्हि मागे हिदे सग-सगरासीओ
 मवेंति । एत्थ चेत्तगो मणदि— पमचादीणं चदुकसायरासीओ समाणा आवलियाए
 असंखज्जदिमागमेचद्वाविसेसाओ चि । आवलिअसंखेज्जदिमागमेचद्वाविसेसचे वि ण
 रासीण विसेसाहियच विरुज्जदे, पवेसांतराण सखाणियमामावादो । तेपेत्थ तेरासिय म
 कीरे ? ण, पमचादिसु माणकसायरासी योषो । कोषकसायरासी विसेसाहियो । माय
 कसायरासी विसेसाहियो । लोमकसायरासी विसेसाहियो ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसापराइयसुद्धिसज्जदा उवसमा खवा
 मूलोघ' ॥ १३७ ॥

समाधान—यह कोई शोध नहीं है, क्योंकि शोध प्रमत्तसंघत आदि राशिको बार
 कपायोंके मागहारसे माजित करने पर वहाँ ओषराशिक प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता है ।

शुद्धा—इन राशियोंका यह विभाग किसप्रकार होता है ?

समाधान—बारों कपायोंके कालोंका योग करके और उसकी बार प्रतिराशियां
 करके अपने अपने कालसे अपवर्तित करके ओ संख्यात छत्र्य भावें उससे उचित राशिके
 माजित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं ।

शुद्धा—यहाँ पर दोषाकार कहा है एक तो प्रमत्तसंघत आदिमें बारों कपायराशियां
 समान हैं, क्योंकि यहाँ पर आबलीके अर्धक्यातवें मागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं है ?
 इससे, आबलीके अर्धक्यातवें मागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं होने पर भी राशियोंकी विशेषता
 पिछता विशेषता प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि प्रवेशांतर करनेवाले जीवोंके संख्याका कोई
 नियम नहीं पाया जाता है । इसलिये यहाँ पर प्रतीति नहीं करना चाहिये ?

समाधान—नहीं क्योंकि प्रमत्तसंघत आदि शुद्धस्यामोंमें मानकपाय जीवराशि
 सबसे स्तोक है । ओषकपाय जीवराशि मानकपाय राशिसे विशेष अधिक है । मायाकपाय
 जीवराशि ओषकपाय राशिसे विशेष अधिक है । लोमकपाय जीवराशि मायाकपाय जीवराशिसे
 विशेष अधिक है ।

इतना विशेष है कि लोमकपायी जीवोंमें दम्बसापरायिक शुद्धिसंघत उपशमक
 और धपक जीव मूलोघ प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३७ ॥

गुणिते मापकसप्तदशसदसम्मप्रद्विगुणहारकालो होदि । तमिह संखेन्द्ररूपेहि गुणिते कोषकसप्तदशसदसम्मप्रद्विगुणहारकालो होदि । एव सम्मामिच्छद्विगुणसप्तसम्मप्रद्विगुणं पि वचनं । ओषसप्तदशसदसद्विगुणहारकालं चद्विगुणिय चद्विगुणिरासि काऊज तयेय-
रासिमसंखन्नेहि रूपेहि खंडिय सद्धं तमिह येव पक्खिये मापकसप्तदशसदसद्विगुणहार-
कालो होदि । पुणो पुम्भमागहारमम्महिय काऊज चद्विगुणियमागहार खंडिय सद्धं तमिह
येव पक्खिये कोषकसप्तदशसदसद्विगुणहारकालो होदि । पुणो पुम्भमागहारमम्महियं
काऊज चद्विगुणिरासिगुणहारकालं खंडिय सद्धं तमिह येव पक्खिये मापकसप्तदशसदसद्वि-
गुणहारकालो होदि । चद्विगुणियमागहारमसंखेन्द्ररूपेहि खंडिय सद्धं तमिह येव अवधिदे
सोमकसप्तदशसदसद्विगुणहारकालो होदि ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अणियट्ठि ति दव्वपमाणेण केवडिया,
संखेज्जा' ॥ १३६ ॥

आधमिदि अमणिय सखेज्जा इदि किमिह वुप्पवे ? प एस दोसो, कुदो ? ओष

सम्पत्तिपेक्षा अवहारकाळ होता है । इस मापकपाय असंयतसम्पत्ति अवहारकाळको
संख्यातसे गुणित करने पर मानकपायको असंयतसम्पत्तिपेक्षा अवहारकाळ होता है ।
इस मानकपाय असंयतसम्पत्ति अवहारकाळको सख्यातसे गुणित करने पर कोषकपायी
असंयतसम्पत्तिपेक्षा अवहारकाळ होता है । इसीप्रकार सम्पत्तिपेक्षा और साक्षात्
सम्पत्तिपेक्षा भी कथन करना चाहिये । ओष संयतासंयतोके अवहारकाळको बारसे
गुणित करके जो व्यय आवे उसकी बार प्रतिराशियां करके इनमेंसे एक राशिसे असंयतासे
अहित करके जो व्यय आवे उसे वही राशिमें मिला देने पर मानकपायको संयतासंयतोका
अवहारकाळ होता है । पुनः पूर्व मागहारको सम्पत्ति करके और उससे अनुगुणित माग-
हारको अहित करके जो व्यय आवे उसे वहीमें मिला देने पर कोषकपायी संयतासंयतोका
अवहारकाळ होता है । पुनः पूर्व मागहारको सम्पत्ति करके और उससे अनुगुणित अवहार-
काळको अहित करके जो व्यय आवे उसे वहीमें मिला देने पर मापकपायी संयतासंयतोका
अवहारकाळ होता है । अनुगुणित मागहारको असंयतासे अहित करके जो व्यय आवे उसे
वही अनुगुणित मापहारमेंसे बड़ा देने पर सोमकपायी संयत संयतोका अवहारकाळ होता है ।

प्रमत्तसजदप्पहुडि गुणस्थानस सद्धं अनिपुत्तिहरण गुणस्थानतक पारो कपायवत्ते
जीव इप्पप्रमाणे अपेसा विवने ई ? संख्यात ई ॥ १३६ ॥

धुका—सूत्रमें ओष ऐसा बड़ कर सखेज्जा इसप्रकार बिसद्विये कहा है ।

पमचादिरासि चदुष्ह कसायाण पडिमागेण चउविहा विहचे तत्थ ओपरासिपमाणाणुव
 तंमादो । कषमेत्थ विहज्जदे ? धुक्कदे— चउष्ह कसायाणमद्वासमास करिय चदुप्पडिरासि
 अप्पणा अद्वाहि ओवडिय लद्दसंखेज्जरूपेहि इच्छिदरासिम्हि मागे हिदे सग-सगरासीओ
 मवति । एत्थ चेदगो मणदि— पमचादीणं चदुकसायरासीओ समाणा आबलियाए
 असंखज्जादिमागमेचद्वाविसेसाओ पि । आबलिअसंखेज्जदिमागमेचद्वाविसेसथे वि प
 रासीण विसेसाहियच विरुज्जदे, पसेसांतरणं ससाणियमामावादो । तेथेत्थ तेरासिप प
 कीरेदे ? न, पमचादिमु माणकसायरासी योवो । कोषकसायरासी विसेसाहिओ । माय
 कसायरासी विसेसाहिओ । लोभकसायरासी विसेसाहिओ ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसापराइयसुद्धिसज्जदा उवसमा खवा
 मूलोघ' ॥ १३७ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ज्येष्ठ प्रमत्तसंघत आदि राशियों के बार
 कपायोंके मागहारसे भाजित करने पर वहाँ ओघराशियों प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता है ।

शंका—इन राशियोंका यह विमाय किसप्रकार होता है ?

समाधान—बारों कपायोंके काखोंका योग करके और उसकी बार प्रतिराशियाँ
 करके अपने अपने काटसे अपवर्तित करके जो संख्यात छप्प भावें वससे इच्छित राशिके
 भाजित करने पर अपनी अपनी राशियाँ होती हैं ।

शंका—यहाँ पर शंकाकार कहता है एक तो प्रमत्तसंघत व्यक्तियों बारों कपायराशियाँ
 समान हैं, क्योंकि यहाँ पर अक्षरोंके अर्थक्यातवें मागप्रमाण काखकी विशेषता नहीं है ?
 इससे, आवडीके अर्थक्यातवें मागप्रमाण काखकी विशेषता नहीं होने पर भी राशियोंकी विशेषता-
 विधता विशेषको प्राप्त नहीं होती है क्योंकि प्रवेशांतर करनेवासे जीवोंके संख्यात कोई
 नियम नहीं पाया जाता है । इसलिये यहाँ पर वैरादिक नहीं करना चाहिये ?

समाधान—नहीं क्योंकि प्रमत्तसंघत आदि गुणस्थानोंमें मानकपाय जीवराशि
 सबसे श्रेष्ठ है । ओघकपाय जीवराशि मानकपाय राशिसे विशेष अधिक है । मायाकपाय
 जीवराशि ओघकपाय राशिसे बिनेय अधिक है । लोभकपाय जीवराशि मायाकपाय जीवराशिसे
 विशेष अधिक है ।

इतना विशेष है कि लोभकपायी जीवोंमें सप्तमसापरायिक सुद्धिसंघत उपपन्नक
 और छपक जीव मूलोघ प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३७ ॥

खगोत्रसामगसुहृमसापराप्रसु सुहृमसोमकसायवदिरिचसापरायामावतो ओषर्ष
य विरुज्जवे ।

अकसाईसु उवसतकसायवीदरागछदुमत्या ओषर्ष ॥ १३८ ॥

एत्वं भावकसायामार्ष पेक्खिऊय उवसतकसाया अकसाप्रणो ण दम्बकसायामार्ष
पहि, उदबोदीरपोकडुपुडुव-परपयविसंक्रमादिविरिदिदम्बकम्मस्स तत्पुवसंमादे । षठ-
म्विहृदम्बकम्ममेयम् षठम्विहृपो मूतो सबसतकसापरासी कर्ष पादेकं मूलेषपमार्ष
पावेदे ! ण एस होसो, कूदो ! बुज्जवे- ण तान दम्बकसायविसंसजमेत्थ संमपह, तेव
अद्वियात्तामावा । ण भावकसायविसंसर्ष पि समपह, तस्स तत्तामावादे । तदो उवसत-
कसापरासी ण षडुविहा विहज्जवे ते पेव मूलेषप पि तस्स ण विरुज्जदि पि ।

स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्या अजोगिकेवली ओषर्ष ॥ १३९ ॥

सपक भीर उपशान्तकसाय वीर्यामिद जीर्णोत्त सख्य छेप कपायसे प्रयतिरिक्त
कपाय नहीं पाई जायेके कारण सख्य छोमिषोंके प्रमाणसे व्येष्टत्वका प्रतिपादन करना
विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

कपायपरिह जीर्णोत्त उपशान्तकपाय वीर्यामिद जीव ओषप्ररूपजाके
समान हैं ॥ १३८ ॥

यहाँ भाव कपायका अभाव देखकर उपशान्तकपाय जीर्णोत्त कपायी कहा है
द्रव्य कपायके अभावकी अपेक्षासे नहीं, क्योंकि, उद्वय वहीरका, मपकर्षण वत्कर्षण और
परमकृत्तिसंक्रमण आविसे रहित द्रव्य कर्म वहाँ उपशान्तकपाय शुद्धस्याममें पाया जाता है ।

प्रश्न—द्रव्य कर्म चार प्रकारका होनेसे चार मेंमें विभक्त मूख उपशान्तकपायपि
प्रत्येक मूलोप प्रमाणसे कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है । शेष क्यों नहीं है भागे इसीका कारण कहते हैं—
द्रव्यकपायक विरोधक तो वहाँ समझ नहीं है क्योंकि, वस्तुतः वहाँ अधिकार नहीं है ।
भावकपाय विरोधक भी समझ नहीं है क्योंकि भावकपाय वहाँ पाया नहीं जाता है । अतएव
उपशान्तकपाय जीवराशि चार मेंमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके मूलोपपत्ति
भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

स्त्रीकपायवीर्यामिदस्य जीव और अयोधिकेवली जीव ओषप्ररूपजाके
समान हैं ॥ १३९ ॥

एव समुच्चयं च-सदोवत्ताण कायम् ? न, न-सद्वेष विना वि तद्दोवत्तद्विदो ।
एदेसि दोषं गुणद्वानाजमेगद्वोगकरण किमद्विमिदि चे, न एस दोसो, दम्बपमानं पठि
पदेसि गुणद्वानाज पञ्चासति पेक्खिय एगचविरोहामावत्तो । न च ओपचं विरुद्धदे,
विचिसेसपचादो ।

सजोगिकेवली ओघ ॥ १४० ॥

सजोगि भजोगिकेवलीभमेगमेव सुचं किण्ण कीरदे, केवलित्त पठि पञ्चासति-
समवादो ! न, दोषं पमाणगदपहानपञ्चासत्तीए अमावादो । कर्च पमाणस्स पचाप्यं ?
तेमेव अद्वियारदो । सेसं सुगमं ।

मागामाग वचस्सामो । सम्बदीनरासिममत्तुं कए तए महुत्तं चउकसाय
मिच्छद्विदो भवति । एगत्तंमकसत्तुं गुणपठिवणा च । पुणो चउकसायमिच्छद्वि
रासिममत्तियाए असंखेज्जदिमाएण खंदिप तत्वेगत्तं पुच वृत्तिय सेसमहुत्तं चचारि

शंका—इस सूत्रमें समुच्चयार्थ व शब्दका प्रयोजन करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, व शब्दके बिना भी समुच्चयरूप कार्यकी वपसन्धि हो
जाती है ।

शंका—इन दोनों गुणस्थानोंका एक योग किसछिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, प्रथममात्रके प्रति दोनों गुणस्थानोंकी
प्रत्यासत्ति देखकर एक योग करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

जोषत्व भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है क्योंकि ये दोनों गुणस्थान निर्भिरोपण हैं ।

सयोजिकेवली जीव ओपप्ररूपमाके समान हैं ॥ १४० ॥

शंका—सयोजिकेवली और भयोजिकेवली इन दोनोंका एक ही सूत्र क्यों नहीं बनाया
है क्योंकि, केवलित्तके प्रति इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पार्य जाती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, इन दोनोंकी प्रमाद्यगत प्रधान प्रत्यासत्ति नहीं पार्य
जाती है इसछिये इन दोनोंका एक सूत्र नहीं किया ।

शंका—प्रमाणको प्रधानता किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, यहाँ वस्तुका अधिकार है । दोष कथन सुगम है ।

अब प्रामागमागके बतहाते हैं—सर्व जीवराशिके अन्तर्गत खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग बार कपाय मिथ्यादृष्टि जीव हैं और एक भगवत्प्रमाण भक्त्यापी और गुणस्थानप्रतिपक्ष
जीव हैं । पुनः बार कपाय मिथ्यादृष्टि राशिके बावलीके अंतर्क्यातर्षे प्रागसे अहित करके
उनमेंसे एक खंडको पृथक् करके दोष बहुभागके बार समान पुंज करके स्थापित करना

खगोपसामगस्तुदुमसांपरायसु सुदुमलोमकसायपदिरित्तिपरायामावता आवर्ष
य विरुद्धे ।

अकसाईसु उवसंतकसायवीदरागछदुमत्या ओघं ॥ १३८ ॥

एतय भाषकसायामात्रं पक्वित्तम उवसंतकसाया अकसाय्यो न दम्बकसायामात्रं
पदि, उदओदीरभोक्तुपुक्तुग-परपयविसकमादिविरिददग्यकम्मस्स उत्तुवर्त्तमादो । पउ-
म्बिहदभ्यकम्मभयप पउम्बिहपो मूठा उवसंतकसायरासी कर्षं पदेकं मूठापयमार्य
पावदे ! य एत दोसो, इदो ! पुन्ने- य ताव दम्बकसायविसेसगमेत्य समवह, तेव
अदियारामावा । य भाषकसायविसेसर्षं पि संमवह, तस्स उत्तवामावतो । तदो उवसंत-
कसायरासी य पउविहा विहब्बे तो पेव मूलोपय पि तस्स य विरुद्धदि पि ।

स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्या अजोगिकेवली ओघ ॥ १३९ ॥

हृषक और उपशान्तक साय सांपरायिक जीवोंमें हृषक लोम कपायसे व्यतिरिक्त
कपाय नहीं पाए जायेके कारण हृषक ओमियोंके प्रमाणको अक्षय्यका प्रतिपादन करना
विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

कपायरहित जीवोंमें उपशान्तकपाय बीतराग छयस्य जीव ओषप्ररूपकाके
समान हैं ॥ १३८ ॥

यहां भाष कपायका समाव देकर उपशान्तकपाय जीवोंको व्यकपायी कहा है
हृष्य कपायके समावकी अपेक्षासे नहीं क्योंकि हृष्य उदीरका, अपकर्षक, उत्कर्षक और
परमकृतिसेकमप व्यतिसे रहित हृष्य कर्म बहो उपशान्तकपाय गुणस्थानमें पाया जाता है ।

संज्ञा—हृष्य कर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशान्तकपायराशि
प्रत्येक भूकोष प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान—यह चोरे शेष नहीं है । शेष क्यों नहीं है जागे इसीका कारण कहते हैं—
हृष्यकपायक विरोधक से यहां संयम नहीं है क्योंकि कसका यहां अधिकार नहीं है ।
भाषकपाय विरोधक भी समव नहीं है, क्योंकि भाषकपाय बहो पाया नहीं जाता है । अतएव
उपशान्तकपाय जीवराशि चार भेदोंमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके भूकोषपत्र
भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

धीनकपायबीतरागछयस्य जीव और अजोगिकेवली जीव ओषप्ररूपकाके
समान हैं ॥ १३९ ॥

होदि । सस सखेज्जखंडे कए बहुखडा कोषकसायसम्मामिच्छाद्विरासी होदि । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखडा लोमकसायसासणसम्मामिच्छाद्विरासी होदि । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखडा मायकसायसासणसम्मामिच्छाद्विरासी होदि । सस सखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसासणसम्मामिच्छाद्विरासी होदि । सेससखेज्जखंडे कए बहुखडा कोषकसाय सामणसम्मामिच्छाद्विरासी होदि । सेससखेज्जखंडे कए बहुखडा चउकसायसज्जदासंजदरासी होदि । तदा संजदासंजदरासिस्स अमखज्जदिमागमवणिय सेस चचारि समपुंजे करिय हवेदण । पुणो पुण्यमवणितपयखंडमसंखज्जखंड करिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खिसे सामकसायसज्जदामंजदरासी होदि । सेसमसखेज्जखंडे करिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खिसे मायकसायसज्जदासंजदरासी होदि । संसमसखेज्जखंड करिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खिसे कोषकसायसज्जदासंजदरासी होदि । सेस चउत्थपुंजे पक्खिसे माणकसायसंजदासंजदरासी होदि । सेस वाणिज्जण गयकं ।

अप्याबहुगं तिबिई सत्थापादिमण । तत्थ सत्थाण बत्थस्सामो । मिच्छाद्विर्म्म सत्थाण परिध, रासीदो मिच्छाद्विधुवरासिस्स अभिगघादो । असज्जदसम्मामिच्छाद्विधुवरासि अत्थ संजदासंजदा पि सत्थाणस्स मूलोपमगो ।

जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षेत्रकपाय सत्यमिच्छाद्वि जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोमकपाय सासादनसत्यमिच्छाद्वि जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायकपाय सासादनसत्यमिच्छाद्वि जीवराशि है । रोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकपाय सासादनसत्यमिच्छाद्वि जीवराशि है । रोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग बाधकपाय सासादनसत्यमिच्छाद्वि जीवराशि है । रोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चार कपाय सयतासंयत जीवराशि है । तदन्तर सयतासंयत जीवराशि के असंख्यातसे भागधे घटा कर रोपके चार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये । पुनः पहले घटा कर रखे हुए एक खंडके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग प्रथम पुंजमें प्रसिप्त करने पर लोमकपाय संयतासंयत जीवराशि होती है । रोप एक भागके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर मायकपायी संयतासंयत जीवराशि होती है । रोप एक भागके असंख्यात खंड करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर क्षेत्रकपायी संयतासंयत जीवराशि होती है । रोप एक भागके चौथे पुंजमें मिला देने पर मानकपायी सयतासंयत जीवराशि होती है । रोप कयन जानकर छे जाना चाहिये ।

स्वस्थाव भाविके मेवसे अस्यबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान भग्न बहुत्वको वतमाने है—मिच्छाद्वि जीवोका स्वस्थान भग्नबहुत्व नहीं पाया जाता है क्योंकि मिच्छाद्वि जीवराशिमें मिच्छाद्वि भुवराशि अधिक है । असंयतसम्यग्द्वि गुणस्थानसे छेकर संयतासंयत गुणस्थानतक स्वस्थान भग्नबहुत्व मूलोप स्वस्थान भग्नबहुत्वके समान है ।

समर्पुषे करिय द्वेदक्ष । पुनो अनभिदपयसंभमावलिपाए असंखेज्जदिमाएण खंडेऊय
 तय बहुखंडे पदमर्पुषे पक्खिणे सोमकसायमिच्छाद्विरासी होदि । ससेयसंभमावलिपाए
 असंखज्जदिमाएण खंडेऊय बहुखंड विदियपुंजे पक्खिणे मायकसायमिच्छाद्विरासी होदि ।
 ससेयसंभमावलिपाए असंखेज्जदिमाएण खंडिय बहुखंडे सदियपुंजे पक्खिणे कोप
 कसायमिच्छाद्विरासी होदि । सेसं चउत्तयपुंजे पक्खिणे मायकसायमिच्छाद्विरासी
 होदि । सेसमर्पुषेखंडे कए बहुखंडा अकसाया होति । एषो उवरि कसायगुणारेहिओ
 सम्मामिच्छाद्विरासिं पडि सातपसम्माद्विगुणगारा संखेज्जगुणो चि उवएसमवर्त्तयेय
 मागामागा बुण्णदे । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोमकसायअसंखदसम्माद्विरासी
 होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायअसंखदसम्माद्विरासी होदि । सेसं
 संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायअसंखदसम्माद्विरासी होदि । सेसमर्पुषेखंडे
 कए बहुखंडा कोपकसायअसंखदसम्माद्विरासी होदि । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा
 सोमकसायसम्मामिच्छाद्विरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसम्मा-
 मिच्छाद्विरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसम्मामिच्छाद्विरासी

आदिषे । पुन विचारकर पूयङ्क रक्ते हुए एक भागको आबछीके असंख्यातमें भागसे रचित
 करके उभमेंसे बहुभाग पड़े पुंजमें मिखा देने पर सोमकसाय मिध्याद्वि जीवराशि होती
 है । दोष एक खंडको आबछीके असंख्यातमें भागसे रचित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें
 मिखा देने पर मायकसाय मिध्याद्वि जीवराशि होती है । दोष एक खंडको
 आबछीके असंख्यातमें भागसे रचित करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिखा देने पर कोपकसाय
 मिध्याद्वि जीवराशि होती है । दोष एक भागको चौथे पुंजमें मिखा देने पर मानकसाय
 मिध्याद्वि राशि होती है । सर्व जीवराशिसे मनस्त खंडोंमेंसे जो एक खंड प्रमाण अकसाय
 और गुणव्यापकप्रतिपक्ष वतसाये ये उस एक खंडसे मनस्त खंड करने पर बहुभाग अकसाय
 जीव होते हैं । अब भागे वयापके गुणकारसे सम्मामिध्याद्वि जीवराशिसे प्रति साधारण
 सम्मगद्विषा गुणकार संख्यातगुणा है । इसकारके वयद्वारा अवलम्बन लेकर मायभास्य
 कथन करते हैं । दोषक संख्यात खंड करने पर बहुभाग कामकसाय असंयतसम्मगद्वि जीव
 राशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायकसाय असंयतसम्मगद्वि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकसाय असंयतसम्मगद्वि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग कोपकसाय असंयतसम्मगद्वि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सोमकसाय सम्मामिध्याद्वि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायकसाय सम्मामिध्याद्वि
 जीवराशि है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकसाय सम्मामिध्याद्वि

परत्वाय पयर्द । सम्बत्वात् कोषकसायउवसामगा । खगगा संखेज्जगुणा । अप्यमचसंजदा संखेज्जगुणा । पमचसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माद्विअवहत्तकाले असंखेज्जगुणा । एवं जेयर्ग आव पत्तिदोवर्म ति । कोषकसायमिच्छाद्विरासी अयस्युणो । एव माय-माय-लोमार्य पि परत्वाय पचन्व । अकसासि सु सम्बत्पोना उपसंसकसाया । खीवकमाया संखेज्जगुणा । अजागिकवली सविषा येव । समागिकेवली संखेज्जगुणा । सिद्धा अयस्युणा ।

सम्बपरत्वाये पयर्द । सम्बत्वात् मायकसायउवसामगा । कोषकसायउवसामगा विसैसाहिया । मायकसायउवसामगा विसैसाहिया । सामकसायउवसामगा विमसहिया । मायकसायउवसामगा विससहिया । कोषकसायउवसामगा विससहिया । मायकसायउवसामगा विससहिया । लोमकसायउवसामगा विससहिया । एव जामि गुणकुणे चचारि कसाया संमर्षति तमसिञ्जगुणा भगिद । अणायुवसामपहितो खगगा दुगुणा चव । ससारत्या अकसाया संखेज्जगुणा । मायकसायअपमचसंजदा संखेज्जगुणा । कोषकसायअपमचसंजदा विसै-

परत्वायमे अयवहत्त्व प्रकृत है— कोषकपायी उपशामक जीव सबसे स्तोत्र है । कोषकपायी सपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे है । कोषकपायी अपमचसंयत जीव सपकोंसे संख्यातगुणे है । कोषकपायी अपमचसंयत जीव अपमचसपतोंसे संख्यातगुणे है । कोषकपायी अपसतसंयतगुणियोंका अणवहारकप्रथम अपमचसपतोंसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार पस्योपमक के आवा आहिये । पस्योपमसे कोषकपायी मिथ्याहणियोंका प्रमाण अमन्तगुणा है । इसीप्रकार मान माया आर लोमकपायके परत्वाय अयवहत्त्वका भी बयान करना चाहिये । कथापरहित जीवोंमें उपशामकपाय जीव सबसे स्तोत्र है । खीवकपाय जीव उपशामकपाय जीवोंसे संख्यातगुणे है । अयोगिकेवली जीव वतने ही है । सयोगिकेवली जीव अयोगियोंसे संख्यातगुणे है । सिद्ध जीव सयोगियोंसे अमन्तगुणे है ।

अब सर्वपरत्वायमे अयवहत्त्व प्रकृत है— मानकपायी उपशामक जीव सबसे स्तोत्र है । कोषकपायी उपशामक जीव मानकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक है । माया कपायी उपशामक जीव मानकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक है । कोषकपायी उपशामक जीव मायाकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक है । मानकपायी सपक जीव लोमकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक है । कोषकपायी सपक जीव मानकपायी सपकोंसे विशेष अधिक है । मायाकपायी सपक जीव कोषकपायी सपकोंसे विशेष अधिक है । लोमकपायी सपक जीव मायाकपायी सपकोंसे विशेष अधिक है । इसप्रकार जिस गुणस्थानमें चारों कथाय सम्यक् हैं वसका व्याप्य लेकर बयान किया । अमन्त उपशामकोंसे सपक होने ही होते हैं । कथाय रहित ससारी जीव लोमकपायी सपकोंसे संख्यातगुणे है । मानकपाय अपमचसंयत जीव ससारी कथाय रहित जीवोंसे संख्यातगुणे है । कोषकपाय अपमचसंयत

सम्मादिङ्गिणो अपि च ओषमिच्छाद्दिङ्गि-सासणसम्मादिङ्गिहितो मदि सुदअण्णाणिमिच्छा-
दिङ्गि-सासणसम्मादिङ्गिणो उणा होंति चि आयपमाणमदसिं पत्ति चि च न, मदि
सुदअण्णाणिजिरिह्दिविमगणाणीणमणुवलमादा तदो ओषमिदि सुहु पढद । एच मदि
सुदअण्णाणिमिच्छाद्दिङ्गिरासिस्स धुवरासी युष्पद । तं जहा—सिद्धेतरसगुणपटिवण्णरासिं
मदि सुदअण्णाणिमिच्छाद्दिङ्गिरासिमज्जितन्नग च सच्चवीवरासिस्सुवरि पक्खिउवे मदि-सुद
अण्णाणिमिच्छाद्दिङ्गिधुवरासी हादि । ओषसासणसम्माद्दिङ्गिअवहारफालो चव मदि-सुद
अण्णाणिसासणसम्माद्दिङ्गिअवहारफालो हादि ।

विमंगणाणीसु मिच्छाद्दिङ्गि दम्बपमाणेण केवडिया, देवेहि
सन्तिरेय ॥ १४२ ॥

दम्बमिच्छाद्दिङ्गिणो णरूपमिच्छाद्दिङ्गिणा च सच्च विहगणाणिणा, विहगणाणमव
पण्यममण्णिदसादे । विरिक्खविहगणाणिणा चि पदस्स असंखज्जदिभागमचा होता चि

प्रश्न—विमगजानी मिष्यारहि और सासाइनसम्पदरहि जीव हैं इसलिये
ओषमिष्यारहि और सासाइनसम्पदरहियोंके प्रमाणमे मत्पजानी और धुताजानी मिष्यारहि
और सासाइनसम्पदरहि जीव कम हो जाते हैं इसलिये इनके ओषमप्रमाणका निर्देश नहीं
कन सकता है ।

समाधान—नहीं क्योंकि मत्पजानी और धुताजानियोंको छोड़कर विमगजानी जीव
इष्टरु बर्हो पाये जाते हैं इसलिये इनका प्रमाण ओषमप्रमाणके समान मध्योत्तरह बन जाता है ।

अब यहाँ पर मत्पजानी और धुताजानी मिष्यारहि जीवराशिची भुषराणिचा कथन
करते हैं । यह इसप्रकार है—मिद्धरादि और तेरह गुप्तरयानप्रतिपन्न राशिचा तथा मिद्ध और
तह गुप्तरयान मतिपन्न राशिके दशमे मत्पजानी और धुताजानी मिष्यारहि राशिचा भाग दूध
पर जिनका रूप्य भावे उसको सप्त जीवराशिमें मिला इन पर मत्पजानी और धुताजानी
मिष्यारहि जीवोंकी भुषराणि होती है । ओषमान्नाइनसम्पदरहियोंका अणदारकाल ही मत्पजानी
और धुताजानी सासाइनसम्पदरहियोंका अणदारकाल है ता है ।

विमगजानियोंमें मिष्यारहि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपथा टिनने हैं । दशोमे
इउ अधिक है ॥ १४२ ॥

येच मिष्यारहि जीव और नारक मिष्यारहि आय च सच विमगजानी होने हैं
क्योंकि, ये जीव मत्पजान्य विमंगजानमे पुन्य हाते हैं । निर्वच विमंगजानी जीव अणमरदे

मायकमायसञ्जदासञ्जदअवहारकाला विमसाहिया । कायकमायसञ्जदासञ्जदअवहारकालो
पिसेसाहियो । मायकमायसञ्जदासञ्जदअवहारकाला विमसाहियो । तस्मेव दम्बमर्मसेजगुण ।
एवं अवहारकालपडित्तमेव नयम्वं जाय पडित्तमं ति । अकमाइ अगतगुणा । मायकमाय
मिच्छादृष्टी अयसगुणा । कायकमायमिच्छादृष्टी विमसाहिया । मायकमायमिच्छादृष्टी विम
साहिया । ओमकसप्रमिच्छादृष्टी विमसाहिया ।

एवं कसायमगणा सवता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छादृष्टी सासण
सम्मादृष्टी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघ ॥ १४१ ॥

एहस्सत्थो धुप्पदे । तं अह—आयमिच्छादृष्टि-मायससम्मादृष्टिरागीहितो मदि
सुदअण्णाणिमिच्छादृष्टि-सासणसम्मादृष्टिरागिणा न एकण वि जीरण ऊप्पा मरति, दुवि
ह्वाणविरुद्धि मिच्छादृष्टि-सासणसम्मादृष्टीपममादो । विमंगणणिणा मिच्छादृष्टि-सासण-

गुणा है । मायाकपाय संपत्तासंपत्तौका अवहारकास ओमकपाय संपत्तासंपत्त अवहारकाससे
विशेष अधिक है । ओघकपाय संपत्तासंपत्तौका अवहारकास मायाकपाय संपत्तासंपत्त
अवहारकाससे विशेष अधिक है । मानकपाय संपत्तासंपत्त अवहारकास काय
कपाय संपत्तासंपत्त अवहारकाससे विशेष अधिक है । मानकपाय संपत्तासंपत्तौका
द्रव्य वर्गीके अवहारकाससे असंपत्तासंपत्तौका है । इसीप्रकार अवहारकासके प्रतिओमकससे
पस्योपमतक के जाना चाहिये । पस्योपमसे कपायरहित जीव जनन्तगुणे हैं । मानकपायी
मिष्पादृष्टि जीव कपायरहित जीवोंसे जनन्तगुणे हैं । ओघकपायी मिष्पादृष्टि जीव मानकपायी
मिष्पादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं । मायाकपायी मिष्पादृष्टि जीव ओघकपायी मिष्पादृष्टियोंसे
विशेष अधिक हैं । ओमकपायी मिष्पादृष्टि जीव मायाकपायी मिष्पादृष्टियोंसे विशेष
अधिक हैं ।

इसप्रकार कपायमार्गव्य समान्य हैं ।

ज्ञानमार्गवाके अनुबादसे मत्पज्ञानी और भुताज्ञानी जीवोंमें मिष्पादृष्टि और
सासादनसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितन हैं ? ओघरूपवाके समान
हैं ॥ १४१ ॥

इस सूचका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है—ओघ मिष्पादृष्टिराशि और ओघ सासा
दनसम्यग्दृष्टि राशिसे मत्पज्ञानी और भुताज्ञानी मिष्पादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव
राशि एक ही जीव प्रमाणसे कम नहीं है क्योंकि वल्ल दोनों प्रकारके जागोंसे रहित मिष्पा
दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव नहीं पाये जाते हैं ।

१ अल्लसुवमेव मत्पज्ञानि सुवज्जनिवरेण विपत्तिसिद्धान्तदवम्बज्जव अल्लसुवमेव । अ मि
१, ८ उल्लसिउपैर्यवपडित्तो वज्जनिउपैर्यव । वरिदपवन्नालीन नयव होदि पडित्तव ॥ को बी. ४१४

खेददिमाएष तिरिक्ख मणुमदुणाणिपमाणेष हीणो, सो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि मागमेवचणेण दोर्घं पि रासीण पच्चासची अत्थि सि ओपमिदि पुच्चदे ।

अभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि-ओहिणाणीसु असजदसम्माइट्ठि प्पहुट्ठि जाव स्वीणकसायवीदरागछुदुमत्था त्ति ओघ ॥ १४४ ॥

आभिनिबोहिय-सुदणाणीण पमाणस्स ओपच जुअदे, तेहि विरहिद असजदसम्मा इट्ठिआदीपमणुवर्त्तमादो । ण पुण ओहिणाणीण ओघच जुअदे, ओहिणाम्मविग्हिदतिरिक्ख मणुस्ससम्माइट्ठिणमुवर्त्तमा ? ण एस दोमो, पहुसो दसुत्तरादो ।

एदेसिमवहारकालुप्यची पुचदे । तं बहा—आभिनिबोहियणाणि-सुदणाणिअसजद सम्माइट्ठिअवहारकालो ओघअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो चेव भवदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाणेण मागे हिदे छद्दं तम्हि चेव पक्खिचे ओहिणाणिअसजदसम्माइट्ठिअवहार

अपने असंख्यातमें भागरूप मयज्ञान और भुताज्ञान इन दो अज्ञानोंसे युक्त तिर्यक और मनुष्योंके प्रमाणसे हीन है। तो भी पस्योपमके असंख्यातमें भागत्वकी अपेक्षा व्येषसाक्षादनसम्पगद्वि एत्ति और विमगजानी साक्षात्तनसम्पगद्वि राशि इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है, एत्तिसे सूत्रमें ओघ ऐसा कहा है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, भुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्पगद्वि गुणस्वानसे छेकर धीयकपाय वीतराग छधस्व गुणस्वानतक प्रत्यक गुणस्वानमें जीव ओपप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४४ ॥

शुद्धा—आभिनिबोधिक और भुतज्ञानी जीवोंके प्रमाणके ओघपना बन जाता है क्योंकि, इन दोनों ज्ञानोंके बिना असंयतसम्पगद्वि आदि गुणस्वान नहीं पाये जाते हैं । परंतु अवधिज्ञानियोंके प्रमाणके ओघपना नहीं बन सकता है क्योंकि अवधिज्ञानसे रहित तिर्यक और मनुष्य सम्पगद्वि पाये जाते हैं ।

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि इस प्रकारके प्रदनका अनेकवार उक्त है अये है ।

अब इनके अवधारकाओंकी उत्पत्तिको कहते हैं । यह इसप्रकार है—ओघ असंयत सम्पगद्वि जीवोंका अवधारकाज ही आभिनिबोधिकज्ञानी और भुतज्ञानी जीवोंका अवधारकाज होता है । इसे मावकीके असंख्यातमें भागसे भाजित करने पर जो छध्व पाये उसे वसी अवधारकाजमें भिन्ना देने पर अवधिज्ञानी असंयतसम्पगद्विधियोंका अवधारकाज होता है ।

अतिशुद्धिनिमोर्त्तवतव्यपदवत्तः धीयकपायः । अभास्योपमत्वा । अवधिज्ञानिभोर्त्तवतव्यपदवि
वैतथ्यवत्तः । अभास्यवत्तः । अ नि १ ८ अणुदिमदिमुत्तरीता पत्तातंवेज्जा ३ यी जी ४६१
भीरिपिदि शिरिका अदिनामिअतधमावय वत्तया । तंवेज्जा ६ तत्ता मरिजनी मोरेविरिवात्तं ३ यी जी ४६२

असंख्येयसंख्येयमा भवति । तासि संख्येय निर्युतमसंख्येयसंख्येयमेवा । कथय
मेवाणि पञ्चगुलाणि । पटिदोषयस्त असंख्येयदिमागमचाणि । तदो देवमिच्छाद्विरासीदो
विहगगायमिच्छाद्विरासीदो विसेसादिमा भवति । विहगगायमिरिददवापञ्चरासि अर-
इय-तिरिक्तविहगगायमिहो अमयेयगुण देवहिता अपविद देवेहि सादिरयच य पडिदि पि
पारसकमिन्त्र, विहगगायमिरस्तानिचिकरयय विहगगायमिदवा गहगाय । वेउमियमिस्त
रासिस्त सांतरयेय, दवपञ्चरासि सग्यकस्तमसंमया य । एदमस्त अगहारकस्तो पुषद ।
सं अह— देवमिच्छाद्विरासीदमवहारकस्तमिह पगपदगुलं वेतूय असंख्येयगह करिय तन्वेग
संख्येयमिय पदगुलं समिह येन पकिरये विहगगायमिच्छाद्विरासीदवहारकस्तो होदि ।
एदेय अगपदरे मागे हिदे विहगगायमिच्छाद्विरासी आगच्छदि ।

सामणसम्माद्विती ओघ ॥ १४३ ॥

ओघमासपमम्माद्विरासीदो अदि वि एमो सामणसम्माद्विरासी अप्पमो अस-

असंख्यातवै मागप्रमाण होते हुए भी असंख्यात क्षेत्रप्रमाण होते हैं । उन असंख्यात
क्षेत्रोंकी निर्णयसूची असंख्यात घनांगुलप्रमाण है । वे असंख्यात घनांगुल कितने
होते हैं ? पस्योपमके असंख्यातवै मागप्रमाण होते हैं । अतएव देव मिच्छाद्वि जीवराशिसे
विमगजानी मिच्छाद्वि जीवराशि विशेष अधिक होती है । बारक और तिर्बक विमगजावियोंसे
विमगजानसे रहित देव अपर्याप्त राशि असंख्यातगुणी है । अतएव उसे देवराशिमैले प्रमा
देने पर देवोंसे साधिक विमगजावियोंका प्रमाण नहीं बन सकता है इसप्रकार भी मागप्रमा
नहीं करनी चाहिये क्योंकि, प्रहृतम विमगजानी शब्दकी व्याप्ति कर क्षेत्रसे निर्मगजानी
क्षेत्रोंका प्रहृत किया है । दूसरे वैद्विधिकमिन्न राशि समुत्तर होकरके कारण देव अपर्याप्त जीव
समर्था पाये भी नहीं आते हैं इसलिये विमगजावियोंका प्रमाण देवोंसे साधिक है इस कथनमें
भी कोई बाधा नहीं पारी है ।

यह विमगजानी मिच्छाद्वि राशिमा अवहारकाय कहते हैं । यह इसप्रकार है— देव
मिच्छाद्वि राशिमैले एक प्रहृतगुलको प्रहृत करके और वस्तुके असंख्यात रीह करके उसमेंसे
एक बंडको निष्काय कर बहुभाग उसी देव मिच्छाद्वि अवहारकायमें मिला देने पर विमगजानी
मिच्छाद्विविर्बोध्य अवहारकाय होता है । इस अवहारकायसे अगप्रतरके माजित करने पर
विमगजानी मिच्छाद्वि जीवराशि व्यती है ।

विमगजानी सासादनसम्पगद्वि जीव ओघप्ररूपणाके समान पस्योपमके अर्ध
ख्यातवै मागप्रमाण हैं ॥ १४३ ॥

ओघ सासादनसम्पगद्वि राशिसे पचापि यह विमगजानी सासादनसम्पगद्वि राशि

खेजदिमाएण तिरिक्ख मणुसदुआणिपमाणेण हीणो, तो वि पछिसेवमस्स असंसेजदि मागमेवचपेण दोणं पि रासीण पच्चासत्ती अत्थि पि ओषमिदि पुच्चदे ।

अभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि ओहिणाणीसु असंजदसम्माइडि पण्हि जाव स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्या त्ति ओष ॥ १४४ ॥

आभिणिबोहिय-सुदणाणीण पमाणस्स ओषच जुअदे, तेहि विरहिद असजदसम्मा इडिअर्दणमणुबलमादो । ण पुण ओहिणाणीण ओषच जुअदे, ओहिणाणविरहिदतिरिक्ख मणुस्ससम्माइडिणमुबलमा ! ण एस दोसा, बहुमो दलुचरादो ।

एदेसिमवहारकालुप्पची बुब्बे । तं अहा—आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिअमज्जद सम्माइडिअवहारकालो ओषअसंजदसम्माइडिअवहारकालो चेव मवदि । तमिह आवसिपाए असंसेजदिमाणेण मागे हित छद तमिह चेव पक्खिचे ओहिणाणिअसजदसम्माइडिअवहार

अपने असक्यातवें मागएण मयज्जान और भुताजान इन दो अज्ञानोंसे युक्त तिरिक्ख और मनुष्योंके प्रमाणसे हीन है तो भी पस्योपमके असक्यातवें मागएणकी अपेक्षा ओषसासाधनसम्पदएणि पाछि और विमंगज्जानी सासाधनसम्पदएणि राखि इन दोनोंकी प्रत्याधत्ति पार जाती है, इसलिये सूत्रमें ओष देखा कहा है ।

आभिनिबोधिक्खानी, भुतजानी और अवधिज्जानी तीनोंमें असंयतसम्पदएणि गुणस्थानसे लेकर धीणपपाय बीतराग छदस्स गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें औष ओषग्रूपपथाके समान है ॥ १४४ ॥

शुद्ध — आभिनिबोधिक्ख और भुतजानी तीनोंके प्रमाणके ओषपना बन जाता है क्योंकि इन दोनों ज्ञानोंके बिना असंयतसम्पदएणि आवि गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । परंतु अवधिज्जानियोंके प्रमाणके ओषपना नहीं बन सकता है क्योंकि अवधिज्जानसे रहित तिरिक्ख और मनुष्य सम्पदएणि पाये जाते हैं ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि इस प्रकारके प्रत्येक अनेकवार उत्तर दे पाये हैं ।

अब इनके अवहारकालोंकी व्याप्तिको कहते हैं । यह इसप्रकार है—ओष असंयत सम्पदएणि तीनोंका अवहारकाळ ही आभिनिबोधिक्खानी और भुतजानी तीनोंका अवहारकाळ होता है । इनके आरंभके असंख्यातवें मागसे माजित करने पर जो सम्पद व्यापे उसे सभी अवहारकाळमें मिला देने पर अवधिज्जानी असंयतसम्पदएणियोंका अवहारकाळ होता है ।

मत्तिमुत्तिहमिबोअवहारकालेअवहार धीणपपायसा अमज्जदसम्मा अवधिज्जानिओअवहारकाले
ईवजानवत्तत्ता-सम्माअवत्तत्ता । अ म् १ ४ ५ एणरिमिदुरवोता वक्कानवोअवत्ता ॥ मी जी ५६१
ओएरिदि तिरिक्खा वरिणापिअवत्तत्तावत्ता । अवेत्ता ॥ एवत्ता वरिणा जीओएरिक्ख मी जी. ५६२

कालो होदि । तस्मि आवलियाए असंखेज्जदिमागेण गुणिद (मिस्समदि-सुदमण्णापि-)
सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो हादि । तस्मि आवलियाए असंखेज्जदिमाएण मागे हिदे सद्ध
येव पक्खित्ते मिस्सतिणागिसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो हादि । तस्मि संखेज्जरूपहि गुणिद
मदि-सुदमण्णापिमासजमम्मद्विअवहारकालो हादि । तस्मि आवलियाए असंखेज्जदिमाएण
मागे हिदे लद्धं तस्मि चव पक्खित्ते रिङ्गणागिनामजमम्मद्विअवहारकालो हादि ।
तस्मि आवलियाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे अतिमिणागिमासजमम्मद्विअवहारकालो
अवहारकालो हादि । तस्मि आवलियाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे आदिणागिसंज्जदसज्जद
अवहारकालो हादि । अहवा ओषमसज्जदमम्मद्विअवहारकालो तस्मि आवलियाए असंखेज्जदि
माएण मागे हिदे लद्धं तस्मि चव पक्खित्ते तिणागिसंज्जदसम्मद्विअवहारकालो होदि ।
तस्मि आवलियाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे मिस्सतिणागिसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो
होदि । तस्मि संखेज्जरूपहि गुणिदे तिणागिसासजमम्मद्विअवहारकालो होदि । तस्मि आवलि-
याए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे दुणागिसज्जदसम्मद्विअवहारकालो होदि । तस्मि आवलियाए
असंखेज्जदिमाएण गुणिदे मिस्सदुणागिसम्मामिच्छाद्विअवहारकालो हादि । तस्मि संखेज्ज-
रूपहि गुणिदे दुणागिसासजमम्मद्विअवहारकालो होदि । तस्मि आवलियाए असंखेज्जदि

इस व्यवधानी असंखतसम्पत्तिषोके अवहारकाद्ये व्यवहारीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित
करने पर मिश्र हो जानी सम्पत्तिष्यादृष्टिषोका अवहारकाद्य होता है । इसे व्यवहारीके असं-
ख्यातर्षे भागसे भाजित करने पर जो छप्प भागे इसे उसी अवहारकाद्यमें मिला देने पर
मिश्र तीन जानबाके सम्पत्तिष्यादृष्टिषोका अवहारकाद्य होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने
पर मत्पदानी और ध्रुतदानी सासाद्वसम्पत्तिषोका अवहारकाद्य होता है । इसे व्यवहारीके
असंख्यातर्षे भागसे भाजित करने पर जो छप्प भागे इसे उसी अवहारकाद्यमें मिला देने पर
निम्नदानी सासाद्वसम्पत्तिषोका अवहारकाद्य होता है । इसे व्यवहारीके असंख्यातर्षे
भागसे गुणित करने पर आभिनिजोधिद्विजानी और ध्रुतदानी संख्यातस्यतोका अवहारकाद्य
होता है । इसे व्यवहारीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने पर व्यवधानी संख्यातस्यतोका
अवहारकाद्य होता है । अथवा ओष असंखतसम्पत्तिषोके अवहारकाद्यके व्यवहारीके
असंख्यातर्षे भागसे भाजित करने पर जो छप्प भागे इसे उसी ओष असंखतसम्पत्तिषोके
अवहारकाद्यमें मिला देने पर तीन जानबाके असंखतसम्पत्तिषोका अवहारकाद्य होता है । इसे
व्यवहारीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने पर मिश्र तीन जानबाके सम्पत्तिष्यादृष्टिषोका
अवहारकाद्य होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर तीन जानबाके सासाद्वसम्पत्तिषोका
अवहारकाद्य होता है । इसे व्यवहारीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने पर दो जानबाके
असंखतसम्पत्तिषोका अवहारकाद्य होता है । इसे व्यवहारीके असंख्यातर्षे भागसे गुणित करने
पर मिश्र दो जानबाके सम्पत्तिष्यादृष्टिषोका अवहारकाद्य होता है । इसे संख्यातसे गुणित

मायण गुणिदे दुष्पाणिसंजडासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आबलियाए असंखेज्जदि
मायण गुणिदे विणाणिसंजडासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पल्लिदोममे
माणे हिदे सग-सगरासीओ इहंति । पमत्तादीण पमाणं ओषमव मवदि, विसेसामापादो ।
आहिणाणिमपमत्तादीण पि ओषच पचे सप्पडितेहङ्गुचत्सुच मणदि—

णवरि विसेसो, ओहिणाणिसु पमत्तसजदप्पहुडि जाव खीणकसाय
वीपरायच्छदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १४५ ॥

ओहिणाणिणो पमत्तसंजदा अपमत्तसंजदा च सग-सगरासिस्स संखेज्जदिमाणमेवा
मवति । किंतु एतिया इदि परिच्छुद्ध ण लक्ष्येति, सपडियकाले गुरुवपसामापादो । णवरि
ओहिणाणिमो उवसामगा चोदस १४, खबगा अट्ठवीस २८ ।

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग
च्छदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १४६ ॥

पमत्तापमत्तगुणद्वारेण मणपज्जवणाणिणो सत्थङ्गियदुणात्थीर्णं संखेज्जदिमाणमेवा

करने पर हो जानवाले सपत्तासंपत्तोंका अवहारकाल होता है । इसे व्याख्याते असंख्यातमें
मायसे गुणित करन पर तीन जानवाले सपत्तासंपत्तोंका अवहारकाल होता है । इन अवहार
कालमें पूयक् पूयक् पस्योपमके माजित करने पर अपनी अपनी राशियाँ जाती हैं । प्रमत्तसंपत्त
व्यक्तिका प्रमाण ओषमव ही होता है क्योंकि वहाँ विशेष का अभाव है । अवधिज्ञानी प्रमत्तसंपत्त
व्यक्तिके प्रमाणको ओषमत्वकी प्राप्ति होने पर इसका प्रतिरोध करनेकेलिये व्यंग्यका सूत्र कहते हैं—

इतना विशेष है कि अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंपत्त गुणस्मानसे लेकर खीणकपाय
वीतराग छद्मस्य गुणस्मानतक प्रत्येक गुणस्मानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं ? सख्यात हैं ॥ १४५ ॥

अवधिज्ञानी प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त जीव अपनी अपनी राशिके सख्यातमें
मागमाण होते हैं किंतु वे इतने ही होते हैं यह स्पष्ट नहीं जाना जाता है । क्योंकि वर्तमान
कालमें इसप्रकारका गुणका अपेक्षा नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि अवधिज्ञानी
अप्रमाणक लौकिक और अल्पक अङ्गुलिस होते हैं ।

मनःपर्यायज्ञानियोंमें प्रमत्तसंपत्त गुणस्मानसे लेकर खीणकपाय वीतराग छद्मस्य
गुणस्मानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १४६ ॥

प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त गुणस्मानमें मनःपर्यायज्ञानी जीव वहाँ स्थित हो

१ प्रमत्तसंपत्तया खीणकसायताः तत्त्वदा । ४ सि १ ८

२ मनःपर्यायज्ञानिनाः प्रमत्तसंपत्तया खीणकसायताः तत्त्वदाः । ४ सि १, ८ मपमत्ता
अपेक्षा ॥ गो. जी ४६१

भवति, लक्ष्मिपञ्चरासीनां बहुममसंभवतो । ते च एतिया इति सम्मं च शब्दंति, संप-
दियकाले उवप्यमावातो । पवति ममपञ्चरासीनां उवसामगा दस १०, खडगा २० ।

केवलगाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७॥

सुगममिदं सुच ।

मागामार्गं वचइस्सामा । सञ्जजीपरासिमणत्तुं कए बहुत्तुं मदि-सुदमण्यापि-
मिच्छइत्तिगो भवति । ससमसंखज्जत्तुं कए बहुत्तुं कवत्तुमापिगो भवति । सेसम-
संखज्जत्तुं कए बहुत्तुं विमंगवापिमिच्छइत्तिगो होति । सेसमसंखज्जत्तुं कए
बहुत्तुं आभिविरोहिय-सुदपापिअसंखज्जत्तुमापिगो भवति । ते चैव पठिरासि काल्म
आवत्तियाए अत्तंखज्जदिमाएय भाग हिदे लद्धं तमि चैव अविदे आहियापिअसंख
सम्माइत्तिगा होति । सेस संखज्जत्तुं कए बहुत्तुं मिस्सदुगापिसम्मापिमिच्छइत्तिगो
होति । ते चैव पठिरासि काल्म आवत्तियाए अत्तंखज्जदिमाएय भागे हिदे लद्धं तमि

ज्ञानपाठे जीवोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं क्योंकि अविदेसंपन्न राशिवां बहुत नहीं हो
सकती हैं । फिर भी ये इतने ही होते हैं यह ठीक नहीं जाना जाता है क्योंकि वर्तमानकालमें
इसप्रकारका बफेरा नहीं पाया जाता है । इतना विचार है कि मत्पपपञ्चानी उपशामक
वरा और सपन्न वीर होते हैं ।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओषधरूपकाके समान
हैं ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अत्र मागामार्गको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अवन्त खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग मत्पञ्चानी और सुताञ्चानी मिथ्याएदि जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
विमंगवापि मिथ्याएदि जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
अभिविरोधिकाजी और सुतञ्चानी असंयतसम्पददि जीव हैं । इन्हीं अभिविरोधिकाजी
और सुतञ्चानी असंयतसम्पददिपात्री प्रतिपत्ति करके और वसे भाषणीके असंख्यातवें
भागसे माहित करने पर जो लब्ध होते उसे उसी प्रतिपत्तिमेंसे घटा देने पर अवधिज्ञानी
असंयतसम्पददि जीवपत्ति होती है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मित्र
वा ज्ञानपाठ सम्पत्तिमिथ्याएदि जीव होते हैं । इन्हीं मित्र हो ज्ञानपाठे जीवोंके प्रमाणकी
प्रतिपत्ति करके और उस अवधिके असंख्यातवें भागसे माहित करने पर जो लब्ध होते

१ प्रतिपत्ति एदि इति च ।

२ केवलज्ञानी जीवोंको अवन्तमत्र ज्ञानपाठकता । त नि १ < केवलीको निश्चयी होति

अतिरिक्त १ गो जी. ४९८.

मर्हति, लक्ष्मिपञ्चरासीय बहुपमर्ममवाधो । स च एषिया इति सम्मं ज गच्छति, सप
हियकाळ उपपमामावाधो । गच्छति मणपञ्चरासीय उपसामगा दस १०, खवगा २ ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओध ॥ १४७॥

सुगममिदं सुच ।

मागामागं वचस्सामो । सण्डीपरासिमणतण्डे कए बहुखडा मदि-सुदवणाभि-
मिच्छाद्विणो मर्हति । सेममर्ममण्डलं कए बहुखडा केवलमाणिगो मर्हति । सेसम-
संखेजखंड कए बहुखडा विमंगणाभिमिच्छाद्विणो होंति । सेसमसंखेजखंडे कए
बहुखडा आभिनिषोहिय-सुदवाणिजखंडसम्माद्विणो मरति । से सेव पदिरासिं कळ्म
जावलिपाए असखे-जदिमाएण भागे हिदे उइं तम्हि सेव अरभिदे ओहिपाणिजखंड
सम्माद्विणो होंति । सेसं संखजखंडे कए बहुखडा मिस्सदुवाणिसम्माभिच्छाद्विणो
होंति । से सेव पदिरासिं कळ्म जावलिपाए असखेजदिमाएण भागे हिदे उइं तम्हि

जावलासे जीवोंके संपातबे मागमाग होते हैं क्योंकि, छत्रिसंपन्न राशिवां बहुत मर्ही हो
सकती हैं । फिर मी वे इतने ही होते हैं यह ठीक मर्ही जाना जाता है क्योंकि वर्तमानकाळमें
इसप्रकारका उपदेश मर्ही पाया जाता है । इतना विशेष है कि मन्त्रार्थमन्त्रांनी उपशामक
एव और क्षयक बीज होते हैं ।

केवलमानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओषधरूपणाके समान
हैं ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अथ मागामागको मतझाते हैं— सर्व जीवराशिक अलग खंड करने पर उबमेंसे
बहुमाग मन्त्रवाणी और श्रुतवाणी मिथ्याद्वि जीव हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने
पर इनमेंसे बहुमाग केवलवाणी जीव है । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर बहुमाग
विमंगवाणी मिथ्याद्वि जीव हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर बहुमाग
आभिनिषोधिकवाणी और श्रुतवाणी असंयतसम्पन्नद्वि जीव हैं । इन्हीं आभिनिषोधिकवाणी
और श्रुतवाणी असंयतसम्पन्नद्विपारी प्रतिपत्ति करके और उसे बाबलीके असंख्यातबे
भागसे यात्रित करने पर जो कल्प आवे उसे उसी प्रतिपत्तिमेंसे पड़ा देने पर अवधिवाणी
असंयतसम्पन्नद्वि जीवपत्ति होती है । दोष एक मागके संपात रीति करने पर बहुमाग मिथ
वा ज्ञानपास सम्पन्निमिथ्याद्वि जीव होते हैं । इन्हीं मिथ हो ज्ञानपासे जीवोंके प्रमावकी
प्रतिपत्ति करके और उसे बाबलीके असंख्यातबे मापसे यात्रित करने पर जो कल्प आवे

१ प्रति १ उइं इति पाठः ।

२ केवलवाणी वरुणा वचस्साम वचस्सामवचस्साम । त नि १८ केवली शिवादी होंति
अतिरेण ॥ नो. ४६१

अथ अविदे मिस्रतिपाणिसम्माभिच्छाद्विहोति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माद्विहोति । ते चेष पडिरासिं काऊण आवलियाए अंसं सज्जदिमाण भाग हिदे लट्ठ तम्हि चेष अविदे विमगणाणिमासणसम्माद्विहोति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदण्णाणिसंजदसंजदा होति । सेसम संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओहिणाणिसंजदसंजदा होति । सेस ज्ञानिय वचन्व ।

अथा सञ्चजीवरासिमणतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाद्विहोति । सेसममणतखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिमो मवति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विहंगमाभिमिच्छाद्विहोति । सेसममसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिअसज्जदसम्मा द्विमा होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसम्माभिच्छाद्विहोति । सेसम मसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिणाणिसामणधम्माद्विहोति । सेसममसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिअअदसम्माद्विहोति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणि सम्माभिच्छाद्विहोति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसामणसम्माद्विहोति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसज्जदसंजदा होति । सेसमसंखेज्जखंडे

उसे उसी प्रतिपक्षिमेंसे घटा देने पर मित्र तीन ज्ञानवाले सम्प्रतिष्ठाद्वि जीव होते हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मलयजानी और भुताजानी सासादनसम्प्र गदि जीव होने हैं। उन्हीं मलयजानी और भुताजानी सासादनसम्प्रगदि जीवराशिही प्रतिपक्षि करके और उसे उसी भाषसीके असंख्यातमें भागसे भाजित करने पर जो सम्प्र भाषे उसे उसी प्रतिपक्षिमेंसे घटा देने पर विमगजानी सासादनसम्प्रगदि जीव होने हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आमिनिपेतिपक्षजानी और भुताजानी संपत्तासंपत्त होते हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मयधियानी संपत्तासंपत्त जीव होते हैं। दोप मयधियानी ज्ञानवर कथन करना चाहिये। मयधिया सध जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मलयजानी और भुताजानी मिध्याद्वि जीव हैं। दोप एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलजानी जीव हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विमगजानी मिध्याद्वि जीव हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले असंयतसम्प्रगदि जीव हैं। दोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सम्प्रतिष्ठाद्वि जीव हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सासादनसम्प्रगदि जीव हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले असंयतसम्प्रगदि जीव हैं। दोप एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सम्प्रतिष्ठाद्वि जीव हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सासादनसम्प्रगदि जीव हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले संपत्तासंपत्त जीव हैं। दोप एक भागके असंख्यात खंड



अथ बहुवचनं विष्णोःसर्वदासंज्ञदा होति । सेस आभिय बत्तरी ।

अप्यबहुवचनं त्रिविधं सत्त्वादिभेदेण । मदि-सुदअप्याणीसु सरयाण बत्तिय । अरय पुनमभिर्द । सासपसम्मप्रक्षितस्याप्याबहुगे आपमगो । विमंगणाविमिच्छाद्विहृति सत्त्वावस्त देवमिच्छाद्विहृति सत्त्वाणमंगो । तिगलीसु मदि-सुदगानीसु च अतंजदसम्मा इक्षि-संज्ञदासंज्ञदेसु सत्त्वाणमोर्ध । सत्त्वाप्याबहुगं गद ।

परत्वाणे पयर्द । सम्बत्तोषो मदि-सुदअप्याणिसासणसम्माइक्षिअवहारकात्ता । दम्भमस्येज्जगुण । पस्सिओवममसंयज्जगुण । मिच्छाइक्षिदम्भमसंयज्जगुण । सम्बत्तोषो विमंगणाविसासपसम्मप्रक्षितअवहारकात्तो । दम्भमस्येज्जगुण । पस्सिओवममसंयज्जगुण । विमंगणाविमिच्छाद्विहृतिअवहारकात्तो अस्येज्जगुणो । विहृतिमस्येज्जगुणो । (सेरी अत्तसेज्जगुणो ।) दम्भमस्येज्जगुण । पदरमस्येज्जगुण । लामो अस्येज्जगुणो । सम्बत्तोषो मदि-सुदगानीसो' चत्तारि उपसामगा । दम्भमस्येज्जगुणो । अप्पमस्येज्जगुणो ।

करने पर बहुमात्र तीन ज्ञानवाले संयतासंयत जीव हैं । योग्यता जानकर कथन करना चाहिये । स्वस्यान ध्यायिके मेधस अस्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे मत्पक्षानी और भुतापानी जीवोंमें स्वस्यान अस्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कारण पहले कहा जा चुका है । मत्पक्षानी और भुतापानी सासाधनसम्पत्तिधियोंका स्वस्यान अस्पबहुत्व योग्य स्वस्यान अस्पबहुत्वके समान है । विमंगणाणी मिष्पाद्विहृतिधियोंका स्वस्यान अस्पबहुत्व वेच मिष्पाद्विहृतिधियोंके स्वस्यान अस्पबहुत्वके समान है । तीन ज्ञानवाले अतंजतसम्पत्ति और संयतासंयतोंमें तथा मति और भुत इन दो ज्ञानवाले असंयतसम्पत्ति और संयतासंयतोंमें स्वस्यान अस्पबहुत्व योग्यस्वस्यान अस्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार स्वस्यान अस्पबहुत्व समान हुआ ।

अथ परम्प्यानमें अस्पबहुत्व प्रकृत है—मत्पक्षानी और भुतापानी सासाधनसम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ सबसे स्तोत्र है । उन्हींका द्रव्य अवहारकाळसे अतंजपातगुण्य है । पस्सोपम द्रव्यप्रमाणसे अतंजपातगुण्य है । मत्पक्षानी और भुतापानी मिष्पाद्विहृतिधियोंका द्रव्य पस्सोपमसे अतंजपातगुण्य है । विमंगणाणी सासाधनसम्पत्तिधियोंका अवहारकाळ सबसे स्तोत्र है । उन्हींका द्रव्य अवहारकाळसे अतंजपातगुण्य है । पस्सोपम द्रव्यप्रमाणसे अतंजपातगुण्य है । विमंगणाणी मिष्पाद्विहृतिधियोंका अवहारकाळ पस्सोपमसे अतंजपातगुण्य है । उन्हींकी विहृतिमस्येज्जगुण्य अवहारकाळसे अतंजपातगुण्य है । (अगमेणी विहृतिमस्येज्जगुण्य है ।) अगमेणीसे उन्हींका द्रव्य अतंजपातगुण्य है । द्रव्यप्रमाणसे अतंजपातगुण्य है । अतंजपातसे अतंजपातगुण्य है । मतिपक्षानी और भुतापानी चार गुणस्यानोंके उपशामक सबसे स्तोत्र है । मतिपक्षानी और भुतापानी सपक जीव उपशामकोंसे सत्त्वावगुणे हैं । मतिपक्षानी और भुतापानी अतंजपातगुण्य जीव सपकोंसे सत्त्वावगुणे हैं । मतिपक्षानी और भुतापानी अतंजपातगुण्य जीव

संखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । असज्जदसम्माइद्धिज्जवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
सज्जदासंज्जदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दग्गमसंखेज्जगुण । असंज्जदसम्माइद्धि
दग्गमसंखेज्जगुण । पल्लित्थोवममसंखेज्जगुण । एव चेव ओहिणाभिपरत्थाण पि वत्तमं ।
मणपज्जवणाणिणो सम्भत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसज्जदा
संखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । केवलणाणीसु सम्भत्थोवा सज्जोगिकेवली ।
अज्जोगिकेवली अणत्तगुणा । परत्थाण गद ।

सम्भत्तपरत्थाणे पयद । सम्भत्तपोवा मणपज्जवणाणिउवसामगा दस १० । आहि
वाणिउवसामगा विसैसाहिया १४ । मणपज्जवणाणिखवगा विसैसाहिया २० । आहिणाणि
खवगा विसैसाहिया २८ । मणपज्जवणाणिणो अप्पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । तत्थेव
ओहिणाणिणो विसैसाहिया । मणपज्जवणाणिणो पमत्ता विसैसाहिया । तत्थेव ओहिणाणिणो
विसैसाहिया । कुदो एदमवगम्मदे ? उवसम-खवगसेदिम्हि एदेसिं दोणं णाणाणं एदेणेव

अप्रमत्तसंपत्तौसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और भुतज्ञानी असंयतसम्यग्दर्शियोंका अवहारकाळ
प्रमत्तसंपत्तौसे असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और भुतज्ञानी संयतासंपत्तौका अवहारकाळ असंयत
सम्यग्दर्शियोंके अवहारकाळसे अक्षयातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकाळसे असंख्यातगुणा
है । मतिज्ञानी और भुतज्ञानी असंयतसम्यग्दर्शियोंका द्रव्य संपत्तासंपत्तौके द्रव्यसे असंख्यात
गुणा है । एवोपम असंयतसम्यग्दर्शियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवधि-
ज्ञानियोंके परत्थाण अव्यवहृत्यका भी कथन करना चाहिये । मनाऽपर्ययज्ञानी उपशामक सबसे
स्तोक हैं । मनाऽपर्ययज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । मनाऽपर्ययज्ञानी अप्रमत्त-
संपत्त जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनाऽपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंपत्त जीव अप्रमत्तसंपत्तौसे
संख्यातगुणे हैं । केवलज्ञानियोंमें सज्जोगिकेवली जीव सबसे स्तोक है । सज्जोगिकेवली जीव
सज्जोगिकेवलीयोंसे अवस्तगुणे हैं । इसप्रकार परत्थाण अव्यवहृत्य समाप्त हुआ ।

सर्वपरत्थाणमें अव्यवहृत्य प्रकृत है— मनाऽपर्ययज्ञानी उपशामक जीव सबसे स्तोक
होते हुए बड़ा है । अवधिज्ञानी उपशामक मनाऽपर्ययज्ञानियोंसे विशेष अधिक होते हुए
बड़ा है । मनाऽपर्ययज्ञानी क्षपक विशेष अधिक होते हुए बड़ा है । अवधिज्ञानी क्षपक
विशेष अधिक होते हुए बड़ा है । मनाऽपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंपत्त जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे
सख्यातगुणे हैं । वहाँ पर अर्थात् अप्रमत्तसंपत्त गुणस्थानमें अवधिज्ञानी जीव मनाऽपर्ययज्ञानि-
योंसे विशेष अधिक है । मनाऽपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंपत्त जीव अवधिज्ञानी अप्रमत्तसंपत्तौसे
विशेष अधिक है । वहाँ पर अर्थात् प्रमत्तसंपत्त गुणस्थानमें ही अवधिज्ञानी जीव मनाऽपर्यय-
ज्ञानियोंसे विशेष अधिक है ।

श्रुका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— उपशाम और क्षपक भेदोंमें इन दोनों ज्ञानोंके प्रमाणका प्रकरण इसी

कमेव पमाणपरुषादो । कञ्च कस्यणापुरुषं मन्त्रहा न होति चि न वचम्व, कस्य वि
 कस्यणापुरुषकन्त्रदमवादे । न त्रिषतरेण ममिचारे । तस्स पवित्रियदतिरत्यपवित्रदवादे ।
 दुवाभिससज्जदसम्माद्विअवहारकात्ता असंखेज्जगुणो । विगाणिअसज्जदसम्माद्विअवहार
 कात्ता विसमाहिओ । दुवाभिससम्माभिच्छाद्विअवहारकात्ता असंखेज्जगुणा । विगाभिससम्मा
 मिच्छाद्विअवहारकात्ता विसमाहिओ । दुवाभिससज्जदसम्माद्विअवहारकात्ता ससज्जगुणो ।
 विगाभिससज्जदसम्माद्विअवहारकात्ता विसमाहिओ । दुवाभिससज्जदसम्माद्विअवहारकात्ता असं
 खेज्जगुणो । विगाभिससज्जदसम्माद्विअवहारकात्ता असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमसंखेज्जगुण ।
 एवमवहारकस्यपडिलोमय वेदम्वं सत्त पस्सिदोम स । तदो विहंमवाभिमिच्छाद्विअ
 वहारकात्ता असंखेज्जगुणो । विक्कपमसंखेज्जगुणा । सेही असंखेज्जगुणा । दम्भम
 संखेज्जगुण । पदमसंखेज्जगुण । सेतो असंखेज्जगुणो । केवसवाधिओ अर्गतगुणा ।
 मदि मुदमवाभिमिच्छाद्विओ अजतगुणा ।

एवं वाचमगुणा समता ।

कमसे किया है । कार्य सर्वदा कारणके अनुरूप नहीं होता है यह भी नहीं कहना चाहिये
 क्योंकि कहीं पर भी कारणके अनुरूप कार्य देखा जाता है । जिनान्तरसे व्यभिचार भी नहीं
 जाता है क्योंकि जिनान्तर प्रतिनियत तीर्थसे प्रतिबद्ध होता है ।

अवधिज्ञानी प्रत्यक्षसंपत्तोंसे जो ज्ञानवाले असंपत्तिसम्पन्नादित्योंका अवहारकाळ असंख्यात
 गुणा है । तीन ज्ञानवाले असंपत्तिसम्पन्नादित्योंका अवहारकाळ जो ज्ञानवाले असंपत्तिसम्पन्नादि-
 त्योंके अवहारकाळसे विशेष अधिक है । जो ज्ञानवाले सम्पत्तिसम्पन्नादित्योंका अवहारकाळ
 तीन ज्ञानवाले असंपत्तिसम्पन्नादित्योंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले
 सम्पत्तिसम्पन्नादित्योंका अवहारकाळ जो ज्ञानवाले सम्पत्तिसम्पन्नादित्योंके अवहारकाळसे विशेष
 अधिक है । जो ज्ञानवाले सासादनसम्पन्नादित्योंका अवहारकाळ तीन ज्ञानवाले सम्पत्तिसम्पन्ना
 दित्योंके अवहारकाळसे संख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सासादनसम्पन्नादित्योंका अवहारकाळ
 जो ज्ञानवाले सासादनसम्पन्नादित्योंके अवहारकाळसे विशेष अधिक है । जो ज्ञानवाले
 संपत्तिसंपत्तोंका अवहारकाळ तीन ज्ञानवाले सासादनसम्पन्नादित्योंके अवहारकाळसे
 असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले संपत्तिसंपत्तोंका अवहारकाळ जो ज्ञानवाले संपत्तिसंपत्तोंके
 अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । इन्हीं तीन ज्ञानवाले संपत्तिसंपत्तोंका द्रव्य उन्हींके
 अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहारकाळके प्रतिकोमकमसे पस्सोपमक के
 जाना चाहिये । पस्सोपमसे विमगजानी मिष्णादित्योंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है ।
 उन्हींकी विष्कमसूची अवहारकाळसे असंख्यातगुणी है । अग्रेणी विष्कमसूचीसे असंख्यात
 गुणी है । उन्हींका द्रव्य अग्रेणीसे असंख्यातगुणा है । अगमतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है ।
 लोक अगमतरसे असंख्यातगुण्य है । केवसवाणी लोकसे अजतगुणे है । मत्तवाणी और
 भुतावाणी मिष्णादिति और केवसवातियोंसे अजतगुणे हैं ।

इसप्रकार ज्ञानमार्गका समाप्त हुई ।

सजमाणुवादेण सजदेसु पमत्तसजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि
त्ति ओघ ॥ १४८ ॥

एत्थ ओघदब्बादो ष किंप्पि उज्जमविषं वा अत्थि, भेदशिषणवित्तिसामावदो ।
उदो एत्थ ओघचं शुज्जे ।

सामाहय छेदोवट्ठावणसुद्धिसजदेसु पमत्तसजदप्पहुडि जाव आणि
यट्ठिवादरसांपराहयपविट्ठ उवसमा स्वत्ति ओघ' ॥ १४९ ॥

एत्थ वि ओघचं ण विरुज्जे । कुदो ? दब्बवट्ठियणयावल्लभणेण पडिगहिदेगखमा
सामाप्रयसुद्धिसज्जदा शुज्जति, ते चेय पन्त्रवट्ठियणयावल्लभणेण ति-चदु-पचादिमेएण
पुत्तिस्सज्जमं फालिय पडिगणा छेदोवट्ठावणसुद्धिसज्जदा णाम । तदो दो वि रातीओ
आपराप्पिपमाणदो ण मिज्जति चि ओघच शुज्जे ।

एत्थ चेत्तगा मज्झि-उमयणयावल्लभं किं कमेण भवति, आहो अकमेयेचि ?

सयम मार्गभाके अनुवादसे संपमियोंमें प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अयोगि-
केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओषप्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ १४८ ॥

यहां ओषद्रूपप्रमाणसे कुछ मूल या अधिक प्रमाण नहीं होता है क्योंकि सामान्य
प्रकरणमें मेवका कारणभूत विशेषकी अपेक्षा नहीं होती है इसलिये यहां संयममार्गणामें
सामान्यसे ओषपमा बन जाता है ।

सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयत जीवोंमें प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर
अनिवृत्तिवादरसांपरायिकप्रविष्ट उपक्षमक और क्षपक गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें
जीव ओषप्रमाणके समान संख्यात हैं ॥ १४९ ॥

यहां सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयतोंमें भी प्रमाणकी अपेक्षा ओषाक्ष
विशेषको प्राप्त नहीं होता है क्योंकि प्रत्याधिक मयका अवलम्बन करनेकी अपेक्षा जिन्होंने
मैं सर्व साधकसे विरत हूं इसप्रकार एक धमको स्वीकार किया है वे सामायिकशुद्धिसंयत
को कहते हैं । तथा वे ही जीव पर्यायार्थिक मयके अवलम्बन करनेकी अपेक्षा तीन बार
और पांच भागि मेवप्रमाणसे पहलेके धमको मेव करके स्वीकार करते हुए छेदोपस्थापन
शुद्धिसंयत को कहते हैं । इसलिये वे दोनों पक्षिर्षा ओषाक्षिके प्रम षसे मेवको प्राप्त नहीं
होती हैं इसलिये ओषपमा बन जाता है ।

धृक्का—यहां पर शंकाकार कहता है कि दोनों लक्षण अवलम्बन क्या क्रमसे होता

१ उवपाठवारेण सावविह्वलेपत्ताननद्वितवता प्रयत्तारवोमिहृषिधरात्वा । तावत्तानतवत्ता

२ वि १८ पमत्तसजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि । जी जी ४६

३ अत्थि—उज्जय पाणिन इति पाठ ।

क्रमेण पमात्रपरूपवाद्यो । कश्च कारणाणुरूपं सप्नहा न होदि सि ण वचस्व, कश्च वि
कारणाणुरूपकन्यदसप्नाद्यो । न शिर्वतरेण वमिचारे, तस्स पडिभियदतित्वपडिपइचाद्यो ।
दुवाणिमसखदसम्मद्विअवहारकत्तो अमंखेज्जगुणो । तिगाणिमसअदसम्मद्विअवहार
कत्तो विसेमाहिओ । दुवाणिसम्मामिच्छाद्विअवहारकत्ता असंखेज्जगुणो । तिगाणिसम्मा
मिच्छाद्विअवहारकत्ता विसेमाहिओ । दुवाणिसासवसम्मद्विअवहारकत्तो संखेज्जगुणो ।
तिगाणिसासवसम्मद्विअवहारकत्तो विसेमाहिओ । दुवाणिसंखदासंखदअवहारकत्तो असं
खेज्जगुणो । तिगाणिसंखदासंखदअवहारकत्तो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमसंखेज्जगुण ।
एवमवहारकत्तपडिओमेव वेदम्भं मात्त पत्तिओत्तम ति । तदो विहंगमाणिमिच्छाद्विअव
हारकत्तो असंखेज्जगुणो । विक्खमसई असंखेज्जगुणा । सेही असंखेज्जगुणा । दम्भम-
संखेज्जगुण । पदरमसंखेज्जगुणं । सेगो असंखेज्जगुणो । केवलमाणिगो जपंतगुणा ।
मदि-सुदज्जमाणिमिच्छाद्विओ अपत्तगुणा ।

एवं प्राप्तिमन्त्रा समता ।

क्रमसे किया है । कार्य सर्वदा कारणके अनुरूप नहीं होता है यह भी नहीं कहना चाहिये
क्योंकि कहीं पर भी कारणके अनुरूप कार्य देखा जाता है । विनाशतरसे व्यभिचार भी नहीं
भाता है क्योंकि विनाशतर प्रतिनियत तीर्थसे प्रतिबन्ध होता है ।

अवधिज्ञानी प्रसक्तसंपत्तौसे दो ज्ञानवाले असंपत्तिसम्पत्तिद्विओंका अवहारकाळ असंख्यात
गुणा है । तीन ज्ञानवाले असंपत्तिसम्पत्तिद्विओंका अवहारकाळ दो ज्ञानवाले असंपत्तिसम्पत्ति-
द्विओंके अवहारकाळसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले सम्पत्तिमिध्याद्विओंका अवहारकाळ
तीन ज्ञानवाले असंपत्तिसम्पत्तिद्विओंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले
सम्पत्तिमिध्याद्विओंका अवहारकाळ दो ज्ञानवाले सम्पत्तिमिध्याद्विओंके अवहारकाळसे विशेष
अधिक है । दो ज्ञानवाले साक्षात्तसम्पत्तिद्विओंका अवहारकाळ तीन ज्ञानवाले सम्पत्तिमिध्या-
द्विओंके अवहारकाळसे संख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले साक्षात्तसम्पत्तिद्विओंका अवहारकाळ
दो ज्ञानवाले साक्षात्तसम्पत्तिद्विओंके अवहारकाळसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले
संपत्तासंपत्तौका अवहारकाळ तीन ज्ञानवाले साक्षात्तसम्पत्तिद्विओंके अवहारकाळसे
असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले संपत्तासंपत्तौका अवहारकाळ दो ज्ञानवाले संपत्तासंपत्तौके
अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । अर्द्धी तीन ज्ञानवाले संपत्तासंपत्तौका द्रव्य बन्धि
अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहारकाळसे प्रतिबोधक्रमसे पक्षोपमत्तक से
जाता चाहिये । पक्षोपमसे विर्मगज्ञानी मिध्याद्विओंका अवहारकाळ असंख्यातगुणा है ।
अर्द्धीकी विर्मगज्ञानी अवहारकाळसे असंख्यातगुणी है । जगधेयी विर्मगज्ञानीसे असंख्यात
गुणी है । अर्द्धीका द्रव्य जगधेयीसे असंख्यातगुणा है । जगधतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है ।
बौद्ध जगधतरसे असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानी बौद्धसे अनन्तगुणे है । मत्पज्ञानी और
सुताज्ञानी मिध्याद्वि जीव केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे है ।

इसप्रकार ज्ञानमार्गका समाप्त हुई ।

तेषां दुष्प्रत्ययत्वात् । तदो ज्ञे सामाज्यसुद्विसज्जदा ते ज्ञेय छेदोपस्थापनसुद्विसज्जदा
होति । ज्ञे छेदोपस्थापनसुद्विसज्जदा ते ज्ञेय सामाज्यसुद्विसज्जदा होति चि । तदो दोषं
रासंभ्रमोपच युज्यते ।

परिहारसुद्विसज्जदेसु पमत्तापमत्तसज्जदा द्वयपमाणेण केवढिया,
संस्तेज्जा ॥ १५० ॥

ओषसंजदपमाण ण पावेति चि मणिदं होदि । तो चि ते केचिया चि मणिदे
उपचदे, तिरुवृण सचसहस्समेचा इवति ।

सुद्धमसांपराह्यसुद्विसज्जदेसु सुद्धमसांपराह्यसुद्विसज्जदा उवसमा
स्वा द्वयपमाणेण केवढिया, ओष ॥ १५१ ॥

एत्थ एग सुद्धमसांपराह्यग्गहण अधियारपहुप्पायनहु, अवरेग गुणह्माणभिरैसो ।
तेसि पमाण तिरुवृण-भवसदमेचं । युत्तं च—

येसा नहीं है, क्योंकि येसा मानने पर उनको पुर्ण्यपनेकी व्यापति भा जाती है । इसलिये
जो सामायिकशुद्धिसंयत जीव हैं वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं । तथा जो
छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही सामायिकशुद्धिसंयत होते हैं । अतएव उक्त दोनों
राशियोंके ओषपना बन जाता है ।

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्वयप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात है ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसंयतसे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण ओषसंयतोंके
प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है यह इस सूत्रका तात्पर्य है । तो भी उन परिहारविशुद्धिसंयतोंका
प्रमाण कितना है येसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसंयत तीन कम सात
इकार होते हैं ।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत उपलभ्य और क्षयक
जीव द्वयप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओषप्ररूपकाके समान है ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सूक्ष्मसांपरायिक पक्षका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके
लिये किया है । और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पक्षका ग्रहण गुणस्थानका निर्देशरूप किया
है । उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंका प्रमाण तीन कम भी सी है । कहा भी है—

१ परिहारविशुद्धिसंयतः प्रमत्तसंयतप्रकारेण तस्मैव । त सि १ ८ कथेन वेततिव वदन्त्या
परतप परतस्या टीप्तिं परिहाता ऽ मो. जी ४८

२ सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतः सामान्योपलब्धः । त सि १ ८

य ताव अक्षमेण', विरुद्धेहि भेदाभेदेहि शुगर्वं वयहारानुवचयीदो । अह क्रमेण, य सामा-
 इयसुद्धिसंबदा छेदोवह्वावयसुद्धिसंबदा मवति, एगचन्मवसायाणं मवन्मवसायविरोहदो ।
 छेदोवह्वावयसुद्धिसंबदा वि य सामाप्रयसुद्धिसंबदा ठकाले मवति, भेदन्मवसायाणमभेदन्म-
 वसायविरोहदो । तदो अक्षमेण दोहि णएहि पारिदेपसमदरासी तत्तरेणेण मागेय ओष-
 पमाणं य पावेहि वि ओषय य जुअदे । अय कदाए सग्गो समदरासी अक्षमण एहं पिय
 गयमवसंमिळ्ळय वदि विवुद्धि वि इच्छिअदि, तो एदाओ दुविहसमदरासीओ सांतराओ
 हवति । य य एवं, कालापिआगे एदासिं पिरंतरपुवसमादो । एत्थ परिहारो दुब्बदे । तं
 बहा- दग्गट्टियणए अवसंभेदे सग्गेसिं संअदाणं एकेओ चव समो होदि वि सामाप्रय
 सुद्धिसंबदाय ओषमंअदपमाणं होदि । प-अवट्टियणए अवसंभेदे सग्गेसिं संअदाण पदकं
 पंच पंच अमा हवति वि छेदोवह्वावयसुद्धिसंबदा वि ओषसंअदरासिपमाणं पावेति तेव-
 दसिमापचं जुअद । य य एगं चवन्मवसाया एयत्तेय अप्पपणो पडिबक्खगिरियेक्खा,

है या अक्षममे ? अक्षमसे तो हा नहीं सकता क्योंकि, परस्पर विरुद्ध भव और अभेद इनके
 द्वारा एकसाथ व्यवहार नहीं बन सकता है । यदि क्रमसे होता है तो सामायिक शुद्धिसंयत
 जीव छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं क्योंकि एकत्ररूप परिणामोंका भेदरूप
 परिणामोंके साथ विरोध है । वसीमकार छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव भी ठही समय
 सामायिकशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं क्योंकि, भेदरूप परिणामोंका अभेदरूप परिणामोंके
 साथ विरोध है । इसलिये अक्षमसे दोनों नवींकी अपेक्षा श्लोचसंयतराशि संयममार्गजार्मे एक
 भाषके द्वारा श्लोचप्रमाणको प्राप्त नहीं हो सकती है इसलिये सामायिकशुद्धिसंयतों और
 छेदापस्थापनाशुद्धिसंयतोंका प्रमाण श्लोचप्रमाणपनेको प्राप्त नहीं हो सकता है ? क्याविप
 संयतराशि अक्षमसे एक ही नयका अवलम्बन लेकर पकि रहती है ऐसा भाष चाहते हैं तो ये
 दोनों संयतराशिकां साम्तर हो जाती हैं । परंतु ऐसा है नहीं क्योंकि, क्खानुबोगमें ये
 राशिकां विरुद्ध हैं ऐसा पाया जाता है ?

समाधान—यहां पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं । वह इसप्रकार है— द्रव्यार्थिक
 नयका अवलम्बन करने पर सर्व संयमियोंके एक एक ही पम होता है इसलिये सामायिक-
 शुद्धिसंयतोंके मापसंयतोंका प्रमाण बन जाता है । पदार्थिक नयका अवलम्बन करने पर
 तो सर्व संयमियोंके प्रत्येकके पांच पांच संयम होते हैं इसलिये छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत
 भी श्लोचसंयतराशिके प्रमाणको प्राप्त हो जाते हैं अतएव इन दोनों संयतोंके श्लोचपना बन
 जाता है । कुछ एक जातिके परिणाम एकान्तसे अपने प्रतिपक्षी परिणामोंसे निरपेक्ष होते हैं

तेसिं दुष्णयत्तावचीदो । तदो जे सामाद्यसुद्धिसज्जदा ते येय छेदोबहुवणसुद्धिसज्जदा होति । जे छेदोबहुवणसुद्धिसज्जदा ते येय सामाद्यसुद्धिसज्जदा होति चि । तदो दोष् रसीत्पमोचत शुद्धे ।

परिहारसुद्धिसज्जदेसु पमत्तापमत्तसज्जदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १५० ॥

ओषसज्जपमाणं ण पावेंति चि मणिद होदि । तो वि ते केचिया चि मणिदे उप्पदे, तिरुवृण-सत्तसहस्सेमचा इवेंति ।

सुहुमसापराह्यसुद्धिसज्जदेसु सुहुमसापराह्यसुद्धिसज्जदा उवसमा सवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५१ ॥

एत्थ एगं सुहुमसापराह्यपग्गाहणं अदियत्तपदुप्पापणद्ध, अवरेणं गुणह्माणणिसेतो । तेसिं पमानं तिरुवृण-णवसदमेच । वुत्तं च—

देसा नहीं है क्योंकि, देसा मानने पर इनको पुण्यपनेकी व्यापति या जाती है । इसलिये जो सामायिकशुद्धिसयत जीव हैं वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत होते हैं । तथा जो छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत जीव हैं वे ही सामायिकशुद्धिसयत होते हैं । अतएव उक्त दोनों राशियोंके ओषपना बन जाता है ।

परिहारविशुद्धिसयतोंमें प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत जीव द्व्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसयतसे युक्त प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयतोंका प्रमाण ओषसयतोंके प्रमाणसे प्राप्त नहीं होता है यह इस सूत्रका तात्पर्य है । तो भी उन परिहारविशुद्धिसयतोंका प्रमाण कितना है देसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसयत तीन कम सत्त हजार होते हैं ।

सुहुमसापरायिकशुद्धिसयतोंमें सुहुमसापरायिकशुद्धिसयत उपश्रमक और धूपक जीव द्व्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सुहुमसापरायिक पक्षका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके लिये किया है । और दूसरीवार सुहुमसापरायिक पक्षका ग्रहण गुणस्थानका निर्देशरूप किया है । इन सुहुमसापरायिकशुद्धिसयतोंका प्रमाण तीन कम भी सी है । क्या भी है—

१ परिहारविशुद्धिसयता प्रमत्तसयतसयत संखेज्जाः । इ ति १ < क्येन तेवविप सवहस्सा

पण्डित वरुणका तीसरी पंक्ति ॥ मी जी ४८

२ सुहुमसापरायिकशुद्धिसयता अन्तर्भावसंख्याः । इ ति २ <

सत्तादी सङ्ख्या शेषमन्त्रा य इति परिज्ञा ।

सत्तादी अङ्कता गणमन्त्रा सुहृमराम इ ॥ ७९ ॥

जहावसादविस्तरसुद्धिसजदेसु चतुष्टाणं ओषं' ॥ १५२ ॥

चतुष्टायमिति कथमेगवयगमिरेसो ? न, चतुष्टय पि आदीष्ट एगवमवर्तयिष्य
तथोक्तस्यो । सेसं सुगमं ।

सजदासजदा दन्वपमाणेण केवडिया, ओष ॥ १५३ ॥

सुगममिदं सुचं ।

असंजदेसु मिच्छाद्विट्पिण्डुडि जाव असजदसम्माद्विट्पि ति दन्व
पमाणेण केवडिया, ओष' ॥ १५४ ॥

चतुष्टयमसजदगुणद्वयान्न ओषचतुष्टयगुणद्वयेति अत्रितिद्वयमात्रं श्रुत्वे । एवम

जिस संख्याके आधारमें सात अन्तमें छह बीर मध्यमें दोबार भी हैं इतने नर्पात् छह
हजार मौसी सत्ताचर्चें परिहारविशुद्धिसंयत जीव हैं । तथा जिस संख्याके आधारमें सात
अन्तमें आठ बीर मध्यमें नी है इतने नर्पात् आठवीं सत्ताचर्चें सुहृमरामका जीव है ॥ ७९ ॥

यथास्यात् विहारशुद्धिसंयतोमें ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें और चौदहवें गुण-
स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण ओषप्रकरणोंके समान है ॥ १५२ ॥

प्रका—सुद्धमें चतुष्टय इत्यप्रकार एव वचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि अतिथी अपेक्षा एकत्वका अवलम्बन लेकर चारों गुण
स्थानोंका एक वचनरूपसे उपदेश दिया है । शेष कथन सुगम है ।

संयतासंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओषप्रकरणोंके समान
पस्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १५३ ॥

यह स्पष्ट सुगम है ।

असंयतोंमें मिथ्याद्विट्पि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्द्विट्पि गुणस्थानतक जीव
द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्रकरणोंके समान हैं ॥ १५४ ॥

असंयतजीवोंकी चारों गुणस्थान ओष चारों गुणस्थानोंके समान हैं इसलिये असंयत
चारों गुणस्थानोंके प्रमाणके ओषपना बन जाता है । अब यहाँ पर अवधारकाका कौन
कौन

१ यथासंयतविहारशुद्धिसंयतः । अ ति १ <

२ संयतजीवः । अतिथीः । अ ति १ यथासंयतविहारशुद्धिसंयतः । अ ति १ <

३ अतिथीः । अतिथीः । अ ति १ < इत्युक्तमिति । अतिथीः । अ ति १ <

४ अतिथीः । अतिथीः । अ ति १ < इत्युक्तमिति । अतिथीः । अ ति १ <

अवहारकात्तुप्यपी युष्मदे । त अहा—सिद्ध-तेरसगुणपतिवष्णुरासि मिच्छाद्द्विरासिमज्जिद
तन्मग्ना च सम्भजीवरासिस्सुवरि पत्तिखेपे मिच्छाद्द्विधुवरासी होदि । सासनादीणमवहार
कात्तुप्यपी ओषसमाणा । एवं सज्जदासंज्जदाण पि ।

मागामागं वचस्सामो । सम्भजीवरासिमवत्संखे कए बहुसंखं मिच्छाद्द्विणो
होति । सेसमगतसंखे कए बहुसंखं सिद्धा होति । सेसमसंखेज्जसंखे कए बहुसंखं
असंज्जदा होति । सस संखेज्जसंखे कए बहुसंखं सम्मामिच्छाद्द्विणो होति । सेसम-
संखेज्जसंखे कए बहुसंखं सासणसम्माद्द्विणो होति । सेसमसंखेज्जसंखे कए बहुसंखं
संज्जदासंज्जदा होति । सेसं संखेज्जसंखे कए बहुसंखं सामादय-छंदोवद्वावयसुद्धिसंज्जदा
होति । सेसं संखेज्जसंखे कए बहुसंखं जहाफखादसुद्धिसंज्जदा होति । सेम संखेज्जसंखे
कए बहुसंखं परिहारया होति । (सेसगसंखं सुद्धमसांपरादयसुद्धिसंज्जदा होति ।)

अप्यावहुग तिबिई सत्याणादिभेएय । सत्य सत्याणे पयत् । सज्जदाण सत्याणं
अरिय, अवहारामावादो । मिच्छाद्द्विण पि सत्याणं गतिव, रासीदो मागद्वारस्स बहुवादो ।
सासणसम्माद्द्विमादि करिय जाव सज्जदासज्जदा पि एदेसि सत्याणस्स ओषमग्गो ।

कहते हैं । वह इसप्रकार है—सिद्धराशि भीर सासादनसम्पगद्वि भावि तेरह गुणस्थानपत्ती
राशिको तथा मिष्साद्वि राशिसे भाजित सिद्ध भीर तेरह गुणस्थानपत्ती राशिके पगको सूर्य
जीवराशिमें मिळा देने पर मिष्साद्विराशिकी भूषराशि होती है । सासादनसम्पगद्वि भाविके
अवहारकात्तुप्यपी उत्पत्ति ओष सासादनसम्पगद्वि भावि अवहारकात्तुप्यपी उत्पत्तिके समान है ।
इसीप्रकार संयतासंयतोंके अवहारकात्तुप्यकी उत्पत्ति भी समझना चाहिये ।

अब मागामागको बतलाते हैं—सब जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुमाग
मिष्साद्वि जीव होते हैं । दोष एक मागके अनन्त खंड करने पर बहुमाग सिद्ध जीव होते हैं ।
दोष एक मागके नसंख्यात खंड करने पर बहुमाग असंयतसम्पगद्वि जीव होते हैं । दोष एक
मागके संख्यात खंड करने पर बहुमाग सम्पग्मिमिष्साद्वि जीव होते हैं । दोष एक मागके
नसंख्यात खंड करने पर बहुमाग सासादनसम्पगद्वि जीव होते हैं । दोष एक मागके
नसंख्यात खंड करने पर बहुमाग संयतासंयत जीव होते हैं । दोष एक मागके संख्यात खंड
करने पर बहुमाग सामादिक भीर छंदोवद्व्यापनाशुद्धिसंयत होते हैं । दोष एक मागके संख्यात
खंड करने पर बहुमाग यथाप्यातशुद्धिसंयत होते हैं । दोष एक मागके संख्यात खंड करने पर
बहुमाग परिहायविशुद्धिसंयत होत हैं । (दोष एक माग सवमसांपरादयसुद्धिसंयत हैं ।)

स्वस्थान अत्यवहुत्वं भाविके मेवसे अदरवहुत्वं तीन प्रकारका है । उनमेंसे पहला
स्वस्थान अत्यवहुत्वं प्रकृत है—संयत जीवोंके अवहारकात्तुप्य अमाय होनेसे स्वस्थान
अत्यवहुत्वं नहीं पाया जाता है । मिष्साद्विओंके भी स्वस्थान अदरवहुत्वं नहीं है क्योंकि
मिष्साद्वि राशिसे भागद्वार बहुत बड़ा है । सासादनसम्पगद्वि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत
गुणस्थानतक इन जीवोंका स्वस्थान अत्यवहुत्वंनामाग्य स्वस्थान अत्यवहुत्वंके समान है ।

परत्वाये पयद । सम्प्रत्योवा सामादय-छेदोपस्थापनमुद्रिसंज्ञदठवसामगा । तसि खगगा संखेज्जगुणा । अपमचसबदा संखेज्जगुणा । पमचसंज्ञा संखेज्जगुणा । परिहार मुद्रिसंज्ञेसु सम्प्रत्योवा अपमचसंज्ञा । पमचसंज्ञा संखेज्जगुणा । सुहुमसांपराप्रयमुद्रि संज्ञेसु सम्प्रत्योवा उवसामगा । खगगा संखेज्जगुणा । जहाकसादसज्ज्ञेसु सम्प्रत्योवा उवसामगा । खगगा संखेज्जगुणा । सज्ज्ञेगिकेवली संखेज्जगुणा । संज्ञासंज्ञेसु परत्वाय यति । असंज्ञेसु सम्प्रत्योवा असंज्ञसम्माद्विज्वहारकालो । सम्मामिच्छाद्विज्वहारकालो असंज्ञेज्जगुणो । सासाधसम्माद्विज्वहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव इम्ममसंखेज्जगुण्य । एवं नेयम्भं आन पल्लोवमं ति । तदो मिच्छाद्वि अमत्तगुणा ।

सम्प्रपरत्वाये पयद । सम्प्रत्योवा सुहुमसांपराप्रयमुद्रिसंज्ञा । परिहारमुद्रिसंज्ञा संखेज्जगुणा । जहाकसादमुद्रिसंज्ञा संखेज्जगुणा । सामादय छेदोपस्थापनमुद्रिसंज्ञा दो वि तुहा संखेज्जगुणा । असंज्ञसम्माद्विज्वहारकालो असंज्ञेज्जगुणो । एवं नेयम्भं आन पल्लोवमं ति । तदो उवरि मिच्छाद्वि अमत्तगुणा ।

एव संज्ञममगावा गदा ।

अब परस्थानमे अमरसंग्रहमे प्रकृत है— सामादिक बीर छेदोपस्थापनमुद्रिसंज्ञपत उपशामक जीव सज्ज्ञे स्तोत्र है । जन्मीके सपक उपशामकसे संख्यातगुणे है । ये ही अमरसंज्ञपत जीव सपकसे संख्यातगुणे है । ये ही अमरसंज्ञपत जीव अमरसंज्ञपतोंसे संख्यातगुणे है । परिहारविशुद्धिसंज्ञपतोंमें अमरसंज्ञपत जीव सज्ज्ञे स्तोत्र है । अमरसंज्ञपत जीव इनसे संख्यातगुणे है । सज्ज्ञेसंपराधिकमुद्रिसंज्ञपतोंमें उपशामक जीव सज्ज्ञे योके है । सपक जीव इनसे संख्यातगुणे है । यथाक्यात संज्ञातमें उपशामक जीव सज्ज्ञे योके है । सपक जीव उपशामकसे संख्यातगुणे है । सज्ज्ञेगिकेवली जीव सपकसे संख्यातगुण है । संज्ञासंज्ञपतोंमें परस्थान अमरसंग्रहमे वही पाया जाता है । असंज्ञपतोंमें असंज्ञसंज्ञाद्विज्वहारकाल सज्ज्ञे स्तोत्र है । सम्मामिच्छाद्विज्वहारकाल असंज्ञ सज्ज्ञाद्विज्वहारकालसे असंज्ञात गुणा है । सासाधसंज्ञाद्विज्वहारकाल असंज्ञात सम्मामिच्छाद्विज्वहारकालसे संख्यातगुणा है । जन्मी सासाधसंज्ञाद्विज्वहारकाल प्रथम जन्मीके असंज्ञातगुणा है । इसीप्रकार पश्योपमत्तक के जाना चाहिये । पश्योपमसे मिच्छाद्वि जीव अमत्तगुण है ।

अब सर्वपरस्थानमे अमरसंग्रहमे प्रकृत है— सुहुमसांपराधिकमुद्रिसंज्ञपत जीव सज्ज्ञे स्तोत्र है । परिहारविशुद्धिसंज्ञपत जीव इनसे संख्यातगुणे है । यथाक्यातमुद्रिसंज्ञपत जीव परिहारविशुद्धिसंज्ञपतोंसे संख्यातगुणे है । सामादिक बीर छेदोपस्थापनमुद्रिसंज्ञपत जीव दोनों समाप्त होते हुए यथाक्यातसंज्ञपतोंसे संख्यातगुणे है । असंज्ञसंज्ञाद्विज्वहारकाल असंज्ञातगुणा है । इसीप्रकार पश्योपमत्तक के जाना चाहिये । पश्योपमसे ऊपर मिच्छाद्वि जीव अमत्तगुणे है ।

इसप्रकार संज्ञमार्गण समाप्त है ।

दसणाणुवादेण चक्खुदसणीसु मिच्छाद्वीट्टी दम्बपमाणेण केवडिया,
असंखेजा ॥ १५५ ॥

सुगममेदं सुखं, बहुसो वक्खानिदंवादो ।

असंखेजासंखेजाहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि अवहिरति कालेण
॥ १५६ ॥

अहंभूल-धूल-सुदुमपरुषणाओ तिणि वि परिवादीए किमिदं पुण्णंति, सुदुमपरुषणमेव
किं पुण्णंति ? ए, महावि-मंदाइमदमेहाविज्जणाणुमाइकारणेण सहेत्थएसा । सस सुगमं ।

स्वेत्तेण चक्खुदसणीसु मिच्छाद्वीट्टीहि पदरमवाहिरादि अगुलस्स
संखेज्जदिभागवग्गपाटिमाण ॥ १५७ ॥

संखेज्जसंखेहि सविअंगुले मागे हिंदे तत्थ अ उद्ध त वग्गिंदे चक्खुदसणिमिच्छा
इदीए पटिमाणो होदि । एदेए पटिमाणेण चक्खुदसणिमिच्छाद्वीट्टीहि जगपदरमवाहिरादि ।
एत्थ किं चक्खुदसणावरणकम्मकस्सओवसमा बीवा चक्खुदसणिओ पुण्णंति, आहो चक्खु

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव दम्बप्रमाणकी
अपेक्षा कितन है ? असंख्यात है ॥ १५५ ॥

यह सख सुगम है क्योंकि अनेकवार ध्याख्यात हो गया है ।

कालकी अपेक्षा चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १५६ ॥

शंका—अतिस्पृष्ट स्पृष्ट और सूक्ष्म ये तीनों प्रकृपाएं परिपाटीक्रमसे किसलिये
करी जाती हैं केवल एक सूक्ष्म प्रकृपा क्यों नहीं करी जाती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, मेधावी मग्गबुद्धि और अतिमग्गबुद्धि जनोंका अनुग्रह
करके कारण इसप्रकारका उपदेश दिया गया है । शेष कथन सुगम है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा चक्षुदर्शनीयोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा धर्म्यगुलके संख्यातने
मार्गके बर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १५७ ॥

सूक्ष्मगुलमें संख्यातका भाग देने पर वहाँ ओ छद्म भावे उसे धर्मित करने पर
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रतिभाग होता है । इस प्रतिभागसे चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि
जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है ।

शंका—यहाँ पर क्या चक्षुदर्शनावरणकर्मके सपोपशमसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी
कहे जाते हैं या चक्षुदर्शनावरण उपयोगसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं ? इनमेंसे प्रथम

१ दर्शनमार्गाने चक्षुदर्शनीओ मिथ्यादृष्टीओकेएव अेवयः अतएवकेएवमतमदिताः । ४ कि १ ८
वमे पठाएवामं चक्खुदसं व जीवपरिमाणं चक्खुं । वो जी. ४८४

परत्वापि पयदं । सम्बन्धोवा सामाद्य-छेदोवाव्युत्पत्तिरसंबद्धसाम्या । तसि
 खगगा संखेज्जगुणा । अपमत्तसम्पदा संखेज्जगुणा । पमत्तसम्पदा संखेज्जगुणा । परिहा-
 सुदिसंबद्धेषु सम्बन्धोवा अपमत्तसम्पदा । पमत्तसम्पदा संखेज्जगुणा । सुदुमसांपराद्यसुदि-
 संबद्धेषु सम्बन्धोवा उचसामगा । खगगा संखेज्जगुणा । जहात्तादसम्पदासु सम्बन्धोवा
 उचसामगा । खगगा संखेज्जगुणा । सखोगिकेवर्त्तं संखेज्जगुणा । संबद्धासम्पदासु परत्वात्
 पयि । असंबद्धेषु सम्बन्धोवा असम्पदासम्पदाव्युत्पत्तिरसम्पदाकाळो । सम्पामिच्छाव्युत्पत्तिरसम्पदाकाळो
 असम्पदाजगुणो । साम्पसम्पदाव्युत्पत्तिरसम्पदाकाळो संखेज्जगुणो । तस्सेव दम्पसम्पदाजगुणं ।
 एवं नेयम् आ पत्तिदोवर्म नि । तदो मिच्छावृद्धी अणत्तगुणा ।

सम्पदपरत्वापि पयदं । सम्बन्धोवा सुदुमसांपराद्यसुदिसम्पदा । परिहासुदिसम्पदा
 संखेज्जगुणा । जहात्तादसुदिसम्पदा संखेज्जगुणा । सामाद्य-छेदोवाव्युत्पत्तिरसम्पदा दो
 नि तुष्ठा संखेज्जगुणा । असम्पदासम्पदाव्युत्पत्तिरसम्पदाकाळो असम्पदाजगुणो । एवं नेयम् आ
 पत्तिदोवर्म नि । तदो उचरि मिच्छावृद्धी अणत्तगुणा ।

एव संक्रममगाणा गदा ।

अथ परत्वापि पयदं मयत्तम्— सामाधिक और छेदोपरत्वापनशुदिसम्पद
 उपग्रामक जीव सबसे स्तो क है । अर्थात् सपक उपग्रामकोसे संख्यातगुणे है । वे ही
 प्रमत्तसम्पद जीव सपकोसे संख्यातगुणे है । वे ही प्रमत्तसम्पद जीव प्रमत्तसम्पदकोसे
 संख्यातगुणे है । परिहासुदिसम्पदोमें प्रमत्तसम्पद जीव सबसे स्तो क है । प्रमत्तसम्पद जीव
 वनसे संख्यातगुणे है । सुदुमसांपराधिकशुदिसम्पदोमें उपग्रामक जीव सबसे पोड़े है । सपक
 जीव वनसे संख्यातगुणे है । पयाप्यात संपदोमें उपग्रामक जीव सबसे पोड़े है । सपक जीव
 उपग्रामकोसे संख्यातगुणे है । सखोगिकेवर्त्तं जीव सपकोसे संख्यातगुण है । संपदासंपदोमें
 परत्वापि मयत्तम् नहीं पाया जाता है । असंपदोमें असंपदसम्पदादियोंका अवहारकाळ सबसे
 स्तो क है सम्पामिच्छादियोंका अवहारकाळ असंपद सम्पदादियोंके अवहारकाळसे असंपदात
 गुणा है । सपदाव्युत्पत्तिरसम्पदादियोंका अवहारकाळ सम्पामिच्छादियोंके अवहारकाळसे संख्यातगुणा
 है । अर्थात् साम्पसम्पदादियोंका दम्प अर्थात् अवहारकाळसे असंपदातगुणा है । इसीप्रकार
 पयोपमतक के आना चाहिये । पयोपमसे मिच्छावृद्धि जीव अनन्तगुण है ।

अथ सपपरत्वापि पयदं मयत्तम्— सुदुमसांपराधिकशुदिसम्पद जीव सबसे
 स्तो क है । परिहासुदिसम्पद जीव वनसे संख्यातगुणे है । पयाप्यातशुदिसम्पद जीव
 परिहासुदिसम्पदोसे संख्यातगुणे है । सामाधिक और छेदोपरत्वापनशुदिसम्पद जीव दोनों
 समान होते हुए पयाप्यातसंपदोसे संख्यातगुणे है । असंपदसम्पदादियोंका अवहारकाळ
 उच दोनों संपदोके प्रमाणसे असंपदातगुणा है । इसीप्रकार पयोपमतक के आना चाहिये ।
 पयोपमसे अगर मिच्छावृद्धि जीव अनन्तगुण है ।

इसप्रकार संक्रममार्गाणा समाप्त हुई ।

इदो ! यस्तुदंसजन्तुओवसमरहिदुणपडिवण्णामानादो ।

अवस्तुदसणीसु मिच्छाद्विप्पहृदि जाव स्त्रीणकसायवीदराग
छदुमत्या त्ति ओघं ॥ १५९ ॥

किं कारणं? अचक्षुर्दंसणसुजोवसमविरहिदक्षुमत्यजीवामात्रादो। सपहि अचक्षुर्दंसणीष धुवरासी भुन्धदे। त अहा- सिद्धे तेरसगुणपडिबणरासिमचक्षुर्दंसणमिच्छाद्विद्वि रासिमज्जिदत्तव्यग्ग भव सम्मजीवरासिस्सुवरि पक्खिणे अचक्षुर्दंसणमिच्छाद्विधुवरासी होदि। एदेण सम्मजीवरासिस्सुवरिमवग्गे मागे हिदे अचक्षुर्दंसणमिच्छाद्विद्विद्वं होदि। सामादीणमोपन्नि भविद्वज्जहारो चेव मत्तन्त्रो, विसेसामात्रादो।

ओहिदसणी ओहिणाणिमगो ॥ १६० ॥

क्योंकि गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव बहुवर्णीरूप क्षयोपशमसे रहित नहीं होते हैं। जहाँ गुणस्थानप्रतिपक्ष प्रत्येक जीवके बहुवर्णीरादरण कर्मका क्षयोपशम पाया जाता है वगैरे गुणस्थानप्रतिपक्ष बहुवर्णीजीवोंके प्रमाणकी प्रकृषा शोधप्रकृषाके समान है।

मधुमुदरनियामे मिथ्याष्टि गुणस्नानसे लेकर क्षीयकपायवीतरागछन्दस्य
गुणस्नानतक प्रत्येक गुणस्नानमे वीर ओषधरूपभाके समान हैं ॥ १५९ ॥

शुंका—मन्त्रधरर्षिजी की शीर्षिका प्रमाण सामान्य प्रकरणोंके समान है इसका क्या कारण है ?

समाधान— क्योंकि, भक्तधर्मपरंपरायण क्षयोपशमसे रहित उन्नतरूप जीव नहीं पाये जाते हैं इसलिये इनका प्रमाण मोक्षप्रमाणके समान कहा है।

अब अबधुदर्शीनी जीबोंकी मुखराशिका कथन करते हैं। यह इसप्रकार है— सिद्ध पक्षि और सासादनसम्पन्नादि पक्षि तेरह गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवरशिकों तथा मिष्यादि पक्षिसे माजित सिद्धपक्षि और गुणस्थानप्रतिपक्ष पक्षिके वर्गोंसे सर्व जीवरशिकोंमें मिश्र होने पर अबधुदर्शीनी मिष्यादि जीबोंकी मुखराशि होती है। इस मुखराशिसे सर्व जीवरशिकोंके उपरिम वर्गोंके माजित करने पर अबधुदर्शीनी मिष्यादिपक्षोंका द्रव्यप्रमाण होता है। अबधुदर्शीनी सासादनसम्पन्नादि पक्षि जीबोंका व्योमप्रकरणामें कहा गया अणुहारका ही कहा चाहिये क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपक्ष व्योम अणुहारकासे अबधुदर्शीनी गुणस्थान-प्रतिपक्ष जीबोंके अणुहारकासे कोई विशेषता नहीं है।

अबधिदर्शनी जीव अबधिमनियोकै समान हैं ॥ १६० ॥

१. कपटद्वैतविरोधि विचारबोम्बसाजना । समये च शास्त्रमनुरक्तमवधारय । श्रीकृष्णवाक्याः श्रवणधीन-
कृपाः । अति १, ८ पृथिव्यपहृष्टीर्णं श्रीकृष्णवर्णनप्रकाशितं । श्रीमो कपटद्वैतप्रकाशनी हिमि परिचयः ॥
पृ. २० ५६८

१ कनकिरुर्गमिदीप्यमिह्यासिम् । उ ति १ ८

इंसोवओगसहिदभीवा चि ? पदमपकसे चकसुदंसमिमिच्छाद्विजवहारकाठेन पदरगुलस्त
असंखेन्जदिमापन होदस्यं, चदु-पधिदियापन्जचरासीय पाहम्मादो । य विदियपकसो
वि, चकसुदंसपहिदीए' अतोयुचप्यसंगदो चि ? एत्थ परिहारो बुच्छदे । असंखेन्जदिमाप
चकिंसुदियपदिमागे चकसुदंसपुबओगपाओगाचकसुदंसपसुओपसमा चकसुदंसमिचि
योग बुचति सेव लक्षियपन्नचत्थ गहर्ण म मवदि, तेसु पविंसुदियमिप्पविनिराहिदेसु
चकसुदंसओवओगसहिदकसुओवसमामावादो । संखेन्जसतारोवममेचा चकसुदंसमिचिदी
वि ग विरुन्सदे, सओवसमस्त पहाणचम्भुवगमादो । तदो पदरगुलस्त संखेजदिमागमेपो
चकसुदंसमिमिच्छाद्विजवहारकाठो होदि चि सिद्धं, चदु-पधिदियपन्जचरासीय पहाणच
म्भुवगमादो ।

सासणसम्माद्विण्णुहि जाव स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्था चि
ओधं ॥ १५८ ॥

पक्षके ग्रहण करने पर चक्षुर्दर्शनी मिष्यादृष्टिर्बोध्य भवहारकाष्ठ प्रतरांगुलके असंख्यातवै
भागमात्र होता चाहिये क्योंकि, ऐसी स्थितिमें चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
जीवोंकी प्रमाणता है । इसप्रकार ग्रहण पक्ष ठा ठीक नहीं है । इसीप्रकार दूसरा पक्ष भी ठीक
नहीं है, क्योंकि इसके मानने पर चक्षुर्दर्शनकी स्थितिमें व्यक्तमुहूर्तमात्रका प्रसंग
न्य जाता है ।

समाधान— याने पूर्वोक्त शीकाव्य परिहार करते हैं— चक्षुर्दर्शनवाले मिष्यादृष्टिर्बोध्य
भवहारकाष्ठ सूर्यगुलके असंख्यातवै भागरूप कासेपका परिहार यह है कि चूंकि चक्षुर्दर्शयोप-
योगके योग्य चक्षुर्दर्शनावरणके सयोपशमवाले जीव चक्षुर्दर्शनी कहे जाते हैं इसलिये यहाँ पर
कल्प्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होता है क्योंकि वे जीव चक्षु इन्द्रियकी मिष्यसिसे रहित होते
हैं इसलिये उनमें चक्षुर्दर्शनरूप उपयोगसे युक्त चक्षुर्दर्शनरूप सयोपशम नहीं पाया जाता
है । तथा चक्षुर्दर्शनवाले जीवोंकी स्थिति संख्यातसागरोपममान होती है यह कथन भी
विरोधको व्यक्त नहीं होता है क्योंकि, यहाँ पर सयोपशमकी प्रमाणता स्वीकार की है ।
इसलिये चक्षुर्दर्शनी मिष्यादृष्टिर्बोध्य भवहारकाष्ठ प्रतरांगुलके संख्यातवै भागमात्र होता है,
यह कथन सिद्ध होता है क्योंकि यहाँ पर चक्षुर्दर्शनी जीवोंके प्रमाणके कथनमें चतुरिन्द्रिय
और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रमाणता स्वीकार की है ।

सासादनसम्पग्गहि गुणस्वानसे छेकर खीमकपायवीदरायकवस्व गुणस्वानतक
प्रत्येक गुणस्वानमें चक्षुर्दर्शनी जीव मोपप्रकृपणाके समान हैं ॥ १५८ ॥

१. मण्डु रत्नमण्डितं इति वाच ।

२. अ-अमोही परिच्छेदं अमोही परिच्छेदं इति वाच ।

३. चक्षुर्दर्शनमिच्छाद्विजवहारकाठो इत्येव वेदान्तोक्तदृष्ट्या जी. क. द. १ - २८१

इदो ! चक्षुदसणकस्त्रयोवसमरदिदुणपरिवण्णामावादो ।

अचक्षुदसणीसु मिच्छाइटिप्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीदराग
छदुमत्या त्ति ओष ॥ १५९ ॥

किं कारणं? अचक्षुर्दृष्टं सख्योपसमविरहितदृष्टमत्यजीवाभावात्। सपहि अचक्षु-
र्दृष्टगीणं धुवरासीं शुच्यदे। त अहा—सिद्धं तेरसगुणपडिवण्णरासिमचक्षुर्दृष्टमिच्छाद्वि-
रासिमज्झितव्वग्गं च सम्भजीवरासिस्सुवरि पक्खिणे अचक्षुर्दृष्टमिच्छाद्विधुवरासी
होदि। एदेण सम्भजीवरासिस्सुवरिमवग्गे माणे हिदे अचक्षुर्दृष्टमिच्छाद्विद्वं होदि।
सामणादीणिमोचन्दि मणिदववहारे। पेव वच्योरे, विसेसामावादे।

ओद्दिदसणी ओद्दिणाणिभगो ॥ १६० ॥

क्योंकि गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव बहुवर्णनरूप क्षयोपशमसे रहित नहीं होते हैं।
पर्याप्त गुणस्थानप्रतिपक्ष प्रत्येक जीवके बहुवर्णनावरण क्रमका क्षयोपशम पाया जाता है
अतएव गुणस्थानप्रतिपक्ष बहुवर्णी जीवोंके प्रमाणकी प्रकृष्टा ओघप्रकृष्टताके समान है।

अथ सुदर्शनियोंमें भिन्न्यादृष्टि गुणस्मानसे लेकर क्षीणरूपापरीतरागछत्रम्
गुणस्मानवत् प्रत्येक गुणस्मानमें बीध ओषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५९ ॥

संका—मनसुदरणी जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणके समान है इसका क्या कारण है ?

समाधान— क्योंकि, भक्तगुरुद्वारा रूप शोधोपशमसे रहित छत्रस्य जीव नहीं पाये जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण बोधप्रमाणके समान कहा है।

अब अबलुद्धांनी जीवोंकी भुवराशिष्य बनान करते हैं। वह इसप्रकार है— सिद्ध पक्षि और सासाइनसम्यग्रहि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवराशिसे तथा मिथ्यादृष्टि पक्षिसे भाजित सिद्धपक्षि और गुणस्थानप्रतिपक्ष पक्षिके बगले सर्व जीवराशिमें मिखा देने पर अबलुद्धांनी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी भुवराशि होती है। इस भुवराशिसे सब जीवराशिके परपरिण बगले भाजित करने पर अबलुद्धांनी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है। अबलुद्धांनी सासाइनसम्यग्रहि आदि जीवोंका भोचप्ररूपणमें कहा गया अबलुद्धाका ही कहना चाहिये क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपक्ष ओय अबलुद्धाकासे अबलुद्धांनी गुणस्थान-प्रतिपक्ष जीवोंके अबलुद्धाकासे कोई विशेषता नहीं है।

अवधिदर्शनी श्रीव अवधित्तानियोके समान ई ॥ १६० ॥

१ अथर्ववेदमयी विष्णुसूक्तोक्तान्ताः । इमे च तान्मन्त्रान्मन्त्राणां । अथर्ववेदमयी विष्णुसूक्तोक्तान्ताः । इमे च तान्मन्त्रान्मन्त्राणां । अथर्ववेदमयी विष्णुसूक्तोक्तान्ताः । इमे च तान्मन्त्रान्मन्त्राणां ।

१ अथविदर्शनविशेषादिहाविषम् । उ वि १ ८

ओहिर्दसगविरहिर्दओहिनापीपममावाहो । एतव अवहारकालो बुन्धदे । ओ ओप-
असंखदसम्माप्रह्मिअवहारकालो सो चेव अचक्खुर्दसवि-अचक्खुर्दसविअसंखदसम्माप्रह्मिअ-
वहारकालो होदि । तमिह आवलियाए असंखेअदिमाएण मागे हिदे सइ तमिह चेव पत्तिउत्ते
ओहिर्दसविअसंखदसम्माप्रह्मिअवहारकालो होदि । तमिह आवलियाए असंखेअदिमाएण
गुमिदे अचक्खुर्दसवि-अचक्खुर्दमपिसम्मापिअप्रह्मिअवहारकालो हादि । तमिह संखेअदिमाएण
गुमिदे अचक्खुर्दसवि-अचक्खुर्दसपिसासगसम्माप्रह्मिअवहारकालो होदि । तमिह आवलियाए
असंखेअदिमाएण गुमिदे अचक्खुर्दसवि-अचक्खुर्दसपिससदासअदमवहारकालो होदि । तमिह
आवलियाए असंखेअदिमाएण गुमिदे ओहिर्दसविअसंखदसंखदवहारकालो होदि ।

केवलदसणी केवलणाणिभगो' ॥ १६१ ॥

कवचप्राणविरहिर्दकेवलदसणाभावाहो । सुद-मजपन्धवणापार्थ किमिदि य दसर्ष ?
बुन्धदे— य ताव सुदगाव्यस र्ससजमपि, तस्स मदियाणपुम्भत्ताहो । य मजपन्धव-

भूँकि अवधिदर्शीयको छोड़कर अवधिशाली बीज नहीं पाये जाते हैं । इसलिये दोनोंका
प्रमाण समान है । जब यहां पर इनके अवहारकालका कथन करते हैं— ओ ओप असंखत
सम्पगदरिषोंका अवहारकाळ है, वही अवधुदर्शी बीर अचक्षुदर्शी असंखतसम्पगदरिषोंका
अवहारकाळ है । इसे भावकीके असंख्यातर्षे मागसे प्रकृत करने पर जो कल्प जाये उसे
कही अवहारकाळमें मिला देने पर अवधिशाली असंखतसम्पगदरिषोंका अवहारकाळ होता है ।
इस अवधिशाली असंखतसम्पगदरिषोंके अवहारकाळको भावकीके असंख्यातर्षे मागसे प्रकृत
करने पर अक्षुदर्शी बीर अवधुदर्शी सम्पमिध्यादरिषोंका अवहारकाळ होता है । इसे
संख्यातर्षे प्रकृत करने पर अक्षुदर्शी बीर अवधुदर्शी सासाधनसम्पगदरिषोंका अवहार-
काळ होता है । इसे व्यवकीके असंख्यातर्षे मागसे प्रकृत करने पर अक्षुदर्शी बीर अवधु-
दर्शी संख्यातर्षोंका अवहारकाळ होता है । इसे व्यवकीके असंख्यातर्षे मागसे प्रकृत करने
पर अवधिशाली संख्यातर्षोंका अवहारकाळ होता है ।

केवलदर्शनी बीज केवलदानियोंके समान हैं ॥ १६१ ॥

भूँकि केवलदानसे एहित केवलदर्शन नहीं पाया जाता है इसलिये दोनों दारिषोंका
प्रमाण समान है ।

प्रश्न— सुतज्ञान बीर मनापर्यवकायका दर्शन क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान— सुतज्ञानका दर्शन ठा हो नहीं सकता है क्योंकि, वह मतिज्ञानपूर्वक
होता है । इतीमकार मनापर्यवकायका भी ज्ञान नहीं है क्योंकि, मनापर्यवकाय मी
कसीमकारका है अर्थात् मनापर्यवकाय मी मतिज्ञानपूर्वक होता है इसलिये इसका दर्शन
नहीं पाया जाता है ।

भाषस्य वि दंसणमतिथि, तस्म वि तषाविचचादो । यदि सरूवसंबेदणं दंसणं तो एदेसिं पि दंसणस्य अतिथिं पसज्जदे चेम, उचरमानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नविधिष्टस्वसंबेदनस्य दर्शनत्वात् । न च केवलमिह एसो क्रमो, सत्य अक्रमेण गाण-दंसणपठनीदो । न च छट्ठमत्वेसु दोषमक्रमेण शुची अतिथि, 'इदि दुबे गतिथि उचजोगा' पि पडिसिद्धचादो । न च ज्ञाप्यादो पच्छा दंसणं भवदि, 'दंसणपुर्व्वं भाणं, न गाणपुर्व्वं तु दंसणमतिथि' इदि वयपादो ।

मागामार्गं पचरस्सामो । सखजीवरासिमणतखंडे कए बहुखंडा अपक्खुदंसण-मिच्छाद्वयी होति । सेसमणतखंड कए बहुखंडा केमलदंसणिणो होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणमिच्छाद्वयी होति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छिदम्भं होदि । तस्य सस्सेव असखेज्जदिमागमवभिदे ओहिदंसणि दम्भं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाद्विदम्भं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सामणसम्मामिच्छिदम्भं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंसंयथासंयददम्भं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए

संज्ञा—यदि दर्शनका स्वरूप स्वरूपसंबेदन है तो इन दोनों भागोंके मी दर्शनके अस्तित्वकी ग्यति होती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि उत्तरदानकी उत्पत्तिके निमित्तभूत प्रयत्नविशिष्ट स्वसंबेद नगो दर्शन माना है । परंतु केवलमें यह क्रम नहीं पाया जाता है, क्योंकि यहाँ पर अक्रमसे ज्ञान और दर्शनकी प्रकृति होती है । छद्मस्थोंमें ज्ञान और ज्ञान, इन दोनोंकी अक्रमसे प्रकृति होती है, यदि ऐसा कहा जावे तो मी टीक नहीं है क्योंकि, छद्मस्थोंके दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते हैं इस भागमवचनसे छद्मस्थोंके दोनों उपयोगोंके अक्रमसे होनेका प्रतिवेद्य हो जाता है । ज्ञानपूर्वक दर्शन होता है यदि ऐसा कहा जावे तो मी टीक नहीं है क्योंकि, 'दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है किंतु ज्ञानपूर्वक दर्शन नहीं होता है' ऐसा भागमवचन है ।

अब भागामागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अक्खुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव है । दोष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केमलदर्शनी जीव है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अक्खुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अक्खुदर्शनी और अक्खुदर्शनी अक्षयसम्यग्दर्शियोंका द्रव्य है । इसमेंसे रक्षिका असंख्यातका भाग यथा देने पर दोष अवधिदर्शनी जीवोंका द्रव्यप्रमाण होता है । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अक्खुदर्शनी और अक्खुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अक्खुदर्शनी और अक्खुदर्शनी साक्षात्सम्यग्दर्शियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अक्खुदर्शनी और अक्खुदर्शनी संख्यासंयत्तोंका द्रव्यप्रमाण होता है । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग

ओहिर्यस्यनिरहिद्विआहिणापीणममावादो । परस्य अवधारकास्यो पुण्यदे । ओ ओप-
असंजदसम्माइहिअवधारकासो सो चेष अचसुदंसपि-अचसुदंसपिअसंजदसम्माइहिअव
धारकासो होदि । तमिह आवत्तिमाए असंखेज्जदिमाएण भागो हिदे ल्ह तमिह चव पक्खिसे
ओहिर्यसपिअसंजदसम्माइहिअवधारकासो होदि । तमिह आवत्तिमाए असंखेज्जदिमाएण
गुणिदे अचसुदंसपि-अचसुदंसपिअसंजदसम्माइहिअवधारकासो होदि । तमिह संखेज्जदेहि
गुणिदे अचसुदंसपि-अचसुदंसपिसासपसम्माइहिअवधारकासो होदि । तमिह आवत्तिमाए
असंखेज्जदिमाएण गुणिदे अचसुदंसपि-अचसुदंसपिसंजदसंजदअवधारकासो होदि । तमिह
आवत्तिमाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे ओहिर्यसपिअसंजदसंजदअवधारकासो होदि ।

केवलदंसणी केवलणाणिभगो ॥ १६१ ॥

कवलणामनिरहिद्विदेवसंसमामावादो । सुद-मणपञ्चवजाणान् किमिदि न र्ससं ?
पुण्यदे- य ताव सुदवापस्स र्सवमत्थि, तस्स मत्थिवापुण्यवादो । य मणपञ्चव

कृंकि अचविदर्शनको छोड़कर अचविज्ञानी जीव नहीं पाये जाते हैं । इसलिये दोनोंका
प्रमाण समान है । अब यहाँ पर इनके अवधारकाका कथन करते हैं— ओ ओप असंयत
सम्पद्यिषोका अवधारकास्य है वही अचसुदर्शी और अचसुदर्शीनी असंयतसम्पद्यिषोका
अवधारकास्य है । इसे व्याखीके असंयतातर्षे मागसे माथित करने पर ओ छम्ब अये ठसे
वसी अवधारकाकर्म मिळा देने पर अचविदर्शीनी असंयतसम्पद्यिषोका अवधारकास्य होता है ।
इस अचविदर्शीनी असंयतसम्पद्यिषोके अवधारकास्यको व्याखीके असंयतातर्षे मागसे गुथित
करने पर अचसुदर्शी और अचसुदर्शीनी सम्पद्यिष्याइषोका अवधारकास्य होता है । इसे
संयतातर्षे गुथित करने पर अचसुदर्शी और अचसुदर्शीनी सासादवसम्पद्यिषोका अवधार
कास्य होता है । इसे व्याखीके असंयतातर्षे मागसे गुथित करने पर अचसुदर्शी और अचसु
दर्शीनी संयतासंयतोका अवधारकास्य होता है । इसे व्याखीके असंयतातर्षे मागसे गुथित करने
पर अचविदर्शीनी संयतासंयतोका अवधारकास्य होता है ।

केवलदर्शनी सीव केवलज्ञानिणोके समान हैं ॥ १६१ ॥

कृंकि केवलज्ञानसे रहित केवलदर्शन नहीं पाया जाता है । इसलिये दोनों पक्षोंका
प्रमाण समान है ।

श्रुंका—श्रुतज्ञान और मणपर्ववज्ञानका दर्शन क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—श्रुतज्ञानका दर्शन तो हो नहीं सकता है । क्योंकि, यह मतिज्ञानपूर्वक
होता है । वसीप्रकार मणपर्ववज्ञानका भी दर्शन नहीं है । क्योंकि, मणपर्ववज्ञान भी
वसीप्रकारका है । अर्थात् मणपर्ववज्ञान भी मतिज्ञानपूर्वक होता है । इसलिये वसका दर्शन
नहीं पाया जाता है ।

गुणा । पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । दुदसमिअसज्जदसम्माइद्धिअवहारकलो असंखेज्जगुणो ।
 तिदंसमअसज्जदसम्माइद्धिअवहारकलो विसेसाहिओ । दुदमणसम्माभिच्छाइद्धिअवहारकलो
 असंखेज्जगुणो । दुदमणसामणसम्माइद्धिअवहारकलो संखेज्जगुणो । दुदसणमज्जदासंज्जद
 अवहारकलो असंखेज्जगुणो । तिदमणसज्जदासंज्जदअवहारकलो असंखेज्जगुणा । तस्सव
 दम्भमसंखेज्जगुण । एवमवहारकालपठिलोमण भेदम्भ जाय पठिदन्वम ति । तदो चक्खु
 दंसमिभिच्छाइद्धिअवहारकलो असंखेज्जगुणो । विपत्तीमर्ह असंखेज्जगुणा । सेही असंखेज्ज
 गुणा । दम्भमसंखेज्जगुण । पदरमसंखेज्जगुण । लोणो असंखेज्जगुणो । केवलदंसणी
 अयंतगुणा । अचक्खुदंसणी अणतगुणा ।

एव दम्भमगाणा गगा ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णील्लेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छा
 इट्ठिण्हुडि जाव असज्जदसम्माइद्धि ति ओष ॥ १६२ ॥

दर्शनवाले प्रमत्तसंयतोले असंख्यातगुणा है । तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दर्शियोंका अपहार
 काळ हो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दर्शियोंके अपहारकाळसे विशेष अधिक है । दो दर्शनवाले
 सम्यग्मिप्यादर्शियोंका अपहारकाळ तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दर्शियोंके अपहारकाळसे
 असंख्यातगुणा है । दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दर्शियोंका अपहारकाळ दो दर्शनवाले सम्य
 मिप्यादर्शियोंके अपहारकाळसे संख्यातगुणा है । दो दर्शनवाले संयतासंयतोंका अपहारकाळ
 दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दर्शियोंके अपहारकाळसे असंख्यातगुणा है । तीन दर्शनवाले
 संयतासंयतोंका अपहारकाळ दो दर्शनवाले संयतासंयतोंके अपहारकाळसे असंख्यातगुणा है ।
 चर्ही तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका द्रव्य उर्हीके अपहारकालसे असंख्यातगुणा है ।
 इसीप्रकार अपहारकाळक प्रतिबोमरूपकमसे पस्योपमतक से जाना चाहिये । पस्योपमसे चक्षु
 दर्शनी मिप्यादर्शियोंका अपहारकाल असंख्यातगुणा है । उर्हीकी बिम्बप्रसूची अपने अपहार
 काळसे असंख्यातगुणी है । जगभेणी विष्कंभप्रसूचीसे असंख्यातगुणी है । उर्हीका द्रव्य जग-
 भेणीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । सोक जगप्रतरसे असंख्यात
 गुणा है । कयलदर्शनी जीव साकसे अनन्तगुण है । अचक्षुदर्शनी जीव कयलदर्शनोंके
 प्रमापसे अनन्तगुण है ।

इसप्रकार दर्शनमार्गाणा समाप्त हुए ।

लेदपामार्गाणाके अनुवादम कृष्णलेदपावाले, नीलठप्पावाले और कापोतठप्पावाले
 जीवोंमें मिप्यादर्शि गुणस्थानसे लकर असंयतसम्यग्दर्शि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें
 जीव ओषप्ररूपका समान है ॥ १६० ॥

१ प्रतिगु अक्षरम्भयो इति वाङ् ।

२ कैरावुवादेन दम्भम इतितीतदेवता विचारवारादन्वतवत्कारहदन्ता कावन्वेनअवताः । इ

मि १ ८ विप्रादिपविवादेवतवत्तानेन यजिव वरिमतो । इतिवत्ता काळ वा अरिउष दणा इ अदिदया ॥

बहुवचन ओहिर्दसगिर्दसज्जदासज्जदद्वय होदि । सेस बाणिय बचम् ।

अप्याबहुर्गं त्रिविहं सत्यानादिमेव । सत्यानो पयदं । चक्रमुदंसपिमिच्छाद्वि
सत्यानस्त तसपन्मचमिच्छाद्विसत्याणमंगो । सासपादीन सत्यानस्त ओपसत्यानमंगो ।

परत्यानो पयदं । अचक्रमुदसगीसु सम्प्रत्योवा उवसामगा । खवगा संखेन्जगुणा ।
अप्यमचसज्जदा संखेन्जगुणा । पमचसज्जदा संखेन्जगुणा । उवरि ओमपमिदियं व बचम्
जात पस्त्रिदोवम वि । तदो मिच्छाद्विजो अर्पतगुणा । एवं वेव चक्रमुदंसपिपरत्यानप्याबहुर्गं
बचम् । गवरि पस्त्रिदोवमादो उवरि चक्रमुदंसपिमिच्छाद्विजो असंखेन्जगुणा । ओहि
र्दसगीनमोद्विषाणिमंगो । केवसदसगीनं केवलम्यानिमंगो ।

सम्प्रपरत्यानो पयदं । सम्प्रत्योवा ओहिर्दसगउवसामगा । खवगा संखेन्जगुणा ।
चक्रमुदंसपि-अचक्रमुदंसपिउवसामगा संखेन्जगुणा । खवगा संखेन्जगुणा । ओहिर्दस
अप्यमचसज्जदा संखेन्जगुणा । पमचसज्जदा संखेन्जगुणा । दुदसपिअप्यमचसज्जदा संखेन्ज

अवधिर्दानी संवत्सराद्यर्थोक्तं द्रष्टव्यं होता है । वेव मागायागाका कथन जानकर करना चाहिये ।
स्वस्यानादिके मेहसे अस्पष्टतुल्य तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्यानमें अस्पष्टतुल्य
प्रकृत है— बहुवचनी मिष्याद्विष्योका स्वस्यान अस्पष्टतुल्य जस पर्याप्त मिष्याद्विष्योके
स्वस्यान अस्पष्टतुल्यके समान है । सासाद्यसम्यग्द्वि आदिका स्वस्यान अस्पष्टतुल्य
ओपस्वस्यान अस्पष्टतुल्यके समान है ।

अब परस्यानमें अस्पष्टतुल्य प्रकृत है— अचक्रमुदंसपिमें सबसे श्लोक उपशामक
जीव है । शपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे है । अममचसपत जीव शपकोंसे संख्यातगुणे
है । ममचसपत जीव अममचसपतोंसे संख्यातगुणे है । इसके ऊपर पस्योपमचक ओम
पस्त्रिदोवोंके परस्यान अस्पष्टतुल्यके समान कथन करना चाहिये । पस्योपमसे मिष्याद्वि
जीव अममचगुणे है । इसीप्रकार बहुवचनीमें परस्यान अस्पष्टतुल्यका कथन करना चाहिये ।
इतना विशेष है कि पस्योपमके ऊपर बहुवचनी मिष्याद्वि जीव असंख्यातगुणे है । अवधि-
र्दानीकाओंका अस्पष्टतुल्य अवधिर्दानीयोंके अस्पष्टतुल्यके समान जानना चाहिये । केवद्विर्दानी-
काओंका केवद्विर्दानीयोंके अस्पष्टतुल्यके समान जानना चाहिये ।

अब सर्वपरस्यानमें अस्पष्टतुल्य प्रकृत है— अवधिर्दानी उपशामक जीव सबसे श्लोक
है । अवधिर्दानी शपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे है । बहुवचनी और अचक्रमुदंसपि
उपशामक जीव अवधिर्दानी शपकोंसे संख्यातगुणे है । व ही शपक जीव अपने उपशामकोंसे
संख्यातगुणे है । अवधिर्दानी अममचसपत जीव बहु और अचक्रमुदंसपिकाके शपकोंसे
संख्यातगुण है । वे ही ममचसपत जीव अममचसपतोंसे संख्यातगुणे हैं । वे द्विर्दानीकासे
अममचसपत जीव अवधिर्दानी ममचसपतोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही ममचसपत जीव
अममचसपतोंसे संख्यातगुणे हैं । वे द्विर्दानीकाके अममचसपतोंके अवधिर्दानीयोंका अवधारण्यत दो

अथतत्त्वणेन पत्तिद्वयमस्त अर्धल्लेखदिमागसेन च आपेय साधम्ममसि चि ओषमिदि मगिदं । विसेसे अर्धल्लेखजमासे पुन पत्ति समाणचं, सेसलेस्तेतत्तन्निख-
जीवाण पयदगुणद्वयेसु असमवातो । एतय पुवरासी बुष्पदे । तं जहा- सिद्ध-तेरसगुण-
पटिबण्य-उउ-पम्प-सुक्तेस्सिमिष्ठाद्विरासि किण्-पील-काउलेस्समिष्ठाद्विरासिमभिद्
मेदेसि बगं च सम्बजीवरासिस्सुपरि पत्तिखे दि किण्-पील-काउलेस्समिष्ठाद्विरासिपुवरासी
होदि । तं तीदि रुबहि गुणेरुण आबलियाए अर्धल्लेखदिमागेण भागे हिदे छद्ं तन्दि
चन पत्तिखे काउलेस्सिपुवरासी होदि । पुष्पमागहारमग्महिय काऊण तिगुणपुव-
रासिमिद् मागे हिदे छद्ं तन्दि चन पत्तिखे पीललेस्सिपुवरासी होदि । तमानसियाए
अर्धल्लेखदिमागस्य भागे हिदे छद्ं तन्दि चन अवगिदे किण्हेस्सिपुवरासी होदि ।
काउ-पीललेस्सरासीओ सम्बजीवरासिस्स तिमागो देसुणो । किण्हेस्सिपुवरासी तिमागो
सादिरेओ । गुणपटिबण्याणमवहारकत्तं पुरदा मगिस्सामो ।

उक्त तीन छेदपात्राळे मिथ्यादृष्टि जीवोंकी अवस्थानुबन्धी अपेक्षा और साक्षात्तसम्पत्ति
आदि गुणस्वाभावर्त्त जीवोंकी पक्षोपमके अर्धल्लेखदि मागत्वकी अपेक्षा ओषप्रमाणके साप
समानता पार्ति जाती है इत्यधिके सूत्रमें ओषं ऐसा कहा है । विशेष गर्वान् पर्वापर्यायिक
नयका व्यवहार करने पर तो उक्त तीन छेदपात्राळे जीवोंके प्रमाणकी ओषप्रमाणरूपत्वाके
साप समानता नहीं है क्योंकि, ऐसा मान देने पर होर छेदपात्रोंसे वृणक्षित जीवोंका प्रकृत
गुणस्वाभावमें रहना असम्भव मानना पड़ेगा । अब यहां पर शुभराशिका कथन करते हैं । वह
इसप्रकार है— सिद्धपत्ति साक्षात्तसम्पत्ति आदि होरह गुणस्वाभावतिपन्न राशि और पीत
पन्न तथा शुद्धछेदपात्राळे मिथ्यादृष्टिपत्ति राशिको तथा इन सर्व राशिपत्तिके वर्गमें
हृष्य, नील और वापोतछेदपात्राळी मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो हृष्य भागे उसे सर्व
जीवरश्मिमें मिखा देने पर हृष्य नील और वापोतछेदपात्रे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवोंकी शुभराशि
होती है । इसे तीनसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसे भावकीके अवस्थातर्हे मापसे माजित
करने पर जो हृष्य भागे उसे उसीमें मिखा देने पर वापोतछेदपात्रे युक्त जीवोंकी शुभराशि
होती है । पूर्वोक्त मापहारको अव्यधिक करके और उसका त्रिगुणित शुभराशिमें माग देने
पर जो हृष्य भागे उसे उसी त्रिगुणित शुभराशिमें मिखा देने पर नीलछेदपात्रे युक्त जीवोंकी
शुभराशि होती है । इस व्यवहारकी अवस्थातर्हे मापसे माजित करने पर जो हृष्य भागे उसे
वर्त्तमानसे घटा देने पर हृष्यछेदपात्रे युक्त जीवोंकी शुभराशि होती है । वापोतछेदपात्रे युक्त
और नीलछेदपात्रे युक्त प्रत्येक जीवरश्मि सर्व जीवरश्मिक कुछ कम तीसरे मागप्रमाण है ।
तथा हृष्यछेदपात्रे युक्त जीवरश्मि कुछ अधिक तीसरे माग प्रमाण है । उक्त तीन छेदपात्रोंसे
युक्त गुणस्वाभावतिपन्न जीवोंके अवधारणाका कथन भागे करेंगे ।

छेदपात्रे बहुरश्मिवा वर्त्तकत्वा अथेव परिहृता । कदाचि हीयते वर्त्तकत्वात्तत्र कम हीना ॥ केववागार्थतिवन्ता
वाताः किमिदमिहा ॥ श्री श्री ५१ ५११

तेउलेस्तिपसु मिच्छाद्वी दव्वपमाणेण केवद्विया, जोइमियदेवेहि सादिरियं ॥ १६३ ॥

पदस्य अत्यो ध्रुवदे । जोइसियदेशा पञ्चचक्राल सन्वे तेउलेस्तिपया भवति । अपञ्चचक्राल पुन ते पेय किण्ह-णील-काउलेस्तिपया ह्येति । ते च पञ्चचक्रालिस्त सर्वखेज्जदिमागमेचा । बाणवेंतरदेवा वि पञ्चचक्राले तेउलेस्तिपया चेव ह्येति । ते च जोइसियदेशाण संखेज्जदिमागमेचा ह्येति । एदेस्तिमपञ्चचा किण्ह-णील-काउलेस्तिपया भवति । ते च सगपञ्चचाण संखेज्जदिमागमेचा । मणुस तिरिक्खेसु वि तेउलेस्तिप मिच्छाद्विहारासी पदरस्य असंखेज्जदिमागमेचो तिरिक्खपम्मलेस्तिमगदीदो संखेज्जगुणो भवति । एदे तिणिमि वि रासीओ भवणत्रासिय सोहम्मीसाणमिच्छाद्वीहि सह गदाओ भवसियदेशेहि सादिरिया ह्वति । एदेस्तिमपहारकाला ध्रुवदे । तं जहा- जेइमियअवहार कालादो पदरगुलस्स संखेज्जदिमागे अबणिदे तउलेस्तिपअवहारकालो इदि । तदो एक-पदरगुलं पेत्तुण संखेज्जखड करिय एगसंडमभिय बहुखडे तम्हि चव पविस्सुचे संउ

तेजोलेस्यासले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने ई ! ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १६३ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पर्याप्तकालमें सभी ज्योतिषी देव तेजोलेस्यासे युक्त होते हैं । तथा अपर्याप्त कालमें वे ही देव कृष्ण नील और कापोतलेस्यासे युक्त होते हैं । वे अपर्याप्त ज्योतिषी जीव अपनी पर्याप्त राशिके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं । बाणप्यन्तर देव भी पर्याप्तकालमें तेजोलेस्यासे युक्त होते हैं और वे बाणप्यन्तर पर्याप्त जीव ज्योतिषियोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं । इन्हीं बाणप्यन्तरोंमें अपर्याप्त जीव कृष्ण नील और कापोतलेस्यासे युक्त होते हैं और वे अपर्याप्त बाणप्यन्तर देव अपनी पर्याप्त राशिके संख्यातवें भागमात्र होते हैं । मनुष्य और तिर्यचोंमें भी तेजोलेस्यासे युक्त मिथ्यारक्षिराशि जयप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो पद्येलेस्यासे युक्त तिर्यचराशिके संख्यातगुणी है । इन तीनों राशियोंको भवनवासी और सौधम-वेद्यान राशिके साथ एकत्रित कर देने पर यह राशि ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हो जाती है । अब इस राशिके अवधारकाद्वया बचन करते हैं । यह इसप्रकार है— ज्योतिषी देवोंके अवधारकालमेंसे प्रतरागुलके संख्यातवें भागप्रमाणको घटा देने पर तेजोलेस्यासे युक्त जीवरक्षिराशि अवधारकाल होता है । उक्त तेजोलेस्यासे युक्त जीवरक्षिराशिके अवधारकालमेंसे एक प्रतरागुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके एक खंडको घटा कर दोष बहुत खंडोंको इसी अवधारकालमें मिखा देने पर

१ तेजोलेस्या दिवात्तवाको अपराधवज्ज्जा कीदृश । व ति १ ८ तेजिवा र्धव्या र्धव्या र्धव्या र्धव्या ॥ जोतिषी अदिवा डिरेत्तवज्ज्जा ब्रह्ममो ॥ एतत्त अदुत्त व अर्धव्या ॥ तेजिवा ॥ तेदु अदुत्तव्या । जोतिषी अदिवा तेजिवा वादो इति ॥ पृ. ३ ११९ ५४ ५४२

सेस्तिपमिच्छाद्विज्वहारकाशे होदि । सेसं मोक्षियमंगो ।

सामणसम्माइट्ठिप्पट्ठि जाव सजदासजदा ति ओष ॥ १६४ ॥

छसु छस्ससु द्विदओषअसंजदसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाद्वि-सासणसम्मामिद्धिदि सरितो एकाए सेउसेसाए द्विरासी कप होदि ? न, पस्सिदामस्स असंखन्वदिमागपेव सरित्तमवेक्खिय आपोवपसाओ ।

पमत्त-अण्णमत्तसजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १६५ ॥

ओषरासिपमाणं न पुरेदि ति वं पुसं होदि ।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छाद्विद्वि दव्वपमाणेण केवडिया, सण्णिपंचिदिय तिरिक्खजोणिणीण संखेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

तेजोकेइयासे युक्त मिथ्याद्वि जीवराशिका अज्वहारकाश होता है । ओष कपव ज्योतिषी देवोंके कपवके समान है ।

तेजोकेइयासे युक्त जीव सासादनसम्पदद्वि गुणस्वानसे लेकर सयत्तासंयत गुणस्वानतक प्रत्येक गुणस्वानमें ओषप्ररूपकाके समान पत्न्योपमके अक्षस्यातर्षे माय है ॥ १६४ ॥

श्रुक्—ओष अक्षयतसम्पदद्वि राशि ओष सम्पमिथ्याद्विगति जीव ओष सासादनसम्पदद्विराशि छहों केइयाओंमें स्थित है अतएव इसके साथ केवड तजोकेइयामें स्थित अक्षयतसम्पदद्विराशि सम्पमिथ्याद्विराशि जीव सासादनसम्पदद्विराशि समान केइ हो सक्ती है ?

समाधान—वहाँ क्योंकि, पत्न्योपमके अक्षस्यातर्षे भागप्रमाणी अपेक्षा इत दोनों राशि-योंमें समानता देखकर तेजोकेइयासे युक्त सासादनसम्पदद्वि जादि राशिका ओषरूपसे उभेउ किया है ।

तेजोकेइयासे युक्त प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणी ओषा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६५ ॥

कह दो गुणस्याओंमें तेजोकेइयासे युक्त जीवराशि ओषप्रमाणीके पूर्व वहाँ करती है यह इस रूपमें संख्यात पदके देनेका अभिप्राय है ।

पक्षकेइयाओंमें मिथ्याद्वि जीव द्रव्यप्रमाणी अपेक्षा कितने हैं ? संखी पचेन्द्रिय तिर्यक् यानिमयी जीवोंके संख्यातर्षे भागप्रमाणी हैं ॥ १६६ ॥

सुगममेदं सुच । एदस्स अवहारकालो युञ्जदे । पंचिदियतिरिक्खन्नेभिणीअवहार
कालं संखेज्जकूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खन्नेभिणीअवहारकालो होदि । तम्मि
संखेज्जकूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खन्नेउलस्सियमिच्छाद्दङ्गीगमवहारकालो होदि ।
तम्मि संखेज्जकूवेहि गुणिदे पम्मलेस्सियमिच्छाद्दङ्गीगमवहारकालो होदि ।

सासणसम्माहट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति ओष ॥ १६७ ॥

एदस्स वि सुचस्स अत्थो सुगमो ।

पमत्त-अपमत्तसजदा दम्बपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १६८ ॥

केउलेस्सियाम संखेज्जदिभागमेत्ता हवसि । कुदो ! पम्मलेस्साए' सह गदवीत्तामं
पतरं संभवामावाद्धो ।

सुक्खलेस्सिएसु मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाव संजदासजदा ति दम्ब
पमाणेण केवडिया, पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पल्लिदो
वममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १६९ ॥

यह सुद्ध सुगम है । जब पच्छेदयासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अवहारकाकाल
कथन करते हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमथियोंके अवहारकाकाले संख्यातसे गुणित करने पर
संबंधी पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमथियोंका अवहारकाकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर
संबंधी पंचेन्द्रिय तिर्यक् सेज्जेदयावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाकाल होता है । इसे संख्यातसे
गुणित करने पर पच्छेदयावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाकाल होता है ।

पच्छेदयावाले जीव सासादनसम्पगदृष्टि गुणस्मानसे लेकर संयतासयत
गुणस्मानतक प्रत्येक गुणस्यानमे ओषप्ररूपणाके समान पच्योपमके असंख्यातके भाग
प्रमाण हैं ॥ १६७ ॥

इस सुद्धका भी अर्थ सरल है ।

पच्छेदयावाले प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितन हैं ? संख्यात हैं ॥ १६८ ॥

पच्छेदयावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव सेजादयावाले प्रमत्तसंयत और
अप्रमत्तसंयत जीवोंके संख्यातके भागप्रमाण होते हैं क्योंकि पच्छेदयासे युक्त प्रमत्तसंयत
और अप्रमत्तसंयत गुणस्यानको प्राप्त हुए जीव प्रचुर नहीं होते हैं ।

सुक्खलेदयावालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्मानसे लेकर संयतासंयत गुणस्मानतक प्रत्येक

१ मण्डि नुत्ता इति पाठः ।

२ सुक्खलेदया विजातद्वयप्रकारं संवत्तवत्तत्तां नरोपगतान्स्वेवमावधित्ता । तं हि १ < पक्क-
संखेज्जकाला एवम् ॥ यो. ओ. ५४९

एतत् पक्षिदोषमस्तु असंख्येज्जदिमागवयनं सत्त्वहारपरूषणं ओषपमाप्यपडिसेइफल ।
 कुदोषगम्भदे । सगहपदिहारेण पञ्चपण्ययत्नवशादो । एतत् अवहारकालो बुधदे । ओष-
 असंख्यदसम्माइडिअवहारकालं आवलियाए असंख्येज्जदिमागव मागे हिदे लखं तमिह चेव
 पक्खिसे तेउलस्सियअसंख्यदसम्माइडिअवहारकालो इदि । तमिह आवलियाए असंख्येज्जदि
 माएण गुमिदे पम्मलेस्सियअसंख्यदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमिह आगलियाए
 असंख्येज्जदिमाएण गुमिदे क्खउलेस्सियअसंख्यदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमिह
 आगलियाए असंख्येज्जदिमागेण गुमिदे किम्भलेस्सियअसंख्यदसम्माइडिअवहारकालो होदि ।
 तमिह आवलियाए असंख्येज्जदिमागव मागे हिदं लखं तमिह चेव पक्खिसे पीउलेस्सिय
 असंख्यदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमिह आवलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुमिदे सुअ
 लेस्सियअसंख्यदसम्माइडिअवहारकालो इदि । सग-सगअसंख्यदसम्माइडिअवहारकाले आव-
 लियाए असंख्येज्जदिमाएण गुमिदे सग-सगसम्मापिच्छइडिअवहारकालो होदि । ते

गुणस्वानमे जीव इव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पत्न्योपमके अर्थक्यातर्षे मागप्रमाण
 है । इन बीबोंके द्वारा अन्तर्गृह्य कालसे पत्न्योपम अपहृत होता है ॥ १९९ ॥

इस सूत्रमें अवहारकालसहित पत्न्योपमके अर्थक्यातर्षे मागप्रमाण इस बचनका
 प्ररूपण ओषपमाप्यके प्रतिपेय करनेके लिये दिया है ।

प्रंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—संग्रहणपरा परिहार करके पर्यायार्थिक नपका अवलम्बन लेनेसे यह
 जाना जाता है ।

अब यहाँ पर अवहारकालका प्ररूपण करते हैं— ओष असंख्यतसम्पगदिय अवहार
 कालको व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे माजित करने पर ओ कल्प जाये वसे वसीमें मिअ हेने
 पर तेज्जकेइयासे पुअ असंख्यतसम्पगदियोंअ अवहारकाल होता है । इसे व्यापकीके अर्थक्या-
 तर्षे मागसे गुणित करने पर पछकेइयासे पुअ असंख्यतसम्पगदियोंअ अवहारकाल होता है ।
 इसे व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे गुणित करने पर वापोतकेइयासे पुअ असंख्यतसम्पगदियोंअ
 अवहारकाल होता है । इसे व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे गुणित करने पर क्खउलेइयासे
 पुअ असंख्यतसम्पगदियोंअ अवहारकाल होता है । इसे व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे माजित
 करने पर ओ कल्प जाये वसे वसीमें मिअ हेने पर बीअकेइयासे पुअ असंख्यतसम्पगदियोंअ
 अवहारकाल होता है । इसे व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे गुणित करने पर गुअकेइयासे
 पुअ असंख्यतसम्पगदियोंअ अवहारकाल होता है । इस अर्थसे अर्थसे असंख्यतसम्पगदियोंके
 अवहारकालोंको व्यापकीके अर्थक्यातर्षे मागसे गुणित करने पर अर्थसे अर्थसे सम्पनिमय्या-
 दियोंअ अवहारकाल होता है । इस अर्थसे अर्थसे सम्पनिमय्यादियोंके अवहारकालको

संखेज्जस्वेहि गुणिदे सग-सगसासजसम्माइडिअवहारकालो होदि । तेसु आवलियाए असंखेज्जदिमाण गुणिदेसु तेउ-यम्मलेस्तिपमज्जदासज्जदअवहारकालो होदि । यपरि सुकलेस्तिपमज्जदसम्माइडिअवहारकाले संखेज्जस्वेहि गुणिदे सुकमिच्छाडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाण गुणिदे सम्मामिच्छाडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जस्वेहि गुणिदे सुकलेस्तिपसासजसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिमाण गुणिदे सुकलेस्तिपमज्जदासज्जदअवहारकालो होदि । सग-सग अवहारकालेन पलिदोवमे माग हिदे सग-सगसामिणो हवन्ति ।

पमत्त-अपमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा' ॥१७०॥

एदे दो वि रासिणो ओपपमाण ण पावन्ति, तेउ-यम्मसुकलेस्सासु अकमेण विहसिय हिदपादो । सेस सुगेम्हं ।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओर्ध' ॥१७१॥

संख्यातसे गुणित करने पर अपने अपने सासादनसम्पत्तियोंका अवहारकाळ होता है । एवं कर्णाए तेजोछेद्यावाळे और पणछेद्यावाळे सासादनसम्पत्तियोंके अवहारकाळोंको भाबळीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर तेजोछेद्यावाळे और पणछेद्यावाळे संयतासंपत्तीके अवहारकाळ होते हैं । इतना विशेष है कि शुद्धछेद्यावाळे असंपत्तिसम्पत्तियोंके अवहारकाळको संख्यातसे गुणित करने पर शुद्धछेद्यावाळे मिष्यादियोंका अवहारकाळ होता है । इसे भाबळीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर शुद्धछेद्यावाळे सम्पत्तिमिष्यादियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर शुद्धछेद्यावाळे सासादनसम्पत्तियोंका अवहारकाळ होता है । इसे भाबळीके असंख्यातसे भागसे गुणित करने पर शुद्धछेद्यावाळे संयतासंपत्तीका अवहारकाळ होता है । इस अपने अपने अवहारकाळसे परस्परपक्षके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिअ प्रमाण आता है ।

शुद्धछेद्यावाळे प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त जीव प्रत्यप्रमाणकी अपेक्षा करने हैं । संख्यात ॥ १७० ॥

शुद्धछेद्यावाळे शुद्ध प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त ये दोनों राशियाँ ओपप्रमाणको प्राप्त नहीं होती हैं । क्योंकि, प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त गुणस्यावर्मे जीव तेजोछेद्या पणछेद्या और शुद्धछेद्यामें गुणपन् धिमक होकर स्थित हैं । शेष कथन सुग्राह्य है ।

शुद्धछेद्यावाळे जीव अपूर्णकरण गुणस्यानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्यानतक प्रत्येक गुणस्यानमें ओपप्रकरणको समान हैं ॥ १७१ ॥

एतत् पलित्वैवमस्म असंख्येज्जदिमागवयं सावहारपरूषं ओषपमाणपडिसेहफलं ।
 इन्द्रावगम्भे ! सगहपरिहारेण पञ्चवगपावतवज्रो । एतत् अवहारकाशो बुधदे । आप-
 असंख्यदसम्माद्विभवहारकाशं आपलियाए असंख्येज्जदिमागव मागे हिदे खं तमिह चेव
 पक्खिसे वेउलस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाशो होदि । तमिह आपलियाए असंख्येज्जदि
 माएण गुणिदे पम्मतेस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाशो होदि । तमिह आपलियाए
 असंख्येज्जदिमाएण गुमिदे काठतेस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाशो होदि । तमिह
 आपलियाए अमंखेज्जदिमागेण गुमिदे किम्भतेस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाशो होदि ।
 तमिह आपलियाए असंख्येज्जदिमागव मागे हिदे खं तमिह चेव पक्खिसे गीसतेस्सिय-
 असंख्यदसम्माद्विभवहारकाशो होदि । तमिह आपलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे सुक्ख
 तेस्सियअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाशो हादि । सग-सगअसंख्यदसम्माद्विभवहारकाशे आप
 लियाए असंख्येज्जदिमाएण गुमिदे सग-सगसम्माभिच्छाद्विभवहारकाशो होदि । ते

गुणध्यानमे श्रीव द्रुम्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पश्योपमक असंख्यातवै मायप्रमाण
 हैं । इन बीबीके द्वारा अन्तर्गृह्यते काशसे पश्योपम अपहृत होता है ॥ १६९ ॥

इस सूत्रमें अवहारकाशसहित पश्योपमके असंख्यातवै भागप्रमाण इस वचनका
 प्रकृपण श्रीवप्रमाणके प्रतिपेक्ष करनेके लिये दिया है ।

प्रश्न—यह कैसे जाता जाता है ?

समाधान—संख्यद्वयका परिहार करके पर्यावर्तित वयका अवलम्बन देनेसे यह
 जाता जाता है ।

अब यहाँ पर अवहारकाशका प्रकरण करते हैं— श्रीव असंख्यतसम्माद्वि अवहार
 काशको व्यवहारीके असंख्यातवै भागसे भाजित करने पर जो अन्य भागे हले वसीमें भिन्ना देने
 पर वेकाकेदशासे युक्त असंख्यतसम्माद्विषयोंका अवहारकाश होता है । इसे व्यवहारीके असंख्या
 तवै भागसे गुणित करने पर पश्योपमसे युक्त असंख्यतसम्माद्विषयोंका अवहारकाश होता है ।
 इसे व्यवहारीके असंख्यातवै भागसे गुणित करने पर कापोतकेदशासे युक्त असंख्यतसम्माद्वि-
 योंका अवहारकाश होता है । इसे व्यवहारीके असंख्यातवै भागसे गुणित करने पर कृष्णकेदशासे
 युक्त असंख्यतसम्माद्विषयोंका अवहारकाश होता है । इसे व्यवहारीके असंख्यातवै भागसे भाजित
 करने पर जो अन्य भागे हले वसीमें भिन्ना देने पर नीलकेदशासे युक्त असंख्यतसम्माद्विषयोंका
 अवहारकाश होता है । इसे व्यवहारीके असंख्यातवै भागसे गुणित करने पर शुक्लकेदशासे
 युक्त असंख्यतसम्माद्विषयोंका अवहारकाश होता है । इन अपने अपने असंख्यतसम्माद्विषयोंके
 अवहारकाशोंको व्यवहारीके असंख्यातवै भागसे गुणित करने पर अपने अपने सम्प्रतिपक्ष
 द्विषयोंका अवहारकाश होता है । इन अपने अपने सम्प्रतिपक्षद्विषयोंके अवहारकाशको

संखेज्जरूहेहि गुणिदे सग-सगसासणसम्माइडिअवहारकाळो होदि । तेसु अत्रलियाए असंखेज्जदिमाण गुणिदेसु तेउ-यम्मलेस्सियसंज्जदासंज्जदअवहारकाळो होदि । यवरि सुकलेस्सियसंज्जदसम्माइडिअवहारकाळो संखेज्जरूहेहि गुणिदे सुकमिच्छइडिअवहारकाळो होदि । तम्हि आबलियाए असंखेज्जदिमाण गुणिदे सम्मामिच्छइडिअवहारकाळो होदि । तम्हि संखेज्जरूहेहि गुणिदे सुकलेस्सियसासणसम्माइडिअवहारकाळो होदि । तम्हि अत्र लियाए असंखेज्जदिमाण गुणिदे सुकलेस्सियसंज्जदासंज्जदअवहारकाळो होदि । सग-सग अवहारकाळेण पल्लिदोवमे माग हिदे सग-सगरामिणो इवति ।

पमस-अपमत्तसज्जदा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥१७०॥

पदे दो वि रासिणो ओपमाण न पावति, तेउ-यम्मसुकलेस्सत्तु अकमेण विहसिय विदपदो । सेस सुगेर्म्म ।

अपुञ्जकरणपट्टाडि जाव सजोगिकेवल्लि ति ओर्म्म ॥१७१॥

संख्यातसे गुणित करने पर अपने अपने सासाधनसम्पन्निधियोंका अवहारकाळ होता है । इन्हें अर्थात् तेजोहेस्याबाळे और पण्णेदयाबाळे सासाधनसम्पन्निधियोंके अवहारकाळोंके आबलीके असंख्यातमें भागसे गुणित करने पर तेजोहेस्याबाळे और पण्णेदयाबाळे संयतासंपत्तोंके अवहारकाळ होते हैं । इतना विशेष है कि शुक्लहेस्याबाळे असंपत्तिसम्पन्निधियोंके अवहारकाळके संख्यातसे गुणित करने पर शुक्लहेस्याबाळे मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसे आबलीके असंख्यातमें भागसे गुणित करने पर शुक्लहेस्याबाळे सम्पन्निध्या दृष्टियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर शुक्लहेस्याबाळे सासाधनसम्पन्निधियोंका अवहारकाळ होता है । इसे आबलीके असंख्यातमें भागसे गुणित करने पर शुक्लहेस्याबाळे संयतासंपत्तोंका अवहारकाळ होता है । इस अपने अपने अवहार-काळसे पर्योपमके माजित करने पर अपनी अपनी राशिअ प्रमाण आता है ।

शुक्लहेस्याबाळे प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त जीव प्रत्यप्रमाणकी अपेक्षा किंगने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७० ॥

शुक्लहेस्यासे शुक्ल प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त ये दोनों राशियाँ औषप्रमाणकी माप नहीं होती हैं क्योंकि, प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त गुणस्थानमें जीव तेजोहेस्या पण्णेदया और शुक्लहेस्यामें पुष्यपु विभक्त होकर स्थित हैं । दोष कथन सुमात्र है ।

शुक्लहेस्याबाळे जीव अपूर्वकरण गुणस्थानसे केवल सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें औषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७१ ॥

इदो ! अप्सरस्मामादो । अत्रोगिणो असेस्सिपा । इदो ! कम्मलेवमिचित-
जोग-कमायामा । ओगस्स कथं तस्माववणसा ? न, तिपदि चि ओगस्स वि सेस्सा-
वणससिद्दीदो ।

मागामार्ग पचइस्सामो । सक्खीवरामिमर्षतखंडे कए बहुखंडा तिसेस्सिपा होति ।
सेसमपतखंडे कए बहुखंडा अलेस्सिपा होति । सेस सखे-अखंडे कए बहुखंडा सेउ
सेस्सिपा होति । सममसंखण्डखंडे कए बहुखंडा पम्मत्तस्सिपा । ससेगमागा सुक्क-
त्तस्सिपा । तिनेस्सिपरामिमावलिपाए असंखेज्जदिमाएण खंडेज्जा त-अगखंड तदो पुप
इरिय सेस बहुमागे पण्ण निप्पि समपुज करिय अण्णिदेगखंडमावलिपाए असंखेज्जदि
माएण खंडिय तत्थ पदुखंडे पत्तपुज पक्खित्थे किण्ठलेस्सिपा । सेसगखंडमावलिपाए
असंखेज्जदिमागेण खंडिय बहुखंडे विदियपुंज पक्खित्थे पील्लेस्सिपा । सेसगखंड
तदियपुंजे पक्खित्थे काउलेस्सिपा । तदो काउलेस्सिपरामिमर्षतखंड कए बहुखंडा मिच्छा-
इड्ढियो । सेममसंखण्डखंडे कए बहुखंडा असंखदसम्मपड्ढियो । सेसं सखण्डखंडे कए

यूँकि अपूर्वकरण भादि गुणस्थानोंमें शुद्धमेदवाको छोड़कर दूसरी मेदवा नहीं पाई
जाती है इसलिये अपूर्वकरण भादि गुणस्थानोंमें मोक्षप्रमाण ही शुद्धमेदवापर्येक प्रमाण
है । अयोधी जीव मेदवारहित है क्योंकि अयोधी गुणस्थानमें कर्ममेदवा कारणमूल पोष और
कषाय नहीं पाया जाता है ।

प्रश्न — वेदय योगको मेदवा यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान — नहीं क्योंकि, ओ भिपन करती है वह मेदवा है । इस निश्चितिसे
अनुसार योगके भी मेदवा संज्ञा सिद्ध हो जाती है ।

अब भागामागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिक अनन्त खंड करने पर बहुभाग-
प्रमाण कृष्ण, नील और वारोण इन तीन मेदवावाले जीव हैं । दोष एक भागके अनन्त खंड
करने पर बहुभाग खड्गवारहित जीव हैं । दोष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग
सेत्रोमेदवावाले जीव हैं । दोष एक भागके अर्धव्यात खंड करने पर बहुभाग पद्ममेदवावाले
जीव हैं । दोष एक भागप्रमाण शुद्धमेदवावाले जीव हैं । कृष्ण नील और वारोण इन तीन
मेदवास शुद्ध जीवराशिकों भावर्षिके अर्धव्यातमें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको
पृथक् ब्यापित करके और शेष बहुभागके समान तीन पुंज करके पद्मकर पृथक् रखने हुए
एक खंडका भावर्षिके अर्धव्यातमें भागसे खंडित करके वहाँ ओ बहुभाग भाये उसे प्रथम पुंजमें
मिला देने पर कृष्णमेदवावाले जीवोंका प्रमाण होता है । दोष एक भागको भावर्षिके
अर्धव्यातमें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर नीलमेदवावाले
जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक भाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर वारोणमेदवावाले
जीवोंका प्रमाण होता है । अनन्त वारोणमेदवावाली राशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
विप्याग्नि जीव हैं । दोष एक भागके अर्धव्यात खंड करने पर बहुभाग पद्मवत्सम्यग्नि

बहुसंख्य सम्मामिच्छाद्विधौ । सेसेगखंड सासपसम्माद्विधौ । एवं नील-किण्वलेस्ताम पि
 मामामागं कायर्ष्य । तेउलेस्तिपरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधौ । सेसम
 संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य असज्जसम्माद्विधौ । सेस संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सम्मा
 मिच्छाद्विधौ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सासपसम्माद्विधौ । सेसमसंखेज्जखंडे
 कए बहुसंख्य संज्जदासंज्जदा । सेसेगमागो पमचापमचसज्जदा । पम्मलेस्तिपरासिमसंखेज्ज-
 खंडे कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधौ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य असज्जसम्माद्विधौ ।
 सेस संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सम्मामिच्छाद्विधौ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य
 सासपसम्माद्विधौ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य संज्जदासंज्जदा । सेसेगमागो पमचा-
 पमचसज्जदा । सुक्खलेस्तिपरासि संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य असज्जसम्माद्विधौ । सेसम-
 संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधौ । सेस संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सम्मामिच्छा-
 द्विधौ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सासपसम्माद्विधौ । सेसमसंखेज्जखंडे कए
 बहुसंख्य संज्जदासंज्जदा । सेसेगमागो पमचापमचसज्जदा ।

अप्यावहुगं विमिहं सत्त्वाभादिमेएण । सत्पाणे पयदं । किण्व-नील-काउलेस्तिप-

जीव है । रोप एक मागके संख्यात बंध करने पर बहुभाग सम्पत्तिमिच्छाद्वि जीव है ।
 रोप एक माग प्रमाण सासादनसम्पत्ति जीव है । इसीप्रकार नील और कापोतछेद्या
 बायोका भी मायामाग कर लेना चाहिये । तेओछेद्याबाओ जीवराशिसे असंख्यात बंध करने
 पर बहुभाग मिच्छाद्वि जीव है । रोप एक मागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग
 जसंपत्तिसम्पत्ति जीव है । रोप एक मागके संख्यात बंध करने पर बहुभाग सम्पत्तिमिच्छाद्वि
 जीव है । रोप एक मागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग सासादनसम्पत्ति जीव है । रोप
 एक मागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग संयतासंपत्त जीव है । रोप एक मागप्रमाण
 प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त जीव है । पछछेद्याबाओ जीवराशिसे असंख्यात बंध करने
 पर बहुभाग मिच्छाद्वि जीव है । रोप एक मागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग
 जसंपत्तिसम्पत्ति जीव है । रोप एक मागके संख्यात बंध करने पर बहुभाग सम्पत्तिमिच्छाद्वि
 जीव है । रोप एक मागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग सासादनसम्पत्ति जीव है । रोप
 एक मागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग संपत्तासंपत्त जीव है । रोप एक मागप्रमाण
 प्रमत्तसंपत्त और अप्रमत्तसंपत्त जीव है । शुद्धछेद्यक राशिसे संख्यात बंध करने पर बहुभाग
 जसंपत्तिसम्पत्ति जीव है । रोप एक मागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग मिच्छाद्वि
 जीव है । रोप एक मागके संख्यात बंध करने पर बहुभाग सम्पत्तिमिच्छाद्वि जीव है । रोप
 एक मागके असंख्यात बंध करने पर बहुभाग सासादनसम्पत्ति जीव है । रोप एक मागके
 असंख्यात बंध करने पर बहुभाग संयतासंपत्त जीव है । रोप एक मागप्रमाण प्रमत्तसंपत्त
 अपि जीव है ।

स्वस्थान धारिके मेरेसे अस्पष्टद्वय तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अस्पष्टद्वय

कुदो ! अप्पलेस्सामावादो । अजोगियो मलेस्सिया । कुदो ! कम्मलेवमिमिच-
जोग-कयायामावा । जोगस्स कर्म्म लस्सत्तवपत्तो ! ज, तिपदि पि जोगस्स वि सेस्सा-
ववपत्तिसिद्धिदो ।

भागामार्ग वचस्सामो । सप्पजीवरासिमगतउडे कए बहुलंढा तिलेस्सिया होति ।
सेसमर्णत्तउडे कए बहुलंढा अलेस्सिया होति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुलंढा ठेउ
लेस्सिया होति । ससमर्णत्तउडे कए बहुलंढा पम्मलेस्सिया । सेसेगमाणो सुक्क-
लेस्सिया । तिलेस्सियरासिमावलिपाए अत्तंखेज्जदिमाण खंडेज्ज तत्थेगखंड तदो पुप
इतिप सेसे बहुमाणे वेत्थ तिणि समपुज करिय अरणिग्गखंडमावलिपाए अत्तंखेज्जदि-
माण खंडिय तत्थ बहुलंढा पढमपुज पक्खिउत्थे किण्डलस्सिया । सेसेगखंडमावलिपाए
अत्तंखेज्जदिमाणे खंडिय बहुलंढा विदिपपुजे पक्खिउत्थे गील्लेस्सिया । सेसगखंड
तदियपुजे पक्खिउत्थे कउठेस्सिया । तदो कउठेस्सियरासिमर्णत्तउडे कए बहुलंढा मिच्छा-
इत्थिपो । सेसमर्णत्तउडे कए बहुलंढा अत्तंखेज्जसम्मावत्थिपो । सेस संखेज्जखंडे कए

यूँकि अपूर्वकारण आदि गुणस्वाभावोंमें शुद्धलेखाको छोड़कर दूसरी देखा नहीं पाई
जाती है इसलिये अपूर्वकारण आदि गुणस्वाभावोंमें भोग्यप्रमाण ही शुद्धलेखापात्रोंका प्रमाण
है । अयोगी जीव सेद्वारहित है क्योंकि अयोगी गुणस्वाभावोंमें कर्मोपका कारणभूत बोध और
कणाय नहीं पाया जाता है ।

छंका—वेबल योगको देखा यह संका कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, जो छिपान करती है वह देखा है' इस निराकिके
अनुसार योगके भी देखा संका सिद्ध हो जाती है ।

जब भागामार्गको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अगस्त खंड करने पर बहुभाग-
प्रमाण हृष्य, नील और बायोत इन तीन देखावाले जीव हैं । दोष एक भावका अगस्त खंड
करने पर बहुभाग कइराउहित जीव हैं । दोष एक भावके संख्यात खंड करने पर बहुभाग
लेखोदेखावाले जीव हैं । दोष एक भावके अत्तंख्यात खंड करने पर बहुभाग पढलेखावाले
जीव हैं । दोष एक भावप्रमाण शुद्धलेखावाले जीव हैं । हृष्य नील और बायोत इन तीन
देखावाले शुद्ध जीवराशिको भावराशिके अत्तंख्यातमें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको
पृथक् स्थापित करके और दोष बहुभागके समान तीन पुत्र करके घटाकर पृथक् रखके हुए
एक खंडको आबसीके अत्तंख्यातमें भागसे खंडित करके बड़ा जो बहुभाग बोध उसे प्रयत्न पुत्रमें
मिला देने पर हृष्यलेखावाले जीवोंका प्रमाण होता है । दोष एक भावको आबसीके
अत्तंख्यातमें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुत्रमें मिला देने पर नीललेखावाले
जीवोंका प्रमाण होता है । बाव एक भाग तीसरे पुत्रमें मिला देने पर बायोतलेखावाले
जीवोंका प्रमाण होता है । अगस्त बायोतलेखावाली राशिके अगस्त खंड करने पर बहुभाग
मिथ्याउहि जीव हैं । बाव एक भावके अत्तंख्यात खंड करने पर बहुभाग अत्तंख्यातव्यवधि

बहुसंख्य सम्मामिच्छाद्विधो । सेसेगखंड सासणसम्मद्विधो । एव बील-किण्हेस्सार्य पि
 मामामां कायस्य । तेठलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधो । सेसम
 संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य असमसम्मद्विधो । सेस संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सम्मा-
 मिच्छाद्विधो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सासणसम्मद्विधो । सेसमसंखेज्जखंडे
 कए बहुसंख्य संजदासंजदा । सेसेगमागो पमचापमचसज्जदा । पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्ज
 खंडे कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य असज्जदसम्मद्विधो ।
 सेसं संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सम्मामिच्छाद्विधो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य
 सासणसम्मद्विधो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य संजदासंजदा । सेसेगमागो पमचा-
 पमचसज्जदा । सुक्खेस्सियरासि संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य असंजदसम्मद्विधो । सेसम-
 संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य मिच्छाद्विधो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सम्मामिच्छा-
 द्विधो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुसंख्य सासणसम्मद्विधो । सेसमसंखेज्जखंडे कए
 बहुसंख्य संजदासंजदा । सेसेगमागो पमचापमचादो ।

अप्यावहुग विविहं सत्थापादिमेएण । सत्थापे पयंदं । किण्हे-बील-काउलेस्सिय-

जीव हैं । रोप एक मागके संख्यात बंड करने पर बहुमाग सम्पगिमप्यावदि जीव हैं ।
 रोप एक माग प्रमाण सासादनसम्पगदि जीव हैं । इसीप्रकार नील और कापोतकेत्या-
 नार्योंका भी मागमाग कर लेना चाहिये । तेजोछत्यावाही जीवराशिके असंख्यात बंड करने
 पर बहुमाग मिप्यावदि जीव हैं । रोप एक मागके असंख्यात बंड करने पर बहुमाग
 असंयतसम्पगदि जीव हैं । रोप एक मागके संख्यात बंड करने पर बहुमाग सम्पगिमप्यावदि
 जीव हैं । रोप एक मागके असंख्यात बंड करने पर बहुमाग सासादनसम्पगदि जीव हैं । रोप
 एक मागके असंख्यात बंड करने पर बहुमाग संयतासंयत जीव हैं । रोप एक मागप्रमाण
 प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं । पञ्चलेस्यावाही जीवराशिके असंख्यात बंड करने
 पर बहुमाग मिप्यावदि जीव हैं । रोप एक मागके असंख्यात बंड करने पर बहुमाग
 असंयतसम्पगदि जीव हैं । रोप एक मागके संख्यात बंड करने पर बहुमाग सम्पगिमप्यावदि
 जीव हैं । रोप एक मागके असंख्यात बंड करने पर बहुमाग सासादनसम्पगदि जीव हैं । रोप
 एक मागके असंख्यात बंड करने पर बहुमाग संयतासंयत जीव हैं । रोप एक मागप्रमाण
 प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं । शुक्लेस्सियरासिके संख्यात बंड करने पर बहुमाग
 असंयतसम्पगदि जीव हैं । रोप एक मागके असंख्यात बंड करने पर बहुमाग मिप्यावदि
 जीव हैं । रोप एक मागके संख्यात बंड करने पर बहुमाग सम्पगिमप्यावदि जीव हैं । रोप
 एक मागके असंख्यात बंड करने पर बहुमाग सासादनसम्पगदि जीव हैं । रोप एक मागके
 असंख्यात बंड करने पर बहुमाग संयतासंयत जीव हैं । रोप एक मागप्रमाण प्रमत्तसंयत
 जीव हैं ।

स्वस्याप आदिके मेवमे अवयवद्वय तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्यापमें अवयवद्वय

मिच्छद्ब्रह्मीयं सत्यायं जल्पि, रासीदो योबदरमागहसामावा । सासबादीपमोषमेगो । सञ्चत्पोवो सेउउस्मिपमिच्छद्ब्रह्मिजवहारकालो । विकर्षमर्द्ध अर्तलेज्जगुणा । सेही अर्तलेज्जगुणा । दम्भमर्तलेज्जगुण । पदरमर्तलेज्जगुण । लेगो अर्तलेज्जगुणो । सास बादीपमोष । एवं येव पम्म-गुहतेस्सायं सत्यायं पत्तर्ण । सरबायं गर्द ।

परत्वाये पयर्द । सम्पत्पोवो काउलेस्मिपअर्तलेज्जगुणमिच्छद्ब्रह्मिजवहारकालो । सम्मा-मिच्छद्ब्रह्मिजवहारकासे अर्तलेज्जगुणो । सासजसम्ममिच्छद्ब्रह्मिजवहारकासे संलेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमर्तलेज्जगुणं । एवं येयम्मा जाव पस्मिदोवर्म्म सि । तदो काउलेस्मिपमिच्छद्ब्रह्मिजो अर्तगुणा । एवं नील-किण्णा । सञ्चत्पोवा सेउउस्मिपअप्पमत्तसज्जदा । पमत्तसज्जदा संलेज्जगुणा । असज्जदसम्ममिच्छद्ब्रह्मिजवहारकालो अर्तलेज्जगुणो । सम्मामिच्छद्ब्रह्मिजवहारकासे अर्तलेज्जगुणो । सासजसम्ममिच्छद्ब्रह्मिजवहारकालो संलेज्जगुणो । संज्जदासज्जदवहारकासा अर्तलेज्जगुणो । तस्सेव दम्भमर्तलेज्जगुणं । एवं येयम्मा जाव पस्मिदोवर्म्म सि । तदो सेउ-

मकृत है— कृष्ण नील और कापोतछेदकाबाखोंके स्वस्थान अस्पृशतृत्व नहीं पाया जाता है क्योंकि कृष्ण नील और कापोतछेदक राशियोंसे इनके मागहार स्तोत्र नहीं हैं । सासात्तनसम्पद्दिरिोंके स्वस्थान अस्पृशतृत्व और स्वस्थान अस्पृशतृत्वके समान हैं । तेजोछेदक मिष्वाद्यिोंका अवहारकाज सबसे स्तोत्र है । उन्हींकी विष्कंमत्तकी अवहारकाजसे संख्यात-गुणी है । जगमेयी विष्कंमत्तकीसे संख्यातगुणी है । द्रव्य अपमेयीसे संख्यातगुणी है । अपमत्त द्रव्यसे संख्यातगुणी है । जोक अपमत्तसे संख्यातगुणी है । सासात्तनसम्पद्दिरिोंकी स्वस्थान अस्पृशतृत्व और स्वस्थान अस्पृशतृत्वके समान है । इसीप्रकार पक्षोपमत्त और गुहतेस्साबाखोंके स्वस्थान अस्पृशतृत्वका कथन करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान अस्पृशतृत्व समाप्त हुआ ।

अर परस्थानमें अस्पृशतृत्व मकृत है— कापोतछेदक संख्यातसम्पद्दिरिोंका अव-हारकाज सबसे स्तोत्र है । सम्पमिष्वाद्यिोंका अवहारकाज संख्यातसम्पद्दिरिोंके अवहारकाजसे संख्यातगुणी है । सासात्तनसम्पद्दिरिोंका अवहारकाज सम्पमिष्वाद्यिोंके अवहारकाजसे संख्यातगुणी है । उन्हींका द्रव्य अवहारकाजसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार पक्षोपमत्त के जाना चाहिये । पक्षोपमसे कापोतछेदक मिष्वाद्यि जीव समस्तगुणे हैं । इसीप्रकार नील और कृष्णछेदक जीवोंके परस्थान अस्पृशतृत्वका भी कथन करना चाहिये । तेजोछेदक अपमत्तसंयत जीव सबसे स्तोत्र हैं । अपमत्तसंयत जीव अपमत्तसबसेसे संख्यात-गुणे हैं । संख्यातसम्पद्दिरिोंका अवहारकाज अपमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणी है । सम्पमिष्वा-द्यिोंका अवहारकाज संख्यातसम्पद्दिरिोंके अवहारकाजसे संख्यातगुणी है । सासात्तन सम्पद्दिरिोंका अवहारकाज सम्पमिष्वाद्यिोंके अवहारकाजसे संख्यातगुणी है । संवता-संयतोंका अवहारकाज सासात्तनसम्पद्दिरिोंके अवहारकाजसे संख्यातगुणी है । उन्हींका द्रव्य अवहारकाजसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार पक्षोपमत्त के जाना चाहिये । पक्षोपमसे

सस्तिपमिच्छद्द्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि सत्थापमंगो । एवं पम्मलेस्साए । सुकलेस्साए सच्चत्थोवा चचारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माद्द्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मिच्छद्द्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । सम्मामिच्छद्द्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सात्थसम्माद्द्विअवहारकालो संखेज्जगुणो । सजदामसद अवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव ठप्पमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण पेयध्वं आस पडिदावम वि । परत्थाण गद ।

सच्चपरत्थाणे पयद । सम्मत्थोवा चचारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । सुकलेस्तिपअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पम्मलेस्तिपअप्पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । तेउ सस्तिपमप्पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्तिपमसजदसम्माद्द्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छद्द्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सात्थसम्मा-

तेजोहेइयक मिप्पाददियोंक अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अस्य बहुत्वेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पण्णोदयके परत्थाण अवपगहुत्त्वका कथन करना चाहिये । शुक्लहेइयामें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । सपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव सपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अममत्तसंयत जीव सयोगिकेवलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अममत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्पददियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । मिप्पाददियोंका अवहारकाल असंयतसम्पददियोंका अवहारकालसे संख्यातगुणा है । सम्मामिप्पाददियोंका अवहारकाल सम्मामिप्पाददियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सात्थसम्पददियोंका अवहारकाल सम्मामिप्पाददियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारकाल सात्थसम्पददियोंका अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्नीय द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिबोधन क्रमसे पक्षोपमत्तक ले जाना चाहिये । इसप्रकार परत्थाण अवपगहुत्त्व समाप्त हुआ ।

अब सब परत्थाणमें अवपगहुत्त्व प्रकृत है- चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । सपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । शुक्लहेइयक अममत्तसंयत जीव सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अममत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पण्णोदयक अममत्तसंयत जीव शुक्लहेइयक प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पण्णोदयक प्रमत्तसंयत जीव पण्णोदयक अममत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोहेइयक अममत्तसंयत जीव पण्णोदयक प्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोहेइयक प्रमत्तसंयत जीव तेजोहेइयक अममत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोहेइयक असंयतसम्पददियोंका अवहारकाल तेजोहेइयक प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्मामिप्पाददियोंका

मिच्छद्ब्रह्मिणं सत्यायं गतिम्, रासीदो योषद्वरमागतामात्रा । सत्सप्तादीनमोषमेगो । सप्तत्योषो तेउलस्मियमिच्छद्ब्रह्मिण्यवहारकालो । विषयमस्य अर्सेन्यगुणा । सेरी अर्सेन्यगुणा । द्वायमर्सेन्यगुण । पदमर्सेन्यगुण । सेगो अर्सेन्यगुणो । सास गदीत्यमोषं । एवं येव पम्-सुदलेस्सार्ग सत्यायं वचनं । मत्यायं गदं ।

परत्यायमे पयदं । सप्तत्योषो काउलेस्मियमर्सेन्यदसम्मद्ब्रह्मिण्यवहारकालो । सम्मा-
मिच्छद्ब्रह्मिण्यवहारकासे अर्सेन्यगुणो । सासपसम्मद्ब्रह्मिण्यवहारकालो सत्सेन्यगुणो । तसेव
द्वायमर्सेन्यगुणं । एवं येयन्यं आव पस्तिदोवर्म ति । तदो काउलेस्मियमिच्छद्ब्रह्मिणो
अर्सेन्यगुणा । एवं पस्ति-किन्नायं । सप्तत्योषा तेउलस्मियमप्यमचसदा । पमचसदा
सत्सेन्यगुणा । असददसम्मद्ब्रह्मिण्यवहारकालो अर्सेन्यगुणो । सम्मामिच्छद्ब्रह्मिण्यवहारकालो
अर्सेन्यगुणो । सासपसम्मद्ब्रह्मिण्यवहारकालो सत्सेन्यगुणो । सत्सेन्यगुणा अर्सेन्यगुणो । तसेव
द्वायमर्सेन्यगुण । एवं येयन्यं आव पस्तिदोवर्म ति । तदो तेउ-

प्रकृत है— कृष्ण नील और कापोतकेस्वभावोंके स्वस्थान अत्यन्तदुर्लभ नहीं पाया जाता है क्योंकि, कृष्ण नील और कापोतकेस्वक राशियोंसे उनके मायहार स्तोक नहीं है । सासायन सम्मन्वयि धारिके स्वस्थान अत्यन्तदुर्लभ ओष स्वस्थान अत्यन्तदुर्लभके समान है । तेओलेस्वक मिष्यायिधियोंका अवहारकाक सबसे स्तोक है । कर्नीकी विषयमस्य अर्सेन्यगुणा है । अयमेपी विषयमस्य अर्सेन्यगुणा है । प्रप्य जगमेपीसे अर्सेन्यगुणा है । जगमतर प्रप्यसे अर्सेन्यगुणा है । ओष जगमतरसे अर्सेन्यगुणा है । सासायनसम्मन्वयि धारिक स्वस्थान अत्यन्तदुर्लभ ओष स्वस्थान अत्यन्तदुर्लभके समान है । इसीप्रकार पयकेस्व, और सुदलेस्वभावोंके स्वस्थान अत्यन्तदुर्लभके समान करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान अत्यन्तदुर्लभ समान हुआ ।

जग परस्थानमें अत्यन्तदुर्लभ प्रकृत है— कापोतकेस्वक असपतसम्मन्वयिधियोंका अव-
हारकाक सबसे स्तोक है । सम्मामिष्यायिधियोंका अवहारकाक असपतसम्मन्वयिधियोंके
अवहारकाकसे असपतसम्मन्वयिधियोंका अवहारकाक सम्मन्वयिधियोंका अवहारकाकसे
अवहारकाकसे अर्सेन्यगुणा है । कर्नीका प्रप्य अवहारकाकसे अर्सेन्यगुणा है । इसीप्रकार
वयोपमतक के जाना चाहिये । पयोपमतके कापोतकेस्वक मिष्यायिधियोंका अवहारकाक
है । इसीप्रकार नील और कृष्णकेस्वक नीलोंके परस्थान अत्यन्तदुर्लभके समान करना चाहिये ।
तेओलेस्वक जगमचसदा ओष सबसे स्तोक है । जगमचसदा ओष जगमचसदासे अर्सेन्यगु-
णा है । असपतसम्मन्वयिधियोंका अवहारकाक जगमचसदासे अर्सेन्यगुणा है । सम्मामिष्या-
यिधियोंका अवहारकाक असपतसम्मन्वयिधियोंके अवहारकाकसे अर्सेन्यगुणा है । सासायन
सम्मन्वयिधियोंका अवहारकाक सम्मामिष्यायिधियोंके अवहारकाकसे अर्सेन्यगुणा है । संवता-
सपतके अवहारकाक सासायनसम्मन्वयिधियोंके अवहारकाकसे अर्सेन्यगुणा है । कर्नीका
प्रप्य अवहारकाकसे अर्सेन्यगुणा है । इसीप्रकार पयोपमतक के जाना चाहिये । पयोपमतके

छेत्तियमिच्छाद्द्विअवहारफालो असंखेज्जगुणो । उवरि सत्त्वापमगो । एषं पम्मलेस्साए । सुकलेस्साए सम्बत्थोवा अचारि उवसामगा । खनगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । अत्तंजदसम्माद्द्विअवहारफालो असंखज्जगुणा । मिच्छाद्द्विअवहारफालो संखज्जगुणा । सम्मामिच्छाद्द्विअवहारफालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माद्द्विअवहारफालो संखेज्जगुणो । सज्जदामंजद अवहारफालो असंखेज्जगुणो । तस्सव दम्बमसंखेज्जगुण । एषमवहारफालपडिलोमेण नेयर्थं ज्ञाय पल्लिदोवमं सि । परत्त्वाप गद ।

सम्बपरत्थाणे पयद । सम्बत्थोवा अचारि उवसामगा । खनगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । सुकलस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखज्जगुणा । तेउ छेत्तियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलस्सियअप्पमत्तसंजदा द्विअवहारफालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाद्द्विअवहारफालो असंखज्जगुणा । सासणसम्मा-

तेजोछेत्त्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारफाल असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्प बहुत्वके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पद्मलेदपाके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । शुक्ललेदपामें चारों उपशामक सबसे श्लोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अममत्तसंपत्त जीव सयोगिकेवलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंपत्त जीव अममत्तसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । असंपत्तसम्पददृष्टियोंका अवहारफाल प्रमत्तसंपत्तोंसे असंख्यातगुणा है । मिथ्यादृष्टियोंका अवहारफाल असंपत्तसम्पददृष्टि अवहारफालसे संख्यातगुणा है । सम्मामिथ्यादृष्टियोंका अवहारफाल मिथ्यादृष्टियोंके अवहार फालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्पददृष्टियोंका अवहारफाल सम्मामिथ्यादृष्टियोंके अवहारफालसे संख्यातगुणा है । संपत्तसंपत्तोंका अवहारफाल सासादनसम्पददृष्टियोंके अवहारफालसे असंख्यातगुणा है । उर्द्धाका द्रव्य अवहारफालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारफालके प्रतिष्ठोम कमसे पक्षोपमत्तक छे ज्ञाता चाहिये । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- चारों उपशामक सबसे श्लोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । शुक्ललेदपक अममत्तसंपत्त जीव सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंपत्त जीव अममत्तसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । पद्मलेदपक अममत्तसंपत्त जीव शुक्ललेदपक प्रमत्तसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । पद्मलेदपक प्रमत्तसंपत्त जीव पद्मलेदपक अममत्तसंपत्त जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेदपक अममत्तसंपत्त जीव पद्मलेदपक प्रमत्तसंपत्त जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेदपक प्रमत्तसंपत्त जीव तेजोलेदपक अममत्तसंपत्तोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेदपक असंपत्तसम्पददृष्टियोंका अवहारफाल तेजोलेदपक प्रमत्तसंपत्तोंसे असंख्यातगुणा है । सम्मामिथ्यादृष्टि-

मिच्छाद्वितीयं सत्यात्वं पतिष्य, रासीदो धोवदरमागहाराभावाः । सासणादीन्ममोपमैर्गो । सम्प्रत्योषो तेउलस्मियमिच्छाद्विभवहारकात्तो । विस्तरमर्द्धं अर्धलेखगुणा । सेदो अर्धलेखगुणा । दम्भमर्धलेखगुण । पदमर्धलेखगुण । लोको अर्धलेखगुणो । सासनादीन्ममोप । एवं भव मम्म-सुखलेस्सात्वं सत्यात्वं वचनं । सत्यात्वं गदं ।

परत्यागे पर्यदं । सम्प्रत्योषो काउलेस्मियजर्धदसम्मिच्छाद्विभवहारकात्तो । सम्प्रमिच्छाद्विभवहारकात्तो अर्धलेखगुणो । सासणसम्मिच्छाद्विभवहारकात्तो अर्धलेखगुणो । तस्तेव दम्भमर्धलेखगुणं । एवं जेयनं आत्वं पतिदोषमं ति । तदो काउलेस्मियमिच्छाद्विभवो अर्धतगुणा । एवं नील-किष्कात्वं । सम्प्रत्योषा तेउलेस्मियमप्यमचसज्जदं । पमचसज्जदं अर्धलेखगुणा । असज्जदसम्मिच्छाद्विभवहारकात्तो अर्धलेखगुणो । सम्प्रमिच्छाद्विभवहारकात्तो अर्धलेखगुणो । सासणसम्मिच्छाद्विभवहारकात्तो अर्धलेखगुणा । संभदासंजदअवहारकात्तो अर्धलेखगुणो । तस्तेव दम्भमर्धलेखगुणं । एवं जेयन् आत्वं पतिदोषमं ति । तदो तेउ

प्रकृत है— कृष्ण नील और कापोतछेदयाबाकोंके स्वस्थान अस्पष्टहृत्त्व नहीं पाया जाता है क्योंकि कृष्ण नील और कापोतछेदयक राशिपोंसे इनके मागहार स्तोक नहीं है । सासादन सम्प्रगद्विषयिके स्वस्थान अस्पष्टहृत्त्व जोध स्वस्थान अस्पष्टहृत्त्वके समान है । तेउलेस्मियक मिच्छाद्विषयोंका अवहारकात्त्व सबसे स्तोक है । इन्हींके विच्छमसूची अवहारकात्त्वसे अर्धक्यात गुणी है । जगमेयी विच्छमसूचीसे अर्धक्यातगुणी है । द्रव्य जगमेयीसे अर्धक्यातगुणा है । जगमतर द्रव्यसे अर्धक्यातगुणा है । कोक जगमतरसे अर्धक्यातगुणा है । सासादनसम्प्रगद्विषयिका स्वस्थान अस्पष्टहृत्त्व जोध स्वस्थान अस्पष्टहृत्त्वके समान है । इसीप्रकार पद्मकेरव, नील गुह्यकेरवाबाकोंके स्वस्थान अस्पष्टहृत्त्वका कथन करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान अस्पष्टहृत्त्व समाप्त द्रव्य ।

अथ परस्यागमे अस्पष्टहृत्त्व प्रकृत है— कापोतछेदयक असपतसम्प्रगद्विषयोंका अवहारकात्त्व सबसे स्तोक है । सम्प्रमिच्छाद्विषयोंका अवहारकात्त्व अर्धतसम्प्रगद्विषयोंके अवहारकात्त्वसे अर्धक्यातगुणा है । स्वसादनसम्प्रगद्विषयोंका अवहारकात्त्व सम्प्रमिच्छाद्विषयोंके अवहारकात्त्वसे अर्धक्यातगुणा है । इन्हींका द्रव्य अवहारकात्त्वसे अर्धक्यातगुणा है । इसीप्रकार पद्मोपमतक के जाना चाहिये । पद्मोपमसे कापोतछेदयक मिच्छाद्विषयोंका अवहारकात्त्व है । इसीप्रकार नील और कृष्णछेदयक जीवोंके परस्थान अस्पष्टहृत्त्वका भी कथन करना चाहिये । तेउलेस्मियक जगमत्सपत जीव सबसे स्तोक है । जगमत्सपत जीव जगमत्सपतसे अर्धक्यात गुणी है । अर्धतसम्प्रगद्विषयोंका अवहारकात्त्व जगमत्सपतसे अर्धक्यातगुणा है । सम्प्रमिच्छाद्विषयोंका अवहारकात्त्व अर्धतसम्प्रगद्विषयोंके अवहारकात्त्वसे अर्धक्यातगुणा है । सासादन सम्प्रगद्विषयोंका अवहारकात्त्व सम्प्रमिच्छाद्विषयोंके अवहारकात्त्वसे अर्धक्यातगुणा है । सपतासपतोंका अवहारकात्त्व सासादनसम्प्रगद्विषयोंके अवहारकात्त्वसे अर्धक्यातगुणा है । इन्हींका द्रव्य अवहारकात्त्वसे अर्धक्यातगुणा है । इसीप्रकार पद्मोपमतक के जाना चाहिये । पद्मोपम-

इष्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो । पम्मलस्मियअसंखदसम्मइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
सम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सात्थपसम्मइष्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।
काउलेस्मियअसंखदसम्मइष्टिअवहारकालो असंख ज्जगुणो । किण्डेस्मियअसंखदसम्मइष्टि
अवहारकालो असंखेज्जगुणो । नील्लेस्मियअसंखदसम्मइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ ।
काउलेस्मियसम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सात्थपसम्मइष्टिअवहारकालो
संखे ज्जगुणो । किण्डेस्मियसम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो असंख ज्जगुणो । नील्लस्मिय
सम्मामिच्छइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ । किण्डेस्मियसात्थपसम्मइष्टिअवहारकालो
संखेज्जगुणो । नील्लेस्मियसात्थपसम्मइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ । वेउलस्मियसंखदा-
सखदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पम्मलेस्मियसंखदासखदअवहारकालो संखेज्जगुणो ।

[illegible]

सेवपमानं बुद्धये । एसो पुन अमवसिद्धिरासिपमाणं सुहु परिप्फुडो । कुदो ! अमव-
सिद्धिरासिपमाणं अहण्णजुत्ताभूतमिदि सयलद्वरियजयप्पसिद्धादो ।

मागामागं वचइस्सामो । सम्बजीवरासिमर्जत्तखंडे कए बहुखंडा मवसिद्धियमिच्छा-
इड्डिओ । सेसमणत्तखंडे कए बहुखंडा जेव मवसिद्धिया जेव अमवसिद्धिया । सेसमणत्तखंडे
कए बहुखंडा अमवसिद्धिया । सेसमर्तखेज्जखंडे कए बहुखंडा अर्तजइस्सम्मद्विणो ।
सेसमोवमंगो ।

अप्यावहुगं विविहं सत्थाणदिमेएण । मवसिद्धियसत्थाण परत्थाणं मिच्छाइड्डि
प्पुडि जाव अब्भोगिकेवळि पि ओषं । अमवसिद्धियसत्थाणं पत्ति ।

सव्यपरत्थाणे सम्परयोवा अब्भोगिकेवळी । चचारि उवसांमगा संखेज्जगुणा । एवं
जाव पत्तिदेवमं ति जेयव्वं । तदो अमवसिद्धिया अणत्तगुणा । जेव मवसिद्धिया जेव
अमवसिद्धिया अणत्तगुणा । मवसिद्धियमिच्छाइड्डि अणत्तगुणा ।

एव मन्त्रियमन्त्राणां समाप्ता ।

छेककी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है । परंतु यह अमव्यसिद्धि राशिका प्रमाण अत्यन्त स्फुट
है क्योंकि अमव्यसिद्धि राशिका प्रमाण अक्षय्य गुणान्त है, यह सर्व आचार्य जगत्से
प्रसिद्ध है ।

सर्व मागमागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अन्तर्गत करके पर बहुभाग
मध्यसिद्धि मिथ्याइडि जीव हैं । शेष एक भागके अन्तर्गत करके पर बहुभाग मध्यसिद्धि
और अमव्यसिद्धि विकल्परहित जीव होते हैं । शेष एक भागके अन्तर्गत करके पर
बहुभाग अमव्यसिद्धि जीव हैं । शेष एक भागके अत्यव्यक्त करके पर बहुभाग असयत्त-
सम्बन्धि जीव हैं । शेष मागमाग जोय मागमागके समान है ।

स्वस्थान अत्यव्यक्त अविकेमेवसे अत्यव्यक्त तीन प्रकारके हैं । उनमेंसे मध्य
सिद्धि जीवोंका स्वस्थान और परस्थान अत्यव्यक्त मिथ्याइडि गुणस्थानसे छेकर
अव्यक्तजीवोंका गुणस्थानतक अत्यव्यक्त और परस्थान अत्यव्यक्तके समान है ।
अमव्यसिद्धि जीवोंका स्वस्थान अत्यव्यक्त नहीं पाया जाता है ।

सर्व परस्थान अत्यव्यक्तसे अव्यक्तजीवोंका जीव सबसे स्तोके हैं । जाते उपशामक
अव्यक्तजीवोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार परस्थानतक छे जाना चाहिये । परस्थानसे अमव्य
सिद्धि जीव अत्यव्यक्तगुणे हैं । मध्यसिद्धि और अमव्यसिद्धि विकल्पसे रहित जीव
अमव्यसिद्धि जीवोंसे अत्यव्यक्तगुणे हैं । मध्यसिद्धि मिथ्याइडि जीव अमव्यसे अत्यव्यक्तगुणे हैं ।

इसप्रकार मध्यमार्गणा समाप्त हुई ।

मवियाणुवादेण भवसिद्धिपसु मिच्छाद्विट्ठिपहुडि जाव अजोगि
केवलि ति ओघ ॥ १७२ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुगमो । णवरि अमवसिद्धियसिद्धिसिद्ध-तरसगुणपडिबन्ध-
राधि मवसिद्धियमिच्छाप्रवृत्तिमन्दि तेसिं बग्गं य सम्भवीवरपसिद्धुवरि पक्खिणे मवसिद्धिय
मिच्छाप्रवृत्तिपुवरासी होदि ।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ १७३ ॥

एत्थ अर्पतवपणं संयेनवासंखेनवपडितेहफल । एत्थ काळपमाणं सुचे किमिदि य
बुचं ? य एस्स दोसो, अमवसिद्धियार्थं वयामावा । वयामावो वि^१ तेसिं मोक्खामावावो
अवगम्महे ।

खेचपमार्थं किमिदि य बुचं इदि चे य, अपरिप्फुडस्स अत्थस्स पुडीकरणं^२

मध्यमार्गवाके अनुवादसे मध्यसिद्धिकोंमें मिष्याद्यष्टि गुणस्वानसे लेकर अयोगि-
केवली गुणस्वानतक प्रत्येक गुणस्वानमें जीव ओषप्ररूपवाके समान हैं ॥ १७२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । इतना विरोध है कि अमध्यसिद्धिक जीवपक्षिसहित
सिद्धराशि और वेदह गुणस्यावप्रतिपक्ष जीवपक्षियों तथा अक्ष पक्षियोंके वर्गमें मध्यसिद्धिक
मिष्याद्यष्टि राक्षिक भाग देनेसे जो अक्ष आवे उसे सर्व जीवपक्षिमें सिद्ध देने पर
मध्यसिद्धिक मिष्याद्यष्टि सुवराशि होती है ।

अमध्यसिद्धिक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १७३ ॥

यहां सूत्रमें अवगत यह कथन संप्र्यात और असंप्र्यातके प्रतिषेधके किये दिया है ।

शुद्धा — यहां मध्य मार्गजामें अवस्थोंका प्रमाण कहते समय सूत्रमें काळकी अपेक्षा
प्रमाण क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह केर्त दोष नहीं है क्योंकि अमध्यसिद्धियोंका व्यय नहीं होता । उक्त
व्यय नहीं होता है वह कथन उक्तके मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है इससे ज्ञात जाता है ।

शुद्धा — अवस्थोंका प्रमाण क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं क्योंकि जो अर्थ अपरिपुष्ट हो उसके प्लुट करनेके किये

१ मध्यमार्गके अर्थ में मिच्छाद्विट्ठिपहुडिपसुवरासी इत्यस्याः आवापणवत्त्वा । इ ति १ ८ इति
मिद्धीयो इत्थो ईदंती ववपडितेह इ वो जी. ५१

२ अवस्था कल्पता । इ ति १ ८ वपणे पुच्छान्ते अववपडितेह होदि परिवात् इ वो जी. ५१

३ मयि ववपडिते इति पाठ ।

सेचपमाण बुद्धदे । एसो पुन अमवसिद्धिरासिपमाणं सुहु परिपुठो । कुदो ? अमव-
सिद्धिरासिपमाणं जहण्णजुचाअसमिदि सयलपरियजयप्पसिद्धादो ।

मागामागं वचइस्सामो । सच्चजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मवसिद्धियमिच्छा-
इहिणो । सेसमणतखंडे कए बहुखंडा णेव मवसिद्धिया णेव अमवसिद्धिया । सेसमणतखंडे
कए बहुखंडा अमवसिद्धिया । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजइस्समाइहिणो ।
सेसमोषमणो ।

अप्यावहुगं तिविह सत्थाणादिमेएण । मवसिद्धियसत्थाण परत्थानं मिच्छइहि
प्पहुवि साव अजोगिकेवलि चि ओष । अमवसिद्धियसत्थाण गत्थि ।

सच्चपरत्थाणे सच्चत्थोवा अजोगिकेवली । वचारि उवसामगा संखेज्जगुणा । एवं
अत्र पस्तिदोषमं ति णेयव्वं । तदो अमवसिद्धिया अणतगुणा । येव मवसिद्धिया णेव
अमवसिद्धिया अणतगुणा । मवसिद्धियमिच्छइहि अणतगुणा ।

एव भवियमगणा समत्ता ।

सेवकी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है । परंतु यह अमध्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अक्षय्य स्तुत
है क्योंकि अमध्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अक्षय्य पुष्पावस्त है, यह सर्व भाषाय समान
मसिद्ध है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अन्तर्गत रख करने पर बहुभाग
मध्यसिद्धिक मिथ्याएहि जीव हैं । होय एक भागके अन्तर्गत रख करने पर बहुभाग मध्यसिद्धिक
और अमध्यसिद्धिक विक्षेपरहित जीव होते हैं । होय एक भागके अन्तर्गत रख करने पर
बहुभाग अमध्यसिद्धिक जीव हैं । होय एक भागके असंख्यात रख करने पर बहुभाग असंयत-
सम्पत्ति जीव हैं । होय भागाभाग जोय भागाभागके समान है ।

स्वस्थान अक्षय्यवृत्त्य आदिके भेदसे अक्षय्यवृत्त्य तीन प्रकारकी है । उनमेंसे मध्य
सिद्धिक जीवोंका स्वस्थान और परस्थान अक्षय्यवृत्त्य मिथ्याएहि गुणस्थानसे छेकर
अयोगिकेवली गुणस्थानतक भोग स्वस्थान और परस्थान अक्षय्यवृत्त्यके समान है ।
अमध्यसिद्धिक जीवोंका स्वस्थान अक्षय्यवृत्त्य नहीं पाया जाता है ।

सर्व परस्थान अक्षय्यवृत्त्यमें अयोगिकेवली जीव सबसे श्लोक हैं । भारी उपश्रामक
अयोगियोंमें संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार पक्षोपमतक छे जाना चाहिये । पक्षोपमतसे अमध्य
सिद्धिक जीव अन्तर्गतगुणे हैं । मध्यसिद्धिक और अमध्यसिद्धिक विक्षेपसे रहित जीव
अमध्यसिद्धिक जीवोंसे अन्तर्गतगुणे हैं । मध्यसिद्धिक मिथ्याएहि जीव अमध्योंसे अन्तर्गतगुणे हैं ।

इसप्रकार मध्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माहट्टीसु असंजदसम्माहट्टिप्पहुडि जाव
अजोगिकेवालि ति ओघ ॥ १७४ ॥

केव फरमण ? सम्मत्ताणुवादेण अहियारादो । य हि सामप्पवदिरिचो तन्निसेसो
वरिब । तन्हा ओपपरूवणा चेय गिरमयवा एत्थ पचम्मा ।

सुहयसम्माहट्टीसु असंजदसम्माहट्टी ओघ ॥ १७५ ॥

अदि वि एसो सुहयसम्माहट्टिरासी ओपअसज्जदसम्म इट्टिरासिस्स असंखज्जदि
मागमचो, तो वि ओपपरूवणं समदे; पस्सिरोवमस्स असंखज्जदिमागमेवच पदि विसेसा-
मावा ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसत्तकसायवीदरागच्छदुमत्था दब्ब
पमाणेण केवढिया, संखेम्मा ॥ १७६ ॥

सम्पत्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्पग्गट्टियोंमें असंयतसम्पग्गट्टि गुणस्थानसे लेकर
अयोगिकेवली गुणस्थानतक बीच ओपप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७४ ॥

संज्ञ—सम्पत्त्व की बीच असंयतसम्पग्गट्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुण-
स्थानतक बीचप्ररूपणाके समान किस कारणसे हैं ?

समाधान—क्योंकि वहाँ पर सम्पत्त्व सामान्यका अधिकार है । सामान्यको
छेककर वस्तुके विशेष वहाँ पाये जाते हैं । इसलिय आद्यप्ररूपणा ही निश्चय वहाँ पर करना
चाहिये ।

आयिकसम्पग्गट्टियोंमें असंयतसम्पग्गट्टि बीच ओपप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७५ ॥
यद्यपि यह आयिक असंयतसम्पग्गट्टिराशि ओघ असंयतसम्पग्गट्टि राशिके अर्ध
व्याप्तमें प्रथमाव है तो भी यह ओपप्ररूपणाको प्राप्त होती है क्योंकि, परम्पोगमके
अर्धव्याप्तमें प्राणत्वके प्रति उक्त दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है ।

संयतासंयत गुणस्थानमे लेकर उपपन्नान्तकषाय बीतराग छयस्व गुणस्थानतक
आयिकसम्पग्गट्टि बीच प्रथमप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७६ ॥

१ त्रिपु — कैमकी इति पाठ ।

२ सम्पत्त्वमार्गमेव आयिकसम्पग्गट्टिपु अर्धयतसम्पग्गट्टिपु अन्धोतवार्धक्येवमात्रमिति । त स्मि १ <
पञ्चपुत्रे वदता संखेम्मा अ इति टीका । दो वदपञ्चमिदित्ति केवलीरा एरमज्जुपादे ॥ संघावत्तिदपणा
करवा ॥ श्री श्री- १५७-१५

३ अयतवत्तवत्त वदपञ्चपञ्चमाणा संखेम्मा । व स्मि १ <

पुन्यसुत्तादो खइयसम्माइहिं चि अणुवइदे । ओघपमाणं न पूरेदि' चि जाणा-
वणइ संखेज्जवयण । संजदासज्जदखइयसम्माइहिंणो कर्षं संखेज्जा ! म, तेसिं मणुसगाइ
बदिरिचसेसर्गसु अमावादो । पुब्बं बद्धतिरिक्खाउआ सम्मत घेएण दसणमोहणीय खविय
तिरिक्खेसु उववज्जता लम्मेति तेण सज्जदासज्जदखइयसम्माइहिंणो असंखेज्जा लम्मेति
चि वे व, पुब्बं बद्धाउअखइयसम्माइहिंण तिरिक्खेसुप्यप्पाण सज्जमासंघमगुणामानादो ।
इदो ! मोगभूमिमतरेण सेसिसुप्पचीए अण्णत्थ संभवामावादो । न च तिरिक्खेसु दंसण-
मोहणीयखवणा वि अत्थि, 'णियमा मणुसर्गए' इदि वयणादो ।

चउण्ह खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १७७ ॥

एत्थ चउण्ह कम्माण घाइसण्णिदाय स्ववगा इदि मज्झाहारो कायम्भो । चउसइो-
गुणइणाणं विसेसण किण्ण होदि चि बुचे न, तत्थ छट्ठीणिरेसाणुववचीदो । सेस सुगम ।

पूर्व सूत्रसे इस सूत्रमें स्थायिकसम्पत्ति इत पक्की अनुवृत्ति होती है । संयतासंयतसे
व्यशांतकपाय गुणस्वागतक स्थायिकसम्पत्तिधोंका प्रमाण ओघप्रमाणको पूर्व नहीं करता
है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें संख्यात हैं यह बचन दिया है ।

शंका—संयतासयत स्थायिकसम्पत्ति जीव संख्यात कैसे है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, संयतासयत स्थायिकसम्पत्ति जीव मनुष्य गतिधो
छोड़कर दोष गतिधोंमें नहीं पाये जाते हैं और पर्याप्त मनुष्य संख्यात ही होते हैं इसलिये
संयतासयत स्थायिकसम्पत्ति जीव भी संख्यात ही होते हैं ऐसा कहा ।

शंका—जिन भोगोंमें पहले तिर्यचायुका बंध कर दिया है ऐसे जीव सम्पत्तको
पहल करके और वर्णमोहनीयका क्षय करके तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं
इसलिये संयतासयत स्थायिकसम्पत्ति जीव असंख्यात होना चाहिये ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, जिन्होंने पहले तिर्यचायुका बंध कर दिया है ऐसे
तिर्यचोंमें उत्पन्न हुए स्थायिकसम्पत्तिधोंके सद्यमासंघमगुण नहीं पाया जाता है,
क्योंकि मोगभूमिके बिना अल्पज जननी उत्पत्ति संभव नहीं है । तथा तिर्यचोंमें
वर्णमोहनीयकी क्षयणा भी नहीं पाई जाती है क्योंकि वर्णमोहनीयकी क्षयणा नियमसे
मनुष्यगतिमें ही होती है ऐसा भागमबचन है ।

चारों सपक और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणोंके समान हैं ॥ १७७ ॥

यहां पर सपक पहले घातिसकक चारों कर्मोंके सपक, देना अण्णाहार कर देना चाहिये ।

शंका—सूत्रमें क्या हुआ जब शब्द गुणस्वागतोंका विशेषण क्यों नहीं होता है ?

समाधान—ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं क्योंकि 'जब शब्दमें पड़ी

सजोगिकेवली ओष ॥ १७८ ॥

इदो ! त्वयसम्मतेण विना सजोगिकेवलीअमणुबलमा ।

वेदगसम्माइट्टीसु असजदसम्माइट्टिण्हि जाव अप्पमत्तसंजदा
ति ओष ॥ १७९ ॥

एत्थ आपरासी पेव त्योइणो वेदगरासी होदि त्थापच ण विरुज्जेदि ।

उवसमसम्माइट्टीसु अमजदसम्माइट्टि-सजदासंजदा ओष ॥ १८० ॥

एहे हो वि रासीओ ओषअसजदसम्माइट्टि-संजदासंजदाणमसत्तेअदिभागमया अदि
वि होति, सो वि पत्तिओमस अंसंखअदिभागत्तेण समाणचमत्ति पि ओपमिदि मणिई ।
सेसं सुगमं ।

विमत्तिका निर्देश नहीं बन सकता है । अर्थात् सुगमं व्याख्या कइए यह पद प्रथमा
विमत्तिकाप है पत्ती नहीं इसलिये गुणरघाणोका विरोध नहीं हो सकता है । शेष कथन
सुगम है ।

सजोगिकेवली जीव ओषप्ररूपणाके समान ई ॥ १७८ ॥

कृत्ति सजोगिकेवली जीव सायिकसम्पत्तके विना नहीं पाये जाते हैं, इसलिये
उनका प्रमाण ओषप्ररूपणाके समान है ।

असंपत्तसम्पत्तिओमें असंपत्तसम्पत्ति गुणस्वानसे लेकर अप्रमत्तसंपत्त गुण-
स्वानतक जीव ओषप्ररूपणाके समान ई ॥ १७९ ॥

असंपत्तसम्पत्ति गुणरघाणसे लेकर अप्रमत्तसंपत्त गुणरघाणतक ओषराशि ही कुछ
कम अद्वैतसम्पत्ति जीवराशि होती है इसलिये ओषत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

संपत्तसम्पत्तिओमें संपत्तसम्पत्ति और संपत्तासंपत्त जीव आप्ररूपणाके
समान ई ॥ १८० ॥

ये दोनों भी राशिओं ओष असंपत्तसम्पत्ति और संपत्तासंपत्तिके असंपत्तातर्के भाग
प्रमाण होती हैं तो भी पम्पोपमके असंपत्तातर्के भागत्वकी अवेक्षा अग्रहामसम्पत्ति असंपत्त
सम्पत्ति और संपत्तासंपत्तिकी ओष असंपत्तसम्पत्ति और संपत्तासंपत्तिके साथ समानता
है इसलिये सुगमं ओष देका कहा है । शेष कथन सुगम है ।

१ अमोवकविरहमगारिणु अजवनम्यवदपत्तवोअवत्ता । आबर्त्तितकथाः । छ. श्रि १ ८ इती
य वेदपुराणवत् । आत्तिकमगुत्तिरा अजवदपत्तवोअवत्ता । छ. श्रि १ ८ इती

२ अति सुगमं इति श्रुतिः ।

३ अं पत्तिकवत्तवत्ति अंसंखअदिपत्तिवत्ता । पम्पोपमकेवत्तवत्तवत्ता । छ. श्रि १ ८

पमत्तसजदण्डहुडि जाव उवमतकसायवीदरागछट्टुमत्या चि दव्व
पमाणेण केवडिया, सखेज्जा ॥ १८१ ॥

एत्थ सखेज्जवयण ओषपमाणवडिसेहफल । ओषइण्यपमाण ण पावेदि चि कष
मवगम्मदे ? ओषपमचादिराविसस सखेज्जदिमागो तम्हि तम्हि उवसमसम्माइडिरासी
होदि चि अप्पत्तहुगवयणादो ।

सासणसम्माइट्टी ओघ ॥ १८२ ॥

सम्मामिच्छाइट्टी ओघ ॥ १८३ ॥

मिच्छाइट्टी ओघ ॥ १८४ ॥

एदाणि तिणि वि सुत्ताणि ओषम्मि परूविदानि चि पेह परूविज्जचि । एत्थ
अवहारकालुप्पायणविहिं वचइसामो । ओषअसज्जदमम्माइडिअवहारकाले आवडियाए

प्रमत्तसयत्त गुणस्थानमे सेकर उपशान्तकपाय भीतरागछट्टुमत्या गुणस्थानतक
उपशमसम्यग्दष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा फितन हैं ? संख्यात हैं ॥ १८१ ॥

यहां सूक्ष्मे संख्यात हैं यह वचन ओषपमाणके प्रतिपेक्षके लिये दिया है ।

शुद्धा—प्रमत्तादि उपशान्तकपाय गुणस्थावतक उपशमसम्यग्दष्टि जीव ओष
द्रव्यप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— ओष प्रमत्तसयत्त आदि गुणस्थानवर्ती राशिके संख्यातमें भाग ठस
ठस गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दष्टि जीव होते हैं इस मत्तबहुत अनुयोगद्वाराके वचनसे
जाना जाता है कि प्रमत्तसयत्त आदि उपशान्तकपायतक प्रत्येक गुणस्थानके उपशमसम्यग्दष्टि
जीव ओषप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं ।

सासादनसम्यग्दष्टि जीव ओषप्ररूपणाके समान पर्यायमके असंख्यातमें भाग
हैं ॥ १८२ ॥

सम्यग्मिध्यादष्टि जीव ओषप्ररूपणाके समान पर्यायमके असंख्यातमें भाग
हैं ॥ १८३ ॥

मिध्यादष्टि जीव ओषप्ररूपणाके समान अनन्तानन्त हैं ॥ १८४ ॥

इन तीनों सूक्ष्म प्ररूपण ओषप्ररूपणाके समान कर भाये हैं इसलिये यहाँ इनका
प्ररूपण नहीं करते हैं । अब यहाँ पर अवधारणाके उत्पन्न करनेकी विधिसे बतलाते हैं—

१ प्रमत्तप्रवृत्तवटा । संकेता । वत्तत औत्तमिकाः तावत्तोलइक्का । त ति १ ८

२ उपादानवत्तवटा । सम्मिध्यादष्टि विष्ठाद्वयव तावत्तोलइक्का । त दि १ ८ पत्ता-

इक्कमिध्या दत्तमिध्या व वत्तवत्तिदा ह । मिक्का ठेदि मिक्को वत्तत तावत्तोलइक्का । पो जी १५५

असंखेजदिमाएण मागे हिंदं तद्धं तम्हि षेव पक्खिउत्ते वेदगप्रमज्जदसम्माइडिअवहारकालो
 होदि । तम्हि आबलियाए असंखजदिमाएण गुण्णिदे खयप्रसंजदसम्माइडिमवहारकालो
 होदि । तम्हि आबलियाए असंखेजदिमाएण गुण्णिदे असज्जदवसमसम्माइडिअवहारकालो
 होदि । तम्हि आबलियाए असंखेजदिमाएण गुण्णिदे सम्मामिच्छइडिअवहारकालो होदि ।
 तम्हि संखेज्जखेदि गुण्णिदे सासममम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि
 आबलियाए असंखजदिमाएण गुण्णिदे वेदगसम्माइडिसंभदानज्जअवहारकालो होदि ।
 तम्हि आबलियाए असंखेजदिमाएण गुण्णिदे उवसमसम्माइडिमज्जदासज्जअवहारकालो
 होदि । एवहि अवहारकालेहि पत्तिदोवमे मागे हिंदे सग-सगरासीओ आगच्छंति । सिद्ध
 तेरसगुण्णद्वारासिं मिच्छइडिमज्जदतत्त्वगग च सप्पजीवरासिस्सुवरि पक्खिउत्ते मिच्छइडि
 पुवरासी होदि ।

मागामागं चचइस्सामो । सम्पजीवरासिमपंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छइडिओ
 होति । संसमपंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा । सेसमपंतखंडे कए बहुखंडा वेदग-
 असंजदसम्माइडिओ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा खयप्रसंजदसम्माइडिओ ।
 सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमसंजदसम्माइडिओ । सेस संखेज्जखंडे कए

थोय जसपतसम्पगदियोंके अवहारकाळको आवलीके असंख्यातवें मागसे माजित करने पर
 ओ छप्प आवे वसे उली अवहारकाळमें मिछा देने पर बरक जसपतसम्पगदियोंका
 अवहारकाळ होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर सायिक जसपत
 सम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर
 असंयत उपपदमसम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें मागसे
 गुणित करने पर सम्पगिमप्यादियोंका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित
 करने पर सासाहनसम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें मागसे
 गुणित करने पर वेदकसम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है । इसे आवलीके
 असंख्यातवें मागसे गुणित करने पर उपपदमसम्पगदियोंका अवहारकाळ होता है ।
 इस अवहारकाळसे पन्थोपमके माजित करने पर अपनी अपनी राशिवां भाटी है ।

सिद्धराशि और तेरह गुणवधानवर्ती राशिवां तथा मिप्यादियोंकी राशिसे माजित इन
 राशिवांके बर्यको सब जीवराशिमें मिछा देने पर मिप्यादियोंकी अवराशि होती है ।

अब माग्यमागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिमें अन्त खंड करने पर उनमेंसे
 बहुभाग मिप्यादियों जीव होते हैं । शेष एक भागके अन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध
 जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकसंयतसम्पगदियों जीव हैं ।
 शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सायिक जसपतसम्पगदियों जीव हैं । शेष
 एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपपदम असंयतसम्पगदियों जीव हैं । शेष एक

बहुसंख्यं सम्प्रामिच्छद्बुद्धिर्गो । सेसमसंख्येज्जखंडे कए बहुसंख्यं सासपसम्माद्बुद्धिर्गो ।
 सेसमसंख्येज्जखंडे कए बहुसंख्यं वेदगमसम्माद्बुद्धिसंजडासजडा । सेसमसंख्येज्जखंडे कए
 बहुसंख्यं उवसमसम्माद्बुद्धिसजडासजडा । सेस संख्येज्जखंडे कए बहुसंख्यं खइपसम्माद्बुद्धि
 सजडासजडा । सेस संख्येज्जखंड कए बहुसंख्यं पमचसंजडा । सेस संख्येज्जखंडे कए
 बहुसंख्यं अप्पमचसजडा । सेसं आणिय वचम्वं ।

अप्पमचसंजडा सिविहं सत्थाणादिमेएण । सम्भेसिं सत्थाणमोष । परत्थाणे पयदं ।
 सम्भयोवा वेदगमसम्माद्बुद्धिअप्पमचसजडा । पमचसंजडा संख्येज्जगुणा । असजडासम्माद्बुद्धि
 अवहारफालो असंख्येज्जगुणो । सजडासजडाअवहारफालो असंख्येज्जगुणो । तस्सप दब्बम
 संख्येज्जगुण । एवं जेयम्ब जाव पत्तिदोवम ति । उवसमसम्माद्बुद्धीसु सम्भयोवा चत्तारि
 उवसमगा । खइगा संख्येज्जगुणा । अप्पमचसजडा संख्येज्जगुणा । पमचसंजडा संख्येज्ज
 गुणा । उवति वेदगपरत्थाणमगो । खइपसम्माद्बुद्धीसु सम्भयोवा चत्तारि उपसत्तगा ।
 खइगा संख्येज्जगुणा । अप्पमचसंजडा संख्येज्जगुणा । पमचसंजडा संख्येज्जगुणा । संजडा
 संजडा संख्येज्जगुणा । असजडासम्माद्बुद्धिअवहारफालो असंख्येज्जगुणो । तस्सेव दब्बम

मागके संप्यात खंड करने पर बहुभाग सम्प्रामिच्छादधि जीव हैं । शेष एक भागके
 वसत्थाय खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्प्रदाधि जीव हैं । शेष एक भागके असंप्यात
 खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्प्रदाधि संप्रतासपत जीव हैं । शेष एक भागके असंप्यात खंड
 करने पर बहुभाग उपशमसम्प्रदाधि संप्रतासपत जीव हैं । शेष एक भागके संप्यात खंड
 करने पर बहुभाग सायिकसम्प्रदाधि संप्रतासपत जीव हैं । शेष एक भागके संप्यात खंड
 करने पर बहुभाग प्रमत्तसंघत जीव हैं । शेष एक भागके संप्यात खंड करने पर बहुभाग
 अप्पमचसपत जीव हैं । शेष भागाभागाका कथम जानकर करना चाहिये ।

परत्थाण मस्यबहुत्व आदिके मेवसे मस्यबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे समीका
 स्वस्थान मस्यबहुत्व बोधप्रकृषाके समान है । अब परत्थाणमें मस्यबहुत्व प्रकृत है— वेदक
 सम्प्रदाधि प्रमत्तसंघत जीव सबसे स्तोका हैं । इनसे प्रमत्तसंघत जीव संप्रतागुणे हैं ।
 इनसे मस्यबहुत्वसम्प्रदाधियोंका अवहारफाल असंख्यातगुणा है । इससे संप्रतासपतोंका अवहार
 फाल असंख्यातगुणा है । बर्हीका द्रव्य अवहारफालसे असंप्यातगुणा है । इसीप्रकार
 रत्तोपमत्तक छे जाना चाहिये । उपशमसम्प्रदाधियोंमें चारों उपशमक सबसे थोड़े हैं ।
 इनका संप्रतागुणे हैं । प्रमत्तसंघत जीव इनमेंसे संप्रतागुणे हैं । प्रमत्तसंघत जीव
 प्रमत्तसंघतोंसे संप्रतागुणे हैं । इसके ऊपर वेदकसम्प्रदाधियोंके परत्थाण मस्यबहुत्वके
 धम्म जानना चाहिये । सायिक सम्प्रदाधियोंमें चारों उपशमक सबसे स्तोका हैं । इनका
 सबसे संप्रतागुणे हैं । इनसे प्रमत्तसंघत संप्रतागुणे हैं । इनसे प्रमत्तसंघत संप्रतागुणे हैं ।
 इनसे प्रमत्तसंघत संप्रतागुणे हैं । इनसे प्रमत्तसंघत संप्रतागुणे हैं ।

असंख्येज्जदिमाएण भागे हिंदे रुद्धं तस्मिं पेव पक्खित्ते वेदगअमज्जदसम्माइडिअवहारकालो
 हादि । तस्मिं आबलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे सइयअसंख्यदसम्माइडिअवहारकालो
 होदि । तस्मिं आबलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे अमज्जदवसमसम्माइडिअवहारकालो
 होदि । तस्मिं आबलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि ।
 तस्मिं सत्तेज्जद्वेदि गुणिदे सासमसम्माइडिअवहारकालो होदि । तस्मिं
 आबलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे वद्वगसम्माइडिसंख्यदामज्जदअवहारकालो होदि ।
 तस्मिं आबलियाए असंख्येज्जदिमाएण गुणिदे उवसमसम्माइडिसंख्यदासज्जदअवहारकालो
 होदि । एवेदि अवहारकालेहि पत्तिदोवमे भाग हिंदे सग-सगरासीओ आगच्छति । सिद्ध
 वेरसगुणवृत्तरामिं मिच्छाप्रवृत्तिमज्जितसम्पग्ग च सम्पजीवरासिस्तुवरि पक्खित्ते मिच्छाइडि
 पुवरासी होदि ।

भागामागं वचइस्सामो । सम्पजीवरासिमपत्तत्वे कए बहुत्वंडा मिच्छाप्रवृत्तिओ
 होति । ससमर्पत्तत्वे कए बहुत्वंडा सिद्धा । सेसमसंख्येज्जत्वे कए बहुत्वंडा वेदग-
 अमज्जदसम्माइडिओ । सेसमसंख्येज्जत्वे कए बहुत्वंडा सइयअसंख्यदसम्माइडिओ ।
 सेसमसंख्येज्जत्वे कए बहुत्वंडा उवसमसंख्यदसम्माइडिओ । सेसं संख्येज्जत्वे कए

ओप असंपत्तसम्पत्तिओके अवहारकाळको व्यावर्तीके असंख्यातवें भागसे माजित करने पर
 जो छप्प भागे उसे उसी अवहारकाळमें मिखा देने पर वैदिक असंपत्तसम्पत्तिओका
 अवहारकाळ होता है । इसे व्यावर्तीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर साधित असंपत्त
 सम्पत्तिओका अवहारकाळ होता है । इसे व्यावर्तीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर
 असंपत्त उपशमसम्पत्तिओका अवहारकाळ होता है । इसे व्यावर्तीके असंख्यातवें भागसे
 गुणित करने पर सम्पत्तिओका अवहारकाळ होता है । इसे संख्यातसे गुणित
 करने पर सासावतसम्पत्तिओका अवहारकाळ होता है । इसे व्यावर्तीके असंख्यातवें भागसे
 गुणित करने पर वैदिकसम्पत्ति संपत्तासंपत्तोंका अवहारकाळ होता है । इसे व्यावर्तीके
 असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उपशमसम्पत्ति संपत्तासंपत्तोंका अवहारकाळ होता
 है । इन अवहारकाळोंसे पञ्चोपमके माजित करने पर अपनी अपनी राशिवां भाती है ।

सिद्धराशि और तेरह गुणरथानवर्षों राशिओ तथा मिष्प्रादि राशिसे माजित उन
 राशिओके वषको सर्व जीवराशिमें मिखा देने पर मिष्प्रादिओंकी भुवराशि होती है ।

अब भागामागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अन्त खंड करने पर उनमेंसे
 बहुभाग मिष्प्रादि जीव होते हैं । शेष एक भागके अन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध
 जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैदिकअसंपत्तसम्पत्ति जीव हैं ।
 शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग साधित असंपत्तसम्पत्ति जीव हैं । शेष
 एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशम असंपत्तसम्पत्ति जीव हैं । शेष एक

बहुसंज्ञा सम्भामिच्छाद्विभो । सेसमसखेज्जसंज्ञे कए बहुसंज्ञा सासणसम्भामिच्छाद्विभो ।
 सेसमसखेज्जसंज्ञे कए बहुसंज्ञा वेदगमसम्भामिच्छाद्विभो । सेसमसखेज्जसंज्ञे कए
 बहुसंज्ञा उवसमसम्भामिच्छाद्विभो । सेस सखेज्जसंज्ञे कए बहुसंज्ञा खइयसम्भामिच्छाद्वि
 भो । सेस सखेज्जसंज्ञे कए बहुसंज्ञा पमचसंज्ञा । सेस सखेज्जसंज्ञे कए
 बहुसंज्ञा अप्पमचसंज्ञा । सेस आणिय वचनं ।

अप्याबहुग तिथिह सत्थाणादिमेण । सत्थाणि सत्थाणमोष । परत्थाणे पयदं ।
 सम्प्रत्योवा वेदगसम्भामिच्छाद्विभो । पमचसंज्ञा संखेज्जगुणा । असंज्ञदसम्भामिच्छाद्वि
 भो । अहंकारलो असंखेज्जगुणो । संज्ञदासंज्ञदअहंकारलो असंखेज्जगुणो । तस्स वद्वम
 संखेज्जगुण । एव गेयव ज्ञा पलिदोत्रम ति । उवसमसम्भामिच्छाद्विभो । सत्थाणोवा चचारि
 उवसममा । खबगा संखेज्जगुणा । अप्पमचसंज्ञा संखेज्जगुणा । पमचसंज्ञा संखेज्ज
 गुणा । उवसि वेदगपरत्थाणमंणो । खइयसम्भामिच्छाद्विभो । सत्थाणोवा चचारि उवसावगा ।
 खबगा संखेज्जगुणा । अप्पमचसंज्ञा संखेज्जगुणा । पमचसंज्ञा संखेज्जगुणा । संज्ञदा
 संज्ञदा संखेज्जगुणा । असंज्ञदसम्भामिच्छाद्विभो । अहंकारलो असंखेज्जगुणो । तस्से वद्वम

भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिच्छाद्वि जीव हैं । शेष एक भागके
 असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासाधनसम्यग्मिच्छाद्वि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात
 खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्यग्मिच्छाद्वि संघतासंघत जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड
 करने पर बहुभाग उपशमसम्यग्मिच्छाद्वि संघतासंघत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड
 करने पर बहुभाग क्षाधिकसम्यग्मिच्छाद्वि संघतासंघत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड
 करने पर बहुभाग प्रमत्तसंघत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग
 अममत्तसंघत जीव हैं । शेष भागाभागाद्य कथन जानकर करना चाहिये ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे सभीका
 स्वस्थान अल्पबहुत्व शोधप्रकृत्याके समान है । अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— वेदक
 सम्यग्मिच्छाद्वि अममत्तसंघत जीव सबसे स्तोका हैं । इनसे प्रमत्तसंघत जीव संख्यातगुणे हैं ।
 इनसे असंघतसम्यग्मिच्छाद्वि जीव अहंकारका असंख्यातगुणा है । इससे संघतासंघतोंका अहंकार
 का असंख्यातगुणा है । उन्हींका प्रमत्त अहंकारका असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
 परलोपमतक के जाना चाहिये । उपशमसम्यग्मिच्छाद्वि जीवों का उपशमक सबसे योग्य है ।
 शेषक संख्यातगुणे हैं । अममत्तसंघत जीव शेषकोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंघत जीव
 अममत्तसंघतोंसे संख्यातगुणे हैं । इसके ऊपर वेदकसम्यग्मिच्छाद्वि जीवों के परस्थान अल्पबहुत्वके
 समान जानना चाहिये । क्षाधिक सम्यग्मिच्छाद्वि जीवों का उपशमक सबसे स्तोका है । शेषक
 इनसे संख्यातगुणे हैं । इनसे अममत्तसंघत संख्यातगुणे हैं । इनसे प्रमत्तसंघत संख्यातगुणे हैं ।
 इनसे संघतासंघत संख्यातगुणे हैं । इनसे असंघतसम्यग्मिच्छाद्वि जीव अहंकारका असंख्यातगुणा

संख्येन्द्रगुण । पल्लिवोषमसंख्येन्द्रगुण । सेवतप्यगिणो अयं तप्यगुण ।

सम्प्रपरत्वागे पयः । सम्प्रत्योरा उवममसम्माद्विणो चचारि उरसामगा ।
 तत्पेयं राश्यसम्माद्विणो सखेज्जगुणा । खरगा मयेज्जगुणा । अप्पमचसब्बदवसम-
 सम्माद्विणो सखेज्जगुणा । कतण, चारिचमाहणीयसुबबकालादा उवममसम्पचकालस्स
 सखेज्जगुणत्ता । पमचमंजदा सखेज्जगुणा । अप्पमचसंजदा राश्यमम्माद्विणो सखेज्ज-
 गुणा । पमचसब्बदा सखेज्जगुणा । मंदगसम्माद्विअप्पमचसब्बदा सखेज्जगुणा । पमचा
 सखेज्जगुणा । राश्यमम्माद्विसब्बदामज्जा सखेज्जगुणा । पमचसंजदार्णं सखेज्जमागमेच-
 पमचसंजदवदगमम्माद्विहिता क्वं मणुससब्बदासब्बदार्णं सखेज्जदिमागमेचस्यसम्माद्वि-
 सब्बदासब्बदार्णं सखेज्जगुणत्ता ? य, सम्प्रसम्मपेसु सज्जेहिंते वसंसब्बदाग देससज्जेहिंते
 अंसमदाग बहुवुवसंसमदो । तं पि इदो ? चारिचावरणत्तुमोनसमसम्प सम्पसम्मपेसुप्पायण

है। इससे जहाँका द्रव्य असंख्यातगुणा है। इससे पक्षोपम असंख्यातगुणा है। इससे केवल बायीं अन्तगुणे है।

सर्वपरस्यानर्मे अस्यावहार्य प्रकृत है— उपशमश्रेणीके कार्यों गुणस्यानवर्ती उपशम सम्पन्नहि जीव सबसे स्वीक है । उपशमश्रेणीके कार्यों गुणस्यानवर्ती स्थायिकसम्पन्नहि जीव सबसे सख्यातगुणे है । सपक्ष जीव उपशमश्रेणीके कार्यों गुणस्यानवर्ती स्थायिकसम्पन्नहिषोंसे सख्यातगुणे है । अममत्तसंयत उपशमसम्पन्नहि जीव क्षपक जीवोंसे सख्यातगुणे है क्योंकि बलिज मोहनीयके क्षपक काङ्क्षसे उपशमसम्पन्नत्वका कष्ट सख्यातगुणा है । प्रमत्तसंयत उपशमसम्पन्नहि जीव अममत्तसंयत उपशमसम्पन्नहिषोंसे सख्यातगुणे है । अममत्तसंयत स्थायिकसम्पन्नहि जीव प्रमत्तसंयत उपशमसम्पन्नहिषोंसे सख्यातगुणे है । प्रमत्तसंयत स्थायिकसम्पन्नहि जीव अममत्तसंयत स्थायिकसम्पन्नहिषोंसे सख्यातगुणे है । वेदकसम्पन्नहि अममत्तसंयत जीव स्थायिकसम्पन्नहि प्रमत्तसंयतोंसे सख्यातगुणे है । वेदकसम्पन्नहि प्रमत्तसंयत जीव वेदकसम्पन्नहि अममत्तसंयतोंसे सख्यातगुणे है । स्थायिकसम्पन्नहि सवतासंयत जीव वेदकसम्पन्नहि प्रमत्तसंयतोंसे सख्यातगुणे है ।

प्रश्न—प्रमत्तसंपत्तोंके संप्रदायके मागमत्त प्रमत्तसंपत्त वेदसम्बन्धियोंसे मनुष्य
 संपत्तसंपत्तोंके संप्रदायके मागमत्त स्थापितसम्बन्धियों संपत्तसंपत्त जीव संप्रदायगुणे कैसे
 हो सकते हैं ?

समाधान— नहीं क्योंकि सब सम्बन्धोंमें संपत्तोंसे बेधासंपत्त और बेधासंपत्तोंसे असंपत्त बीच बहुत पावे जाते हैं इसलिये मनुष्य संपत्तासंबन्धोंके सख्यातर्हे मागमात्र स्थापिकसम्पन्नदि सत्तासंपत्त और प्रमत्तसंपत्तोंके सख्यातर्हे मागमात्र बेधसम्पन्नदियोंने सख्यातगुणे बन जाते हैं।

प्रश्न — क्या सम्प्रत्यक्ष में संघर्षों से संघर्षासंघर्ष और सघर्षासंघर्षों से घर्षण बढ़ता होता है यह कैसे जाना जाता है ?

समवामावाद्यो । ' तेरसकोडी देसे ' एदीए गाहाए एदस्स बन्खाणस्स किण्ण विरोहो ? होठ माम । कच पुण विरुद्धबन्खाणस्स मइत्त ? न, श्रुतिसिद्धस्स आरियपरंपरागमस्स एदीए गाहाए गामइत्तं काउज्ज सकिज्जदि, अइप्पसंगाद्यो । बेदगअसंजदसम्माइद्धिअवहार कालो असंखेज्जगुणो । खइयअसंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उपसमअसंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सात्तपसम्माइद्धिअवहारकालो संखेज्जगुणो । बेदगसम्माइद्धिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उपसमसम्माइद्धिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण नेयस्सं आव पलिदोषमं ति । तद्यो खइयसम्माइद्धिणो केवलणाणिणो भवत्तगुणा । मिच्छइद्धिणो अर्भत्तगुणा ।

एवं सम्मतमगणा गद्य ।

समाधान—चूंकि चरित्रावरण मोहनीयकर्मका क्षयोपशम सर्वं सम्यक्त्वोंमें आया। समझ नहीं है इसलिये यह जाना जाता है कि सर्व सम्यक्त्वोंमें क्षयतोंसे क्षयताक्षय और क्षयताक्षयतोंसे भसंपत जीव अधिक होते हैं ।

श्रुक्का—यदि ऐसा है तो बेद्यसंपतमें तेरह करोड़ मनुष्य हैं' इस गाथाके साथ इस पूर्वोक्त व्याख्यानका बिरोध क्यों नहीं था जापगा ?

समाधान—यदि बच्चा गाथार्यके साथ पूर्वोक्त व्याख्यानका बिरोध प्राप्त होता है तो होमो ।

श्रुक्का—तो इसप्रकारके बिरुद्ध व्याख्यानको समीचीनता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जो पुच्छिसिद्ध है और व्याख्यान परंपरासे आया हुआ है उसमें इस गाथासे असमीचीनता नहीं छिपे जा सकती सम्यक्ता प्रतिप्रसंग शेष था जापगा ।

बेदकसम्पगदियोंका अवहारकाळ शायिकसम्पगदियों संयत्ताक्षयतोंसे भसंख्यातगुणा है । शायिकभसंपतसम्पगदियोंका अवहारकाळ बेदकभसंपतसम्पगदियोंके अवहारकाळसे भसंख्यातगुणा है । उपशमभसंपतसम्पगदियोंका अवहारकाळ शायिकभसंपतसम्पगदियोंके अवहारकाळसे भसंख्यातगुणा है । सम्मामिच्छादियोंका अवहारकाळ उपशमभसंपतसम्पगदियोंके अवहारकाळसे भसंख्यातगुणा है । सात्तपसम्पगदियोंका अवहारकाळ सम्पगदियोंके अवहारकाळसे भसंख्यातगुणा है । बेदकसम्पगदियों संयत्ताक्षयतोंका अवहारकाळ सात्तपसम्पगदियोंके अवहारकाळसे भसंख्यातगुणा है । उपशमसम्पगदियों संयत्ताक्षयतोंका अवहारकाळ बेदकसम्पगदियों संयत्ताक्षयतोंके अवहारकाळसे भसंख्यातगुणा है । उम्मीं उपशमसम्पगदियों संयत्ताक्षयतोंका प्रथम उम्मीं अवहारकाळसे भसंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकाळसे प्रतिष्ठोमक्रमसे पर्योपमत्तक छे जाना चाहिये । पर्योपमसे शायिकसम्पगदियों केवलजानी भवत्तगुणे हैं । मिच्छादिय जीव शायिकसम्पगदियों केवल ज्ञानियोंसे भवत्तगुणे हैं ।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गाका समाप्त हुई ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाद्द्विती दब्बपमाणेण केवडिया,
देवेहि सादिरियं ॥ १८५ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो मुच्यदे । सध्वे देवमिच्छाद्द्वितीयो सण्णियो वेय । तेहि
संसेज्जदिमाणेणा विगदिसण्णिमिच्छाद्द्वितीयो होति । तेण सण्णिमिच्छाद्द्वितीयो देवेहि
सादिरिया । एत्थ अबहारकालो मुच्यदे । तं जहा— देवअवहारकालादो पदरंगुलमेरं वेत्थ
संसेज्जद्विती करिय सत्थेगएवमवणिय सेसवहुत्तं तमिह वेव पक्खिसे सण्णिमिच्छाद्द्वि
अवहारकालो होदि । एदेण अगपदे मागे हिदे सण्णिमिच्छाद्द्विद्वं होदि ।

सासणसम्माद्द्विष्टिणुद्धि जाव सीणकसायवीदरागच्छुमुत्था ति
ओघं ॥ १८६ ॥

सुगममेवं सुखं ।

असण्णी दब्बपमाणेण केवडिया, अणत्ता ॥ १८७ ॥

सम्रीमार्गणाके अनुवादसंक्षिप्तं मिथ्याद्यदि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १८५ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । सर्व देव मिथ्याद्यदि जीव संज्ञी ही होते हैं । तथा
उनके संख्यातर्क भाग्यमात्र तीन वतिसंख्या की संज्ञी मिथ्याद्यदि जीव होते हैं । इच्छिते
संज्ञी मिथ्याद्यदि जीव देवोंसे कुछ अधिक हैं ऐसा सूत्रमें कहा है ।

अब यहाँ पर अवधारकालका कथन करते हैं । यह इस प्रकार है— देव अवधारकालमें
एक प्रसंगिकको ग्रहण करके और उसके संख्यात संज्ञ करके उनमेंसे एक संज्ञको निकालकर दोष
बहु कर वहीमें मिला देने पर संज्ञी मिथ्याद्यदियोंका अवधारकाल होता है । इस अवधार-
कालसे जगत्तरके माश्रित करने पर संज्ञी मिथ्याद्यदि द्रव्य होता है ।

सासादनसम्पगद्वि गुणस्थानसे लेकर जीवकपाय वीतरागछद्मस गुणस्थानतक
प्रत्येक गुणस्थानमें संज्ञी जीव औषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १८७ ॥

१ संज्ञात्वेन वसिष्ठ मिथ्याद्वयत्वका जीवकपालात्त्ववर्तमानत्व । पृ. १८५ केहिं वासिष्ठो
एवमिह संज्ञी वीर्यवर्तमान ॥ को. अ. १११

२ वसिष्ठो मिथ्याद्वयव्यवस्थाम् । उदयवस्यवर्तमानतां वासिष्ठोव्यवस्थाम् । पृ. १८५
उदयो वसिष्ठो वसिष्ठवर्तमानता ॥ को. अ. १११

अणताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरति कालेण
॥ १८८ ॥

स्वेतेण अणंताणता लोका ॥ १८९ ॥

एदमि तिप्पि सुचाभि अवगदत्थानि चि एदेसिं न वक्ख्वाण पुच्चवे । एत्थ
पुवरासिं वचइस्सामो । सप्पिरासिं नेव-सप्पि-नेव-असप्पिरासिं च असप्पिमज्झिदत्तव्वर्मा च
सम्भवीवरासिस्सुवरि पक्खिचे असप्पिपुवरासी होदि ।

मागामाग वचइस्सामो । सम्भवीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा असप्पिपौ होति ।
सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा येन सप्पी नेव असप्पी होति । सेसमणंतखंडे कए
बहुखंडा सप्पिमिच्छाद्विभो होति । सेसमोषमागामागमगो ।

तिविहमति अप्पावहुग ङाणिक्कण माप्पिद्वर्ण ।

एवं सपिणमगमा समया ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छाद्विप्पहुदि जाव सजोगि
केवलि ति ओघ' ॥ १९० ॥

काष्ठकी अपेक्षा असंखी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते ॥ १८८ ॥

क्षेत्रकी अपेक्षा असंखी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ १८९ ॥

इन तीनों सूत्रोंका अर्थ अथगत है इसलिये इनका व्याख्यान नहीं किया है । अथ
यहां पर सुवराशिक्षा प्रतिपादन करते हैं— सखीराशि और सखी तथा असंखी इन दोनों
व्यपदेशोंसे रहित जीवराशिको तथा असंखी राशिके माहित इत्थ राशियोंके बगको सर्व
जीवराशिमें मिखा देने पर असंखी जीवोंके प्रमाण खानेके लिये सुवराशि होती है ।

अथ भागामागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अन्तर्गत खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग असंखी जीव हैं । दोष एक भागके अन्तर्गत खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग सखी और
असंखी इन दोनों व्यपदेशोंसे रहित जीव हैं । दोष एक भागके असंख्यात खंड करने पर
बहुभाग सखी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । दोष भागामागका ओघ भागामागके समान कथन करना
बाहिये ।

तीनों प्रकारके अत्यवहुत्वका भी ज्ञानकर कथन करना बाहिये ।

इसप्रकार संक्षीमार्थका समाप्त हुई ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानस लेक सपोगि

१ आहारमार्गणेन आहारके मिथ्यादृष्टत्वः सर्वत्रैवमन्ताः इत्यन्वयः । ८ श्रि १, ८

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाद्विटी दब्बपमाणेण केवडिया,
देवेहिं सादिरेय ॥ १८५ ॥

[illegible]

सासणसम्माहट्ठिण्हुडि जाव स्त्रीणकसायचीदरागच्छदुमत्या ति
मोघं ॥ १८६ ॥

सुयममरं सुख ।

असृणी दब्धपमाणेण केवढिया, अणंता ॥ १८७ ॥

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संक्षिप्तोमे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? देवोंसे इन्हें अधिक हैं ॥ १८५ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। सर्व देव मिथ्याएदि जीव संहो ही होते हैं। तमा ब्रह्मे संह्यातर्मे मागममाय तीन पतिसंह्यो संहो मिथ्याएदि जीव होते हैं। इसलिये संहो मिथ्याएदि जीव देवोंसे कुछ अधिक हैं। ऐसा सुनमें क्या है।

अब यहाँ पर महाभारतका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है—देव महाभारतमें एक प्रसंगमुख्ये ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको विद्यातक रोप बहु खंड वहीमें मिला देने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टियोंका महाभारत होता है। इस महाभारतसे जगत्प्रत्येक माणित करने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टि ग्रह्य होता है।

साक्षात्तत्त्वमयं गुणस्थानसे सेकर क्षीणरूपाय वितरत्तत्त्वमयं गुणस्थानतः
प्रत्येकं गुणस्थानमेवं संप्रती जीव मोक्षप्ररूपत्वात् समानं है ॥ १८६ ॥

पाद सुख सुगम है ।

असंख्य जीव द्रव्यप्रमाणाकी अपेक्षा किठने हैं ? अनन्त हैं ॥ १८७ ॥

१ ईशानुजयन कविपु सिपयवराजरा कीलकनामनामहर्षिनिम् । अ. नि. १८ देखि कविनेपो
एकी कर्णाल रोमि परिकल्प ॥ पं. नि. १८३

१. ब्रह्मविद्या विद्याविवेकसंग्रहः । पञ्चमस्कन्धोऽष्टादशः अध्यायः । अ. १, ६०
 पञ्चमोऽध्यायः ब्रह्मविद्याविवेकसंग्रहः । अ. १, ६०

समिह अत्रलियाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइडिअवहारकालो इदि ।

अजोगिकेवली ओघ ॥ १९२ ॥

सुगममेद ।

मागामार्ग वत्तइस्सामो । सन्वजीवरासिमसंखेज्जखंड कए बहुखडा आहारि मिच्छाइडिणो होति । सेसमणतखंड कए बहुखंडा अणाहारिअवगगा होति । सेसमणतखंड कए बहुखंडा अणाहारिअवगगा होति । सेसमसखज्जखंड कए बहुखडा आहारि असंजदसम्माइडिणो होति । सेस संखेज्जखंड कए बहुखडा सम्मामिच्छाइडिणो होति । सेसमसंखज्जखंड कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइडिणो होति । सेसमसंखेज्जखंड कए बहुखंडा संजदासंजदा होति । सेसमसंखेज्जखंड कए बहुखंडा अणाहारिअसंजदसम्माइडिणो होति । सेसमसंखेज्जखंड कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइडिणो होति । सेस संखेज्जखंड कए बहुखंडा पमचसज्जदा होति । सेसखंड अप्पमचसज्जदाओ होति ।

अप्यावहुग तिबिई सत्थाणादिमेएण । तत्थ सत्थार्थ मूलोपमगो । परत्थाय पयद ।

मसंख्यातके भागसे शुद्धि करने पर अनाहारक सासादनसम्पत्तिपेक्षा अथवाहारक होता है ।

अनाहारक अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपभाके समान है ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अथ मागामागके वत्तसाते हैं— सर्व जीवराशिक मसंख्यात खंड करनेपर बहुभाग आहारक मिथ्याएदि जीव है । दोष एक भागके अन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अथवायुक्त जीव है । दोष एक भागके अन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अथवायुक्त जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक मसंयतसम्पत्तिपेक्षा जीव है । दोष एक भागके सत्थाय खंड करने पर बहुभाग सम्पत्तिमिथ्याएदि जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्पत्तिपेक्षा जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्थायसंयत जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक मसंयतसम्पत्तिपेक्षा जीव है । दोष एक भागके मसंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्पत्तिपेक्षा जीव है । दोष एक भागके सत्थाय खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसत्त जीव है । दोष एकभाग प्रमाण अप्पमचसत्त जीव है ।

स्वरथान अत्यवहुत्थ आदिसे मेवसे अत्यवहुत्थ तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वरथान अत्यवहुत्थ मूल ओघ स्वरथान अत्यवहुत्थके समान है ।

एदं पि सुतं सुगमं श्रेय । णवरि सगुणपद्मिन् अणाहारराशिं आहारमिच्छद्दि
राशिमिदं तन्मया च सम्पत्तीन्तरासिस्तुपरि पन्तिउचे आहारमिच्छद्दिधुनरासी होदि ।

अणाहारएस्सु कम्मइयकायजोगिभगो' ॥ १९१ ॥

एवं पि सुचं सुगम चेय । एत्थ युवरासी बुब्बदे । ओषमिच्छाद्विपुवरासि-
मंतोसुदुत्तेण गुणिदे अणाहारिमिच्छाद्विपुवरासी होदि । ओषअसदसम्माद्विअवहारकत्तं
आवत्तिपाए असंखेज्जदिमाएण मागे हिदे छंदं तमिह चेव पक्खिअत्ते आहारिअसंजदसम्मा-
द्विअवहारकत्तो होदि । तमिह आवत्तिपाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे सम्मामिच्छाद्वि
अवहारकत्तो होदि । तमिह संखेज्जत्तेहि गुणिदे सासणसम्माद्विअवहारकत्तो होदि ।
तमिह आवत्तिपाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे संजदसंजदअवहारकत्तो होदि । तमिह
आवत्तिपाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे अणाहारिअसंजदसम्माद्विअवहारकत्तो होदि ।

केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओषधरूपपाके समान हैं ॥ १० ॥

यह भी खूब सुगम है। इतना विशेष है कि गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और अनाहारक जीवराशिसे तथा व्याहारक मिथ्यादष्टि जीवराशिसे भाजित वस्तु राशिपोंके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिखा देने पर व्याहारक मिथ्यादष्टि जीवोंका प्रमाण छात्रके हिये जुबराशि होती है।

अनाहारकर्मि मिथ्यावृष्टि, सासादनसम्पगृष्टि, असंयतसम्पगृष्टि और सयोगि केवली जीवोंका प्रमाण कर्मसकल्ययोगियोंके प्रमाणके समान है ॥ १९१ ॥

यह भी सच सुगम ही है। अगर यहाँ सुव्यवस्था प्रतिपन्न करते हैं— स्पेस मिथ्यादृष्टियोंकी व्यवस्थाको अन्तर्मुहूर्तसे गुणित करने पर समाहारक मिथ्यादृष्टियोंके प्रभाव को छोड़कर छिये व्यवस्था होती है। जो असंयतसम्बन्धितोंके व्यवहारका अर्थ व्यक्तिके अर्थव्यवस्थायें भागसे माहित करने पर जो द्रष्टव्य आये उसे वहीमें मिला देने पर आधारक असंबन्धितसम्बन्धितोंका व्यवहारका होता है। इसे आवश्यकि असंयतात्में भागसे गुणित करने पर सम्बन्धितमिथ्यादृष्टियोंका व्यवहारका होता है। इसे संयतात्से गुणित करने पर व्यवहारक साक्षात्सम्बन्धितोंका व्यवहारका होता है। इसे आवश्यकि असंयतात्में भागसे गुणित करने पर आधारक सम्यक्संबन्धितोंका व्यवहारका होता है। इसे आवश्यकि असंयतात्में भागसे गुणित करने पर समाहारक असंबन्धितसम्बन्धितोंका व्यवहारका होता है। इसे आवश्यकि

सविस्तरकाठी काशी व्याख्यानमाला ॥ को. अ. १७२

[illegible]

तन्नि आवसियाए असंखेज्जदिमाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइड्ढिअवहारफालो होदि ।

अजोगिकेवली ओघ ॥ १९२ ॥

सुगममेद ।

मागामागं वचइस्सामो । सम्पजीवरासिमसंखेज्जसंखे कए बहुखंडा आहारि मिच्छइड्ढिणो होति । सेसमणतसंखे कए बहुखंडा अणाहारिबंघगा होति । सेसमणतसंखे कए बहुखंडा अणाहारिअवघगा होति । सेसमसंखेज्जसंखे कए बहुखंडा आहारि असंबदसम्माइड्ढिणो होति । सेसं संखेज्जसंखे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइड्ढिणो होति । सेसमसंखेज्जसंखे कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइड्ढिणो होति । सेसमसंखेज्जसंखे कए बहुखंडा संबदासंबदा होति । सेसमसंखेज्जसंखे कए बहुखंडा अणाहारिअसंबदसम्माइड्ढिणो होति । सेसमसंखेज्जसंखे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइड्ढिणो होति । सेसं संखेज्जसंखे कए बहुखंडा पमचसयदा होति । सेससंखे अणमचसयदाओ होति ।

अप्यबहुगं तिनिहं सत्यानादिमेएण । तस्य सत्याणं मूलोपमंगो । परत्थापे पयइं ।

असंख्यातवै मागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्पत्तिओंका अवहारक्य होता है ।

अनाहारक अयोगिकेवली औष ओषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अब मागामागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके असंख्यात खंड करनेपर बहुभाग आहारक मिच्छाइडि औष हैं । दोष एक मागके अगस्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अणमच औष हैं । दोष एक मागके अगस्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अणमच औष हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक असंयतसम्पत्ति औष हैं । दोष एक मागके सत्पात खंड करने पर बहुभाग सम्पत्तिमिच्छाइडि औष हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्पत्ति औष हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत औष हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक असंयतसम्पत्ति औष हैं । दोष एक मागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्पत्ति औष हैं । दोष एक मागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत औष हैं । दोष एकमाग प्रमाण अणमचसंयत औषि औष हैं ।

स्वस्थान अणमच औष आदिसे मेहसे अणमच औष तीन प्रकारका है । इनमेंसे स्वस्थान अणमच औष मूल ओष स्वस्थान अणमच औषके समान है ।

सम्बन्धोवा चचारि उचसामगा । खरगा संखेन्जगुणा । अप्पमचसज्जदा संखेन्जगुणा ।
पमचसंजदा संखेन्जगुणा । आहारिअसंजदसम्माप्पिअवहारकातो असंखेन्जगुणो । सम्मा-
मिच्छप्पिअवहारकातो असंखेन्जगुणो । आहारिसत्तयसम्माप्पिअवहारकातो संखेन्जगुणो ।
सज्जदासज्जदअवहारकातो असंखेन्जगुणो । तस्सेव दम्ममसंखेन्जगुण । एवं पेयम्भं खाव
पत्तिदोचमं ति । तदो आहारिमिच्छप्पिअवहारकातो अणतगुणा । अणाहारएस्स सम्बन्धोवा ससो-
कवली । असंजदसम्माप्पिअवहारकातो असंखेन्जगुणो । सासयसम्माप्पिअवहारकातो
असंखेन्जगुणो । तस्सेव दम्ममसंखेन्जगुणं । एवं पेयम्भं खाव पत्तिदोचमं ति । तदो
अवचगा अणतगुणा । वचगा अणतगुणा ।

सम्बन्धपरत्वात् पदं । सम्बन्धोवा अपाहारिसंयोगिकेवसी । (अवोगिकेवसी संयोग
गुणा ।) चत्वारि तन्वसामगा संयोगगुणा । (खपगा संयोगगुणा ।) आहारिसंयोगिकेवसी संयोग
गुणा । अप्यमचसंबदा संयोगगुणा । पमचसंबदा संयोगगुणा । आहारिसंबदसम्भवादिअव

अब परस्थानमें अत्यन्तदुःख प्रकट है— बायें गुणस्यावर्त्ती अपशामक जीव सबसे श्रेष्ठ है। शून्य जीव अपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। अममत्तसंपत जीव शून्यकोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंपत जीव व्यमत्तसंपतोंसे संख्यातगुणे हैं। आहारक असंपतसम्पन्नदृष्टियोंका नवहारकाळ प्रमत्तसंपतोंसे असंख्यातगुण है। सम्पन्नमिध्यादृष्टियोंका नवहारकाळ आहारक नत्संपतसम्पन्नदृष्टियोंके नवहारकाळसे असंख्यातगुण है। आहारक सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका नवहारकाळ आहारक सम्पन्नमिध्यादृष्टियोंके नवहारकाळसे संख्यातगुण है। संपतसंपतोंका नवहारकाळ अहारक सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंके नवहारकाळसे असंख्यातगुण है। उन्हींका द्रव्य उन्हींके नवहारकाळसे असंख्यातगुण है। इसीप्रकार पश्योपमतक के आद्य बाहिये। पश्योपमसे नवहारक मिध्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। अनाहारकोंमें सयोगिकेबली जीव सबसे श्रेष्ठ है। अनाहारक असंपतसम्पन्नदृष्टियोंका नवहारकाळ अनाहारक सयोगिकेबलियोंसे असंख्यातगुण है। अनाहारक सासाधनसम्पन्नदृष्टियोंका नवहारकाळ अनाहारक नत्संपतसम्पन्नदृष्टियोंके नवहारकाळसे असंख्यातगुण है। उन्हींका द्रव्य उन्हींके नवहारकाळसे असंख्यातगुण है। इसीप्रकार पश्योपमतक के आद्य बाहिये। पश्योपमसे अवन्ध्य जीव अनन्तगुण हैं। वन्ध्य जीव अवन्ध्योंसे अनन्तगुणे हैं।

अब सर्व परस्थानमें अक्षरबहुत्व प्रकृत है— अनाहारक सयोगिदेवकी जीव सचसे स्वीक है । अयोगिदेवकी जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । आर गुण-स्थानकी उपग्रामक जीव अयोगिदेवकीधर्मोसे संख्यातगुणे हैं । सपक जीव उपग्रामकीसे संख्यातगुणे हैं । आहारक सयोगिदेवकी जीव सपकीसे संख्यातगुणे हैं । अग्रमत्तसंपत्त जीव आहारक सयोगिदेवकीधर्मोसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंपत्त जीव अग्रमत्तसंपत्तीसे संख्यातगुणे हैं । आहारक अक्षरवत्सम्पत्तकीधर्म अनाहारक अग्रमत्तसंपत्तीसे

हारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छइत्तिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासण-
सम्माइत्तिअवहारकालो संखेज्जगुणो । समदाससदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारि
असंसदसम्माइत्तिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारिसासणसम्माइत्तिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । तस्सेव दम्बमसंखेज्जगुण । एवं णेयञ्च आष पल्लिदोषम ति । तदो अवचगा
अप्पतगुणा । अणाहारियो वचगा मिच्छइत्तिणो अप्पतगुणा । तदो आहारिणो मिच्छा
इत्तिणो असंखेज्जगुणा ।

एवं दम्बाणिभोगदरं समसं ।

असंख्यातगुणा है । सम्पत्तिमिच्छादियैकां अवहारकाळ आहारक असंयतसम्पत्तिद्वि अवहार
काळसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासाधनसम्पत्तिद्वि अवहारकाळ सम्पत्तिमिच्छाद्वि
अवहारकाळसे संख्यातगुणा है । संपत्तासंबन्धोंका अवहारकाळ आहारक सासाधनसम्पत्तिद्वि
अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक असंयतसम्पत्तिद्वि अवहारकाळ संपत्ता
संबन्धोंके अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासाधनसम्पत्तिद्वि अवहारकाळ
अनाहारक असंयतसम्पत्तिद्वि अवहारकाळसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका रूप अपने अवहार
काळसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पस्योपमतक के आना चाहिये । पस्योपमतसे अवस्थाक
और अवस्थागुणे हैं । अनाहारक बन्धक मिच्छाद्वि जीव अवस्थाओंसे अवस्थागुणे हैं । इनसे
आहारक बन्धक और असंख्यातगुणे हैं ।

इसप्रकार द्रव्यानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

सम्बन्धोवा चचारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा ।
 पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । आहारिसज्जदसम्माइड्डिअवहारकातो असंखेज्जगुणो । सम्मा-
 मिच्छाइड्डिअवहारकातो असंखेज्जगुणा । आहारिसासणसम्माइड्डिअवहारकातो संखेज्जगुणो ।
 सज्जदासज्जदअवहारकातो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दप्पमत्तसंखेज्जगुणं । एवं वेयम्वं आव
 पत्तिदोवमं ति । तदो आहारिमिच्छाइड्डिअं अपत्तगुणा । अपाहारपसु सम्बन्धोवा सज्जोगि-
 केवली । असंज्जदसम्माइड्डिअवहारकातो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकातो
 असंखेज्जगुणो । तस्सेव दप्पमत्तसंखेज्जगुणं । एवं वेयम्वं आव पत्तिदोवमं ति । तदो
 अर्धवगा अणत्तगुणा । वधगा अपत्तगुणा ।

सम्बन्धपर्याय पयदं । सम्बन्धोवा अणाहारिसज्जोगिकेवली । (अजोगिकेवली संखेज्ज
 गुणा ।) चचारि उवसामगा संखेज्जगुणा । (खवगा संखेज्जगुणा ।) आहारिसज्जोगिकेवली संखेज्ज
 गुणा । अप्पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । आहारिसज्जदसम्माइड्डिअव

अथ परस्थानमे अस्पवहुत्वं प्रकृतं है— चारो गुणस्थानवती वपशामक जीव सवसे
 स्तोके है । सपक जीव उपशामकोसे संख्यातगुणे है । अममत्तसपत जीव सपकोसे संख्यातगुणे
 है । प्रमत्तसपत जीव अममत्तसपतोसे संख्यातगुणे है । आहारक असंयतसम्बन्धशिषोका
 अवहारकास प्रमत्तसपतोसे असंख्यातगुणा है । सम्ममिष्यादशिषोका अवहारकास
 आहारक असंयतसम्बन्धशिषोके अवहारकाससे असंख्यातगुणा है । आहारक सासाण-
 सम्बन्धशिषोका अवहारकास आहारक सम्ममिष्यादशिषोके अवहारकाससे संख्यातगुणा
 है । संयतासंयतोका अवहारकास आहारक सासाणसम्बन्धशिषोके अवहारकाससे
 असंख्यातगुणा है । उन्हीका दप्प उन्हीके अवहारकाससे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
 पस्योपमत्त के जाना चाहिये । पस्योपमसे आहारक मिष्यादशि जीव अवन्तगुणे है । अना-
 हारकोमे सयोगिकेवली जीव सवसे स्तोके है । अनाहारक असंयतसम्बन्धशिषोका अवहारकास
 अनाहारक सयोगिकेवलीसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासाणसम्बन्धशिषोका
 अवहारकास अनाहारक असंयतसम्बन्धशिषोके अवहारकाससे असंख्यातगुणा है । उन्हीका
 दप्प उन्हीके अवहारकाससे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार परयोपमत्त के जाना चाहिये ।
 पस्योपमसे अवन्तक जीव मन्तगुण है । वन्तक जीव अवन्तकोसे मन्तगुणे है ।

अथ सर्व परस्थानमे अस्पवहुत्वं प्रकृतं है— अनाहारक सयोगिकेवली जीव
 सवसे स्तोके है । अयोगिकेवली जीव इनसे संख्यातगुणे है । चार गुण-
 स्थानवती वपशामक जीव अयोगिकेवलीसे संख्यातगुणे है । सपक जीव
 वपशामकोसे संख्यातगुणे है । आहारक सयोगिकेवली जीव सपकोसे संख्यातगुणे है ।
 अममत्तसपत जीव आहारक सयोगिकेवलीसे संख्यातगुणे है । प्रमत्तसपत जीव
 अममत्तसपतोसे संख्यातगुणे है । आहारक असंयतसम्बन्धशिषोका अवहारकास प्रमत्तसपतोसे

परिशिष्ट



परिशिष्ट

१ दन्वपरुवणासुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	दन्वपमाणाणुगमेण दुविहो निदेसो आपेण अदेसेण य ।	१	१२	अद पदुष संखेज्जा ।	९३
२	ओपेण मिच्छाद्वी दन्वपमाणेण करडिया, अर्णता ।	१०	१३	सजोगिकेवली दन्वपमाणेण केव डिया, पवेसेण एको वा दो वा तिणि वा, उक्कस्सण अहुत्तरसय ।	९५
३	अणताणताहि ओत्तप्पिणि उस्मप्पि पीहि ण अविहरिस्सि कालेन ।	२७	१४	अद पदुष सदमहस्सपुपसं ।	९५
४	खचण अणताणता लागा ।	३२	१५	आदमेण गदियाणुवादेण निरय गईण णेरइएसु मिच्छाद्वी दन्व पमाणेण केवडिया, अमंखेज्जा ।	१२१
५	तिण्ह पि अभिगमो मानपमाण ।	३८	१६	असखज्जाअखज्जाहि ओत्तप्पिणि उस्मप्पिणीहि अविहरिस्सि कालेन ।	१२९
६	साउणसम्मार्हट्ठिप्पहुडि जाव मज्ज दामज्जा सि दन्वपमाणेण केव डिया, पत्तिदोवमस्म असखज्जादि माणा । एदेहि पत्तिदोवममवहिरि ज्जादि अंतामुत्तयेण ।	६३	१७	उत्तेण असंखज्जाओ सेडीआ अण- पदरस्स असंखज्जादिमाणेचाआ । तामि सरीण निक्खंममूची अंगुल वग्गमूलं विदियवग्गामूलगुणिदण ।	१३१
७	पमत्तमंज्जा दन्वपमाणेण करडिया, कोहिपुपसं ।	८८	१८	मात्तममम्मार्हट्ठिप्पहुडि जाव अर्ध ज्जदमम्मार्हट्ठि सि दन्वपमाणेण करडिया, आपं ।	१५६
८	अप्पमत्तमंज्जा दन्वपमाणेण कर डिया, सखज्जा ।	८९	१९	एव पडमार पुत्तीण णरइया ।	१६१
९	चउण्हमुवसामगा दन्वपमाणेण कर डिया, पवेसेण एका वा दा वा तिणि वा, उक्कस्मण चउवण्णे ।	९०	२०	विदिपादि जाव मत्तमाए पुत्तीए णरइएसु मिच्छाद्वी दन्वपमाणेण करडिया, अमंखेज्जा ।	१०८
१०	अद पदुष मंखज्जा ।	९१	२१	अवंखज्जाअंखज्जाहि आमप्पिणि- उम्मप्पिणीहि अविहरिस्सि कालेन ।	१०८
११	चउण्ह गवहा अजोगिकेवली दन्व पमाणेण केवडिया, पममण एका वा दो वा तिणि वा, उक्कस्मण अहु त्तरसद ।	९२	२२	गचण मेडीण अमंखज्जादिमाणा । निम्म मरीण आपामा अण	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	संज्ञाभ्यो भोयषकोडीजा पदमा- दियार्थं सेद्विषगमूलानां संज्ञेज्जाणं अण्योष्ममासेष ।	१९९	३४	इही दम्पपमाणेय केवडिया, अर्स खेज्जा ।	२२९
२३	सासणसम्मवडिप्पडुडि जाव अर्स वदसम्मवडि पि ओषं ।	२०६	३५	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेय । २३०	
२४	तिरिक्खगार्हप तिरिक्खेसु मिच्छा- इडिप्पडुडि जाव संसदासज्जादा पि ओषं ।	२१५	३६	खेचेय पण्डियतिरिक्खअपिणि मिच्छावडिहि पदरमवहिरदि देव अवहारकात्तादो सखेज्जगुणेष का- सेय ।	२३१
२५	पण्डियतिरिक्खमिच्छावडि दम्प पमाणेय केवडिया, संखेज्जा ।	२१७	३७	सासणसम्मवडिप्पडुडि जाव संस- दासज्जादा पि ओषं ।	२३७
२६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेय । २१७		३८	पण्डियतिरिक्खअपन्नत्ता दम्प- पमाणेय केवडिया, असंखेज्जा । २३९	
२७	खेचेय पण्डियतिरिक्खमिच्छा- इडिहि पदरमवहिरदि देवअवहार कात्तादो असंखेज्जगुणहीणकात्तय । २१९		३९	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेय । २३९	
२८	सासणसम्मवडिप्पडुडि जाव सज्ज दासज्जादा पि तिरिक्खोषं ।	२२६	४०	खेचेय पण्डियतिरिक्खअपन्नत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकात्तादो असंखेज्जगुणहीणेष कासेय । २३९	
२९	पण्डियतिरिक्खअपन्नत्तमिच्छावडि दम्पपमाणेय केवडिया, असंखेज्जा । २२६		४१	मज्झिमसर्ग मज्झिमेसु मिच्छावडि दम्पपमाणेय केवडिया, असंखेज्जा । २४४	
३०	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेय । २२७		४२	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अबहिरंति कासेय । २४५	
३१	खेचेय पण्डियतिरिक्खअपन्नत्त मिच्छावडिहि पदरमवहिरदि देव अवहारकात्तादो सखेज्जगुणहीणेष कासेय ।	२२८	४३	खेचेय सेडीए अत्तखेज्जदिमायो । तिस्से सेडीए आयामा असंखेज्जदि भोयषकोडीजो । मज्झिमसिच्छा- इडिहि रूपा पण्डियत्तएहि सेडी अवहिरदि अंगुत्तममामूर्सं सदिय वगमूलमुत्तिरेय ।	२४५
३२	सासणसम्मवडिप्पडुडि जाव सज्ज दासज्जादा पि ओषं ।	२२९	४४	सासणसम्मवडिप्पडुडि जाव सज्ज- दासज्जादा पि दम्पपमाणेय केव	
३३	पण्डियतिरिक्खअपिणीसु मिच्छा-				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	डिया, संखञ्जा ।	२५१		अंगुलवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणि देण ।	२६२
४४	पमचसज्जदप्पहुडि जाव अज्जागि- कवलि चि ओपं ।	२५२	५३	देवगईए दवसु मिच्छाईही दव पमाणग केवडिया, असखञ्जा ।	२६६
४५	मणुसपज्जप्पेसु मिच्छाईही दव पमाणेण केवडिया, कोठाकोठा- कोडीए उवरि कोठाकोठाकाडा- काडीए हेहुदो छण् बग्गाणमुवरि सत्तण् बग्गाण हेहुदो ।	२५३	५४	अमखञ्जामरुञ्जाहि ओमप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिंरि कालण ।	२६८
४६	सासणसम्माइहिप्पहुडि जत्त सज्ज दासंभदा चि दवपमाणेण केव डिया, संखञ्जा ।	२५९	५५	रत्तण पदस्स वल्लप्पणगुत्तसय वग्गपडिमाण ।	२६८
४७	पमचसज्जदप्पहुडि जाव अज्जागि कवलि चि आप ।	२६०	५६	सासणमम्माइहि सम्मामिच्छाईहि अमवदमम्माइहीण ओपं ।	२६९
४८	मणुसिणीसु मिच्छाईही दवपमा- णेण केवडिया, कोठाकोठाकाडीए उवरि काठाकोठाकाडाकाडीए ह हुदो छण् बग्गाणमुवरि सत्तण् वग्गाण हेहुदो ।	२६०	५७	मवणवामिपदेवसु मिच्छाईही दव पमाणेण केवडिया, असखञ्जा ।	२७०
४९	मणुसिणीसु सासणसम्माइहिप्पहु डि जाव अज्जागिकेवलि चि दव पमाणेण केवडिया, संखञ्जा ।	२६१	५८	असखेज्जामखेज्जाहि ओमप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिंरि कालण ।	२७०
५०	मणुमअपज्जत्ता दवपमाणेण केव डिया, असखञ्जा ।	२६२	५९	रत्तण अमरुञ्जाआ मडीओ पद स्स अमखेज्जदिमाणो । तासि सडीण विक्खेमवद् अंगुल अंगुल- वग्गमूलगुणिदेण ।	२७०
५१	असखञ्जामखेज्जाहि ओमप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिंरि कालण ।	२६२	६०	सामणमम्माइहि सम्मामिच्छाईहि अमवदमम्माइहिप्पवग्गणा आप ।	२७१
५२	सुत्तण सेडीण असखञ्जदिमाणा । विस्स सेगीए आत्तामो अमखञ्जाआ ओत्तणसाडीओ । मणुमअपज्जप्पेहि रुवा पस्सिप्पेहि सप्पिमरिदि	२६२	६१	वाणोत्तरदवसु मिच्छाईही दव पमाणेण केवडिया, असखञ्जा ।	२७२
			६२	अमखञ्जाआमखञ्जाहि आमप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिंरि कालण ।	२७२
			६३	रत्तण पदस्स मग्गवज्जोत्तमद वग्गपडिमाण ।	२७२
			६४	सामणमम्माइहि सम्मामिच्छाईहि अमवदमम्माइही आप ।	२७२
			६५	ओत्तमिपदरा दवण्ण मग्गा ।	२७२

सूत्र संख्या	सूत्र	श्रुत	सूत्र संख्या	सूत्र	श्रुत
	खेज्जाओ ओयनकोडीओ पंडमा- दियावं सेदियगामूलाय संखजाण अण्णोण्णाम्मासेण ।	१९९	३४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उस्सपिणीहि अबहिंरंति कालेण ।	२२९
२३	सासणसम्माइडिप्पहुडि आव असं अइसम्माइडि चि ओरं ।	२०६	३५	खेचेण पंषिदियतिरिक्खओणिमि मिच्छइडिहि पदरमवहिरदि देव अवहारकातादो संखेज्जगुणेण का- लेण ।	२३०
२४	तिरिक्खगार्हण तिरिक्खेसु मिच्छा- इडिप्पहुडि ज्ञान संज्झादसंज्झदा चि ओरं ।	२१५	३६	सासणसम्माइडिप्पहुडि ज्ञान संज्झ- दासंज्झदा चि ओरं ।	२३७
२५	पंषिदियतिरिक्खमिच्छाइडि इत्थं पमायेण केवडिया, संखेज्जा ।	२१७	३७	पंषिदियतिरिक्खअपज्जा इत्थं पमायेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२३९
२६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अबहिंरंति कालेण ।	२१७	३८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उस्सपिणीहि अबहिंरंति कालेण ।	२३९
२७	खेचेण पंषिदियतिरिक्खमिच्छा- इडिहि पदरमवहिरदि देवअवहार कातादो असंखेज्जगुणहीनकालेण ।	२१९	३९	खेचेण पंषिदियतिरिक्खअपज्जेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकातादो असंखेज्जगुणहीनियेण कालेण ।	२३९
२८	सासणसम्माइडिप्पहुडि आव संज्झ दासंज्झदा चि तिरिक्खओरं ।	२२६	४०	मज्झसमर्गण मज्झस्सेसु मिच्छाइडि इत्थं पमायेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२४४
२९	पंषिदियतिरिक्खपग्गचमिच्छाइडि इत्थं पमायेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२२६	४१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उस्सपिणीहि अबहिंरंति कालेण ।	२४५
३०	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अबहिंरंति कालेण ।	२२७	४२	खेचेण संहीए असंखेज्जदिमागो । विस्से सेहीए आपामो अमंखेज्जदि ओयनकोडीओ । मज्झसमिच्छा- इडिहि रुक्खा पक्खिचएहि सेही अवहिरदि अंगुलवग्गमूल तदिय वग्गमूलगुणिदेण ।	२४५
३१	खेचेण पंषिदियतिरिक्खपग्गच मिच्छाइडिहि पदरमवहिरदि देव अवहारकातादो संखेज्जगुणहीनेण कालेण ।	२२८	४३	सासणसम्माइडिप्पहुडि ज्ञान संज्झ दासंज्झदा चि इत्थं पमायेण केव	
३२	सासणसम्माइडिप्पहुडि ज्ञान संज्झ दासंज्झदा चि ओरं ।	२२९			
३३	पंषिदियतिरिक्खओणिनीसु मिच्छा-				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	दिया, संखेज्जा ।	२५१		अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलमुभि- देण ।	२६२
४४	पमत्तसज्जदप्पहुडि जाव अजागि केवलि चि ओपं ।	२५२	५३	देवगाई देवेसु मिच्छाद्वी। दम्प पमाणेण केवडिया, अमखेज्जा ।	२६६
४५	मणुसपज्जचेसु मिच्छाद्वी दम्प पमाणेण केवडिया, कोडाकोडा- कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडा- कोडीए हेडुदो छणं वग्गामुवरि सचण्ड वग्गामं हेडुदो ।	२५३	५४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरिणि कालेण ।	२६८
४६	सासणसम्माद्विप्पहुडि जाव सज्ज दत्तसज्जदप्पहुडि जाव अजागि केवलि चि ओपं ।	२५४	५५	खुचेण पदरस्स वेळप्पण्णगुलसय वग्गपडिमाणेण ।	२६८
४७	पमत्तसज्जदप्पहुडि जाव अजागि केवलि चि ओपं ।	२५५	५६	सासणसम्माद्वि-सम्मामिच्छाद्वि अमज्जदसम्माद्विणि ओपं ।	२६९
४८	मणुसिणीसु मिच्छाद्वी दम्पपमा- णेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हे डुदो छणं वग्गामुवरि सचण्ड वग्गामं हेडुदो ।	२५६	५७	मवववासियदेवेसु मिच्छाद्वी। दम्प पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७०
४९	मणुसिणीसु सासणसम्माद्विप्पहु- डि जाव अजागिकेवलि चि दम्प पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	२५७	५८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरिणि कालेण ।	२७०
५०	मणुसअपज्जत्ता दम्पपमाणेण केव डिया, असंखेज्जा ।	२५८	५९	खुचेण असंखेज्जामो सेडीओ पद रस्स असंखेज्जदिमागो । तासिं सेडीय विक्खेममग्गं अंगुल अंगुल- वग्गमूलमुभिदेण ।	२७०
५१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरिणि कालेण ।	२५९	६०	सासणसम्माद्वि-सम्मामिच्छाद्वि अमज्जदसम्माद्विपण्णणा ओपं ।	२७१
५२	खुचेण सेडीए असंखेज्जदिमागो । तस्से सेडीए आपामो असंखेज्जाया ओप्पणकोडीओ । मणुसअपज्जचेहि रुग्गा पक्खिउचेहि सेडिमवहिरिदि	२६०	६१	वाणवैतरदेवेसु मिच्छाद्वी दम्प पमाणेण केवडिया, अमखेज्जा ।	२७२
			६२	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरिणि कालेण ।	२७२
			६३	खुचेण पदरस्स संखेज्जओप्पणसद वग्गपडिमाणेण ।	२७२
			६४	सासणसम्माद्वि-सम्मामिच्छाद्वि अमज्जदसम्माद्विणि ओपं ।	२७४
			६५	ओइसियदेवा देवगाईण मंगा ।	२७५

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहृन्मीसत्त्वकप्यवासियद्वेसु मि च्छद्द्वि दम्भपमाणेन केवडिया, असंखेज्जा । २७६	२७६	७५	अर्धतावताहि ओसप्पिणि-उत्स प्पिणीहि न अबहिरंति कालेन । ३०६	३०६
६७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उत्सप्पिणीहि अबहिरंति कालेन । २७६	२७६	७६	खेचेन अर्धतावता लोगा । ३०७	३०७
६८	खेचेन असंखेज्जाओ सेदीमो पद रस्स असंखेज्जदिमागो । तासि सेदीमं विक्खंसमएइ अंगुलविदिय- वग्गामूल तवियवग्गामूलगुभिदेण । २७७	२७७	७७	वेइदिय-तीइदिय चउरिदिया तस्सेन पञ्चचा अपञ्चचा दम्भपमाणेन केवडिया, असंखे-जा । ३१०	३१०
६९	सत्तजसम्मइहि-सम्मामिच्छद्द्वि असंखदसम्मइहि ओषं । २८	२८	७८	असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पि णीहि अबहिरंति कालेन । ३१२	३१२
७०	सवक्कमारप्पहुवि आन सदर सहस्सरकप्यवासियद्वेसु जहा सत्तमाए पुडबीए केइयाय मंगो । २८०	२८०	७९	खेचेन वेइदिय-तीइदिय-चउरिदिय तस्सेन पञ्चच-अपञ्चचेहि पदरम बहिरदि अगुलस्स असंखेज्जदि मागवग्गपडिमाएण अगुलस्स संखेज्जदिमागवग्गपडिमाएण अं गुलस्स असंखेज्जदिमागवग्गपडि माएण । ३१३	३१३
७१	आणद-पाणद साव जवरोरे-ज- विमाणवासियद्वेसु मिच्छद्द्वि प्पहुवि आन असंखदसम्मइहि पि दम्भपमाणेन केवडिया, पल्लिओ- वमस्स असंखेज्जदिमागो । एदेहि पल्लिओवममबहिरदि अंतोप्पहुचेन । २८१	२८१	८०	पंथिदिय पंथिदियपञ्चचणसु मि च्छद्द्वि दम्भपमाणेन केवडिया, अर्धखेज्जा । ३१४	३१४
७२	अणुदिस आन अबरइइविमाण वासियद्वेसु असंखदसम्मइहि दम्भपमाणेन केवडिया, पल्लिओ- वमस्स असंखेज्जदिमागो । एदेहि पल्लिओवममबहिरदि अंतोप्पहुचेन । २८१	२८१	८१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उत्सप्पिणीहि अबहिरंति कालेन । ३१४	३१४
७३	सम्भइसिद्धिदिमाणवासियद्वेवा द म्भपमाणेन केवडिया, संखेज्जा । २८६	२८६	८२	खेचेन पंथिदिय पंथिदियपञ्च चणसु मिच्छद्द्विहि पदरमबहिरदि अगुलस्स असंखेज्जदिमागवग्ग- पडिमाएण अगुलस्स संखेज्जदि मागवग्गपडिमाएण । ३१४	३१४
७४	इदियापुबदेण एइदिया बग्ग सुडुमा पञ्चचा अपञ्चचा दम्भ पमाणेन केवडिया, अणंता । ३०५	३०५	८३	सत्तजसम्मइहिप्पहुवि आन अओ- गिकेवलि पि ओषं । ३१७	३१७
			८४	पंथिदियपञ्चचणा दम्भपमाणेन केवडिया, असंखेज्जा । ३१७	३१७
			८५	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	उत्सपिणीहि अवहिरिति कालेण । ३१७			केवढिया, असंखेजा । ३५५	
८६	खेचेण पण्डियअपज्जचेहि पदर मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि मागवग्गपडिमाण । ३१८		९३	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि- उत्सपिणीहि अवहिरिति कालेण । ३५५	
८७	कायाणुवादेण पुढविकाइया आठ काइया ठेठकाइया बाठकाइया बादरपुढविकाइया बादरआठकाइया बादरठेठकाइया बादरवाठकाइया बादरवणप्फइकाइया पचेयसरीरा तस्सेव अपज्जचा सुहुमपुढवि काइया सुहुममाठकाइया सुहुम- ठेठकाइया सुहुमवाठकाइया तस्सेव पज्जचापज्जचा दब्बपमाणेण केव ढिया, असंखेजा लोगा ॥ ३२९		९४	खेचेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स संखेज्जदिभागो । ३५५	
८८	बादरपुढविकाइय-बादरआठकाइय बादरवणप्फइकाइयपचेयसरीर पज्जचा दब्बपमाणेण केवढिया, असंखेजा । ३४८		९५	वणप्फइकाइया णिगोदसीवा बादरा सुहुमा पज्जचापज्जचा दब्ब पमाणेण केवढिया, अणंता । ३५६	
८९	असंखेजासंखेजाहि ओसपिणि उत्सपिणीहि अवहिरिति कालेण । ३४९		९६	अणताणंताहि ओसपिणि-उत्स पिणीहि न अवहिरिति कालेण । ३५८	
९०	खेचेण बादरपुढविकाइय-बादर आठकाइय बादरवणप्फइकाइय पचेयसरीरपज्जचापदि पदरमवहिरि अंगुलस्स अमंखेज्जदिभागवग्ग पडिमाणेण । ३४९		९७	खेचेण अणताणंता लोगा । ३५८	
९१	बादरतेउपज्जचा दब्बपमाणेण केव ढिया, असंखेजा । अमंखेजाप तिपवग्गा आवलियपमस्स अंता । ३५०		९८	तसकाइय-तसकाइयपज्जचापसु मि च्छाद्वी दब्बपमाणेण केवढिया, असंखेजा । ३६०	
९२	बादरवाठकाइयपज्जचा दब्बपमाणेण		९९	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उत्सपिणीहि अवहिरिति कालेण । ३६१	
			१००	खेचेण तसकाइय-तसकाइयपज्ज चापसु मिच्छाद्वीहि पदरमवहि रदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभाग वग्गपडिमाणेण अंगुलस्स सस ज्जदिभागवग्गपडिमाण । ३६१	
			१०१	सासणसम्माद्विप्पदुदि जाव अज्जेगिक्केलि चि मायं । ३६२	
			१०२	तमकाइयअपज्जचा पण्डियअप ज्जचाण भंगा । ३६०	
			१०३	जोगाणुवादेण पचमज्जाणि-त्ति प्पिअचिआगीसु मिच्छाद्वी दब्ब पमाणेण केवढिया, देवान सस ज्जदिभागो । ३८६	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहम्मीसाम्यकप्यवासिपदेवेसु मि प्लष्टाद्वि दम्पपमाणेन केरडिया, असंखेज्जा ।	२७६	७५	अपतापसाहि ओसपिपि-उस्त पिपीहि ण अनहिरंति कालेण ।	३०६
६७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिपि उस्तपिपीहि अनहिरंति कालेण ।	२७६	७६	खेचेण अर्णतापसा सोगा ।	३०७
६८	खेचेण असंखेज्जाओ सेईओ पद रस्त असंखेज्जादिमागो । सासि सेईत्यं विक्खंमसुई अंगुलविदिय बग्गमूलं तदियबग्गमूलगुप्पिदेण ।	२७७	७७	बेईदिय-सीईदिय चठरिंदिया तस्सेव पञ्जत्ता अपन्नत्ता दम्पपमाणेन केरडिया, असंख-जा ।	३१०
६९	सामजसम्माद्वि-सम्माविच्छाद्वि असंजदसम्माद्वि आर्षं ।	२८०	७८	असंखेज्जाहि ओसपिपि-उस्तपि पीहि अनहिरंति कालेण ।	३१२
७०	सपन्नमारण्डुहि जाव सदार सहस्तरकप्यवासिपदेवेसु अहा सत्तमाए पुडबिए गेरडियां भंगो ।	२८०	७९	खेचेण बेईदिय-सीईदिय-चठरिंदिय तस्सेव पञ्जत्ता-अपन्नत्तादि पदरम बहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जादि मागरगपडिमाएण अंगुलस्स संखेज्जादिमागरगपडिमाएण अं गुलस्स असंखेज्जादिमागरगपडि माएण ।	३१३
७१	आणद शाणद साव पवगवेज्ज- विमाजवासिपदेवेसु मिप्लष्टाद्वि प्लष्टुहि जाव असंजदसम्माद्वि सि दम्पपमाणेन केरडिया, पत्तिरो- वमस्स असंखेज्जादिमागो । एदेहि पत्तिरोवममबहिरदि अंतोप्लष्टुचेण ।	२८१	८०	पंथिदिय पंथिदियपन्नत्तापसु मि प्लष्टाद्वि दम्पपमाणेन केरडिया, असंखेज्जा ।	३१४
७२	अणुदिम जाव अरराद्विमाज वामियदेवेसु असंजदसम्माद्वि दम्पपमाणेन केरडिया, पत्तिरो- वमस्स असंखेज्जादिमागो । एदेहि पत्तिरोवममबहिरदि अंतोप्लष्टुचेण ।	२८१	८१	असंखे-आसंखेज्जाहि ओसपिपि उस्तपिपीहि अनहिरंति कालेण ।	३१४
७३	सम्पङ्गुसिदिमिमाजवामियदेवा द प्वपमाणेन केरडिया, संखेज्जा ।	२८६	८२	खेचेण पंथिदिय-पंथिदियपन्न- त्तापसु मिप्लष्टाद्वि पदरमबहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जादिमागरमा पडिमाएण अंगुलस्स संखेज्जादि मागरगपडिमाएण ।	३१४
७४	ईदियाशुवादय एईदिया मादरा मुहुमा पञ्जत्ता अपन्नत्ता दम्प पमाणेन केरडिया, अर्णता ।	३०५	८३	सामजसम्माद्विप्लष्टुहि जाव अजो- गिक्खत्ति सि ओर्षं ।	३१७
			८४	पंथिदियपन्नत्ता दम्पपमाणेन केरडिया, असंख-जा ।	३१७
			८५	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिपि	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	उत्सपिणीहि अबहिरिति कालेन । ३१७			केवढिया, असंखेजा । ३५५	
८६	खेचेण पचिदियअपज्जचेहि पदर मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि मागवग्गपडिमाणम् । ३१८		९३	असंखज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उत्सपिणीहि अबहिरिति कालेन । ३५५	
८७	कायायुवादेण पुढविकाइया आउ काइया तेउकाइया माउकाइया बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फकाइया पचेयसरीग तस्सेव अपज्जचा सुहुमपुढवि काइया सुहुमआउकाइया सुहुम तेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जचापज्जचा दम्बपमाणेण केव ढिया, असंखेजा लोगा ॥ ३२९		९४	खेचेण असंखेज्जाणि अगपदराणि लोगस्स सखेज्जदिमागो । ३५५	
८८	बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय बादरवणप्फकाइयपचेयसरीर पज्जचा दम्बपमाणेण केवढिया, असंखेजा । ३४८		९५	मणप्फकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जचापज्जचा दम्ब- पमाणेण केवढिया, अण्णता । ३५६	
८९	असंखेजासंखेजाहि ओसपिणि उत्सपिणीहि अबहिरिति कालेन । ३४९		९६	अण्णतार्णताहि ओसपिणि-उत्स पिणीहि न अबहिरिति कालेन । ३५८	
९०	खेचेण बादरपुढविकाइय-बादर आउकाइय-बादरवणप्फकाइय पचेयसरीरपज्जचएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिमागवग्ग पडिमाणेण । ३४९		९७	खेचेण अण्णतार्णता लोगा । ३५८	
९१	बादरतेउपज्जचा दम्बपमाणेण केव ढिया, असंखेजा । असंखेजार त्तियवग्गा आरत्तियपणस्स अंता । ३५०		९८	तमकाइय-तमकाइयपज्जचएसु मि च्छाईहि दम्बपमाणेण केवढिया, असंखेजा । ३६०	
९२	बादरवाउकाइयपज्जचा दम्बपमाणेण		९९	असंखज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि उत्सपिणीहि अबहिरिति कालेन । ३६१	
			१००	खेचेण तसकाइय-तसकाइयपज्ज चएसु मिच्छाईहि पदरमवहि रदि अंगुलस्स असंखज्जदिमाग वग्गपडिमाणेण अंगुलस्स तस ज्जदिमागवग्गपडिमाणम् । ३६१	
			१०१	सासणसम्मइहिप्पहुदि आर अत्रेणिकेवत्ति चि आप । ३६२	
			१०२	तमकाइयअपज्जचा पचिदियअप ज्जचाण भंगा । ३६२	
			१०३	आगाणुरादण पपममआगि-मि णिरपिज्जोगीसु मिच्छाईहि दम्ब पमाणेण केवढिया, दमाण सस ज्जदिमागा । ३८६	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहमीताम्बकप्यवासियदेवेसु मि च्छाद्गुह्यी दम्बपमायेण केवडिया, असंखेन्ना । २७६		७५	अर्बताम्बताहि ओसप्पिभि-उत्स- प्पिणीहि व अवहिरंति कालेण । ३०६	
६७	असंखेन्नासखेन्नाहि ओसप्पिभि- उत्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण । २७६		७६	खेत्तेण अयताम्बता सेगा । ३०७	
६८	खेत्तेण असंखेन्नाओ सेदीओ पद रस्स असंखेज्जदिमागो । तासि सेदीत्थं विवत्तंमसुई अंगुलपिदिय- वग्गामूत्तं तदियवग्गामूत्तमुपिदेव । २७७		७७	वेइदिय-रीपंदिय चउरिंदिया तस्सेव पञ्चत्ता अपञ्चत्ता दम्बपमायेण केवडिया, असंखेन्ना । ३१०	
६९	सात्तपसम्माद्वि-सम्मामिच्छाद्वि असंखेज्जसम्माद्वि ओपं । २८		७८	असंखेन्नाहि ओसप्पिभि-उत्सप्पि णीहि अवहिरंति कालेण । ३१२	
७०	सम्बद्धमातप्पडुडि जाव सदार सहस्सतरफप्पवासियदेवेसु बडा सत्तमाए पुढवीए गेरत्थानं मेगो । २८०		७९	खेत्तेण वेइदिय-रीपंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पञ्चत्त-अपञ्चत्तेहि पदरम वहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि मागवग्गपडिमाएण अंगुलस्स संखेज्जदिमागवग्गपडिमाएण अं गुलस्स असंखेज्जदिमागवग्गपडि माएण । ३१३	
७१	आण्द पाण्द जाव नवगेवेज्ज- विमात्तवासियदेवेसु मिच्छाद्वि प्पडुडि जाव असम्बद्धसम्माद्वि पि दम्बपमायेण केवडिया, पत्तिदो- वमस्स असंखेज्जदिमागो । एदेहि पत्तिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण । २८१		८०	पंदिय पंदियपञ्चत्तपसु मि च्छाद्गुह्यी दम्बपमायेण केवडिया, असंखेन्ना । ३१४	
७२	अणुदिस जाव अवराद्वदिमाए वासियदेवेसु असम्बद्धसम्माद्वि दम्बपमायेण केवडिया, पत्तिदो- वमस्स असंखेज्जदिमागो । एदेहि पत्तिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण । २८१		८१	असंखेन्नासंखेन्नाहि ओसप्पिभि उत्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण । ३१४	
७३	सम्बद्धसिद्धि विमात्तवासियदेवा द वपमायेण केवडिया, संखेन्ना । २८६		८२	खेत्तेण पंदिय पंदियपञ्च त्तपसु मिच्छाद्गुह्यीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिमागवग्ग- पडिमाएण अंगुलस्स संखेज्जदि मागवग्गपडिमाएण । ३१४	
७४	इंदियात्तपदेव एइदिया बावरा मुहुमा पञ्चत्ता अपञ्चत्ता दम्ब पमायेण केवडिया, अर्बता । ३५		८३	सात्तपसम्माद्विप्पडुडि जाव अओ- गिकेवत्ति पि ओपं । ३१७	
			८४	पंदियअपञ्चत्ता दम्बपमायेण केवडिया, असंखेन्ना । ३१७	
			८५	असंखेन्नासंखेन्नाहि ओसप्पिभि-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१२७	पुरिसवेदेषु मिच्छाद्विद्वि दम्भ पमाणेण केवडिया, देवेहि सादि रेयं ।	४१६	मूलोप ।		४२९
१२८	सासणसम्माद्विप्पहुडि जाव अणियङ्गिवाटरसांपरायपविहु उ वसमा खवा दम्भपमाणेण केव डिया, ओष ।	४१६	१२८ अकसाइसु उवसंसकसायवीदिराग छदुमत्या ओष ।		४३०
१२९	पणुसयवेदेषु मिच्छाद्विप्पहुडि जाव सज्जदासज्जदा चि आपं ।	४१७	१२९ स्त्रीणकसायवीदिरागछदुमत्या अ- ओगिकेवली ओष ।		४३०
१३०	पमचसज्जदप्पहुडि जाव अणि यङ्गिवाटरसांपरायपविहु उव समा खवा दम्भपमाणेण केव डिया, सखेज्जा ।	४१८	१३० सज्जागिकेवली ओष ।		४३१
१३१	अपगठवेदेषु तिण्णं उवसामगा दम्भपमाणेण केवडिया, पवेसण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सुण चठवण्ण ।	४१९	१३१ णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुद अण्णाणीसु मिच्छाद्वि सासण सम्माद्वि दम्भपमाणेण केव- डिया, ओषं ।		४३६
१३२	अदं पणुव सरुज्जा ।	४२०	१३२ विमंगणाणीसु मिच्छाद्वि दम्भ पमाणेण केवडिया, देवेहि सादि रेयं ।		४३७
१३३	तिण्णि खवा अजोगिकेवली ओषं ।	४२०	१३३ सासणसम्माद्वि ओषं ।		४३८
१३४	सज्जागिकेवली ओष ।	४२१	१३४ आमिणिबोहियणाणि-सुदणाणि- ओहिणाणीसु असंज्जसम्माद्वि प्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीद रागछदुमत्या चि ओष ।		४३९
१३५	कसायाणुवादेण कोपकमाद्वि मायकसाद्वि मायकसाद्वि-लोमकमा- इसु मिच्छाद्विप्पहुडि जाव सज्जदासंज्जदा चि ओष ।	४२४	१३५ णवणि विसेसा, ओहिणाणीसु पमचसज्जदप्पहुडि जाव स्त्रीण कसायवीदिरागछदुमत्या चि दम्भ पमाणेण केवडिया, सखेज्जा ।		४४१
१३६	पमचसज्जदप्पहुडि जाव अणि- यङ्गि चि दम्भपमाणेण केव डिया, सखेज्जा ।	४२८	१३६ मणपज्जवणाणीसु पमचसंज्जद प्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीद रागछदुमत्या चि दम्भपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।		४४१
१३७	णवरि लोमकसाद्वि सुदुममाप- रायसुदिसज्जदा उवसमा खवा		१३७ केवत्तमाणीसु सज्जागिकेवली अजोगिकेवली ओषं ।		४४२
			१३८ संज्जमाणुवादेण सज्जदेसु पमच		

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१०४	सासजसम्मादिङ्गिप्पहुडि जाव सज्जदसम्मादा पि ओप ।	३८७	११३	असज्जदसम्माद्वह्वी दम्भपमा- येण केवडिया, ओप ।	४९९
१०५	पमचसज्जदप्पहुडि जाव सज्जोगि केवडि पि दम्भपमायेण केव डिया, संखेज्जा ।	३८७	११७	वेठम्भियमिस्सकायजोगीसु मि च्छाद्वह्वी दम्भपमायेण केवडिया, देवार्थं संखज्जदिमागो ।	४००
१०६	बधियोगि असज्जमोसवधियोगीसु मिच्छाद्वह्वी दम्भपमायेण क्व डिया, असंखेज्जा ।	३८८	११८	सासजसम्माद्वह्वी असज्जदसम्मा द्वह्वी दम्भपमायेण केवडिया, ओप ।	४०१
१०७	असंखज्जमासंखेज्जादि ओसप्पिणि उत्सप्पिणीहि अबहिरंति क्खलेण ।	३८९	११९	आहारकायजोगीसु पमचसज्जदा दम्भपमायेण क्वडिया, चतुवर्ण ।	४०१
१०८	उत्तेज्ज बधिसागि असज्जमोस बधियोगीसु मिच्छाद्वह्वीहि पद रमवहिरंति अगुलस्स संखेज्जदि मागयग्गपडिमागेण ।	३८९	१२०	आहारमिस्सकायजोगीसु पमच सज्जदा दम्भपमायेण केवडिया, संखेज्जा ।	४०२
१०९	सेसायं मणज्जागिमंगो ।	३९	१२१	कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाद्वह्वी दम्भपमायेण केवडिया, मूत्तेप ।	४०२
११०	कयजोगि-ओराखियकायजोगीसु मिच्छाद्वह्वी मूत्तेप ।	३९५	१२२	सासजसम्माद्वह्वी असज्जदसम्मा द्वह्वी दम्भपमायेण केवडिया, ओप ।	४०३
१११	सासजसम्मादिङ्गिप्पहुडि जाव सज्जोगिकेवडि पि महा मण- जोगिमंगो ।	३९५	१२३	सज्जोगिकेवसी दम्भपमायेण केव डिया, संखेज्जा ।	४०४
११२	ओराखियमिस्सकयजोगीसु मि च्छाद्वह्वी मूत्तेप ।	३९६	१२४	वेदाजुवादेण इत्थिवेदपमु मिच्छा द्वह्वी दम्भपमायेण केवडिया, देवीहि सादिरंते ।	४१३
११३	सासजसम्माद्वह्वी जाव ।	३९७	१२५	सासजसम्मादिङ्गिप्पहुडि जाव स ज्जदसंज्जदा पि ओप ।	४१४
११४	असज्जदसम्माद्वह्वी सज्जोगिकेवसी दम्भपमायेण क्वडिया, संखेज्जा ।	३९७	१२६	पमचसज्जदप्पहुडि जाव अभिय ङ्गिवात्तरसांपराप्पपनिङ्ग उवसमा खवा दम्भपमायेण केवडिया, संखज्जा ।	४१५
११५	वेठम्भियकायजोगीसु मिच्छाद्वह्वी दम्भपमायेण क्वडिया, देवार्थं संखज्जदिमागूणा ।	३९८			
११६	सामजसम्माद्वह्वी सम्मामिच्छा				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	दम्बपमाणेण केषडिया, प लिद्रोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिद्रोवममवहिरिदि अतो सुहुत्थेण ।	४६३	१८०	उवसममम्माइड्डीसु अमजदस म्माइड्डीसज्जदासज्जदा ओष ।	४७६
१७०	पमत्त अप्पमत्तसंज्जदा दम्बपमा- णेण केषडिया, संखेज्जा ।	४६५	१८१	पमत्तसंज्जदप्पहुडि जाव उवसत्त- कसायवीदरागल्लदुमत्था पि द म्बपमाणेण केषडिया, संखेज्जा ।	४७७
१७१	अपुब्बकरणप्पहुडि जाव मज्जोगि केवलि पि ओष ।	४६५	१८२	सासणसम्माइड्डी आप ।	४७७
१७२	मवियाणुवादेण मवमिदिप्पसु मिच्छाइड्डीप्पहुडि जाव अजो गिकेवलि पि ओष ।	४७२	१८३	सम्माभिच्छाइड्डी ओष ।	४७७
१७३	अमवसिदिप्पया दम्बपमाणेण क वडिया, अण्णता ।	४७२	१८४	मिच्छाइड्डी ओष ।	४७७
१७४	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइड्डीसु असंज्जदसम्माइड्डीप्पहुडि जाव अज्जागिकेवलि पि ओष ।	४७४	१८५	सण्णिदाणुवादेण सण्णीसु मिच्छा- इड्डी दम्बपमाणेण केषडिया, देवहिं सादिरेयं ।	४८२
१७५	सइयमम्माइड्डीसु अमजदमम्मा इड्डी ओष ।	४७४	१८६	सासणमम्माइड्डीप्पहुडि जाव स्त्री णकसायवीदरागल्लदुमत्था पि ओष ।	४८२
१७६	सज्जदासज्जदप्पहुडि जाव उवसत्त कसायवीदरागल्लदुमत्था दम्ब पमाणेण केषडिया, संखेज्जा ।	४७४	१८७	अमण्णी दम्बपमाणेण केषडिया, अण्णता ।	४८०
१७७	अउण्हं सवा अज्जागिकेवली ओष ।	४७५	१८८	अणसाणताहि ओत्ताणि उस्स- प्पिणीहि ण अवहिंति कालण ।	४८३
१७८	सज्जोगिकेवली ओष ।	४७६	१८९	सुत्थेण अमताणता लणा ।	४८३
१७९	वेदगमम्माइड्डीसु असंज्जदमम्मा- इड्डीप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंज्जदा पि ओष ।	४७६	१९०	आहारणुवादेण आहारएसु मि च्छाइड्डीप्पहुडि जाव मज्जागे- केवलि पि आप ।	४८३
			१९२	अज्जागिकेवली ओष ।	४८५

सूत्र संख्या	सूत्र	शृ	सूत्र संख्या	सूत्र	शृ
	सम्बद्धपुष्टि जाव अजोगिकेवलि ति ओष ।	४४७	१५८	सासणसम्माद्विप्यपुष्टि जाव खीकमायवीदरागल्लदुमत्ता पि ओष ।	४५४
१४९	सामाप्रप-छेदेवद्वावपुसुदिसब्देसु पमचसब्दपुष्टि जाव अणि यद्विवादरसांपराप्रयपविद्ध उव समा खुवा पि ओष ।	४४७	१५९	अचक्खुदंसणीसु मिच्छाद्वि प्यपुष्टि जाव खीकसायवीद रागल्लदुमत्ता पि आप ।	४५५
१५०	परिहारसुदिसब्देसु पमचापमच संजदा दम्बपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४४९	१६०	ओहिदसणी ओहियापिमंगा ।	४५५
१५१	सुद्धमसांपराप्रयसुदिसब्दसु सुद्ध मसांपराप्रयसुदिसब्ददा उवसमा खुवा दम्बपमाणेण केवडिया, ओष ।	४४९	१६१	केवलदंसणी कवलणानिमगो ।	४५६
१५२	अहाकलाद्विहारसुदिसब्देसु च उट्ठानं ओष ।	४५०	१६२	सेत्ताणुरादेण किम्भलेस्सिय वील्लस्सिय क्खल्लेस्सियसु मि च्छाद्विप्यपुष्टि जाव असंब्द सम्माद्विप्य पि ओष ।	४५९
१५३	संब्ददासज्जा दम्बपमाणेण क्व डिया, ओष ।	४५०	१६३	सेत्तलस्सियसु मिच्छाद्विप्य दम्ब पमाणेण केवडिया, ओहिय देवेदि सादिरयं ।	४६१
१५४	असंब्देसु मिच्छाद्विप्यपुष्टि जाव असंब्दसम्माद्विप्य पि दम्बपमा- णेण केवडिया, ओष ।	४५१	१६४	सासणसम्माद्विप्यपुष्टि जाव संब्ददासज्जा पि ओष ।	४६२
१५५	दसप्पाणुरादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाद्विप्य दम्बपमाणेण केव डिया, असंखेज्जा ।	४५३	१६५	पमच-अप्यमचसंजदा दम्बपमा- णेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६२
१५६	असंखेज्जासंखेज्जादि ओसपि वि-वस्सपिणीदि अजहिरति कालम ।	४५३	१६६	पम्मलस्सियसु मिच्छाद्विप्य दम्ब- पमाणेण केवडिया, सन्निपदि दियतिरिक्खुजोगिणीज संखेज्ज दिमगो ।	४६२
१५७	रोषेण चक्खुदंसणीसु मिच्छा- द्विप्य पदरमज्जिदि भंगुलसस संखेज्जदिमागग्गमापडिमाएण ।	४५३	१६७	सासणसम्माद्विप्यपुष्टि जाव संब्ददासज्जा पि ओष ।	४६३
			१६८	पमच-अप्यमचसंजदा दम्बपमा- ण केवडिया, संखेज्जा ।	४६३
			१६९	सुक्खलेस्सियसु मिच्छाद्विप्य- पुष्टि जाव संब्ददासंजदा पि	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	दम्भपरायणेण क्वचिद्या, प लिशोवमस्स असंखेज्जदिमागा । यदहि पलिशोवममवहिरिदि अतो सुमुत्तण ।	४६३	१८०	उवमममम्माइहीसु अमंजदस म्माइहि-संजदमज्जदा आप ।	४७६
१७०	पमत्त अप्पमत्तसंनदा दम्भपरा- येण क्वचिद्या, संखेज्जा ।	४६	१८१	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवमत्त- कप्पायवीदिरागछदुमत्था चि द व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४७७
१७१	अपुम्भक्करणप्पहुडि जाव मज्जाणि केवलि चि ओप ।	४६५	१८२	सासणमम्माइही आप ।	४७७
१७२	मवियाणुवादेण मवमिद्विप्पसु मिच्छाइहिप्पहुडि जाव अजो गिकवन्ति चि आप ।	४७२	१८३	सम्माभिच्छाइही ओप ।	४७७
१७३	अमवमिद्विया दम्भपरायेण क वडिया, अपंता ।	४७०	१८४	मिच्छाइही आप ।	४७७
१७४	सम्मत्ताणुवादेण मम्माइहीसु असंजदसम्माइहिप्पहुडि जाव अज्जागिकवन्ति चि आप ।	४७४	१८५	सण्णियाणुवादेण मण्णासु मिच्छा- इही दम्भपरायेण केवडिया, दव्हि माट्ठिग्य ।	४८२
१७५	सुइयमम्माइहीसु यमज्जमम्मा इही आप ।	४७४	१८६	सासणमम्माइहिप्पहुडि जाव खी णकप्पायवीदिरागछदुमत्था चि ओप ।	४८२
१७६	मज्जासज्जदप्पहुडि जाव उवमत्त कप्पायवीदिरागछदुमत्था दम्भ परायेण क्वचिद्या, संखेज्जा ।	४७४	१८७	अमण्णा दम्भपरायेण क्वचिद्या, अणता ।	४८०
१७७	चउण्हिं म्वा अज्जागिकवन्ती आप ।	४७५	१८८	अवताणताहि ओमरिणि उस्स- प्पियाहि न अवहिंति क्कामण ।	४८३
१७८	सुज्जागिकेवन्ती आप ।	४७६	१८९	खुत्तेण अणताणता एगा ।	४८३
१७९	वेदगमम्माइहीसु अमंजदमम्मा- इहिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा चि आप ।	४७६	१९०	आहाणुवादेण आहारप्पसु मि च्छाइहिप्पहुडि जाव मज्जाहि- क्कवन्ति चि आप ।	४८३
			१९१	अमाहारप्पसु कम्मइयक्कायज्जाणि मेगा ।	४८४
			१९२	मज्जागिकवन्ती आप ।	४८५

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	मज्झदप्पदुडि जाय अग्गागिक्केनलि ति ओप ।	४४७	१५८	सावणसम्मद्विप्पदुडि जाय खीणकमापवीदरागछदुमग्घा ति आप ।	४५४
१४९	मामाग्घ छदायद्वारणमुद्धिसज्जदमु पमत्तमज्झदप्पदुडि जाय अवि यहिद्वारमापरायपविद्ध उव ममा गरा ति आप ।	४४७	१५९	अचस्सुदमणीसु मिच्छाद्वि प्पदुडि जाय खीणकमापवीद रागछदुमग्घा ति आप ।	४५५
१५०	परिहारमुद्धिसज्जदमु पमत्तापमत्त संज्ञा दप्पपमाणेण कप्पिया, संज्ञा ।	४४९	१६०	आहिदमणी आहिणापिमगा ।	४५५
१५१	सुद्धमसांपगद्वपमुद्धिसज्जदमु सुद्ध मसांपगद्वपमुद्धिसज्जदा उवममा गरा दप्पपमाणेण कप्पिया, आप ।	४४९	१६१	कवल्दमणी कवलणापिमगा ।	४५६
१५२	जहासमाविहारमुद्धिसज्जदमु प उद्दालं आप ।	४५१	१६२	तेस्मानुवादेण क्खिण्णस्मिय णीत्तस्मिय काउलस्मियसु मि च्छाद्विप्पदुडि जाय अमज्झद सम्माद्वि ति ओप ।	४५९
१५३	संज्जदामज्झदा दप्पपमाणेण क ट्टिया, आप ।	४५५	१६३	तेउलस्मियसु मिच्छाद्वि दप्प पमाणेण कट्टिया, ओस्मिय दवदि सादिरयं ।	४६१
१५४	अमज्झदमु मिच्छाद्विप्पदुडि जाय अमज्झदमम्मद्वि ति दप्पपमा पन कप्पिया आप ।	४५०	१६४	माणमसम्मद्विप्पदुडि जाय संज्जदामज्झदा ति ओप ।	४६२
१५५	दमजानुवादय गारुदमणीसु मिच्छाद्वि दप्पपमाणेण क ट्टिया अवेगजा ।	५३	१६५	पमत्त जप्पमत्तसज्जदा दप्पपमा णेण कट्टिया, संगज्जा ।	४६२
१५६	अगारवार्मगेज्जादि आमप्यि नि उम्मप्यिनीदि अरहिंनि वात्ता ।	४५३	१६६	पम्मत्तस्मियसु मिच्छाद्वि दप्प पमाणेण कट्टिया, सम्भिरंथि दियमिरिकगवापिमाण संगज्ज- दिमागा ।	४६२
१५७	गगगा गगगुदमणीसु मिच्छा द्वि पदमरदिणि गगगुत्तस्म संगज्जदिमागगगदिमागव ।	४५३	१६७	माणमसम्मद्विप्पदुडि जाय संज्जदामज्झदा ति आप ।	४६३
			१६८	पमत्त जप्पमत्तसज्जदा दप्पपमा णेण कट्टिया, संगज्जा ।	४६३
			१६९	गुक्कज्जस्मियसु मिच्छाद्विप्प दुडि जाय संज्जदामज्झदा ति	

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
७५	रतिविसेषेयवद्वि	३४२		७३	सत्तसहस्रतद्वि	२५१	
२१	छन्दविसेषच्छिष्य	४६		५१	सत्तादी भद्रता	९८	गो जी ६६३
२७	छन्दतरसंगुविदे	४७		७९	सत्तादी छन्दकता	४५०	
२३	आगागाधपदेसे	३३		७४	साधारणमाहारो	३३२	गो जी १९२
४३	वर्तीसमद्वयासं	९३	गो जी ६२	१६	सिद्धा गिगोद्वि	२६	ति प भादि
३७	वर्तीस सोमस वतादि	८७		१७	सुद्धो य इवदि इवदि	२७	वि मा
६१	वारस इत भद्रो य	११७		६३	सुद्धो य इवदि जाये	१३०	
१७		६०१		१८	सुद्धं तु इवदि इवदि	२८	
३९	विषद्वरसं भद्रयासं	८८		१४	सुद्धं तु इवदि जाये	१३०	
५३	वे कोदि सत्तबीसा	१००		४२	सोमसयं वद्विसे	९१	गो जी ६२७
७२	सत्त वद्व सुण्य पंथ	२६		२८	हायस्तरद्वनहाय	४७	

३ न्यायोक्त्या ।

सूचना—न्यायशास्त्रके पञ्चाश १, ३ संख्या भागसूचक और शेष संख्याएँ पृष्ठसूचक हैं ।

भाग पृष्ठ

भाग पृष्ठ

१ भूमिरेव माणयकोऽभिः ।	१ २८	१६ भूतपूर्वगतिम्यापसमाभ्यपजात् ।	१ २६३
२ कञ्जायत्तादो कारणप्यापत्त		१७ भूतपूर्वगति ।	१ १६६
मधुमाभिजाति ।	१, २१९	१८ भूतपूर्वगति ।	१ १६९
३ कारणकम्माशुसारी कञ्जकम्पो ।	१ २१८	१९ भूतपूर्वगतिप्याप ।	१ २६५
४ कारणपरमस्य कार्यानुवृत्ति ।	१ २३७	२० यद्येह्यस्तथा निर्वेधा ।	१ १६१
५ कारणानुकर्य कार्यम् ।	१ २७०	२१ यद्येह्यस्तथा न जानाति ततोऽ	
६ अथा उहसो तदा भिदेसो ।	३, १० ३१३ ३१५	स्वेनापि द्वायेन वापयितव्यः ।	१, ३३
७ अ पृष्ठे मण्यव्यप्यपीय त पुत्र		२२ कथितमा भ्युत्पत्तिः ।	१ १४०
मेघ माधियव्य ।	३ २७-१३०	२३ वस्तुमामाणप्याप्यनमामा	१ ७२ १९३
८ वशीकोतोन्माय ।	१ १८	पयम् ।	३ ११
९ नहि प्रमाणं प्रमाणास्तरमपेक्षते	१ २०४	२४ व्याख्याततो विशेषप्रतिपत्तिः ।	३, १८
१० न हि स्वमाणाः परपर्यनु		सति समये अप्रमाणे न	
योगार्हाः ।	१, २९६	विशेषणमर्थवद्भवति ।	१ १८१
११ नायमस्तर्कगोचरा ।	१ ३०४	२५ सम्प्रकाशमवद्विद्वत्सीय वया	
१२ पमावेय पमाणाविरोहिजा		पुत्तारिया आपण द्वोद्वय ।	३ १२०
द्वोद्वय ।	१, २१७	२६ सामान्यचोदनाय विशेषेण	
१३ परिशेषव्याप	१, ४२१ ७	तिष्ठत्ये ।	१, १४०
१४ प्रतिपाद्यस्य बुभुक्षितार्थविषय		२७ सिद्धासिद्धाभ्यां हि कथामार्गः ।	१ ३४९
निर्वयोत्पादने वस्तुव्यवसा		२८ सेते संभवे विपक्षिचारे न विसे-	
कम्पम् ।	१, ९३२	सत्यमर्थवर्तं भवति ।	१, २६२ ३३१
१५ भाविनि भूतवत् (उपचारः)	१ १८१	२९ सुपरिष्का विषयविशुद्धकता ।	१, ७०

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
७१	रासिभिसेसेयवद्विह	३४२		७३	सत्तसहस्रसहस्रीदेहि	२ १	
७६	सहस्रिसेसच्छिन्नं	४३		७४	सत्तादी अदुता	९८ गो जी १६३	
७७	सदतरसगुणिये	४७		७९	सत्तादी छकृता	४०	
८३	आपागासपदेसे	३३		७७	साह्यारणमाहारो	३३२ गो जी १९२	
४३	बलीसमद्वारक	९३ गो जी ६२		८६	सिद्धा गिगोद्विषा	२६ ति प म्यादि	
१७	बलीस सीसस बलादि	८७		१७	सुद्धो य इयदि इयदि	२७ वि मा	
१९	वारस इत मठेय प	१६७		६३	सुद्धो य इयदि आयदे	१३०	
१७		६०१		१८	सुद्धं तु इयदि इयदि	२८	
१९	सिद्धसह महपाठ	८८		१४	सुद्धं तु इयदि आयदे	१३०	
५३	ब कोहि सत्तबीता	१००		४२	सीससर्प बजबीस	९१ गो जी १२७	
४२	सत्त पय सुण्ण पय	२ १		२८	हारततहनहारा	४७	

३ न्यायोक्तियां ।

सूचना—न्यायशास्त्रके पश्चात् १, ३ सम्म्या मागसूचक और शेष सम्म्याए पृष्ठसूचक हैं ।

	माग पृष्ठ		माग पृष्ठ
१ अग्निवि मायबकोऽग्निः ।	१ २८	१३ मृतपूर्वगीतिम्यापसमाभयप्ताद् ।	१ २६३
२ कञ्जवाजचाहो अरण्यवाजस्य मधुमाषिज्जदि ।	१, २१९	१७ मृतपूर्वगति ।	१ १६६
३ अरण्यकमापुसारी कञ्जकमो ।	१, २१८	१८ मृतपूर्वगति ।	१, १२९
४ अरण्यमर्मस्य कार्यामुद्गतिः ।	१ २३७	१९ मृतपूर्वगति ।	१ २१
५ अरण्यलुप्य कर्ष्यम् ।	१ २७०	२० यथोद्धारतया निर्वेष्टाः ।	१, १६१
६ अहा उहो लहा निहेसो ।	३ १० ३१३ ३११	२१ यथेकहाप्येन न जानाति ततोऽन्येनापि शब्देन आपयितव्यः ।	१ ३२
७ अ बृह मन्त्रयस्त्रणीयं तं पुत्रं मेय मापियन् ।	३ २७ १३०	२२ रुद्धितश्चा म्युत्पत्तिः ।	१ १४०
८ अर्हाकोलेम्याप ।	१, १८०	२३ तन्मुद्रामापयाह्वनप्रामा पम् ।	१ ७२ १९६
९ अदि प्रमाण प्रमाणांतरमपेक्षते	१ २०४	२४ व्याख्याततो विशेषप्रतिपत्तिः ।	३, १८
१० अ दि स्वमाधाः परपरानु योपाहाः ।	१ २९६	सति समर्थ वृत्तिधारे च विशेषप्रमाणवद्भवति ।	१, १८१
११ आपमस्तर्कगोचरः ।	१, ३०४	२५ सम्प्रकाशमवादिष्टसीय मया पुसारिणा मापय होवन् ।	३ १२०
१२ पमापेय पमाणाविरोहिणा होवन् ।	१, २१७	२६ सामान्यमोद्भास्य विशेषेण तिष्ठन्ते ।	१, १४०
१३ परिहोम्याय	१, ४२ १५७	२७ सिद्धासिद्धाभवादि कथामार्गाः ।	१ ३४९
१४ अतिपायस्य बुधुमिस्तायविषय निर्वयोत्पादनं वस्तुबधसः कम् ।	१ ९२३	२८ सते संमथे विपदिधारे च विसे- सप्रमाणवत् भवति ।	१, २९२ ३३१
१५ भाषिभि मृतयत् (अपचार)	१, १८१	२९ सुपरिक्ला द्विपदिभ्युरकृता ।	१, ७०

२ अवतरण-गाथा सूची ।

क्रम सूचना	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम सूचना	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
३४ मनुष्यसदृशत्वा		३१	गो जी ५ १	८	पाम हुबवा बुधियं मध	११	
४८ मोक्षसपसहस्रा ननु		११	गो जी १२९	५७	पाम हुबवा बुधियं मध	१२३	
४९ मोक्ष सपसहस्रा नव		१७		४१	तिगहिय-सह जववड्डी	९	गो जी १२५
१५ मनुस्स जज्जसस्स प		३१	गो जी टीका	३१	तिग्घि सइस्सा सत्त प	११	मनु भावि
			भावि	४५	तिसहिं वरुति वेई	१४	गो जी १२९
१२ जवगपधिवारवड्		१७		७०	तेरह कोडी देसे वाव	२५४	गो जी १४२
५९ मपपपधिवारवड्		१२१		१९	तेरह कोडी देसे पण्णा	२५२	
१ मरसमरुवमार्गं		२	प्रवच भावि	१८	तेरह कोडी देसे वाव	१५२	गो जी १४२
२९ मवववज्जसिगुणिसो		४८		१९	धम्मपम्मपामासा	२९	
२४ जवहारवड्ढिका		४१		१९	धम्मपम्मपामा खोगा	१२९	
२५ जवहारविसेसेव प		४१		३	नयापववैखम्भानां	५	मा मी १ ७
१० मागमो ज्ञाप्यवचन		१२	मनु टीका	५	नागारमताममज्जहत्तरेक	१	मुक्त्यनु ५
३३ जववलि नसंजसमया		१९	गो जी ५७४	३	पक्खेवत्तसिगुणिसो	४९	
७७ जववलिमत्त वगो		३५९		१८	पवड्डी व सइस्सा	८८	
४४ वत्तवड्ढियपपजे		९४		२२	पत्थेय कोह्वेज व	३३	
४७ पक्खेककगुवड्ढये		९९		२०	पयो तिहा विहलो	२९	
४	पपवियमिमे जे		१ गो जी भावि	१५	पल्लो सापर-सुह	१३२	त्रि. सा ९२
२१ ज्ञप्पो तिहा विहलो		२९		२	पुड्डी जज्ज व छापा	३	गो जी भावि
७१ गपजहुववकसाया		२२५		९	पूर्वापरविहवादे	१२	
४१ जइवत्ततिग्घिसय		९४		१८		१२३	
५२ जइवत्त छव्व सया		९९		४०	पक्खसय बारसुत्तर	८८	
५१ छक्करी छक्कंठा		१ १		५४	पक्खसयसइस्सा- वज	१००	
७८ जगसेहीय वगो		३५९		५५	पक्खेव सवसइस्सा ते	१ १	
१० जत्थ जहा ज्ञायेरओ		१२१		१४	प्रमाणनयनिसेरै	१७	
१३ जत्थ वड्ढ ज्ञायेरओ		१७		३१		१२१	
३१ जे ज्ञिया मपहारे		४९		७	वहिरयो वड्ढीहि	७	
३९ जे ऊणा मपहारे		४९		१	वड्ढीछप्पवीमामो	१	
१५ जामं प्रमाप्पमित्थड्		१८	छपीय १ २.	७१	वीजे ओप्पीमूरे	३४८	
५० जव जेव सपसहस्रा		१७		११	रागाहा जेपाहा मोहाहा	१२	

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
७१	राशिचित्तैस्तेष्वपिद्वि	३४२		७३	सत्तसहस्रस्तद्विद्वि	२६	
२६	कञ्जचित्तैस्तद्विद्वि	४६		५१	सत्ताही अमुता	९८	गो जी १६३
२७	कञ्जतरसंगुणिदे	४७		७९	सत्ताही छत्तकटा	४०	
२८	कामामासपदेस	३३		७३	साधारणमाहारो	३३२	गो जी १९२
४३	वर्त्तिसमद्विद्वि	९३	गो जी ६२४	१६	सिद्धा पिगोद्वि	२६	ति प भादि
१७	वर्त्तिस सौख्य अतारि	८७		१७	सुदुमो य द्ववि	१७	वि मा
१६	वारस दस अद्वि य	१६७		६३	सुदुमो य द्ववि	आपदे १३०	
१७		१०१		१८	सुदुमं तु द्ववि	द्ववि २८	
११	विसद्वरस अद्विद्वि	८८		६४	सुदुमं तु द्ववि	आपदे १३०	
५३	वे वेदे सत्तवीला	१००		४२	साखमय कञ्जवीस	९१	गो जी १२७
५२	सत्त वय सुवज वय	२५६		२८	द्वारान्तद्विद्वि	४७	

३ न्यायोक्तिया ।

वृत्तना—न्यायशास्त्रके पञ्चाद १, १ सन्ध्या मागसूत्रक और शेष सन्ध्या पृष्ठसूत्रक हैं ।

माग पृष्ठ	माग पृष्ठ
१ अग्निर्वि मायवद्विद्वि । १ २८	१६ मृतपूर्वगतिन्यायसमाधायनात् । १ २६३
२ कञ्जव्याप्यादो कारव्याप्यत मनुगापिद्वि । १ २१९	१७ मृतपूर्वगति । १ १६६
३ कारव्यव्यमायुवारी कञ्जकमो । १ २१८	१८ मृतपूर्वगति । १ १२९
४ कारव्यव्यमस्य कार्यानुवृत्तिः । १ २३७	१९ मृतपूर्वगति । १ २५
५ कारव्यानुकर्ष कार्यम् । १ २७०	२० यथोद्देशाद्विद्वि निर्विद्वि । १ १६१
६ अत्र उद्देशो तत्र निर्विद्वि । ३ १०-३१३ ३१	२१ यथोद्देशाद्वि न ज्ञानाति ततोऽ- व्येनापि शब्देन आपयितव्यः । १ ३२
७ अ पृष्ठे अण्वण्वणीय तं पुनर- मेव मापयितव्य । ३ १७ १३०	२२ कश्चित्कञ्ज व्युत्पत्तिः । १ १४०
८ वरीकोपोत्पत्त्या । १ १८०	२३ वस्तुमामाग्याद्विद्विद्विमा पमम् । ३, ११
९ अग्निमाम प्रमाप्यान्तरमवेद्वि १ २०४	२४ व्याप्यागतो विद्विद्विद्विद्वि । ३, १८
१० अ वि स्वमायाः परपर्यन्तु व्याप्याः । १, २९६	सति समवे व्यभिचारे च विशेषजमर्थवद्विद्वि । १ १८५
११ कामास्तर्कतोत्पत्त्या । १, ३०४	२५ सत्त्वकात्मवद्विद्विद्विद्विद्वि जुसारिणा आपय द्वावद्वि । ३ १२०
१२ पमापेय पमाप्याविरोहिणा द्विद्वि । १ २१७	२६ सामान्यवद्विद्विद्विद्वि विद्विद्वि । १, १४०
१३ विरोधन्याय । १, ४२ १५७	२७ सिद्धासिद्धाद्विद्विद्विद्वि विद्विद्वि । १ १४९
१४ अग्निप्राप्त्य वृत्तिस्तार्क्यविषय निर्विद्विद्विद्विद्विद्विद्वि पमम् । १ २२२	२८ सत्ते संमवे विद्विद्विद्विद्वि सत्त्वमत्त्ववर्त मवद्वि । १, ३०६ ३३१
१५ अग्निमि मृतवत् (अप्यारः) । १, १८१	२९ सुपरिद्विद्विद्विद्विद्विद्वि । १, ७०

२ अवतरण

क्रम संख्या गद्यांश पृष्ठ नम्बर

३४ भट्टजीसद्व्यवस्था	३९ गो जी
४८ भट्टजी सपसहस्ता भट्ट	९९ गो जी
४९ भट्टजी सपसहस्ता बब	९७
३५ भट्टजी सपसहस्ता प	३९ गो जी
	व्यादि
१२ भवपयविचारबट्ट	१७
५९ भवपयविचारबट्ट	१२९
१ भरसमकबमार्ग	२ प्रथम
२९ भवपयवसिगुमिश्री	४८
५४ भवहारबट्टिका	४९
२५ भवहारविसेसेन प	४९
१० व्यापमो व्याप्तबब	१२ अनु
३३ व्यापके भवसममया	३५ गो
७७ व्यापकियत् बमो	३५५
४४ वसतवकहपमपडे	९४
४७ एककेनकगुबमपडे	९५
४ वसतवविमिमि जे	३ गो अ
२१ बमो विहा विहलो	२९
७१ वसतवकहपमपडे	२५५
४९ वसतवकहपमपडे	९४
५२ वसतवकहपमपडे	९९
५९ वसतवकहपमपडे	११
७८ वसतवकहपमपडे	३५५
१ वसतवकहपमपडे	१२९
१३ वसतवकहपमपडे	१७
३१ जे वसतवकहपमपडे	४९
३२ जे वसतवकहपमपडे	४९
१५ वसतवकहपमपडे	१८ वसतव
५० वसतवकहपमपडे	९७

देवीभ्यो संक्षेपगुणामो । पश्चिद्विपतिरिन्नजोषिणीभ्यो संक्षेपगुणामो । बाण
बैतवेवा संक्षेपगुणामो । देवीभ्यो संक्षेपगुणामो । जोरसिपदेवा संक्षेपगुणामो ।
देवीभ्यो संक्षेपगुणामो' ति एवमादौ गुणव्युत्पादो जायिग्रेह आह इषाम्
संक्षेपभागा देवीभ्यो ह्येति ।

३ ४१४

३ २७९

४ गुणव्युत्पादो वि मण्यपादपण्यपिक्कमसूर्यो पादोक्तमादौ वा ।
१ गुणव्युत्पादसंहारजीवमण्यस्त मिच्छाहृदिचिन्तमसूर्य सामण्यविन्तम
सुखिसमाप्यपिरोह । एष गुणव्युत्पादो गुणसम्यग्महारकाया जीवमण्ये
साक्षिरेषा वक्तव्या ।

३ २७९

३ अथसेनिदमण्युत्तरासिपदव्युत्पादो गुणं गुणव्युत्पादो माग्यव्युत्पादो एवमस्य
वक्तव्यम् ।

३ २४९

७ सपदि गुणव्युत्पादेण सामण्येण जीवपमाप्यपदव्युत्पादो विन्तमसूर्यो
××× इति एसा गुणव्युत्पादो ××× गुणव्युत्पादो उक्ता ××× गुणव्युत्पादो गुणा ××× ।
तन्मा एष गुणव्युत्पादमसूर्यो कृत्वा इति गुणव्युत्पादविन्तमसूर्यो वा अथि
पादि होरव्यमिदि शोधो मण्यि । एष परिहाये वक्तव्य । जीवमण्युत्पादविन्तम-
सूर्यो संपुण्यामो गुणव्युत्पादो गुणविन्तमसूर्यो साधियामो ।

३ २७४

८ गुणव्युत्पादो गुणविन्तमसूर्यो संपुण्यामो किण्व ह्येति ? ××× अहवा
एष गुणविन्तमसूर्यो वेत्तव्यामो गुणव्युत्पादो गुणविन्तमसूर्यो संपुण्यामो ।

३ २७

५ जीवमण्य

१ जीवमण्यमिच्छाहृदिचिन्तमसूर्यो वि गुणव्युत्पादमण्यपिक्कमसूर्यो
पतेन समानो ।

३ २७९

२ एष पुन जीवमण्यमिच्छाहृदिचिन्तमसूर्यो मण्यपमाप्यपदव्युत्पादो जीवमण्ये
मण्यपिदेरसगुणमण्यमेतेष अथमण्यपराणि होरव्यमिदि ।

३ २१०

३ एष वि जीवमण्ये ×× गुणव्युत्पादो ।

३ २७८

६ तत्त्वार्थमाप्य

१ उक्तं च तत्त्वार्थमाप्ये—उपपादो अम्य प्रयोजनमेवां त इमे भीषपादिता ।

३ १०३

७ तत्त्वार्थमप्य

१ वनस्पत्यन्तानामेकम् इति तत्त्वार्थमाप्य ।

३ २३९

२ इमिपिपीठिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृत्तामि इति अस्यात्तत्त्वार्थमाप्य ।

३ २५८

८ तिलोपपण्यत्ती

१ गुण-गुणो वृत्तगो विरतये तिरियसोये ति तिलोपपण्यत्तिसुत्पादो ।

३ ३९

२ जोरसिपमहाहृतसुत्पादो अहवाहृदिचिन्तमसूर्यपतिमोपपण्यत्तिसुत्पादो च ।

३ ३६

४ अन्योलेश्व ।

भाग पृष्ठ

१ अप्पाबहुग सुच

- १ 'अवसमसम्माह्वा' योवा । अवसमसम्माह्वा असखेज्जगुणा । वेवसमसम्माह्वा असखेज्जगुणा । सि अप्पाबहुगसुत्ताहो जव्वह । १ ३८
- २ तेरियमपग्गत्तासीहो अररियपरासी भिसेसहीणा । सि सुत्तमप्पाबहुग सुत्ताहो । ××× एह पि अप्पाबहुगसुत्ताहो वेव वप्पहे । १ ३२१
- ३ सम्पत्तोवा अहुसयवेदमसंज्जसम्माह्वाहो । इत्थिबदमसंज्जसम्माह्वाहो असखेज्जगुणा । पुरिसवेदमसंज्जसम्माह्वाहो असखेज्जगुणा इदि अप्पाबहुग सुत्ताहो अरवहस योपत्तण आभिरज्जे । १ २३१
- ४ मज्झहा अप्पाबहुगसुत्तेय सह बिरोहाहो । १ २७३

२ कमायपाहुड, पाहुडसुच

- १ कसात्तपाहुडवपसो पुव महुवसाएसु जीयेसु पच्छा अंतोसुत्तुत्त गंतुण सोकस कम्ममि अविज्जति सि । १ २१७
- २ अररियकहिपारं ×× कसायपाहुडार्ण । १ २२१
- ३ अपत्तरं पच्छहो प मिच्छत्तं इदि मजेय पाहुडसुत्तेय सह बिरोहाहो । २ १९९

३ क्खल्लूत्र (क्खल्लुपोग)

- १ काळसूत्रेय सह बिरोधः किं भवेदिति अथ तत्र सुपोपशमस्य प्राधान्यात् । १ १४२
- २ यो एवमो बुद्धिसज्जत्तासीमो सांततामो इवति । ज व एव कासापिभोये पवासिं पित्तत्तुवसंमारो । १ ४४८

४ सुत्तार्थ

- १ पंथिदियसिरिक्खओभिणीहिता वाणवेंतरवेवा संखेज्जगुणा तत्तेव देवीमो संखेज्जगुणामो पग्गहाहो सुत्तार्थसुत्ताहो आपिग्गहे । १ २३१
- २ मज्झसर्पाय मज्झसोहि कं पत्तिवत्तयहि सेही अवहिरवि अंगुळवम्ममूळ तत्तिवत्तममूळमिग्गहे इदि सुत्तार्थसुत्ताहो । १ २४९
- ३ ईसायकप्पवासिपदेवायमुवति तम्हि वेव देवीमो संखेज्जगुणामो । तहो सेवम्मकप्पवासिपदेवा संखेज्जगुणा । तम्हि वेव देवीमो संखेज्जगुणामो । पवमाय पुववीय वेत्ताया अवहियज्जगुणा । मवववासिपदेवा असंखेज्जगुणा ।

१२ विवाहपण्णति

१ सोगो यावपक्षिद्विदो ति विवाहपण्णत्तीयपणादो ।

३ ३५

१३ बेयणामुत्त, वेदनाक्षेत्रविधान

१ ओ मच्छो ओयणसहसिसो सयभूरमणसमुहस्त बाहिरित्तप तडे बेयण
समुग्गापण समुहदो काउसेहिसपाए छगो ति पदेण वेयणासुतेण सह विरोहो ३ ३७

२ तत्कुतोऽयसीयत् इति चेद्वेदनाक्षेत्रविधानसूत्रात् । तद्यथा । १ २ १

३ य, बाहरेहद्वियभोगाहणादो सुद्धमेहद्वियभोगाहणाए बेयणलेत्तविहाणादो
बहुत्तोवसमा । ३ ३३०

४ सुद्धमेहद्वियभोगाहणादो बाहरेहद्वियभोगाहणाए बेयणलेत्तविहाणसुत्तादो
योपत्तुवसमा । ३ ३३१

१४ सम्मतिद्वय

१ जामं ठवणा वधिप ति एस वप्पट्टियस्त पिक्खेपो ।

२ मावो तु पउज्जयट्टियपरुवणा एस परमत्थो ।

३ मजेव सम्मत्तुतेण सह कपमिद् वक्कानं न विहरउदे । १ ११

१५ संतकम्मपाहुड

१ एतं काळण × × × सोळस पयसीभो खवेदि । तदो मंतोमुद्धत्त गतुण पय
फलाणापयक्खणावरणकोप-भाण माया-भोमे मज्जेण खवेदि । एतो सतकम्म १ २१७

२ पाहुडउयसो

३ भारियकट्टियाण संतकम्म-कसायपाहुडायं १ २२१

१६ मंतमुत्त (परुवणा)

१ भवउज्जत्तकाले पंक्तिद्वियपाण्णमत्थित्तपउज्जापणसत्तसुत्तईसणादो २ १ ८

९ परियम्म

१ अग्निं अग्निं भयतापतयं मग्निगच्छति तग्निं तग्निं अन्नहन्मनुजस्समर्जता-
मंतस्तेष गृह्यं इति परियम्मवचनात् । १ १९

२ अन्नहन्मनर्जतापतयं मग्निगच्छमात्रे अन्नहन्मनर्जतापतस्स हेहिमवमाज्जापेहिंतो
इति भयतगुणवमाज्जापि यंतूय सप्यजीवरासिबमसकाया इत्यग्निं' ति
परिबस्मे भुंते । १ २४

३ अ वा तद्विषयारमग्निगृह्यमग्निगृहासिबमसकायाभ्यो हेहिमवमाज्जापेहिंतो
इति परियम्मवत्तमर्जतगुणवमाज्जापि यंतूयप्यजाभ्यो । १ २४

४ अर्जतापतविसय अन्नहन्मनमुक्कस्समर्जतापतयेव गुणगारेण भ्रामहारेण
वि होष्यं इति परियम्मवचनात् । १ २५

५ अतिपाणि इति सामरक्यापि अंतूवीवछेदकापि वा इवाहिपाणि' ति परि-
यम्मसुत्तय सह विद्वद्भ्यः । १ ३१

६ अंतं तं गण्यजासंखेय्यं त परियमे भुंते । १ २९

७ 'अग्निं अग्निं असंखेय्यासंखेय्यं मग्निगच्छति तग्निं तग्निं अन्नहन्मनु-
जस्समर्जतासंखेय्यस्तेष गृह्यं मयि' इति परियम्मवचनात् । १ १२७

८ 'अनुकृतं मग्निगच्छमात्रे मग्निगच्छमात्रे असंखेय्यापि वम्यजापि यंतूय सोह-
म्रीसाप्यविषयमसूर्यं इत्यग्निं । सा सह मग्निना येरप्यविषयमसूर्यं इति । सा
सर्ग मग्निना मय्यवासिपविषयमसूर्यं इति । सा सार्ग मग्निना मय्यमुषो इति
ति परियम्मवचनात् । १ १३४

९ पश्चात्तं अन्नहारकालपरकृपयाहासुत्तयो वा परियम्ममप्यातो वा अग्निज्जे । १ २०१

१० परियम्मातो असंखेय्याभ्यो ज्ञोषणकोहीभ्यो सेहीय वमाजमवगमिदि के
न पश्यत सुत्तस्स वडेण परियम्मपुत्तीतो । १ २३३

११ परियम्मवचनात् । १ ३३७

१२ परियम्मवचनात् । १ ३३८

१३ अ वा परियम्मेण सह विरोधो तस्स तदुद्देशयतुप्यावधे वाचापतो । १ ३३८

१४ अ परियम्मवो वगत्तसिद्धी तस्स तेदककाइपमन्नहन्मनुजपदि अयेवति
वचनात् । १ ३३९

१० पिडिपा

उत्त वा पिडिपा—

१ हेस्ता य इत्य मार्गं कर्मं भोक्कम्ममित्तयं इत्थं ।

जीवरत भावहेस्ता परिणामो कप्यो जो जो ॥ २ ७८८

११ वर्गजापुत्र

१ कथमेतद्वचगम्यते ? वर्गजापुत्रान् । किं तद्वर्गजापुत्रमिति केतुप्यते १ २९०

१२ त्रियाहपणति

१ लोगो पाहपदिद्विहो ति त्रियाहपणतीवयणाहो ।

१ १५

१३ वेयणासुच, वेदनाद्यैश्वरिभान

१ ओ मच्छो ओयणसहस्सिभो सयभूरमणसमुदस्स बाहिरिस्सुण तटे वेयण समुग्घापण समुद्वो कउच्छेहिसयाप मग्गो ति पदेय वेयणासुत्तेण सह विरोहो

१ १७

२ तत्तुतोऽवसीयत्त इति वेद्वेदनाद्यैश्वरिभानसुत्तान् । तयया ।

१ २१

३ ण बादेरैद्वियभोगाहणाहो सुद्धमेरैद्वियभोगाहणाप वेद्वणत्तेत्तपिहाणत्तो बहुतोपलभा ।

१ ३३०

४ सुद्धमेरैद्वियभोगाहणाहो बादेरैद्वियभोगाहणाप वेद्वणत्तेत्तपिहाणत्तुत्ताहो योयत्तुपलभा ।

१ ३३१

१४ समतिघ्न

१ णाम ठयणा द्धिपि ति एस दध्यद्वियस्स पिक्खेयो ।

२ भावो तु परज्जघद्वियपरुयणा एस परमत्थो ।

३ भवेण सममहसुत्तेण सह कथमिद् पणत्तानं ण विद्वग्गदे ?

१ ११

१५ संतकम्मपाहुड

१ एवं काळण × × × सांखस पयसीभो न्वेदि । ततो भतोमुद्धत्तं गत्तुण पय पत्ताणापयक्कन्नायापरत्तकोध-भाण माया-मोमे मयमण न्वेदि । एसो सनकम्म

१ २१७

२ पाहुडवयसो

३ माहिरियक्कद्वियाण सनकम्म-वसायपाहुडाने

१ २२१

१६ संतमुत्त (परुपणा)

१ भपउज्जत्तकाळे संघिद्वियपाप्पाणमत्तिपत्तपुप्पापणसंगमुत्तईतणाहो

१ २६८

५ परिभाषिक शब्दसूची ।

सूचना— जो शब्द प्रथमे अनेकवार आये हैं उनके प्रायः प्रथम एक दो पृष्ठोंक ही यहाँ दिये गये हैं ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अप्रदेशिक	३
अञ्जीवद्रव्य	२	अप्रदेशिकप्रत्यय	१२४
अतीतप्रत्यय	२९	अप्रदेशिकप्रत्ययसंख्यात	१५, १६
अधर्मद्रव्य	३	अरुपी अञ्जीवद्रव्य	२, ३
अपस्तम्बिकप्रत्यय	५२, ७४	अर्थच्छेद	२१
अभिप्राय	३९	अर्थच्छेदशब्दाञ्ज	३३५
अपस्तम्बिकप्रत्यय	१९५, १७९	अर्थपुत्रछपरिवर्तनकाळ	२६, २६७
अनागत	११, १२, १५	अप्यबहुत्व	११४, २०८
	२१७, २२८	अवसर्पिणी	१८
अनागतगुण	२२, २९	अवहार	४६, ४७, ४८
अनागतगुणहीन	११, २१, २२	अवहारकाळ	१६४, १६७
अनागतप्रत्यय	१८, १९	अवहारकाळप्रयोगशब्दाञ्ज	१९५, १९६, १७७
अनागतप्रदेशिक	३	अवहारकाळशब्दाञ्ज	१६५
असंख्येयप्रदेशिक	२	अवहारविशेष	४६
अनागतिप्रमाण	११, ३२	अवहारार्थ	८७
अनागत (अक्ष)	२९	अप्यपीमावसमाप्त	७
अनागतप्रत्यय	२९	अप्रकृपपारा (अनागत)	५७
अनुगम	८	असंप्रत्यय	१२१
अनुमुक्ति	६७, ७०	असंप्रत्ययसंख्यात	१२७
अन्वेष्यगुणशब्दाञ्ज	३३४	असंख्येयगुण	१८, १८
अन्वेष्यगुणप्रत्यय	२०, ११५, १९९	असंख्येयगुणहीन	२१
अपवर्णन (अक्ष)	४८	असंख्येयप्रदेशिक	३८
अपवर्ण	४९	असंख्येयप्रमाण	३३, ३८
अपवर्णन	३३१	आ	
अपवर्णनप्रमाण	९२	आचार्यद्रव्य	३
अपवर्णन	४२		

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
आगम	१२, १२३	कालद्रव्य	३
आगमद्रव्यान्वय	१२	कालमायप्रमाण	३०
आगमद्रव्यासंख्यात	१२३	कृतयुगादाशि	२४९
आगममाधानम्	१२३	क्षेत्रमात्रप्रमाण	३९
आगममात्रासंख्यात	१२५	क्षेत्राच्छेदी	२११
आदि (घन)	०१ ९३ ९४	ख	
आदेश	१, १०	खडित	१९, ४१, ७१
आप्त	१२	ग	
आयाम	१०९ १०, १४५	गणनामन्त	१५, १८
आवहिका	३ ३७	गणनासरपात	१४४, १२६
इ		गृहीत	५४ ५७
इच्छा (राशि)	१८७ १९० १९१	गृहीतगुणाकार	५४, ६१
उ		गृहीतगृहीत	५४, ५९
उच्छ्रित	१५, ६६, ६७	घ	
उत्तर (घन)	०१ ०३, ९४	घनपक्ष	८० ८१
उत्तरपक्षिपक्षी	९४ ९९	घनांगुल	१३२, १३९
उत्सर्पिणी	१८	घनाघनधारा	५३ ५८
उपरिमपग	२१, २२, ५२	घ	
उपरिमधिकरूप	५४ ७७	चतुष्कटेश	७८
उपरिमधिकरण	१६ १७०	छ	
उपपादम्	१२	छत्रद्रव्यमक्षितराशि	१०, ६६, १२९
उपवासंख्यात	१५	ज	
ए		जगमत्तर	१३२, १४२
एकान्त	१६	जघन्य भनन्तान्त	२१
एकासंख्यात	१५५	जघन्य परीमान्त	२१
आ		जगभषी	१३ १४२, १७७
ओपनिर्देश	१ ०	जाति	२५०
ओज (राशि)	२४०	जातिरमरण	११७
क		जिघ्रक्ष्य	२
कमधारपसमास	७	जघ्नीय	
कलिओजराशि	२४९	जायकापीन्द्रव्यान्वय	१३
कल्पकाम	१३१ १५०	जायकापीन्द्रव्यासंख्यात	१२३
कारण	४३ ७२	न	
		तपुद्वयमाम	७

५ परिभाषिक शब्दसूची ।

ध्यान— जो शब्द यहाँ अनेकवार आये हैं उनके प्रायः प्रथम एक दा पृष्ठक ही यहाँ दिये गये हैं ।

संख्या	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
		अ	
अग्नीवद्भ्य	२	अग्रशिक्ष	३
अतीतमस्य	२९	अग्रशिक्षालम्ब	१२४
अधर्मद्रव्य	३	अग्रशिक्षसंभ्यात	१ १३
अधस्तबधिस्य	५२, ७४	अक्षयी अग्नीवद्भ्य	२, ३
अधिगम	३९	अध्वेज	०१
अधस्तनविरक्षण	१३५, १७९	अध्वेजशाखा	३३५
अलम्ब	११, १२, १५	अध्वेजपरिवर्तनका	२३, २३७
अलम्बगुण	२१७, २३८	अध्वेज	११४, २०८
अलम्बगुणहीन	२२ २९	अध्वेजिणी	१८
अलम्बावन्त	१८, १९	अध्वेज	४३ ४७ ४८
अलम्बध्वेजिक	३	अध्वेजका	१३४, १३७
अलम्बध्वेजिक	२	अध्वेजकाक्रमोपगमका	१३५, १३९, १७१
अलम्बिमया	३१ ३२	अध्वेजकाशाखा	१३५
अवापत (अक्ष)	२९	अध्वेजध्वेज	४३
अवापतमस्य	२९	अध्वेजध्वेज	८७
अनुगम	८	अध्वेजध्वेज	७
अनुगम	१७, ७०	अध्वेजध्वेज (अक्ष)	५७
अनुगमगुणकारका	३३४	अध्वेजध्वेज	१२१
अनुगमगुणकारका	२० ११५, १२९	अध्वेजध्वेजध्वेज	१२७
अनुगमगुणकारका	४८	अध्वेजध्वेजध्वेज	२१, ३८
अनुगमगुणकारका	४९	अध्वेजध्वेजध्वेज	३१
अनुगमगुणकारका	३३१	अध्वेजध्वेजध्वेज	३८
अनुगमगुणकारका	९२	अध्वेजध्वेजध्वेज	३३ ३८
अनुगमगुणकारका	४३	अध्वेजध्वेजध्वेज	३
		आ	

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
आगम	१२, १२३	काष्ठद्रव्य	३
आगमद्रव्यान्त	१२	काष्ठमाषप्रमाण	३०
आगमद्रव्यासख्यात	१२३	कृतयुगपति	२४९
आगममाषान्त	१२३	क्षेत्रमाषप्रमाण	३९
आगममाषासख्यात	१२५	कोटाकोटी	२५५
आदि (घन)	९१ ९३ ९४	ख	
आदिष्ट	१ १०	खटित	३०, ४१, ७१
आप्त	१२	ग	
आपाम	१०९ २०, २४५	गणनामन्त	१५, १८
आपसिद्धा	३, ६७	गणनासख्यात	१५४ १२३
		गृहीत	५४ ५७
इच्छा (राशि)	१८७ १९० १९१	गृहीतगुणाकार	५४, ६१
		गृहीतगृहीत	५४ ५९
उच्चमस	३५ ६६, ६७	घ	
उत्तर (घन)	९१ ९३, ९४	घनपदम्	८० ८१
उत्तरपश्चिमी	९४ ९९	घनांशुल	१३२, १३९
उत्तरपिण्डी	१८	घनाघनपाग	५३, ५८
उपरिमवर्ग	२१ २२, ५२	घ	
उपरिमविकल्प	५४ ७७	घनगुणित	७८
उपरिमविरसन	१३ १७९	छ	
उभयान्त	१३	छद्मद्रव्यप्रक्षिप्तपाशि	१०, ६६, १२९
उभयान्तख्यात	१५	ज	
		जगप्रतर	१३२, १४२
एकान्त	१६	जघम्य घनस्थान्त	२१
एकान्तख्यात	१६	जघम्य परीक्षान्त	२१
		जगध्वी	१३ १४३, १७७
ओ		जाति	२५०
ओषधिर्युक्त	१ ९	जातिस्मरण	१५७
ओष (राशि)	२४९	जीवद्रव्य	२
		जम्बूद्वीप	
		जायकगरीरद्रव्यान्त	१३
अभ्याससमाप्त	७	जायकगरीरद्रव्यासख्यात	१३३
अक्षिभोमराशि	२४९	न	
अक्षयकाल	१३१ ३५०	न	
आरम्भ	४३ ७२	तत्पुष्पमाम	७

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
तद्व्यतिरिक्तकमान्त	१६	मिगोद्वीष	३५७
तद्व्यतिरिक्तकमासंपात	१२४	मिशेष	१७
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्त	१५	मिरादि	५१ ७३
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात	१२४	मिर्वेश	१ ८ ९
तद्व्यतिरिक्तनो कमान्त	१५	मोमागम	१३ १२३
तद्व्यतिरिक्तनो कमासंख्यात	१२४	मोम्यागमद्रव्यानन्त	१२
तेजोवरादि	७४९	मोमापमद्रव्यासंख्यात	१२३
त्रिकच्छेद	७८	मोमागममात्रान्त	१६
त्रैराधिक	१ १ १	मोम्यागममात्रासंख्यात	१२५
		न्यास	१८
ट		प	
दक्षिण्यमनिपति	१४ ८	परस्वान (मस्यबहुत्व)	२०८
द्विबस	३७	पर्याप्त	३३१
द्वेय	२	परिहाणि (रूप)	१८७
द्रव्य	२५ ३	परीतान्त	१८
द्रव्यप्रमाण	१	पर्योपम	६३ १३२
द्रव्यप्रमाणानुपम	१ ८	पुङ्खद्रव्य	३
द्रव्यमात्रप्रमाण	३९	पूर्वफल	४९
द्रव्यानन्त	१२	पृथक्तत्त्व	८९
द्रव्यानुपोग	१	पृथिवीकायिक	३३०
द्रव्यासंख्यात	१२३	पंचच्छेद	७८
द्विगुणाधिकरण	७७ ८१ ११८	प्रक्षेप	४८ ४९ १८७
द्विकपधारा	५२	प्रक्षेपराशि	४९
द्विगुसमाप्त	७	प्रक्षेपदमात्रा	१५९
द्विगुसमाप्त	७	प्रक्षेप	९४
ध		प्रक्षेपस्य	
धर्मद्रव्य	३	प्रक्षेपार्थक्य	७८ ७९ ८०
धृक्परादि	४१	प्रत्येककारण	३३१, ३३३
न		प्रमाण	४ १८
नय	१८	प्रमाण (परिमाण)	४ ४२ ७२
नामान्त	११	प्रमाण (राशि)	१८७ १९४
नामानसंख्यात	१२३	प्रमाद्यमान (प्रमाणप्रमाण)	९२
नामिका	३५	प्रमाण	६६
नासी	३६	प्रमाण (राशि)	१८७ १९०

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
ब		छम्पभयहार	४६
बहुमीहिसमास	७	छम्पविशेष	४६
बाहर	३३० ३३१	छम्पान्तर	४७
बाह्यनिगोत्रप्रतिष्ठित	३४८	छोक	३३, ३३२
बाहरपुग्मराशि	२४९	छोकप्रतर	३३३
		छोकप्रदेशपरिमाण	३
म			
भज्यमानराशि	४७	व	
भध्यानम्त	१४	वनस्पतिक्रयिक	२५७
भध्यासकपात	१२४	वर्गमूळ	१३३ १३४
भागछम्प	३८, ३९	वर्गशाळाका	२१, ३३, ३
भागहार	३९, ४८	वर्गस्थान	१०
भाषाभाष	१०१ २०७	वर्गितसंवर्गित	३३१
भाषित	३९, ४१	वर्गितसंवर्गितराशि	१९
भाष्यशेष	४७	वर्तमानप्रस्थ	२०
भाष्यमाध	३२, ३९	वस्तु	६
भाषानम्त	१३	वादात्म	२५१
भिषगुहृत	६३ ३७	विकल्प	२, ७४
भेग	२०२, २०३	विरहान	१९
		विरसित	४० ४२
म		विक्रमसूची	१३६, १३३ १३८
मानुषक्षेत्र	२१ २१३	विस्तारानम्त	१६
मुहूर्त	३३	विस्तारासंख्यात	१२०
य		वृत्ति (रूप)	४६ १८७
पुच्छानम्त	१८		
पुग्म (राशि)	२४०	उ	
र		दाढाका	३१
रज्जु	३३	दाढाक्यराशि	३३१, ३३३
राशि	२४९	शास्त्रतानम्त	१५
राशिविशेष	३४२	शास्त्रतासंख्यात	१२४
रूपीमन्त्रीबद्रम्य	२	धेवी	३३ १४३
ल		म	
लप	१५	समकारण	१०७

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
समास	१	संख्या	७
समास (जोड़)	२ ३	संख्यात	२६७
सर्वपरस्थान	११४ २ ८	संख्यात	५, १
सर्वात्म्य	११	संघट्टि	८७ १९७
सत्तासंख्यात	१२५	स्वस्थान व्यस्य हस्त	११४ २ ८
सागर	१३२	स्थापनात्म्य	११
साधारण्यशीर	१३३	स्थापनासंख्यात	१३३
सूत्र	१३१	स्तोक	३१
सूर्यगुण	१३५ १३५		
संज्ञकसूत्र	१३ १३	हस्त	४७
		हस्त	४७

६ मूढविद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलान ।

अ — मूढविद्रीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो अर्थ व पाठसुद्धि की दृष्टिसे विशेषता रखते हैं
अलग्ना प्राम हैं ।

भाग १

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
१	२	सपञ्चल्यवाग्वृत्त	सपञ्चल्यवाग्वृत्त
११	१३	अप-वाचन	प्राचीनी अनन्ताके वाचन
१८	४	समवाच-व्यभिचि	समवाचव्यभिचि
३४	७	मङ्गलमाप्ति	मङ्गलमाप्ति
३८	९	मङ्गलम् । सप्त	मङ्गलमम् । म
३९	१	देहिता कय	x
४	७	अधोव्यपि	अधोव्यपि (नी)
४१	६	निबद्धकर	कपेदकर
५	१७	निबद्ध कर दिया	रव्य किया

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

	७	कन्यवेष्टा	निवन्दवेष्टा
" १८	१९	देवताको... जाता है,)	अन्यजित देवतानमस्कर निबन्द किय जाता है,
४९	७	साहज-	-सोहज
४९	२०	साधन अर्थात् कर्तोंकी रक्षा	शोधन अर्थात् कर्तोंकी छुद्धि
५२	८	रत्नामोगस्य	रत्नमोगस्य
६३	७	-प्राप्स्यतिशय	प्राप्स्यतिशय
६३	१७	निश्चय व्यवहाररूप प्राप्त हुई	निश्चय और व्यवहारसे प्राप्त अनिशयरूप
६४	२	कहक-भार-तिथ	तहेब भारतिथ
"	१४	चार शानिया कर्मोंमेंसे	×
६५	६	तेज गोबुमेण	तेज बि गोबुमेण
"	१४	गौतम गणधरने	गौतम गणधरने भी
६७	४	होहिवि सि	होहिवि सि
८०	८	खेव	खेव होति
८३	११	द्रोष्यस्यदुष्टुषत्	द्रवति द्रोष्यस्यदुष्टुषत्
"	१७	जो	जो वर्तमानमें पर्यायोंको प्राप्त होता है,
८६		सम्बेते	संस्तु ते
९७	३	पूसा बिहाण	पूसाविधिपाण
"	१३	पूसाविधिक	पूसा अग्नि विधिक
१०१	५	येयप्पमाण	येयप्पमाण
"	१७	येयप्रमाण है, क्योंकि क्षम	है, क्योंकि येयप्रमाण ज्ञानमात्र
		प्रमाण ही	
१०२	१	धम्मवेसण	धम्मवेसण
१०६	५	समयस्स	ससमयस्स
११०	४	वेहपाण	वेहपा-वंसा
११९	६	संठाण	संठाण
"	१४	माना प्रकारके... गछता है	इह प्रकारके सरपालोंसे कुछ नामा प्रकारके
			दरोंसे पूरित होता है और गछता है
१२३	८	अमुक्कम पणिधिकये	अमुक्कमपणिधिकये
	१०	अमुक्क	अमुक्क
१४६	४	विक्कमेजोपसंमाण	उक्कमेजोपसंमाण

ग्रन्थ	पृष्ठ	ग्रन्थ	पृष्ठ
समाप्त	६	संख्या	७
समाप्त (जीव)	२०३	संख्यात	२१७
सर्वपरस्यान	११४ २०८	संख्यान	५, १
सर्वात्म्य	११	संख्या	८७ १९७
सर्वासंख्यात	१२५	संख्यात अथवा संख्या	११४ २८
सागर	१३२	स्थापनात्म्य	११
साधारणशरीर	१३३	स्थापनासंख्या	१३३
सूक्त	१३३	स्तोत्र	१५
सूक्तगुण	१३२ १३५	स्तोत्र	४७
संस्कृतम्	१३, १३	स्तोत्र	४७

६ मूढविद्वित्रीकी तात्पर्यपूर्ण प्रतियोंके मिलान ।

अ — मूढविद्वित्री प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो अर्थ व पाठप्रतिष्ठा दृष्टिसे विशेषता रखते हैं
अतएव प्राप्त हैं ।

भाग १

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
९	२	सपञ्चायवाचक	सपञ्चायवाचक
११	११	अथ-वाचक	पदाश्रयि अथवाके वाचक
१८	४	समवाय-विमिश्र	समवाय-द्वय-विमिश्र
१४	७	मङ्गलप्राप्तिः	मङ्गलप्राप्तिः
१८	२	मङ्गलम् । तत्र	मङ्गलप्राप्ति । न
१९	१	देहिता कथ	×
४	७	अथोपिपत्ति व	अथोपिपत्ति (जी)
४१	१	निबन्धदेवता	कथदेवता
४	१७	निबन्ध कर दिया	स्वयं किया

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

३८१	५	आदि	आदि
३४१	११	ननुसकमुमया	ननुसक ठमया
३४४	३	अमिछापे	अमिछापे
३४९	८	गर्हा	गर्हा
३४९	२०	गर्हा	गर्हि
३६०	१	मेय ब	मेयगय
३७३	७	सधित	सधित
३७४	३	न	न
३७७	३	निर्बधनायेवामधिप्यतां	निर्बधनायमधिप्यतां
३८८	८	पीठ	तेज
३८९	५	अप्यापमिब	अप्याप पिब
३९०	४	रायहोसो	रायहोसा
३९८	३	एकदेशे सत्यबिरोधान्	एकदेशात्सत्यबिरोधान्
३९८	१७	एकदश रहनेमें	एकदशकी उत्पत्तिमें

भाग २.

४११	४	मिच्छाद्वी सिद्धा० वेदि	मिच्छाद्वी० सिद्धा वेदि
४१९	४	परद्वियादी	अरिय परद्वियादी
४२७	२	मण्यमाणे	ओघे मण्यमाणे
४४४	१	सिद्धमपञ्चत	सिद्धमपञ्चतर्त
४४४	२	सरीर-पट्टबण	सरीरावण (सरीरावण)
४६२	३	तिण्णि सम्मत्त	तिण्णि सम्मत्ताणि
४६३	४	तिण्णि सम्मत्त	तिण्णि सम्मत्ताणि
५१३	५	इप्पित्थिवेदा	इप्पित्थिवेदा पुम
५३४	७	अमुह-ति-सेस्साण गहरवण्णा मापापत्तीहो ।	अमुह-ति-सेस्साण घववण्णामावापत्तीहो कम्मभूमिमिच्छाद्वीण पि अगज्जत्तकाले अमुह ति-सेस्साण गहरवण्णामापापत्तीहो ।
५३४	२६	भागभूमियां मनुष्योंके गौर वगका	भागभूमियां मनुष्योंके वज्रवणक अमावका प्रसंग प्राप्त होगा । तथा, अजुम तीनो उच्य- वत्त वमभूमियां विप्याद्यदि जीवोंके भी अपर्णीत वज्रमें गौर वगका

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

१५१	४	अद्यानमनुरक्तता	अद्यानमुत्कृता
१९	१	अवधारणं	अवधारणं
१७१	८	आपदि	आदि
१७१	९	समितिपद	समतिपद
१७१	२७	केन्द्र सम्पत्तसे मेक कर केता है	केन्द्र सम्पत्तसे प्राप्त होता है
१९४	१	सहायार्थवचस्य	सहायार्थवचस्य
१९६	३	अपीद्वेषवचस्य	अपीद्वेषवचस्य
१९८	७	पुनर्नोत्पत्तिरिति	पुनर्नोत्पत्तिरिति
२१	७	पातपति	पातपति
"	२३	गिणता है	पातना देता है
२०३	८	द्वय	द्विष्य
२०३	२२	द्रव्य और मानरूप	द्रव्य स्वभावच्छेद
२१२	४	अपेक्ष	अपेक्ष
२१७	४	संक्षेपज्ञि	संक्षेपज्ञे
२२	६	परिणामसाक्षी	परिणामसाक्षी
२४३	२	अतिरंग	अतिरंग (अतिरंग)
"	४	प्राप्तमिति	प्राप्तमिति चेत्
२४८	१	अवेदिति	अवेदिति
२५९	६	संज्ञिन इति	संज्ञिनः अमानस्वाः असंज्ञिन इति
	१९	कहते हैं	और अनसहित जीवोंको असंज्ञी कहते हैं
२६	२	निष्पत्तौ	निष्पत्तेः
२७०	१	कर्मस्वरूपाः	नोऽर्थस्वरूपाः
"	१४	कर्मस्वरूपोक्तं	नोऽर्थस्वरूपोक्तं
२८१	३	सत्त्वमोक्षेति	सत्त्वमोक्षेति
२८७	०	प्रपन्ना	सम्पत्तना-
"	३०	प्रपन्न और	प्रपन्नसहित
२९३	१	तत्पत्तिपदा	परित्यज्या
२९५	६	को ह्यी	केर्त्तव्य-
३१८	५	भूतपूर्वगत	भूतपूर्वगति
३२	७	ताम्या	यताम्या
३२१	४	आदि	आदि
"	७	आदि	आदि

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

३२१	५	आदि	आंति
३४१	११	नपुंसकमुमया	नपुंसक उमया
३४४	३	अमिसाये	अमिसायो
३४९	८	गर्हा	पूर्या
३४९	१०	गर्हा	गुहि
३९०	१	मेयं न	मेयगयं
३७३	७	सखित	सखित
३७४	३	न	न
३७७	३	निबधनापमविप्यतां	निबधनापमविप्यतां
३८८	५	पीत	तेज
३८९	५	अप्याणमिब	अप्याण पिब
३९०	४	रायहोसो	रायहोसा
३९८	३	एकदेशो सत्यधियोपाद्	एकदेशोत्पत्यधियोपाद्
३९८	१७	एकदश छमेमे	एकदशक्री उत्पत्तिमे

भाग २

४१५	४	मिच्छादुःखी सिद्धा० बेदि	मिच्छादुःखी० सिद्धा बेदि
४१९	४	परिविषादी	अत्यि परविषादी
४२७	२	मण्यमाये	मोये मण्यमाये
४४४	१	सिद्धमपञ्चत	सिद्धमपञ्चत
४४४	२	सरीर-पट्टबण	सरीरबण (सरीराडवण)
४६२	३	तिण्णि सम्मत्तं	तिण्णि सम्मत्तायि
४६३	४	तिण्णि सम्मत्तं	तिण्णि सम्मत्ताणि
५१३	५	इत्थित्थिवेदा	इत्थित्थिवेदा पुण
५३४	७	असुह ति-सेस्साण गडरबण्णा मावापत्तीहो ।	असुह-ति-सेस्साण धवसयण्णामावापत्तगत्तो कम्मभूमिमिच्छादुःखीणि पि अपञ्चतकाळे असुह ति-सेस्साणं गडरबण्णामावापत्तीहो ।
५३४	२६	मागभूमिया मनुष्योंके गौर वणका	मागभूमियं मनुष्योंके बववणके अमानका प्रसंग प्राप्त होग। तथा, अशुम तीनों ऊर्या बाड़े कम्मभूमियं मिप्पाद्यि जीवोंके भी अपयीत्त कम्ममे गौर वणका

पृष्ठ	पाठि	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
५३५	९	तेज-यम्म सुहृदेस्सामो मर्षति । एव-अज-रस-कागस्स	तेज-यम्म-सुहृदेस्सामो मर्षति । बटुबण्यस्स जीवसरारस्स कपमेककेस्सा सुहृदे । ज पाघणपदमासेमस कस्यो कागो वि पंख बण्यस्स कागस्स
५३५	२५	तेज, पय और सुहृदेस्साए होती हैं । जैसे पाँधों वन और पाँधों रसवाले कपड़ों के जववा पाँधों बर्णवाले रस्से से कुछ करके कृष्ण व्यपदेश	तेज, पय और सुहृदेस्साए होती हैं । शुक्ल—अनेक वर्णवाले जीवों के शरीरों के एक केन्द्र कैसे बन सकती है ? समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा 'कप कृष्ण है' इसप्रकार पाँधों वनों से कुछ करके जैसे कृष्ण व्यपदेश
५३८	१	एव देवगवी	एवं देवगवी समतो (ता)
५८९	३	तिरिक्कगवीमो वि	तिरिक्कगवि वि
५९०	१०	एव विविपममाणा	एवमिविपममाणा
५९८	४	अपरज्जत्ता बुविहा	अपरज्जत्तमेपेय बुविहा
६०९	१२	अपारमावे मट्ठिपाए	अपारमूमिमट्ठिपाए
६१०	१२	आभारके होनेपर महीके	आभारमूत मूमिकी महीके
६११	३	बाहुरकारपाणं	बाहुरतेजकारपाणं
६४८	८	केवलीयं	सयोगकेवलीय
६४८	२०	केवली मिनके	सयोगिकेवली मिनके
६५३	३	मावगद-पुध्वर्ग व	भूवपुध्वर्ग व
६५३	१०	भारमनागत पूर्वगति जर्वात् मूलपूर्व व्यस्यके	भूतपूर्वगति व्यस्यके
६५७	४	मिच्छाहृदीयं	मिच्छाहृदीयं व
६५९	२	समजा धववि	संमजो मववीवि
६५९	७	अणोस सज्ञान हो जाता है,	अणोस होना संमज है,
६६०	४	अतिरिद्ध जीव-पदस, वं	वा विद्वज्जीवपदेजाव
६६	१६	व्यस्य जीवके	स्वित जीवके

पुत्र पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

६९०	५	एय बधहरस्त	पर्यं बधरस्त (बधरस्त)
"	१८	विशिष्ट बधको भारण करनेवाले शरीरके	इस छोटे शरीरक
८२३	२	अडमापा	अडमापार्प
८२३	३	अवसमसम्मसेण	उवसमसम्मसे
"	११	ओणे अन्नके घूमें ही परिहार शुद्धिसयमके मद्य हो जाने पर उपधमसम्यक्कके साथ परिहार विशुद्धिसयमीक	अधिसे उठनेके पश्चात् ॥ उपधमसम्यक्कके मद्य हो जाने पर परिहारविशुद्धिसयमीक ।
८४३	२	पउज्जापउज्जा आछावा	पउज्जापउज्जा के आछावा
"	११	पर्याप्त और अपर्याप्तकृतसम्बन्धी आछाप	पर्याप्त और अपर्याप्तकृतसम्बन्धी दो आछाप

भाग ३

१४	३	अनुपूर्वतायामेवाप	अनुपूर्वतायामेवाप
२०	३	पुण्यो	पुण्यो वि
२६	९	अवधुआपादो	अवधुआपादो
"	२५	यह पदार्थ प्रमाणसे अवस्थित है ।	प्रमाणसिद्ध पदार्थकी पुन प्रमाणसे परीक्षा करने पर किसी भी पदार्थकी व्यवस्था नहीं हो सकती है ।
२८	१०	अवधिरिउज्जति	मा अवधिरिउज्जति
३०	७	अवसत्तुपपत्त	अवसत्तुपपत्त अयसत्तुपपत्त
"	२९	आनप्रयत्नरूप	दत्तपुपत्तरूप
३४	४	एति	राखी
"	१५	यह अगच्छेगीक सातवां भाग आता है ।	यह राखी अगच्छेगीके सातवें भागप्रमाण है ।
३६	५	अवस्तव समबहुआपादो ।	अवस्तव बधवापस्तव समबहुआपादो ।
३९	१	आपपमापमि वि	आप पमापमि वि

पृष्ठ पङ्क्ति पाठ है ?

पाठ चाहिये ।

३९	१२ अभिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों	अभिगम, ज्ञान और प्रमाण ये तीनों
३९	२ इन्द्रियविषयार्थ	इन्द्रियविषयार्थ
४०	१५ इन्द्रियोक्ते अस्तित्व विषयक	इन्द्रियविषयक
३९	५ साहिचपमाणाभावे	सुहिचपमाणाभावे
३९	३ अक्षयारब्धसिद्धसाधनमाणाहो ।	अक्षय एवसमाप्तमित्त्वाजममाणाहो ।
४०	२१ करनेवाले शिष्योंका	करनेमें समर्थ शिष्योंका
३९	३ अथवा एवं	अथवा एवं
४०	२३ अथवा, इस मात्रप्रमाणका कथन	अथवा मात्रप्रमाणका कथन इसप्रकार करना
	करना चाहिये ।	चाहिये ।
४०	१ एगच्छद्गच्छिरे	एगच्छद् गच्छिरे
४४	४ अहं	हो अहं
४८	२ अथवाहो	अथवाहो
५४	४ केव्य कारयेण ?	केव्य कारयेण ? केव्य
५४	५ सकवेहि	कवेहि
५८	२ तिगुणकबुजेण	तिगुणिकबुजेण
६४	१ मिच्छन्नद्विस्सिन्न	मिच्छन्नद्विस्सिन्न व
६५	३ अन्नापरकथं	अन्नापरकथं
४०	२७ कसकस प्ररूपण	कसकस प्ररूपण
६७	९ आब वस्सासो	आबेगुस्सासो
६८	३ अन्नाहारकाओ	अन्नाहारकाओ भावविषयाय
९७	५ परविद्वत्तत्वं संजड	परविद्वत्तत्त्वं संजड
१२५	४ संजयातीवमो ।	संजयातीवमो ।
१७८	७ असंखेज्जहिमार्थ	असंखेज्जहिमाग व
१९१	१ -तिप्पि	तिप्पि तिप्पि-
	२ तीन संख्याको	तीन तीन संख्याको
१९१	९ अजंतदप्पक्य	अजंतदप्पक्यकथां
२०८	४ असंखेज्जेसु	संखेज्जेसु
४०	१८ अतस्मात् खड	संख्यात् खड
२८	४ संखेज्जेसु	असंखेज्जेसु
४०	१९ संख्यात् अह	अतस्मात् खड
२०८	७ असंखेज्जेसु	संखेज्जेसु

पृष्ठ पङ्क्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

२०८	२५ असक्यात खंड	सक्यात खंड
२०८	८ सखेग्रेसे	असखेग्रेसे
॥	२१ सक्यात खंड	असक्यात खंड
२१५	६ ओषपडिवण्णेहि	ओषगुणपडिवण्णेहि
२१९	१ मववाविषाय	मयणाविषायं वेवाण
२७१	२ पडिसेहट्ठं ।	पडिसेहट्ठं । पवरस्स असखेग्रेदिमाणो ते मि चछाहट्ठि होति चि डत्तं ।
॥	१४ कहा है ।	कहा है । मवनवाधा मिप्यादधि देव जगप्रतत्ते असक्यातने भागप्रमाण हैं, यह इस कवनक तात्पर्य है ।
२७५	६ ओषपडिवण्णाए	वेवओषपडिवण्णाए
२७१	१ वम्भमिच्छाहट्ठिरासि	वेवमिच्छाहट्ठिरासि
२८१	१० असखेग्रेगुणा	सखेग्रेगुणा
॥	२७ इए मी वे असक्यातगुणे	इए मी वे सक्यातगुणे
२८६	४ सखवेवरासिमसखेग्रेग्रे	सखवेवरासि संखग्रेग्रे
॥	१५ असक्यात खंड	सक्यात खंड
२९५	१ सेसमसखेग्रेग्रे	सेसे सखेग्रेग्रे
॥	२२ असक्यात खंड	सक्यात खंड
२९८	१० मवणवासिपदेवि चि	मवणवासिपदेवेति
॥	२९ देविपोके	देवोके
३११	११ उवरिमहेट्ठिमसखेग्रेग्रेविपप्या	उवरिमहेट्ठिमसखे विपप्या
॥	२५ असक्यात विरुप	सर्व विरुप
३८१	१२ चि	वेति
३९८	५ रासी	रासी से
४०४	१ -अयजोगरासीमो	-अयजोगरासी होवि
४१४	९ इतिवेवमवहारकासस भागहारो	इतिवेवमवहारकासो
४१९	१ उवसामगा केवडिया पवेसेज	उवसामगा इप्पयमायेज केवडिया पवसयेज
॥	१९ जान कितने हैं !	जान इप्पप्रमाणकी अपक्षा कितने हैं !
४२१	१ -म्मायमाणहाररासिहि	-म्मायमाणहाररासिहि
॥	११ नीने मगगी भागहार राधिमें	नीने मागरूप मुखराधिमें

पृष्ठ पक्ष पाठ है।

पाठ चाहिये।

४२७ ४ वेपगहिसाध्याय

वपगहिसाध्याय

४२० १ मूखो उबसंतकसापरानी

मूखोमुबसंतकसापरानी

४२१ १०-११ कुबिहणापविरहिय

कुबिहणापविरहिय

४२१ २८ दोनो प्रकरके जानोसे

दोनो प्रकरके जानोसे

४२० १ वेब

तहिह वेब

४४२ १ छत्रिसपण्णरासील

छत्रिसपण्णरिसील

, १२ उसिण बहुत नही हो सकत हैं। रुदि बहुत नही हो सकत हैं।

४४२ १ सेसमसकेरजकेडे

सेसमसकेरज

, १ असायल खंड

अनन्त खंड

४४४ २ मदि सुवमण्णायमिच्छाहोसु

मदि-सुवमण्णायमिच्छाहोसु

, १४ -हानी बीरोमे

हानी मिप्पाछि बीरोमे

४४५ ९ बितेसाहिया २८।

बितेसाहिया २८। आमिनि-सुवपाणिब्रह्ममया सकेरजगुणा। खबगा संकरजगुणा।

, २५ अहर्षत हैं। मन-पर्यपहानी अप्रम-
तसपत जीव अवबिहानी अपरकोसे

अहर्षत हैं। आमिनिबोधिक और सुतहानी उप-
शानक जीव अवबिहानी अपरकोसे सपण्णगुणे
हैं। मतिहानी और सुतहानी अपर जीव ठक
उपशानकोसे सपण्णगुणे हैं। मन पर्यपहानी
अप्रमत्तसपत जीव ठक अपरकोसे

४४६ १ गुणामिससब्र

आमिनिपाणि-सुवपाणिमप्यमत्तसंजहा सवे
पजगुणा। तत्थेव पमत्तसंजहा संजिजगुणा।
गुणामि असब्र

, ११ अवबिहानी प्रमत्तसपतोसे

अवबिहानी प्रमत्तसपतोसे आमिनिबोधिक और
धुनहानी अप्रमत्तसपत जीव सपण्णगुणे हैं।
इन्ही दो हानोमे प्रमत्तसपत जीव ठक अप्रमत्त-
सपतोसे सपण्णगुणे हैं। इनसे

४४४ १ अहर्षतसपतिहोप

अहर्षतसपतिहोप

, १५ अहर्षतसपति

अहर्षतसपति

१ असकेरजहियाप अर्षिकहियापडि-
मारे

असकेरजहियापडि

पृष्ठ पङ्क्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

- ४५४ १७ चमुरानवाले मिय्यादियोत्त अब चूकि चमुरन्त्रियके प्रतिपातके नही रहने पर
हारकाक सुम्पगुलक असस्यातवे
मागरूप आशेषक परहार यह है
कि चूकि
- ४६१ ११ तेउलेस्सियमबहारकाओ देवतेउलेस्सियमबहारकाओ
, २६ तजोछन्पासे युल जीवपाशिक तेजोछन्पासे युल देवोंक
४७३ २ सयछाररियमयप्पसिखाओ । सयछाररियमियप्पसिखाओ ।
, १४ यह सर्व आचाप नगतमें प्रसिद्ध है । यह कपन सब आचापोंके बचनोंसे सिद्ध है ।
४७८ ९ मिच्छारद्विपसिमिद्धतप्पग मिच्छारद्विपसिमिद्धतप्पग
४८६ १ कवगा सखेउज्जगुणा । कवगा सखेउज्जगुणा । सयोगिकेपली आहा
रियो सखेउज्जगुणा ।
, ११ अप्रमत्तसमत जीव क्षपकोसे सयोगिकेपली आहारक जीव क्षपकोसे सम्पत्त
गुणे हैं । इनसे अप्रमत्तसमत जीव

ब—मूढविद्गी की प्रतियों के ऐसे पाठभेद जो छद्म और अर्थकी दृष्टिसे दोनों छुद हैं, अतएव जो समबत प्राचीन प्रतियोंमें बैकस्मिकरूपसे मिश्रण पाये जाते हों ।

भाग १

१३	२ साह पसाहा	साहुपसाहा
३२	१ किमिति	किमर्च
७१	३ तरो	पुणो
९४	५ ओराक्षिय-सरीर-विग्जर	ओराक्षिय विग्जर
१०८	३ स्वेदहृद्वैतिकापन	स्विदिहृद्वैतिकापन
१०८	११ स्वेदहृत्	स्विदिहृत्
११०	४ त्रिपहरापीण	त्रिपहराण
११०	१६ त्रिनात्रय अग्नि-त्र	त्रिनात्रयोक्त
११२	१ कडण्डमहिपापलमरिय	कडण्डमहिपापलमरय
११२	१४ चार अभिन्नयोंक नामनिर्देश	चार अभिन्नयोंक अर्थनिर्देश
११६	३ छ-अदिय	छदि अदिय
"	७ वात्संस्कारकारण	संस्कारकारण

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	मूख्यपीठ पाठ
११८	१	आद्यनारीनौपशमिकादीन्	आद्यनारीन् भाषाम्
११८	१५	स्यदि बौर अनानिरूप औपशमिक आदिमाशोन्दी	स्यदि बौर अनानि भाषोन्दी
१२१	९	वेद्यम्वा	वायम्वा
"	२१	निषेध कर देना	निषेध पानना
१४७	१	अमावास्यायात्	अमावास्यज्जनात्
	५	इति चेत्	इति चेत्
	२२	ऐसी छात्र करता ठीक नहीं है, क्योंकि,	क्योंकि,
१५१	१	अथवा	अथवा
१८८	५	तेहि	तेहि
१८९	५	तदेकत्वोपपत्तेः	तदेकत्वोपपत्तेः
"	२०	एकता बन जाती है।	एकता नहीं है।
२०९	१	प्रतिपाद्यवर्णात्	प्रतिपाद्यवर्णात्
२२८	४	मिथ्यमवगम्यते	मिथ्यतेहावगम्यते
"	११	जीवोंके साथ मिथ्या	जीवोंके साथ नहीं मिथ्या
२५४	९	आद्यनिमित्तावाप्तिः	×
	२६	परिणमन करनेरूप शक्तिसे बने हुए आगत पुद्गलस्कन्धोन्दी प्राप्तिसे	परिणमन करनेकी शक्तिकी पूर्णतासे
२५५	२	औदारिकादिशरीरव्यपारिणाम शक्त्युपेतानां दर्शयानामवाप्तिः	औदारिकादिपरिणमनशक्त्येर्निष्पत्तिः
"	११	परिणमन करनेवाले औदारिक आदि तीन शरीरोंकी शक्तिसे पुद्गल पुद्गलस्कन्धोन्दी प्राप्तिसे	औदारिक आदि शरीररूप परिणमन करनेरूप शक्तिकी पूर्णतासे
	४	अद्वयशक्त्युत्पत्तेर्निमित्तपुद्गल प्रवृत्त्यावाप्तिः	अद्वयशक्त्येर्निष्पत्तिः
"	१६	अद्वय करनेरूप शक्तिकी उत्पत्तिके निमित्तमूल पुद्गलप्रवृत्तिकी प्राप्तिका	अद्वय करनेरूप शक्तिकी पूर्णतासे
	१	निमित्तपुद्गलप्रवृत्त्यावाप्तिः	×

पूठ पाकि सुनिठ पाठ

मूडविद्वाकी पाठ

- २५५ २० शक्तिकी पूर्णताके निमित्तभूत पुद्गल प्रचयकी प्राप्तिको
 , ८ निमित्तनोर्म्मपुद्गलप्रचयावाप्तिः x
 ॥ २१ शक्तिके निमित्तभूत नोर्म्म पुद्गल- शक्तिरी पूर्णताको
 प्रचयकी प्राप्तिको
 , ९ मनोवर्गाणास्त्वनिष्पन्नपुद्गल मनोवर्गाणामिर्निष्पन्नद्रव्यमनोवर्गेमेतान्भूत
 प्रचयः अनुभूतार्थस्मरणशक्ति- स्मरणशक्तेरुत्पत्तिः मनःपर्याप्तिः
 निमित्तः मनःपर्याप्तिः द्रव्य
 मनोवर्गान्स्मोभानुभूतार्थस्मरण-
 शक्तेरुत्पत्तिर्मनःपर्याप्तिश्च
 ॥ २५ अनुभूत वपके स्मरणरूप शक्तिके मनोवर्गाणाञ्छे निष्पन्न द्रव्यमनके
 निमित्तभूत मनोवर्गाणाके स्मरणसे
 निष्पन्न पुद्गलप्रचयको मनःपर्याप्ति
 कहते हैं । अथवा, द्रव्यमनके
 २५६ ३ निष्पत्तेः कारणं निष्पत्तिः
 ॥ १५ पूर्णताके कारणको पूर्णताको
 २५७ ४ इति चेन्न पर्याप्तिनां इति चेच्छब्दनां
 ॥ २२ पर्याप्तिपौर्वा अपूर्णताको शक्तिपौर्वा अपूर्णताको
 २८३ ३ परिस्फुरकरूप x
 ॥ १४ मनक निमित्तसे जो परिस्पन्दरूप मनके निमित्तसे जो प्रयत्नविशेष
 प्रयत्नविशेष
 ३८३ ७ आनानुपादे आनानुपादे
 ३८३ ९ आसंजनमात् आसंजनमात्
 ४०० २ आसंजनमात् आसंजनमात्

भाग ३

- ३ ७ छोगपमाय छोगसमाय
 १६ ७ तं पदपारेण आगाध तं पदपारेण
 २५ ८ सम्बन्धीवरसिबगसखागामो x
 ३१ ३ तेरसगुणद्वानमतेव तेरसगुणद्वान
 ३६ ४ अ मर्त्त अ मर्त्त

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मुद्रितश्रीका पाठ

११८ १ साधनादीनौपशमिकादीन्

साधनादीन् मावान्

११८ १५ सादि धार वनादिरूप औपशमिक
आदिमात्रोक्तौ

सादि और वनादि मात्रोक्तौ

१२० १ दोषध्या

प्रायश्चा

२१ निषेध कर देना

निषेध जानना

१४३ १ अमावास्यासम्पत्

अमावास्यासम्पत्

५ इति चेत्

इति चेत्

॥ २२ ऐसी शक्य करना ठीक नहीं है
क्योक्तिः

क्योक्तिः

- - -

११६ १ अण्वधीष्ठे

अण्वधी

११८ ० तेहिंते

तेहि

१८६ ५ तदेकत्वोपपत्तेः

तदेकत्वोपपत्तेः

॥ २० एकता बन जाती है ।

एकता बढ़ी है ।

२१ १ प्रतिपादकापान्

प्रतिपादकमर्पान्

२२८ ४ मिश्रणमवगम्यते

मिश्रणमवगम्यते

११ जीर्णोक्ते साप मिश्रण

जीर्णोक्ते साप यहाँ मिश्रण

२५४ १ -शब्दनिर्मितानामाप्तिः

x

॥ २६ परिणमन करनेरूप शक्तिम बने हुए
आगत पुद्गलस्वर्धोक्तौ प्राप्तिरने

परिणमन करनेकी शक्तिकी पूर्णताको

२५ २ औद्गारिकादिशरीरव्यपपरिणाम
शक्त्युपेत्यासी रूपाणामाप्तिः

औद्गारिकादिपरिणमनशक्त्युपेत्याप्तिः

॥ ११ परिणमन करनेवाले औद्गारिक
आदि तीन शरीरोंकी शक्तिस
पुनः पुद्गलस्वर्धोक्ते प्राप्तिरनेऔद्गारिक आदि शरीररूप परिणमन करनेरूप
शक्तिकी पूर्णताको॥ ४ -महणशक्त्युत्पत्तिर्मितपुद्गल
प्रवृत्त्याप्तिः

महणशक्त्युत्पत्तिः

॥ ११ महण करनेरूप शक्तिकी उत्पत्तिके
निमित्तमून पुद्गलप्रवृत्तिके प्रवृत्त्या

महण करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको

॥ १ -निमित्तपुद्गलप्रवृत्त्याप्तिः

x

पृष्ठ	पंक्ति	सुधित पाठ	सूत्रविहीन पाठ
७	१ पुष्करवंतं	पुष्करवंतं	
	३ भूषवर्णि	भूषवर्णि	
११	५ हेतु	हेतु	
११	६ भाइरियो	भाइरियो	
५	२	,	
९	१ पयस्य	पयस्य	
११	२ मयिषो	मयिषो	
१२	१ पञ्चय	पञ्चय	
१५	२ सुकृन्नि	सुकृन्नि (-नि)	
१६	८ मोक्षी	मोक्षी	
१८	७ अण्य-विमिश्रतर	अण्य विमिश्रतर	
२५	१ विपद्दि	विपद्दि	
२६	२ धायेजियरेण	धायेजियरेण	
४०	२ धार्वावसाज	धादि मवसाज	
५१	३ माद्व	माद्व	
६२	७ वसपिणीये	वसपिणीये	
६४	२ वसज-वापी करिते	वसज-वाप-करिते (वापवकरिते)	
६६	१ वससामी य	वससामी य	
७०	३ विष्णुकरेति	विष्णुकरेति	
७१	७ विजपाकिस्स	विजपाकिस्स	
	१० पय	पय	
७७	२ द्रमिळ	द्रमिळ	
८१ ९-१०	आणुग	आणग	
९९	३ पण्डवायरण	पण्डवाहरण	
१०३	३ किर्म्मिक	किर्म्मिक	
१०८	८ विट्ठिवापावो	विट्ठिवापावो	
११९	५ सन्नेहि	सन्नेहि	
"	१३ वप्पाय	वप्पाय	
११४	१ पण्य	पण्य	
"	८ धनिपोग-	धनिपोग	
११९	३ सुज	सुज	
१२१	८ वि-सद्व	वि-सद्व	
१२२	३ वि-सद्व	उ सद्व	

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	मूबविद्वीक पाठ
४९	१	अवहारविसेसेन य	अवहारविसेसेन
५१	४	एय कर्त	एयकर्त
५५	७	अगच्छन्ति सि ।	अगच्छन्ति ।
६०	७	"	"
६८	४	गुम्बि	गुम्बि हि
१०९	१	हेडिमविरुज्जाप	हेडिमविरुज्जामर्ष
११८	१	गुजगारे पाषी	गुजगारपाषी
११९	१	मर्षवेज्जगुजपाप सेवीय	मर्षवेज्जगुजसेवीय
१२६	१	मर्षिगजमार्ष	मर्षिगजमार्ष
१३०	७	अडिप	अडिप
१३२	५	अपिदत्तादी	पदिदत्तादी
१४२	१	एयसेवी	एया सेवी
१६२	१	विसेसामावादी	विसेसामावा
१८४	१	पेच्छमो	पच्छमो
१८५	८	"	"
१९१	५	अवरिमविरुज्जक	अवरिमविरुज्जक-
१९२	७	सो	एसो
१९३	५	इच्छमप	-मिच्छमप
१९८	४	एकजप-	-एकजप
२०१	४	देवेसु ॥ १७ ॥	देवेसु (१७) इति
२१५	७	इयमप	-इयमप पुन
२१६	१	अवर्षविज्जमाये ओयपकजवादी	अवर्षविज्जमायेपकजवादी
२१८	१	सुत्तस्त हि	सुत्तस्त
२२४	७	होमि ।	अगच्छन्ति ।
४२६	२	अनुकस्ता	अनुकस्ता
४४१	४	ओयस	ओयसे
४४७	१	कवा	कवागा
४४८	५	विप	वेव
४७६	७	एदे वी वि	एदेवावि

सु—मूबविद्वीय तावपरीय प्रतियोक्ते वे पाठ मेद ओ उच्छाज मेदसे सक्क रक्ते हैं, जतएव उनमेसे फिरीको भी रक्तेमें कोई अपति नहीं है ।

भाग १

- १ १ विविदि
" ५ ममोह

विविदि
ममोह

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	मूढविहीन पाठ
७	१ पुष्पवर्त	पुष्पवर्त	पुष्पवर्त
	३ मूषवर्ति	मूषवर्ति	मूषवर्ति
११	५ हेल	हेल	हेल
११	३ आहरियो	आहरियो	आहरियो
५	२	"	"
९	१ एषत्थ	एषत्थ	एषत्थ
११	२ मपियो	मपियो	मपियो
१२	१ पञ्चय	पञ्चय	पञ्चय
१५	२ सुकानिख	सुकानिख (-निख)	सुकानिख
१६	८ मोखी	मोखी	मोखी
१८	७ अण्य-विमिस्रतर	अण्य विमिस्रतर	अण्य विमिस्रतर
२५	१ विपद्दि	विपद्दि	विपद्दि
२६	२ धायेणियरेष	धायेणियरेष	धायेणियरेष
३०	२ अर्थावसाय	आदि अवसाय	आदि अवसाय
५१	३ मास्य	मास्य	मास्य
६२	७ वसपिणीय	वसपिणीये	वसपिणीये
६४	२ ईसण-आण-वरिते	ईसण-आण-वरिते (आण-वरिते)	ईसण-आण-वरिते
६६	१ अंबुसामी य	अंबुसामी य	अंबुसामी य
७०	३ विष्णुहन्ते वि	विष्णुहन्ते वि	विष्णुहन्ते वि
७१	७ विजवाक्षिद्वस्स	विजवाक्षिद्वस्स	विजवाक्षिद्वस्स
"	१० एयं	एयं	एयं
७७	२ प्रमिळ	प्रमिळ	प्रमिळ
८१ ९-१०	आणुग	आणुग-	आणुग-
९९	३ पण्डबायरज	पण्डबायरज	पण्डबायरज
१०३	३ किण्विचि	किण्विचि	किण्विचि
१०४	८ विट्ठिवापारो	विट्ठिवापारो	विट्ठिवापारो
११२	५ सव्वेहि	सव्वेहि	सव्वेहि
"	१३ अप्पाय	अप्पाय	अप्पाय
११४	१ पणूय	पणूय	पणूय
१	८ अविशोम-	अविशोम-	अविशोम-
११९	३ सुय	सुय	सुय
१२१	८ वि सव्व	वि-सव्व	वि-सव्व
१२२	३ वि-सव्व	वि-सव्व	वि-सव्व

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूढविहीन पाठ

"	५ खोख	खोग
१२३	३ मर्याद्विपादो	मर्याद्विपादो
१२४	४ बचप	बचप
१२५	४ पुष्प	पुष्प
१२७	५ मर्षति	हर्षति
१३०	११ संपदि	संपदि
१५७	२ संतमर्य-	संतमर्य
	७ परिसंसाधो	पारिसंसाधो
१५८	५ सेहिलो	सेहि
१७०	५ पुह माबं	पिह माबं
१८९	९ हुपबह	हुपबह
२०२	७ सुबियह	सुबियह
२१७	९ उबपसा	उबपसे
२२२	९ मेसि	मेसि (मेप्ती)
२४३	१ पिपीक्षिब	पिपीक्षिय
२५२	१ बचप्यदि	बचप्यर
२६४	१ आदयाना	दयाना
३१३	७ पंचेद्विपा सि	पंचेद्विब सि
३४३	७ जनुसपबेदा	जनुंसमबेदा
३४७	११ सम्मूर्च्छिम	सम्मूर्च्छित
३५	८ हरिह	हछिह
३५८	८ उबपसा	उबदेसा
३६४	१० व्येद्विजायं	व्येद्विजायं
३७३	१ ज्जरिय	ज्जरिय
३९४	२ निगोह	नियोह
४०७	४ जजपक्षिह	जजपक्षर

भाग २

४१७	७ बचपारि (३ बार)	बचरि (३ बार)
४१९	९ छ छस्ताम्ये	छस्ताम्ये
४२१	५ वा	व
"	"	"
"	१ संपदि	संपदि
४३४	४ यमो	यमो

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविश्रीकृत पाठ
४४८	२ मूख्येपाछावा समचा		मूख्येपाछावो समचो
	८ सुदु कपक्षेति		सुदु कसणेति
४५२	५ असंजम		असंजमो
४५३	३ असंजम		असंजमो
४५३	४ काऊ काऊ काऊ		काठ काठ ठाठ कामो
४७१	३ पञ्चविद्या भवति		पञ्चविद्या हवति
४९३	२ व्याहारिणी भजाहारिणी		व्याहारिणीये भजाहारिणीमो
४९७	७ सासिं खेब		सासिं
५३	२ पञ्चिऊय		पेचिऊयूय
५२८	७ मणुसिणीमु		मणुसिणी
५५९	७ परिणामिय		परिणामिय
५६३	८ कापिट्ट		काबिट्ट
५६६	७ मणुस्साय व		मणुसाय व
५६९	२ महीरपञ्चलीमो		महीरपञ्चलीमो
५९०	९ अर्पिद्विपार्ण		अर्पिद्विपा
५९१	२ सम्भा		छमर्ष
५९३	३ अट्टारस		अट्टारस
५९७	१ मत्तूय		x
५९८	१० पञ्चावय		पञ्चावयय
६००	१ पदे		पप
६०४	२ मूखोपममुल		मूखोपमिम डल
६२०	१ पेचिऊय		पेचिऊयय
६८८	१ सासणसम्माहट्ठिप्यट्ठि		सासणसम्माहट्ठि पट्ठि
६९९	८ मोय/छावा मूखोपमगो		मोय/छावो मूखोपमगो
८२३	२ डवसंहरिद		डवसंहरिद

भाग ३

१	२ यमिऊय	यमियूय
	हण्वजिभोरो	हण्वजिभोर
१	५ हुविहो	हुविपो
३	१० हेऊ	हेइ

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढबिधिरूप पाठ
"	५ श्लोक		श्लोक
१२३	३ भक्त्याहिपासो		भक्त्याभिपासो
१२४	४ कथय		कथय
१२५	४ पुच्छा		पच्छा
१२७	५ मर्षति		इर्षति
१३	११ संपदि		संपदि
१५७	२ संतमरथ-		संतमथ
	७ परिसेसाहो		परिसेसाहो
१५८	५ सेहिलो		सेहि
१७०	५ पुह भावं		पिह भावं
१८१	९ हुयबह		हुयबह
२०२	७ सुबियह		सुबियह
२१७	९ उबपसा		उपपसे
२२२	९ मेरि		मेरि (मेरी)
२४३	१ पिपीळिक		पिपीळिय
२५२	१ कण्ठ्याहि		कण्ठ्याहि
२६४	३ व्याख्याना		व्याना
३१३	७ पर्वेदिया ति		पर्वेदिय ति
३४३	७ यमुंनपवेहा		यमुसगवेहा
३४७	११ सम्मूर्च्छित		सम्मूर्च्छित
३५	८ हरिह		हरिह
३५८	८ उबपसा		उबपेना
३६४	१० श्लोधिपावं		श्लोधिपावं
३७३	३ उहारिय		उहारिय
३९४	९ निगाह		निगोह
४०७	४ लवरात्रिह		लवरात्रिह

भाग २

४१७	७ बहारि (३ बार)	बारि (३ बार)
४१९	९ उ उस्तामो	उस्तामो
४२१	५ वा	वा
"	१ संपदि	संगदि
४१४	४ एवो	एवो

पृष्ठ पङ्क्ति मुद्रित पाठ

मूढविद्विक्ती पाठ

१९० २ पयुजबीसेहि

पयकुजबीसेहि

२०१ ३ दुग

दुर्ग

२१० १० जेहम्भो

जेयम्भो

२१३ ४ -मङ्गम

मङ्ग

२१९ ७ ९ बेसप

बिसप

२२३ १ -मागेज

मापण

" ५ भागे

माप

२२४ १ सपहि

सपदि

२२८ २ कप्यमाणपरूबभा

कप्यमाणपरूबभाओ ।

२३९ १४ माणेद्व्या

माणिद्व्या

२४४ ७ सेसगएपडिसेहो

सेसगएपडिसेहो

२४९ ५ -मिच्छाद्वीण

-मिच्छाद्वीण

२५२ १२ बिपडिचारे

बमिचारे

२७२ १० पहरस्सेहि

पहरस्सेहि

२७३ ३ विरोहाहो

बिरोहा

२७८ ३ मणूजाहिपाओ

मणूजाहिपाओ

३९५ २ बडमाह

बडगह

३३० २ -मच्छरत्त

-मच्छरत्त

३३७ ३ गुणैज्ज

गुणिज्ज

३३७ ३ पवेसमाण

पविसमाण

३४८ ३ -माहो

मुहो

३५० १ पञ्चतरासिभा

पञ्चतरासिपहि

३७५ ३ पन्थेविप

पन्थेविप

३७९ १ पविसिद्व्यापि

पवेसिद्व्यापि

३९० ३ -ओगएसि

ओगरासीओ

३९७ १ तमछाप गुणगरेण

तमछापगुणगरेण

३९७ १२ -आपओगमिह

-आपओगिमिह

४०८ ५ मजेयतमिहि

-मजेयतियमिहि

४२० ३ पवेसविपी

पवसवविपी

४२५ ११ पडिवाडीय

परिवाडीय

पृष्ठ पङ्क्ति मुद्रित पाठ

मूढविद्वत्पाठ

५, ६ २, ३, ५, ७ < दुर्
 ६ १२ लक्ष्मामावाहो
 १३ ४ ह्य्यापत वेदि
 " , आशुपस्स सरीर
 १४ २ कुन्नेउत्तेति
 १४ २ गोदेवर्ण
 १७ २ लघार्त्तसपाहो
 १९ ७ अहवा
 २९ ५ बबहारओगो
 ३० ५ अजादरन
 ३२ ७ अथा
 ३२ ७ मिभिउत्तरे
 ३२ ८ ओपण
 ३७ ५ वेपयामुत्तेष
 ३८ ७ होति
 ४० ४ एमरुव
 ४० ९ -मात्रिह
 ४३ ४ -विरुज्जप
 ४३ ६ -मबहिरिउत्तरे
 ४४ ५ अट्ठीस
 ४७ १ सेसुस्सासो वि
 ७१ २ बभिसोबमे
 ९ २ तेजउद्दी
 ९८ १० भावमापण्यं
 " ९ अट्ठसट्ठी
 १०० १ ववजउद्दी
 १०० २ अट्ठापउद्दी
 १०० १२ अण्ठीसा
 ११४ २ मबहि ति
 १२३ ३ सप्प-भावा
 १४२ ९ -सुत्तो
 १५७ ९ -सरण
 १७३ १ आभेदम्भाभो

द्वं
 लक्ष्मामावाहो
 ह्य्यापतमिदि
 -आशुपस्स सरीरं
 कुन्नेउत्तेति ति
 गोदेवर्ण
 लघार्त्तसपाहो
 अथवा
 बबहारओगो
 अजादिरन
 अथा
 मिभिउत्तरे
 ओपण
 वेपयामुत्तेष वेदपमुत्तेष
 हवन्ति मवन्ति
 एमं रुव
 मात्रिह
 विरुज्जप
 -मबहिरि
 अट्ठीस
 सेसुस्सासो वि
 पभिसोबमे
 तेजउद्दी
 भावमापण्यं
 अट्ठसट्ठी
 ववजउद्दी
 अट्ठापउद्दी
 अण्ठीसा
 मबहिवि
 सप्प-भावा
 सुत्तो
 सरण
 आभेदम्भाभो

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढबिंदीका पाठ
९२	३	विषोपायामस्य	विषोपायस्य
९७	१	पुरिष्ठ च	पुरिष्ठ च
१०१	१	कदाचो	×
	२	सुखि करेती	सुखिमकरेती
१११	२	उत्त च	उत्ता च
११३	३	इच्छ	×
१२४	१२	नाम कम्माचो	नाम कम्माच
१५८	४	अमतिपिचं	अमतिपिचं
१८३	८	अस्ति	अस
२१९	६	तो वि	ते वि
२२०	३	अध्याह्निय	अध्याह्निय
२२२	४	पिबहति	पिबुविति (I)
२३२	९	असंक्षिप्तसूतया	संक्षिप्तसूतया
२९८	३	नैप	नैप होय
३१५	२	बाधा	बाधात्
३२३	१०	महम्मदार्	महम्मदेसु य
३२८	८	तत्रैतासां	तत्रैतेपां
३३३	१	अस्मादेवार्पात्	अस्मादेवार्पात्
३५९	१	अविपुबसमिप	अविपुबसमिप
३६३	७	इति ॥ ११९ ॥ अर्धक	इत्यत्र एक
३६६	५	स्थितम्	स्थितः
३७३	७	पंचयमः	पंचयमाः
	८	,	
३८०	११	अधुपा	अधुपो
३९९	८	तत्	ते

भाग २

४१२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष
४१३	३	मैथुनसंज्ञायाः	मैथुनसंज्ञायां
"		विशेषसंज्ञा	विशेषसंज्ञा
	५	आखीदवाद्यायाः	आखीदवाद्याय
४१४	१०	वेदमार्गपामनेशः	वेदमार्गपामनेशः
४१७	११	आणप्याजपाया	आणपामप्याय

मूढबिद्रीक्ष्य ताटपत्रीय प्रतियोंके मिश्रण

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	मूढबिद्रीक्ष्य पाठ
९२	३	विद्योगापायस्य	विद्योपायस्य
९७	१	पुरिस्त्र च	पुरिस्त्र च
१०५	१	कदाचो	×
"	२	सुदिमकरेती	सुदिमकरेती
१११	२	उत्त च	उत्ता च
११२	३	हृष्य	×
११४	१२	णाम कम्माणं	णाम कम्माण
१५८	४	जमतिरिपत्त	जमतिरिपत्त
१८६	८	जेस्सि	जैस
२१०	६	तो वि	ते वि
२२०	३	अम्महिप	अम्महिप
२२२	४	पिबह्वसि	पिबुविसि (I)
२६२	९	असंक्षिप्तमृतपः	संक्षिप्तमृतपः
२९८	६	मैय	मैय दोपा
३१५	२	बाधा	बाधात्
३२६	१०	महम्मदार्	महम्मदेलु य
३२८	८	तत्रैतासां	तत्रैतेपां
३३३	१	अस्मादेवार्पात्	अस्मादेवार्पात्
३५९	१	अविपुबसमिप	अविपुबसमिप
३६३	७	इति ॥ ११९ ॥ अमैक	इत्यत्र एक-
३६६	५	स्थितम्	स्थितः
३७५	७	पंचयमः	पंचयमाः
		८	
३८०	११	अधुया	अधुयो
३९९	८	तत्	ते

भाग २

४१२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष
४१३	३	मैधुनसंज्ञाया	मैधुनसंज्ञायां
"	"	विद्योपलस्य	विद्योपलस्य
	५	अप्रीडवाद्यायां	अप्रीडवाद्यायां
४१४	१०	येहमार्गजाममेव	येहमार्गजाममेवा
४१७	११	आणप्याणप्याणा	आणप्याणप्याण

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढलिखित पाठ
४२०	७	सिद्धपद्मी	सिद्धपद्मी वि
४३३	३	-सन्ध्या	सन्ध्याभो
४४३	३	-मन्त्रिणमिति	मन्त्रिणमि तेज
४५३	३	तिष्ठिन् मन्त्राण्य	तिष्ठिन् पाप्माणि
४९३	३	पञ्चस्रजोपनिषीज	पञ्चस्रजोपनिषी
५१३	७	तेजित्पिबेदे पि	तेजित्पिबेदे पि
६०९	११	रत्नार्मन्त्र	रत्नार्मन्त्र
६५३	५	सत्तन्त्रुयमाहो वा	सत्तन्त्रुयमाहो वा
८२३	३	मोक्षिण्यान्	मोक्षिण्यान्

भाग ३

२	५	सपरम्पगासभो	सपरम्पगासदि
५	११	-मनेकथा	-मनेकथा
३	७	हृष्यपमाणाज	हृष्यपमाणाज्यं पदकथाज्यं
७	२	पूर्वमध्यपीमाबस्य	पूर्वमध्यपीमाबस्य
१२	१	मेहकम्मेसु	मेहकम्मेसु
१८	८	अण्णमेहस्त	अण्णमेहस्त
२९	१	अण्णतगुण्याभो	अण्णतगुण्याहो
३५	१०	जहुंतरस	जिहुंतरस्त
२३	३	तत्तिपापिमेत्तो	तत्तिपापिमेत्तो
३७	९	एव महती	एवमहती
२८	२	मोगाहे	मोगाहे
३८	८	अवहिरिज्जमाणे सन्धे	अवहिरिज्जमाणे सन्धे संमिया अवहिरिज्जमाणे सन्धे
३२	३	अप्यंताभंता	अप्यंता
३८	२	अहंदिपत्थविसपो	अहंदिपत्थविसपो
५२	५	सत्तन्त्रुयमाहो वा	सत्तन्त्रुयमाहो वा पुण्ये
५८	३	मोक्षिण्यान्	मोक्षिण्यान्

१ इत्यत्र व्याकरणके निरपत्तुता जननीयता ही होता है, किन्तु संस्कृत भाषाके ईह वहाँ प्रत्यक्ष या क्रिया काय वस्तु है।

२ अन्धे इतिव अदि बाल्यादेर्निमित्तमन्त्राणां केषां अनेका अवगण्यता है अन्धमन्त्राणां अर्थान्तरात् इति इत्यर्थे वस्तुतया वस्तु है। देखी ह्य ७१ १७ व १८५.

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढविप्रीकृत पाठ
६७	४	मुहुत्तमुगमादो ।	मुहुत्तमुगदो
७०	३	संस्तुत	संस्त
९९	९	असद्वि	असद्वरि
	११	परिमार्ण	परमार्ण
१००	५	अहुत्तमपादिय	अहुत्तमपादिय
१०५	७	अथ येकपादिय	अथया एकपादिय
१२३	४	कहुत्तमादिसु	कहुत्तमादिसु
१३१	१	ओगादे	ओगादे
१३३	७	अदादि	अदादि
१९१	९	अथपिदे सेसपमार्ण	अथपिदे सेसपमार्ण
१९१	९	हेट्टिमविरुपाय	विरुपाय
१९९	२	पुम्पदुविदेति	पुम्पदुविदेति
१९५	३	सोधिदे	सोधिदे
१९९	३	अथमोन्पमासेण	अथमोन्पमासे
२०९	४	पव्वम	पव्वम
२२७	४	अदीव	अदीव
२३२	३	अथपादियाणं	अथपादियाणं
२३२	८	अथओयण	तिण्णिओयण
२३३	१०	तत्तत्तत्त	तत्तत्तत्त
२४३	१	पउत्तममहारकाओ	पउत्तममहारकाओ
२४५	७	असकेउआदि	असकेउआदि
२६०	३	ओहाओहाओहाओहीय	ओहाओहाओहीय
२६२	११	तदियवग्गमूळगुणियेण	तदियवग्गमूळगुणियेण । तिससे सेहीय अथामो
			असकेउआओ ओयवओहीओ
२६३	१	ओव	ओव
२६८	३	असकेउआसकेउआदि	असकेउआसकेउआओ
२७५	५	अहुत्ताविरोहामो	अहुत्ताविरोहो
२७९	३	अथपादप्यण	अथपादप्यण
३०७	२	अथअथागादि	अथअथागादि
३०७	४	ओच्छेअंति	ओच्छेअंति

१ 'पव्वम' वर एवमेव अर्थों की व पव्वे हुए भी अर्थमय होय ही अथा है ।

२ तिससे सेहीय अथामो वर एवमेव अर्थमय होय ही ।

पृष्ठ	पङ्क्ति	मुद्रित पाठ	मूढविद्विक्ता पाठ
३४१	२	अणामणे	वेरुणे
३४२	१०	द्विषे	हवे
३४३	५	भागच्छदि ।	भागच्छदि ति शुभेरूप भागगहर्णं कर्त्तुं ।
३४९	७	सेसरसिणा	सेसरसि
३५२	३	सरीरपञ्चत्तेज	सरीरपञ्चत्
३६१	१२	किमाहीनो ऊनो	किमाहीनो ऊना
३८२	३	बाह्वपञ्चत्तेज	बाह्वपञ्चत्तेज
३८४	१	बन्धमसंवेद्यगुण	बन्धमसंवेद्यगुणं
३८६	९	अयो	आयो
४४	४	पुणरधि ओदरमाणा	पुण रुचियोरदरमाणा
४१२	१	मोसबबिजोगि-सञ्चबबिजोगि	मोसबबिजोगि संमपदि
४१४	२	संवेद्यगुणामो	असंवेद्यगुणामो
४२५	८	भाषमेते	भागमेते
"	९	अ अ	अअ
"	९	विष्णम-पवेसार्ण	विष्णमपवेसार्णं
४३०	४	अकसाहजो अ	अकसाहजा
४४८	११	वेद्यगह्वसाया	वेद्यगह्वसाया
४४४	३	अकसुर्लक्षणद्विषी	अकसुर्लक्षणद्विषीभो
४७४	३	एते	एते
४८१	३	जामहत्	जामहत्
४८४	१०	आहारिभसञ्च	आहारिभसञ्च
४८६	१०	(अथवा संवेद्यगुणा)	अथवा संवेद्यगुणा

